

فہم جنہ کی عالم بنانے والی کتاب



فیضانِ شریعت

بہارِ شریعت

16

مصنف: حضرت مولانا محمد امجد علی دہلوی
الہ دینا سنی سنہ ۱۴۰۵ھ

شائع: دارالترغیب محمد صالح بن ناصر الدینی عطاری

<https://archive.org/details/@zohaibhasanattari>

پروگریسو بکس

علماء اہلسنت کی کتب Pdf فائل میں حاصل
کرنے کے لئے

”فقہ حنفی PDF BOOK“

چینل کو جوائن کریں

<http://T.me/FiqahHanfiBooks>

عقائد پر مشتمل پوسٹ حاصل کرنے کے لئے

تحقیقات چینل ٹیلیگرام جوائن کریں

<https://t.me/tehqiqat>

علماء اہلسنت کی نایاب کتب گوگل سے اس لنک

سے فری ڈاؤن لوڈ کریں

[https://archive.org/details/](https://archive.org/details/@zohaibhasanattari)

[@zohaibhasanattari](https://archive.org/details/@zohaibhasanattari)

طالب دعا۔ محمد عرفان عطاری

زohaib حسن عطاری

بہارِ شریعت



آب محمد صالح بن محمد

ي

600/-

جلد شانزدهم

چو جہوی نمودم رسول - میان جواد رسول

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

$$\frac{4}{5} \div \frac{1}{2} =$$

۱-۲-۳

[illegible]

نظام

PH 031-2254111

E-mail: arthur_publications@yahoo.com

0321-4146464

Ph: 042-37239201 Fax: 042-37239200



محکم دلائل سے مزین متنوع و منفرد موضوعات پر مشتمل مفت آن لائن مکتبہ

44-38861-1000

روکریٹو کیس

فہرست

| صفحہ | عنوانات |
|------|---------------------------|
| | حظرو اباحت کا بیان |
| 37 | کھانے کا بیان |
| 40 | احادیث |
| 40 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 40 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 41 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 42 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 42 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 43 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 44 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 45 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 47 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 48 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 48 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 49 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 49 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 51 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 51 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 52 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 53 | حکیم الامت کے مدنی پھول |

| | |
|----|-------------------------|
| 55 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 55 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 56 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 57 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 58 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 64 | مسائل فقہیہ |
| 64 | حکیم الامت کے مدنی پھول |

پانی پینے کا بیان

| | |
|----|-------------|
| 75 | احادیث |
| 80 | مسائل فقہیہ |

ولیمہ اور ضیافت کا بیان

| | |
|----|-------------------------|
| 82 | احادیث |
| 82 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 83 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 83 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 84 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 84 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 85 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 85 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 86 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 86 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 87 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 88 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 89 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 91 | مسائل فقہیہ |

91

ضیافت (یعنی مہمان نوازی) کے آداب:

ظروف کا بیان

96

سونے، چاندی کے برتنوں میں کھانا پینا

101

خبر کہاں معتبر ہے؟

لباس کا بیان

105

احادیث

105

حکیم الامت کے مدنی پھول

105

حکیم الامت کے مدنی پھول

106

حکیم الامت کے مدنی پھول

106

حکیم الامت کے مدنی پھول

107

حکیم الامت کے مدنی پھول

108

حکیم الامت کے مدنی پھول

108

حکیم الامت کے مدنی پھول

108

حکیم الامت کے مدنی پھول

109

حکیم الامت کے مدنی پھول

109

حکیم الامت کے مدنی پھول

110

حکیم الامت کے مدنی پھول

110

حکیم الامت کے مدنی پھول

111

بطور تکبر شلوار کو بڑا رکھنا

114

حکیم الامت کے مدنی پھول

114

حکیم الامت کے مدنی پھول

114

حکیم الامت کے مدنی پھول

115

حکیم الامت کے مدنی پھول

115

حکیم الامت کے مدنی پھول

116

حکیم الامت کے مدنی پھول

116

عورت کا باریک لباس پہننا

117

حکیم الامت کے مدنی پھول

118

حکیم الامت کے مدنی پھول

عمامہ شریف کے فضائل

118

برو بار بننے کا آسان عمل

118

حکیم ایک بے بہاد دولت

119

عمامہ شریف حسن و جمال کا ذریعہ

119

عمامے تاج ہیں

120

عمامے مسلمانوں کے تاج ہیں

120

ٹوپی اور عمامہ

121

عمامے کے ہر پیچ پر نیکی

121

عمامے ترک کر دینے کا نقصان

122

عمامہ باندھنے کی ترغیب

123

عمامہ مسلمانوں اور غیر مسلموں میں فرق کرنے والا

123

فرشتوں کے تاج

123

عمامہ باندھنا فطرت ہے

124

عمامہ باعث عزت

124

شیاطین عمامے نہیں باندھتے

124

حکیم الامت کے مدنی پھول

125

حکیم الامت کے مدنی پھول

125

حکیم الامت کے مدنی پھول

126

حکیم الامت کے مدنی پھول

126

باوجود قدرت عاجزی کی بناء پر عمدہ لباس نہ پہننے کا ثواب

128

حکیم الامت کے مدنی پھول

129

حکیم الامت کے مدنی پھول

129

حكيم الامت کے مدنی پھول

130

حكيم الامت کے مدنی پھول

130

بلا عذر شرعی ریشم پہننا

135

حكيم الامت کے مدنی پھول

136

حكيم الامت کے مدنی پھول

136

حكيم الامت کے مدنی پھول

137

حكيم الامت کے مدنی پھول

137

حكيم الامت کے مدنی پھول

138

حكيم الامت کے مدنی پھول

138

حكيم الامت کے مدنی پھول

144

مردوں اور عورتوں کا ایک دوسرے سے مشابہت اختیار کرنا

145

حكيم الامت کے مدنی پھول

146

عورت کا خوشبو لگا کر گھر سے نکلنا (اگرچہ شوہر کی اجازت سے ہو)

147

حكيم الامت کے مدنی پھول

147

حكيم الامت کے مدنی پھول

148

حكيم الامت کے مدنی پھول

149

مسائل فقہیہ

158

محرم میں بھی سبز عمامہ جائز ہے

158

سبز عمامہ کو ناجائز کہنا جرات ہے

158

سبز عمامہ پسندیدہ ہے

159

دجال کی پیروی کرنے والے ستر ہزار افراد کون؟

159

نبی علیہ السلام پر جھوٹ باندھنے والا جہنمی

159

سیحان والی حدیث کی وضاحت

160

سیحان کے لغوی معنی

161

سیحان کا معنی سبز عمامہ ہرگز نہیں

162

شعارِ صالحین

163

پیوندِ دارلباس کی فضیلت

163

پیوندِ واسلے کپڑے صالحین کا شعار

163

حضرت عائشہؓ کو حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی وصیت:

164

حکیم الامت کے مدنی پھول

166

عمامہ کا بیان

172

متفرق مسائل

172

مزارات پر چادر چڑھانا

173

نظر حق ہے

173

نظرِ بد اونٹ کو دیگ میں اتار دیتی ہے

174

جلد نظر لگ جاتی ہے

جوتا پہننے کا بیان

175

احادیث

175

حکیم الامت کے مدنی پھول

175

حکیم الامت کے مدنی پھول

175

حکیم الامت کے مدنی پھول

176

حکیم الامت کے مدنی پھول

176

حکیم الامت کے مدنی پھول

177

حکیم الامت کے مدنی پھول

177

حکیم الامت کے مدنی پھول

178

حکیم الامت کے مدنی پھول

179

جوتا پہننے کی سنتیں اور آداب

انگوٹھی اور زیور کا بیان

180

احادیث

180

حکیم الامت کے مدنی پھول

| | |
|-----|-------------------------|
| 181 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 181 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 182 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 182 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 182 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 182 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 183 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 184 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 185 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 186 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 187 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 188 | مسائل فقہیہ |

برقن چھپانے اور سونے کے وقت کے آداب

| | |
|-----|-------------------------|
| 192 | احادیث |
| 192 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 193 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 193 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 194 | حکیم الامت کے مدنی پھول |

بیٹھنے اور سونے اور چلنے کے آداب

| | |
|-----|---------------------------|
| 196 | متکبر کو انوکھی نصیحت: |
| 198 | احادیث |
| 198 | حلقہ کے درمیان آکر بیٹھنا |
| 199 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 200 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 201 | حکیم الامت کے مدنی پھول |

| | |
|-----|-------------------------|
| 201 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 202 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 203 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 203 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 204 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 204 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 204 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 205 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 206 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 206 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 206 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 207 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 208 | مسائل فقہیہ |
| 208 | باوضو سونے کا ثواب |

دیکھنے اور چھونے کا بیان

| | |
|-----|-------------------------|
| 214 | احادیث |
| 214 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 215 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 215 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 215 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 216 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 216 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 217 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 218 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 218 | حکیم الامت کے مدنی پھول |

| | |
|-----|-------------------------|
| 219 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 219 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 220 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 220 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 221 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 221 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 222 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 223 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 223 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 224 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 225 | مسائل فقہیہ |
| 225 | امر و کوہیکہ |
| 227 | فاسقہ سے پردے کا حکم |
| 230 | عورتوں سے مصافحہ |
| 231 | حکیم الامت کے مدنی پھول |

مکان میں جانے کے لیے اجازت لینا

| | |
|-----|-------------------------|
| 238 | احادیث |
| 238 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 239 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 239 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 240 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 241 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 241 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 242 | حکیم الامت کے مدنی پھول |

243

مسائل فقہیہ

سلام کا بیان

247

احادیث

247

حکیم الامت کے مدنی پھول

248

سلام کے بارے میں احادیث و مہارکہ:

250

سلام میں پہل کرنے کا ثواب

250

گھر میں داخل ہو کر سلام کرنے کا ثواب

251

حکیم الامت کے مدنی پھول

252

حکیم الامت کے مدنی پھول

253

حکیم الامت کے مدنی پھول

253

حکیم الامت کے مدنی پھول

253

حکیم الامت کے مدنی پھول

254

حکیم الامت کے مدنی پھول

254

حکیم الامت کے مدنی پھول

254

حکیم الامت کے مدنی پھول

255

حکیم الامت کے مدنی پھول

255

حکیم الامت کے مدنی پھول

256

حکیم الامت کے مدنی پھول

257

حکیم الامت کے مدنی پھول

258

حکیم الامت کے مدنی پھول

258

حکیم الامت کے مدنی پھول

259

حکیم الامت کے مدنی پھول

259

حکیم الامت کے مدنی پھول

260

حکیم الامت کے مدنی پھول

260

حکیم الامت کے مدنی پھول

- 261 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 262 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 263 مسائل فقہیہ
- 267 لغویات میں مشغول لوگوں کو سلام کرنے کا حکم
- 268 شطرنج کھیلنا
- 268 360 بار نظر رحمت:
- 268 کھیل کود میں مشغول رہنے والوں کی مثال
- 269 سیدنا ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما کا شطرنج جلا دینا:
- 270 خاتمہ بالخیر نہ ہوتا:

مصافحہ و معانقہ و بوسہ و قیام کا بیان

- 275 احادیث
- 275 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 276 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 276 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 276 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 277 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 278 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 278 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 279 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 280 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 281 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 282 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 283 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 284 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 284 حکیم الامت کے مدنی پھول

چھینک اور جماہی کا بیان

294

احادیث

294

حکیم الامت کے مدنی پھول

295

حکیم الامت کے مدنی پھول

295

حکیم الامت کے مدنی پھول

296

حکیم الامت کے مدنی پھول

297

حکیم الامت کے مدنی پھول

298

حکیم الامت کے مدنی پھول

298

حکیم الامت کے مدنی پھول

299

حکیم الامت کے مدنی پھول

299

حکیم الامت کے مدنی پھول

301

مسائل فقہیہ

303

خرید و فروخت کا بیان

قرآن مجید پڑھنے کے فضائل

312

احادیث

312

حکیم الامت کے مدنی پھول

312

قرآن مجید پڑھنے کا ثواب

314

حکیم الامت کے مدنی پھول

315

حکیم الامت کے مدنی پھول

316

حکیم الامت کے مدنی پھول

317

حکیم الامت کے مدنی پھول

318

حکیم الامت کے مدنی پھول

319

حکیم الامت کے مدنی پھول

320.

حکیم الامت کے مدنی پھول

| | |
|-----|------------------------------|
| 341 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 342 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 343 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 344 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 344 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 345 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 345 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 346 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 347 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 347 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 349 | قرآن مجید اور کتابوں کے آداب |
| 354 | آداب مسجد و قبلہ |

عیادت و علاج کا بیان

| | |
|-----|-------------------------|
| 360 | احادیث |
| 360 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 360 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 361 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 361 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 362 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 362 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 363 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 364 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 364 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 365 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 366 | حکیم الامت کے مدنی پھول |

366

367

367

368

368

369

370

370

371

371

372

373

373

لہو و لعب کا بیان

379

379

379

380

381

382

382

383

385

393

ہر ایک کے لئے

ہر ایک کے لئے

ہر ایک کے لئے

ہر ایک کے لئے

ہر ایک کے لئے

ہر ایک کے لئے

ہر ایک کے لئے

ہر ایک کے لئے

ہر ایک کے لئے

ہر ایک کے لئے

ہر ایک کے لئے

مسائل فقہیہ

عیادت و تعزیت کی فضیلت:

احادیث

ہر ایک کے لئے

ہر ایک کے لئے

ہر ایک کے لئے

ہر ایک کے لئے

ہر ایک کے لئے

ہر ایک کے لئے

ہر ایک کے لئے

مسائل فقہیہ

گالی گلوچ اور کھس کلامی کرنا:

اشعار کا بیان

395

احادیث

395

حکیم الامت کے مدنی پھول

395

حکیم الامت کے مدنی پھول

396

حکیم الامت کے مدنی پھول

396

حکیم الامت کے مدنی پھول

396

حکیم الامت کے مدنی پھول

397

حکیم الامت کے مدنی پھول

397

حکیم الامت کے مدنی پھول

399

مسائل فقہیہ

جھوٹ کا بیان

400

احادیث

400

حکیم الامت کے مدنی پھول

401

حکیم الامت کے مدنی پھول

402

حکیم الامت کے مدنی پھول

402

حکیم الامت کے مدنی پھول

403

حکیم الامت کے مدنی پھول

403

حکیم الامت کے مدنی پھول

404

حکیم الامت کے مدنی پھول

404

حکیم الامت کے مدنی پھول

405

حکیم الامت کے مدنی پھول

406

حکیم الامت کے مدنی پھول

406

حکیم الامت کے مدنی پھول

407

مسائل فقہیہ

زبان کو روکنا اور گالی گلوچ غیبت اور چغلی سے پرہیز کرنا

| | |
|-----|-------------------------|
| 410 | احادیث |
| 410 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 410 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 411 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 412 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 412 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 413 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 413 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 414 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 414 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 415 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 415 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 417 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 417 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 418 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 419 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 419 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 421 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 421 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 421 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 422 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 422 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 423 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 424 | حکیم الامت کے مدنی پھول |

| | |
|-----|--------------------------|
| 424 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 425 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 425 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 426 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 427 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 427 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 428 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 428 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 428 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 429 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 430 | امیر اہلسنت کے مدنی پھول |
| 431 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 432 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 432 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 433 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 433 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 434 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 434 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 435 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 436 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 436 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 437 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 438 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 439 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 439 | حکیم الامت کے مدنی پھول |

440

حکیم الامت کے مدنی پھول

441

مسائل فقہیہ

442

اکثریت غیبت کی لپیٹ میں ہے

442

مدنی حکایت

442

غیبت حرام ہونے کی حکمت

443

غیبت کے متعلق ایک اعتراض کا جواب

447

غیبت کی جائز صورتیں

457

بے جا تعریف کرنا:

457

تعریف کرنے والے کے لئے آفات:

457

مدوح کے لئے آفات:

بغض و حسد کا بیان

460

احادیث

460

حکیم الامت کے مدنی پھول

461

حکیم الامت کے مدنی پھول

461

حکیم الامت کے مدنی پھول

462

حکیم الامت کے مدنی پھول

463

حکیم الامت کے مدنی پھول

464

مسائل فقہیہ

464

ریشک اور مقابلہ بازی کے احکام

ظلم کی مذمت

466

احادیث

466

حکیم الامت کے مدنی پھول

467

بروز قیامت ظلم کی حالت:

467

ظلم حرام ہے:

468

ظلم قحط سالی کا سبب ہے:

- 468 شفاعت سے محروم لوگ:
- 468 جدائی کا سبب:
- 469 مفلس کون ہے؟
- 469 مظلوم کی بددعا:
- 469 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 470 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 471 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 472 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 473 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 473 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 473 حکیم الامت کے مدنی پھول

غصہ اور تکبر کا بیان

- 475 احادیث
- 475 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 475 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 476 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 476 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 476 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 477 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 477 غصہ پینے اور عنود و رگزر کے فضائل
- 478 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 478 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 479 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 480 حکیم الامت کے مدنی پھول
- 480 حکیم الامت کے مدنی پھول

481

حکیم الامت کے مدنی پھول

482

حکیم الامت کے مدنی پھول

482

حکیم الامت کے مدنی پھول

483

حکیم الامت کے مدنی پھول

483

حکیم الامت کے مدنی پھول

484

حکیم الامت کے مدنی پھول

485

حکیم الامت کے مدنی پھول

ہجر اور قطع تعلق کی ممانعت

486

احادیث

486

حکیم الامت کے مدنی پھول

486

حکیم الامت کے مدنی پھول

487

حکیم الامت کے مدنی پھول

487

حکیم الامت کے مدنی پھول

489

سلوک کرنے کا بیان

489

رشتہ داروں پر صدقہ کرنے کا ثواب

490

اس بارے میں احادیث مقدسہ:

491

اہل خانہ پر خرچ کرنے کا ثواب

492

اس بارے میں احادیث مبارکہ:

497

احادیث

497

حکیم الامت کے مدنی پھول

498

حکیم الامت کے مدنی پھول

498

حکیم الامت کے مدنی پھول

499

حکیم الامت کے مدنی پھول

500

حکیم الامت کے مدنی پھول

500

حکیم الامت کے مدنی پھول

501

نیکو مت کے در پھر

502

نیکو مت کے در پھر

502

حکیم الامت کے مدنی پھول

503

نیکو مت کے مدنی پھول

503

حکیم الامت کے مدنی پھول

503

حکیم الامت کے مدنی پھول

504

حکیم الامت کے مدنی پھول

505

حکیم الامت کے مدنی پھول

505

حکیم الامت کے مدنی پھول

506

حکیم الامت کے مدنی پھول

507

حکیم الامت کے مدنی پھول

508

حکیم الامت کے مدنی پھول

509

حکیم الامت کے مدنی پھول

509

حکیم الامت کے مدنی پھول

510

حکیم الامت کے مدنی پھول

511

حکیم الامت کے مدنی پھول

512

حکیم الامت کے مدنی پھول

512

حکیم الامت کے مدنی پھول

513

حکیم الامت کے مدنی پھول

515

مسائل فقہیہ

لولاد پر شفقت اور یتامیٰ پر رحمت

517

احادیث

517

یتیم کی کفالت اور اس پر خرچ کرنے کا ثواب

518

یتیم کا مال کھانا

523

حکیم الامت کے مدنی پھول

| | |
|-----|-------------------------|
| 523 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 524 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 524 | حکیم الامت کے مدنی پھول |

پڑوسیوں کے حقوق

| | |
|-----|-------------------------|
| 526 | احادیث |
| 526 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 526 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 527 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 527 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 528 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 528 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 529 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 530 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 531 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 532 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 532 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 534 | مسائل فقہیہ |

مخلوق خدا پر مہربانی کرنا

| | |
|-----|-------------------------|
| 536 | احادیث |
| 536 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 536 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 536 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 537 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 537 | حکیم الامت کے مدنی پھول |

| | |
|-----|-------------------------|
| 538 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 539 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 539 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 540 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 540 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 540 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 541 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 541 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 542 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 543 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 544 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 544 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 545 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 545 | حکیم الامت کے مدنی پھول |

فرمیں و حیا و خوبی اخلاق کا بیان

| | |
|-----|-------------------------|
| 547 | احادیث |
| 547 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 548 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 548 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 549 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 549 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 549 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 550 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 550 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 551 | حکیم الامت کے مدنی پھول |

551

حکیم الامت کے مدنی پھول

552

حکیم الامت کے مدنی پھول

552

حکیم الامت کے مدنی پھول

553

حکیم الامت کے مدنی پھول

553

حکیم الامت کے مدنی پھول

554

حکیم الامت کے مدنی پھول

اچھوں کے پاس بیٹھنا بروں سے بچنا

555

احادیث

555

حکیم الامت کے مدنی پھول

555

صحت و مجلس کے بارے میں چالیس اصول سمجھنے

اللہ (عزوجل) کے لیے دوستی و دشمنی کا بیان

563

احادیث

563

حکیم الامت کے مدنی پھول

563

حکیم الامت کے مدنی پھول

564

حکیم الامت کے مدنی پھول

565

حکیم الامت کے مدنی پھول

565

حکیم الامت کے مدنی پھول

566

حکیم الامت کے مدنی پھول

568

حکیم الامت کے مدنی پھول

568

حکیم الامت کے مدنی پھول

569

حکیم الامت کے مدنی پھول

570

حکیم الامت کے مدنی پھول

570

حکیم الامت کے مدنی پھول

حجامت بنوانا اور ناخن تراشوانا

572

احادیث

| | |
|-----|-----------------------|
| 572 | تیمار مت کے مدنی پھول |
| 573 | تیمار مت کے مدنی پھول |
| 574 | تیمار مت کے مدنی پھول |
| 574 | تیمار مت کے مدنی پھول |
| 574 | تیمار مت کے مدنی پھول |
| 575 | تیمار مت کے مدنی پھول |
| 575 | تیمار مت کے مدنی پھول |
| 576 | تیمار مت کے مدنی پھول |
| 576 | تیمار مت کے مدنی پھول |
| 577 | تیمار مت کے مدنی پھول |
| 578 | تیمار مت کے مدنی پھول |
| 578 | تیمار مت کے مدنی پھول |
| 579 | تیمار مت کے مدنی پھول |
| 579 | تیمار مت کے مدنی پھول |
| 580 | تیمار مت کے مدنی پھول |
| 581 | تیمار مت کے مدنی پھول |
| 582 | مسائل فقہیہ |
| 592 | ختہ کا بیان |
| 593 | تیمار مت کے مدنی پھول |

زینت کا بیان

| | |
|-----|-------------------------|
| 598 | احادیث |
| 598 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 598 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 599 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 599 | حکیم الامت کے مدنی پھول |

| | |
|-----|-------------------------|
| 599 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 600 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 600 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 601 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 601 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 602 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 603 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 603 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 604 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 605 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 605 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 606 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 607 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 607 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 608 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 609 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 609 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 610 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 611 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 613 | مسائل فقہیہ |

نام رکھنے کا بیان

| | |
|-----|-------------------------|
| 618 | احادیث |
| 618 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 619 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 619 | حکیم الامت کے مدنی پھول |

620

حکیم الامت کے مدنی پھول

620

حکیم الامت کے مدنی پھول

626

حکیم الامت کے مدنی پھول

626

حکیم الامت کے مدنی پھول

627

حکیم الامت کے مدنی پھول

627

حکیم الامت کے مدنی پھول

627

حکیم الامت کے مدنی پھول

629

مسائل فقہیہ

مسابقت کا بیان

635

حکیم الامت کے مدنی پھول

636

حکیم الامت کے مدنی پھول

636

حکیم الامت کے مدنی پھول

637

حکیم الامت کے مدنی پھول

638

حکیم الامت کے مدنی پھول

638

حکیم الامت کے مدنی پھول

640

مسائل فقہیہ

کسب کا بیان

643

کسب حلال کا ثواب

648

امر بالمعروف ونہی عن المنکر کا بیان

648

نیکی کی دعوت دینا فرض کفایہ ہے:

648

ہاتھ اور زبان سے برائی کو روکنے کے احکام:

649

دل میں بُرا جاننے کا حکم:

650

بِسْمِ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ ہم خوش نصیب ہیں

650

اَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ کی تعریف

652

احادیث

| | |
|-----|-------------------------|
| 674 | حکیم امت کے مدنی پھول |
| 675 | حکیم امت کے مدنی پھول |
| 675 | حکیم امت کے مدنی پھول |
| 676 | حکیم امت کے مدنی پھول |
| 676 | حکیم امت کے مدنی پھول |
| 677 | حکیم امت کے مدنی پھول |
| 678 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 678 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 679 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 680 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 680 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 681 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 682 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 682 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 682 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 683 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 684 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 684 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 685 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 685 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 685 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 687 | مسائل فقہیہ |

| | |
|-----|-------------------------|
| 694 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 695 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 695 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 696 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 697 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 697 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 698 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 700 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 701 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 701 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 704 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 706 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 707 | مسائل فقہیہ |

زیارت قبور کا بیان

| | |
|-----|-------------------------|
| 711 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 712 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 713 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 713 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 714 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 714 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 715 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 716 | حکیم الامت کے مدنی پھول |
| 717 | مسائل فقہیہ |
| 718 | مزار پر چادر چڑھانا |
| 719 | ایصال ثواب |

720

حکیم الامت کے مدنی پھول

723

مجالس خیر

آداب سفر کا بیان

729

حکیم الامت کے مدنی پھول

730

حکیم الامت کے مدنی پھول

730

حکیم الامت کے مدنی پھول

731

حکیم الامت کے مدنی پھول

731

حکیم الامت کے مدنی پھول

732

حکیم الامت کے مدنی پھول

732

حکیم الامت کے مدنی پھول

733

حکیم الامت کے مدنی پھول

734

حکیم الامت کے مدنی پھول

734

حکیم الامت کے مدنی پھول

735

حکیم الامت کے مدنی پھول

735

حکیم الامت کے مدنی پھول

736

حکیم الامت کے مدنی پھول

736

حکیم الامت کے مدنی پھول

738

مسائل فقہیہ

741

متفرقات



**حظروا بااحت، سلام، آداب مسجد و قبلہ،
زیارت قبور اور ایصال ثواب کا بیان**

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ

حظر و اباحت کا بیان (۱)

کھانے کا بیان

اس کتاب میں ان چیزوں کا بیان ہے جو شرعاً ممنوع یا مباح ہیں۔ اصطلاح شرح میں مباح اس کو کہتے ہیں، جس کے کرنے اور چھوڑنے دونوں کی اجازت ہو، نہ اس میں ثواب ہے نہ اس میں عذاب ہے۔ مکروہ کی دونوں قسموں کی تعریفیں حصہ دوم (2) میں ذکر کر دی گئیں وہاں سے معلوم کریں۔

اس کتاب کے مسائل چند ابواب پر منقسم ہیں۔ سب سے پہلے کھانے پینے سے جن مسائل کا تعلق ہے، وہ بیان کیے جاتے ہیں کہ انسانی زندگی کا تعلق کھانے پینے سے ہے۔ قرآن مجید میں ارشاد ہوتا ہے۔

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِينَ ﴿۸۷﴾ وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿۸۸﴾) (3)

اے ایمان والو! اللہ (عزوجل) نے جو تمہارے لیے حلال کیا ہے اسے حرام نہ کرو اور حد سے نہ گزرو، بے شک اللہ (عزوجل) حد سے گزرنے والوں کو دوست نہیں رکھتا اور اللہ (عزوجل) نے جو تمہیں حلال پاکیزہ رزق دیا ہے، اس میں سے کھاؤ اور اللہ (عزوجل) سے ڈرو جس پر تم ایمان لائے ہو۔

(1) یعنی ممنوع اور مباح چیزوں کا بیان

(2) یعنی جہاں شریعت، ج ۱، حصہ دوم۔

(3) پ ۷، النامۃ: ۸۷-۸۸

اس آیت کے تحت مفسر شہیر مولا ناسید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ صحابہ کرام کی ایک جماعت رسول کریم صلی اللہ علیہ وسلم کا وعظ سن کر ایک روز حضرت عثمان بن مظعون کے یہاں جمع ہوئی اور انہوں نے باہم ترک دنیا کا عہد کیا اور اس پر اتفاق کیا کہ وہ ٹاٹ پہنیں گے، ہمیشہ دن میں روزے رکھیں گے، شب عبادت الہی میں بیدار رہ کر گزارا کریں گے، بستر پر نہ لیٹیں گے، گوشت اور چکنائی نہ کھائیں گے، عورتوں سے جدا رہیں گے، خوشبو نہ لگائیں گے۔ اس پر یہ آیت کریمہ نازل ہوئی اور انہیں اس ارادہ سے روک دیا گیا۔

اور فرماتا ہے:

(كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۴۲﴾) (4)

کھاؤ اس میں سے جو اللہ (عزوجل) نے تمہیں روزی دی اور شیطان کے قدموں پر نہ چلو بیشک وہ تمہارا کھا دشمن

ہے۔

اور فرماتا ہے:

(يٰۤاٰدَمُ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۳۱﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖۤا وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ كَذٰلِكَ نَفْصِلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۲﴾ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رِجْسًا مَّا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنٌ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطٰنًا وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلٰی اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۳﴾) (5)

اے بنی آدم! اپنی زینت لو، جب مسجد میں جاؤ اور کھاؤ اور پیو اور اسراف (زیادتی) نہ کرو، بے شک وہ اسراف کرنے والوں کو دوست نہیں رکھتا۔ اے محبوب! تم فرمادو، کس نے حرام کی اللہ (عزوجل) کی وہ زینت جو اس نے اپنے بندوں کے لیے نکالی اور ستھرا رزق، تم فرمادو کہ وہ ایمان والوں کے لیے ہے دنیا کی زندگی میں اور قیامت کے دن تو

(4) پ ۸، الانعام: ۱۴۲۔

(5) پ ۸، الاعراف: ۳۱-۳۳۔

ان آیات کے تحت مفسر شہیر مولانا سید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ کھنی کا قول ہے کہ بنی عامر زمانہ حج میں اپنی خوراک بہت ہی کم کر دیتے تھے اور گوشت اور چکنائی تو بالکل کھاتے ہی نہ تھے اور اس کو حج کی تعظیم جانتے تھے، مسلمانوں نے انہیں دیکھ کر عرض کیا یا رسول اللہ ہمیں ایسا کرنے کا زیادہ حق ہے، اس پر یہ نازل ہوا کہ کھاؤ اور پیو گوشت ہو خواہ چکنائی ہو اور اسراف نہ کرو اور وہ یہ ہے کہ میر ہو چکنے کے بعد بھی کھاتے ہو یا حرام کی پردہ نہ کرو اور یہ بھی اسراف ہے کہ جو چیز اللہ تعالیٰ نے حرام نہیں کی اس کو حرام کر لو۔ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما نے فرمایا کھا جو چاہے اور پینا جو چاہے اسراف اور تکبر سے بچنا۔

مسئلہ: آیت میں دلیل ہے کہ کھانے اور پینے کی تمام چیزیں حلال ہیں سوائے ان کے جن پر شریعت میں دلیل حرمت قائم ہو کیونکہ یہ قاعدہ مقزہ مسئلہ ہے کہ اصل تمام اشیاء میں اباحت ہے مگر جس پر شارع نے ممانعت فرمائی ہو اور اس کی حرمت دلیل مستقل سے ثابت ہو۔

مسئلہ: آیت اپنے عموم پر ہے ہر کھانے کی چیز اس میں داخل ہے کہ جس کی حرمت پر نص وارد نہ ہوئی ہو (حازن) تو جو لوگ توشہ گیارہویں، میلاد شریف، بزرگوں کی فاتحہ غرس، مجالس شہادت وغیرہ کی شیرینی، بھیل کے شربت کو ممنوع کہتے ہیں وہ اس آیت کے خلاف کر کے گناہ گار ہوتے ہیں اور اس کو ممنوع کہنا اپنی رائے کو دین میں داخل کرنا ہے اور یہی بدعت و ضلالت ہے۔

خاص انھیں کے لیے ہے، اسی طرح ہم تفصیل کے ساتھ اپنی آیتوں کو بیان کرتے ہیں علم والوں کے لیے۔ تم فرما دو کہ میرے رب (عزوجل) نے تو بے حیائیاں حرام فرمائی ہیں جو ان میں ظاہر ہیں اور جو چھپی ہیں اور گناہ اور ناحق زیادتی اور یہ کہ اللہ (عزوجل) کا شریک کرو جس کی اس نے کوئی دلیل نہیں اُتاری اور یہ کہ اللہ (عزوجل) پر وہ بات کہو جس کا تمہیں علم نہیں۔

اور فرماتا ہے:

(لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَلَاتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكَتْكُمْ مَفَاتِحُهُ أَوْ صَدِيقِكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا) (6)

نہ اندھے پر تنگی ہے اور نہ لنگڑے پر مضایقہ اور نہ بیمار پر حرج اور نہ تم میں کسی پر کہ کھاؤ اپنی اولاد کے گھر یا اپنے باپ کے گھر یا اپنی ماں کے گھر یا اپنے بھائیوں کے یہاں یا اپنی بہنوں کے یہاں یا اپنے چچاؤں کے یہاں یا اپنی بھپیوں کے گھر یا اپنے ماموؤں کے یہاں یا اپنی خالاؤں کے گھر یا جہاں کی کنجیاں تمہارے قبضہ میں ہیں یا اپنے دوست کے یہاں، تم پر اس میں کوئی گناہ نہیں کہ مجتمع ہو کر کھاؤ یا الگ الگ۔ پہلے کھانے کے متعلق چند حدیثیں بیان کی جاتی ہیں۔



احادیث

حدیث ۱: صحیح مسلم شریف میں حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جس کھانے پر بسم اللہ نہ پڑھی جائے، شیطان کے لیے وہ کھانا حلال ہو جاتا ہے۔ (۱) یعنی بسم اللہ نہ پڑھنے کی صورت میں شیطان اس کھانے میں شریک ہو جاتا ہے۔

حدیث ۲: صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے، کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کوئی شخص مکان میں آیا اور داخل ہوتے وقت اور کھانے کے وقت اس نے بسم اللہ پڑھ لی تو شیطان اپنی ذریت سے کہتا ہے کہ اس گھر میں نہ تمہیں رہنا ملے گا نہ کھانا اور اگر داخل ہوتے وقت بسم اللہ نہ پڑھی تو کہتا ہے، اب تمہیں رہنے کی جگہ مل گئی اور کھانے کے وقت بھی بسم اللہ نہ پڑھی تو کہتا ہے کہ رہنے کی جگہ بھی ملی اور کھانا بھی ملا۔ (۲)

(۱) صحیح مسلم، کتاب الاثریۃ، باب آداب الطعام والشراب... إلخ، الحدیث: ۱۰۲۔ (۲۰۱۷)، ص ۱۱۱۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یہاں حلال بمعنی کھل جانا اور استحلال بمعنی کھول لینا ہے یعنی کھانے کے اول بسم اللہ پڑھ لینے سے شیطان کے لیے رکاوٹ ہو جاتی ہے اور اگر بسم اللہ نہ پڑھی جاوے تو وہ کھانا چرنا شیطان کے لیے کھل جاتا ہے۔ شیطان سے مراد قرین ہے جو ہر انسان کے ساتھ رہتا ہے یعنی بسم اللہ نہ پڑھنے والے کے ساتھ کھانا کھانے پر یہ شیطان قادر ہو جاتا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۲)

(۲) صحیح مسلم، کتاب الاثریۃ، باب آداب الطعام والشراب... إلخ، الحدیث: ۱۰۲۔ (۲۰۱۸)، ص ۱۱۱۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اس سے معلوم ہوا کہ ہر شخص گھر میں داخل ہوتے وقت پوری بسم اللہ پڑھ کر داہنا قدم پہلے دروازہ میں داخل کرے پھر گھر والوں کو سلام کرنا ہو گھر میں آئے، اگر کوئی نہ ہو تو السلام علیٰ ایہا النبی ورحمۃ اللہ وبرکاتہ کہہ دے۔ بعض بزرگوں کو دیکھا گیا کہ اول دن میں جب پہلی بار گھر میں ہوتے ہیں تو بسم اللہ اور قل ھو اللہ پڑھ لیتے ہیں کہ اس سے گھر میں اتفاق بھی رہتا ہے اور رزق میں برکت بھی۔

۲۔ شیطان کا یہ خطاب اپنی ذریت سے ہوتا ہے اور ممکن ہے کہ اس خطاب میں قرین بھی داخل ہو کہ وہ بھی اس بسم اللہ کی برکت سے نہ کھائے اور ہمارے گھر میں رہنے سہنے سے محروم ہو جائے اور اس کے شر سے محفوظ ہو جائے اور اللہ کے ذکر سے غافل اس نعمت سے محروم رہے۔ دوپہر کے کھانے کو غذا کہتے ہیں اور بعد دوپہر سے رات تک کے کھانے کو عشاء کہا جاتا ہے، یہاں مراد مطلقاً کھانا ہے جو شخص صبح کو یہ عمل کرے تو ناشتہ اور دوپہر کے کھانے سے شیطان محروم ہوگا جو بعد دوپہر یہ عمل کرے تو رات کے کھانے سے وہ محروم رہے گا۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۳)

حدیث ۳: صحیح بخاری و صحیح مسلم میں عمر بن ابی سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی ہے کہ میں بچہ تھا، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی پرورش میں تھا (یعنی یہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے ربیب اور ام المؤمنین ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے فرزند ہیں) کھاتے وقت برتن میں ہر طرف ہاتھ ڈال دیتا، حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: بسم اللہ پڑھو اور داہنے ہاتھ سے کھاؤ اور برتن کی اس جانب سے کھاؤ، جو تمہارے قریب ہے۔ (3)

حدیث ۴: ابو داؤد و ترمذی و حاکم حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے راوی، کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: جب کوئی شخص کھانا کھائے تو اللہ (عزوجل) کا نام ذکر کرے یعنی بسم اللہ پڑھے اور اگر شروع میں بسم اللہ پڑھنا بھول جائے تو یوں کہے۔ بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلُهُ وَاٰخِرُهُ۔ (4)
اور امام احمد و ابن ماجہ و ابن حبان و بیہقی کی روایت میں یوں ہے:

(3) المرجع السابق، الحدیث: ۱۰۸- (۲۰۲۲)، ص ۱۱۱۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ عمر ابن عبداللہ ابن عبدالامہ ہیں، قرشی مخدومی ہیں، جناب ام سلمہ رضی اللہ عنہا کے فرزند حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے سوتیلے بیٹے ہیں، ۲ ہجری میں حبشہ میں پیدا ہوئے، حضور انور کی وفات کے وقت آپ کی عمر نو سال تھی، ۸۳ھ میں عبدالملک ابن مروان کے زمانہ حکومت میں وفات پائی، جنت البقیع شریف میں دفن ہوئے، جب حضور انور نے حضرت ام سلمہ سے نکاح کیا تو آپ کو اور آپ کی بہن زینب کو اپنی پرورش میں لے لیا رضی اللہ عنہم اجمعین۔

۲۔ یعنی کبھی میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ ایک پیالہ میں کھانا کھاتا تھا تو میں کھانے کے آداب سے واقف نہ تھا اس لیے ہر طرف سے کھانا کھاتا تھا جہر سے دل چاہا ادھر سے بوٹی لے لی، ادھر ہی لقمہ شوربے میں بھگو لیا۔

۳۔ یعنی بسم اللہ پڑھ کر کھانا شروع کر دینے ہاتھ سے کھاؤ اور اپنے سامنے سے کھاؤ ہر طرف سے نہ کھاؤ، یہ تینوں حکم جمہور علماء کے نزدیک استجابی ہیں، بعض آئمہ کے ہاں داہنے ہاتھ سے کھانا واجب ہے۔ خیال رہے کہ ہر چیز پیتے وقت بھی بسم اللہ پڑھے اور داہنے ہاتھ سے پئے یہ ہی سنت ہے، یہ تینوں امور سنت علی العین ہیں یعنی اگر جماعت میں سے صرف ایک آدمی کر لے تو کافی نہیں ہر شخص داہنے ہاتھ سے کھائے، ہر شخص بسم اللہ پڑھے، ہر شخص اپنے سامنے سے کھائے، اگر اکیلا بھی کھائے تب بھی اپنے سامنے سے کھائے، ہاں اگر طباق میں مختلف مٹھائیاں یا مختلف قسم کی کھجوریں ہیں تو جہاں سے چاہے کھالے جیسا کہ آئندہ آوے گا۔ (مرقات)

۴ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ لصاحب، ج ۶، ص ۱۰۱)

(4) سنن ابی داؤد، کتاب الاطعمۃ، باب التسمیۃ علی الطعام، الحدیث: ۳۷۶۷، ج ۳، ص ۴۸۷۔

بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلُهُ وَاٰخِرُهُ (5)

حدیث ۵: امام احمد و ابو داؤد و ابن ماجہ و حاکم و حشی بن حرب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، کہ ارشاد فرمایا: مجتمع ہو کر کھانا کھاؤ اور بسم اللہ پڑھو، تمہارے لیے اس میں برکت ہوگی۔ (6) ابن ماجہ کی روایت میں یہ بھی ہے کہ لوگوں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) ہم کھاتے ہیں اور پیٹ نہیں بھرتا۔ ارشاد فرمایا کہ شاید تم الگ الگ کھاتے ہو گے۔ عرض کی، ہاں۔ فرمایا: اکٹھے ہو کر کھاؤ اور بسم اللہ پڑھو، برکت ہوگی۔ (7)

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب اللہ کے ذکر سے مراد بسم اللہ شریف پڑھنا ہے کہ کھانے کے وقت یہی ذکر اللہ سنت ہے ہر وقت کا ذکر عینہ ہے۔ خوشی کی خبر سننے کے وقت کا ذکر ہے الحمد للہ، غم کی خبر کا ذکر ہے انا للہ، بری بات سننے کے وقت کا ذکر ہے لا حول الا تو کھانے کے وقت کا ذکر ہے بسم اللہ بلکہ وضو کرتے وقت، سوتے وقت، مسجد میں داخل ہوتے وقت بھی بسم اللہ پڑھنا سنت ہے۔ اس جگہ بعض علماء نے فرمایا کہ ذکر اللہ سے مراد یہ ذکر ہے جسے چاہیے کہ اگر کھاتے وقت کلمہ طیبہ بھی پڑھ لے تو بھی یہ فائدہ حاصل ہو جائے گا۔ شاید یہ حضرت کھاتے وقت انا للہ یا ما حولہ و لا قوۃ الا باللہ پڑھنے کو بھی مفید کہتے ہوں بہر حال قوی یہ ہے کہ یہاں ذکر اللہ سے مراد بسم اللہ شریف ہے۔

۱۔ اصل میں فی اولہ و آخرہ تہنی کو دور کر دیا گیا اور اول آخر کو فتح دیا گیا۔ اول آخر سے مراد کھانے کی ساری حالات ہیں، اول آخر درمیانی حالت جیسے رب تعالیٰ فرماتا ہے: "وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا" یہاں صبح شام سے مراد تمام دقات ہیں یعنی جو شخص کھانا کھاتے وقت بسم اللہ پڑھنا بھول جائے تو درمیان میں جب یاد آ جائے تب یہ کہ لے بلکہ بعض علماء نے فرمایا کہ کھانا کھ چکنے ہاتھ دھوئے پینے کلی کرینے کے بعد یاد آ دے تب بھی یہی کہہ دے مگر صحیح یہ ہے کہ دوران کھانے میں یاد آتے وقت ہی کہے تاکہ شیطان کھایا ہوا کھانا قے کر دے بعد فراغ یہ فائدہ حاصل نہ ہوگا۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۲)۔

(5) سنن ابن ماجہ، کتاب اطعمۃ، باب التسمیۃ عند الطعام، الحدیث: ۳۶۳۳، ج ۴، ص ۱۱۔

(6) سنن ابی داؤد، کتاب الاطعمۃ، باب فی الاجتماع علی الطعام، الحدیث: ۴۷۳۷، ج ۳، ص ۴۸۶۔

(7) سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب الاجتماع علی الطعام، الحدیث: ۳۲۸۶، ج ۴، ص ۲۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

ان کا نام وحشی بن حرب بن وحشی ابن حرب ہے، یہ وحشی تابعین سے ہیں اور ان کے دادا وحشی ابن حرب وہی ہیں جنہوں نے زمانہ کفر میں حضرت حمزہ رضی اللہ عنہ کو شہید کیا، پھر زمانہ اسلام میں خلافت صدیقی میں مسئلہ کذاب کو جہنم رسید کیا یعنی وحشی نے اپنے باپ حرب سے روایت کی اور حرب نے اپنے باپ وحشی سے روایت کی جو کہ ان راوی وحشی کے دادا ہیں، ان وحشی صحابی کے بہت سے بیٹے ہیں یعنی حرب، اسحاق وغیرہم۔ (مرقات و اشعہ)

۲۔ یعنی ہم کھاتے زیادہ ہیں اور سیری کم ہوتی ہے ہم چاہتے ہیں کہ ہم کو قناعت اور قوۃ علی الطعمۃ نصیب ہو وہ کم میسر ہوتی ہے۔

حدیث ۶: شرح سنہ میں ابو ایوب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہتے ہیں کہ ہم نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر تھے، کھانا پیش کیا گیا ابتدا میں اتنی برکت ہم نے کسی کھانے میں نہیں دیکھی، مگر آخر میں بڑی بے برکتی دیکھی، ہم نے عرض کی، یا رسول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم)! ایسا کیوں ہوا؟ ارشاد فرمایا: ہم سب نے کھانے کے وقت بسم اللہ پڑھی تھی، پھر ایک شخص بغیر بسم اللہ پڑھے کھانے کو بیٹھ گیا، اس کے ساتھ شیطان نے کھانا کھا لیا۔ (8)

۱۔ یعنی گھر والے ایک ایک کر کے الگ الگ کھاتے ہیں جمع ہو کر ایک ساتھ نہیں کھاتے۔ سبحان اللہ! یہ ہے مرض کا بیان ہے اور یہ ہے حکیم مطلق کی تشخیص اور پہچان۔

۲۔ یہ ہے ان حکیم مطلق صلی اللہ علیہ وسلم کا علاج فرمانا کہ جمع ہو کر ایک ساتھ کھانے میں برکت ہے۔ خیال رہے کہ حدیث اس آیت کے خلاف نہیں کہ "لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا" یعنی تم پر گناہ نہیں مل کر کھاؤ یا الگ الگ کیونکہ آیت کریمہ میں الگ الگ کھانے کے جواز کا ذکر ہے اور اس حدیث پاک میں مل کر کھانے کے استحباب کا تذکرہ ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۰۰)

(8) شرح السنۃ، کتاب الاطعمۃ، باب التسمیۃ علی الاکل... إلخ، الحدیث: ۲۸۱۸، ج ۶، ص ۶۱-۶۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ واقعہ یا تو اس زمانہ کا ہے جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم آپ کے گھر میں رونق افروز تھے یا اس کے بعد اور کسی وقت کا، حضرت ابو ایوب حضور کے پہلے میزبان ہیں۔

۲۔ یعنی جب ہم نے کھانا شروع کیا تو اس میں بڑی برکت دیکھی اور جب فارغ ہونے لگے تو اس کھانے میں بہت ہی بے برکتی محسوس کی۔ برکت اور کثرت کا فرق ہم بارہا بیان کر چکے کثرت کمال نہیں برکت کمال ہے، اللہ تعالیٰ ہر دینی و دنیاوی کاموں چیزوں میں برکت دے۔

۳۔ یعنی کھانا کھاتے وقت بسم اللہ پڑھی تھی۔ امام غزالی فرماتے ہیں کہ صرف بسم اللہ پڑھنا کافی ہے۔ باقی الرحمن الرحیم کہہ لینا بھی بہتر ہے مگر صحیح یہ ہے کہ پوری بسم اللہ پڑھنی چاہیے اور ہر کھانے پر ہر شخص پڑھے حتیٰ کہ حیض و نفاس والی عورتیں بھی پڑھیں، حرام اور مکروہ کھانے پر نہ پڑھے بھنگ، چرس، حقہ پر بسم اللہ نہ پڑھے، شراب نوشی پر بسم اللہ پڑھنا کفر ہے۔ (مرقات وغیرہ) اس کے پورے مسائل کتب فقہ میں مطالعہ کرو۔

۴۔ یعنی کھانا شروع کرتے وقت ہم میں سے ہر شخص نے بسم اللہ پڑھی تھی دوران کھانے میں ایک شخص کھانے میں ایسا شریک ہو گیا جس نے بسم اللہ نہ پڑھی اور کھانا شروع کر دیا تو اس کے ساتھ جو شیطان قرین تھا وہ اس کے ہمراہ ہمارے کھانے سے کھانے لگا اس لیے بے برکتی آخری میں ہو گئی۔ اس سے معلوم ہوا کہ ہر شخص کے ساتھ رہنے والا شیطان ہے جسے قرین کہتے ہیں، یہ بھی معلوم ہوا کہ کھانے کے وقت سے

حدیث ۷: ابو داؤد نے اُمیہ بن مثنیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں: ایک شخص بغیر بسم اللہ پڑھے کھانا کھا رہا تھا، جب کھا چکا صرف ایک لقمہ باقی رہ گیا، یہ لقمہ اٹھایا اور یہ کہا: بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلُهُ وَاٰخِرُهُ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے تبسم کیا اور یہ فرمایا کہ شیطان اس کے ساتھ کھا رہا تھا، جب اس نے اللہ (عزوجل) کا نام ذکر کیا جو کچھ اس کے پیٹ میں تھا اُگل دیا۔ (9) اس کے یہ معنی بھی ہو سکتے ہیں کہ بسم اللہ نہ کہنے سے کھانے کی برکت جو چلی گئی تھی واپس آگئی۔

حدیث ۸: صحیح مسلم میں حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہتے ہیں: جب ہم لوگ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ساتھ کھانے میں حاضر ہوتے تو جب تک حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) شروع نہ کرتے،

ہر شخص کا بسم اللہ پڑھ لینا اس کے ساتھی شیطان کے لیے مفید ہوگا دوسرے کے قرین کے لیے مفید نہیں لہذا ہر شخص کو بسم اللہ پڑھنی چاہیے، اگرچہ اس آدمی کی جماعت کھانے بیٹھے تو ہر شخص علیحدہ بسم اللہ پڑھے لہذا بسم اللہ پڑھنا سنت میں ہے سنت کفایہ نہیں۔ بعض شارحین نے فرمایا کہ اگر کوئی جماعت کھانے بیٹھے تو بسم اللہ پڑھنا سنت کفایہ ہے کہ اگر ایک شخص نے پڑھ لی تو سب کے لیے کافی ہوگئی اور جو شخص بعد میں کھانے میں شریک ہوا اسے علیحدہ بسم اللہ پڑھنی پڑے گی، وہ حضرات لفظ ثَم سے دلیل پکڑتے ہیں مگر پہلی بات زیادہ قوی ہے جیسا کہ انا ذکرنا جمع فرمانے سے معلوم ہوا ہر شخص نے بسم اللہ پڑھی تھی۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۱)۔

(9) سنن ابی داؤد، کتاب الاطعمۃ، باب التسمیۃ علی الطعام، الحدیث: ۶۸۷، ج ۳، ص ۸۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کی کنیت ابو عبید ہے، امیہ تغیر سے ہے اور مثنیٰ میم کے فتح شین کے کسرہ ی کی شد سے ہے، آپ صحابی ہیں، خزاعی اسدی ہیں، بصرہ میں قیام رہا، آپ سے صرف یہ ہی ایک حدیث مروی ہے۔ (مرقات و اشعہ)

۲۔ اس سے معلوم ہوا کہ کھانا شروع کرتے وقت پوری بسم اللہ پڑھے لیکن اگر بیچ میں یاد آوے تو صرف بسم اللہ کہے اور ساتھ ہی اولہ و آخرہ کہہ لے۔ یہ صل میں فی اولہ و آخرہ تھانی کو پوشیدہ کر کے اول آخر کو فتح دے دیا گیا۔

۳۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی نظریں حقیقت میں چھپی مخلوق کو بھی ملاحظہ فرماتی ہیں اور حدیث بالکل اپنے ظاہری معنی پر ہے کہ کسی تاویل کی ضرورت نہیں جیسے ہمارا معذہ کبھی والا کھانا ہضم نہیں کر سکتا ایسے شیطان کا معذہ بسم اللہ والا کھانا ہضم نہیں کرتا اگرچہ اس کا تے کیا ہوا کھانا ہمارے کام نہیں آتا مگر مردود تو بیمار بھی پڑ جاتا ہے اور بھوکا بھی رہ جاتا ہے اور ہمارے کھانے کی فوت شدہ برکت لوٹ آتی ہے۔ غرضیکہ اس میں ہمارا فائدہ ہے اس کے دو نقصان اور ممکن ہے کہ وہ مردود آئندہ ہمارے ساتھ بغیر بسم اللہ والا کھانا بھی ڈر کے سبب نہ کھائے کہ شاید یہ بیچ میں بسم اللہ پڑھ لے اور مجھے قے کرنی پڑے۔ غالباً یہ شخص اکیلا کھا رہا تھا اگر حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ کھاتا ہوتا تو بسم اللہ نہ بھولتا وہاں تو حاضرین بسم اللہ بلند آواز سے کہتے تھے اور ساتھیوں کو بسم اللہ کہنے کا حکم کرتے تھے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۳)

کھانے میں ہم ہاتھ نہیں ڈالتے۔ ایک مرتبہ کا واقعہ ہے کہ ہم حضور (علیہ الصلوٰۃ والسلام) کے پاس حاضر تھے، ایک لڑکی دوڑتی ہوئی آئی، جیسے اسے کوئی ڈھکیل رہا ہے، اس نے کھانے میں ہاتھ ڈالنا چاہا، حضور (علیہ الصلوٰۃ والسلام) نے اس کا ہاتھ پکڑ لیا پھر ایک اعرابی دوڑتا ہوا آیا جیسے اسے کوئی ڈھکیل رہا ہے، حضور (علیہ الصلوٰۃ والسلام) نے اس کا ہاتھ بھی پکڑ لیا۔

اور یہ فرمایا کہ جب کھانے پر اللہ (عزوجل) کا نام نہیں لیا جاتا تو وہ کھانا شیطان کے لیے حلال ہو جاتا ہے۔ شیطان اس لڑکی کے ساتھ آیا کہ اس کے ساتھ کھائے، میں نے اس کا ہاتھ پکڑ لیا پھر اس اعرابی کے ساتھ آیا کہ اس کے ساتھ کھائے، میں نے اس کا ہاتھ پکڑ لیا۔ قسم ہے اس کی جس کے دست قدرت میں میری جان ہے، اس کا ہاتھ ان کے ہاتھ کے ساتھ میرے ہاتھ میں ہے، اس کے بعد حضور (علیہ الصلوٰۃ والسلام) نے اللہ (عزوجل) کا نام ذکر کیا یعنی بسم اللہ کہی اور کھانا کھایا۔ (10) اسی کے مثل امام احمد و ابو داؤد و نسائی و حاکم نے بھی روایت کی ہے۔

(10) صحیح مسلم، کتاب الاشریہ، باب آداب الطعام والشراب... راجع، الحدیث: ۱۰۲- (۲۰۱۷)، ص ۱۱۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس سے معلوم ہوا کہ جب کسی بزرگ کے ساتھ دسترخوان پر حاضر ہو تو ان سے پہلے کھانا شروع نہ کرے کہ اس میں بے ادبی ہے۔ یہ اس صورت میں ہے کہ سارے کھانے والے بالغ ہوں، ان میں ایک بزرگ باقی خدام لیکن اگر کھانے والے میں کوئی نابالغ بھی ہو تو وہ پہلے کھانا شروع کر سکتا ہے بلکہ اس کے ہاتھ پہلے دھلائے جائیں اور کھانا کھا چکنے پر اس کے ہاتھ پیچھے دھلائے جائیں کیونکہ بچے آہستہ آہستہ کھاتے ہیں، دیر تک کھاتے ہیں اور کھانا سامنے آنے پر زیادہ صبر نہیں کر سکتے۔ یہ تمام احکام عائگیری وغیرہ میں مطالعہ کرو۔

۲۔ جاریہ سے مراد لونڈی نہیں بلکہ چھوٹی بچی ہے جو اتنی تیز دوڑتی آرہی تھی جیسے کسی نے اسے اس طرح دھکا دیا ہو، دھکا کھا کر انسان بہت تیزی سے گرتا ہے۔

۳۔ یعنی ابھی ہم نے کھانے کو ہاتھ نہیں لگایا تھا اس نے پہلے ہی ہاتھ ڈالنا چاہا بغیر بسم اللہ پڑھے ہوئے درحقیقت اسے شیطان اسی طرح ہمگائے ہوئے لارہا ہے۔

۴۔ یہاں بھی یہی حال تھا کہ وہ بدوی صاحب بھی ان حضرات سے پہلے ہی بغیر بسم اللہ پڑھے ہوئے ہاتھ ڈالنا چاہتے تھے یہاں بھی شیطان ہی کا دھوکا تھا۔

۵۔ یعنی اگر جماعت میں ایک آدمی بھی بغیر بسم اللہ کھانے لگے تو شیطان اس کھانے میں شریک ہو جاتا ہے تم سب کو بسم اللہ پڑھ کر کھاتے شیطان کو ساتھ کھانے کی جرأت نہ ہوتی اس لیے وہ آگے پیچھے ان دونوں کو لایا کہ یہ بغیر بسم اللہ کھائے اور ان کے ذریعہ شیطان بھی کھائے۔ اس سے معلوم ہوا کہ وہ بچے جو بسم اللہ پڑھ سکیں ضرور بسم اللہ پڑھ کر کھایا کریں ورنہ شیطان کھانے میں شریک ہوگا، ہاں بالکل بے سمجھ بچہ جو صحیح بول نہ سکے اس حکم سے علیحدہ ہے۔

حدیث ۹: ابن عساکر نے عقبہ بن عامر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا کبھس کھانے پر اللہ (عزوجل) کا نام ذکر نہ کیا ہو، وہ بیماری ہے اور اس میں برکت نہیں ہے اور اس کا کفارہ یہ ہے کہ اگر ابھی دسترخوان نہ اٹھایا گیا ہو تو بسم اللہ پڑھ کر کچھ کھالے اور دسترخوان اٹھایا گیا ہو تو بسم اللہ پڑھ کر انگلیاں چاٹ لے۔ (11)

حدیث ۱۰: دیلمی نے انہی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کھائے یا پیے تو یہ کہہ لے: بِسْمِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِہِ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَاءِ یَا حَسْبُ یَا قَیُّوْمُ۔ (12) پھر اس سے کوئی بیماری نہ ہوگی، اگرچہ اس میں زہر ہو۔ (13)

حدیث ۱۱: صحیح مسلم میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کھانا کھائے تو दाہنے ہاتھ سے کھائے اور پانی پیے تو दाہنے ہاتھ سے پیے۔ (14)

حدیث ۱۲: صحیح مسلم میں انہیں سے مروی ہے کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا: کوئی شخص نہ

۶۔ تاکہ یوں دونوں میں سے کوئی بغیر بسم اللہ ہاتھ نہ ڈال سکے اور شیطان کو موقع نہ ملے اس کی کوشش بیکار جائے۔

۷۔ مشکوٰۃ شریف کے بعض نسخوں میں ہے بیدھا اس حشیہ خمیر کا مرجع وہ لڑکی اور یہ بدوی دونوں ہیں یعنی ان دونوں کے ہاتھوں کے ساتھ شیطان کا ہاتھ بھی میرے ہاتھ میں ہے۔ اس نسخہ میں بیدھا ہے جس کا مرجع لڑکی ہے چونکہ پہلے وہ ہی آئی تھی اس لیے اس کا ذکر فرمایا۔ اس سے معلوم ہوا جس کے ساتھ یا جس پر شیطان ہو اس کو پکڑ لینے سے وہ شیطان بھی پکڑا جاتا ہے۔ بعض علین کو دیکھا گیا کہ وہ اس شخص کے ہاں یا ہاتھ پکڑ لیتے ہیں جس پر شیطان سوار ہو اس سے خود شیطان قبضہ میں آ جاتا ہے، اس عمل کا ماخذ یہ حدیث ہو سکتی ہے۔

۸۔ ان دونوں نے بھی بسم اللہ پڑھ کر کھایا اور دوسرے حضرات نے بھی۔ حضرات صوفیاء چشتیہ فرماتے ہیں کہ تو الی الہ کے لیے حلال ہے تا الہ کے لیے حرام، اگر مجمع میں ایک بھی نا اہل شریک ہو جائے تو سب کے لیے ممنوع کیونکہ ایک نا اہل کی شرکت سے شیطان شریک ہو جاتا ہے ورنہ کام شیطانی بن جاتا ہے، اس قول کا ماخذ یہ حدیث ہے کہ اگر کھانے والوں کو جماعت میں ایک شخص بھی بغیر بسم اللہ شریک ہو جائے تو شیطان شریک ہو جاتا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۵)

(11) تاریخ دمشق لابن عساکر، رقم: ۱۲۴۷۴، ج ۶، ص ۳۲۵۔

(12) ترجمہ: اللہ تعالیٰ کے نام سے شروع کرتا ہوں، جس کے نام کی برکت سے زمین و آسمان کی کوئی چیز نقصان نہیں پہنچا سکتی، اے ہمیشہ زندہ و قائم رہنے والے!

(13) الفردوس بما ثور الخطاب، الحدیث: ۱۱۱۳، ج ۱، ص ۱۶۸۔

(14) صحیح مسلم، کتاب الاثریۃ، باب آداب الطعام والشراب... إلخ، الحدیث: ۱۰۵۔ (۲۰۲۰)، ص ۱۱۷۔

- بائیں ہاتھ سے کھانا کھائے، نہ پانی پیے کہ بائیں ہاتھ سے کھانا پینا شیطان کا طریقہ ہے۔ (15)
- حدیث ۱۳: ابن ماجہ نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ داہنے ہاتھ سے کھائے اور داہنے ہاتھ سے پیے اور داہنے ہاتھ سے لے اور داہنے ہاتھ سے دے، کیونکہ شیطان بائیں سے کھاتا ہے، بائیں سے پیتا ہے اور بائیں سے لیتا ہے اور بائیں سے دیتا ہے۔ (16)
- حدیث ۱۴: ابن النجار نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: تین انگلیوں سے کھانا انبیاء علیہم السلام کا طریقہ ہے۔ (17)
- اور حکیم نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: تین انگلیوں سے کھاؤ کہ یہ سنت ہے اور پانچوں انگلیوں سے نہ کھاؤ کہ یہ اعراب (گنواروں) کا طریقہ ہے۔ (18)
- حدیث ۱۵: صحیح مسلم میں کعب بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تین انگلیوں سے کھانا تناول فرماتے اور پونچھنے سے پہلے ہاتھ چاٹ لیتے۔ (19)
- حدیث ۱۶: صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے انگلیوں اور برتن کے چاٹنے کا حکم دیا اور یہ فرمایا کہ تمہیں معلوم نہیں کہ کھانے کے کس حصے میں برکت ہے۔ (20)

(15) المرجع السابق، الحدیث: ۱۰۶۔ (۲۰۲۰)، ص ۱۱۱۔

(16) سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب الاکل بالیسین، الحدیث: ۳۲۶۶، ج ۴، ص ۱۲۔

(17) الجامع الصغیر للسیوطی، الحدیث: ۳۰۷۴، ص ۱۸۴۔

(18) کنز العمال، کتاب المعیشۃ... إلخ، رقم: ۴۰۸۷۲، ج ۱۵، ص ۱۱۵۔

(19) صحیح مسلم، کتاب الاشریہ، باب استحباب لعق الاصل... إلخ، الحدیث: ۱۳۲۔ (۲۰۳۲)، ص ۱۱۲۲۔

حکیم ارامت کے مدنی پھول

یعنی ردنی کا لقمہ تین انگلیوں سے کھاتے تھے انگوٹھا، گلہ کی انگلی بیچ کی انگلی۔ سنت یہ ہی ہے کہ ردنی ان تینوں انگلیوں سے ہی کھائے بلا ضرورت زیادہ انگلیاں استعمال نہ کرے، چاول تو بغیر پانچ انگلیوں کے کھائے جاسکتے ہی نہیں اس لیے پانچوں انگلیوں سے ان کا لقمہ بنایا جائے۔ عموماً اہل عرب فرنی چاولوں کا سلیقہ چار انگلیوں سے کھاتے ہیں۔

۲۔ یعنی حضور، نور صلی اللہ علیہ وسلم پہلے انگلیاں چاٹتے تھے پھر رد مال سے پونچھتے تھے، پھر دھوتے تھے اب بھی ایسا کرنا سنت ہے، سنی ہوئی انگلیاں صرف دھوؤ، اناطریقہ منکرین ہے۔ جن روایات میں پانچ انگلیوں سے کھانا برا ہے وہاں یا پکلی چیز کا کھانا مراد ہے یا وہ عمل کبھی کبھی تھیں جو زکے لیے، بہر حال سنت یہ ہے جو یہاں بیان ہوا۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۶)

(20) صحیح مسلم، کتاب الاشریہ، باب استحباب لعق الاصل... إلخ، الحدیث: ۱۳۳۔ (۲۰۳۳)، ص ۱۱۲۲۔

حدیث ۱۷: صحیح بخاری و مسلم میں عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ کھانے کے بعد ہاتھ کو نہ پونچھے، جب تک چاٹ نہ لے یا دوسرے کو چٹا نہ دے۔ (21) یعنی ایسے شخص کو چٹا دے جو کراہت و نفرت نہ کرتا ہو، مثلاً تلامذہ و مریدین کہ یہ استاد و شیخ کے جھوٹے کو تبرک جانتے ہیں اور بڑی خوشی سے استعمال کرتے ہیں۔

حدیث ۱۸: امام احمد و ترمذی و ابن ماجہ نے نبیہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو کھانے کے بعد برتن کو چاٹ لے گا وہ برتن اس کے لیے استغفار کریگا۔ (22)

رزین کی روایت میں یہ بھی ہے، کہ وہ برتن یہ کہتا ہے کہ اللہ تعالیٰ تجھ کو جہنم سے آزاد کرے، جس طرح تو نے مجھے شیطان سے نجات دی۔ (23)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ کھاتے پیتے وقت، پیشاب پاخانہ، نماز و دعا حتیٰ کہ اپنی بیوی سے صحبت کرتے وقت بھی قرینی شیطان انسان کے ساتھ رہتا ہے ساتھ ہی کھانا پیتا حتیٰ کہ ساتھ ہی صحبت کرتا ہے جس سے کھانے میں بہت بے برکتی ہوتی ہے اور اولاد بے ادب سرکش ہوتی ہے، لہٰذا ان اوقات میں بسم اللہ پڑھ لی جائے تو کھانوں میں برکت ہوتی ہے اولاد نیک و صالح اور با ادب پیدا ہوتی ہے، اگر پاخانہ جاتے وقت بسم اللہ پڑھ لی جائے تو شیطان اس کا ستر نہیں دیکھ سکتا۔

۲۔ اگر گرے ہوئے لقمہ میں مٹی وغیرہ پاک چیز لگ گئی ہے تو اسے صاف کر کے لقمہ کھائے اور اگر نجاست لگ گئی ہے تو دھو کر کھالے، اگر دھل نہ سکے تو کتے بلی کو کھادے یوں ہی نہ چھوڑ دے کہ انہیں مال ضائع کرنا ہے اور رب تعالیٰ کی نعمت کی ناقدری ہے۔

۳۔ کہ اس چھوڑے ہوئے لقمہ کو یا تو شیطان کھا ہی لے گا یا اسکے ضائع ہونے پر خوش ہوگا شیطان کے دونوں معنی ہو سکتے ہیں۔

۴۔ لہٰذا کچھ بھی نہ چھوڑے سب ہی چاٹ لے، اگر فی آدمی ایک ماشہ کھانا بھی برتن میں لگا رہا جو برتن دھوتے ہوئے تالیوں میں گیا تو حساب لگاؤ کہ جس شہر میں آٹھ دس لاکھ آدمی رہتے ہوں تو دو دفعہ کتنا کھانا تالیوں میں جاتا ہے، یہ فضول خرچی بھی ہے، مال ضائع کرنا بھی، کھانے کی بے ادبی بھی اس لیے کچھ بھی نہ چھوڑو برتن کو اچھی طرح صاف کر دو کھانے کا احترام و ادب یہ ہی ہے یا تنہا چھوڑو کہ دوسرا آدمی کھا سکے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۹)

(21) صحیح بخاری، کتاب الاطعمۃ، باب لعق الاصابیح... الخ، الحدیث: ۵۴۵۶، ج ۳، ص ۵۴۲۔

(22) المسند للامام احمد بن حنبل، مسند البصریین، حدیث نبیہ: الحدیث: ۴۰۷۵۰، ج ۷، ص ۳۸۲۔

(23) مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الاطعمۃ، الفصل الثالث، الحدیث: ۴۲۲۲، ج ۲، ص ۳۵۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یہ وہ ہی نبیہ ہیں جن کا ذکر بھی کچھ پہلے ہوا جنہیں نبیہ الخیر کہتے ہیں۔

حدیث ۱۹: طبرانی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے کھانے اور پانی میں پھونکنے سے ممانعت فرمائی۔ (24)

حدیث ۲۰: صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: شیطان تمہارے ہر کام میں حاضر ہو جاتا ہے۔ کھانے کے وقت بھی حاضر ہو جاتا ہے۔ لہذا اگر لقمہ گر جائے اور اس میں کچھ لگ جائے تو صاف کر کے کھا لے اسے شیطان کے لیے چھوڑ نہ دے اور جب کھانے سے فارغ ہو جائے تو انگلیاں چاٹ لے کیونکہ یہ معلوم نہیں کہ کھانے کے کس حصے میں برکت ہے۔ (25)

۲۔ ظاہر یہ ہوا کہ پیانہ اپنی زبان میں یہ الفاظ رکھتا ہے صرف زبان حال مراد نہیں۔ اس سے یہ معلوم ہوا کہ سنا ہوا برتن بغیر صاف کیے ہوئے پڑا رہے تو اس سے شیطان چاٹتا ہے، حدیث ظاہر پر ہے کسی تاویل کی ضرورت نہیں۔ بعض نے فرمایا کہ کہنے سے مراد ہے زبان حال سے کہنا اور شیطان کے چاٹنے سے مراد کتے بلیوں کا چاٹنا کہ بچے ہوئے برتن کو کتے بچے چاٹتے ہیں اس سے برتن کی توہین ہوتی ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۰)

(24) المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن العباس، الحدیث: ۲۸۱۸، ج ۱، ص ۶۶۲۔

والمعجم الأوسط باب الحیم، الحدیث: ۵۱۳۸، ج ۴، ص ۴۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ برتن میں سانس لینا جانوروں کا کام ہے، نیز سانس بھی زہریلی ہوتی ہے اس لیے برتن سے الگ منہ کر کے سانس لو۔ گرم دودھ یا چائے کو پھونکوں سے ٹھنڈا نہ کرو بلکہ کچھ ٹھہر دو قدرے ٹھنڈی ہو جائے پھر پیو، اگر پانی میں تنکا وغیرہ ہو تو کچھ گرا دو پھونک سے الگ نہ کرو۔ بعض لوگوں کو گندہ دہنی کی بیماری ہوتی ہے انکی پھونک سے پانی میں بدبو پیدا ہو جاتی ہے اس لیے ہر شخص ان دونوں سے پرہیز کرے برتن میں سانس لینے اور اس میں پھونک مارنے سے، حضور کے احکام میں صراحتیں ہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۲۵)

(25) صحیح مسلم، کتاب الاثریۃ، باب استحباب لعق الاصابیح... إلخ، الحدیث: ۱۳۵۔ (۲۰۳۳)، ص ۱۱۲۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ کھاتے پیتے وقت، پیشاب پاخانہ، نماز و دعا حتیٰ کہ اپنی بیوی سے محبت کرتے وقت بھی قرینی شیطان انسان کے ساتھ رہتا ہے ساتھ ہی کھاتا پیتا حتیٰ کہ ساتھ ہی محبت کرتا ہے جس سے کھانے میں بہت بے برکتی ہوتی ہے اور اولاد بے ادب سرکش ہوتی ہے، اگر ان اوقات میں بسم اللہ پڑھ لی جائے تو کھانوں میں برکت ہوتی ہے اولاد نیک و صالح اور باادب پیدا ہوتی ہے، اگر پاخانہ جاتے وقت بسم اللہ پڑھ لی جائے تو شیطان اس کا ستر نہیں دیکھ سکتا۔

۲۔ گرم کرے ہوئے لقمہ میں مٹی وغیرہ پاک چیز لگ گئی ہے تو اسے صاف کر کے لقمہ کھائے اور اگر نجاست لگ گئی ہے تو دھو کر کھائے، اگر دھل نہ سکے تو کتے بلی کو کھلا دے یوں ہی نہ چھوڑ دے کہ انہیں مال ضائع کرنا ہے اور رب تعالیٰ کی نعمت کی ناقدری ہے۔

حدیث ۲۱: ابن ماجہ نے حسن بصری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ معقل بن یسار رضی اللہ تعالیٰ عنہ کھانا کھا رہے تھے، ان کے ہاتھ سے لقمہ گر گیا، انہوں نے اٹھا لیا اور صاف کر کے کھا لیا۔ یہ دیکھ کر گنواروں نے آنکھوں سے اشارہ کیا (کہ یہ کتنی حقیر و ذلیل بات ہے کہ گرے ہوئے لقمہ کو انھوں نے کھا لیا) کسی نے ان سے کہا، خدا امیر کا بھلا کرے (معقل بن یسار وہاں امیر و سردار کی حیثیت سے تھے) یہ گنوار کنکھیوں سے اشارہ کرتے ہیں کہ آپ نے گرا ہوا لقمہ کھا لیا اور آپ کے سامنے یہ کھانا موجود ہے۔ انھوں نے فرمایا ان عجمیوں کی وجہ سے میں اس چیز کو نہیں چھوڑ سکتا ہوں جو میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے سنا ہے، ہم کو حکم تھا کہ جب لقمہ گر جائے، اسے صاف کر کے کھا جائے، شیطان کے لیے نہ چھوڑ دے۔ (26)

حدیث ۲۲: ابن ماجہ نے ام المومنین عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مکان میں تشریف لائے، روٹی کا ٹکڑا پڑا ہوا دیکھا، اس کو لے کر پونچھا پھر کھا لیا اور فرمایا: عائشہ! اچھی چیز کا احترام کرو کہ یہ چیز (یعنی روٹی) جب کسی قوم سے بھاگی ہے تو لوٹ کر نہیں آئی۔ (27) یعنی اگر ناشکری کی وجہ سے کسی قوم سے رزق چلا جاتا ہے تو پھر واپس نہیں آتا۔

حدیث ۲۳: طبرانی نے عبد اللہ ابن ام حرام رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا کہ روٹی کا احترام کرو کہ وہ آسمان و زمین کی برکات سے ہے، جو شخص دسترخوان سے گری ہوئی روٹی کو کھا لے گا، اس کی مغفرت ہو جائے گی۔ (28)

حدیث ۲۴: دارمی نے اسما رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ جب ان کے پاس ٹرید لایا جاتا تو حکم کرتیں کہ چھپا دیا جائے کہ اس کی بھاپ کا جوش ختم ہو جائے اور فرماتیں کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے سنا ہے

۱۔ کہ اس چھوڑے ہوئے لقمہ کو یا تو شیطان کھا ہی لے گا یا اسکے ضائع ہونے پر خوش ہوگا شیطان کے دونوں معنی ہو سکتے ہیں۔

۲۔ ہذا کچھ بھی نہ چھوڑے سب ہی چاٹ لے، اگر فی آدمی ایک ماشہ کھانا بھی برتن میں لگا رہا جو برتن دھوتے ہوئے مایوں میں گیا تو حساب لگانا کہ جس شہر میں آٹھ دس لاکھ آدمی رہتے ہوں تو دو دفعہ کتنا کھانا مایوں میں جاتا ہے، یہ فضول خرچی بھی ہے، مال ضائع کرنا بھی، کھانے کی بے ادبی بھی اس لیے کچھ بھی نہ چھوڑو برتن کو اچھی طرح صاف کر دیکھانے کا احترام و ادب یہ ہی ہے یا اتنا چھوڑو کہ دوسرا آدمی کھا سکے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۹)

(26) سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب اللقمۃ، اذا سقطت، الحدیث: ۳۲۷۸، ج ۴، ص ۱۷۔

(27) سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب النعمی عن إلقاء الطعام، الحدیث: ۳۳۵۳، ج ۴، ص ۴۹۔

(28) ابی مع الصغیر لسیوطی، الحدیث: ۱۳۲۶، ص ۸۸۔

کہ اس سے برکت زیادہ ہوتی ہے۔ (۲۹)

حدیث ۲۵: عالم جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اور ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کرتے ہیں، کہ ارشاد فرمایا: کھانے کو ٹھنڈا کر لیا کرو کہ گرم کھانے میں برکت نہیں ہے۔ (30)

حدیث ۲۶: صحیح بخاری شریف میں ابو امامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے، کہ جب دسترخوان اٹھایا جاتا، اس وقت نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم یہ پڑھتے: اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ حَمْدًا کَثِیْرًا طَیْبًا مُّبَارَکًا فِیْہِ غَیْرُ مَکْفِیٍّ وَلَا مُوَدَّعٍ وَلَا مُسْتَغْنٰی عَنْہُ رَبَّنَا۔ (31)

(29) سنن الدارمی، کتاب الاطعمۃ، باب النھی عن اکل الطعام الحار، الحدیث: ۲۰۳، ج ۲، ص ۱۳۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ٹرید کے معنی پہلے بیان کیے جا چکے ہیں۔ شور بے میں گھائی ہوئی ردئی یعنی آپ بہت گرم کھانا نہ کھاتی تھیں اور کھانا کھول کر پھونکیں مار کر ٹھنڈا نہ کرتی تھیں بلکہ پکنے کے بعد کچھ دیر ڈھکا رہنے دیتیں جب خود ٹھنڈا ہو جاتا تو کھاتی تھیں۔

۲۔ یعنی کھانے کا قدرے ٹھنڈا ہو جانا اور پھونکوں سے ٹھنڈا نہ کرنا برکت کا باعث ہے اس لیے کھانے میں بھی تکلیف نہیں ہوتی، دیہی شریف میں ہے کہ گرم کھانے میں برکت نہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۸۹)

(30) المستدرک للحکم، کتاب الاطعمۃ، باب ابرودا الطعام الحار، الحدیث: ۷۲۰، ج ۵، ص ۱۶۲۔

(31) صحیح البخاری، کتاب الاطعمۃ، باب ما یقول اذا فرغ من طعامہ، الحدیث: ۵۲۵۸، ج ۳، ص ۵۲۳۔

وسنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ما یقول اذا فرغ من الطعام، الحدیث: ۳۲۶۷، ج ۵، ص ۲۸۳۔

ترجمہ: اللہ تعالیٰ کے لیے بے شمار تعریفیں، نہایت پاکیزہ اور بابرکت نہ کفایت کی گئی نہ چھوڑی گئی اور نہ اس سے لاپرواہی برتی گئی۔ اے ہمارے رب! (قبول فرما)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حق یہ ہے کہ یہاں، نمدہ سے مراد کپڑے کا دسترخوان ہے یا کھجور کے پتوں کا نہ کہ لکڑی کا خوان کیونکہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم لکڑی کے خوان اور میز پر کھانا نہ کھاتے تھے۔

۲۔ یعنی ایسی حمد جو ریادغیرہ سے پاک ہو، اخلاص سے شامل ہو یہ تینوں کلمے یعنی کثیر، طیب اور مبارک حمد کی صفات ہیں ورحمہ مفعول ہے نحمدہ فعل پوشیدہ کا۔

۳۔ ظہر یہ ہے کہ غیر پیش سے ہے جو پوشیدہ کی خبر اور یہ کلام دعا یہ ہے، جو کا مرجع بچا ہوا وہ کھانا ہے جو سامنے سے اٹھایا جا رہا ہے یعنی ابھی یہ کام ہم کو کافی نہ ہو چکا ہو، ہم سے وداع نہ ہو گیا ہو، ہم اس سے بے نیاز نہ ہو گئے ہوں، ہم کو پھر بھی عطا ہو۔ یہ تینوں لفظ سم مفعول ہیں ملکی۔ مودع، ورمستغنی اور ہو سکتا ہے کہ غیر کو فتح ہو اور یہ حمد کی صفت یا حال ہو یعنی ہم رب کی ایسی حمد کرتے ہیں جو نہ تو کفایت کی

حدیث ۲۷: صحیح مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اللہ تعالیٰ اس بندہ سے راضی ہوتا ہے کہ جب لقمہ کھاتا ہے تو اس پر اللہ (عزوجل) کی حمد کرتا ہے اور پانی پیتا ہے تو اس پر اس کی حمد کرتا ہے۔ (32)

حدیث ۲۸: ترمذی و ابو داؤد و ابن ماجہ ابو سعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کھانے سے فارغ ہو کر یہ پڑھتے: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسْلِمِينَ. (33)

حدیث ۲۹: ترمذی ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: کھانے والا شکر گزار ویسا ہی ہے جیسا روزہ دار صبر کرنے والا۔ (34)

جا چکی ہے اور بس ہو چکی اور نہ آخری حمد ہے اور نہ ہم آئندہ کے لیے اس حمد سے بے نیاز ہو چکے ہم پھر بھی اپنے رب کی حمد کرتے رہیں اس کی نعمتوں کے گن گاتے رہیں اور ہو سکتا ہے کہ مکلفی، مودع اور مستغنی تینوں اسم قائل ہوں اور یہ عبارت نحمدہ کے مغاٹ سے حال ہو تب معنی ہوں گے کہ ہم اتنی حمد پر کفایت ہی نہ کریں آئندہ بھی حمد کریں نہ حمد کی دواغ کریں نہ آئندہ حمد الہی سے مستغنی و بے نیاز ہو جائیں مگر پہلی توجیہ ظاہر بھی ہے تو یہ بھی اور موقعہ کے مناسب بھی کہ کھانا کھا چکنے پر یہ دعا ہے تو کھانے کے متعلق ہونی چاہیے۔ ربنا مرفوع بھی ہو سکتا ہے منصوب بھی مجرور بھی۔ انت ربنا یا ربنا یہ اللہ کا بدل ہے تو مجرور ہے۔ (مرقات وغیرہ) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۹)

(32) صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء...، باب استحباب حمد اللہ...، الحدیث: ۸۹۔ (۲۷۳۴)، ص ۱۳۶۳۔

(33) سنن ابی داؤد، کتاب الاطعمۃ، باب ما یقول الرجل اذا طعم، الحدیث: ۳۸۵۰، ج ۳، ص ۵۱۳۔

ترجمہ: اللہ تعالیٰ کا شکر ہے جس نے ہمیں کھلایا، پلایا اور ہمیں مسلمان بنایا۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

خواہ اکیلے یا جماعت کے ساتھ پھر خواہ اپنے گھر والوں کے ساتھ خواہ مہمانوں کے ساتھ پھر خواہ اپنے گھر یا کسی اور کے گھر مہمان بن کر ہر کھانے کے بعد یہ دعا پڑھتے۔

۲۔ کھانے پانی سے جسم کی پرورش ہے، اسلام و ایمان سے جان و دل کی پرورش، ان دونوں نعمتوں پر شکر کرتے تھے کیونکہ شکر سے نعمت بڑھتی ہے، قرآن مجید کا وعدہ ہے، فقط پانی پی کر یہ دعا نہ پڑھتے تھے وہاں صرف الحمد للہ کہتے تھے۔ اس سے معلوم ہوا کہ ہر نئی نعمت پا کر نیا شکر کرے چونکہ کھانا اصل مقصود ہے اور پانی اس کے تابع اس لیے نعمت ظاہری کا ذکر پہلے فرماتے تھے باطنی کا بعد میں، نیز دعا کو سلام کے ذکر پر ختم فرمانا اس لیے تھا کہ خاتمہ ایمان پر میسر ہو۔ (مرقات)

۳۔ یہ حدیث احمد اور نسائی نے بھی روایت کی، ابن سنی نے اپنی کتاب الیوم واللیلۃ میں نقل فرمائی۔ غرضیکہ بہت محدثین نے نقل فرمائی۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۴)

(34) سنن الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب: ۴۳، الحدیث: ۲۴۹۴، ج ۴، ص ۲۱۹۔

حدیث ۳۰: ابو داؤد نے ابو ایوب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جب کھاتے یا پیتے، یہ پڑھتے: **الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَطْعَمَ وَسَفَىٰ وَسَوَّغَهُ وَجَعَلَ لَهُ مَخْرَجًا**۔ (35)

حدیث ۳۱: ضیاء نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ ارشاد فرمایا: آدمی کے سامنے کھانا رکھا جاتا ہے اور اٹھانے سے پہلے اس کی مغفرت ہو جاتی ہے۔ (36) اس کی صورت یہ ہے کہ جب رکھا جائے بسم اللہ کہے اور جب اٹھایا جانے لگے الحمد للہ کہے۔

حدیث ۳۲: نسائی وغیرہ نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ کھانے کے بعد یہ دُعا پڑھے:

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ وَمَنْ عَلَيْنَا فَهَذَا نَاوَأْطَعَبْنَا وَسَقَانَا وَكُلَّ بَلَاءٍ حَسَنٍ أَهْلَانَا، الْحَمْدُ لِلّٰهِ غَيْرَ مُوَدَّعٍ رَبِّيْ وَلَا مُكَافِيٍّ وَلَا مَكْفُوْرٍ وَلَا مُسْتَغْنَى عَنْهُ، الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَطْعَمَنَا مِنَ الطَّعَامِ وَسَقَانَا مِنَ الشَّرَابِ وَكَسَانَا مِنَ الْعُرْيِ وَهَدَانَا مِنَ الضَّلَالِ وَبَصُرَنَا مِنَ الْعَمَىٰ وَقَضَّائَنَا

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ شکر کا اقل درجہ یہ ہے کہ بسم اللہ سے شروع کرے الحمد للہ سے ختم کرے، عملی شکر یہ ہے کہ کھاپی کر رب تعالیٰ کی اطاعت کرے، اللہ توفیق دے۔

۲۔ روزہ دار کا کم سے کم صبر یہ ہے کہ اپنے روزہ کو روزہ توڑنے والی چیزوں سے محفوظ رکھے اور درمیانی شکر یہ ہے کہ مکروہات سے بچائے، اعلیٰ شکر یہ ہے کہ ان چیزوں سے روزہ کو محفوظ رکھے جن سے روزہ غیر مقبول ہوتا ہے یعنی سر سے پاؤں تک ہر عضو کا روزہ ہو۔ اس حدیث کا مطلب یہ ہے کہ ایمان کے دو درجن ہیں: شکر اور صبر تو گویا نصف ایمان شکر ہے نصف ایمان صبر، نصف ہونے میں تشبیہ ہے ورنہ روزہ کا خصوصی درجہ وہ ہے جو کسی عبادت کو حاصل نہیں، فرماتا الصوم لی دانا اجزی بہ روزہ میرا ہے اور اس کا ثواب میں ہی دوں گا یا اس کا ثواب خود میں ہوں۔ صوفیاء فرماتے ہیں کہ صابر روزہ دار تو کھانا پینا چھوڑ کر صبر کرتا ہے اور شاکر کھانے والا اس کھانے سے پیدا شدہ قوتوں کو ناجائز جگہ خرچ کرنے سے روک کر صبر کرتا ہے تو شاکر بھی بالواسطہ صابر ہی ہے۔ بہر حال شکر کو صبر سے بہت مزید ہے۔

۳۔ ستان سین کے کسرہ اور نون کے فتح سے ہے، سنہ کے فتح اور نون کے شد سے۔ بعض محدثین نے فرمایا کہ ستان در سنہ دونوں باپ بیٹے صحابی ہیں، بعض نے فرمایا کہ ستان تابعی ہیں اور سنہ صحابی ہیں، سنہ اسلمی ہیں ۳۲ بتیس ہجری میں خلافت عثمانیہ میں ان کی وفات ہوئی، ان کے حالات معلوم نہ ہو سکے۔ (اشعری) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۵)

(35) سنن ابی داؤد، کتاب الاطعمۃ، باب ما یقول الرجل اذا طعم، الحدیث: ۳۸۵۱، ج ۳، ص ۵۱۳۔

ترجمہ: تمام تعریفیں اللہ تعالیٰ کے لیے ہیں، جس نے کھلایا، پلایا اور اسے با آسانی اتارا اور اس کے نکلنے کا راستہ بنایا۔

(36) الحدیث المختارۃ، مستد انس بن مالک، الحدیث: ۲۳۰۰، ج ۶، ص ۲۸۶۔

عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقَهُ تَفَضُّلاً وَالتَّحَدُّ مَذْرُوبٌ الْعِلْمُ (۱۷)

حدیث ۳۳: ابن ماجہ، ابوداؤد، ترمذی، ابن ماجہ نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کوئی شخص کھانا کھائے تو یہ کہے۔ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَآئِدِلْنَا خَيْرًا مِنْهُ۔ (38) اور جب دودھ پیے تو یہ کہے۔ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ۔ (39) کیونکہ دودھ کے سوا کوئی چیز ایسی نہیں جو کھانے اور پانی دونوں کی قائم مقام ہو۔ (40)

حدیث ۳۴: ابن ماجہ نے عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے کھانے پر سے اٹھنے کی ممانعت کی، جب تک کھانا اٹھانا نہ لیا جائے۔ (41)

حدیث ۳۵: ابن ماجہ نے عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جب دسترخوان چنا جائے تو کوئی شخص دسترخوان سے نہ اٹھے، جب تک دسترخوان نہ اٹھالیا جائے اور کھانے سے ہاتھ نہ کھینچے اگرچہ کھا چکا ہو، جب تک سب لوگ فارغ نہ ہو جائیں اور اگر ہاتھ روکنا ہی چاہتا ہے تو معذرت پیش کرے کیونکہ اگر بغیر معذرت کیے ہاتھ روک لے گا تو اس کے ساتھ دوسرا شخص جو کھانا کھا رہا ہے شرمندہ ہوگا، وہ بھی ہاتھ کھینچ لے گا اور شاید ابھی اس کو کھانے کی حاجت باقی ہو۔ (42) اسی حدیث کی بناء پر علماء یہ فرماتے ہیں کہ اگر کوئی شخص کم خوراک ہو تو آہستہ آہستہ تھوڑا تھوڑا کھائے اور اس کے باوجود بھی اگر جماعت کا ساتھ نہ دے سکے تو معذرت پیش کرے تاکہ دوسروں کو شرمندگی نہ ہو۔

(37) کنز العمال، کتاب لمعیثہ، رقم: ۸۴۳، ج ۱۵، ص ۱۱۳۔

ترجمہ: تمام تعریفیں اللہ تعالیٰ کے لیے ہیں، جو کھلاتا ہے اور خود نہیں کھاتا، اس نے ہم پر احسان فرمایا کہ ہمیں ہدایت دی اور ہمیں کھلایا، پلایا اور ہمیں ہر نعمت خوب عطا کی۔ تمام تعریفیں اللہ تعالیٰ کے لیے ہیں، اس حال میں کہ نہ تو وہ نعمت چھوڑی گئی نہ اس کا بدلہ دیا گیا، ورنہ ناشکری کی گئی اور نہ اس سے لاپرواہی برتی گئی۔ تمام تعریفیں اللہ تعالیٰ کے لیے ہیں، جس نے کھانا کھلایا اور پانی پلایا اور برہنگی میں کپڑا پہنایا اور گمراہی سے ہدایت دی اور اندھے پن سے بینا کیا اور اپنی بہت سی مخلوق پر ہمیں فضیلت دی تمام تعریفیں اللہ تعالیٰ کے لیے ہیں، جو تمام جہانوں کا پالنے والا ہے۔

(38) ترجمہ: اے اللہ! عزوجل ہمارے لیے اس (کھانے) میں برکت عطا فرما اور ہمیں اس سے بہتر بدل عطا فرما۔

(39) ترجمہ: اے اللہ! عزوجل ہمارے لیے اس میں برکت عطا فرما اور ہمیں مزید عطا فرما۔

(40) شعب الایمان، باب فی الطعام والمشارب، الحدیث: ۵۹۵۷، ج ۵، ص ۱۰۴۔

(41) سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب النھی ان یقام عن الطعام حتی یرفع... إلخ، الحدیث: ۳۲۹۳، ج ۳، ص ۲۴۔

(42) المرجع السابق، الحدیث: ۳۲۹۵، ج ۳، ص ۲۴۔

حدیث ۳۶: ترمذی و ابو داؤد نے سلمان فارسی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں: میں نے تورات میں پڑھا تھا کہ کھانے کے بعد وضو کرنا یعنی ہاتھ دھونا اور کلی کرنا برکت ہے۔ اس کو میں نے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے ذکر کیا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے ارشاد فرمایا: کھانے کی برکت اس کے پہلے وضو کرنا اور اس کے بعد وضو کرنا ہے۔ (43) (اس حدیث میں وضو سے مراد ہاتھ دھونا ہے)۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اگر کوئی شخص جماعت کے ساتھ کھانا کھائے اور خود جلد کھا چکے اور لوگ ابھی کھا رہے ہوں تو نہ تو دسترخوان سے اٹھے نہ کھانے سے ہاتھ سیٹے بلکہ چھوٹے چھوٹے لقمے کچھ وقفہ سے کھاتا رہے تاکہ دوسرے اپنا پیٹ بھر لیں۔

۲۔ یعنی اگر جانے کی جلدی ہو تو باقی کھانے والے ساتھیوں سے کہہ دے کہ مجھے جلدی ہے میں معذور ہوں آپ حضرات کھاتے رہیں۔ میرے مرشد برحق صدر الافاضل مولانا سید محمد نعیم الدین صاحب مراد آبادی قدس سرہ کا دسترخوان بہت وسیع تھا، حضرت اپنے خادم کے ساتھ کھاتے تھے مگر جلد کھا چکے تو فرمادیتے کہ تم لوگ کھاتے رہو مجھے کچھ عذر ہے وہ عمل شریف اس حدیث کی تفسیر تھا۔

۳۔ اس جملہ میں اس حکم کی حکمت کا بیان ہے کہ اگر تم دسترخوان سے اٹھ کھڑے ہوئے تو تمہارے ساتھی شرم کی وجہ سے بغیر فراغت ہی اٹھ کھڑے ہوں گے وہ بھوکے رہیں گے اس لیے ان کا لحاظ کرتے ہوئے ابھی ٹھہر دیکچھ کھاتے جاؤ۔ امام غزالی فرماتے ہیں جو شخص کم خدا کا ہو جب وہ جماعت کے ساتھ کھائے تو کچھ دیر بعد کھانا شروع کرے اور چھوٹے چھوٹے لقمے اٹھائے اور دیر دیر سے کھائے مگر کھانا سب کے ساتھ ختم کرے۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۰۲)

(4: سنن الترمذی، کتاب الاطعمہ، باب ما جاء فی الوضوء قبل الطعام وبعده، الحدیث: ۱۸۵۳، ج ۲، ص ۳۳۳)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۲۔ یعنی مسلمان ہونے سے پہلے میں نے توریت میں پڑھا تھا۔

۳۔ یہاں وضو لغوی معنی میں ہے جو بنا ہے وضو سے بمعنی صفائی اور اچھائی لہذا اس کے معنی ہیں ہاتھ و منہ کی صفائی کرنا کہ ہاتھ دھونا کلی کر لینا۔

۴۔ یا تو توریت شریف کے اس فرمان کی تصدیق و تائید کے لیے یا یہ پوچھنے کے لیے کہ اب اسلام میں بھی یہ حکم ہے یا دیگر احکام کی طرح منسوخ ہو گیا۔

۵۔ یعنی توریت شریف میں دوبار ہاتھ دھونے کلی کرنے کا حکم تھا کھانے سے پہلے اور کھانے کے بعد مگر یہود نے صرف بعد رکھ پہلے کا ذکر مٹا دیا۔ کھانے سے پہلے ہاتھ دھونے کلی کرنے کی ترغیب اس لیے ہے کہ عموماً کام کاج کی وجہ سے ہاتھ میلے دانت میلے ہو جاتے ہیں اور کھانے میں ہاتھ و منہ چکنے ہو جاتے ہیں لہذا دونوں وقت یہ صفائی کر لو کھانا کھا کر کلی کر لینے والا شخص ان شاء اللہ پانیوریا سے محفوظ رہتا ہے، وضو میں مسواک کرنے کا عادی دانتوں اور معدے کے امراض سے بچا رہتا ہے، کھانے کھانے کے فوراً بعد پیشاب کر لینے کی ہے۔

حدیث ۳۷: طبرانی ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے راوی، کہ ارشاد فرمایا: کھانے سے پہلے اور بعد میں وضو کرنا (ہاتھ مونہ دھونا) محتاجی کو دور کرتا ہے اور یہ مسلیں (علیہم السلام) کی سنتوں میں سے ہے۔ (44)

حدیث ۳۸: ابن ماجہ نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ فرمایا: جو یہ پسند کرے کہ اللہ تعالیٰ اس کے گھر میں خیر زیادہ کرے تو جب کھانا حاضر کیا جائے، وضو کرے اور جب اٹھایا جائے اس وقت وضو کرے۔ (45) یعنی ہاتھ مونہ دھولے۔

حدیث ۳۹: ابن ماجہ ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کرتے ہیں، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا کہ اکٹھے ہو کر کھاؤ، الگ الگ نہ کھاؤ کہ برکت جماعت کے ساتھ ہے۔ (46)

حدیث ۴۰: ترمذی نے عکراش بن ذویب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں: ہمارے پاس ایک برتن میں بہت سی ٹرید اور بوٹیاں لائیں گئیں۔ میرا ہاتھ برتن میں ہر طرف پڑنے لگا اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اپنے سامنے سے تناول فرمایا۔ پھر حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے اپنے بائیں ہاتھ سے میرا داہنا ہاتھ پکڑ لیا اور فرمایا کہ عکراش ایک جگہ سے کھاؤ کہ یہ ایک ہی قسم کا کھانا ہے۔ اسکے بعد طبق میں طرح طرح کی کھجوریں لائیں گئیں، میں نے اپنے سامنے سے کھانی شروع کیں اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا ہاتھ مختلف جگہ طبق میں پڑتا۔ پھر فرمایا کہ عکراش جہاں سے چاہو کھاؤ، کہ یہ ایک قسم کی چیز نہیں۔ پھر پانی لایا گیا حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے ہاتھ دھوئے اور ہاتھوں کی تری سے مونہ اور کلائیوں اور سر پر مسح کر لیا اور فرمایا کہ عکراش جس چیز کو آگ نے چھوا یعنی جو آگ سے پکائی گئی ہو، اس کے کھانے کے بعد یہ وضو ہے۔ (47)

عدت ڈاوا اس سے گردہ و مثانہ کے امراض سے حفاظت ہے بہت مجرب ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۷)

(44) المعجم الاوسط، باب الحیم، الحدیث: ۱۶۶۰، ج ۵، ص ۲۳۱۔

(45) سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمہ، باب الوضوء عند الطعام، الحدیث: ۳۲۶۰، ج ۴، ص ۹۔

(46) المرجع السابق، باب الاجتماع علی الطعام، الحدیث: ۳۲۸۷، ج ۴، ص ۲۱۔

(47) سنن الترمذی، کتاب الاطعمہ، باب ماجاء فی التسمیۃ، الحدیث: ۱۸۵۵، ج ۳، ص ۳۳۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ تسمیٰ ہیں، بصرہ میں قیام رہا، آپ ہی اپنی قوم کے صدقات لے کر بارگاہ رسالت میں حاضر ہوئے تھے۔

۲۔ ٹرید کے معنی پہلے بیان ہو چکے کہ گوشت میں بھگی ہوئی گلائی ہوئی روٹی جس میں بوٹی (شوربا) روٹی یک جان کر لی جائیں۔ و ذر جمع ہے ذرۃ کی بمعنی گوشت کے ٹکڑے بغیر ہڈی والے یعنی چھوٹی بوٹیاں۔ (مرقات، لمعات)

۱۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کسی کے ہاتھ میں چٹنائی لی ہو اور بغیر ہاتھ دھوئے وہ کھائے اور اس کو چھ کھلیفہ تبلیغ ہوئے تو وہ خود اپنے ہی کو ملامت کرے۔ (48) اسی کی مثل حضرت فاطمہ زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے بھی مروی ہے۔

۳۔ یعنی ہر طرف سے کھانا شروع کیا۔ مطلب بنا ہے خط سے بمعنی اونٹ کا چارہ چرنا، چونکہ اونٹ ہر طرف سے کھاتا ہے۔ اس لیے ہر طرف سے کھانے کو جذب کیا جاتا ہے۔

۴۔ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کا اپنے سامنے سے کھانا حضرت عکراش کی تعلیم کے لیے کہ انہیں کھانے کا طریقہ آجائے ورنہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم ہر طرف سے کھا سکتے کیونکہ آپ اپنے خادم کے ساتھ کھا رہے تھے لہذا یہ حدیث اس روایت کے خلاف نہیں کہ حضور انور کے ساتھ حضرت انس کھا رہے تھے تو آپ پیالہ میں ہر طرف سے کدو تلاش کر کے کھاتے رہے، وہ عمل بھی تعلیم کے لیے تھا۔ معلوم ہوا کہ عالم قوی تبلیغ کے ساتھ عمل تبلیغ بھی کرے، حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے چالیس سال عملی تبلیغ فرما کر پھر ظہور نبوت کے بعد قوی تبلیغ کی۔

۵۔ کیونکہ حضور انور کا بایاں ہاتھ صاف تھا دابنے ہاتھ میں سالن کا اثر تھا، حضرت عکراش کے داہنے کا اوپر کا حصہ صاف تھا۔

۶۔ اور جب کھانا ایک ہو تو ہر طرف سے کھانا حریص ہونے کی علامت ہے کہ دوسرے کے سامنے بوٹی یا روغن لے کر کھایا جائے لہذا صرف اپنے سامنے سے کھاؤ۔ (مرقات)

۷۔ یہ ہے حضور انور کے فرمان پر عمل کہ اب اس طباق میں بھی حضرت عکراش کا ہاتھ گردش نہیں کرتا، ان ہاتھوں پر قربان۔

۸۔ اب ہاتھ شریف کی گردش بھی تعلیم کے لیے تھی کہ اے عکراش ہم کو دیکھو ہم ہر طرف سے کھا رہے ہیں تم بھی ہر طرف سے کھاؤ۔

۹۔ اس فرمان عالی سے معلوم ہوا کہ اگر پھل مٹھائی بھی ایک قسم ہو تو ہر شخص اپنے سامنے سے ہی کھائے، اگر چند قسم کی ہو تو جہاں سے جو چاہے اٹھالے مگر پھر بھی درمیان سے نہ کھائے بلکہ دوسرے کناروں سے کھا سکتا ہے۔ (مرقات) خیال رہے کہ اگر برتن میں اکیلا آدمی ہی کھا رہا ہے تب بھی اپنے سامنے سے ہی کھائے کہ یہ ہی سنت ہے جب کہ ایک ہی کھانا ہو۔

۱۰۔ یہ اس لیے کہ اس وقت رد مال موجود نہ تھا بیان جواز کے لئے کہ اسی طرح اعضاء پر اپنے تر ہاتھ خشک کر لینا بھی جائز ہے۔ خیال رہے کہ کھانے سے پہلے ہاتھ دھوئے تو انہیں نہ پونچھے اور جب کھانے کے بعد ہاتھ دھوئے تو پونچھ لے اس میں بڑی حکمت ہے۔

۱۱۔ یعنی وہ جو ہم نے فرمایا ہے کہ آگ کی پکی چیز کھانے سے وضو کرے وہاں وضو سے مراد ہے یہ ہی ہاتھ دھونا کلی کرنا ہے نہ کہ نماز کا وضو۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۱)

(48) سنن ابی داود، کتاب الاطعمۃ، باب فی غسل الید من الطعام، الحدیث: ۳۸۵۲، ج ۳، ص ۵۱۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی جو کھانا کھا کر ہاتھ نہ دھوئے یوں کھانے کی چکنائی اس کے ہاتھ میں لگی رہے اور دو پہری میں یا رات میں اسی طرح سو جائے۔

۲۔ یہاں مصیبت سے مراد چوہے یا سانپ کا کاٹ جانا ہے کہ یہ دونوں جانور کھانے کی خوشبو پر دوڑتے ہیں یا اس سے مراد برص کی

حدیث ۴۲: حاکم نے ابو عبس بن جبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ ارشاد فرمایا: کھانے کے وقت جوتے اتار لو کہ یہ سنتِ جمیلہ (اچھا طریقہ) ہے۔ (49) اور انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی روایت میں ہے، کہ کھانا رکھا جائے تو جوتے اتار لو، کہ اس سے تمہارے پاؤں کے لیے راحت ہے۔ (50)

حدیث ۴۳: ابو داؤد عاصم رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے راوی، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے ارشاد فرمایا کہ (کھاتے وقت) گوشت کو چھری سے نہ کاٹو کہ یہ عجیبوں کا طریقہ ہے، اس کو دانت سے نوچ کر کھاؤ کہ یہ خوش گوار اور زود ہضم ہے۔ (51)

یہ اس وقت ہے کہ گوشت اچھی طرح پک گیا ہو۔ ہاتھ یا دانت سے نوچ کر کھایا جاسکتا ہو۔ آج کل یورپ کی تقلید میں بہت سے مسلمان بھی چھری کاٹنے سے کھاتے ہیں، یہ مذموم طریقہ ہے اور اگر بوجہ ضرورت چھری سے گوشت کاٹ کر کھایا جائے کہ گوشت اتنا گلا ہوا نہیں ہے کہ ہاتھ سے توڑا جاسکے یا دانتوں سے نوچا جاسکے یا مثلاً مسلم ران بھنی ہوئی ہے کہ دانتوں سے نوچنے میں دقت ہوگی تو چھری سے کاٹ کر کھانے میں حرج نہیں، اسی قسم کے بعض مواقع پر حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا چھری سے گوشت کاٹ کر تناول فرمانا آیا ہے، اس سے آج کل کے چھری کاٹنے سے کھانے کی دلیل لانا صحیح نہیں۔

حدیث ۴۴: صحیح بخاری میں ابو جحیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: میں تکیہ لگا کر کھانا نہیں کھاتا۔ (52)

بیماری ہے کہ کھانے کے سنے ہوئے ہاتھ جسم کے پسینہ سے لگ کر جہاں چھو جائیں وہاں کوڑھ کے سفید داغ پیدا ہونے کا خطرہ ہوتا ہے۔ (مرقات و اشعہ)

۳۔ نہ کسی شخص کو برا کہے نہ اپنی ثقہ پر اعتراض کرے کہ قصور خود اس کا اپنا ہے۔ مقصد یہ ہے کہ کوئی شخص کھانے کے بھرے ہوئے ہاتھ سے نہ سویا کرے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۷)

(49) المستدرک للحکم، کتاب معرۃ الصحابہ رضی اللہ عنہم، باب دعا النبی... الخ، الحدیث: ۵۵۵۰، ج ۳، ص ۴۲۳۔

(50) سنن مداری، کتاب الاطعمۃ، باب فی خلع النعال عند الاکل، الحدیث: ۲۰۸۰، ج ۲، ص ۱۳۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی جب تمہارے سامنے کھانے کے لیے کھانا رکھا جائے تو جوتے اتار دو جو تاہن کر کھانا نہ کھاؤ ننگے پاؤں کھانا کھانا مفید بھی ہے اور اس

میں کھانے کا ادب بھی۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۸)

(51) سنن ابی داؤد، کتاب الاطعمۃ، باب فی اکل اللحم، الحدیث: ۴۷۷۸، ج ۳، ص ۴۹۰۔

(52) ت. بخاری، کتاب الاطعمۃ، باب الکل مسکاً، الحدیث: ۵۳۹۸، ج ۳، ص ۵۲۸۔

حدیث ۴۵: صحیح بخاری میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے خوان پر کھانا نہیں تناول فرمایا، نہ چھوٹی چھوٹی پیالیوں میں کھایا اور نہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کے لیے پتلی چپتیاں پکائی گئیں۔

دوسری روایت میں یہ ہے، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے پتلی چپاتی دیکھی بھی نہیں۔ قتادہ سے پوچھا گیا کہ کس چیز پر وہ لوگ کھانا کھایا کرتے تھے؟ کہا کہ دسترخوان پر۔ (53)

خوان تپائی کی طرح اونچی چیز ہوتی ہے، جس پر امراء کے یہاں کھانا چنا جاتا ہے تاکہ کھاتے وقت جھکنا نہ پڑے، اس پر کھانا کھانا متکبرین کا طریقہ تھا۔ جس طرح بعض لوگ اس زمانہ میں میز پر کھاتے ہیں، چھوٹی چھوٹی پیالیوں میں کھانا کھانا بھی امراء کا طریقہ ہے کہ ان کے یہاں مختلف قسم کے کھانے ہوتے ہیں، چھوٹے چھوٹے برتنوں میں رکھے جاتے ہیں۔

حدیث ۴۶: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہتے ہیں کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے کھانے کو کبھی عیب نہیں لگایا (یعنی برا نہیں کہا)، اگر خواہش ہوئی کھالیا ورنہ چھوڑ دیا۔ (54)

حدیث ۴۷: صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ ایک فحش کا کھانا، دو ۲ کے لیے کفایت کرتا ہے اور دو ۲ کا کھانا، چار کے لیے کفایت کرتا ہے اور چار کا کھانا، آٹھ کو کفایت کرتا ہے۔ (55)

حدیث ۴۸: صحیح بخاری میں مقدم بن معدیکرب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اپنے اپنے کھانے کو ناپ لیا کرو، تمہارے لیے اس میں برکت ہوگی۔ (56)

حدیث ۴۹: ابن ماجہ و ترمذی و دارمی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں ایک برتن میں شریذ پیش کیا گیا۔ ارشاد فرمایا کہ کناروں سے کھاؤ، بیچ میں سے نہ کھاؤ کہ بیچ

(53) صحیح البخاری، کتاب الاطعمہ، باب ما کان النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم واصحابہ مأکلون، باب شاة مسموطة... إلخ، الحدیث: ۵۳۰۵،

۵۳۲۱، ج ۳، ص ۵۳۲، ۵۳۳۔

(54) صحیح البخاری، کتاب الاطعمہ، باب ما عاب النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم طعاما، الحدیث: ۵۳۰۹، ج ۳، ص ۵۳۱۔

(55) صحیح مسلم، کتاب الاشربة، باب فضيلة المساواة... إلخ، الحدیث: ۱۷۹۰۔ (۲۰۵۹)، ص ۱۱۳۰۔

(56) صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب ما یستحب من الکلیل، الحدیث: ۲۱۲۸، ج ۲، ص ۲۷۔

ومشكاة لصانغ، کتاب الاطعمہ، الفصل الاول، الحدیث: ۴۱۹۸، ج ۲، ص ۴۴۸۔

میں برکت اترتی ہے۔ (57) ثرید ایک قسم کا کھانا ہے، روٹی توڑ کر شوربے میں مل دیتے ہیں۔ عنہ راقد بن صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو یہ کھانا پسند تھا۔

حدیث ۵۰: طبرانی نے عبد الرحمن بن مویق سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: کوئی ظرف (برتن) جو بھرا جائے، پیٹ سے زیادہ برا نہیں اگر تمہیں پیٹ میں کچھ ڈالنا ہی ہے تو ایک تہائی میں کھانا ڈالو اور ایک تہائی میں پانی اور ایک تہائی ہوا اور سانس کے لیے رکھو۔ (58)

حدیث ۵۱: ترمذی و ابن ماجہ نے مقدم بن معدیکرب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں: میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو یہ فرماتے سنا کہ آدمی نے پیٹ سے زیادہ برا کوئی برتن نہیں بھرا۔ ابن آدم کو چند لقمے کافی ہیں جو اس کی پیٹھ کو سیدھا رکھیں۔ اگر زیادہ کھانا ضروری ہو تو تہائی پیٹ کھانے کے لیے اور تہائی پانی کے لیے اور تہائی سانس کے لیے۔ (59)

حدیث ۵۲: ترمذی نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ایک شخص کی ڈکار کی آواز سنی، فرمایا: اپنی ڈکار کم کر، اس لیے کہ قیامت کے دن سب سے زیادہ بھوکا وہ ہوگا جو دنیا میں زیادہ پیٹ بھرتا ہے۔ (60)

حدیث ۵۳: صحیح مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہتے ہیں کہ میں نے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو کھجور کھاتے دیکھا اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) سرین پر اس طرح بیٹھے تھے کہ دونوں گھٹنے کھڑے تھے۔ (61)

حدیث ۵۴: صحیح بخاری و مسلم میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے دو کھجوریں ملا کر کھانے سے منع فرمایا، جب تک ساتھ والے سے اجازت نہ لے لے۔ (62)

(57) سنن الدارمی، کتاب الاطعمۃ، باب النھی عن اکل وسط الثرید... إلخ، الحدیث: ۲۰۴۶، ج ۲، ص ۱۳۷۔

ومشکاۃ المصابیح، کتاب الاطعمۃ، الفصل الثانی، الحدیث: ۴۲۱۱، ج ۲، ص ۴۳۹۔

(58) کنز العمال، کتاب المعیشۃ... إلخ، رقم: ۴۰۸۱۳، ج ۱۵، ص ۱۱۰۔

(59) سنن اترندی، کتاب الزہد، باب ماجاء فی کراہیۃ کثرۃ الاکل، الحدیث: ۲۳۸۷، ج ۴، ص ۶۸۔

(60) سنن اترندی، کتاب صفۃ القیامۃ... إلخ، باب حدیث اکثرہم شیعائی الدنیا... إلخ، الحدیث: ۲۳۸۶، ج ۴، ص ۲۱۷۔

(61) صحیح مسلم، کتاب الثربۃ، باب استحباب تواضع الاکل... إلخ، الحدیث: ۱۳۸۰۔ (۲۰۴۴)، ص ۱۱۳۰۔

(62) المرجع السابق، باب نہی الاکل مع جماعۃ عن قرآن ترمین... إلخ، الحدیث: ۱۵۱۔ (۲۰۴۵)، ص ۱۱۳۱۔

حدیث ۵۵: صحیح مسلم میں عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جن کے یہاں کھجوریں ہیں، اس گھر والے بھوکے نہیں۔ (63) دوسری روایت میں یہ ہے، کہ جس گھر میں کھجوریں نہ ہوں، اس گھر والے بھوکے ہیں۔ (64)

یہ اس زمانے اور اس ملک کے لحاظ سے ہے کہ وہاں کھجوریں بکثرت ہوتی ہیں اور جب گھر میں کھجوریں ہیں تو بال بچوں اور گھر والوں کے لیے اطمینان کی صورت ہے کہ بھوک لگے گی تو انھیں کھالیں گے، بھوکے نہیں رہیں گے۔
حدیث ۵۶: صحیح مسلم میں ابو ایوب انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے پاس جب کھانا حاضر کیا جاتا تو تناول فرمانے کے بعد اس کا بقیہ (اولش) میرے پاس بھیج دیتے۔ ایک دن کھانے کا برتن میرے پاس بھیج دیا، اس میں سے کچھ نہیں تناول فرمایا تھا کیونکہ اس میں لہسن پڑا ہوا تھا۔ میں نے دریافت کیا، کیا یہ حرام ہے؟ فرمایا: نہیں، مگر میں بوک کی وجہ سے اسے ناپسند کرتا ہوں۔ میں نے عرض کی، جس کو حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) ناپسند فرماتے ہیں، میں بھی ناپسند کرتا ہوں۔ (65)

حدیث ۵۷: صحیح بخاری و مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص لہسن یا پیاز کھائے وہ ہم سے علیحدہ رہے یا فرمایا: وہ ہماری مسجد سے علیحدہ رہے یا اپنے گھر میں بیٹھ جائے اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی خدمت میں ایک ہانڈی پیش کی گئی، جس میں سبز ترکاریاں تھیں۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا کہ بعض صحابہ کو پیش کر دو اور ان سے فرمایا کہ تم کھاؤ، اس لیے کہ میں ان سے باتیں کرتا ہوں کہ تم ان سے باتیں نہیں کرتے۔ (66) یعنی ملائکہ سے۔

حدیث ۵۸: ترمذی و ابو داؤد نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے لہسن کھانے سے منع فرمایا، مگر یہ کہ پکا ہوا ہو۔ (67)

حدیث ۵۹: ترمذی نے ام ہانی رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہتی ہیں کہ میرے یہاں حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) تشریف لائے، فرمایا: کچھ تمھارے یہاں ہے۔ میں نے عرض کی، سوکھی روٹی اور سرکہ کے سوا کچھ

(63) المرجع السابق، باب فی إدخال التمر ونحوه من الاقوات للعیال، الحدیث: ۱۵۲۔ (۲۰۳۶)، ص ۱۱۳۱۔

(64) المرجع السابق، الحدیث: ۱۵۳۔ (۲۰۳۶)، ص ۱۱۳۱۔

(65) صحیح مسلم، کتاب الاثریہ، باب لإباحة أكل الثوم... إلخ، الحدیث: ۱۷۰۔ (۲۰۵۳)، ص ۱۱۳۵۔

(66) صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب الانتفال والانصراف... إلخ، الحدیث: ۸۵۵، ج ۱، ص ۲۹۷۔

(67) سنن ابی داؤد، کتاب الاطعمہ، باب فی أكل الثوم، الحدیث: ۳۸۲۸، ج ۳، ص ۵۰۶۔

نہیں، فرمایا: لاؤ، جس گھر میں سرکہ ہے، اس گھر والے سالن سے متاج نہیں۔ (68)

حدیث ۶۰: صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے گھر والوں سے سالن کو دریافت کیا۔ لوگوں نے کہا، ہمارے یہاں سرکہ کے سوا کچھ نہیں۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے اسے طلب فرمایا اور اس سے کھانا شروع کیا اور بار بار فرمایا کہ سرکہ اچھا سالن ہے۔ (69)

حدیث ۶۱: ابن ماجہ نے اسما بنت یزید رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں کھانا حاضر لایا گیا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے ہم پر پیش فرمایا، ہم نے کہا ہمیں خواہش نہیں ہے۔ فرمایا: بھوک اور جھوٹ دونوں چیزوں کو اکٹھا مت کرو۔ (70)

یعنی بھوک کے وقت کوئی کھانا کھلائے تو کھالے یہ نہ کہے کہ بھوک نہیں ہے کہ کھانا بھی نہ کھانا اور جھوٹ بھی بولنا دنیا و آخرت دونوں کا خسارہ ہے۔ بعض تکلف کرنے والے ایسا کیا کرتے ہیں اور بہت سے دیہاتی اس قسم کی عادت رکھتے ہیں کہ جب تک ان سے بار بار نہ کہا جائے، کھانے سے انکار کرتے ہیں اور کہتے ہیں کہ ہمیں خواہش نہیں ہے، جھوٹ بولنے سے بچنا ضروری ہے۔

حدیث ۶۲: صحیح مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہتے ہیں کہ ایک روز رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم باہر تشریف لائے اور ابو بکر و عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما ملے، ارشاد فرمایا: کیا چیز تمہیں اس وقت گھر سے باہر لائی؟ عرض کی، بھوک۔ فرمایا: قسم ہے اس کی جس کے ہاتھ میں میری جان ہے! جو چیز تمہیں گھر سے باہر لائی، وہی مجھے بھی لائی۔ ارشاد فرمایا: اٹھو! وہ لوگ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کے ساتھ کھڑے ہو گئے اور ایک انصاری کے یہاں تشریف لے گئے، دیکھا تو وہ گھر میں نہیں ہیں، انصاری کی بی بی نے مجھ کو ان حضرات کو دیکھ کر حبا و اہلا کہا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے دریافت فرمایا کہ فلاں شخص کہاں ہے؟ کہا کہ میٹھا پانی لینے گئے ہیں۔

اتنے میں انصاری آ گئے۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کو اور شیخین کو دیکھ کر کہا، الحمد للہ آج مجھ سے بڑھ کر کوئی نہیں، جس کے یہاں ایسے معزز مہمان آئے ہوں پھر وہ کھجور کا ایک خوشہ لائے، جس میں ادھ پکی اور خشک کھجوریں بھی تھیں اور رطب بھی تھے اور ان حضرات سے کہا، کہ کھائیے اور خود چھری نکالی (یعنی بکری ذبح کرنے کا ارادہ

(68) سنن اتریزی الشیخ محمد بن ماجہ فی إمام رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث: ۱۷۲، ج ۵، ص ۵۳۲۔

وسنن اتریزی، کتاب الاطعمہ، باب ماجاء فی الخل، الحدیث: ۱۸۴۸، ج ۳، ص ۳۲۲۔

(69) صحیح مسلم، کتاب الاشریہ، باب فضیلة الخل... الحدیث: ۱۶۶، ج ۲، ص ۱۳۴۔

(70) سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمہ، باب عرض الطعام، الحدیث: ۳۲۹۸، ج ۳، ص ۲۶۔

کیا) حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: دودھ والی کوندہ ذبح کرنا۔ انصاری نے بکری ذبح کی، ان حضرات نے بکری کا گوشت کھایا اور کھجوریں کھائیں، پانی پیا۔ جب کھاپی کر فارغ ہوئے، ابوبکر و عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے فرمایا کہ قسم ہے اس کی جس کے ہاتھ میں میری جان ہے! قیامت کے دن اس نعمت کا سوال ہوگا، تمہیں بھوک گھر سے لائی اور واپس ہونے سے پہلے یہ نعمت تم کو ملی۔ (71)

حدیث ۶۳: مسلم و ابو داؤد نے ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: جو شخص چاندی یا سونے کے برتن میں کھاتا یا پیتا ہے، وہ اپنے پیٹ میں جہنم کی آگ اُتارتا ہے۔ (72)

حدیث ۶۴: ابو داؤد وغیرہ نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کھانے میں مکھی گر جائے تو اسے غوطہ دے دو (اور پھینک دو) کیونکہ اس کے ایک بازو میں بیماری ہے اور دوسرے میں شفا ہے اور اسی بازو سے اپنے کو بچاتی ہے جس میں بیماری ہے۔ (73) یعنی وہی بازو کھانے میں پہلے ڈالتی ہے جس میں بیماری ہے، لہذا پوری کو غوطہ دیدو۔

حدیث ۶۵: ابو داؤد و ابن ماجہ و دارمی ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کرتے ہیں، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص کھانا کھائے (اور دانتوں میں کچھ رہ جائے) اسے اگر خلال سے نکالے تو تھوک دے اور زبان سے نکالے تو نکل جائے، جس نے ایسا کیا اچھا کیا اور نہ کیا تو بھی حرج نہیں۔ (74)



(71) صحیح مسلم، کتاب الاثریۃ، باب جواز استنباط غیرہ... راجع، الحدیث: ۱۳۰۔ (۲۰۳۸)، ص ۱۱۲۵۔

(72) صحیح مسلم، کتاب اللباس والزیۃ، باب تحریم استعمال اوانی الذہب... راجع، الحدیث: ۱۔ (۲۰۶۵)، ص ۱۱۳۲۔

(73) سنن ابی داؤد، کتاب الاطعمۃ، باب فی الذباب یقع فی الطعام، الحدیث: ۳۸۴۳، ج ۳، ص ۵۱۱۔

(74) سنن ابی داؤد، کتاب الطہارۃ، باب الاستنثار فی الخلاء، الحدیث: ۳۵، ج ۱، ص ۳۶۔

مسائل فقہیہ

بعض صورت میں کھانا فرض ہے کہ کھانے پر ثواب ہے اور نہ کھانے میں عذاب۔ اگر بھوک کا اتنا غلبہ ہو کہ جاننا ہو کہ نہ کھانے سے مر جائے گا تو اتنا کھا لینا جس سے جان بچ جائے فرض ہے اور اس صورت میں اگر نہیں کھایا یہاں تک کہ مر گیا تو گنہگار ہوا۔ اتنا کھا لینا کہ کھڑے ہو کر نماز پڑھنے کی طاقت آجائے اور روزہ رکھ سکے یعنی نہ کھانے سے اتنا کمزور ہو جائے گا کہ کھڑا ہو کر نماز نہ پڑھ سکے گا اور روزہ نہ رکھ سکے گا تو اس مقدار سے کھا لینا ضروری ہے اور اس میں بھی ثواب ہے۔ (1)

مسئلہ ۱: اضطراب کی حالت میں یعنی جبکہ جان جانے کا اندیشہ ہے اگر حلال چیز کھانے کے لیے نہیں ملتی تو حرام چیز یا مردار یا دوسرے کی چیز کھا کر اپنی جان بچائے اور ان چیزوں کے کھالینے پر اس صورت میں مؤاخذہ نہیں، بلکہ نہ کھا کر مر جانے میں مؤاخذہ ہے اگرچہ پرانی چیز کھانے میں تاوان (یعنی جو کچھ نقصان ہوا، وہ ادا کرے) دینا ہوگا۔ (2)

(1) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۵۹۔

میرے ولی نعمت، میرے آقا علی حضرت، امام اہلسنت، عظیم المیزکت، عظیم المرتبت، پروانہ مجمع رسالت، مجدد دین و ملت، حامی سنت، ماحی بدعت، عالم شریعت، پیر طریقت، باصباح خیر و برکت، حضرت علامہ مولانا الحاج المحیط القاری المشاہد امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن مملوحتہ اعلیٰ حضرت صفحہ ۱۰۸ میں فرماتے ہیں:

فَمَنْ اضْطُرَّ فِي مَخْمَصَةٍ

ترجمہ کنزالایمان: جو بھوک پیاس کی شدت میں مچار ہو۔ (پ ۶، المائدہ: ۳)

بھوک یا پیاس سے جان نکل جاتی ہے اور کھانے یا پینے کو حرام کے سوا کچھ نہیں، اب اگر ترک کرے تو گنہگار ہوگا اور حرام موت مرے گا۔ بلکہ فرض ہے کہ جان بچانے کی تدبیر استعمال کرے۔ (در مختار مع رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۵۹)

(2) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۵۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یہ حکم اس مجبور و مضطر کے لیے ہے جو بھوک سے مر رہا ہو اور کوئی کھانے کی چیز میسر نہ ہو وہ ایسی مجبوری میں اس جانور کا دودھ بغیر مالک کی اجازت بھی پی لے بلکہ اگر مالک موجود ہو اور اجازت نہ دے تب بھی پی لے کہ جان جاری ہے اس کا بچانا ضروری ہے، پھر جب خدادے تو اس کی قیمت، لک کو ادا کرے اور یہ پینا بھی بقدر ضرورت جائز ہے جس سے جان بچ جائے، بلا ضرورت یا ضرورت سے زیادہ ←

مسئلہ ۲: پیاس سے ہلاک ہونے کا اندیشہ ہے، تو کسی چیز کو پی کر اپنے کو ہلاکت سے بچانا فرض ہے۔ پانی نہیں ہے اور شراب موجود ہے اور معلوم ہے کہ اس کے پی لینے میں جان بچ جائے گی، تو اتنی پی لے جس سے یہ اندیشہ جاتا رہے۔ (3)

مسئلہ ۳: دوسرے کے پاس کھانے پینے کی چیز ہے، تو قیمت سے خرید کر کھاپی لے وہ قیمت سے بھی نہیں دیتا اور اس کی جان پر مبنی ہے، تو اس سے زبردستی چھین لے اور اگر اس کے لیے بھی یہی اندیشہ ہے تو کچھ لے لے اور کچھ اس کے لیے چھوڑ دے۔ (4)

مسئلہ ۴: ایک شخص اضطرار کی حالت میں ہے دوسرا شخص اس سے یہ کہتا ہے کہ تم میرا ہاتھ کاٹ کر اس کا گوشت کھاؤ۔ اس کے لیے اس گوشت کے کھانے کی اجازت نہیں ہے، یعنی انسان کا گوشت کھانا اس حالت میں بھی مباح نہیں۔ (5)

ہرگز نہ ہے۔ (مرقات، لمعات وغیرہ) ایسی مجبوری میں تو مردار بلکہ سور وغیرہ حرام گوشت بھی حلال ہو جاتے ہیں، رب فرماتا ہے: "فَمَنِ اضْطُرَّ فِي مَخْلَصَةٍ غَيْرِ مُتَجَانِفٍ لِآثِمِهِ" اسی لیے حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ لے نہ جائے کہ یہ ضرورت سے زیادہ ہے لہذا حدیث پر چکڑ الویوں کا یہ اعتراض نہیں ہو سکتا کہ اس میں چوری جائز کر دی گئی۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۵۵۱)

(3) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۵۹۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، حضرت علامہ مولانا الحاج الحافظ القاری الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن ملفوظات اعلیٰ حضرت صفحہ ۱۰۸ میں فرماتے ہیں:

شریعت مکملہ کا عام قاعدہ ہے کہ کسی کام کو منع فرماتی ہے کسی مصلحت سے اور جب بندہ کو ضرورت پیش آ جاتی ہے فوراً اپنی ممانعت اٹھا لیتی ہے (یعنی شراب) و خنزیر سے بڑھ کر کون سی چیز حرام فرمائی گئی؟ مگر ساتھ ہی مفسر (یعنی اضطرار کی حالت والے) کا استشاد فرمایا جنگل میں ہے پیاس کی شدت ہے شراب موجود ہے پانی کہیں نہیں ہے نہ کوئی اور چیز ہے جس سے پیاس بجھ سکے اب اگر شراب نہ ہے تو پیاس کی وجہ سے مر جائے گا یا نہ نکلا اور سوائے شراب کے کوئی ایسی چیز نہیں جس سے نوالہ اتر جائے اگر نہ ہے تو دم ٹھٹ کر مر جائے گا، ایسی حالت میں اگر اس نے شراب نہ پی اور مر گیا گنہگار ہوا، حرام موت مرایا مثلاً بھوک کی شدت ہے اب اگر کچھ نہ کھائے تو مر جائے گا اور سوائے خنزیر کے گوشت کے کچھ موجود نہیں اگر اس نے نہ کھایا اور مر گیا تو گنہگار ہوگا حرام موت مرے گا۔

(الاشباہ والنظائر، الفن الاول، القاعدة الخامسة الضرریۃ ال، ص ۷۳ منقضا)

(4) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۵۹۔

(5) المرجع السابق۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

مسئلہ ۵: کھانے پینے پر دوا اور علاج کو قیاس نہ کیا جائے، یعنی حالت اضطرار میں مردار اور شراب کو کھانے پینے کا حکم ہے، مگر دوا کے طور پر شراب جائز نہیں کیونکہ مردار کا گوشت اور شراب یقینی طور پر بھوک اور پیاس کا دفعیہ ہے اور دوا کے طور پر شراب پینے میں یہ یقین کے ساتھ نہیں کہا جاسکتا کہ مرض کا ازالہ ہی ہو جائے گا۔ (6)

مسئلہ ۶: بھوک سے کم کھانا چاہیے اور پوری بھوک بھر کر کھانا کھالینا مباح ہے یعنی نہ ثواب ہے نہ گناہ، کیونکہ اس کا بھی صحیح مقصد ہو سکتا ہے کہ طاقت زیادہ ہوگی اور بھوک سے زیادہ کھالینا حرام ہے۔ زیادہ کا یہ مطلب ہے کہ اتنا کھالینا جس سے پیٹ خراب ہونے کا گمان ہے، مثلاً دست آئیں گے اور طبیعت بد مزہ ہو جائے گی۔ (7)

مثلاً مال غیر بے اذن لینا حرام ہے اور خوک و غمر کی حرمت اس سے بھی زائد اور سد مرتق اور دفع جوع قاتل و عطش مہلک کی فرضیت ان سب سے اقویٰ ہے لہذا حالت غمضہ میں ان اشیاء کا تناول اسی قدر جس سے ہلاک دفع ہو لازم ہوا اور جانب غرض کو ترجیح دی گئی اور اگر مضطر کچھ نہیں پاتا مگر یہ کہ کسی انسان کا ہاتھ کاٹ کر کھائے تو حلال نہیں اگرچہ اس شخص نے اجازت بھی دی ہو کہ حرمت انسان اس فرض سے اقویٰ ہے لہذا جانب سبب کو ترجیح رہی۔

فی البدل الاکل للغذاء والشرب للعطش ولو من حرام او میتة او مال غیرہ وان ضمه فرض، یشاب علیہ بحکم الحدیث ولکن مقدار ما یدفع الانسان الهلاک عن نفسه ۱۔ او فی الشامیة عن وجیز الکردی ان قال لہ اخر اقطع یدی وکلها لا یحل لان لحم الانسان لا یشاح فی الاضطرار لکرامتہ ۲۔ (۱) الدر المختار کتاب الحظر والاباحہ مطبع مہتابی دہلی ۲/ ۲۳۶ (۲) رد المختار کتاب الحظر والاباحہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/ ۲۱۵

در مختار میں ہے: غذا کے لئے کھانا اور پیاس کی وجہ سے چنا اگرچہ حرام، مردار یا غیر کا مال ہو تو جب اس کے ضمن میں فرض ہے تو ثواب پائے گا حدیث کے مطابق۔ لیکن یہ اس مقدار کے لئے جس قدر سے انسان اپنے کو ہلاکت سے بچ سکے، اھ، اور شامی کے فتاویٰ میں وجیز کردی سے منقول ہے اگر کسی نے دوسرے شخص کو کہا میرا ہاتھ کاٹ کر کھاؤ، تو یہ حلال نہیں کیونکہ انسان کا گوشت اضطراری حالت میں بھی مباح نہیں انسانی کرامت کی وجہ سے۔ (ت) (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۲۲۳ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(6) المرجع السابق.

(7) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۶۰.

حضرت سیدنا شیخ بو طالب کی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ فرماتے ہیں، ایک روایت میں ہے، میر ہونے کی حالت میں کھانا برمس پیدا کرتا ہے۔

(نوت القلوب ج ۲ ص ۳۲۶ مرکز احلسنت برکات و رضا ہند)

الْحَمْدُ لِلّٰہِ غَزَّ وَخَلَّ ادعوت اسلامی کے مشکبار مدنی ماحول میں بھی یہ ترغیب دلائی جاتی ہے کہ حرام و مشتبہ چیزوں سے بچا جائے اور جائز و مباح کھانے بھی بھوک سے کم کھائے جائیں تاکہ بھوک کی بدولت عبادت میں دل لگ جائے اور برے کاموں کی طرف ذہن نہ جائے۔ جب پیٹ بھرا ہوتا ہے تو عبادت میں سستی ہو جاتی ہے۔ اس کے برعکس بھوک کی حالت میں سوز و گداز مزید بڑھ جاتا ہے۔ آپ سے ←

مسئلہ ۷: اگر بھوک سے کچھ زیادہ اس لیے کھالیا کہ کل کا روزہ اچھی طرح رکھ سکے گا روزہ میں کمزوری نہیں پیدا ہوگی تو حرج نہیں، جبکہ اتنی ہی زیادتی ہو جس سے معدہ خراب ہونے کا اندیشہ نہ ہو اور معلوم ہے کہ زیادہ نہ کھایا تو کمزوری ہوگی، دوسرے کاموں میں وقت ہوگی۔ یوں اگر مہمان کے ساتھ کھا رہا ہے اور معلوم ہے کہ یہ ہاتھ روک دے گا تو مہمان شرمایا جائے گا اور سیر ہو کر نہ کھائے گا تو اس صورت میں بھی کچھ زیادہ کھالینے کی اجازت ہے۔ (8)

مسئلہ ۸: سیر ہو کر کھانا اس لیے کہ نوافل کثرت سے پڑھ سکے گا اور پڑھنے پڑھانے میں کمزوری پیدا نہ ہوگی، اچھی طرح اس کام کو انجام دے سکے گا یہ مندوب ہے اور سیری سے زیادہ کھایا مگر اتنا زیادہ نہیں کہ شکم خراب ہو جائے یہ مکروہ ہے۔ عبادت گزار شخص کو یہ اختیار ہے کہ بقدر مباح تناول کرے یا بقدر مندوب، مگر اسے یہ نیت کرنی چاہیے کہ اس کے لیے کھاتا ہوں کہ عبادت کی قوت پیدا ہو (9) کہ اس نیت سے کھانا ایک قسم کی طاعت ہے۔ کھانے سے اس کا مقصود تملذ و تنعم نہ ہو (یعنی صرف حصول لذت اور خواہش کی تکمیل کے لیے نہ ہو) کہ یہ بری صفت ہے۔

قرآن مجید میں کفار کی صفت یہ بیان کی گئی، کہ کھانے سے ان کا مقصود تمتع و تنعم (یعنی صرف لطف و لذت اٹھانا) ہوتا ہے اور حدیث میں کثرت خوری کفار کی صفت بتائی گئی۔ (10)

مسئلہ ۹: ریاضت و مجاہدہ میں ایسی تقلیل غذا (یعنی کھانے میں کمی کرنا) کہ عبادت مفروضہ (یعنی فرض کی ہوئی عبادت) کی ادا میں ضعف پیدا ہو جائے، مثلاً اتنا کمزور ہو گیا کہ کھڑا ہو کر نماز نہ پڑھ سکے گا یہ ناجائز ہے اور اگر اس حد کی کمزوری نہ پیدا ہو تو حرج نہیں۔ (11)

گزارش ہے مکتبہ المدینہ سے شائع کردہ کتاب آداب طعام اور پیٹ کا قفل مد۔ نہم کا ضرور مطالعہ فرمائیں اس کی برکت سے ان شاء اللہ غز و جل آپ کو کھانے کے آداب اور بھوک سے کم کھانے سے کیا فوائد حاصل ہوتے ہیں سیکھنے کو ملیں گے۔

(8) المرجع السابق، ص ۵۶۱۔

(9) مزید نیتوں کے لیے امیر اہلسنت، حضرت علامہ مولانا ابوبلال محمد الیاس عطار قادری رضوی مدظلہ العالی کی طرف سے فیضان سنت (تخریج شدہ) میں بیان کردہ کھانے کی 7 نیتیں پیش خدمت ہیں: (۱) بلاوت۔ (۲) والدین کی خدمت۔ (۳) تحصیل علم دین۔ (۴) سچوں کی تربیت کی خاطر مدنی قافلے میں سفر۔ (۵) علاقائی دورہ برائے نیکی کی دعوت میں شرکت۔ (۶) امور آخرت اور (۷) حسب ضرورت کسب حلال کیلئے بھاگ دوڑ پر قوت حاصل کروں گا (یہ نیتیں اسی صورت میں مفید ہوں گی جبکہ بھوک سے کم کھائے، خوب ڈٹ کر کھانے سے اُن عبادت میں سستی پیدا ہوتی، گناہوں کی طرف رجحان بڑھتا اور پیٹ کی خرابیاں جنم لیتی ہیں)

(ماخوذ از: فیضان سنت (تخریج شدہ) ج ۱، ص ۱۸۲)

(10) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۶۰۔

(11) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۶۱۔

مسئلہ ۱۰: زیادہ کھالیا اس لیے کہ قے کر ڈالے گا اور یہ صورت اس کے لیے مفید ہو تو حرج نہیں کیونکہ بعض لوگوں کے لیے یہ طریقہ نافع ہوتا ہے۔ (12)

مسئلہ ۱۱: طرح طرح کے میوے کھانے میں حرج نہیں، اگرچہ افضل یہ ہے کہ ایسا نہ کرے۔ (13)

مسئلہ ۱۲: جوان آدمی کو یہ اندیشہ ہے کہ سیر ہو کر کھائے گا تو غلبہ شہوت ہوگا تو کھانے میں کمی کرے کہ غلبہ شہوت نہ ہو، مگر اتنی کمی نہ کرے کہ عبادت میں قصور پیدا ہو۔ (14) اسی طرح بعض لوگوں کو گوشت کھانے سے غلبہ شہوت ہوتا ہے، وہ بھی گوشت میں کمی کر دیں۔

مسئلہ ۱۳: ایک قسم کا کھانا ہوگا تو بقدر حاجت نہ کھاسکے گا طبیعت گھبرا جائے گی، لہذا کئی قسم کے کھانے طیار کرانا ہے کہ سب میں سے کچھ کچھ کھا کر ضرورت پوری کر لے گا اس مقصد کے لیے متعدد قسم کے کھانے میں حرج نہیں یا اس لیے بہت سے کھانے پکواتا ہے کہ لوگوں کی ضیافت کرنی ہے، وہ سب کھانے صرف ہو جائیں گے تو اس میں بھی حرج نہیں اور یہ مقصود نہ ہو تو اسراف ہے۔ (15)

مسئلہ ۱۴: کھانے کے آداب و سنن یہ ہیں۔

(۱) کھانے سے پہلے اور

(۲) بعد میں ہاتھ دھونا

(۳) کھانے سے پہلے ہاتھ دھو کر پونچھے نہ جائیں اور

(۴) کھانے کے بعد ہاتھ دھو کر رد مال یا تولیا سے پونچھ لیں کہ کھانے کا اثر باقی نہ رہے۔ (16)

مسئلہ ۱۵: سنت یہ ہے کہ قبل طعام اور بعد طعام دونوں ہاتھ گٹوں تک دھوئے جائیں، بعض لوگ صرف ایک ہاتھ یا فقط انگلیاں دھو دیتے ہیں بلکہ صرف چنگی دھونے پر کفایت کرتے ہیں اس سے سنت ادا نہیں ہوتی۔ (17)

مسئلہ ۱۶: مستحب یہ ہے کہ ہاتھ دھوتے وقت خود اپنے ہاتھ سے پانی ڈالے، دوسرے سے اس میں مدد نہ لے

(12) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحۃ، ج ۹، ص ۵۶۱۔

(13) الدر المختار، کتاب المحظر والاباحۃ، ج ۹، ص ۵۶۱۔

(14) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الحادی عشر فی الکراہیۃ، ج ۵، ص ۳۳۶۔

(15) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الحادی عشر فی الکراہیۃ، ج ۵، ص ۳۳۶۔

(16) المرجع السابق، ص ۳۳۷۔

(17) المرجع السابق۔

یعنی اس کا وہی حکم ہے جو وضو کا ہے۔ (18)

(۵) کھانے کے بعد اچھی طرح ہاتھ دھوئیں، کہ کھانے کا اثر باقی نہ رہے، بھوسی یا آٹے یا مین سے ہاتھ دھونے میں حرج نہیں۔ اس زمانے میں صابون سے ہاتھ دھونے کا رواج ہے اس میں بھی حرج نہیں، کھانے کے لیے مونہہ دھونا سنت نہیں یعنی اگر کسی نے نہ دھویا تو یہ نہیں کہا جائے گا کہ اس نے سنت ترک کر دی، ہاں جب نے اگر مونہہ نہ دھویا تو مکروہ ہے اور حیض والی کا بغیر دھوئے کھانا مکروہ نہیں۔

(۶) کھانے سے قبل جوانوں کے ہاتھ پہلے دھلائے جائیں اور کھانے کے بعد پہلے بوڑھوں کے ہاتھ دھلائے جائیں، اس کے بعد جوانوں کے۔

(۷) یہی حکم علماء و مشائخ کا ہے کہ کھانے سے قبل ان کے ہاتھ آخر میں دھلائے جائیں اور کھانے کے بعد ان کے پہلے دھلائے جائیں۔

(۸) کھانا بسم اللہ پڑھ کر شروع کیا جائے اور

(۹) ختم کر کے الحمد للہ پڑھیں اگر بسم اللہ کہنا بھول گیا ہے تو جب یاد آ جائے یہ کہے بسم اللہ فی اَوَّلِہِ فَاخِرِہِ۔ (۱۰) بسم اللہ بلند آواز سے کہے کہ ساتھ والوں کو اگر یاد نہ ہو تو اس سے سن کر انھیں یاد آ جائے اور الحمد للہ آہستہ کہے۔ مگر جب سب لوگ فارغ ہو چکے ہوں تو الحمد للہ بھی زور سے کہے کہ دوسرے لوگ سن کر شکر خدا بجالائیں۔

(۱۱) روٹی پر کوئی چیز نہ رکھی جائے، بعض لوگ سالن کا پیالہ یا چٹنی کی پیالی یا نمک دانی رکھ دیتے ہیں، ایسا نہ کرنا چاہیے نمک اگر کاغذ میں ہے تو اسے روٹی پر رکھ سکتے ہیں۔

(۱۲) ہاتھ یا چھری کو روٹی سے نہ پونچھیں۔

(۱۳) تکیہ لگا کر یا

(۱۴) ننگے سر کھانا ادب کے خلاف ہے۔

(۱۵) بائیں ہاتھ کو زمین پر ٹیک دے کر کھانا بھی مکروہ ہے۔

(۱۶) روٹی کا کنارہ توڑ کر ڈال دینا اور بیچ کی کھا لینا اسراف ہے، بلکہ پوری روٹی کھائے، ہاں اگر کنارے کچے رہ گئے ہیں، اس کے کھانے سے ضرر ہوگا تو توڑ سکتا ہے۔ اسی طرح اگر معلوم ہے کہ یہ ٹوٹے ہوئے دوسرے لوگ کھالیں گے، ضائع نہ ہوں گے تو توڑنے میں حرج نہیں۔ یہی حکم اس کا بھی ہے کہ روٹی میں جو حصہ پھولا ہوا ہے اسے کھا لیتا ہے، باقی کو چھوڑ دیتا ہے۔

(۱۷) روٹی جب دسترخوان پر آگئی تو کھانا شروع کر دے سالن کا انتظار نہ کرے، اسی لیے عموماً دسترخوان پر روٹی سب سے آخر میں لاتے ہیں تاکہ روٹی کے بعد انتظار نہ کرنا پڑے۔

(۱۸) دہنے ہاتھ سے کھانا کھائے۔

(۱۹) ہاتھ سے لقمہ چھوٹ کر دسترخوان پر گر گیا، اسے چھوڑ دینا اسراف ہے بلکہ پہلے اس کو اٹھا کر کھائے۔

(۲۰) رکابی یا پیالے کے بیچ میں سے ابتداء نہ کھائے، بلکہ ایک کنارہ سے کھائے اور

(۲۱) جو کنارہ اس کے قریب ہے، وہاں سے کھائے۔

(۲۲) جب کھانا ایک قسم کا ہو تو ایک جگہ سے کھائے ہر طرف ہاتھ نہ مارے۔ ہاں اگر طبق میں مختلف قسم کی چیزیں لا کر رکھی گئیں، ادھر ادھر سے کھانے کی اجازت ہے کہ یہ ایک چیز نہیں۔

(۲۳) کھانے کے وقت بایاں پاؤں بچھا دے اور داہنا کھڑا رکھے یا سرین پر بیٹھے اور دونوں گھٹنے کھڑے رکھے۔

(۲۴) گرم کھانا نہ کھائے اور

(۲۵) نہ کھانے پر پھونکے۔

(۲۶) نہ کھانے کو سونگھے۔

(۲۷) کھانے کے وقت باتیں کرتا جائے، بالکل چپ رہنا مجوسیوں (یعنی آگ کی پوجا کرنے والوں) کا طریقہ ہے، مگر یہودہ باتیں نہ کہے بلکہ اچھی باتیں کرے۔

(۲۸) کھانے کے بعد انگلیاں چاٹ لے، ان میں جھوٹا نہ لگا رہنے دے اور

(۲۹) برتن کو انگلیوں سے پونچھ کر چاٹ لے۔ حدیث میں ہے، کھانے کے بعد جو شخص برتن چاٹتا ہے تو وہ برتن

اس کے لیے دعا کرتا ہے۔ کہتا ہے کہ اللہ (عزوجل) تجھے جہنم کی آگ سے آزاد کرے جس طرح تو نے مجھے شیطان سے آزاد کیا۔ (۱۹) اور ایک روایت میں ہے، برتن اس کے لیے استغفار کرتا ہے۔ (۲۰)

(۳۰) کھانے کی ابتدا نمک سے کی جائے اور

(۳۱) ختم بھی اسی پر کریں، اس سے ستر بیماریاں دفع ہو جاتی ہیں۔ (۲۱)

(۱۹) کنز العمال، کتاب المعیشتہ... راجع، رقم: ۸۲۲، ج ۴، ص ۱۵، ص ۱۱۱۔

(۲۰) المسند لدام احمد بن حنبل، الحدیث: ۲۰۷۵۰، ج ۷، ص ۳۸۲۔

(۲۱) ابن رازیہ ہامش عبدالفتاویٰ الحمیدیہ، کتاب الکراہیہ، الفصل الخامس فی الاکل، ج ۶، ص ۳۶۵۔

در المختار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۶۱، وغیرہا۔

مسئلہ ۱۷: راستہ اور بازار میں کھانا مکروہ ہے۔ (22)

مسئلہ ۱۸: دسترخوان پر روٹی کے ٹکڑے جمع ہو گئے اگر کھانا ہے تو کھالے ورنہ مرغی، گائے، بکری وغیرہ کو کھلا دے یا کہیں احتیاط کی جگہ پر رکھ دے، کہ حیوانیاں یا چڑیاں کھالیں گی راستہ پر نہ پھینکے۔ (23)

مسئلہ ۱۹: کھانے میں عیب نہ بتانا چاہیے نہ یہ کہنا چاہیے کہ برا ہے۔ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے بھی کھانے کو عیب نہ لگایا، اگر پسند آیا تناول فرمایا، ورنہ نہ کھایا۔ (24)

مسئلہ ۲۰: کھانا کھاتے وقت جب کوئی آجاتا ہے تو ہندوستان کا عرف یہ ہے کہ اسے کھانے کو پوچھتے ہیں، کہتے ہیں آؤ کھانا کھاؤ، اگر نہ پوچھیں تو طعن (ملامت) کرتے ہیں کہ انھوں نے پوچھا تک نہیں، یہ بات یعنی دوسرے مسلمان کو کھانے کے لیے بلانا اچھی بات ہے، مگر بلانے والے کو یہ چاہیے، کہ یہ پوچھنا محض نمائش کے لیے نہ ہو بلکہ دل سے پوچھے۔

یہ بھی رواج ہے کہ جب پوچھا جاتا ہے تو وہ کہتا ہے بسم اللہ، یہ نہ کہنا چاہیے، کہ یہاں بسم اللہ کہنے کے کوئی معنی نہیں، اس موقع پر بسم اللہ کہنے کو علمائے بہت سخت ممنوع فرمایا بلکہ ایسے موقع پر دعائیہ الفاظ کہنا بہتر ہے، مثلاً اللہ تعالیٰ برکت دے، زیادہ دے۔

مسئلہ ۲۱: باپ کو بیٹے کے مال کی حاجت ہے، اگر احتیاج (یعنی ضرورت) اس وجہ سے ہے کہ اس کے پاس دام (یعنی روپیہ) نہیں ہیں کہ اس چیز کو خرید سکے تو بیٹے کی چیز بلا کسی معاوضہ کے استعمال کرنا جائز ہے اور اگر دام ہیں مگر چیز نہیں ملتی تو معاوضہ دے کر لے، یہ اس وقت ہے کہ بیٹا مالائق ہے اور اگر لائق ہے تو بغیر حاجت بھی اس کی چیز لے سکتا ہے۔ (25)

مسئلہ ۲۲: ایک شخص بھوک سے اتنا کمزور ہو گیا ہے کہ گھر سے باہر نہیں جاسکتا، کہ لوگوں سے اپنی حالت بیان کرے تو جس کو اس کی یہ حالت معلوم ہے، اس پر فرض ہے کہ اسے کھانے کو دے تاکہ گھر سے نکلنے کے قابل ہو جائے، اگر ایسا نہیں کیا اور وہ بھوک سے مر گیا تو جن لوگوں کو اس کا یہ حال معلوم تھا سب گنہگار ہوئے اور اگر یہ شخص جس کو اس کا حال معلوم تھا اس کے پاس بھی کچھ نہیں ہے کہ اسے کھلائے تو اس پر یہ فرض ہے کہ دوسروں سے کہے اور لوگوں سے کچھ

(22) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکرامیہ، الباب الحادی عشر فی الکرامیہ، ج ۵، ص ۳۳۷، وغیرہا۔

(23) البرازیہ حاشی علی الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکرامیہ، الفصل الخامس فی الاکل، ج ۶، ص ۳۶۵-۳۶۶۔

(24) انظر: صحیح البخاری، کتاب الاطعمۃ، باب ما عاب النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم طعاماً، الحدیث: ۵۳۰۹، ج ۳، ص ۵۳۱۔

(25) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکرامیہ، الباب الحادی عشر فی الکرامیہ، ج ۵، ص ۳۳۸۔

مانگ لائے اور ایسا نہ ہوا اور وہ مر گیا تو یہ سب لوگ جن کو اس کے حال کی خبر تھی گنہگار ہوئے۔

اور اگر یہ شخص گھر سے باہر جاسکتا ہے مگر کمانے پر قادر نہیں تو جا کر لوگوں سے مانگے اور جس کے پاس صدقے کی قسم سے کوئی چیز ہو، اس پر دینا واجب ہے اور اگر وہ محتاج شخص کما سکتا ہے تو کام کر کے پیسے حاصل کرے، اس کے لیے مانگنا حلال نہیں، محتاج شخص اگر کمانے پر قادر نہیں ہے مگر یہ کر سکتا ہے کہ دروازوں پر جا کر سوال کرے تو اس پر ایسا کرنا فرض ہے، ایسا نہ کیا اور بھوک سے مر گیا تو گنہگار ہوگا۔ (26)

مسئلہ ۲۳: کھانے میں پسینہ ٹپک گیا یا رال ٹپک پڑی یا آنسو گر گیا وہ کھانا حرام نہیں ہے، کھایا جاسکتا ہے۔ اسی طرح اگر پانی میں کوئی پاک چیز مل گئی اور اس سے طبیعت کو نفرت پیدا ہو گئی وہ پیا جاسکتا ہے۔ (27)

مسئلہ ۲۴: روٹی میں اگر اُپلے کا ٹکڑا (وہ گوبر جس کو جلانے کے لیے سکھاتے ہیں اس کا ٹکڑا) ملا اور وہ سخت ہے تو اتنا حصہ توڑ کر پھینک دے، پوری روٹی کو نجس نہیں کہا جائے گا اور اگر اس میں نرمی آگئی ہے تو بالکل نہ کھائے۔ (28)

مسئلہ ۲۵: نالی وغیرہ کسی ناپاک جگہ میں روٹی کا ٹکڑا دیکھا تو اس پر یہ لازم نہیں کہ اسے نکال کر دھوئے اور کسی دوسری جگہ ڈال دے۔ (29)

مسئلہ ۲۶: گیہوں (گندم) کے ساتھ آدمی کا دانت بھی چکی میں پس گیا، اس آٹے کو نہ خود کھا سکتا ہے نہ جانوروں کو کھلا سکتا ہے۔ (30)

مسئلہ ۲۷: گوشت سڑ گیا تو اس کا کھانا حرام ہے۔ (31)

مسئلہ ۲۸: باغ میں پہنچا وہاں پھل گرے ہوئے ہیں، تو جب تک مالک باغ کی اجازت نہ ہو پھل نہیں کھا سکتا اور اجازت دونوں طرح ہو سکتی ہے۔ صراحۃً اجازت ہو، مثلاً مالک نے کہہ دیا ہو کہ گرے ہوئے پھلوں کو کھا سکتے ہو یا دل لہ اجازت ہو یعنی وہاں ایسا عرف و عادت ہے کہ باغ والے گرے ہوئے پھلوں سے لوگوں کو منع نہیں کرتے۔ درختوں سے پھل توڑ کر کھانے کی اجازت نہیں، مگر جبکہ پھلوں کی کثرت ہو معلوم ہو کہ توڑ کر کھانے میں بھی مالک کو

(26) الفتاویٰ احمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الحادی عشر فی الکراہیۃ، ج ۵، ص ۳۳۸۔

(27) المرجع السابق۔

(28) الفتاویٰ احمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الحادی عشر فی الکراہیۃ، ج ۵، ص ۳۳۹۔

(29) المرجع السابق۔

(30) الفتاویٰ احمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الحادی عشر فی الکراہیۃ، ج ۵، ص ۳۳۹۔

(31) المرجع السابق۔

ناگواری نہیں ہوگی تو توڑ کر بھی کھا سکتا ہے، مگر کسی صورت میں یہ اجازت نہیں کہ وہاں سے پھل اٹھالائے۔ (2) ان سب صورتوں میں عرف و عادت کا لحاظ ہے اور اگر عرف و عادت نہ ہو یا معلوم ہو کہ مالک کو ناگواری ہوگی تو کھانا جائز نہیں۔

مسئلہ ۲۹: خریف (یعنی خزاں) کے موسم میں درختوں کے پتے گر جاتے ہیں، اگر وہ پتے کام کے ہوں تو اٹھالانا ناجائز ہے اور مالک کے لیے بیکار ہوں جیسا کہ ہمارے ملک میں باغات میں پتے گر جاتے ہیں اور مالک ان کو کام میں نہیں لاتا، بھاڑ (بھٹی، تنور) جلانے والے اٹھالاتے ہیں ایسے پتوں کو اٹھالانے میں حرج نہیں۔ (33)

مسئلہ ۳۰: دوست کے گھر گیا جو چیز پکی ہوئی ملی، خود لے کر کھالی یا اس کے باغ میں گیا اور پھل توڑ کر کھالیے، اگر معلوم ہے کہ اسے ناگوار نہ ہوگا تو کھانا جائز ہے، مگر یہاں اچھی طرح غور کر لینے کی ضرورت ہے بسا اوقات ایسا بھی ہوتا ہے کہ یہ سمجھتا ہے کہ اسے ناگوار نہ ہوگا حالانکہ اسے ناگوار ہے۔ (34)

مسئلہ ۳۱: روٹی کو چھری سے کاٹنا نصاریٰ کا طریقہ ہے، مسلمانوں کو اس سے بچنا چاہیے۔ ہاں اگر ضرورت ہو، مثلاً ذیل روٹی کہ چھری سے کاٹ کر اس کے ٹکڑے کر لیے جاتے ہیں تو حرج نہیں یا دعوتوں میں بعض مرتبہ ہر شخص کو نصف نصف شیر مال دی جاتی ہے، ایسے موقع پر چھری سے کاٹ کر ٹکڑے بنانے میں حرج نہیں کہ یہاں مقصود دوسرا ہے۔ اسی طرح اگر مسلم ران بھنی ہوئی ہو اور چھری سے کاٹ کر کھائی جائے تو حرج نہیں۔

مسئلہ ۳۲: مسلمانوں کے کھانے کا طریقہ یہ ہے کہ فرش وغیرہ پر بیٹھ کر کھانا کھاتے ہیں، میز کرسی پر کھانا نصاریٰ کا طریقہ ہے، اس سے اجتناب چاہیے بلکہ مسلمانوں کو ہر کام سلف صالحین کے طریقہ پر کرنا چاہیے، غیروں کے طریقہ کو ہرگز اختیار نہ کرنا چاہیے۔

مسئلہ ۳۳: خمیری روٹی پکوانے میں نانباتی (یعنی روٹی پکانے والا) سے خمیر لے لیتے ہیں پھر ان کے آنے میں سے اسی انداز سے نانباتی لے لیتا ہے اس میں حرج نہیں۔

مسئلہ ۳۴: بہت سے لوگوں نے چندہ کر کے کھانے کی چیز طیار کی اور سب مل کر اسے کھائیں گے، چندہ سب نے برابر دیا ہے اور کھانا کوئی کم کھائے گا کوئی زیادہ اس میں حرج نہیں۔ اسی طرح مسافروں نے اپنے تو شے اور کھانے کی چیزیں ایک ساتھ مل کر کھائیں اس میں بھی حرج نہیں، اگرچہ کوئی کم کھائے گا کوئی زیادہ یا بعض کی چیزیں اچھی ہیں

اور بعض کی ویسی نہیں۔ (35)

مسئلہ ۳۵: کھانا کھانے کے بعد خلال کرنے میں جو کچھ دانتوں میں سے ریشہ وغیرہ نکالا بہتر ہے کہ اسے پھینک دے اور نکل گیا تو اس میں بھی حرج نہیں اور خلال کا تنکایا جو کچھ خلال سے نکلا اس کو لوگوں کے سامنے نہ پھینکے، بلکہ اسے لیے رہے جب اس کے سامنے طشت (یعنی ہاتھ دھونے کا برتن) آئے، اس میں ڈال دے پھول اور میوہ کے ٹکے سے خلال نہ کرے۔ (36)

خلال کے لیے نیم کی سینک بہت بہتر ہے کہ اس کی تلخی سے مونہ کی صفائی ہوتی ہے اور یہ مسوڑوں کے لیے بھی مفید ہے جھاڑو کی سینکیں (یعنی جھاڑو کی تیلیاں) بھی اس کام میں لاسکتے ہیں جبکہ وہ کوری ہوں مستعمل نہ ہوں۔



(35) افتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الحادی عشر فی الکراہیۃ، ج ۵، ص ۳۴۱۔

(36) افتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثانی عشر فی الحمد ایا والفضیلات، ج ۵، ص ۳۴۵۔

پانی پینے کا بیان

احادیث

حدیث ۱: صحیح بخاری و مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پانی پینے میں تین ہارسانس لیتے تھے۔ (1)

اور مسلم کی روایت میں یہ بھی ہے، کہ فرماتے تھے کہ اس طرح پینے میں زیادہ سیرابی ہوتی ہے اور صحت کے لیے مفید اور خوشگوار ہے۔ (2)

حدیث ۲: ترمذی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ ایک سانس میں پانی نہ پیو جیسے اونٹ پیتا ہے، بلکہ دو اور تین مرتبہ میں پیو اور جب پیو تو بسم اللہ کہہ لو اور جب برتن کو منہ سے ہٹاؤ تو اللہ (عزوجل) کی حمد کرو۔ (3)

حدیث ۳: ابو داؤد و ابن ماجہ نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے برتن میں سانس لینے اور پھونکنے سے منع فرمایا۔ (4)

حدیث ۴: ترمذی نے ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے پینے کی چیز میں پھونکنے سے منع فرمایا۔ ایک شخص نے عرض کی، کہ برتن میں کبھی کوڑا دکھائی دیتا ہے، فرمایا: اسے گرا دو۔ اس نے عرض کی، کہ ایک سانس میں سیراب نہیں ہوتا ہوں، فرمایا: برتن کو منہ سے جدا کر کے سانس لو۔ (5)

حدیث ۵: ابو داؤد نے ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے پیالے میں جو جگہ ٹوٹی ہوئی ہے، وہاں سے پینے کی اور پینے کی چیز میں پھونکنے کی ممانعت فرمائی۔ (6)

(1) صحیح مسلم، کتاب الاشریۃ، باب کراہۃ النفس فی نفس الاءاء... إلخ، الحدیث: ۱۲۳۔ (۲۰۲۸) ج ۳، ص ۱۲۰۔

(2) المرجع السابق۔

(3) سنن الترمذی، کتاب الاشریۃ، باب ماجاء فی النفس فی الاءاء، الحدیث: ۱۸۹۲، ج ۳، ص ۳۵۲۔

(4) سنن ابی داؤد، کتاب الاشریۃ، باب فی الخ فی الشراب... إلخ، الحدیث: ۳۷۲۸، ج ۳، ص ۴۷۳۔

(5) سنن الترمذی، کتاب الاشریۃ، باب ماجاء فی کراہیۃ الخ فی الشراب، الحدیث: ۱۸۹۳، ج ۳، ص ۳۵۳۔

(6) سنن ابی داؤد، کتاب الاشریۃ، باب فی الشرب من ثلثۃ القدح، الحدیث: ۳۷۲۲، ج ۳، ص ۴۷۳۔

حدیث ۶: صحیح بخاری و مسلم میں ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے مشک کے دہانے سے پینے کو منع فرمایا۔ (7)

حدیث ۷: صحیح بخاری و مسلم و سنن ترمذی میں ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے مشک کے دہانے کو موڑ کر اس سے پانی پینے کو منع فرمایا۔ (8)

ابن ماجہ نے اس حدیث کو ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے بھی روایت کیا ہے اور اس روایت میں یہ بھی ہے کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کے منع فرمانے کے بعد ایک شخص رات میں اٹھا اور مشک کا دہانہ پانی پینے کے لیے موڑا، اس میں سے سانپ نکلا۔ (9)

حدیث ۸: صحیح بخاری و مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے کھڑے ہو کر پانی پینے سے منع فرمایا۔ (10)

حدیث ۹: صحیح مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: کھڑے ہو کر ہرگز کوئی شخص پانی نہ پیے اور جو بھول کر ایسا کر گزرے، وہ قے کر دے۔ (11)

حدیث ۱۰: صحیح بخاری و مسلم میں ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہتے ہیں: میں آب زم زم کا ایک ڈول نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر لایا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے کھڑے کھڑے ابے پیا۔ (12)

حدیث ۱۱: صحیح بخاری میں ہے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ظہر کی نماز پڑھی اور لوگوں کی حاجات پوری کرنے کے لیے رجبہ کوفہ (یعنی کوفہ کی جامع مسجد کے صحن) میں بیٹھ گئے، جب عصر کا وقت آیا ان کے پاس پانی لایا گیا۔ انھوں نے پیا اور وضو کیا پھر وضو کا بچا ہوا پانی کھڑے ہو کر پیا اور یہ فرمایا کہ لوگ کھڑے ہو کر پانی پینے کو مکروہ بتاتے

وسنن، مداري، کتاب الاشریۃ، باب من شرب بنفس واحد، الحدیث: ۲۱۲۱، ج ۲، ص ۱۶۱۔

(۱) صحیح بخاری، کتاب الاشریۃ، باب الشرب من فم القاء، الحدیث: ۵۶۲۹، ج ۳، ص ۵۹۲۔

(۸) لمربع السابق، باب اختناث الاسقیۃ، الحدیث: ۵۶۲۶، ج ۳، ص ۵۹۲۔

(۹) سنن ابن ماجہ، کتاب الاشریۃ، باب اختناث الاسقیۃ، الحدیث: ۳۴۱۹، ج ۴، ص ۷۸۔

(۱۰) صحیح مسلم، کتاب الاشریۃ، باب فی الشرب قائما... الخ، الحدیث: ۱۱۳، (۲۰۲۳)، ص ۱۱۱۹۔

(۱۱) امربع السابق، الحدیث: ۱۱۶، (۲۰۲۶)، ص ۱۱۱۹۔

(۱۲) صحیح مسلم، کتاب الاشریۃ، باب فی الشرب من زحزم قائما، الحدیث: ۱۱۷، (۲۰۲۷)، ص ۱۱۱۹۔

ہیں اور جس طرح میں نے کیا نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے بھی ویسا ہی کیا تھا۔ (13)

اس کا مطلب یہ ہے کہ لوگ مطلقاً کھڑے ہو کر پانی پینے کو مکروہ بتاتے ہیں حالانکہ وضو کے پانی کا یہ حکم نہیں بلکہ اس کو کھڑے ہو کر پینا مستحب ہے۔ اسی طرح آب زم زم کو بھی کھڑے ہو کر پینا سنت ہے۔ یہ دونوں پانی اس حکم سے مستثنیٰ ہیں اور اس میں حکمت یہ ہے کہ کھڑے ہو کر جب پانی پیا جاتا ہے وہ فوراً تمام اعضا کی طرف سرایت کر جاتا ہے اور یہ مضر ہے، مگر یہ دونوں برکت والے ہیں اور ان سے مقصود ہی تبرک ہے، لہذا ان کا تمام اعضاء میں پہنچ جانا فائدہ مند ہے۔

بعض لوگوں سے سنا گیا ہے کہ مسلم کا جھوٹا پانی بھی کھڑے ہو کر پینا چاہیے، مگر میں نے کسی کتاب میں اس کو نہیں دیکھا، صرف دو ہی پانیوں کا کتابوں میں استثناء مذکور پایا۔ وَالْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ۔

حدیث ۱۲: ترمذی نے کبشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہتی ہیں: میرے یہاں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تشریف لائے، مشک لٹکی ہوئی تھی، اس کے دہانے سے کھڑے ہو کر پانی پیا۔ (حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کے اس فعل کو علما نے بیان جواز پر محمول کیا ہے، میں نے مشک کے دہانے کو کاٹ کر رکھ لیا۔ (14) ان کا کاٹ کر رکھ لینا بغرض تبرک تھا، کہ چونکہ اس سے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کا دہن اقدس لگا ہے، یہ برکت کی چیز ہے اور اس سے بیماروں کو شفا ہوگی۔

حدیث ۱۳: صحیح بخاری میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اور ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ ایک انصاری کے پاس تشریف لے گئے وہ اپنے باغ میں پیڑوں کو پانی دے رہے تھے ارشاد فرمایا: کیا تمہارے یہاں باسی پانی پرانی مشک میں ہے؟ (اگر ہو تو لاؤ) ورنہ ہم مونہہ لگا کر پانی پی لیں۔ انھوں نے کہا، میرے یہاں باسی پانی پرانی مشک میں ہے، اپنی جھونپڑی میں گئے اور برتن میں پانی انڈیل کر اس میں بکری کا دودھ دیا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے پیا پھر دوبارہ انھوں نے پانی لے کر دودھ دیا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کے ساتھی نے پیا۔ (15)

حدیث ۱۴: صحیح بخاری و مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے لیے

(13) صحیح بخاری، کتاب الاثریۃ، باب الشرب قائماً، الحدیث: ۵۶۱۶، ج ۳، ص ۵۸۹۔

(14) سنن الترمذی، کتاب الاثریۃ، باب ماجاء فی الرخصة... إلخ، الحدیث: ۱۸۹۹، ج ۳، ص ۳۵۵۔

(15) صحیح بخاری، کتاب الاثریۃ، باب شرب اللبن بالماء، الحدیث: ۵۶۱۳، ج ۳، ص ۵۸۸۔

و باب الکرع فی الحوض، الحدیث: ۵۶۲۱، ج ۳، ص ۵۹۰۔

بکری کا دودھ دوہا گیا اور انس کے گھر میں جو کو آں تھا، اس کا پانی اس میں ملایا گیا یعنی لسی بنائی گئی پھر حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی خدمت میں پیش کیا گیا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے نوش فرمایا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی بائیں طرف ابو بکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ تھے اور دہنی طرف ایک اعرابی تھے، حضرت عمر (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) ابو بکر (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) کو دیجیے، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے اعرابی کو دیا کیونکہ یہ دہنی جانب تھے اور ارشاد فرمایا: دہنا مستحق ہے پھر اسکے بعد جو دہنے ہو، دہنے کو مقدم رکھا کرو۔ (16)

حدیث ۱۵: بخاری و مسلم میں سہل بن سعد رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں پیالہ پیش کیا گیا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے نوش فرمایا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی دہنی جانب سب سے چھوٹے ایک شخص تھے (عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما) اور بڑے بڑے اصحاب بائیں جانب تھے۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: لاڑ کے اگر تم اجازت دو تو بڑوں کو دے دوں۔ انہوں نے عرض کی، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کے اوش (یعنی حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے تبرک) میں دوسروں کو اپنے پر ترجیح نہیں دوں گا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے ان کو دے دیا۔ (17)

حدیث ۱۶: صحیح بخاری و مسلم میں حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: حر پر اور دیباچ نہ پہنو اور نہ سونے اور چاندی کے برتن میں پانی پیو اور نہ ان کے برتنوں میں کھانا کھاؤ کہ یہ چیزیں دنیا میں کافروں کے لیے ہیں اور تمہارے لیے آخرت میں ہیں۔ (18)

حدیث ۱۷: ترمذی نے زہری سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو پینے کی وہ چیز زیادہ پسند تھی جو شیریں اور ٹھنڈی ہو۔ (19)

حدیث ۱۸: ابن ماجہ نے عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے

(16) صحیح بخاری، کتاب المساقا، باب من رأى صدقة الماء... إلخ، الحدیث: ۲۳۵۲، ج ۲، ص ۹۵.

ومشكاة المصابيح، کتاب الاطعمة، باب الاشرية، الحدیث: ۴۲۷۳، ج ۲، ص ۴۶۲.

(17) صحیح بخاری، کتاب المساقا، باب من رأى صدقة الماء... إلخ، الحدیث: ۲۳۵۱، ج ۲، ص ۹۵.

(18) صحیح بخاری، کتاب الاطعمة، باب الاكل في الماء... إلخ، الحدیث: ۵۳۲۶، ج ۳، ص ۵۳۵.

وكتاب الاشرية، باب الشرب في آنية الذهب، الحدیث: ۵۶۳۲، ج ۳، ص ۵۹۳.

(19) سنن ترمذی، کتاب الاشرية، باب ما جاء في الشراب... إلخ، الحدیث: ۱۹۰۳، ج ۳، ص ۳۵۷.

پیٹ کے بل جھک کر پانی میں مونہ ڈال کر پینے سے منع فرمایا اور نہ ایک ہاتھ سے چلو لے کر پیے جیسے وہ لوگ پیتے ہیں، جن پر خدا ناراض ہے اور رات میں جب کسی برتن میں پانی پیے تو اسے ہلا لے، مگر جبکہ وہ برتن ڈھکا ہو تو ہلانے کی ضرورت نہیں اور جو شخص برتن سے پینے پر قادر ہے اور تواضع کے طور پر ہاتھ سے پیتا ہے، اللہ تعالیٰ اس کے لیے نیکیاں لکھتا ہے جتنی اس کے ہاتھ میں انگلیاں ہیں۔ ہاتھ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا برتن تھا کہ انھوں نے اپنا پیالہ بھی پھینک دیا اور یہ کہا کہ یہ بھی دنیا کی چیز ہے۔ (20)

حدیث ۱۹: ابن ماجہ نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ہاتھوں کو دھوؤ اور ان میں پانی پیو کہ ہاتھ سے زیادہ پاکیزہ کوئی برتن نہیں۔ (21)

حدیث ۲۰: مسلم و احمد و ترمذی نے ابو قتادہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ ساقی (جو لوگوں کو پانی پلا رہا ہے) وہ سب کے آخر میں پیے گا۔ (22)

حدیث ۲۱: دیلمی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا: پانی کو چوس کر پیو کہ یہ خوش گوار اور زود ہضم ہے اور بیماری سے بچاؤ ہے۔ (23)

حدیث ۲۲: ابن ماجہ نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، انھوں نے کہا یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کس چیز کا منع کرنا حلال نہیں؟ فرمایا: پانی اور نمک اور آگ۔ کہتی ہیں: میں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) پانی کو تو ہم نے سمجھ لیا، مگر نمک اور آگ کا منع کرنا کیوں حلال نہیں؟ فرمایا: اے حمیراء! جس نے آگ دے دی گویا اس نے اُس پورے کو صدقہ کیا جو آگ سے پکایا گیا اور جس نے نمک دے دیا گویا اُس نے تمام اُس کھانے کو صدقہ کیا جو اس نمک سے درست کیا گیا اور جس نے مسلمان کو اُس جگہ پانی کا گھونٹ پلایا جہاں پانی ملتا ہے تو گویا گردن کو آزاد کیا (یعنی غلام آزاد کیا) اور جس نے مسلم کو ایسی جگہ پانی کا گھونٹ پلایا جہاں پانی نہیں ملتا ہے تو گویا اُسے زندہ کر دیا۔ (24)

(20) سنن ابن ماجہ، کتاب الاشریہ، باب الشرب بالاکف والکمر، الحدیث: ۳۴۳۱، ج ۴، ص ۸۲۔

(21) المرجع السابق، الحدیث: ۳۴۳۳، ج ۴، ص ۸۲۔

(22) صحیح مسلم، کتاب المساجد... إلخ، باب قضاء الصلاة الفائتہ... إلخ، الحدیث: ۳۱۱۱-۳۱۱۲، ج ۴، ص ۳۴۴۔

وسنن الترمذی، کتاب الاشریہ، باب ماجاء أن ساقی القوم... إلخ، الحدیث: ۱۹۰۱، ج ۳، ص ۳۵۶۔

(23) کنز العمال، کتاب المعیشہ... إلخ، رقم: ۴۱۰۴۲، ج ۱۵، ص ۱۲۶۔

(24) سنن ابن ماجہ، کتاب الرعون، باب المسلمون شرکاء فی ثلاث، الحدیث: ۲۴۷۴، ج ۳، ص ۱۷۷۔

مسائل فقہیہ

مسئلہ ۱: پانی بسم اللہ کہہ کر دہنے ہاتھ سے پیے اور تین سانس میں پیے، ہر مرتبہ برتن کو مونہ سے ہٹا کر سانس لے۔ پہلی اور دوسری مرتبہ ایک ایک گھونٹ پیے اور تیسری سانس میں جتنا چاہے پی ڈالے۔ اس طرح پینے سے پیس بجھ جاتی ہے اور پانی کو چوس کر پیے، غٹ غٹ بڑے بڑے گھونٹ نہ پیے، جب پی چکے الحمد للہ کہے۔

اس زمانہ میں بعض لوگ بائیں ہاتھ میں کٹورا یا گلاس لے کر پانی پیتے ہیں خصوصاً کھانے کے وقت دہنے ہاتھ سے پینے کو خلاف تہذیب جانتے ہیں ان کی یہ تہذیب تہذیب نصاریٰ ہے۔ اسلامی تہذیب دہنے ہاتھ سے پینا ہے۔

آجکل ایک تہذیب یہ بھی ہے کہ گلاس میں پینے کے بعد جو پانی بچا اسے پھینک دیتے ہیں کہ اب وہ پانی جھوٹا ہو گیا جو دوسرے کو نہیں پلایا جائے گا، یہ ہندوؤں سے سیکھا ہے اسلام میں چھوت چھات نہیں، مسلمان کے جھوٹے سے بچنے کے کوئی معنی نہیں اور اس علت سے پانی کو پھینکنا اسراف ہے۔

مسئلہ ۲: مشک کے دہانے میں مونہ لگا کر پانی پینا مکروہ ہے۔ کیا معلوم کوئی مضر (نقصان دہ) چیز اس کے حلق میں چلی جائے۔ (۱) اسی طرح لوٹے کی ٹونٹی سے پانی پینا مگر جبکہ لوٹے کو دیکھ لیا ہو کہ اس میں کوئی چیز نہیں ہے۔ صراحی میں مونہ لگا کر پانی پینے کا بھی یہی حکم ہے۔

مسئلہ ۳: سبیل کا پانی مالدار شخص بھی پی سکتا ہے مگر وہاں سے پانی کوئی شخص گھر نہیں لے جاسکتا۔ کیونکہ وہاں پینے کے لیے پانی رکھا گیا ہے نہ کہ گھر لے جانے کے لیے۔ ہاں اگر سبیل لگانے والے کی طرف سے اس کی اجازت ہو تو لے جاسکتا ہے۔ (۲) جاڑوں (سردیوں) میں اکثر جگہ مسجد کے سقایہ میں پانی گرم کیا جاتا ہے تاکہ مسجد میں جو نمازی

(۱) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الحادی عشر فی الکراہیۃ، ج ۵، ص ۳۴۱۔

(۲) المرجع السابق

اعلیٰ حضرت، امام، ہنسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

سبیل (۳) جو پینے کیلئے لگائی گئی ہو اس کا بھی یہی حکم ہے کہ اُس سے وضو، غسل اگرچہ صحیح ہو جائیں گے جائز نہیں یہاں تک کہ اگر اُس کے سوا اور پانی نہ ملے اور سے وضو یا غسل کی حاجت ہے تو تمیم کرے اس سے طہارت نہیں کر سکتا۔

اقول: مگر جبکہ، مک (۴) آب کی اجازت مطلقاً یا اس شخص خاص کیلئے صراحۃً خواہ دلالتاً ثابت ہو، صراحۃً یہ کہ اُس نے یہی کہہ کر سبیل لگائی ہو کہ جو چاہے پئے وضو کرے نہائے، اور اگر فقط پینے اور وضو کے لئے کہا تو اس سے غسل روانہ ہوگا اور خاص اس شخص کیلئے یوں کہ ہے۔

آئیں، اس سے وضو غسل کریں، یہ پانی بھی وہیں استعمال لیا جاسکتا ہے گھر لے جانے کی اجازت نہیں۔ اسی طرح مسجد کے لوٹوں کو بھی وہیں استعمال کر سکتے ہیں گھر نہیں لے جاسکتے، بعض لوگ تازہ پانی بھر کر مسجد کے لوٹوں میں گھر لے جاتے ہیں یہ بھی ناجائز ہے۔

مسئلہ ۴: لوٹوں میں وضو کا پانی بچا ہوا ہوتا ہے اسے بعض لوگ پھینک دیتے ہیں، یہ ناجائز و اسراف ہے۔
مسئلہ ۵: وضو کا پانی اور آب زم زم کو کھڑے ہو کر پیا جائے، باقی دوسرے پانی کو بیٹھ کر۔ (3)



سبیل تو پینے ہی کو لگائی مگر اُسے اُس سے وضو یا غسل کی اجازت خود یا اس کے سوال پر دے دی اور دلالت یوں کہ لوگ اس سے وضو کرتے ہیں اور وہ منع نہیں کرتا یا سقا یہ قدیم ہے اور ہمیشہ سے یوں ہی ہوتا چلا آیا ہے یا پانی اس درجہ کثیر ہے جس سے ظاہر ہے کہ صرف پینے کو نہیں مگر جبکہ ثابت ہوا کہ اگرچہ کثیر ہے صرف پینے ہی کی اجازت دی ہے فان العریض یفوق الدلالة (کیونکہ صراحت کو دلالت پر فوقیت حاصل ہے۔ ت) اور فخص خاص کے لئے یوں کہ اس میں اور مالک آب میں کمال انبساط و اتحاد ہے یہ اُس کے ایسے مال میں جیسا چاہے تعریف کرے اُسے ناگوار نہیں ہوتا۔

لان المعروف كالمشروط كما هو معروف في مسائل لا تحصى وفي الهندية عن السراج الوهاج ان كان بينهما انبساط يباح والا فلا۔

کیونکہ معروف مشروط کی طرح ہے، اور یہ چیز بے شمار مسائل میں ہے، اور ہندو یہ میں سراج الوہاج سے ہے کہ اگر ان دونوں کے درمیان بے تکلفی کا رشتہ ہو تو یہ مباح ہے ورنہ نہیں۔ (ت) (۱۔ سراج الوہاج)
محیط و تجنیس دو الوالجیہ و خانہ و بحر و درختار میں ہے:

واللفظ له الماء المسبل في الفلاة لا يمنع التيمم مالم يكن كثيرا فيعلم انه للوضوء ايضا قال ويشرب مالم للوضوء ۲۔ (۲۔ الدر المختار باب التيمم بجبائی دہلی ۱/۳۵)

لفظ درختار کے ہیں وہ پانی جو جنگل میں سبیل کے طور پر ہو مانع تیمم نہیں تا وقتیکہ کثیر نہ ہو، اگر کثیر ہو تو معلوم ہوگا کہ یہ وضوء کے لئے بھی ہے۔
نیز فرمایا: جو پانی وضوء کیلئے ہے وہ پیا جائیگا۔ (ت) (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲، ص ۲۸۰ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(3) منظر صحیح مسم، کتاب الاثریہ، باب فی الشرب من زمزم قاضی، الحدیث: ۱۱۷۔ (۲۰۲۷)، ص ۱۱۹۔

صحیح البخاری، کتاب الاثریہ، باب الشرب قاضی، الحدیث: ۵۶۱۶، ج ۳، ص ۵۸۹۔

ولیمہ اور ضیافت کا بیان

احادیث

حدیث ۱: صحیح بخاری و مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے عبدالرحمن بن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہ پر زردی کا اثر دیکھا (یعنی خلوق کا رنگ ان کے بدن یا کپڑوں پر لگا ہوا دیکھا) فرمایا: یہ کیا ہے؟ (یعنی مرد کے بدن پر اس رنگ کو نہ ہونا چاہیے یہ کیونکر لگا) عرض کی، میں نے ایک عورت سے نکاح کیا ہے (اس کے بدن سے یہ زردی چھوٹ کر لگ گئی)، فرمایا: اللہ تعالیٰ تمہارے لیے مبارک کرے، تم ولیمہ کرو اگرچہ ایک بکری سے یا ایک ہی بکری سے۔ (1)

حدیث ۲: بخاری و مسلم نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے جتنا حضرت زینب رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے نکاح پر ولیمہ کیا، ایسا ولیمہ ازواج مطہرات میں سے کسی کا نہیں کیا۔ ایک بکری سے ولیمہ کیا۔ (2) یعنی تمام ولیموں میں یہ بہت بڑا ولیمہ تھا کہ ایک پوری بکری کا گوشت پکا تھا۔

(1) صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب کیف یدعی للمتزوج، الحدیث: ۵۱۵۵، ج ۳، ص ۴۲۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی ان کے جسم یا کپڑوں پر زرد رنگ کا اثر ملاحظہ فرمایا جو زوجہ سے اختلاط کے باعث بے قصد لگ گیا تھا ورنہ حضرت صحابہ کرام شادی میں اپنے پرزمران نہ مٹتے تھے کہ مرد کے لیے یہ رنگ ممنوع ہے ہاں شادی سے پہلے دولہا دولہن کو جو اجنبی مل جاتا ہے جس میں خوشبو اور صفائی والی چیزیں ہوتی ہیں یہ بلا کراہت جائز ہے کہ یہ صابون کی طرح جسم کی صفائی نرمی کے لیے ہے۔ بعض صابون بہت خوشبودار ہوتے ہیں جیسے لکس (Lux) وغیرہ ایسے ہی یہ اجنبی ہے۔

۲۔ بعض شارحین نے فرمایا کہ نواۃ ایک خاص وزن کا نام ہے جو پانچ درہم کے برابر ہوتا ہے جیسے نش میں درہم کا اور اوقیہ چالیس درہم کا مگر یہ درست نہیں نواۃ کے معنی ہیں چھوارے کی گٹھلی وہ ہی یہاں مراد ہے۔

۳۔ حق یہ ہے کہ یہ امر استحبانی ہے۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ (۱) ناکھ کو دعائے برکت دینا سنت ہے (۲) ولیمہ کرنا سنت ہے (۳) ولیمہ رخصتی کے بعد بھی ہو سکتا ہے (۴) ولیمہ بقدر طاقت زوج ہو اس کے لیے مقدار مقرر نہیں بعض علماء کے ہاں ولیمہ واجب ہے وہ حضرات یہ مروجہ کے لیے مانتے ہیں مگر حق وہی ہے جو ہم نے عرض کیا۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۱۳۰)۔

(2) المرجع السابق، باب الولیمۃ ولوبشاة، الحدیث: ۵۱۶۸، ج ۳، ص ۴۵۳۔

صحیح بخاری شریف کی دوسری روایت انھیں سے ہے کہ حضرت زینب بنت جحش رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے زفاف کے بعد جو ولیمہ کیا تھا، لوگوں کو پیٹ بھر روٹی گوشت کھلایا تھا۔ (3)

حدیث ۳: صحیح بخاری میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہتے ہیں: خیبر سے واپسی میں خیبر و مدینہ کے مابین صفیہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے زفاف کی وجہ سے تین راتوں تک حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے قیام فرمایا، میں مسلمانوں کو ولیمہ کی دعوت میں بلا لایا، ولیمہ میں نہ گوشت تھا، نہ روٹی تھی، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے حکم دیا، دسترخوان بچھا دیے گئے، اُس پر کچھوریں اور پنیر اور گھی ڈال دیا گیا۔ (4)

امام احمد و ترمذی و ابو داؤد و ابن ماجہ کی روایت میں ہے، کہ حضرت صفیہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے ولیمہ میں ستوا اور

حکیم الامت کے مدنی پھول

بی بی زینب رضی اللہ عنہا کا نام شریف پہلے میر تھا، حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے بدل کر زینب رکھا، آپ زینب بنت جحش ہیں آپ کی والدہ امیمہ بنت عبدالمطلب ابن ہاشم ہیں اولاً حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کا نکاح حضرت زید ابن حارثہ سے کیا تھا انہوں نے کچھ عرصہ بعد طلاق دے دی بعد عدت حضور انور نے خود ہی جناب زید کو اپنے نکاح کا پیغام دے کر جناب زینب کے پاس بھیجا حضرت زید بی بی زینب کے گھر پہنچے وہ ان کی طرف پشت کر کے کھڑے ہوئے اور حضور کا پیغام دیا آپ بولیں کہ میں اپنے رب سے مشورہ کر لوں۔ یہ کہہ کر آپ اپنے گھر کی مسجد میں عبادت میں مشغول ہو گئیں ادھر حضور صلی اللہ علیہ وسلم پر یہ آیت کریمہ نازل ہوئی "لَقَدْ قُلْتُمْ زَيْنَةُ مِثْلُهَا وَطَرَا زَوْجَهَا"۔ اس آیت کے نزول پر حضور صلی اللہ علیہ وسلم بغیر اجازت آپ کے گھر میں داخل ہوئے بی بی زینب فخر کرتی تھیں کہ تمام بیبیوں کا نکاح ان کے عزیزوں نے فرش پر کیا میرا نکاح میرے رب نے عرش پر کیا۔ منافقین نے طعنہ دیا کہ حضور نے اپنے منہ بولے بیٹے کی بیوی سے نکاح کر لیا۔ تب یہ آیت کریمہ اتری "مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ" (الایہ)۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۱۳۲)

(3) صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب قوله (لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ... إلخ)، الحدیث: ۹۳۷، ج ۳، ص ۳۰۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس ولیمہ کا وہ واقعہ ہے کہ بعض صحابہ کرام کھانا پکتنے سے پہلے ہی دولت خانہ سرکار میں پہنچ گئے اور بعض حضرات کھانا کھا چکنے کے بعد وہاں ہی باتوں میں مشغول رہے جس سے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو تکلیف ہوئی تب یہ آیت کریمہ نازل ہوئی "يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ" (الایہ)۔

۲۔ یعنی حاضرین مدعوین کو پیٹ بھر گوشت روٹی کھلائی یا خرید بنا کر یا جیسے آج کل عموماً کھائی جاتی ہے اس طرح اس ولیمہ کے علاوہ باقی ولیموں میں چھوڑے پنیر وغیرہ کھلائے گئے تھے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۱۳۳)

(4) صحیح بخاری، کتاب المغازی، باب غزوة خیبر، الحدیث: ۴۲۱۳، ج ۳، ص ۸۶۔

مجھوڑیں تھیں۔ (5)

حدیث ۴: صحیح بخاری و مسلم میں عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کسی شخص کو ولیمہ کی دعوت دی جائے تو اسے آنا چاہیے۔ (6)

حدیث ۵: صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کسی کو کھانے کی دعوت دی جائے تو قبول کرنی چاہیے پھر اگر چاہے کھائے، چاہے نہ کھائے۔ (7)

حدیث ۶: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا: برا کھانا ولیمہ کا کھانا ہے، جس میں مال دار لوگ بلائے جاتے ہیں اور فقرا چھوڑ دیے جاتے ہیں اور جس

(5) سنن الترمذی، کتاب النکاح، باب ما جاء فی الولیمۃ، الحدیث: ۱۰۹۷، ج ۲، ص ۳۳۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی اس ولیمہ میں ستوا اور چھوارے ملا کر کھلائے یا ستوا علیحدہ اور چھوارے علیحدہ لہذا یہ حدیث گزشتہ حدیث کے خلاف نہیں کہ حضور نے اس ولیمہ میں حبس دیا کہ ستوا اور چھوارے ملا کر بھی حبس بنایا جاتا ہے یا ستوا علیحدہ دیئے اور حبس علیحدہ۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۱۳۳)

(6) صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب حق إجابة الولیمۃ... إلخ، الحدیث: ۵۱۷۳، ج ۲، ص ۳۵۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اس حدیث کی بنا پر بعض علماء نے فرمایا کہ ولیمہ کی دعوت قبول کرنا واجب ہے، بعض نے فرمایا کہ فرض کفایہ ہے وہ حضرات وجوب کے لیے یہ امر نکتہ ہیں مگر حق یہ ہے کہ ولیمہ ہو یا کوئی اور دعوت طعام اس کا قبول کرنا سنت ہے وہاں جانا بھی سنت رہا کھانا اس کا اختیار ہے جیسا کہ آئندہ حدیث میں آرہا ہے۔ خیال رہے کہ دعوت قبول کرنا واجب یا فرض کفایہ یا سنت جب ہے جب کہ کوئی مانع موجود نہ ہو ورنہ نہیں جس کا کھانا مشکوک ہو حرام کی آمدنی سے کھانے پکانے کا قوی احتمال ہو یا ولیمہ میں صرف مالدار بلائے گئے ہوں فقراء کو چھوڑ دیا گیا ہو یا دعوت میں کوئی ایذا رساں چیز موجود ہو یا دسترخوان پر گانا باجہ ہو یا وہاں شراب کے دور ہوں یا رشوت کے طور پر بلاوا ہو یا ناجنسوں کی صحبت ہو تو قبول کرنا سنت نہیں۔ صوفیاء فرماتے ہیں کہ اب اس زمانہ میں جلوت سے خلوت افضل سے بری صحبت سے تنہائی افضل۔

(از مرقات و شعبہ و معات)

۲۔ ظاہر یہ ہے کہ یہ عبارت کہ ولیمہ ہو یا اس کی مثل کسی راوی کا اپنا قول ہے جو بطور شرح شامل کیا گیا ہے۔ یعنی ولیمہ، ختمہ، عقیقہ، کسی کی آمد پر دعوت یوں ہی اتفاقہ دعوت سب ہی قبول کرنی چاہئیں، ختم فاتحہ کے کھانے فقراء کھائیں مالدار احتیاط کریں، بزرگوں کی فاتحہ کے کھانے تبرک ہیں سب کھائیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۱۳۷)

(7) صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب الامر بإجابة الداعی... إلخ، الحدیث: ۱۰۵- (۱۳۳۰)، ص ۷۳۹۔

نے دعوت کو ترک کیا (یعنی بلا سبب انکار کر دیا) اس نے اللہ و رسول (عزوجل و صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم) کی نافرمانی کی۔ (8)

مسلم کی ایک روایت میں ہے، ولیمہ کا کھانا برا کھانا ہے کہ جو اس میں آتا ہے اسے منع کرتا ہے۔ اور اس کو بلایا جاتا ہے جو انکار کرتا ہے اور جس نے دعوت قبول نہیں کی اس نے اللہ و رسول (عزوجل و صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم) کی نافرمانی کی۔ (9)

حدیث ۷: ابو داؤد نے عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس کو دعوت دی گئی اور اس نے قبول نہ کی اس نے اللہ و رسول (عزوجل و صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم) کی نافرمانی کی اور جو بغیر بلائے گیا وہ چور ہو کر گھسا اور غارت گری کر کے نکلا۔ (10)

(8) صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب من ترک الدعوة... إلخ، الحدیث: ۵۱۷۷، ج ۳، ص ۴۵۵.

حکیم الامت کے مدنی پھول

کیونکہ ایسے ولیمہ میں زیادہ نام و نمود ہی ہوتا ہے للہیت نہیں ہوتی آج کل خوشی کی دعوتوں میں عموماً امراء اور موت وغیرہ غمی کی دعوتوں میں فقیر و طلبہ بلائے جاتے ہیں جس کا نتیجہ یہ ہے کہ فقیر دعائیں کرتے ہیں کہ خدا کرے امیر مرے تاکہ ہم کو کھانا و خیرات ملے، اگر ولیمہ اور دیگر خوشی کی دعوتوں میں بھی فقراء بلائے جائیں تو یہ فقراء خوشی کی بھی دعائیں کرتے۔ آج کل مشہور ہے کہ بھانڈ بھنڈ لیے مراٹھی، ہاجے والے تو خوشی کی دعائیں کرتے ہیں اور فقراء غمی کی، غرض کہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے ہر فرمان میں صد ہا حکمتیں ہیں، بعض لوگ ان دعوتوں میں فقراء کو بھی بلاتے ہیں۔ مگر انہیں سب سے پیچھے اور ذلت و خواری سے کھلاتے ہیں، یہ اور زیادہ برا ہے فقراء بھی ہمارے بھائی ہیں۔

۳۔ یہ جملہ ان علماء کی دلیل ہے جو قبول دعوت کو واجب یا فرض کہتے ہیں جمہور علماء فرماتے ہیں کہ اس سے استہاب کی تاکید مقصود ہے یا وہ مقصود مراد ہے جو تکبر کی وجہ سے مسلمانوں کی دعوتوں میں شرکت نہ کرے جیسا کہ آج بعض منکرین کو دیکھا جاتا ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۱۳۹)

(9) صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب الامر بارجاء الداعی... إلخ، الحدیث: ۱۰۷۷- (۱۳۳۲)، ص ۷۴۹.

(10) سنن أبی داؤد، کتاب الاطعمۃ، باب ما جاء فی ارجاء الدعوة، الحدیث: ۴۷۴۱، ج ۳، ص ۷۷۹.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جو بلا وجہ صرف تکبر کی وجہ سے دعوت قبول نہ کرے وہ نافرمان ہے لہذا حدیث بالکل واضح ہے۔

۲۔ کیونکہ جیسے چور بغیر اجازت مالک گھر میں گھس بھی جاتا ہے مال بھی لے لیتا ہے، ایسے ہی یہ ہے۔

۳۔ سبحان اللہ! کیسے پاکیزہ اخلاق کی تعلیم ہے کہ بلا وجہ دعوت قبول نہ کرنا تکبر شنی ہے اور بغیر دعوت پہنچ جانا کمینہ پن ہے دونوں سے بچنا

چاہیے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۱۳۹)

حدیث ۸: ترمذی نے عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: (شادیوں میں) پہلے دن کا کھانا حق ہے یعنی ثابت ہے، اسے کرنا ہی چاہیے اور دوسرے دن کا کھانا سنت ہے اور تیسرے دن کا کھانا سمعہ ہے (یعنی سنانے اور شہرت کے لیے ہے)۔ جو سنانے کے لیے کوئی کام کریگا، اللہ تعالیٰ اس کو سنائے گا۔ (11) یعنی اس کی سزا دے گا۔

حدیث ۹: ابو داؤد نے عکرمہ سے روایت کی، کہ ایسے دو شخص جو مقابلہ اور تفاخر کے طور پر دعوت کریں، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ان کے یہاں کھانے سے منع فرمایا۔ (12)

(11) سنن اترمذی، کتاب النکاح، باب ما جاء فی الولیمۃ، الحدیث: ۱۰۹۹، ج ۲، ص ۳۳۹

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس جملہ کے کئی معنی ہو سکتے ہیں ایک یہ کہ پہلے دن سے مراد شادی و برات کا دن ہے اور حق سے مراد مستحق ہے، یعنی برات والے دن کا کھانا مہمانوں کا حق ہے جو شرکت بارات کے لیے آئے ہیں اور دوسرے دن یعنی زفاف کے بعد ولیمہ کا کھانا سنت ہے مؤکدہ یا مستحبہ اس صورت میں حدیث بالکل واضح ہے دوسرے یہ کہ پہلے دن سے مراد زفاف کے بعد کا دن ہے اور دوسرے دن سے مراد اس دن کے بعد کا دن یعنی زفاف سے سویرے۔ دعوت ولیمہ حق درست ہے اور دوسرے دن کا کھانا بھی سنت ہے یعنی بدعت یا خلاف سنت نہیں، تیسرے یہ کہ زفاف کے سویرے کھانا دینا فرض یا واجب ہے جس میں بلاوجہ شرکت نہ کرنا گناہ دوسرے دن کا بھی کھانا سنت ہے، یہ تیسرے معنی ان کے مذہب پر ہیں جو ولیمہ کو جب کہتے ہیں فقیر کے نزدیک پہلے معنی زیادہ قوی ہیں، چوتھے یہ کہ زفاف کے سویرے ولیمہ کا کھانا دینا برحق ہے، لیکن اگر کسی وجہ سے اس دن نہ دے سکے تو دوسرے دن دے دینا بھی سنت ولیمہ میں شامل ہے۔

۲۔ یعنی مسلسل تین دن تک کھانا دینا محض نام و نمود ہے ثواب نہیں یا زفاف کے تیسرے دن کھانا دینا سنت نہیں صرف نام و نمود ہے یہ حدیث حضرت امام، ملک کی دلیل ہے کہ ان کے ہاں ولیمہ سات روز تک ہو سکتا ہے۔ (ازمرقات)

۳۔ یعنی جو دنیا میں محض اپنی ریاکاری کے لیے کوئی کام کرے گا تو اللہ تعالیٰ کل قیامت میں اس کو رسوا فرمائے گا، اعلان ہوگا کہ یہ ریاکار تھا، یہ جو دنیا میں محض ناموری کے لیے نیکی کرے گا اس کی جزا صرف یہاں کی ناموری ہوگی قیامت میں کوئی ثواب نہ ملے گا، ثواب کے لیے اخلاص چاہیے۔

۴۔ یہ حدیث طبرانی نے حضرت ابن عباس سے نقل فرمائی اس کا مضمون یہ ہے کہ شادی میں ایک دن کھانا سنت ہے دو دن کا کھانا افضل اور تین دن کا کھانا کھلا۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۱۳۵)

(12) سنن ابی داؤد، کتاب الاطعمۃ، باب فی طعام المتباریین، الحدیث: ۴۷۵۳، ج ۳، ص ۴۸۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ عکرمہ ابن ابوجہل نہیں ہیں بلکہ حضرت ابن عباس کے آزاد کردہ غلام ہیں برابر کے رہنے والے ہیں، فقہائے مدینہ سے ہیں۔

حدیث ۱۰: امام احمد و ابو داؤد نے ایک صحابی سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب دو شخص دعوت دینے بیک وقت آئیں تو جس کا دروازہ تمہارے دروازہ سے قریب ہو اس کی دعوت قبول کرو اور اگر ایک پہلے آیا تو جو پہلے آیا اس کی قبول کرو۔ (13)

حدیث ۱۱: صحیح بخاری و مسلم میں ابو مسعود انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ ایک انصاری جن کی کنیت ابو شعیب تھی، انہوں نے اپنے غلام سے کہا، کہ اتنا کھانا پکاؤ جو پانچ شخصوں کے لیے کفایت کرے۔ میں نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی مع چار اصحاب کے دعوت کروں گا۔ تھوڑا سا کھانا طیار کیا اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کو بلانے آئے، ایک شخص حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کے ساتھ ہو لیے، نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ابو شعیب ہمارے ساتھ یہ شخص چلا آیا، اگر تم چاہو اسے اجازت دو اور چاہو تو نہ اجازت دو، انہوں نے عرض کی،

۲۔ یعنی جب دو شخص ایک دوسرے کے مقابلہ میں دعوت کریں ہر ایک یہ چاہے کہ میرا کھانا دوسرے سے بڑھ جائے کہ میری عزت ہو دوسرے کی ذلت تو ایسی دعوت قبول نہ کرے۔ مثلاً شادی میں دہن و دلہا والے مقابلہ میں دعوت کریں تو کسی کی دعوت قبول نہ کرو یا کسی برادری میں کسی کی شادی میں دعوت ہوئی کچھ دن کے بعد دوسرے کے ہاں شادی ہوئی اس نے بڑھ چڑھ کر کھانے پکائے اس نیت سے کہ پہلے کا نام نیچا ہو جائے اور میرا نام اونچا ہو تو یہ دعوتیں قبول نہ کرو۔ بزرگان دین ایسی دعوتیں قبول نہ کرتے تھے آج کل مسلمان اسی مقابلہ کی رسوم میں تباہ ہو گئے اور نام کسی کا بھی نہیں ہوتا۔

۳۔ یعنی صحیح یہ ہے کہ اس کی اسناد میں حضرت ابن عباس کا نام نہیں ہے، حضرت عکرمہ نے حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم تک مرفوع کہا ہے اسی کو مرسل کہتے ہیں کہ تابعی حضور کی طرف نسبت کر دیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۵، ص ۱۳۶)

(13) المرجع السابق، باب اذا اجمع داعیان... إلخ، الحدیث: ۵۶۷، ج ۳، ص ۴۸۴.

والسند، حدیث رجل من اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث: ۲۳۵۲۶، ج ۹، ص ۱۲۲.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ان صحابی کا نام معلوم نہ ہو سکا مگر چونکہ تمام صحابہ عادل متقی ہیں اس لیے یہ نام معلومیت مضر نہیں علاوہ صحابی کے اگر اور کسی راوی کا پتہ نہ لگے تو حدیث مجہول نام قبول ہوتی ہے۔

۲۔ یعنی جب تمہارے دو پڑوسی بیک وقت دعوت دیں اور دونوں دعوتیں متعارض ہوں تو زیادہ قریبی پڑوسی کی دعوت قبول کیجئے کہ اس کا حق زیادہ ہے، اس قرب میں زیادہ دروازہ کا قرب معتبر ہے نہ کہ گھر کا قرب رب تعالیٰ فرماتا ہے: "وَالْبُحَارِیُّ الْمَغْرِبِیُّ"۔

۳۔ یعنی نزدیک دور کا فرق جب ہوگا، جب کہ دونوں بیک وقت آپ کو دعوت دیں لیکن اگر ان میں سے ایک آپ کے پاس پہلے پہنچ جائے دوسرا بعد میں تو پہلے کی دعوت قبول کیجئے کہ پہلا مقدم ہے اور حقدار ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۵، ص ۱۳۶)

میں نے ان کو اجازت دی۔ (14)

(14) صحیح البخاری، کتاب الاطعمہ، باب الرجل یدعی الی الطعام... الخ، الحدیث: ۵۴۶۱، ج ۳، ص ۵۴۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی چار حضرات غالباً خلفائے راشدین حضور انور کے ساتھ ہوں اور پانچویں حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم ہوں اس نے چہرہ انور پر بھروسے کے آثار دیکھے تھے جیسا کہ بعض روایات میں ہے تب یہ انتظام کیا تھا معلوم ہوا کہ گوشت کی تجارت بھی سنت صحابہ ہے۔

۲۔ مرقات نے فرمایا طعنہ کی تفسیر کی کے لیے نہیں ہے کیونکہ ابو شعیب نے کھانا کافی تیار کیا تھا بلکہ معنی یہ ہیں کہ پر تکلف کھانا تیار کیا جو نہایت لذیذ تھا۔ خیال رہے کہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے لذیذ کھانے بھی تناول فرمائے ہیں، مرغ بھی کھایا ہے مگر بیک وقت چند کھانے نہ کھائے، اسی لیے فقہاء فرماتے ہیں کہ بیک وقت چند کھانے بدعت، جائز نہیں۔ (دیکھو شامی وغیرہ) اس سے معلوم ہوا کہ مہمان کے لیے پر تکلف لذیذ کھانا تیار کرنا سنت ہے حضرت ابراہیم خلیل اللہ (علیہ الصلوٰۃ والسلام) نے پرائے شیر ماں ایجاد کیے مہمانوں کے لیے۔ (دیکھو ہماری کتاب تفسیر نعیمی پہلا پارہ)

۳۔ غالباً یہ چھٹا شخص راستہ سے ساتھ ہو لیا تھا اور غالباً اسی سے فرمایا بھی دیا ہوگا کہ تمہارے لیے اگر اجازت مل گئی تو کھالینا ورنہ واپس آ جانا، اس پر برا نہ ماننا۔

۴۔ سبحان اللہ! یہاں تو ایک زائد شخص کے لیے اجازت حاصل فرما رہے ہیں اور حضرت جابر و طلحہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے گھر چار پانچ آدمیوں کی دعوت میں کئی سو حضرات کو لے گئے اور کھانا کھلایا، یہاں مسئلہ شرعی بتانا مقصود ہے اور وہاں اپنی ملکیت اور سلطنت خدا داد کا اظہار مقصود کہ حضور ہم سب کے مالک ہیں، ساری امت حضور کی لونڈی غلام، مالک کو حق ہے کہ اپنے غلام کی دعوت میں جسے چاہے بلائے، کیونکہ غلام کا مال مالک کا مال ہے، نیز وہاں ان صمد با حضرات کو حضور نے خود اپنے معجزے سے کھانا کھلایا کہ وہاں کھانا کھانے سے کم نہ ہوا، جو چیز خرچ کرنے سے کم نہ ہو وہاں بد نے نہ بلانے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا، کوئیں، دیر یا سے بغیر بلائے سب پانی پیتے ہیں مگر گھرے کا پانی مالک سے پوچھ کر، ایصال ثواب کا بھی یہی حکم ہے، مگر کسی خاص میت کے لیے کھانا پکایا گیا ہے تو تم اس کے ساتھ ساری امت رسول کو ثواب پہنچا سکتے ہو۔

۵۔ اس سے دعوت کے متعلق بہت سے مسائل معلوم ہوئے: ایک یہ کہ کوئی شخص بغیر بلائے دعوت میں نہ جائے۔ دوسرے یہ کہ بلایا ہوا آدمی بھی اپنے ساتھ کسی ناخواندہ کو نہ لے جائے الا بالعرف چنانچہ بادشاہ کی دعوت میں اس کا باڈی گارڈ ملکہ جاسکتا ہے کہ اب اس پر عرف قائم ہے، تیسرے یہ کہ ناخواندہ شخص کے لیے اجازت لی جائے۔ چوتھے یہ کہ ناخواندہ بغیر اجازت داعی کے گھر میں داخل نہ ہو، پانچویں یہ کہ مہمان کھاتے وقت کسی آجانے والے آدمی کو آرڈر نہ کرے کہ آؤ کھانا کھاؤ کیونکہ مہمان کھانے کا مالک نہیں، چھٹے یہ کہ دسترخوان والا دوسرے دسترخوان والے کو کوئی چیز اس دسترخوان کی نہ دے ہاں ایک دسترخوان کے لوگ ایک دوسرے کو جو چاہیں دیں، بعض فقہاء تو فرماتے ہیں کہ مہمان اجنبی کتے کو ہڈی بھی نہیں ڈال سکتا، اگر مالک کا کتا ہے تو اس کو ڈالے۔ (از مرقات، وشامی وغیرہ مع زیادت) بعض فقہاء فرماتے ہیں کہ اگر مہمان کسی وجہ سے خود کھانا نہ کھائے تو اپنا حصہ دوسرے کو بغیر اجازت کھلا سکتا ہے۔ واللہ اعلم! (مرقات)

یعنی اگر کسی کی دعوت ہو اور اس کے ساتھ کوئی دوسرا شخص بغیر بلائے چلا آئے تو ظاہر کر دے کہ میں نہیں لایا ہوں اور صاحب خانہ کو اختیار ہے، اسے کھانے کی اجازت دے یا نہ دے، کیونکہ ظاہر نہ کریگا تو صاحب خانہ کو یہ ناگوار ہوگا کہ اپنے ساتھ دوسروں کو کیوں لایا۔

حدیث ۱۲: بیہقی نے شعب الایمان میں عمران بن حصین رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فاسقوں کی دعوت قبول کرنے سے منع فرمایا۔ (15)

حدیث ۱۳: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص اللہ (عزوجل) اور قیامت پر ایمان رکھتا ہے وہ مہمان کا اکرام کرے اور جو شخص اللہ (عزوجل) اور قیامت پر ایمان رکھتا ہے، وہ اپنے پڑوسی کو ایذا نہ دے اور جو شخص اللہ (عزوجل) اور قیامت پر ایمان رکھتا ہے، وہ بھلی بات بولے یا چپ رہے۔ (16) اور ایک روایت میں یہ ہے کہ جو شخص اللہ (عزوجل) اور قیامت پر ایمان رکھتا ہے وہ صلہ رحمی کرے۔ (17)

حدیث ۱۴: صحیح بخاری و مسلم میں ابو شریح کعبی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص اللہ (عزوجل) اور قیامت کے دن پر ایمان رکھتا ہے، وہ مہمان کا اکرام کرے، ایک دن رات اس کا جائزہ ہے (یعنی ایک دن اس کی پوری خاطر داری کرے، اپنے مقبدر بھر اس کے لیے تکلف کا کھانا طیار کرائے) اور ضیافت تین دن ہے (یعنی ایک دن کے بعد ماحضر پیش کرے) اور تین دن کے بعد صدقہ ہے، مہمان کے لیے یہ حلال نہیں کہ اس کے یہاں ٹھہرا رہے کہ اسے حرج میں ڈال دے۔ (18)

حدیث ۱۵: ترمذی ابی الاحوص جشمی سے وہ اپنے والد سے روایت کرتے ہیں، کہتے ہیں: میں نے عرض کی،

(15) شعب الایمان، باب فی الطعام والشارب، فصل فی طیب الطعام... إلخ، الحدیث: ۵۸۰۳، ج ۵، ص ۶۸.

حکیم الامت کے مدنی پھول

یہاں فاسقین سے مراد وہ لوگ ہیں جن کی کمائی خالص حرام کی ہو ان کی دعوت ہرگز قبول نہ کرو۔

(مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۱۳۸)

(16) صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الحدیث علی اکرام الجار... إلخ، الحدیث: ۷۷۔ (۳۸)، ص ۴۴.

مشکاۃ المصابیح، کتاب الاطعمۃ، باب الضیافۃ، الحدیث: ۴۲۳۳، ج ۲، ص ۵۶.

(17) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب اکرام الضیف... إلخ، الحدیث: ۶۱۳۸، ج ۴، ص ۱۳۶.

(18) المرجع السابق، الحدیث: ۶۱۳۵، ج ۴، ص ۱۳۶.

... میں یہ لکھا ہے کہ ...
 "میرے سر پر آئے ...
 حدیث ۱۱۱۱ میں ہے کہ ابو یوسف رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ...
 "یہ کہ سنت یہ ہے کہ مہمان کو دروازہ تک رخصت کرنے چاہئے۔ (20)"



(19) سنن اتر مذی، کتاب، برود الصلۃ، باب ماجاء فی الاحسان والعفو، الحدیث: ۲۰۱۳، ج ۳، ص ۴۰۵۔

(20) سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب الضیافۃ، الحدیث: ۳۳۵۸، ج ۴، ص ۵۲۔

مسائل فقہیہ

دعوتِ ولیمہ سنت ہے۔ ولیمہ یہ ہے کہ شبِ زفاف کی صبح کو اپنے دوست احباب عزیز و اقارب اور محلہ کے لوگوں کی حسب استطاعت ضیافت کرے اور اس کے لیے جانور ذبح کرنا اور کھانا طیار کرانا جائز ہے اور جو لوگ بلائے جائیں ان کو جانا چاہیے کہ ان کا جانا اس کے لیے مسرت کا باعث ہوگا۔ ولیمہ میں جس شخص کو بلایا جائے اس کو جانا سنت ہے یا واجب۔ علما کے دونوں قول ہیں، بظاہر یہ معلوم ہوتا ہے کہ اجماعت سنت مؤکدہ ہے۔

ولیمہ کے سوا دوسری دعوتوں میں بھی جانا افضل ہے اور یہ شخص اگر روزہ دار نہ ہو تو کھانا افضل ہے کہ اپنے مسلم بھائی کی خوشی میں شرکت اور اس کا دل خوش کرنا ہے اور روزہ دار ہو جب بھی جائے اور صاحب خانہ کے لیے دعا کرے اور ولیمہ کے سوا دوسری دعوتوں کا بھی یہی حکم ہے کہ روزہ دار نہ ہو تو کھائے، ورنہ اس کے لیے دعا کرے۔ (1)

مسئلہ ۱: دعوتِ ولیمہ کا یہ حکم جو بیان کیا گیا ہے، اس وقت ہے کہ دعوت کرنے والوں کا مقصود ادائے سنت ہو اور

(1) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب النکاحیۃ، الباب الثانی عشر فی الہدایۃ والضیافات، ج ۵، ص ۳۴۳۔

ورد المحتار، کتاب المعطر والاباحۃ، ج ۹، ص ۵۷۴۔

ضیافت (یعنی مہمان نوازی) کے آداب:

حضرت سیدنا امام محمد غزالی علیہ رحمۃ اللہ الوالی لبابِ الخیر فرماتے ہیں:

اللہ کے محبوب، دانائے عجیب، منزہ عن الغیب غرّ و جلّ و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمانِ ہدایت نشان ہے: مہمان کے لئے تکلف نہ کرو کیونکہ اس طرح تم اس سے نفرت کرنے لگو گے اور جو مہمان سے نفرت کرتا ہے وہ اللہ غرّ و جلّ سے بغض کرتا ہے اور جو شخص اللہ غرّ و جلّ سے بغض کرتا ہے اللہ غرّ و جلّ اسے ناپسند کرتا ہے۔

(البحر الزخار بمسند البزار، مسند سلمان الفارسی، الحدیث: ۲۵۴، ج ۶، ص ۴۸۲، مختصراً)

فقیر و غنی کے لئے دعوت قبول کرنا سنت ہے۔ بعض آسمانی کتابوں میں مذکور ہے کہ ایک میل چل کر سرریض کی عیادت کرو، دو میل چل کر جنازہ میں شریک ہو اور تین میل چل کر دعوت قبول کرو۔

مرکا بمکہ مکرمہ، سلطان مہینہ متورہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا:

لَوْ دُعِيتُ إِلَى كُرَاعٍ لَأَجَبْتُ۔ (صحیح البخاری، کتاب الہبۃ، باب القلیل من الہبۃ، الحدیث ۲۵۶۸، ص ۲۰۲)

ترجمہ: اگر مجھے (کُرَاع النعمان میں بھی) بکری کے پائے کی دعوت دی جائے تو میں قبول کروں گا۔ (کتابِ الخیر، صفحہ ۱۳۴)

اگر مقصود تفاخر ہو یا یہ کہ میری واہ واہ ہوگی جیسا کہ اس زمانہ میں اکثر یہی دیکھا جاتا ہے، تو ایسی دعوتوں میں نہ شریک ہونا بہتر ہے خصوصاً اہل علم کو ایسی جگہ نہ جانا چاہیے۔ (2)

مسئلہ ۲: دعوت میں جانا اس وقت سنت ہے جب معلوم ہو کہ وہاں گانا بجانا، لہو و لعب نہیں ہے اور اگر معلوم ہے کہ یہ خرافات وہاں ہیں تو نہ جائے۔ جانے کے بعد معلوم ہوا کہ یہاں لغویات ہیں، اگر وہیں یہ چیزیں ہوں تو واپس آئے اور اگر مکان کے دوسرے حصے میں ہیں جس جگہ کھانا کھلایا جاتا ہے وہاں نہیں ہیں تو وہاں بیٹھ سکتا ہے اور کھا سکتا ہے پھر اگر یہ شخص ان لوگوں کو روک سکتا ہے تو روک دے اور اگر اس کی قدرت اسے نہ ہو تو صبر کرے۔

(2) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۷۴۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

قبول دعوت سنت ہے فقہاء کرام کا حکم غیر معین پر ہے اور نہ ہرگز ان کے یہاں تعیم، نہ اصلاً اس پر دلیل قویہ۔ وہ تو یہ فرماتے ہیں کہ جہاں ایسا ہو وہاں نہ جانا چاہئے۔ غیر معین پر حکم کسی معین مسلمان کے لئے سمجھ لینا بدگمانی ہے جب تک اس کے قرآن واضح نہ ہو اور بدگمانی حرام۔

قال اللہ تعالیٰ یا ایہا الذین امنوا اجتنبوا کثیرا من الظن ان بعض الظن اثم۔ وقال اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ایاکم الظن فان الظن اکذب۔ (۱) الحدیث۔

اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا: اے ایمان والو! بہت سے گمانوں سے بچتے رہو کیونکہ بعض گمان گناہ ہیں۔ اور حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: لوگو! بدگمانی سے بچو کیونکہ بدگمانی سب سے جھوٹی بات ہے۔ الحدیث۔ (ت) (۱) القرآن الکریم ۴۹/۱۲۔

(۲) صحیح بخاری کتاب الوصایا باب قول اللہ عزوجل من بعد وصیۃ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۳۸۴۔

بحال قصد تفاخر اگر یہ جاتا تو ایک نامناسب ہی بات ہوتی۔ بنایہ امام معنی میں ہے:

اجابة الدعوة سنة وليمة او غيرها واما دعوة يقصد بها التطاول او ابتغاء المحبة او ما اشبهه فليس ينبغي اجابتها لاسيما اهل العلم فقد قيل ماضع احديده في قصعة غيرة الاذل له ۳۔ ملخصاً۔

دعوت قبول کرنا سنت ہے خواہ دعوت ولیمہ ہو یا کوئی اور، لیکن جس دعوت میں تفاخر اور مدح سرائی یا اس قسم کی باتیں ہوں تو پھر ایسی دعوت قبول کرنا مناسب نہیں خصوصاً علم و فضل رکھنے والوں کے لئے، کیونکہ یہ کہا گیا ہے کہ کسی نے ہاتھ دوسرے کے پیالے میں رکھا تو یہ اس کے لئے ذلت اختیار کرے گا۔ ملخصاً۔

(۳) البتایہ فی شرح الہدایہ کتاب الکرامیۃ فصل فی الاکل والشرب المکتبۃ الامادیہ مکۃ المکرمہ ۲/۲۰۴۔

اور اب کہ ایک مسلمان پر بلا دلیل یہ گمان کیا کہ اس کی نیت ریا و تفاخر و ناموری ہے تو یہ حرام قطعی ہوا، حیوب طعام کی اگر بے ادبی ہوتی ہے تو جائے اور اس سے منع کرے اگر نہ مانے تو وبال ان پر ہے۔ امام ابوالقاسم صفار رحمۃ اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں میں آج کل دعوت میں جانے کی

کوئی نیت نہیں پاتا ہوں سو اس کے کہ نمک دانی روٹی پر سے اٹھاؤں۔ (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۱، ص ۶۷۳ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

یہ اس صورت میں ہے کہ یہ شخص مذہبی پیشوا نہ ہو اور اگر مقتدی و پیشوا ہو، مثلاً علماء و مشائخ، یہ اگر نہ روک سکتے ہوں تو وہاں سے چلے آئیں نہ وہاں بیٹھیں نہ کھانا کھائیں اور پہلے ہی سے یہ معلوم ہو کہ وہاں یہ چیزیں ہیں تو مقتدی ہو یا نہ ہو کسی کو جانا جائز نہیں اگرچہ خاص اُس حصہ مکان میں یہ چیزیں نہ ہوں بلکہ دوسرے حصہ میں ہوں۔ (3)

مسئلہ ۳: اگر وہاں لہو و لعب ہو اور یہ شخص جانتا ہے کہ میرے جانے سے یہ چیزیں بند ہو جائیں گی تو اس کو اس نیت سے جانا چاہیے کہ اس کے جانے سے منکرات شرعیہ روک دیے جائیں گے اور اگر معلوم ہے کہ وہاں نہ جانے سے ان لوگوں کو نصیحت ہوگی اور ایسے موقع پر یہ حرکتیں نہ کریں گے، کیونکہ وہ لوگ اس کی شرکت کو ضروری جانتے ہیں اور جب یہ معلوم ہوگا کہ اگر شادیوں اور تقریبوں میں یہ چیزیں ہوں گی تو وہ شخص شریک نہ ہوگا تو اس پر لازم ہے کہ وہاں نہ جائے تاکہ لوگوں کو عبرت ہو اور ایسی حرکتیں نہ کریں۔ (4)

مسئلہ ۴: دعوت و لیمہ صرف پہلے دن ہے یا اس کے بعد دوسرے دن بھی یعنی دو ۲ ہی دن تک یہ دعوت ہو سکتی ہے، اس کے بعد و لیمہ اور شادی ختم۔ (5) ہندوستان میں شادیوں کا سلسلہ کئی دن تک قائم رہتا ہے۔ سنت سے آگے بڑھنا یا دسمہ (6) ہے اس سے بچنا ضروری ہے۔

مسئلہ ۵: ایک دسترخوان پر جو لوگ کھانا تناول کرتے ہیں، ان میں سے ایک شخص کوئی چیز اٹھا کر دوسرے کو دیدے یہ جائز ہے، جبکہ معلوم ہو کہ صاحب خانہ کو یہ دینا ناگوار نہ ہوگا اور اگر معلوم ہے کہ اسے ناگوار ہوگا تو دینا جائز نہیں، بلکہ اگر مشتبہ حال ہو معلوم نہ ہو کہ ناگوار ہوگا یا نہیں جب بھی نہ دے نہ (7)

بعض لوگ ایک ہی دسترخوان پر معززین کے سامنے عمدہ کھانے چنتے ہیں اور غریبوں کے لیے معمولی چیزیں رکھ دیتے ہیں۔ اگرچہ ایسا نہ کرنا چاہیے کہ غریبوں کی اس میں دل شکنی ہوتی ہے۔ مگر اس صورت میں جس کے پاس کوئی اچھی چیز ہے، اس نے ایسے کو دے دی جس کے پاس نہیں ہے تو ظاہر یہی ہے کہ صاحب خانہ کو ناگوار ہوگا کیونکہ اگر دینا ہوتا تو وہ خود ہی اس کے سامنے بھی یہ چیز رکھتا یا کم از کم یہ صورت اشتباہ کی ہے، لہذا ایسی حالت میں چیز دینا ناجائز ہے اور

(3) امدادیۃ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی الاکل والشرب، ج ۲، ص ۳۶۵۔

والدراختیار، کتاب المحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۷۴۔

(4) الفتاویٰ الہندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثانی عشر فی الہدایا والنصیقات، ج ۵، ص ۳۴۳۔

(5) الفتاویٰ الہندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثانی عشر فی الہدایا والنصیقات، ج ۵، ص ۳۴۳۔

(6) ریاء یعنی دکھاوے کے لیے کام کرنا اور سمعہ یعنی اس لیے کام کرنا کہ لوگ سنیں گے اور اچھا جانیں گے۔

(7) الفتاویٰ الہندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثانی عشر فی الہدایا والنصیقات، ج ۵، ص ۳۴۴۔

اگر ایک ہی قسم کا کھانا ہے، مثلاً روٹی، گوشت اور ایک کے پاس روٹی ختم ہوگئی، دوسرے نے اپنے پاس سے اٹھا کر دے دی تو ظاہر یہی ہے کہ صاحب خانہ کو ناگوار نہ ہوگا۔

مسئلہ ۶: دوسرے کے یہاں کھانا کھا رہا ہے، سائل نے مانگا اس کو یہ جائز نہیں کہ سائل کو روٹی کا ٹکڑا دیدے کیونکہ اس نے اس کے کھانے کے لیے رکھا ہے، اس کو مالک نہیں کر دیا کہ جس کو چاہے دیدے۔ (8)

مسئلہ ۷: دو دسترخوان پر کھانا کھایا جا رہا ہے تو ایک دسترخوان والا دوسرے دسترخوان والے کو کوئی چیز اس پر سے اٹھ کر نہ دے۔ مگر جبکہ یقین ہو کہ صاحب خانہ کو ایسا کرنا ناگوار نہ ہوگا۔ (9)

مسئلہ ۸: کھاتے وقت صاحب خانہ کا بچہ آگیا تو اس کو یا صاحب خانہ کے خادم کو اس کھانے میں سے نہیں دے سکتا۔ (10)

مسئلہ ۹: کھانا ناپاک ہو گیا تو یہ جائز نہیں کہ کسی پاگل یا بچہ کو کھلائے یا کسی ایسے جانور کو کھلائے جس کا کھانا حلال ہے۔ (11)

مسئلہ ۱۰: مہمان کو چار باتیں ضروری ہیں۔

(۱) جہاں بٹھایا جائے وہیں بیٹھے۔

(۲) جو کچھ اس کے سامنے پیش کیا جائے اس پر خوش ہو، یہ نہ ہو کہ کہنے لگے اس سے اچھا تو میں اپنے ہی گھر کھایا کرتا ہوں یا اسی قسم کے دوسرے الفاظ جیسا کہ آج کل اکثر دعوتوں میں لوگ آپس میں کہا کرتے ہیں۔

(۳) بغیر اجازت صاحب خانہ وہاں سے نہ اٹھے۔

(۴) اور جب وہاں سے جائے تو اس کے لیے دعا کرے۔ میزبان کو چاہیے کہ مہمان سے وقتاً فوقتاً کہے کہ اور کھاؤ

مگر اس پر اصرار نہ کرے، کہ کہیں اصرار کی وجہ سے زیادہ نہ کھا جائے اور یہ اس کے لیے مضر ہو، میزبان کو بالکل خاموش نہ رہنا چاہیے اور یہ بھی نہ کرنا چاہیے کہ کھانا رکھ کر غائب ہو جائے، بلکہ وہاں حاضر رہے اور مہمانوں کے سامنے خادم وغیرہ پر ناراض نہ ہو اور اگر صاحب وسعت ہو تو مہمان کی وجہ سے گھر والوں پر کھانے میں کمی نہ کرے۔

میزبان کو چاہیے کہ مہمان کی خاطر داری میں خود مشغول ہو، خادموں کے ذمہ اس کو نہ چھوڑے کہ یہ حضرت ابراہیم

(8) المرجع السابق.

(9) المرجع السابق.

(10) المرجع السابق.

(11) المرجع السابق.

علیہ الصلوٰۃ والسلام کی سنت ہے اگر مہمان تھوڑے ہوں تو میزبان ان کے ساتھ کھانے پر بیٹھ جائے کہ یہی تقاضائے مروت ہے اور بہت سے مہمان ہوں تو ان کے ساتھ نہ بیٹھے بلکہ ان کی خدمت اور کھلانے میں مشغول ہو۔ مہمانوں کے ساتھ ایسے کو نہ بٹھائے جس کا بیٹھنا ان پر گراں ہو۔ (12)

مسئلہ ۱۱: جب کھا کر فارغ ہوں ان کے ہاتھ دھلائے جائیں اور یہ نہ کرے کہ ہر شخص کے ہاتھ دھونے کے بعد پانی پھینک کر دوسرے کے سامنے ہاتھ دھونے کے لیے طشت پیش کرے۔ (13)

مسئلہ ۱۲: جس نے ہدیہ بھیجا اگر اس کے پاس حلال و حرام دونوں قسم کے اموال ہوں مگر غالب مال حلال ہے تو اس کے قبول کرنے میں حرج نہیں۔ یہی حکم اس کے یہاں دعوت کھانے کا ہے اور اگر اس کا غالب مال حرام ہے تو نہ ہدیہ قبول کرے اور نہ اس کی دعوت کھائے، جب تک یہ نہ معلوم ہو کہ یہ چیز جو اسے پیش کی گئی ہے حلال ہے۔ (14)

مسئلہ ۱۳: جس شخص پر اس کا دین (یعنی قرض) ہے، اگر اس نے دعوت کی اور قرض سے پہلے بھی وہ اسی طرح دعوت کرتا تھا تو قبول کرنے میں حرج نہیں اور اگر پہلے بیس دن میں دعوت کرتا تھا اور اب دس ۱۰ دن میں کرتا ہے یا اب اس نے کھانے میں تکلفات بڑھا دیے، تو قبول نہ کرے کہ یہ قرض کی وجہ سے ہے۔ (15)



(12) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثانی عشر فی الہدایا والفضیقات، ج ۵، ص ۳۴۳-۳۴۵.

(13) المرجع السابق، ص ۳۴۵.

(14) المرجع السابق، ص ۳۴۲.

(15) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثانی عشر فی الہدایا والفضیقات، ج ۵، ص ۳۴۲.

ظروف کا بیان

مسئلہ ۱: سونے چاندی کے برتن میں کھانا پینا اور ان کی پیالیوں سے تیل لگانا یا ان کے عطر دان سے عطر لگانا یا ان کی انگلیٹھی سے بخور کرنا (یعنی دھونی لینا) منع ہے اور یہ ممانعت مرد و عورت دونوں کے لیے ہے۔ عورتوں کو ان کے زیور پہننے کی اجازت ہے۔ زیور کے سوا دوسری طرح سونے چاندی کا استعمال مرد و عورت دونوں کے لیے ناجائز ہے۔ (1)

مسئلہ ۲: سونے چاندی کے چمچے سے کھانا، ان کی سلائی یا سرمہ دانی سے سرمہ لگانا، ان کے آئینہ میں مونہہ دیکھنا، ان کی قلم دوات سے لکھنا، ان کے لوٹے یا طشت سے وضو کرنا یا ان کی کرسی پر بیٹھنا، مرد و عورت دونوں کے لیے ممنوع

(1) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۶۴۔

سونے، چاندی کے برتنوں میں کھانا پینا

اُم المؤمنین حضرت سیدتنا اُم سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی ہے کہ نبی کریم، رؤوف رحیم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عبرت نشان ہے: جو شخص سونے اور چاندی کے برتن میں کھانا پیتا ہے وہ اپنے پیٹ میں غشاغٹ جہنم کی آگ بھرتا ہے۔

(صحیح مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، باب تحریم استعمال ادانی الذهب۔۔۔۔۔ الخ، الحدیث: ۸۷/۵۳۸۵، ص ۱۰۴۷)

حضرت سیدنا انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ ارشاد فرماتے ہیں: سونے اور چاندی کے برتنوں میں کھانے پینے سے منع کیا گیا ہے۔

(السنن الکبریٰ للنسائی، کتاب الاطعمۃ، باب صحاف الفضة، الحدیث: ۶۶۳۲، ج ۴، ص ۱۴۹)

حضرت سیدتنا اُم سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا ارشاد فرماتی ہیں کہ سرکارِ مدینہ، راحۃِ قلب و سینہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عبرت نشان ہے: جو شخص سونے اور چاندی کے برتنوں میں پیتا ہے وہ اپنے پیٹ میں جہنم کی آگ بھرتا ہے۔

(صحیح البخاری، کتاب الاشریۃ، باب انیۃ الفضة، الحدیث: ۵۶۳۳، ص ۴۸۳)

حضرت سیدتنا اُم سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا ارشاد فرماتی ہیں کہ رسول اکرم، نور مجسم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمانِ معظم ہے: جو سونے چاندی کے برتن میں پانی پیتا ہے وہ اپنے پیٹ میں جہنم کی آگ بھرتا ہے۔

(صحیح مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، باب تحریم استعمال ادانی الذهب۔۔۔۔۔ الخ، الحدیث: ۸۷/۵۳۸۵، ص ۱۰۴۷)

حضرت سیدنا حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ شہنشاہِ مدینہ، قرارِ قلب و سینہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ہمیں سونے چاندی کے برتنوں میں کھانے پینے اور ریشم و دیباہ (کے کپڑے) پہننے یا ان پر بیٹھنے سے منع فرمایا ہے۔

(صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب افتراش الحریر، الحدیث: ۵۸۳۷، ص ۴۹۸)

ہے۔ (2)

مسئلہ ۳: سونے چاندی کی آرسی (ایک زیور جو عورتیں ہاتھ کے انگوٹھے میں پہنتی ہیں، اس میں شیشہ جڑا ہوتا ہے) پہننا عورت کے لیے جائز ہے، مگر اس آرسی میں مونہہ دیکھنا عورت کے لیے بھی ناجائز ہے۔

مسئلہ ۴: سونے چاندی کی چیزوں کے استعمال کی ممانعت اس صورت میں ہے کہ ان کو استعمال کرنا ہی مقصود ہو اور اگر یہ مقصود نہ ہو تو ممانعت نہیں، مثلاً سونے چاندی کی پلیٹ یا کٹورے میں کھانا رکھا ہوا ہے اگر یہ کھانا اسی میں چھوڑ دیا جائے تو اضاعت مال ہے اس کو اس میں سے نکال کر دوسرے برتن میں لے کر کھائے یا اس میں سے پانی چلو میں لے کر پیایا پیالی میں تیل تھا، سر پر پیالی سے تیل نہیں ڈالا بلکہ کسی برتن میں یا ہاتھ پر تیل اس غرض سے لیا کہ اس سے استعمال ناجائز ہے، لہذا تیل کو اس میں سے لے لیا جائے اور اب استعمال کیا جائے یہ جائز ہے اور اگر ہاتھ میں تیل کا لینا بغرض استعمال ہو جس طرح پیالی سے تیل لے کر سر یا داڑھی میں لگاتے ہیں، اس طرح کرنے سے ناجائز استعمال سے بچنا نہیں ہے کہ یہ بھی استعمال ہی ہے۔ (3)

مسئلہ ۵: چائے کے برتن سونے چاندی کے استعمال کرنا ناجائز ہے۔ اسی طرح سونے چاندی کی گھڑی ہاتھ میں باندھنا بلکہ اس میں وقت دیکھنا بھی ناجائز ہے، کہ گھڑی کا استعمال یہی ہے کہ اس میں وقت دیکھا جائے۔ (4)

مسئلہ ۶: سونے چاندی کی چیزیں محض مکان کی آرائش وزینت کے لیے ہوں، مثلاً قرینہ سے (یعنی سجا کر) یہ برتن و قلم و دوات لگا دیے، کہ مکان آراستہ ہو جائے اس میں حرج نہیں۔ یوہیں سونے چاندی کی کرسیاں یا میز یا تخت وغیرہ سے مکان سجا رکھا ہے، ان پر بیٹھتا نہیں ہے تو حرج نہیں۔ (5)

مسئلہ ۷: بچوں کو بسم اللہ پڑھانے کے موقع پر چاندی کی دوات قلم تختی لا کر رکھتے ہیں، یہ چیزیں استعمال میں نہیں آتیں، بلکہ پڑھانے والے کو دے دیتے ہیں، اس میں حرج نہیں۔

مسئلہ ۸: سونے چاندی کے سوا ہر قسم کے برتن کا استعمال جائز ہے، مثلاً تانبے، پیتل، سیسہ، بلور وغیرہ۔ مگر مٹی کے برتنوں کا استعمال سب سے بہتر کہ حدیث میں ہے کہ جس نے اپنے گھر کے برتن مٹی کے بنوائے، فرشتے اس کی

(2) المرجع السابق۔

(3) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الخطر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۶۴۔

(4) رد المحتار، کتاب الخطر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۶۵۔

(5) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الخطر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۶۶۔

زیارت کو آئیں گے۔ تانے اور پیتل کے برتنوں پر قلعی ہونی چاہیے، بغیر قلعی ان کے برتن استعمال نہ کرنا۔ (۵)
مسئلہ ۹: جس برتن میں سونے چاندی کا کام بنا ہوا ہے اس کا استعمال جائز ہے، جبکہ موشع استعمال (استعمال فی جگہ) میں سونا چاندی نہ ہو، مثلاً کٹورے یا گلاس میں چاندی کا کام: تو پانی پینے میں اس جگہ موشع نہ لگے یہاں سونا یا چاندی ہے اور بعض کا قول یہ ہے کہ وہاں ہاتھ بھی نہ لگے، اور قول اول اصح ہے۔ (7)
مسئلہ ۱۰: چھڑی کی موٹھ (یعنی چھڑی کا دستہ) سونے چاندی کی ہو تو اس کا استعمال ناجائز ہے۔ کیونکہ اس میں

(6) اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن نقادی رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

تانے کے برتن سے وضو کرنا، اُس میں کھانا پینا، سب بلا کراہت جائز ہے، وضو میں کچھ نقصان نہیں آتا۔ ہاں قلعی کے بعد چاہیے بے قلعی برتن میں کھانا پینا مکروہ ہے کہ جسمانی ضرر کا باعث ہے اور مٹی کا برتن تانے سے افضل ہے۔ علماء نے وضو کے آداب و مستحبات سے غماز فرمایا کہ مٹی کے برتن سے ہو اور اس میں کھانا پینا بھی تواضع سے قریب تر ہے۔
رد المحتار میں فتح القدیر سے ہے:

(معها) ای من أداب الوضوء (کون انیتہ من خرف) ۱۔

(ان ہی میں سے) یعنی آداب وضو میں سے (یہ ہے کہ وضو کا برتن کچی مٹی کا ہو)۔ (ت)

(۱۔ رد المحتار، کتاب الطہارۃ، دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۸۳)

اُسی میں اختصار شرح مختار سے ہے۔

(اتخاذها) ای اوالی الاکل والشرب (من الخرف افضل اذلا صرف فیہ ولا مخیلة وفي الحدیث من اتخذ اوالی بیتہ خرفا زارته البلیکة ویجوز اتخاذها من نحاس اور صاص ۲۔

کھانے پینے کے برتن مٹی کے ہونا افضل ہے کہ اُس میں نہ اسراف ہے نہ اترانا، اور حدیث میں ہے: جو اپنے گھر کے برتن مٹی کے رکھے فرشتے اس کی زیارت کریں۔ اور تانے اور رنگ کے بھی جائز ہیں۔ ۱۳

(۲۔ رد المحتار کتاب الحظر والایاتہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/ ۲۱۸)

اُسی میں ہے:

یکرة الاکل فی النحاس بالغیر المطلق بالرصاص لانه یدخل الصدا فی الطعام فیورث ضررا عظیما واما بعده فلا اھ ملخصا واللہ تعالیٰ اعلم۔ (۱۔ رد المحتار کتاب الحظر والایاتہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/ ۲۱۸)

بغیر قلعی کیے ہوئے تانے کے برتن میں کھانا مکروہ ہے، کیونکہ اُس کا رنگ کھانے میں مل کر ضرر عظیم پیدا کرتا ہے اور قلعی ہو جانے کے بعد ایسا نہیں اھ منحصا۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔ (نقادی رضویہ، جلد ۱۔ ص ۲۳۷ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(۲۔ رد المحتار، کتاب الحظر والایاتہ، ج ۹، ص ۵۶۷۔

استعمال کا طریقہ یہ ہے کہ مونہ پر ہاتھ رکھا جاتا ہے، لہذا موضع استعمال میں سونا چاندی ہوئی اور اگر اُس کی شام (یعنی چھڑی کے سروں پر چڑھایا جانے والا کسی دھات کا چھلے کی طرح کا خول) سونے چاندی کی ہو، دستہ سونے چاندی کا نہ ہو تو استعمال میں حرج نہیں، کیونکہ ہاتھ رکھنے کی جگہ پر سونا چاندی نہیں ہے۔ اسی طرح قلم کی نب اگر سونے چاندی کی ہو تو اس سے لکھنا ناجائز ہے کہ وہی موضع استعمال ہے اور اگر قلم کے بالائی حصہ میں ہو تو ناجائز نہیں۔

مسئلہ ۱۱: چاندی سونے کا کرسی یا تخت میں کام بنا ہوا ہے یا زین میں کام بنا ہوا ہے تو اس پر بیٹھنا جائز ہے، جبکہ سونے چاندی کی جگہ سے بچ کر بیٹھے۔ محصل (خلاصہ) یہ ہے کہ جو چیز خالص سونے چاندی کی ہے، اُس کا استعمال مطلقاً ناجائز ہے اور اگر اس میں جگہ جگہ سونا چاندی ہے تو اگر موضع استعمال میں ہے تو ناجائز، ورنہ جائز۔ مثلاً چاندی کی انگلیٹھی سے بخور کرنا مطلقاً ناجائز ہے، اگرچہ دھونی لیتے وقت اس کو ہاتھ بھی نہ لگائے۔ اسی طرح اگر حقہ کی فرشی (یعنی پیندا) چاندی کی ہے تو اس سے حقہ پینا ناجائز ہے، اگرچہ یہ شخص فرشی پر ہاتھ نہ لگائے۔

اسی طرح حقہ کی مونہ نال (دھات وغیرہ کی بنی ہوئی چھوٹی سی ٹلی جسے حقے میں لگاتے ہیں) سونے چاندی کی ہے تو اس سے حقہ پینا ناجائز ہے اور اگر مچہ (حقہ کی نلیاں) پر جگہ جگہ چاندی سونے کا تار ہو تو اس سے حقہ پی سکتا ہے، جبکہ استعمال کی جگہ پر تار نہ ہو۔ کرسی میں استعمال کی جگہ بیٹھنے کی جگہ ہے اور اس کا تکیہ ہے جس سے پیٹھ لگاتے ہیں اور اس کے دستے ہیں جن پر ہاتھ رکھتے ہیں۔ تخت میں موضع استعمال بیٹھنے کی جگہ ہے۔ اسی طرح زین میں اور رکاب بھی سونے چاندی کی ناجائز ہے اور اس میں کام بنا ہوا ہو تو موضع استعمال میں نہ ہو۔ یہی حکم لگام اور ڈمچی (8) کا ہے۔ (9)

مسئلہ ۱۲: برتن پر سونے چاندی کا ملتے ہو (یعنی برتن پر سونے یا چاندی کا پانی چڑھایا ہوا ہو) تو اس کے استعمال میں حرج نہیں۔ (10)

مسئلہ ۱۳: آئینہ کا حلقہ جو بوقت استعمال پکڑنے میں نہ آتا ہو اس میں سونے چاندی کا کام ہو، اس کا بھی وہی حکم ہے۔ (11)

(8) یعنی تسمہ جو زین کے پچھلے حصے سے جڑا ہوتا ہے، دُم کے نیچے سے گزرتا اور زین کو آگے کی طرف سے جانے سے روکتا ہے۔

(9) الھدایۃ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی الاکل والشرب، ج ۲، ص ۳۶۳۔

والدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۶۷۔

(10) الھدایۃ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی الاکل والشرب، ج ۲، ص ۳۶۳۔

(11) المرجع السابق۔

والدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۶۸۔

مسئلہ ۱۴: تلوار کے قبضے میں اور پھری یا پیش قبض (یعنی خنجر) کے دستے میں چاندی یا سونے کا کام ہے تو ان کا بھی وہی حکم ہے۔ (12)

مسئلہ ۱۵: کپڑے میں سونے چاندی کے حروف بنائے گئے، اس کے استعمال کا بھی وہی حکم ہے۔ (13) اس میں تفصیل ہے جو لباس کے بیان میں آئے گی۔

مسئلہ ۱۶: ٹوٹے ہوئے برتن کو چاندی یا سونے کے تار سے جوڑنا، جائز ہے اور اس کا استعمال بھی جائز ہے، جبکہ اس جگہ سے استعمال نہ کرے۔ جیسا کہ حدیث میں ہے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا لکڑی کا پیالہ تھا، وہ ٹوٹ گیا تو چاندی کے تار سے جوڑا گیا۔ (14) اور یہ پیالہ حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس تھا۔ (15)



(12) الہدایۃ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی الکل والشرب، ج ۲، ص ۳۶۴۔

والدر المختار، کتاب المحظر والایباحہ، ج ۹، ص ۵۶۸۔

(13) الدر المختار، کتاب المحظر والایباحہ، ج ۹، ص ۵۶۸۔

(14) صحیح البخاری، کتاب فرض النفس، باب ما ذکرہ... إلخ، الحدیث: ۳۱۰۹، ج ۲، ص ۳۴۴۔

(15) صحیح البخاری، کتاب الاشریۃ، باب الشرب... إلخ، الحدیث: ۵۶۳۸، ج ۳، ص ۵۹۵۔

خبر کہاں معتبر ہے؟

اللہ عزوجل فرماتا ہے:

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ ﴿١٩﴾) (1)

اے ایمان والو! اگر فاسق تمہارے پاس کوئی خبر لائے تو اسے خوب جانچ لو، کہیں ایسا نہ ہو کہ نادانگی میں کسی قوم کو تکلیف پہنچا دو پھر تمہیں اپنے کیے پر شرمندہ ہونا پڑے۔

مسئلہ ۱: اپنے نوکر یا غلام کو گوشت لانے کے لیے بھیجا، اگرچہ یہ مجوسی یا ہندو ہو وہ گوشت لایا اور کہتا ہے کہ مسلمان یا کتابی سے خرید کر لایا ہوں تو یہ گوشت کھایا جاسکتا ہے اور اگر اس نے آکر یہ کہا کہ مشرک مثلاً مجوسی یا ہندو سے خرید کر لایا ہوں تو اس گوشت کا کھانا حرام ہے کہ خریدنا بیچنا معاملات میں ہے اور معاملات میں کافر کی خبر معتبر ہے، اگرچہ حلت و حرمت (یعنی حلال و حرام ہونا) دیانات میں سے ہیں اور دیانات میں کافر کی خبر نامقبول ہے، مگر چونکہ اصل خبر خریدنے کی ہے اور حلت و حرمت اس مقام پر ضمنی چیز ہے، لہذا جب وہ خبر معتبر ہوئی تو ضمنیہ بھی ثابت ہو جائے گی اور اصل خبر حلت و حرمت کی ہوتی تو نامعتبر ہوتی۔ (2)

مسئلہ ۲: معاملات میں کافر کی خبر معتبر ہونا اس وقت ہے، جب غالب گمان یہ ہو کہ سچ کہتا ہے اور اگر غالب گمان اس کا جھوٹا ہونا ہو تو اس پر عمل نہ کرے۔ (3)

(1) پ ۲۶، الحجرات: ۶۔

(2) الہدایۃ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی الاکل والشرب، ج ۲، ص ۳۶۳۔

والدر المختار، کتاب الحظر والاباحۃ، ج ۹، ص ۵۶۹۔

(3) الجوہرۃ النیرۃ، کتاب الحظر والاباحۃ، ج ۲، ص ۳۶۲۔

اعلیٰ حضرت، ام المہنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

حکم شرعی یہ ہے کہ مشرک یعنی کافر غیر کتابی سے گوشت خریدنا جائز نہیں، اور اس کا کھانا حرام ہے، اگرچہ وہ زبان سے سو بار کہے کہ یہ مسلمان کا ذبح کیا ہوا ہے، اس لئے کہ امر و نہی میں کافر کا قول اصلاً مقبول نہیں،

در مختار میں ہے:

مسئلہ ۳: گوشت خریدنا پھر یہ معلوم ہوا کہ جس سے خریدا ہے وہ مشرک ہے، پھیرنے (واپس کرنے) کو لے گیا،

بحر الكافر مقبول بالاجماع في المعاملات لافي الديانات ا۔

معاملات میں کافر کی خبر بالاجماع مقبول ہے دینی معاملہ میں مقبول نہیں۔ (ت)

(۱) در مختار کتاب الحظر والاباحہ مطبع مجتبائی دہلی ۲/۲۳۷

نہایہ وغیرہا میں ہے:

من الديانات المحل والحرمۃ ۲۔

دیانات میں سے حلال و حرام ہے۔ (ت) (۲) رد المحتار بحوالہ النہایہ کتاب الحظر والاباحہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/۲۱۹
رد المحتار میں ہے:

في التاتر خانية قبيل الاضحية عن جامع الجوامع لابی يوسف من اشترى لحما فعلم انه محوسى واراد الرد فقال ذبحه مسلم يكره اكله او مفادته ان مجرد كون البائع محوسيا يثبت الحرمة. فانه بعد اخباره بالحل بقوله ذبحه مسلم كره اكله فكيف بدونه ا۔

تاتارخانیہ میں قربانی کے بیان سے تھوڑا پہلے ابو یوسف کی جامع الجوامع سے منقول ہے کسی نے گوشت خریدا تو معلوم ہوا کہ فروخت کرنے والا مجوسی ہے اور اس نے واپس کرنا چاہا تو مجوسی نے کہا اس کو مسلمان نے ذبح کیا ہے اس کا کھانا مکروہ ہے اھ تو اس کا مفاد یہ ہے کہ خالی فروخت کرنے والے کا مجوسی ہونا حرمت کو ثابت کرتا ہے کیونکہ مجوسی کے اس بیان کے بعد کہ اس کو مسلمان نے ذبح کیا ہے جو کہ حلال ہونے کی خبر ہے، کھانا مکروہ ہے، تو اس کے خبر نہ دینے کی صورت میں کیسے مکروہ نہ ہوگا۔ (ت)

(۱) رد المحتار کتاب الحظر والاباحہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/۲۱۹

ہاں اگر وقت ذبح سے وقت خریداری تک وہ گوشت مسلمان کی نگرانی میں رہے، بیچ میں کسی وقت مسلمان کی نگاہ سے غائب نہ ہو، اور یوں اطمینان کافی حاصل ہو کہ یہ مسلمان کا ذبیحہ ہے تو اس کا خریدنا جائز اور کھانا حلال ہوگا، جب یہ حکم شرعی معلوم ہو گیا جو ب سوالات ظاہر ہو گیا وہ پرانا طریقہ شرعاً محض حرام تھا، اس پر جمنا حرام، سخت حرام، اگرچہ دو نہیں، دو لاکھ درغلائیں، جو حکم شرع کو بنا دئی بتائے، مگر جاہل ہے سمجھا یہ جائے، در نہ اس پر لزوم کفر ہے تو بہ کرے، تجدید اسلام کرے، اس کے بعد اپنی عورت سے نکاح جدید، یہی حکم اس کے ساتھیوں کا ہے، یہ لوگ جب تک تائب نہ ہوں مسلمان ان سے میل جول نہ کریں،

اللہ تعالیٰ فرماتا ہے:

واما ينسینك الشيطان فلا تقعد بعد الذكرى مع القوم الظلمين ۲۔ (۲) القرآن الکریم ۶/۶۸

اور کبھی شیطان تجھ کو بھلا دے تو یاد آنے پر ظالم قوم کے پاس مت بیٹھ (ت)

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۰، ص ۲۸۱، ۲۸۲ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

اس نے کہا کہ اس جانور کو مسلم نے ذبح کیا ہے، اب بھی اس گوشت کو کھانا ممنوع ہے۔ (4)

مسئلہ ۴: لونڈی غلام اور بچے کی ہدیہ کے متعلق خبر معتبر ہے، مثلاً بچے نے کسی کے پاس کوئی چیز لا کر یہ کہا کہ میرے والد نے آپ کے پاس یہ ہدیہ بھیجا ہے، وہ شخص چیز کو لے سکتا ہے اور اس میں تصرف کر سکتا ہے، کھانے کی چیز ہو تو کھا سکتا ہے۔ اسی طرح لونڈی غلام نے کوئی چیز دی اور یہ کہا کہ میرے مولیٰ نے یہ چیز ہدیہ بھیجی ہے، بلکہ یہ دونوں خود اپنے متعلق اس کی خبر دیں کہ ہمارے مولیٰ نے خود ہمیں ہدیہ کیا ہے یہ خبر بھی مقبول ہے۔ فرض کرو لونڈی نے یہ خبر دی تو اس سے یہ شخص وٹلی بھی کر سکتا ہے۔ (5)

مسئلہ ۵: ان لوگوں نے یہ خبر دی کہ ہمارے ولی یا مولیٰ نے ہمیں خریدنے کی اجازت دی ہے یہ خبر بھی معتبر ہے، جبکہ غالب گمان ان کی سچائی ہو، لہذا بچہ نے کوئی چیز خریدی مثلاً نمک، مرچ، ہلدی، دھنیا اور کہتا ہے ہم کو اس کی اجازت ہے تو اس کے ہاتھ اس چیز کو بیچ سکتے ہیں اور اگر غالب گمان یہ ہو کہ جھوٹ کہتا ہے تو اس کی بات کا اعتبار نہ کیا جائے۔ مثلاً اسے چند پیسوں کی مٹھائی یا پھل وغیرہ خریدنا ہے اور یہ بتاتا ہے کہ مجھے اجازت ہے اس کا اعتبار نہ کیا جائے، جبکہ اس صورت میں بظاہر یہ معلوم ہوتا ہو کہ اُس کو پیسے اس لیے نہیں ملے ہیں کہ مٹھائی وغیرہ خرید کر کھالے۔ (6) یعنی جبکہ گمان غالب یہ ہو کہ اسے خریدنے کی اجازت نہیں ہے، مثلاً یہ گمان ہے کہ چھپا کر لایا ہے، مٹھائی خرید رہا ہے، اس کے گھر والے ایسے کہاں ہیں کہ مٹھائی کھانے کو پیسے دے دیں اس صورت میں اس کے ہاتھ مٹھائی کا بیچنا بھی ناجائز ہے۔

مسئلہ ۶: کافر یا فاسق نے یہ خبر دی کہ میں فلاں شخص کا اس چیز کے بیچنے میں وکیل ہوں، اس کی خبر اعتبار کی جاسکتی ہے اور اُس چیز کو خرید سکتے ہیں۔ اسی طرح دیگر معاملات میں بھی ان کی خبریں مقبول ہیں، جبکہ ظن غالب یہ ہو کہ سچ کہتا ہے۔ (7)

مسئلہ ۷: دیانات میں منجر (خبر دینے والا) کا عادل ہونا ضروری ہے۔ دیانات سے مراد وہ چیزیں ہیں جن کا تعلق بندہ اور رب کے مابین ہے۔ مثلاً حلت، حرمت، نجاست، طہارت اور اگر دیانت کے ساتھ زوال ملک بھی ہو مثلاً میاں بی بی کے متعلق کسی نے یہ خبر دی کہ یہ دونوں رضائی بھائی بہن ہیں تو اس کے ثبوت کے لیے فقط عدالت کافی نہیں، بلکہ عدد اور عدالت دونوں چیزیں درکار ہیں یعنی خبر دینے والے دو ۲ مرد یا ایک مرد دو ۲ عورتیں ہوں اور یہ سب عادل

(4) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۶۹۔

(5) تمییز الحقائق، کتاب الکراہیہ، ج ۷، ص ۲۸۔

(6) الدر المختار رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۷۰۔

(7) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۷۰۔

(8)۔ ہوں۔

مسئلہ ۸: پانی کے متعلق کسی مسلم عادل نے یہ خبر دی کہ یہ نجس ہے تو اس سے وضو نہ کرے، بلکہ اگر دوسرا پانی نہ ہو تو تیمم کرے اور اگر فاسق یا مستور (یعنی وہ شخص جس کا عادل یا فاسق ہونا ظاہر نہ ہو) نے خبر دی کہ پانی نجس ہے تو تحری (غور) کرے اگر دل پر یہ بات جمتی ہے کہ سچ کہتا ہے تو پانی کو پھینک دے اور تیمم کرے وضو نہ کرے اور اگر غالب گمان یہ ہے کہ جھوٹ کہتا ہے تو وضو کرے اور احتیاط یہ ہے کہ وضو کے بعد تیمم بھی کر لے اور اگر کافر نے نجاست کی خبر دی اور غالب گمان یہ ہے کہ سچ کہتا ہے جب بھی بہتر یہ ہے کہ اسے پھینک دے پھر تیمم کرے۔ (9)

مسئلہ ۹: ایک عادل نے یہ خبر دی کہ پاک ہے اور دوسرے عادل نے نجاست کی خبر دی یا ایک نے خبر دی کہ یہ مسلم کا ذبیحہ ہے اور دوسرے نے یہ کہ مشرک کا ذبیحہ ہے، اس میں بھی تحری کرے، جدھر غالب گمان ہو اس پر عمل کرے۔ (10)



(8) الدر المختار و رد المحتار، کتاب المحظر والایاتہ، ج ۹، ص ۵۷۱۔

(9) الدر المختار، کتاب المحظر والایاتہ، ج ۹، ص ۵۷۱۔

(10) رد المحتار، کتاب المحظر والایاتہ، ج ۹، ص ۵۷۳۔

لباس کا بیان

احادیث

حدیث ۱: امام بخاری نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم: تُوْجُوْا چاہے کھا اور تُوْجُوْ چاہے پہن، جب تک دو باتیں نہ ہوں، اسراف و تکبر۔ (1)

حدیث ۲: امام احمد و نسائی و ابن ماجہ بروایت عمر بن شعیب عن ابیہ عن جدہ راوی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ کھاؤ اور پیو اور صدقہ کرو اور پہنو، جب تک اسراف و تکبر کی آمیزش نہ ہو۔ (2)

حدیث ۳: صحیح بخاری و مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہتے ہیں: رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو

(1) صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب قول اللہ تعالیٰ: (قُلْ مَنْ حَزَنًا زِينَةً لِلَّهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ)، ج ۴، ص ۳۵.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اسی سے اسی مباح کھانا کھاؤ اور بڑھیا سے بڑھیا مباح لباس پہنو، اللہ نے اعلیٰ لباس اور اللہ نے کھانے تمہارے ہی لیے بنائے ہیں، حلال کھانے چھوڑنے کا نام تقویٰ نہیں حرام خصلتیں چھوڑنے کا نام تقویٰ ہے۔ بعض لوگ گوشت نہیں کھاتے مگر بھنگ چرس پینے میں نماز کے قریب نہیں آتے اور اپنے کو پہنچا ہوا کہتے ہیں، واقعی وہ شیطان تک پہنچے ہیں۔

۲۔ کھانے پینے کی مقدار میں حد سے بڑھ جانا اسراف و فضول خرچی ہے۔ کیفیت میں حد سے بڑھ جانا مخیمہ یا تکبر ہے اسی لیے علماء فرماتے ہیں: لا خیر فی اسرف اور لا اسرف فی الخیر یعنی اسراف میں بھلائی نہیں اور بھلائی میں اسراف نہیں۔ بعض حضرات فرماتے ہیں کہ دل و نفس کی ہر خواہش پوری کرنا اسراف ہے کہ جو دل چاہے وہ ہی کھائے پئے اور فخر کی نیت سے اچھے کھانا مخیمہ ہے۔

(مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۲۵)

(2) سنن ابن ماجہ، کتاب اللباس، باب لبس ناخضت... إلخ، الحدیث: ۳۶۰۵، ج ۴، ص ۱۶۲.

وسنن النسائی، کتاب الزکاة، باب الاختیال فی الصدقة، الحدیث: ۲۵۵۵، ص ۴۲۰.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اس کا مطلب بھی وہی ہے کہ ہر طیب و حلال چیز کھاؤ پہنو بشرطیکہ تکلف اور تکبر سے خالی ہو، دل ٹھیک رکھو۔

مصرعہ درویش صفت باش کلاہ تتری دار

(مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۲۶)

جبرہ بہت پسند تھا۔ یہ ایک قسم کی دھاری دار چادر ہوتی تھی جو یمن میں بنتی تھی۔ (3)

حدیث ۴: ترمذی نے جابر بن سرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں: میں نے چاندنی رات میں نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو دیکھا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) سرخ علقہ پہنے ہوئے تھے یعنی اس میں سرخ دھاریاں تھیں، میں کبھی حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو دیکھتا اور کبھی چاند کو، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) میرے نزدیک چاند سے زیادہ حسین تھے۔ (4)

(3) صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب البرود والجمرة... إلخ، الحدیث: ۵۸۱۳، ج ۴، ص ۵۴.

حکیم الامت کے مدنی پھول

یمن کے تیار کردہ کپڑوں میں سے ایک قسم کے سوتی کپڑے کا نام جبرہ ہے جس کے کسرہ سے، یہ بہترین قسم کا کپڑا ہوتا ہے، سادہ سفید بھی ہوتا ہے اور ہمزہ سرخ دھاری دار بھی۔ جبر کے معنی ہیں سجاوٹ آرائی، یہ کپڑا بڑا اچھا ہوتا ہے جس سے دو پہنوں کو آراستہ کیا جاتا تھا اس لیے اسے جبرہ کہتے ہیں، قرآن کریم میں ہے: "فَهَذَا فِي رَوْضَةٍ يُحَدِّثُونَ"۔ یہ کپڑا میل خوردہ ہوتا ہے، میل کو چھپا لیتا ہے جلد جلد دھونا نہیں پڑتا اس لیے محبوب تھا۔ (مرقات و اشعہ) (مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۵۱)

(4) سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ما جاء في الرخصة في لبس المرأة للرجال، الحدیث: ۲۸۲۰، ج ۴، ص ۳۷۰.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کا نام جابر ابن سرہ ہے، کنیت ابو عبد اللہ ہے، قبیلہ بنی عامر ہے، حضرت سعد ابن ابی وقاص کے بھانجے ہیں، کوفہ میں رہے وہاں ہی وفات پائی، ۷۷ھ میں جو ہتر میں وفات پائی۔ (اکمال)

۲۔ اضمحان انف اور ح کے کسرہ سے وہ رات جس میں چاند رات بھر رہے یعنی چودھویں شب اور بادل بھی نہ ہو آسمان صاف ہو جب یہ دو شرطیں ہوں تو اسے اضمحان کہتے ہیں۔

۳۔ اس طرح کہ کبھی تو آسمان کے چاند کو دیکھتا تھا اور کبھی اپنے مدینہ کے چاند شمس الغنی بدر الدجی کو صلی اللہ علیہ وسلم۔ خیال رہے کہ حضور انور کا چہرہ دیکھنا بھی اعلیٰ عبادت ہے جیسے قرآن مجید کا دیکھنا بھی عبادت ہے بلکہ قرآن کو دیکھنے سے چہرہ انور دیکھنا اعلیٰ و افضل ہے کہ قرآن کو دیکھ کر مسلمان صحتی نہیں بنتا حضور کا چہرہ دیکھ کر صحابی بن جاتا ہے، ان کا نام مسلمان بنائے، ان کا چہرہ صحتی بنائے اور ان کا تصور عارف بناتا ہے۔ شعر

تجہی کو دیکھنا تیری ہی سنا تجھ میں گم ہونا حقیقت معرفت اہل طریقت اس کو کہتے ہیں

ریاضت نام ہے تیری گل میں آنے جانے کا تصور میں تیرے رہنا عبادت اس کو کہتے ہیں

فرشتے قبر میں وہ چہرہ ہی دکھاتے ہیں پہچان کراتے ہیں قرآن مجید یا کعبہ معظمہ نہیں دکھاتے، انہیں کے چہرے کی شناخت پر قبر میں بیڑا پار

ہوتا ہے، ہر مؤمن کی قبر مدینہ ہے بلکہ ہر مؤمن کا سینہ مدینہ ہے۔ ہم نے عرض کیا ہے۔

حدیث ۵: صحیح بخاری و مسلم میں ابو بردہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہتے ہیں: کہ حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے یہوند لگی ہوئی کملی اور مونا تہبند نکالا اور یہ کہا، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی وفات انھیں میں ہوئی۔ (5) (یعنی بوقت وفات اسی قسم کے کپڑے پہنے ہوئے تھے)۔

حدیث ۶: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: کہ جو شخص تکبر کے طور پر تہبند گھسیٹے (یعنی اتنا نیچا کر لے کہ زمین سے لگ جائے) اُس کی طرف اللہ تعالیٰ نظر رحمت نہیں فرمائے گا۔ (6) ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی روایت میں ہے، جو اترانے کے طور پر کپڑا گھسیٹے گا، اس کی طرف

بناد میرے سینہ کو دینے نکالو بحرغم سے یہ سفینہ

۴۔ ہم پہلے عرض کر چکے ہیں کہ حضور انور نے خالص سرخ کپڑے بھی نہ پہنے بلکہ اس سے مردوں کو منع فرمایا، ان جیسی احادیث میں سرخ دھاریوں والا جوڑہ مراد ہوتا ہے وہ اسی یہاں مراد ہے۔

۵۔ ان حضرات کی نگاہ حقیقت بین تھی، حقیقت میں چہرہ مصطفوی چاند سے کہیں زیادہ حسین ہے کہ چاند صرف رات میں چمکے یہ چہرہ دن رات چمکے، چاند صرف تین رات چمکے یہ چہرہ ہمیشہ ہر دن رات چمکے، چاند جسموں پر چمکے یہ چہرہ دلوں پر بھی چمکے، چاند نور ابدان دے یہ چہرہ نور ایمان دے، چاند گھٹے بڑھے یہ چہرہ گھٹنے سے محفوظ رہے، چاند کو گرہن لگے یہ کبھی نہ گھے، چاند سے عالم اجسام کا نظام قائم ہے حضور سے عالم ایمان کا۔ حضور انور کا چاند سے زیادہ حسین ہونا صرف ان کی عقیدت میں نہ تھا بلکہ واقعہ یوں ہی ہے۔ چاند دیکھ کر کسی نے اپنے ہاتھ نہ کانے، حسن یوسف دیکھ کر زبان مصر نے اپنے ہاتھ کاٹ لیے اور حسن یوسفی سے حسن محمد کہیں افضل ہے لہذا حضرت جابر کا یہ فرمان بالکل درست ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۸، ص ۵۳)

(5) صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب الاکسۃ والخبائص، الحدیث: ۵۸۱۸، ج ۴، ص ۵۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

بعض حضرات ام المؤمنین عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا کی خدمت میں حضور کے تبرکات کی زیارت کرنے آیا کرتے تھے اور آپ انہیں زیارت کراتی تھیں۔ ملہد کے معنی ہیں لبادہ کیا ہوا یعنی یہوند پر یہوند لگتے لگتے عمدہ کے لباس کی طرح مونا ہو چکا تھا۔

۲۔ یہ اس دعا کا اثر ہے: اللھم احینئ مسکینا وامتنئ مسکینا کہ میری زندگی و موت مسکین ہو کر ہو۔ شعر

بوریا منوں خواب را حش
تاج کسری زیر پائے امتش

ہم جیسے کینے غلام ان کے نام پر عیش کر رہے ہیں اور وہ خود اس حالت میں دنیا سے پردہ فرماتے ہیں صلی اللہ علیہ وسلم۔ خیال رہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے اعلیٰ و عمدہ لباس بھی پہنے ہیں مگر ان کی عادت نہ ڈالی، ہر قسم کا لباس بے تکلف پہنیتے تھے، آخر وقت یہ لباس جسم

اطہر پر تھا لہذا یہ حدیث ۲ کے خلاف نہیں کہ سہری اثر نعمة ربك عليك۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۳)

(6) المرح السابق باب من برش۔ ۱۲، الحدیث: ۵۷۸۸، ج ۴، ص ۴۶۔

نہ (عز و جل) نظر رحمت نہیں کریگا۔ (7) صحیح بخاری کی انھیں سے روایت ہے، کہا ایک شخص اترانے کے طور پر تہبند
 گھسیٹ رہا تھا، زمین میں دھنسا دیا گیا، اب وہ قیامت تک زمین میں دھنسا ہی چلا جائے گا۔ (8)
 حدیث ۷: صحیح بخاری میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے
 فرمایا کہ نخنوں سے نیچے تہبند کا جو حصہ ہے، وہ آگ میں ہے۔ (9)

حدیث ۸: ابو داؤد و ابن ماجہ ابو سعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کرتے ہیں، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ
 علیہ وسلم فرماتے ہیں: مومن کا تہبند آدمی پنڈلیوں تک ہے اور اس کے اور نخنوں کے درمیان میں ہو، اس میں بھی حرج
 نہیں اور اس سے جو نیچے ہو آگ میں ہے اور اللہ تعالیٰ قیامت کے دن اس کی طرف نظر نہیں فرمائے گا، جو تہبند کو ازراہ

(7) المرجع سابق، الحدیث: ۵۷۹۰، ج ۴، ص ۷۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اس کپڑے میں تہبند، چادر، قمیض، چادر سب ہی داخل ہیں ان میں سے جو بہت زیادہ نیچا ہو کر زمین پر گھسے اور ہو تو یہ فیشن کے طور پر اس
 پر یہ وعید ہے۔

۲۔ ان جیسے فرہانوں میں نہ دیکھنے سے مراد ہوتا ہے مہربانی و کرم کی نظر نہ دینا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۵۹)

(8) المرجع السابق، الحدیث: ۵۷۹۰، ج ۴، ص ۷۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

خبر یہ ہے کہ یہ مرد گزشتہ امتوں میں کوئی تھا اس لیے امام بخاری نے یہ حدیث ذکر کرنی اسرائیل کے باب میں نقل فرمائی۔ بعض نے فرمایا کہ
 یہ شخص قریب قیامت حضور کی امت سے ہوگا یعنی فیشن اسل مسلمان مگر قول اول قوی ہے۔ (اشعہ)

۳۔ یتجلجل بنا ہے جلجلۃ سے جس کے معنی ہیں حرکت کرنے کی آواز یعنی وہ برابر نیچے کو جا رہا ہے اس کے جانے کی آواز اللہ والے سن
 رہے ہیں، یہ شخص قارون کے علاوہ کوئی اور شخص ہے، قارون کے دھنسنے کی وجہ اس کا بغل اور اس کی بے ادبی تھی۔ (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۶۰)

(9) المرجع السابق، باب ما أسئل من الکعبین قہو فی النار، الحدیث: ۵۷۸۷، ج ۴، ص ۷۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس کا مطلب یا تو یہ ہے کہ نخنے سے نیچے تہبند جہنیوں کا لباس ہے یا یہ مطلب ہے کہ وہ حصہ تہبند کا دوزخ میں جائے گا اس شخص کو ساتھ
 لے کر، یہ مطلب نہیں کہ تہبند تو دوزخ میں جاوے اور یہ مکبر سید حاجت میں، یہاں بھی مکبر شنی فیشن کے لیے تہبند نیچا رکھنا مراد ہے۔ گزشتہ
 احادیث اس حدیث کی شرح ہیں اور یہ حکم مردوں کے لیے ہے عورتوں کو نخنہ کے نیچے تہبند رکھنا چاہیے تاکہ ان کی پنڈی کا کوئی حصہ حتیٰ کہ نخنہ

بھی نہ کھلے کہ یہ سز عورت ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۶۱)

حدیث ۹: ابو داؤد و نسائی و ابن ماجہ نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اسبال یعنی کپڑے کے نیچا کرنے کی ممانعت تہبند و قمیص و عمامہ سب میں ہے۔ حضرت ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے عرض کی، عورتوں کے لیے کیا حکم ہے؟ فرمایا: ایک بالشت لٹکالیں (یعنی آدھی پنڈلی کے نیچے ایک بالشت لٹکائیں) عرض کی، اب تو عورتوں کے قدم کھل جائیں گے، ارشاد فرمایا: ایک ہاتھ لٹکالیں اس سے زیادہ نہیں۔ (11)

(10) سنن ابن ماجہ، کتاب اللباس، باب موضع الازار این ہو، الحدیث: ۳۵۷۳، ج ۲، ص ۱۳۸۔

ومشکوٰۃ المصابیح، کتاب اللباس، الحدیث: ۴۳۳۱، ج ۲، ص ۷۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ انصاف جمع فرما کر اشارۃً بتایا گیا کہ حقیقی آدھا ضروری نہیں قرہی آدھی پنڈلی تک ہونی چاہیے جیسے کہا جاتا ہے اوائل کتاب یا اواخر کتاب۔ اگر حقیقی آدھی پنڈلی مراد ہوتی تو نصف الساق فرمایا جاتا کہ پنڈلی کا نصف ایک ہی ہوتا ہے نہ کہ چند۔ (اشعہ)

۲۔ یعنی آدھی پنڈلی تک تہبند ہونا بہتر ہے ٹخنوں تک ہونا جائز، آج کل آدھی پنڈلی تک تہبند، منڈا ہوا سر بہت لمبی داڑھی وہابیوں کی نشانی ہے اس لیے ٹخنہ کے اوپر تہبند رکھے یعنی اس جائز کام پر عمل کرے سر نہ منڈائے، داڑھی صرف ایک مشت رکھے زیادہ بھی نہ رکھے تاکہ ان کی مشابہت سے بچے من تشبه بقوم فهو منهم۔

۳۔ اسکی شرح ابھی گزری کہ صرف نچا تہبند ہی دوزخ میں نہ جائے گا بلکہ اپنے پہننے والے کو بھی ساتھ لے جائے گا۔

۴۔ یہ پوری حدیث تین بار فرمائی یا صرف یہ آخری کلمہ ما اسفل الخ تین بار فرمایا۔

۵۔ اس فرمان عالی نے ساری حدیث کو مقید کر دیا یعنی فخریہ طور پر یا فیشن یا یہود و نصاریٰ کی نقل کے لیے نیچے پانچواں پہننا دوزخ کا ذریعہ ہے۔ اس لیے فقہاء فرماتے ہیں کہ فیشن یا شنی کے لیے نیچے پانچواں پہننا مکروہ تحریمی ہے اس کے بغیر مکروہ تنزیہی یا خلاف مستحب۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۷)

(11) سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی قدر موضع الازار، الحدیث: ۴۰۹۴، ج ۲، ص ۸۳۔

وباب فی قدر الذیل، الحدیث: ۴۱۱۷، ج ۲، ص ۸۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی یہ فرمایا کہ مؤمن کے تہبند آدھی پنڈلی تک رہنے چاہئیں تب حضرت ام سلمہ نے یہ سوال پیش کیا۔

۲۔ یعنی مؤمن تو عورت بھی ہے اگر اس کا تہبند آدھی پنڈلی تک رہے تو اس کی نماز کیسے درست ہوگی اور اس کی پنڈلی ستر ہے اس کا کھلا رکھنا اسے ممنوع ہے۔

۳۔ یعنی بمقابلہ مرد کے ایک بالشت اپنا تہبند زیادہ رکھے مطلب یہ ہے کہ نصف پنڈلی سے ایک بالشت زیادہ نکالے تاکہ ٹخنے بھی ڈھکے رہیں۔

حدیث ۱۰: صحیح مسلم میں عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی ہے: میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے پاس سے گزرا اور میرا تہبند کچھ لٹک رہا تھا، ارشاد فرمایا: عبد اللہ! اپنے تہبند کو اونچا کرو۔ میں نے اونچا کر لیا پھر فرمایا: زیادہ اونچا کرو۔ میں نے زیادہ کر لیا۔ اس کے بعد میں ہمیشہ کوشش کرتا رہا۔ کسی نے عبد اللہ سے پوچھا، کہاں تک اونچا کیا جائے؟ کہا، نصف پنڈلی تک۔ (12)

حدیث ۱۱: صحیح بخاری میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص اپنا کپڑا تکبر سے نیچا کرے، اللہ تعالیٰ قیامت کے دن اس کی طرف نظر نہیں فرمائے گا۔ حضرت ابو بکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) میرا تہبند لٹک جاتا ہے، مگر اس وقت کہ میں پورا خیال رکھوں (یعنی ان کے شکم پر تہبند رکتا نہیں تھا، سرک جاتا تھا)۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: تم ان میں سے نہیں جو براہ تکبر لٹکاتے ہیں۔ (13) (یعنی جو بالقصد تہبند کو نیچا کرتے ہیں، اُن کے لیے وہ وعید ہے۔)

۴۔ یعنی ایک بالشت زیادہ رکھنے میں اگرچہ بیٹھنے کی حالت میں تو اس کا ستر چھپا رہے گا مگر چلنے کی حالت میں اس کے قدم ضرور کھلیں گے یا بے احتیاطی میں پنڈلی بھی کھل جائے گی لہذا ایک بالشت زیادہ ہونے سے بھی ستر حاصل نہ ہوگا۔

۵۔ گز سے شرعی گز مرد ہے یعنی ایک ہاتھ یا دو بالشت جو کہ ڈیزھنٹ یا اٹھارہ انچ ہوتے ہیں شریعت میں اسی گز کا اعتبار ہے۔ مطلب یہ ہے کہ دو بالشت زیادہ رکھے اس سے زیادہ نہ کرے ورنہ زمین پر گھسیٹے گا اور نجس ہوتا رہے گا۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۸۰)

(12) صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب تحریم جراثیم خلاء... إلخ، الحدیث: ۴۷۔ (۲۰۸۶)، ص ۱۵۶۔

حکیم ادا مت کے مدنی پھول

۱۔ اس طرح کہ منخنوں سے نیچے لٹکا ہوا تھا جو کہ مرد کے لیے منع ہے۔

۲۔ حتیٰ کہ آدمی پنڈلی تک اٹھ گیا جیسا کہ اگلے مضمون سے ظاہر ہے۔

۳۔ یعنی اس فرمان عالی کے بعد میں نے جب بھی تہبند باندھا آدمی پنڈلی تک باندھا۔

۴۔ یہ حدیث بہت طریقہ سے مروی ہے۔ بہتر یہ ہی ہے کہ مرد آدمی پنڈلی تک تہبند رکھے اگرچہ منخنوں کے اوپر تک بھی جائز ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۸۰)

(13) صحیح بخاری، کتاب اللباس، باب من جر لزاردن غیر خلاء، الحدیث: ۵۷۸۳، ج ۴، ص ۴۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ پیرے سے مرد تہبند یا پانچامہ ہے اور نیچے سے مراد منخنوں کے نیچے ہے۔ حکیمزاد فرما کر اشارہ کیا گیا کہ فیشن یا فخر کے لیے یہ حرکت مکروہ

تحریکی ہے، بے خیالی میں نیچے ہو جانا اتنا سخت ممنوع نہیں جیسا کہ آئندہ مضمون سے معلوم ہو رہا ہے۔ غرضیکہ ان قیود سے بہت مسائل ←

معلوم ہوئے۔

۲۔ یعنی نظر رحمت، نظر کرم و عنایت نہ فرمائے گا۔ اس کی شرح پہلے ہو چکی۔

۳۔ یعنی میں خود تو نہیں دکھاتا بلکہ تہبند خود ہی لٹک جاتا ہے شکم کسی قدر بھاری ہے اس لیے پیٹ سے سرک جاتا ہے نہ ارادہ ہے نہ غرور۔

۴۔ یعنی ہم نے تکبر و غرور سے تہبند بچا رکھنے سے ممانعت کی ہے تم کو غرور سے دور کا بھی تعلق نہیں اور پھر قصد اذکار سے بھی نہیں لہذا تم اس حکم کی زد میں نہیں آتے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۱۳)

بطور تکبر شلواری کو بڑا رکھنا

شاہ ابراہیم غریبوں کے غمخوار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عبرت نشان ہے: ازار (یعنی تہبند) کا جو حصہ ٹخنوں سے نیچے ہو وہ جہنم میں ہے۔ (صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب اسفل من اللعین لھو فی النار، الحدیث: ۵۷۸، ص ۴۹۴)

رسول انور، صاحب کوثر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عبرت نشان ہے: مؤمن کا ازار اس کی پنڈلی کے پٹھوں تک ہے، پھر نصف پنڈلی تک، پھر ٹخنوں تک اور ٹخنوں سے نیچے جو ہو گا وہ جہنم میں ہے۔

(الترغیب والترہیب، کتاب اللباس والزیۃ، باب الترغیب فی اللیس۔۔۔۔۔ الخ، الحدیث: ۲، ج ۳، ص ۶۴)

میں مکرّم، نور مجسم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان معظم ہے: اللہ عزوجل قیامت کے دن اس شخص کی طرف نظر رحمت نہ فرمائے گا جو تکبر کی وجہ سے اپنا کپڑا گھسیٹ کر چلے گا۔

(صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب تحریم جراثوب۔۔۔۔۔ الخ، الحدیث: ۵۴، ۵۳، ۵۲، ص ۱۰۵۱)

اور ایک روایت میں ہے کہ اللہ عزوجل اس پر نظر رحمت نہ فرمائے گا جو غرور کی وجہ سے اپنا کپڑا گھسیٹ کر چلے گا۔

(المرجع السابق، الحدیث: ۵۳۶۳، ص ۱۰۵۱)

رسول اکرم، شہنشاہ بنی آدم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: جو تکبر کی وجہ سے اپنا کپڑا گھسیٹ کر چلے گا اللہ عزوجل اس پر نظر رحمت نہ فرمائے گا۔ تو حضرت سیدنا ابوبکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے عرض کی یا رسول اللہ عزوجل صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم! اگر میں اپنے تہبند کا خیال نہ رکھوں تو وہ ڈھیلا ہو کر لٹک جاتا ہے۔ تو حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: تم ان لوگوں میں سے نہیں ہو جو تکبر کی وجہ سے ایسا کرتے ہیں۔ (سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی قدر موضع الازار، الحدیث: ۴۰۹۵، ص ۱۵۲۲)

حضرت سیدنا ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما ارشاد فرماتے ہیں کہ میں نے اپنے ان دو کانوں سے رسول اکرم، شفیع معظم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو یہ ارشاد فرماتے ہوئے سنا: جو شخص تکبر اور لوگوں کی تحقیر کے ارادے سے اپنا تہبند گھسیٹ کر چلے گا اللہ عزوجل قیامت کے دن اس پر نظر رحمت نہ فرمائے گا۔ (صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب تحریم جراثوب۔۔۔۔۔ الخ، الحدیث: ۵۳۵۹، ص ۱۰۵۱)

حضرت سیدنا ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے ارشاد فرمایا: حضور نبی پاک، صاحب ثلواک، سیاح افلاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے

حدیث ۱۲: ابو داؤد نے عکرمہ سے روایت کی، کہتے ہیں: میں نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما کو دیکھا کہ ان

جو احکام از ربیع تہبند کے بارے میں ارشاد فرمائے تھے ان کے بھی وہی ہیں۔

(سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی قدر موضع الازار، الحدیث: ۴۰۹۵، ص ۱۵۲۲)

حضرت سیدنا عطاء بن عبد الرحمن رضی اللہ تعالیٰ عنہ اپنے والد محترم سے روایت کرتے ہیں کہ میں نے حضرت سیدنا ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے تہبند کے بارے میں سوال کیا؟ تو انہوں نے ارشاد فرمایا: تم نے ایک باخبر آدمی سے سوال کیا ہے، اللہ کے محبوب، دانائے غیب، منزہ عن العیوب عز وجل صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: مؤمن کا تہبند اس کی نصف پنڈلی تک ہو تو حرج نہیں۔ یہ ارشاد فرمایا: اگر نصف پنڈلی اور ٹخنوں کے درمیان ہو تو گناہ نہیں اور جو اس سے بچے ہو وہ جہنم میں ہے اور جو شخص تکبر کی وجہ سے اپنا تہبند لٹکا کر چلے گا اللہ عز وجل قیامت کے دن اس پر نظرِ رحمت نہ فرمائے گا۔

(ابو داؤد، کتاب اللباس، باب فی قدر موضع الازار، الحدیث: ۴۰۹۳، ص ۱۵۲۲، المؤمن تہبند لہا مسلم)

حضرت سیدنا ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما ارشاد فرماتے ہیں کہ میں شہنشاہِ خوش خصال، بیکرِ حسن و جمال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی بارگاہ میں حاضر ہوا تو لہبائی کی وجہ سے میرا تہبند لٹک رہا تھا، آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: یہ کون ہے؟ میں نے عرض کی: عبد اللہ بن عمر (رضی اللہ تعالیٰ عنہما)۔ تو آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: اگر تم واقعی اللہ عز وجل کے بندے ہو تو اپنا تہبند اونچا کر لو۔ لہذا میں نے اپنا تہبند آدمی پنڈلیوں تک کر لیا۔ پھر مرتے دم تک آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہما کا تہبند اتنا ہی رہا۔

(المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن عمر بن الخطاب، الحدیث: ۶۲۷۱، ج ۲، ص ۵۱۰)

اللہ کے محبوب، دانائے غیب، منزہ عن العیوب عز وجل صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمانِ عبرت نشان ہے: تین شخص ایسے ہیں کہ جن سے اللہ عز وجل نہ تو کلام فرمائے گا، نہ ان پر نظرِ رحمت فرمائے گا اور نہ ہی انہیں پاک فرمائے گا بلکہ ان کے لئے دردناک عذاب ہوگا۔ خاتم المرسلین، رحمۃ اللعالمین، شفیع المذنبین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے یہ بات تین مرتبہ ارشاد فرمائی، حضرت سیدنا ابوذر غفاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے عرض کی: یا رسول اللہ عز وجل صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم! خائب و خاسر ہونے والے یہ لوگ کون ہیں؟ تو حضور نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: کپڑا لٹکانے والا، احسان جانے والا اور جھوٹی قسم کھا کر اپنا مال بچنے والا۔

(الترغیب والترہیب، کتاب اللباس والزیئۃ، باب الترغیب فی القمیس، الحدیث: ۳۲۹، ج ۳، ص ۵۸)

ایک اور روایت میں تہبند لٹکانے والا کے الفاظ آئے ہیں۔

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلط تحریم اسبال الازار، الحدیث: ۲۹۳، ص ۶۹۶)

سید المرسلین، رحمۃ اللعالمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمانِ عبرت نشان ہے: کپڑا لٹکانے کا عمل تہبند، قمیص اور عمامہ میں بھی ہو سکتا ہے، جو تکبر کی وجہ سے ان میں سے کوئی چیز گھسیٹے گا اللہ عز وجل بروز قیامت اس پر نظرِ رحمت نہ فرمائے گا۔

(سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی قدر موضع الازار، الحدیث: ۴۰۹۳، ص ۱۵۲۲) ←

نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو اس طرح تہبند باندھے ہوئے دیکھا ہے۔ (14)

حدیث ۱۳: ترمذی و ابوداؤد نے اسما بنت یزید رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہتی ہیں: رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی قمیص کی آستین گٹے تک تھی۔ (15)

حدیث ۱۴: امام احمد و ترمذی و نسائی و ابن ماجہ نے سمرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: سپید کپڑے پہنو کہ وہ زیادہ پاک اور ستھرے ہیں اور انھیں میں اپنے مردے کفناؤں۔ (16)

چل رہا تھا کہ اللہ عزوجل نے اسے زمین میں دھنسا دیا اب وہ قیامت تک زمین میں دھنسا ہی رہے گا۔

(صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب من جر ثوبہ من الخطا، الحدیث: ۵۷۸۹، ص ۴۹۴)

(14) سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی قدر موضع الازار، الحدیث: ۴۰۹۶، ج ۴، ص ۸۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ عکرمہ ابن ابوجہل نہیں ہیں وہ تو صحابی ہیں بلکہ آپ عکرمہ تابعی ہیں، حضرت ابن عباس کے کاتب اور آز ذکر وہ غلام، فقہاء مکہ معظمہ سے ہیں، اتنی سال عمر پائی، بڑے ایک سو سات میں وفات پائی۔

۲۔ تہبند باندھنے کا یہ بھی ایک طریقہ ہوتا ہے کہ اگلے حصہ کا کنارہ زیادہ نیچا ہو حتیٰ کہ قدم پر پڑ جائے اور پچھلا حصہ اونچا ہو اس میں پچھلے حصہ کا اعتبار ہے۔

۳۔ اس طرح تہبند باندھنا حضورؐ سے کبھی کبھی ثابت ہوا ہے۔ اس سے صرف حضرت ابن عباس ہی کو اطلاع ہوئی، اور صحابی سے یہ عمل ثابت نہیں۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۱۵)

(15) سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب ماجاء فی القمیص، الحدیث: ۴۰۲۷، ج ۴، ص ۶۱۔

ومشکوٰۃ المصابیح، کتاب اللباس، الحدیث: ۴۳۲۹، ج ۲، ص ۷۷۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ لہذا سنت یہ ہی ہے کہ قمیص کی آستینیں نہ تو کلائی سے اوپر ہوں نہ نیچے یعنی ہتھیلی یا انگلیوں تک۔ جن روایات میں ہے کہ حضورؐ نور کی آستینیں انگلیوں تک ہوتی تھیں وہاں جبہ کی آستینیں مراد ہیں لہذا احادیث میں تعارض نہیں۔ جبہ کی آستینیں دراز ہوتی تھیں قمیص کی آستینیں چھوٹی، ساج کل قمیص کی آستینیں آدمی کلائی تک بعض لوگ رکھتے ہیں یہ سنت کے خلاف ہے۔ شلو کے یا واسکٹ کی آستینیں بازو تک ہوتی ہیں یا بالکل نہیں ہوتیں یہ بھی جائز ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۷۴)

(16) اسند امام احمد بن حنبل، مسند البصریین، حدیث سمرۃ بن جندب، الحدیث: ۲۰۱۷۴، ج ۷، ص ۲۶۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اطیب بنا ہے طیب سے اگر طیب خبیث کا مقابل ہو تو بمعنی حلال ہوتا ہے جیسے رب تعالیٰ کا فرمان: "اَلَا یَسْتَوِیٰ" ←

حدیث ۱۵: ابن ماجہ نے ابو داود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: سب میں اچھے وہ کپڑے جنہیں پہن کر تم خدا کی زیارت قبروں اور مسجدوں میں کرو، سپید ہیں یعنی سپید کپڑوں میں نماز پڑھنا اور مردے کو کفنانا اچھا ہے۔ (17)

حدیث ۱۶: ترمذی و ابو داود نے عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہتے ہیں: ایک شخص سرخ کپڑے پہنے ہوئے گزرے اور انھوں نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو سلام کیا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے سلام کا جواب نہیں دیا۔ (18)

الْحَبِیْثُ وَالْقَلِیْثُ "ورنہ اس کے معنی ہوتے پسندیدہ شرعاً یا عقلاً یا طبخاً یہاں اس ہی آخری معنی میں ہے یعنی سفید کپڑا پاکیزہ بھی ہے کہ زرا سادہ دور سے معلوم ہو جاتا ہے اور دھولیا جاتا ہے، رنگین کپڑے کے داغ دھبے نظر نہیں آتے، نیز رنگین کپڑے کے دھونے میں رنگ دھل جانے کا خطرہ ہوتا ہے سفید کپڑے میں یہ خطرہ نہیں، نیز سفید کپڑا اپنے پیدائشی رنگ پر ہے رنگ عارضی۔ اطیب کے معنی میں دل پسند، جتنا حسن و زیبائش سفید کپڑے میں ہے اتنا دوسرے میں نہیں۔ وہ جو وارد ہوا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے سیاہ عمامہ باندھا یا سرخ جوڑا یعنی سرخ دھاری والا جوڑا پہنایا عورت کا کپڑا رنگین ہو وہ سب بیان جواز کے لیے ہے یہ فرمانِ علی بیان استقباب کے لیے۔ بعض طلبہ صوفیاء رنگین کپڑے پہنتے ہیں وہ محض اس لیے کہ جلد جلد دعوتِ نہ پڑیں ورنہ مسلمان کے لیے سفید کپڑا بہت ہی بہتر ہے۔

۲۔ بعض لوگوں میں مشہور ہے کہ عورت کو رنگین کفن دو غلط ہے ہر مردہ کو سفید کفن دینا بہتر ہے کہ اب اس کی گفتگو اور ملاقات فرشتوں سے ہونے والی ہے تو اچھے کپڑوں میں ہونی چاہیے اچھے کپڑے سفید ہیں۔ یہاں مرقات نے سفید رنگت پر بہت اعلیٰ گفتگو کی ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۳)

(17) سنن ابن ماجہ، کتاب اللباس، باب البیاض من الثیاب، الحدیث: ۵۶۸، ج ۲، ص ۱۴۶

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی مسجدوں میں نماز کے لیے سفید کپڑے پہن کر آؤ اور قبروں میں سفید کفن لے کر جاؤ کہ رب تعالیٰ سفید لباس پسند فرماتا ہے۔ مؤمن مر کر اللہ تعالیٰ سے ملاقات کرتا ہے تو چاہیے کہ سفید کفن میں ملاقات کرے۔ (مرقات) نیز مرتے ہی حضور کا دیدار بھی ہوتا ہے دوسرے مسلمانوں کی ملاقاتیں بھی، تو چاہیے کہ یہ سب کچھ سفید کفن میں ہو اسی لیے کفن میں خوشبو ملتے ہیں کہ مدینہ کے دولہا سے کہتے ہوئے ملاقات ہو۔ بعض لوگ شب کو وضو کر کے خوشبو مل کر سوتے ہیں کہ دیدارِ یارِ خواب میں نصیب ہو تو اچھی حالت میں ہو۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۲۷)

(18) سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی کراہیۃ لبس المعصر للرجال، الحدیث: ۲۸۱۶، ج ۲، ص ۳۶۸

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ خالص سرخ کیونکہ مخطوط سرخ مرد کو بلا کراہت جائز ہے، یہ حضرت اس وقت تہبند بھی سرخ پہنے تھے اور قمیض بھی سرخ۔

حدیث ۱: ابو داؤد نے عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ اسماء رضی اللہ تعالیٰ عنہا بار یک کپڑے پہن کر حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کے سامنے آئیں، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے مونہ پھیر لیا اور یہ فرمایا: اے اسماء! جب عورت بالغ ہو جائے تو اُس کے بدن کا کوئی حصہ دکھائی نہ دینا چاہیے، سوا مونہ اور ہتھیلیوں کے۔ (19)

۲۔ اس حدیث کی بنا پر بعض علماء نے مرد کے لیے سرخ کپڑے پہننا حرام فرمایا، اس سے یہ بھی معلوم ہوا کہ گناہ کرنے کی حالت میں ان کے سلام کے جواب کا مستحق نہیں ہوتا، دیکھو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کے سلام کا جواب نہ دیا۔
۳۔ طبرانی نے بروایت عمران ابن حصین روایت کی کہ فرمایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے کہ سرخ رنگ سے بچو کہ یہ شیطانی دینت ہے۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۹۸)

(19) سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فیما تبدی المرأة من زینتها، الحدیث: ۴۱۰۴، ج ۴، ص ۸۵۔
حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حضرت اسماء حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی سالی ہیں یعنی عائشہ صدیقہ کی بہن، حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ کی صاحبزادی ہیں، یہ واقعہ پردہ فرض ہونے سے پہلے کا ہے۔ (مرقات)

۲۔ ان کی قمیض بھی بار یک کپڑے کی تھی جس سے بازو وغیرہ نظر آتے تھے اور دوپٹہ بھی بار یک تھا جس سے سر کے بال چمک رہے تھے۔ معلوم ہو کہ اس زمانہ میں بھی بار یک کپڑے ایجاد ہو چکے تھے اب تو بہت ہی برا حال ہے۔

۳۔ یہ منہ پھیر لینا یا تو اظہار ناراضی کے لیے تھا یا نگاہ پاک کی حفاظت کے لیے، حضور صلی اللہ علیہ وسلم نزول احکام سے پہلے بھی احکام پر عامل تھے۔

۴۔ اس طرح کہ قریب بلوغ ہو جائے مہرہ ہونے کی عمر میں مختلف ہیں۔ تندرست لڑکیاں جلد اور کمزور لڑکیاں دیر سے اس حد کو پہنچتی ہیں اس لیے لڑکی کے بلوغ کی عمر نو برس سے پندرہ برس تک کی عمر ہے اور لڑکے کے لیے بارہ برس سے پندرہ برس تک، جیسی تندرستی و صحت دیے ہی ہو۔ خیاں رہے کہ حیض کے معنی ہیں حیض مگر اس سے مراد ہے بلوغ کیونکہ لڑکی کا بلوغ اکثر اس سے ظاہر ہوتا ہے اگرچہ زیر ناف بال اور حمل بھی بلوغ کی علامت ہے، پستان کا ابھار اس کی خاص علامت نہیں۔

۵۔ اس سے دو مسئلے معلوم ہوئے: ایک یہ کہ اگر بار یک کپڑے میں سے جسم نظر آ رہا ہو تو وہ نیچے جسم کے حکم میں ہے اس کو پہن کر نماز نہ ہوگی۔ دوسرے یہ کہ عورت کے ہاتھ کلائیوں تک اور چہرہ ستر نہیں مگر اب اجنبی کو اس کا دیکھنا حرام ہے، یہ فرمان عالی پردہ فرض ہونے سے پہلے کا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۱۷)

عورت کا بار یک لباس پہننا

یعنی عورت کا ایسا بار یک لباس پہننا جس سے اس کی جلد کی رنگت یا اعضاء کی بناوٹ جھلکتی ہو

حدیث ۱۸: امام مالک علقمہ بن ابی علقمہ سے وہ اپنی ماں سے روایت کرتے ہیں، کہ حفصہ بنت عبد الرحمن حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے پاس باریک دوپٹا اوڑھ کر آئیں، حضرت عائشہ نے ان کا دوپٹا پھاڑ دیا اور مونا دوپٹا دے دیا۔ (20)

دو جہاں کے تاجور، سلطانِ محروم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمانِ عبرت نشان ہے: جہنمیوں کی دو قسمیں ایسی ہیں جن کو میں نے (اس زمانے میں) نہیں دیکھا: (۱) ایسے لوگ جن کے پاس گائے کی دُموں جیسے کوڑے ہوں گے، ان سے وہ لوگوں کو مارتے ہوں گے اور (۲) وہ عورتیں جو لباس پہننے کے باوجود عریاں ہوں گی، وہ راجح سے بٹانے والی اور خود بھی راجح سے بھگی ہوئی ہوں گی، ان کے سر بختی اونٹوں کی کوبانوں کی طرح ایک جانب جھکے ہوئے ہوں گے، وہ نہ جنت میں داخل ہوں گی اور نہ ہی جنت کی خوشبو سونگھ سکیں گی حالانکہ جنت کی خوشبو اتنی اتنی مسافت سے آتی ہے۔ (صحیح مسلم، کتاب الادب، باب النساء الکاسیات، الحدیث: ۵۵۸۲، ص ۱۰۵۸)

حسنِ اخلاق کے پیکر، نبیوں کے تاجور، محبوبِ رب اکبر عزوجل صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: میری امت کے آخر میں کچھ لوگ ایسے ہوں گے کہ جو زینوں پر سوار ہوں گے ان کی مثال ان لوگوں کی طرح ہوگی جو خود تو مساجد کے دروازوں پر پڑاؤ ڈالے ہوں گے لیکن ان کی عورتیں (اتنا باریک) لباس پہنے ہوں گی (کہ) بے لباس (معلوم) ہوں گی، لاغر و کمزور بختی اونٹوں کی کوبانوں کی طرح سروں کو اٹھائے ہوں گی، ان عورتوں پر تم بھی لعنت بھیجو کیونکہ ان پر لعنت کی گئی ہے، اگر تمہارے بعد کوئی امت ہوتی تو تمہاری عورتیں اس امت کی اسی طرح خدمت کرتیں جس طرح تم سے پہلی امتوں کی عورتوں نے تمہاری خدمت کی ہے۔

(صحیح ابن حبان، کتاب الحضرة والا باحة، باب اللعن، الحدیث: ۵۷۲۳، ص ۵۰۲)

سرکارِ لہ قرار، شافعِ روزِ شمار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: میں نے جہنم میں جھانکا تو دیکھا جہنم والوں میں زیادہ جہنمی تعداد عورتوں کی ہے۔ (صحیح البخاری، کتاب بدء الخلق، باب ما جاء فی صفة الجنة۔۔۔۔۔ الخ، الحدیث: ۳۲۴۱، ص ۲۶۳)

(20) السوطی امام مالک، کتاب اللباس، باب ما یکرہ للنساء لبسه من الثیاب، الحدیث: ۱۷۳۹، ج ۲، ص ۴۱۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ علقمہ ابن قیس نہیں جو کہ حضرت عبد اللہ بن مسعود کے خاص ساتھیوں میں سے ہیں بلکہ علقمہ بن ابوعلقمہ ہیں، ان کے باپ کا نام بدل ہے، حضرت عائشہ صدیقہ کے آزاد کردہ غلام، کنیت ابوعلقمہ، آپ خود بھی تابعی ہیں اور ان کے والد ابوعلقمہ بھی تابعی، ان کی ماں کا نام معلوم نہ ہو سکا۔

۲۔ یہ عبد الرحمن ابن ابوبکر صدیق ہیں اور یہ حفصہ حضرت ام المؤمنین عائشہ صدیقہ کی بھتیجی ہیں اور منذر ابن زبیر ابن عوام کی بیوی۔

۳۔ یعنی اس دوپٹے کو پھاڑ کر دو رومال بنادے تاکہ اوڑھنے کے قابل نہ رہے رومال کے کام آوے لہذا اس پر یہ اعتراض نہیں کہ آپ نے یہ مال ضائع کیوں فرما دیا۔

۴۔ یہ ہے عملی تبلیغ اور بچیوں کی صحیح تربیت و تعلیم۔ اس دوپٹے سے سر کے بال چمک رہے تھے ستر حاصل نہ تھا اس لیے یہ عمل فرمایا۔

حدیث ۱۹: ترمذی نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم عمامہ باندھتے تو دونوں شانوں کے درمیان شملہ لگاتے۔ (21)

(21) سنن ترمذی، کتاب اللباس، باب فی سدل العمامۃ بین الکفین، الحدیث: ۱۷۴۲، ج ۳، ص ۲۸۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے یعنی عمامہ شریف کا کنارہ مبارک جسے فارسی میں شملہ اور عربی میں عذہ کہتے ہیں نصف پیٹھ تک ہوتا تھا در دونوں کندھوں کے درمیان لٹکا رہتا تھا خواہ پیٹھ پر یا سینہ پر مگر سینہ پر ہونا افضل ہے یعنی سامنے۔ (مرقات دلعات) (مرآۃ السانج شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۲۲۰)

عمامہ شریف کے فضائل

پیارے بھائیو! عشاق کیلئے تو اتنی ہی بات کافی ہے کہ عمامہ شریف نبی اکرم، شفیع معظم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی سنت ہے اگرچہ عمامہ شریف کی فضیلت میں کثیر احادیث وارد ہیں آپ کی ترغیب و تخریص کے لئے ”حضور نے سبز عمامہ بھی باندھا“ کے 23 حروف کی نسبت سے عمامہ شریف کے فضائل پر مشتمل 23 روایات درج ذیل ہیں:

حضرت سیدنا عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے پاس ایک شخص آیا اور سوال کیا: ”اے ابو عبدالرحمن کیا عمامہ باندھنا سنت ہے؟“ آپ نے فرمایا: ہاں (سنت ہے)۔ (عمدة القاری، کتاب اللباس، باب العمام، ۲۲/۱۵)

بردبار بننے کا آسان عمل

حضرت سیدنا ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما روایت فرماتے ہیں: رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: اَعْتَمُوا زَاوَا جُلُکُمْ یعنی عمامہ باندھو تمہارا علم بڑھے گا۔ (معجم کبیر، عبداللہ بن عباس، ۱۴/۱۷۱، حدیث: ۱۲۹۳۶)

یہی روایت سیدنا اُسامہ بن غمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بھی مروی ہے۔

(کنز العمال، کتاب المعیشۃ والعادات، فرع فی العمام، الجزء: ۱۵، ۸/۱۳۳، حدیث: ۴۱۱۷۷)

حضرت عمامہ عبدالرہوف مناوی علیہ رحمۃ اللہ القوی اس حدیث پاک کے تحت فرماتے ہیں: (عمامہ باندھو) تمہارا علم بڑھے گا اور تمہارا سینہ کشادہ ہوگا کیونکہ ظاہری وضع قطع کا اچھا ہونا انسان کو سنجیدہ اور باوقار بنادیتا ہے نیز غصے، جذباتی پن اور خسیس حرکات سے بچاتا ہے۔

(فیض القدر، حرف الہزۃ، ۱/۷۰۹، تحت الحدیث: ۱۱۴۲)

علم ایک بے بہا دولت

پیارے بھائیو! بادشاہی علم (بردباری) ایک ایسی بے بہا دولت ہے کہ لاکھوں بلکہ اربوں روپے میں بھی خریدی نہیں جاسکتی لیکن نبی اکرم، نور مجسم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم پر قربان کہ آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے اپنی امت پر شفقت و احسان فرماتے ہوئے انتہائی آسان عمل ارشاد فرمادیا کہ جس کی بدولت ہم غصے اور جذباتی پن سے نجات پا کر اپنے اندر قوت برداشت پیدا کر سکتے ہیں۔ جیسا کہ حضرت علامہ محمد بن جعفر کشانی علیہ رحمۃ اللہ القوی حدیث نقل فرماتے ہیں کہ

حضرت سیدنا اُسامہ بن مُعمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی روایت ہے: **وَاعْتَمُوا تَحِلُّوْا** یعنی عمامے باندھو برباد ہو جاؤ گے۔

(العمامة فی احکام سنۃ العمامة، ص ۱۰ مختصراً)

عمامہ شریف حسن و جمال کا ذریعہ

حضرت علامہ شہاب الدین محمد لاہی علیہ رحمۃ اللہ القوی روایت نقل فرماتے ہیں: **تَعْتَمُوا تَزْدَادُوا جَمَالًا** یعنی عمامے باندھو تمہارے حسن و جمال میں اضافہ ہوگا۔ (المستطرف، الباب السادس والاربعون فی الخلق و صفاتہم الخ، ۵۲/۲)

پیارے بھائیو! واقعی عمامہ شریف باندھنے سے حسن و جمال میں اضافہ ہو جاتا ہے جیسا کہ حضرت سیدنا عبداللہ بن بُزیدہؓ سلمیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ ایک رات حضرت سیدنا عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ ایک گھر کے قریب سے گزرے تو ایک عورت نے اشعار میں ایک شخص (نصر بن حجاج جس کا تعلق بنی سلیم سے تھا) کا ذکر کیا، جو کہ بہت حسین و جمیل تھا۔ آپ نے صبح اسے دربار میں طلب فرمایا، یہ خوبصورت بالوں اور حسین چہرے والا شخص تھا۔ آپ نے اسے بال کٹوانے کا حکم فرمایا اس نے کٹوا دیئے مگر اس کی پیشانی کھل جانے کے باعث اور حسین لگنے لگا آپ نے اسے عمامہ شریف باندھنے کا حکم دیا (تاکہ اس کی پیشانی چھپ جائے) اس نے عمامہ باندھا تو اس کے حسن میں اور اضافہ ہو گیا بالآخر آپ نے اسے بصرہ بھیج دیا۔ (طبقات ابن سعد، باب ذکر اختلاف عمر، ۲۱۶/۳، ملحوظاً)

اسی طرح امیر المؤمنین حضرت سیدنا عثمان ذوالنورین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے متعلق علامہ احمد بن محمد اندلسی علیہ رحمۃ اللہ القوی نقل فرماتے ہیں کہ **اِجْلَلْنَا اِذَا اُعْتَمْنَا** یعنی آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جب عمامہ شریف باندھتے تو سب سے زیادہ حسین و جمیل نظر آتے۔

(عقد الفرید، کتاب العجدة الثانیة، باب نسب عثمان وصفہ، ۳۶/۵)

عمامے تاج ہیں

حضرت سیدنا ابوالفتح رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ اپنے والد سے روایت فرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: **اِعْتَمُوا تَزْدَادُوا جَمَالًا وَ الْعَرَبُ يَمِيْنُ** یعنی عمامہ باندھو تمہاری برباداری (قوت برداشت) میں اضافہ ہوگا اور عمامے عرب کے تاج ہیں۔ یہی حدیث حضرت سیدنا ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے بھی مروی ہے۔ (شعب الایمان، باب فی الملابس، فصل فی العمام، ۱۷۵/۵، حدیث: ۶۲۶۰، کنز العمال، کتاب المعیشتہ والاعادات، فرع فی العمام، الجز: ۱۵، ۸/۱۳۳، حدیث: ۳۱۱۲۸)

حضرت علامہ عبدالرءوف مناوی علیہ رحمۃ اللہ القوی اس حدیث پاک کے تحت فرماتے ہیں: ”اہل عرب کے لئے عمامے تاج شاہی کی حیثیت رکھتے ہیں یہی وجہ ہے کہ دیہات میں عماموں والے تھوڑے ہی ہوتے ہیں اکثر لوگ ننگے سر یا ٹوپی پہنتے ہیں۔“

(فیض القدر، حرف الہزۃ، ۱/۷۰۹، تحت الحدیث: ۱۱۳۳ ملحوظاً)

امیر المؤمنین حضرت سیدنا علی المرتضیٰ کرم اللہ تعالیٰ و نفعہ الکریم سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا **اَلْعِمَامَةُ تَبِيْجَانُ الْعَرَبِ (۱)** یعنی عمامے عرب کے تاج ہیں۔ (جامع صغیر، حرف العین، الجز الثانی، ص ۳۵۳، حدیث: ۵۷۲۳ مختصراً)

حضرت علامہ عبد ارمہ وف متاوی علیہ رحمۃ اللہ القوی اس حدیث پاک کی شرح میں فرماتے ہیں: عماموں کو تاج اس لئے فرمایا کہ اس میں عزت، خوبصورتی، ہیبت اور وقار ہے، جیسا کہ بادشاہوں کے تاج انہیں دوسروں سے ممتاز کر دیتے ہیں (اسی طرح عمامہ بھی عام لوگوں سے ممتاز کر دیتا ہے)۔ (فیض القدیر، حرف العین، ۲/۵۱۵، تحت الحدیث: ۵۷۲۳)

حضرت سیدنا ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما فرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے حضرت سیدنا علیؓ کو عزیم اللہ تعالیٰ
وَجُحَّہُ الْکَرِیم کے سر پر اپنا عمامہ جس کا نام آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ”سُحَاب“ رکھا تھا وہ باندھا تو فرمایا: اے علی! ”عمامے عرب
کے تاج ہیں۔“ (کنز العمال، کتاب المعیشۃ والاعادات، آداب التعمیم، الجزء ۱۵، ۸/۲۰۵، حدیث: ۴۱۹۰۵ مختصراً)

عمامے مسلمانوں کے تاج ہیں۔

امیر المؤمنین حضرت سیدنا علی المرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: مسجدوں میں بغیر عمامے اور عمامے باندھ کر آیا کرو اس لئے کہ عمامے مسلمانوں کے تاج ہیں۔

(کنز العمال، کتاب المعیشت والعمادات، فرع فی العمائم، الجزء: ۱۵، ۸ / ۱۳۳، حدیث: ۴۱۱۳۵)

حضرت علامہ عبد الرءوف مناوی علیہ رحمۃ اللہ القوی فرماتے ہیں: اس حدیث پاک کا مطلب یہ ہے کہ جس طرح ممکن ہو مسجد میں آؤ، چاہے ٹوپی پہن کر یا سر بند اور عمامہ شریف باندھ کر اور (عمامہ نہ ہونے کی وجہ سے) جمعہ اور جماعت کو ہرگز ترک نہ کرو۔ مزید فرماتے ہیں کہ ”ایک اور روایت میں ہے (عمامے) مسلمانوں کی نشانی اور علامت ہیں یعنی جیسے تاج بادشاہوں کی نشانی ہوتے ہیں اسی طرح عمامے مسلمانوں کی نشانی ہیں۔ (فیض القدر، حرف المحرۃ، ۱/۸۹، تحت الحدیث: ۳۰ ملاحظہ)

پیارے بھائیو! اس حدیث پاک سے یہ بھی معلوم ہوا کہ عمانے نہ صرف عربوں کے تاج ہیں بلکہ تمام مسلمانوں کے تاج ہیں لہذا ہم سب کو چاہیے کہ ان (عماموں) میں اپنی عزت و آبرو سمجھیں اور ان پر مُندِ اومت (ہیثمی) اختیار کریں۔

ٹوپی اور عمامہ

حضرت سیدنا زکاتہ رحمہ اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: **الْجِمَامَةُ عَلَى الْقَلْنُسُوَةِ فَضْلٌ مَا بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْمُشْرِكِينَ يُعْطَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِكُلِّ كَوْرَةٍ يُكْوَرُهَا عَلَى رَأْسِهِ ثَوْرًا يَحْنُ ثَوْبِي** پر عمامہ باندھنا ہمارے اور مشرکین کے درمیان امتیازی علامت ہے، عمامہ باندھنے والے (مسلمان) کو اپنے سر پر باندھے جانے والے ہر پیچ کے بدلے قیامت کے دن ایک نور عطا کیا جائے گا۔

(کنز العمال، کتاب المعیشتی والعادة، فرع فی العمام، الجزء: ۱۵، ۸/۳۲، حدیث: ۴۱۱۲۶)

حضرت علامہ عبد الرؤف منادی علیہ رحمۃ اللہ القوی اس حدیث پاک کی شرح میں فرماتے ہیں کہ عمامہ ٹوپی پر باندھ جائے یا صرف سر پر، عمامے کی سنت ادا ہو جائے گی اگرچہ افضل ٹوپی پر ہی ہے۔ اس بات کا بھی خیال رہے کہ عمامے کی لمبائی اور چوڑائی میں اپنے زمانے کے

اور علاقے کے عمامہ پہننے والے لوگوں کا خیال کرے کیونکہ عرف و عادت سے زیادہ (بڑا عمامہ) باندھنا مکروہ ہے۔

(فیض القدر، حرف العین، ۲/۵۱۵، تحت الحدیث: ۵۷۲۵)

پیارے بھائیو! بغیر ٹوپی کے عمامہ شریف باندھنا بھی جائز ہے اور یہ ہمارے پیارے آقا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے ثابت بھی ہے جیسا کہ حضرت سیدنا ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما بیان فرماتے ہیں: كَانَ يَلْبَسُ الْقَلَانِسَ تَحْتَ الْعَمَائِمِ وَيَغْيِرُ الْعَمَائِمَ وَيَلْبَسُ الْعَمَائِمَ بِغَيْرِ الْقَلَانِسِ یعنی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم عمامہ شریف کے نیچے ٹوپی پہنتے تھے اور عمامہ کے بغیر ٹوپی اور ٹوپی کے بغیر عمامہ شریف بھی پہنتے تھے۔ (کنز العمال، کتاب المشاکل، قسم الاقوال، الجزء: ۷، ۲/۳۶، حدیث: ۸۲۸۲، تاریخ الخلفاء فی احوال انفس نفیس، الفصل الاول فی التفرقات، واما لباسہ وشیابہ ومتاعہ علیہ السلام، ۲/۱۹۰)

اسی طرح یحییٰ بن محمد ثنین، حضرت علامہ شیخ عبدالحق محدث دہلوی علیہ رحمۃ اللہ القوی فرماتے ہیں: آں حضرت صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم گاہ عمامہ بے کلاہ، سپوہید و گاہ با کلاہ و گاہ کلاہ بے عمامہ یعنی سرکار مدینہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم بعض اوقات بغیر ٹوپی کے عمامہ شریف باندھ لیا کرتے، کبھی ٹوپی پر عمامہ مبارک باندھتے تو کبھی کبھار صرف ٹوپی بھی زیب سرفرا لیا کرتے تھے۔ (شرح سفر السعاده، ص ۳۳۶)

پیارے بھائیو! یاد رکھئے اگرچہ ٹوپی کے بغیر عمامہ باندھنا بھی جائز ہے لیکن ٹوپی پر عمامہ شریف باندھنا افضل ہے جیسا کہ حضرت علامہ منادی علیہ رحمۃ اللہ القوی نے اس کی صراحت فرمائی ہے۔

عمامے کے ہر پیچ پر نیکی

حضرت سیدنا معاذ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: عمامے عرب کے تاج ہیں تو عمامہ باندھو تمہاری بردباری (تو مت برداشت) میں اضافہ ہوگا اور جو عمامہ باندھے اسے ہر پیچ کے بدلے ایک نیکی عطا ہوگی، اور جب (دوبارہ پہننے کے ارادے سے) اتارے تو ہر پیچ کھولنے پر ایک گناہ مٹا دیا جائے۔

(کنز العمال، کتاب المعیشۃ والعادات، فرع فی العمام، الجزء: ۵، ۸/۳۳، حدیث: ۱۳۸۱، مختصر)

میرے آقا علی حضرت، امام اہل سنت، شاہ احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن اس روایت کو یوں نقل فرماتے ہیں: عمامے عرب کے تاج ہیں تو عمامہ باندھو تمہارا دقار بڑھے گا اور جو عمامہ باندھے اس کے لئے ہر پیچ پر ایک نیکی ہے اور جب (بل ضرورت یا ترک کے قصد پر) اتارے تو ہر اتارنے پر ایک خطا ہے یا جب (بضرورت بلا قصد ترک بلکہ بار بار وہ معاودت اتارے تو ہر پیچ اتارنے پر ایک گناہ اترے۔ دونوں معنی محتمل ہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم والحديث اشد ضعفا فيه ثلاثة متركون متهمون عمرو بن الحصين عن ابي علاثة عن ثوير (فتاویٰ رضویہ، ۶/۲۱۳)

عمامے ترک کر دینے کا نقصان

حضرت سیدنا عمران بن حصین رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں: الْعَمَائِمُ —

وَقَارِئُ الْمُؤْمِنِ وَعِزُّ الْعَرَبِ فَإِذَا وَضَعْتَ عِمَامَتَهَا وَضَعْتَ عِزَّهَا - عَنِ الْمَاءِ الْمَذِينِ وَقَارِئُ الْمُؤْمِنِ
تو جب عرب عمامے باندھنا چھوڑ دیں گے تو اپنی عزت اتار دیں گے۔

(کنز العمال، کتاب المعیضۃ والحدادات، فرع فی العمامۃ، الجزء: ۵، ۸، ۱۳۳، حدیث: ۳۱۳۹)

حضرت سیدنا ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے: رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: أَلْعَبَائِمُ نِيَجَانُ الْعَرَبَ فَإِذَا وَضَعُوا الْعِمَامَتَ وَضَعَ اللَّهُ عِزَّهُمْ - یعنی عمامے عرب کے تاج ہیں، پس جب وہ (یعنی عرب) عمامے اتار دیں گے تو اللہ عز و جل ان کی عزت کو ختم فرما دے گا۔ (فردوس الاخبار، باب العین، ۹۱/۲، حدیث: ۳۱۰۹)

حضرت علامہ عبدالرؤف مناوی علیہ رحمۃ اللہ الثبوتی اس حدیث پاک کے تحت فرماتے ہیں: ”عماموں کو تاج اس لئے فرمایا ہے کہ یہ تاج کے قائم مقام ہیں۔“ (فیض القدر، حرف العین، ۵۱۵/۲، تحت الحدیث: ۵۷۲۳)

پیارے بھائیو! یقیناً عمامہ شریف ایسی عزت، مرتبے اور شان والی چیز ہے کہ جو شخص عمامہ شریف کی پابندی کرتا ہے وہ بھی عزت، مرتبے اور شان ورہا ہو جاتا ہے، کیونکہ مئی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے اسے عربوں اور مسلمانوں کا تاج فرمایا ہے۔ لہذا ہمیں اپنے تاجوں (عماموں) کی حفاظت کے لئے انہیں سر پر سجانا چاہئے۔

حضرت سیدنا خالد بن معدان علیہ رحمۃ الرحمن مسند روایت فرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم مدینے کے کچھ کپڑے لے کر تشریف لائے اور انہیں صحابہ کرام علیہم السلام میں تقسیم فرما کر ارشاد فرمایا: اِعْتَمُوا خَالِفُوا عَلَى الْأُمَمِ قَبْلَكُمْ - یعنی عمامے باندھو اگلی امتوں (یہود و نصاریٰ) کی مخالفت کرو (کہ وہ عمامہ نہیں باندھتے)۔

(شعب الایمان، باب فی الملابس الخ، فصل فی العمامۃ، ۱۷۶/۵، حدیث: ۶۲۶۱)

عمامہ باندھنے کی ترغیب

حضرت سیدنا عبادہ بن صاہب رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ مئی پاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: عَلَيْكُمْ بِالْعِمَامَةِ فَإِنَّهَا سِيمَا الْمَلَائِكَةِ وَأَرْخُوهَا خَلْفَ ظُهُورِكُمْ - یعنی تم پر عمامے لازم ہیں بے شک عمامے ملائکہ کی علامت ہیں اور عمامے کا شمشیر پیٹھ کے پیچھے لٹکاؤ۔ یہی روایت حضرت سیدنا عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے بھی مروی ہے۔ (شعب الایمان، باب فی الملابس،

فصل فی العمامۃ، ۱۷۶/۵، حدیث: ۶۲۶۲ واللفظ لہ، معجم کبیر، باب العین، عبداللہ بن عمر بن خطاب، ۲۹۲/۱۲، حدیث: ۱۳۳۱۸)

اس حدیث پاک کے تحت حضرت علامہ سید محمد بن جعفر عثمانی علیہ رحمۃ اللہ الثبوتی لکھتے ہیں: عارف باللہ خفنی علیہ رحمۃ اللہ الثبوتی فرماتے ہیں کہ عمامے فرشتوں کی نشانی ہیں، بدر کے روز فرشتے زرد عمامے سجائے، شملے لٹکائے نازل ہوئے تھے۔ مزید فرماتے ہیں کہ اس حدیث میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم امتیوں سے فرشتوں کی صفات سے متصف ہونے کا تقاضا فرما رہے ہیں۔

(العلمۃ فی احکام سبۃ العمامۃ، ص ۸)

شرح بساوشویعت (۱۰۰ تا ۱۰۱)

حدیث ۲۰: نبیؐ نے شوب الایمان میں عبادہ بن صامت رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرشتوں کی طرف اشارہ کر کے

عمامہ مسلمانوں اور غیر مسلموں میں فرق کرنے والا

حضرت سیدنا علی المرتضیٰ کرم اللہ تعالیٰ ورحمۃ اللہ علیہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے خمر کے دن میرے سر پر عمامہ باندھا اور اس کا شملہ میری پشت پر لٹکا دیا اور فرمایا: **إِنَّ اللَّهَ أَمَلَنِي يَوْمَ بَدْرٍ وَحَنَنْ بِمَلَائِكَتِهِ يَغْتَشُونَ قَدِيدَ الْعِثَّةِ** وَقَالَ إِنَّ الْعِمَامَةَ حَاجِزَةٌ بَيْنَ الْكُفْرِ وَالْإِيمَانِ یعنی بے شک اللہ عزوجل نے بدر اور حنین کے دن میری مدد فرمائی ایسے فرشتوں سے جو یہ عمامے باندھے ہوئے تھے، بے شک عمامہ کفر و ایمان کے درمیان فرق کرنے والا ہے۔ (سنن الکبریٰ للبیہقی، کتاب اسبق والرمی، باب التحریض علی الرمی، ۱۰/۲۳، حدیث: ۱۹۷۳۶، مسند طرابلسی، احادیث علی بن ابی طالب، ص ۲۳، حدیث: ۱۵۴)

تھی بدر میں دستار فرشتوں کے سروں پر

باندھے ہوئے آئے تھے مددگار عمامہ

حضرت سیدنا عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ نبی کریم، وہ دف رحیم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: **رَأَيْتُ أَكْثَرَ مَنْ رَأَيْتُ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُتَّعِينَ** یعنی میں نے جن فرشتوں کو دیکھا ہے ان میں اکثر عماموں والے تھے۔ یہی روایت حضرت سیدنا عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے بھی مروی ہے۔

(تاریخ ابن عساکر، ۸۱/۲۲، کنز العمال، کتاب الفضائل، الباب الرابع فی القباہل وذکر ہم الخ الجزء: ۱۴، ۲۰/۲۰، حدیث: ۳۳۸۸۸)

حضرت سیدنا عبد اللہ بن علی بن عبدی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ نبی پاک، صاحب لولاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے حضرت سیدنا علی المرتضیٰ کرم اللہ تعالیٰ ورحمۃ اللہ علیہ کو بلا کر آپ کے سر پر عمامہ شریف باندھا جس کا شملہ آپ کی پیٹھ پر تھا پھر فرمایا: **هَکَذَا قَاعَتُهُمْ! فَإِنَّ الْعِمَامَةَ بَسِيمَةُ الْإِسْلَامِ وَهِيَ حَاجِزَةٌ بَيْنَ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُشْرِكِينَ** یعنی عمامہ اس طرح باندھا ہے کہ عمامہ اسلام کی علامت (یعنی نشانی) ہے اور یہ مسلمانوں اور مشرکوں میں فرق کرنے والا ہے۔

(کنز العمال، کتاب المعیشتہ والعادات، آداب التعمیم، الجزء: ۱۵، ۸/۲۰۵، حدیث: ۴۱۹۰۳)

حضرت علامہ عبد الرءوف مناوی علیہ رحمۃ اللہ القوی روایت نقل فرماتے ہیں کہ عمامے مسلمانوں اور کافروں کے درمیان، تیزری علامت ہیں۔ (کنوز الحقائق، حرف الیمین، ۱/۴۰۰، حدیث: ۴۹۳۹)

فرشتوں کے تاج

حضرت سیدنا علی کرم اللہ تعالیٰ ورحمۃ اللہ علیہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے عمامے کی طرف اشارہ کر کے فرمایا: فرشتوں کے تاج ایسے ہی ہوتے ہیں۔

(کنز العمال، کتاب المعیشتہ والعادات، آداب التعمیم، الجزء: ۱۵، ۸/۲۰۵، حدیث: ۴۱۹۰۶)

عمامہ باندھنا فطرت ہے

حضرت سیدنا زکاء رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں میری امت ہمیشہ

اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ عمامہ باندھنا اختیار کرو کہ یہ فرشتوں کا نشان ہے اور اس کو پیٹھ سے پیچھے نکالو۔ (22)

فطرت پر رہے گی جب تک وہ ٹوہیوں پر عمامے باندھیں گے۔

(کنز العمال، کتاب المعیشۃ والعادات، فرع فی العمام، الجزء: ۱۵، ۸/۱۳۳، حدیث: ۴۱۱۳۰)

حضرت علامہ ملا علی قاری علیہ رحمۃ اللہ الباری ایک روایت کے تحت فرماتے ہیں: فطرت ایسی قدیم سنت کو کہتے ہیں کہ جسے تمام انبیاء کرام علیہم السلام نے اختیار کیا ہو اور تمام شریعتوں میں اس پر عمل کیا گیا ہو، گویا وہ ایسی طبعی چیز ہے کہ سب کی پیدائش اسی پر ہوئی ہے۔

(مرقاۃ المفاتیح، کتاب اللباس، باب الترجل، ۸/۲۰۸، تحت الحدیث: ۴۴۲۰)

عمامہ باعثِ عزت

حضرت سیدنا خالد بن معدان علیہ رحمۃ الرحمن فرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى أَكْرَمَ هَذِهِ الْأُمَمَةِ بِالْعَصَائِبِ یعنی بیشک اللہ عزوجل نے اس امت کو عماموں سے مکرّم فرمایا۔

(کنز العمال، کتاب المعیشۃ والعادات، فرع فی العمام، الجزء: ۱۵، ۸/۱۳۳، حدیث: ۴۱۱۳۰، مختصراً)

شیاطین عمامے نہیں باندھتے

حضرت سیدنا امام جلال الدین سیوطی علیہ رحمۃ اللہ القوی حدیث پاک نقل فرماتے ہیں: رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: تَعَبَّوْا فَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَا تَتَعَبَّمُ یعنی عمامے باندھو! بے شک شیاطین عمامے نہیں باندھتے۔

(باب الحدیث، الباب الثانی عشر فی فضائل العمام، ص ۲۱)

حضرت سیدنا زکاء رحمہ اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں: میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو فرماتے سنا: فَرَّقُوا مَا بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْبُشَيْرِ كَيْفَ الْعَصَائِبُ عَلَى الْقَلَانِسِ یعنی ہم میں اور مشرکوں میں ٹوہیوں پر عمامے باندھنے کا فرق ہے۔

(ابوداؤد، کتاب اللباس، باب فی العمام، ۴/۷۶، حدیث: ۴۰۷۸)

(22) شعب الایمان، باب فی اللباس، فصل فی العمام، الحدیث: ۶۲۶۲، ج ۵، ص ۱۷۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ہمیشہ یا نماز کے وقت عمامہ باندھا کرو۔ عمامہ کے ساتھ ایک نماز بغیر عمامہ کی ستر نمازوں سے افضل ہے مگر عمامہ سنت کے مطابق چاہیے کہ ٹوپی پر باندھا جائے مع شملہ کے ہو، عام دنوں میں سات ہاتھ ہو جو جمعہ کی نماز میں بارہ ہاتھ، شملہ آدھی پیٹھ تک ہو سفید ہو یا سیاہ مگر سرخ رنگ کا نہ ہو۔ عمامہ کے تفصیلی مسائل عالمگیری وغیرہ میں ملاحظہ کرو۔

۲۔ یا تو فرشتے رحمت کے نوری عمامہ باندھتے ہیں جو ان کی شان کے لائق ہے یا جب شکل انسانی میں آتے ہیں تو عمامہ باندھ کر آتے ہیں۔ چنانچہ بدر میں جب غازیوں کی امداد کے لیے آئے تو عمامہ باندھتے تھے، قرآن کریم فرماتا ہے: "يُمَدِّدُكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ"۔ ان کی نشانیاں عمامے تھے، ان کے رنگ زرد تھے، شملہ کندھوں پر پڑے تھے۔ (مرقات) ←

حدیث ۲۱: ترمذی نے رکانہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا کہ ہمارے اور مشرکین کے مابین یہ فرق ہے کہ ہمارے عمامہ ٹوپیوں پر ہوتے ہیں۔ (23)

حدیث ۲۲: ترمذی نے عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہتی ہیں: حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے مجھ سے یہ فرمایا: عائشہ! اگر تم مجھ سے ملنا چاہتی ہو تو دنیا سے اتنے ہی پر بس کرو جتنا سوار کے پاس توشہ ہوتا ہے اور مال داروں کے پاس بیٹھنے سے بچو اور کپڑے کو پرانا نہ سمجھو، جب تک پیوند نہ لگالو۔ (24)

۳۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم شملہ پشت کے پیچھے لٹکاتے تھے کبھی داہنی جانب سینہ پر بھی ہوتا تھا، دونوں طریقے سنت ہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۱۶)

(23) سنن الترمذی، کتاب اللباس، باب العمامۃ علی القلا نس، الحدیث: ۱۷۹۱، ج ۳، ص ۳۰۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ رکانہ ابن عبد یزید ابن ہاشم ابن عبد المطلب ہیں، قریشی ہاشمی ہیں، بڑے محدث بڑے شجاع صحابی ہیں، خلافت عثمانی میں وفات پائی۔

۲۔ یعنی بغیر ٹوپی عمامہ باندھنا طریقہ مشرکین ہے اور ٹوپی پر عمامہ باندھنا طریقہ مؤمنین ہے لہذا ٹوپی پر عمامہ باندھو ٹوپی خواہ سر سے چمٹی ہوئی ہو یا انٹھی ہوئی جسے پنجابی میں کلاہ کہتے ہیں۔ (مرقات) عمامہ بہت افضل ہے، بغیر عمامہ کی ۷ نمازیں، اور عمامہ سے ایک نماز برابر ہے۔ بعض لوگ کہتے ہیں کہ ٹوپی پر عمامہ اس طرح باندھے کہ ٹوپی کھلی نہ رہے اگر کلاہ ہو تو اس کے نیچے بھی عمامہ کا کچھ حصہ ہو۔ ٹوپی کھلے رہنے میں اعتقاد کا احتمال ہے۔ اعتقاد یہ ہے کہ سر کے آس پاس عمامہ ہو چھ حصہ کھلا ہو جیسے کہ عام دیہاتی باندھتے ہیں یہ ممنوع ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۸۶)

(24) الرجع السابق، باب ما جاء فی تریق الثوب، الحدیث: ۱۷۸۷، ج ۳، ص ۳۰۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ دنیا و آخرت میں اچھی طرح ملنا کامل طور پر میرے ساتھ رہنا جس کی وجہ سے میں تم سے بہت خوش رہوں تو یہ عمل کرنا۔

۲۔ یعنی تھوڑی دنیا پر قناعت کرو جیسے مسافر راستہ طے کرتے ہوئے تھوڑا سامان رکھتا ہے بہت سامان کو بوجھ اور وبال سمجھتا ہے۔

۳۔ یعنی خود تو مالدار بننے کی کوشش کرنا بہت دور ہے مالداروں کی محبت سے بھی پرہیز کرو۔ مالداروں سے غافل اور متکبر مالدار مراد ہیں یا وہ صورت مراد ہے جب مالداروں کے پاس بیٹھنے سے ناشکری کا جذبہ پیدا ہو کہ یہ تو اتنا بڑا مالدار ہے میں غریب ہوں، اور نہ حضرت سیمان علیہ السلام حضرت عثمان غنی اور امام اعظم ابو حنیفہ بڑے دولت مند تھے انکی محبت کیساتھ تھی۔

۴۔ یہ انتہائی قناعت کی تعلیم ہے کہ پیوند والے کپڑے پہننے میں عار نہ ہو۔ حضرت انس فرماتے ہیں کہ میں نے حضرت عمر رضی اللہ عنہ کو دیکھا کہ جب کہ آپ خلیفۃ المسلمین تھے کہ آپ کے کپڑوں میں اوپر تلے تین پیوند ایک جگہ پر لگے تھے کہ پیوند گل گیا تو اور لگا دیا۔

حدیث ۲۳: ابو داؤد نے ابو امامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: کیا سنتے نہیں ہو، کیا سنتے نہیں ہو؟ ردی حالت میں ہونا (یعنی لباس کی سادگی) ایمان سے ہے، ردی حالت میں ہونا ایمان سے ہے۔ (25)

حضرت عمرؓ نے اپنی خلافت کے زمانہ میں خطبہ دیا اس وقت آپ کے تہبند شریف میں بارہ بیوند تھے۔ (مرقات) مقصد یہ ہی ہے کہ بیوند والے کپڑے کے پہننے میں عار نہ ہونی چاہیے لہذا یہ حدیث ان احادیث کے خلاف نہیں جہاں ارشاد ہے کہ رب کی نعمت کا اثر تم پر ظاہر ہو یا فرمایا کہ نیا کپڑا پاؤ تو پرانا خیرات کرو۔ ابن عساکر نے حضرت ابو ایوب انصاری سے روایت کی کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم گدھے کی سواری فرما لیتے تھے، اپنا نصین پا خودی لیتے تھے، اپنی قمیض میں بیوند لگا لیتے تھے اور پہن لیتے تھے اور فرماتے تھے کہ جو میری سنت سے نفرت کرے وہ میری جماعت سے نہیں۔ (مرقات)

۵۔ ان شاء اللہ حدیث منکر کے معنی، اس کی تعریف اور احادیث کے اقسام و احکام آخر کتاب میں عرض کیے جائیں گے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۹۰)

(25) سنن ابی داؤد، کتاب الترجل، باب النہی عن کثیر من الارقاء، الحدیث: ۴۱۶۱، ج ۴، ص ۱۰۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ابو امامہ دو ہیں اور دونوں صحابی ہیں: ایک ابو امامہ باہلی جو قبیلہ بنی بابلہ سے ہیں، دوسرے وہ جن کا نام ایاس ابن ثعلبہ ہے، یہ انصاری ہیں، یہاں یہ دوسرے ابو امامہ مراد ہیں، آپ کے حالات معلوم نہ ہو سکے رضی اللہ عنہم اجمعین۔

۲۔ اس کا مطلب بھی وہ ہی ہے جو ابھی بیان کیا گیا کہ معمولی لباس پھٹے پرانے کپڑے پہننے سے شرم و عار نہ ہونا سمجھی پہن بھی بیجا مؤمن متقی کی عداوت ہے، ہمیشہ علیٰ درجہ کے لباس پہننے کا عادی بن جانا کہ معمولی لباس پہننے سے شرم آئے طریقہ متکبرین کا ہے۔ یہاں ایمان سے مراد کمال ایمان ہے، اس حدیث کو احمد، ابن ماجہ اور حاکم نے ابو امامہ حارثی سے روایت کیا۔ (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۹۱)

باوجود قدرت عاجزی کی بناء پر عمدہ لباس نہ پہننے کا ثواب

اللہ عزوجل فرماتا ہے،

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿۸۳﴾

ترجمہ کنزالایمان: یہ آخرت کا گھر ہم ان کے لئے کرتے ہیں جو زمین میں تکبر نہیں چاہتے اور نہ فساد اور عاقبت پر ہیزگاروں ہی کی ہے۔

حضرت سیدنا ابومامہؓ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ ایک مرتبہ صحابہ کرام علیہم الرضوان نے سید المہدیین، رحمۃ اللہ علیہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے سامنے دنیا کا تذکرہ کیا تو رسول اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، کیا تم نہیں سنتے؟ کیا تم نہیں سنتے؟ ←

لباس شہرت سے مراد یہ ہے کہ تکبر کے طور پر اچھے کپڑے پہنے یا جو شخص درویش نہ ہو، وہ ایسے کپڑے پہنے جس سے لوگ اسے درویش سمجھیں یا عالم نہ ہو اور علما کے سے کپڑے پہن کر لوگوں کے سامنے اپنا عالم ہونا جاتا ہے یعنی کپڑے سے مقصود کسی خوبی کا اظہار ہو۔

حدیث ۲۵: ابو داؤد نے ایک صحابی سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو باوجود

جس نے شہرت کا لباس پہنا اس کو اللہ تعالیٰ بھی ایسا ہی لباس پہنائے گا، اور ابن ماجہ میں ذلت کا لباس اور ابو داؤد کی ایک روایت میں پھر جہنم کی آگ میں جلا یا جائے گا کے الفاظ ہیں۔ (ت) (۳ سنن ابی داؤد کتاب اللباس باب فی لبس الشہرة آفتاب عالم پریس لاہور ۲/۲۰۲) (۴ سنن ابن ماجہ کتاب اللباس باب من لبس شہرة من الثیاب ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۶۶) (۱ سنن ابی داؤد کتاب اللباس باب فی لبس الشہرة آفتاب عالم پریس لاہور ۲/۲۰۲)

جو شہرت کے کپڑے پہنے گا اللہ تعالیٰ اسے روز قیامت ویسا ہی لباس شہرت پہنائے گا جس سے عرصات محشر میں معاذ اللہ ذلت و تفتیح ہو پھر اُس میں آگ لگا کر بھڑکادی جائے گی والعیاذ باللہ تعالیٰ۔

فی رد المحتار عن الدر المنہجی نہی عن الشہر تین وهو ما کان فی نہایة النفاسة او الخساسة ۲ اقول: ولا یختص بہا ہل لو کان بینہما و کان علی ہیأة عجیبة غریبة توجب الشہرة و شغوص الابصار کان لباس شہرة قطعاً۔ (۲ رد المحتار کتاب الحظر والایاد فصل فی اللبس دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/۲۲۳)

رد المحتار میں الدر المنہجی سے منقول ہے کہ دو شہرتوں سے منع فرمایا، ایک حد سے زیادہ نفاست اور دوسری حد سے زیادہ رسوائی سے، اھ، اقول: (میں کہتا ہوں) ان دونوں سے خاص نہیں بلکہ عجیب و غریب حالت بنانا جو شہرت کا باعث ہو اور لوگوں کے لئے نظارہ بنے وہ قطعاً سب شہرت کا لباس ہے۔ (ت) (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳ ص ۶۱۹ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جو ایسا لباس پہنے جس سے لوگ اسے امیر جانیں یا ایسا لباس پہنے جس سے اسے لوگ بڑا تارک الدنیا فقیر صوفی دلی سمجھیں یہ دونوں قسم کے لباس شہرت کے لباس ہیں، بعض لوگوں کو ناٹ پہنے دیکھا گیا یہ بھی شہرت کا لباس ہے۔ غرضیکہ جس لباس میں یہ نیت ہو کہ اس کی طرف لوگوں کی انگلیاں اٹھیں، لوگ اس کی عزت کریں خواہ امیر سمجھ کر خواہ ولی سمجھ کر وہ اس کی شہرت ہے، عزت اللہ رسول کی ہے جسے چاہیں دیں۔ مرقات نے فرمایا کہ مسخرہ پن کا لباس پہنتا جس سے لوگ نہیں یہ بھی لباس شہرت ہے۔

۲۔ قیامت میں سب لوگ ننگے اٹھیں گے پھر میدان محشر میں سب کی تن پوشی کی جائے گی، شہرت کا لباس پہننے والوں کو وہ لباس ملے گا جس سے انکی ذلت ظاہر ہو اس کے عکس کا حکم بھی برعکس ہی ہوگا کہ جو شخص سادہ لباس پہنے باوجود قدرت کے لباس قاخر نہ پہنے ان شاء اللہ اسے قیامت میں لباس عزت ملے گا بشرطیہ نیت صادق ہو (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲۳ ص ۱۹۲)

قدرت اچھے کپڑے پہننا تواضع کے طور پر چھوڑ دے، اللہ تعالیٰ اس کو کرامت کا حلقہ پہنائے گا۔ (27)

حدیث ۲۶: امام احمد و نسائی جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، کہتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہمارے یہاں تشریف لائے، ایک شخص کو پراگندہ سر دیکھا، جس کے بال بکھرے ہوئے ہیں، فرمایا: کیا اس کو ایسی چیز نہیں ملتی جس سے بالوں کو اکٹھا کر لے اور دوسرے شخص کو میلے کپڑے پہنے ہوئے دیکھا فرمایا: کیا اسے ایسی چیز نہیں ملتی، جس سے کپڑے دھو لے۔ (28)

حدیث ۲۷: ترمذی نے عبد اللہ ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ کو یہ بات پسند ہے کہ اس کی نعمت کا اثر بندہ پر ظاہر ہو۔ (29)

(27) سنن ابی داود، کتاب الادب، باب من کظم غیظا، الحدیث: ۴۷۸۷، ج ۴، ص ۳۲۶۔

(28) سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب فی الخلقان و فی غسل الثوب، الحدیث: ۴۰۶۲، ج ۴، ص ۷۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم اپنے غلاموں خادموں سے ملاقات کے لیے انکے گھروں پر کبھی تشریف لے جاتے تھے اس میں ان کی عزت افزائی ہوتی تھی۔ زائر فرما کر یہ بتایا کہ یہ تشریف کسی کی بیمار پرسی یا شادی وغیرہ کی تقریب کے سلسلہ میں نہ تھی صرف ہم کو نوازنے کے لیے تھی۔

۲۔ یا ہمارے گھر میں یا راستہ میں ایسے شخص کو دیکھا۔

۳۔ یعنی کہا اس کے پاس تولہ و دتولہ تیل بھی نہیں کہ بالوں میں لگا کر کٹھی کرے جس سے اس کے بال بکھریں نہیں بلکہ مجتمع ہو جائیں۔

۴۔ یعنی کیا اسے تھوڑا سا صابن میسر نہیں جس سے کپڑے صاف کرے۔ خیال رہے کہ عزت اور تکبر میں فرق ہے تکبر کے لیے اچھا لباس

پہننا ممنوع ہے اس کے لیے ارشاد ہوا البذاذۃ من الایمان اور عورت کے لیے اعلیٰ لباس پہننا اچھا ہے جس کے متعلق یہاں یہ ارشاد ہوا ہذا

دونوں حدیثیں صحیح ہیں۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲۳، ص ۱۹۲)

(29) سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء ان اللہ تعالیٰ يحب ان یری اثر نعمتہ علی عبیدہ، الحدیث: ۲۸۲۸، ج ۴، ص ۷۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جسے رب تعالیٰ نے مال دیا ہے تو وہ بخل کی بنا پر بہت ہلکے کپڑے نہ پہنے بلکہ کبھی اچھے کپڑے پہنے تاکہ اللہ تعالیٰ کی نعمت کا اظہار ہو

اور فقراء اسے غنی سمجھ کر اس سے کچھ مانگ بھی سکیں، اگر اللہ نے عالم دین بنایا ہے تو عالمانہ لباس پہنے تاکہ حاجتمند لوگ اس سے مسئلے پوچھ

سکیں، رب کی نعمت کا اظہار بھی شکر ہے اس کی نعمت چھپانا کفران ہے۔ یہ حدیث اس کے خلاف نہیں کہ معمولی کپڑے پہننا ایمان سے

ہے۔ وہاں تکبر تکلف کی ممانعت تھی یہاں شکر اور اظہار نعمت الہی کا حکم ہے، ایک ہی چیز ایک نیت سے بری ہوتی ہے دوسری نیت سے اچھی۔

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۵)

حدیث ۲۸: امام احمد و نسائی نے ابوالاحوص سے انھوں نے اپنے والد سے روایت کی، لہتے ہیں: میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا اور میرے کپڑے گھٹیا تھے۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا: کیا تمھارے پاس مال نہیں ہے؟ میں نے عرض کی، ہاں ہے۔ فرمایا: کس قسم کا مال ہے؟ میں نے عرض کی، خدا کا دیا ہوا ہر قسم کا مال ہے۔ اونٹ، گائے، بکریاں، گھوڑے، غلام۔ فرمایا: جب خدا نے تمھیں مال دیا ہے تو اس کی نعمت و کرامت کا اثر تم پر دکھائی دینا چاہیے۔ (30)

حدیث ۲۹: صحیح بخاری و مسلم میں حضرت عمرو انس و ابن زبیر و ابوامامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے مروی، نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو دنیا میں ریشم پہنے گا، وہ آخرت میں نہیں پہنے گا۔ (31)

(30) السنن للامام احمد بن حنبل، مسند الکلبیین، حدیث مالک بن فضالہ ابی الاحوص، الحدیث: ۱۵۸۸۸، ج ۵، ص ۳۸۳۔

ومشکاۃ المصابیح، کتاب اللباس، الحدیث: ۴۳۵۲، ج ۲، ص ۴۷۵۔

حکیم امامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ تابعین میں سے ہیں، آپ کا نام عوف ابن مالک ابن نضر ہے، آپ نے اپنے والد اور ابن مسعود اور ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ عنہم صحابہ سے ملاقات کی، آپ سے خواجہ حسن بھری ابو اسحاق اور عطاء ابن سائب نے احادیث روایت کیں۔ آپ کے والد مالک ابن نضر صحابی ہیں۔

۲۔ جو میری مالی حیثیت سے کم تھے مجھے خدا تعالیٰ نے بہت غنی کیا ہوا تھا مگر کپڑے پھنے پرانے کم قیمت زیب تن کیے ہوئے تھے۔
۳۔ یعنی عرب میں جس مال کی بہت قدر ہوتی ہے جانور اور غلام ان میں سے اللہ نے مجھے ہر مال دیا ہے۔ عرب میں جانوروں کی ملکیت کو بڑی عزت کی نگاہ سے دیکھا جاتا تھا جیسے آج کل مرے اور شہری جائیداد والے کی بڑی عزت ہوتی ہے۔

۴۔ یعنی قیمتی اور صاف کپڑے پہننا کہ لوگ سمجھیں کہ تم پر اللہ کا فضل ہے یہ بھی اللہ کا شکر یہ ہے۔ مطلب وہ ہی ہے کہ شکر کے لیے اچھا لباس پہنے فخر کے لیے نہ پہنے، کبھی اچھا لباس پہنے شکر کے لیے کبھی معمولی پہنے انکسار کے طور پر۔ اپنے کو بڑھے کھانے بڑھے لباس کا عادی نہ بنائے کہ کبھی معمولی کھاپی نہ سکے۔

۵۔ یعنی ان دونوں روایتوں کے الفاظ مختلف ہیں مضمون ایک ہی ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۹۷)

(31) صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب لبس الحریر... إلخ، الحدیث: ۵۸۳۳، ج ۴، ص ۵۹۔

بلا عذر شرعی ریشم پہننا

امیر المؤمنین حضرت سیدنا عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ رسول بے مثال، بی بی آمنہ کے لال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عیثان ہے: ریشم مت پہنا کرو کیونکہ جو دنیا میں ریشم پہنے گا وہ آخرت میں نہ پہن سکے گا۔

(صحیح مسلم، کتاب اللباس، والزیئۃ، باب تحریم لبس الحریر، الحدیث: ۵۴۱۰، ص ۱۰۳۹) ←

نسائی شریف میں یہ اضافہ ہے کہ حضرت سیدنا عبداللہ بن زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ ارشاد فرماتے ہیں: جو دنیا میں ریشم پہنے گا وہ جنت میں داخل نہ ہوگا پھر آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے یہ آیت کریمہ تلاوت فرمائی۔

وَلَبَّاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿23﴾

ترجمہ کنز الایمان: اور وہاں ان کی پوشاک ریشم ہے۔ (پ 17، ا ج 23)

(السنن الکبریٰ للنسائی، سورۃ الحج، باب قولہ تعالیٰ ولباسہم فیہا حریر الحدیث: ۱۱۳۳۳، ج ۶ ص ۴۱۱)
خاتم الخیرین، رحمۃ اللہ علیہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عالیشان ہے: ریشم دینی پہنتا ہے جس کا کوئی حصہ نہیں۔ بخاری شریف کی روایت میں یہ اضافہ ہے: جس کا آخرت میں کوئی حصہ نہیں۔

(صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب لبس الحریر للرجال۔۔۔۔۔ الخ، الحدیث: ۵۸۳۵، ص ۴۹۷)
سیدنا ابی بنی ہاشم، رحمۃ اللہ علیہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عالیشان ہے: جو دنیا میں ریشم پہنے گا وہ آخرت میں نہ پہن سکے گا اگرچہ وہ جنت میں داخل بھی ہو جائے تو اہل جنت تو ریشم پہنیں گے مگر وہ نہ پہن سکے گا۔

(صحیح ابن حبان، کتاب اللباس وآداب الحدیث: ۵۳۱۳، ج ۷ ص ۳۹۷)
رسول بے مثال، بی بی آمنہ کے لالہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عالیشان ہے: جس نے دنیا میں ریشم پہنا آخرت میں نہ پہن سکے گا۔ (صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب لبس الحریر للرجال۔۔۔۔۔ الخ، الحدیث: ۵۸۳۴، ص ۴۹۷)

امیر المؤمنین حضرت سیدنا علی بن ابی طالب رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ میں نے شفیع امیرین، امیر الغریبین، سراج السالکین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو دیکھا کہ آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ریشم کو داہیں ہاتھ میں اور سونے کو بائیں ہاتھ میں پکڑ کر ارشاد فرمایا: یہ دونوں چیزیں میری امت کے مردوں پر حرام ہیں۔

(سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی الحریر للنساء، الحدیث: ۴۰۵۷، ص ۱۵۱۹)
محیی رب العالمین، جناب صادق دامن عزوجل صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عالیشان ہے: جس نے دنیا میں ریشم پہنا وہ آخرت میں نہ پہن سکے گا، جس نے دنیا میں شراب پی وہ آخرت میں نہ پی سکے گا اور جس نے دنیا میں سونے چاندی کے برتنوں میں پانی پیادہ آخرت میں ان کے ذریعے نہ پی سکے گا۔ پھر ارشاد فرمایا: اہل جنت کا لباس ریشم، اہل جنت کا مشروب شراب طہور اور اہل جنت کے برتن سونے کے ہیں۔ (المستدرک، کتاب الاشریہ، باب من لبس الحریر فی الدنیا۔۔۔۔۔ الخ، الحدیث: ۲۹۸، ج ۵ ص ۱۹۵)

حضرت سیدنا ابن زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو خطبہ میں یہ ارشاد فرماتے ہوئے سنا گیا: اپنی عورتوں کو ریشم کا لباس نہ پہناؤ کیونکہ میں نے امیر المؤمنین حضرت سیدنا عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو یہ ارشاد فرماتے ہوئے سنا ہے کہ رحمت کو نہیں، ہم غریبوں کے دل کے چین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عالیشان ہے: ریشم مت پہنا کرو کیونکہ جو دنیا میں ریشم پہنے گا وہ آخرت میں نہ پہن سکے گا۔

(صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب تحریم لبس الحریر۔۔۔۔۔ الخ، الحدیث: ۵۴۱۰، ص ۱۰۴۹)

حدیث ۳۰: صحیح بخاری و مسلم میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

نور کے پیکر، تمام نبیوں کے سرور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عالیشان ہے: دیا میں ریشم وہی پہنتا ہے جسے آخرت میں ریشم پہننے کی اُسید نہیں ہوتی۔ (المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند ابی ہریرۃ، الحدیث ۸۳۶۳، ج ۳، ص ۲۲۱)

حضرت سیدنا حسن رضی اللہ تعالیٰ عنہ ارشاد فرماتے ہیں: ان لوگوں کا کیا حال ہے کہ اپنے نبی علیہ السلام کی طرف سے اتنی سخت وعید سے پہنچنے کے باوجود بھی وہ ریشم کو اپنے لباس یا گھروں میں استعمال کرتے ہیں۔ (الرجع السابق)

دو جہاں کے تاجور، سلطان بحر و بر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عالیشان ہے: اس اُمت میں ایک قوم کھانے پینے اور ہولعب میں مشغول ہو کر رات گزارے گی، پھر صبح اس حال میں کرے گی کہ ان کی شکلیں بگڑ کر خنزیر اور بندر ہو چکی ہوں گی اور ان کے ساتھ دھنسانے اور پتھر برسانے کا معاملہ ہو گا یہاں تک کہ لوگ صبح کریں گے تو کہیں گے: آج رات فلاں قوم دھنسا دی گئی، آج رات فلاں کے گھر کو دھنسا دیا گیا۔ اور ان پر آسمان سے پتھر برسائے جائیں گے جیسا کہ قوم لوط کے قبیلوں اور گھروں پر برسائے گئے اور ان کی طرف سخت ہوا بھیجی جائے گی جیسا کہ قوم عاد کے قبیلوں اور گھروں کی طرف بھیجی گئی، یہ ان کے شراب پینے، ریشم پہننے، گانے والی عورتیں اپنانے، سود کھانے اور قطع رحمی کی وجہ سے ہو گا۔

(الترغیب والترہیب، کتاب الحدود، الترہیب من شرب الخمر۔۔۔۔۔ الخ، الحدیث ۳۵۹۴، ج ۳، ص ۱۹۹)

سرکار والاخبار، ہم بے کسوں کے مددگار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عالیشان ہے: میری اُمت میں ایسی قومیں ضرور ہوں گی جو ریشم کو حلال جائیں گی ان میں سے کچھ لوگ قیامت تک کے لئے خنزیر اور بندر بنا دیے جائیں گے۔

(سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب ما جاء فی الخمر، الحدیث ۴۰۳۹، ج ۴، ص ۱۵۱۸)

شفیع روز شمار، دو عالم کے مالک و مختار، باذن پروردگار عزوجل و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: جب میری اُمت پانچ چیزوں کو حلال سمجھنے لگے گی تو ہلاکت میں مبتلا ہو جائے گی (۱) ایک دوسرے پر لعنت کرنا (۲) لوگوں کا شراب پینا (۳) ریشم کا لباس پہننا (۴) گانے والی عورتیں رکھنا اور (۵) مردوں کا مردوں پر اور عورتوں کا عورتوں پر اکتفاء کرنا۔

(مجمع الزوائد، کتاب الفتن، باب ثانی فی امارات الساعة، الحدیث ۲۴۷۹، ج ۷، ص ۶۲۰)

حضرت سیدنا سعد رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ایک شخص کے پاس حاضر ہونے کی اجازت چاہی وہ ریشم کے تصویر والے گدے سے ٹیک لگائے ہوئے تھا، پس اس نے حکم فوراً ہٹا دیا اور آپ سے کہنے لگا: میں نے یہ آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خاطر ہٹایا ہے۔ تو آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ارشاد فرمایا: تُو کتنا اچھا آدمی ہے اگر تو ان لوگوں میں سے نہیں جن کے بارے میں اللہ عزوجل نے یہ ارشاد فرمایا ہے:

أَذْهَبْتُكُمْ طَيِّبَتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا

ترجمہ: کنز الایمان: ان سے فرمایا جائے گا تم اپنے حصہ کی پاک چیزیں اپنی دنیا ہی کی زندگی میں فنا کر چکے۔ (پ ۲۶، الاحقاف: ۲۰) ←

نے فرمایا: جو دنیا میں ریشم پہنے گا، اس کے لیے آخرت میں کوئی حصہ نہیں ہے۔ (32)

حدیث ۳۱: صحیح بخاری و مسلم میں حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ریشم پہننے کی ممانعت فرمائی، مگر اتنا۔ اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے دو انگلیاں بیچ والی اور کلمہ کی انگلیوں کو ماکر اشارہ کیا۔ (33)

صحیح مسلم کی ایک روایت میں ہے کہ حضرت عمر (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) نے خطبہ میں فرمایا: رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ریشم کی ممانعت فرمائی ہے، مگر دو ۲ یا تین یا چار انگلیوں کی برابر یعنی کسی کپڑے میں اتنی چوڑی ریشم کی گوٹ لگائی جاسکتی ہے۔ (34)

حدیث ۳۲: صحیح مسلم میں اسماء بنت ابی بکر رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی ہے، انھوں نے ایک کسروانی جبہ

خدا عزوجل کی قسم! مجھے اس کے ساتھ ٹیک لگانے سے دیکتے ہوئے انگاروں پر ڈھننا زیادہ پسند ہے۔

(الترغیب والترہیب، کتاب اللباس والزینۃ، باب ترہیب الرجال من لبس۔۔۔۔۔ الخ، الحدیث ۳۱۶۱، ج ۳، ص ۶۷)

حسن اخلاق کے پیکر، نبیوں کے تاجور، محبوب رب اکبر عزوجل صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ریشم کی جیب والا ایک جبہ دیکھ تو ارشاد فرمایا: یہ قیامت کے دن آگ کا طوق ہے۔ (المعجم الاوسط، الحدیث ۸۰۰۰، ج ۶، ص ۶۲)۔

یہ حکم کناروں سے ریشم والے جبے کے علاوہ کا ہے اور اس کی دلیل یہ ہے کہ سرکار ابد قرار، شافع روز شمار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا ایک جبہ تھا جو کناروں سے ریشم کا تھا۔ (تخصیص العیر، کتاب صلاة العیدین، الحدیث: ۶۷۹، الجزء ۲، ص ۸۱)

شاہ ابرار، ہم غریبوں کے غمخوار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عالیشان ہے: جس نے ریشمی لباس پہنا اللہ عزوجل اسے بروئے قیامت ایک دن آگ یا آگ کا لباس پہنائے گا۔ (المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۷۰/۱۷۱، ج ۲۴، ص ۶۵)

ایک اور روایت میں ہے کہ رسول انور، صاحب کوثر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عالیشان ہے: جس نے دین میں ریشم کا لباس پہنا اللہ عزوجل اسے جہنم میں ذلت کا لباس یا جہنم کا لباس پہنائے گا۔

(مجمع الزوائد، کتاب اللباس، باب ما جاء فی الحریر والذهب، الحدیث: ۸۶۴۴، ج ۵، ص ۲۴۹)

نبی مکرم، نور مجسم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان معظم ہے: جس نے ریشمی لباس پہنا اللہ عزوجل اسے پورے ایک دن آگ کا لباس پہنائے گا جو تہہ رے دنوں جیسا نہ ہو گا بلکہ اللہ عزوجل کے یام بہت طویل ہیں۔

(مجمع الزوائد، کتاب اللباس، باب ما جاء فی الحریر والذهب، الحدیث: ۸۶۴۶، ج ۵، ص ۲۵۰)

(32) المرجع السابق، الحدیث: ۵۸۳۵، ج ۴، ص ۵۹۔

(33) صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب تحریم استعمال اثناء الذهب، الحدیث: ۱۲۔ (۲۰۶۹)، ص ۱۱۳۸۔

(34) المرجع السابق، الحدیث: ۱۵۔ (۲۰۶۹)، ص ۱۱۳۹۔

نکال، جس کا گریبان دیباچ کا تھا اور دونوں چاکوں میں دیباچ کی گوٹ لگی ہوئی تھی اور یہ کہا کہ یہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا جبہ ہے جو حضرت عائشہ کے پاس تھا۔ جب حضرت عائشہ کا انتقال ہو گیا میں نے لے لیا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) اسے پہنا کرتے تھے اور ہم اسے دھو کر بیماروں کو بغرض شفا پلاتے ہیں۔ (35)

(35) صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب تحریم استعمال لثام الذهب، الحدیث: ۱۰۰۔ (۲۰۶۹)، ص ۱۱۳۔

ومشکوۃ المصابیح، کتاب اللباس، الحدیث: ۴۳۲۵، ج ۲، ص ۷۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ طیلسہ جمع ہے طیلسان کی، معنی چادر، یہ لفظ فارسی میں تالسان تھا عربی میں طیلسان کیا گیا، بعض نے کہا کہ جمع طیس کی ہے، کسروانی منوی ہے کسری کی طرف جو خسرو کا معرب ہے۔ خسرو فارسی میں بادشاہ کو کہتے ہیں یہ کپڑا خالص ادنی ہوتا ہے۔

۲۔ یعنی اس جبہ شریف کے گریبان میں ریشم کی پٹی تھی اور اس کے اگلے پچھلے دونوں دامنوں میں ریشمی کپڑے کے ٹکڑے لگے تھے، چونکہ یہ ریشم چار انگل سے زائد نہ تھا لہذا حلال تھا۔ یہاں اشعۃ المقات نے فرمایا کہ کنارہ و حاشیہ کو کفہ کہتے ہیں، لمبائی میں ہو تو کفہ کاف ضمہ سے اور اگر گولائی میں ہو تو کفہ کاف کے کسرہ سے ترازو کے پڑے کو کفہ کو کسر کاف کہا جاتا ہے۔

۳۔ جسے حضور حیات شریف میں پہنا کرتے تھے لوگ اس کی زیارت کرنے آتے تھے آپ یہ فرما کر زیارت کراتی تھیں۔ معلوم ہوا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے لباس کی زیارت کرنا سنت صحابہ ہے جیسے آج بال شریف کی زیارت کرائی جاتی ہے، اس کا ماخذ یہ حدیث ہے۔

۴۔ حضور انور نے یہ جبہ جناب عائشہ صدیقہ کو اپنی زندگی شریف میں بہہ فرما دیا تھا، حضرت اسماء نے یہ جبہ حضرت عائشہ صدیقہ کی میراث میں لیا کیونکہ آپ ہی ان کی وارث تھیں کیونکہ عائشہ صدیقہ کی حیات شریف میں ابو بکر صدیق کی ساری اولاد وفات پا چکی تھی سوا حضرت اسماء کے اس لیے آپ نے ہی بہن ہونے کی وجہ سے بطور میراث یہ جبہ لیا۔ (اشعۃ و مرقات)

۵۔ یعنی یہ جبہ دھو کر تبرک کے لیے پیتے پلاتے ہیں۔

۶۔ اس جملہ کے دو مطلب ہو سکتے ہیں: ایک یہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے قمیض کے خسالہ دھوون سے بیماروں کو شفا حاصل کرتے تھے کہ اسے وہ پانی پلاتے تھے اس سے چھینٹا دیتے تھے۔ دوسرے یہ کہ ہم اسے دھوتے تھے برکت کے طور پر پینے کے لیے در س قمیض کو باندھ کر دکھا کر سینہ پر رکھ کر بیماروں کی شفا حاصل کرتے تھے یعنی شفاء حاصل کرنا کئی طریق سے تھا۔ (مرقات) جیسے حضرت یوسف علیہ السلام نے فرمایا تھا کہ میری قمیض والد کے چہرے پر لگا دو وہ اکھبارے ہو جائیں گے۔ معلوم ہوا کہ بزرگوں کے تبرکات کی زیارت کرنا ان کا لباس دھو کر بیماروں کو پلانا سنت صحابہ ہے ان میں شفاء ہے۔ آپ زمرم حضرت اسماعیل علیہ السلام کی لڑکی سے پیدا ہو تمام بیماریوں کی شفاء ہے۔ حضرت ایوب علیہ السلام نے فرمایا گیا: "أَرْكَضُ بِرُجْلِكَ هَذَا مُغْتَسِلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ" اپنا پاؤں گرو اس سے پانی کے چشمے پیدا ہوں گے اس کا پینا نہانا شفاء ہے۔ مرقات نے یہاں فرمایا کہ اس جبہ شریف کو سر پر رکھنا، آنکھوں سے گانا، ہونٹوں سے چومنا اس پر ہاتھ پھیرنا شفاء ہے۔ (مرقات) یہ معلوم ہوا کہ جبہ پہننا بھی سنت ہے اور گریبان یا چولی اگر ریشم کی ہو تو چار انگل تک جائز ہے۔

حدیث ۳۳: ترمذی و نسائی نے ابھی سے اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: سونا اور ریشم میری امت کی عورتوں کے لیے حلال ہے اور مردوں پر حرام۔ (36)

حدیث ۳۴: صحیح مسلم میں عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے مجھے کسم کے رنگے ہوئے کپڑے پہنے ہوئے دیکھا، فرمایا: یہ کافروں کے کپڑے ہیں، انھیں تم مت پہنو۔ میں نے کہا، انھیں دھو ڈالوں۔ فرمایا کہ جلا دو۔ (37)

حدیث ۳۵: ترمذی ابوالخیر سے وہ اپنے والد سے روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے درندہ کی کھال بچھانے سے منع فرمایا ہے۔ (38)

حدیث ۳۶: ترمذی نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جب قمیص پہنتے تو دھننے سے شروع کرتے۔ (39)

(36) سنن نسائی، کتاب الزینۃ من السنن، باب تحریم الذہب علی الرجال، الحدیث: ۵۱۵۸، ص ۷۴۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اُحل صیفہ واحد غائب ماضی مجہول ہے اُحل واحد متکلم مضارع نہیں کیونکہ آگے آرہا ہے حرم یہ ہی صیفہ ماضی مجہول یعنی میری مت کی عورتوں پر ریشم پہننا حلال کیا گیا خواہ چھوٹی بچیاں ہوں یا بالغہ جوان سب کے لیے حلال ہے، اثبات سب کو شامل ہے۔

۲۔ ذکور ہر مرد کو شامل ہے بچہ ہو یا جوان سب پر ریشم پہننا حرام ہے، ہاں چھوٹے بچہ کو پہنانے والے گنہگار ہوں گے بڑا مرد خود گنہگار ہوگا۔
(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۶۹)

(37) صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب النہی عن لبس الرجل الثوب المصفر، الحدیث: ۲۸، ۲۷۔ (۲۰۷۷)، ص ۱۱۵۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ کسم ایک پھل ہوتا ہے جو سرخ رنگ دیتا ہے اور خالص سرخ رنگ مرد کے لئے ممنوع ہے عورتوں کے لیے جائز ہے۔ بعض شارحین نے فرمایا کہ اگر بنا ہو کپڑا سرخ رنگ لیا جائے تو ممنوع ہے اور اگر سرخ سوت سے بنا جائے تو جائز ہے، بعض کے نزدیک مطلقاً ممنوع ہے، یہ حدیث ن حضرات کی دلیل ہے جو یہ تفصیل کرتے ہیں، اس کی تحقیق کتب فقہ میں ملاحظہ کرو۔

۲۔ یعنی کفار حرام و حلال لباس میں یوں ہی مردانہ زنانہ لباس میں فرق نہیں کرتے جیسا کپڑا چاہتے ہیں پہن لیتے ہیں۔ چنانچہ سرخ کپڑا عورتوں کا لباس ہے مگر ان کے مرد بھی پہنتے پھرتے ہیں تم ایسا نہ کرو تم مردانہ زنانہ جوڑے میں فرق کرو۔ (ازمرقات) معلوم ہوا کہ مسلمانوں کو کفار کے لباس سے اور مردوں کو عورتوں کے لباس سے بچنا چاہیے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۷۱)

(38) سنن ترمذی، کتاب اللباس، باب ما جاء فی النہی عن جلود البہائم، الحدیث: ۱۷۷۷، ج ۳، ص ۲۹۹۔

(39) المرجع السابق، باب ما جاء فی القصص، الحدیث: ۱۷۷۲، ج ۳، ص ۲۹۷۔

حدیث ۳۷: ترمذی و ابو داؤد نے ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جب نیا کپڑا پہنتے، اُس کا نام لیتے عمامہ یا قمیص یا چادر پھر یہ دعا پڑھتے: اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا كَسَوْتَنِيْهِ اَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا خَيْرَ مَا صَنَعَ لَهٗ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعَ لَهٗ. (40)

حدیث ۳۸: ابو داؤد نے معاذ بن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص کپڑا پہنے اور یہ پڑھے: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ كَسَانِيْ هٰذَا وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِّمَّنِيْ وَلَا قُوَّةَ (41) تو اُس کے اگلے گناہ بخش دیے جائیں گے۔ (42)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جب قمیص پہنتے تو قمیص کا داہنہ حصے پہلے پہنتے بایاں حصہ بعد میں اس طرح کہ اولاً داہنا ہاتھ شریف داہنی آستین میں ڈالتے پھر بایاں اور اتارنے میں اس کے برعکس۔ میاں جمع ہے میمنہ کی جس کا مادہ یمن یا یمین ہے۔ قمیص کا ہر داہنا حصہ یمین ہے، آستین دامن کلی وغیرہ۔ اس لیے میاں جمع ارشاد ہوا۔ اور ہو سکتا ہے کہ میامنہ کی ضمیر حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف راجع ہو یعنی اپنے دائیں طرف سے شروع فرماتے تھے تب میاں کو جمع فرمانا تعظیم کے لیے ہے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۷۵)

(40) المرجع السابق، باب ما یقول اذا لبس ثوبا جدیداً، الحدیث: ۱۷۷۳، ج ۳، ص ۲۹۷۔

ترجمہ: اے اللہ عزوجل! تیرا شکر ہے جیسے تو نے مجھے یہ (کپڑا) پہنایا، ویسے ہی میں تجھ سے اس کی بھلائی اور جس مقصد کے لیے یہ بنایا گیا، اس کی بھلائی کا سوال کرتا ہوں اور اس کے شر اور جس مقصد کے لیے یہ بنایا گیا ہے، اس کے شر سے تیری پناہ چاہتا ہوں۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حضور النور حتی الامکان نیا کپڑا جمعہ کو پہنتے تھے اور نیا کپڑا پہن کر پرانا خیرات فرمادیتے تھے۔ (مرقات) پھر پہلے اس کا نام معین فرماتے کہ یہ چادر اوڑھتا ہوں یا قمیص پہنتا ہوں یا تہبند پھر اسے زیب تن فرماتے، ان کی ہر ہر ادا پر کروڑوں درود۔

۲۔ کپڑے کی خیر یہ ہے کہ کپڑا پہن کر نیک اعمال کی توفیق ملے اور کپڑے کی شر یہ ہے کہ کپڑے پہن کر گنہ کرے، کپڑے پہن کر نماز پڑھنا خیر ہے اور کپڑے پہن کر چوری کرنا اس کی شر ہے اور بندہ اللہ تعالیٰ ہی کے کوم سے خیر کر سکتا ہے شر سے بچ سکتا ہے، نیز کپڑا پہن کر حمد و شکر کرنا کپڑے کی خیر ہے اس پر نذر کرنا اس کپڑے کی شر۔

۳۔ یہ حدیث احمد، نسائی، ابن حبان نے اور حاکم نے مستدرک میں ان ہی راوی سے روایت کی۔ شرح سنن بروایت حضرت ابن عمر ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت علی کو سفید قمیص پہنے دیکھا تو فرمایا کہ نئی ہے یا مدلی ہوئی عرض کیا نئی، فرمایا البس جدیداً عیش حمیہ و مت شہیداً یعنی نیا لباس پہنوا مجھے جو شہید مروی رضی اللہ عنہ۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۸۸)

(41) تمام ترفیض اللہ تعالیٰ کے لیے ہیں جس نے مجھے یہ (لباس) پہنایا اور میری طاقت و قوت کے بغیر یہ عطا فرمایا۔

(42) سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب ما یقول اذا لبس ثوبا جدیداً، الحدیث: ۴۰۲۳، ج ۴، ص ۵۹۔

حدیث ۳۹: امام احمد نے ابوسلمہ سے روایت کی، کہ حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے تین، چار، پانچ اور چھ کپڑے پہنے اور فرمایا: اَسْ كُوْا بِسُنَّتِیْ وَتَرَوْا اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ رَزَقَنِیْ مِنَ الزَّیْطِ مَا اَتَجَمَّلُ بِہِ فِی النَّاسِ وَاَوَارِیْ بِہِ عَوْرَتِیْ، (43)

پھر یہ کہا کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو یہی پڑھتے ہوئے سنا۔ (44)

حدیث ۴۰: امام احمد و ترمذی و ابن ماجہ نے ابوامامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے نیا کپڑا پہنا اور یہ پڑھا: اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ كَسَانِیْ مَا اَوَارِیْ بِہِ عَوْرَتِیْ وَ اَتَجَمَّلُ بِہِ فِی حَیَاتِیْ، (45)

پھر یہ کہا کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے سنا ہے، کہ جو شخص نیا کپڑا پہنتے وقت یہ پڑھے اور پرانے کپڑے کو صدقہ کر دے، وہ زندگی میں اور مرنے کے بعد اللہ تعالیٰ کے کف و حفظ و ستر میں رہے گا۔ (46) تینوں غلط

والمستدرک لم یکن، کتاب اللباس، باب الدعاء عند فراغ الطعام، الحدیث: ۷۴۸۶، ج ۵، ص ۲۷۰۔

ومشکوۃ المصابیح کتاب اللباس، الفصل الثانی، الحدیث ۴۳۳۳، ج ۲، ص ۱۱۷۔

(43) اللہ تعالیٰ کا شکر ہے، جس نے مجھے وہ لباس پہنایا جس سے میں اپنا ستر ڈھانپتا ہوں اور اپنی زندگی میں اس سے زینت کرتا ہوں۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ابوسلمہ تابعی ہیں مگر ان کا نام و حالات معلوم نہ ہو سکے۔ تقریب میں فرمایا کہ آپ کی ملاقات حضرت علی سے ثابت نہیں لہذا یہ حدیث منقطع ہے یعنی درمیان سے ایک راوی چھوٹ گیا ہے، حجاج ابن ارطاط نے کہا کہ آپ ثقہ ہیں۔

۲۔ ریش کے لغوی معنی ہیں چیز یا کے، چونکہ پر اس کے لیے زینت ہیں اس لیے اب بمعنی زینت آتا ہے، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "یُورِثُیْ سَوَآئِکُمْ وَرِثَآئَہَا" یہ ہے امیر المؤمنین علی رضی اللہ عنہ کا شکر کہ صرف تین درہم یعنی بارہ تیرہ آنے کا معمول لباس پہن کر ایسا شکر یہ ادا کر رہے ہیں۔

۳۔ اس سنت پر عمل کرتے ہوئے میں بھی یہ کہتا ہوں مسلمان کو چاہیے کہ اللہ تعالیٰ کی ہر نعمت پر شکر یہ ادا کرے اعلیٰ ہو یا معمول۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۱۸)

(44) اسناد ماہم احمد بن حنبل، مسند علی بن ابی طالب، الحدیث: ۱۳۵۲، ج ۱، ص ۳۳۱۔

(45) ترمذی تخریص اللہ تعالیٰ کے لیے ہیں، جس نے مجھے وہ لباس عطا فرمایا جس سے میں لوگوں میں زینت کرتا ہوں اور اپنا ستر ڈھانپتا ہوں۔

(46) سنن ترمذی، حدیث شتی، باب ۱۰: (۱۲۱)، الحدیث: ۳۵۷۱، ج ۵، ص ۳۲۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کا نام سعد بن حنیف ہے، انصاری اوی ہیں، اپنی کنیت میں مشہور ہوئے، حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی وفات سے دو سال پہلے پیدا ہوئے

۲۔ یہ آپ کو تابعین میں سے مانا گیا۔ ۵۰ھ میں وفات پائی، بانو کے سال عمر پائی مدینہ منورہ کے علماء سے تھے رضی اللہ عنہ۔

کے ایک ہی معنی ہیں یعنی اللہ تعالیٰ اس کا حافظ و نگہبان ہے۔

حدیث ۴۱: امام احمد و ابو داؤد نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص جس قوم سے تشبہ کرے، وہ انھیں میں سے ہے۔ (47) یہ حدیث ایک اصل کلی ہے۔ لباس و عادات و

۲۔ یعنی لباس میں بہت سی خوبیاں ہیں ستر پوشی، زینت، سردی گرمی سے بچاؤ، نماز کی ادائیگی لہذا یہ عظیم اشیان نعمتوں سے ہے۔

۳۔ اس سے معلوم ہوا کہ نیا کپڑا، نیا جوتا، نئی ٹوپی۔ غرض کہ نیا لباس ملنے پر پرانا خیرات کر دینا بہت ہی ثواب کا باعث ہے، پرانی چیز کو یوں پھینک کر برباد نہ کر دے کسی غریب کو دیدے اس کے کام آجائے گی مگر ہمیشہ پرانی ہی چیز خیرات نہ کرے کبھی نئی اور دس پسند چیز بھی خیرات کرے "لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ" اور پرانا کپڑا ہمیشہ خیرات ہی نہ کر دے کبھی خود بھی پہنے ہذا یہ حدیث نہ تو اس آیت مذکورہ کے خلاف ہے اور نہ اس حدیث عائشہ صدیقہ کے، بغیر پیوند لگے کپڑے کو پرانا نہ سمجھو کہ یہاں سخاوت کی تعظیم ہے وہاں تواضع کی۔

۴۔ سبحان اللہ! یہ رب تعالیٰ کا کرم و بندہ نوازی ہے کہ ہم معمولی پھٹے پرانے کپڑے خیرات کریں اور وہ اس کی ایسی بہترین جزا میں عطا فرمائے۔ جب پھٹے پرانے کپڑوں کی خیرات پر یہ ثواب ہے تو نئے کپڑوں کی خیرات پر کتنا ثواب ہوگا۔ جیتے مرتے پردہ پوشی کے معنی یہ ہیں کہ اللہ تعالیٰ اسے زندگی میں اور بعد موت رسوا نہ ہونے دے گا، اس کے عیب چھپا بھی لے گا بخش بھی دے گا۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۱۹)

(47) سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی لبس الشجرۃ، الحدیث: ۳۰۳۱، ج ۴، ص ۶۲۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

اقول: وباللہ التوفیق (میں اللہ تعالیٰ کی توفیق ہی سے کہتا ہوں۔ ت) اس جنس مسائل میں حق تحقیق و تحقیق حق یہ ہے کہ تشبہ و دوجہ پر ہے التزای و لزوی۔ التزای یہ ہے کہ یہ شخص کسی قوم کے طرز و وضع خاص اسی قصد سے اختیار کرے کہ ان کی سی صورت بنائے ان سے مشابہت حاصل کرے حقیقتاً تشبہ اسی کا نام ہے فان معنی القصد والحکلف لفظ فیہ کمالا یخفی (اس لئے کہ قصد اور تکلف کے مفہوم کا اس میں یظ رکھ گیا ہے جیسا کہ پوشیدہ نہیں۔ ت) اور لزوی یہ کہ اس کا قصد تو مشابہت کا نہیں مگر وہ وضع اس قوم کا شعار خاص ہو رہی ہے کہ خواہی نحو ای مشابہت پیدا ہوگی، التزای میں قصد کی تین صورتیں ہیں:

اول یہ کہ اس قوم کو محبوب و مرضی جان کر ان سے مشابہت پسند کرے یہ بات اگر مبتدع کے ساتھ ہو بدعت و کفار کے ساتھ معاذ اللہ کفر، حدیث من تشبہ بقوم فهو منهم ا۔ (جو کسی قوم سے مشابہت اختیار کرے تو وہ انہی میں سے شمار ہوگا۔ ت) حقیقتاً صرف ان صورت سے خاص ہے۔ (۱۔ سنن ابی داؤد کتاب اللباس باب لبس الشجرۃ آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۲۰۳)

غزالیون والبصائر میں ہے:

اتفق مشائخنا ان من رأى امر الکفار حسنا فقد کفر حتی قالوا فی رجل قال ترک الکلام عند اکل

اطور میں کن لوگوں سے مشابہت کرنی چاہیے اور کن سے نہیں کرنی چاہیے۔ کفار و فاسق، لجاجت سے بہت بری ہے اور

الطعام حسن من المجوس او ترك المضاجعة عندهم حال الحيض حسن لھو كالر ۲۔

ہمارے مشائخ کرام کا اس پر اتفاق ہے کہ جو کوئی کافروں کے کسی کام کو اچھا سمجھے تو وہ بلاشبہ کافر ہو جاتا ہے یہاں تک کہ انہوں نے فرمایا کہ جو کوئی کھانا کھاتے وقت باتیں نہ کرنے کو اور حالت حیض میں عورت کے پاس نہ لینے کو مجوسیوں اور آتش پرستوں کی اچھی عادت کہتے تو وہ کافر ہے۔ (ت) (۲۔ غزویون البصائر مع الاشباہ والنظائر المجلد الثانی کتاب السیر باب الردۃ الادارۃ القرآن کراچی ۱/ ۲۹۵)

دوم کسی غرض مقبول کی ضرورت سے اسے اختیار کرے وہاں اس وضع کی شاعت اور اس غرض کی ضرورت کا موازنہ ہوگا اگر ضرورت غالب ہو تو بقدر ضرورت کا وقت ضرورت یہ تشبیہ کفر کیا معنی ممنوع بھی نہ ہوگا جس طرح صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے مردی کہ بعض فتوحات میں منقول روپیوں کے ہاں پہن کر بھیجیں بدل کر کام فرمایا اور اس ذریعہ سے کفار اشرار کی بھاری جماعتوں پر ہاذن اللہ غلبہ پایا اسی طرح سلطان مرحوم صلاح الدین یوسف انار اللہ تعالیٰ برہانہ کے زمانے میں جبکہ تمام کفار یورپ نے سخت شورش مچائی تھی دو عالموں نے پادریوں کی وضع بنا کر دورہ کیا اور اس آتشِ تعصب کو بجھا دیا۔

خلاصہ میں ہے:

لو شد الزنار علی وسطہ ودخل دار الحرب لتغلیص الاساری لایکفر ولودخل لاجل التجارة یکفر ذکرہ القاضی الامام ابو جعفر الاستریشنی ۱۔

گر کوئی شخص اپنی کمر میں زنار باندھے اور قیدیوں کو چھڑانے کے لئے دار الحرب میں داخل ہو تو کافر نہیں ہوگا اور اگر اس مدت میں تجارت کے لئے جائے تو کافر ہو جائے گا۔ ۱۔ ابو جعفر استریشنی نے اس کو ذکر کیا ہے۔ (ت)

(۱۔ خلاصۃ الفتاوی کتاب القاء الکفر الفصل الثانی المجلس السادس مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۳/ ۳۸۷)

ملحقہ میں ہے:

اذا شد الزنار او اخذ الغل اولبس قلنسوة المجوس جادا او هازلا یکفر الا اذا فعل خدیعة فی الحرب ۲۔

جب کسی شخص نے زنار باندھ یا طوق لیا یا آتش پرستوں کی ٹوپی پہنی خواہ سنجیدگی کے ساتھ یا فسی مذاق کے طور پر تو کافر ہو گیا، مگر جنگ میں (دشمن کو منہ سے ملنے کے لئے) بطور تدبیر اس کا کرے تو کافر نہ ہوگا۔ (ت)

(۲۔ منہج اروضہ الازہر بحوالہ الملحقہ فصل فی الکفر صریحا و کنایۃ مصطفیٰ بہابی مصر ص ۸۵)

منہج اروضہ میں ہے:

ان اشد اسلحہ لزنار ودخل دار الحرب للتجارة کفرای لانه تلبس بلباس کفر من غیر ضرورۃ شدیدۃ و لافائدہ مترتبۃ بخلاف من لبسھا لتغلیص الاساری علی ماتقدم ۳۔

اگر مسلمان زنار باندھ کر در کفر میں کاروبار کیلئے جائے تو کافر ہو جائے گا اس لئے کہ اس نے بغیر کسی شدید مجبوری کے در بفر

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

میں صحت و تندرستی نہ ہو سکتی ہے، بلکہ اس سے بھی بڑا نقصان ہو سکتا ہے، اس لیے اس سے احتیاط کرنا چاہیے۔

نیز اس سے بھی بڑا نقصان ہو سکتا ہے، بلکہ اس سے بھی بڑا نقصان ہو سکتا ہے، اس لیے اس سے احتیاط کرنا چاہیے۔

(۳) شیخ الحدیث ابو نعیم علی بن ابی نعیم، الاثر فی الکفر، ص ۱۸۵

سوم: تو انہیں اچھا جانتا ہے نہ کوئی ضرورت شریعہ اس پر حامل ہے بلکہ کسی نفع دنیوی کے لئے یا یوں بطور ہزل و استہزاء اس کا مرتکب ہوا تو حرام و ممنوع ہونے میں شک نہیں اور اگر وہ وضع ان کفار کا مذہبی دینی شعار ہے جیسے زمار، قشقہ، چلیپا، چلیپا، تو علماء نے اس صورت میں بھی حکم کفر دیا کما سمعت (جیسا کہ تم نے ابھی سنا۔ ت) اور فی الواقع صورت استہزاء میں حکم کفر ظاہر ہے کما لا یخفی (جیسا کہ پوشیدہ نہیں۔ ت) اور لزومی میں بھی حکم ممانعت ہے جبکہ اگر وہ غیرہ مجبور یاں نہ ہوں جیسے انگریزی منڈا، انگریزی ٹوپی، جاکٹ، پتلون، اسٹاپر، اگرچہ یہ چیزیں کفر کی مذہبی نہیں مگر آخر شعار ہیں تو ان سے بچنا واجب اور ارتکاب گناہ۔ لہذا علماء نے فساق کی وضع کے کپڑے موزے سے ممانعت فرمائی۔

نکاحی خانیہ میں ہے:

الاسکاف او الخیاط اذا استوجر علی حیاطہ شیعی من زی الفساق ویعطی له فی ذلک کثیر اجر لا یتعجب له ان یعمل لاله اعانة علی البعصیۃ۔

موتی یا درزی فساق دینی کی وضع کے مطابق معمول سے زیادہ اجرت پر لباس تیار کرے تو اس کے لئے یہ کام مستحب نہیں اس لئے کہ یہ گناہ پر امداد و اعانت ہے۔ (ت) (۱) نکاحی قاضی خاں کتاب الحظر والاباحہ مطبع نولکھور لکھنؤ ۴/ ۷۸۰

مگر اس کے تحقق کو اس زمان و مکان میں ان کا شعار خاص ہونا قطعاً ضرور جس سے وہ پہچانے جاتے ہوں اور ان میں اور ان کے غیر میں مشترک نہ ہو ورنہ لازم کا کیا کھل، ہاں وہ بات فی نفسہ شرعاً مذموم ہوئی تو اس وجہ سے ممنوع یا مکروہ رہے گی نہ کہ تنبیہ کی راہ سے، امام قسطلانی نے مواہب لدنیہ میں دوبارہ طیلسان کہ پوشش یہودی تھی فرماتے ہیں:

اما ما ذکرہ ابن اقیم من قصة اليهود فقال الحافظ ابن حجر انما یصح الاستدلال به فی الوقت الذی تكون الطیالسة من شعارهم وقد ارتفع ذلک فی هذه الازمنة فصار داخلا فی عموم المباح وقد ذکرہ ابن عبد السلام رحمہ اللہ تعالیٰ فی امثلة البدعة المباحة۔

رہا یہ کہ جو کچھ حافظ ابن قیم نے یہودیوں کا واقعہ بیان کیا ہے تو اس بارے میں حافظ ابن حجر نے فرمایا کہ یہ استدلال اس وقت درست تھا جبکہ مذکورہ چادر بن کا (مذہبی) شعار ہوا کرتی تھی لیکن اس دور میں یہ چیز ختم ہو رہی ہے لہذا اب یہ عموم مباح میں داخل ہے، چنانچہ عبد السلام رحمہ اللہ تعالیٰ نے اس کو بدعت مباح کی مثالوں میں ذکر فرمایا ہے۔ (ت)

(۱) المواہب اللدنیۃ النوع الثانی اللباس لبس الطیلسان المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۲۵۰

کفر و فساق سے تشبہ کا ادنیٰ مرتبہ کراہت ہے، مسلمان اپنے کو ان لوگوں سے ممتاز رکھے کہ پہچانا جاسکے اور غیر مسلم کا شبہ

امام اجل فقیہ النفس فخر الملة والدین قاضی خاں پھر امام محمد محمد بن الحاج علی علیہ شرح منہ فصل مکروہات الصلوٰۃ پھر علامہ زین بن نجیم مصری بحر الرائق پھر علامہ محمد بن علی دمشقی در مختار میں فرماتے ہیں:

التشبه باهل الكتاب لا يكره في كل شيء فانا ناكل ونشرب كما يفعلون ان المحرام التشبه بهم فيما كان مذموماً او فيما يقصد به التشبه ۲۔

ہر چیز میں اہل کتاب سے مشابہت مکروہ نہیں جیسے کھانے پینے وغیرہ کے طور طریقے میں کوئی کراہت نہیں۔ ان سے تشبہ ان کاموں میں حرام ہے جو مذموم یعنی برے ہیں یا جن میں مشابہت کا ارادہ کیا جائے۔ (ت)

(۲۔ در مختار کتاب الصلوٰۃ باب ما یفسد الصلوٰۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱، ۹۰)

علامہ علی قاری منہ الروض میں فرماتے ہیں:

انا ممنوعون من التشبيه بالكفرة واهل البدعة المنكرة في شعارهم لانه من كل بدعة ولو كانت مباحة سواء كانت من افعال اهل السنة او من افعال الكفر واهل البدعة فالمدار على الشعار ۳۔
ہمیں کافروں اور منکر بدعات کے مرتکب لوگوں کے شعار کی مشابہت سے منع کیا گیا ہے ہاں اگر وہ بدعت جو مباح کا درجہ رکھتی ہو اس سے نہیں روکا گیا خواہ وہ اہل سنت کے افعال ہوں یا کفار اور اہل بدعت کے۔ لہذا مدار کار شعار ہونے پر ہے۔ (ت)

(۳۔ منہ الروض الاذھر علی الفقہ الاکبر فصل فی التفرص صریحاً مصطفیٰ الباب ص ۱۸۵)

فتاویٰ عالمگیری میں محیط سے ہے:

قال هشام في نوادره رأيت على ابي يوسف رحمه الله تعالى نعلين مخفوفين بمسامير الحديد فقلت له اترى بهذا الحديد بأساً قال لا فقلت له ان سفين و ثورين يزين كرها ذلك لانه تشبه بالرهبان فقال ابو يوسف رحمه الله تعالى كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يلبس النعال التي لها شعور وانها من لباس الرهبان ا الخ
ہشام نے نوادر میں فرمایا میں نے امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالیٰ کو ایسے جوتے پہنے ہوئے دیکھا جن کے چاروں طرف لوہے کی کیلیں لگی ہوئی تھیں، میں نے عرض کی، کیا آپ اس لوہے سے کوئی حرج سمجھتے ہیں؟ تو فرمایا کہ نہیں، میں نے عرض کی لیکن سفیان اور ثور بن یزید تو انہیں پسند نہیں فرماتے کیونکہ ان میں عیسائی راہبوں سے مشابہت پائی جاتی ہے۔ امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ایسے جوتے پہنتے تھے جن کے بال ہوتے تھے حالانکہ یہ بھی عیسائی راہبوں کا لباس تھا الخ۔ (ت)

(۱۔ فتاویٰ ہندیہ کتاب الکراہیۃ الباب التاسع تورانی کتب خانہ پشاور ۵ / ۳۳۳)

اس تحقیق سے روشن ہو گیا کہ تشبہ وہی ممنوع و مکروہ ہے جس میں فاعل کی نیت تحبیہ کی ہو یا وہ شے ان بدعتیہ لوگوں کا شعار خاص یا فی نفسہ شرعاً کوئی حرج رکھتی ہو، بغیر ان صورتوں کے ہرگز کوئی وجہ ممانعت نہیں۔ اب مسئلہ مسئلہ کی طرف، چلئے دعوتی باندھنے والے مسلمانوں کا

اس پر نہ ہو سکے۔

حدیث ۴۲: ابو داؤد نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے

یہ قصد تو ہرگز نہیں ہوتا کہ وہ کافروں کی سی صورت بنائیں، نہ مدعی نے اس پر بنائے کلام کی بلکہ مطلقاً دھوتی باندھنے کو ان سخت شدید خترائی احکام کا مورد قرار دیا نہ زہار قلب پر حکم روا نہ بدگمانی جائز، قال اللہ تعالیٰ ولا تقف مالیس لك به علم ان السمع والبصر والفؤاد كل اولئك كان عنه مسئولا ۲۔ اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا: ان باتوں کے پیچھے نہ پڑو جن کا تمہیں کچھ علم نہیں۔ بے شک کان، آنکھ اور دل کے متعلق (بروز قیامت) پوچھا جائے گا۔ (ت) (۲۔ القرآن الکریم ۳۶/۱۷)

اور فی نفسہ دھوتی کی حالت کو دیکھا جائے تو اس کی اپنی ذات میں کوئی حرج شرعی بھی نہیں بلکہ سائر مامور بہ کے افراد سے ہے اصل سنت و لباس پاک عرب یعنی تہبند سے صرف لٹکتا چھوڑنے اور پیچھے گھس لینے کا فرق رکھتی ہے اس میں کسی امر شرعی کا خلاف نہیں تو دو وجہ ممانعت تو قطعاً مستحکم ہیں۔ رہا خاص شعار کفار ہونا، وہ بھی باطل۔ بنگالہ وغیرہ یورپ کے عام شہروں میں تمام سکان ہندو مسلمان سب کا یہی لباس ہے۔ یوہیں سب اضلاع ہند کے دیہات میں ہندو مسلمین یہی وضع رکھتے ہیں۔ رہے وسط ہند کے شہری لوگ، ان میں بھی فٹائے شہر اور خود شہر کے اہل حرفہ وغیرہم جنہیں کم قوم کہا جاتا ہے بعض ہر وقت اور بعض اپنے کاموں ضرورتوں کی حالت میں دھوتی باندھتے ہیں۔

ہاں یہاں کے معزز شہریوں میں اس کا رواج نہیں مگر اس کا حاصل اس قدر کہ اپنی تہذیب کے خلاف جاتے ہیں نہ یہ کہ جو باندھے اسے فعل کفر کا مرتکب سمجھیں تو غایت یہ کہ ان اضلاع کے شہری و جاہل دار آدی کو گھر سے باہر اس کا باندھنا مکروہ ہوگا کہ بلا وجہ شرعی عرف و عادت قوم سے خروج بھی سبب شہرت و باعث کراہت ہے۔ علامہ قاضی عیاض مالکی، امام اجل ابو زکریا نووی شافعی شراح صحیح مسلم پھر عارف باللہ سیدی عبدالغنی نابلسی حنفی شارح طریقہ محمدیہ فرماتے ہیں:

خروجہ عن العادة شہرۃ و مکروہا۔

عادت اور عرف کی خلاف ورزی مکروہ اور باعث شہرت ہے (ت)

(۱۔ الشفاء جعفریہ حقوق المصطفیٰ فصل من اعظم الخ عبد التواب اکیڈمی بوہڑ گیٹ ملتان ۲، ۴۴)

اور اگر وہاں کے مسلمان اسے لباس کفار سمجھتے ہوں تو احتراز مؤکد ہے، حرج پیچھے گھسنے میں ہے، ورنہ نہ بند تو عین سنت ہے۔ اس سے زائد کچھ لغائیاں شخص مذکور نے کہیں محض بے اصل و باطل اور حلیہ صدق و صواب سے عاقل ہیں، بالقرض اگر دھوتی باندھنا مطلقاً ممنوع بھی ہوتا تاہم اس میں اتنا وبال نہ تھا جو شرع مطہر پر دانستہ افترا کرنے میں۔

والعیاذ باللہ تعالیٰ، نسئل اللہ ہدایۃ سبیل الرشاد والعصمة عن طریق الزیغ والفساد، آمین، ولنہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم

اور اللہ تعالیٰ کی پناہ، ہم اللہ تعالیٰ سے راہ راست کی رہنمائی چاہتے ہیں اور کجی اور فساد کی راہ سے اسے اللہ! حفاظت چاہتے ہیں، یا اللہ میری دعا قبول فرما، اللہ تعالیٰ پاک و برتر بڑا عالم ہے (ت) (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۵۲۹، ۵۲۳ رضانی و نڈیشن، لاہور)

ان عورتوں پر لعنت کی جو مردوں سے تشبہ کریں اور ان مردوں پر جو عورتوں سے تشبہ کریں۔ (48)

(48) سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی لباس النساء، الحدیث: ۴۰۹۷، ج ۴، ص ۸۳۔

مردوں اور عورتوں کا ایک دوسرے سے مشابہت اختیار کرنا

حضرت سیدنا ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما ارشاد فرماتے ہیں کہ خاتم المرسلین، رحمۃ اللعلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے عورتوں کی مشابہت اختیار کرنے والے مردوں اور مردوں کی مشابہت اختیار کرنے والی عورتوں پر لعنت فرمائی ہے۔

(صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب المتشبهین بالنساء والمتشبهات۔۔۔۔۔ الخ، الحدیث: ۵۸۸۵، ص ۵۰۱)

ایک عورت گلے میں کمان لٹکائے سید المتبعین، رحمۃ اللعلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے قریب سے گزری تو آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: اللہ عزوجل مردوں کی مشابہت کرنے والی عورتوں اور عورتوں کی مشابہت کرنے والے مردوں پر لعنت فرماتا ہے۔

(المعجم الاوسط، الحدیث: ۴۰۰۳، ج ۳، ص ۱۰۶)

شفیع المذنبین، عیسٰی الغریبین، سراب الساکین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے زمانے مردوں اور مردانی عورتوں پر لعنت فرمائی ہے۔

(صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب اخراج المتشبهین بالنساء۔۔۔۔۔ الخ، الحدیث: ۵۸۸۶، ص ۵۰۱)

زمانے مردوں سے مراد عورتوں کی سی حرکات کرنے والے لوگ ہیں اگرچہ وہ کوئی خش حرکت نہ بھی کرتے ہوں جبکہ مردانی عورتوں سے مراد مردوں سے مشابہت اختیار کرنے والی عورتیں ہیں۔

محبوب رب العنمین، جناب صادق و امین عزوجل صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے عورت کا لباس پہننے والے مرد اور مرد کا لباس پہننے والی عورت پر لعنت فرمائی ہے۔ (سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی لباس النساء، الحدیث: ۴۰۹۸، ص ۱۵۲۲)

رحمت کونین، غریبوں کے دلوں کے چین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے عورتوں کی مشابہت اختیار کرنے والے زمانے مردوں اور مردوں کی مشابہت اختیار کرنے والی مردانی عورتوں پر اور بیابان میں تنہا سفر کرنے والے پر لعنت فرمائی ہے۔

(المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند ابی ہریرۃ، الحدیث: ۷۸۶۰، ج ۳، ص ۱۳۳)

تاجدار رسالت، شہنشاہ نبوت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عبرت نشان ہے: چار طرح کے لوگوں پر دنیا و آخرت میں عنت بھیجی جاتی ہے اور مانگہ اس پر آسمین کہتے ہیں (۱) وہ شخص جسے اللہ عزوجل نے مرد بنا کر پیدا کیا پھر اس نے اپنے آپ کو عورت بنالیا اور عورتوں کی

مشابہت اختیار کر لی (۲) وہ عورت جسے اللہ عزوجل نے عورت بنایا مگر اس نے اپنے آپ کو مردانہ انداز میں ڈھال لیا اور مردوں کی مشابہت اختیار کر لی (۳) وہ شخص جو اپنے کوراستے سے بھٹکا دے اور (۴) خضور یعنی طاقت کے باوجود عورتوں میں رغبت نہ رکھنے والا اور

اللہ عزوجل نے صرف حضرت سیدنا یحییٰ بن زکریا علی نبینا وعلیہا الصلوٰۃ والسلام ہی کو خضور پیدا فرمایا۔

(المعجم الکبیر، الحدیث: ۷۸۲۷، ج ۸، ص ۲۰۴)

مخزن جو دوستی و ہیکر عظمت و شرافت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں ایک خشک (یعنی ہجڑے) کو لیا گیا، ←

حدیث ۴۳: ابو داؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اس مرد پر لعنت کی، جو عورت کا لباس پہنتا ہے اور اس عورت پر لعنت کی، جو مردانہ لباس پہنتی ہے۔ (49)

حدیث ۴۴: ابو داؤد و عمران بن حصین رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ نہ میں سرخ زین پوش پر سوار ہوتا ہوں اور نہ کم کارنگا ہوا کپڑا پہنتا ہوں اور نہ وہ قمیص پہنتا ہوں، جس میں ریشم کا کف لگا ہوا ہو (یعنی چار انگل سے زائد)، سن لو! مردوں کی خوشبو وہ ہے، جس میں بو ہو اور رنگ نہ ہو اور عورتوں کی خوشبو وہ ہے، جس میں رنگ ہو، بو نہ ہو۔ (50)

اس نے اپنے ہاتھ پاؤں مہندی سے رنگے ہوئے تھے، آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے دریافت فرمایا: اس کا کیا معاملہ ہے؟ صحابہ کرام علیہم الرضوان نے عرض کی: یہ عورتوں کی مشابہت اختیار کرتا ہے۔ تو آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے اسے نسیج (مدینے سے دور ایک مقام) کی طرف جلا وطن کرنے کا حکم ارشاد فرمایا۔

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی حکم الخنثیین، الحدیث: ۴۹۲۸، ص ۱۵۸۴)

ایک اور روایت میں ہے کہ سرکارِ مدینہ، راحتِ قلب و سینہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمانِ عبرت نشان ہے: تین شخص بھی جنت میں داخل نہ ہوں گے (۱) دثوث (۲) مردانی عورتیں اور (۳) شراب کا عادی۔ صحابہ کرام علیہم الرضوان نے عرض کی: شراب کے عادی کو تو ہم نے جان لیا، دثوث کون ہے؟ تو آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: وہ شخص جو اس بات کی پرواہ نہیں کرتا کہ اس کے گھر والوں کے پاس کون کون آتا ہے۔ ہم نے عرض کی: مردانی عورتیں کون ہیں؟ تو آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: جو مردوں کی مشابہت اختیار کرتی ہیں۔ (مجمع الزوائد، کتاب النکاح، باب فیمن یرضی لاهلہ بالخنث، الحدیث: ۷۷۲۲، ج ۴، ص ۵۹۹)

(49) المرجع السابق، الحدیث: ۴۰۹۸، ج ۴، ص ۸۳۔

(50) المرجع السابق، باب من کرہ، الحدیث: ۴۰۲۸، ج ۴، ص ۶۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ارغوان معرب ہے ارغوان سے۔ ارغوان ایک سرخ رنگ کا پھول ہے، اب ہر سرخ رنگ کو ارغوانی کہا جاتا ہے وہی یہاں مراد ہے۔ یہ کبھی ریشم کا ہوتا ہے کبھی سوتی، گھوڑے کی کانٹھی پر چھوٹا سا تکیہ رکھ کر سوار ہوتے ہیں۔ وہی یہاں مراد ہے یعنی ہم کبھی سرخ رنگ کا تکیہ کانٹھی پر رکھ کر سواری نہ کریں گے۔ معلوم ہوا کہ خالص سرخ کپڑے پر مرد کو بیٹھنا لیٹنا بھی بہتر نہیں۔ خصوصاً جب کہ ریشم کا ہو اس لیے علماء کرام مرد کو ریشمی تو شک، گدیلہ، بچھانا، ریشمی لحاف اوڑھنا ممنوع قرار دیتے ہیں۔

۲۔ کفف بنا ہے کفہ سے یعنی حصہ اور کنارہ یعنی جس سوتی قمیض کا گریبان دامن کلی وغیرہ ریشم کی ہو وہ ہم نہ پہنیں گے مگر یہ ممانعت جب ہے جب کہ ان کی چوڑائی چار انگل سے زیادہ ہو لہذا یہ حدیث اس حدیث اسماء کے خلاف نہیں کہ: نبیوں نے ریشمی دامن والی قمیض دکھا کر فرمایا کہ یہ ہے حضور کا جبہ شریف کہ وہاں چار انگل سے کم ریشمی تھا۔

یعنی مردوں میں خوشبو مقصود ہوتی ہے، ان کا رنگ نمیاں نہ ہونا چاہیے نہ بدن یا شاہد کھینچا جائے اور

میں بھی مسکن مردوں کو ایک خوشبو کی اجازت ہے جس کا رنگ ہڈی پر فانی ہو سکے جیسے عطر ہے۔ لیکن ایک سے زیادہ خوشبو نہ لگانی چاہیے۔ اگر ایک سے زیادہ خوشبو لگائی جائے تو اس سے بدن کا رنگ بدلتا ہے اور اس کی اجازت ہے کہ اس میں دھندلکتا ہو۔ اگر ایک سے زیادہ خوشبو لگائی جائے تو اس سے بدن کا رنگ بدلتا ہے اور اس کی اجازت ہے کہ اس میں دھندلکتا ہو۔ اگر ایک سے زیادہ خوشبو لگائی جائے تو اس سے بدن کا رنگ بدلتا ہے اور اس کی اجازت ہے کہ اس میں دھندلکتا ہو۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۹۹)

عورت کا خوشبو لگا کر گھر سے نکلنا (اگرچہ شوہر کی اجازت سے ہو)

مرکا، مدینہ، قرآن، قلب وسینہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم و غیرہ کا فرق، لیکن ہے: "(غیر محرم کو دیکھنے والی) ہر آنکھ زانیہ (یعنی زنا کرنے والی) ہے اور عورت جب عطر لگا کر کسی مجلس سے گزرتی ہے تو وہ اسکی اسکی ہے۔" جتنی زانیہ ہے۔

(جامع الترمذی، ابواب الادب، باب ما جاء فی کرمیۃ خروج المرأة مسطرة، الحدیث: ۸۷۶، ج ۲، ص ۹۳۲)

یاد رہے آقا، صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا فرق، لیکن ہے: "(غیر محرم کو دیکھنے والی) ہر آنکھ زانیہ ہے اور عورت جو خوشبو لگائے اور کسی قوم کے پاس سے گزرے تو وہ اس کی خوشبو سونگھیں تو وہ زانیہ ہے اور (غیر محرم کو دیکھنے والی) ہر آنکھ زانیہ ہے۔"

(صحیح ابن خزيمة، کتاب الامارۃ فی الصلوٰۃ، باب التغلیظ فی تطهر المرأة، الحدیث: ۱۶۸۱، ج ۳، ص ۹۱)

حضرت سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس سے ایک عورت گزری، اس سے خوشبو آ رہی تھی، آپ نے دریافت فرمایا: "اے اللہ کے رسول! کہاں کا ارادہ ہے؟" "دوبولی: "مسجد کا۔" استفسار فرمایا: "اس لئے خوشبو لگائی ہے؟" اس نے عرض کی: "جی ہاں۔" ارشاد فرمایا: "ادھیں جا اور اسے دھو ڈال۔" (کیونکہ) میں نے حضور نبی پاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو ارشاد فرماتے سنا ہے کہ "اللہ عز و جل اس عورت کی نماز قبول نہیں فرماتا جو نماز کے لئے خوشبو لگا کر مسجد جائے جب تک کہ وہ دھو جائے اور اسے دھو نہ دے۔"

(المرجع السابق، باب ایجاب الغسل علی الحلیۃ، الحدیث: ۱۶۸۲، ج ۳، ص ۹۲)

حضرت سیدنا امام ابن خزيمة رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ (متوفی ۳۱۱ھ) نے اس روایت سے استدلال کیا ہے بشرطیکہ یہ روایت صحیح ہو اور آپ جانتے ہیں کہ یہ حدیث پاک اس پر صحیح دلیل ہے کہ اس عورت پر خوشبو کو دھو کر صاف کرنا واجب ہے اور اگر اس نے خوشبو دھوئے بغیر نماز پڑھ لی تو اس کی نماز قبول نہ ہوگی۔ نیز یہاں پر خاص طور پر دھونا مراد نہیں بلکہ اس کی خوشبو کو دور کرنا مراد ہے۔

شہنشاہ مدینہ، قرآن، قلب وسینہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مسجد میں تشریف فرماتے تھے کہ اسی دوران قبیلہ خزیمہ کی ایک عورت آ رہی تھی اور وہ مسجد میں داخل ہوئی۔ آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: "اے لوگو! اپنی عورتوں کو بھڑکیے اور خوشبو دار ہوس پہن کر مسجد جانے سے روکو کہ بنی اسرائیل کی عورتوں نے خوبصورت لباس پہنا اور مسجد میں خوشبو لگا کر حاضر ہوئیں تو بنی اسرائیل دھتکار دیئے گئے۔" (سنن ابن ماجہ، ابواب الفتن، باب فتنة النساء، الحدیث: ۴۰۰۱، ص ۲۷۱)

عورتیں ہلکی خوشبو استعمال کریں کہ یہاں زینت مقصود ہوتی ہے اور یہ رنگین خوشبو مثلاً خلوق سے حاصل ہوتی ہے، تیز خوشبو سے خواہ مخواہ لوگوں کی نگاہیں اٹھیں گی۔

حدیث ۴۵: ترمذی نے ابو ریحہ تیمی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ میں نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) دو ۲ سبز کپڑے پہنے ہوئے تھے۔ (51)

حدیث ۴۶: ابو داؤد نے وحیہ بن خلیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں چند قبضی کپڑے لائے گئے، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے ایک مجھے دیا اور یہ فرمایا کہ اس کے دو ٹکڑے کر لو، ایک ٹکڑے کی قمیص بنو اور ایک اپنی بی بی کو دے دینا، وہ اوڑھنی بنالے گی۔ جب یہ چلے تو حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا کہ اپنی بی بی سے کہہ دینا کہ اس کے نیچے کوئی دوسرا کپڑا لگالے تاکہ بدن نہ جھلکے۔ (52)

(51) سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ما جاء فی الثوب الاخصر، الحدیث: ۲۸۲۱، ج ۴، ص ۳۷۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کے نام میں اختلاف ہے یا تو رفاعہ ابن یثرب ہے یا عامرہ ابن یثرب، قبیلہ تیم رباب سے ہیں نہ کہ تیم قریش سے، بعض لوگ کہتے ہیں کہ آپ تیمی ہیں اپنے والد کے ساتھ آئے اور دونوں مسلمان ہو گئے بعد میں کوفہ میں قیام رہا۔ (لمعات و مرقات و اشعة اللمعات)

۲۔ قمیض اور تہبند شریف یا تو بالکل سبز تھے یا اس میں سبز دھاریاں تھیں پہلے معنی زیادہ ظاہر ہیں۔ جنتیوں کا لباس سبز ہوگا، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُفْدٌ خُضْرٌ"۔ اس سے معلوم ہوا کہ مرد کو ہرے کپڑے پہننا جائز ہے اگر اس عمل شریف کی اتباع میں ہو تو مستحب ہے۔ (مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۰۴)

(52) سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی لبس القباطی للنساء، الحدیث: ۴۱۱۶، ج ۴، ص ۸۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ وہ ہی وحیہ کلبی مشہور صحابی ہیں جن کی شکل میں اکثر حضرت جبریل امین آیا کرتے تھے، انہی کو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے لا چھ بھری میں قیصر روم کی تہنغ کے لیے بھیجا تھا، احد اور اس کے بعد کے تمام غزوات میں شریک رہے، شام میں قیام رکھا، حضرت امیر معاویہ کے زمانہ میں وفات پائی، وحیہ دال کے کسرہ سے ہے۔

۲۔ قباطی جمع ہے قبضیہ کی۔ یہ ایک خاص قسم کے کپڑے کا نام ہے جو باریک سفید ہوتا ہے، مصر میں بنتا ہے اگرچہ قبط قاف کے کسرہ سے ہے مگر قبضی کپڑا ق کے پیش سے ہے۔ غالباً کہیں سے ہدیہ آئے تھے خریدے نہ گئے تھے۔

۳۔ معلوم ہوا کہ یہ کپڑے ریشمی نہ تھے سوتی تھے ورنہ مرد کو اس کا پہننا حلال نہ ہوتا۔

۴۔ معلوم ہوا کہ اس زمانہ شریف میں بھی ایسے باریک کپڑے ایجاد ہو گئے تھے جن سے ستر حاصل نہ ہو سکتا تھا۔ اس فرمان عالی سے ←

حدیث ۴۷: صحیح بخاری و مسلم میں عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا بچھونا جس پر آرام فرماتے تھے، چڑے کا تھا جس میں کھجور کی چھال بھری ہوئی تھی۔ (53)

مسلم کی روایت میں ہے کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کا تکیہ چڑے کا تھا جس میں کھجور کی چھال بھری تھی۔ (54)

حدیث ۴۸: صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ ایک بچھونا مرد کے لیے اور ایک اُس کی زوجہ کے لیے اور تیسرا مہمان کے لیے اور چوتھا شیطان کے لیے۔ (55) یعنی گھر کے آدمیوں اور مہمانوں کے لیے بچھونے جائز ہیں اور حاجت سے زیادہ نہ چاہیے۔



دوسرے معلوم ہوئے: ایک یہ کہ عورت کو باریک کپڑے کا دوپٹہ اوڑھنا درست ہے۔ دوسرے یہ کہ ایسے باریک کپڑے کے نیچے کوئی موٹا کپڑا ضرور سر پر رکھے تاکہ بال و سر ظاہر نہ ہوں ورنہ نماز درست نہ ہوگی اور بے پردگی بھی ہوگی، خاندان کے سامنے تنہائی میں ویسے بھی اوڑھ سکتی ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۱۱)

(53) صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب التواضع فی اللباس... إلخ، الحدیث: ۳۸۔ (۲۰۸۲)، ص ۱۱۵۳۔

(54) صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب التواضع فی اللباس... إلخ، الحدیث: ۳۷۔ (۲۰۸۲)، ص ۱۱۵۳۔

(55) مرجع السابق، باب کراہۃ ما زاد علی الخافض... إلخ، الحدیث: ۳۱۔ (۲۰۸۳)، ص ۱۱۵۳۔

حکیم امامت کے مدنی پھول

۱۔ اہل عرب فخریہ طور پر بہت سے بستر بناتے اور ان سے گھر سجاتے تھے جیسے پنجاب کے اہل دیہات بہت زیادہ برتنوں سے گھر سجاتے اس پر فخر کرتے ہیں۔ اس حدیث کا مقصد یہ ہے کہ صرف تین قسم کے بستر رکھو: اپنے لیے، بیوی بچوں کے لیے اور بقدر ضرورت مہمانوں کے لیے، یہاں بستر کی قسمیں مراد ہیں نہ کہ تعداد لہذا جس کے دو چار بچے ہوں، دو چار مہمان روزانہ آتے جاتے ہوں تو وہ انہیں کے مطابق بستر رکھے۔

۲۔ جو تھکے سے مرد جو تھکی قسم کا بستر ہے یعنی بلا ضرورت محض فخر اور اپنی بڑائی کے اظہار کے لیے رکھا جائے خواہ ایک ہو یا زیادہ، چونکہ اس قسم کا بستر تکبر و شہی کے لیے ہوتا ہے اس کا محرک شیطان ہوتا ہے اس لیے اسے شیطان کی طرف نسبت دی گئی ہے۔ بعض شارحین نے اس حدیث کی بنا پر فرمایا کہ مرد کو اپنی بیوی سے علیحدہ سونا چاہیے ساتھ سونا ممنوع ہے کیونکہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے مرد کا بستر بیوی سے علیحدہ فرمایا مگر یہ ضعیف ہے، بعض حالات بیماری وغیرہ میں علیحدہ سونا پڑتا ہے اس لیے علیحدہ بستر کی اجازت دی گئی۔ خاندان بیوی کا ایک بستر پر سونا حدیث سے ثابت ہے، اس کے متعلق بہت احادیث ہیں۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۵۷)

مسائل فقہیہ

مسئلہ ۱: اتنا لباس جس سے ستر عورت ہو جائے اور گرمی سردی کی تکلیف سے بچے فرض ہے اور اس سے زائد جس سے زینت مقصود ہو اور یہ کہ جبکہ اللہ (عزوجل) نے دیا ہے تو اس کی نعمت کا اظہار کیا جائے۔ یہ مستحب ہے خاص موقع پر مثلاً جمعہ یا عید کے دن عمدہ کپڑے پہننا مباح ہے۔ اس قسم کے کپڑے روز نہ پہنے کیونکہ ہو سکتا ہے کہ اترانے لگے اور غریبوں کو جن کے پاس ایسے کپڑے نہیں ہیں نظر حقارت سے دیکھے، لہذا اس سے بچنا ہی چاہیے۔

اور تکبر کے طور پر جو لباس ہو وہ ممنوع ہے، تکبر ہے یا نہیں اس کی شناخت یوں کرے کہ ان کپڑوں کے پہننے سے پہلے اپنی جو حالت پاتا تھا اگر پہننے کے بعد بھی وہی حالت ہے تو معلوم ہوا کہ ان کپڑوں سے تکبر پیدا نہیں ہوا۔ اگر وہ حالت اب باقی نہیں رہی تو تکبر آگیا۔ لہذا ایسے کپڑے سے بچے کہ تکبر بہت بری صفت ہے۔ (1)

مسئلہ ۲: بہتر یہ ہے کہ ادنیٰ یا سوتی یا کتان کے کپڑے بنوائے جائیں جو سنت کے موافق ہوں، نہ نہایت اعلیٰ درجہ کے ہوں نہ بہت گھٹیا، بلکہ متوسط (درمیانہ) قسم کے ہوں کہ جس طرح بہت اعلیٰ درجہ کے کپڑوں سے نمود (نمائش) ہوتی ہے، بہت گھٹیا کپڑے پہننے سے بھی نمائش ہوتی ہے۔ لوگوں کی نظریں اٹھتی ہیں سمجھتے ہیں کہ یہ کوئی صاحب کمال اور تارک الدنیا شخص ہیں۔ سفید کپڑے بہتر ہیں کہ حدیث میں اس کی تعریف آئی ہے اور سیاہ کپڑے بھی بہتر ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فتح مکہ کے دن جب مکہ معظمہ میں تشریف لائے تو سراقہ قدس پر سیاہ عمامہ تھا۔ سبز کپڑوں کو بعض کتابوں میں سنت لکھا ہے۔ (2)

مسئلہ ۳: سنت یہ ہے کہ دامن کی لمبائی آدھی پنڈلی تک ہو اور آستین کی لمبائی زیادہ سے زیادہ انگلیوں کے پوروں تک اور چوڑائی ایک بالشت ہو۔ (3) اس زمانہ میں بہت سے مسلمان پاجامہ کی جگہ جگھیا (یعنی نیکر) پہننے لگے ہیں۔ اس کے ناجائز ہونے میں کیا کلام کہ گھٹنے کا کھلا ہونا حرام ہے اور بہت لوگوں کے گرتے کی آستینیں کہنی کے وپر ہوتی ہیں یہ بھی خلاف سنت ہے اور یہ دونوں کپڑے نصاریٰ کی تقلید میں پہنے جاتے ہیں، اس چیز نے ان کی قباحت میں اور اضافہ کر دیا۔

(1) رد المحتار، کتاب الحظر والاباح، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۷۹۔

(2) رد المحتار، کتاب الحظر والاباح، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۷۹۔

(3) المرجع السابق

اللہ تعالیٰ مسلمانوں کی آنکھیں کھولے، کہ وہ کفار کی تقلید اور ان کی وضع قطع سے بچیں۔ حضرت امیر المومنین فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ارشاد جو آپ نے لشکریوں کے لیے بھیجا تھا، جن میں بیشتر حضرات مسیہ کرام تھے، اس کو مسلمان پیش نظر رکھیں اور عمل کی کوشش کریں اور وہ ارشاد یہ ہے:

إِنَّا كُفَّ وَزَيَّ الْأَعَانِم (4)

عجمیوں کے بھیس سے بچو، ان جیسی وضع قطع نہ بنالینا۔

مسئلہ ۴: ریشم کے کپڑے مرد کے لیے حرام ہیں، بدن اور کپڑوں کے درمیان کوئی دوسرا کپڑا حاکل ہو یا نہ ہو، دونوں صورتوں میں حرام ہیں اور جنگ کے موقع پر بھی زے ریشم کے کپڑے حرام ہیں، ہاں اگر تانا سوت ہو اور ہانا ریشم تو لڑائی کے موقع پر پہننا جائز ہے اور اگر تانا ریشم ہو اور ہانا سوت ہو تو ہر شخص کے لیے ہر موقع پر جائز ہے۔ مجاہد اور غیر مجاہد دونوں پہن سکتے ہیں۔ لڑائی کے موقع پر ایسا کپڑا پہننا جس کا ہانا ریشم ہو اس وقت جائز ہے جبکہ کپڑا موٹا ہو اور اگر باریک ہو تو ناجائز ہے کہ اس کا جو فائدہ تھا، اس صورت میں حاصل نہ ہوگا۔ (5)

(4) لُقْ صَدِّ الْحَمْدُ لِلْفَادِي، حَرْفُ الْحَمْدِ، رَقْمٌ: ۲۷۲، ص ۱۳۲.

(5) الْهُدَايَةُ، كِتَابُ الْكُرْهُيَّةِ، فَصْلٌ فِي اللَّبَاسِ، ج ۲، ص ۳۶۵.

وَالدَّرَالْمُخْتَارُ، كِتَابُ الْخَطَرِ وَالْبَاهَةِ، فَصْلٌ فِي اللَّبَاسِ، ج ۹، ص ۵۸۰.

اعلیٰ حضرت، امام، ہدایت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لَا تَلْبَسُوا الْحَرِيرَ فَإِنَّهُ مِنْ لَيْسَةٍ فِي الدُّنْيَا لَمْ يَلْبَسْهُ فِي الْآخِرَةِ. رَوَاهُ الشَّيْخَانُ عَنْ الْأَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ عُمَرَ وَالنَّسَائِيَّ وَابْنِ حَبَانَ وَالْحَاكِمَ وَصَحَّحَهُ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ وَالْحَاكِمَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَابْنِ حَبَانَ عَنْ عَقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ.

ریشم نہ پہنو کہ جو سے دنیا میں پہنے گا آخر میں نہ پہنے گا۔ (اس کو بخاری و مسلم نے امیر المومنین حضرت عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے، نسائی، ابن حبان اور حاکم نے اس کو صحیح قرار دیا ہے اور حضرت ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی ہے اور حاکم نے حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے۔ اور ابن حبان نے حضرت عقبہ بن عامر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی۔ (ت) (صحیح بخاری کتاب اللباس باب لبس الحریر قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۸۶۷) (صحیح مسلم کتاب اللباس باب تحریم استعمال ابناء الذہب والفضة الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۱۹۱) (الترغیب والترہیب بحوالہ البخاری و مسلم و الترمذی والنسائی تہذیب الرجال من لبس الحریر مصطفیٰ الباب ص ۳/ ۹۶)

نسائی کی ایک روایت میں ہے فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم:

مسئلہ ۵: تانا ریشم ہو اور بانا سوت، مگر کپڑا اس طرح بنایا گیا ہے کہ ریشم ہی ریشم دکھائی دیتا ہے تو اس کا پہننا

من لبسه فی الدنیا لم یدخل الجنة ۱۔ رواہ عن المیر المؤمنین عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ

جو دنیا میں ریشم پہنے گا جنت میں نہ جائے گا، (امام نسائی نے اس کو امیر المؤمنین حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے۔ (ت)

(۱۔ الترغیب والترہیب بحوالہ نسائی ترہیب الرجال من لبسم الحریر الخ حدیث ۲۰ مصطفیٰ البابی مصر ۳/۱۰۰)

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم: انما یلبس الحریر من لایحک لہ فی الآخرة رواہ الشیخان ۲۔ واللفظ لبخاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ ریشم وہ

پہنے گا جس کے لئے آخرت میں کچھ حصہ نہیں (اس کو شیخین (بخاری و مسلم) نے روایت کیا اور الفاظ امام بخاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے

ہیں۔ (ت) (۲۔ صحیح البخاری کتاب اللباس باب لبس الحریر الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۸۶۷) (صحیح مسلم کتاب اللباس باب تحریم

استعمال انا الذہب والفضة قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۲۹۱)

ایک حدیث میں ہے حضور والا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: من لبس ثوب حریر البسه اللہ عزوجل یوم القیمة ثوباً من

العار۔ رواہ احمد ۳۔ والطبرانی عن جویریۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہا۔

جو ریشم پہنے گا اللہ تعالیٰ عزوجل اسے قیامت کے دن آگ کا کپڑا پہنائے گا (امام بخاری و طبرانی نے اس کو سیدہ جویریہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا

سے روایت کیا ہے۔ (ت) (۳۔ مسند امام احمد بن حنبل حدیث جویریہ بنت الحرث لکتب الاسلامی بیروت ۶/۳۲۳)

(۱۔ العجم الاوسط عن جویریۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہا حدیث ۱۷۰، ۱۷۱، ۱۷۲ لکتب الفیصلیۃ بیروت ۲۳/۶۵)

حدیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں:

من لبس ثوب حریر البسه اللہ تعالیٰ یوما من نار لبس من ایامکم ولكن من ایام اللہ تعالیٰ الطوال ۱۔ رواہ

الطبرانی وقال اللہ تعالیٰ وان یوما عند ربک کالفسنة مما تعدون ۲۔

جو ریشم پہنے اللہ تعالیٰ اسے ایک دن کامل آگ پہنائے گا وہ دن تمہارے دنوں میں سے نہیں بلکہ اللہ تعالیٰ کے ان لمبے دنوں سے یعنی ہزار

برس کا ایک دن (اس کو امام طبرانی نے روایت کیا) جیسا کہ اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا: بیشک تمہارے شمار کے مطابق ایک ہزار سال کے

برابر ہے۔ (۱۔ الترغیب والترہیب بحوالہ حدیثہ موقوفہ ترہیب الرجال من لبسم الحریر الخ مصطفیٰ البابی مصر ۳/۹۹)

(۲۔ القرآن الکریم ۲۲/۴۷)

سیدنا مولیٰ علی کرم اللہ وجہہ کی حدیث میں ہے میں نے حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو دیکھا کہ حضور نے اپنے اپنے ہاتھ میں ریشم اور

بائیں ہاتھ میں سونا لیا پھر فرمایا: ان هذین حرام علی ذکور امتی۔ رواہ ابو داؤد ۳۔ والنسائی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۳۔ سنن ابی داؤد کتاب اللباس باب فی الحریر النساء آفتاب عالم پریس لاہور ۲/۲۰۵)

بیشک یہ دونوں (ریشم اور سونا) میری امت کے مردوں پر حرام ہیں۔ (ابوداؤد اور نسائی نے اسے روایت کیا۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۲، ص ۱۵۶، ۱۵۷ ارض فاؤنڈیشن، لاہور)

مکروہ ہے۔ (6) بعض قسم کی محفل ایسی ہوتی ہے کہ اس کے رو میں ریشم لے ہوتے ہیں، اس نے پہننا بھی مکروہ ہے، اس کی نوپی اور صدری (یعنی واسٹ) وغیرہ نہ پہنی جائے۔

مسئلہ ۶: ریشم کے بچھونے پر بیٹھنا، لیٹنا اور اس کا تکیہ لگانا بھی ممنوع ہے، اگرچہ پہننے میں بہ نسبت اس سے زیادہ برائی ہے۔ (7) مگر درختار میں اسے مشہور کے خلاف بتایا ہے (8) اور ظاہر یہی ہے کہ یہ جائز ہے۔

مسئلہ ۷: سر، کہ ایک قسم کے ریشم کا نام ہے، بھاگلپوری کپڑے سر کے کہلاتے ہیں۔ وہ مونار ریشم ہوتا ہے، اس کا قلم بھی وہی ہے، جو باریک ریشم کا ہے۔ کاشی سلک اور چٹنا سلک بھی ریشم ہی ہے، اس کے پہنے کا بھی وہی حکم ہے۔ سن اور رام بانس کے کپڑے جو بظاہر بالکل ریشم معلوم ہوتے ہوں، ان کا پہننا اگرچہ ریشم کا پہننا نہیں ہے مگر اس سے بچنا چاہیے۔ خصوصاً علما کو کہ لوگوں کو بدظنی کا موقع ملے گا یا دوسروں کو ریشم پہننے کا ذریعہ بنے گا۔ اس زمانہ میں کیلے کا ریشم چلا ہے۔ یہ ریشم نہیں ہے بلکہ کسی درخت کی چھال سے اس کو بناتے ہیں اور یہ بہت ظاہر طور پر شناخت میں آتا ہے، اس کو پہننے میں حرج نہیں۔

مسئلہ ۸: ریشم کا لحاف اوڑھنا ناجائز ہے کہ یہ بھی لباس میں داخل ہے۔ ریشم کے پردے دروازوں پر لٹکانا مکروہ ہے۔ کپڑے بچنے والے نے ریشم کے کپڑے کندھے پر ڈال لیے جیسا کہ پھیری کرنے والے کندھوں پر ڈال کر کرتے ہیں، یہ ناجائز نہیں کہ یہ پہننا نہیں ہے اور اگر جبہ یا کرتہ ریشم کا ہو اور اس کی آستینوں میں ہاتھ ڈال دیے، اگرچہ بچنے ہی کے لیے لے جا رہا ہے یہ ممنوع ہے۔ (9)

مسئلہ ۹: عورتوں کو ریشم پہننا ناجائز ہے اگرچہ خالص ریشم ہو اس میں سوت کی بائکل آمیزش نہ ہو۔ (10)

(6) الفتاویٰ المحمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع فی اللبس ما یکرمہ...، ج ۵، ص ۳۳۱۔

امی حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں: سلک کو بعض نے کہا کہ انگریزی میں ریشم کا نام ہے۔ اگر ایسا ہو بھی تو اعتبار حقیقت کا ہے نہ کہ مجرد نام کا، برہنہ تشبیہ بھی ہوتا ہے جیسے ریشم، ہی مچھلی نہیں۔ جرمین سلور، چاندی نہیں۔ جو کپڑے رام بانس یا کسی چھال وغیرہ چیز غیر ریشم کے ہوں اگرچہ منائی سے ان کو کتھادی نرم اور چمکیلا کیا ہو مرد کو حلال ہیں اور اگر خالص ریشم کے ہوں یا باریک ریشم ہو اگرچہ تانا کچھ ہو تو حرام ہے۔ یہ امر ان کپڑوں کو دیکھ کر یا اس کا تار جلا کر دالین سے تحقیق کر کے معلوم ہو سکتا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۲، ص ۱۹۳، رض فاؤنڈیشن، لاہور)

(7) الفتاویٰ المحمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع فی اللبس ما یکرمہ...، ج ۵، ص ۳۳۱۔

(8) الدر المختار، کتاب البیض والاباح، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۸۷۔

(9) الفتاویٰ المحمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع فی اللبس ما یکرمہ...، ج ۵، ص ۳۳۱۔

(10) المرجع السابق۔

مسئلہ ۱۰: مردوں کے کپڑوں میں ریشم کی گوٹ چار انگل تک کی جائز ہے اس سے زیادہ ناجائز، یعنی اس کی چوڑائی چار انگل تک ہو، لمبائی کا شمار نہیں۔ اسی طرح اگر کپڑے کا کنارہ ریشم سے بنا ہو جیسا کہ بعض عمامے یا چادروں یا تہبند کے کنارے اس طرح کے ہوتے ہیں، اس کا بھی یہی حکم ہے کہ اگر چار انگل تک کا کنارہ ہو تو جائز ہے، ورنہ ناجائز۔ (11) یعنی جبکہ اس کنارہ کی بناوٹ بھی ریشم کی ہو اور اگر سوت کی بناوٹ ہو تو چار انگل سے زیادہ بھی جائز ہے۔ عمامہ یا چادر کے پلو ریشم سے بنے ہوں تو چونکہ بانا ریشم کا ہونا ناجائز ہے، لہذا یہ پلو بھی چار انگل تک کا ہی ہونا چاہیے زیادہ نہ ہو۔

مسئلہ ۱۱: آستین یا گریبان یا دامن کے کنارہ پر ریشم کا کام ہو تو وہ بھی چار انگل ہی تک ہو صدری یا جبہ کا ساز ریشم کا ہو تو چار انگل تک جائز ہے اور ریشم کی گھنڈیاں بھی جائز ہیں۔ ٹوپی کا طرہ بھی چار انگل کا جائز ہے، پاجامہ کا نیفہ بھی چار انگل تک کا جائز ہے، اچکن یا جبہ میں شانوں اور پیٹھ پر ریشم کے پان یا کیری چار انگل تک کے جائز ہیں۔ (12) یہ حکم اس وقت ہے کہ پان (پان کے پتے کی شکل) وغیرہ متفرق ہوں (یعنی ریشم سے بالکل ڈھکا ہوا ہو) کہ کپڑا دکھائی نہ دے اور اگر متفرق نہ ہوں تو چار انگل سے زیادہ بھی جائز ہے۔

مسئلہ ۱۲: ریشم کے کپڑے کا پیوند کسی کپڑے میں لگایا اگر یہ پیوند چار انگل تک کا ہو جائز ہے اور زیادہ ہو تو ناجائز۔ ریشم کو روئی کی طرح کپڑے میں بھر دیا گیا مگر ابرا (یعنی دوہرے کپڑے کی اوپری تہ) اور استر (یعنی دوہرے کپڑے کی نیچے کی تہ) دونوں سوتی ہوں تو اس کا پہننا جائز ہے اور اگر ابرا یا استر دونوں میں سے کوئی بھی ریشم ہو تو ناجائز ہے۔ اسی طرح ٹوپی کا استر بھی ریشم کا ناجائز ہے اور ٹوپی میں ریشم کا کنارہ چار انگل تک جائز ہے۔ (13)

مسئلہ ۱۳: ٹوپی میں لیس لگائی گئی یا عمامہ میں گونا پچکا لگایا گیا، اگر یہ چار انگل سے کم چوڑا ہے جائز ہے ورنہ نہیں۔

مسئلہ ۱۴: متفرق جگہوں پر ریشم کا کام ہے، تو اس کو جمع نہیں کیا جائے گا یعنی اگر ایک جگہ چار انگل سے زیادہ نہیں ہے مگر جمع کریں تو زیادہ ہو جائے گا یہ ناجائز نہیں، لہذا کپڑے کی بناوٹ میں جگہ جگہ ریشم کی دھاریاں ہوں تو جائز ہے، جبکہ ایک جگہ چار انگل سے زیادہ چوڑی کوئی دھاری نہ ہو۔ یہی حکم نقش و نگار کا ہے کہ ایک جگہ چار انگل سے زیادہ نہ ہوں چاہیے۔

(11) الدر المختار رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللیس، ج ۹، ص ۵۸۰۔

(12) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللیس، ج ۹، ص ۵۸۱۔

(13) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللیس، ج ۹، ص ۵۸۱۔

اور اگر پھول یا کام اس طرح بنایا ہے کہ ریشم ہی ریشم نظر آتا ہو جس کو مغرق کہتے ہیں، جس میں کپڑا نظری نہیں آتا تو اس کام کو متفرق نہیں کہا جاسکتا۔ اس قسم کا ریشم یا زری کا کام ٹوپی یا اچکن یا صدری یا کسی کپڑے پر ہو اور چار انگل سے زائد ہو تو ناجائز ہے۔ (14) دھاریوں کے لیے چار انگل سے زیادہ نہ ہونا، اس وقت ضروری ہے کہ بانے میں دھاریاں ہوں اور اگر تانے میں ہوں اور بانا سوت ہو تو چار انگل سے زیادہ ہونے کی صورت میں بھی جائز ہے۔

مسئلہ ۱۵: کپڑا اس طرح بنایا گیا کہ ایک تانگا سوت ہے اور ایک ریشم، مگر دیکھنے میں بالکل ریشم معلوم ہوتا ہے یعنی سوت نظر نہیں آتا یہ ناجائز ہے۔ (15)

مسئلہ ۱۶: سونے چاندی سے کپڑا بنایا جائے جیسا کہ بناری کپڑے میں زری بنی جاتی ہے۔ کنخواب اور پوت میں زری ہوتی ہے اور اسی طرح بناری عمامہ کے کنارے اور دونوں طرف کے حاشیے زری کے ہوتے ہیں ان کا یہ حکم ہے کہ اگر ایک جگہ چار انگل سے زیادہ ہو تو ناجائز ہے، ورنہ جائز، مگر کنخواب اور پوت میں چونکہ تانا بانا (وہ دھاگے جو کپڑا بننے میں لسانی اور چوڑائی میں دیئے جاتے ہیں) دونوں ریشم ہوتا ہے، لہذا زری اگرچہ چار انگل سے کم ہو، جب بھی ناجائز ہے۔

ہاں اگر سوتی کپڑا ہوتا یا تانہ ریشم اور بانا سوت ہوتا اور اس میں زری بنی جاتی تو چار انگل تک جائز ہوتا۔ جیسا کہ عمامہ سوت کا ہوتا ہے اور اس میں زری بنی جاتی ہے، اس کا یہی حکم ہے کہ ایک جگہ چار انگل سے زیادہ ناجائز ہے، یہ حکم مردوں کے لیے ہے۔ عورتوں کے لیے ریشم اور سونا چاندی پہننا جائز ہے، ان کے لیے چار انگل کی تخصیص نہیں۔ اسی طرح عورتوں کے لیے گوٹے لچکے، اگرچہ کتنے ہی چوڑے ہوں جائز ہیں اور مغرق (سونے چاندی سے اس طرح لپا ہو کہ اس میں کپڑا نظر نہ آئے) اور غیر مغرق کا فرق بھی مردوں ہی کے لیے ہے۔ عورتوں کے لیے مطلقاً جائز ہے۔ (16)

مسئلہ ۱۷: زری کی بناوٹ کا جو حکم ہے وہی اس کے نقش و نگار کا بھی ہے، اب بھی زری کی ٹوپیاں بعض لوگ پہنتے ہیں، اگر کام کے درمیان سے کپڑا نظر آتا ہو تو چونکہ ایک جگہ چار انگل نہیں ہے جائز ہے اور مغرق ہو کہ بالکل کام لسا ہوا ہو (یعنی بالکل ڈھکا ہوا ہو) تو چار انگل سے زیادہ ناجائز ہے۔ اسی طرح کامدانی (یعنی وہ ریشمی کپڑا جس پر سونے چاندی کے تاروں سے بوٹے کاڑھے گئے ہوں) کہ کپڑا زری کے کام سے چھپ گیا ہو تو چار انگل سے زیادہ جب ایک جگہ ہو

(14) الدر المختار رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللیس، ج ۹، ص ۵۸۲۔

(15) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللیس، ج ۹، ص ۵۸۲۔

(16) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللیس، ج ۹، ص ۵۸۲۔ وغیرہ

نا جائز ہے، ورنہ جائز۔

مسئلہ ۱۸: کمر کی پٹی ریشم کی ہو تو ناجائز ہے اور اگر سوتی ہو، اس میں ریشم کی دھاری ہو اور چار انگل تک ہو تو جائز ہے۔ (۱۷) کلاہ تو (یعنی چاندی یا سونے کے تاروں کی ڈور) کی پٹی ناجائز ہے۔ بعض روایات اپنے سپاہیوں اور چیراسیوں کی پٹیاں اس قسم کی بنواتے ہیں، ان کو بچتا چاہیے۔

مسئلہ ۱۹: ریشم کی پھردانی مرووں کے لیے بھی جائز ہے، کیونکہ اس کا استعمال پہننے میں داخل نہیں۔ (۱۸)
مسئلہ ۲۰: ریشم کے کپڑے میں تعویذ سی کر گلے میں لٹکانا یا بازو پر باندھنا ناجائز ہے کہ یہ پہننے میں داخل ہے۔ اسی طرح سونے اور چاندی میں رکھ کر پہننا بھی ناجائز ہے اور چاندی یا سونے ہی پر تعویذ کھدا ہوا ہو، یہ بدرجہ اولیٰ ناجائز ہے۔

مسئلہ ۲۱: ریشم کی ٹوپی اگر چہ عمامہ کے نیچے ہو، یہ بھی ناجائز ہے۔ اسی طرح زری کی ٹوپی بھی ناجائز ہے، اگر چہ عمامہ کے نیچے ہو۔ (۱۹) زریں کلاہ جو افغانی اور سرحدی اور پنجابی عمامہ کے نیچے پہنتے ہیں اور وہ مغرق ہوتی ہے اور اس کا کام چار انگل سے زیادہ ہوتا ہے یہ ناجائز ہے، ہاں اگر چار انگل یا کم ہو تو جائز ہے۔

مسئلہ ۲۲: ریشم کا کمر بند ممنوع ہے۔ ریشم کے ڈورے میں تسبیح گوندھی جائے تو اس کو گلے میں ڈالنا منع ہے۔ اسی طرح گھڑی کا ڈور اور ریشم کا ہو تو اس کو گلے میں ڈالنا یا ریشم کی چین کا ج میں ڈال کر لٹکانا بھی ممنوع ہے، ریشم کا ڈورا یا فیتا کلائی پر باندھنا بھی منع ہے۔ ان سب میں یہ نہیں دیکھا جائے گا کہ یہ چیز چار انگل سے کم ہے کیونکہ یہ چیز پوری ریشم کی ہے۔ سونے چاندی کی زنجیر گھڑی میں لٹکا کر اس کو گلے میں پہننا یا کاج میں لٹکانا یا کلائی پر باندھنا منع ہے۔ (۲۰) بلکہ دوسری دھات مثلاً تانبے، پیتل، لوہے وغیرہ کی چینوں کا بھی یہی حکم ہے، کیونکہ ان دھاتوں کا بھی پہننا ناجائز ہے اور اگر ان چیزوں کو لٹکانا یا نہیں اور نہ کلائی پر باندھا بلکہ جیب میں پڑی رہتی ہیں تو ناجائز نہیں کہ ان کے پہننے سے ممانعت ہے، جیب میں رکھنا منع نہیں۔

مسئلہ ۲۳: قرآن مجید کا جزدان ایسے کپڑے کا بنایا جس کا پہننا ممنوع ہے تو اس میں قرآن مجید رکھ سکتا ہے، مگر اس میں فیتا لگا کر گلے میں ڈالنا ممنوع ہے یعنی ممانعت اسی صورت میں ہے کہ جزدان ریشم یا زری کا ہو۔ (۲۱)

(۱۷) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع فی اللبس ما کرہ...، ج ۵، ص ۳۲۲۔

(۱۸) الدر المختار کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۸۳۔

(۱۹) الدر المختار رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۸۳۔

(۲۰) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۸۳۔

(۲۱) المرجع السابق، ص ۵۸۵۔

مسئلہ ۲۴: ریشم کی تھیلی میں روپیہ رکھنا منع نہیں، ہاں اس کو گلے میں لٹکانا منع ہے۔ (22)

مسئلہ ۲۵: ریشم کا بٹوا گلے میں لٹکانا منع ہے اور اُس میں چھالیا، تمباکو رکھ کر اُسے جیب میں رکھنا اور اُس میں سے کھانا منع نہیں کہ اُس کا پہننا منع ہے نہ کہ مطلقاً استعمال اور زری کے بٹوے کا مطلقاً استعمال منع ہے، کیونکہ سونے چاندی کا مطلقاً استعمال منع ہے، اس میں سے چھالیا، تمباکو کھانا بھی منع ہے۔

مسئلہ ۲۶: فساد فصد لیتے وقت (یعنی فصد کھولنے والا رگ سے خون نکالتے وقت) پٹی باندھتا ہے تاکہ رگیں ظاہر ہو جائیں، یہ پٹی ریشم کی ہو تو مرد کو باندھنا جائز ہے۔ (23)

مسئلہ ۲۷: ریشم کے مُصلے پر نماز پڑھنا حرام نہیں۔ (24) مگر اس پر پڑھنا نہ چاہیے۔

مسئلہ ۲۸: مکان کو ریشم، چاندی، سونے سے آراستہ کرنا مثلاً دیواروں، دروازوں پر ریشمی پردے لٹکانا اور جگہ جگہ قرینہ سے سونے چاندی کے ظروف و آلات (یعنی برتن اور اوزار) رکھنا، جس سے مقصود محض آرائش و زیبائش ہو تو کراہت ہے اور اگر تکبر و تفاخر سے ایسا کرتا ہے تو ناجائز ہے۔ (25) غالباً کراہت کی وجہ یہ ہوگی کہ ایسی چیزیں اگرچہ ابتداء تکبر سے نہ ہوں، مگر بالآخر عموماً ان سے تکبر پیدا ہو جایا کرتا ہے۔

مسئلہ ۲۹: فقہاء و علما کو ایسے کپڑے پہننے چاہیے کہ وہ پہچانے جائیں تاکہ لوگوں کو ان سے استفادہ (نفع اٹھانے) کا موقع ملے اور علم کی وقعت لوگوں کے ذہن نشین ہو۔ (26) اور اگر اُس کو اپنا ذاتی تشخص و امتیاز مقصود ہو تو یہ مذموم ہے۔

مسئلہ ۳۰: کھانے کے وقت بعض لوگ گھٹنوں پر کپڑا ڈال لیتے ہیں تاکہ اگر شور بائیکے تو کپڑے خراب نہ ہوں، جو کپڑا گھٹنوں پر ڈال گیا اگر ریشم ہے تو ناجائز ہے۔ ریشم کا رومال ناک وغیرہ پونچھنے یا دھو کے بعد ہاتھ مونھ پونچھنے کے لیے جائز ہے یعنی جبکہ اس سے پونچھنے کا کام لے، رومال کی طرح اُسے نہ رکھے اور تکبر بھی مقصود نہ ہو۔ (27)

مسئلہ ۳۱: سونے چاندی کے بٹن کرتے یا اچکن میں لگانا جائز ہے، جس طرح ریشم کی گھنڈی جائز ہے۔ (28)

(22) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۸۳۔

(23) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع فی اللبس ما یکرہ... إلخ، ج ۵، ص ۳۲۲۔

(24) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۸۵۔

(25) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۸۵۔

(26) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۸۶۔

(27) المرجع السابق، ص ۵۸۷-۵۸۸۔

(28) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۸۶۔

یعنی جبکہ بن بغير زنجير ہوں اور اگر زنجير والے بن ہوں تو ان کا استعمال ناجائز ہے کہ یہ زنجير زيور کے حکم میں ہے، جس کا استعمال مرد کو ناجائز ہے۔

مسئلہ ۳۲: آشوب چشم (یعنی آنکھ دکھنا) کی وجہ سے مونہ پر سیاہ ریشم کا نقاب ڈالنا جائز ہے کہ یہ عذر کی صورت ہے۔ (29) اس زمانے میں رنگین چشمے بکتے ہیں، جو دھوپ اور روشنی کے موقع پر لگائے جاتے ہیں، ایسا چشمہ ہوتے ہوئے ریشم کے استعمال کی ضرورت نہیں رہتی۔

مسئلہ ۳۳: نابالغ لڑکوں کو بھی ریشم کے کپڑے پہنانا حرام ہے اور گناہ پہنانے والے پر ہے۔ (30)

مسئلہ ۳۴: کسم یا زعفران کا رنگ ہوا کپڑا پہننا مرد کو منع ہے گہرا رنگ ہو کہ سرخ ہو جائے یا ہلکا ہو کہ زرد رہے دونوں کا ایک حکم ہے۔ عورتوں کو یہ دونوں قسم کے رنگ جائز ہیں، ان دونوں رنگوں کے سوا باقی ہر قسم کے رنگ زرد، سرخ، دھانی، بسنتی، چمپئی، نارنجی وغیرہ مردوں کو بھی جائز ہیں۔ اگرچہ بہتر یہ ہے کہ سرخ رنگ یا شوخ رنگ کے کپڑے مرد نہ پہنے، خصوصاً جن رنگوں میں زنانہ پن ہو مرد اس کو بالکل نہ پہنے۔ (31) اور یہ ممانعت رنگ کی وجہ سے نہیں بلکہ عورتوں سے تشبہ ہوتا ہے اس وجہ سے ممانعت ہے، لہذا اگر یہ علت نہ ہو تو ممانعت بھی نہ ہوگی، مثلاً بعض رنگ اس قسم کے ہیں کہ عمامہ رنگا جاسکتا ہے اور کرتہ پا جامہ اسی رنگ سے رنگا جائے یا چادر رنگ کر اوڑھیں تو اس میں زنانہ پن ظاہر ہوتا ہے تو عمامہ کو جائز کہا جائے گا اور دوسرے کپڑوں کو مکروہ۔

مسئلہ ۳۵: جس کے یہاں میت ہوئی اسے اظہار غم میں سیاہ کپڑے پہننا، بنا جائز ہے۔ (32) سیاہ بے لگانا (یعنی بازو پر سیاہ پٹی لگانا) بھی ناجائز ہے کہ اولاً تلوہ سوگ کی صورت ہے، دوم یہ کہ نصاریٰ کا یہ طریقہ ہے۔

ایام محرم میں یعنی پہلی محرم سے بارہویں تک تین قسم کے رنگ نہ پہنے جائیں، سیاہ کہ یہ رافضیوں کا طریقہ ہے اور سبز کہ یہ مبتدعین یعنی تعزیرہ داروں کا طریقہ ہے اور سرخ کہ یہ خارجیوں کا طریقہ ہے، کہ وہ معاذ اللہ اظہار مسرت کے لیے سرخ پہنتے ہیں۔ (33) (اعلیٰ حضرت قبلہ قدس سرہ،)

(29) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۸۶۔

(30) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب النکاحیہ، الباب التاسع فی اللبس، ج ۵، ص ۳۳۱۔

(31) الدر المختار رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۹۰۔

(32) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب النکاحیہ، الباب التاسع فی اللبس، ج ۵، ص ۳۳۳۔

(33) ماخوذ از فتاویٰ رضویہ، ج ۲۲، ص ۱۸۵۔

محرم میں بھی سبز عمامہ جائز ہے

شیخ طریقت، امیر اہلسنت ڈاکٹر کاظم العالیہ مزید فرماتے ہیں: صاحب بہار شریعت حضرت علامہ مفتی محمد امجد علی اعظمی علیہ رحمۃ اللہ القوی کے وصال مبارک کو (تادم تحریر) کم و بیش نصف صدی ہو چکی ہے، یقیناً ان دنوں یہ ان تینوں قوموں کی مشائست رہی ہوگی لہذا مفتی صاحب نے ان سے مشائست کی وجہ سے منع فرمایا۔ مگر اب ان تینوں میں سے صرف ایک بد مذہب فرقت کے وجود کا سلسلہ باقی ہے، باقی دونوں کا سلسلہ ختم ہو چکا ہے۔ بالفرض کوئی نادان سنی بھی ان دنوں سیاہ لباس پہنے ہوئے گزرے تو آپ کے ذہن میں یہی بات آئیگی کہ یہ اُس بد مذہب جماعت کا کوئی فرد جا رہا ہے۔ مگر سبز عمامہ شریف والے کو دیکھ کر آپ کے وہم و گمان میں بھی یہ بات نہیں آئے گی کہ وہ تعزیہ دار جا رہا ہے۔

اسی طرح اب سرخ لباس والے کو دیکھ کر خارجی نہیں کہا جاتا کہ فی زمانہ کوئی خارجی ہمارے یہاں سرخ لباس میں نظر نہیں آتا۔ لہذا محرم الحرام میں اب نہ سبز لباس ممنوع نہ ہی سرخ کی مُشائست۔ پس ثابت ہوا کہ محرم الحرام میں بھی سبز عمامہ شریف ہمارا کراہت جائز ہے۔

سبز عمامہ کو ناجائز کہنا جرات ہے

امید ہے کہ مشائست کی تعریف سمجھ میں آگئی ہوگی اور آپ بالکل اچھی طرح سمجھ گئے ہونگے کہ وہ بد مذہب لوگ جو کبھی سبز عمامے باندھا کرتے تھے اب کسی طرح بھی دیکھے نہیں جا رہے، ڈھونڈنے سے بھی نہیں ملتے، پھر بھی کھینچ تان کر سبز سبز گنبد والے، بیٹھے بیٹھے آقا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے پیارے پیارے سبز عمامے کو کسی گمراہ فرقت کے کھاتہ میں ڈال کر سبز سبز عمامہ شریف پہننے والے عاشقانِ رسول کو ناجائز فعل کا مرتکب جانتا بہت بڑی جرات ہے۔

حضرت علامہ ملا علی قاری علیہ رحمۃ اللہ الباری ”مرقاۃ شرح مشکوٰۃ“ میں قول صحابی نقل فرماتے ہیں: ”مَارَاكَ الْمُسْلِمُونَ حَسَنًا فَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ حَسَنٌ“ یعنی جس کام کو مسلمان اچھا سمجھ کر کریں (جبکہ وہ شریعت میں منع نہ ہو) تو وہ اللہ عز و جل کے نزدیک بھی اچھا ہے۔

(مرقاۃ المفاتیح، کتاب الصلوٰۃ، باب التظلیف والتکبیر، ۳/۴۸۰، تحت حدیث: ۱۳۸۵)

سبز عمامہ پسندیدہ ہے

معصوم ہو، کہ اگر سبز عمامہ شریف پر بالفرض کوئی دلیل نہ بھی ہو تب بھی یہ جائز ہے، کہ اس کے ناجائز ہونے پر کوئی دلیل نہیں اور و پر ذکر کئے گئے تو صحابی کی روشنی میں تو سبز عمامہ شریف اللہ عز و جل کی بارگاہ میں پسندیدہ بھی ٹھہرے گا کیونکہ بے شمار مسلمان اسے پسند بھی کرتے در دنیا کے مختلف ملکوں میں رہنے والے عاشقانِ رسول اسے پہنتے بھی ہیں۔ خیر دلائل بالا کی تو اس صورت میں ضرورت پڑے گی جب کہ سبز عمامہ صراحتاً ثابت نہ ہو۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ اللّٰهُ عَلَیْہِ سَلَامٌ۔ اے مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے اپنے سر اقدس پر سجا کر نہ صرف سبز عمامہ شریف کو بلکہ خود سبز رنگ کو بھی عظمت بخش دی اور آج بھی سبز سبز گنبد کی ٹھنڈی ٹھنڈی چھاؤں میں جلوہ فرما ہیں۔

دجال کی پیروی کرنے والے ستر ہزار افراد کون؟

دوسرے: مٹا ہے کہ حدیث میں ہے کہ میری امت کے ستر ہزار آدمی دجال کی پیروی کریں گے اور وہ سبزمے والے ہوں گے۔
جواب دوسرے: پیارے بھائیو! شیطان بڑا مکار و متیار ہے وہ کب چاہتا ہے کہ مسلمان نیک بنیں، اپنے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی سنتوں پر عمل کریں اگر کوئی مسلمان میری اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی سنتوں پر عمل کرنے لگتا ہے تو وہ طرح طرح کے ہتھکنڈوں کے ذریعے انہیں روکنے کی کوشش کرتا ہے، ان کے ذہنوں میں دوسرے ڈالتا ہے تاکہ لوگ اس کی جھوٹی باتوں میں آکر سبکیں اپنا جھوڑ دیں چنانچہ اسی دوسرے کو ہی لے لیجئے حالانکہ ایسی کوئی حدیث نہیں ہے کہ جس میں میری اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے یہ فرمایا ہو کہ ستر ہزار عمارے والے دجال کے پیروکار ہوں گے۔ اب جس کسی نے یہ کہا کہ ”حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا میری امت کے ستر ہزار آدمی دجال کی پیروی کریں گے اور وہ سبزمے والے ہوں گے“ اس نے نہ صرف ایک جھوٹ بولا جو کہ بذات خود گناہ ہے بلکہ میری اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم پر افتراء (جھوٹ باندھنے) کی انتہائی سخت جرات بھی کی ہے۔ حدیث شریف میں ایسے شخص کے لئے فرمایا گیا کہ وہ اپنا ٹھکانا جہنم میں بنالے چنانچہ

نبی علیہ السلام پر جھوٹ باندھنے والا جہنمی

حضرت سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: ”مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعِدًّا فَلَيْسَ مِنِّي“ یعنی جو جان بوجھ کر مجھ پر جھوٹ باندھے وہ اپنا ٹھکانا جہنم میں بنالے۔

(بخاری، کتاب العلم، باب اثم من كذب على النبي الخ، ۱/۵۷، حدیث: ۱۱۰)

اسی طرح ایک اور روایت حضرت سیدنا ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے بھی مروی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: ”جب تک تمہیں یقین علم نہ ہو میری طرف سے حدیث بیان کرنے سے بچو، جس نے جان بوجھ کر میری طرف جھوٹ منسوب کیا اسے چاہئے کہ وہ اپنا ٹھکانا جہنم میں بنالے۔“

(ترمذی، کتاب تفسیر القرآن عن رسول اللہ، باب ما جاء في الذي يفسر القرآن برأيه، ۴/۴۳۹، حدیث: ۲۹۶۰)

پیارے بھائیو! دیکھا آپ نے حدیث کے معاملے میں جھوٹ بولنے والے کے لیے سرکار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے کیسی سخت وعیدیں ارشاد فرمائی ہیں۔

دجال کی حدیث کی وضاحت

پیارے بھائیو! اب اس اصل حدیث مبارک کو ملاحظہ فرمائیے کہ جس کا غلط ترجمہ کر کے سبزمے والے، مشقان رسول کے متعلق یہ رائے قائم کی گئی ہے کہ معاذ اللہ یہ لوگ دجال کے پیروکار ہیں۔ چنانچہ حضرت سیدنا ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ روایت فرماتے ہیں: رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: ”يَتَّبِعُ الدَّجَالَ مِنْ أُمَّتِي سِتُّونَ أَلْفًا عَلَيْهِمُ السَّيِّجَاتُ“

اس روایت کی سند پر سخت کلام ہے۔

یعنی میری امت کے ستر ہزار افراد دجال کی پیروی کریں گے جن پر ”سیجان“ ہوں گی۔“

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الفتن، باب العلامات بین یدی الساعۃ الخ، الفصل الثانی، ۳۰۱/۲، حدیث: ۵۴۹۰)

پیارے بھائیو! مذکورہ روایت میں ”سیجان“ اور ”من اُمتی“ کے الفاظ قابل غور ہیں:

{۱} مذکورہ روایت میں من اُمتی سے مراد امتِ اجابت (امتِ مسلمہ) نہیں بلکہ امتِ دعوت ہے، جیسا کہ حضرت علامہ ملا علی قاری علیہ رحمۃ اللہ الباری اور شیخ عبدالحق محدث دہلوی علیہ رحمۃ اللہ القوی نے مذکور حدیث کی شرح کرتے ہوئے لکھا ہے کہ ”اُس روایت“ کہ جو حضرت سیدنا اُنس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے: اَصْفَہَانِ کے یہودی دجال کی پیروی کریں گے“ سے معلوم ہوتا ہے کہ امت سے مراد، امتِ دعوت ہے۔ (مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الفتن، باب العلامات بین یدی الساعۃ الخ، الفصل الثانی، ۳۱۷/۹، تحت الحدیث: ۵۴۹۰، اشعۃ المعات، کتاب الفتن، باب العلامات الساعۃ، الفصل الثانی، ۳۶۴/۴)

حکیم امامت حضرت مفتی احمد یار خان علیہ رحمۃ الرحمن اسی حدیث کی شرح کرتے ہوئے لکھتے ہیں: غائب یہ ہے کہ امت سے مراد امتِ دعوت ہے جن پر فرض ہے کہ حضور انور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) پر ایمان لائیں سارا عالم حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی امتِ دعوت ہے اور مسلمان امتِ اجابت۔ اس صورت میں ایسی حدیث کی شرح وہ گزشتہ حدیث ہے (جو حضرت سیدنا اُنس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے) کہ اَصْفَہَانِ کے یہودی دجال کی پیروی کریں گے۔ یہاں امتی سے مراد وہی یہود ہیں کہ وہ حضور کی امتِ دعوت ہیں اور ستر ہزار سے مراد ہزار ہا آدمی ہیں نہ کہ یہ عدد خاص۔

حضرت مفتی احمد یار خان علیہ رحمۃ الرحمن حدیثِ پاک کے اس حصہ عَلَیْہُمُ السَّیِّجَانِ (کہ ان پر سیجان ہوں گی) کی شرح میں فرماتے ہیں: یعنی میری امت کے وہ لوگ دجال کو مانیں گے (یہودی کریں گے) جو پہلے سے ہی فیشن پرست یہود و نصاریٰ کے نقال ان کی سی شکل و صورت بنانے والے یہود کا ساقشین فیشن اہل لباس پہننے والے ہوں گے انہی کا بیڑا غرق ہوگا۔ (مرآۃ المناجیح، ۳۱۷/۷)

سیجان کے لغوی معنی

{۲} ”سیجان“ عربی لفظ ہے جو کہ ”ساج“ کی جمع ہے۔ لفظ ساج کے کتب لغت میں درج ذیل معانی مذکور ہیں۔ چنانچہ ابو غنیہ مرتضیٰ زبیدی اپنی مشہور زمانہ لغت ”تاج المعرّوس“ میں فرماتے ہیں: مونے کپڑے، سیاہ رنگ کی چادر، ہبز رنگ کی چادر، تارکول و اے سیاہ دھماگے سے بنے ہوئے کپڑے، گول چادر اور مجازاً مربع یعنی چورس چادر کو ساج کہا جاتا ہے۔ (تاج المعرّوس، الجزء الاول، ص ۴۳۸)

المعجم الوسیط میں ہے: ساج ایک بہت بڑا درخت ہے جو طول و عرض میں پھیلا ہوا ہوتا ہے اور اس کے بڑے بڑے پتے ہوتے ہیں اور سیجان، ساج کی جمع ہے۔ (المعجم الوسیط، الجزء الاول، ص ۴۶۰)

حضرت علامہ ملا علی قاری علیہ رحمۃ اللہ الباری اس حدیث کی شرح میں لکھتے ہیں: سیجان سین کے کسرہ کے ساتھ ساج کی جمع ہے۔

مسئلہ ۳۶: اون اور بالوں کے کپڑے انبیائے کرام علیہم السلام کی سنت ہے۔ سب سے پہلے سلیمان علیہ الصلوٰۃ والسلام نے یہ کپڑے پہنے۔ حدیث میں ہے کہ اون کے کپڑے پہن کر اپنے دلوں کو منور کر دو کہ یہ دنیا میں مذلت ہے اور

جس سے مراد طیلان آنکھر (یعنی سبز چادر) ہے۔

(مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الفتن، باب العلامات بین یدی الساعۃ الخ، الفعل الثانی، ۹/ ۴۱۷، تحت الحدیث: ۵۴۹۰)

لغت کی معتبر کتاب "لسان العرب" میں ہے: السَّيْبَانُ الطَّيَالِسَةُ الشُّوْذُ یعنی سیاہ چادریں السَّيْبَانُ تَجْعُ سَبَاحٌ وَهُوَ الطَّيَالِسَانُ الْأَخْضَرُ یعنی سبوحان سباج کی جمع ہے جس سے مراد سبز طیلان (چادریں) ہیں۔ (لسان العرب، ۱/ ۱۹۳۰)

عربی لغت کی مشہور کتاب "المعجم" میں "طیلان" کے مختلف معانی لکھے ہیں: خاکسری رنگ کا ہونا۔ کالی چادر۔ محوشہ تحریر، میل کپڑا۔ طیلنس "سبز چادر کو کہتے ہیں جسے علماء و مشائخ استعمال کرتے ہیں۔" (المعجم، ص ۳۶۹)

اسی طرح ضخیم ترین "اردو لغت" میں ہے کہ طیلان ایک قسم کی چادر ہے جو خطیب اور قاضی کندھوں پر ڈالتے ہیں اور جنازے یا قبر کی چادر "جس کا کپڑا عام طور پر سیاہ، سفید یا مرغوانی نخل کا ہوتا ہے" کو بھی طیلان کہتے ہیں۔ (اردو لغت، ۳/ ۲۱۴، معطاً)

سیحان کا معنی سبز عمامہ ہرگز نہیں

پیارے بھائیو! آپ نے غور فرمایا کہ لفظ سیحان کے اس قدر معانی ہونے کے باوجود کسی ایک نے بھی اس کا معنی سبز عمامہ نہیں کیا بلکہ سب ہی نے اس کا ترجمہ مختلف رنگ کی چادروں کا کیا ہے لہذا اس سے سبز عمامہ کا ترجمہ کرنا حدیث مبارک کا مطلب و معنی بدلنا ہے اور جان بوجھ کر حدیث کے معانی و مطالب کو بدلنا اپنے آپ کو جہنم کا حقدار بنانا ہے۔ نیز مذکورہ حدیث میں جن ستر ہزار افراد کا تذکرہ ہے وہ مسلمان نہیں بلکہ ملکِ اصفہان کے یہودی ہوں گے جیسا کہ صحیح مسلم شریف کی حدیث میں ہے چنانچہ حضرت سیدنا انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: يَتَّبِعُ الدَّجَالَ مِنْ يَهُودٍ أَصْنَهَانَ سَبْعُونَ أَلْفًا عَلَيْهِمُ الطَّيَالِسَةُ یعنی اصفہان کے ستر ہزار یہودی دجال کی پیروی کریں گے، جن پر "طیالسہ" (یعنی سبز چادریں) ہوں گی۔ (مسلم، کتاب الفتن و الاشرار، الساعۃ، باب فی بقیۃ من احادیث الدجال، ص ۱۵۷۸، حدیث: ۴۹۴۴)

حکیم الامت حضرت علامہ مفتی احمد یار خان علیہ الرحمۃ الرحمن اس حدیث کی شرح میں لکھتے ہیں: معصوم ہوا کہ اس زمانے میں یہود و صہر اصفہان میں کثرت سے ہوں گے۔ اصفہان ایران کا مشہور شہر ہے (مفتی صاحب رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ فرماتے ہیں) میں نے وہاں کی سیر کی ہے۔ یہاں ہی دجال کا زور زیادہ ہوگا اور دجال کے پہلے مددگار و معاون یہود ہوں گے۔ بعض نے کہا کہ دجال خود یہود میں سے ہوگا۔

(مرقاۃ المفاتیح، ۷/ ۳۰۰)

پیارے بھائیو! مذکورہ بالا حدیث مبارک میں واضح طور پر موجود ہے کہ دجال کے پیروکار یہود ہوں گے ان کا تعلق اصفہان سے ہوگا لہذا اس روایت کو سبز عمامہ شریف باندھنے والے (عاشقانِ رسول) مسلمانوں پر منطبق کرنا جھوٹ اور الجھراء ہے کیونکہ حدیث میں مذکور دجال کے پیروکاروں کی مذکورہ صفات اور دعوتِ اسلامی کے عاشقانِ رسول میں پائی جانے والے اوصاف میں زمین آسمان کا فرق ہے۔

آخرت میں نور ہے۔ (34)

اور صوف یعنی اون کے کپڑے، اولیائے کاملین اور بزرگانِ دین نے پہنے اور ان کو صوفی کہنے کی ایک وجہ یہ بھی ہے کہ وہ صوف یعنی اون کے کپڑے پہنتے تھے۔ اگرچہ ان کے جسم پر کالی کالی ہوتی، مگر دل مخزنِ انوارِ الہی اور معدنِ اسرارِ نامتناہی ہوتا، مگر اس زمانے میں اون کے کپڑے بہت بیش قیمت ہوتے ہیں اور ان کا شمار لباسِ سہائے فاخرہ میں ہوتا ہے، یہ چیزیں فقرا اور غربا کو کہاں ملیں، انھیں تو امر اور دوسرا استعمال کرتے ہیں۔

فقہاء اور حدیث کا مقصد غالباً ان بیش قیمت اونی کپڑوں سے پورا نہ ہوگا، بلکہ وہی معمولی دیسی کھل جو کم وقعت سمجھے جاتے ہیں، ان کے استعمال سے وہ بات پوری ہوگی۔

مسئلہ ۳۷: پاجامہ پہننا سنت ہے، کیونکہ اس میں بہت زیادہ ستر عورت ہے۔ (35) اس کو سنت بایں معنی کہا گیا ہے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اسے پسند فرمایا اور صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم نے پہنا۔ خود حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تہبند پہنا کرتے تھے، پاجامہ پہننا ثابت نہیں۔

مسئلہ ۳۸: مرد کو ایسا پاجامہ پہننا جس کے پانچے کے اگلے حصے پشت قدم پر رہتے ہوں مکروہ ہے۔ کپڑوں میں اسبال یعنی اتنا نیچا کرتے، جبہ، پاجامہ، تہبند پہننا کہ ٹخنے چھپ جائیں ممنوع ہے، یہ کپڑے آدمی پنڈلی سے لے کر ٹخنے تک ہوں یعنی ٹخنے نہ چھپنے پائیں۔ (36)

مگر پاجامہ یا تہبند بہت اونچا پہننا آج کل وہابیوں کا طریقہ ہے، لہذا اتنا اونچا بھی نہ پہنے کہ دیکھنے والا وہابی سمجھے۔ اس زمانے میں بعض لوگوں نے پاجامے بہت نیچے پہننے شروع کر دیے ہیں کہ ٹخنے تو کیا ایڑیاں بھی چھپ جاتی ہیں، حدیث میں اس کی بہت سخت ممانعت آئی ہے، یہاں تک کہ ارشاد فرمایا: ٹخنے سے جو نیچا ہو، وہ جہنم میں ہے۔ (37)

(34) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع فی اللبس، ج ۵، ص ۳۳۳۔

شعارِ صالحین

پیارے بھائیو! بعض چیزیں بزرگانِ دین کے شعار سے ہوتی ہیں جیسا کہ اون کا لباس صوفیاء کا شعار ہے۔ چنانچہ حضرت سیدنا داتا گنج بخش علی بن عثمان بھویری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ اپنی مشہور کتاب ”کشف المحجوب“ میں فرماتے ہیں: ”مَرْقَعٌ (مَرْق - قَعْد) جینی پٹم اور اون و صوف کا مخصوص وضع قطع کا لباس جسے گدڑی کہتے ہیں صوفیہ کرام کا شعار ہے۔“ (کشف المحجوب، باب لبس المرتعات، ص ۴۳)

(35) المرجع السابق۔

(36) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع فی اللبس، ج ۵، ص ۳۳۳۔

(37) صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب ما یستعمل من اللباس فی النار، الحدیث: ۵۷۸۷، ج ۴، ص ۴۶۔

اور بعض لوگ اتنا اونچا پہنتے ہیں کہ گھٹنے بھی کھل جاتے ہیں جس کو نیکر کہتے ہیں، یہ نھرائیوں سے سیکھا ہے، اونچا پہنتے ہیں تو گھٹنے کھول دیتے ہیں اور نیچا پہنتے ہیں تو ایڑیاں چھپا دیتے ہیں۔ افراط و تفریط سے علیحدہ ہو کر مسنون طریقہ نہیں اختیار کرتے۔

بعض لوگ چوڑی دار پا جامہ پہنتے ہیں، اس میں بھی ٹخنے چھپتے ہیں اور عضو کی پوری سہا ت نظر آتی ہے۔ عورتوں کو بالخصوص چوڑی دار پا جامہ نہیں پہننا چاہیے، عورتوں کے پا جامے ڈھیلے ڈھالے ہوں اور نیچے ہوں کہ قدم چھپ جائیں، ان کے لیے جہاں تک پاؤں کا زیادہ حصہ چھپے اچھا ہے۔

مسئلہ ۳۹: موٹے کپڑے پہننا اور پرانا ہو جائے تو پیوند لگا کر پہننا اسلامی طریقہ ہے۔ (38) حدیث میں فرمایا کہ جب تک پیوند لگا کر پہن نہ لو، کپڑے کو پرانا نہ سمجھو۔ (39)

(38) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب النکاح، الباب التاسع فی اللبس، ج ۵، ص ۳۳۳۔

پیوند دار لباس کی فضیلت

حضرت سیدنا عمر بن قیس رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں، امیر المؤمنین حضرت مولائے کائنات، علی المرتضیٰ شیر خدا اکرم اللہ تعالیٰ و وجہہ الکریم کی خدمت با نزکت میں عرض کی گئی، آپ اپنی قمیص میں پیوند کیوں لگاتے ہیں؟ فرمایا، اس سے دل نرم رہتا ہے اور مومن اس کی پیروی کرتا ہے (یعنی مومن کا دل نرم ہی ہونا چاہئے) (حلیۃ الاولیاء ج ۱ ص ۱۲۳ حدیث ۲۵۴)

پیوند والے کپڑے صالحین کا شعار

حضرت علامہ عبد الرہمن بن مناد علیہ رحمۃ اللہ القوی فرماتے ہیں: امیر المؤمنین حضرت سیدنا عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے طواف فرمایا تو آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے لباس مبارک پر چڑے کے بارہ پیوند تھے۔ دیگر خلفاء بھی پیوند لگے کپڑے زیب تن فرماتے تھے۔ مزید فرماتے ہیں: وَذَٰلِكَ شِعَارُ الصَّالِحِينَ وَ سُنَّةُ الْمُتَّقِينَ حَتَّى رَأَيْتُ الصُّوفِيَّةَ شِعَاراً یعنی: یہ صالحین کا شعار اور متقین کی سنت ہے، حتیٰ کہ صوفیاء کرام نے پیوند والے کپڑوں کو اپنا شعار بنالیا۔ (فیض القدير، حرف المزمز، ۳/۳۶، تحت حدیث: ۲۶۵۶)

اسی طرح سے اہلسنت کے شعار بھی ہیں کہ جن سے سنیت (اہل سنت و جماعت) کی پہچان ہو جیسے افضلیت شیخین کا قائل ہونا، موزوں پر مسح کرنا، بعد جمعہ صلوٰۃ و سلام پڑھنا، میلاد النبی کے جلوس و محافل کا انعقاد اور اس میں شرکت، وقت مولود قیام وغیرہ۔

حضرت عائشہ کو حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی وصیت:

حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کو وصیت فرمائی: اگر تم مجھ سے ملاقات کی خواہشمند ہو تو فقراء جیسی زندگی بسر کرنا، دولت مندوں کی محفلوں سے علیحدہ رہنا اور اوڑھنی کو پیوند لگائے بغیر نہ اتارنا۔

(ترمذی، کتاب اللباس، باب ما جاء فی ترویج الثوب، ۳/۳۰۲، الحدیث ۱۷۸۷)

(39) سنن الترمذی، کتاب اللباس، باب ما جاء فی ترویج الثوب، الحدیث: ۱۷۸۷، ج ۳، ص ۳۰۲۔

اور بہت باریک کپڑے نہ پہنے جس سے بدن کی رنگت جھلکے، خصوصاً تہبند کہ اگر یہ باریک ہے تو ستر عورت نہ ہو سکے گا۔ اس زمانہ میں ایک یہ بلا بھی پیدا ہو گئی ہے کہ ساڑی کا تہبند پہنتے ہیں جس سے بالکل ستر عورت نہیں ہوتا اور اسی کو پہن کر بعض لوگ نماز بھی پڑھتے ہیں اور ان کی نماز بھی نہیں ہوتی کہ ستر عورت نماز میں فرض ہے۔ بعض لوگ پاجامہ اور تہبند کی جگہ دھوتی باندھتے ہیں، دھوتی باندھنا ہندوؤں کا طریقہ ہے اور اس سے ستر عورت بھی نہیں ہوتا، چلنے میں ران کا پچھلا حصہ کھل جاتا ہے اور نظر آتا ہے۔

مسئلہ ۴۰: سدل یعنی سریا شانے پر کپڑا ڈال کر اس کے کنارے لٹکائے رکھنا نماز میں مکروہ ہے، جس کا بیان گزر چکا مگر نماز میں نہ ہو تو مکروہ ہے یا نہیں اس میں تفصیل یہ ہے کہ اگر کرتہ یا پاجامہ یا تہبند پہنے ہوئے ہے اور چادر کو سریا شانوں سے لٹکا دیا تو مکروہ نہیں اور اگر کرتہ نہیں پہنے ہوئے ہے تو سدل مکروہ ہے۔ (40)

مسئلہ ۴۱: پوتین (یعنی کھال کا کوٹ یا گرتہ) پہننا جائز ہے۔ بزرگانِ دین، علما و مشائخ نے پہنی ہے۔ جو جانور حلال نہیں، اگر اس کو ذبح کر لیا ہو یا اس کے چمڑے کی دباغت کر لی ہو تو اس کی پوتین بھی پہنی جاسکتی ہے اور اس کی ٹوپی اوڑھی جاسکتی ہے، مثلاً لومڑی کی پوتین یا سمور کی پوتین کہ بلی کی شکل کا ایک جانور ہوتا ہے جس کی پوتین بنائی جاتی ہے۔ اسی طرح سنجاب کی پوتین، یہ گھونس (یعنی بڑا چوہا) کی شکل کا جانور ہوتا ہے۔ (41)

حکیم الامت کے مدنی پھول

یہ انتہائی قناعت کی تعلیم ہے کہ بیوند والے کپڑے پہننے میں عار نہ ہو۔ حضرت انس فرماتے ہیں کہ میں نے حضرت عمر رضی اللہ عنہ کو دیکھا کہ جب کہ آپ خیفۃ المسلمین تھے کہ آپ کے کپڑوں میں اوپر تلے تین بیوند ایک جگہ پر لگے تھے کہ بیوند گل گیا تو اور لگایا حضرت عمر نے اپنی خلعت کے زمانہ میں خطبہ دیا اس وقت آپ کے تہبند شریف میں بارہ بیوند تھے۔ (مرقات) مقصد یہ ہی ہے کہ بیوند والے کپڑے کے پہننے میں عار نہ ہونی چاہیے لہذا یہ حدیث ان احادیث کے خلاف نہیں جہاں ارشاد ہے کہ رب کی نعمت کا اثر تم پر ظاہر ہو یا فرمایا کہ نیا کپڑا پاؤ تو پرانا خیرات کر دو۔ ابن عساکر نے حضرت ابویوب انصاری سے روایت کی کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم گدھے کی سواری فرما لیتے تھے، ہاں تعلین پا خود سی لیتے تھے، اپنی قمیض میں بیوند لگا لیتے تھے اور پہن لیتے تھے اور فرماتے تھے کہ جو میری سنت سے نفرت کرے وہ میری جماعت سے نہیں۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۹۰)

(40) الفتاویٰ، مکتبہ، کتاب الکرہیۃ، الباب التاسع فی اللبس، ج ۵، ص ۳۳۳۔

(41) الفتاویٰ، مکتبہ، کتاب الکرہیۃ، الباب التاسع فی اللبس، ج ۵، ص ۳۳۳۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت، الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

اقول: جو کچھ ہم بیچ کے جواز میں ذکر کریں گے اس کا اخطار کرو اور جستجو کرو گے جان لو گے (ت) واما الفقہ: فنقول نقول کثیرۃ

بثبیرۃ شائع فی کتب المذہب متونا و شروحا و فتاویٰ رہا فقہ کے بارے، تو ہم کہتے ہیں کتب مذہب میں چاہے

مسئلہ ۴۲: درندہ جانور شیر چیتا وغیرہ کی پوستیں میں بھی حرج نہیں اس کو پہن سکتے ہیں، اس پر نماز پڑھ سکتے ہیں۔ (42) اگرچہ افضل اس سے بچنا ہے۔ حدیث میں چیتے کی کھال پر سوار ہونے کی ممانعت آئی ہے۔ (43)

مسئلہ ۴۳: ناک مونہ پونچھنے کے لیے رومال رکھنا یا وضو کے بعد ہاتھ مونہ پونچھنے کے لیے رومال رکھنا جائز ہے، اسی طرح پسینہ پونچھنے کے لیے رومال رکھنا جائز ہے اور اگر براہ تکبر ہو تو منع ہے۔ (44)



وہ متون شروع ہوں یا فتاویٰ، ان میں اس مسئلہ کا بکثرت ذکر ہے۔ (ت)

مختصر (۱) قدوری و ہدایہ (۲) وقایہ (۳) وقایہ (۴) مختار (۵) وکنز (۶) ودائی (۷) واصلح (۸) دنور الیضاح (۹) وملتقى (۱۰) دتویر وغیرہ عامہ متون میں تصریح صریح ہے کہ:

کل اہاب دبغ فقد طهر الا جلد الخنزیر والادھی ۳۔ (۳) المختصر للقدوری کتاب الطہارۃ مطبوعہ مجیدی کانیورس ۷)

خنزیر اور آدمی کے چمڑے کے علاوہ جس چمڑے کو بھی دباغت دی جائے وہ پاک ہو جاتا ہے (ت)

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۴، ص ۱۵۱۵ رضانی ڈسٹریکشن، لاہور)

(42) المرجع السابق.

(43) المصنف عبدالرزاق، کتاب الطہارۃ، باب جلود البہائم، رقم: ۲۲۰، ج ۱، ص ۵۴.

(44) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع فی اللبس، ج ۵، ص ۳۳۳.

عمامہ کا بیان

عمامہ باندھنا سنت ہے، خصوصاً نماز میں کہ جو نماز عمامہ کے ساتھ پڑھی جاتی ہے، اس کا ثواب بہت زیادہ ہوتا ہے۔ عمامہ کے متعلق چند حدیثیں اوپر ذکر کی جا چکی ہیں۔

مسئلہ ۱: عمامہ باندھے تو اس کا شملہ پیٹھ پر دونوں شانوں کے درمیان لٹکالے۔ شملہ کتنا ہونا چاہیے اس میں اختلاف ہے، زیادہ سے زیادہ اتنا ہو کہ بیٹھنے میں نہ دبے۔ (۱) بعض لوگ شملہ بالکل نہیں لٹکاتے، یہ سنت کے خلاف

(۱) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع فی اللبس، ج ۵، ص ۳۳۰۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

عمامہ حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی سنت متواترہ ہے جس کا تواتر یقیناً سرحد ضروریات دین تک پہنچا ہے ولہذا علمائے کرام نے عمامہ تو عمامہ اور سبب عذہ یعنی شملہ چھوڑنا کہ اس کی فرع اور سنت غیر موکدہ ہے یہاں تک کہ مرقاۃ میں فرمایا:

قد ثبت فی السیر بروایات صحیحۃ ان النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کان یرخی علامتہ احیاناً بلبس کتفیہ و احیاناً یلبس العمامۃ من غیر علامۃ فعلم ان الاتیان بکل واحد من تلك الامور سنة۔

(۱) مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوٰۃ المصابیح والفصل الثانی من کتاب اللباس مطبوعہ مکتبہ امدادیہ ملتان ۸/ ۲۵۰

کتب ہیر میں روایات صحیحہ سے ثابت ہے کہ نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بھی عمامہ کا شملہ دونوں کاندھوں کے درمیان چھوڑتے بھی بغیر شملہ کے باندھتے۔ اس سے یہ واضح ہو جاتا ہے کہ ان امور میں سے ہر ایک کو بجالانا سنت ہے (ت)

اس کے ساتھ استہزاء کو کفر ظہریٰ یا کما نص علیہ الفقہاء الکرام و امر و ابتر کہ حیث استھزئ بہ العوام کیلئے بقوا فی الصلاک بسوء الکلام (جیسا کہ فقہاء کرام نے اس پر تصریح کی ہے اور وہاں اسکے ترک کا حکم دیا جہاں عوام اس پر مذاق کرتے ہوں تاکہ وہ اس کلام بد سے ہلاکت میں نہ پڑیں۔ ت) تو عمامہ کہ سنت لازمہ داعمہ یہاں تک کہ علماء نے خالی ٹوپی پہننے کو مشرکین کی وضع قرار دیا اور حدیث آتی رکانتے رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو اس پر حمل کیا۔ علامہ علی قاری نے شرح مشکوٰۃ میں فرمایا: لم یروا نہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لبس القلنسوة بغیر العمامۃ فیتعین ان یکون هذا زی المشرکین ۲۔ یعنی اصلاً مروی نہ ہوا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے کبھی بغیر عمامہ کے ٹوپی پہنی ہو، متعین ہوا کہ یہ کافروں کی وضع ہے (ت)

(۲) مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوٰۃ المصابیح والفصل الثانی من کتاب اللباس مطبوعہ مکتبہ امدادیہ ملتان ۸/ ۲۵۰

اس میں بعد ذکر بعض احادیث فضیلت عمامہ ہے:

هذا كله يدل على فضلية العمامة مطلقاً نعم مع القلنسوة افضل فلبسها وحدها مخالف للسنۃ کیف ←

ہے اور بعض شملہ کو اوپر لا کر عمامہ میں گھرس دیتے ہیں، یہ بھی نہ چاہیے خصوصاً حالت نماز میں ایسا ہے تو نماز مکروہ ہوگی۔

وہی زی الکفرۃ و کذا المبتدعة فی بعض المملدان ۳۔

یعنی ان سب سے عمامہ کی فضیلت مطلقاً ثابت ہوئی اگرچہ بے ٹوپی ہو، ہاں ٹوپی کے ساتھ افضل ہے اور خالی ٹوپی خلاف سنت ہے، اور کیونکر نہ ہو کہ کافروں اور بعض بلاد کے بد مذہبوں کی وضع ہے (ت)

(۳۔ مرآۃ الفائق شرح مشکوٰۃ المصابیح والفصل الثانی من کتاب اللباس مطبوعہ مکتبہ امدادیہ ملتان ۸/۲۵۰)

اس کا انکار کس درجہ اشد و اکبر ہوگا اس کا سنت ہونا متواتر ہے اور سنت متواتر کا استغفاف کفر ہے۔

وجیز کردری پھر نہر القائق پھر رد المحتار میں ہے:

لولہ یر السنة حقاً کفر لانه استغفاف ۱۔

اگر کوئی شخص سنت کو حق و سچ نہیں جانتا تو اس نے کفر کیا کیونکہ یہ اسکا استغفاف ہے۔ (ت)

(۱۔ الفتاویٰ البرازیہ مع الفتاویٰ الہندیہ نوع فی السنن من کتاب الصلوٰۃ مطبوعہ نورانی کتب خانہ پشاور ۲/۲۸)

عمامہ کی فضیلت میں احادیث کثیرہ وارد ہیں بعض اُن سے کہ اس وقت چش نظر ہیں مذکور ہوتی ہیں:

حدیث اول: سنن ابی داؤد و جامع ترمذی میں رکابہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

فرق ما بیننا و بین المشرکین العمامۃ علی القلائس ۲۔

ہم میں اور مشرکوں میں فرق ٹوپیوں پر عمامے ہیں۔ (ت) (۲۔ سنن ابی داؤد باب العمامۃ مطبوعہ آفتاب عالم پریس لاہور ۲/۲۰۸)

علامہ مناوی تفسیر شرح جامع صغیر میں اس حدیث کے نیچے لکھتے ہیں:

فالمسلمون یلبسون القلنسوة وفوقها العمامۃ اما لبس القلنسوة وحدھا فزی المشرکین فلبس العمامۃ

سنة ۳۔

مسلمان ٹوپیاں پہن کر اوپر سے عمامہ باندھتے ہیں تھا ٹوپی کافروں کی وضع ہے تو عمامہ باندھنا سنت ہے۔

(۳۔ التفسیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث فرق ما بیننا الخ مکتبہ الامام شافعی الریاض ۲/۱۶۹)

یہی حدیث باوردی نے ان لفظوں میں روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

العمامة علی القلنسوة فصل ما بیننا و بین المشرکین یعطی یوم القیمة بکل کورة یدروها علی راسه

نوراً ۴۔

ٹوپی پر عمامہ ہمارا اور مشرکین کا فرق ہے ہر بیچ کہ مسلمان اپنے سر پر دے گا اس پر روز قیامت ایک نور عطا کیا جائے گا۔

(۴۔ کنز العمال بحوالہ باوردی عن رکابہ فرغ فی العمامۃ مطبوعہ منشورات مکتبہ التراث اسلامی بیروت ۱۵/۳۰۵)

حدیث ۲ و ۳: تفسیر مسند شہاب میں امیر المومنین مولیٰ علی کرم اللہ وجہہ الکریم سے اور دیلمی مسند الفردوس میں مولیٰ علی و عبد اللہ ۵۔

بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: العباءم تیجان العرب ۵۔ (عمائے عرب کے تاج ہیں)۔ (۵۔ الفردوس بماثور الخطاب ج ۶ ص ۲۲۶ مطبوعہ دارالکتب العلمیۃ بیروت ۸۷/۳)

حدیث ۴: مسند الفردوس میں انس ابن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: العباءم تیجان العرب فاذا وضعوا العباءم وضعوا عزهم اوفی لفظ وضع اللہ عزہم۔ عمائے عرب کے تاج ہیں جب عمامہ چھوڑ دیں تو اپنی عزت اتار دیں گے۔ اور ایک روایت میں ہے کہ اللہ تعالیٰ ان کی عزت اتار دے گا۔

(۱۔ الجامع الصغیر مع فیض القدیر بحوالہ مسند فردوس عن ابن عباس مطبوعہ دارالمعرفۃ بیروت ۳۹۲/۳)

حدیث ۵: ابن عدی امیر المؤمنین مولیٰ علی کرم اللہ وجہہ الکریم سے راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: ایتوا المساجد حشراً ومقنعین فان العباءم تیجان المسلمین ۲۔ مسجدوں میں حاضر ہو سر برہنہ اور عمامے باندھے اس لئے کہ عمامہ مسلمانوں کے تاج ہیں۔ (۲۔ انکال فی ضعفاء الرجال اسامی شخی ممن ابتداء اسامیہم بسم المکتبۃ الاثریہ سانکلہ بل شیخوپورہ ۶/۲۳۱۳)

حدیث ۶: طبرانی معجم کبیر اور حاکم مستدرک میں حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اعتصموا تزدادوا حلماً ۳۔ صحیحہ الحاکم۔

عمامہ باندھو تمہارا علم بڑھے گا۔ (حاکم نے اسے صحیح قرار دیا۔ ت)

(۳۔ المعجم الکبیر باب ما جاء فی لباس العباءم المطبوعہ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۱/۱۹۴)

حدیث ۷: ابن عدی کامل و بیہقی شعب الایمان میں اسامہ بن عمیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اعتصموا تزدادوا حلماً والعباءم تیجان العرب ۴۔ وروی عنہ الطبرانی صمدۃ و اشار المناوی الی تقویۃ۔

عمامہ باندھو تمہارا زیادہ ہوگا اور عمامے عرب کے تاج ہیں؛ طبرانی نے اس کا ابتدائی حصہ روایت کیا، امام مناوی نے اس کا قوی ہونا بیان کیا ہے (ت) (۴۔ شعب الایمان ج ۱ ص ۶۲۶۰ مطبوعہ دارالکتب العربیۃ بیروت ۵/۱۷۶)

حدیث ۸: ربیعہ عمران بن حصین رضی اللہ تعالیٰ عنہ وان اسلم حصین فصمما سے راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

العباءم وقار المؤمن وعز العرب فاذا وضعت عمامہا وضعت عزها ۵۔

عمامے مسلمان کے وقار اور عرب کی عزت ہیں تو جب عرب عمامے اتار دیں اپنی عزت اتار دیں گے۔

(۱۔ الفردوس بماثور الخطاب بحوالہ ابن عباس حدیث ۷۲۳۷ مطبوعہ دارالکتب العربیۃ بیروت ۳/۸۸)

حدیث ۹: وہی رکانہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لا تزال امة على الفطرة ما لبسوا العباء على القلائس ۲۔
میری امت ہمیشہ دین حق پر رہے گی جب تک وہ ٹوپیوں پر عمامے باندھیں۔

(۲) الفردوس بجا اثر الخطاب بحوالہ عن ابن عباس حدیث ۷۵۶۹ مطبوعہ دار الکتب العربیہ بیروت ۵/ ۹۳
حدیث ۱۰: ابو بکر ابن ابی شیبہ مصنف اور ابو داؤد و طحاوی و ابن منیع مسانید اور بیہقی سنن میں امیر المومنین مولیٰ علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی
کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

ان الله امدني يوم بدر وحنين بمثل هذه العبة وقال ان العمامة حائزة بين الكفر والایمان ۳۔
بیشک اللہ عزوجل نے بدر و حنین کے دن ایسے ملائکہ سے میری مدد فرمائی جو اس طرز کا عمامہ باندھتے ہیں بیشک عمامہ کفر و ایمان میں قارق
ہے۔ (۳) السنن الکبریٰ للبیہقی باب التحریض علی الریم مطبوعہ دار صادر بیروت ۱۰/ ۱۴
حدیث ۱۱: ویلمی مسند الفردوس میں عبدالاعلیٰ بن عدی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا:

هكذا فاعتصموا فان العمامة سيماء الاسلام وهي حائزة بين المسلمين والمشرکین ۴۔

(۴) کنز العمال بحوالہ الدیلمی حدیث ۲۱۹۱۱ مطبوعہ منشورات مکتبۃ التراث الاسلامی حلب بیروت ۱۵/ ۳۸۳
حدیث ۱۲: ابن شاذان اپنی مشیخت میں مولیٰ علی کرم اللہ وجہہ الکریم سے راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے عمامہ کی طرف اشارہ
کر کے فرمایا: هكذا تكون تيجان الملأكة ۵۔ فرشتوں کے تاج ایسے ہوتے ہیں۔

(۵) کنز العمال بحوالہ ابن شاذان فی مشیختہ حدیث ۲۹۱۳ مطبوعہ منشورات مکتبۃ التراث الاسلامی حلب بیروت ۵/ ۳۸۳
حدیث ۱۳ و ۱۴: طبرانی کبیر میں عبد اللہ بن عمر اور بیہقی شعب میں عبادہ بن مسامت رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ
علیہ وسلم فرماتے ہیں:

عليكم بالعمائم فانها سيماء الملأكة وارضوا لها خلف ظهوركم ۶۔
عمامے اختیار کرو کہ وہ فرشتوں کے شعار ہیں اور ان کے شملے اپنے پس پشت چھوڑو۔

(۶) المعجم الکبیر حدیث ۱۳۴۱۸ مطبوعہ المکتبۃ الفیصلیہ بیروت ۲/ ۳۸۳
حدیث ۱۵: ابو عبد اللہ محمد بن وضاح فضل لباس العمام میں خالد بن معدان سے مرسل راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

ان الله تعالى اكرم هذه الامة بالعصائب الحديث ۱۔
بیشک اللہ عزوجل نے اس امت کو عماموں سے مکرم فرمایا، الحدیث

(۱) کنز العمال فی سنن الاقوال والافعال حدیث ۲۱۱۳۵ مطبوعہ منشورات مکتبۃ التراث الاسلامی حلب بیروت ۵/ ۳۰۷
حدیث ۱۶: بیہقی شعب الایمان میں انہی سے راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: اعتصموا خالفوا علی ۲۔

مسئلہ ۲: عمامہ کو جب پھر سے باندھنا ہو تو اسے اتار کر زمین پر پھینک نہ دے، بلکہ جس طرح لپیٹا ہے اسی طرح

الامم قبلکم ۲۔ عمامے باندھو اگلی امتوں یعنی یہود و نصاریٰ کی مخالفت کرو کہ وہ عمامہ نہیں باندھتے۔

(۲۔ شعب الایمان حدیث ۶۲۶۱ مطبوعہ دارالکتب العلمیۃ بیروت ۵/۱۷۶)

حدیث ۱۷: معجم کبیر طبرانی میں ہے:

حدثنا محمد بن عبد الله الحضرمي حدثنا العلاء بن عمرو الحنفی حدثنا ايوب بن مديك عن مكحول عن ابی الدرداء رضي الله تعالى عنه قال قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم ان الله عز وجل وملئكته يصلون على اصحاب العمامة يوم الجمعة ۳۔

بیان کیا محمد بن عبد اللہ حضرمی نے، بیان کیا العلاء بن عمرو الحنفی نے، بیان کیا ایوب بن مدرک سے مکحول سے ابوالدرداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے کہ فرمایا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے کہ بیشک اللہ تعالیٰ اور اس کے فرشتے درود بھیجتے ہیں جمعہ کے روز عمامہ والوں پر۔

(۳۔ مجمع الزوائد بحوالہ معجم کبیر باب اللباس للجمعة مطبوعہ دارالکتب بیروت ۲/۱۷۶)

حدیث ۱۸: ویلیس انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

الصلاة في العمامة تعدل بعشر آلاف حسنة ۴۔ فیہ ابان۔

عمامہ کے ساتھ نماز دس ہزار نیکی کے برابر ہے۔ (اس کی سند میں ابان راوی ہے۔ ت)

(۴۔ الفردوس بماثور الخطاب حدیث ۳۸۰۵ مطبوعہ دارالکتب العلمیۃ بیروت ۲/۴۰۶)

نوٹ: جس کتاب سے حدیث کا حوالہ دیا گیا ہے اس میں تعدل کا لفظ نہیں ہے۔ نذیر احمد سعیدی

حدیث ۱۹: زائمر مزی کتاب الامثال میں معاذ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

العمائم تیجان العرب فاعتبوا تزادوا حلما ومن اعتم فله بكل كور حسنة فاذا حط فله بكل حطة خط خطیئة ۵۔

عمامے عرب کے تاج ہیں تو عمامہ باندھو تمہارا دقار بڑھے گا اور جو عمامہ باندھے اس کے لئے ہر بیچ پر ایک نیکی اور جب (بلا ضرورت یا ترک کے قصد پر) اتارے تو ہر اتارنے پر ایک خطا ہے یا جب (بضرورت بلا قصد ترک بلکہ با ارادہ معاودت) اتارے تو ہر بیچ اتارنے پر ایک گناہ اترے۔ (۱۔ کنز العمال بحوالہ الراہر مزی فی الامثال حدیث ۴۱۱۳۶ مطبوعہ منشورات مکتبۃ الاسلامیہ حلب بیروت ۱۵/۳۰۸)

دونوں محتمل ہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم!

والحدیث اشد ضعفا فیہ ثلاثة مترکون معہم عمرو بن الحصین عن ابی علاثة عن ثویر (اللہ تعالیٰ ہی بہتر جانتا ہے۔ اس حدیث میں شدید قسم کا ضعف ہے کیونکہ اس کے تین راوی مترک و مہتم ہیں انھوں نے ابو علاثہ سے اور انہوں نے ثویر سے روایت

اودھڑا جائے۔ (2)

مسئلہ ۳: ٹوپی پہننا خود حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے ثابت ہے۔ (3) مگر حضور عالیہ الصلوٰۃ والسلام عمامہ بھی باندھتے تھے یعنی عمامہ کے نیچے ٹوپی ہوتی اور یہ فرمایا کہ ہم میں اور ان میں فرق ٹوپی پر عمامہ باندھنا ہے۔ (4) یعنی ہم دونوں چیزیں رکھتے ہیں اور وہ صرف عمامہ ہی باندھتے ہیں، اس کے نیچے ٹوپی نہیں رکھتے۔ چنانچہ یہاں کے کفار بھی اگر پگڑی باندھتے ہیں تو اس کے نیچے ٹوپی نہیں پہنتے۔

بعض نے حدیث کا یہ مطلب بیان کیا کہ صرف ٹوپی پہننا مشرکین کا طریقہ ہے، مگر یہ قول صحیح نہیں کیونکہ مشرکین عرب بھی عمامہ باندھا کرتے تھے۔

مرقاۃ شرح مشکوٰۃ میں مذکور ہے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا چھوٹا عمامہ سات ہاتھ کا اور بڑا عمامہ بارہ ہاتھ کا تھا۔ (5) بس اسی سنت کے مطابق عمامہ رکھے، اس سے زیادہ بڑا نہ رکھے۔ بعض لوگ بہت بڑے عمامے باندھتے ہیں، ایسا نہ کرے کہ سنت کے خلاف ہے۔ مارداڑ کے علاقے میں بہت سے لوگ پگڑیاں باندھتے ہیں، جو بہت کم چوڑی ہوتی ہیں اور چالیس پچاس گز لمبی ہوتی ہیں، اس طرح کی پگڑیاں مسلمان نہ باندھیں۔



حدیث ۲۰: مسند الفردوس میں جابر بن عبد اللہ انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

رکعتان بعمامة خیر من سبعین رکعة بلا عمامة ۲۔

(۲) الفردوس بماثور الخطاب حدیث ۳۲۳۳ مطبوعہ دار الکتب العلمیۃ بیروت ۲/۲۶۵

عمامہ کے ساتھ دو رکعتیں بے عمامے کی ستر رکعتوں سے افضل ہیں۔ (فتاویٰ رضویہ، جلد ۶، ص ۲۰۹، ۲۱۳ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(2) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب النکاح، الباب التاسع فی اللبس... إلخ، ج ۵، ص ۳۳۰۔

(3) المرجع السابق۔

(4) سنن الترمذی، کتاب اللباس، باب العمامۃ علی الثقلان، الحدیث: ۱۷۹۱، ج ۳، ص ۳۰۵۔

(5) مرقاۃ الفاتحہ شرح مشکاۃ المصابیح، کتاب اللباس، الباب الثانی، تحت الحدیث: ۴۳۴۰، ج ۸، ص ۱۲۸۔

متفرق مسائل

بزرگانِ دین، اولیا و صالحین کے مزاراتِ طیبہ پر غلاف ڈالنا جائز ہے، جبکہ یہ مقصود ہو کہ صاحبِ مزار کی وقعت نظر عوام میں پیدا ہو، اُن کا ادب کریں اُن کے برکات حاصل کریں۔ (1)

مسئلہ ۴: یادداشت کے لیے یعنی اس غرض سے کہ بات یاد رہے بعض لوگ رد مال یا کمر بند میں گرہ لگاتے ہیں یا کسی جگہ انگلی وغیرہ پر ڈورا باندھ لیتے ہیں، یہ جائز ہے اور بلا وجہ ڈورا باندھ لینا مکروہ ہے۔ (2)

مسئلہ ۵: گلے میں تعویذ لٹکانا جائز ہے، جبکہ وہ تعویذ جائز ہو یعنی آیاتِ قرآنیہ یا اسماءِ الہیہ (اللہ تعالیٰ کے ناموں) یا ادعیہ (دعاؤں) سے تعویذ کیا جائے اور بعض حدیثوں میں جو ممانعت آئی ہے، اس سے مراد وہ تعویذات ہیں جو ناجائز الفاظ پر مشتمل ہوں، جو زمانہ جاہلیت میں کیے جاتے تھے، اسی طرح تعویذات اور آیات و احادیث و ادعیہ کو رکابی میں لکھ کر مریض کو بہ نیت شفا پلانا بھی جائز ہے۔ جنہو حائض و نفسا بھی تعویذات کو گلے میں پہن سکتے ہیں، بازو پر باندھ سکتے ہیں جبکہ غلاف میں ہوں۔ (3)

(1) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۹۹۔

مزارات پر چادر چڑھانا

امام اہلسنت امام احمد رضا خان محدث بریلی علیہ الرحمہ سے مزارات پر چادر چڑھانے کے متعلق دریافت کیا تو جواب دیا جب چادر موجود ہو اور ہنوز پرانی یا خراب نہ ہوئی کہ بدلنے کی حاجت ہو تو بیکار چادر چڑھانا فضول ہے بلکہ جو دام اس میں صرف کریں اللہ تعالیٰ کے ولی کی روح مبارک کو ایصالِ ثواب کے لئے محتاج کو دیں (احکام شریعت حصہ اول ص 42)

(2) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۹۹۔

(3) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۶۰۰۔

علیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

تعویذات بیشک احادیث اور ائمہ قدیم و حدیث سے ثابت، اور اس کی تفصیل ہمارے فتاویٰ افریقہ میں ہے، تعویذات اسماءِ الہی و کلامِ الہی و ذکرِ الہی سے ہوتے ہیں ان میں اثر نہ ماننے کا جواب وہی بہتر ہے جو حضرت شیخ ابوسعید الخیر قدس سرہ العزیز نے ایک طرد کو دیا جس نے تعویذات کے اثر میں کلام کیا حضرت قدس سرہ نے فرمایا: تو عجیب گدھا ہے۔ وہ دنیوی بڑا مغرور تھا یہ لفظ سنتے ہی اس کا چہرہ سرخ ہو گیا اور گردن کی رگیں پھول گئیں اور بدن غلیظ سے کانپنے لگا اور حضرت سے اس فرمانے کا شکی ہوا، فرمایا میں نے تمہارے سوال کا —

مسئلہ ۶: پھونے یا مٹانے پر کچھ لکھا ہوا ہو تو اس کو استعمال کرنا ناجائز ہے۔ یہ عبارت اس کی بناوٹ میں ہو یا کاڑھی مٹی ہو (یعنی کڑھائی کی مٹی ہو) یا روشنائی سے لکھی ہو، اگرچہ حروف مفردہ لکھے ہوں کیونکہ حروف مفردہ (یعنی جدا جدا لکھے ہوئے حروف) کا بھی احترام ہے۔ (4) اکثر دسترخوان پر عبارت لکھی ہوتی ہے ایسے دسترخوانوں کو استعمال میں لانا، ان پر کھانا کھانا نہ چاہیے۔ بعض لوگوں کے تکیوں پر اشعار لکھے ہوتے ہیں، ان کا بھی استعمال نہ کیا جائے۔

مسئلہ ۷: بعض کاشتکار اپنے کھیتوں میں کپڑا لپیٹ کر کسی لکڑی پر لگا دیتے ہیں، اس سے مقصود نظیر بد سے کھیتوں کو بچانا ہوتا ہے کیونکہ دیکھنے والے کی نظر پہلے اس پر پڑے گی، اس کے بعد زراعت پر پڑے گی اور اس صورت میں زراعت کو نظر نہیں لگے گی، ایسا کرنا ناجائز نہیں کیونکہ نظر کا لگنا صحیح ہے، احادیث سے ثابت ہے، اس کا انکار نہیں کیا جاسکتا۔ حدیث میں ہے کہ جب اپنی یا کسی مسلمان بھائی کی چیز دیکھے اور پسند آئے تو برکت کی دعا کرے یہ کہے:

تَبَارَكَ اللهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ اللَّهُمَّ بَارِكْ فِيهِ.

یا اردو میں یہ کہہ دے کہ اللہ (عزوجل) برکت کرے۔ اس طرح کہنے سے نظر نہیں لگے گی۔ (5)

جواب دیا ہے کہ جسے کے نام کا اثر تم نے مشاہدہ کر لیا کہ تمہارے اچھے بڑے جسم کی کیا حالت کردی لیکن مولیٰ عزوجل کے نام پاک میں اثر سے مگر ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۲۰۶ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(4) رد المحتار، کتاب النظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۶۰۰۔

ہمارے علماء تصریح فرماتے ہیں کہ نفس حروف قابل ادب ہیں اگرچہ جدا جدا لکھے ہوں جیسے تختی یا وصل پر خواہ ان میں کوئی برا نام لکھا ہو جیسے فرعون، ابوجہل وغیرہا، تاہم حروف کی تعظیم کی جائے اگرچہ ان کافروں کا نام لائق اہانت و تذلیل ہے۔

فی الہندیہ اذا کتب اسم فرعون او کتب ابوجہل علی غرض یکرہ ان یروا الیہ لان لتلك الحروف حرمة کذا فی السراجیۃ ۱۔ (۱۔ فتاویٰ ہندیہ کتاب الکرہیۃ الباب الخامس نورانی کتب خانہ پشاور ۵ / ۳۲۳)

فتاویٰ ہندیہ میں ہے جب فرعون اور ابوجہل وغیرہ کے نام کسی غرض کے لئے لکھے جائیں تو مکروہ ہے کہ انہیں کہیں پھونک دیں اس لئے کہ ان حروف کی عزت و توقیر ہے جیسا کہ سراجیہ میں مذکور ہے۔ (ت) (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۳۳۵ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(5) رد المحتار، کتاب النظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۶۰۱۔

نظر حق ہے

مرکار نامدار مدینے کے تاجدار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: نظر حق ہے، اگر کوئی چیز تقدیر سے بڑھ سکتی تو اس پر نظر بڑھ جاتی اور جب تم دھلوائے جاؤ تو دھو دو۔ (مسلم، کتاب السلام، باب الطب والمرض والرقی، ص ۱۲۰۲، حدیث: ۲۱۸۸)

نظر بد اونٹ کو دیگ میں اتار دیتی ہے

حضرت سیدنا جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ شہنشاہ خوش خصال، پیکر حسن و جمال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد ہے



فرمایا: **اَلْعَيْنُ تُدْخِلُ الرَّجُلَ الْقَبْرَ وَتُدْخِلُ الْجَمَلَ الْقَبْرَ** بے شک نظر مرد کو قبر میں اور اونٹ کو دیگ میں داخل کر دیتی ہے۔
(صحیح الجوامع، ۵/۲۰۴، حدیث: ۱۴۵۵۸)

جلد نظر لگ جاتی ہے

حضرت سیدنا اسماعیل بن عقیل رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے بارگاہ رسالت میں عرض کی: یا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم اولاد جعفر کو جلد نظر لگ جایا کرتی ہے، کیا میں انہیں جھاڑ پھونک کراؤں؟ فرمایا: ہاں! کیونکہ اگر کوئی چیز تقدیر سے سبقت لے جائے والی ہوتی تو نظر بد سبقت لے جاتی۔ (ترمذی، کتاب الطب، باب ما جاء فی الرقیۃ من العین، ۴/۱۳، حدیث: ۲۰۶۶)

جوتا پہننے کا بیان

احادیث

حدیث ۱: صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو یہ فرماتے سنا کہ جوتے بکثرت استعمال کرو کہ آدمی جب تک جوتے پہنے ہوئے ہے، گویا وہ سوار ہے یعنی کم ٹھکتا ہے۔ (1)

حدیث ۲: صحیح بخاری میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو میں نے ایسی نعلین پہنے دیکھا، جن میں بال نہ تھے۔ (2)

حدیث ۳: صحیح بخاری میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کی نعلین میں دو قبال تھے۔ (3) یعنی انگلیوں کے مابین دو تسمے تھے۔

(1) صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب استحباب لبس النعال... إلخ، الحدیث: ۶۷۰۔ (۲۰۹۷) ج ۶، ص ۶۱۱۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی چلنے کی مشقت سے بچ جاتا ہے جس طرح سوار دھول پتھر اور کانٹے سے بچ جاتا ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۵۳)

(2) صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب النعال المستحبہ وغیرہا، الحدیث: ۵۸۵۱، ج ۴، ص ۶۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ صحابی ہیں، آپ کا نام عبد اللہ ہے، فقہاء صحابہ میں سے ہیں، عبادلہ غلاشہ میں سے ایک ہیں۔

۲۔ یعنی کھل اچھی طرح صاف کر کے سب بال اتار دیئے ہوں جس طرح ہمارے ملک میں رواج ہے اس طرح بہت خوبصورت جوتا بنتا ہے، ایسا جوتا بھی زینت انسانی میں شامل ہے۔ اس سے ثابت ہوا کہ مرد کو زینت کرنی جائز ہے جب کہ اس میں شرعی ممانعت نہ ہو نہ اس میں کفر سے مشابہت ہو نہ عورتوں سے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۵۱)

(3) المرجع السابق، باب قبالة فی نعل... إلخ، الحدیث: ۵۸۵۷، ج ۴، ص ۶۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی جوتی پاک مثل چھٹی کے تھی اور اس کے دونوں چوڑے کے فیتے آپ کے انگوٹھے اور انگلی کے

حدیث ۴: صحیح بخاری و مسلم میں ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جب جوتا پہنے تو پہلے دھنے پاؤں میں پہنے اور جب اتارے تو پہلے بائیں پاؤں کا اتارے کہ دہنا پہنے میں پہلے ہو اور اتارنے میں پیچھے۔ (4)

حدیث ۵: صحیح بخاری و مسلم میں ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ ایک جوتا پہن کر نہ چلے، دونوں اتار دے یا دونوں پہن لے۔ (5)

درمیان سے ہو کر پچھے مبارک کے دائیں بائیں جڑے ہوئے تھے جس طرح نقشہ نعلین پاک ہے وہ شکل نہیں بلکہ جس طرح آج کل کھجک چل بتاتے ہیں، نقشہ پاک والی چل نبی کریم نے اکثر پہنی ہے مگر یہ چل کبھی کبھی۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۵۲)

(4) السنن للامام أحمد بن حنبل، مسند ابی ہریرۃ، الحدیث: ۱۰۰۱۰، ج ۳، ص ۴۹۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ حکم استحبی ہے۔ اس کے متعلق قاعدہ یہ ہے کہ اچھا و اعلیٰ کام داہنی طرف سے شروع کیا جاوے اور ادنیٰ اور گھٹیا کام بائیں طرف سے، مسجد میں داخل ہو تو داہنا پاؤں پہلے داخل کرے بائیں پاؤں پیچھے، جب نکلے تو اس کے برعکس کرے کہ بائیں پاؤں پہلے نکالے داہنا پاؤں پیچھے اور پاخانہ جاتے وقت بائیں پاؤں پاخانہ میں داخل کرے بعد میں داہنا مگر وہاں سے نکلتے وقت اس کے برعکس۔ جوتے پہننا اعلیٰ کام ہے اور اتارنا ادنیٰ کام لہذا یہ حکم دیا گیا۔ اس سے معلوم ہوا کہ دونوں جوتے یکدم اتارنا پہننا بھی سنت کے خلاف ہے، اولاً داہنے پاؤں میں پہنے پھر بائیں میں۔

۲۔ اسلام میں داہنا حصہ بائیں سے افضل ہے اس لیے یہ حکم دیا گیا حتیٰ کہ وضو میں داہنے ہاتھ پاؤں پہلے دھو لیے جائیں بائیں بعد میں یہ ترتیب بہت جگہ ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۵۳)

(5) صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب لا یبشی فی نعل واحد، الحدیث: ۵۸۵۶، ج ۴، ص ۶۶.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ ممانعت کراہت تنزیہی کی ہے اسی حکم میں کرتے اچکن وغیرہ کا پہننا ہے کہ کرتے اچکن کی ایک آستین پہن لینا دوسری یوں ہی لٹکتی رکھنا ممنوع ہے۔ یہاں مرقاۃ میں اس حکم کی بہت سی حکمتیں بیان فرمائیں: ایک یہ ہے کہ یہ طریقہ شیطان کا ہے کہ وہ ایک جوتا پہن کر چلتا ہے، نیز اس طرح چلنا کچھ دشوار بھی ہوتا ہے خصوصاً جب کہ جوتی کچھ اونچی ہو اور جگہ ناہموار ہو، نیز یہ طریقہ شرفاء کا نہیں اور یہ کم عقلی کی علامت ہے۔ حضرت عائشہ صدیقہ کی روایت میں جو آتا ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو میں نے ایک جوتا شریف میں چھتے دیکھا وہ یا تو اس حکم سے منسوخ ہے یا وہ عمل شریف گھر کے اندر کا ہے اور یہ حکم شریف یا باہر سڑک کا یا وہ حکم بیان جواز سے لیے ہے اور یہ حکم بیان استحباب کے ہے یا وہ اتفاقاً نادر تھا، یہ ممانعت بیگنی اور عادت ڈال لینے سے ہے لہذا احادیث میں تعارض نہیں۔ اس کی پوری تحقیق کتب فقہ میں ملاحظہ فرمائیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۵۵)

حدیث ۶: صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جوتے کا تسمہ ٹوٹ جائے تو فقط ایک جوتا پہن کر نہ چلے بلکہ تسمہ کو درست کر لے اور ایک موزہ پہن کر نہ چلے۔ (6)

حدیث ۷: ترمذی نے جابر سے اور ابن ماجہ نے ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے کھڑے ہو کر جوتا پہننے سے منع فرمایا۔ (7)

یہ حکم ان جوتوں کا ہے جن کو کھڑے ہو کر پہننے میں وقت ہوتی ہے، جن میں تسمے باندھنے کی ضرورت ہوتی ہے۔ اسی طرح بوٹ جوتا بھی بیٹھ کر پہننے کہ اس میں بھی فیتہ باندھنا پڑتا ہے اور کھڑے ہو کر باندھنے میں دشواری ہوتی ہے اور جو اس قسم کے نہ ہوں جیسے سلیم شاہی یا پمپ یا وہ چپل جس میں تسمہ باندھنا نہیں ہوتا، ان کو کھڑے ہو کر پہننے میں

(6) صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب اللی عن استعمال الصناد، الحدیث: ۱۷۱۔ (۲۰۹۹) ج ۱۱۶۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یا وہاں ہی بیٹھ کر درست کر لے یا گھر تک دونوں پاؤں سے ننگے جاوے اور وہاں درست کر کے پھر پہنے۔ مقصد یہ ہے کہ ضرورت پڑ جانے پر بھی ایک جوتا پہن کر نہ چلو چہ جائیکہ بلا ضرورت اس کی عادت ڈال لینا یہ تو بہت ہی برا ہے۔

۲۔ عربی میں خف چڑے کے موزے کو کہتے ہیں جس پر مسح ہو سکے اور جو راب سوتی اونٹنی ریشمی موزے کو کہا جاتا ہے جو قابل مسح نہیں۔ اہل عرب کبھی چڑے کے موزے کو جوتے کی طرح استعمال کرتے ہیں، صرف ایک موزہ پہننا کہ دوسرا پاؤں کھلا رہے ممنوع ہے خواہ موزہ چڑے کا ہو یا سوتی اونٹنی۔

۳۔ کیونکہ داہنا ہاتھ افضل ہے اور کھانا اعلیٰ کام ہے تو اعلیٰ کام افضل ہاتھ سے کرنا بہتر ہے۔ عرب میں مالدار سردار لوگ اظہار فخر کے لیے ہاتھیں ہاتھ سے کھاتے تھے اور غرباء مساکین داہنے ہاتھ سے۔ اسلام نے سب کے لیے داہنا ہاتھ معین فرمایا کہ اس سے کھانا پینا دے۔

۴۔ ایک کپڑے میں لپٹنا اس وقت ممنوع ہے جب کہ اس سے شرمگاہ کھل جاتی ہو اگر شرمگاہ ڈھکی رہے تو مضاائقہ نہیں۔

۵۔ اس کی شرح پہلے مزرعہ کی کہ اس طرح کپڑا اپنے جسم پر لپٹنا کہ ہاتھ بالکل بند جاویں بہ تکلف کھل سکیں یہ ممنوع ہے ورنہ ممنوع نہیں۔

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۵۶)

(7) سنن ابن ماجہ، کتاب اللباس، باب الافعال کاہما، الحدیث: ۳۶۱۸، ج ۴، ص ۱۶۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ ممانعت ان جوتوں میں ہے جن کے پہننے میں ہاتھ لگانا پڑتا ہے جیسے آج کل فل بوٹ تسمے والے یا چڑے کے موزے کہ انہیں

کھڑے کھڑے پہنے ان کے تسمے باندھنے میں گر جانے کا اندیشہ ہے۔ عام معمولی جوتے جو بہ آسانی بغیر ہاتھ لگائے پہن جاتے ہیں وہ

کھڑے کھڑے پہننا بالکل جائز ہے جیسے دیسی اور گرگالی جوتے۔ (مرقات و احسن اللغات)

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۵۸)

مضائقہ نہیں۔

حدیث ۸: ترمذی نے عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کبھی ایک نعل پہن کر بھی چلے ہیں۔ (8) یہ بیان جواز کے لیے ہوگا یا دو ۲ ایک قدم چلنا ہوا ہوگا مثلاً حجرے کا دروازہ کھولنے کے لیے۔

حدیث ۹: ابوداؤد نے ابن ابی ملیکہ سے روایت کی، کہ کسی نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے کہا کہ ایک عورت (مردوں کی طرح) جوتے پہنتی ہے۔ انھوں نے فرمایا: رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے مردانی عورتوں پر لعنت فرمائی ہے۔ (9)

یعنی عورتوں کو مردانہ جوتا نہیں پہننا چاہیے، بلکہ وہ تمام باتیں جن میں مردوں اور عورتوں کا امتیاز ہوتا ہے، ان میں، ایک کو دوسرے کی وضع اختیار کرنے سے ممانعت ہے، نہ مرد عورت کی وضع اختیار کرے، نہ عورت مرد کی۔

حدیث ۱۰: ابوداؤد نے عبداللہ بن بریدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ کسی نے فضالہ بن عبید رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے کہا کہ کیا بات ہے کہ آپ کو پراگندہ سردیکھتا ہوں؟ انھوں نے کہا، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہم کو کثرت ارفاء یعنی بنے سنورے رہنے سے منع فرماتے تھے۔ اُس نے کہا، کیا بات ہے کہ آپ کو ننگے پاؤں دیکھتا ہوں؟ انھوں نے کہا، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہم کو حکم فرماتے کہ کبھی کبھی ہم ننگے پاؤں رہیں۔ (10)

مسئلہ ۱: بال کے چمڑے کی جوتیاں جائز ہیں، بلکہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے بعض مرتبہ اس قسم کی

(8) سنن الترمذی، کتاب اللباس، باب ماجاء فی الرخصة فی المشی... إلخ، الحدیث: ۸۴۱، ج ۳، ص ۱۰۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۲۔ اگر یہ حدیث صحیح ہو تو اس کے معنی وہ ہی ہیں جو پہلے عرض کیے گئے کہ ضرورتاً گھر کے گھن میں ایک دو قدم اس طرح چلے مثلاً دونوں جوتے شریف دور دور پڑے تھے ایک پاؤں مبارک میں جوتہ پہن لیا پھر دو ایک قدم چل کر دوسرے جوتہ تک پہنچے اور وہ پہن لیا اور ممانعت کی احادیث میں باہر سڑک پر اس طرح چلنے کی ممانعت ہے لہذا احادیث میں تعارض نہیں یا وہ احادیث اس حدیث کی ناخ ہیں یا یہ حدیث بیان جواز کے لیے ہے گزشتہ ممانعت کی حدیث بیان استحباب کے لیے۔

خیال رہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا بعض ایسے کام کرنا جو امت کے لیے مکروہ یا ممنوع ہیں بیان جواز کے لیے ہوتا ہے یہ عمل آپ کے لیے ممنوع نہیں۔ بلکہ آپ کو اس پر بھی ثواب ملے گا کیونکہ یہ عمل تبلیغ ہے جیسا کہ حضور انور کا کھڑے ہو کر پانی پینا بیان جواز کے لیے تھا ہمارے واسطے مکروہ ہے۔ حضور نے یہ عمل تبلیغ مسئلہ کے لیے کیا (اشعۃ اللمعات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۵۹)

(9) سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی لباس النساء... إلخ، الحدیث: ۴۰۹۹، ج ۴، ص ۸۴۔

(10) سنن ابی داؤد، کتاب، ستر جل، باب النہی عن کثیر من الارقاء... إلخ، الحدیث: ۴۱۶۰، ج ۳، ص ۱۰۲۔

نعلین استعمال فرمائی ہیں۔ لوہے کی کیلوں سے سلے ہوئے جوتے جائز ہیں، بلکہ اس زمانے میں ایسے بہت جوتے بنتے ہیں جن کی سلائی کیلوں سے ہوتی ہے۔ (11)



(11) الفتاویٰ الھدیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع فی اللبس...، ج ۵، ص ۲۳۳۔

جوتا پہننے کی سنتیں اور آداب

پیارے بھائیو!

نعلین پہننا سرکارِ مدینہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی سنت ہے۔ جوتے پہننے سے کنکر، کانٹے وغیرہ چھینے سے پاؤں کی حفاظت رہتی ہے۔ نیز موسم سرما میں سردی سے بھی پاؤں محفوظ رہتے ہیں اور گرمیوں میں دھوپ میں چلنے کے لئے جوتے نہایت ہی کارآمد ہیں۔ جوتا پہننے کی چند سنتیں اور آداب ملاحظہ ہوں:

(۱) کسی بھی رنگ کا جوتا پہننا اگرچہ جائز ہے لیکن پیلے رنگ کے جوتے پہننا بہتر ہے کہ مولا مشکل کشا علی المرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں جو پیلے جوتے پہنے گا اس کی فکر دوں میں کمی ہوگی۔ (کشف الخفاء، الحدیث ۲۵۹۵، ج ۲، ص ۲۳۶)

(۲) پہلے سیدھا جوتا پہنیں پھر الٹا اور اتارنے وقت پہلے الٹا جوتا اتاریں پھر سیدھا۔ حضرت سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ اللہ عزوجل کے پیارے محبوب، دانائے غیوب صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: (کوئی شخص) جب جوتا پہنے تو پہلے دسپے پاؤں میں پہنے اور جب اتارے تو پہلے بائیں پاؤں کا اتارے۔

(سنن ابن ماجہ، کتاب اللباس، باب لبس الاحمال وغل، الحدیث ۴۶۱۶، ج ۴، ص ۱۶۶)

(۳) جب بیٹھیں تو جوتے اتار لیتا سنت ہے۔ حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ جب بندہ بیٹھے تو سنت ہے کہ اپنے جوتے اتارے۔ (سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی الاحمال، الحدیث ۴۳۸۸، ج ۴، ص ۹۵)

(۴) جوتا پہننے سے پہلے جھاڑ لیں تاکہ کیڑا یا کنکر وغیرہ ہو تو نکل جائے۔

(۵) استعمالی جوتا الٹا پڑا ہو تو سیدھا کر دیجئے ورنہ فقر و تنگ دستی کا اندیشہ ہے۔ (سنن بیہقی زیور، حصہ ۵، ص ۲۰۱)

انگوٹھی اور زیور کا بیان

احادیث

حدیث ۱: صحیح مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے جب یہ ارادہ فرمایا کہ کسریٰ و قیصر و نجاشی کو خطوط لکھے جائیں تو کسی نے یہ عرض کی، کہ وہ لوگ بغیر مہر کے خط کو قبول نہیں کرتے، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے چاندی کی انگوٹھی بنوائی، جس میں یہ نقش تھا محمد رسول اللہ۔ (1)

امام بخاری کی روایت میں ہے، کہ انگوٹھی کا نقش تین سطر میں تھا۔

ایک سطر میں محمد، دوسری میں رسول، تیسری میں اللہ۔ (2)

حدیث ۲: صحیح بخاری و مسلم میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے سونے کی انگوٹھی بنوائی۔ (3)

(1) صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب فی اتخاذ النبی صلی اللہ علیہ وسلم خاتماً... إلخ، الحدیث: ۵۶۰۔ (۲۰۹۲)، ص ۱۱۵۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ دعوت اسلام دینے کے لیے فرمان عالیہ، کسریٰ لقب تھا شاہ فارس کا اور قیصر لقب تھا شاہ روم کا اور نجاشی شاہ حبشہ کا، وہ نجاشی جو پہلے ہی اسلام لا چکا تھا اس کا نام اصمہ تھا، ۶ھ میں اسلام لائے اور ۹ھ میں ان کی وفات ہوئی، حضور انور نے مدینہ منورہ میں ان کا جنازہ پڑھا ان کے بعد جو نجاشی تخت پر بیٹھا اسے حضور انور نے دعوت اسلام دی اس کا نام اس کا اسلام لانا معلوم نہ ہو سکا۔ اصمہ نجاشی کو تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ام حبیبہ کے ساتھ اپنے نکاح کی قبولیت کا فرمان لکھا تھا انہیں دعوت اسلام نہ دی گئی تھی۔ (مرقات)

۲۔ یعنی ان بادشاہوں کا قانون یہ ہے کہ جس خط پر بھیجنے والے کے نام کی مہر نہ ہو اسے نہ قبول کرتے ہیں نہ سنتے ہیں وہ لوگ دنیاوی وجاہت والوں کے خطوط ہی پڑھتے سنتے ہیں عوام کے نہیں اور ان کے ہاں وجاہت کی علامت مہر ہے۔

۳۔ ان علامات سے معلوم ہوتا ہے کہ اس انگوٹھی شریف کا صرف حلقہ چاندی کا تھا گنیمتہ کسی اور چیز کا تھا مگر حضور نے ایسی انگوٹھی بھی پہنی ہے جس کا حلقہ بھی چاندی کا تھا۔

۴۔ اس انگوٹھی کا گنیمتہ حبشی پتھر کا تھا جس پر صرف یہ ہی عبارت لکھی تھی اس سے زیادہ عبارت نہ تھی۔ جن روایات میں ہے کہ حضور کی انگوٹھی کا نقش پور کلمہ طیبہ تھا وہ ضعیف ہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۳۱)

(2) صحیح بخاری، کتاب اللباس، باب بل یجعل نقش الخاتم ثلاثہ أسطر، الحدیث: ۵۸۷۸، ج ۴، ص ۷۱۔

(3) صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب تحریم خاتم الذهب علی الرجال... إلخ، الحدیث: ۵۲۔ (۲۰۹۱)، ص ۱۱۵۷۔

اور ایک روایت میں ہے، کہ اس کو دہنے ہاتھ میں پہنا پھر اس کو پھینک دیا اور چاندی کی انگوٹھی بنوائی، جس میں یہ نقش تھا۔ محمد رسول اللہ اور یہ فرمایا کہ کوئی شخص میری انگوٹھی کے نقش کے موافق اپنی انگوٹھی میں نقش کندہ نہ کرائے اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) جب انگوٹھی پہنتے تو نگینہ ہتھیلی کی طرف ہوتا۔ (4)

حدیث ۳: صحیح بخاری میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی انگوٹھی چاندی کی تھی اور اس کا نگینہ بھی تھا۔ (5)

حدیث ۴: صحیح بخاری و مسلم میں انھیں سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے دہنے ہاتھ میں چاندی کی انگوٹھی پہنی اور اس کا نگینہ حبشی ساخت کا تھا اور نگینہ ہتھیلی کی جانب رکھتے۔ (6)

حدیث ۵: مسلم کی روایت انھیں سے ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی انگوٹھی اس انگلی میں تھی یعنی بائیں ہاتھ کی چھنگلیا میں۔ (7)

حدیث ۶: صحیح مسلم میں حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اس میں

(4) المرجع السابق، باب لبس النبی صلی اللہ علیہ وسلم خاتما، الحدیث: ۵۵۔ (۲۰۹۱) ص ۱۱۵۸۔

(5) صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب لبس الخاتم، الحدیث: ۵۸۷۰، ج ۲، ص ۶۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی انگوٹھیاں مختلف رہی ہیں۔ کبھی ایسی انگوٹھی پہنی ہے جس کا نگینہ حبشی پتھر کا تھا اور کبھی ایسی کہ اس کا نگینہ بھی چاندی ہی کا تھا یہاں اس دوسری قسم کی انگوٹھی کا ذکر ہے۔ حق یہ ہے کہ یہ انگوٹھی خالص چاندی کی تھی، بعض لوگوں نے کہا ہے کہ انگوٹھی لوہے کی تھی اس پر چاندی کا خول تھا اس کا ثبوت نہیں ملتا۔ یہ روایت مرقات نے محمول اور ابراہیم نخعی سے کی اور کہیں نہیں ملتی۔ واللہ اعلم! حق یہ ہے کہ لوہے کی انگوٹھی کبھی نہیں پہنی۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۳۲)

(6) صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب فی خاتم الورق فصہ حبشی، الحدیث: ۶۲۔ (۲۰۹۳) ص ۱۱۶۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہاں مرقات میں ہے کہ اس انگوٹھی کا نگینہ عقیق کا تھا جس کا رنگ مائل بہ سیاہی تھا یعنی سرخ مائل بہ سیاہی، یہ عقیق تو یہی تھا مگر اس کو بنایا گیا تھا حبشہ میں اس لیے اسے حبشی کہا گیا۔ پیداوار یہی صنعت حبشی عقیق کا نگینہ بہت مبارک ہے، حدیث شریف میں ہے ختم باعقین فانہ مبارک چاندی کی انگوٹھی عقیق سیاد کا نگینہ بہت اعلیٰ ہے۔ (مرقات) بعض روایات میں ہے کہ پہلے یا قوت کی انگوٹھی طاعون سے محفوظ رکھتی ہے، بعض میں ہے کہ عقیق کی انگوٹھی فقیری دور کرتی ہے، یہ احادیث بہت ہی استادوں سے مروی ہیں لہذا اقویٰ ہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۳۳)

(7) المرجع السابق، باب فی لبس الخاتم فی الخضر من الید، الحدیث: ۶۳۔ (۲۰۹۵) ص ۱۱۶۰۔

یا اس میں یعنی بیچ والی میں یا کلمہ کی انگلی میں انگوٹھی پہننے سے مجھے منع فرمایا۔ (8)

حدیث ۷: ابن ماجہ نے عبد اللہ بن جعفر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے اور ابو داؤد و نسائی نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم دہنے ہاتھ میں انگوٹھی پہنتے تھے۔ (9) اور ابو داؤد نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ بائیں ہاتھ میں پہنتے تھے۔ (10) ان دونوں حدیثوں سے معلوم ہوتا ہے کہ کبھی دہنے میں پہنی اور کبھی بائیں میں، مگر بیہقی نے کہا کہ دہنے ہاتھ میں انگوٹھی پہننا منسوخ ہے۔ (11)

حدیث ۸: ابو داؤد و نسائی نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے دہنے ہاتھ میں ریشم لیا اور بائیں ہاتھ میں سونا پھر یہ فرمایا کہ یہ دونوں چیزیں میری امت کے مردوں پر حرام

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے بائیں ہاتھ کی چھنگلی میں انگوٹھی پہنی اسی طرح یعنی اس انگلی میں انگوٹھی پہننا بھی جائز بلکہ سنت سے ثابت ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۳۴)

(8) المرجع السابق، باب البھمی عن التعم فی الوسطی... إلخ، الحدیث: ۶۵۔ (۲۰۹۵) ص ۱۱۶۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

خیال رہے کہ عورتوں کو ہر انگلی میں انگوٹھی پہننا جائز ہے مگر مردوں کو تین انگلیوں میں پہننا منع ہے: انگوٹھا، کلمہ کی انگلی اور بیچ کی انگلی۔ اور دو انگلیوں میں پہننا مستحب ہے چھنگلی اور اس کے برابر دالی میں، یوں ہی مرد صرف ایک انگوٹھی پہن سکتا ہے وہ بھی چاندی کی سوا چار ماشہ تک، عورتیں سونے کی دس انگوٹھیاں دسوں انگلیوں میں پہن سکتی ہیں۔ (مرقات داشعہ)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۳۵)

(9) سنن ابی داؤد، کتاب الخاتم، باب ماجاء فی الختم فی الیمین ادا لیسار، الحدیث: ۴۲۲۶، ج ۴، ص ۱۲۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی کبھی پنے داہنے ہاتھ میں بھی پہنتے تھے بیان جواز کے لیے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۳۶)

(10) المرجع السابق، الحدیث: ۴۲۲۷، ج ۴، ص ۱۲۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اسے یعنی کبھی بائیں ہاتھ میں بھی انگوٹھی پہنی۔ علماء فرماتے ہیں کہ اولاً داہنے ہاتھ میں پہنتے تھے پھر اسے ترک کر دیا اور بائیں ہاتھ میں پہننا شروع فرمایا لہذا آخری عمل یہ ہی ہے بہر حال جائز دونوں عمل ہیں مگر بہتر آخری عمل ہے یعنی بائیں ہاتھ میں انگوٹھی پہننا۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۳۷)

(11) انظر: التوشیح شرح، ص ۱ مع الصحیح للسیوطی، کتاب اللباس، باب من جعل فص الخاتم فی بطن کفہ، تحت الحدیث: ۵۸۷۶، ج ۸، ص ۳۵۹۸۔

(12) ہیں

حدیث ۹: صحیح مسلم میں حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے قسی (یہ ایک قسم کا ریشمی کپڑا ہے) اور کسم کے رنگے ہوئے کپڑے اور سونے کی انگوٹھی پہننے سے اور رکوع میں قرآن مجید پڑھنے سے منع فرمایا۔ (13)

حدیث ۱۰: صحیح مسلم میں عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ایک شخص کے ہاتھ میں سونے کی انگوٹھی دیکھی تو اُس کو اتار کر پھینک دیا اور یہ فرمایا کہ کیا کوئی اپنے ہاتھ میں انگارہ رکھتا ہے؟ جب حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) تشریف لے گئے۔ کسی نے ان سے کہا، اپنی انگوٹھی اٹھ لو اور کسی کام میں لانا۔ انھوں نے کہا، خدا کی قسم! میں اُسے کبھی نہ لوں گا، جبکہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اُسے پھینک دیا۔ (14)

حدیث ۱۱: ابو داؤد و نسائی نے معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے چیتے کی کھال پر سوار ہونے سے اور سونا پہننے سے ممانعت فرمائی، مگر ریزہ ریزہ کر کے یعنی اگر کپڑے میں سونے کے باریک باریک ریزہ لگائے جائیں تو ممنوع نہیں۔ (15)

حدیث ۱۲: امام مالک رحمۃ اللہ علیہ موطا میں فرماتے ہیں، کہ بچوں کو سونا پہنانا برا جانتا ہوں، کیونکہ مجھے یہ حدیث پہنچی ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے سونے کی انگوٹھی سے ممانعت فرمائی۔ (16) لہذا مردوں کے

(12) سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی الحریر للنساء، الحدیث: ۴۰۵۷، ج ۴، ص ۷۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ مجمع میں لوگوں کے سامنے یہ دو چیزیں ہاتھ میں لیں تاکہ لوگ دیکھ لیں اور یہ دونوں چیزیں خوب واضح ہو جائیں۔

۲۔ چونکہ ان دونوں چیزوں کو مستقل طور پر حرام فرمانا تھا اس لیے حرام واحد ارشاد فرمایا حرامانِ تثنیہ نہ فرمایا ورنہ احتمال یہ ہوتا کہ ریشم و سونا مل کر تو حرام ہے اکیلے اکیلے حرام نہیں اس لیے ارشاد فرمایا حرام۔ ان میں سے ہر ایک چیز مستقل حرام کہ ریشم بھی حرام ہے مگر مردوں پر ہیں عورتوں کے لیے یہ دونوں چیزیں حلال ہیں۔ بعض نے فرمایا کہ حرام مصدر ہے جو واحد، تثنیہ، جمع سب کے لیے استعمال ہو سکتا ہے یہاں دو کے لیے ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۳۸)

(13) صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب النہی عن لبس الرجل الثوب المصفر، الحدیث: ۲۹۔ (۲۰۷۸)، ص ۱۱۵۲۔

(14) المرجع السابق، باب تحریم خاتم الذهب علی الرجال، إلخ، الحدیث: ۵۲۔ (۲۰۹۰)، ص ۱۱۵۷۔

(15) سنن ابی داؤد، کتاب الخاتم، باب ماجاء فی الذهب للنساء، الحدیث: ۴۲۳۹، ج ۴، ص ۱۲۷۔

(16) لموطا امام مالک، کتاب اللباس، باب ماجاء فی لبس الثیاب المصبغة والذهب، الحدیث: ۱۷۳۷، ج ۲، ص ۴۰۹۔

لیے برا ہے، چھوٹے اور بڑے دونوں کے لیے۔

حدیث ۱۳: ترمذی و ابو داؤد و نسائی نے بریدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ ایک شخص بیتل کی انگلی پہنے ہوئے تھے، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: کیا بات ہے کہ تم سے بت کی بو آتی ہے؟ انہوں نے وہ انگلی پھینک دی، پھر لوہے کی انگلی پہن کر آئے، فرمایا: کیا بات ہے کہ تم جہنمیوں کا زیور پہنے ہوئے ہو؟ اسے بھی پھینکا اور عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کس چیز کی انگلی بناؤں؟ فرمایا: چاندی کی بناؤ اور ایک مشت پورا نہ کرو یعنی ساڑھے چار ماشہ سے کم کی ہو۔ (17)

(17) سنن ابی داؤد، کتاب الخاتم، باب ماجاء فی خاتم الحدید، الحدیث: ۴۲۲۳، ج ۴، ص ۱۲۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی وہ تانبے کی انگلی پہنے ہوئے تھے۔

۲۔ اس زمانہ میں بھی اور اب بھی عموماً بت بیتل کے ہوتے تھے اس لیے اسلام نے بیتل کے زیور ہر مسلمان کے لیے منع فرمائے خواہ مرد ہو یا عورت، انگلی چھلکہ بھی زینت کے لیے ہے یہ بھی بیتل کا منوع ہے۔

۳۔ دوزخی لوگ لوہے کی زنجیروں میں جکڑے جائیں گے یہاں ان زنجیروں کو زیور فرماتا ان کی اہانت کے لیے ہے جیسے قیدی کی ہتھکڑی اور بیڑی کو اس کا زیور کہہ دیا جائے۔

۴۔ کہ نہ اپنے آپ استعمال کی نہ اپنی بیوی کو استعمال کے لیے دی کیونکہ بیتل لوہے کا زیور مرد و عورت سب کو ہی حرام ہے۔ خیال رہے کہ سونے چاندی کا استعمال مطلقاً حرام ہے کہ مسلمان مرد نہ اس کا زیور پہنے نہ کسی اور طرح استعمال کرے، عورتوں کو ان کے زیوروں کی اجازت ہے دوسری طرح استعمال کرنا نہیں بھی حرام ہے لہذا سونے چاندی کے برتن میں کھانا پینا، یوں ہی ان کی گھڑی میں وقت دیکھنا، ان کی سلائی سے سرمہ لگانا حرام ہے، ہاں ان کا کشتہ کھانا یا علاج کے لیے سونے کی سلائی آکھ میں پھیرنا حلال ہے کہ یہ علاج ہے۔ ان کے علاوہ دیگر دھاتوں کا زیور حرام ہے ان کا استعمال دوسری طرح درست ہے، لہذا تانبا بیتل لوہے وغیرہ کے برتن گھڑیاں وغیرہ تمام کا استعمال درست ہے غرضیکہ استعمال میں کئی طرح فرق ہے۔

۵۔ لہذا مرد کے لیے چاندی کی انگلی سوا چار ماشہ تک کی درست ہے۔

۶۔ شاید اس فرمان عالی کے پیش کرنے کا مقصد یہ ہے کہ لوہے کی انگلی بھی پہننا جائز ہے ورنہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم اس صحابی سے یہ کیوں فرماتے کہ، اپنی ہنر دلی عورت کے مہر کے لیے لوہے کی انگلی ہی تلاش کر لو مگر یہ استدلال بہت کمزور ہے۔ اولاً تو اس لیے کہ اس فرمان عالی کے وقت لوہے بیتل کی حرمت کے احکام اسلام میں نہیں آئے اور اگر مان لیا جائے کہ احکام آپکے کے بعد کی یہ حدیث ہے تب بھی اس فرمان عالی کا مقصد یہ ہے کہ کوئی نہایت معمولی چیز ہی لے آجیسے کہا جاتا ہے کہ تم مجھے دھنسی بھر خاک ہی دے دو۔ اس کا مقصد یہ نہیں کہ خاک پھانکن درست ہے۔ نیز وہ جو حدیث شریف میں ہے کہ حضور انور کی انگلی لوہے کی تھی جس پر چاندی کا خول یا پانی تھا وہ

ترمذی کی روایت میں ہے کہ لوہے کے بعد سونے کی انگوٹھی پہن کر آئے، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: کہ کیا بات ہے کہ تم کو جنتیوں کا زیور پہنے دیکھتا ہوں۔ (18) یعنی سونا تو اہل جنت میں پہنیں گے۔ حدیث ۱۴: ابو داؤد و نسائی نے عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ نبی (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) دس ۱۰ چیزوں کو برا بتاتے تھے:

(۱) زردی یعنی مرد کو خلوق استعمال کرنا۔ (۲) سپید بالوں میں سیاہ خضاب کرنا۔ (۳) تہبند لٹکانا۔ (۴) سونے کی انگوٹھی پہننا۔ (۵) بے محل عورت کا زینت کو ظاہر کرنا یعنی شوہر اور محارم کے سوا دوسروں کے سامنے اظہار زینت۔ (۶) پانسا پھینکنا یعنی چوسر اور شطرنج وغیرہ کھیلنا۔ (۷) جھاڑ پھونک کرنا، مگر معوذات سے یعنی جس میں ناجائز الفاظ ہوں ان سے جھاڑ پھونک منع ہے۔ اور (۸) تعویذ باندھنا یعنی وہ تعویذ باندھنا جس میں خلاف شرع الفاظ ہوں۔ اور (۹) پانی کو غیر محل میں گرانا یعنی وطی کے بعد منی کو باہر گرانا کہ یہ آزاد عورت میں بغیر اجازت ناجائز ہے اور یہ بھی ہو سکتا ہے کہ اس سے مراد لواطت ہو۔ اور (۱۰) بچہ کو فاسد کر دینا، مگر اس دسویں کو حرام نہیں کیا یعنی بچہ کے دودھ پینے کے زمانے میں اس کی ماں سے وطی کرنا کہ اگر وہ حاملہ ہو گئی تو بچہ خراب ہو جائے گا۔ (19)

انگوٹھی صرف مہر لگانے کی تھی پہننے کی نہ تھی، اگر پہننے کی تھی تو لوہے کی حرمت سے پہلے کا یہ واقعہ ہے۔ یہ حدیث ان سب کی ناسخ ہے، دیکھو اس کی تفصیل کے لیے مرقات شرح مشکوٰۃ یہ ہی مقام۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۴۰)

(18) سنن الترمذی، کتاب اللباس، باب ماجاء فی خاتم الحدید، الحدیث: ۹۲، ج ۳، ص ۳۰۵۔

(19) سنن ابی داؤد، کتاب الخاتم، باب ماجاء فی خاتم الذهب، الحدیث: ۴۲۲۲، ج ۴، ص ۱۲۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ خلال بکسر جمع ہے خلۃ کی بمعنی خصلت و عادت، خصلت کی جمع ہے خصال اور خلۃ کی جمع ہے خلال۔

۲۔ خلوق ایک خوشبو خاص کا نام ہے جس میں زعفران پڑتا ہے یہ پیلا رنگ دیتی ہے اس لیے اس کا استعمال مردوں کے لیے ممنوع ہے عورتوں کے لیے جائز، بعض احادیث میں خلوق کی اجازت ہے مگر وہ سب احادیث منسوخ ہیں۔

۳۔ یا اس طرح کہ سفید بال اکھیڑ دیئے جائیں یا اس طرح کہ ان میں سیاہ خضاب کیا جائے یہ دونوں کام ممنوع ہیں مرد کو بھی عورت کو بھی۔

۴۔ یعنی تہبند اتنا نیچا رکھنا کہ زمین پر گھٹے، یہ عمل مرد و عورت سب کے لیے ممنوع ہے۔ مرد کا تہبند ٹخنہ سے، عورت کا ٹخنہ سے نیچے۔

۵۔ یعنی عورت کا اپنی زینت نامحرم مردوں پر ظاہر کرنا حرام ہے۔ یہ فرمان بہت ہی جامع ہے اس سے پردہ کے متعلق بہت حکام مستنبط ہو سکتے ہیں۔

۶۔ کعب جمع ہے کعب کی، کعب نزدیک کھیل کے پانسوں کو کہتے ہیں، یہ کھیل کھیلتے وقت پانے پھینکے جاتے ہیں۔ حق یہ ہے کہ بشر کھیل

مطلقاً ممنوع ہے خواہ اس میں جوا ہو یا نہ ہو، اگر اس پر مالی ہار جیت ہو تب تو بہت ہی ممنوع ہے کہ کھیل ہے اور جوا بھی در نہ کھیل ہے۔

حدیث ۱۵: ابو داود نے عبد اللہ بن زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہتے ہیں کہ ہمارے یہاں کی لونڈی حضرت زبیر کی لڑکی کو حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس لائی اور اس کے پاؤں میں گھنگرود تھے۔ حضرت عمر نے انہیں کاٹ دیا اور فرمایا کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے سنا ہے کہ ہر گھنگرود کے ساتھ شیطان ہوتا ہے۔ (20)

حدیث ۱۶: ابو داود نے روایت کی، کہ حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے پاس ایک لڑکی آئی، جس کے پاؤں میں گھنگرود بچ رہے تھے، فرمایا کہ اسے میرے پاس نہ لانا، جب تک اس کے گھنگرود کاٹ نہ لینا۔ میں نے رسول اللہ صلی

ہونے کی وجہ سے ممنوع۔ غیر معتبر کھیل فعل عبث ہونے کی وجہ سے ممنوع ہیں۔

۷۔ معوذات سے مراد سورہ قلقل اور سورہ ناس ہیں۔ سوا سے مراد وہ منتر ہیں جن میں شرکیہ الفاظ ہوں۔ شرکیہ الفاظ سے جھاڑ پھونک حرام ہے۔ آیات قرآنیہ اور ماثورہ دعاؤں سے دم درود جائز بلکہ بہتر ہے اور دعا میں جن میں جنوں وغیرہ کا نام نہ ہو شرکیہ کلمات نہ ہوں ان سے دم بھی جائز ہے باقی سے حرام۔

۸۔ یہاں تعویذ سے مراد مشرکین کے تعویذ و گنڈے ہیں جن میں کفریہ الفاظ جنوں کے نام وغیرہ ہوں یہ حرام ہے۔ آیات قرآنیہ دعا اسلامیہ سے تعویذ باندھنا حضرات صحابہ کرام سے ثابت ہے جیسا کہ باب المعوذات میں گزر گیا۔ تمام جمع ہے تمیمہ کی، تمیمہ کے بہت معانی ہیں: جادو، منتر، ٹونہ جانوروں کی ہڈیاں درود آنکھ کے لیے باندھنا اور تعویذ۔ (امعة المصنوعات)

۹۔ یعنی حرام جگہ منی گرانہ، زنا کرنا، لواطت کرنا، جلق سے منی نکالنا، عورت کی دبر میں دلی کرنا یہ سب کام حرام ہیں۔

۱۰۔ یعنی جب بچہ دودھ پیتا ہو تو عورت سے محبت کرنا اگر اس میں اندیشہ ہو کہ اس سے دودھ بھاری ہو کر بچہ کے لیے مضر ہوگا تو اس سے بچے، یہ کام حرام نہیں اس سے احتیاط بہتر ہے اس لیے فرمایا کہ اسے حرام نہ کیا۔ محرمہ میں وہ کام جمع یہ آخری عمل ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۴۱)

(20) المرجع السابق، باب ماجاء فی الجدل، الحدیث: ۴۲۳۰، ج ۴، ص ۱۲۴.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی حضرت عبد اللہ ابن زبیر کی آزاد کردہ لونڈی ان کی لڑکی کو حضرت عمر رضی اللہ عنہ کے پاس لائیں، اس بچی کے پاؤں میں بچنے والے جھانجن تھے۔ اگر اس جمع جس کی بمعنی جلاجل یعنی گھنگرود اور اس جیسی آواز دینے والی چیز، اونٹ کے گلے کے گھنگرود اور باز کے پاؤں کے چھلوں کو بھی اگر اس یا جلاجل کہتے ہیں۔ ہمارے ہندوستان میں بھی پہلے عورتوں میں جھانجن کا رواج تھا۔

۲۔ کیونکہ جھانجن ایک قسم کا باجا ہے اور جہاں باجا ہو وہاں فرشتہ رحمت نہیں ہوتا شیطان ہوتا ہے۔ شیطان سے مراد وہ شیطان ہے جو کھیل تمثیل پر مقرر ہے، قرین شیطان تو ہر انسان کے ساتھ رہتا ہے۔ انگوٹھی کے باب میں یہ حدیث لانا نہایت ہی موزوں ہے کہ انگوٹھی ایک قسم کا زیور ہی ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۴۲)

اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے سنا ہے، کہ جس گھر میں جس یعنی گھنٹی یا گھنگرو ہوتے ہیں، اس میں فرشتے نہیں آتے۔ (21)



(21) سنن ابی داؤد، کتاب الخاتم، باب ما جاء فی الجلاجل، الحدیث: ۴۲۳۱، ج ۴، ص ۱۲۵.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ بنانہ ب کے پیش سے ہے آپ تابعیہ ہیں، حضرت عائشہ صدیقہ سے روایت لیتی ہیں اور آپ سے جہانجن کے متعلق ہی روایات آتی ہیں۔ (اکمال)

۲۔ اس طرح کہ چلنے کی حالت میں بجتے تھے جیسا کہ مروجہ جہانجن میں دیکھا جاتا ہے۔ علیہا سے مراد ہے ان کے پاؤں میں جہانجن تھے کیونکہ یہ زیور پاؤں میں پہنا جاتا ہے۔

۳۔ یا اس طرح کہ ان کے اندر کے گنگر نکال دیئے جائیں یا اس طرح کہ اس کے گھنگرو الگ کر دیئے جائیں یا اس طرح کہ خود جہانجن ہی توڑ دیئے جائیں غرضیکہ ان میں آواز نہ رہے۔

۴۔ فرشتوں سے مراد رحمت کے فرشتے ہیں جو خصوصی طور پر مسلمانوں کے گھروں میں آتے جاتے رہتے ہیں یا وہ ہی مقیم رہتے خصوصاً ان گھروں میں جہاں تلاوت قرآن کا ذکر خیر رہتا ہے۔ اگر اس سے مراد مطلقاً بجنے والا زیور ہے خود بچوں کے پاؤں یا جانور کے گلے یا پاؤں میں ہو۔ اسی بناء پر فقہاء فرماتے ہیں کہ دوسرے باجے حرام ہیں بعض حالات میں جائز ہوتے ہیں جیسے تادی نکاح اعلان کے لیے نوبت نفاہہ اعلانات کے لیے مگر جہانجن حرام لعینہ ہے کبھی حلال نہیں ہوتی۔

مسائل فقہیہ

مسئلہ ۱: مرد کو زیور پہننا مطلقاً حرام ہے، صرف چاندی کی ایک انگوٹھی جائز ہے، جو وزن میں ایک مثقال یعنی ساڑھے چار ماشہ سے کم ہو اور سونے کی انگوٹھی بھی حرام ہے۔ تلوار کا حلیہ چاندی کا جائز ہے یعنی اس کے نیام اور قبضہ یا پرتے (یعنی وہ پٹی یا چوڑا تسمہ جس میں تلوار لٹکی رہتی ہے) میں چاندی لگائی جاسکتی ہے، بشرطیکہ وہ چاندی موضع استعمال میں نہ ہو۔ (1)

مسئلہ ۲: انگوٹھی صرف چاندی ہی کی پہنی جاسکتی ہے، دوسری دھات کی انگوٹھی پہننا حرام ہے، مثلاً لوہا، پیتل، تانبا، جست وغیرہ ان دھاتوں کی انگوٹھیاں مرد و عورت دونوں کے لیے ناجائز ہیں۔ فرق اتنا ہے کہ عورت سونا بھی پہن سکتی ہے اور مرد نہیں پہن سکتا۔

حدیث میں ہے کہ ایک شخص حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی خدمت میں پیتل کی انگوٹھی پہن کر حاضر ہوئے، فرمایا: کیا بات ہے کہ تم سے بت کی بو آتی ہے؟ انھوں نے وہ انگوٹھی پھینک دی پھر دوسرے دن لوہے کی انگوٹھی پہن کر حاضر ہوئے، فرمایا: کیا بات ہے کہ تم پر جہنمیوں کا زیور دیکھتا ہوں؟ انھوں نے اس کو بھی اتار دیا اور عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کس چیز کی انگوٹھی بناؤں؟ فرمایا کہ چاندی کی اور اس کو ایک مثقال پورا نہ کرنا۔ (2)

مسئلہ ۳: بعض علما نے یشب (یعنی ایک قیمتی پتھر کا نام جو مائل بہ سبزی ہوتا ہے) اور عقیق (یعنی ایک سرخ رنگ کا

(1) الدر المختار و رد المحتار، کتاب النکاح، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۹۲۔

(2) الدر المختار و رد المحتار، کتاب النکاح، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۹۳۔

سنن ابی داود، کتاب النکاح، باب ما جاء فی خاتم الحدید، الحدیث: ۴۲۲۳، ج ۴، ص ۱۲۲۔

مردوں کو سونے کی انگوٹھی پہننا حرام ہے مرد چاندی کی ایک انگوٹھی ایک ٹک والی جو وزن میں ساڑھے چار ماشہ سے کم ہو پہن سکتے ہیں مرد چند انگوٹھیاں یا ایک انگوٹھی کئی ٹک والی یا چھلے نہیں پہن سکتے کہ یہ سب مردوں کے لئے ناجائز ہیں عورتیں سونے چاندی کی ہر قسم کی نگوٹھیاں چھلے اور ہر قسم کے زیورات پہن سکتی ہیں لیکن سونے چاندی کے علاوہ دوسری دھاتوں مثلاً لوہا، تانبا، پیتل، رولڈ گولڈ وغیرہ کے زیورات یا انگوٹھیاں مرد و عورت دونوں کے لئے ناجائز ہیں بچے والے زیورات بھی عورتوں کے لئے منع ہیں نابالغ لڑکوں کو بھی زیورات پہننا حرام ہے

پہننے والے گنہگار ہوں گے۔ (افتاویٰ الہدیۃ، کتاب النکاح، الباب العاشر فی استعمال الذهب والفضۃ، ج ۵، ص ۳۲۵)

قیمتی پتھر) کی انگٹھی جائز بتائی اور بعض نے ہر قسم کے پتھر کی انگٹھی کی اجازت دی اور بعض ان سب کی ممانعت کرتے ہیں۔

لہذا احتیاط کا تقاضا یہ ہے کہ چاندی کے سواہر قسم کی انگٹھی سے بچا جائے، خصوصاً جبکہ صاحب ہدایہ جیسے جلیل القدر کا میلان ان سب کے عدم جواز (یعنی ناجائز ہونے) کی طرف ہے۔

مسئلہ ۴: انگٹھی سے مراد حلقہ ہے نگینہ نہیں، نگینہ ہر قسم کے پتھر کا ہو سکتا ہے۔ عقیق، یاقوت، زمرد، فیروزہ وغیرہا سب کا نگینہ جائز ہے۔ (3)

مسئلہ ۵: جب ان چیزوں کی انگٹھیاں مرد و عورت دونوں کے لیے ناجائز ہیں تو ان کا بنانا اور پہننا بھی ممنوع ہوا کہ یہ ناجائز کام پر اعانت (مدد) ہے۔ ہاں بیچ کی (یعنی فروخت کرنے کی) ممانعت ویسی نہیں جیسی پہننے کی ممانعت ہے۔ (4)

مسئلہ ۶: لوہے کی انگٹھی پر چاندی کا خول چڑھا دیا کہ لوہا بالکل نہ دکھائی دیتا ہو، اس انگٹھی کے پہننے کی ممانعت نہیں۔ (5) اس سے معلوم ہوا کہ سونے کے زیوروں میں جو بہت لوگ اندر تانبے یا لوہے کی سلاخ رکھتے ہیں اور اوپر سے سونے کا پتھر چڑھا دیتے ہیں، اس کا پہننا جائز ہے۔

مسئلہ ۷: انگٹھی کے نگینہ میں سوراخ کر کے اس میں سونے کی کیل ڈال دینا جائز ہے۔ (6)

مسئلہ ۸: انگٹھی انھیں کے لیے مسنون ہے جن کو ہمہ رکرنے کی حاجت ہوتی ہے، جیسے سلطان و قاضی اور علما جو فتویٰ پر مہر کرتے ہیں، ان کے سوا دوسروں کے لیے جن کو ہمہ رکرنے کی حاجت نہ ہو مسنون نہیں مگر پہننا جائز ہے۔ (7)

مسئلہ ۹: مرد کو چاہیے کہ اگر انگٹھی پہنے تو اس کا نگینہ ہتھیلی کی طرف رکھے اور عورتیں نگینہ ہاتھ کی پشت کی طرف رکھیں کہ ان کا پہننا زینت کے لیے ہے اور زینت اسی صورت میں زیادہ ہے کہ نگینہ باہر کی جانب رہے۔ (8)

(3) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۹۵۔

(4) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۹۵۔

(5) الفتاویٰ احمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب العاشر فی استعمال الذهب والفضۃ، ج ۵، ص ۳۳۵۔

(6) الھدایۃ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی اللبس، ج ۴، ص ۳۶۷۔

(7) الفتاویٰ احمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب العاشر فی استعمال الذهب والفضۃ، ج ۵، ص ۳۳۵۔

(8) الھدایۃ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی اللبس، ج ۴، ص ۳۶۷۔

مسئلہ ۱۰: داہنے یا بائیں جس ہاتھ میں چاہیں انگوٹھی پہن سکتے ہیں اور چھنگلیا میں پہنی جائے۔ (9)

مسئلہ ۱۱: انگوٹھی پر اپنا نام کندہ کر سکتا ہے اور اللہ تعالیٰ اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کا نام پاک بھی کندہ کر سکتا ہے، مگر محمد رسول اللہ یعنی یہ عبارت کندہ نہ کرائے کہ یہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی انگشتی پر تین سطروں میں کندہ تھی، پہلی سطر محمد (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم)، دوسری رسول، تیسری اسم جلالہ اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمادیا تھا کہ کوئی دوسرا شخص اپنی انگوٹھی پر یہ نقش کندہ نہ کرائے۔ نگینہ پر انسان یا کسی جانور کی تصویر کندہ نہ کرائے۔ (10)

مسئلہ ۱۲: انگوٹھی وہی جائز ہے جو مردوں کی انگوٹھی کی طرح ہو یعنی ایک نگینہ کی ہو اور اگر اس میں کئی نگینے ہوں تو اگرچہ وہ چاندی ہی کی ہو، مرد کے لیے ناجائز ہے۔ (11) اسی طرح مردوں کے لیے ایک سے زیادہ انگوٹھی پہننا یا چھپے پہننا بھی ناجائز ہے کہ یہ انگوٹھی نہیں، عورتیں چھلے پہن سکتی ہیں۔

مسئلہ ۱۳: ہلتے ہوئے دانتوں کو سونے کے تار سے بندھوانا جائز ہے اور اگر کسی کی ناک کٹ گئی ہو تو سونے کی ناک بنوا کر لگا سکتا ہے۔ ان دونوں صورتوں میں ضرورت کی وجہ سے سونے کو جائز کہا گیا، کیونکہ چاندی کے تار سے دانت باندھے جائیں یا چاندی کی ناک لگائی جائے تو اس میں تعفن (بدبو) پیدا ہوگا۔ (12)

(9) الدر المختار رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۹۶۔

(10) المرجع السابق۔

(11) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۹۷۔

(12) الفتاویٰ احمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب العاشر فی استعمال الذهب والفضۃ، ج ۵، ص ۳۳۶۔

اعلیٰ حضرت، امام السنہ، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

افتادہ دانت کی جگہ چاندی کا دانت لگانا جائز، اور امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ کے نزدیک سونے کے تار اور دانت بھی روا۔

فی البدایہ المختار لا یشد سنہ المتحرک بذهب بل بفضۃ وجوز ہما محمد ۱۔ ۱۱۱ وفی رد المحتار عن التاخر خانۃ جدع اذ نہ اوسقط سنہ فعند الامام یتخذ ذلک من الفضة فقط وعند محمد من الذهب ایضا ۲۔ ۱۱۱ ملخصاً

(۱) رد المحتار کتاب الحظر والاباحہ فصل فی اللبس مطبع مجتہدی دہلی ۲/ ۳۳۰ (۲) رد المحتار کتاب الحظر والاباحہ فصل فی اللبس دار حیا

اتراٹ احربی بیروت ۵/ ۲۳۱ رد مختار میں ہے کہ ہلتے ہوئے دانت چاندی سے نہ کہ سونے کی تاروں سے مضبوط نہ کئے جائیں لیکن امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ علیہ نے دونوں سے جائز قرار دیا ہے فتاویٰ شامی میں تار خانہ سے نقل کیا گیا ہے کہ کان کٹ جائے یا دانت گر جائے تو امام اعظم رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ فرماتے ہیں کہ صرف چاندی کے بنا کر لگائے جائیں جبکہ امام محمد رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے نزدیک سونے کے لگانے بھی جائز ہیں ۱۱۱ ملخصاً۔ (ت) (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۲، ص ۱۳۳ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

مسئلہ ۱۴: دانت گر گیا اسی دانت کو سونے یا چاندی کے تار سے بندھوا سکتا ہے، دوسرے شخص کا دانت اپنے میں نہیں گا سکتا۔ (13)

مسئلہ ۱۵: لڑکوں کو سونے چاندی کے زیور پہنانا حرام ہے اور جس نے پہنایا، وہ گنہگار ہوگا۔ اسی طرح بچوں کے ہاتھ پاؤں میں بلا ضرورت مہندی لگانا جائز ہے۔ عورت خود اپنے ہاتھ پاؤں میں لگا سکتی ہے، مگر لڑکے کو لگائے گی تو گنہگار ہوگی۔ (14)



(13) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب النکاحیۃ، الباب العاشر فی استعمال الذهب والفضۃ، ج ۵، ص ۳۳۶۔

(14) الدر المختار و رد المحتار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی اللیس، ج ۹، ص ۵۹۸۔

برتن چھپانے اور سونے کے وقت کے آداب

احادیث

حدیث ۱: صحیح بخاری و مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب رات کی ابتدائی تاریکی آجائے یا یہ فرمایا کہ جب شام ہو جائے تو بچوں کو سمیٹ لو کہ اُس وقت شیاطین منتشر ہوتے ہیں پھر جب ایک گھڑی رات چلی جائے، اب انھیں چھوڑ دو اور بسم اللہ کہہ کر دروازے بند کر لو کہ اس طرح جب دروازہ بند کیا جائے تو شیطان نہیں کھول سکتا اور بسم اللہ کہہ کر مشکوں کے دہانے باندھو اور بسم اللہ پڑھ کر برتنوں کو ڈھانک دو، ڈھانکنا نہیں تو یہی کر دو کہ اس پر کوئی چیز آڑی کر کے رکھ دو اور چراغوں کو بجھا دو۔ (1)

(1) صحیح مسلم، کتاب الشربۃ، باب الامر بغطیۃ الاثام، الخ، الحدیث: ۹۷۔ (۲۰۱۲) ص ۱۱۱۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ پنج ج کے فقہ ن کے جزم سے بمعنی حصہ اور شروع اور تاریکی۔ (مرقات) یہاں سارے معنی درست ہیں رات کا شروع حصہ یا رات کی اندھیری۔ راوی کو شک ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے پنج لیل فرمایا یا فرمایا مسیتم۔ مقصد قریباً ایک ہی ہے۔

۲۔ یعنی اس وقت بچوں کو گھروں سے باہر نہ نکلنے دو۔ شیطان سے مراد موذی جنات اور موذی انسان دونوں ہیں۔ (اشعہ) شام کے وقت ہی بچوں کو اغواء کرنے والے زیادہ پھرتے ہیں۔ شیطان سے مراد موذی خبیث جن ہیں ورنہ ایک شیطان تو ہر وقت انسان کے ساتھ رہتا ہے جسے قرین کہتے ہیں لہذا یہ حدیث دوسری احادیث کے خلاف نہیں جن میں قرین کے ہر وقت ساتھ رہنے کا ذکر ہے۔

۳۔ کیونکہ اب ان شیاطین کا زور گھٹ جاتا ہے وہ اپنے ٹھکانے پر پہنچ جاتے ہیں اب اگر بچے باہر نکلیں تو حرج نہیں۔ معلوم ہوا جنت و شیاطین کا اثر بچوں پر زیادہ ہوتا ہے اس لیے بچوں کو نکلنے سے روکا گیا ہے۔

۴۔ یعنی جب رات کو سونے لگو تو دروازے بند کر کے سوؤ اور بند کرتے وقت بسم اللہ پڑھ لیا کرو، اس کی حکمت بھی آگے بیان ہو رہی ہے۔

۵۔ بند دروازے سے مراد وہ ہے جو بسم اللہ سے بند کیا گیا ہو بغیر ذکر اللہ بند کیے ہوئے کے اندر شیطان آ سکتا ہے، ان کی روک کے لیے دروازہ بند ہونا اور بسم اللہ پر بند ہونا ضروری ہے بسم اللہ باطنی قفل۔

۶۔ یعنی پانی کے بھرے مشکیزے کا منہ ڈوری سے باندھ دو یوں ہی کھانا نہ چھوڑو۔

۷۔ یہ مجبوری کی حالت میں ہے جب کہ کوئی چیز گھڑا وغیرہ ڈھکنے کے لیے نہ ملے۔ اس لکڑی اور بسم اللہ کی برکت سے برتن شیطان کے سے

اور صبح بخاری کی ایک روایت میں ہے، کہ برتن چھپا دو اور مشکوں کے مونہ بند کر دو اور دروازے بھیڑ دو اور بچوں کو سمیٹ لو، شام کے وقت کیونکہ اس وقت جن منتشر ہوتے ہیں اور اچک لیتے ہیں اور سوتے وقت چراغ بجھا دو کہ کبھی چوہا جی مھسٹ کر لے جاتا ہے اور گھر جل جاتا ہے۔ (2)

مسلم کی ایک روایت میں ہے، برتن چھپا دو اور مشک کا مونہ باندھ دو اور دروازے بند کر دو اور چراغ بجھا دو کہ شیطان مشک کو نہیں کھولے گا اور نہ دروازہ اور برتن کھولے گا، اگر کچھ نہ ملے تو بسم اللہ کہہ کر ایک لکڑی آڑی کر کے رکھ دے۔ (3)

اور مسلم کی ایک روایت میں ہے، کہ سال میں ایک رات ایسی ہوتی ہے کہ اس میں دبا اترتی ہے، جو برتن چھپا ہوا نہیں ہے یا مشک کا مونہ باندھا ہوا نہیں ہے، اگر وہاں سے وہ دبا گزرتی ہے تو اس میں اتر جاتی ہے۔ (4)

اثر سے محفوظ رہے گا۔

۸۔ چراغ سے مراد جی والا چراغ ہے جس کی جی چوہا وغیرہ کھینچ سکے، لائٹن یا بجلی اس حکم سے خارج ہے جیسا کہ آگے آ رہا ہے۔ بند گھر میں جلتی لائٹن چھوڑنا بھی خطرناک ہے اس سے گیس پھیل جانے کا خطرہ ہوتا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۴۱)

(2) صحیح البخاری، کتاب بدء الخلق، باب اذا وقع الذباب فی شراب أحدکم... إلخ، الحدیث: ۳۳۱۶، ج ۲، ص ۴۰۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اسے ہاں چھین جھپٹ سے مراد ان کو دیوانہ کر دینا ان پر مسلط ہو جانا ہے۔ ہم نے ایسے لوگ دیکھے ہیں جن پر جن آ جاتے ہیں ان کو پریشان کرتے ہیں دیوانہ بنا دیتے ہیں۔ جنات کا یہ تصرف قرآن کریم سے ثابت ہے، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "الَّذِیْ یَنْتَحِظُّ الشَّیْطٰنُ مِنَ النَّفْسِ"۔ جیسے سانپ بچھو وغیرہ زہریلے جانور انسان کو نقصان پہنچا سکتے ہیں ایسے ہی شیطان بھی نقصان پہنچا سکتے ہیں، یہ اثرات بھی بالکل حق ہیں۔

۲۔ یہاں فرسقہ سے مراد موذی جانور ہے جو اپنے نفع کے بغیر انسان کا نقصان کر دے۔ چوہا، چیل، کو، بچھو، دیوانہ کتا سب فوسق یعنی موذی ہیں اس لیے ان کو حرم شریف میں بھی اور حالت احرام بھی قتل کر سکتے ہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۴۲)

(3) صحیح مسلم، کتاب الاثریۃ، باب الامر بخفیۃ الائمہ... إلخ، الحدیث: ۹۶۔ (۲۰۱۲)، ص ۱۱۱۳۔

(4) المرجع السابق، الحدیث: ۹۹۔ (۲۰۱۳)، ص ۱۱۱۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ عموماً ہر رات شیاطین کا پھیلاؤ اول شب میں ہوتا ہے اور سال میں ایک رات ایسی بھی آتی ہے جس میں خصوصی بنائیں نازل ہوتی ہیں لہذا احادیث میں تعارض نہیں۔ ان احادیث میں یہ عمومی بلاؤں کا ذکر تھا جو روزانہ شروع رات میں آتی ہیں اور اس حدیث میں خاص ان بلاؤں کا ذکر ہے جو سال میں ایک رات آتی ہے۔

حدیث ۲: امام احمد و مسلم و ابو داؤد نے جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب آفتاب ڈوب جائے تو جب تک عشا کی سیاہی جاتی نہ رہے اپنے چو پائیوں اور بچوں کو نہ چھوڑو، کیونکہ اس وقت شیاطین منتشر ہوتے ہیں۔ (5)

حدیث ۳: صحیح بخاری و مسلم میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ سوتے وقت اپنے گھروں میں آگ مت چھوڑا کرو۔ (6)

حدیث ۴: صحیح بخاری میں ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ مدینہ میں ایک مکان رات میں جل گیا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا کہ یہ آگ تمہاری دشمن ہے، جب سویا کرو تو بجھا دیا کرو۔ (7)

حدیث ۵: شرح السنہ میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جب رات میں کتے کا بھونکنا اور گدھے کی آواز سنو تو اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ پڑھو کہ وہ اُس چیز کو دیکھتے ہیں جس کو تم نہیں دیکھتے اور جب بچل بند ہو جائے تو گھر سے کم نکلو کہ اللہ عزوجل رات میں اپنی مخلوقات میں سے جس کو چاہتا ہے، زمین پر منتشر کرتا ہے۔ (8)

۲۔ من بیانہ ہے نہ کہ تعضیہ لہذا اس کے معنی یہ ہیں کہ یہ بلا ان برتنوں میں داخل ہو جاتی ہے جن پر ڈھکن نہ ہو۔ نووی نے فرمایا کہ ان حدیث سے معلوم ہوا کہ دنیا کی ہر آفت سے بچاؤ اللہ تعالیٰ کا ذکر ہے مسلمان ہر وقت ہر حال میں اللہ کا ذکر کرے، دنیا زہر ہے ذکر اللہ اس کا تریاق۔ (مرقات) ترکزی آگ میں نہیں جلتی، اللہ کے ذکر سے تر زبان ان شاء اللہ دوزخ اور آفات کی آگ سے نہ جھکے گی۔ مؤمن سوتے جاگتے، چیتے، مرتے اللہ کا ذکر کرے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۱۲۵)

(5) المرجع السابق، الحدیث: ۹۸۔ (۲۰۱۳)، ص ۱۱۵۔

(6) صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب لا یتحرک النار فی البیت عند النوم، الحدیث: ۶۲۹۳، ج ۴، ص ۱۸۶۔

(7) المرجع السابق، الحدیث: ۶۲۹۳، ج ۴، ص ۱۸۶۔

(8) شرح السنہ، کتاب الاثریۃ، باب ایکاء الاسقیۃ وتخیر الآنیۃ، الحدیث: ۲۹۵۴، ج ۶، ص ۱۴۱۔ ۱۴۲۔

حکیم ارامت کے مدنی پھول

۱۔ یہاں رات کی قید ہے دوسری روایات میں یہ قید نہیں۔ چنانچہ حصن حصین شریف میں ہے کہ جب تم گدھے کا ریٹکنا سنو تو اَعُوْذُ بِاللّٰهِ پڑھو۔ ابو داؤد و ترمذی حاکم وغیرہ کی روایت میں ہے کہ جب تم کتوں کا رونا سنو تو اَعُوْذُ بِاللّٰهِ پڑھو۔ یہاں رات کی قید یا تو اتنا غلطی ہے یا اس سے ہے کہ رات میں یہ آوازیں بہت کمزور معلوم ہوتی ہیں۔

۲۔ یعنی شیاطین کو دیکھ کر یہ دونوں جانور آوازیں نکالتے چیختے ہیں۔ کتوں کا رونا بلاؤں آفتوں کو دیکھ کر ہوتا ہے اور جب مرغ کی آواز سنو دعا، نگو کہ وہ فرشتہ کو دیکھ کر بولتا ہے۔ یہاں مرقات نے فرمایا کہ صالحین کے پاس دعا مانگنا یا ان سے تبرک حاصل کرنا مستحب ہے ←



اور بدکاروں کو دیکھ کر اعوذ پڑھنا افضل۔ صالحین فاسقین کا دیکھنا آیات الہیہ سے ہے۔ (مرقات)

۳۔ یعنی رات گئے جب لوگوں کی آمد و رفت بند ہو جائے تم بھی بلا ضرورت گھر سے نہ نکلو کہ اس وقت جنات موزی جا نور نکلتے ہیں۔

۴۔ یعنی دن بھر زمین میں تم پھیلے ہوئے ہو رات گئے کوئی اور مخلوق یہاں پھیلتی ہے جو دن میں چھپی رہتی ہے دن میں تم چو پھر وہ مخلوق چھپی رہے رات میں تم آرام کرو تا کہ وہ مخلوق چلے پھرے اس کو بھی رب تعالیٰ کی زمین پر چلنے کا حق ہے، اگر تم بھی اس وقت عام طور پر چو پھر دو اس مخلوق سے خلط ملط ہونے کی وجہ سے تم کو تکلیف پہنچے گی۔

۵۔ جیسے ظاہری قفل انسان سے نہیں ٹوٹے یوں ہی ذکر اللہ کا قفل شیطان سے نہیں ٹوٹتا اور جیسے بسم اللہ کی برکت سے شیطان کھانا نہیں کھا سکتا ایسے ہی بسم اللہ کی برکت سے صحبت میں شریک نہیں ہو سکتا، یوں ہی بسم اللہ کی برکت سے وہ بند دروازہ نہیں کھول سکتا۔

(مرآۃ النایح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۳۵)

بیٹھنے اور سونے اور چلنے کے آداب

قرآن مجید میں ارشاد ہے:

(وَلَا تُصَغِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿١٨﴾) (1)
 (لقمان نے بیٹے سے کہا) کسی سے بات کرنے میں اپنا رخسارہ ٹیڑھا نہ کر اور زمین پر اترانا نہ چل، بے شک اللہ
 (عزوجل) کو پسند نہیں ہے کوئی اترانے والا، فخر کرنے والا اور میانہ چال اور اپنی آواز پست کر، بے شک سب
 آوازوں میں بڑی آواز گدھے کی آواز ہے۔
 اور فرماتا ہے:

(وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَن تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَن تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ﴿٣٧﴾) (2)

(1) پ ۲۱، لقمن: ۱۸-۱۹.

(2) پ ۱۵، بنی اسرائیل: ۳۷.

متکبر کو انوکھی نصیحت:

حضرت سیدنا حسن رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ایک امیر کو متکبرانہ چال چلتے ہوئے دیکھا تو اس سے فرمایا کہ اے جنتی! تکبر سے اتراتے ہوئے
 ناک چڑھا کر کہاں دیکھ رہا ہے؟ کیا ان نعمتوں کو دیکھ رہا ہے جن کا شکر ادا نہیں کیا گیا یا ان نعمتوں کو دیکھ رہا ہے کہ جن کا تذکرہ اللہ عزوجل
 کے احکام میں نہیں۔ جب اس نے یہ بات سنی تو غدر پیش کرنے حاضر ہوا تو آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ارشاد فرمایا: مجھ سے معذرت نہ
 کر بلکہ اللہ عزوجل کی بارگاہ میں توبہ کر کیا تم نے اللہ عزوجل کا یہ فرمان نہیں سنا:

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَن تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَن تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ﴿٣٧﴾

ترجمہ کنز الایمان: اور زمین میں اترانا نہ چل بے شک ہرگز زمین نہ چیر ڈالے گا اور ہرگز بلندی میں پہاڑوں کو نہ پہنچے گا۔

(پ 15، بنی اسرائیل: 37)

خليفة بنے سے پہلے حضرت سیدنا عمر بن عبدالعزیز رضی اللہ تعالیٰ عنہ ایک مرتبہ متکبرانہ چال چلتے تو حضرت سیدنا طاہر اس رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے
 ان کے کندھے پر چٹکی کاٹ کر ارشاد فرمایا: جس کے پیٹ میں کچھ بھلائی ہو اس کی چال ایسی نہیں ہوتی۔ تو حضرت سیدنا عمر بن عبدالعزیز
 رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے معذرت خواہانہ انداز میں عرض کی: اے محترم چچا جان! ایسی چال چلتے کی وجہ سے میرے ہر عضو کو ماریں تاکہ وہ جان

اور زمین میں اتراتا نہ چل، بے شک توہ رگزنہ تو زمین چیر ڈالے گا اور نہ تو بلندی میں پہاڑوں کو پہنچے گا۔

(وَعِبَادُ الرَّحْمَنِ الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ﴿٦٣﴾ وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ﴿٦٤﴾) (3)

اور رحمن کے بندے وہ ہیں جو زمین پر آہستہ چلتے ہیں، جاہل جب ان سے مخاطبہ کرتے ہیں تو کہتے ہیں: سلام اور وہ جو اپنے رب کے لیے سجدہ اور قیام میں رات گزارتے ہیں۔

اور فرماتا ہے:

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ لَكُمْ وَإِذَا قِيلَ انشُرُوا فَانْشُرُوا يَرْفَعِ اللَّهُ أَمْنَكُمْ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ أُولُوا الْعِلْمِ كَرَجَاتٍ) (4)

اے ایمان والو! جب تم سے کہا جائے مجلسوں میں جگہ دو تو جگہ دے دو، اللہ (عزوجل) تم کو جگہ دے گا اور جب کہا جائے اٹھ کھڑے ہو تو اٹھ کھڑے ہو، اللہ تعالیٰ تم میں ایمان والوں اور علم والوں کو درجوں بلند کرے گا۔



حضرت سیدنا محمد بن واسع رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنے بیٹے کو اتر کر چلتے ہوئے دیکھا تو اس سے فرمایا: کیا تو جانتا ہے کہ تو کیا ہے؟ تیری ماں کو تو میں نے دوسو درہم دے کر خرید لیا تھا اور تیرا باپ ایسا ہے کہ اللہ عزوجل مسلمانوں میں اس جیسے لوگوں کی کثرت نہ فرمائے۔

حضرت سیدنا مطرف رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مہلب (پورا نام مہلب بن ابی صفرہ، حجاج کے لشکر کا ایک رئیس) کو ریشم کا جبہ پہنے اتر کر چھتے دیکھا تو اس سے ارشاد فرمایا: اے اللہ عزوجل کے بندے! یہ ایسی چال ہے جسے اللہ عزوجل اور نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم ناپسند فرماتے ہیں۔ تو مہلب نے آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے کہا: کیا آپ مجھے نہیں جانتے؟ تو آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ارشاد فرمایا: کیوں نہیں! میں جانتا ہوں کہ تمہاری ابتدا ایک حقیر نطفہ سے ہوئی اور انتہا بدبودار مردار کی صورت میں ہوگی اور ان دونوں کی درمیانی مدت میں گندگی اٹھائے پھر رہے ہو۔ تو مہلب نے ایسی چال چلنا چھوڑ دی۔ (الْوَدَّاعِ عَنْ أَقْبَرِ بْنِ الْكَلْبِ مَعْنَى ۲۴۲)

(3) پ ۶۹، الفرقان: ۶۳-۶۴.

(4) پ ۲۸، الجاثیہ: ۱۱.

احادیث

حدیث ۱: صحیح بخاری و مسلم میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ایسا نہ کرے کہ ایک شخص دوسرے کو اس کی جگہ سے اٹھا کر خود بیٹھ جائے لیکن ہٹ جایا کر د اور جگہ کشادہ کر دیا کرو۔ (۱) یعنی بیٹھنے والوں کو یہ چاہیے کہ آنے والے کے لیے سرک جائیں اور جگہ دے دیں کہ وہ بھی بیٹھ جائے یا یہ

(۱) صحیح مسلم، کتاب السلام، باب تحریم اقامۃ الانسان من موضعه... إلخ، الحدیث: ۲۸۔ (۲۱۷۷)، ص ۱۱۹۸۔

حلقہ کے درمیان آ کر بیٹھنا

حضرت سیدنا حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اکرم، شہنشاہ بنی آدم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عا لیشان ہے: اللہ عزوجل حلقے (یعنی دائرے) کے درمیان بیٹھنے والے پر لعنت فرمائے۔

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب الجلووس وسط الحلقۃ، الحدیث: ۴۸۲۶، ص ۱۵۷۸ لعن اللہ بدله لعن رسول اللہ) ایک اور روایت میں ہے: ایک شخص حلقے کے درمیان میں آ کر بیٹھ گیا تو حضرت سیدنا حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ارشاد فرمایا کہ نبی کریم، رؤوف و رحیم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی زبان حق پرست سے اس پر لعنت کی گئی ہے۔ یا پھر یہ ارشاد فرمایا: اللہ عزوجل نے رسول اکرم، شفیع معظم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی زبان اقدس سے اس شخص پر لعنت فرمائی جو حلقے کے درمیان آ کر بیٹھتا ہے۔

(جامع الترمذی، ابواب الادب، باب ماجاء فی کراہیۃ العقود۔۔۔۔۔ إلخ، الحدیث: ۲۷۵۳، ص ۱۹۲۹) حضرت سیدنا ابوالامامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ حضور نبی پاک، صاحب نواک، سیاح افلاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عا لیشان ہے: جس نے کسی قوم کا حلقہ ان کی اجازت کے بغیر پھلانگادہ گناہ گار ہے۔ (المعجم الکبیر، الحدیث: ۷۹۶۳، ج ۸، ص ۲۴۶) اللہ کے محبوب، دانائے غیب، منزّہ عن الغیب عزوجل و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا: دو آدمیوں کے درمیان کھان کی اجازت کے بغیر نہ بیٹھو۔ (سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الرجل یجلس بین الرجلین، الحدیث: ۴۸۲۳، ص ۱۵۷۹)

شہنشاہ خوش خصال، ہیکر حسن و جمال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عا لیشان ہے کہ کسی کے لئے جائز نہیں کہ وہ دو آدمیوں کی اجازت کے بغیر ان میں جدائی ڈالے۔

(جامع الترمذی، ابواب الادب، باب ماجاء فی کراہیۃ الجلووس بین۔۔۔۔۔ إلخ، الحدیث: ۲۷۵۲، ص ۱۹۲۹) دافع رنج و غلال، صاحب جود و نوال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عا لیشان ہے: تم میں سے کوئی شخص جب کسی مجلس میں آئے تو اگر اس کی خاطر کثرت کی پیدا کی جائے تو وہاں بیٹھ جائے ورنہ جہاں کشادگی پائے وہاں جا کر بیٹھے۔

(شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی التواضع، الحدیث: ۸۲۴۳، ج ۶، ص ۳۰۰) ←

کہ آنے والا کسی کو نہ اٹھائے بلکہ ان سے کہے کہ سرک جاؤ، مجھے بھی جگہ دیدو۔

صحیح بخاری میں یہ بھی مذکور ہے کہ ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما اسے مکروہ جانتے تھے کہ کوئی شخص اپنی جگہ سے اٹھ جائے اور یہ اس کی جگہ پر بیٹھیں۔ (2) حضرت ابن عمر (رضی اللہ تعالیٰ عنہما) کا یہ فعل کمال ورع سے تھا کہ کہیں ایسا نہ ہو کہ اس کا جی نہ چاہتا ہو اور محض ان کی خاطر سے جگہ چھوڑ دی ہو۔

حدیث ۲: ابو داؤد نے سعید بن ابی الحسن سے روایت کی، کہتے ہیں: کہ ابوبکرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہمارے پاس ایک شہادت میں آئے۔ ایک شخص ان کے لیے اپنی جگہ سے اٹھ گیا، انھوں نے اس جگہ پر بیٹھنے سے انکار کیا اور یہ کہا کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اس سے منع فرمایا ہے اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے اس سے بھی منع فرمایا ہے کہ کوئی شخص ایسے شخص کے کپڑے سے ہاتھ پونچھے جس کو یہ کپڑا پہنایا نہیں ہے۔ (3)

اس حدیث میں بھی اگرچہ یہ نہیں ہے کہ ابوبکرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اس شخص کو اس کی جگہ سے اٹھایا ہو، بلکہ وہ شخص خود اٹھ گیا تھا اور بظاہر یہ صورت ممانعت کی نہیں ہے مگر یہ کمال احتیاط ہے کہ انھوں نے اس صورت میں بھی بیٹھنا گوارا نہ کیا کہ اگرچہ اٹھنے کو کہا نہیں مگر اٹھنا چونکہ انھیں کے لیے ہوا، لہذا یہ خیال کیا کہ کہیں یہ بھی اٹھانے ہی کے حکم میں نہ ہو۔

حدیث ۳: صحیح مسلم میں ابوبکرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص اپنی جگہ سے اٹھ کر گیا، پھر آگیا تو اس جگہ کا وہی حق دار ہے۔ (4) یعنی جبکہ جلد آ جائے۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حدیث کی عبارت سے معلوم ہو رہا ہے کہ یہ دونوں کام الگ منع ہیں جو صرف اٹھائے مگر اس کی جگہ بیٹھے نہیں تو ایک گناہ کا مرتکب ہے اور جو بیٹھ بھی جائے وہ دو گنا کا۔ اس حکم سے وہ صورتیں علیحدہ ہیں جہاں شرعاً اٹھنا جائز ہو۔ امام اپنے مضمون سے مؤذن اپنی تکبیر کی جگہ سے دوسرے کو ہٹا سکتا ہے، ایسے ہی اگر یہ جگہ پہلے سے کسی اور آدمی کی تھی وہ اپنا رد مال یا پگڑی رکھ کر وضو کرنے گیا دوسرا اس کی جگہ بیٹھ گیا وہ اسے اٹھا سکتا ہے۔

۲۔ دوسری مجلسوں میں بھی۔ خیال رہے کہ کسی کے گھر جا کر اس کی عزت کی جگہ نہ بیٹھا اگر تم بیٹھ گئے تو صاحب خانہ تمہیں وہاں سے اٹھا سکتا ہے کیونکہ یہ جگہ اس کی اپنی ہے اسی لیے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے من منقذہ فرمایا یعنی بیٹھے ہوئے کو اس کی اپنی جگہ سے نہ ہٹاؤ، ورنہ یہاں یہ جگہ اس کی تھی ہی نہیں۔ (مرآۃ السانج شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲، ص ۶۲۲)

(2) صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب (إذا قیل لکم... إلخ)، الحدیث: ۶۲۷۰، ج ۴، ص ۱۷۹۔

(3) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الرجل یقوم للرجل من مجلس، الحدیث: ۴۸۲۷، ج ۴، ص ۳۳۹۔

(4) صحیح مسلم، کتاب السلام، باب إذا قام من مجلس ثم عاد فہو احق بہ، الحدیث: ۳۱۰۱، (۲۱۷۹)، ص ۱۱۹۹۔

حدیث ۴: ابو داؤد نے ابو داؤد رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو جب بیٹھتے اور ہم لوگ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کے پاس بیٹھتے اور اللہ تبارک و تعالیٰ سے دعا کرتے کہ یہ دعا قبول ہو تو نصیب مبارک یا کوئی چیز وہاں چھوڑ جاتے اس سے صحابہ کو یہ پتا چلتا کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) تمہارے پاس لائیں گے اور سب لوگ غصہ سے رہتے۔ (5)

حدیث ۵: ترمذی و ابو داؤد نے عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ کسی کو یہ حلال نہیں کہ دو شخصوں کے درمیان جدائی کر دے (یعنی دونوں کے درمیان میں بیٹھ جائے)، مگر ان کی اجازت سے۔ (6)

حدیث ۶: بیہقی نے شعب الایمان میں واثلہ بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ ایک شخص رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) مسجد میں تشریف فرما تھے۔ اس کے لیے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) اپنی جگہ سے سرک گئے اس نے عرض کیا، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) جگہ کشادہ موجود ہے، (حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کو سرکے اور تکلیف فرمانے کی ضرورت نہیں)۔ ارشاد فرمایا: مسلم کا یہ حق ہے کہ جب اس کا بھائی اسے دیکھے، اس کے لیے سرک جائے۔ (7)

حدیث ۷: رزین نے ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جب مسجد میں بیٹھتے دونوں ہاتھوں سے احتبا کرتے۔ (8)

احتبا کی صورت یہ ہے کہ آدمی سرین کو زمین پر رکھ دے اور گھٹنے کھڑے کر کے دونوں ہاتھوں سے گھیر لے اور ایک ہاتھ کو دوسرے سے پکڑ لے اس قسم کا بیٹھنا تواضع اور انکسار میں شمار ہوتا ہے۔

(5) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب اذا قام من مجلس ثم رجع، الحدیث: ۴۸۵۳، ج ۴، ص ۳۴۶۔

(6) سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء لیکبر اھیۃ الجلس... إلخ، الحدیث: ۲۷۱۱، ج ۴، ص ۳۴۶۔

(7) شعب الایمان، باب فی مقاربۃ مسوادة اصل الدین، فصل فی قیام المرء... إلخ، الحدیث: ۸۹۳۳، ج ۶، ص ۴۶۸۔

(8) مشکاة المصابیح، کتاب الادب، باب الجلس... إلخ، الحدیث: ۴۷۱۳، ج ۴، ص ۲۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

احتبا کے معنی پہلے بیان ہو چکے کہ دونوں زانوؤں کھڑے ہوں سرین زمین پر لگے ہوں اور دونوں ہاتھوں سے رانو پکڑے ہوئے کہ ہاتھوں کے حلقے میں انہیں لے لیا جاوے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نماز کے علاوہ اور وقت میں مسجد میں اس طرح بیٹھتے تھے وہ بھی کبھی کبھی۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۵۰)

حدیث ۸: ابو داؤد نے جابر بن سمرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جب نماز فجر پڑھ لیتے چارزانو بیٹھے رہتے، یہاں تک کہ آفتاب اچھی طرح طلوع ہو جاتا۔ (9)

حدیث ۹: ابو داؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کوئی شخص سایہ میں ہو اور سایہ سمٹ گیا کچھ سایہ میں ہو گیا کچھ دھوپ میں تو وہاں سے اٹھ جائے۔ (10)

حدیث ۱۰: ابو داؤد نے عمرو بن شریذ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے وہ اپنے والد سے روایت کرتے ہیں، کہتے ہیں: میں اس طرح بیٹھا ہوا تھا کہ بائیں ہاتھ کو پیٹھ کے پیچھے کر لیا اور داہنے ہاتھ کی ہتھیلی کی گدی پر ٹیک لگائی۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میرے پاس سے گزرے اور یہ فرمایا: کیا تم ان لوگوں کی طرح بیٹھتے ہو، جن پر خدا کا غضب ہے۔ (11)

حدیث ۱۱: ابو داؤد نے جابر بن سمرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں کہ جب ہم نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوتے تو وہاں بیٹھ جاتے جہاں مجلس ختم ہوتی یعنی مجلس کے کنارہ پر بیٹھتے اسے چیر کر

(9) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الرجل یجلس مترجعا، الحدیث: ۴۸۵۰، ج ۴، ص ۳۲۵۔

(10) المرجع السابق، باب فی المجلس بین النفل والغسل، الحدیث: ۴۸۲۱، ج ۴، ص ۳۳۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب یا تو سایہ میں ہی چلا جاوے یا بالکل دھوپ میں ہو جاوے کیونکہ سایہ ٹھنڈا اور دھوپ گرم اور بیک وقت ایک جسم پر ٹھنڈک و گرمی لینا صحت کے لیے مضر ہے اس لیے ایسا نہ کرے، نیز یہ شیطانی نشست ہے جس سے شیطان خوش ہوتا ہے لہذا اس تشبیہ سے بچنا ضروری ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۶۲)

(11) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی المجلس المکروه، الحدیث: ۴۸۴۸، ج ۴، ص ۳۲۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب عمرو بن شریذ تابعی ہیں، ان کے والد شریذ صحابی ہیں، عمرو طائف کے رہنے والے ہیں، ثقہ ہیں، ان کی ملاقات اپنے والد سے در حضرت عبداللہ ابن عباس سے ہے ان دو بزرگوں کے علاوہ اور چند صحابہ سے بھی ہے۔ (اشعہ)

۲۔ ایہ سرین یعنی چوڑے کو کہتے ہیں مگر یہاں اس سے مراد ہتھیلی کا وہ گوشت ہے جو انگوٹھے کی جڑ سے آخری کنارہ تک ہے۔

۳۔ یعنی اس طرح یہود بیٹھا کرتے ہیں اور یہود پر اللہ کا غضب ہے تو یہ بیشک اللہ تعالیٰ کو ناپسند ہے تم مومن انعام والے بندے ہو تم ان سے تشبیہ کیوں کرتے ہو۔ خیال رہے کہ ایک ہاتھ پیٹھ پر رکھنا دوسرے ہاتھ پر ٹیک لگانا مطلقاً ممنوع ہے خواہ داہن ہاتھ پیٹھ پر بایں زمین پر یا برعکس (اشعہ) بلکہ دونوں یا ایک ہاتھ کو کھ پر رکھنا یا پیٹھ سے لگانا بھی ممنوع ہے یوں ہی دونوں ہاتھ پیٹھ کے پیچھے کھڑے کرنا ان پر ٹیک لگانا ممنوع ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۴۶۷)

اندر نہیں گھستے۔ (12)

حدیث ۱۲: جبرانی نے ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کوئی شخص کسی قوم کے پاس آئے اور اس کی خوشنودی کے لیے وہ لوگ جگہ میں وسعت کر دیں، تو اللہ عز و جل پر حق ہے کہ ان کو راضی کرے۔ (13)

حدیث ۱۳: ابو داؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: چند کلمات ہیں کہ جو شخص مجلس سے فارغ ہو کر ان کو تین مرتبہ کہہ لے گا۔ اللہ تعالیٰ اس کے گناہ مٹا دے گا اور جو شخص مجلس خیر و مجلس ذکر میں ان کو کہے گا، تو اللہ عز و جل ان کو اس خیر پر مہر کر دے گا، جس طرح کوئی شخص انگوٹھی سے مہر کرتا ہے۔ وہ یہ ہیں:

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ. (14)

حدیث ۱۴: حاکم نے مستدرک میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو لوگ دیر تک کسی جگہ بیٹھے اور بغیر ذکر اللہ اور نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر درود پڑھے وہاں سے متفرق ہو گئے۔ انھوں نے نقصان کیا اگر اللہ عز و جل چاہے عذاب دے اور چاہے تو بخش دے۔ (15)

حدیث ۱۵: بزار نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب بیٹھو جوتے اتار لو، تمھارے قدم آرام پائیں گے۔ (16)

حدیث ۱۶: صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے پاؤں پر پاؤں رکھنے سے منع فرمایا ہے، جبکہ چت لینا ہو۔ (17)

(12) المرجع السابق، باب فی التعلق، الحدیث: ۴۸۲۵، ج ۴، ص ۳۳۹.

حکیم ارامت کے مدنی پھول

اب یعنی کنارہ مجلس پر بیٹھتا تھا لوگوں کی گردنیں پھلانگ کر درمیان پہنچنے کی کوشش نہ کرتا تھا یہ آداب حضور نور صلی اللہ علیہ وسلم نے سکھائے تھے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۶۶)

(13) کنز العمال، کتاب الصحیۃ، رقم: ۲۵۳۷۰، ج ۹، ص ۵۸.

(14) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی کفارة المجلس، الحدیث: ۴۸۵۷، ج ۴، ص ۳۳۷.

(15) لمستدرک، کتاب اللہ و التکبیر... إلخ، باب ما عمل آدمی من عمل... إلخ، الحدیث: ۱۸۶۹، ج ۲، ص ۱۶۸.

(16) کنز العمال، کتاب الصحیۃ، رقم: ۲۵۳۹۰، ج ۹، ص ۵۹.

(17) صحیح مسلم، کتاب البیاس... إلخ، باب فی منع الاستلقاء... إلخ، الحدیث: ۷۲۰۰، ج ۲، ص ۱۱۶۲.

حدیث ۱۷: صحیح بخاری و مسلم میں عہاد بن قیس سے روایت ہے، وہ اپنے چچا سے روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو مسجد میں لیٹے ہوئے میں نے دیکھا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے ایک پاؤں کو دوسرے پر رکھا تھا۔ (18)

یہ بیان جواز کے لیے ہے اور اس صورت میں کہ ستر کھلنے کا اندیشہ نہ ہو، اور پہلی حدیث اس صورت میں ہے کہ ستر کھلنے کا اندیشہ ہو۔ مثلاً آدمی تہبند پہنے ہو اور چت لیٹ کر ایک پاؤں کھڑا کر کے اس پر دوسرے کو رکھے تو ستر کھلنے کا اندیشہ ہوتا ہے اور اگر پاؤں پھیلا کر ایک کو دوسرے پر رکھے تو اس صورت میں کھلنے کا اندیشہ نہیں ہوتا۔ حدیث ۱۸: شرح سنن میں ہے کہ ابو قتادہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جب رات میں منزل میں اترتے تو وہی کر دھڑ پر لیٹتے اور جب صبح سے کچھ ہی پہلے اترتے تو وہ ہاتھ کو کھڑا کرتے اور اس کی ہتھیلی پر سر رکھ کر لیٹتے۔ (19)

حدیث ۱۹: ترمذی نے جابر بن سمرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ

حکیم الامت کے مدنی پھول

اس حدیث کے وہی معنی ہیں جو ابھی اوپر بیان ہوئے کہ آدمی تہبند باندھے یا ڈھیلے پانچہ کا پا جامہ پہنے ہو اور پھر ایک پاؤں کھڑا کرے کھڑے ہوئے گھٹنے پر دوسرے پاؤں کی پٹنڈی رکھے اس میں ستر کھل جانے کا سخت خطرہ ہوتا ہے اس لیے ممنوع ہے ویسے بھی اس طرح لیٹنا خلاف تہذیب معلوم ہوتا ہے خصوصاً لوگوں کے سامنے غرضکہ اس ممانعت میں بہت حکمتیں ہیں۔

(مرآۃ السانج شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۳۶)

(18) صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب الاستئذان، الحدیث: ۶۲۸۷، ج ۴، ص ۱۸۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ عہاد بن قیس ابن زید ابن عاصم تابعی ہیں، انصاری مازنی ہیں، ان کے چچا کا نام عبد اللہ ابن زید انصاری ہے وہ غزوہ حرہ میں ۶۳ھ میں شہید ہوئے۔

۲۔ قدم کا قدم پر رکھنا یہ ہے کہ دونوں پاؤں پورے پھیلے ہوئے ہیں اور قدم قدم پر رکھا ہو اس صورت میں ستر نہیں کھل سکتا۔ پاؤں پر پاؤں رکھنے کے معنی یہ ہیں کہ ایک پاؤں کھڑا ہو اور دوسرا پاؤں کھڑے ہوئے گھٹنے پر رکھا ہو۔ پہلی صورت جائز یہ دوسری صورت ممنوع ہذا احادیث میں تعارض نہیں پاؤں پر پاؤں رکھنے میں ستر کھل جانے کا اندیشہ ہے خصوصاً جب کہ تہبند بندھا ہوا ہو، آئندہ حدیث میں پاؤں پر پاؤں رکھنے سے ممانعت آرہی ہے۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ مسجد میں لیٹنا جائز ہے خصوصاً ضرورت کے وقت یا یہ بحالت احتکاف۔

(مرآۃ السانج شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۳۵)

(19) شرح السنۃ، کتاب الاستئذان، باب کیفیۃ النوم، الحدیث: ۳۲۵۲، ج ۶، ص ۳۸۰۔

وسلم کو بائیں کروٹ پر تکیہ لگائے ہوئے دیکھا۔ (20)

حدیث ۲۰: ترمذی نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ایک شخص کو پیٹ کے بل لیٹے ہوئے دیکھا، فرمایا: اس طرح لیٹنے کو اللہ (عزوجل) پسند نہیں کرتا۔ (21)

حدیث ۲۱: ابو داؤد و ابن ماجہ نے طوفہ غفاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، (یہ اصحاب صفہ میں سے تھے) کہتے ہیں، سینے کی بیماری کی وجہ سے میں پیٹ کے بل لیٹا ہوا تھا کہ اچانک کوئی شخص اپنے پاؤں سے مجھے حرکت دیا ہے اور یہ کہتا ہے کہ اس طرح لیٹنے کو اللہ تعالیٰ مبغوض رکھتا ہے۔ میں نے دیکھا تو وہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تھے۔ (22)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی حضور صلی اللہ علیہ وسلم جب سفر کی حالت میں کسی جگہ اول رات یا آخری رات میں اترتے آرام فرماتے تو سونے کی نیت سے لیٹتے تھے داہنی کروٹ پر داہنی ہتھیلی پر داہنا رخسارہ رکھ کر لیٹتے تھے لیٹنے میں سنت طریقہ یہ ہی ہے۔
۲۔ یعنی اگر آخری شب میں جب صبح صادق ہونے والی ہوتی آپ آرام کے لیے اترتے تو اس طریقہ سے لیٹتے تاکہ نیند نہ آجائے۔ خیال رہے کہ عرب میں اکثر شب میں سفر کرتے ہیں دن میں کسی منزل پر آرام کے لیے ٹھہر جاتے ہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۵۳)

(20) سنن ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی الاحکاء، الحدیث: ۲۷۷۹، ج ۴، ص ۵۳۳۔

(21) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب ماجاء فی کراہیۃ الیضطجاع علی البطن، الحدیث: ۴۷۷۷، ج ۴، ص ۵۲۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اوندھے لیٹنے کو اللہ تعالیٰ پسند نہیں کرتا بلکہ اس سے ناراض ہے کہ اس طرح سونے سے غفلت پیدا ہوتی ہے، اس سونے میں سینہ اور چہرہ جو اشرف اعضاء ہیں زمین پر گر جاتا ہے سر تو سجدہ ہی میں زمین پر رکھا جاوے نہ کسی اور کے سامنے نہ سوتے ہیں۔ صوفیاء فرماتے ہیں کہ سونا چار قسم کا ہے: پشت پر سونا یعنی چت یہ سونا اہل عبرت کا ہے، داہنی کروٹ پر سونا یہ اہل عبادت کا سونا ہے، بائیں کروٹ پر سونا یہ اہل استراحت کا سونا ہے، پیٹ کے بل سونا یہ سونا اہل غفلت کا ہے۔ (اشحد) مرقات نے فرمایا کہ اوندھے سونا دوزخیوں کا ہوگا اور نوطی لوگ ایسے سوتے ہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۵۵)

(22) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الرجل یطبخ علی بطنہ، الحدیث: ۵۰۳۰، ج ۴، ص ۴۰۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی شہر بردوزن یزید تا جی ہیں، ان کے والد طوفہ طرخ، ف، ہ یا طہ۔ صحابی ہیں، ان کے والد قیس ابن ابی غزہ غفاری کوئی ہیں۔

۲۔ یعنی طوفہ صحابی ہیں اور صفہ والوں میں سے ہیں وہ اپنا واقعہ بیان کرتے ہیں۔

حدیث ۲۲: ابن ماجہ نے ابوذر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں: میں پیٹ کے بل لیٹا ہوا تھا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میرے پاس سے گزرے اور پاؤں سے ٹھوکر ماری اور فرمایا: اے جندب (یہ حضرت ابوذر کا نام ہے یہ جہنمیوں کے لیٹنے کا طریقہ ہے۔ (23) یعنی اس طرح کافر لیٹتے ہیں یا یہ کہ جہنمی جہنم میں اس طرح لیٹیں گے۔ حدیث ۲۳: ابو داؤد نے علی بن شیبان رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص ایسی چھت پر رات میں رہے، جس پر روک نہیں ہے یعنی دیوار یا منڈیر نہیں ہے اس سے ذمہ بری ہے۔ (24) یعنی اگر رات میں چھت سے گر جائے تو اس کا ذمہ دار وہ خود ہے۔

۳۔ سحرین کے پیش ح کے سکون سے یا سین کے اور ح دونوں کے فتح سے خلق اور سینہ کا درمیانی حصہ یعنی سینہ کے اوپری حصہ میں میرے درد تھا اس لیے میں پیٹ کے بل اوندھا لیٹا ہوا تھا کہ سینہ دبا رہے اور درد کو سکون ہو۔

۴۔ بڑا خوش نصیب ہے وہ جسم جسے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی ٹھوکر لگ جاوے ہم نے عرض کیا ہے۔ شعر
مرث کے خوب لگتی مٹی مری ٹھکانے
گر انکی ٹھوکروں میں میرا مزار ہوتا

جس غلطی کی بنا پر حضور کی ٹھوکر نصیب ہو جاوے وہ غلطی بھی اللہ کی رحمت ہے۔

۵۔ چونکہ دوسری طرح لیٹنے سے بھی یہ تکلیف دفع ہو سکتی تھی اس لیے یہ درد اس کے لیے عذر نہ مانا گیا اور اس سے منع فرما دیا گیا ہذا اس پر یہ اعتراض نہیں کہ ضرورت کے وقت ممنوعات بھی درست ہو جاتے ہیں۔

۶۔ سبحان اللہ آپ نے یہ عذر حضور سے عرض نہ کیا بلکہ فورا کر وٹ بدل لی یا اٹھ کر کھڑے ہو گئے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۵۶)

(23) سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب النہی عن الاضطجاع علی الوجہ، الحدیث: ۲۳۷۳، ج ۳، ص ۲۱۳۔

والمسکوٰۃ المصابیح، کتاب الادب، باب الجلووس... إلخ، الحدیث: ۵۳۱۴، ج ۲، ص ۱۷۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس طرح کہ میرا پیٹ زمین سے لگا ہوا تھا اور دونوں پاؤں پھیلے ہوئے تھے جسے کہتے ہیں اوندھا لیٹنا۔

۲۔ جندب حضرت ابوذر غفاری کا نام ہے، کنیت ابوذر ہے۔ اس فرمان کے دو مطلب ہو سکتے ہیں: ایک یہ کہ جہنمی لوگ یعنی کفار دنیا میں ایسے لیٹتے ہیں تم ان سے مشابہت نہ کرو۔ دوسرے یہ کہ دوزخ میں کفار ایسے لٹائے جایا کریں گے ان کی پیٹھ پر کوڑے مارنے کے لیے۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ اپنی اولاد اپنے چھوٹوں کو پیار یا ناراضی میں ٹھوکر مارنا جائز ہے، حضرات صیہ کرام تو حضور کی ٹھوکر کھانے پر فخر کرتے تھے آج ہم ان ٹھوکروں کے لیے ترستے ہیں۔ شعر

شبلی تہذیبدار کو زندہ کرتے
بخت خوابیدہ کو ٹھوکر سے جگاتے جاتے

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۶۸)

(24) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی النوم علی سطح غیر حجر، الحدیث: ۵۰۳۱، ج ۳، ص ۳۰۲۔

- حدیث ۲۴: ترمذی نے جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اس چھت پر سونے سے منع فرمایا کہ جس پر روک نہ ہو۔ (25)
- حدیث ۲۵: ابویعلیٰ نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص عصر کے بعد سوئے اور اس کی عقل جاتی رہے تو وہ اپنے ہی کو ملامت کرے۔ (26)
- حدیث ۲۶: امام احمد نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے تنہائی سے منع فرمایا۔ (27) یعنی اس سے کہ آدمی تنہا سوئے۔
- حدیث ۲۷: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ایک شخص دو چادریں اوڑھے ہوئے اتر کر چل رہا تھا اور گھمنڈ میں تھا، وہ زمین میں دھنسا دیا گیا، وہ قیامت تک دھنستا ہی جائے گا۔ (28)

ومشكاة المصابيح، كتاب الادب، باب الجلوس... إلخ، الحدیث: ۴۷۲۰، ج ۳، ص ۲۲.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب یعنی ایسی چھت پر نہ سوؤ جس کے کناروں پر دیوار کی آڑ نہ ہو جسے اردو میں منڈیر کہتے ہیں اگر سوؤ گے تو اللہ تعالیٰ نے جو تنہائی حفاظت کا ذمہ لیا ہے کہ اس کے لیے فرشتے مقرر کیے ہیں وہ اٹھ جاوے گا اور تم ہلاک ہو جاؤ گے۔

(مرآة السانج شرح مشکوة المصابيح، ج ۶، ص ۵۵۷)

(25) سنن الترمذی، کتاب الادب، باب... إلخ، الحدیث: ۲۸۶۳، ج ۴، ص ۳۸۸.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب ایسی چھت پر سونے والے بہت دفعہ چھت سے گر کر مر گئے بلکہ بہتر ہے کہ چھت بغیر منڈیر رکھی ہی نہ جاوے پوری دیوار نہ ہو تو تھوڑی دہچی ہی بندی جاوے تاکہ وہاں سے گرنے کا خطرہ نہ رہے اس فرمان میں بڑی حکمتیں ہیں۔

(مرآة السانج شرح مشکوة المصابيح، ج ۶، ص ۵۵۸)

(26) المسند أبی یعلیٰ، مسند عائشہ رضی اللہ عنہا، الحدیث: ۴۸۹۷، ج ۴، ص ۲۷۸.

(27) المسند امام أحمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن عمر، الحدیث: ۵۶۵۳، ج ۲، ص ۴۰۱.

(28) صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب تحريم التخنن في المشي... إلخ، الحدیث: ۴۹، ۵۰، (۲۰۸۸) ۱۱۵۶.

حکیم الامت کے مدنی پھول

ظاہر یہ ہے کہ یہ مرد گزشتہ امتوں میں کوئی تھا اس لیے امام بخاری نے یہ حدیث ذکر بنی اسرائیل کے باب میں نقل فرمائی۔ بعض نے فرمایا کہ یہ شخص قریب قیامت حضور کی امت سے ہوگا یعنی فیشن اہل مسلمان مگر قول اول قوی ہے۔ (اشعد)

حدیث ۲۸: ابو داؤد نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے مرد کو دو عورتوں کے درمیان میں چلنے سے منع فرمایا۔ (29)

حدیث ۲۹: بیہقی نے شعب الایمان میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب تمہارے سامنے عورتیں آجائیں تو ان کے درمیان میں نہ گزرو، داہنے یا بائیں کا راستہ لے لو۔ (30)



۲۔ تجلل بنا ہے جملہ سے جس کے معنی ہیں حرکت کرنے کی آواز یعنی وہ برابر نیچے کو جا رہا ہے اس کے جانے کی آواز اللہ واسے سن رہے ہیں، یہ شخص قارون کے علاوہ کوئی اور شخص ہے، قارون کے دھنسنے کی وجہ اس کا بخل اور اس کی بے ادبی بنی تھی۔ (مرقات)

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۶۰)

(29) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی مشی النساء مع الرجال فی الطريق، الحدیث: ۵۲۷۳، ج ۴، ص ۷۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اگر دو عورتیں راہ میں جا رہی ہیں تو کوئی اجنبی مرد ان کے درمیان سے نہ گزرے ایک طرف سے گزر جاوے یا ان کے درمیان نہ چلے، لگ چلے کیونکہ حضور انور نے راستہ کے الگ الگ حصہ کر دیئے ہیں درمیان راہ مردوں کے لیے کنارے عورتوں کے لیے بلکہ اپنی محرم عورتوں کے ساتھ بھی یوں ہی چلے تاکہ دوسرے لوگ اس سے سبق لیں۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۶۵)

(30) شعب الایمان، باب فی تحریم الفروج، الحدیث: ۵۴۴۷، ج ۴، ص ۷۱-۷۲۔

مسائل فقہیہ

مسئلہ ۱: قیلولہ (۱) کرنا جائز بلکہ مستحب ہے۔ (۲) غالباً یہ ان لوگوں کے لیے ہوگا جو شب بیداری کرتے ہیں، رات میں نمازیں پڑھتے ذکر الہی کرتے ہیں یا کتب بینی یا مطالعہ میں مشغول رہتے ہیں کہ شب بیداری میں جو مکان ہوا قیلولہ سے دفع ہو جائے گا۔

مسئلہ ۲: دن کے ابتدائی حصہ میں سونا یا مغرب و عشا کے درمیان میں سونا مکروہ ہے۔ سونے میں مستحب یہ ہے کہ باطہارت سوئے (2A) اور کچھ دیر دہنی کروٹ پر دہنے ہاتھ کو رخسارہ کے نیچے رکھ کر قبلہ رو سوئے پھر اس کے بعد بائیں

(۱) یعنی دوپہر کی تھوڑی نیند یا دوپہر کا (بغیر سوئے ہوئے) آرام۔

(۲) الفتاویٰ الھدیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثکاثون فی التفرقات، ج ۵، ص ۳۷۶۔

(2A) با وضو سونے کا ثواب

حضرت سیدنا ابو امانہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ میں نے خاتم المرسلین، رحمۃ اللعالمین، شفیع المذنبین، انیس الغریبین، سراب السالکین، محبوب رب العالمین، جناب صادق دامن صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو فرماتے ہوئے سنا، جو با وضو اللہ عزوجل کا ذکر کرتے ہوئے اپنے بستر کی طرف آئے یہاں تک اس پر غنودگی چھا جائے تو وہ رات کی جس گھڑی میں بھی اللہ عزوجل سے دنیا اور آخرت کی جو بھلائی طلب کریگا اللہ عزوجل اسے وہ بھلائی عطا فرمادے گا۔ (سنن ترمذی، کتاب الدعوات، باب ۹۲، رقم ۳۵۳۷، ج ۵، ص ۳۱۱)

حضرت سیدنا ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا کہ تاجدار رسالت، شہنشاہ نبوت، مخزن جوہر سخاوت، ہیکل عظمت و شرافت، محبوب رب العزت، محسن انسانیت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، جو شخص با وضو رات گزارتا ہے تو ایک فرشتہ اس کے پہلو میں رات گزارتا ہے، جب وہ بیدار ہوتا ہے تو فرشتہ عرض کرتا ہے، اے اللہ عزوجل! اپنے فلاں بندے کی مغفرت فرمادے کہ اس نے با وضو رات گزار دی ہے۔

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الطہارۃ، باب فضل الوضوء، رقم ۱۰۴۸، ج ۲، ص ۱۹۴)

حضرت سیدنا معاذ بن جبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ نور کے پیکر، تمام نبیوں کے سرزور، دو جہاں کے تاجور، سلطان بحر و بر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، کہ جو مسلمان با وضو سوئے پھر جب وہ رات میں بیدار ہو اور اللہ عزوجل سے دنیا اور آخرت کی کوئی بھلائی طلب کرے تو اللہ عزوجل اسے وہ بھلائی عطا فرمادے گا۔

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی النوم علی طہارۃ، رقم ۵۰۴۲، ج ۴، ص ۴۰۳)

حضرت سیدنا ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے کہ سرکار و لاخبر، ہم بے کموں کے مددگار، شفیع روز شمار، دو عالم کے مالک و مختار،

کروٹ پر اور سوتے وقت قبر میں سونے کو یاد کرنے کے وہاں تنہا سونا ہوگا سوا اپنے اعمال کے کوئی ساتھ نہ ہوگا، سوتے وقت یادِ خدا میں مشغول ہو تہلیل و تسبیح و تحمید پڑھے یہاں تک کہ سو جائے، کہ جس حالت پر انسان سوتا ہے اسی پر اٹھتا ہے اور جس حالت پر مرتا ہے قیامت کے دن اسی پر اٹھے گا۔ سو کر صبح سے پہلے ہی اٹھ جائے اور اٹھتے ہی یادِ خدا کرے یہ پڑھے: **الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَاَنَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَ اِلَیْهِ النُّشُوْرُ**۔ (3) اسی وقت اس کا پکا ارادہ کرے کہ پرہیزگاری و تقویٰ کریگا کسی کو ستائے گا نہیں۔ (4)

مسئلہ ۳: بعد نمازِ عشا باتیں کرنے کی تین صورتیں ہیں۔
 اول: علمی گفتگو کسی سے مسئلہ پوچھنا یا اس کا جواب دینا یا اس کی تحقیق و تفتیش کرنا اس قسم کی گفتگو سونے سے افضل ہے۔

دوم: جھوٹے قصے کہانی کہنا مسخرہ پن اور ہنسی مذاق کی باتیں کرنا یہ مکروہ ہے۔
 سوم: موانست کی بات چیت کرنا جیسے میاں بیوی میں یا مہمان سے اس کے انس کے لیے کلام کرنا یہ جائز ہے اس قسم کی باتیں کرے تو آخر میں ذکرِ الہی میں مشغول ہو جائے اور تسبیح و استغفار پر کلام کا خاتمہ ہونا چاہیے۔
 مسئلہ ۴: دومرد برہنہ ایک ہی کپڑے کو اوڑھ کر لیٹیں یہ ناجائز ہے۔ اگرچہ بچھونے کے ایک کنارہ پر ایک لیٹا ہو اور دوسرے کنارہ پر دوسرا ہو، اسی طرح دو عورتوں کا برہنہ ہو کر ایک کپڑے کو اوڑھ کر لیٹنا بھی ناجائز ہے۔ (5) حدیث میں اس کی ممانعت آئی ہے۔ (6)

مسئلہ ۵: جب لڑکے اور لڑکی کی عمر دس سال کی ہو جائے تو ان کو الگ الگ سنانا چاہیے یعنی لڑکا جب اتنا بڑا ہو جائے اپنی ماں یا بہن یا کسی عورت کے ساتھ نہ سوائے صرف اپنی زوجہ یا باندی کے ساتھ سو سکتا ہے، بلکہ اس عمر کا لڑکا اتنے بڑے لڑکوں یا مردوں کے ساتھ بھی نہ سوائے۔ (7)

حسب پروردگار صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم نے فرمایا، اپنے اجسام کو خوب پاک رکھا کرو اللہ عزوجل تمہیں پاک فرمادے گا کیونکہ جو شخص پاک رہتے ہوئے رات گزارتا ہے تو اس کے پہلو میں ایک فرشتہ بھی رات گزارتا ہے اور رات کی کوئی گھڑی یہی نہیں گزرتی جس میں وہ یہ دعا نہ کرتا ہو، اے اللہ! اپنے بندے کی مغفرت فرمادے کیونکہ یہ با وضو سو رہا ہے۔ (طبرانی اوسط، رقم ۵۰۸، ج ۴، ص ۲۶)

(3) ترجمہ: تمام تعریفیں اللہ تعالیٰ کے لیے جس نے ہمیں موت (نیند) کے بعد زندگی دی اور (قیامت کے دن) ان کی طرف بھنا ہے۔

(4) الفتاویٰ المصنوعہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثلاثون فی المستفرقات، ج ۵، ص ۳۷۶۔

(5) الدر المختار، کتاب الحظر والایباحہ، باب الاستبراء وغیرہ، ج ۹، ص ۶۲۹۔

(6) انظر صحیح مسلم، کتاب الطہر، باب تحریم النظر إلی العورات، الحدیث: ۷۴۔ (۳۳۸)، ص ۱۸۶۔

(7) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والایباحہ، باب الاستبراء وغیرہ، ج ۹، ص ۶۲۹۔

مسئلہ ۶: میاں بیوی جب ایک چار پائی پر سوئیں تو دس برس کے بچہ کو اپنے ساتھ نہ سلائیں، لڑکا جب حدِ شہوت کو پہنچ جائے تو وہ مرد کے حکم میں ہے۔ (8)

مسئلہ ۷: راستہ چھوڑ کر کسی کی زمین میں چلنے کا حق نہیں اور اگر وہاں راستہ نہیں ہے تو چل سکتا ہے، مگر جبکہ مالک زمین منع کرے تو اب نہیں چل سکتا، یہ حکم ایک شخص کے متعلق ہے اور جو بہت سے لوگ ہوں تو جب تک مالک زمین راضی نہ ہو نہیں چلنا چاہیے۔ راستہ میں پانی ہے اس کے کنارہ کسی کی زمین ہے، ایسی صورت میں اس زمین میں چل سکتا ہے۔ (9)

بعض مرتبہ کھیت بویا ہوتا ہے ظاہر ہے کہ اس میں چلنا کاشتکار کے نقصان کا سبب ہے، ایسی صورت میں ہرگز اس میں چلنا نہ چاہیے۔ بلکہ بعض مرتبہ کاشت کار کھیت کے کنارہ پر جہاں سے چلنے کا احتمال ہوتا ہے کانٹے رکھ دیتے ہیں، یہ صاف اس کی دلیل ہے کہ اس کی جانب سے چلنے کی ممانعت ہے۔ مگر اس پر بھی بعض لوگ توجہ نہیں کرتے ان کو چلنا چاہیے کہ اس صورت میں چلنا منع ہے۔



(8) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، ج ۹، ص ۶۳۰۔

(9) الفتاویٰ ہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثلاثون فی المتفرقات، ج ۵، ص ۷۳۔

دیکھنے اور چھونے کا بیان

اللہ عزوجل ارشاد فرماتا ہے:

(قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ذَلِكَ أَزْكَى لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿۲۰﴾ وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلَا يَطْرِبْنَ عَلَى جُيُوبِهِنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَائِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِينَ غَيْرِ أُولَى الْإِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَى عَوْرَاتِ النِّسَاءِ وَلَا يَطْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿۲۱﴾ (۱)

(۱) نپ ۱۸، النور: ۳۰-۳۱۔

ان آیات کے تحت مفسر شہیر مولانا سید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ اور جس چیز کا دیکھنا جائز نہیں اس پر نظر نہ ڈالیں۔

مسائل: مرد کا بدن زیر ناف سے گھٹنے کے نیچے تک عورت ہے، اس کا دیکھنا جائز نہیں اور عورتوں میں سے اپنے محرم اور غیر کی ہانڈی کا بھی یہی حکم ہے مگر اتنا اور ہے کہ ان کے پیٹ اور چپہ کا دیکھنا بھی جائز نہیں اور عورت اجنبیہ کے تمام بدن کا دیکھنا منوع ہے۔

إِنْ لَمْ يَأْمَنْ مِنَ الشَّهْوَةِ وَإِنْ أَمِنَ مِنْهَا فَالْتِمَتُوعُ النَّظَرُ إِلَى مَا سِوَى الْوَجْهِ وَالْكَفِّ وَالْقَدَمِ وَمَنْ يَأْمَنْ فَإِنَّ الزَّمَانَ زَمَانُ الْفَسَادِ فَلَا يَحِلُّ النَّظَرُ إِلَى الْحُرَّةِ الْأَجَنَبِيَّةِ مُطْلَقًا مِنْ غَيْرِ ضَرُورَةٍ

مگر بحالت ضرورت قاضی و گواہ کو اور اس عورت سے نکاح کی خواہش رکھنے والے کو چہرہ دیکھنا جائز ہے، اور اگر کسی عورت کے ذریعہ سے حاس معلوم کر سکتا ہو تو نہ دیکھے اور طبیب کو موضع مرض کا بعد ضرورت دیکھنا جائز ہے۔

مسئلہ: آئینہ دلا کے کی طرف بھی شہوت سے دیکھنا حرام ہے۔ (مدارک و احمدی)

اور غیر مردوں کو نہ دیکھیں۔ حدیث شریف میں ہے کہ ازواج مطہرات میں سے بعض اہمات المؤمنین سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں تھیں، اسی وقت ابن ام مکتوم آئے حضور نے ازواج کو پردہ کا حکم فرمایا انہوں نے عرض کیا کہ وہ تو نابینا ہیں فرمایا تو تم تو نابینا نہیں ہو۔ (ترمذی و ابوداؤد) اس حدیث سے معلوم ہوا کہ عورتوں کو بھی نا محرم کا دیکھنا اور اس کے سامنے ہونا جائز نہیں۔

مسلمان مردوں سے فرما دو اپنی نگاہیں نیچی رکھیں اور اپنی شرمگاہوں کی حفاظت کریں، یہ ان کے لیے بہت ستم ہے بے شک اللہ (عزوجل) کو ان کے کاموں کی خبر ہے اور مسلمان عورتوں کو حکم دو کہ اپنی نگاہیں نیچی رکھیں اور اپنی شرمگاہوں کی حفاظت کریں اور اپنا بناؤ نہ دکھائیں مگر جتنا خود ہی ظاہر ہے اور دوپٹے اپنے گریبانوں پر ڈالے رہیں اور اپنا سنگرٹھانہ نہ کریں مگر اپنے شوہروں پر یا اپنے باپ یا شوہروں کے باپ یا اپنے بیٹے یا شوہروں کے بیٹے یا اپنے بھائی یا اپنے بھتیجے یا اپنے بھانجے یا اپنے دین کی عورتیں یا اپنی کنیزیں جو اپنے ہاتھ کی ہلک ہوں یا نوکر بشرطیکہ شہوت والے مرد نہ ہوں یا وہ بچے جنہیں عورتوں کی شرم کی چیزوں کی خبر نہیں اور زمین پر پاؤں نہ ماریں جس سے ان کا چھپا ہوا سنگر معصوم ہو جائے اور اللہ (عزوجل) کی طرف توبہ کرو، اے مسلمانو! سب کے سب اس امید پر کہ فلاح پاؤ۔ اور فرماتا ہے:

(يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ ذَلِكَ أَدْنَى أَنْ يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٥١﴾) (2)

اے نبی! اپنی ازواج اور صاحبزادیوں اور مومنین کی عورتوں سے فرما دو کہ اپنے اوپر اپنی اوڑھنیاں لٹکالیں یہ اس سے نزدیک تر ہے کہ وہ پہچانی جائیں گی اور ان کو ایذا نہیں دی جائے گی اور اللہ (عزوجل) بخشنے والا مہربان ہے۔ اور فرماتا ہے:

(وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ وَأَنْ يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٠﴾) (3)

آگے مزید ارشاد فرماتے ہیں:

اور انہیں کے حکم میں ہیں چچا ماموں وغیرہ تمام محارم۔ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ابو عبیدہ بن جراح کو لکھا تھا کہ گفتار اہل کتاب کی عورتوں کو مسلمان عورتوں کے ساتھ تمام میں داخل ہونے سے منع کریں۔ اس سے معلوم ہوا کہ مسلمہ عورت کو کافرہ عورت کے سامنے اپنا بدن کھونا جائز نہیں۔

مسئلہ: عورت اپنے غلام سے بھی جنس اجنبی کے پردہ کرے۔ (مدارک وغیرہ)

مسئلہ: ائمہ حنفیہ کے نزدیک خصی اور عمنین حرمیت نظر میں اجنبی کا حکم رکھتے ہیں۔

مسئلہ: اس طرح قبیح الافعال محض سے بھی پردہ کیا جائے جیسا کہ حدیث مسلم سے ثابت ہے۔

(2) پ ۲۲، ج ۱، باب ۵۹۔

(3) پ ۱۸، ج ۱، غور ۲۰۔

در مذی نہ نہ شین عورتیں جنہیں نکاح کی آرزو نہیں ان پر کچھ گناہ نہیں کہ اپنے بالائی کپڑے اتار رکھیں جبکہ سنگار نہ نہ کریں اور اس سے بچنا ان کے لیے بہتر ہے اور اللہ (عزوجل) سنا جانتا ہے۔



احادیث

حدیث ۱: صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: عورت شیطان کی صورت میں آگے آتی ہے اور شیطان کی صورت میں پیچھے جاتی ہے، جب کسی نے کوئی عورت دیکھی اور وہ پسند آگئی اور اس کے دل میں کچھ واقع ہو تو اپنی عورت سے جماع کرے، اس سے وہ بات جاتی رہے گی جو دل میں پیدا ہوگئی ہے۔ (1)

حدیث ۲: دارمی نے عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس نے کسی عورت کو دیکھا اور وہ پسند آگئی تو اپنی زوجہ کے پاس چلا جائے کہ اس کے پاس بھی ویسی ہی چیز ہے جو اس کے پاس ہے۔ (2)

حدیث ۳: صحیح مسلم میں جریر بن عبد اللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہتے ہیں: میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے اچانک نظر پڑ جانے کے متعلق دریافت کیا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے حکم دیا کہ

(1) صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب ندب من رأى امرأة... إلخ، الحدیث: ۹۔ (۱۳۰۳)، ص ۲۶۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اجنبی عورت کو آتے ہوئے آگے سے دیکھو یا جاتے ہوئے پیچھے سے دیکھو مرد کے دل میں دوسے اور برے شہوانی خیال پیدا کرتی ہے جیسے شیطان برے خیال دوسے پیدا کرتا ہے لہذا اس سے ایسا ہی ڈرنا چاہیے جیسے شیطان سے ڈرتے ہیں کوئی متقی پرہیزگار اپنے تقویٰ پر پرہیزگاری پر اعتماد نہ کرے اور اجنبی عورتوں سے احتیاط رکھے اس میں اشارہ فرمایا گیا کہ بلا ضرورت عورت گھر سے نہ نکلے اور مرد اجنبی عورت کو کپڑوں پر سے بھی نہ دیکھے کہ فتنہ اندیشہ ہے، نیز عورت کو لازم ہے کہ لباس فاخرہ عمدہ برقعہ اوڑھ کر نہ باہر جائے کہ بھڑک دار برقعہ پردہ نہیں بلکہ زینت ہے۔ (نودی و مرقات)

۲۔ یہ عمل حصول تقویٰ اور دفع دوسے کے لیے اکسیر ہے صحبت کر لینے سے شہوت کا جوش جاتا رہے گا یہ جوش ہی میلان کی وجہ تھی، فرماتے ہیں کہ عورت کو چاہیے کہ خاندان کے بلائے پر بغیر پس و پیش آجائے کوئی مانع نہ ہو کہ بسا اوقات اکثر جوش شہوت بدن و قلب کو بہار کر دیتا ہے۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۲۶)

(2) سنن، دارمی، کتاب النکاح، باب الرجل یرى المرأة لیخاف علی نفسه، الحدیث: ۲۲۱۵، ج ۲، ص ۱۹۶۔

اپنی نگاہ پھیر لو۔ (3)

حدیث ۴: امام احمد و ابو داؤد و ترمذی و دارمی نے بریدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے فرمایا کہ ایک نظر کے بعد دوسری نظر نہ کرو (یعنی اگر اچانک بلا قصد کسی عورت پر نظر پڑ جائے تو فوراً نظر ہٹالے اور دوبارہ نظر نہ کرے) کہ پہلی نظر جائز ہے اور دوسری نظر جائز نہیں۔ (4)

حدیث ۵: ترمذی نے عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ عورت عورت ہے یعنی چھپانے کی چیز ہے جب وہ نکلتی ہے، تو اسے شیطان جھانک کر دیکھتا ہے۔ (5) یعنی

(3) صحیح مسلم، کتاب الآداب، باب نظر النجاء، الحدیث: ۲۵۰-۲۱۵۹، ج ۱، ص ۱۱۹۰

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اگر اجنبیہ عورت پر بلا قصد نظر پڑ جائے تو اس میں گناہ کیا ہے اور اس کا کفارہ کیا ہے۔

۲۔ یعنی اس اچانک نظر پڑ جانے میں تو گناہ نہیں مگر فوراً نگاہ ہٹا لو اگر دوبارہ دیکھ لیا یا اسے دیکھتے رہے تو گنہگار ہوں گے کہ اس میں گناہ کا ارادہ پالیا گیا۔ اس حدیث کی بنا پر بعض علماء نے فرمایا کہ عورت پر منہ چھپانا واجب نہیں بلکہ مرد پر نگاہ نیچی رکھنا ضروری ہے کیونکہ سرکار نے مرد کو نظر پھیر لینے کا حکم دیا (مرقات) مگر یہ اسدلال ضعیف ہے اگلی حدیث میں آئے گا کہ عورت بھی اجنبی مرد کو نہ دیکھے اگرچہ مرد نا بیٹھا ہو یہاں وہ صورت مراد ہے کہ عورت بے پردہ نہ تھی پھر مرد کی نظر پڑ گئی۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۲۵)

(4) المسند لدامام أحمد بن حنبل، حدیث بریدۃ الاسلمی، الحدیث: ۲۳۰۵۲، ج ۹، ص ۱۸-۱۹.

وسنن الترمذی، کتاب الآداب، باب ما جاء فی نظرة النجاء، الحدیث: ۲۷۸۶، ج ۲، ص ۳۵۶.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ پہلی نگاہ سے مراد وہ نگاہ ہے جو بغیر قصد اجنبی عورت پر پڑ جائے اور دوسری نگاہ سے مراد دوبارہ اسے قصد دیکھنا ہے۔ مگر پہلی نگاہ بھی جمائے رکھی تو بھی دوسری نگاہ کے حکم میں ہوگی اس پر بھی گناہ ہوگا۔ اس سے معلوم ہوا کہ علماء مشائخ کو بھی چائز نہیں کہ اپنی شاگردی یا مریدانی کو قصد ادیکھیں۔ حضرت علی علماء و اولیاء کے سردار ہیں ان کو یہ حکم ہو رہا ہے غور کر اور ڈر، ان سے بڑھ کر کباز کون ہو سکتا ہے۔ جائز سے مراد ہے جس پر گناہ نہ ہو، جائز نہیں ناجائز کا مقابل ہوتا ہے کبھی فرض و واجب کا، ہو سکتا ہے کہ لک کا لام نفع کا ہو یعنی بغیر ارادہ و ان نظر تمہارے لیے مفید ہے کہ جب تم فوراً نگاہ نیچی کر لو گے تو ثواب پاؤ گے تو لامحالہ دوسری نظر مضرب ہوگی۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۳۱)

(5) سنن الترمذی، کتاب الرضا، باب: ۱۸، الحدیث: ۱۱۷۶، ج ۲، ص ۳۹۲.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ عورت کے معنی مَا يُعَارَىٰ فِي إِظْهَارِہِ جس کا ظاہر ہونا قابل عار و شرم ہو عورت کا بے پردہ رہنا میکے والوں کے لیے بھی ہے۔

اسے دیکھنا شیطانی کام ہے۔

حدیث ۶: امام احمد نے ابو امامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو مسلمان کسی عورت کی خوبیوں کی طرف پہلی دفعہ نظر کرے یعنی بلا قصد پھر اپنی آنکھ میچ لے، اللہ تعالیٰ اس کے لیے عبادت پیدا کر دے گا جس کا مزہ اس کو ملے گا۔ (6)

حدیث ۷: بیہقی نے حسن بصری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں مجھے یہ خبر پہنچی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ دیکھنے والے پر اور اس پر جس کی طرف نظر کی گئی اللہ (عز وجل) کی لعنت۔ (7) یعنی دیکھنے والا جب بلا عذر قصد اُدیکھے اور دوسرا اپنے کو بلا عذر قصد اُدکھائے۔

نگ و شرم کا باعث ہے اور سسرال والوں کے لیے بھی۔

۲۔ استشراف کے معنی ہیں کسی چیز کو بغور دیکھنا یا اس کے معنی ہیں لوگوں کی نگاہ میں اچھا کر دینا تاکہ لوگ اسے بغور دیکھیں۔ (مرقات داشعہ) یعنی عورت جب بے پردہ ہوتی ہے تو شیطان لوگوں کی نگاہ میں اسے بھلی کر دیتا ہے کہ وہ خوا خواہ اسے سکتے ہیں، مثل مشہور ہے کہ پرانی عورت اور اپنی اولاد چھی معلوم ہوتی ہے اور پرایا مال اپنی عقل زیادہ معلوم ہوتے ہیں، سرکار کا یہ فرمان بالکل دیکھنے میں آ رہا ہے بعض لوگ اپنی خوبصورت بیویوں سے متنفر ہوتے ہیں دوسری بد صورتوں پر فریفتہ۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۳۰)

(6) المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند الانصار، حدیث ابی امامۃ الباہلی، الحدیث: ۲۲۳۴۱، ج ۸، ص ۲۹۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اگر کسی مرد کی نظر اجنبی عورت کے حسن و جمال یا زیور و لباس پر اچانک پڑ جائے اس کا دل چاہے کہ دیکھتا رہے مگر خوف خدا سے دل کو مارے نگاہ نیچی کرے۔

۲۔ یعنی اس صبر اور دل کو روکنے کی برکت سے خدا تعالیٰ اسے کسی عبادت کی لذت نصیب فرمائے گا یا نماز کی یا روزے کے یا حج و زیارت کی۔ خیال رہے کہ کھانا وغیرہ کی طرح عبادات میں بھی مختلف لذتیں ہیں جسے محسوس کرنے کے لیے باطنی حواس درست چاہئیں، یہ عمل اس درستی حواس کے لیے بہت ہی مفید ہے رب تعالیٰ عمل کی توفیق بخشے اس کا مطلب یہ ہے کہ یا تو رب تعالیٰ اسے نہیں عبادتوں میں لذت بخشے گا یا کسی اور نئی عبادت کی توفیق دے گا جیسے جہاد وغیرہ اور پھر اس کی لذت بھی نصیب فرمائے گا۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۲۵)

(7) شعب الامایان، باب الحیاء، فصل فی الجماع، الحدیث: ۷۷۸۸، ج ۶، ص ۱۶۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حسن سے مراد خواجہ حسن بصری ہیں چونکہ آپ تابعی ہیں اور صحابی کا نام آپ نے لیا نہیں اس لیے حدیث مرسل ہوئی اور آپ کی یہ نقل

ارسال، اصناف کے ہاں ثقہ کا ارسال معتبر ہے۔

حدیث ۸: ابن ماجہ نے عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہتی ہیں میں نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم) کی شرم گاہ کی طرف کبھی نظر نہیں کی۔ (8)

حدیث ۹: ترمذی و ابو داؤد و ابن ماجہ بروایت بہز بن حکیم عن ابیہ عن جدہ روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اپنی عورت یعنی ستر کی جگہ کو محفوظ رکھو، مگر بی بی سے یا اس باندی سے جس کے تم مالک ہو۔ میں نے عرض کی، یا رسول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم) یہ فرمائیے کہ اگر مرد تنہائی میں ہو ارشاد فرمایا: اللہ عزوجل سے شرم کرنا زیادہ سزاوار ہے۔ (9)

حدیث ۱۰: ترمذی نے حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے

۲۔ حدیث میں کسی قدر اجمال ہے مطلب یہ ہے کہ جو مرد اجنبی عورت کو قصد ابلا ضرورت دیکھے اس پر بھی سنت ہے اور جو عورت قصد ابلا ضرورت اجنبی مرد کو اپنا آپ دکھائے اس پر بھی سنت غرض کہ اس میں تین قیدیں لگانی پڑیں گی اجنبی عورت کو دیکھنا بلا ضرورت دیکھنا قصد ابلا دیکھنا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۵، ص ۳۶)

(8) سنن ابن ماجہ، کتاب الطہارۃ، باب النہی أن یری عورۃ اخیہ، الحدیث: ۶۶۲، ج ۱، ص ۳۶۵۔

(9) سنن ابن ماجہ، کتاب النکاح، باب التستر عند الجماع، الحدیث: ۱۹۲۰، ج ۲، ص ۴۳۸۔

ومشکوٰۃ الصالح، کتاب النکاح، باب النظر الی المخلوۃ... إلخ، الحدیث: ۳۱۱۷، ج ۲، ص ۲۰۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب یہ بہز اور ان کے والد حکیم دونوں تابعی ہیں، ہاں بہز کے دادا معاویہ ابن عمیدہ صحابی ہیں جو حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کی وفات کے بعد بصرہ میں رہے، خراسان میں وفات پائی، یہاں جدہ کا مرجع بہز ہیں یعنی حکیم نے اپنے والد جو بہز کے دادا ہیں، ان سے روایت کی لہذا حدیث متصل ہے (اشعہ)

۳۔ صحیح یہ ہے کہ یہاں حفاظت سے مراد بے پردگی سے حفاظت ہے یعنی اپنی بیوی اور مملوکہ لونڈی سے تو پردہ نہیں باقی تمام سے ستر چھپانا واجب ہے اس کی مؤید وہ آیت کریمہ ہے "وَالَّذِينَ هُمْ لِقُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ"۔ معصوم ہو کہ خاوند بیوی ایک دوسرے کے سامنے برہنہ ہو سکتے ہیں

۳۔ یعنی اللہ تعالیٰ اپنے بندہ کا برہنہ ہونا پسند نہیں کرتا اور وہ تو تم کو برہنگی کی حالت میں دیکھ رہا ہے لہذا اس کے فرمان کی مخالفت سے شرم کرو۔ حدیث کا مقصد یہ نہیں کہ رب تعالیٰ کپڑے پہنے ہوئے کا ستر نہیں دیکھتا کیڑا اس کے لیے آڑ بن جاتا ہے، اس سے معصوم ہو کہ تنہائی میں بھی بلا وجہ برہنہ نہ رہے۔

۴۔ یہ حدیث احمد، بیہقی، حاکم وغیرہم نے بھی کچھ فرق سے روایت فرمایا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۵، ص ۳۸)

فرمایا: جب مرد عورت کے ساتھ تنہائی میں ہوتا ہے، تو تیسرا شیطان ہوتا ہے۔ (10)

حدیث ۱۱: ترمذی نے جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جن عورتوں کے شوہر غائب ہیں ان کے پاس نہ جاؤ، کہ شیطان تم میں خون کی طرح تیرتا ہے یعنی شیطان کو بہکاتے دیر نہیں لگتی۔ ہم نے عرض کی، اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) سے، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم)۔ فرمایا: اور مجھ سے بھی، مگر اللہ (عزوجل) نے میری اس کے مقابل میں مدد فرمائی، وہ مسلمان ہو گیا یا میں سلامت رہتا ہوں۔ (11) حدیث کے لفظ میں دونوں معنی ہو سکتے ہیں۔

(10) سنن الترمذی، کتاب المغتن، باب ما جاء فی لزوم الجماعۃ، الحدیث: ۲۱۷۲، ج ۴، ص ۶۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جب کوئی شخص اجنبی عورت کے ساتھ تنہائی میں ہوتا ہے خواہ دونوں ہی کیسے پاکباز ہوں اور کسی مقصد کے لیے جمع ہوں شیطان دونوں کو برائی پر ضرور، بھارتا ہے اور دونوں کے دلوں میں ضرور ہيجان پیدا کرتا ہے، خطرہ ہے کہ زنا واقع کرادے اس لیے ایسی خضوت سے بہت ہی احتیاط چاہیے۔ گناہ کے اسباب سے بھی بچنا لازم ہے بخار ردکنے کے لیے نزلہ وزکام روکو۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۳۹)

(11) سنن الترمذی، کتاب الرضاع، باب: ۱۷، الحدیث: ۱۷۵۵، ج ۴، ص ۳۹۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی ان اجنبی عورتوں کے پاس جانے سے بہت ہی بچو، جن کے خاوند پردیس میں ہیں، یہ قید اس لیے لگائی کہ خاوند والی عورت لذت جماع سے واقف ہے، ورنہ خاوند کی غیر موجودگی سے اس کی شہوت غالب ہے، ایسی عورت کے لیے ادنیٰ محرک بھی خطرناک ہے، مٹی کے تیل میں بجلی ہوئی روئی اور پیٹرول دور سے آگ لے لیتے ہیں۔

۲۔ یعنی عورت مرد دونوں کے رگ رگ میں شیطان اثر کرتا ہے جیسے خون اور جیسے خون نظر نہیں آتا مگر جسم میں گردش کرتا ہے یوں ہی شیطان نظر نہیں آتا مگر اپنا کام کیے جاتا ہے، چھپا دشمن کھلے دشمن سے زیادہ خطرناک ہے، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "إِنَّهُ يَرَاكُمْ هُوَ وَقَبِيلُهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ"۔

۳۔ صیہ کرام سمجھے تھے کہ انبیائے کرام معصوم ہوتے ہیں اس لیے ان کے پاس شیطان پھلکا بھی نہیں ہوگا اس لیے یہ سوال کیا جواب میں بتادیا گیا کہ عصمت شیطان کے آجانے کے خلاف نہیں شیطان معصوموں کے پاس بھی پہنچ جاتا ہے۔

۴۔ یہاں اس سے مراد قرین شیطان ہے جو ہر وقت انسان کے ساتھ رہتا ہے اور اسلم کے یہی معنی ٹھیک ہیں کہ وہ اسام سے آیا ب وہ میری اطاعت ہی کرتا ہے، یعنی میرا قرین شیطان میری صحبت کی برکت سے مسلمان ہو گیا۔ سبحان اللہ! پارس کے پاس رہنے سے وہ سونا بن جاتا ہے نبی کے ساتھ رہنے سے شیطان مسلمان بن گیا گویا اس کی حقیقت ہی بدل گئی۔ اس حدیث سے وہ لوگ عبرتے پکڑیں۔

حدیث ۱۲: صحیح بخاری و مسلم میں عقبہ بن عامر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: عورتوں کے پاس جانے سے بچو۔ ایک شخص نے عرض کی، یا رسول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم)! دیور کے متعلق کیا حکم ہے؟ فرمایا کہ دیور موت ہے۔ (12) یعنی دیور کے سامنے ہونا گویا موت کا سامنا ہے کہ یہاں فتنہ کا زیادہ احتمال ہے۔

حدیث ۱۳: ترمذی نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: برہنہ ہونے سے بچو، کیونکہ تمہارے ساتھ وہ (فرشتے) ہوتے ہیں جو جدا نہیں ہوتے مگر صرف پاخانہ کے وقت اور اس وقت جب مرد اپنی عورت کے پاس جاتا ہے، لہذا ان سے حیا کرو اور ان کا اکرام کرو۔ (13)

جو کہتے ہیں کہ حضرت صدیق و فاروق سایہ کی طرح حضور کے ساتھ رہنے کے باوجود مؤمن نہ ہو سکے، ارے حضور کی صحبت تو حقیقت بدل دیتی ہے۔ بعض لوگوں نے اسے اُٹلم پڑھا ہے مضارع مجہول شکلم یعنی میں اس کے شر سے محفوظ و سلامت رکھا جاتا ہوں مگر پہلے معنی بہت ہی قوی ہیں۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۴۰)

(12) صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب لا یخلون رجل بامرأة الا ذوہرم... الخ، الحدیث: ۵۲۳۲، ج ۳، ص ۷۷۲۔

صحیح مسلم، کتاب السلام، باب تحریم الخلوۃ بالاجنبیہ... الخ، الحدیث: ۲۰- (۲۱۷۲)، ص ۱۱۹۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ پچھلی حدیث میں غلطی کا ذکر تھا یہاں بے پردہ آنے سے سانسے آنا کا ذکر ہے یعنی غیر محرم عورت کے پاس بے پردہ نہ جاؤ اگرچہ ذی رحم ہی ہو، جیسے چچا زاد، خالہ زاد، پھوپھی زاد بھائی بہن کہ ان سے پردہ چاہیے کہ اگرچہ ذی رحم تو ہیں مگر محرم نہیں ان سے نکاح درست ہے۔

۲۔ یعنی بھادج کا دیور سے بے پردہ ہونا موت کی طرح باعث ہلاکت ہے۔ یہاں سرقاٹ نے فرمایا کہ جو سے مراد صرف دیور یعنی خاوند کا بھائی ہی نہیں بلکہ خاوند کے تمام وہ قرابت دار مراد ہیں جن سے نکاح درست ہے جیسے خاوند کا چچا ماموں پھوپھی وغیرہ اسی طرح بیوی کی بہن یعنی سالی اور اس کی بھتیجی بھانجی وغیرہ سب کا یہی حکم ہے۔ خیال رہے کہ دیور کو موت اس لیے فرمایا کہ وہ خاوند کا دیور سے پردہ نہیں کرتیں بلکہ اس سے دل لگی، مذاق بھی کرتی ہیں اور ظاہر ہے کہ اجنبیہ غیر محرم سے مذاق دل لگی کسی قدر فتنہ کا باعث ہے اب بھی زیادہ فتنہ دیور بھادج اور سالی بہنوئی میں دیکھے جاتے ہیں۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۲۳)

(13) سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ما جاء فی الاستئذان عند الجماع، الحدیث: ۲۸۰۹، ج ۴، ص ۳۶۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اکیلے میں بھی ستر نہ کھولو جیسا کہ اگلے مضمون سے ظاہر ہے۔

۲۔ ان سے مراد اعمال لکھنے والے اور محافظین فرشتے ہیں جو ہر وقت انسان کے ساتھ رہتے ہیں اور ہو سکتا ہے کہ صرف کاتبین فرشتے مرد ہوں کیونکہ حافظین تو پاخانہ وغیرہ میں بھی ساتھ رہتے ہیں۔ معلوم ہوتا ہے کہ یہ ملائکہ شریعہ میں انسان کا ستر دیکھنے میں شرم کرتے ہیں۔

حدیث ۱۴: ترمذی و ابوداؤد نے جرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ کیا تمہیں معلوم نہیں کہ ران عورت ہے۔ (14) یعنی چھپانے کی چیز ہے۔

حدیث ۱۵: ابوداؤد و ابن ماجہ نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا کہ اے علی! ران کو نہ کھولو اور نہ زندہ کی ران کی طرف نظر کرو نہ مردہ کی۔ (15)

حدیث ۱۶: صحیح مسلم میں ابوسعید رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

تو ہم کو بھی ان سے شرم چاہیے، اللہ کے بندوں سے حیاء کرنا ایمانی تقاضا ہے۔

۳۔ اس لیے پاخانہ اور صحبت کے وقت بات کرنا منع ہے کہ بات لکھنے کے لیے کاتبین فرشتوں کو ہمارے پاس آنا پڑے گا اور وہ اس وقت پاس آنا نہیں چاہتے۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ بغیر ضرورت ستر کھولنا ممنوع ہے۔ اسی لیے فقہاء فرماتے ہیں کہ پاخانہ، پیشاب، بیٹھے وقت کھڑے ہوتے وقت ننگا نہ ہو جائے بلکہ زمین کے قریب پہنچ کر کپڑا اٹھائے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۳۶)

(14) سنن ابی داؤد، کتاب اہمام، باب النہی عن التفری، الحدیث: ۱۳۰۱۴، ج ۴، ص ۵۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ جرہ بروزن جعفر ابن خویلد ہیں، صحابی ہیں، اصحاب صفہ میں سے ہیں، اہل مدینہ سے تھے ۱۱۰ھ میں وفات پائی آپ سے آپ کے بیٹوں، عبداللہ، عبدالرحمان، سلیمان اور مسلم نے احادیث نقل کیں۔

۲۔ یہ سوال زجر کا ہے یعنی یہ مسئلہ جاننا ضروریات دین سے ہے، کیا تم نے اب تک اتنا ضروری مسئلہ بھی نہ سیکھا کہ مرد کی ران ستر عورت ہے اسی حدیث کی بنا پر امام ابوحنیفہ و شافعی و احمد ابن حنبل مرد کی ران کو ستر مانتے ہیں، امام مالک کے ہاں ستر نہیں لہذا ران کھول کر نماز درست نہیں، مگر خیال رہے کہ یہ اختلاف مرد کی ران میں ہے عورت کی ران کو سب ستر مانتے ہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۳۳)

(15) سنن ابن ماجہ، کتاب ما جاء فی الجنائز، باب ما جاء فی غسل المیت، الحدیث: ۱۳۶۰، ج ۲، ص ۲۰۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی کسی کے سامنے ران نہ کھولو اور نہ بلا ضرورت تنہائی میں کھولو رب تعالیٰ سے شرم کرو کیونکہ ران ستر ہے اس سے آج کل کے نیکر پہننے والے عبرت پکڑیں جن کی آدھی رانیں کھلی ہوتی ہیں اور وہ بے تکلف لوگوں میں پھرتے ہیں اللہ تعالیٰ ایمانی غیرت نصیب کرے۔

۲۔ یعنی کسی مردہ بالغ مسلمان کی ران نہ دیکھو اور کسی ایسے زندہ کی ران نہ دیکھو جن کا تم سے ستر ہے لہذا اس دور سے حکم سے اپنی بیوی اور اپنی ہونڈ کی خارج سے۔ اس سے دو مسئلے معلوم ہوئے: ایک یہ کہ ران ستر ہے، جس کا چھپانا فرض ہے، لہذا یہ حدیث امام مالک کے خلاف ہے، دوسرے یہ کہ مردہ کا احترام زندہ کی طرح ہے کہ اس کا ستر دیکھنا حرام ہے لہذا غسل بھی میت کو ستر ڈھک کر غسل دے سے بھی ستر دیکھنا جائز نہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۳۳)

ایک مرد دوسرے مرد کی ستر کی جگہ نہ دیکھے اور نہ عورت دوسری عورت کی ستر کی جگہ دیکھے اور نہ مرد دوسرے مرد کے ساتھ ایک کپڑے میں برہنہ سوئے اور نہ عورت دوسری عورت کے ساتھ ایک کپڑے میں برہنہ سوئے۔ (16)

حدیث ۱۷: امام احمد و ترمذی و ابو داؤد نے حضرت ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی کہ یہ اور حضرت میمونہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی خدمت میں حاضر تھیں کہ عبداللہ بن ام مکتوم رضی اللہ تعالیٰ عنہ آئے۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے ان دونوں سے فرمایا کہ پردہ کرلو۔ کہتی ہیں: میں نے عرض کی، یا رسول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم)! وہ تو نابینا ہیں، ہمیں نہیں دیکھیں گے۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: کیا تم دونوں اندھی ہو، کیا تم انھیں نہیں دیکھو گی۔ (17)

(16) صحیح مسلم، کتاب النہض، باب تحریم النظر إلی العورات، الحدیث: ۷۴۔ (۳۳۸)، ص ۱۸۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ناف سے گھٹنے تک کے اعضاء مطلقاً چھپانا واجب ہیں کہ نہ مرد مرد کے یہ اعضاء دیکھے نہ عورت عورت کے لیکن عورت مرد اجنبی کے لیے سر سے پاؤں تک لائق پردہ ہے اور نماز کے لیے عورت سر سے پاؤں تک جسم ڈھکے سوائے چہرہ کلائیوں تک ہاتھ اور گھٹنے کے نیچے پاؤں کے۔ فقہاء فرماتے ہیں کہ بے داڑھی مونچھ کا ارد لڑکا بھی بعض احکام میں عورت کی طرح ہے کہ اس کو دیکھنے سے بھی احتیاط کرے۔ (اشعہ) ضرور نما شرعیہ کے احکام جدا گانہ ہیں کہ بچہ جتنے وقت دایہ ستر دیکھتی ہے، یوں ہی بعض صورتوں میں مرد کو نکا کرنا پڑتا ہے۔ محرم مرد اپنی محرمہ عورت کا چہرہ ہاتھ پاؤں سر دیکھ سکتا ہے، خاوند بیوی کا آپس میں کوئی پردہ نہیں، اس سے کسی عضو کا چھپانا واجب نہیں، ہاں شرمگاہ کا دیکھنا بیٹائی ضعیف کرتا ہے ماں باپ اپنے جوان بیٹے کو خوم سکتے ہیں، سوگھ سکتے ہیں یوں ہی جو ن لڑکا لڑکی اپنے ماں باپ کو چوم سکتا ہے دیکھنے و چھونے کے مکمل احکام شامی عالمگیری وغیرہ باب اللبس و النظر میں دیکھئے۔

۲۔ یعنی مرد مرد کے ساتھ یوں ہی عورت عورت کے ساتھ ہنگے نہ لیشیں کہ یہ حرام بھی ہے اور بے غیرتی بھی لہذا دو ہنگے مرد ایک چادر اوڑھ کر نہ سوئیں، یوں ہی دونگی عورتیں سبحان اللہ! کیسی پاکیزہ تعلیم ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالحین، ج ۵، ص ۲۱)

(17) سنن اترمذی، کتاب الادب، باب ما جاء فی إحتجاب النساء من الرجال، الحدیث: ۷۸۷، ج ۲، ص ۳۵۶۔

والمسند امام احمد بن حنبل، حدیث ام سلمہ زوج النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم، الحدیث: ۲۶۵۹۹، ج ۱۰، ص ۸۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس طرح کہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم جناب ام سلمہ کے گھر میں رونق افروز تھے اور بی بی میمونہ ملنے کے لیے وہاں آئی ہوئی تھیں۔ یہی لفظ میمونہ کو معطوف فرمایا اور معطوف علیہ سے اس کا کچھ فاصلہ کر دیا۔ جیسے رب تعالیٰ فرماتا ہے: "وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ" تاکہ معلوم ہو بتائے کعبہ میں ابراہیم علیہ السلام اصل تھے اور حضرت اسماعیل ان کے معبود۔

۲۔ آپ وہی عبداللہ ابن ام مکتوم ہیں جن کے متعلق سورہ عبس شریف نازل ہوئی آپ اجازت لے کر دولت خانہ میں حاضر ہوئے۔

حدیث ۱۸: صحیح بخاری و مسلم میں عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ایسا نہ ہو کہ ایک عورت دوسری عورت کے ساتھ رہے پھر اپنے شوہر کے سامنے اس کا حال بیان کرے، گویا یہ اسے دیکھ رہا ہے۔ (18)

۳۔ یا تو حضرت عبد اللہ کے اندر آتے وقت اندر پہنچنے سے پہلے حضور انور نے یہ حکم دیا یا آپ پہلے داخل ہو گئے داخل ہوتے ہی یہ فرمایا پہلہ احتمال زیادہ قوی ہے کہ پہلے پردہ کرایا جاتا ہے پھر آنے والے کو بلایا جاتا ہے۔

۴۔ عرض کرنے کا مقصد یہ ہے کہ مرد کو حرام ہے کہ اجنبی عورت کو دیکھے، عورت کے لیے اجنبی عورت کو دیکھنا حرام نہیں، اور حضرت عبد اللہ تو تائید ہیں ہم کو دیکھتے نہیں پھر ہم پردہ کیوں کریں۔

۵۔ جواب عالی کا مقصد یہ ہے کہ عورت و مرد پر دو طرفہ پردہ واجب ہے کہ نہ تو مرد اجنبی عورت کو دیکھے نہ اجنبی عورت مرد کو۔ اس حدیث کی بنا پر بعض علماء کا فرمان ہے کہ عورت بھی اجنبی مرد کو نہیں دیکھ سکتی، بعض نے فرمایا کہ دیکھ سکتی ہے ان کی دلیل حضرت عائشہ صدیقہ کی وہ روایت ہے کہ حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے انہیں حبشیوں کا کھیل دکھایا، اس طرح حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم خود پردہ ہو کر آپ کے سامنے کھڑے ہو گئے کہ کوئی مرد تو آپ کو نہ دیکھ سکا، مگر آپ حبشیوں اور ان کے کھیل کو دیکھتی رہیں، یہ کھیل دکھانے کا واقعہ ہے میں ہوا جب کہ جناب عائشہ کی عمر شریف سولہ سال تھی اور پردہ کا حکم آچکا تھا، نیز نماز جماعت میں عورتوں کو حاضری کا حکم تھا مردوں سے علیحدہ ہو کر نماز پڑھتی تھیں مردوں سے پیچھے رہتی تھیں کہ مرد تو ان کو نہ دیکھ سکتے تھے مگر بیویاں یقیناً اپنے سے آگے کے مردوں کو دیکھ سکتی تھیں لہذا حق یہ ہے کہ حضرت عائشہ کی حدیث بیان جواز کے لیے ہے اور یہ حدیث بیان احتیاط کے لیے یہ تمام تحقیق ان پاک باز کے متعلق ہے جہاں بے حیائی کا خیال بھی نہ پیدا ہو، لیکن اگر اس کا خدشہ ہو تو عورت کا مردوں کو دیکھنا بھی سخت حرام ہے۔ (از لمعات، و مرقات، و اشعاع مع زیادة)

(مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۳۷)

(18) صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب لا تبشر المرأة... إلخ، الحدیث: ۵۲۳۰، ج ۳، ص ۷۷۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی یہ ممنوع ہے کہ عورت اپنے خاوند سے دوسری عورت کے حسن کا تذکرہ کرے یہ بھی فتنہ کا باعث ہے کیونکہ۔ شعر

بسا این دولت از گفتار خیزد

نہ چہا عشق از دیدار خیزد

بعض اوقات سن کر عشق پیدا ہو جاتا ہے اسی لیے فقہا فرماتے ہیں کہ عشقیہ فحش گانے اور عورتوں کے حسن کے اشعار سننا حرام ہے کہ باعث فتنہ ہے یہ بیماری عموماً عورتوں میں پائی جاتی ہے کہ دوسری عورتوں کے حسن کا تذکرہ اپنے خاوندوں سے کرتی ہیں سخت جرم ہے۔ اس حدیث کی بنا پر بعض فقہاء فرماتے ہیں کہ حیوان کی بیع مسلم جائز ہے کہ بعض بیان مثل عیان کے ہوتے ہیں، ہو سکتا ہے کہ حیوان کے پورے اوصاف بیان کر دیئے جائیں جس سے وہ متعین ہو جائے دیکھو سرکار فرماتے ہیں گویا وہ اسے دیکھ رہا ہے مگر ہمارے امام صاحب کے ہاں ممنوع ہے کیونکہ جانوروں کے باطنی اوصاف بیان میں نہیں آسکتے، اور بیع مسلم میں پورا علم چاہیے۔ (مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۲۰)

حدیث ۱۹: صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: خبردار کوئی مرد شیب عورت کے یہاں رات کو نہ رہے مگر اس صورت میں کہ اس سے نکاح کرنے والا ہو یا اس کا ذی محرم ہو۔ (19)

حدیث ۲۰: صحیح مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ ایک شخص نے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں یہ عرض کی کہ انصار یہ عورت سے نکاح کا میرا ارادہ ہے۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا کہ اسے دیکھ لو! کیونکہ انصار کی آنکھوں میں کچھ ہے۔ (20) یعنی ان کی آنکھیں کچھ بھوری ہوتی ہیں۔

(19) صحیح مسلم، کتاب السام، باب تحریم الخلوۃ بالاجنبیۃ... إلخ، الحدیث: ۱۹۔ (۲۱۷۲)، ص ۱۱۹۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جس عورت سے نکاح درست ہے اس کے ساتھ رات میں اکیلے رہنا حرام ہے، شادی شدہ کی قید اس لیے ہے کہ کنواری لڑکی عموماً شرمیلی ہوتی ہے وہ خود ہی کسی کے ساتھ نہیں اٹھتی بیٹھتی، شادی شدہ بے باک بھی ہوتی ہے، بے خوف بھی کہ اس کا زنا چھپ سکتا ہے کہ اگر اولاد ہو جائے تو لوگ سمجھیں گے اس کے خاوند کی ہے رات گزارنے کی قید اس لیے لگائی گئی کہ رات کی تنہائی بمقابلہ دن کی خلوت کے زیادہ خطرناک ہے ورنہ مطلقاً خلوت اجنبیہ سے حرام ہے۔

۲۔ محرم وہ مرد ہے جس کا نکاح اس عورت سے ہمیشہ کے لیے حرام ہے مجرم و قسم کے ہیں: ایک وہ جو ذی رحم بھی ہو، جیسے باپ بیٹا بھائی وغیرہ دوسرے وہ جو ذی رحم نہ ہو، جیسے رضاعی بھائی اور داماد۔ خیال رہے کہ بہنوئی اس حکم سے خارج ہے کہ اس سے نکاح اگرچہ حرام ہے مگر دائمی حرام نہیں بہن کی طلاق یا وفات کے بعد حلال ہے لہذا سالی بہنوئی سے پردہ کرے، بلکہ جوان ساس بھی جوان داماد سے خلوت کرنے میں احتیاط رکھے یوں ہی جوان سرراہی جوان بہو کے ساتھ خلوت کرنے میں احتیاط رکھے۔ اگرچہ ان کے بے خلوت درست ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۲۲)

(20) صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب ندب من اراد نکاح امرأة... إلخ، الحدیث: ۷۴۔ (۱۲۲۳)، ص ۷۳۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ شخص غیر انصاری تھا جسے انصار کی عورتوں کے متعلق کچھ خبر نہ تھی اگر انصاری ہوتا تو خود ہی تمام چیزوں سے خبردار ہوتا، اسے یہ بتانے کی ضرورت ہی نہ ہوتی۔

۲۔ یہ ترجمہ ہی مناسب ہے کیونکہ بعد نکاح عورت دیکھ لی ہی جاتی ہے، نیز پھر دیکھنا بے کار ہے کہ نکاح تو ہو ہی چکا، تزوج سے مراد ہے ارادۂ نکاح۔

۳۔ دیکھنے سے مراد چہرہ دیکھنا ہے کہ حسن و قبح چہرے ہی میں ہوتا ہے اور اس سے مراد وہ ہی صورت ہے جو ابھی عرض کی گئی۔ جتنی کسی بہانہ سے دیکھ لینا یا کسی معتبر عورت سے دکھالینا، نہ کہ باقاعدہ عورت کا انٹرویو (Interview) کرنا جیسا کہ آجکل کے بے دینوں نے سمجھا۔

حدیث ۲۱: امام احمد و ترمذی و نسائی و ابن ماجہ و دارمی نے مغیرہ بن شعبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں میں نے ایک عورت کو نکاح کا پیغام دیا۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے مجھ سے فرمایا کہ تم نے اسے دیکھ لیا ہے؟ عرض کی، نہیں۔ فرمایا: اسے دیکھ لو! کہ اس کی وجہ سے تم دونوں کے درمیان موافقت ہونے کا پہلو غالب ہے۔ (21)



۲۔ یہ تو حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے انصار کی عورتوں کو ان کے مردوں پر قیاس کیا کہ مردوں کی آنکھیں نیلگوں تھیں تو عورتوں کی بھی ایسی ہی ہوں گی، یا کسی نے حضور سے یہ عرض کیا ہو گا یا اس لیے کہ حضور ہر کھلے چہرے سے خبردار ہیں یا حضور انور سے مسلمان عورتوں کا پردہ نہیں کہ حضور و مد ہیں مگر یہ توجیہ کچھ کمزوری ہے کیونکہ احترام و ادب میں والد ہیں نہ کہ شرعی احکام میں لہذا حضور سے پردہ فرض ہے جو یہاں حضور کے سامنے آئی ہیں وہ رضاعی بمشیرہ وغیرہ تھیں یا کوئی اور طرح محرم۔ (اشعہ و مرقات) اس حدیث سے معلوم ہوا کہ بعض صورتوں میں غیبت یعنی کسی کی برائی پس پشت بیان کرنا جائز ہے جب کہ کسی فساد کار کو کنا منظور ہو، آج محدثین راویان حدیث کے عیوب بیان کرتے ہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۱۹)

(21) سنن نسائی، کتاب النکاح، باب إباحۃ النظر قبل التزوج، الحدیث: ۳۲۳۲، ص ۵۲۷۔

ومشکوٰۃ المصابیح، کتاب النکاح، باب النظر إلى المخطوبة، الحدیث: ۳۱۰۷، ج ۲، ص ۲۰۶۔

حکیم ارامت کے مدنی پھول

۱۔ یا تو بیفہم دین چاہا یا ابھی معمولی بات چیت ہوئی پختہ بات ہو جانے اور ارادہ نکاح کر چکنے کے بعد یہ حکم نہ دیا۔

۲۔ کیونکہ اگر بغیر دیکھے تم نے عورت سے نکاح کر لیا بعد نکاح دیکھنے پر تم کو پسند نہ آئی تو یا اسے طلاق دو گے یا اسے بغیر محبت کے بھگتو گے، جس سے تمہاری زندگی بھی تلخ ہوئی اور اس عورت کی بھی، دیکھ کر نکاح کرنے میں یہ اندیشہ نہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۲۸)

مسائل فقہیہ

اس باب کے مسائل چار قسم کے ہیں۔ مرد کا مرد کو دیکھنا، عورت کا عورت کو دیکھنا، عورت کا مرد کو دیکھنا، مرد کا عورت کو دیکھنا۔

مرد مرد کے ہر حصہ بدن کی طرف نظر کر سکتا ہے سوا ان اعضا کے جن کا ستر ضروری ہے۔ وہ ناف کے نیچے سے گھٹنے کے نیچے تک ہے کہ اس حصہ بدن کا چھپانا فرض ہے، جن اعضا کا چھپانا ضروری ہے ان کو عورت کہتے ہیں۔ کسی کو گھٹنا کھولے ہوئے دیکھے تو اسے منع کرے اور ران کھولے ہوئے دیکھے تو سختی سے منع کرے اور شرم گاہ کھولے ہوئے ہو تو اسے سزا دی جائے گی۔ (1)

مسئلہ ۱: بہت چھوٹے بچے کے لیے عورت نہیں یعنی اس کے بدن کے کسی حصہ کا چھپانا فرض نہیں، پھر جب کچھ بڑا ہو گیا تو اس کے آگے پیچھے کا مقام چھپانا ضروری ہے۔ پھر جب اور بڑا ہو جائے دس برس سے بڑا ہو جائے تو اس کے لیے بالغ کا سا حکم ہے۔ (2)

مسئلہ ۲: جس حصہ بدن کی طرف نظر کر سکتا ہے اس کو چھو بھی سکتا ہے۔ (3)

مسئلہ ۳: لڑکا جب مراہق (یعنی بالغ ہونے کے قریب) ہو جائے اور وہ خوبصورت نہ ہو تو نظر کے بارے میں اس کا وہی حکم ہے جو مرد کا ہے اور خوبصورت ہو تو عورت کا جو حکم ہے وہ اس کے لیے ہے یعنی شہوت کے ساتھ اس کی طرف نظر کرنا حرام ہے اور شہوت نہ ہو تو اس کی طرف بھی نظر کر سکتا ہے اور اس کے ساتھ تنہائی بھی جائز ہے۔ شہوت نہ ہونے کا مطلب یہ ہے کہ اسے یقین ہو کہ نظر کرنے سے شہوت نہ ہوگی اور اگر اس کا شبہ بھی ہو تو ہرگز نظر نہ کرے، بوسہ کی خواہش پیدا ہونا بھی شہوت کی حد میں داخل ہے۔ (4)

(1) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثامن فیما یحل... إلخ، ج ۵، ص ۳۲۷۔

(2) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی النظر واللمس، ج ۹، ص ۶۰۲۔

(3) الھدایۃ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی الوطء والنظر واللمس، ج ۲، ص ۳۷۱۔

(4) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی النظر واللمس، ج ۹، ص ۶۰۲۔

آخر دیکھنا

میں نے بعض متاخرین علمائے کرام رحمہم اللہ الشلام کو دیکھا کہ انہوں نے میرے ذکر کردہ موقف کی طرف اشارہ کرتے ہوئے فرمایا: —

مسئلہ ۴: عورت کا عورت کو دیکھنا، اس کا وہی حکم ہے جو مرد کو مرد کی طرف نظر کرنے کا ہے یعنی ناف کے نیچے سے گھٹنے تک نہیں دیکھ سکتی باقی اعضا کی طرف نظر کر سکتی ہے۔ بشرطیکہ شہوت کا اندیشہ نہ ہو۔ (5)

”عورت اور امرو کی طرف شہوت سے دیکھنا زنا ہے کیونکہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے صحیح سند کے ساتھ مروی ہے کہ،

”آنکھوں کا زنا دیکھنا، زبان کا زنا بولنا، ہاتھ کا زنا پکڑنا، پاؤں کا زنا چلنا ہے اور نفس (زنا کی) تمنا اور خواہش کرتا ہے۔“

(صحیح مسلم، کتاب القدر، باب قدر علی ابن ادم... الخ، الحدیث: ۶۷۵۳، ۶۷۵۴، ص ۱۱۳، ۱۱۴)

اسی لئے صالحین نے امردوں (یعنی جنہیں دیکھ کر شہوت آئے ان) کو دیکھتے، ان سے غلط ملط ہونے اور ان کے ساتھ بیٹھنے سے بچنے کے متعلق مبالغہ فرمایا۔ حضرت سیدنا حسن بن ذکوان رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ نے فرمایا: ”امردوں کی اولاد کے ساتھ نہ بیٹھو کیونکہ ان کی عبور میں

کنواری عورتوں کی صورتوں جیسی ہوتی ہیں اور وہ عورتوں سے بڑھ کر فتنہ میں ڈالنے والے ہیں۔“

ایک تابعی فرماتے ہیں: ”میں نو جوان سالک (یعنی عابد و زاہد نو جوان) کے ساتھ بے ریش لڑکے کے بیٹھنے کو سات درندوں سے زیادہ خطرناک سمجھتا ہوں۔“ مزید فرماتے: ”کوئی شخص ایک مکان میں کسی امرد کے ساتھ تہارات نہ گزارے۔“

بعض عمامے کرام و جنہم اللہ المستلام نے عورت پر قیاس کرتے ہوئے گھر، دکان یا حمام میں امرد کے ساتھ خلوت کو حرام قرار دیا کیونکہ، فیضی
 المذنبین، ایضاً اللہ تعالیٰ علیہ قابہ وسلم کا فرمان حقیقت نشان ہے: ”جو شخص کسی عورت کے ساتھ تنہا ہوتا ہے تو وہاں میرا
 شیطان ہوتا ہے۔“ (المعجم الکبیر، الحدیث: ۷۸۳۰، ج ۸، ص ۲۰۵)

(جامع الترمذی، ابواب الفتن، باب ما جاء فی لزوم الجماعة، الحدیث: ۲۱۶۵، ص ۱۸۶۹۔)

جو امرد عورتوں سے زیادہ خوبصورت ہوتا ہے اس میں فتنہ بھی زیادہ ہوتا ہے، اس لئے کہ اس سے عورتوں کی نسبت زیادہ برائی کا امکان ہوتا ہے اور اس کے حق میں عورتوں کی نسبت شک اور شر کے ایسے طریقے آسان ہیں جو عورت کے حق میں آسان نہیں لہذا اس کے ساتھ چھائی اختیار کرنا بدرجہ اولیٰ حرام ہونا چاہئے۔ ان سے بچنے اور نفرت کرنے کے بارے میں اسلاف کے بے شمار اقوال ہیں اور وہ انہیں اُمتان (یعنی بدبودار) کہتے تھے کیونکہ ان سے شرعی طور پر نفرت کی گئی ہے۔ جو ہم نے ذکر کیا ہے ان سب میں یہی حکم ہے خواہ اچھی نیت سے ہی دیکھا جائے۔

حضرت سیدنا سفیان ثوری رضی اللہ عنہ (متوفی ۱۶۱ھ) ایک حمام میں داخل ہوئے۔ آپ کے پاس ایک خوبصورت لڑکا آیا تو ارشاد فرمایا: ”مجھ سے دور کر دو کیونکہ میں ہر عورت کے ساتھ ایک شیطان جبکہ اور ہر مرد کے ساتھ 17 شیاطین دیکھتا ہوں۔“

ایک شخص حضرت سیدنا امام احمد حنبل علیہ رحمۃ اللہ المأول (متوفی ۲۴۱ھ) کی خدمت میں حاضر ہوا۔ اس کے ساتھ ایک خوبصورت لڑکا تھا۔ آپ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے اس سے دریافت فرمایا: ”تمہارے ساتھ یہ کون ہے؟“ اس نے عرض کی: ”یہ میرا بھانجا ہے۔“ آپ نے فرمایا: ”آئندہ سے لے کر میرے پاس نہ آنا اور اسے ساتھ لے کر راستے میں نہ چلا کرنا کہ اسے اور تمہیں نہ جاننے والے بدگمانی نہ کریں۔“

مسئلہ ۵: عورت صالحہ کو یہ چاہیے کہ اپنے کو بدکار عورت کے دیکھنے سے بچائے، یعنی اس کے سامنے دوپٹا وغیرہ نہ اتارے کیونکہ وہ اسے دیکھ کر مردوں کے سامنے اس کی شکل و صورت کا ذکر کرے گی، مسلمان عورت کو یہ بھی حلال نہیں کہ کافرہ کے سامنے اپنا ستر کھولے۔ (6)

گھروں میں کافرہ عورتیں آتی ہیں اور بیبیاں ان کے سامنے اسی طرح مواقع ستر کھولے ہوئے ہوتی ہیں جس طرح مسلمہ کے سامنے رہتی ہیں ان کو اس سے اجتناب (بچنا) لازم ہے۔ اکثر جگہ دایاں کافرہ ہوتی ہیں اور وہ بچہ جنانے کی خدمت انجام دیتی ہیں، اگر مسلمان دایاں مل سکیں تو کافرہ سے ہرگز یہ کام نہ کرایا جائے کہ کافرہ کے سامنے ان اعضا کے کھولنے کی اجازت نہیں۔

مسئلہ ۶: عورت کا مرد اجنبی کی طرف نظر کرنے کا وہی حکم ہے، جو مرد کا مرد کی طرف نظر کرنے کا ہے اور یہ اس وقت ہے کہ عورت کو یقین کے ساتھ معلوم ہو، کہ اس کی طرف نظر کرنے سے شہوت نہیں پیدا ہوگی اور اگر اس کا شبہ بھی ہو تو ہرگز نظر نہ کرے۔ (7)

مسئلہ ۷: عورت مرد اجنبی کے جسم کو ہرگز نہ چھوئے جبکہ دونوں میں سے کوئی بھی جوان ہو، اس کو شہوت ہو سکتی ہو اگرچہ اس بات کا دونوں کو اطمینان ہو کہ شہوت نہیں پیدا ہوگی۔ (8) بعض جوان عورتیں اپنے پیروں کے ہاتھ پاؤں

جب قبیلہ عبد القیس کا وفد اللہ عز و جل کے محبوب، دانائے غیب، منزہ عن الغیو، صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی بارگاہ میں حاضر ہوا تو ان کے ساتھ ایک خوبصورت لڑکا بھی تھا۔ آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے اسے اپنی پشت مبارک کے پیچھے بٹھا دیا اور ارشاد فرمایا: ”حضرت داؤد علیہ السلام کی آزمائش بھی نظر سے ہوئی۔“ (کتاب الکبائر للذہبی، الکبیرۃ الحادیۃ عشرۃ، ص ۶۴)

(الآؤا جر عن ائیراف الکبائر)

(5) المہدایۃ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی الوطء والنظر واللمس، ج ۲، ص ۳۷۰۔

(6) الفتاویٰ الہندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثامن فیما یحل... إلخ، ج ۵، ص ۳۲۷۔

فاسقہ سے پردے کا حکم

مُزَافِق (یعنی قَرِیبُ الْبُلُوغ) لڑکے یا لڑکی کا ولی انہیں ہر اس کام سے روکے جس سے بالغ یا بالغہ کو روکا جاتا ہے اور عورتوں پر قَرِیبُ الْبُلُوغ لڑکے سے پردہ کرنا ضروری ہے جیسا کہ مسلمان عورت پر واجب ہے کہ ذمی عورت سے پردہ کرے تاکہ وہ کسی فاسق یا کافر کو اس کے اوصاف بیان نہ کرے جس کی وجہ سے وہ کسی فتنے میں نہ پڑ جائے۔ اور زانیہ فاسقہ بھی ذمی عورت کے حکم میں ہے، لہذا پاک دامن عورت کا اس سے بچنا ضروری ہے تاکہ وہ اسے اپنی بری عادات کی طرف نہ لے جائے۔ (الآؤا جر عن ائیراف الکبائر)

(7) الفتاویٰ الہندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثامن فیما یحل... إلخ، ج ۵، ص ۳۲۷۔

(8) المرجع السابق

دبائی ہیں اور بعض پیر اپنی مریدہ سے ہاتھ پاؤں دبواتے ہیں اور ان میں اکثر دونوں یا ایک حد شہوت میں ہوتا ہے ایسا کرنا ناجائز ہے اور دونوں گنہگار ہیں۔

مسئلہ ۸: مرد کا عورت کو دیکھنا، اس کی کئی صورتیں ہیں:

(۱) مرد کا اپنی زوجہ یا باندی کو دیکھنا۔ (۲) مرد کا اپنے محارم کی طرف نظر کرنا۔ (۳) مرد کا آزاد عورت اجنبیہ کو دیکھنا۔

(۴) مرد کا دوسرے کی باندی کو دیکھنا۔

پہلی صورت کا حکم یہ ہے کہ عورت کی ایڑی سے چوٹی تک ہر عضو کی طرف نظر کر سکتا ہے شہوت اور بد شہوت دونوں صورتوں میں دیکھ سکتا ہے، اسی طرح یہ دونوں قسم کی عورتیں اس مرد کے ہر عضو کو دیکھ سکتی ہیں، ہاں بہتر یہ ہے کہ مقام مخصوص کی طرف نظر نہ کرے، کیونکہ اس سے نسیان پیدا ہوتا ہے اور نظر میں بھی ضعف پیدا ہوتا ہے۔ اس مسئلہ میں باندی سے مراد وہ ہے جس سے وطی جائز ہے۔ (9)

مسئلہ ۹: جس باندی سے وطی نہ کر سکتا ہو مثلاً وہ مشرکہ ہے یا مکاتبہ یا مشترکہ یا رضاعت یا مصاہرت کی وجہ سے اس سے وطی حرام ہو وہ اجنبیہ کے حکم میں ہے۔ (10)

مسئلہ ۱۰: زوجہ اور اس باندی کے ہر عضو کو چھو بھی سکتا ہے اور یہ بھی اس کے ہر عضو کو چھو سکتی ہے، یہاں تک کہ ہر ایک دوسرے کی شرم گاہ کو بھی چھو سکتا ہے۔ (11)

مسئلہ ۱۱: جماع کے وقت دونوں بالکل برہنہ بھی ہو سکتے ہیں جبکہ وہ مکان بہت چھوٹا دس پانچ ہاتھ کا ہو۔ (12)

مسئلہ ۱۲: میوں بی بی جب بچھونے پر ہوں مگر جماع میں مشغول نہ ہوں، اس حالت میں ان کے محارم وہاں اجازت لے کر آ سکتے ہیں، بغیر اجازت نہیں آ سکتے۔ اسی طرح خادم یعنی غلام اور باندی بھی آ سکتی ہے۔ (13)

مسئلہ ۱۳: باندی کا ہاتھ پکڑ کر مکان کے اندر لے گیا اور دروازہ بند کر لیا اور لوگوں کو معلوم ہو گیا کہ وطی کرنے کے

(9) فتاویٰ احمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثامن فیما یحل... إلخ، ج ۵، ص ۳۲۷۔

والد المختار ودر المختار، کتاب المحظر والایات، فصل فی المحظر والس، ج ۹، ص ۶۰۵۔

(10) الدر المختار، کتاب المحظر والایات، فصل فی المحظر والس، ج ۹، ص ۶۰۴۔

(11) فتاویٰ احمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثامن فیما یحل... إلخ، ج ۵، ص ۳۲۸۔

(12) اربع سبق

(13) مرجع السابق

لیے ایسا کیا ہے یہ مکروہ ہے۔ یوہیں سوت کے سامنے بی بی سے وطی کرنا مکروہ ہے۔ (14)

مسئلہ ۱۳: جو عورت اس کے محارم میں ہو اس کے سر، سینہ، پنڈلی، بازو، گلائی، گردن، قدم کی طرف نظر کر سکتا ہے، جبکہ دونوں میں سے کسی کی شہوت کا اندیشہ نہ ہو محارم کے پیٹ، پیٹھ اور ران کی طرف نظر کرنا ناجائز ہے۔ (15) اسی طرح کروٹ اور گھٹنے کی طرف نظر کرنا بھی ناجائز ہے۔ (16) کان اور گردن اور شانہ اور چہرہ کی طرف نظر کرنا جائز ہے۔ (17)

مسئلہ ۱۵: محارم سے مراد وہ عورتیں ہیں جن سے ہمیشہ کے لیے نکاح حرام ہے، یہ حرمت نسب سے ہو یا سبب سے مثلاً رضاعت یا مصاہرت (18) اگر زنا کی وجہ سے حرمت مصاہرت ہو جیسے مرنیہ کے اصول و فروع (یعنی جس عورت سے زنا کیا، اس کی ماں اور لڑکیاں زانی کے لیے) ان کی طرف نظر کا بھی وہی حکم ہے۔ (19)

مسئلہ ۱۶: محارم کے جن اعضا کی طرف نظر کر سکتا ہے ان کو چھو بھی سکتا ہے، جبکہ دونوں میں سے کسی کی شہوت کا اندیشہ نہ ہو۔ مرد اپنی والدہ کے پاؤں دبا سکتا ہے مگر ران اس وقت دبا سکتا ہے جب کپڑے سے چھپی ہو، یعنی کپڑے کے اوپر سے اور بغیر حائل چھونا جائز نہیں۔ (20)

مسئلہ ۱۷: والدہ کے قدم کو بوسہ بھی دے سکتا ہے۔ حدیث میں ہے جس نے اپنی والدہ کا پاؤں چوما، تو ایسا ہے جیسے جنت کی چوکھٹ کو بوسہ دیا۔ (21)

مسئلہ ۱۸: محارم کے ساتھ سفر کرنا یا خلوت میں اس کے ساتھ ہونا، یعنی مکان میں دونوں کا تنہا ہونا کہ کوئی دوسرا وہاں نہ ہو جائز ہے بشرطیکہ شہوت کا اندیشہ نہ ہو۔ (22)

(14) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب النکاحیۃ، الباب الثامن فیما یحل... راجع، ج ۵، ص ۳۲۸۔

(15) الھدایۃ، کتاب النکاحیۃ، فصل فی الوطء والنظر واللمس، ج ۲، ص ۳۷۰۔

(16) رد المحتار، کتاب النکاح، فصل فی النظر واللمس، ج ۹، ص ۶۰۶۔

(17) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب النکاحیۃ، الباب الثامن فیما یحل... راجع، ج ۵، ص ۳۲۸۔

(18) رضاعت (یعنی دودھ کے رشتے) اور مصاہرت (یعنی سسرالی رشتے) کی مطومات کے لیے بہار شریعت، حصہ ۷، ملاحظہ فرمائیں۔

(19) الھدایۃ، کتاب النکاحیۃ، فصل فی الوطء والنظر واللمس، ج ۲، ص ۳۷۰۔

(20) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب النکاحیۃ، الباب الثامن فیما یحل... راجع، ج ۵، ص ۳۲۸۔

(21) رد المحتار، کتاب النکاح، فصل فی النظر واللمس، ج ۹، ص ۶۰۶۔

(22) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب النکاحیۃ، الباب الثامن فیما یحل... راجع، ج ۵، ص ۳۲۸۔

مسئلہ ۱۹: دوسرے کی باندی کی طرف نظر کرنے کا وہی حکم ہے جو محارم کا ہے۔ مدبرہ اور مکاتبہ کا بھی یہی حکم ہے۔ (23)

مسئلہ ۲۰: کنیز کو خریدنے کا ارادہ ہو تو اس کی کلائی اور بازو اور پنڈلی اور سینہ کی طرف نظر کر سکتا ہے، کیونکہ اس حالت میں دیکھنے کی ضرورت ہے اور اس کے ان اعضا کو چھو بھی سکتا ہے بشرطیکہ شہوت کا اندیشہ نہ ہو۔ (24)

مسئلہ ۲۱: اجنبی عورت کی طرف نظر کرنے کا حکم یہ ہے کہ اس کے چہرہ اور ہتھیلی کی طرف نظر کرنا جائز ہے، کیونکہ اس کی ضرورت پڑتی ہے کہ کبھی اس کے موافق یا مخالف شہادت دینی ہوتی ہے یا فیصلہ کرنا ہوتا ہے اگر اسے نہ دیکھا ہو تو کیونکر گواہی دے سکتا ہے کہ اس نے ایسا کیا ہے اس کی طرف دیکھنے میں بھی وہی شرط ہے کہ شہوت کا اندیشہ نہ ہو اور یوں بھی ضرورت ہے کہ بہت سی عورتیں گھر سے باہر آتی جاتی ہیں، لہذا اس سے بچنا بہت دشوار ہے۔ بعض علما نے قدم کی طرف بھی نظر کو جائز کہا ہے۔ (25)

مسئلہ ۲۲: اجنبیہ عورت کے چہرہ اور ہتھیلی کو دیکھنا اگرچہ جائز ہے مگر چھونا جائز نہیں، اگرچہ شہوت کا اندیشہ نہ ہو کیونکہ نظر کے جواز کی وجہ ضرورت اور بلوائے عام ہے چھونے کی ضرورت نہیں، لہذا چھونا حرام ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ ان سے مصافحہ جائز نہیں اسی لیے حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بوقت بیعت بھی عورتوں سے مصافحہ نہ فرماتے صرف زبان سے بیعت لیتے۔ ہاں اگر وہ بہت زیادہ بوڑھی ہو کہ محل شہوت نہ ہو تو اس سے مصافحہ میں حرج نہیں۔ یوہیں اگر مرد بہت زیادہ بوڑھا ہو کہ فتنہ کا اندیشہ ہی نہ ہو تو مصافحہ کر سکتا ہے۔ (26)

(23) امدادیہ، کتاب النکاح، فصل فی الوطء والنظر واللمس، ج ۲، ص ۳۷۱۔

(24) امدادیہ، کتاب النکاح، فصل فی الوطء والنظر واللمس، ج ۲، ص ۳۷۱۔

(25) الدر المختار، کتاب النکاح، ج ۹، ص ۶۱۰۔

والفتاویٰ الھندیہ، کتاب النکاح، الباب الثامن فیما یحل.... إلخ، ج ۵، ص ۳۲۹۔

(26) امدادیہ، کتاب النکاح، فصل فی الوطء والنظر واللمس، ج ۲، ص ۳۶۸، وغیرہا۔

عورتوں سے مصافحہ

مسئلہ: عورت کا ہیر بھی عورت کا غیر محرم ہے اس لئے مریدہ کو اپنے ہیر سے بھی پردہ کرنا فرض ہے۔ اور ہیر کے لئے بھی یہ جائز نہیں کہ اپنی مریدہ کو بے پردہ دیکھے یا تنہائی میں اس کے پاس بیٹھے۔ بلکہ ہیر کے لئے یہ بھی جائز نہیں کہ عورت کا ہاتھ پکڑ کر اس کو بیعت کرے۔ جیسا کہ حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے عورتوں کی بیعت کے متعلق فرمایا کہ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام یأتیہا النبیؐ إذا جاءک المؤمنات سے عورتوں کا امتحان فرماتے تھے جو عورت اس آیت کا اقرار کر لیتی تھی تو آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اس سے فرماتے تھے کہ میں نے تجھ سے یہ بیعت لے لی۔ یہ بیعت بذریعہ کلام ہوتی تھی۔ خدا کی قسم کبھی بھی حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا ہاتھ کسی عورت کے

مسئلہ ۲۳: بہت چھوٹی لڑکی جو مشہدہ (یعنی قابل شہوت) نہ ہو اس کو دیکھنا بھی جائز ہے اور چھوٹا بھی جائز ہے۔ (27)

مسئلہ ۲۴: اجنبیہ عورت نے کسی کے یہاں کام کاج کرنے روٹی پکانے کی نوکری کی ہے اس صورت میں اس کی کلائی کی طرف نظر جائز ہے۔ کہ وہ کام کاج کے لیے آستین چڑھائے گی کلائیوں اس کی کھلیں گی اور جب اس کے مکان میں ہے تو کیوں کر بیچ سکے گا، اسی طرح اس کے دانتوں کی طرف نظر کرنا بھی جائز ہے۔ (28)

مسئلہ ۲۵: اجنبیہ عورت کے چہرہ کی طرف اگرچہ نظر جائز ہے، جبکہ شہوت کا اندیشہ نہ ہو مگر یہ زمانہ فتنہ کا ہے اس زمانے میں ویسے لوگ کہاں جیسے اگلے زمانہ میں تھے، لہذا اس زمانہ میں اس کو دیکھنے کی ممانعت کی جائے گی مگر گواہ و قاضی کے لیے کہ بوجہ ضرورت ان کے لیے نظر کرنا جائز ہے اور ایک صورت اور بھی ہے وہ یہ کہ اس عورت سے نکاح کرنے کا ارادہ ہو تو اس نیت سے دیکھنا جائز ہے۔ کہ حدیث میں یہ آیا ہے کہ جس سے نکاح کرنا چاہتے ہو اس کو دیکھ لو کہ یہ بقائے محبت کا ذریعہ ہوگا۔ (29) اسی طرح عورت اس مرد کو جس نے اس کے پاس پیغام بھیجا ہے دیکھ سکتی ہے، اگرچہ اندیشہ شہوت ہو مگر دیکھنے میں دونوں کی یہی نیت ہو کہ حدیث پر عمل کرنا چاہتے ہیں۔ (30)

مسئلہ ۲۶: جس عورت سے نکاح کرنا چاہتا ہے اگر اس کو دیکھنا ناممکن ہو جیسا کہ اس زمانہ کا رواج یہ ہے کہ اگر کسی نے نکاح کا پیغام دے دیا تو کسی طرح بھی اسے لڑکی کو نہیں دیکھنے دیں گے یعنی اس سے اتنا زبردست پردہ کیا جاتا ہے کہ دوسرے سے اتنا پردہ نہیں ہوتا اس صورت میں اس شخص کو یہ چاہیے کہ کسی عورت کو بھیج کر دکھوانے اور وہ آکر اس

ہاتھ سے بیعت کے وقت نہیں لگا۔ (صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب غزوۃ الحبشہ، رقم ۴۱۸۲، ج ۳، ص ۷۵)

(27) الھدایۃ، کتاب النکاح، فصل فی الوطء والنظر واللمس، ج ۲، ص ۳۶۸۔

(28) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب النکاح، الباب الثامن فیما یحل...، ج ۵، ص ۳۲۹۔

(29) سنن الترمذی، کتاب النکاح، باب ما جاء فی النظر الی المخطوبۃ، الحدیث: ۱۰۸۹، ج ۲، ص ۳۳۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اسدیا تو پیغام دینا چاہا یا ابھی معمولی بات چیت ہوئی پختہ بات ہو جانے اور ارادہ نکاح کر چکنے کے بعد یہ حکم نہ دیا۔

۲۔ کیونکہ اگر بغیر دیکھے تم نے عورت سے نکاح کر لیا بعد نکاح دیکھنے پر تم کو پسند نہ آئی تو یا اسے طلاق دو گے یا اسے بغیر محبت کے بھگتو گے، جس سے تمہاری زندگی بھی تلخ ہوئی اور اس عورت کی بھی، دیکھ کر نکاح کرنے میں یہ اندیشہ نہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۲۸)

(30) الدر المختار و رد المحتار، کتاب النکاح، فصل فی النظر والاباحۃ، ج ۹، ص ۶۱۰۔

کے سامنے سارا حلیہ و نقشہ وغیرہ بیان کر دے تاکہ اسے اس کی شکل و صورت کے متعلق اطمینان ہو جائے۔ (31)

مسئلہ ۲۷: جس عورت سے نکاح کرنا چاہتا ہے، اس کی ایک لڑکی بھی ہے اور معلوم ہوا کہ یہ لڑکی بالکل اپنی ماں کی شکل و صورت کی ہے اس مقصد سے کہ اس کی ماں سے نکاح کرتا ہے لڑکی کو دیکھنا جائز نہیں جبکہ یہ مشتبہ ہو۔ (32)

مسئلہ ۲۸: اجنبیہ عورت کی طرف نظر کرنے میں ضرورت کی ایک صورت یہ بھی ہے کہ عورت بیمار ہے اس کے علاج میں بعض اعضا کی طرف نظر کرنے کی ضرورت پڑتی ہے بلکہ اس کے جسم کو چھونا پڑتا ہے۔ مثلاً نبض دیکھنے میں ہاتھ چھونا ہوتا ہے یا پیٹ میں ورم کا خیال ہو تو ٹٹول کر دیکھنا ہوتا ہے یا کسی جگہ پھوڑا ہو تو اسے دیکھنا ہوتا ہے بلکہ بعض مرتبہ ٹٹولنا بھی پڑتا ہے اس صورت میں موضع مرض کی طرف نظر کرنا یا اس ضرورت سے بقدر ضرورت اس جگہ کو چھونا جائز ہے۔

یہ اس صورت میں ہے کوئی عورت علاج کرنے والی نہ ہو، ورنہ چاہیے یہ کہ عورتوں کو بھی علاج کرنا سکھایا جائے تاکہ ایسے مواقع پر وہ کام کریں کہ ان کے دیکھنے وغیرہ میں اتنی خرابی نہیں جو مرد کے دیکھنے وغیرہ میں ہے۔ اکثر جگہ دایاں ہوتی ہیں جو پیٹ کے ورم کو دیکھ سکتی ہیں جہاں دایاں دستیاب ہوں مرد کو دیکھنے کی ضرورت باقی نہیں رہتی۔ علاج کی ضرورت سے نظر کرنے میں بھی یہ احتیاط ضروری ہے کہ صرف اتنا ہی حصہ بدن کھولا جائے جس کے دیکھنے کی ضرورت ہے باقی حصہ بدن کو اچھی طرح چھپا دیا جائے کہ اس پر نظر نہ پڑے۔ (33)

مسئلہ ۲۹: عمل دینے (یعنی دوا دینے) کی ضرورت ہو تو مرد مرد کے موضع ختنہ (یعنی پیچھے کا مقام) کی طرف نظر کر سکتا ہے یہ بھی بوجہ ضرورت جائز ہے اور ختنہ کرنے میں موضع ختنہ کی طرف نظر کرنا بلکہ اس کا چھونا بھی جائز ہے کہ یہ بھی بوجہ ضرورت ہے۔ (34)

(31) رد المحتار، کتاب الحظر والباحث، فصل فی النظر واللمس، ج ۹، ص ۶۱۱۔

(32) المرجع السابق۔

(33) الھدایۃ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی الوطء والنظر واللمس، ج ۲، ص ۳۶۹، وغیرھا۔

(34) الھدایۃ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی الوطء والنظر واللمس، ج ۲، ص ۳۶۹۔

والفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثامن فیما یحل... الخ، ج ۵، ص ۳۳۰۔

اعلیٰ حضرت، امام السنن، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

در مختار میں ہے:

ینظر الطیب الی موضع مرضها بقدر الضرورة اذا الضرورات تتقدر بقدرها و کذا نظر قابدة و ختان۔

بوقت ضرورت بقدر ضرورت طیب جائے مرض (خواہ وہ جائے پردہ ہو) کو دیکھ سکتا ہے۔ اور قدر ضرورت محض اندازے سے ہوگی۔

مسئلہ ۳۰: عورت کو فصد کرانے (یعنی رگ سے خون نکلوانے) کی ضرورت ہے اور کوئی عورت ایسی نہیں ہے جو

اسی طرح دایہ اور ختنہ کرنے والے کا معاملہ ہے۔ (ت) (۱) رد المحتار کتاب الحظر والاباحہ باب انظر والس مطبع مجتہبی دہلی ۲/۲۳۲) رد المحتار میں ہے:

قوله وختان کذا جزم به فی الهدایة والخانیة وغیرہما لان الختان سنة للرجال من جملة الفطرة لا يمكن تركها ۲۔ اہ ملخصاً۔

مصنف کا ارشاد ہے وختان اسی طرح ہدایہ اور خانیہ اور دیگر کتب میں اس پر یقین ظاہر کیا گیا ہے کیونکہ مردوں کے لئے ختنہ سنت ہے ورنہ فطری کاموں میں سے ہے کہ جس کا چھوڑنا مناسب نہیں اہ ملخصاً (ت)

(۲) رد المحتار کتاب الحظر والاباحہ باب انظر والس دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/۲۳۷

رد المحتار میں ہے:

وقیل فی ختان الکبیر اذا امکنہ ان یختن نفسه فعل والا لم یفعل الا ان یمکنہ النکاح او شراء الحجاریة و الظاہر فی الکبیر انہ یختن ۳۔

بڑی عمر کے آدمی کے ختنے کے بارے میں کہا گیا ہے کہ اگر وہ خود اپنا ختنہ کر سکے تو خود کرے ورنہ کیا ہی نہ جائے، ہاں اگر اس کے لئے نکاح کرنا یا بوٹڈی خریدنا ممکن ہو تو ان سے ختنہ کرائے اور ظاہر یہ ہے کہ بالغ آدمی کا بھی ختنہ کیا جائے۔ (ت)

(۳) رد المحتار کتاب الحظر والاباحہ باب الاستبراء مطبع مجتہبی دہلی ۲/۲۳۳

رد المحتار میں ہے:

الختان مطلق یشمل ختان الکبیر و الصغیر ہکذا اطلاقہ فی النہایة کہا قدمناہ واقرة الشراح واضاہر ترجیحه ولذا عبر ہنا عن التفصیل بقیل ۴۔

ختنہ کرنا مطلق بلا قید ذکر کیا ہے لہذا یہ بڑے اور چھوٹے دونوں کو شامل جیسا کہ ہم نے پہلے بیان کیا ہے ورنہ شارحین نے اس کو برقرار رکھا ہے لہذا بظاہر یہی رائج ہے اس لئے یہاں لفظ قیل سے تفصیل کی تعبیر فرمائی گئی۔ (ت)

(۴) رد المحتار کتاب الحظر والاباحہ باب الاستبراء دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/۲۳۵

ہندیہ میں ہے:

ذکر الکفرخی فی الجامع الصغیر ویختنہ الحماحی کذا فی الفتاوی العتابیة ۱۔

امام کفرخی نے جامع صغیر میں فرمایا کہ بالغ آدمی کا ختنہ حمام والا کرے۔ یونہی فتاوی عتابیہ میں مذکور ہے۔ (ت)

(۱) فتاوی ہندیہ کتاب الکرامیۃ الباب التاسع نورانی کتب خانہ پشاور ۵/۳۵۷

خاصہ میں ہے:

انہی طرح قصہ کھولے تو مراد سے قصہ کرنا جائز ہے۔ (35)

مسئلہ ۳۱: اجنبیہ عورت نے خوب مونے کپڑے پہن رکھے ہیں کہ بدن کی رنگت وغیرہ نظر نہیں آتی۔ صورت میں اس کی طرف نظر کرنا جائز ہے، کہ یہاں عورت کو دیکھنا نہیں ہوا بلکہ ان پاؤں کو دیکھنا ہوا یہ اس وقت ہے کہ اس کے کپڑے چست نہ ہوں اور اگر چست کپڑے پہنے ہو کہ جسم کا نقشہ کھینچ جاتا ہو مثلاً چست پانچوہ میں ہنڈی اور ران کی پوری ویسٹ نظر آتی ہے تو اس صورت میں نظر کرنا جائز ہے۔

اسی طرح بعض عورتیں بہت باریک کپڑے پہنتی ہیں مثلاً آپ رداں (ایک قسم کا نہایت اچھا اور باریک کپڑا) یا جالی یا باریک ململ ہی کا ڈوپٹا (دوپٹا) جس سے سر کے بال یا بالوں کی سیاہی یا گردن یا کان نظر آتے ہیں اور بعض باریک تنزیب یا جالی کے کرتے پہنتی ہیں کہ پیٹ اور پیٹھ بالکل نظر آتی ہے اس حالت میں نظر کرنا حرام ہے اور ایسے موقع پر ان کو اس قسم کے کپڑے پہننا بھی ناجائز۔ (36)

مسئلہ ۳۲: خصی یعنی جس کے انٹیمین نکال لیے گئے ہوں یا محبوب جس کا عضو تناسل کاٹ لیا گیا جب ان کی عمر پندرہ سال کی ہو تو ان کے لیے بھی اجنبیہ کی طرف نظر کرنا ناجائز ہے۔ یہی حکم زخموں (یعنی بھجڑے) کا بھی ہے۔ (37)

مسئلہ ۳۳: جس عضو کی طرف نظر کرنا ناجائز ہے اگر وہ بدن سے جدا ہو جائے تو اب بھی اس کی طرف نظر کرنا ناجائز ہی رہے گا، مثلاً پیڑو کے بال (یعنی ناف کے نیچے کے بال) کہ ان کو جدا کرنے کے بعد بھی دوسرا شخص دیکھ نہیں سکتا۔ عورت کے سر کے بال یا اس کے پاؤں یا کلائی کی ہڈی کہ اس کے مرنے کے بعد بھی اجنبی شخص ان کو نہیں دیکھ سکتا۔ عورت کے پاؤں کے ناخن کہ ان کو بھی اجنبی شخص نہیں دیکھ سکتا اور ہاتھ کے ناخن کو دیکھ سکتا ہے۔ (38) اکثر دیکھا گیا ہے کہ غسل خانہ یا پاخانہ میں مونے زیر ناف مونڈ کر بعض لوگ چھوڑ دیتے ہیں ایسا کرنا درست نہیں بلکہ ان کو ایسی

الشیخ الضعیف اذا سلم ولا يطيق الختم ان قال اهل البصر لا يطيق يترك السخ والله تعالى اعلم۔

(۲۔ غلامہ الفتاویٰ الفصل الثانی مکتبہ حبیبہ کوئٹہ ۳۴۰/۲)

بہت بڑھا شخص اگر اسلام قبول کرے اور بوجہ ضعف و کمزوری ختنہ نہ کر سکے یا نہ کر سکے تو چند اہل بصیرت حضرات سے رائے لی جائے اگر وہ کہیں کہ واقعی یہ شخص ختنہ کی طاقت نہیں رکھتا تو اسے بلا ختنہ ہی رہنے دیا جائے اور اس کا ختنہ نہ کیا جائے الخ۔ اور اللہ تعالیٰ سب کچھ جانتا ہے۔ (ت) (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۲، ص ۵۹۳، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱۳۴۰، ۱۳۴۱، ۱۳۴۲، ۱۳۴۳، ۱۳۴۴، ۱۳۴۵، ۱۳۴۶، ۱۳۴۷، ۱۳۴۸، ۱۳۴۹، ۱۳۵۰، ۱۳۵۱، ۱۳۵۲، ۱۳۵۳، ۱۳۵۴، ۱۳۵۵، ۱۳۵۶، ۱۳۵۷، ۱۳۵۸، ۱۳۵۹، ۱۳۶۰، ۱۳۶۱، ۱۳۶۲، ۱۳۶۳، ۱۳۶۴، ۱۳۶۵، ۱۳۶۶، ۱۳۶۷، ۱۳۶۸، ۱۳۶۹، ۱۳۷۰، ۱۳۷۱، ۱۳۷۲، ۱۳۷۳، ۱۳۷۴، ۱۳۷۵، ۱۳۷۶، ۱۳۷۷، ۱۳۷۸، ۱۳۷۹، ۱۳۸۰، ۱۳۸۱، ۱۳۸۲، ۱۳۸۳، ۱۳۸۴، ۱۳۸۵، ۱۳۸۶، ۱۳۸۷، ۱۳۸۸، ۱۳۸۹، ۱۳۹۰، ۱۳۹۱، ۱۳۹۲، ۱۳۹۳، ۱۳۹۴، ۱۳۹۵، ۱۳۹۶، ۱۳۹۷، ۱۳۹۸، ۱۳۹۹، ۱۴۰۰، ۱۴۰۱، ۱۴۰۲، ۱۴۰۳، ۱۴۰۴، ۱۴۰۵، ۱۴۰۶، ۱۴۰۷، ۱۴۰۸، ۱۴۰۹، ۱۴۱۰، ۱۴۱۱، ۱۴۱۲، ۱۴۱۳، ۱۴۱۴، ۱۴۱۵، ۱۴۱۶، ۱۴۱۷، ۱۴۱۸، ۱۴۱۹، ۱۴۲۰، ۱۴۲۱، ۱۴۲۲، ۱۴۲۳، ۱۴۲۴، ۱۴۲۵، ۱۴۲۶، ۱۴۲۷، ۱۴۲۸، ۱۴۲۹، ۱۴۳۰، ۱۴۳۱، ۱۴۳۲، ۱۴۳۳، ۱۴۳۴، ۱۴۳۵، ۱۴۳۶، ۱۴۳۷، ۱۴۳۸، ۱۴۳۹، ۱۴۴۰، ۱۴۴۱، ۱۴۴۲، ۱۴۴۳، ۱۴۴۴، ۱۴۴۵، ۱۴۴۶، ۱۴۴۷، ۱۴۴۸، ۱۴۴۹، ۱۴۵۰، ۱۴۵۱، ۱۴۵۲، ۱۴۵۳، ۱۴۵۴، ۱۴۵۵، ۱۴۵۶، ۱۴۵۷، ۱۴۵۸، ۱۴۵۹، ۱۴۶۰، ۱۴۶۱، ۱۴۶۲، ۱۴۶۳، ۱۴۶۴، ۱۴۶۵، ۱۴۶۶، ۱۴۶۷، ۱۴۶۸، ۱۴۶۹، ۱۴۷۰، ۱۴۷۱، ۱۴۷۲، ۱۴۷۳، ۱۴۷۴، ۱۴۷۵، ۱۴۷۶، ۱۴۷۷، ۱۴۷۸، ۱۴۷۹، ۱۴۸۰، ۱۴۸۱، ۱۴۸۲، ۱۴۸۳، ۱۴۸۴، ۱۴۸۵، ۱۴۸۶، ۱۴۸۷، ۱۴۸۸، ۱۴۸۹، ۱۴۹۰، ۱۴۹۱، ۱۴۹۲، ۱۴۹۳، ۱۴۹۴، ۱۴۹۵، ۱۴۹۶، ۱۴۹۷، ۱۴۹۸، ۱۴۹۹، ۱۵۰۰، ۱۵۰۱، ۱۵۰۲، ۱۵۰۳، ۱۵۰۴، ۱۵۰۵، ۱۵۰۶، ۱۵۰۷، ۱۵۰۸، ۱۵۰۹، ۱۵۱۰، ۱۵۱۱، ۱۵۱۲، ۱۵۱۳، ۱۵۱۴، ۱۵۱۵، ۱۵۱۶، ۱۵۱۷، ۱۵۱۸، ۱۵۱۹، ۱۵۲۰، ۱۵۲۱، ۱۵۲۲، ۱۵۲۳، ۱۵۲۴، ۱۵۲۵، ۱۵۲۶، ۱۵۲۷، ۱۵۲۸، ۱۵۲۹، ۱۵۳۰، ۱۵۳۱، ۱۵۳۲، ۱۵۳۳، ۱۵۳۴، ۱۵۳۵، ۱۵۳۶، ۱۵۳۷، ۱۵۳۸، ۱۵۳۹، ۱۵۴۰، ۱۵۴۱، ۱۵۴۲، ۱۵۴۳، ۱۵۴۴، ۱۵۴۵، ۱۵۴۶، ۱۵۴۷، ۱۵۴۸، ۱۵۴۹، ۱۵۵۰، ۱۵۵۱، ۱۵۵۲، ۱۵۵۳، ۱۵۵۴، ۱۵۵۵، ۱۵۵۶، ۱۵۵۷، ۱۵۵۸، ۱۵۵۹، ۱۵۶۰، ۱۵۶۱، ۱۵۶۲، ۱۵۶۳، ۱۵۶۴، ۱۵۶۵، ۱۵۶۶، ۱۵۶۷، ۱۵۶۸، ۱۵۶۹، ۱۵۷۰، ۱۵۷۱، ۱۵۷۲، ۱۵۷۳، ۱۵۷۴، ۱۵۷۵، ۱۵۷۶، ۱۵۷۷، ۱۵۷۸، ۱۵۷۹، ۱۵۸۰، ۱۵۸۱، ۱۵۸۲، ۱۵۸۳، ۱۵۸۴، ۱۵۸۵، ۱۵۸۶، ۱۵۸۷، ۱۵۸۸، ۱۵۸۹، ۱۵۹۰، ۱۵۹۱، ۱۵۹۲، ۱۵۹۳، ۱۵۹۴، ۱۵۹۵، ۱۵۹۶، ۱۵۹۷، ۱۵۹۸، ۱۵۹۹، ۱۶۰۰، ۱۶۰۱، ۱۶۰۲، ۱۶۰۳، ۱۶۰۴، ۱۶۰۵، ۱۶۰۶، ۱۶۰۷، ۱۶۰۸، ۱۶۰۹، ۱۶۱۰، ۱۶۱۱، ۱۶۱۲، ۱۶۱۳، ۱۶۱۴، ۱۶۱۵، ۱۶۱۶، ۱۶۱۷، ۱۶۱۸، ۱۶۱۹، ۱۶۲۰، ۱۶۲۱، ۱۶۲۲، ۱۶۲۳، ۱۶۲۴، ۱۶۲۵، ۱۶۲۶، ۱۶۲۷، ۱۶۲۸، ۱۶۲۹، ۱۶۳۰، ۱۶۳۱، ۱۶۳۲، ۱۶۳۳، ۱۶۳۴، ۱۶۳۵، ۱۶۳۶، ۱۶۳۷، ۱۶۳۸، ۱۶۳۹، ۱۶۴۰، ۱۶۴۱، ۱۶۴۲، ۱۶۴۳، ۱۶۴۴، ۱۶۴۵، ۱۶۴۶، ۱۶۴۷، ۱۶۴۸، ۱۶۴۹، ۱۶۵۰، ۱۶۵۱، ۱۶۵۲، ۱۶۵۳، ۱۶۵۴، ۱۶۵۵، ۱۶۵۶، ۱۶۵۷، ۱۶۵۸، ۱۶۵۹، ۱۶۶۰، ۱۶۶۱، ۱۶۶۲، ۱۶۶۳، ۱۶۶۴، ۱۶۶۵، ۱۶۶۶، ۱۶۶۷، ۱۶۶۸، ۱۶۶۹، ۱۶۷۰، ۱۶۷۱، ۱۶۷۲، ۱۶۷۳، ۱۶۷۴، ۱۶۷۵، ۱۶۷۶، ۱۶۷۷، ۱۶۷۸، ۱۶۷۹، ۱۶۸۰، ۱۶۸۱، ۱۶۸۲، ۱۶۸۳، ۱۶۸۴، ۱۶۸۵، ۱۶۸۶، ۱۶۸۷، ۱۶۸۸، ۱۶۸۹، ۱۶۹۰، ۱۶۹۱، ۱۶۹۲، ۱۶۹۳، ۱۶۹۴، ۱۶۹۵، ۱۶۹۶، ۱۶۹۷، ۱۶۹۸، ۱۶۹۹، ۱۷۰۰، ۱۷۰۱، ۱۷۰۲، ۱۷۰۳، ۱۷۰۴، ۱۷۰۵، ۱۷۰۶، ۱۷۰۷، ۱۷۰۸، ۱۷۰۹، ۱۷۱۰، ۱۷۱۱، ۱۷۱۲، ۱۷۱۳، ۱۷۱۴، ۱۷۱۵، ۱۷۱۶، ۱۷۱۷، ۱۷۱۸، ۱۷۱۹، ۱۷۲۰، ۱۷۲۱، ۱۷۲۲، ۱۷۲۳، ۱۷۲۴، ۱۷۲۵، ۱۷۲۶، ۱۷۲۷، ۱۷۲۸، ۱۷۲۹، ۱۷۳۰، ۱۷۳۱، ۱۷۳۲، ۱۷۳۳، ۱۷۳۴، ۱۷۳۵، ۱۷۳۶، ۱۷۳۷، ۱۷۳۸، ۱۷۳۹، ۱۷۴۰، ۱۷۴۱، ۱۷۴۲، ۱۷۴۳، ۱۷۴۴، ۱۷۴۵، ۱۷۴۶، ۱۷۴۷، ۱۷۴۸، ۱۷۴۹، ۱۷۵۰، ۱۷۵۱، ۱۷۵۲، ۱۷۵۳، ۱۷۵۴، ۱۷۵۵، ۱۷۵۶، ۱۷۵۷، ۱۷۵۸، ۱۷۵۹، ۱۷۶۰، ۱۷۶۱، ۱۷۶۲، ۱۷۶۳، ۱۷۶۴، ۱۷۶۵، ۱۷۶۶، ۱۷۶۷، ۱۷۶۸، ۱۷۶۹، ۱۷۷۰، ۱۷۷۱، ۱۷۷۲، ۱۷۷۳، ۱۷۷۴، ۱۷۷۵، ۱۷۷۶، ۱۷۷۷، ۱۷۷۸، ۱۷۷۹، ۱۷۸۰، ۱۷۸۱، ۱۷۸۲، ۱۷۸۳، ۱۷۸۴، ۱۷۸۵، ۱۷۸۶، ۱۷۸۷، ۱۷۸۸، ۱۷۸۹، ۱۷۹۰، ۱۷۹۱، ۱۷۹۲، ۱۷۹۳، ۱۷۹۴، ۱۷۹۵، ۱۷۹۶، ۱۷۹۷، ۱۷۹۸، ۱۷۹۹

جگہ ڈال دیں کہ کسی کی نظر نہ پڑے یا زمین میں دفن کر دیں۔ عورتوں کو بھی لازم ہے کہ کنگھا کرنے میں یا سر دھونے میں جو بال نکلیں انھیں کہیں چھپا دیں کہ ان پر اجنبی کی نظر نہ پڑے۔

مسئلہ ۳۴: عورت کو داڑھی یا مونچھ کے بال نکل آئیں تو ان کا نوچنا جائز بلکہ مستحب ہے کہ کہیں اس کے شوہر کو اس سے نفرت نہ پیدا ہو۔ (39)

مسئلہ ۳۵: اجنبیہ عورت کے ساتھ خلوت یعنی دونوں کا ایک مکان میں تنہا ہونا حرام ہے ہاں اگر وہ بالکل بوڑھی ہے کہ شہوت کے قابل نہ ہو تو خلوت ہو سکتی ہے۔ عورت کو طلاق بائن دے دی تو اس کے ساتھ تنہا مکان میں رہنا ناجائز ہے اور اگر دوسرا مکان نہ ہو تو دونوں کے مابین پردہ لگا دیا جائے، تاکہ دونوں اپنے اپنے حصہ میں رہیں یہ اس وقت ہے کہ شوہر فاسق نہ ہو اور اگر فاسق ہو تو ضروری ہے کہ وہاں کوئی ایسی عورت بھی رہے جو شوہر کو عورت سے روکنے پر قادر ہو۔ (40)

مسئلہ ۳۶: محارم کے ساتھ خلوت جائز ہے، یعنی دونوں ایک مکان میں تنہا ہو سکتے ہیں۔ مگر رضاعی بہن اور ساس کے ساتھ تنہائی جائز نہیں جبکہ یہ جوان ہوں۔ یہی حکم عورت کی جوان لڑکی کا ہے جو دوسرے شوہر سے ہے۔ (41)



(39) ردالمحتار، کتاب المحظر والاباح، فصل فی النظر والاس، ج ۹، ص ۶۱۵.

(40) الدر المختار و رد المحتار، کتاب المحظر والاباح، فصل فی النظر والاس، ج ۹، ص ۶۰۷.

(41) المرجع السابق، ص ۶۰۸.

مکان میں جانے کے لیے اجازت لینا

اللہ عزوجل فرماتا ہے:

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَى أَهْلِهَا ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّى يُؤْذَنَ لَكُمْ وَإِنْ قِيلَ لَكُمْ ارجِعُوا فَارجِعُوا هُوَ أَزْكَى لَكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٢٩﴾) (1)

اے ایمان والو! اپنے گھروں کے سوا دوسرے گھروں میں داخل نہ ہو جب تک اجازت نہ لے لو اور گھر والوں پر سلام نہ کرو، یہ تمہارے لیے بہتر ہے تاکہ تم نصیحت پکڑو اور اگر ان گھروں میں کسی کو نہ پاؤ تو اندر نہ جاؤ جب تک تمہیں اجازت نہ ملے اور اگر تم سے کہا جائے کہ لوٹ جاؤ تو واپس چلے آؤ، یہ تمہارے لیے زیادہ پاکیزہ ہے، اور جو کچھ تم

(1) پ ۱۸، النور: ۲۷-۲۹۔

ان آیات کے تحت مفسر شبیر مولانا سید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ

مسئلہ: اس آیت سے ثابت ہوا کہ غیر کے گھر میں بے اجازت داخل نہ ہو اور اجازت لینے کا طریقہ یہ بھی ہے کہ بلند آواز سے سبحان اللہ یا الحمد للہ یا اللہ اکبر کہے یا کھارے جس سے مکان والوں کو معلوم ہو کہ کوئی آنا چاہتا ہے یا یہ کہے کہ کیا مجھے اندر آنے کی اجازت ہے؟ غیر کے گھر سے وہ گھر مراد ہے جس میں غیر سکونت رکھتا ہو خواہ اس کا مالک ہو یا نہ ہو۔

مسئلہ: غیر کے گھر جانے والے کی اگر صاحب مکان سے پہلے ہی ملاقات ہو جائے تو اول سلام کرے پھر اجازت چاہے اور اگر وہ مکان کے اندر ہو تو سلام کے ساتھ اجازت چاہے اس طرح کہ کہے السلام علیکم کیا مجھے اندر آنے کی اجازت ہے؟ حدیث شریف میں ہے کہ سلام کو کلام پر مقدم کرو۔ حضرت عبداللہ کی قراءت بھی اسی پر دلالت کرتی ہے ان کی قراءت یوں ہے حَتَّى تَسَلِّمُوا عَلَى أَهْلِهَا وَتَسْتَأْذِنُوا اور یہ بھی کہا گیا ہے کہ پہلے اجازت چاہے پھر سلام کرے۔ (مدارک، کشاف، احمدی)

مسئلہ: اگر دروازے کے سامنے کھڑے ہونے میں بے پردگی کا اندیشہ ہو تو دائیں یا بائیں جانب کھڑے ہو کر اجازت طلب کرے۔

مسئلہ: حدیث شریف میں ہے اگر گھر میں ماں ہو جب بھی اجازت طلب کرے۔ (موطا امام مالک)

مسئلہ: کسی کا دروازہ بہت زور سے کھٹ کھٹان اور شدید آواز سے چیخا خاص کر علماء اور بزرگوں کے دروازوں پر ایسا کرنا، ان کو زور سے

پکارنا مکروہ و خلاف ادب ہے۔

کرتے ہو اللہ (عزوجل) اس کو جانتا ہے، اس میں تم پر کوئی گناہ نہیں کہ ایسے گھروں کے اندر چلے جاؤ جن میں کوئی رہتا نہیں ہے اور ان میں تمہارا سامان ہے اور اللہ (عزوجل) جانتا ہے جو تم ظاہر کرتے ہو اور جس کو چھپاتے ہو۔ اور فرماتا ہے:

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنَكُمْ الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ مِنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُمْ مِنَ الظَّهِيرَةِ وَمِنْ بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ طَوَافُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٨﴾) (2)

اے ایمان والو! چاہیے کہ تم سے اذن لیں وہ جن کے تم مالک ہو (غلام) اور وہ جو تم میں ابھی جوانی کو نہ پہنچے تین وقت نماز صبح سے پہلے اور جب تم اپنے کپڑے اتار رکھتے ہو دوپہر کو اور نماز عشا کے بعد یہ تین وقت تمہاری شرم کے ہیں، ان تین کے علاوہ کچھ گناہ نہیں تم پر، نہ ان پر، تمہارے پاس آمد و رفت رکھتے ہیں بعض بعض کے پاس۔ یوہیں اللہ (عزوجل) تمہارے لیے آیتیں بیان کرتا ہے اور اللہ (عزوجل) علم و حکمت والا ہے اور جب تم میں کے لڑکے جوانی کو پہنچ جائیں تو وہ بھی اذن مانگیں جیسے ان کے اگلوں نے اذن مانگا۔ یوہیں اللہ (عزوجل) تمہارے لیے اپنی آیتیں بیان کرتا ہے اور اللہ (عزوجل) علم و حکمت والا ہے۔



(2) پ ۱۸، النور: ۵۸-۵۹۔

اس آیت کے تحت مفسر شہیر مولانا سید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی ہے کہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے ایک انصاری غلام مدح بن عمرو کو دوپہر کے وقت حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے بنانے کے لئے بھیجا وہ غلام ویسے ہی حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مکان میں چلا گیا جب کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ بے تکلف اپنے دولت سرانے میں تشریف رکھتے تھے غلام کے اچانک چلے آنے سے آپ کے دل میں خیال ہوا کہ کاش غلاموں کو اجازت لے کر مکانوں میں داخل ہونے کا حکم ہوتا۔ اس پر یہ آیت کریمہ نازل ہوئی۔

احادیث

حدیث ۱: صحیح بخاری و مسلم میں ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے، کہ ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہمارے پاس آئے اور یہ کہا کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مجھے بلایا تھا۔ میں نے ان کے دروازہ پر جا کر تین بار سلام کیا، جب جواب نہیں ملا تو میں واپس چلا آیا۔ اب حضرت عمر (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) فرماتے ہیں کہ تم کیوں نہیں آئے؟ میں نے کہا کہ میں آیا تھا اور دروازہ پر تین بار سلام کیا جب جواب نہیں ملا تو واپس گیا اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے مجھ سے فرمایا ہے کہ جب کوئی شخص تین بار اجازت مانگے اور جواب نہ ملے تو واپس جائے۔ حضرت عمر (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) یہ فرماتے ہیں کہ گواہ لاؤ کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے ایسا فرمایا ہے۔ ابوسعید خدری (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) کہتے ہیں میں نے جا کر گواہی دی۔ (1)

(1) صحیح مسلم، کتاب الادب، باب الاستئذان، الحدیث: ۳۳۔ (۲۱۵۳)، ص ۱۸۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جب میں حضرت عمر کے دروازے پر آیا تو میں نے تھوڑی تھوڑی دیر ٹھہر کر تین بار کہا السلام علیکم یہ سلام استئذان ہے۔ اس سے معلوم ہو رہا ہے کہ داخلہ کی اجازت مانگنے کے لیے صرف سلام کرنا بھی کافی ہے اور یہ بھی کہ السلام علیکم کیا آجاؤں، چونکہ حضرت عمر مکان میں تھے جو زمانہ تھا اس لیے اجازت مانگنے کی ضرورت ہوئی اگر مردانہ میں ہوتے تو بلانا ہی کافی تھا جسے بلایا جاوے اس کو اجازت لینے کی ضرورت نہیں ہوتی جیسا کہ آگے آوے گا۔

۲۔ دروازہ چٹا نہیں آج آبنے والے اگر اجازت نہ پائیں تو دروازہ توڑ ڈالنے کی کوشش کرتے ہیں اسلامی احکام سے خبردار نہیں۔

۳۔ یہ تو میرے لوتے ہی مجھے خادم کے ذریعہ بلوا کر یہ کہا یا جب میں کسی اور موقع پر حاضر ہوا تب یہ فرمایا پہلے معنی زیادہ موزوں ہے۔

۴۔ یعنی گھر سے جواب سلام نہ ملنا آپ نے جواب دیا نہ آپ کے اہل خانہ میں سے کسی نے اس لیے میں واپس گیا۔

۵۔ گھر وال پہلے سلام پر تو پہچانے کون ہے، دوسرے سلام پر غور کرے کہ اسے اجازت دوں یا نہ دوں، تیسرے سلام پر اجازت دے یا نہ دے ان تین سلاموں میں یہ حکمت ہے۔

۶۔ اس گواہی مانگنے میں حکمت یہ تھی کہ لوگ حدیث بیان کرنے پر دلیر نہ ہو جاویں یا حدیثیں گھڑنے نہ لگیں، نہ تو یہ وجہ تھی کہ ان صحابی پر آپ کو اعتماد نہ تھا، نہ یہ کہ خبر واحد قبول نہیں کیونکہ دو شخصوں کی خبر بھی واحد ہی ہوتی ہے، حد تواتر سے کم کی خبر خبر واحد ہے۔ (مرقات) مطلب یہ ہے کہ کوئی اور صحابی ایسا پیش کرو جس نے حضور انور سے یہ فرمان سنا ہو۔

حدیث ۲: صحیح بخاری میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ساتھ میں مکان میں گیا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کو پیالے میں دودھ ملا اور فرمایا: ابو ہریرہ! اصحاب صفہ کے پاس جاؤ انھیں بلا لاؤ۔ (تاکہ ان کو دودھ دیا جائے) میں انھیں بلا لایا، وہ آئے اور اجازت طلب کی، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے اجازت دی تب وہ مکان کے اندر داخل ہوئے۔ (2)

حدیث ۳: ابو داؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کوئی شخص بلا لایا جائے اور اسی بلا نے والے کے ساتھ ہی آئے تو یہی (بلا نا) اس کے لیے اجازت ہے۔ (3) یعنی اس صورت میں اجازت حاصل کرنے کی ضرورت نہیں ہے اور ایک روایت میں ہے کہ آدمی بھیجنا ہی اجازت ہے۔ (4)

۱۔ یعنی میں نے حضرت عمر کے پاس جا کر عرض کیا کہ میں نے بھی یہ فرمان عالی حضور انور سے سنا ہے تب آپ خاموش ہو گئے، اسی وجہ سے حضرت امیر معاویہ نے فرمایا تھا کہ جو احادیث عہد فاروقی کے بعد شائع ہوئیں ہم انہیں قبول نہ کریں گے کیونکہ حضرت عمر کی سی احتیاط بعد میں نہ رہی، خلافت حیدری میں روافض و خوارج کا ظہور ہوا، روافض نے حضرت علی کے فضائل میں، خوارج نے آپ کے خلاف حدیثیں گھڑنا شروع کر دی تھیں، پھر محدثین نے جرح و تعدیل کر کے احادیث کو چھاننا اسنادیں قائم کیں، سندوں میں جرح و قدح کی، کھرے کھوٹے کو، لگ کر کے دکھا دیا رضوان اللہ علیہم اجمعین۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۰۴)

(2) صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب إذا دعی الرجل فاجعل مسأذن، الحدیث: ۶۲۴۶، ج ۴، ص ۱۷۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ غالباً یہ واقعہ حضور کے اپنے گھر شریف کا ہے، بعض شارحین نے فرمایا کہ حضرت سعد ابن عبادہ کے گھر کا واقعہ ہے کہ حضور نے ان کے گھر یہ دودھ پایا تھا۔ (مرقات)

۲۔ ان بزرگوں کو حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے خود بلایا تھا مگر چونکہ وہ حضرات دیر سے آئے تھے اس لیے داخلہ کی اجازت مانگی ورنہ اگر بلا نے والے کے ساتھ فوراً آ جاوے اور بلا نے والا زمان خانہ میں نہ ہو تو داخلہ کی اجازت حاصل کرنا ضروری نہیں یا یہ اجازت لینا مستحب تھا نہ کہ وجوہاً لہذا یہ حدیث آئندہ حدیث کے خلاف نہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۰۷)

(3) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الرجل یدعی اذ ینزل ذلک، الحدیث: ۵۱۹۰، ج ۴، ص ۴۴۷۔

(4) المرجع السابق، الحدیث: ۵۱۸۹، ج ۴، ص ۴۴۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ جب ہے جب کہ وہ شخص جلد آ جاوے اور بلا نے والا زمان خانہ میں نہ ہو لہذا یہ حدیث گزشتہ ان حدیث کے خلاف نہیں جن میں ایسے شخص کا اجازت لینا ثابت ہے۔

یہ حکم اس وقت ہے کہ فوراً آئے اور قرآن سے معلوم ہو کہ صاحب خانہ انتظار میں ہے، مکان میں پردہ ہو چکا ہے تو اجازت لی نے کی ضرورت نہیں اور اگر دیر میں آئے تو اجازت حاصل کرے، جیسا کہ اصحاب صفہ نے کیا تھا۔

حدیث ۴: ترمذی و ابوداؤد نے کلدہ بن حنبل سے روایت کی، کہتے ہیں کہ صفوان بن امیہ نے مجھے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے پاس بھیجا تھا میں بغیر سلام کیے اور بغیر اجازت اندر چلا گیا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا: باہر جاؤ اور یہ کہو **السَّلَامُ عَلَیْکُمْ ؕ اَدْخُلْ** کیا اندر آ جاؤں۔ (5)

حدیث ۵: امام مالک نے عطاء بن یسار (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) سے روایت کی، کہتے ہیں کہ ایک شخص نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے دریافت کیا کہ کیا میں اپنی ماں کے پاس جاؤں تو اس سے بھی اجازت لوں۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا: ہاں۔ انھوں نے کہا میں تو اس کے ساتھ اسی مکان میں رہتا ہی ہوں۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا: اجازت لے کر اس کے پاس جاؤ، انھوں نے کہا، میں اس کی خدمت کرتا ہوں یعنی بار بار آنا جانا ہوتا ہے۔ پھر اجازت کی کیا ضرورت ہے؟ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اجازت لے کر جاؤ، کی

۲۔ اس میں وہ قیدیں ہیں جو ابھی ذکر کی گئیں یعنی جو بلانے والے قاصد کے ساتھ آئے اسے داخلہ کی اجازت دینا ضروری نہیں قصد ہی اس کی اجازت ہے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۰۹)

(5) سنن الترمذی، کتاب الاستئذان، باب ماجاء فی التسلیم قبل الاستئذان، الحدیث: ۱۹۷۲، ج ۴، ص ۳۲۵۔

ومشکوٰۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب الاستئذان، الحدیث: ۱۷۷۱، ج ۳، ص ۱۲، ۱۳۔

حکیم ارامت کے مدنی پھول

۱۔ کلدہ ابن امیہ ماں شریکے بھائی ہیں صفوان ابن امیہ کے، صفوان قرشی ہیں، فتح مکہ کے بعد اسلام لائے، مؤلفۃ القلوب سے ہیں، ان کا باپ، امیہ بن خلف بدر کے دن دوسرے مشرکین کے ساتھ مارا گیا، یہ مکہ معظمہ میں فوت ہوئے وہاں ہی دفن ہوئے، صفوان بڑے فصیح خطیب تھے۔ (مرقات)

۲۔ جد امیہ ہرئی کے شش ماہیہ بچے کو کہتے ہیں اور جدی بکری کے شش ماہیہ بچے کو کہا جاتا ہے، خفا میں جمع ہے صغیوس کی بمعنی چھوٹی ککڑی جسے پنجابی میں گلہ کہتے ہیں حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو یہ گلے بہت پسند تھے۔

۳۔ مکہ معظمہ کے اونچے محلوں کو معالیٰ کہا جاتا ہے اور مدینہ منورہ کے بیرونی بلند حصوں کو عوالیٰ کہتے ہیں۔ اشعہ نے فرمایا کہ حضور انور مکہ معظمہ کے اعلیٰ حصہ میں تھے، مرقات نے کہا کہ مدینہ منورہ میں یہ واقعہ ہوا حضور وہاں تشریف فرما تھے۔

۴۔ یہ عمل اس لیے فرمایا تا کہ انہیں یاد رہے اور آئندہ ایسی غلطی نہ کریں۔ جو شخص ہمارے گھر میں بغیر سلام آئے سے پھر باہر بھیجو ورنہ کہو کہ دوبارہ سلام کر کے آؤ ان شاء اللہ ایک دفعہ کے عمل سے اسے سلام کی عادت پڑ جاوے گی۔

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۰۸)

تم یہ پسند کرتے ہو کہ اسے برہنہ دیکھو؟ عرض کی نہیں، فرمایا: تو اجازت حاصل کرو۔ (6)

حدیث ۶: نبیؐ نے شعب الایمان میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص اجازت طلب کرنے سے پہلے سلام نہ کرے، اسے اجازت نہ دو۔ (7)

حدیث ۷: ابو داؤد نے عبد اللہ بن بسر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں جب رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کسی کے دروازہ پر تشریف لے جاتے تو دروازہ کے سامنے نہیں کھڑے ہوتے تھے بلکہ دہنے یا بائیں ہٹ کر کھڑے ہوتے اور یہ فرماتے: **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ، السَّلَامُ عَلَيْكُمْ**۔ (8) اور اس کی وجہ یہ تھی کہ اس زمانہ میں دروازوں پر پردے نہیں ہوتے تھے۔

(6) الموطا امام مالک، کتاب الاستئذان، باب الاستئذان، الحدیث: ۱۸۲، ج ۲، ص ۳۳۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کے حالات پہلے بیان ہو چکے کہ آپ حضرت میمونہ ام المؤمنین رضی اللہ عنہا کے آزاد کردہ غلام ہیں، جلیل القدر تابعی ہیں۔ (اشعہ)

۲۔ یعنی اگر اکیس گھر میں صرف میری ماں حقیقی یا سوتیلی یا دودھ کی یا اور کوئی محرم ہو جس سے نکاح ہمیشہ کے لیے حرام ہے ماں سے مراد باقی تمام ذی رحم محرم نہیں (مرقات) تو میں بغیر اجازت گھر چلا جاؤں یا ان سے بھی داخلہ کی اجازت لوں۔

۳۔ یعنی اگر میں اپنی ماں سے علیحدہ نہ رہتا ہوں بلکہ ایک گھر میں ساتھ ہی رہتا ہوں کہیں باہر گیا پھر آیا تو کیا پھر اجازت لوں۔

۴۔ اس خدمت گزاری کی وجہ سے بار بار مجھے جانا آنا پڑتا ہے ہر بار اجازت لینے میں حرج ہوگا۔

۵۔ اس اجازت میں یہ آسانی ہے کہ صرف کھانسی دینا، پاؤں کی آہٹ کر دینا، کنڈی بجا دینا، سٹار دینا کافی ہوگا یا قاعدہ سلام کر کے اجازت لینا ضروری نہ ہوگا۔ (مرقات) کسی طرح اپنی آمد کی اطلاع کافی ہوگی۔

۶۔ سبحان اللہ! کیسی پیاری وجہ بیان ہوئی کہ چونکہ ماں کا ستر دیکھنا حرام ہے اور بے اجازت داخل ہونے میں اس کا اندیشہ ہے لہذا اطلاع کر کے آنا چاہیے، ہاں اگر گھر میں صرف بیوی ہو تو اطلاع کی ضرورت نہیں کہ بیوی سے حجاب نہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۱۱)

(7) شعب الایمان، باب فی مقاربتہ و موادۃ أهل الدین، الحدیث: ۸۸۱۶، ج ۶، ص ۴۴۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس سلام سے مراد یا سلام اجازت ہے یا سلام ملاقات یعنی جو شخص بغیر سلام اجازت داخلہ مانگے یا جو شخص جب گھر میں آئے تو سلام نہ

کرے بات شروع کر دے تو اسے آنے یا بیٹھنے کی اجازت نہ دو واپس کر دو پھر بلاؤ تاکہ وہ اب سلام کر کے آئے یا جو کوئی تمہاری دعوت میں

بغیر سلام آ جاؤ تو اسے کھانا نہ دو و لوٹا کر سلام کے ساتھ بلاؤ پھر کھلاؤ۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۱۳)

(8) منہن لکھی درد، کتاب الادب، باب کم مرۃ یسلم الرجل فی الاستئذان، الحدیث: ۵۱۸۶، ج ۴، ص ۴۴۶۔

حدیث ۸: ترمذی نے ثوبان رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ کسی شخص کو یہ حلال نہیں کہ دوسرے کے گھر میں بغیر اجازت حاصل کیے نظر کرے اور اگر نظر کر لی تو داخل ہی ہو گیا اور یہ نہ کرے کہ کسی قوم کی امامت کرے اور خاص اپنے لیے دعا کرے، ان کے لیے نہ کرے اور ایسا کیا تو ان کی خیانت کی۔ (9)

حدیث ۹: امام احمد و نسائی نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو کسی کے گھر میں بغیر اجازت لیے جھانکے اور انہوں نے اس کی آنکھ پھوڑ دی تو نہ دیت ہے نہ قصاص (10)۔ (11)

حدیث ۱۰: ترمذی نے ابو ذر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جس نے اجازت سے قبل پردہ ہٹا کر مکان کے اندر نظر کی، اس نے ایسا کام کیا جو اس کے لیے حلال نہ تھا اور اگر کسی نے اس کی آنکھ پھوڑ دی تو اس پر کچھ نہیں اور اگر کوئی شخص ایسے دروازہ پر گیا جس پر پردہ نہیں اور اس کی نظر گھر والے کی عورت پر پڑ گئی (یعنی بلا قصد) تو اس کی خطا نہیں خطا گھر والوں کی ہے۔ (12) (کہ انہوں نے دروازہ پر پردہ کیوں نہیں لٹکایا)۔



حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ سامنے اس لیے نہ کھڑے ہوتے تاکہ پردہ کے سوراخوں کو اڑ کے چھروں سے اندرونی حصہ نظر نہ آوے اور گھر والوں کی بے پردگی نہ ہو۔

۲۔ یعنی کواڑوں کے پردے نہ تھے صرف ٹاٹ پڑے رہتے تھے اب جب کہ دروازوں پر کواڑ وغیرہ ہیں تب بھی بالکل دروازے کے سامنے نہ کھڑا ہونا کہ کواڑوں کی چھڑی سے یا پردہ ہٹ جانے سے گھر والوں کی بے پردگی نہ ہو۔

۳۔ جتنی وہ حدیث مصابیح میں یہاں تھی ہم نے مناسبت کا لحاظ رکھتے ہوئے دعوت کے باب میں نقل کر دی۔

(مرآۃ السانج شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۱۰)

(9) سنن الترمذی، کتاب الصلاة، باب ما جاء فی کراہیۃ أن یخص الامام نفسه بالدعاء، الحدیث: ۳۵۷، ج ۱، ص ۷۳۔

(10) یعنی آنکھ پھوڑنے کے عوض نہ مال دیا جائے گا نہ بدلہ میں اس کی آنکھ پھوڑی جائے گی۔

(11) سنن النسائی، کتاب القسامة والقود، باب من رقتص وأخذ حقہ دون السلطان، الحدیث: ۴۸۷۰، ص ۷۸۰۔

(12) سنن الترمذی، کتاب الاستئذان... إلخ، باب ما جاء فی الاستئذان قبلہ البیت، الحدیث: ۷۱۶، ج ۴، ص ۳۶۴۔

مسائل فقہیہ

مسئلہ ۱: جب کوئی شخص دوسرے کے مکان پر جائے، تو پہلے اندر آنے کی اجازت حاصل کرے پھر جب اندر جائے تو پہلے سلام کرے، اس کے بعد بات چیت شروع کرے اور اگر جس کے پاس گیا ہے وہ باہر ہے تو اجازت کی ضرورت نہیں سلام کرے اس کے بعد کلام شروع کرے۔ (1)

مسئلہ ۲: کسی کے دروازہ پر جا کر آواز دی اس نے کہا کون؟ تو اس کے جواب میں یہ نہ کہے، کہ میں جیسا کہ بہت سے لوگ میں کہہ کر جواب دیتے ہیں اس جواب کو حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ناپسند فرمایا۔ (2) بلکہ جواب میں اپنا نام ذکر کرے کیونکہ میں کا لفظ تو ہر شخص اپنے کو کہہ سکتا ہے یہ جواب ہی کب ہوا۔

مسئلہ ۳: اگر تم نے اجازت مانگی اور صاحب خانہ نے اجازت نہ دی تو اس سے ناراض نہ ہو، اپنے دل میں

(1) الفتاویٰ الخلیفۃ، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی التہنئۃ... إلخ، ج ۲، ص ۳۷۷۔

جب گھر میں داخل ہوں تو گھر والوں کو سلام کیا کریں اس سے گھر میں برکت ہوتی ہے۔ اور اگر خالی گھر میں داخل ہوں تو اَلْسَلَامُ عَدِیْکَ اَیُّهَا النَّبِیُّ کہیں یعنی اے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم! آپ پر سلام ہو۔

حضرت مدنی قاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ فرماتے ہیں: ہر مومن کے گھر میں سرکار مدینہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی روح مبارک تشریف فرما رہتی ہے۔ (شرح شفاء، الباب الرابع، ج ۲، ص ۱۱۸)

سلام میں پہل کرنے والا اللہ عزوجل کا مقرب ہے۔ حضرت ابوامامہ صدیق بن عجلان الباہلی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ حضور تاجدار مدینہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: لوگوں میں اللہ تعالیٰ کے زیادہ قریب وہی شخص ہے جو انہیں پہلے سلام کرے۔

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی فضل من بدء بالسلام، الحدیث ۵۱۹۷، ج ۴، ص ۴۴۹)

حضرت ابوامامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، عرض کیا گیا، یا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم! دو آدمی آپس میں ملیں تو کون پہلے سلام کرے؟ فرمایا: جو ان میں اللہ تعالیٰ کے زیادہ قریب ہو۔

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان، باب فی فضل الذی یدء بالسلام، الحدیث ۲۸۰۳، ج ۲، ص ۳۱۸)

سلام میں پہل کرنے والا تکبر سے بری ہے۔ حضرت عبداللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے روایت کرتے ہیں، فرمایا: پہلے سلام کہنے والا تکبر سے بری ہے۔ (شعب الایمان، باب فی مقاربتہ وموادۃ اہل الدین، الحدیث ۸۷۸۶، ج ۶، ص ۴۳۳)

(2) انظر: سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب الرجل مسأذناً بالحق، الحدیث: ۵۱۸۷، ج ۴، ص ۴۴۶۔

کہ دُور ت (یعنی ناراضگی) نہ لاؤ، خوشی خوشی وہاں سے واپس آؤ۔ ہو سکتا ہے اس کو اس وقت تم سے ملنے کی فرصت نہ ہو کسی ضروری کام میں مشغول ہو۔

مسئلہ ۴: اگر ایسے مکان میں جانا ہو کہ اس میں کوئی نہ ہو تو یہ کہو اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَ عَلَی عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِیْنَ فرشتے اس سلام کا جواب دیں گے۔ (3) یا اس طرح کہے: اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ اَیُّهَا النَّبِیُّ کیونکہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی روح مبارک مسلمانوں کے گھروں میں تشریف فرما ہے۔ (4)

مسئلہ ۵: آنے والے نے سلام نہیں کیا اور بات چیت شروع کر دی تو اسے اختیار ہے، کہ اسکی بات کا جواب نہ دے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جس نے سلام سے قبل کلام کیا، اس کی بات کا جواب نہ دو۔ (5)

مسئلہ ۶: آنے کے وقت بھی سلام کرے اور جاتے وقت بھی یہاں تک کہ دونوں کے درمیان میں اگر دیوار یا درخت حائل ہو جائے، جب بھی سلام کرے۔ (6)



(3) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی المبیح، ج ۹، ص ۶۸۲۔

(4) نظر: شرح الشفاء للقاری، ابواب الرابع، فصل فی المواطن الیٰتی تستحب فیہا الصلاۃ والسلام، ج ۲، ص ۱۱۸۔

(5) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی المبیح، ج ۹، ص ۶۸۲۔

(6) المرجع السابق۔

سلام کا بیان

اللہ تعالیٰ فرماتا ہے:

(وَإِذَا حُيِّيتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ﴿٨١﴾) (1)

جب تم کو کوئی کسی لفظ سے سلام کرے تو تم اس سے بہتر لفظ جواب میں کہو یا وہی کہہ دو، بے شک اللہ (عزوجل) ہر چیز پر حساب لی نے والا ہے۔

اور فرماتا ہے:

(فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبَرَكَةٌ طَيِّبَةٌ) (2)

(1) پ ۵، النساء: ۸۶۔

اس آیت کے تحت مفسر شہیر مولانا سید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ

مسائل: سلام، سلام کرنا سنت ہے اور جواب دینا فرض اور جواب میں افضل ہے کہ سلام کرنے والے کے سلام پر کچھ بڑھائے مثلاً پہلا شخص السلام علیکم کہے تو دوسرا شخص وعلیکم السلام ورحمۃ اللہ کہے اور اگر پہلے نے ورحمۃ اللہ بھی کہا تھا تو یہ ویرکاتہ اور بڑھائے پس اس سے زیادہ سلام و جواب میں اور کوئی اضافہ نہیں ہے کافر، گمراہ، فاسق اور استنجا کرتے مسلمانوں کو سلام نہ کریں۔ جو شخص خطبہ یا تلاوت قرآن یا حدیث یا مذاکرہ علم یا اذان یا تکبیر میں مشغول ہو اس حال میں ان کو سلام نہ کیا جائے اور اگر کوئی سلام کرے تو ان پر جواب دینا لازم نہیں اور جو شخص خطر، بج، چور، تاش، گنجنہ وغیرہ کوئی ناجائز کھیل کھیل رہا ہو یا گانے بجانے میں مشغول ہو یا پاخانہ یا غسل خانہ میں ہو یا بے عذر برہنہ ہو اس کو سلام نہ کیا جائے مسئلہ: آدمی جب اپنے گھر میں داخل ہو تو بی بی کو سلام کرے ہندوستان میں یہ بڑی غلط رسم ہے کہ زن و شو کے تھے گہرے تعلقات ہوتے ہوئے بھی ایک دوسرے کو سلام سے محروم کرتے ہیں باوجود یہ کہ سلام جس کو کیا جاتا ہے اس کے لئے سلامتی کی دعا ہے۔

مسئلہ: بہتر سواری والا کتر سواری والے کو اور کتر سواری والا پیدل چلنے والے کو اور پیدل بیٹھے ہوئے کو اور چھوٹے بڑے کو درتھوڑے زیادہ کو سلام کریں۔

(2) پ ۱۸، النور: ۶۱۔

اس آیت کے تحت مفسر شہیر مولانا سید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ

شانِ نژاد: سعید بن مسیب رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی ہے کہ صحابہ کرامؓ مئی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ جہاد کو جاتے تو اپنے مکانوں کی چابیوں، ناپینا اور پیاروں اور اپا بھجوں کو دے جاتے جو ان اعذار کے باعث جہاد میں نہ جاسکتے اور انھیں اجازت دیتے کہ



ان کے مکانوں سے کھانے کی چیزیں لے کر کھائیں مگر وہ لوگ اس کو گوارا نہ کرتے بایں خیال کہ شاید یہ ان کو دل سے پسند نہ ہو اس پر یہ آیت نازل ہوئی اور انہیں اس کی اجازت دی گئی اور ایک قول یہ ہے کہ اندھے اپانچ اور بیمار لوگ تندرستوں کے ساتھ کھانے سے بچتے کہیں کسی کو نفرت نہ ہو اس آیت میں انہیں اجازت دی گئی اور ایک قول یہ ہے کہ جب جب اندھے، نابینا، اپانچ کسی مسلمان کے پاس جاتے اور اس کے پاس ان کے کھلانے کے لئے کچھ نہ ہوتا تو وہ انہیں کسی رشتہ دار کے یہاں کھلانے کے لئے لے جاتا یہ بات ان لوگوں کو گوارا نہ ہوتی۔ اس پر یہ آیت نازل ہوئی اور انہیں بتایا گیا کہ اس میں کوئی حرج نہیں ہے۔

(مزید یہ کہ)

کہ امواد کا گھر اپنا ہی گھر ہے۔ حدیث شریف میں ہے کہ سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تو اور تیرا مال تیرے باپ کا ہے، اسی طرح شوہر کے لئے بیوی کا اور بیوی کے لئے شوہر کا گھر بھی اپنا ہی گھر ہے۔

(مزید یہ کہ)

معنی یہ ہیں کہ ان سب لوگوں کے گھر کھانا جائز ہے خواہ وہ موجود ہوں یا نہ ہوں جب کہ معلوم ہو کہ وہ اس سے راضی ہیں، سلف کا تو یہ حال تھا کہ آدمی اپنے دوست کے گھر اس کی طبیعت میں پہنچتا تو اس کی باندی سے اس کا کیسہ طلب کرنا اور جو چاہتا اس میں سے لے لیتا جب وہ دوست گھر آتا اور باندی اس کو خبر دیتی تو اس خوشی میں وہ باندی کو آزاد کر دیتا مگر اس زمانہ میں یہ فیاضی کہاں لہذا بے اجازت کھانا نہ چاہیے۔ (مدارک و جلالین)

(مزید یہ کہ)

شان نزول: قبیلہ بنی لیث بن عمرو کے لوگ تنہا بغیر مہمان کے کھانا نہ کھاتے تھے کبھی کبھی مہمان نہ ملتا تو صبح سے شام تک کھائے پیئے رہتے۔ ان کے حق میں یہ آیت نازل ہوئی۔

(مزید یہ کہ)

مسئلہ: جب آدمی اپنے گھر میں داخل ہو تو اپنے اہل کو سلام کرے اور ان لوگوں کو جو مکان میں ہوں بشرطیکہ ان کے دین میں خلل نہ ہو۔

(خازن)

مسئلہ: اگر خالی مکان میں داخل ہو جہاں کوئی نہیں ہے تو کہے السَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ السَّلَامُ عَلَى أَهْلِ الْبَيْتِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى وَبَرَكَاتُهُ حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے فرمایا کہ مکان سے یہاں مسجدیں مراد ہیں۔ غشی نے کہا کہ جب مسجد میں کوئی نہ ہو تو کہے السَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (شفا شریف) ملا علی قاری نے شرح شفا میں لکھا کہ خالی مکان میں سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پر سلام عرض کرنے کا وجہ یہ ہے کہ اہل اسلام کے گھروں میں روح اقدس جلوہ فرما ہوتی ہے۔

احادیث

جب تم گھروں میں جاؤ تو اپنوں کو سلام کرو، اللہ (عزوجل) کی طرف سے تحیت ہے مبارک پاکیزہ۔

حدیث ۱: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ نے آدم علیہ السلام کو ان کی صورت پر پیدا فرمایا، ان کا قد ساٹھ ہاتھ کا تھا، جب پیدا کیا یہ فرمایا کہ ان فرشتوں کے پاس جاؤ اور سلام کرو اور سنو کہ وہ تمہیں کیا جواب دیتے ہیں جو کچھ وہ تحیت کریں وہی تمہاری اور تمہاری ذریت کی تحیت ہے۔ حضرت آدم علیہ السلام نے ان کے پاس جا کر السَّلَامُ عَلَیْکُمْ کہا، انھوں نے جواب میں کہا: السَّلَامُ عَلَیْکَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا کہ جواب میں ملائکہ نے وَرَحْمَةُ اللّٰهِ زیادہ کیا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: جو شخص جنت میں جائے گا وہ آدم علیہ السلام کی صورت پر ہوگا اور ساٹھ ہاتھ لمبا ہوگا۔ آدم علیہ السلام کے بعد لوگوں کی خلقت کم ہوتی گئی یہاں تک کہ اب۔ (1) (بہت چھوٹے قد کا

(1) صحیح مسلم، کتاب الجنۃ...، باب یدخل الجنۃ اقوام...، الخ، الحدیث: ۲۸۔ (۲۸۴۱) ص ۱۵۲۲۔

صحیح البخاری، کتاب الاستحذان، باب بدء السلام، الحدیث: ۶۲۲، ج ۴، ص ۱۶۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس جملہ کی چار شرحیں ہیں۔ صورت بمعنی ہیئت و شکل ہے یا بمعنی صفت اور ضمیر کا مرجع یا آدم علیہ السلام ہیں یا اللہ تعالیٰ لہذا اس جملہ کے چار معنی ہیں۔ اللہ تعالیٰ نے آدم علیہ السلام کو انکی شکل و ہیئت پر پیدا فرمایا کہ جس شکل میں انہیں رہنا تھا انہیں اول ہی سے وہ شکل دی دوسروں کی طرح نہ کیا کہ پہلے بچہ پھر جوان پھر بڑھا وغیرہ یا اللہ نے حضرت آدم کو ان کی صفت پر پیدا کیا کہ وہ اول ہی سے عالم عارف، سمیع و بصیر وغیرہ تھے دوسروں کی طرح نہیں کہ وہ جاہل پیدا ہوتے ہیں پھر بعد میں ہوش عقل وغیرہ حاصل کرتے ہیں یا اللہ نے حضرت آدم کو اپنی پسندیدہ صورت پر پیدا فرمایا، خود فرماتا ہے: "لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ" اس لیے کوئی شخص دوزخ میں شکل انسانی سے نہ جاوے گا کہ یہ شکل خدا کو پیاری ہے یا اللہ نے حضرت آدم کو اپنی صفات پر پیدا فرمایا کہ انہیں اپنا علم، اپنا تصرف، اپنی سمع، اپنی قدرت وغیرہ بخشی۔ (از اشعہ، مرقات)

۲۔ گز سے مراد شرعی گز ہے یعنی ایک ہاتھ (ڈیڑھ فٹ) یعنی آپ ساٹھ ہاتھ کے ہی پیدا ہوئے دوسرے انسانوں کی طرح نہیں کہ پہلے بہت چھوٹے پیدا ہوتے ہیں پھر بڑھتے رہتے ہیں کیونکہ آپ کی پیدائش ماں باپ سے نہیں تھی لہذا چھوٹا پیدا کرنے کی کیا ضرورت ہے۔

۳۔ جوں یا تو مصدر ہے تو اس سے پہلے ذوق پوشیدہ ہے یا جمع ہے جالس کی جیسے قاعدہ کی جمع ہے قعود اور راکع و سجد کی جمع ہے۔

انسان ہوتا ہے)۔

۴۔ رکوع و سجود یعنی وہ جماعت ملائکہ جو بیٹھی ہوئی ہے انہیں سلام کرو، اعلیٰ سے ادنیٰ کو سلام کرایا، مسجد سے ساجدین کو تحیۃ کراہی غالباً یہ واقعہ مسجد آدم کے بعد کا ہے۔

۵۔ اس ارشاد فرمانے سے یہ لازم نہیں آتا کہ حضرت آدم علیہ السلام کو سلام جواب کا علم نہ تھا بلکہ اسے سنت ملائکہ قرار دینے کے لیے کہ تا کہ اولاد آدم کو یہ معلوم ہو جائے کہ سلام کرنا سنت آدم علیہ السلام ہے اور اعلیٰ جواب دینا سنت ملائکہ رب تعالیٰ انہیں تمام چیزوں کا علم پہلے ہی دے چکا تھا۔

۶۔ معلوم ہوا کہ حضرت آدم علیہ السلام کو سلام کے الفاظ سے سلام کرنے کا طریقہ پہلے ہی سے معلوم تھا اس لیے رب تعالیٰ نے آپ کو سلام کے الفاظ نہ بتائے سب کچھ پہلے ہی بتا دیا سمجھا دیا گیا ہے۔

۷۔ اس سے دو مسئلہ معلوم ہوئے: ایک یہ کہ جواب سلام میں السلام علیکم کہنا بھی جائز اگرچہ علیکم السلام کہنا افضل ہے۔ دوسرے یہ کہ جواب میں کچھ زیادہ لفظ کہنا بہتر ہے جیسا کہ آئندہ آدے گا۔

۸۔ یعنی جنت میں صرف انسان ہی جائیں گے جانور یا جنات نہ جائیں گے اور تمام جنتی انسان آدم علیہ السلام کی طرح حسین و جمیل تندرست ہوں گے کوئی بد شکل یا بیمار نہ ہوگا اور سب کا قد ساٹھ ہاتھ ہوگا کوئی اس سے کم یا زیادہ نہ ہوگا، دنیا میں خواہ پست قد تھا یا دراز قد، بچہ تھا یا بوڑھا، دوزخی کفار بہت موٹے ہوں گے ان کی ایک ڈاڑھ پہاڑ کی برابر ہوں گی۔ (اشعہ)

۹۔ یعنی ان کی اولاد برابر قد و قامت میں گھٹتی رہی حتیٰ کہ اب ساڑھے تین فٹ کے لگ بھگ رہ گئی مگر یہ کی صرف دنیا میں ہے آخرت میں جنت میں پوری کردی جاوے گی۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۳)

سلام کے بارے میں احادیث مبارکہ:

حضرت سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ تم جنت میں ہرگز داخل نہیں ہو سکتے جب تک ایمان نہ لے آؤ اور تم (کامل) مؤمن نہیں ہو سکتے جب تک آپس میں محبت نہ کرنے لگو، کیا میں تمہیں ایسی چیز نہ بتاؤں کہ جب تم، سے کرو تو آپس میں محبت کرنے لگو؟ پھر ارشاد فرمایا، آپس میں سلام کو عام کرو۔

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب ان افشاء السلام سبب لمصوبہ، رقم ۵۳، ص ۷۷)

حضرت سیدنا ابن زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ اللہ عزوجل کے محبوب، دانائے غیب، منزہ عن الغیوب صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ تم میں پھیلی امتوں کی بیماریاں بغض اور حسد پھیل جائیں گی، بغض تو کاٹنے والا اُستروہ ہے جو بالوں کو نہیں بلکہ دین کو کاٹ دیتا ہے، اس ذات پاک کی قسم جس کے قبضہ قدرت میں میری جان ہے! جب تک تم ایمان نہ لے آؤ جنت میں داخل نہیں ہو سکتے، اور جب تک آپس میں محبت نہ کرو (کامل) مؤمن نہیں ہو سکتے کیا میں تمہیں ایسا عمل نہ بتاؤں جو محبت پیدا کرے؟ (پھر فرمایا) آپس میں سلام کو عام

کرو۔ (مسند احمد، مسند الزبیر بن العوام، رقم ۱۳۳۰، ج ۱، ص ۵۲)

حدیث ۲: صحیح بخاری و مسلم میں عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے، کہ ایک شخص نے رسول اللہ

حضرت سیدنا براء بن عازب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ نور کے پیکر، تمام نبیوں کے نذوق، دو جہاں کے تاجور، سچاں محمد مصطفیٰ اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ سلام کو عام کرو سلامتی پالو گے۔

(الاحسان بترتيب ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب افشاء السلام... الخ، رقم ۴۹، ج ۱، ص ۳۵۷)

حضرت سیدنا عبد اللہ بن عمرو رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ شہنشاہ خوش بصال، پیکرِ حسن و جمال، دافعِ رنج و تدار، صاحبِ جود و نوال، رسولِ بے مثال، بی بی آمنہ کے لالِ مٹلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ رحمٰن عزوجل کی عبادت کرو اور سلام کو عام کرو اور کھانا کھاؤ جنت میں داخل ہو جاؤ گے۔ (الاحسان بترتيب ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب افشاء السلام، رقم ۴۸۹، ج ۱، ص ۳۵۶)

حضرت سیدنا عبد اللہ بن سلام رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ میں نے خاتمِ انبیاء علیہ السلام، شفیع المذنبین، امین الغریبین، سرانج السالکین، محبوب رب العالمین، جناب صادق دامنِ مٹلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو فرماتے ہوئے سنا، اے لوگو! سلام کو عام کرو اور کھانا کھاؤ اور رات کو جب لوگ سو رہے ہوں تو نماز پڑھو سلامتی کے ساتھ جنت میں داخل ہو جاؤ گے۔

(الترغیب والترہیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی افشاء السلام، رقم ۶، ج ۳، ص ۲۸۵)

حضرت سیدنا ابو شریح رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ میں نے عرض کیا، یا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم مجھے ایسی چیز کے بارے میں خبر دیجئے جو میرے لئے جنت واجب کر دے۔ تاجدارِ رسالت، شہنشاہِ نبوت، خزانِ جود و سخاوت، پیکرِ عظمت و شرافت، محبوبِ ربِّ العزت، محسنِ انبیاء صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، اچھی گفتگو کرنا، سلام کو عام کرنا اور کھانا کھانا۔

(الترغیب والترہیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی افشاء السلام، رقم ۸، ج ۳، ص ۲۸۵)

حضرت سیدنا عمران بن حصین رضی اللہ تعالیٰ عنہما فرماتے ہیں کہ ایک شخص نے نور کے پیکر، تمام نبیوں کے نذوق، دو جہاں کے تاجور، سلطانِ محمد بر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی بارگاہ میں حاضر ہو کر عرض کیا اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ۔ آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے سلام کا جواب ارشاد فرمایا۔ پھر وہ شخص بیٹھ گیا تو نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا دس نیکیاں ہیں۔ پھر ایک دوسرا شخص حاضر ہوا اور عرض کیا اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ۔ آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے اسے بھی سلام کا جواب دیا۔ پھر وہ بیٹھ گیا تو نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، بیس نیکیاں ہیں۔ پھر ایک اور شخص نے حاضر ہو کر عرض کیا، اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُہ۔ پھر وہ بیٹھ گیا تو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، تیس نیکیاں ہیں۔ (ابوداؤد، کتاب الادب، باب کیف السلام، رقم ۵۱۹۵، ج ۳، ص ۴۴۹)

حضرت سیدنا سہل بن حنیف رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ سرکارِ والاخبار، ہم بے کسوں کے مددگار، شفیع روز شمار، دو عالم کے مالک و مختار، حبیبِ پروردگار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، جو اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ کہتا ہے اس کے لئے دس نیکیاں لکھی جاتی ہیں اور جو اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ کہتا ہے اس کے لئے بیس نیکیاں لکھی جاتی ہیں اور جو اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُہ کہتا ہے اس کے لئے تیس نیکیاں لکھی جاتی ہیں۔ (المعجم الکبیر، مسند سہل بن حنیف، رقم ۵۵۶۳، ج ۶، ص ۷۶)

صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے دریافت کیا کہ اسلام کی کون سی چیز سب سے اچھی ہے۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ آقائے مظلوم، سرور معصوم، حسن اخلاق کے پیکر، نبیوں کے تاجور، محبوبِ ربِّ اکبر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم ایک جگہ تشریف فرماتے تھے کہ ایک شخص وہاں سے گزرا تو اس نے اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ کہا۔ آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، دس نیکیاں۔ پھر ایک دوسرا شخص گزرا تو اس نے عرض کیا اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ۔ فرمایا، بیس نیکیاں۔ پھر ایک اور شخص گزرا تو اس نے عرض کیا اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُہُ۔ فرمایا، تیس نیکیاں۔ پھر ایک شخص مجلس سے اٹھا اور سلام کیے بغیر چلا گیا تو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ تمہارا یہ رفیق کتنی جلدی بھول گیا، جب تم میں سے کوئی شخص کسی مجلس میں آئے تو سلام کرے پھر اگر بیٹھنا چاہے تو بیٹھ جائے اور اگر مجلس سے اٹھے تو سلام کرے کیونکہ پہلے سلام کرنا آخر میں سلام کرنے سے زیادہ افضل نہیں۔ (الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب انشاء السلام، رقم ۴۹۳، ج ۱، ص ۳۵۷)

سلام میں پہل کرنے کا ثواب

حضرت سیدنا ابوالنعمانہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ نبی مکرم، نور مجسم، رسول اکرم، شہنشاہ بنی آدم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، بے شک لوگوں میں سے اللہ عزوجل کے زیادہ قریب وہ شخص ہے جو سلام کرنے میں پہل کرے۔

(ابوداؤد، کتاب الادب، باب فی فضل من بداہ بالسلام، رقم ۵۱۹، ج ۲، ص ۴۳۹)

ایک روایت میں ہے کہ عرض کیا گیا، یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم! جب دو شخص ملاقات کریں تو پہلے کون سلام کرے؟ فرمایا، جو ان میں سے اللہ عزوجل کے زیادہ قریب ہو۔ (جامع الترمذی، باب ماجاء فی فضل الذی بداہ بالسلام، رقم ۲۷۰۳، ج ۲، ص ۳۱۹)

حضرت سیدنا معاذ بن قرظہ فرماتے ہیں کہ میرے والد محترم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مجھ سے فرمایا کہ اے میرے بیٹے! جب تم کسی ایسی مجلس میں ہو جسے تم اچھا سمجھتے ہو پھر کسی حاجت کی بناء پر جلدی اٹھو تو سلام علیکم کہا کرو، اس طرح تم بھی اس بھلائی میں شریک ہو جاؤ گے جو اہل مجلس کو نصیب ہوگی۔

پچھلے صفحات میں یہ روایت گزر چکی ہے کہ جب تم میں سے کوئی کسی مجلس میں حاضر ہو تو اسے چاہیے کہ سلام کرے پھر اگر وہ اس مجلس میں بیٹھنا چاہے تو بیٹھ جائے اور اگر جانا چاہے تو سلام کر کے جائے کیونکہ پہلے 563 سلام کرنا آخر میں سلام کرنے سے زیادہ افضل نہیں۔

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب انشاء السلام، رقم ۴۹۳، ج ۱، ص ۳۵۷)

گھر میں داخل ہو کر سلام کرنے کا ثواب

اس بارے میں احادیث مبارکہ:

حضرت سیدنا انس رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ نور کے پیکر، تمام نبیوں کے سرور، دو جہاں کے تاجور، سلطانِ بحر و بر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ اے بیٹے! جب تم گھر میں داخل ہوا کرو تو اپنے گھر والوں کو سلام کیا کرو تا کہ تم پر اور تمہارے گھر والوں پر برکت نازل ہو۔

(ترمذی، کتاب الاستئذان، باب ماجاء فی التسلیم اذا دخل بیتہ، رقم ۲۷۰۷، ج ۲، ص ۳۲۰) ←

وسلم) نے فرمایا: کھانا کھلاؤ اور جس کو پہچانتے ہو اور نہیں پہچانتے سب کو سلام کرو۔ (2)

حدیث ۳: نسائی نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ایک مومن کے دوسرے مومن پر چھ ۶ حق ہیں۔ (۱) جب وہ بیمار ہو تو عیادت کرے اور (۲) جب وہ مرجائے تو اس کے جنازے میں حاضر ہو اور (۳) جب وہ بلائے تو اجابت کرے، یعنی حاضر ہو اور (۴) جب اس سے ملے تو سلام کرے اور (۵) جب چھینکے تو جواب دے اور (۶) حاضر و غائب اس کی خیر خواہی کرے۔ (3)

حضرت سیدنا ابوامامہ باہلی رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ تاجدار رسالت، شہنشاہ نبوت، خزانہ جود و سخاوت، پیکر عظمت و شرفیت، محبوب رب العزت، محسن انسانیت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ تین شخص ایسے ہیں جن میں سے ہر ایک اللہ عزوجل کے ذمہ کرم پر ہے، پہلا وہ شخص جو اللہ عزوجل کی راہ میں جہاد کے لئے نکلے وہ مرنے تک اللہ عزوجل کے ذمہ کرم پر ہے کہ وہ اسے جنت میں داخل فرمائے یا اجر و ثواب کے ساتھ واپس لوٹائے، دوسرا وہ شخص جو مسجد کی طرف جائے وہ مرنے تک اللہ عزوجل کے ذمہ کرم پر ہے کہ وہ اسے جنت میں داخل فرمائے یا اجر و ثواب کے ساتھ واپس لوٹائے، اور تیسرا وہ شخص جو اپنے گھر میں سلام کرتے ہوئے داخل ہو وہ اللہ عزوجل کے ذمہ کرم پر ہے۔

ایک روایت میں ہے کہ تین اشخاص ایسے ہیں جن میں سے ہر ایک اللہ عزوجل کے ذمہ کرم پر ہے اگر زندہ رہیں تو انہیں رزق دیا جائے اور ان کی کفایت کی جائے اور اگر مرجائیں تو جنت میں داخل ہوں، ایک وہ شخص جو اپنے گھر میں سلام کر کے داخل ہو وہ اللہ عزوجل کے ذمہ کرم پر ہے۔۔۔۔۔ الخ۔ (الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، باب فیما یقول اذا خرج... الخ، رقم ۹، ج ۲، ص ۳۰۶)

حضرت سیدنا سلمان فارسی رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ حضور پاک، صاحب نولاک، سیاح افلاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا، جو اس بات کو پسند کرتا ہے کہ کھانا کھاتے وقت، لیٹے وقت اور رات گزارتے وقت شیطان اس کے قریب نہ آئے تو اسے چاہیے کہ جب گھر میں داخل ہو تو سلام کر لیا کرے اور کھانا کھاتے وقت بسم اللہ الرحمن الرحیم پڑھ لیا کرے۔

(المعجم الکبیر، مسند سلمان فارسی، رقم ۶۱۰۲، ج ۶، ص ۲۳۰ بغیر قلیں)

(2) صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب اطعام الطعام من الاسلام، الحدیث: ۱۲، ج ۱، ص ۱۶.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۲۔ یعنی سلام صرف اسلامی رشتہ سے ہو کاروباری دنیاوی تعلقات سے نہ ہو۔ خیال رہے کہ حضور کے جوابات سائل کے حال کے مطابق ہوتے تھے اسی لیے اس سوال کے جواب مختلف دیئے۔ کسی سے فرمایا کہ بہترین عمل نماز ہے، کسی سے فرمایا جہاد ہے یہاں فرمایا بہترین عمل کھانا کھانا سب کو سلام کرنا یعنی تیرے لیے یہ دو کام بہترین۔ خیال رہے کہ تقری سلام کرنا، سلام کہلوانا، سلام لکھنا لکھوانا، سلام کہل کر بھیجنا سب کو شامل ہے۔ من عرفت کا تعلق صرف سلام سے ہے کھانا کھلانے سے نہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۷)

(3) سنن النسائی، کتاب الجنائز، باب النھی عن سب الاموات، الحدیث: ۱۹۳۵، ص ۳۲۸.

حدیث ۴: ترمذی و دارمی نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: مسلم کے مسلم پر چھ حقوق ہیں، معروف کے ساتھ (۱) جب اس سے ملے تو سلام کرے اور (۲) جب وہ بلائے اجابت کرے اور (۳) جب چھینکے یہ جواب دے اور (۴) جب بیمار ہو عیادت کرے اور (۵) جب وہ مر جائے اس کے جنازے کے ساتھ جائے اور (۶) جو چیز اپنے لیے پسند کرے، اس کے لیے پسند کرے۔ (4)

حدیث ۵: صحیح مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جنت میں تم نہیں جاؤ گے، جب تک ایمان نہ لاؤ اور تم مومن نہیں ہو گے جب تک آپس میں محبت نہ کرو۔ کیا تمہیں ایسی چیز نہ بتاؤں کہ جب تم اسے کرو تو آپس میں محبت کرنے لگو گے، وہ یہ ہے کہ آپس میں سلام کو پھیلاؤ۔ (5)

حدیث ۶: امام احمد و ترمذی و ابو داؤد، ابو امامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کرتے ہیں، کہ رسول اللہ صلی اللہ

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ عیادت بنا ہے عود سے بمعنی لوٹنا رجوع کرنا، چونکہ بیمار کی مزاج پرسی بار بار کی جاتی ہے اسے عیادت کہتے ہیں۔

۳۔ تاکہ اس کی نماز جنازہ پڑھو، اسے دفن کرو۔ بعض شارحین نے مات کے معنی کیے۔ جب وہ مرنے لگے یعنی اس کے نزاع کے وقت وہاں موجود ہو مگر پہلے معنی زیادہ مناسب ہیں۔ (مرقات) آج کل امیروں کے جنازوں پر بڑا ہجوم ہوتا ہے غریب کی میت کو کوئی پوچھتا نہیں رب توفیق خیر دے۔

۴۔ دعوت سے مراد کھانے کی دعوت اس کا قبول کرنا سنت ہے بشرطیکہ دعوت، ناجائز نہ ہو جیسے میت کے تیجے چالیسویں کی رسی برادری کی دعوتیں کہ ان کا کھانا کھانا دونوں ممنوع ہیں۔ چھینک کا جواب جب دیا جاوے جب کہ وہ چھینکنے والا الحمد للہ کہے تو سنے والا کہے یہ حمک اللہ پھر چھینکنے والا کہے یہ یدیکہ اللہ ویصلح بالکم تھمت کے لغوی معنی ہیں ثبات دور کرنا۔

۵۔ پس پشت خیر خواہی کرنا کمال ہے روبرو خیر خواہی کی باتیں کر دینا آسان ہے بلکہ بسا اوقات خوشامد ہوتی ہے۔

۶۔ کتاب صمدی میں صرف بخاری، مسلم کی احادیث جمع کی گئی ہیں اور جامع اصول میں صحاح ستہ کی روایت جمع کی گئی، اس عبارت کا مقصود صاحب مصابیح پر اعتراض کرنا ہے کہ وہ پہلی فصل میں ایسی حدیث لائے جو مسلم، بخاری میں نہیں مگر ادباً کہا کہ میں نے وہاں یہ حدیث نہ پائی اپنی تلاش کی کوتاہی بیان کی۔

روایت ہے حضرت عمر و ابن شریک سے اسے اور وہ اپنے والد سے روایت فرماتے ہیں مجھ پر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم گزرے جب کہ میں اس طرح بیٹھا تھا کہ میں نے اپنا بایاں ہاتھ اپنے پیٹھ کے پیچھے رکھا ہوا تھا اور میں نے اپنے ہاتھ کی سیرین پر ٹیک لگائی ہوئی تھی ۲۔ تو فرمایا تم لوگوں کی بیٹھک بیٹھتے ہو جن پر غضب کیا گیا ۳۔ (ابو داؤد) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۷۷)

(4) سنن، ترمذی، کتاب الادب، باب ما جاء فی تسمیت العاقل، الحدیث: ۲۷۴۵، ج ۴، ص ۳۳۸۔

(5) صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان انہ لا یدخل الجنة الا المؤمنون... إلخ، الحدیث: ۹۳۔ (۵۴)، ص ۷۷۔

تعلیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص پہلے سلام کرے وہ رحمت الہی کا زیادہ مستحق ہے۔ (6)

حدیث ۷: بیہقی نے شعب الایمان میں عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص پہلے سلام کرتا ہے، وہ تکبر سے بری ہے۔ (7)

حدیث ۸: ابوداؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کوئی شخص اپنے بھائی سے ملے تو اسے سلام کرے پھر ان دونوں کے درمیان درخت یا دیوار یا پتھر حائل ہو جائے اور پھر ملاقات ہو تو پھر سلام کرے۔ (8)

حدیث ۹: ترمذی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: بیٹے

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ مشکوٰۃ شریف کے بعض نسخوں میں لاؤ منون ہے نون کے ساتھ، جن نسخوں میں لاؤ منوا ہے وہاں ان کا گرانا محالست کی وجہ سے ہے کہ چونکہ حقیقی تو منوا میں نون نہ تھا تو یہاں بھی نہ لائے، مرقات نے فرمایا کہ عربی میں کبھی نونی بمعنی نہیں ہوتا ہے کبھی برعکس۔

۲۔ یعنی کمال ایمان مسلمانوں کی آپس کی محبت سے نصیب ہوتا ہے، آپس کی عداوتیں بہت سے گناہ بلکہ کبھی کفر کا موجب ہو جاتی ہیں۔
۳۔ سلام پھیلانے کے وہ ہی معنی ہیں جو ابھی ذکر ہوئے کہ ہر مسلمان کو سلام کرے جان پہچان والا ہو یا انجان۔ تجربہ سے بھی ثابت ہے کہ مسلمانوں کے دلوں کی عداوت مٹانے محبت پیدا کرنے کے لیے سلام مصافحہ ایک اکسیر ہے حضور کا فرمان بالکل ٹھیک ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۴۶۸)

(6) سنن ابی داؤد، کتاب السلام، باب فی فضل من بدأ بالسلام، الحدیث: ۵۱۹۷، ج ۴، ص ۴۴۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جب دو مسلمان راستہ میں گزرتے ہوئے ملیں اور ان میں سے ہر ایک کو سلام کرنے کا حق ہو تو جو سلام کی ابتداء کرے وہ رحمت الہی سے بہت ہی قریب ہوگا لہذا یہ فرمان عالی ان فرمانوں کے خلاف نہیں کہ آنے والا بیٹھے ہوؤں کو اور تھوڑے لوگ بہت کو، چھوٹا بڑے کو، سوار پیدل کو سلام کرے۔ حضرت عمر فاروق فرماتے ہیں کہ تین چیزیں محبت پیدا کر دیتی ہیں: سلام میں ابتداء کرنا، اپنے مسلمان بھائی کو اپنے لقب سے پکارنا، جب وہ آئے اسے مجلس میں جگہ دے دینا۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۴۸۳)

(7) شعب الایمان، باب فی مقاربتہ وموادۃ أهل الدین، الحدیث: ۸۷۸۶، ج ۶، ص ۴۳۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی جو شخص مسلمانوں کو سلام کر لیا کرے وہ ان شاء اللہ متکبر نہ ہوگا اس کے دل میں عجز و نیاز ہوگا، یہ عمل مجرب ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۰۳)

(8) سنن ابی داؤد، کتاب السلام، باب فی الرجل یقارن الرجل... الحدیث: ۵۲۰۰، ج ۴، ص ۴۵۰۔

جب گھر والوں کے پاس جاؤ تو انہیں سلام کرو، تم پر تمہارے گھر والوں پر اس کی برکت ہوگی۔ (9)

حدیث ۱۰: ترمذی نے جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ سلام بات چیت کرنے سے پہلے ہے۔ (10)

حدیث ۱۱: ترمذی نے جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: سلام کو کلام سے پہلے ہونا چاہیے اور کسی کو کھانے کے لیے نہ بلاؤ، جب تک وہ سلام نہ کر لے۔ (11)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ بھائی سے مراد اسامی بھائی ہے خواہ اپنا عزیز ہو یا اجنبی۔ بھائی فرما کر اشارۃً فرمایا کہ اجنبی عورت کو سلام نہ کرے۔

۲۔ یعنی ملاقات کا سلام غائب ہونے کے بعد ملنے پر ہوگا غائب ہونا اگرچہ معمولی ہی ہو ذرا سی آڑ درمیان میں آگئی ہے غائب ہونا پارہ میو اب ملنا ملاقات ہے سلام کرو، بلکہ حکمی غائب ہونے کے بعد بھی سلام سنت ہے اس لیے نماز ختم ہونے پر سلام کیا جاتا ہے اس سلام میں نمازی ایک دوسرے کی نیت کریں کیونکہ نمازی بحالت نماز ایک دوسرے سے حکماً غائب تھے اب عالم بالا کی سیر کر کے آرہے ہیں لہذا سلام کرتے ہیں۔ بعد نماز فجر بعض لوگ مصافحہ کرتے ہیں اس کی وجہ بھی یہ ہی ہے کہ مصافحہ بوقت ملاقات ہوتا ہے اور یہ بھی وقت ملاقات ہے۔ خیب رہے کہ یہاں وہ حالات مراد ہیں جن میں سلام ممنوع نہ ہو لہذا جو پیشاب پاخانہ یا جماع میں مشغول ہو یا سو رہا ہو، اونگھ رہا ہو یا نماز یا اذان میں مشغول ہو یا غسل خانہ میں ہو، کھانا کھا رہا ہو، لقمہ منہ میں ہو یا تلاوت قرآن کر رہا ہو یا دینی درس دے رہا ہو یا سن رہا ہو، اسے سلام نہ کرے، اگر کرے گا تو اس کا جواب دینا لازم نہ ہوگا۔ (مرقات) یوں ہی جمعہ کے دن خطبہ کے وقت سلام ممنوع ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۴۸۷)

(9) سنن اترمدی، کتاب الاستئذان... الخ، باب ماجاء فی التسلیم اذا دخل بیتہ، الحدیث: ۲۷۰۷، ج ۴، ص ۳۲۰.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ گھر میں اپنے ماں باپ یا بیوی بچے ہوں بہر حال سلام کر کے داخل ہو اس سے گھر میں اتفاق اور روزی میں بڑی برکت ہوتی ہے۔ بہت ہی مجرب ہے، فقیر اس کا عامل ہے اور اس کی بہت برکتیں دیکھتا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۴۸۹)

(10) المرجع السابق، باب ماجاء فی السلام قبل الکلام، الحدیث: ۲۷۰۸، ج ۴، ص ۳۲۱.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ سلام تین قسم کے ہیں: سلام اذن یہ گھر میں داخل ہونے سے پہلے ہے اجازت داخلہ حاصل کرنے کے لیے، سلام تحیۃ یہ گھر میں داخل ہونے اور کلام کرنے سے پہلے ہے، سلام وداع یہ گھر سے رخصت ہوتے وقت۔ یہاں سلام تحیۃ مراد ہے یہ کلام سے پہلے چاہئے تاکہ تحیت باقی رہے جیسے تحیۃ المسجد کے نفل کہ وہ بیٹھنے سے پہلے پڑھے جاویں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۴۹۰)

(11) سنن اترمدی، کتاب الاستئذان... الخ، باب فی السلام قبل الکلام، الحدیث: ۲۷۰۸، ج ۴، ص ۳۲۱.

حدیث ۱۲: ابن النجار نے حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: سوال سے پہلے سلام ہے، جو شخص سلام سے پہلے سوال کرے، اسے جواب نہ دو۔ (12)

حدیث ۱۳: ترمذی و ابوداؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جب کسی مجلس تک کوئی پہنچے تو سلام کرے، پھر اگر وہاں بیٹھنا ہو تو بیٹھ جائے پھر جب وہاں سے اٹھے سلام کرے، کیونکہ پہلی مرتبہ کا سلام پچھلی مرتبہ کے سلام سے زیادہ بہتر نہیں ہے۔ (13) یعنی جیسے وہ سنت ہے، یہ بھی سنت ہے۔

حدیث ۱۴: امام مالک و بیہقی نے شعب الایمان میں طفیل بن ابی بن کعب سے روایت کی، کہ یہ صبح کو ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے پاس جاتے تو وہ ان کو اپنے ساتھ بازار لے جاتے۔ وہ گھٹیا چیزوں کے بیچنے والے اور کسی بیچنے والے اور مسکین یا کسی کے سامنے سے گزرتے سب کو سلام کرتے۔ طفیل کہتے ہیں کہ ایک دن میں عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے پاس آیا، انھوں نے بازار چلنے کو کہا، میں نے کہا، آپ بازار جا کر کیا کریں گے نہ تو آپ وہاں کھڑے ہوتے ہیں، نہ سودے کے متعلق کچھ دریافت کرتے ہیں، نہ کسی چیز کا نرخ چکاتے ہیں اور نہ بازار کی مجلسوں میں بیٹھتے ہیں؟ یہیں بیٹھے باتیں کیجیے یعنی حدیثیں سنائیے۔ انھوں نے فرمایا: ہم سلام کرنے کے لیے بازار جاتے ہیں کہ جو بے گناہ، اسے سلام کریں گے۔ (14)

(12) کنز العمال، کتاب النعمیۃ، رقم: ۲۵۲۸۷، ج ۹، ص ۵۲۔

(13) سنن الترمذی، کتاب الاستئذان... إلخ، باب فی التسلیم عند القیام... إلخ، الحدیث: ۱۵۷۱، ج ۲، ص ۳۲۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ معلوم ہوا کہ آنے والا سلام کرے بیٹھے ہوؤں کو۔

۲۔ یعنی اگر وہاں بیٹھنا نہ بھی ہو صرف گزر جانا ہو جب بھی سلام کرے اور اگر بیٹھنا ہو تب بھی سلام کرے۔

۳۔ معلوم ہوا کہ راہ گیر یعنی گزرنے والا صرف ایک سلام کرے اور جو مجلس میں کچھ دیر ٹھہرے وہ دو سلام کرے ایک آنے کا دوسرا جانے کا۔

۴۔ یعنی سلام لقا اور سلام وداع دونوں سنت ہونے میں برابر ہیں ایک کو دوسرے پر کوئی ترجیح نہیں لہذا یہ دونوں سلام سنت ہیں اور ان کے

جواب فرض۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۹۷)

(14) المنوطا لما، م مالک، کتاب السلام، باب جامع السلام، الحدیث: ۱۸۳۳، ج ۲، ص ۳۳۳-۳۳۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ طفیل تابعی ہیں کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے زمانہ شریف میں پیدا ہوئے مگر آپ کی زیارت نہ کر سکے، آپ کی کنیت ←

حدیث ۱۵: امام احمد و بیہقی نے شعب الایمان میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ ایک دن نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں ایک شخص حاضر ہوا اور یہ عرض کی کہ فلاں شخص کے میرے باغ میں کچھ پھل ہیں، ان کی وجہ سے مجھے تکلیف ہے۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے آدمی بھیج کر اسے بلایا اور یہ فرمایا کہ اپنے پھلوں کو بیچ ڈالو۔ اُس نے کہا، نہیں بیچوں گا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: ہبہ کر دو۔ اس نے کہا، نہیں۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: اس کو جنت کے پھل کے عوض بیچ دو۔ اس نے کہا، نہیں۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: تجھ سے بڑھ کر بخیل میں نے نہیں دیکھا، مگر وہ شخص جو سلام کرنے میں بخل کرتا ہے۔ (15)

ابو الحسن ہے، انصاری ہیں۔

۲۔ سقاطین کے فتح کے شد سے بنا ہے سقط سے، سقط معمولی چیزوں کو کہتے ہیں یعنی گہری بڑی چیزیں۔ سقاط وہ شخص جو معمولی چیزیں فروخت کرتا ہو جسے اردو میں کہتے ہیں چھابڑہ فروش اور صاحب بیعت اعلیٰ چیزوں کا بیوپاری کہلاتا ہے۔

۳۔ یعنی آپ ہر تاجر غیر تاجر، امیر و فقیر، واقف ناداقف سب کو سلام کرتے تھے اور کچھ خرید و فروخت نہیں کرتے تھے۔

۴۔ یعنی یہاں بیٹھ کر دینی باتیں کریں، کتاب و سنت، اللہ رسول کا ذکر کریں بازار جاتے آتے بات کرنے کا موقع نہیں ملتا۔

۵۔ لہذا ابوبطن کے معنی ہوئے پیٹ والے جیسے ابو ہریرہ بلیوں والے، ابو بکر اولیت والے، ابوبطن بڑے پیٹ والے۔

۶۔ یعنی ہمارا بازار جانا بھی عبادت ہے کہ ہم وہاں عملی تبلیغ کے لیے جاتے ہیں، سلام کی اشاعت کرنا لوگوں کو سلام کرنے کی عادت

ڈالنا۔ معصوم ہوا کہ لوگوں کو سنت کا عادی بنانا بھی بہترین عبادت ہے، علماء اگر لوگوں کے پاس جا کر نہیں تبلیغ کریں تو بہت ہی اچھا ہے، مگر

بد تبلیغ کرنا اور لوگوں کے گھر جا کر تبلیغ کرنا دونوں ہی سنت ہیں۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۰۱)

(15) مسند امام احمد بن حنبل، مسند جابر بن عبد اللہ، الحدیث: ۱۳۵۲۴، ج ۵، ص ۷۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس طرح کہ میرا باغ اس کے باغ سے متصل ہے ایک مشترک دیوار بیچ میں ہے، دیوار کی اس طرف اس کی کھجور کا درخت ہے اس

درخت کی ایک شاخ دیوار کی اس جانب میرے باغ میں ہے۔ حائط وہ باغ کہلاتا ہے جو دیواروں سے گھرا ہو، عرب کے کثر باغ ایسے ہی

ہوتے ہیں۔

۲۔ کیونکہ یہ شخص اس شاخ کی وجہ سے دیوار پر چڑھتا ہے اور اگر اس شاخ کے پھل میری طرف گر جاویں تو انہیں لینے کے لیے میرے باغ

میں آتا ہے۔ ان حرکتوں سے مجھے اور میرے بچوں کو تکلیف ہوتی ہے، عرب میں باغ والے کا مکان بھی باغ میں ہوتا ہے جہاں اس کے بچے

بچے رہتے ہیں، اس پڑوسی کی اس آمد و رفت سے اسے یقیناً دکھ پہنچتا تھا۔

۳۔ یعنی اس شاخ یا اس درخت کو ہمارے ہاتھ کچھ پیسوں کی عوض فروخت کر دو تا کہ ہم وہ شاخ یا وہ درخت کٹوا دیں تاکہ اس سے

حدیث ۱۶: بیہقی نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ فرمایا: جماعت کہیں سے گزری اور اس میں سے ایک نے سلام کر لیا یہ کافی ہے اور جو لوگ بیٹھے ہیں، ان میں سے ایک نے جواب دے دیا یہ کافی ہے۔ (16) یعنی

فحس کی تکلیف دور ہو، چونکہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم سب مسلمانوں کے ولی ہیں اس لیے فرمایا یعنی ہمارے ہاتھ فروخت کر دو۔

۴۔ اس سے دو مسئلہ معلوم ہوئے: ایک یہ کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا حکم ماننا ہر مسلمان پر فرض ہے کہ نہ ماننے والا یا قاسق ہو گا یا کافر مگر حضور کے مشورے کا ماننا فرض نہیں نہ قبول کرنے کا حق ہے، یہاں فرمانا مشورہ تھا حکم نہ تھا۔ دوسرے یہ کہ حاکم بادشاہ بھی کسی کا مال بغیر اس کی مرضی کے فروخت نہیں کر سکتا بیع میں مالک کی رضا ضروری ہے، حضور انور نے اس سے فرمایا فروخت کر دے خود فروخت نہ فرما، یا رب فرماتا ہے: "إِنَّا لَا نَسْأَلُكَ تَجَرُّؤَ عَيْنٍ خَافِضٍ مُنْكَمُ"۔ اور ایک سائل کا کبل و پیالہ نیلام فرما دینا یہ حضور کی ولایت عامہ کی بنا پر تھا جیسے، ملک اپنے غلام کا مال یا باپ اپنے چھوٹے بچے کا مال فروخت کر سکتا ہے۔ غرض کہ حضور کے دو عمل دو حیثیت سے ہے۔ بی اہم کے ہاں حضور کی دعوت تھی ایک شخص کو ساتھ لے گئے تو مالک سے اجازت لی، حضرت طلحہ کے ہاں سارے خندق والوں کو مہمان بنا کر لے گئے، وہاں فتویٰ یہاں اپنی ملکیت کا اظہار صلی اللہ علیہ وسلم۔

۵۔ بغیر دنیاوی عوض کے دیدے یہ بہہ در حقیقت اس باغ والے کے لیے ہوتا، حب لی فرمانا اس وجہ سے ہے جو ابھی عرض کی گئی یا حب لی کے معنی یہ ہیں کہ میری خاطر اس باغ والے کو بہہ کر دے تو یہ سفارش ہے نہ کہ حکم شرعی۔ (مرقات)

۶۔ معلوم ہوتا ہے کہ یہ شخص مسلمان تھا۔ مطلب یہ ہے کہ تو اسے سفارش سے بطور صدقہ دیدے میں تجھے اسکی عوض جنت کا باغ عطا کرتا ہوں۔ حضور جنت کے مالک ہیں وہاں کی کوئی چیز کسی کو کسی کی عوض دے سکتے ہیں۔

۷۔ شاید یہ شخص کوئی بدوی یعنی جنگلی شخص تھا جسے ان چیزوں کی قدر نہ تھی نہ آداب مجلس سے واقف تھا ورنہ جنت کی عوض درخت کی شاخ کا بک جانا اچھا سودا تھا۔

۸۔ یعنی تجھ سے بڑھ کر بخیل وہ ہے جو مسلمان بھائی کو بلا وجہ سلام نہ کرے مفت کا ثواب کھودے یا وہ ہے جو مجھ پر سلام نہ بھیجے، دوسری توجیہ زیادہ قوی ہے۔ (مرقات) اس کی تائید اس حدیث سے ہے کہ بخیل وہ جو میرا ذکر سننے اور مجھ پر سلام نہ بھیجے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۰۲)

(16) شعب الایمان، باب فی مقاربتہ وموادۃ اہل الدین، فصل فی سلام الواحد... إلخ، الحدیث: ۸۹۲۲، ج ۶، ص ۲۶۶

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی اسلام میں سلام کرنا سنت علی الکفایہ ہے کہ اگر جماعت میں سے ایک بھی سلام کرے تو سب کی سنت د ہو جائے گی اور سامنے والوں پر جواب سلام دینا فرض کفایہ ہے کہ اگر اس جماعت میں سے ایک نے بھی جواب دے دیا تو سب کی طرف سے فرض د ہو گیا۔ خیال رہے کہ فرض علی الکفایہ تو بہت ہیں جیسے نماز جنازہ اور سلام کا جواب، بعض صورتوں میں جہاد، عام دین بننا وغیرہ مگر سنت علی الکفایہ صرف دو ہیں: ایک تو سلام، دوسرے چھینک کا جواب۔ کھاتے وقت بسم اللہ پڑھنا ہمارے ہاں سنت علی العین ہے کہ ہر شخص

سب پر جواب دینا ضروری نہیں۔

حدیث ۱۷: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ سوار پیدل کو سلام کرے اور چلنے والا بیٹھے ہوئے کو سلام کرے اور تھوڑے آدمی زیادہ آدمیوں کو سلام کریں۔ (17) یعنی ایک طرف زیادہ ہوں اور دوسری طرف کم تو سلام وہ لوگ کریں جو کم ہیں۔ بخاری کی دوسری روایت انھیں سے یہ ہے کہ چھوٹا بڑے کو سلام کرے اور گزرنے والا بیٹھے ہوئے کو اور تھوڑے زیادہ کو۔ (18)

حدیث ۱۸: صحیح بخاری و مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بچوں کے سامنے سے گزرے اور بچوں کو سلام کیا۔ (19)

بسم اللہ پڑھ کر کھائے اور شوافع کے ہاں سنت علی الکفایہ، بہر حال احناف کے نزدیک سنت علی الکفایہ صرف یہ دو چیزیں ہی ہیں۔
(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۸۵)

(17) صحیح بخاری، کتاب الاستئذان، باب یسلم الراکب علی الماشی، الحدیث: ۶۲۳۲، ج ۳، ص ۱۶۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جب سوار اور پیدل مسلمان ملیں تو پیدل کو سوار سلام کرے کیونکہ سوار پیدل سے اعلیٰ حالت میں ہے اور سلام میں اظہار عجز و نیاز ہے اس لیے وہ اسی اظہار نیاز کرے جو بظاہر افضل ہے مگر یہ افضلیت کا ذکر ہے اس کے برعکس بھی جائز ہے۔

۲۔ یعنی جب کوئی شخص کسی بیٹھے ہوئے شخص کے پاس یا مجمع میں آوے یا ان پر سے گزرے تو وہ مجمع والے اس کو سلام نہ کریں بلکہ یہ آنے والا سلام کرے کہ ملاقات یہ کر رہا ہے اس بیٹھے سے کر رہا ہے اور سلام ملاقات کرنے والے کے لیے ہے۔

۳۔ جب دو طرفہ مسلمان آ رہے ہوں اور دونوں یکساں حالت میں ہوں کہ یا دونوں سوار ہوں یا دونوں پیدل ہوں تو قانون یہ ہے کہ تھوڑے آدمی بہت سوں کو سلام کریں تاکہ چھوٹی جماعت بڑی جماعت کا احترام کرے ممکن ہے کہ اس بڑی جماعت میں اللہ واسے زیادہ ہوں بڑی جماعت کا بڑا احترام ہے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۶۹)

(18) المرجع السابق، باب تسلیم التلیل علی الثثیر، الحدیث: ۶۲۳۱، ج ۳، ص ۱۶۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی جب دو طرفہ مسلمان آ رہے ہوں ایک ان میں کم عمر ہو دوسرا بڑی عمر والا تو سنت یہ ہے کہ چھوٹا بڑی عمر والے کو سلام کرے تاکہ بڑے کا احترام ظاہر ہو، چھوٹی عمر والا بیٹھا ہو اور بڑی عمر والا اس پر گزرے تو اب گزرنے والا ہی سلام کرے لہذا حدیث کا مطلب بالکل ظاہر ہے۔

۲۔ کیونکہ تھوڑے (تلیل) چھوٹے (صغیر) کے حکم میں ہیں لہذا یہ ہی سلام کریں۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۷۰)

(19) المرجع السابق، باب التسلیم علی الصبیان، الحدیث: ۶۲۳۷، ج ۳، ص ۱۷۰۔

حدیث ۱۹: صحیح مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

یہود و نصاریٰ کو ابتداء سلام نہ کرو اور جب تم ان سے راستہ میں ملو تو ان کو تنگ راستہ کی طرف مضطر کرو۔ (20)

حدیث ۲۰: صحیح بخاری و مسلم میں اسامہ بن زید رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

ایک مجلس پر گزرے، جس میں مسلمان اور مشرکین بت پرست اور یہود سب ہی تھے، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے سلام کیا۔ (21) یعنی مسلمانوں کی نیت سے۔

حدیث ۲۱: صحیح بخاری و مسلم میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

نے فرمایا: جب یہود تم کو سلام کرتے ہیں تو یہ کہتے ہیں السام علیک تو تم اس کے جواب میں وعلیک کہو یعنی وعلیک السلام نہ کہو۔ (22)

(20) صحیح مسلم، کتاب السلام، باب النہی عن ابتداء اهل الکتاب بالسلام... إلخ، الحدیث: ۱۳۔ (۲۱۶۷) ج ۲، ص ۱۹۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ سارے کفار کا یہی حکم ہے ذی ہوں یا حربی کہ ان کو مسلمان بلا ضرورت سلام نہ کرے کہ سلام میں اظہار احترام ہے اور کفار کا احترام درست نہیں، مرتدین بد مذہبوں کا حکم بھی یہی ہے ضرورت کے احکام جدا گانہ ہیں۔ (امعة الممعات)

۲۔ یعنی مسلمان راستہ میں اس طرح ہجوم کر کے چلیں کہ ذی کفار کنارہ پر چلنے پر مجبور ہو جائیں اسلام کی شان ظاہر کرنے کے لیے بشرطیکہ کنارہ راہ پر غار یا خار نہ ہوں، انہیں غار یا خار میں پھنسا دینا ان کو ایذا دینا ہے اور ذمی کافر کو ایذا دینا ممنوع ہے۔ (مرقات) مستامن کفار اگر ہمارے مہمان بن جائیں یا ان کو بلایا جاوے تو ان کا مہمان کفار کی خاطر ہے۔ خیال رہے کہ اس زمانہ میں کفار بھی مسلمانوں سے ایسا بلکہ اس سے بدتر سلوک کرتے تھے۔ (مرآة السانج شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۲۲)

(21) صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب التسليم فی مجلس فیہ... إلخ، الحدیث: ۶۲۵۴، ج ۴، ص ۱۷۲۔

ومشکوٰۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب السلام، الحدیث: ۶۳۹، ج ۳، ص ۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ بت پرست بیان ہے مشرکین کا، یہود بھی اگرچہ شرک و بت پرستی کرتے ہیں مگر چونکہ انبیاء کو مانتے ہیں اس لیے انہیں مشرکین نہیں کہا جاتا بلکہ اہل کتاب کہا جاتا ہے اس لیے یہود کو مشرکین پر معطوف کیا کبھی غلط نسبت بھی فائدہ پہنچا دیتی ہے۔

۲۔ معلوم ہوا کہ مخلوط جماعت جہاں مسلمان کفار ملے ہوئے بیٹھے ہوں وہاں سے گزرنے والا مسلمان سلام کرے اور اپنے سلام سے مسلمانوں کی نیت کرے اور جب کسی کافر کو خط لکھے تو یوں لکھے "السَّلَامُ عَلٰی مَنْ اتَّبَعَ الْهُدٰی"۔ یہاں امعة الممعات نے فرمایا کہ ایسی مجلس پر گزرنے والا یہ بھی کہہ سکتا ہے "السَّلَامُ عَلٰی مَنْ اتَّبَعَ الْهُدٰی"۔ (مرآة السانج شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۲۶)

(22) صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب کیف الرد علی اهل الذمۃ بالسلام، الحدیث: ۶۲۵۷، ج ۴، ص ۱۷۳۔

سام کے معنی موت ہیں وہ لوگ حقیقتہً سلام نہیں کرتے، بلکہ مسلم کے جلد مر جانے کی دعا کرتے ہیں۔ اسی کی مثل انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بھی مروی ہے، کہ اہل کتاب سلام کریں تو ان کے جواب میں علیکم کہہ دو۔ (23)

حدیث ۲۲: صحیح بخاری و مسلم میں ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ راستوں میں بیٹھنے سے بچو۔ لوگوں نے عرض کی، یا رسول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) ہمیں راستہ میں بیٹھنے سے چارہ نہیں، ہم وہاں آپس میں بات چیت کرتے ہیں۔ فرمایا: جب تم نہیں مانتے اور بیٹھنا ہی چاہتے ہو تو راستہ کا حق ادا کرو۔ لوگوں نے عرض کی، راستہ کا حق کیا ہے؟ فرمایا کہ نظر نیچی رکھنا اور اذیت کو دور کرنا اور مسلمان کا جواب دینا اور اچھی بات کا حکم کرنا اور بری باتوں سے منع کرنا۔ (24)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ فقیر نے بھی آرزو کیا ہے مجھے ایک بد مذہب نے صاف طور پر کہا السلام علیکم، کے معنی ہیں موت تو مطلب یہ ہوا کہ تم پر موت پڑے اس کے جواب میں خواہ وہ وعلیک کہے تو داؤد بمعنی ہیں ہے یا صرف علیک کہہ دے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۴۷۳)

(23) صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب کیف الرد علی أهل الذمۃ بالسلام، الحدیث: ۶۲۵۸، ج ۴، ص ۱۷۴۔

(24) صحیح مسلم، کتاب السلام، باب من حق الجلیس علی الطريق رد السلام، الحدیث: ۳۔ (۲۱۶۱)، ص ۱۹۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ چونکہ راستہ سے عورتیں بچے گزرتے رہتے ہیں، نیز وہاں سے لوگوں کے مال سواریاں گزرتی ہیں اس لیے وہاں بیٹھنا خطرناک بد نظری کا اندیشہ ہے۔

۲۔ یعنی ہماری ضروریات راستوں پر بیٹھنے سے وابستہ ہیں وہاں بیٹھ کر ہم کاروبار اور دیگر ضروریات کی باتیں کرتے ہیں۔

۳۔ یعنی راستہ میں بیٹھ کر وہ نیکیاں کرو جس کی برکت سے تمام وہاں کے گناہوں سے بچے رہو اور ثواب کم ہو، یہاں حق بمعنی استحقاق ہے کہ راستہ ان اعمال کا مستحق ہے۔

۴۔ یعنی راستوں پر بیٹھ کر یہ پانچ نیکیاں یا ان میں سے جس قدر بن پڑیں کیا کرو: لگائیں نیچی رکھنا کہ اجنبی عورتوں پر نہ پڑیں، راستہ سے کانٹا اینٹ پتھر الگ کر دیا کرو تاکہ کسی راہ گیر کو نہ چبھے نہ ٹھوکر لگے، جو راستہ گزرنے والا تمہیں سلام کرنا ہوا گزرے اس کا جواب دو، اگر تم راستہ میں کسی کو کوئی برا کام کرتے دیکھو تو اس سے روکو، اس کی عوض اسے اچھے کام کرنے کا مشورہ دو اس صورت میں تمہارا وہاں بیٹھنا بھی

عبدت ہے۔ سبحان اللہ! کیا ہیبتل، تائب کو سونا کر دیتی ہے، حضور کی تعلیم گناہوں کو ثواب بنا دیتی ہے۔ شعر

ثواب ہو گئے سارے عقاب کیا کہنا

تیرے کرم کا رسالت مآب کیا کہنا

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۷۔ ۷۸)

دوسری روایت میں ہے اور راستہ بتانا۔ (25) ایک اور روایت میں ہے فریاد کرنے والے کی فریاد سننا اور بھولے ہوئے کو ہدایت کرنا۔ (26)

حدیث ۲۳: شرح سنہ میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ راستوں کے بیٹھنے میں بھلائی نہیں ہے، مگر اس کے لیے جو راستہ بتائے اور سلام کا جواب دے اور نظر نیچی رکھے اور بوجھ لا دینے پر مدد کرے۔ (27)

حدیث ۲۴: ترمذی و ابوداؤد نے عمران بن حصین رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ ایک شخص نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں آیا اور السَّلَامُ عَلَیْکُمْ کہا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے اسے جواب دیا وہ بیٹھ گیا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے ارشاد فرمایا: اس کے لیے دس یعنی دس نیکیاں ہیں۔ پھر دوسرا آیا اور السَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ کہا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے جواب دیا وہ بیٹھ گیا۔ ارشاد فرمایا: اس کے لیے بیس۔ پھر تیسرا شخص آیا اور السَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُہُ کہا اس کو جواب دیا اور یہ بھی بیٹھ گیا حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا: اس کے لیے تیس۔ (28) اور معاذ بن انس (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) کی روایت میں ہے، کہ پھر ایک شخص آیا اس نے کہا السَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُہُ وَمَغْفِرَتُہُ۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا: اس کے لیے چالیس۔ (29) اور فضائل اسی طرح ہوتے ہیں جتنی کام زیادہ ہوگا

(25) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی المجلس بالطرق، الحدیث: ۴۸۱۶، ج ۴، ص ۳۳۷۔

(26) المرجع السابق، الحدیث: ۴۸۱۷، ج ۴، ص ۳۳۷۔

(27) شرح السنہ، کتاب الاستئذان... إلخ، باب کراہیۃ المجلس علی الطرق، الحدیث: ۳۲۳۲، ج ۶، ص ۳۶۵۔

(28) سنن ابی داؤد، کتاب السلام، باب کیف السلام، الحدیث: ۵۱۹۵، ج ۴، ص ۴۳۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس سے معلوم ہوا کہ ایک شخص کو بھی سلام کرے تو علیکم جمع سے کہے کہ اس میں ان فرشتوں کو سلام ہو جاتا ہے جو انسان کے ساتھ رہتے ہیں محافظین اور کاتبین اعمال وغیرہم اگرچہ علیک واحد کہنا بھی جائز ہے۔

۲۔ عشر قائل ہے ثبت لہ پوشیدہ کایا نائب قائل ہے کتب فعل مجہول کا یعنی اس کو دس نیکیوں کا ثواب حاصل ہوا یا اس کے لیے دس نیکیاں مکھی گئیں۔

۳۔ معلوم ہوا کہ سلام کے ہر کلمہ پر دس نیکیاں ملتی ہیں جتنے کلمات زیادہ ہوں اتنی نیکیاں اسی حساب سے زیادہ ہوں گی، جواب دینے و

زیادہ اچھا جواب دے یعنی سلام کے کلمات پر کچھ کلمات بڑھا کر جواب دے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۴۸۲)

(29) المرجع السابق، الحدیث: ۵۱۹۶، ج ۴، ص ۴۳۹۔

ثواب بھی بڑھتا جائے گا۔

حدیث ۲۵: ترمذی میں بروایت غزو بن شعیب عن ابیہ عن جدہ ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص ہمارے غیر کے ساتھ تہنہ (یعنی مشابہت کرے) کرے، وہ ہم میں سے نہیں۔ یہود و نصاریٰ کے ساتھ تہنہ نہ کرو، یہودیوں کا سلام انگلیوں کے اشارے سے ہے اور نصاریٰ کا سلام ہتھیلیوں کے اشارے سے ہے۔ (30)

حدیث ۲۶: ابوداؤد و ترمذی نے ابوجری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں: میں نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی خدمت میں حاضر ہو کر یہ کہا علیک السلام یا رسول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم)۔ میں نے دو مرتبہ کہا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: علیک السلام نہ کہو، علیک السلام مردہ کی تحیت ہے، السلام علیک کہا کرو۔ (31)



(30) سنن ترمذی، کتاب الاستغناء... إلخ، باب ما جاء فی کراہیۃ إشارۃ الید بالسلام، الحدیث: ۲۷۰۴، ج ۲، ص ۳۱۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اس جو فعل یا حور یا چیزیں کفار کی قومی علاقہ میں ہوں مسلمانوں کے لیے حرام ہیں جیسے ہندوئی دھوتی وغیرہ اور جو ان کی دینی علامتیں ہوں وہ مسلمانوں کے لیے کفر ہیں جیسے ہندوئی قشہ یا ہندوئی زنا وغیرہ۔

۲۔ یعنی صرف اشاروں سے سلام کرنا منہ سے کچھ نہ کہنا یہود و نصاریٰ کا سلام ہے، مسلمان یا تو زبان سے سلام کریں السلام علیکم کہیں یا اشارہ کے ساتھ منہ سے بولیں تاکہ اسلامی اور غیر اسلامی سلام میں فرق ہو جاوے، یوں ہی صرف سر جھکا دینا یا سر یا آنکھوں سے اشارہ کر دینا سلام کے لیے کافی نہیں اور سلام کے وقت خود جھکنا ممنوع ہے تا حد رکوع ہو تو حرام ہے، رب تعالیٰ اپنے حبیب صلی اللہ علیہ وسلم کی سنتوں پر عمل کی توفیق بخشے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۴۸۶)

(31) سنن ترمذی، کتاب الاستغناء... إلخ، باب ما جاء فی کراہیۃ أن یقول... إلخ، الحدیث: ۲۷۳۰، ۲۷۳۱، ج ۲، ص ۳۳۔

مسائل فقہیہ

سلام کرنے میں یہ نیت ہو کہ اس کی عزت و آبرو اور مال سب کچھ اس کی حفاظت میں ہے، ان چیزوں سے تعرض کرنا حرام ہے۔ (1)

مسئلہ ۱: صرف اسی کو سلام نہ کرے جس کو پہچانتا ہو، بلکہ ہر مسلمان کو سلام کرے چاہے پہچانتا ہو یا نہ پہچانتا ہو۔ بلکہ بعض صحابہ کرام اسی ارادہ سے بازار جاتے تھے کہ کثرت سے لوگ ملیں گے اور زیادہ سلام کرنے کا موقع ملے گا۔

مسئلہ ۲: اس میں اختلاف ہے کہ افضل کیا ہے سلام کرنا یا جواب دینا کسی نے کہا جواب دینا افضل ہے کیونکہ سلام کرنا سنت ہے اور جواب دینا واجب۔ بعض نے کہا کہ سلام کرنا افضل ہے کہ اس میں تواضع ہے جواب تو سبھی دے دیتے ہیں مگر سلام کرنے میں بعض مرتبہ بعض لوگ کسر شان (یعنی خلاف شان) سمجھتے ہیں۔ (2)

مسئلہ ۳: ایک شخص کو سلام کرے تو اس کے لیے بھی لفظ جمع ہونا چاہیے یعنی السَّلَامُ عَلَیْکُمْ کہے اور جواب دینے والا بھی وَعَلَیْکُمُ السَّلَام کہے بجائے عَلَیْکُمْ عَلَیْکَ نہ کہے اور دو یا دو سے زیادہ کو سلام کرے جب بھی عَلَیْکُمْ کہے اور بہتر یہ ہے کہ سلام میں رحمت و برکت کا بھی ذکر کرے یعنی السَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُہُ کہے اور جواب دینے والا بھی وہی کہے بَرکَاتُہُ، پر سلام کا خاتمہ ہوتا ہے۔ اس کے بعد اور الفاظ زیادہ کرنے کی ضرورت نہیں۔ (3)

مسئلہ ۴: جواب میں واؤ ہونا یعنی وَعَلَیْکُمُ السَّلَام کہنا بہتر ہے اور اگر صرف عَلَیْکُمُ السَّلَام بغیر واؤ کہا یہ بھی ہو سکتا ہے اور اگر جواب میں اس نے بھی وہی السَّلَامُ عَلَیْکُمْ کہہ دیا تو اس سے بھی جواب ہو جائے گا۔ (4)

مسئلہ ۵: اگرچہ سَلَامٌ عَلَیْکُمْ بھی سلام ہے مگر یہ لفظ شیعوں میں اس طرح جاری ہے کہ اس کے کہنے سے سننے والے کا ذہن فوراً اس کی طرف منتقل ہوتا ہے، کہ یہ شخص شیعہ ہے، لہذا اس سے بچنا ضروری ہے۔

(1) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی السبع، ج ۹، ص ۲۸۲۔

(2) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السالط فی السلام، ج ۵، ص ۳۲۳، ۳۲۵۔

(3) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السالط فی السلام، ج ۵، ص ۳۲۳، ۳۲۵۔

(4) المرجع السابق۔

مسئلہ ۶: سلام کا جواب فوراً دینا واجب ہے، بلا عذر تاخیر کی تو گنہگار ہوا اور یہ گناہ جواب دینے سے دفع نہ ہوگا، بلکہ توبہ کرنی ہوگی۔ (5)

مسئلہ ۷: جن لوگوں کو اس نے سلام کیا ان میں سے کسی نے جواب نہ دیا، بلکہ کسی اور نے جو اس مجلس سے خارج تھا جواب دیا تو یہ جواب اہل مجلس کی طرف سے نہیں ہوا یعنی وہ لوگ بری الذمہ نہ ہوئے۔ (6)

مسئلہ ۸: ایک جماعت دوسری جماعت کے پاس آئی اور کسی نے سلام نہ کیا تو سب نے سنت کو ترک کیا، سب پر لازم ہے (یعنی سب نے برا کیا) اور اگر ان میں سے ایک نے سلام کر لیا تو سب بری ہو گئے اور افضل یہ ہے کہ سب ہی سلام کریں۔ یوہیں اگر ان میں سے کسی نے جواب نہ دیا تو سب گنہگار ہوئے اور اگر ایک نے جواب دے دیا تو سب بری ہو گئے اور افضل یہ ہے کہ سب جواب دیں۔ (7)

مسئلہ ۹: ایک شخص مجلس میں آیا اور اس نے سلام کیا اہل مجلس پر جواب دینا واجب ہے اور دوبارہ پھر سلام کیا تو جواب دینا واجب نہیں۔ مجلس میں آکر کسی نے السلام علیک کہا یعنی صیغہ واحد بولا اور کسی ایک شخص نے جواب دے دیا تو جواب ہو گیا خاص اس کو جواب دینا واجب نہیں جس کی طرف اس نے اشارہ کیا ہے۔ ہاں اگر اس نے کسی شخص کا نام لے کر سلام کیا کہ فلاں صاحب السلام علیک تو خاص اس شخص کو جواب دینا ہوگا، دوسرے کا جواب اس کے جواب کے قائم مقام نہیں ہوگا۔ (8)

مسئلہ ۱۰: اہل مجلس پر سلام کیا ان میں سے کسی نابالغ عاقل نے جواب دے دیا تو یہ جواب کافی ہے اور بڑھیا نے جواب دیا، یہ جواب بھی ہو گیا۔ جوان عورت یا مجنون یا نا سمجھ بچے نے جواب دیا، یہ نا کافی ہے۔ (9)

مسئلہ ۱۱: سائل نے دروازہ پر آکر سلام کیا اس کا جواب دینا واجب نہیں۔ کچہری میں قاضی جب اجلاس کر رہا ہو، اس کو سلام کیا گیا قاضی پر جواب دینا واجب نہیں۔ لوگ کھانا کھا رہے ہوں اس وقت کوئی آیا تو سلام نہ کرے، ہاں اگر یہ بھوکا ہے اور جانتا ہے کہ اسے وہ لوگ کھانے میں شریک کر لیں گے تو سلام کر لے۔ (10) یہ اس وقت ہے کہ کھانے

(5) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الخطر والاباحۃ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۸۳۔

(6) رد المحتار، کتاب الخطر والاباحۃ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۸۲۔

(7) الفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکرہیۃ، الباب السابع فی السلام، ج ۵، ص ۳۲۵۔

(8) الفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الخطر والاباحۃ، فصل فی البیوع والتسلیم، ج ۲، ص ۳۷۷۔

و الفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکرہیۃ، الباب السابع فی السلام، ج ۵، ص ۳۲۵۔

(9) الدر مختار، کتاب الخطر والاباحۃ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۸۳۔

(10) الفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الخطر والاباحۃ، فصل فی البیوع والتسلیم، ج ۲، ص ۳۷۷۔

والے کے مونہ میں لقمہ ہے اور وہ چبا رہا ہے کہ اس وقت وہ جواب دینے سے عاجز ہے اور ابھی کھانے کے لیے ہے یا کھا چکا ہے تو سلام کر سکتا ہے کہ اب وہ عاجز نہیں۔ (11)

مسئلہ ۱۲: ایک شخص شر سے آرہا ہے دوسرا دیہات سے، دونوں میں کون سلام کرے؟ بعض نے کہا شری دیہاتی کو سلام کرے اور بعض علما فرماتے ہیں دیہاتی شری کو سلام کرے۔ ایک شخص بیٹھا ہوا ہے، دوسرا یہاں سے گزرا تو یہ گزرنے والا بیٹھے ہوئے کو سلام کرے اور چھوٹا بڑے کو سلام کرے اور سوار پیدل کو سلام کرے اور تھوڑے زیادہ کو سلام کریں، ایک شخص پیچھے سے آیا، یہ آگے والے کو سلام کرے۔ (12)

مسئلہ ۱۳: مرد اور عورت کی ملاقات ہو تو مرد عورت کو سلام کرے اور اگر عورت اجنبیہ نے مرد کو سلام کیا اور وہ بوڑھی ہو تو اس طرح جواب دے کہ وہ بھی سنے اور وہ جوان ہو تو اس طرح جواب دے کہ وہ نہ سنے۔ (13)

مسئلہ ۱۴: جب اپنے گھر میں جائے تو گھر والوں کو سلام کرے بچوں کے سامنے گزرنے تو ان بچوں کو سلام کرے۔ (14)

مسئلہ ۱۵: کفار کو سلام نہ کرے اور وہ سلام کریں تو جواب دے سکتا ہے مگر جواب میں صرف عَلَیْکُمْ کہے اگر ایسی جگہ گزرنا ہو جہاں مسلم و کافر دونوں ہوں تو السَّلَامُ عَلَیْکُمْ کہے اور مسلمانوں پر سلام کا ارادہ کرے اور یہ بھی ہو سکتا ہے۔ کہ السَّلَامُ عَلَی مَنْ اتَّبَعَ الْهُدَى کہے۔ (15)

مسئلہ ۱۶: کافر کو اگر حاجت کی وجہ سے سلام کیا، مثلاً سلام نہ کرنے میں اس سے اندیشہ ہے تو حرج نہیں اور بقصد تعظیم کافر کو ہرگز ہرگز سلام نہ کرے کہ کافر کی تعظیم کفر ہے۔ (16)

مسئلہ ۱۷: سلام اس لیے ہے کہ ملاقات کرنے کو جو شخص آئے وہ سلام کرے کہ زائر اور ملاقات کرنے والے کی یہ تحیت ہے۔ لہذا جو شخص مسجد میں آیا اور حاضرین مسجد تلاوت قرآن و تسبیح و درود میں مشغول ہیں یا انتظارِ نماز میں بیٹھے

والبزازیۃ، مشعل علیہ الفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، نوع فی السلام، ج ۶، ص ۳۵۳-۳۵۵.

(11) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۸۵.

(12) البزازیۃ ہاشم علیہ الفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، نوع فی السلام، ج ۶، ص ۳۵۵.

والفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب السابع فی السلام، ج ۵، ص ۳۲۵.

(13) الفتاویٰ الخانیۃ، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی التبیح... راجع، ج ۲، ص ۴۷۷.

(14) الفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب السابع فی السلام، ج ۵، ص ۳۲۵.

(15) الفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب السابع فی السلام، ج ۵، ص ۳۲۵.

(16) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۸۱.

ہیں تو سلام نہ کرے کہ یہ سلام کا وقت نہیں۔ اسی واسطے فقہاء یہ فرماتے ہیں کہ ان کو اختیار ہے کہ جواب دیں یا نہ دیں۔
 ہاں اگر کوئی شخص مسجد میں اس لیے بیٹھا ہے کہ لوگ اس کے پاس ملاقات کو آئیں تو آنے والے سلام کریں۔ (17)
 مسئلہ ۱۸: کوئی شخص تلاوت میں مشغول ہے یا درس و تدریس یا علمی گفتگو یا سبق کی تکرار میں ہے تو اس کو سلام نہ کرے۔ اسی طرح اذان و اقامت و خطبہ جمعہ و عیدین کے وقت سلام نہ کرے۔ سب لوگ علمی گفتگو کر رہے ہوں یا ایک شخص بول رہا ہے باقی سن رہے ہوں، دونوں صورتوں میں سلام نہ کرے، مثلاً عالم وعظ کہہ رہا ہے یا دینی مسئلہ پر تقریر کر رہا ہے اور حاضرین سن رہے ہیں، آنے والا شخص چپکے سے آکر بیٹھ جائے سلام نہ کرے۔ (18)
 مسئلہ ۱۹: عالم دین تعلیم علم دین میں مشغول ہے، طالب علم آیا تو سلام نہ کرے اور سلام کیا تو اس پر جواب دینا واجب نہیں۔ (19) اور یہ بھی ہو سکتا ہے کہ اگرچہ وہ پڑھا نہ رہا ہو سلام کا جواب دینا واجب نہیں، کیونکہ یہ اس کی ملاقات کو نہیں آیا ہے کہ اس کے لیے سلام کرنا مسنون ہو بلکہ پڑھنے کے لیے آیا ہے، جس طرح قاضی کے پاس جو لوگ اجلاس میں جاتے ہیں وہ ملنے کو نہیں جاتے بلکہ اپنے مقدمہ کے لیے جاتے ہیں۔
 مسئلہ ۲۰: جو شخص ذکر میں مشغول ہو اس کے پاس کوئی شخص آیا تو سلام نہ کرے اور کیا تو ذکر (یعنی ذکر کرنے والا) پر جواب واجب نہیں۔ (20)

اعلیٰ حضرت، امام ہنسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:
 حتیٰ کہ فتاویٰ ظہیریہ و اشباہ و انظار و تنویر الابصار و در مختار و غیرہا معتبرات اسفار میں ہے:

لو سلم علی الذی تبجیلًا یکفر لان تبجیل الکافر کفر۔
 اگر ذی کو تعظیماً سلام کرے کافر ہو جائے گا کہ کافر کی تعظیم کفر ہے۔

(۱۔ الدر المختار کتاب المحظر والاباحۃ فصل فی البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲ / ۲۵)

فتاویٰ امام ظہیر الدین و اشباہ و در مختار و غیرہا میں ہے:

لو قال لمجوسی یا استاذ تبجیلًا کفر ۲۔ (۲۔ الدر المختار کتاب المحظر والاباحۃ فصل فی البیع مطبع مجتبائی دہلی ۲ / ۲۵۱)
 اگر مجوسی کو بطور تعظیم اے استاد کہا کافر ہو گیا۔ (فتاویٰ رضویہ، جلد ۱۲، ص ۵۲۷ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(17) افتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب السالط فی السلام، ج ۵، ص ۳۲۵۔

(18) المرجع السابق، ص ۳۲۵-۳۲۶۔

(19) المرجع السابق، ص ۳۲۶۔

(20) افتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب السالط فی السلام، ج ۵، ص ۳۲۶۔

مسئلہ ۲۱: جو شخص پیشاب پاخانہ پھر رہا ہے یا کبوتر اڑا رہا ہے یا گارہا ہے یا حمام یا غسل خانہ میں بیٹھا نہا رہا ہے، اس کو سلام نہ کیا جائے اور اس پر جواب دینا واجب نہیں۔ (21) پیشاب کے بعد ڈھیلا لے کر استنجا سکھانے کے لیے ٹہلتے ہیں، یہ بھی اسی حکم میں ہے کہ پیشاب کر رہا ہے۔

مسئلہ ۲۲: جو شخص علانیہ فسق کرتا ہو اسے سلام نہ کرے کسی کے پروں میں فساد رہتے ہیں، مگر ان سے یہ اگر سختی برتا ہے تو وہ اس کو زیادہ پریشان کریں گے اور نرمی کرتا ہے ان سے سلام کلام جاری رکھتا ہے تو وہ ایذا پہنچانے سے باز رہتے ہیں تو ان کے ساتھ ظاہری طور پر میل جول رکھنے میں یہ معذور ہے۔ (22)

مسئلہ ۲۳: جو لوگ شطرنج کھیل رہے ہوں ان کو سلام کیا جائے یا نہ کیا جائے، جو علماء سلام کرنے کو جائز فرماتے ہیں۔ وہ یہ کہتے ہیں کہ سلام اس مقصد سے کرے کہ اتنی دیر تک کہ وہ جواب دیں گے، کھیل سے باز رہیں گے۔ یہ سلام ان کو معصیت سے بچانے کے لیے ہے، اگرچہ اتنی ہی دیر تک سہی۔ جو فرماتے ہیں کہ سلام کرنا ناجائز ہے ان کا مقصد زجر و تنبیہ ہے کہ اس میں ان کی تذلیل ہے۔ (23)

(21) الفتاویٰ احمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السابع فی السلام، ج ۵، ص ۳۲۶۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

کبوتر پالنا جائز ہے جبکہ دوسروں کے کبوتر نہ پکڑے، اور کبوتر اڑانا کہ گھنٹوں ان کو اترنے نہیں دیتے حرام ہے اور مرغ یا بئیر کا لڑنا حرام ہے۔ ان لوگوں سے ابتداء بسلام نہ کی جائے جواب دے سکتے ہیں، واجب نہیں۔ کنگیا اڑانے میں دقت، مال کا ضائع کرنا ہوتا ہے۔ یہ بھی گناہ ہے اور گناہ کے آلات کنگیا ڈور بیچنا بھی منع ہے احتراز کریں تو ان سے بھی ابتداء بسلام نہ کی جائے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۶۵۹ رض فاؤنڈیشن، لاہور)

(22) المرجع السابق۔

(23) المرجع السابق۔

لغویات میں مشغول لوگوں کو سلام کرنے کا حکم

رسول اکرم، شاہ بنی آدم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا فرمان عالیشان ہے: ”جب تم ان لوگوں کے پاس سے گزر دو جو فال نکالتے والے تیروں، شطرنج، چوسرا اور بن جیسے (ہر حرام) کھیل کھیلتے ہیں تو انہیں سلام نہ کرو اور اگر وہ تمہیں سلام کریں تو جواب نہ دو۔“

(فردوس الاخبار للحدیثی، الحدیث: ۱۰۵۱، ج ۱، ص ۶۰)

حضور نبی رحمت، شفیع امت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا فرمان عالیشان ہے: ”ان دو نشان زدہ ٹیروں (یعنی چوسر کی گونیوں) سے بچو جنہیں حرکت دی جاتی (یا پھینکا جاتا) ہے کیونکہ یہ عجیوں کا جواب ہے۔“

(السنن الکبریٰ للبیہقی، کتاب الشهادات، باب کراہیۃ اللعب، الخ، الحدیث: ۲۰۹۵۴، ج ۱۰، ص ۳۶۴، بغیر تفسیل)۔

مسئلہ ۲۴: کسی سے کہہ دیا کہ فلاں کو میرا سلام کہہ دینا اس پر سلام پہنچانا واجب ہے اور جب اس نے سلام

حضور نبی کریم، رؤف رحیم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: تین چیزیں منیر میں سے ہیں: ”جو اکھین، مہروں کو اٹھانا اور پوتے لئے سیٹیں بچانا۔“ (الجامع الصغیر للسیوطی، الحدیث: ۳۴۳۳، ص ۲۰۶)

شترنج کھیلنا

360 بار نظرِ رحمت:

حضرت سیدنا داؤد بن اسحق رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ سرکارِ مدینہ، قرابہ قلب و سینہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا فرمانِ عبرت نشان ہے: ”اللہ عز و جل روزانہ 360 مرتبہ اپنی مخلوق کی طرف نظرِ رحمت فرماتا ہے مگر اس میں صاحبِ الشترنج (یعنی شترنج کھیلنے والے) کے لئے کوئی حصہ نہیں۔“ (الجزء العین من التحدیثین، لابن حبان، الرقم ۹۹۶ محمد بن الحجاج المعاصر، ج ۲، ص ۱۴، دون قولہ ”لی خلقہ“)

کھیل کود میں مشغول رہنے والوں کی مثال

حضرت سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ نور کے پیکر، تمام نبیوں کے مژدوں، دو جہوں کے تاجور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا فرمانِ عبرت نشان ہے: ”جب تم ان لوگوں کے پاس سے گزر دو جو فال نکالنے والے تیروں، چوسر، شترنج اور دیگر ہولعب میں مشغول ہوتے ہیں تو نہیں سلام نہ کرو کیونکہ جب وہ اکٹھے ہو کر ایسے کھیل میں مشغول ہوتے ہیں تو شیطان ان کے پاس اپنے شکروروں کے ساتھ آ جاتا ہے پس وہ مسلسل کھیلتے رہتے ہیں یہاں تک کہ ان نکتوں کی طرح ایک دوسرے سے جدا ہوتے ہیں جو کسی مردار پر جمع ہو کر پیٹ بھرنے تک کھاتے رہتے ہیں پھر علیحدہ ہو جاتے ہیں۔“

(فردوس الاخبار للندلمی، الحدیث: ۱۰۵۱، ج ۱، ص ۱۶۰) (کتاب الکبائر للذہبی، الکبیرۃ العشر و النمار، ص ۱۰۲) سرکارِ مکہ مکرمہ، سرمدِ مدینہ منورہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: قیامت کے دن سب سے سخت عذاب صاحبِ شترنج (یعنی شترنج کھیلنے والے) کو ہوگا، کیا آپ دیکھتے نہیں کہ وہ کہتا ہے: ”میں نے اسے ہلاک کر دیا، اللہ عز و جل کی قسم! وہ مر گیا۔“ اللہ عز و جل کی قسم! اس نے اللہ عز و جل پر بہتان اور جھوٹ باندھا۔ (الورع للامام احمد بن حنبل، ص ۹۲)

شترنج کے متعلق اسلافِ کرام رحمہم اللہ الشلا کے فرامین:

امیر المومنین حضرت سیدنا علی المرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ و جنہ الکرنیم کا فرمانِ حقیقت بیان ہے: ”شترنج عجمیوں کا جو ہے۔“ آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ایک قوم کے پاس سے گزرے جو شترنج کھیل رہی تھی تو یہ اتفاقاً قرآنی تلاوت فرمائے:

مَا هَذِهِ سَيِّئَاتُ الْبَنِي آدَمَ لَهَا عِقُوبٌ ﴿۵۲﴾ (پ ۱۷، الانبیاء: ۵۲) ترجمہ کنز الایمان: یہ مورتیں کیا ہیں جس کے آگے تم آؤ، رے (پ ۱۷ کے لئے بیٹھے) ”ہو“ (پھر فرمایا:) ”بے شک تم میں سے کوئی انکارا پکڑ لے یہاں تک کہ وہ سمجھ جائے۔“ یہ اس کے لئے اس کو نچسوں سے بھی بہتر ہے۔“ پھر فرمایا: ”اللہ عز و جل کی قسم! اتنی باری تخلیق کا مقصد کوئی دوسرا ہے۔“

(السنن البیہقی، کتاب التہجدات، باب الاختلاف فی اللعاب بالشترنج، الحدیث: ۲۰۹۳۰، ۲۰۹۳۲، ۲۰۹۳۴، ج ۱۰، ص ۳۵۸) ←

پہنچا یا تو جواب یوں دے کہ پہلے اس پہنچانے والے کو اس کے بعد اس کو جس نے سلام بھیجا ہے یعنی یہ کہے وَعَلَيْكَ

امیر المؤمنین حضرت سیدنا علی المرتضیٰ کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم سے ایک قول یہ بھی مروی ہے کہ ”شطرنج کھیلنے والا لوگوں میں سب سے زیادہ جھوٹ بولتا ہے، ان میں سے ایک کہتا ہے کہ میں نے ہلاک کر دیا، حالانکہ اس نے ہلاک نہیں کیا ہوتا اور (کہتے ہیں) وہ مر گیا حالانکہ وہ مرا نہیں ہوتا۔“ (کتاب الکبائر للذہبی، الکبیرۃ الاخریٰ، القمار، ص ۱۰۲)

حضرت سیدنا ابوسویٰ شعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں: ”خطا کار ہی شطرنج کھیلتا ہے۔“

(السنن الکبریٰ للبیہقی، کتاب الشہادات، باب الاختلاف فی الملعب بالشطرنج، الحدیث: ۲۰۹۳۵، ج ۱۰، ص ۳۵۹)

حضرت سیدنا اسحاق بن راہویہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ سے دریافت کیا گیا: ”کیا آپ شطرنج کھیلنے میں حرج سمجھتے ہیں؟“ تو آپ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے ارشاد فرمایا: ”اس میں حرج ہی حرج ہے۔“ عرض کی گئی: ”سرحدوں کی حفاظت کرنے والے جنگ کے لئے کھیلتے ہیں۔“ ارشاد فرمایا: ”یہ گناہ ہے۔“

حضرت سیدنا محمد بن کعب قرظی علیہ رحمۃ اللہ القوی سے شطرنج کھیلنے کے بارے میں دریافت کیا گیا تو آپ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے ارشاد فرمایا: ”اس میں سب سے کم نقصان یہ ہے کہ شطرنج کھیلنے والا بروز قیامت باطل لوگوں کے ساتھ پیش کیا جائے گا یا اُن کے ساتھ اٹھایا جائے گا۔“

حضرت سیدنا عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے شطرنج کے بارے میں پوچھا گیا تو آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ارشاد فرمایا: ”شطرنج جوے سے بھی زیادہ بری ہے۔“

حضرت سیدنا امام مالک بن انس رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ (متوفی ۱۷۹ھ) کا قول بھی اسی کے موافق ہے، آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے شطرنج کے متعلق دریافت کیا گیا تو فرمایا: ”شطرنج چوسری کا حصہ ہے۔“ اور چوسر کے بارے میں بیان ہو چکا ہے کہ یہ اکابر عہد کرام رحمۃ اللہ علیہم السلام کے نزدیک کبیرہ گناہ ہے۔ (کتاب الکبائر للذہبی، الکبیرۃ الاخریٰ، القمار، ص ۱۰۲)

سیدنا ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما کا شطرنج جلا دینا:

حضرت سیدنا امام مالک علیہ رحمۃ اللہ الخالدین (متوفی ۱۷۹ھ) فرماتے ہیں کہ میں حضرت سیدنا عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے متعلق یہ بات پہنچی ہے کہ آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو ایک یتیم کے مال کا والی بنایا گیا تو آپ نے اس کے باپ کے مال میں شطرنج دیکھ کر اسے جلا دیا۔ اگر اس کے ساتھ کھیلتا جائے ہوتا تو اسے جلا دیا جائے نہ ہوتا کیونکہ وہ یتیم کا مال تھا لیکن چونکہ اس کے ساتھ کھینا حرام تھا اس لئے اسے جلا دیا۔ پس یہ شراب کی جنس سے ہوئی کہ جب یتیم کے مال میں شراب پائی جائے تو اسے بہادریا ضروری ہے۔ در یہ جزأ لا متہ (یعنی اُمت کے بڑے عالم) حضرت سیدنا ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما کا مذہب ہے۔ (الرجع السابق)

حضرت سیدنا ابراہیم نخعی علیہ رحمۃ اللہ القوی سے پوچھا گیا کہ آپ شطرنج کھیلنے کے متعلق کیا فرماتے ہیں؟ فرمایا: ”یہ ملعون ہے (یعنی اس کا کھیلنے وال لعنت کا مستحق ہے)۔“ (شعب الایمان للبیہقی، باب فی تحریم الملاعب والملاعی، الحدیث: ۶۵۲۰، ج ۵، ص ۲۵۲) ←

وَعَلَيْهِ السَّلَام. (24)

یہ سلام پہنچانا اس وقت واجب ہے جب اس نے اس کا التزام کر لیا ہو یعنی کہہ دیا ہو کہ ہاں تمہارا سلام کہہ دوں گا کہ اس وقت یہ سلام اس کے پاس امانت ہے جو اس کا حقدار ہے اس کو دینا ہی ہو گا ورنہ یہ بمنزلہ ودیعت ہے کہ اس پر یہ لازم نہیں کہ سلام پہنچانے وہاں جائے۔ اسی طرح حاجیوں سے لوگ یہ کہہ دیتے ہیں کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے دربار میں میرا سلام عرض کر دینا یہ سلام بھی پہنچانا واجب ہے۔ (25)

مسئلہ ۲۵: خط میں سلام لکھا ہوتا ہے اس کا بھی جواب دینا واجب ہے اور یہاں جواب دو طرح ہوتا ہے، ایک یہ کہ زبان سے جواب دے، دوسری صورت یہ ہے کہ سلام کا جواب لکھ کر بھیجے۔ (26) مگر چونکہ جواب سلام فوراً دینا واجب ہے جیسا کہ اوپر مذکور ہوا تو اگر فوراً تحریری جواب نہ ہو جیسا کہ عموماً یہی ہوتا ہے کہ خط کا جواب فوراً ہی نہیں لکھا جاتا خواہ مخواہ کچھ دیر ہوتی ہے تو زبان سے جواب فوراً دے دے، تاکہ تاخیر سے گناہ نہ ہو۔ اسی وجہ سے علامہ سید احمد طحاوی نے اس جگہ فرمایا: وَالنَّاسُ عَنْهُ غَافِلُونَ. (27) یعنی لوگ اس سے غافل ہیں۔

اعلیٰ حضرت قبلہ قدس سرہ جب خط پڑھا کرتے تو خط میں جو السَّلَام عَلَیْکُمْ لکھا ہوتا ہے اس کا جواب زبان

حضرت سیدنا کعب جراح رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ اور حضرت سیدنا سفیان ثوری علیہ رحمۃ اللہ القوی اس فرمان باری تعالیٰ: وَأَنْ تَسْتَغْفِرُوا بِالْأَزْلِ (پ ۶، المائدہ: ۳) ترجمہ کنز الایمان: اور پانے ڈال کر باغیا کرنا۔ کے متعلق ارشاد فرماتے ہیں کہ یہاں مراد شطرنج ہے۔

(الجامع لاحکام القرآن للقرطبی، المائدہ، تحت الآیہ ۳، ج ۳، الجزء السادس، ص ۲۳)

خاتمہ بالخیر نہ ہونا:

حضرت سیدنا مجاہد علیہ رحمۃ اللہ الفوجد فرماتے ہیں: جو شخص بھی مرنے لگتا ہے تو اس کے ہم نشینوں کی مثالی شکلیں اس کے سامنے پیش کی جاتی ہیں۔ چنانچہ، ایسے ہی ایک قریب الموت شطرنج کے کھلاڑی سے کہا گیا: "لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ پڑھو۔" تو وہ کہنے لگا: "شَاھُکَ یعنی تیرا شاد۔" پھر وہ مر گیا۔ پس زندگی میں شطرنج کھیلنے کی وجہ سے جس بات کا وہ عادی ہو چکا تھا مرتے وقت اس کی زبان پر وہی بات غالب آگئی تو اس نے وہ فضول دباطل بات کہہ دی اور کلمہ طیبہ نہ پڑھا جس کے متعلق صادق و مصدوق نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے خبر دی ہے کہ "جس کا دنیا میں آخری کلام کلمہ طیبہ ہو گا وہ جنت میں داخل ہو گا۔"

(کتاب اسباب اللذہ، الکبیرۃ الشریعۃ، القمار، ص ۱۰۳) (سنن ابی داود، کتاب الجنائز، باب فی المتقین، الحدیث: ۱۱۶، ص ۱۳۵۸)

(24) المرجع السابق.

(25) رد المحتار، کتاب الجہنم والابادہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۸۵.

(26) اندر الحق، رد المحتار، کتاب الجہنم والابادہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۸۵.

(27) حاشیہ اسطحاوی علی رد المحتار، کتاب الجہنم والابادہ، فصل فی البیع، ج ۳، ص ۲۰۷.

سے دے کر بعد کا مضمون پڑھتے۔

مسئلہ ۲۶: سلام کی میم کو ساکن کہا یعنی سَلَامٌ عَلَیْکُمْ، جیسا کہ اکثر جاہل اسی طرح کہتے ہیں یا سَلَامٌ عَلَیْکُمْ میم کے پیش کے ساتھ کہا، ان دونوں صورتوں میں جواب واجب نہیں کہ یہ مسنون سلام نہیں۔ (28)

مسئلہ ۲۷: ابتداء کسی نے یہ کہا عَلَیْکَ السَّلَام یا عَلَیْکُمْ السَّلَام تو اس کا جواب نہیں۔ حدیث میں فرمایا کہ یہ مردوں کی تحیت ہے۔ (29)

مسئلہ ۲۸: سلام اتنی آواز سے کہے کہ جس کو سلام کیا ہے وہ سن لے اور اگر اتنی آواز نہ ہو تو جواب دینا واجب نہیں، جواب سلام میں بھی اتنی آواز ہو کہ سلام کرنے والا سن لے اور اتنا آہستہ کہا کہ وہ سن نہ سکا تو واجب ساقط نہ ہوا اور اگر وہ بہرا ہے تو اس کے سامنے ہونٹ کو جنبش دے کہ اس کی سمجھ میں آجائے کہ جواب دے دیا۔ چھینک کے جواب کا بھی یہی حکم ہے۔ (30)

مسئلہ ۲۹: انگلی یا ہتھیلی سے سلام کرنا ممنوع ہے۔ حدیث میں فرمایا کہ انگلیوں سے سلام کرنا یہودیوں کا طریقہ ہے اور ہتھیلی سے اشارہ کرنا نصاریٰ کا۔ (31)

مسئلہ ۳۰: بعض لوگ سلام کے جواب میں ہاتھ یا سر سے اشارہ کر دیتے ہیں، بلکہ بعض صرف آنکھوں کے اشارہ سے جواب دیتے ہیں یوں جواب نہیں ہوا، ان کو مونہ سے جواب دینا واجب ہے۔

مسئلہ ۳۱: بعض لوگ سلام کرتے وقت جھک بھی جاتے ہیں، یہ جھکنا اگر حد درجہ تک ہو تو حرام ہے اور اس سے کم ہو تو مکروہ ہے۔

مسئلہ ۳۲: اس زمانہ میں کئی طرح کے سلام لوگوں نے ایجاد کر لیے ہیں۔ ان میں سب سے بُرا یہ ہے جو بعض لوگ کہتے ہیں بندگی عرض یہ لفظ ہرگز نہ کہا جائے۔ بعض لوگ آداب عرض کہتے ہیں، اگرچہ اس میں اتنی برائی نہیں مگر سنت کے خلاف ہے۔ بعض لوگ تسلیم یا تسلیمات عرض کہتے ہیں، اس کو سلام کہا جاسکتا ہے کہ یہ سلام ہی کے معنی میں ہے۔

(28) امدار مختار در رد المحتار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۸۶۔

(29) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۸۶۔

وسنن ابی داود، کتاب السلام، باب کراہیۃ أن یتقول علیک السلام، الحدیث: ۵۲۰۹، ج ۳، ص ۳۵۲۔

(30) ہزاریۃ ہامش علی الفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، نوع فی السلام، ج ۶، ص ۳۵۵۔

(31) سنن اترندی، کتاب الاستئذان والآداب، باب فی کراہیۃ إشارۃ الید بالسلام، الحدیث: ۲۷۰۴، ج ۳، ص ۳۱۹۔

بعض کہتے ہیں سلام۔ اس کو بھی سلام کہا جاسکتا ہے قرآن مجید میں ہے کہ ملائکہ جب ابراہیم علیہ السلام کی خدمت میں حاضر ہوئے۔ (فَقَالُوا سَلَامًا) (32) انھوں نے آکر سلام کہا، اس کے جواب میں حضرت ابراہیم علیہ السلام نے

(32) اسی حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

قسم سوم: زمین ہوتی بارے طاق رکوع کے قریب تک جھکنا منع ہے اس پر ۹۶۴ دو نص اور پر گزرے، تیس اور سینے۔

نص ۹۷: زہدی (۹۸) اس سے جامع الرموز ص ۵۳۵ (۹۹) اس سے رد المحتار جلد ۵ ص ۳۷۸ (۱۰۰) نیز شیخی زادہ علی الملتقی جلد ۲ ص ۵۲۰: الانحناء فی السلام الی قریب الركوع کالسجود اے۔ سلام میں رکوع کے قریب تک جھکنا بھی مثل سجدہ ہے۔

(۱) جامع الرموز کتاب الکراہیۃ ۳/۱۵ و مجمع الزہر ۲/۵۴۲

نص ۱۰۱: شرعۃ السدم (۱۰۲) اس کی شرح مفتاح الجنان ص ۳۱۲: (لا یقبلہ ولا ینحنی لہ) لکونہا مکروہین ۲۔ نہ دیر دے نہ جھکے کہ دونوں مکروہ ہیں۔ (۲) شرح شرعۃ الاسلام فصل فی سنن الشیخ وادابہ مکتبہ اسلامیہ کوئٹہ ص ۳۱۲

نص ۱۰۳: احیاء العلوم جلد ۲ ص ۱۲۲ (۱۰۴) اتحاف السادہ جلد ۶ ص ۲۸۱: (الانحناء عند السلام منہی عنہ) وهو عن فعل الاعاجم ۳۔ سلام کے وقت جھکنا منع فرمایا گیا اور وہ مجوسی کا فعل ہے۔

(۳) اتحاف السادۃ المتعین کتاب آداب الاخوة والصحة اباب الثالثہ ارا الفکر بیروت ۲/۲۸۱

(۱۰۵) عین العلم قلمی باب ثامن (۱۰۶) شرح علی قاری جلد اول ص ۲۷۴ (۱۰۷) ذخیرہ سے (۱۰۸) نیز محیط سے: (لا ینحلی) لان الانحناء یکرہ لسلطانین وغیرہم ولانہ صنیع اهل الکتاب ۲۔ سلام میں نہ جھکے کہ بادشاہ ہو یا کوئی کسی کے لئے جھکنے کی اجازت نہیں اور ایک وجہ ممانعت یہ ہے کہ وہ یہود و نصاریٰ کا فعل ہے۔

(۳) شرح عین العلم لملا علی قاری بحوالہ الحیط والذخیرۃ الباب الثامن امرت پریس، ہورس ۲/۲۱۳

نص ۱۰۹: حدیقہ ندیہ شرح طریقہ محمدیہ جلد اول ص ۳۸۱:

معلوم ان من لقی احدا من الاکابر فحنی لہ رأسہ او ظہرہ ولو بالغ فی ذلک فمرادہ التحیۃ والتعظیم دون العبادۃ فلا یکفر بہذا الصنیع وحال المسلم مشعر بذلک علی کل حال واما العبادۃ فلا یقصدھا الا کافر اصل فی الغالب ولكن لتعلق الموصول الی هذا المقدار من التذلل مذموم ولهذا جعلہ المصنف رحمہ اللہ تعالیٰ من استذل الحرام ولم یجعله کفرا اے۔

معلوم ہے کہ جو اکابر میں کسی سے ملنے وقت اس کے لئے سر یا پیٹھ جھکائے اگرچہ اس میں مباہلہ کرے اس کا ارادہ تحیت و تعظیم ہی کا ہوتا ہے نہ کہ اس کی عبادت کا تو اس فعل سے کافر نہ ہو جائیگا۔ بہر حال خود مسلمان کا حال اس نیت کو بتا رہا ہے عبادت کا ارادہ تو غائب وہی کرے گا جو سر سے کافر ہو۔ ہاں اتنی چالوسی جو اس حد کے ذلیل بننے تک پہنچا دے بد ہے اسی لئے جھکنے کو مصنف رحمہ اللہ تعالیٰ نے حرام کہا کفر نہ ٹھہرایا۔ (۱) عندیقہ اللہ یہ شرح الطریقہ محمدیہ وخلق الثانی عشر مکتبہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۱/۵۴۷

۱۔ حضرت عبداللہ بن عبدالمطلب (ؑ) نے سے سامیہ بنت جحش کی شادی کی جس جلد ۳۷ ص ۱۲۲ (۱۱۲) اس سے ہمارے ہاں

“الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدانا لهذا وَكُنَّا لَهُ مِنَ الْغَافِلِينَ”
 “الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَا يَفْعَلُهُ أَحَدٌ إِلَّا حَقًّا سَجُودًا وَلَا بَأْسًا، بِمَا نَقُصُّ مِنْ حَدِّ الرُّكُوعِ لَيْسَ بِكَرَّةٍ مِنْ أَهْلِ
 الْإِسْلَامِ”

مذہب تک پہنچنے کے لئے نہ جھگڑے جیسے سجدہ اور اس قدر سے کم میں حرج نہیں کہ کسی اسلامی عزت والے کے لئے جھگڑے۔

(۲) الحدیقۃ النہدیہ شرح الطریقۃ المحمدیہ بحوالہ ابن حجر فی فتاویٰ مکتبہ نوریہ رضویہ فیصل آباد (۱۳۷۵ھ)

اقول : هذا هو الجمع بين النصوص المتوافقة المتظافرة على المنع وبين مآلى الهندية عن الغرائب تجوز الخدمة الهندية عن الغرائب تجوز الخدمة لغير الله تعالى بالقيام واخذ اليمين والالحناء^٣ اه وقد اشاروا اليه في النصوص الاربعة التي صدرنا بها فتلك سبعة وبأنه التوفيق.

اقول: (میں کہتا ہوں) یہی جمع کرنا ہے (یعنی دونوں قولوں میں مواخذہ اور مطابقت پیدا کرنا) درمیان ان نصوص کثیرہ جو باہم ایک دوسرے کی مؤید ہیں اور اس قول کے درمیان جو فتویٰ عالمگیری میں فتویٰ غرائب سے منقول ہے کہ کسی مخلوق (یعنی غیر خدا) کی قیام مصارفہ کرنے اور جھگٹنے سے خدمت کرنا جائز ہے اھ بیشک انھوں (ائمہ کرام) نے اس کی طرف ان چار نصوص میں اشارہ فرمایا جن کو ہم پہلے لائے ہیں پس سات ہو گئیں اور اللہ تعالیٰ ہی کے کرم سے حصول توفیق ہے۔ (ت)

(۳) فتاویٰ ہندیہ کتاب النکاحیۃ الباب الثامن والعشرون نورانی کتب خانہ پشاور ۵ (۳۶۹)

نص ۱۱۳: واقعات امام باقری (۱۱۳) ملحوظ امام باقر الدین (۱۱۵) ان دونوں نصاب الاحتمال اول و آخر باب ۴۹ (۱۱۶)

جو اصرار خد ملی کتاب الاستمسان (۱۱۷) اس سے عالمگیری جلد ۵ ص ۳۶۹:

الانحناء للسلطان أو لغيره مكروه لأنه يشبه فعل الهجوس

بادشاہ ہو کوئی۔ اس کے لئے جھکنا منع ہے کہ یہ مجوس کے فعل سے مشابہ ہے۔

(۱) فتاویٰ ہندیہ کتاب الکراہیۃ الباب الثامن والعشرون نورانی کتب خانہ پشاور ۵/ ۳۶۹

نفس ۱۵۸: مجمع الاسماء جلد ۲، نفس ۵۲۱ (۱۱۹) تفصیل عبادی ہے:

يكره الانحناء لانه يشبه فعل المجوس^٢

جھکنا منع ہے کہ مجوسی کے فعل سے مشابہ ہے۔

(۲) مجمع الانهر بحوالہ فصول عمادی کتاب الکرامۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۴۴۲)

نفس ۱۲۰: جواب الرحمن (۱۲۱) اس سے شریعہ جلد اول ص ۳۱۸ (۱۲۲) محیط (۱۲۳) اس سے جامع الرموز ص ۵۳۵ (۱۲۴) ←

بعض لوگ اس قسم کے ہیں کہ وہ خود تو کیا سلام کریں گے، اگر ان کو سلام کیا جاتا ہے تو بگڑتے ہیں، کہتے ہیں کہ کیا ہمیں برابر کا سمجھ لیا ہے، یعنی کوئی غریب آدمی سلام مسنون کرے تو وہ اپنی کسر شان (یعنی اپنی بے عزتی) سمجھتے ہیں۔ اور بعض یہ چاہتے ہیں کہ انھیں آداب عرض کہا جائے یا جھک کر ہاتھ سے اشارہ کیا جائے اور بعض یہاں تک بے باک ہیں کہ یہ کہتے ہیں، کیا ہمیں دُھنا (یعنی روئی دھننے والا) جولاہا (یعنی کپڑا بننے والا) مقرر کر رکھا ہے؟ اللہ تعالیٰ ان کو ہدایت دے اور ان کی آنکھیں کھولے۔

مسئلہ ۳۳: کسی کے نام کے ساتھ علیہ السلام کہنا یہ انبیاء و ملائکہ علیہم السلام کے ساتھ خاص ہے، مثلاً موسیٰ علیہ السلام، عیسیٰ علیہ السلام، جبریل علیہ السلام، نبی اور فرشتہ کے سوا کسی دوسرے کے نام کے ساتھ یوں نہ کہا جائے۔
 مسئلہ ۳۴: اکثر جگہ یہ طریقہ ہے کہ چھوٹا جب بڑے کو سلام کرتا ہے تو وہ جواب میں کہتا ہے جیتے رہو۔ یہ سلام کا جواب نہیں ہے، بلکہ یہ جواب جاہلیت میں کفار دیا کرتے تھے۔ وہ کہتے تھے: حیالک اللہ۔ اسلام نے یہ بتایا کہ جواب میں وَعَلَيْكُمْ السَّلَام کہا جائے۔



اس سے رد المحتار جلد ۵ ص ۷۸: ۳

یکرہ الانحاء للسلطان وغیرہ ۳۔

بادشاہ ہو خواہ کوئی اس کے لئے جھکنا منع ہے۔

(۳) رد المحتار بحوالہ المحیط کتاب المحظر والاباحہ باب الاستبراء وغیرہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/ ۲۲۶

نص ۲۵: فتاویٰ کبریٰ لدیہ: الانحاء بالظہر یکرہ ۴۔ پیٹھ جھکانا مکروہ ہے۔

(۴) الفتاویٰ الکبریٰ لابن حجر مکی باب السیر دار الکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۲۳۷

نص ۲۶: عالمگیریہ جلد ۵ ص ۳۶۹ (۱۲۷) فتاویٰ امام ترمذی سے:

یکرہ الانحاء عند التحیۃ وبہ ورد النہی ۵۔

(۵) فتاویٰ ہندیہ بحوالہ الترمذی کتاب الکراہیۃ الباب الثامن والعشرون نورانی کتب خانہ پشاور ۵/ ۳۶۹

سلام کرتے جھکنا منع ہے حدیث میں اس سے ممانعت فرمائی ہے۔ (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۲، ص ۳۶۸، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵۴۰، ۵۴۱، ۵۴۲، ۵۴۳، ۵۴۴، ۵۴۵، ۵۴۶، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱۳۴۰، ۱۳۴۱، ۱۳۴۲، ۱۳۴۳، ۱۳۴۴، ۱۳۴۵، ۱۳۴۶، ۱۳۴۷، ۱۳۴۸، ۱۳۴۹، ۱۳۵۰، ۱۳۵۱، ۱۳۵۲، ۱۳۵۳، ۱۳۵۴، ۱۳۵۵، ۱۳۵۶، ۱۳۵۷، ۱۳۵۸، ۱۳۵۹، ۱۳۶۰، ۱۳۶۱، ۱۳۶۲، ۱۳۶۳، ۱۳۶۴، ۱۳۶۵، ۱۳۶۶، ۱۳۶۷، ۱۳۶۸، ۱۳۶۹، ۱۳۷۰، ۱۳۷۱، ۱۳۷۲، ۱۳۷۳، ۱۳۷۴، ۱۳۷۵، ۱۳۷۶، ۱۳۷۷، ۱۳۷۸، ۱۳۷۹، ۱۳۸۰، ۱۳۸۱، ۱۳۸۲، ۱۳۸۳، ۱۳۸۴، ۱۳۸۵، ۱۳۸۶، ۱۳۸۷، ۱۳۸۸، ۱۳۸۹، ۱۳۹۰، ۱۳۹۱، ۱۳۹۲، ۱۳۹۳، ۱۳۹۴، ۱۳۹۵، ۱۳۹۶، ۱۳۹۷، ۱۳۹۸، ۱۳۹۹، ۱۴۰۰، ۱۴۰۱، ۱۴۰۲، ۱۴۰۳، ۱۴۰۴، ۱۴۰۵، ۱۴۰۶، ۱۴۰۷، ۱۴۰۸، ۱۴۰۹، ۱۴۱۰، ۱۴۱۱، ۱۴۱۲، ۱۴۱۳، ۱۴۱۴، ۱۴۱۵، ۱۴۱۶، ۱۴۱۷، ۱۴۱۸، ۱۴۱۹، ۱۴۲۰، ۱۴۲۱، ۱۴۲۲، ۱۴۲۳، ۱۴۲۴، ۱۴۲۵، ۱۴۲۶، ۱۴۲۷، ۱۴۲۸، ۱۴۲۹، ۱۴۳۰، ۱۴۳۱، ۱۴۳۲، ۱۴۳۳، ۱۴۳۴، ۱۴۳۵، ۱۴۳۶، ۱۴۳۷، ۱۴۳۸، ۱۴۳۹، ۱۴۴۰، ۱۴۴۱، ۱۴۴۲، ۱۴۴۳، ۱۴۴۴، ۱۴۴۵، ۱۴۴۶، ۱۴۴۷، ۱۴۴۸، ۱۴۴۹، ۱۴۵۰، ۱۴۵۱، ۱۴۵۲، ۱۴۵۳، ۱۴۵۴، ۱۴۵۵، ۱۴۵۶، ۱۴۵۷، ۱۴۵۸، ۱۴۵۹، ۱۴۶۰، ۱۴۶۱، ۱۴۶۲، ۱۴۶۳، ۱۴۶۴، ۱۴۶۵، ۱۴۶۶، ۱۴۶۷، ۱۴۶۸، ۱۴۶۹، ۱۴۷۰، ۱۴۷۱، ۱۴۷۲، ۱۴۷۳، ۱۴۷۴، ۱۴۷۵، ۱۴۷۶، ۱۴۷۷، ۱۴۷۸، ۱۴۷۹، ۱۴۸۰، ۱۴۸۱، ۱۴۸۲، ۱۴۸۳، ۱۴۸۴، ۱۴۸۵، ۱۴۸۶، ۱۴۸۷، ۱۴۸۸، ۱۴۸۹، ۱۴۹۰، ۱۴۹۱، ۱۴۹۲، ۱۴۹۳، ۱۴۹۴، ۱۴۹۵، ۱۴۹۶، ۱۴۹۷، ۱۴۹۸، ۱۴۹۹، ۱۵۰۰، ۱۵۰۱، ۱۵۰۲، ۱۵۰۳، ۱۵۰۴، ۱۵۰۵، ۱۵۰۶، ۱۵۰۷، ۱۵۰۸، ۱۵۰۹، ۱۵۱۰، ۱۵۱۱، ۱۵۱۲، ۱۵۱۳، ۱۵۱۴، ۱۵۱۵، ۱۵۱۶، ۱۵۱۷، ۱۵۱۸، ۱۵۱۹، ۱۵۲۰، ۱۵۲۱، ۱۵۲۲، ۱۵۲۳، ۱۵۲۴، ۱۵۲۵، ۱۵۲۶، ۱۵۲۷، ۱۵۲۸، ۱۵۲۹، ۱۵۳۰، ۱۵۳۱، ۱۵۳۲، ۱۵۳۳، ۱۵۳۴، ۱۵۳۵، ۱۵۳۶، ۱۵۳۷، ۱۵۳۸، ۱۵۳۹، ۱۵۴۰، ۱۵۴۱، ۱۵۴۲، ۱۵۴۳، ۱۵۴۴، ۱۵۴۵، ۱۵۴۶، ۱۵۴۷، ۱۵۴۸، ۱۵۴۹، ۱۵۵۰، ۱۵۵۱، ۱۵۵۲، ۱۵۵۳، ۱۵۵۴، ۱۵۵۵، ۱۵۵۶، ۱۵۵۷، ۱۵۵۸، ۱۵۵۹، ۱۵۶۰، ۱۵۶۱، ۱۵۶۲، ۱۵۶۳، ۱۵۶۴، ۱۵۶۵، ۱۵۶۶، ۱۵۶۷، ۱۵۶۸، ۱۵۶۹، ۱۵۷۰، ۱۵۷۱، ۱۵۷۲، ۱۵۷۳، ۱۵۷۴، ۱۵۷۵، ۱۵۷۶، ۱۵۷۷، ۱۵۷۸، ۱۵۷۹، ۱۵۸۰، ۱۵۸۱، ۱۵۸۲، ۱۵۸۳، ۱۵۸۴، ۱۵۸۵، ۱۵۸۶، ۱۵۸۷، ۱۵۸۸، ۱۵۸۹، ۱۵۹۰، ۱۵۹۱، ۱۵۹۲، ۱۵۹۳، ۱۵۹۴، ۱۵۹۵، ۱۵۹۶، ۱۵۹۷، ۱۵۹۸، ۱۵۹۹، ۱۶۰۰، ۱۶۰۱، ۱۶۰۲، ۱۶۰۳، ۱۶۰۴، ۱۶۰۵، ۱۶۰۶، ۱۶۰۷

مصافحہ و معانقہ و بوسہ و قیام کا بیان

احادیث

حدیث ۱: امام احمد و ترمذی و ابن ماجہ نے براء بن عازب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب دو مسلمان مل کر مصافحہ کرتے ہیں تو جدا ہونے سے پہلے ہی ان کی مغفرت ہو جاتی ہے۔ (1)

اور ابو داؤد کی روایت میں ہے، جب دو مسلمان ملیں اور مصافحہ کریں اور اللہ (عز و جل) کی حمد کریں اور استغفار کریں تو دونوں کی مغفرت ہو جائے گی۔ (2)

(1) سنن الترمذی، کتاب الاستئذان...، باب ماجاء فی المصافحہ، الحدیث: ۲۷۳۶، ج ۲، ص ۳۳۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ مصافحہ بنا ہے صلح سے بمعنی کشادگی و چوڑائی اس سے دروازے کے تختوں کو مصافح الباب کہتے ہیں اور تلوار کی چوڑائی کو صلح السیف کہتے ہیں۔ مصافحہ کے معنی ہیں ہاتھ کی چوڑائی یعنی ہتھیلی کو دوسرے کی ہتھیلی سے ملانا، معانقہ بنا ہے عنق سے بمعنی گردن اور گلہ، معانقہ کے معنی ہیں کسی کو گلے لگانا۔ مصافحہ معانقہ کے متعلق چند مسائل یاد رکھو: (۱) مصافحہ دونوں ہاتھوں سے چاہیے صرف ایک ہاتھ سے نہ کرے (۲) مصافحہ کرتے وقت ہاتھوں کو بلانا چاہیے (۳) نماز جمعہ یا نماز فجر کے بعد مصافحہ کرنا اگرچہ سنت نہیں مگر درست ہے بلکہ اس کی اصل سنت سے ثابت ہے (۴) اجنبی جو ان عورت سے مرد کو مصافحہ کرنا حرام ہے (۵) اپنی محرم یا بہت بوڑھی عورت سے مصافحہ جائز ہے، حضرت ابو بکر صدیق اپنے زمانہ خلافت میں اپنی دودھ کی ماں سے مصافحہ کرتے تھے، حضرت عبداللہ ابن زبیر مکہ معظمہ میں ایک بوڑھی عورت کی اپنے ہاتھ سے خدمت کرتے تھے (۶) خوبصورت امرد لڑکے سے مصافحہ کرنا جائز نہیں (۷) علماء مشائخ کے ہاتھ پاؤں چومنا جائز ہے، حضرات صحابہ نے حضور کے پاؤں چومے ہیں (۸) جو شخص اپنے کو لوگوں سے چوموائے اور چومنے کے لیے کہے، تلمذ یا صراحتہ اس کے ہاتھ چومنا منع ہے (۹) مصافحہ کر کے اپنے ہاتھ چومنا منع ہے (۱۰) بچوں کو چومنا جائز ہے (۱۱) ننگے بدن معانقہ کرنا حرام ہے، ہاں کپڑے پہنے ہوئے معانقہ کرنا جائز ہے مگر مرد مرد سے معانقہ کریں، عورتیں عورتوں سے، مرد عورت سے اور امرد لڑکوں سے معانقہ نہ کریں (۱۲) اپنی اولاد کا سر چومنا جائز ہے، حضور صلی اللہ علیہ وسلم جناب فاطمہ زہرا کو چومتے تھے اور فرماتے تھے کہ میں ان کے جسم سے جنت کی خوشبو پاتا ہوں، یہ تمام مسائل اشعۃ اللمعات میں ہیں (۱۳) کسی کو سجدہ کرنا، اس کے آگے کی زمین چومنا حرام ہے، یوں ہی سام میں تاحد رکوع جھکنہ حرام ہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۵۱۴)

(۲) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی المصافحہ، الحدیث: ۵۲۱۱، ج ۲، ص ۴۵۳.

حدیث ۲: بیہقی نے شعب الایمان میں براء بن عازب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص دوپہر سے پہلے چار رکعتیں (نماز چاشت) پڑھے تو گویا اس نے شب قدر میں پڑھیں اور دو مسلمان مصافحہ کریں تو کوئی گناہ باقی نہ رہے گا، مگر جھڑ جائے گا۔ (3)

حدیث ۳: صحیح بخاری میں قتادہ سے روایت ہے، کہتے ہیں میں نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے دریافت کیا کیا اصحاب رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میں مصافحہ کا دستور تھا؟ کہا: ہاں۔ (4)

حدیث ۴: امام مالک نے عطاء خراسانی سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: آپس

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ مصافحہ سے گناہ صغیرہ جو ہاتھ سے کیے گئے معاف ہو جاتے ہیں، گناہ کبیرہ اور حقوق العباد معاف نہیں ہوتے۔ ابوالشیخ نے بروایت حضرت عمر مرفوعاً حدیث نقل کی فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے کہ دو مسلمان جب مصافحہ کرتے ہیں تو اللہ تعالیٰ کی سورتیں اترتی ہیں نوے رحمتیں مصافحہ کی ابتداء کرنے والے پر اور دس رحمتیں دوسرے پر۔ (مرقات)

۲۔ یعنی مصافحہ کرتے وقت دونوں صاحب پہلے تو اللہ کی حمد اس کا شکر کریں کہ اس نے ان کو اسلام کی برکت سے بھائی بھائی بنا دیا پھر ہر شخص دونوں کے لیے دعائے مغفرت کرے کہ کہے غفر اللہ لنا ولكم، بعض لوگ اس وقت درود شریف پڑھتے ہیں یہ بھی اچھا ہے کہ حضور کی سنت ادا کرتے وقت حضور پر درود شریف پڑھیں جن کے صدقہ میں یہ سنت ملی۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۱۶)

(3) شعب الایمان، باب فی مقاربتہ وموادۃ اہل الدین، فصل فی المصافحہ... إلخ، الحدیث: ۸۹۵۵، ج ۶، ص ۷۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی نماز چاشت جس کا وقت شروع چہارم دن سے شروع ہو کر نصف دن یعنی دوپہر پر ختم ہو جاتا ہے اس کے بڑے فضائل ہیں۔
۲۔ کیونکہ ان کے پڑھنے میں مشقت و محنت زیادہ ہے کہ دوپہر کی گرمی اور بھوک کی حالت میں پڑھی جاتی ہے، نیز اس وقت کھانا کھا کر آرام کرنے کو دل چاہتا ہے اس لیے ان کا ثواب زیادہ ہے۔

۳۔ یعنی گناہ صغیرہ جھڑ جاتے ہیں خصوصاً وہ گناہ جو ہاتھوں سے کیے جاویں، گناہ کبیرہ توبہ سے اور حقوق العباد ادا کرنے سے معاف ہو سکتے ہیں۔ اس کا مطلب یہ نہیں کہ چوری ذکیتی کر لی جاوے کسی کا مال مار لیا جاوے بعد میں کسی سے مصافحہ کر لیا جاوے سب معاف ہو۔
نعمذ باللہ! (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۳۱)

(4) صحیح البخاری، کتاب الاستئذان باب المصافحہ، الحدیث: ۶۲۶۳، ج ۴، ص ۱۷۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی بوقت ملاقات مصافحہ کرنا سنت صحابہ ہے بلکہ سنت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۴)

میں مصافحہ کرو، دل کی کپٹ جاتی رہے گی (یعنی کینہ ختم ہو جائے گا) اور باہم ہدیہ کرو، محبت پیدا ہوگی اور عداوت نکل جائے گی۔ (5)

حدیث ۵: امام احمد نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب دو مسلمانوں نے ملاقات کی اور ایک نے دوسرے کا ہاتھ پکڑ لیا (مصافحہ کیا) تو اللہ تعالیٰ کے ذمہ میں یہ حق ہے کہ ان کی دعا کو حاضر کر دے اور ہاتھ جدا نہ ہونے پائیں گے کہ ان کی مغفرت ہو جائے گی اور جو لوگ جمع ہو کر اللہ تعالیٰ کا ذکر کرتے ہیں اور سوا رضائے الہی کے ان کا کوئی مقصد نہیں ہے تو آسمان سے منادی ندا دیتا ہے کہ کھڑے ہو جاؤ! تمہاری مغفرت ہو گئی، تمہارے گناہوں کو نیکیوں سے بدل دیا گیا۔ (6)

حدیث ۶: طبرانی نے سلمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: مسلمان جب اپنے مسلمان بھائی سے ملے اور ہاتھ پکڑے (مصافحہ کرے) تو ان دونوں کے گناہ ایسے گرتے ہیں جیسے تیز آندھی کے دن میں خشک درخت کے پتے اور ان کے گناہ بخش دیے جاتے ہیں، اگرچہ سمندر کی جھاگ برابر ہوں۔ (7)

حدیث ۷: ابن النجار نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو مسلمان اپنے بھائی سے مصافحہ کرے اور کسی کے دل میں دوسرے سے عداوت نہ ہو تو ہاتھ جدا ہونے سے پہلے اللہ تعالیٰ دونوں کے گزشتہ گناہوں کو بخش دے گا اور جو شخص اپنے بھائی کی طرف نظر محبت سے دیکھے، اس کے دل یا سینے میں عداوت نہ ہو تو نگاہ لوٹنے سے پہلے دونوں کے گزشتہ گناہ بخش دیے جائیں گے۔ (8)

(5) اسوط اللام مالک، کتاب حسن الخلق، باب ما جاء فی المصافحۃ، الحدیث: ۱۷۳۱، ج ۲، ص ۲۰۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ عطاء ابن عبد اللہ ابی مسلم ہیں، بطنی ہیں، خراسانی ہیں، تابعی شام میں قیام رکھا، ۵۰ ہجری میں پیدائش ہے، ۱۳۵ھ ایک سو پینتیس میں وفات پائی، آپ سے امام مالک، اوزاعی شعبہ وغیرہم نے روایات لی ہیں۔

۲۔ یہ دونوں عمل بہت ہی مجرب ہیں جس سے مصافحہ کرتے رہو اس سے دشمنی نہیں ہوتی، اگر اتفاقاً کبھی ہو بھی جائے تو اس کی برکت سے ٹھہرتی نہیں، یوں ہی ایک دوسرے کو ہدیہ دینے سے عداوتیں ختم ہو جاتی ہیں، یہ حدیث بہت اسنادوں سے مختلف طریقہ سے مروی ہے، دیکھو مرقات یہ اسی مقام۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۳۰)

(6) المسند للإمام أحمد بن حنبل، الحدیث: ۱۲۳۵۶، ۱۲۳۵۷، ج ۳، ص ۲۸۶۔

(7) المعجم الکبیر، الحدیث: ۶۱۵۰، ج ۶، ص ۲۵۶۔

(8) کنز العمال، کتاب الصوبۃ، رقم: ۲۵۳۵۸، ج ۹، ص ۵۷۔

حدیث ۸: امام احمد و ترمذی نے ابو امامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ مریض کی پوری عیادت یہ ہے کہ اس کی پیشانی یا ہاتھ پر ہاتھ رکھ کر پوچھے کہ مزاجِ نسیا ہے اور پورنی تھیت یہ ہے کہ مصافحہ کیا جائے۔ (9)

حدیث ۹: ترمذی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ ایک شخص نے عرض کی یا رسول اللہ (ص) تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم! کوئی شخص اپنے بھائی یا دوست سے ملاقات کرنے کو کیا اس کے لیے جھک جائے؟ فرمایا: نہیں۔ اس نے کہا، تو کیا اس سے چیٹ جائے اور بوسہ لے؟ فرمایا: نہیں۔ اس نے کہا، تو کیا اس کا ہاتھ پکڑ کر مصافحہ کرے؟ فرمایا: ہاں۔ (10)

حدیث ۱۰: ابو داؤد نے روایت کی، کہ ایک شخص نے ابو ذر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے پوچھا، کیا تم لوگ جب حضور

(9) سنن اترمدی، کتاب الاستئذان...، باب ماجاء فی المصافحہ، الحدیث: ۲۷۴۰، ج ۲، ص ۳۳۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جب کوئی شخص کسی بیمار کی مزاج پرسی کرنے جاوے تو اپنا ہاتھ اس کے سر یا ہاتھ پر رکھے پھر زبان سے یہ کہے اس سے بیمار کو تسلی ہوتی ہے مگر بہت دیر تک ہاتھ نہ رکھے رہے یہ ہاتھ رکھنا اظہارِ محبت کے لیے ہے۔

۲۔ بوقت ملاقات صرف سلام کرنا ادنیٰ درجہ ہے اور معافہ کرنا انتہائی حالت ہے، ہر وقت معافہ تکلیف کا باعث ہے، درمیانی حالت یہ ہے کہ بوقت ملاقات سلام بھی کرے مصافحہ بھی اور درمیانی حالت ہمیشہ اچھی ہوتی ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۰۸)

(10) لریج السابق، الحدیث: ۲۷۳۷، ج ۲، ص ۳۳۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ کیونکہ جھکنا رکوع ہے، در غیر خدا کو جیسے سجدہ کرنا حرام ہے ایسے ہی رکوع کرنا بھی حرام ہے۔ خیال رہے کہ جھکنا جب ممنوع ہے جب کہ تعظیم کے لیے ہو، اگر جھکنا کسی اور کام کے لیے ہو اور وہ کام تعظیم کے لیے ہو تو جائز جیسے کسی کے جوتے سیدھے کرنے یا اس کا ہاتھ پاؤں چومنے کے لیے جھکنا ممنوع نہیں کہ یہ جھکنا اور کاموں کے لیے ہے۔

۲۔ لپٹنے اور چومنے کی ممانعت کی چند وجہیں ہو سکتی ہیں: ہر ایک سے معافہ کرنا، ہر ایک کے ہاتھ پاؤں چومنا منع ہے، خاص بزرگوں کی دست و پاؤں اور خاص پیاروں کو گلے لگانا جائز ہے یا دنیا داروں مالداروں سے خوشامد کے لیے لپٹنا، ان کے ہاتھ پاؤں چومنا درست نہیں لہذا یہ حدیث، من، حدیث کے خلاف نہیں جن میں معافہ اور دست و پاؤں کا ثبوت ہے، حضور نے بعض صحابہ سے معافہ کیا ہے اور صحابہ

نے حضور کے ہاتھ پاؤں چومے ہیں۔ (مرقات، لمعات، اشعد)

۳۔ یعنی مصافحہ کرنا ہر مسلمان سے سنت ہے بوقت ملاقات مصافحہ کرے بوقت وداع نہ کرے کہ وداع کے وقت مصافحہ کرنے سے محبت

کھتی ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۱۷)

(صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) سے ملتے تھے تو حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) تم سے مصافحہ کرتے تھے؟ انھوں نے کہا: میں نے جب کبھی ملاقات کی حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے مصافحہ کیا۔ ایک دن حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے آدمی بھیجا، میں گھر پر موجود نہ تھا، جب آیا تو مجھے مطلع کیا گیا میں حاضر ہوا، اس وقت حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) تخت پر تھے، مجھے چٹا لیا تو یہ خوب ہی اچھا تھا، خوب اچھا۔ (11)

حدیث ۱۱: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہتے ہیں میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ساتھ حضرت فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے گھر گیا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے حضرت حسن رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو دریافت کیا، کہ وہ یہاں ہیں؟ تھوڑی دیر بعد وہ دوڑتے ہوئے آئے اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے انھیں گلے لگایا اور وہ بھی چپٹ گئے۔ پھر فرمایا: اے اللہ (عزوجل)! میں اسے محبوب رکھتا ہوں تو بھی اسے محبوب رکھ اور اسے محبوب بنالے جو اسے محبوب رکھے۔ (12)

حدیث ۱۲: امام احمد نے یعلیٰ ارضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں: حضرت حسن و حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہما دوڑ کر رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں آئے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے انھیں چپٹ لیا اور فرمایا: اولاد بخل اور بزدلی کا سبب ہوتی ہے۔ (13)

حدیث ۱۳: ترمذی نے أم المؤمنین عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ زید بن حارثہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جب مدینہ میں آئے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) میرے مکان میں تشریف فرما تھے۔ انھوں نے آکر دروازہ کھٹکھٹایا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کپڑا گھسیٹتے ہوئے برہنہ یعنی بغیر چادر اوڑھے ہوئے چل دیے۔ واللہ! میں

(11) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی العائقة، الحدیث: ۵۲۱۳، ج ۳ ص ۵۳.

(12) صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل الحسن و الحسین رضی اللہ عنہما، الحدیث: ۵۷۔ (۲۲۲۱)، ص ۳۱۹.

(13) المسند للإمام أحمد بن حنبل، حدیث یعلیٰ بن مرة الثقفی، الحدیث: ۱۷۵۷۳، ج ۶، ص ۱۷۸.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہاں یعنی ابن مرہ مراد نہیں بلکہ یعلیٰ ابن اسیر مراد ہیں جو فتح مکہ کے دن ایمان لائے اور غزوہ حنین، طائف، تبوک میں حاضر ہوئے، جنگ صفین میں حضرت علی کے ساتھ رہے اسی میں شہید ہوئے رضی اللہ عنہ، آپ سے بہت حضرات نے روایات لیں۔ (مرقات)

۲۔ اور ادا کو محسن مغل فرمانا ان کی برائی کے لیے نہیں بلکہ انتہائی محبت کے اعجاز کے لیے ہے یعنی اولاد کی انتہائی محبت انسان کو بخیل و بزدل بن جانے پر مجبور کر دیتی ہے۔ یہ بات فطری ہے اگرچہ اللہ والوں میں اس کا ظہور کم ہوتا ہے مؤمن کو اللہ رسول بہتقہ بد اولاد پیارے ہوتے ہیں لایؤمن احدکم حتیٰ اکون احب الیہ الخ۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۲۹)

نے کبھی اس کے پہلے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو برہنہ یعنی بغیر چادر اوڑھے کسی کے پاس جاتے نہیں دیکھا تھا اور نہ اس کے بعد کبھی اس طرح دیکھا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے انھیں گلے لگایا اور بوسہ دیا۔ (14)

حدیث ۱۴: ابو داؤد نے اسید بن حضیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ ایک انصاری شخص جن کی طبیعت میں مزاج تھا، وہ باتیں کر رہے تھے اور لوگوں کو ہنسارہے تھے۔ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ایک لکڑی سے ان کی کمر میں کوئی دیا۔ انھوں نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) سے عرض کی، مجھے اس کا بدلہ دیجیے۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: بدلہ لے لو۔ انھوں نے کہا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) تمہیں پہنے ہوئے ہیں، میرے بدن پر قمیص نہیں ہے۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے قمیص ہٹادی، وہ چیٹ گئے اور پہلو کو بوسہ دیا اور یہ کہا کہ میرا مقصد یہی تھا۔ (15) (بدلہ لینا مقصود نہ تھا)

حدیث ۱۵: ابو داؤد و بیہقی نے عامر شعبی سے مرسل روایت کی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے جعفر بن ابی طالب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا استقبال کیا اور ان سے معانقہ فرمایا اور دونوں آنکھوں کے درمیان میں بوسہ دیا۔ (16)

حدیث ۱۶: ابو داؤد نے زارع رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ جب قبیلہ عبدالقیس کا وفد حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی خدمت میں آیا تھا، یہ بھی اس وفد میں تھے، یہ کہتے ہیں جب ہم مدینہ میں پہنچے، اپنی منزلوں سے جلدی جلدی حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی خدمت میں حاضر ہوتے اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کے دست مبارک اور پائے مبارک کو بوسہ دیتے۔ (17)

(14) سنن الترمذی، کتاب الاستئذان، باب ما جاء فی المعانقۃ والقبلة، الحدیث: ۲۷۴۱، ج ۲، ص ۳۳۵۔

(15) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی قبلة الجسد، الحدیث: ۵۲۴۴، ج ۳، ص ۴۵۶۔

(16) المرجع السابق، باب فی قبلة ما بین العینین، الحدیث: ۵۲۴۰، ج ۳، ص ۴۵۵۔

(17) المرجع السابق، باب قبلة الرجل، الحدیث: ۵۲۲۵، ج ۳، ص ۴۵۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ زارع، بن عامر ابن عبدالقیس ہیں، عبدالقیس قبیلہ کے وفد میں آپ بھی حاضر بارگاہ ہوئے تھے ایمان لائے، صحابی بنے، بھرہ میں قیام رہا۔ (مرقات)

۲۔ یعنی جب مدینہ پہنچے تو شوق و محبت میں بے خود ہو گئے اپنی سواریوں سے جلد جلد اتر کر حضور انور کی طرف دوڑنے لگے زیارت کے لیے، آج بھی حجاج جب مدینہ منورہ پہنچتے ہیں تو انہیں سامان رکھنا مشکل پڑ جاتا ہے یہ تڑپ وہ جانے جس کے دل سے لگی ہو۔ اسی وفد میں ایک صاحب تھے جن کا نام تھا وحش یہ سردار قافلہ تھے، یہ اپنی سواری سے اترے، غسل کیا، سفید عمدہ لباس پہنا، پھر مسجد شریف میں کھڑو رکعت نفل ادا کی، پھر نہایت ادب و انکسار خشوع و خضوع سے بارگاہ یکس پناہ میں حاضر ہوئے حضور انور ان کے کس ادب سے بہت

حدیث ۱۷: ابو داؤد نے ام المؤمنین عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ حضرت فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا جب حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی خدمت میں حاضر ہوتیں تو حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) ان کی طرف کھڑے ہو جاتے اور ان کا ہاتھ پکڑتے اور ان کو بوسہ دیتے پھر اپنی جگہ بٹھاتے اور جب حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) ان کے یہاں تشریف لے جاتے تو وہ کھڑی ہو جاتیں اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کا ہاتھ پکڑ لیتیں اور بوسہ دیتیں اور اپنی جگہ پر بٹھاتیں۔ (18)

حدیث ۱۸: ابو داؤد نے براء رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ جب ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ شروع شروع مدینہ میں آئے تھے میں ان کے ساتھ ان کے یہاں گیا۔ حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا بخار میں لیٹی ہوئی تھیں، حضرت ابو بکر ان کے پاس گئے اور پوچھا بیٹی کیسی ہو اور ان کے رخسارہ پر بوسہ دیا۔ (19)

خوش ہوئے اور فرمایا کہ تمہاری دو خصلتیں اللہ کو بڑی پیاری ہیں: ایک علم، دوسرے وقار۔ (اشعر)

۳۔ اس سے معلوم ہوا کہ بزرگوں کے ہاتھ پاؤں دونوں چومنا جائز بلکہ مستحب ہے خواہ پاؤں پر ہاتھ رکھ کر ہاتھوں کو چومے خواہ پاؤں پر منہ رکھ کر چومے دوسرے معنی زیادہ ظاہر ہیں کیونکہ مصافحہ کر کے اپنا ہاتھ چومنا منع ہے، بزرگوں کے ہاتھ اپنے منہ سے چومے ایسے ہی ان کے پاؤں اپنے منہ سے چومے آنکھیں ان کے قدموں سے ملے۔ مبارک ہیں وہ ہونٹ اور آنکھیں جو حضور کے قدم شریف سے لگ جاویں۔ شعر

اشارہ آپ کا پاتے ہم آتے اپنی آنکھوں سے

تم آتے خواب میں ہم پتلیاں قدموں سے مل لیتے

پاؤں کو سجدہ سمجھنا جہالت ہے، سجدہ میں سات اعضاء زمین پر لگنا اور سجدہ کی نیت ہونا ضروری ہے قدم بوسی میں یہ کچھ نہیں ہوتا۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۲۵)

(18) المرجع السابق، باب فی القیام، الحدیث: ۵۲۱۷، ج ۴، ص ۴۵۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۲۔ حضرت فاطمہ زہرا کے لیے حضور کا کھڑا ہونا تعظیم کا نہ تھا کہ تعظیم اپنے سے بڑے کی ہوتی ہے بلکہ خوشی کا قیام تھا ایسے ہی یہ بوسہ محبت و پیار کا تھا۔ ساری اولاد میں حضور کو جناب فاطمہ زہرا بہت پیاری تھیں کہ سب سے چھوٹی تھیں اور آپ کی والدہ جناب خدیجہ آپ کے ٹوکین میں وفات پا گئی تھیں تو آپ حضور کی گود میں حضور کی آغوش میں پلیں رضی اللہ تعالیٰ عنہا۔

۳۔ حضرت خاتون جنت کا یہ قیام وغیرہ حضور کی تعظیم کے لیے تھا جس میں محبت و جوش کی چاشنی تھی۔ معلوم ہوا کہ تعظیم کے لیے قیام سنت فاطمہ زہرا ہے اور خوشی کے لیے قیام سنت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم۔ معلوم ہوا کہ جوان بیٹی کو چومنا اور جوان بیٹی کا اپنے باپ کو چومنا جائز ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۲۶)

(19) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی قبلۃ الخد، الحدیث: ۵۲۲۲، ج ۴، ص ۴۵۵۔

حدیث ۱۹: ترمذی نے صفوان بن عسال رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ دو ۲ یہودی حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی خدمت میں حاضر ہوئے اور یہ سوال کیا کہ کھلی ہوئی نو ۹ نشانیاں کیا ہیں؟ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: اللہ (عزوجل) کے ساتھ کسی کو شریک نہ کرو۔ (۱) اور چوری نہ کرو۔ (۲) اور زنا نہ کرو۔ (۳) اور جس جان کو اللہ (عزوجل) نے حرام کیا ہے اسے ناحق قتل نہ کرو۔ (۴) اور جو جرم سے بری ہو اسے بادشاہ کے پاس قتل کے لیے نہ لے جاؤ۔ (۵) اور جادو نہ کرو۔ (۶) اور سود نہ کھاؤ۔ (۷) اور عقیقہ (پاکدامن عورت) پر زنا کی تہمت نہ دھرو۔ (اور لڑائی کے دن مونہ پھیر کر نہ بھاگو اور خاص تم یہودی ہفتہ کے متعلق حد سے تجاوز نہ کرو۔ جب حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے یہ فرمایا تو انھوں نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کے ہاتھوں اور قدموں کو بوسہ دیا۔ (20)

حدیث ۲۰: ابوداؤد نے عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی کہتے ہیں کہ ہم حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کے قریب گئے اور ہاتھ کو بوسہ دیا۔ (21)

حدیث ۲۱: صحیح بخاری و مسلم میں ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ جب بنی قریظہ (یہودیوں کے ایک قبیلے کا نام ہے) اپنے قلعہ سے سعد بن معاذ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حکم پر اترے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے سعد رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس آدی بھیجا اور وہ وہاں سے قریب میں تھے۔ جب مسجد کے قریب آگئے، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے انصار سے فرمایا: اپنے سردار کے پاس اٹھ کر جاؤ۔ (22)

(20) سنن الترمذی، کتاب الاستخار، باب ما جاء فی قبلة الیہ والرجل، الحدیث: ۲۷۴۲، ج ۴، ص ۳۳۵۔

(21) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی قبلة الیہ، الحدیث: ۵۲۲۳، ج ۴، ص ۴۵۶۔

(22) صحیح البخاری، کتاب الجہاد، باب اذا نزل العدو علی حکم رجل، الحدیث: ۳۰۴۳، ج ۲، ص ۳۲۲۔

د کتاب المغازی، باب مرجع النبی صلی اللہ علیہ وسلم من الاحزاب... إلخ، الحدیث: ۴۱۲۱، ج ۳، ص ۵۶۔

صحیح مسلم، کتاب الجہاد... إلخ، باب جواز قتال من نقض العهد... إلخ، الحدیث: ۶۴- (۱۷۶۸)، ص ۹۷۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

غزوہ خندق جسے احزاب بھی کہتے ہیں اس میں یہود مدینہ یعنی بنی قریظہ اور بنی نضیر کا ہاتھ تھا انہوں نے حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم سے غداری کر کے کفار مکہ سے مدینہ پر چڑھائی کرائی تھی، حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے اس غزوہ سے فارغ ہو کر پچیس دن بنی قریظہ کا محصرہ رکھا یہ لوگ تنگ آ کر بولے کہ ہم سعد ابن معاذ کے فیصلہ پر راضی ہیں۔ ہمارے متعلق جو فیصلہ کریں ہم کو منظور ہے یہ سن کر حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت سعد ابن معاذ کو بلوایا تا کہ وہ اپنا فیصلہ دیں یہاں وہ واقعہ مذکور ہے۔

۲۔ حضرت سعد ابن معاذ اس غزوہ خندق میں زخمی ہو گئے تھے زخم سے خون جاری تھا حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے بلانے پر خون ←

حدیث ۲۲: بیہقی نے شعب الایمان میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مسجد میں بیٹھ کر ہم سے باتیں کرتے جب حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کھڑے ہوتے ہم بھی کھڑے ہو جاتے اور اتنی دیر کھڑے رہتے کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کو دیکھ لیتے کہ بعض ازواج مطہرات کے مکان میں تشریف لے گئے۔ (23)

حدیث ۲۳: ترمذی و ابوداؤد نے معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

قدرتی طور پر بند ہو گیا تھا۔ (اشعہ)

۳۔ یہاں مسجد سے مراد مسجد نبوی شریف نہیں ہے بلکہ وہ جگہ ہے جہاں حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم اس محاصرہ کے زمانہ میں نماز پڑھتے تھے کیونکہ اس وقت حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم بنی قریظہ کے محکمہ کے ارد گرد مسلمانوں کے لشکر کے ساتھ ان کا محاصرہ کیے ہوئے تھے وہاں حضرت سعد بلائے گئے تھے۔ (مرقات)

۴۔ اس فرمان عالی میں حضور انور نے تمام انصار کو دو حکم دیئے: ایک حضرت سعد کی تعظیم کے لیے کھڑا ہونا، دوسرے ان کے استقبال کے لیے کچھ آگے جانا ان کو لے کر آنا بزرگوں کی آمد پر یہ دونوں کام یعنی تعظیسی قیام اور استقبال جائز بلکہ سنت صحابہ ہیں بلکہ حضور کی سنت قولی بھی اس سے الی سید کم فرمایا جس سے معلوم ہوا کہ یہ حکم حضرت سعد کی بیماری کی وجہ سے تھا تا کہ لوگ انہیں سواری سے اتار لادیں مگر یہ درست نہیں ورنہ صرف ایک دو آدمیوں کو کہا جاتا اور بجائے سید کم کے سر یشکم ارشاد ہوتا تمام انصار کو قیام کا حکم نہ ہوتا۔ جمہور علماء نے اس حدیث کی بنا پر فرمایا ہے بزرگوں کے لیے قیام تعظیسی مستحب ہے، حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت عمرؓ، ابن ابوجہل اور عدی بن حاتم کی آمد پر ان کی عزت افزائی کے لیے قیام فرمایا، حضرت فاطمہ زہرا حضور انور کی تشریف آوری پر تعظیم قیام کرتی تھیں، صحابہ کرام رضی اللہ عنہم نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے لیے قیام تعظیسی بارہا کیا ہے، دیکھو۔ (مرقات، اشعہ اور لمعات) ہم باب السراء میں اس پر بحث کر چکے ہیں اور ہماری کتاب جاء الحق حصہ اول میں قیام تعظیسی کی مکمل بحث کر دی گئی ہے وہاں مطالعہ کرو۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۳۲)

(23) شعب الایمان، باب فی مقاربتہ وموادۃ اہل الدین، فصل فی قیام المرء... الخ، الحدیث: ۸۹۳۰، ج ۶، ص ۳۶۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حضور کی تعظیم کے لیے کیونکہ یہ بات بہت بری محسوس ہوتی ہے کہ مخدوم کھڑا ہو اور خدام بیٹھے یا لیٹے ہوں۔ اس سے معلوم ہوا کہ مخدوم کے جانے پر بھی قیام تعظیسی سنت ہے یہ وہ حدیث ہے جس سے قیام تعظیسی کا ثبوت ہے، ممانعت قیام کی احادیث کا مطلب ہم پہلے عرض کر چکے ہیں لہذا احادیث میں تعارض نہیں وہاں کا مطالعہ فرماؤ۔

۲۔ اس میں تعظیم کی انتہا ہے کہ جب تک حضور اپنے کسی گھر میں داخل نہ ہو جاتے وہ حضرات کھڑے ہی رہتے تاکہ ہم حضور کے سامنے جب کہ آپ کھڑے ہوں بیٹھے ہوئے نظر نہ آئیں، اللہ تعالیٰ ایسا ادب نصیب کرے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ، مصابیح، ج ۶، ص ۵۳۲)

نے فرمایا: جس کی یہ خوشی ہو کہ لوگ میری تعظیم کے لیے کھڑے رہیں، وہ اپنا ٹھکانا جہنم میں بنائے۔ (24)

حدیث ۲۴: ابو داؤد نے ابو امامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم عصا پر ٹیک لگا کر باہر تشریف لائے۔ ہم حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کے لیے کھڑے ہو گئے۔ ارشاد فرمایا: اس طرح نہ کھڑے ہوا کرو جیسے عجمی کھڑے ہوا کرتے ہیں کہ ان میں کا بعض بعض دوسرے کی تعظیم کیا کرتا ہے۔ (25)

یعنی عجمیوں کا کھڑے ہونے میں جو طریقہ ہے وہ قبیح و مذموم ہے، اس طرح کھڑے ہونے کی ممانعت ہے، وہ یہ ہے کہ اُمرا بیٹھے ہوئے ہوتے ہیں اور کچھ لوگ بروجہ تعظیم ان کے قریب کھڑے رہتے ہیں۔ دوسری صورت عدم جواز کی وہ ہے کہ وہ خود پسند کرتا ہو کہ میرے لیے لوگ کھڑے ہوا کریں اور کوئی کھڑا نہ ہو تو برا مانے جیسا کہ ہندوستان میں اب بھی بہت جگہ رواج ہے کہ امیروں، رئیسوں، زمین داروں کے لیے ان کی رعایا کھڑی ہوتی ہے، نہ کھڑی ہو تو زد و کوب تک نوبت آتی ہے۔ ایسے ہی متکبرین و متجربین کے متعلق معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ والی حدیث میں وعید آئی

(24) سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ما جاء فی کرہیۃ قیام الرجل للرجل، الحدیث: ۲۷۶۳، ج ۲، ص ۳۴۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس حدیث نے ممانعت قیام کی تمام حدیثوں کی شرح کر دی کہ جو کوئی اپنے لیے قیام تعظیمی کرانا چاہے اس کے لیے نہ کھڑے ہو یا اس طرح کھڑے ہونا ممنوع ہے کہ مخدوم بیٹھا ہوا ہو اور لوگ اس کے سامنے کھڑے ہوں دست بستہ اور یہ عمل تکبر و غرور کے لیے ہو ضرر نہ ہو تب سخت ممنوع ہے۔ عالم دین کے سامنے دست بستہ کھڑا ہونا یوں ہی عادل حاکم کے روبرو کھڑا ہونا خصوصاً مقدمہ والوں کا یوں استاذ کے سامنے شاگردوں کا کھڑا ہونا مستحب ہے اگرچہ یہ حضرات بیٹھے ہوئے ہوں اور شاگردوں وغیرہ کھڑے ہوں۔ (مرقات) ہاں مخدومین کا حکم نہیں کھڑا کرنا خود بیٹھے رہنا یہ ممنوع ہے یہی یہاں مراد ہے۔ (اشعۃ اللمعات)

۲۔ یعنی اس قسم کی تعظیم کو پسند کرنا یا لوگوں کو ایسی تعظیم کا اپنے لیے حکم دینا جہنمی ہونے کا سبب ہے اور تکبر جہنم کا راستہ ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۳۶)

(25) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب الرجل یقوم للرجل یعظمہ بذلک، الحدیث: ۵۲۳۰، ج ۴، ص ۴۵۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ غائب حضور صلی اللہ علیہ وسلم بیمار تھے اس لیے عصا پر ٹیک لگائے تشریف لائے۔

۲۔ یعنی تمہارا یہ قیام تو ٹھیک ہے مگر عجمیوں کا سا قیام نہ کرنا کہ مخدوم بیٹھا ہو خدا م سامنے دست بستہ سرود کھڑے ہوئے ہوں اور مخدوم اس تعظیم کی خواہش بھی کرتا ہو کہ ایسا قیام ممنوع ہے یہ قیود خیال میں رہیں۔ مرقات نے فرمایا کہ یہاں قیام سے مرد وقوف ہے یعنی کسی کے

لے تعظیماً کھڑا رہنا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۳۷)

جے (26) اور ان کی طرف سے یہ نہ ہو بلکہ یہ کھڑا ہونے والا اس کو حق تعالیٰ کی تعلیم بخشنا ہو۔ یہ سب سے زیادہ
تواضع کے طور پر کسی کے لیے کھڑا ہوتا ہے تو یہ ناجائز نہیں بلکہ مستحب ہے۔



مسائل فقہیہ

مسئلہ ۱: مصافحہ سنت ہے اور اس کا ثبوت تواتر سے ہے اور احادیث میں اس کی بڑی فضیلت آئی ہے۔ ایک حدیث یہ ہے کہ جس نے اپنے مسلمان بھائی سے مصافحہ کیا اور ہاتھ کو حرکت دی، اس کے تمام گناہ گرجائیں گے۔ جتنی بار ملاقات ہو ہر بار مصافحہ کرنا مستحب ہے۔ مطلقاً مصافحہ کا جواز یہ بتاتا ہے کہ نماز فجر و عصر کے بعد جو اکثر جگہ مصافحہ کرنے کا مسلمانوں میں رواج ہے یہ بھی جائز ہے اور بعض کتابوں میں جو اس کو بدعت کہا گیا، اس سے مراد بدعتِ حسنہ ہے۔ (۱)

(۱) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الخطر والاباحۃ، باب الاستبراء، وغیرہ، ج ۹، ص ۶۲۸۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

غنیۃ ذوی الاحکام حاشیہ در رد و غرر میں ہے:

المصافحۃ سنۃ عقب الصلوات کلھا و عند کل لقی ولنا فیہا رسالۃ سمیعہا سعادۃ اہل الاسلام بالمصافحۃ عقب الصلوۃ والسلام۔ ۲۔

مصافحہ کرنا تمام نمازوں کے بعد اور ہر ملاقات کے موقع پر سنت ہے۔ اسی موضوع پر ہمارا ایک رسالہ ہے جس کا نام سعادۃ اہل الاسلام بالمصافحۃ عقب الصلوۃ والسلام رکھا ہے۔ (یعنی درود و سلام پڑھنے کے بعد مصافحہ کرنے میں مسلمانوں کے لئے سعادت ہے)۔ (ت)

(۲) غنیۃ ذوی الاحکام حاشیہ الدرر المختار باب الصلوۃ العیدین میر محمد کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۳۲

حاشیۃ الکفر لعلمۃ السید الازہری میں ہے:

من المستحب (ای یوم العید) اظہار الفرح والبشاشۃ والتہنیۃ والمصافحۃ بل ہی سنۃ عقب الصلوات کلھا۔ ۳۔

عید کے دن خوشی فرحت اور مبارکباد کا اظہار کرنا اور باہم ایک دوسرے سے مصافحہ کرنا مستحب ہے بلکہ ہر نماز کے بعد مصافحہ سنت ہے۔ (ت) (۳) فتح بمعین شرح الکفر لملا مسکین باب الصلوۃ العیدین الحج ای سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۲۵

طحاوی علی مراقی الفلاح میں ہے: کذا تطلب المصافحۃ فہی سنۃ عقب الصلوۃ کلھا۔ ۴۔

(۴) حاشیہ الطحاوی علی مراقی الفلاح باب احکام العیدین نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۲۸۹

یوں ہی مصافحہ کی طلب کی جائے کیونکہ یہ ہر نماز کے بعد سنت ہے۔ (ت)

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۲، ص ۲۳۸، ۲۳۹ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

مسئلہ ۲: جس طرح فجر و عصر کے بعد مصافحہ کرنا جائز ہے دوسری نمازوں کے بعد بھی مصافحہ کرنا جائز ہے، کیونکہ اصل مصافحہ کرنا جائز ہے تو کسی وقت بھی کیا جائے جائز ہی ہے، جب تک شرع مطہر سے ممانعت ثابت نہ ہو۔ (2)

مسئلہ ۳: مصافحہ یہ ہے کہ ایک شخص اپنی ہتھیلی دوسرے کی ہتھیلی سے ملائے، فقط انگلیوں کے چھونے کا نام مصافحہ نہیں ہے۔ سنت یہ ہے کہ دونوں ہاتھوں سے مصافحہ کیا جائے اور دونوں کے ہاتھوں کے مابین کپڑا وغیرہ کوئی چیز حائل نہ ہو۔ (3)

مسئلہ ۴: مصافحہ کا ایک طریقہ وہ ہے جو بخاری شریف وغیرہ میں عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے، کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا دست مبارک ان کے دونوں ہاتھوں کے درمیان میں تھا۔ (4) یعنی ہر ایک کا ایک ہاتھ دوسرے کے دونوں ہاتھوں کے درمیان میں ہو۔ دوسرا طریقہ جس کو بعض فقہا نے بیان کیا اور اس کی نسبت بھی وہ کہتے ہیں کہ حدیث سے ثابت ہے، وہ یہ کہ ہر ایک اپنا داہنا ہاتھ دوسرے کے دہنے سے اور بائیں بائیں سے ملائے اور انگوٹھے کو دبائے کہ انگوٹھے میں ایک رگ ہے کہ اس کے پکڑنے سے محبت پیدا ہوتی ہے۔ (5)

مسئلہ ۵: مصافحہ مسنون یہ ہے کہ جب دو مسلمان باہم ملیں تو پہلے سلام کیا جائے اس کے بعد مصافحہ کریں۔ رخصت کے وقت بھی عموماً مصافحہ کرتے ہیں، اس کے مسنون ہونے کی تصریح نظر فقیر سے نہیں گزری۔ مگر اصل مصافحہ کا جواز (یعنی جائز ہونا) حدیث سے ثابت ہے تو اس کو بھی جائز ہی سمجھا جائے گا۔

مسئلہ ۶: معانقہ کرنا (یعنی گلے ملنا) بھی جائز ہے جبکہ خوف فتنہ اور اندیشہ شہوت نہ ہو۔ چاہیے کہ جس سے معانقہ کیا جائے وہ صرف تہبند یا فقط پاجامہ پہنے ہوئے نہ ہو، بلکہ کرتا یا اچکن بھی پہنے ہو یا چادر اوڑھے ہو یعنی کپڑا حائل ہو۔ (6)

(2) رد المحتار، کتاب الخطر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، ج ۹، ص ۶۲۸۔

(3) المرجع السابق، ص ۶۲۹۔

(4) صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب المصافحۃ، ج ۴، ص ۱۷۷۔

(5) انظر رد المحتار، کتاب الخطر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، ج ۹، ص ۶۲۹۔

(6) تبیین الحقائق، کتاب الکراہیۃ، فصل فی الاستبراء وغیرہ، ج ۷، ص ۵۶۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

کپڑوں کے اوپر معانقہ جہاں خوف فتنہ، شہوت نہ ہو بلا ریب شروع ہے اس کے جواز پر تمام ائمہ مجتہدین کا اجماع اور سفر وغیرہ سفر میں بشرط مذکورہ مطلقاً جائز۔ تخصیص سفر کی حدیث و فقہ سے ثابت نہیں نہ کہ استغفر اللہ مطلقاً حرام ہو ابو جعفر عقیلی حضرت حمیم داری رضی اللہ تعالیٰ

عنہ سے روایت کرتے ہیں: قال سالت رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم عن المعانقۃ فقال تحیۃ الامم۔

وصالح ودھم وان اول من عانى خليل الله ابراهيم ا۔ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے معانقہ کا مسئلہ دریافت کیا۔ رشاد فرمایا تحیت ہے امتوں کی اور اچھی دوستی ہے ان کی، اور بیشک پہلے جس نے معانقہ کیا اللہ تعالیٰ کے خلیل ابراہیم ہیں علیہ الصلوٰۃ والسلام۔ (۱) الضعفاء، مکبیر للعقلی حدیث ۱۴۱ دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۵۵/۳

اس حدیث میں صریح بتا دیا ہے عمرو کے قول کی کہ معانقہ ایک دلیل قوی ہے۔ افزونی محبت پر۔ شیخ محقق مولانا عبدالحق محدث دہلوی رحمہ اللہ تعالیٰ اشعة اللمعات میں فرماتے ہیں: اما معانقہ اگر خوف فتنہ باشد مشروع است خصوصاً نزد قدم از سفر ۲۔ الخ۔ اگر کسی فتنے کا اندیشہ نہ ہو تو گلے ملنا جائز ہے خصوصاً جبکہ آدمی سفر سے آئے الخ۔ (ت)

(۲) اشعة اللمعات کتاب الادب باب المصالح والمعاذ مکتبہ نوریہ رضویہ سکر ۴۰۰/۳

در مختار میں ہے: وکرة تحريما تقبل الرجل ومعانقته في ازار واحد. وقال ابو يوسف رحمه الله تعالى لا باس بالتقبيل والمعانقة في ازار واحد ولو كان عليه قميص اوجبة جاز بلا كراهة بالا جماع وصحة في الهداية وعليه المتن ۳۔ انتہی ملخصاً۔ کسی مرد کو بوسہ دینا اور اس سے گلے ملنا ایک چادر میں مکروہ تحریمی ہے۔ امام ابو یوسف رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے فرمایا: یک ازار میں بوسہ دینے اور معانقہ کرنے میں حرج نہیں اور اگر وہ کرتہ پہنے ہو یا جبہ تو بغیر کسی کراہت کے بالا جماع جائز ہے ہدایہ میں اس کی تصحیح فرمائی اور اسی کے مطابق سارے متون ہیں انتہی ملخصاً۔ (ت)

(۳) در مختار کتاب الحظر والاباحہ باب الاستبراء مطبع مجتہائی دہلی ۲۳۴/۲

اور ایسا ہی شیخ محقق نے کافی سے نقل کیا: حیث قال دگفتہ اند کہ خلاف در جامعیت کہ برہمتن باشند اما باقیص وجہ لا باس بہ است باجماع و صحیح کذا فی کافی ۱۔ شیخ عبدالحق محدث دہلوی رحمہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ لوگوں نے کہا ہے کہ معانقہ وغیرہ میں اس جگہ اختلاف ہے کہ جہاں ننگے ہوں، لیکن اگر کرتہ یا جبہ پہنے ہوں تو پھر بالا جماع کوئی حرج نہیں، اور یہی صحیح ہے یونہی کافی میں مذکور ہے۔ (ت)

(۱) اشعة اللمعات کتاب الادب باب المصالح والمعاذ مکتبہ نوریہ رضویہ سکر ۴۰۰/۳

بہتہ اگر دونوں ننگے بدن ہوں تو اس صورت کو بعض روایات میں مکروہ کہا ہے۔ اور امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالیٰ کے نزدیک یوں بھی کچھ حرج نہیں۔ بیشک جہاں خوف فتنہ ہو مثلاً عورت یا امر و نحو بصورت سے معانقہ کرنا خصوصاً جبکہ بنظر شہوت ہو تو اس صورت کی کراہت و عدم جواز میں کسی کو کلام نہیں شرح دقایقہ کی کتاب الکرامیہ میں ہے:

و کرة تقبيل الرجل و عناقه في ازار واحد و جاز مع قميص و مصافحة ش عطف على الضمير في جاز هذا عند ابی حنیفہ و محمد رحمہما اللہ تعالیٰ وقال ابو يوسف رحمه الله تعالى عنه لا باس بهما في ازار واحد و اما مع القميص فلا باس بالا جماع و الخلاف فيما يكون للمحبة و اما بالشهوة فلا شك في الحرمة اجماعاً ۲۔ انتہی۔

کسی مرد کو بوسہ دینا اور ایک چادر میں اس سے گلے ملنا مکروہ ہے البتہ کرتہ پہنے ہوں تو جائز ہے۔ اور مصافحہ کرنا بھی جائز ہے۔

حدیث سے ثابت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے معافقہ کیا۔ (7)

مسئلہ ۷: بعد نماز عیدین مسلمانوں میں معافقہ کا رواج ہے اور یہ بھی اظہار خوشی کا ایک طریقہ ہے۔ یہ معافقہ بھی جائز ہے، جبکہ محل فتنہ نہ ہو مثلاً امر و خوبصورت سے معافقہ کرنا کہ یہ محل فتنہ ہے۔

مسئلہ ۸: بوسہ دینا اگر بشہوت ہو تو ناجائز ہے اور اکرام و تعظیم کے لیے ہو تو ہو سکتا ہے۔ پیشانی پر بوسہ بھی انھیں شرائط کے ساتھ جائز ہے۔ حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی دونوں آنکھوں کے درمیان کو بوسہ دیا۔ (8) اور صحابہ و تابعین رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین سے بھی بوسہ دینا ثابت ہے۔

مسئلہ ۹: بعض لوگ مصافحہ کرنے کے بعد خود اپنا ہاتھ چوم لیا کرتے ہیں یہ مکروہ ہے، ایسا نہیں کرنا چاہیے۔ (9)

مسئلہ ۱۰: عالم دین اور بادشاہ عادل کے ہاتھ کو بوسہ دینا جائز ہے، بلکہ اس کے قدم چومنا بھی جائز ہے۔ بلکہ اگر کسی نے عالم دین سے یہ خواہش کی کہ آپ اپنا ہاتھ یا قدم مجھے دیجیے کہ میں بوسہ دوں تو اس کے کہنے کے مطابق وہ عالم اپنا ہاتھ پاؤں بوسہ کے لیے اس کی طرف بڑھا سکتا ہے۔ (10)

(تشریح) مصافحہ، اس عبارت کا عطف جائز کی ضمیر پر ہے۔ اور یہ امام ابوحنیفہ اور امام محمد کے نزدیک ہے لیکن امام ابو یوسف نے فرمایا: اللہ تعالیٰ سب پر رحم فرمائے بوسہ دینا اور معافقہ کرنا اگر ایک چادر میں ہو تو کوئی حرج نہیں لیکن اگر قیص پہنے ہو تو پھر بالاتفاق کچھ مضائقہ نہیں۔ اور یہ اختلاف اس صورت میں ہے جبکہ یہ کام پیار و محبت کے انداز میں ہو لیکن اگر شہوت سے ہو تو پھر اجماع حرمت میں کوئی شک نہیں۔ حتیٰ (ت) (۲) شرح الوقایہ کتاب الکراہیۃ مسئلۃ التقبیل والاعتناق ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۵۳ ۵۶۴

جن روایتوں میں معافقہ سے نفی آئی ہے ان میں جمعا بین الاحادیث یہی صورت مقصودہ امام ابو منصور، تریذی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے ذکر کی کہ اہل سنت کے پیشوا ہیں اس معنی کی تصریح فرمائی کہ اذکرۃ الشیخ المعتمد فی شرح مشکوٰۃ (جیسا کہ شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی نے شرح مشکوٰۃ میں بیان فرمایا۔ ت) سو اس صورت میں مصافحہ بھی نادرست ہے کہ لا یخفی (جیسا کہ پوشیدہ نہیں۔ ت) احادیث کثیرہ میں وارد ہوا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اپنے اصحاب کرام سے بار بار بحالت سفر اور بلا سفر معافقہ فرمایا اور اسے جائز رکھا۔

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۲، ص ۲۵۱، ۲۵۳، رضافاؤنڈیشن، ماہور)

(7) انظر: سنن أبی داود، کتاب الادب، باب فی قبلۃ مابین العینین، الحدیث: ۵۲۲۰، ج ۴، ص ۵۵۵.

پڑھے فتاویٰ رضویہ، جلد ۸ میں رسالہ وصال الجید فی تحلیل معافقہ العید

(8) سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ذکر وقات حودفہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم، الحدیث: ۱۶۲۷، ج ۲، ص ۲۸۳.

(9) تعین الحق، کتاب الکراہیۃ، فصل فی الاستبراء وغیرہ، ج ۷، ص ۵۶.

(10) الدر المنثور، کتاب الخطر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، ج ۹، ص ۶۳۱.

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

مسئلہ ۱۱: عورت نے عورت کے مونہ یا رخسارہ کو بوقت ملاقات یا بوقت رخصت بوسہ دیا، یہ مکروہ ہے۔ (11)
 مسئلہ ۱۲: عالم یا کسی بڑے کے سامنے زمین کو بوسہ دینا حرام ہے۔ جس نے ایسا کیا اور جو اس پر راضی ہوا،
 دونوں گنہگار ہوئے۔ (12)

تویر الابصار و در مختار میں ہے:

لا بأس بتقبیل ید الرجل العالم والمتورع علی سبیل التبرک ضرر ونقل المصنف عن الجامع انه لا بأس
 بتقبیل ید الحاکم المتدین والسلطان العادل وقیل سنة مجتبیٰ ۲۔

کسی عالم اور پارسا شخص کے بطور تبرک ہاتھ چومنے میں کوئی حرج نہیں (درر) مصنف نے الجامع سے نقل فرمایا کہ دیدار حاکم اور عادل
 بادشاہ کے ہاتھوں کو بھی بوسہ دینے میں کوئی مضائقہ نہیں اور یہ بھی کہا گیا کہ یہ سنت ہے (مجتبیٰ)۔ (ت)

(۲۔ در مختار شرح تویر الابصار کتاب الخطر والاباحہ باب الاستبراء مطبع مجتبیٰ دہلی ۲/۲۴۴)

ردالمحتار میں ہے:

قوله وقیل سنة ای تقبیل ید العادل والسلطان العادل قال الشرنبلالی وعلیت ان مفاد الاحادیث سنیتہ
 اوندہ کہما اشار الیہ العینی ۱۔

مصنف کا قول کہا گیا کہ یہ سنت ہے (یعنی عالم اور عادل بادشاہ کے ہاتھوں کو بوسہ دینا) علامہ شرنبلالی نے فرمایا کہ حدیثوں کا مفاد سنیت یا
 استحباب ہے جیسا کہ علامہ عینی نے اس کی طرف اشارہ کیا ہے۔ (ت)

(۱۔ ردالمحتار کتاب الخطر والاباحہ باب الاستبراء دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/۲۴۵)

اس میں ہے:

قدم عن الخانیة والحقائق ان التقبیل علی سبیل البریلا شهوة جائز بالاجماع ۲۔

فتاویٰ قاضی خان اور الحقائق کے حوالے سے پہلے بیان کیا گیا کہ نیکی کے انداز پر بغیر شہوت بوسہ دینا بالاتفاق جائز ہے۔ (ت)

(۲۔ ردالمحتار کتاب الخطر والاباحہ باب الاستبراء دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/۲۴۵)

در مختار میں ہے: اما علی وجه البر فجائز عند الكل خانیة ۳۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۳۔ در مختار کتاب الخطر والاباحہ باب الاستبراء مطبع مجتبیٰ دہلی ۲/۲۴۴)

بھلائی کے طریقے پر بوسہ دینا سب کے نزدیک جائز ہے۔ فتاویٰ قاضی خان اور اللہ تعالیٰ سب سے بڑا عالم ہے۔ (ت)

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۲، ص ۲۲۹-۲۳۱ رخصت فاؤنڈیشن، لاہور)

(11) المرجع السابق، ص ۲۳۲۔

(12) تبیین الحقائق، کتاب الکراہیہ، فصل فی الاستبراء وغیرہ، ج ۷، ص ۵۶۔

مسئلہ ۱۳: بوسہ کی چھ قسمیں ہیں:

- (1) بوسہ رحمت، جیسے والدین کا اولاد کو بوسہ دینا۔
- (2) بوسہ شفقت، جیسے اولاد کا والدین کو بوسہ دینا۔
- (3) بوسہ محبت، جیسے ایک شخص اپنے بھائی کی پیشانی کو بوسہ دے۔
- (4) بوسہ تحیت، جیسے بوقت ملاقات ایک مسلم دوسرے مسلم کو بوسہ دے۔
- (5) بوسہ شہوت، جیسے مرد عورت کو بوسہ دے اور
- (6) ایک قسم بوسہ دیانت ہے، جیسے حجر اسود کا بوسہ۔ (13)

مسئلہ ۱۴: مصحف یعنی قرآن مجید کو بوسہ دینا بھی صحابہ کرام کے فعل سے ثابت ہے، حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ روزانہ صبح کو بوسہ دیتے تھے اور کہتے یہ میرے رب کا عہد اور اس کی کتاب ہے اور حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ بھی مصحف کو بوسہ دیتے اور چہرے سے مس کرتے۔ (14)

مسئلہ ۱۵: سجدہ تحیت یعنی ملاقات کے وقت بطور اکرام کسی کو سجدہ کرنا حرام ہے اور اگر بقصد عبادت ہو تو سجدہ کرنے والا کافر ہے کہ غیر خدا کی عبادت کفر ہے۔ (15)

مسئلہ ۱۶: بادشاہ کو بروجہ تحیت سجدہ کرنا یا اس کے سامنے زمین کو بوسہ دینا کفر نہیں، مگر یہ شخص گنہگار ہو اور اگر عبادت کے طور پر سجدہ کیا تو کفر ہے۔ عالم کے پاس آنے والا بھی اگر زمین کو بوسہ دے، یہ بھی ناجائز و گناہ ہے، کرنے والا اور اس پر راضی ہونے والا دونوں گنہگار ہیں۔ (16)

مسئلہ ۱۷: ملاقات کے وقت جھکنا منع ہے۔ (17) یعنی اتنا جھکنا کہ حد رکوع تک ہو جائے۔

مسئلہ ۱۸: آنے والے کی تعظیم کے لیے کھڑا ہونا جائز بلکہ مندوب ہے، جبکہ ایسے کی تعظیم کے لیے کھڑا ہو جو مستحق تعظیم ہے، مثلاً عالم دین کی تعظیم کو کھڑا ہونا۔ کوئی شخص مسجد میں بیٹھا ہے یا قرآن مجید پڑھ رہا ہے اور ایسا شخص آگیا جس

(13) المرجع السابق.

(14) الدر المختار، کتاب الخطر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، ج ۹، ص ۶۳۲.

(15) رد المختار، کتاب الخطر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، ج ۹، ص ۶۳۲.

پڑھنے فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۲ میں رسالہ الزبدۃ الزکیۃ تحریم سجود التحیۃ

(16) الفتاویٰ احمدیہ، کتاب الکرامیۃ، الباب الثامن والشرع فی ملاقات الملوک، ج ۵، ص ۳۶۸-۳۶۹.

(17) المرجع السابق، ص ۳۶۹.

کی تعظیم کرنی چاہیے تو اس حالت میں بھی تعظیم کو کھڑا ہو سکتا ہے۔ (18)

مسئلہ ۱۹: جو شخص یہ پسند کرتا ہو کہ لوگ میرے لیے کھڑے ہوں اس کی یہ بات ناپسند و مذموم ہے۔ (19)

احادیث میں اسی قیام کی مذمت ہے یا اس قیام کو برا بتایا گیا ہے۔ جو اجماع میں مروج ہے کہ سلاطین بیٹھے ہوتے ہیں اور اُس کے آس پاس تعظیم کے طور پر لوگ کھڑے رہتے ہیں، آنے والے کے لیے کھڑا ہونا اس قیام ممنوع میں داخل نہیں۔ قیام میلاد شریف کی ممانعت پر ان احادیث سے دلیل لانا جہالت ہے۔

مسئلہ ۲۰: جہاں یہ اندیشہ ہو کہ تعظیم کے لیے اگر کھڑا نہ ہوا تو اس کے دل میں بغض و عداوت پیدا ہوگا، خصوصاً ایسی جگہ جہاں قیام کا رواج ہے تو قیام کرنا چاہیے تاکہ ایک مسلم کو بغض و عداوت سے بچایا جائے۔ (20)

(18) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، ج ۹، ص ۶۳۲۔

(19) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، ج ۹، ص ۶۳۳۔

(20) اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

وہابی جھوٹے ہیں اور اُن کا منع کہنا شریعت پر افتراء ہے، ان سے پوچھو کہ اللہ و رسول نے منع فرمایا ہے یا تم منع کرتے ہو۔ اگر کہیں اللہ و رسول نے منع فرمایا ہے، تو دکھائیں کس آیت کس حدیث صحیح میں ہے کہ قیام مجلس مبارک منع ہے، اور اگر کہیں کہ ہم خود منع کرتے ہیں، تو ہکا کریں، حکم اُن کا نہیں بلکہ اللہ و رسول کا ہے جل جلالہ، صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اللہ عزوجل نے قرآن عظیم میں جا ہی نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی تعظیم کا حکم فرمایا اور یہ قیام بھی اقسام تعظیم سے ہے تو جب تک اس خاص تعظیم کی ممانعت اللہ و رسول اللہ کے حکم سے ثابت نہ ہو یہ حکم قرآنی کے مطابق ہے۔ قرآن عظیم سے بڑھ کر اور کیا دلیل درکار ہے، زیادہ تفصیل ہمارے رسالہ اقامۃ القیامہ میں ہے، خود حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تکریم حضرت جبرائیل کے لیے قیام فرماتے اور حضرت جبرائیل رضی اللہ تعالیٰ عنہا تعظیم حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے لیے قیام کرتیں سعد بن معاذ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جس وقت حاضر ہوئے حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے انصار کرام کو ان کے لیے قیام کا حکم فرمایا۔ انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں۔ جب حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مجلس انور سے اُٹھتے قیام کیا ماحتی لراہ قد دخل بعض بیوت ازواجہ۔ ا۔

(۱) سنن ابی داؤد کتاب الادب باب فی العلم و اخلاق النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم آفتاب عالم پریس لاہور ۲/۲۰۲

ہم سب کھڑے ہو جاتے اور کھڑے رہتے جب تک کہ حضور حجرات شریفہ میں سے کسی میں تشریف نہ لے جاتے، ممانعت قیام اجماع سے ہے کہ ان کا بادشاہ تخت پر بیٹھا ہوتا اور درباری تصویر بنے ہوئے سامنے کھڑے رہتے۔ بعض وقت اس کی ناپسندی بطور تواضع و رفع تکلف ہے جیسے اب بھی کوئی معظم دینی آئے اور حاضرین اس کے لیے قیام کریں تو وہ کہتا ہے کہ تکلیف نہ فرمائیے تشریف رکھئے، اس کے یہ معنی نہیں کہ قیام سے شرعاً کرتا ہے بلکہ تواضعاً، مانعین کے یہاں بھی قیام تعظیمی برابر رائج ہے اپنے منلوں کے لیے قیام کریں گے اور لوگ ان کے لیے قیام کریں بعض بیٹھے رہیں تو ناراض ہوں گے بے ادب جانیں گے مگر یہ تو اپنے منلوں کی تعظیم ہے جن کی باطل عظمت سے ←



دن بھرے ہوئے ہیں، حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی عظمت اُن کے یہاں کہاں، اس میں یہ شاخسانے سوچتے ہیں، شفا و شریف وغیرہا میں ائمہ دین تصریح فرماتے ہیں کہ حضور کے ذکر اقدس کی تعظیم ذات انور کی طرح ہے وقت تشریف آوری تعظیم ذات انور کی طرح ہے، وقت تشریف آوری تعظیم ذات کریم قیام سے ہے تو ذکر شریف کی یہی تعظیم مسلمانوں نے صد ہا سال سے مقرر کی کافی عقد الجوہر وغیرہ (جیسا کہ عقد الجوہر وغیرہ میں ہے۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔ (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۹، ص ۲۸۰ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

رد المحتار، کتاب المحظر والاباحہ، باب الاستبراء وغیرہ، ج ۹، ص ۶۳۳۔

چھینک اور جمائی کا بیان

احادیث

حدیث ۱: صحیح بخاری میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اللہ تعالیٰ کو چھینک پسند ہے اور جمائی ناپسند ہے۔ جب کوئی شخص چھینکے اور الحمد للہ کہے تو جو مسلمان اس کو سنے اس پر یہ حق ہے کہ یَزِیْرُ حَمْلُكَ اللہ کہے اور جمائی شیطان کی طرف سے ہے، جب کسی کو جمائی آئے تو جہاں تک ہو سکے، اُسے دفع کرے کیونکہ جب جمائی لیتا ہے تو شیطان ہنستا ہے۔ (۱) یعنی خوش ہوتا ہے کیونکہ یہ کسل اور غفلت کی دلیل ہے،

(۱) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب اذا استحاوت فلیضع یدہ علی فیہ، الحدیث: ۶۲۲۶، ج ۲، ص ۱۶۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ چھینک سے دماغ صاف ہوتا ہے، چھینک آنے سے دماغ ہلکا ہو جاتا ہے، طبیعت کمل جاتی ہے جس سے عبادات پر زیادہ قدرت ہوتی ہے۔ اطباء کہتے ہیں کہ زکام آکر خیریت سے گزر جاوے تو بہت بیماریوں کا دفعیہ ہے۔

۲۔ جمائی سستی کی علامت ہے اس سے جسم میں جمود طاری ہوتا ہے، چھینک رب کو پسند ہے جمائی شیطان کو پسند اس لیے حضرات انبیاء کرام کو جمائی کبھی نہیں آتی۔

۳۔ بعض علماء فرماتے ہیں کہ چھینک کا جواب دینا فرض ہے وہ اس حدیث سے دلیل لیتے ہیں کہ فرمایا گیا تھا۔ عام علماء اسے سنت کہتے ہیں، فرض والوں میں بعض لوگ اسے فرض عین کہتے ہیں، بعض فرض کفایہ۔ اس سے معلوم ہوا کہ چھینکے والا الحمد للہ بلند آواز سے کہے تاکہ لوگ سن سکیں اور صرف سننے والے پر جواب ہے نہ سننے والے پر کچھ نہیں۔ جواب چھینک کے متعلق علماء کا بڑا اختلاف ہے حق یہ ہے کہ اس کا جواب سنت علی العین ہے کہ ہر سننے والا جواب دے، یہاں حق بمعنی واجب یا لازم نہیں بلکہ بمعنی استحقاق ہے جیسے فرمایا گیا کہ مسلمان کے مسلمان پر چھ حق ہیں مریض کی عیادت کرنا، جنازہ میں شرکت کرنا وغیرہ۔

۴۔ یعنی شیطان کے اثر سے جمائی آتی ہے وہ اس سے خوش ہوتا ہے ہاں کرنے پر وہ ہنستا ہے اسی لیے حضرات انبیاء کرام کو جمائی کبھی نہیں آتی جیسے کہ انہیں احکام نہیں ہوتا کہ یہ شیطانی چیزیں ہیں۔ (مرقات)

۵۔ جمائی دفع کرنے کی تین تدبیریں ہیں: جب جمائی آنے لگے تو ناک سے زور سے سانس نکال دے۔ جب جمائی آنے لگے تو بچا ہونٹ دانتوں میں دبائے۔ جب جمائی آنے لگے تو یہ خیال کرے کہ حضرات انبیاء کرام کو جمائی نہیں آتی۔

۶۔ یعنی جب کوئی جمائی میں منہ پھیلاتا ہے اور ہاں کہتا ہے تو شیطان خوب ٹھنڈہ مار کر ہنستا ہے کہ میں نے اسے پاگل بنا دیا اپنا اثر

ایسی چیز کو شیطان پسند کرتا ہے اور صحیح مسلم کی روایت میں ہے کہ جب وہ (ہا) کہتا ہے شیطان ہنستا ہے۔ (2)

حدیث ۲: صحیح بخاری میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کسی کو چھینک آئے تو اَلْحَمْدُ لِلّٰہ کہے اور اس کا بھائی یا ساتھ والا یَزِّحْکَ اللہ کہے جب یہ یَزِّحْکَ اللہ کہہ لے تو چھینکنے والا اس کے جواب میں یہ کہے یَهْدِیْکُمُ اللہ وَیُصْلِحْ بِاَلْکُم۔ (3)

ترمذی اور دارمی کی روایت میں ابویوب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے، کہ جب چھینک آئے تو یہ کہے اَلْحَمْدُ لِلّٰہ علی کل حال۔ (4)

اس پر کر لیا۔

یہ حدیث بہت اسنادوں سے مختلف الفاظ سے مروی ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ بعض آوازوں سے شیطان بھگتا ہے، بعض آوازوں سے وہ خوش ہوتا ہے، اللہ کے ذکر کی آواز سے اسے تکلیف ہوتی ہے جمائی کی آواز سے وہ ہنستا ہے گانے باجے کی آواز پر وہ خوشی سے ناچتا ہوگا لہذا بری آوازوں سے بچو۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۶۹)

(2) صحیح البخاری، کتاب بدء الخلق، باب صفۃ ابلیس وجنودہ، الحدیث: ۳۲۸۹، ج ۲، ص ۴۰۲۔

ومشکوٰۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب العطاس والتخاطب، الحدیث: ۴۷۳۲، ج ۳، ص ۲۳۔

(3) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب اذا عطس کیف یشت، الحدیث: ۶۲۲۴، ج ۴، ص ۱۶۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اسے چونکہ چھینک اللہ تعالیٰ کی نعمت ہے لہذا اس پر اللہ کی حمد کرنی چاہیے، چونکہ اس حمد سے اس نے اللہ کی نعمت کی قدر کی لہذا اسنے والے نے اسے دعا دی یو حمک اللہ، چونکہ اس دعا دینے والے نے اس پر احسان کیا لہذا احسان کا بدلہ احسان سے کرتے ہوئے یہ پھر اسے دعا دے اور کہے یهدیکم اللہ فرمکہ ان ذکروں کے ایر پھیر میں عجیب حکمت ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۶۹)

(4) سنن اترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء کیف یشت العطاس، الحدیث: ۵۰۷۵، ج ۳، ص ۳۴۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اس عمل جو کوئی چھینک پر کہے الحمد للہ علی کل حال اور اپنی زبان سارے دانتوں پر پھیر لیا کرے تو ان شاء اللہ دانتوں کی بیماریوں سے محفوظ رہے گا مجرب ہے۔ حضرت علی فرماتے ہیں کہ جو کوئی چھینک پر کہے الحمد للہ رب العالمین علی کل حال تو ان شاء اللہ اسے کبھی ڈاڑھ اور کان کا درد نہ ہوگا۔ امام عسقلانی فرماتے ہیں کہ یہ حدیث صحیح ہے۔ (ابن ابی شیبہ، مرقات) حق یہ ہے کہ تمام سننے والوں پر جواب دینا سنت ہے۔ یعنی جواب چھینک سنت علی الصحن ہے۔

۲۔ کہ بال کے معنی دل، خیال، حال ہیں۔ یہاں بمعنی حال ہے جب حال ہی ٹھیک ہو گیا تو دل و خیال بھی ٹھیک ہو جائیں گے اس سے

یہاں بال سے حال مراد لے تا کہ دعا جامع ہو جاوے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۷۶)

حدیث ۳: طبرانی نے عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کسی کو چھینک آئے تو اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ کہے۔ (5)

حدیث ۴: طبرانی ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کرتے ہیں کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: جب کسی کو چھینک آئے اور وہ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ کہے تو فرشتے کہتے ہیں: رَبِّ الْعَالَمِیْنَ اور اگر وہ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ کہتا ہے تو فرشتے کہتے ہیں: رَحِمَکَ اللّٰہُ۔ (6)

حدیث ۵: ترمذی نے نافع سے روایت کی، کہ ایک شخص کو ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے پاس چھینک آئی۔ اس نے کہا اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ۔ ابن عمر نے فرمایا: یہ تو میں بھی کہتا ہوں کہ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ مگر اس کے کہنے کی یہ جگہ نہیں۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ہمیں یہ تعلیم نہیں دی، ہمیں یہ تعلیم دی ہے کہ اس موقع پر اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَال کہیں۔ (7)

حدیث ۶: ترمذی و ابوداؤد نے ہلال بن یساف سے روایت کی، کہتے ہیں: ہم سالم بن عبید کے پاس تھے، ایک شخص کو چھینک آئی، اس نے کہا: اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ۔ سالم نے کہا: وَعَلَیْکَ وَعَلٰی اُمَمِکَ اسے اس کا رنج ہوا۔ (کہ

(5) المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۰۳۲۶، ج ۱۰، ص ۱۶۲۔

(6) المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۲۲۸۳، ج ۱۱، ص ۳۵۸۔

(7) سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ما یقول العاقل اذا عطش، الحدیث: ۲۷۴۷، ج ۲، ص ۳۲۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ غالباً وہ صاحب سمجھے کہ حضور انور کو سلام بھی ذکر خیر ہے اور الحمد للہ بھی ذکر خیر اور خیر کو خیر سے ملانا زیادتی خیر کا ذریعہ ہے، دیکھو خطبہ مسجد میں داخلہ کے وقت حمد و صلوٰۃ و سلام ملے ہوتے ہیں مگر یہ قیاس درست نہ تھا۔ (مرقات)

۲۔ یعنی میں نہ تو حمد الہی کا انکار کرتا ہوں نہ حضور کو سلام کرنے کا نہ ان دونوں کو جمع کرنے کا میں خود بارہا ان دونوں کو ملا کر کہا کرتا ہوں۔

۳۔ یعنی چھینک کے موقع پر حمد الہی کو سلام رسول اللہ سے ملانا خلاف سنت ہے، ہم کو حضور نے اس موقع پر یہ سکھایا کہ حمد کے ساتھ ہی کل حال ملائیں، نیز حمد کے ساتھ سلام کو ملانا اس سنت کے ترک کا باعث ہے لہذا بدعت ہے اور ممنوع۔ بعض علماء نے چھینک کے وقت درود شریف کو سنت فرمایا ہے، دیکھو اشعۃ اللمعات۔ مگر وہ حضرات علی کل حال کے بعد درود شریف کو مستحب کہتے ہیں۔ خیال رہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی بارگاہ میں کسی نے چھینک کر کہا تھا السلام علیکم تو حضور انور نے اس پر کچھ سختی فرمائی تھی مگر حضرت ابن عمر نے اس شخص پر نہایت نرمی کی، وجہ یہ ہے کہ اس شخص نے الحمد للہ بالکل نہ کیا تھا صرف سلام کیا تھا لہذا اس پر سختی کی۔ یہاں اس شخص نے حمد کے بعد سلام کہا یعنی حمد کو چھوڑا نہیں لہذا نرمی فرمائی یا شاید اس شخص نے بار بار یہ تصور کیا ہوگا اس لیے اس پر سختی کی یہاں اس شخص نے پہلی بار یہ تصور کیا

ہے، مرقات میں اس دوسری توجیہ کا ذکر کیا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۸۱)

مجھے ایسا جواب کیوں دیا۔ ابو داؤد کی روایت میں ہے، کہ اس نے کہا: میری ماں کا آپؐ نے ذکر نہ کیا ہوتا۔ نہ اچھا، نہ برا تو اچھا ہوتا۔ سالم نے کہا: میں نے وہی کہا جو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا تھا۔ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے پاس ایک شخص کو چھینک آئی، اس نے کہا اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: وَعَلَیْکَ وَعَلَىٰ أُمّتِک۔ جب کسی کو چھینک آئے تو کہے اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ اور جواب دینے والے کہے یُؤْتِکَ اللّٰہُ اور وہ کہے یَغْفِرُ اللّٰہُ لَیْ وَلَکُمْ۔ (8)

حدیث ۷: صحیح بخاری و مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہتے ہیں کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے پاس دو شخصوں کو چھینک آئی۔ آپؐ نے ایک کو جواب دیا، دوسرے کو نہیں دیا۔ اس نے عرض کی، یا رسول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم)! حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے اُس کو جواب دیا اور مجھے نہیں دیا۔ ارشاد

(8) سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء کیف یثمت العاطس، الحدیث: ۲۷۴۹، ج ۴، ص ۳۳۹۔

وسنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب کیف تثمت العاطس، الحدیث: ۵۰۳۱، ج ۴، ص ۳۹۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپؐ تابعی ہیں، حضرت اشجع کے آزاد کردہ غلام ہیں، حضرت علی اور حضرت ابو مسعود انصاری مسلم ابن قیس سے ملاقات ہے، اے اچھا ایک سوستر میں وفات پائی آپؐ سے بہت لوگوں نے روایات لیں۔ (مرقات و اشعہ)

۲۔ یا تو منہ سے نکل گیا یا بجائے الحمد للہ کے السلام علیکم عذا کہا یہ سمجھتے ہوئے کہ یہ بھی اللہ کا ذکر ہی ہے یا مسئلہ معلوم نہ تھا۔

۳۔ یہ سلام تحیت کا نہیں ہے بلکہ اظہار ناراضی و بیزاری کا ہے جیسے ابراہیم علیہ السلام نے اپنے چچا آزر کے جواب میں فرمایا اِنَّکَ سَلَمٌ عَلَیْکَ یعنی تجھے دور ہی سے سلام ہے اس سلام یعنی ناراضگی میں ماں کو اس لیے داخل فرمایا کہ ماں نے بچے کو دین نہ سکھا یہ یہ باتیں مانیں سکھاتی ہیں اس نے غفلت برتی یا بچے ایسی بدعتیں اکثر ماؤں سے سیکھتے ہیں۔ ہمارے ہاں لوگ چاند دیکھ کر سلام کرتے ہیں ماں سلام، ابا سلام یہ بھی بوڑھی عورتوں کی رسم ہے، چونکہ ان رسوم بے موقع سلام کی موجد عورتیں ہوتی ہیں خصوصاً ماہیں وادیاں اس لیے علی امؑ فرمایا۔ اس فرمان عالی سے معلوم ہوا کہ بے موقع سلام کرنے والے کو جواب نہ دیا جاوے، دیکھو حضور انورؐ نے وعلیکم السلام نہ فرمایا، نیز چونکہ اس نے چھینک کر الحمد للہ نہ کہا لہذا اسے جواب بھی نہ دیا گیا اس حدیث سے بہت مسائل مستنبط ہو سکتے ہیں۔

۵۔ یعنی اس نے منہ سے تو کچھ نہ کہا مگر اس کے چپ ہو جانے سے محسوس ہوا کہ اس کے دل کو اس جواب سے رنج ہوا۔

۶۔ سبحان اللہ! کیا حکیمانہ طریقہ اختیار فرمایا کہ اس کا رنج دور کرنے کو حدیث پیش فرمائی اور فرمایا کہ اس سارے ہی واقعہ میں میں تمہیں ہور

متبدع نہیں ہوں۔ (مرقات)

۷۔ مقصد یہ ہے کہ یہ موقع سلام کا نہ تھا بلکہ حمد الہی کا تھا اگر تم حسب موقع الحمد کہتے تو جواب پاتے ہر مقام کے لیے ذکر اللہ عظیمہ ہے۔ خوشی

کی خبر پر انا اللہ نہ پڑھو غم کی خبر پر الحمد للہ نہ کہو۔ (مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۷۸)

فرمایا: اس نے اَلْحَمْدُ لِلّٰہ کہا اور تو نے نہیں کہا۔ (9)

حدیث ۸: صحیح مسلم میں ابو موسیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو فرماتے سنا ہے کہ جب کوئی چھینکے اور اَلْحَمْدُ لِلّٰہ کہے تو اسے جواب دو اور اَلْحَمْدُ لِلّٰہ نہ کہے تو اسے جواب مت دو۔ (10)

حدیث ۹: صحیح مسلم میں سلمہ بن اکوع رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے پاس ایک شخص کو چھینک آئی۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے اس کے جواب میں یٰرَحْمَتُ اللّٰہ کہا، پھر دوبارہ چھینک آئی تو حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: اسے زکام ہو گیا ہے۔ (11) اور ترمذی کی روایت میں ہے کہ

(9) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب لا یشت العاطس اذا لم یحمد اللہ، الحدیث: ۶۲۲۵، ج ۴، ص ۱۶۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ چھینک کے جواب کو تشمیت کہتے ہیں یہ بنا ہے ہمت سے بمعنی آفت و مصیبت یا لوگوں کا طعن۔ اس سے ہے ثبات اعداء باب تفعیل سلب کے لیے ہے لہذا اس کے معنی ہوئے ہوئے مصیبت دور کرنا یعنی دعا دینا دعاء خیر کو تشمیت اسے لیے کہا جاتا ہے۔

۲۔ معلوم ہوا کہ چھینکنے والے کا جواب جب دیا جاوے جب وہ الحمد للہ کہے اور یہ سنے بھی ایک شخص نے دیوار کے پیچھے چھینک لی تو حضرت عمرؓ نے فرمایا یرحمک اللہ ان حمدت اللہ اگر تو نے رب کی حمد کی ہو تو خدا تجھ پر رحم کرے اگر اکیلا آدمی چھینک لے اور الحمد للہ کہے کوئی جواب دینے والے نہ ہو تو خود ہی کہہ لے یرحمک اللہ لی ولکم کیونکہ فرشتے اس کی چھینک کا جواب دیتے ہیں یہ ان کی نیت سے یہ دعا کرے جیسے نماز کے سلام میں فرشتوں کی نیت کرے اگر اکیلا ہو۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۷۱)

(10) صحیح مسلم، کتاب الادب، باب لا یشت العاطس... إلخ، الحدیث: ۵۴۔ (۲۹۹۲)، ص ۱۵۹۶۔

(11) مرجع السابق، الحدیث: ۵۵۔ (۲۹۹۳)، ص ۱۵۹۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ معلوم ہوا کہ جو زکام کا بیمار ہو اسے ہر چھینک پر جواب نہ دے کہ اس میں بہت حرج ہوگا کہ پھر تو وہ زکام والا کسی کو بات نہ کرنے دے گا وہ چھینکے جاوے تم جواب دیجئے جاوے اذان کا جواب دے مگر پہلی اذان کا پھر اذانیں سننا ہے جواب دینا ضروری نہیں۔

۲۔ زیادہ روایات تین کی ہی ہیں کہ حضور انورؐ نے تیسری چھینک پر فرمایا کہ تجھے زکام ہے، بعض شارحین نے فرمایا کہ زکام والے شخص کو بجائے جواب دینے کے کہے شفا لک اللہ تجھے اللہ شفا دے مگر یہ قول درست نہیں کیونکہ دعاء صحت تو دیے ہی کرنی چاہیے چھینک پر کیا موقوف ہے یہ وقت شفا کی دعا کا نہیں ہے، نیز زکام بیماری نہیں ہے بلکہ دماغی بیماریوں کا علاج اس سے بہت مرض دفع ہو جاتا ہے۔ (مرقات) زکام والے کو دیوانگی و جنون نہیں ہوتا جسے کبھی خارش ہو اسے جذام و کوڑھ نہیں ہوتا، زکام و خارش میں رب تعالیٰ کی بہت حکمتیں ہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۷۳)

تیسری مرتبہ چھینک آئی تب حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے ایسا فرمایا۔ (12) یعنی جب بار بار چھینک آئے تو جواب کی حاجت نہیں۔

حدیث ۱۰: ترمذی و ابو داؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو چھینک آتی تو مونہ کو ہاتھ یا کپڑے سے چھپا لیتے اور آواز کو پست کرتے۔ (13)

حدیث ۱۱: صحیح مسلم میں ابو سعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ جب کسی کو جما ہی آئے تو مونہ پر ہاتھ رکھ لے کیونکہ شیطان مونہ میں گھس جاتا ہے۔ (14)

حدیث ۱۲: طبرانی اوسط میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: سچی بات وہ ہے کہ اس وقت چھینک آجائے۔ (15) اور حکیم کی روایت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے یہ ہے کہ جب کوئی بات کی جائے اور چھینک آجائے تو وہ حق ہے۔ (16) اور ابو نعیم کی روایت انھیں سے ہے، کہ دعا کے وقت چھینک آجانا سچا گواہ ہے۔ (17)

(12) سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ما جاء کم یشت العاطس، الحدیث: ۲۷۵۳، ج ۴، ص ۳۲۲۔

(13) المرجع السابق، باب ما جاء فی خفض الصوت... إلخ، الحدیث: ۲۷۵۳، ج ۴، ص ۳۲۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب چھینک کے وقت اپنا پورا چہرہ یا پورا منہ کپڑے یا ہاتھ سے ڈھانپ لیا سنت ہے کہ اس سے رطوبت کی پھینکیں نہ اڑیں گی اور اپنے یا دوسرے کے کپڑے خراب نہ ہوں گے اور چھینک کی آواز حتی الامکان پست کرنا بھی سنت ہے کہ یہ آواز بلند ہو تو بری معلوم ہوتی ہے لوگ اچھل پڑتے ہیں، چھینک کی آواز آہستہ نکلے الحمد کی آواز بلند ہو۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۷۵)

(14) صحیح مسلم، کتاب الزہد... إلخ، باب تسمیت العاطس... إلخ، الحدیث: ۵۷۔ (۲۹۹۵)، ص ۱۵۹۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب اس طرح کہ بائیں ہاتھ کی ہتھیلی یا انگلیوں کی پشت منہ پر رکھ لے کہ یہ ہی سنت ہے جیسا کہ کتب فقہ میں مذکور ہے۔

۲۔ یا تو خود شیطان ہی داخل ہوتا ہے کہ اگرچہ وہ مردود ہمارے خون کے ساتھ گردش کرتا ہے مگر ہمارے منہ میں اس وقت گھستا ہے یا اس کے دوسرے داخل ہوتے ہیں۔ بہر حال جمائی کے وقت منہ پر ہاتھ ضرور رکھ لے کہ اس سے نہ شیطان داخل ہوگا نہ اس کے دوسرے نہ ہوائی کیڑے مکوڑے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۷۴)

(15) المعجم الاوسط، باب المعجم، الحدیث: ۳۳۶۰، ج ۲، ص ۳۰۲۔

(16) نوادر الاصول فی احادیث الرسول، ج ۳، ص ۵۔

(17) کنز العمال، کتاب الصویۃ، رقم: ۲۵۵۲۰، ج ۹، ص ۶۸۔

﴿ شرح بہاوشویت (سہ شصتم) ﴾

حدیث ۳۱: بیوقوفی نے شوبہ ایمان میں مبادہ بن سوات و شاد بن اس و امام علی علیہ السلام کی روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کسی کو دھار یا پیتھک آئے تو کہہ دو: یا رب! شیطان کو یہ بات پسند ہے کہ ان میں آواز بلند کی جائے۔ (18)



مسائل فقہیہ

مسئلہ ۱: چھینک کا جواب دینا واجب ہے، جبکہ چھینکنے والا اَلْحَمْدُ لِلّٰہ کہے اور اس کا جواب بھی فوراً دینا اور اس طرح جواب دینا کہ وہ سن لے، واجب ہے۔ جس طرح سلام کے جواب میں ہے یہاں بھی ہے۔ (1)

مسئلہ ۲: چھینک کا جواب ایک مرتبہ واجب ہے، دوبارہ چھینک آئی اور اس نے اَلْحَمْدُ لِلّٰہ کہا تو دوبارہ جواب واجب نہیں، بلکہ مستحب ہے۔ (2)

مسئلہ ۳: جس کو چھینک آئے اسے اَلْحَمْدُ لِلّٰہ کہنا چاہیے اور بہتر یہ ہے کہ اَلْحَمْدُ لِلّٰہ رَبِّ الْعَالَمِينَ کہے۔ جب اس نے اَلْحَمْدُ لِلّٰہ کہا تو سننے والے پر اس کا جواب دینا واجب ہو گیا اور حمد نہ کرے تو جواب نہیں۔ ایک مجلس میں کئی مرتبہ کسی کو چھینک آئی تو صرف تین بار تک جواب دینا ہے، اس کے بعد اسے اختیار ہے کہ جواب دے یا نہ دے۔ (3)

مسئلہ ۴: جس کو چھینک آئے وہ یہ کہے اَلْحَمْدُ لِلّٰہ رَبِّ الْعَالَمِينَ یا اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَلٰی کُلِّ حَال اور اس کے جواب میں دوسرا شخص یوں کہے یٰرَحْمٰتُکَ اِنَّہُ (4) پھر چھینکنے والا یہ کہے یَغْفِرُ اللّٰہُ لَنَا وَلَکُمْ (5) یا یہ کہے یَهْدِیْکُمْ اللّٰہُ وَیُصْلِحْ بِاَلْکُمْ (6) اس کے سوا دوسری بات نہ کہے۔ (7)

مسئلہ ۵: عورت کو چھینک آئی اگر وہ بوڑھی ہے تو مرد اس کا جواب دے، اگر جوان ہے تو اس طرح جواب دے کہ وہ نہ سنے۔ مرد کو چھینک آئی اور عورت نے جواب دیا، اگر جوان ہے تو مرد اس کا جواب اپنے دل میں دے اور بوڑھی ہے تو زور سے جواب دے سکتا ہے۔ (8)

(1) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۸۳۔

(2) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السالط فی السلام، ج ۵، ص ۳۲۶۔

(3) ابن رازیۃ ہامش علی الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، نوع فی السلام، ج ۶، ص ۳۵۵۔

(4) اللہ عزوجل تجھ پر رحم فرمائے۔

(5) اللہ عزوجل ہماری اور تمہاری مغفرت فرمائے۔

(6) اللہ عزوجل تمہیں ہدایت دے اور تمہاری اصلاح فرمائے۔

(7) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السالط فی السلام، ج ۵، ص ۳۲۶۔

(8) المرجع السابق، ص ۳۲۷۔

مسئلہ ۶: خطبہ کے وقت کسی کو چھینک آئی تو سننے والا اس کو جواب نہ دے۔ (9)

مسئلہ ۷: کافر کو چھینک آئی اور اس نے اَلْحَمْدُ لِلّٰہ کہا تو جواب میں یٰہْدِیْکَ اللّٰہ کہا جائے۔ (10)

مسئلہ ۸: چھینکنے والے کو چاہیے کہ زور سے حمد کہے تاکہ کوئی سنے اور جواب دے۔ چھینک کا جواب بعض حاضرین

نے دید یا تو سب کی طرف سے ہو گیا اور بہتر یہ ہے کہ سب حاضرین جواب دیں۔ (11)

مسئلہ ۹: دیوار کے پیچھے کسی کو چھینک آئی اور اس نے اَلْحَمْدُ لِلّٰہ کہا تو سننے والا اس کا جواب دے۔ (12)

مسئلہ ۱۰: چھینکنے والے سے پہلے ہی سننے والے نے اَلْحَمْدُ لِلّٰہ کہا تو ایک حدیث میں آیا ہے کہ یہ شخص دانتوں اور کانوں کے درد اور تھمہ (یعنی بد ہضمی) سے محفوظ رہے گا۔ اور ایک حدیث میں ہے کہ کمر کے درد سے محفوظ رہے گا۔ (13)

مسئلہ ۱۱: چھینک کے وقت سر جھکا لے اور مونہ چھپا لے اور آواز کو پست کرے، چھینک کی آواز بلند کرنا حماقت ہے۔ (14)

فائدہ: حدیث میں ہے کہ بات کے وقت چھینک آ جانا شاہد عدل ہے۔ (15)

مسئلہ ۱۲: بہت لوگ چھینک کو بد فالی خیال کرتے ہیں، مثلاً کسی کام کے لیے جا رہا ہے اور کسی کو چھینک آگئی تو سمجھتے ہیں کہ اب وہ کام انجام نہیں پائے گا، یہ جہالت ہے کہ بد فالی کوئی چیز نہیں اور ایسی چیز کو بد فالی کہنا جس کو حدیث میں شاہد عدل فرمایا، سخت غلطی ہے۔



(9) الفتاویٰ الخانیۃ، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی التبع والتسلیم، ج ۲، ص ۷۷۔

(10) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی التبع، ج ۹، ص ۶۸۳۔

(11) المرجع السابق

(12) المرجع السابق

(13) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی التبع، ج ۹، ص ۶۸۳۔

وکنز العمال، کتاب الصحیح، حرف العین، الحدیث: ۲۵۵۳۹، ۲۵۵۴۰، ج ۹، ص ۷۰۔

(14) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی التبع، ج ۹، ص ۶۸۳۔

(15) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی التبع، ج ۹، ص ۶۸۵۔

وکنز العمال، کتاب الصحیح، حرف العین، الحدیث: ۲۵۵۱۸، ۲۵۵۱۹، ج ۹، ص ۶۸۔

خرید و فروخت (۱) کا بیان

مسئلہ ۱: جب تک خرید و فروخت کے مسائل معلوم نہ ہوں کہ کون سی بیع جائز ہے اور کون ناجائز، اس وقت تک تجارت نہ کرے۔ (۲)

(۱) خرید و فروخت کا مفصل بیان حصہ یازدہم میں گزر چکا ہے وہاں سے معلوم کریں۔

(۲) الفتاویٰ الہدیۃ، کتاب النکاح، الباب الخامس والعشرون فی البیع... إلخ، ج ۵، ص ۳۳۳۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:
رد المحتار میں فصول عظامی سے ہے:

فرض علی کل مکلف ومکلفۃ بعد تعلمہ علم الدین والہدایۃ تعلم علم الوضوء والغسل والصلوۃ والصوم
وعلم الزکوۃ لمن له نصاب والحج لمن وجب علیہ والبیوع علی التجار لیحترزوا عن الشبهات والمکروہات
فی سائر المعاملات وکذا اهل الحرف وکل من اشتغل بشیء یفرض علیہ علمه وحکمه لیبتع عن المحرام
فیہ ۱۔

دینی علم اور ہدایت حاصل کرنے کے بعد ہر عاقل، بالغ، مرد، عورت پر وضو، غسل، نماز اور روزہ کے مسائل سیکھنا فرض ہے اور اسی طرح
مسائل زکوٰۃ کا، اس شخص کے لئے جاننا، جو صاحب نصاب ہے۔ اور حج کے مسائل اس کے لئے جس پر وہ واجب ہے، اور خرید و فروخت
کے مسائل جاننا کاروبار کرنے والوں کیلئے تاکہ وہ اپنے تمام معاملات میں مشکوک اور مکروہ کاموں سے بچ جائیں۔ یونہی پیشہ ور اور ہر ایسا
آدمی جو کسی کام میں مشغول ہو تو اس پر اس کام کا علم رکھنا فرض ہے، اور اس کا حکم یہ ہے تاکہ وہ اس معاملے میں حرام سے بچ جائے۔ (ت)
(۱) رد المحتار مقدمہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۲۹

اور اسی میں ہے:

فی تبیین المحارم، لاشک فی فرضیۃ علم الفرائض الخمس وعلم الاخلاص لان صفة العمل موقوفة علیہ
وعلم الحلال والمحرام وعلم الریاء لان العابد محروم من ثواب عمله بالریاء وعلم الحسد والعجب اذ هما یا کلان
العمل کما تاكل النار الحطب وعلم البیع والشراء والنکاح والطلاق لمن اراد الدخول فی هذه الاشیاء وعلم
الالفاظ المحرمة او الکفرۃ ولعمری هذا من اهم البہات فی هذا الزمان ۲۔

(۲) رد المحتار مقدمہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۲۹

تبیین المحارم میں ہے: اس میں کوئی شک نہیں کہ جب تک نہ فرض نمازوں کی فرضیت جاننا اور حصول اخلاص کا علم رکھنا ضروری ہے کیونکہ ۳۔

مسئلہ ۲: انسان کے پاخانہ کا بیع کرنا ممنوع ہے، گو بر کا بیچنا ممنوع نہیں۔ انسان کے پاخانہ میں مٹی یا رکھ مل کر غالب ہو جائے، جیسے کھات میں مٹی کا غلبہ ہو جاتا ہے تو بیع بھی جائز ہے اور اس کو کام میں لانا مثلاً کھیت میں ڈالنا بھی جائز ہے۔ (3)

مسئلہ ۳: یہ معلوم ہے کہ یہ فلاں شخص کی کنیز (لونڈی) ہے اور دوسرا شخص اسے بیع کر رہا ہے، یہ بائع (یعنی بیچنے والا) کہتا ہے کہ اس نے مجھے بیع کا وکیل کیا ہے یا اس سے میں نے خرید لی ہے یا اس نے مجھے ہبہ کر دی ہے (یعنی تحفہ مالک بنا دیا) تو اس کو خریدنا اور اس سے واپس کرنا جائز ہے۔ جبکہ وہ شخص ثقہ ہو یا غالب گمان یہ ہو کہ سچ کہتا ہے اور اگر غالب گمان یہ ہے کہ وہ اس خبر میں جھوٹا ہے تو اس کے لیے ایسا کرنا جائز نہیں اور اگر اس کو خود اس کا علم نہیں کہ یہ فلاں کی ہے، مگر اس بائع ہی نے بتایا کہ یہ فلاں کی ہے اور مجھے اس نے بیع کا وکیل کیا ہے اور وہ بائع ثقہ ہے یا غالب گمان یہ ہے کہ سچ کہتا ہے تو اس کو خریدنا وغیرہ جائز ہے۔ (4) اسی طرح دوسری اشیاء کے متعلق یہ علم ہے کہ فلاں کی ہے اور بیچنے والا کہتا ہے کہ اس نے مجھے بیع کا وکیل کیا ہے یا میں نے خرید لی ہے یا اس نے ہبہ کر دی ہے تو اس کو خریدنا اور اس چیز سے نفع اٹھانا انہیں شرائط کے ساتھ جائز ہے۔

مسئلہ ۴: جو شخص چیز کو بیع کر رہا ہے اس نے یہ نہیں بتایا کہ یہ چیز میرے پاس اس طرح آئی اور مشتری (یعنی خریدنے والا) کو معلوم ہے کہ یہ چیز فلاں کی ہے تو جب تک معلوم نہ ہو جائے کہ یہ چیز اس کو یوں ملی ہے، اسے نہ خریدے۔ مشتری کو یہ نہیں معلوم ہے کہ چیز کسی دوسرے شخص کی ہے تو بیچنے والے سے خریدنا جائز ہے کہ اس کے قبضہ میں ہونا اس کی ملک کی دلیل ہے اور اس کا معارض پایا نہیں گیا۔ پھر اس کی کوئی وجہ نہیں کہ خواہ مخواہ دوسرے کی ملک کا تو ہم کیا جائے۔

ہاں اگر وہ چیز ایسی ہے کہ اس جیسے شخص کی نہیں ہو سکتی مثلاً وہ چیز بیش قیمت ہے اور یہ شخص ایسا نہیں معلوم ہوتا کہ وہ اس کی ہوگی یا جاہل کے پاس کتاب ہے اور اس کے باپ دادا بھی عالم نہ تھے کہ اسے میراث میں ملی ہو تو اس صورت

پر عمل کی محبت اس پر موقوف ہے۔ یونہی حلال، حرام کا علم اور ریاء کا علم حاصل کرنا ضروری ہے کیونکہ عابد ریاء کا رہنے والا یا کاری کی وجہ سے اپنے عمل کے اجر و ثواب سے محروم ہوتا ہے۔ حسد اور خود بینی کا علم رکھنا ضروری ہے کیونکہ یہ دونوں انسانی اعمال کو اس طرح کھا جاتے ہیں جیسے آگ لکڑی کو، خرید و فروخت، نکاح، طلاق وغیرہ کے مسائل جانتا اس شخص کیلئے ضروری ہیں جو ان کاموں کو کرنا چاہے، یوں ہی حرام و

کفر یہ ازام جانتا ضروری ہیں، مجھے اپنی زندگی کی قسم اس زمانے میں یہ سب سے زیادہ ضروری امور ہیں۔

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۶۳۰ رض فاؤنڈیشن، لاہور)

(3) الہدایہ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی البیع، ج ۲، ص ۳۷۵۔

(4) الہدایہ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی البیع، ج ۲، ص ۳۷۵۔

میں اس کی خریداری سے بچنا چاہیے اور اس کے باوجود اس نے خرید لی تو خریدنا جائز ہے، کیونکہ خریدار نے دلیل شرعی پر اعتماد کر کے خرید ا ہے یعنی قبضہ کو ملک کی دلیل قرار دیا ہے۔ (5)

مسئلہ ۵: مشترک چیز میں جو اس کا حصہ ہے اسے نہ بیچے جب تک شریک کو مطلع نہ کر دے، اگر وہ شریک خرید لے فیہا ورنہ جس کے ہاتھ چاہے بیچ ڈالے اس کا مطلب یہ ہے کہ شریک کو مطلع کرنا مستحب ہے اور بغیر مطلع کیے بیچنا مکروہ ہے یہ مطلب نہیں کہ بغیر اطلاع بیچ ہی نا جائز ہے۔ (6)

مسئلہ ۶: اگر بازار والے ایسے لوگوں سے مال خریدتے ہیں، جن کا غالب مال حرام ہے اور ان میں سود اور عقود فاسدہ جاری ہیں، ان سے خریدنے میں تین صورتیں ہیں۔ جس چیز کے متعلق گمان غالب یہ ہے کہ ظلم کے طور پر کسی کی چیز بازار میں لا کر بیچ گیا، ایسی چیز خریدی نہ جائے۔ دوسری صورت یہ ہے کہ مال حرام بعینہ موجود ہے مگر مال حلال میں اس طرح مل گیا کہ جدا کرنا ناممکن ہے، اس طرح مل جانے سے اس کی ہلک ہوگئی مگر اس کو بھی خریدنا نہ چاہیے، جب تک بائع اس مال کو کرنا جائز نہیں اور اگر اس کو خود اس کا علم نہیں کہ یہ فلاں کی ہے، مگر اس بائع ہی نے بتایا کہ یہ فلاں کی ہے اور مجھے اس نے بیچ کا وکیل کیا ہے اور وہ بائع ثقہ ہے یا غالب گمان یہ ہے کہ سچ کہتا ہے تو اس کو خریدنا وغیرہ جائز ہے۔ (7) اسی طرح دوسری اشیاء کے متعلق یہ علم ہے کہ فلاں کی ہے اور بیچنے والا کہتا ہے کہ اس نے مجھے بیچ کا وکیل کیا ہے یا میں نے خرید لی ہے یا اس نے ہبہ کر دی ہے تو اس کو خریدنا اور اس چیز سے نفع اٹھانا انھیں شرائط کے ساتھ جائز ہے۔

مسئلہ ۴: جو شخص چیز کو بیچ کر رہا ہے اس نے یہ نہیں بتایا کہ یہ چیز میرے پاس اس طرح آئی اور مشتری (یعنی خریدنے والا) کو معلوم ہے کہ یہ چیز فلاں کی ہے تو جب تک معلوم نہ ہو جائے کہ یہ چیز اس کو یوں ملی ہے، اسے نہ خریدے۔ مشتری کو یہ نہیں معلوم ہے کہ چیز کسی دوسرے شخص کی ہے تو بیچنے والے سے خریدنا جائز ہے کہ اس کے قبضہ میں ہونا اس کی ملک کی دلیل ہے اور اس کا معارض پایا نہیں گیا۔ پھر اس کی کوئی وجہ نہیں کہ خواہ مخواہ دوسرے کی ملک کا تو ہم کیا جائے۔

ہاں اگر وہ چیز ایسی ہے کہ اس جیسے شخص کی نہیں ہو سکتی مثلاً وہ چیز بیش قیمت ہے اور یہ شخص ایسا نہیں معلوم ہوتا کہ وہ اس کی ہوگی یا جاہل کے پاس کتاب ہے اور اس کے باپ دادا بھی عالم نہ تھے کہ اسے میراث میں ملی ہو تو اس صورت

(5) الہدایۃ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی البیع، ج ۲، ص ۲۷۲۔

(6) الفتاویٰ الہندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس والعشرون فی البیع... إلخ، ج ۵، ص ۳۶۳۔

(7) الہدایۃ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی البیع، ج ۲، ص ۳۷۵۔

میں اس کی خریداری سے بچنا چاہیے اور اس کے باوجود اس نے خرید لی تو خریدنا جائز ہے، کیونکہ خریدار نے دلیل شرعی پر اعتماد کر کے خریدا ہے یعنی قبضہ کو ملک کی دلیل قرار دیا ہے۔ (8)

مسئلہ ۵: مشترک چیز میں جو اس کا حصہ ہے اسے نہ بیچے جب تک شریک کو مطلع نہ کر دے، اگر وہ شریک خرید لے فیہا ورنہ جس کے ہاتھ چاہے بیچ ڈالے اس کا مطلب یہ ہے کہ شریک کو مطلع کرنا مستحب ہے اور بغیر مطلع کیے بیچنا مکروہ ہے یہ مطلب نہیں کہ بغیر اطلاع بیچ ہی ناجائز ہے۔ (9)

مسئلہ ۶: اگر بازار والے ایسے لوگوں سے مال خریدتے ہیں، جن کا غالب مال حرام ہے اور ان میں سود اور عقود فاسدہ جاری ہیں، ان سے خریدنے میں تین صورتیں ہیں۔ جس چیز کے متعلق گمان غالب یہ ہے کہ ظلم کے طور پر کسی کی چیز بازار میں لا کر بیچ گیا، ایسی چیز خریدی نہ جائے۔ دوسری صورت یہ ہے کہ مال حرام بعینہ موجود ہے مگر مال حلال میں اس طرح مل گیا کہ جدا کرنا ناممکن ہے، اس طرح مل جانے سے اس کی ہلک ہو گئی مگر اس کو بھی خریدنا نہ چاہیے، جب تک بائع اس مال کو عوض دے کر راضی نہ کر لے اور اگر خرید لی تو مشتری کی ملک ہو جائے گی اور کراہت رہے گی۔ تیسری صورت یہ ہے کہ معلوم ہے کہ جس کو غصب کیا تھا یا چوری وغیرہ کا مال تھا، وہ بعینہ باقی نہ رہا تو دوکان دار سے چیز خریدنی جائز ہے۔ (10)

مسئلہ ۷: تاجر اپنی تجارت میں اس طرح مشغول نہ ہو کہ فرائض فوت ہو جائیں، بلکہ جب نماز کا وقت آجائے تو تجارت چھوڑ کر نماز کو چلا جائے۔ (11)

مسئلہ ۸: نجس کپڑے کو بیچ سکتا ہے، مگر جب یہ گمان ہو کہ خریدار اس میں نماز پڑھے گا تو اس کو ظاہر کر دے کہ یہ کپڑا ناپاک ہے۔ (12)

مسئلہ ۹: جتنے میں چیز خریدی، بائع کو اس سے کچھ زیادہ دیا تو جب تک یہ نہ کہہ دے کہ یہ زیادتی تمہارے لیے حلال ہے یا یہ کہ میں نے تمہیں مالک کر دیا، اس زیادتی کو لینا جائز نہیں۔ (13)

(8) الحمدایہ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی البیع، ج ۲، ص ۲۷۲۔

(9) الفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس والعشرون فی البیع... راجع، ج ۵، ص ۳۶۳۔

(10) الفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس والعشرون فی البیع... راجع، ج ۵، ص ۳۶۳۔

(11) المرجع السابق

(12) المرجع السابق

(13) الفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس والعشرون فی البیع... راجع، ج ۵، ص ۳۶۵۔

(یعنی کسی چیز کی خریداری کے بعد تھوڑی سی چیز جو مفت میں لیتے ہیں) لیتے ہیں کہ بیع جتنی طے ہوئی ہے، اس سے کچھ زیادہ لیتے ہیں بغیر بائع کی رضامندی کے یہ ناجائز ہے اور روکھ مانگنا بھی نہ چاہیے کہ یہ ایک قسم کا سوال ہے اور بغیر حاجت سوال کی اجازت نہیں۔

مسئلہ ۱۰: گوشت یا مچھلی یا پھل وغیرہ ایسی چیز جو جلد خراب ہو جانے والی ہے کسی کے ہاتھ بیچی اور مشتری غائب ہو گیا اور بائع کو اندیشہ ہے کہ اس کے انتظار میں چیز خراب ہو جائے گی، ایسی صورت میں اس کو دوسرے کے ہاتھ بیچ سکتا ہے اور جس کو ایسا معلوم ہے، وہ خرید سکتا ہے۔ (14)

مسئلہ ۱۱: جو شخص بیمار ہے اس کا باپ یا بیٹا بغیر اس کی اجازت کے ایسی چیزیں خرید سکتا ہے جس کی مریض کو حاجت ہے، مثلاً دوا وغیرہ۔ (15)

مسئلہ ۱۲: اچھے، صاف گیہوں میں خاک دھول ملا کر بیچنا ناجائز ہے، اگرچہ وہاں ملانے کی عادت ہو۔ (16) اسی طرح دودھ میں پانی ملا کر بیچنا ناجائز ہے۔

مسئلہ ۱۳: جس جگہ بازار میں روٹی گوشت کا نرخ مقرر ہے کہ اس حساب سے فروخت ہوتی ہے کسی نے خریدی بائع نے کم دی مگر خریدار کو اس وقت یہ نہیں معلوم ہوا کہ کم ہے بعد کو معلوم ہوا تو جو کچھ کمی ہے وصول کر سکتا ہے جبکہ مشتری کو بھی نرخ معلوم ہے اور اگر خریدار پر دیسی ہے، وہاں کا نہیں ہے تو روٹی میں جو کمی ہے، وصول کر سکتا ہے۔ گوشت میں جو کمی ہے، وصول نہیں کر سکتا کیونکہ روٹی کا نرخ قریب قریب سب شہروں میں یکساں ہوتا ہے اور گوشت میں یہ بات

(14) الفتاویٰ احمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس والعشرون فی البیع... الخ، ج ۵، ص ۶۵۔

(15) المرجع السابق۔

(16) المرجع السابق۔

علی حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

اور عدم جواز صرف بوجہ غش و فریب تھا، جب حال ظاہر ہے غش نہ ہوا، اور جواز رہا جیسے بازاری دودھ کہ سب جانتے ہیں کہ اس میں پانی ہے اور باوصف علم خریدتے یہ اس صورت میں ہے جبکہ بائع وقت بیع اصلی حالت خریدار پر ظاہر نہ کر دے، اور اگر خود بتادے تو ظاہر الرویت و مذہب امام عظیم رضی اللہ تعالیٰ عنہ میں مطلقاً جائز ہے خواہ کتنا ہی میل ہو اگرچہ خریدار غریب الوطن ہو کہ بعد بیان فریب نہ رہا، درمختار میں ہے:

لا بأس ببیع المغشوش اذا بین غشه او کان ظاہراً یروی و کذا قال ابو حنیفۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فی حطۃ خلط فیہا الشعیر والشعیریری لا بأس ببیعه و ان طعنہ لا یبیع وقال الثانی فی رجل معہ فضۃ نحاس لا یبیعها حتی یمین الہ۔ (۱) درمختار باب التفرقة مطبع مجتہبی دہلی ۵۲/۲

نہیں۔ (17)

مسئلہ ۱۴: لوہے، پتیل وغیرہ کی انگوٹھی جس کا پہننا مرد و عورت دونوں کے لیے ناجائز ہے، اس کا بیچنا مکروہ ہے۔ (18) اسی طرح افیون وغیرہ جس کا کھانا ناجائز ہے، ایسوں کے ہاتھ فروخت کرنا جو کھاتے ہوں ناجائز ہے کہ اس میں گناہ پر اعانت (مدد کرنا) ہے۔

مسئلہ ۱۵: مسلمان کا کافر پر دین ہے، اس نے شراب بیچ کر اس کے ثمن سے دین ادا کیا۔ مسلم کے علم میں ہے کہ یہ روپیہ شراب کا ثمن ہے، اس کا لینا جائز ہے کیونکہ کافر کا کافر کے ہاتھ شراب بیچنا جائز ہے اور ثمن میں جو روپیہ اسے ملا، وہ جائز ہے، لہذا مسلم اپنے دین میں لے سکتا ہے اور مسلم نے شراب بیچی تو چونکہ یہ بیچ ناجائز ہے اس کا ثمن بھی ناجائز ہے، اس روپیہ کو دین میں لینا ناجائز ہے۔ (19) یہی حکم ہر ایسی صورت میں ہے جہاں یہ معلوم ہے کہ یہ مال بعینہ خبیث و حرام ہے تو اس کو لینا ناجائز ہے، مثلاً معلوم ہے کہ چوری یا غصب کا مال ہے۔

مسئلہ ۱۶: رنڈیوں کو ناچ گانے کی جو اجرت ملی ہے یہ بھی خبیث ہے، جس کسی کو دین یا کسی مطالبہ میں دے اس کا لینا ناجائز ہے۔ جس شخص نے ظلم یا رشوت کے طور پر مال حاصل کیا ہو، مرنے کے بعد اس کا مال ورثہ کو نہ لینا چاہیے کہ یہ مال حرام ہے۔ بلکہ ورثہ یہ کریں کہ اگر معلوم ہے کہ یہ مال فلاں کا ہے تو جس سے مورث نے حاصل کیا ہے، اسے واپس دے دیں اور معلوم نہ ہو کہ کس سے لیا ہے تو فقرا پر تصدق کر دیں کہ ایسے مال کا یہی حکم ہے۔ (20)

مسئلہ ۱۷: پنساری کو روپیہ دیتے ہیں اور یہ کہہ دیتے ہیں کہ یہ روپیہ سودے میں کتنا رہے گا یا دیتے وقت یہ شرط نہ ہو کہ سودے میں کٹ جائے گا، مگر معلوم ہے کہ یوہیں کیا جائے گا تو اس طرح روپیہ دینا ممنوع ہے کہ اس قرض سے یہ نفع ہوا کہ اس کے پاس رہنے میں اس کے ضائع ہونے کا احتمال تھا اب یہ احتمال جاتا رہا اور قرض سے نفع اٹھانا، ناجائز

حادثہ والی چیز کو فروخت کرنے میں کوئی حرج نہیں جب اس کی ملاوٹ کو بیان کر دے یا ملاوٹ ایسی ظاہر ہو کہ دکھائی دیتی ہو اور یونہی فرمایا امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ایسی گندم کے بارے میں جس میں جو ملے ہوئے ہوں اس طور پر کہ جو نظر آتے ہوں تو ایسی گندم کی بیج کوئی مضائقہ نہیں اور اگر اس مخلوط گندم کو بیج لیا تو مت بیجئے، اور امام ابو یوسف نے اس شخص کے بارے میں فرمایا جس کے پاس تانبہ چاندی ہے کہ وہ اسے بتائے بغیر نہ بیچے۔ (ت) (فتاویٰ رضویہ، جلد ۱، ص ۱۵۰ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(17) تبیین الحقائق، کتاب الکراہیۃ، فصل فی البیع، ج ۷، ص ۶۳۔

(18) الفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس والعشرون فی البیع... الخ، ج ۵، ص ۳۶۵۔

(19) الدر المختار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۳۵۔

(20) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۳۵۔

ہے۔ (21)

مسئلہ ۱۸: احتکار ممنوع ہے۔ احتکار کے یہ معنی ہیں کہ کھانے کی چیز کو اس لیے روکنا کہ گراں ہونے پر فروخت کریگا۔ احادیث میں اس بارے میں سخت وعیدیں آئی ہیں۔

ایک حدیث میں یہ ہے جو چالیس روز تک احتکار کریگا، اللہ تعالیٰ اس کو جذام و افلاس میں مبتلا کریگا۔ (22)
دوسری حدیث میں یہ ہے کہ وہ اللہ (عزوجل) سے بری اور اللہ (عزوجل) اُس سے بری۔ (23)
تیسری حدیث میں یہ ہے کہ اُس پر اللہ (عزوجل) اور فرشتوں اور تمام آدمیوں کی لعنت، اللہ تعالیٰ نہ اس کے نفل قبول کریگا نہ فرض۔

احتکار انسان کے کھانے کی چیزوں میں بھی ہوتا ہے، مثلاً اناج اور انگور بادام وغیرہ اور جانوروں کے چارہ میں بھی ہوتا ہے جیسے گھاس، بھوسا۔ (24)

(21) الدر المختار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی المبیع، ج ۹، ص ۶۴۹۔

(22) سنن ابن ماجہ، کتاب التجارات، باب الحکرۃ والجلب، الحدیث: ۲۱۵۵، ج ۳، ص ۱۲۔

• الدر المختار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی المبیع، ج ۹، ص ۶۵۷۔

(23) المسند لمام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن عمر، الحدیث: ۴۸۸۰، ج ۲، ص ۲۷۰۔

(24) الدر المختار و رد المحتار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی المبیع، ج ۹، ص ۶۵۶-۶۵۷۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:
غلہ کو اس نظر سے روکنا کہ گرانی کے وقت بیچیں گے بشرطیکہ اسی جگہ یا اس کے قریب سے خریدا اور اس کا نہ بیچنا لوگوں کو معسر ہو کر وہ ممنوع ہے، ورنہ اگر غلہ دور سے خرید کر لائے اور باہمظار گرانی نہ بیچے یا نہ بیچنا اس کا غلق کو معسر نہ ہو تو کچھ مضائقہ نہیں،

فی العالمگیریۃ الاحتکار مکروہ وذلک ان یشتری ذلک یضر بالناس کذا فی الحاوی وان اشتری فی ذلک المصر وحبسہ ولا یضر بأهل المصر لایأس بہ کذا فی التتارخانیۃ ناقلاً عن التجنیس و اذا اشتری من مکان قریب من المصر فحمل طعاماً الی المصر وحبسہ وذلک یضر بأهلہ فهو مکروہ ہذا قول محمد وهو احدى الروایتین عن ابی یوسف وهو المختار ہکذا فی الغیائیۃ وهو الصحیح ہکذا فی جواهر الاخلاطی، وفي الجامع الجوامع فان جلب من کان بعید واحتکر لم یمنع کذا فی العاتارخانیۃ۔

(۱) فتاویٰ رضویہ، کتاب المبیع، فصل فی الاحتکار، نواری کتب خانہ پشاور ۳/ ۲۱۳

مگیر یہ میں ہے احتکار مکروہ ہے اس کی صورت یہ ہے کہ شہر میں غلہ خرید لے اور اس کو فروخت کرنے سے روک رکھے اور یہ روکنا لوگوں کے لئے نقصان دہ ہو یہ حادی میں ہے اور شہر میں خرید کر اس کے بیچنے سے روکا مگر اس سے لوگوں کو ضرر نہیں پہنچتا تو کوئی حرج نہیں ہے۔

مسئلہ ۱۹: احتکار وہیں کہلائے گا جبکہ اس کا غلہ روکنا وہاں والوں کے لیے مضر ہو یعنی اس کی وجہ سے گرانی ہو جائے یا یہ صورت ہو کہ سارا غلہ اسی کے قبضہ میں ہے، اس کے روکنے سے قحط پڑنے کا اندیشہ ہے، دوسری جگہ غلہ دستیاب نہ ہوگا۔ (25)

مسئلہ ۲۰: احتکار کرنے والے کو قاضی یہ حکم دے گا کہ اپنے گھر والوں کے خرچ کے لائق غلہ رکھ لے اور باقی فروخت کر ڈالے، اگر وہ شخص قاضی کے اس حکم کے خلاف کرے یعنی زائد غلہ نہ بیچے تو قاضی اس کو مناسب سزا دے گا اور اس کی حاجت سے زیادہ جتنا غلہ ہے، قاضی خود بیع کر دے گا کیونکہ ضرر عام سے بچنے کی یہی صورت ہے۔ (26)

مسئلہ ۲۱: بادشاہ کو رعایا کی ہلاکت کا اندیشہ ہو تو احتکار کرنے والوں سے غلہ لے کر رعایا پر تقسیم کر دے۔ پھر جب ان کے پاس غلہ ہو جائے تو جتنا جتنا لیا ہے، واپس دیدیں۔ (27)

مسئلہ ۲۲: اپنی زمین کا غلہ روک لینا احتکار نہیں۔ ہاں اگر یہ شخص گرانی یا قحط کا منتظر ہے تو اس بری نیت کی وجہ سے گنہگار ہوگا اور اس صورت میں بھی اگر عام لوگوں کو غلہ کی حاجت ہو اور غلہ دستیاب نہ ہوتا ہو تو قاضی اسے بیع کرنے پر مجبور کریگا۔ (28)

مسئلہ ۲۳: دوسری جگہ سے غلہ خرید کر لایا، اگر وہاں سے عموماً یہاں غلہ آتا ہے تو اس کا روکنا بھی احتکار ہے اور اگر وہاں سے یہاں غلہ لانے کی عادت جاری نہ ہو تو روکنا احتکار نہیں۔ مگر اس صورت میں بھی بیچ ڈالنا مستحب ہے کہ روکنے میں یہاں بھی ایک قسم کی کراہت ہے۔ (29)

یونہی تا تاریخانیہ میں جنہیں سے نقل کیا گیا ہے، اور اگر شہر کے قریب سے خرید اور شہر میں اٹھالایا اور فروخت سے روک رکھا جبکہ اس سے شہر والوں کو ضرر پہنچتا ہے تو یہ مکروہ ہے یہ امام محمد علیہ الرحمۃ کا قول ہے، اور امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالیٰ علیہ سے بھی دورویتوں میں سے ایک میں یہی آیا ہے، یہی مختار ہے، اسی طرح غیاثیہ میں ہے، اور یہی صحیح ہے جیسا کہ جواہر الاخلاطی میں مذکور ہے اور جامع الجوامع میں ہے کہ اگر کہیں دور سے اناج خرید کر کھینچ لایا اور شہر میں فروخت سے روک رکھا تو ممنوع نہیں، تا تاریخانیہ میں یوں ہی ہے۔ (ت)

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۱، ص ۱۸۹، اضافہ و تفسیر، ر ہور)

(25) المہدایۃ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی البیع، ج ۲، ص ۳۷۷۔

(26) المرجع السابق، ص ۳۷۸۔

(27) اندر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۵۸۔

(28) اندر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۵۸۔

(29) المرجع السابق۔

مسئلہ ۲۴: حاکم کو یہ نہ چاہیے کہ اشیا کا نرخ مقرر کر دے۔ حدیث میں ہے کہ لوگوں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نرخ گراں ہو گیا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نرخ مقرر فرما دیں۔ ارشاد فرمایا: نرخ مقرر کرنے والا، تنگی کشادگی کرنے والا، روزی دینے والا اللہ (عزوجل) ہے اور میں امید کرتا ہوں کہ خدا سے اس حالت میں مومن کو کوئی شخص خون یا مال کے معاملہ میں مجھ سے کسی حق کا مطالبہ نہ کرے۔ (30)

مسئلہ ۲۵: تاجروں نے اگر چیزوں کا نرخ بہت زیادہ کر دیا ہے اور بغیر نرخ مقرر کیے کام چلتا نظر نہ آتا ہو تو اہل الرائے سے مشورہ لے کر قاضی نرخ مقرر کر سکتا ہے اور مقرر شدہ نرخ کے موافق جو بیع ہوئی یہ بیع جائز ہے۔ یہ نہیں کہا جاسکتا کہ یہ بیع منکڑہ ہے کیونکہ یہاں بیع پر اکراہ نہیں، قاضی نے اسے بیچنے پر مجبور نہیں کیا۔ اسے اختیار ہے کہ اپنی چیز بیچے یا نہ بیچے، صرف یہ کیا ہے کہ اگر بیچے تو جو نرخ مقرر ہوا ہے، اس سے گراں نہ بیچے۔ (31)

مسئلہ ۲۶: انسان کے کھانے اور جانوروں کے چارہ میں نرخ مقرر کرنا صورت مذکورہ میں جائز ہے اور دوسری چیزوں میں بھی حکم یہ ہے کہ اگر تاجروں نے بہت زیادہ گراں کر دی ہوں تو ان میں بھی نرخ مقرر کیا جاسکتا ہے۔ (32)



(30) سنن ابی داؤد، کتاب البیوع، باب فی التسعیر، الحدیث: ۳۴۵۱، ج ۳، ص ۷۴۳۔

(31) الہدایۃ، کتاب الکراہیۃ، فصل فی البیع، ج ۲، ص ۷۸۔

(32) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۶۱۔

قرآن مجید پڑھنے کے فضائل

قرآن مجید پڑھنے اور پڑھانے کے بہت فضائل ہیں۔ اجمالی طور پر اتنا سمجھ لینا کافی ہے کہ یہ اللہ تعالیٰ کا کلام ہے اس پر اسلام اور احکام اسلام کا مدار ہے۔ اس کی تلاوت کرنا، اس میں تدبیر، آدمی کو خدا تک پہنچاتا ہے۔ اس موقع پر اس کے متعلق چند حدیثیں ذکر کی جاتی ہیں۔

احادیث

حدیث ۱: صحیح بخاری میں حضرت عثمان غنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: تم میں بہتر وہ شخص ہے، جو قرآن سیکھے اور سکھائے۔ (1)

(1) صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب خیر کم من تعلم القرآن وعلمہ، الحدیث: ۵۰۲۷، ج ۳، ص ۴۱۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ قرآن سیکھنے سکھانے میں بہت وسعت ہے بچوں کو قرآن کے جے روزانہ سکھانا، قاریوں کا تجوید سیکھنا سکھانا، علماء کا قرآنی احکام بذریعہ حدیث و فقہ سیکھنا سکھانا صوفیائے کرام کا اسرار و رموز قرآن بلسلہ طریقت سیکھنا سکھانا سب قرآن ہی کی تعلیم ہے صرف الفاظ قرآن کی تعلیم مراد نہیں، لہذا یہ حدیث فقہاء کے اس فرمان کے خلاف نہیں کہ فقہ سیکھنا تلاوت قرآن سے افضل ہے کیونکہ فقہ احکام قرآن ہے اور تلاوت میں الفاظ قرآن چونکہ کلام اللہ تمام کلاموں سے افضل ہے لہذا اس کی تعلیم تمام کاموں سے بہتر اور اسرار قرآن الفاظ قرآن سے افضل ہیں کہ الفاظ قرآن کا نزول حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے کان مبارک پر ہوا اور اسرار و احکام کا نزول حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے دل پر ہوا، تلاوت سے علم فقہ افضل رب تعالیٰ فرماتا ہے: "نَزَّلَهُ عَلٰی قَلْبِكَ" عمل بالقرآن علم قرآن کے بعد ہے لہذا عالم عامل سے افضل ہے آدم علیہ السلام عالم تھے فرشتے عالم مگر حضرت آدم علیہ الصلوٰۃ والسلام افضل و مجبور ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۲۵)

قرآن مجید پڑھنے کا ثواب

قرآن مجید فرقانِ حمید کی تعلیم و تعلم اور تلاوت کے کثیر فضائل قرآن پاک میں بیان کئے گئے ہیں چنانچہ ارشاد ہوتا ہے،

(1) الَّذِينَ اتَّيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَتِهِ اُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ

ترجمہ کنزالایمان: جنہیں ہم نے کتاب دی ہے وہ جیسی چاہیے اس کی تلاوت کرتے ہیں وہی اس پر ایمان رکھتے ہیں۔

حدیث ۲: صحیح مسلم میں عقبہ بن عامر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

(2) وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاعْلَمْنَا بِبَيْتِكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْأَيْمَةِ فَجَاءَنَا مُسْتَوْرًا ﴿45﴾

ترجمہ کنزالایمان: اور اسے محبوب تم نے قرآن پڑھا ہم نے تم پر اور ان میں کہ آخرت پر ایمان نہیں لاتے ایک چھپا ہوا پردہ کر دیا۔

(پ 15، بنی اسرائیل: 45)

(3) وَنُزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ

ترجمہ کنزالایمان: اور ہم قرآن میں اتارتے ہیں وہ چیز جو ایمان والوں کے لئے شفا اور رحمت ہے۔ (پ 15، بنی اسرائیل: 82)

(4) إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّن تَبُورَ ﴿29﴾ لِيُوقِيَهُمْ أَجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿30﴾ وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿31﴾ لَّمْ أَوْزِعْنَا الْكَتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا لَمِثْلِهِمْ طَائِفًا لِّتَنفَيْسِهِمْ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ إِنَّ اللَّهَ ذَلِكُ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿32﴾ جَنَّتٌ عَنْ دِئْرِهَا تُجْرُكُ الْمَائِدَاتُ فِيهَا مِن مَّوْجٍ دَحْظٍ وَلُكُوفٌ ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا خَرِيرٌ ﴿33﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَهَبَ عَلَيْنَا الْحَزْنَ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ﴿34﴾ الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِن فَضْلِهِ لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نُصَبٌ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ﴿35﴾

ترجمہ کنزالایمان: بے شک وہ جو اللہ کی کتاب پڑھتے ہیں اور نماز قائم رکھتے ہیں اور ہمارے دیئے سے کچھ ہر روزی راہ میں خرچ کرتے ہیں پوشیدہ اور ظاہر وہ اسکی تجارت کے امیدوار ہیں جس میں ہرگز ٹوٹا (نقصان) نہیں تاکہ ان کے ثواب انہیں بھرپور دے اور اپنے فضل سے اور زیادہ عطا کرے بے شک وہ بخشنے والا قدر فرمانے والا ہے اور وہ کتاب جو ہم نے تمہاری طرف وحی بھیجی وہی حق ہے اپنے سے اگل کتابوں کی تصدیق فرماتی ہوئی بے شک اللہ اپنے بندوں سے خبردار دیکھنے والا ہے پھر ہم نے کتاب کا وارث کیا اپنے چنے ہوئے بندوں کو تو ان میں کوئی اپنی جان پر ظلم کرتا ہے اور ان میں کوئی میانہ چال پر ہے اور ان میں کوئی وہ ہے جو اللہ کے حکم سے بھلائیوں میں سبقت لے گیا یہی بڑا فضل ہے بسنے کے باغوں میں داخل ہوں گے وہ ان میں سونے کے نکلن اور موتی پہنائے جائیں گے اور وہاں ان کی پوشاک ریشمی ہے اور کہیں گے سب خوبیاں اللہ کو جس نے ہمارا غم دور کیا بے شک ہمارا رب بخشنے والا قدر فرمانے والا ہے وہ جس نے ہمیں آرام کی جگہ اتارا اپنے فضل سے ہمیں اس میں نہ کوئی تکلیف پہنچے نہ ہمیں اس میں کوئی تکان لاحق ہو۔ (پ 22، الفطر: 29، 35)

(5) اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِي تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلَدِينَ جُلُودُهُمْ وَقُلُوْا بِهِمْ إِيذًا كَرِهُوا ذَلِكُ هُدًى مِّنَ اللَّهِ يُضْلِلُ اللَّهُ مَن يَّشَاءُ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن هَادٍ ﴿23﴾

ترجمہ کنزالایمان: اللہ نے اتاری سب سے اچھی کتاب کہ اول سے آخر تک ایک سی ہے دوہرے بیان والی اس سے بال کھڑے ہوتے ہیں ان کے بدن پر جو اپنے رب سے ڈرتے ہیں پھر ان کی کھالیں اور دل نرم پڑتے ہیں یا خدا کی طرف رغبت میں یہ اللہ کی ہدایت ہے راہ دکھائے اس سے جسے چاہے اور جسے اللہ گمراہ کرے اسے کوئی راہ دکھانے والا نہیں۔ (پ 23، الزمر: 23)

کیا تم میں کوئی شخص اس کو پسند کرتا ہے کہ بطحان یا عقیق میں صبح کو جائے اور وہاں سے دو اونٹنیاں کو ہان والی مانے، اس طرح کہ گنہ اور قطع رحم نہ ہو یعنی جائز طور پر۔ ہم نے عرض کی، کہ یہ بات ہم سب کو پسند ہے۔ فرمایا: پھر کیوں نہیں صبح کو مسجد میں جا کر کتاب اللہ کی دو آیتوں کو سیکھتا، کہ یہ دو اونٹیوں سے بہتر ہیں اور تین تین سے بہتر اور چار چار سے بہتر۔ (2) دلی ہذا القیاس۔

(2) صحیح مسلم، کتاب صلاۃ مسافرین... راجع، باب فضل قراءة القرآن... الحدیث: ۲۵۱- (۸۰۳)، ص ۴۰۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ صفہ کے معنی ہیں چہرہ (تھڑا) مسجد نبوی سے متصل پیچھے کی جانب تھوڑا سا چبوترہ بنادیا گیا تھا جہاں مہمان اترتے تھے اور علم سیکھنے والے فقراء صوفیہ وہاں مستقل طور پر رہتے تھے یہ حضرات اصحاب صفہ کہلاتے انہیں کی سی صفات رکھنے والوں کو آج صوفیہ کہتے ہیں، یعنی صفائی دس اور صوف کا لباس رکھنے والی جماعت یہ حضرات کم و بیش ہوتے رہتے تھے کبھی ستر اور کبھی دوسو سے زیادہ گویا یہ مدرسہ نبوی تھا عقبہ ابن عمر اور ابو ہریرہ بھی انہی میں سے تھے۔

۲۔ یعنی تھوڑی دور جا کر تھوڑی سی دیر میں بہت ساحل مال لے آوے عرب میں اونٹنی بڑا عزیز مال تھا عقیق مدینہ منورہ سے دو تین میل پر ایک بازار ہے جہاں جنور زیادہ فروخت ہوتے ہیں بطحان مدینہ پاک کا ایک وسیع جنگل ہے بطح بمعنی وسعت یا پتھر یا علاقہ۔

۳۔ یعنی یا رسول اللہ یہ تو ہم سب چاہتے ہیں۔ خیال رہے کہ وہ حضرات اگرچہ تارک دنیا تھے مگر دین کے لیے دنیا حاصل کرنے کو بہت فضل جانتے تھے دنیا اگر دین کے لیے ہو تو عین دین ہے اور اگر طین (مٹی کا رے) کے لیے ہو تو دنیا ہے یعنی دنی چیز لہذا حدیث پر یہ اعتراض نہیں کہ وہ لوگ تو محب دنیا نہ تھے پھر یہ جواب کیوں دیا۔

۴۔ یہ گفتگو صرف صفہ والے اصحاب سے نہیں ہے وہ تو ہر وقت گویا مسجد ہی میں رہتے تھے، بلکہ تاقیامت مسلمانوں سے ہے کہ دنیاوی کاروبار میں مشغول ہونے سے پہلے کچھ علم قرآن حاصل کر لیا کرو۔ اس سے معلوم ہوا کہ دینی مدرسے مسجد میں ہونا بہتر ہیں حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کا مدرسہ صفہ میں تھا جو مسجد سے متصل تھا گویا مسجد ہی میں تھا، نیز معلوم ہوا کہ صبح سویرے علم قرآن حاصل کرنا افضل صبح کے کام میں برکت ہے یہ بھی معلوم ہو کہ علماء بلا تامل طلباء کو علم سکھایا کریں۔

۵۔ یعنی پانچ بیات پانچ دنوں سے افضل اور چھ یا سات آیتیں اسی قدر اونٹوں سے افضل عرب میں اہل مطلقاً اونٹ کو کہتے ہیں نہ ہو یہ مراد آیت سیکھنا یا اس کی تعلیم میں مشغول رہنا ہے یعنی ایک آیت سیکھنا ایک اونٹنی کی ملکیت سے بہتر ہے لہذا حدیث پر یہ اعتراض نہیں کہ آیت قرآنی تو تمام دیا سے بہتر ہے ایک اونٹ کا ذکر کیوں ہوا یا یہ تفصیل ان اہل عرب کو سمجھانے کے لیے ہے جنہیں اونٹ بہت مرغوب ہے جیسے میٹھی نیند سونے والوں کو سمجھانے کے لیے فجر کی اذان میں کہتے ہیں "الصلوة خیر من النوم" نماز اس نیند سے بہتر ہے حالانکہ نماز ساری دنیا سے بہتر ہے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۳۶)

حدیث ۳: شیخ بخاری و مسلم میں ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو مومن قرآن پڑھتا ہے، اس کی مثال ترنج کی سی ہے کہ خوشبو بھی اچھی ہے اور مزہ بھی اچھا ہے اور جو مومن قرآن نہیں پڑھتا، وہ کھجور کی مثل ہے کہ اس میں خوشبو نہیں مگر مزہ شیریں ہے۔ اور جو منافق قرآن نہیں پڑھتا، وہ اندرائن کی مثل ہے کہ اس میں خوشبو بھی نہیں ہے اور مزہ کڑوا ہے اور جو منافق قرآن پڑھتا ہے، وہ پھول کی مثل ہے کہ اس میں خوشبو ہے مگر مزہ کڑوا۔ (3)

(3) صحیح بخاری، کتاب الاطعمۃ، باب ذکر الطعام، الحدیث: ۵۳۲۷، ج ۳، ص ۵۳۵۔

ومشکاۃ المصابیح، کتاب فضائل القرآن، الحدیث: ۲۱۱۳، ج ۱، ص ۵۸۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی تلاوت قرآن کرتا رہتا ہے منزل نہیں چھوڑتا، معلوم ہوا کہ ہمیشہ تلاوت قرآن کرنا بہت بڑی عبادت ہے خواہ معنی سمجھے یا نہ سمجھے، ترنج عرب کا مشہور پھل ہے جس کا رنگ بہت اچھا ہوتا ہے خوشبو نہایت اعلیٰ مزہ بہت بہترین، دماغ اور معدہ کو بہت قوت دیتا ہے اس کے بہت فوائد کتب طب میں مذکور ہیں۔

۲۔ یہ ہی اس مؤمن کا حال ہے کہ لوگ اس کی تلاوت سے ایمانی لذت بھی حاصل کرتے ہیں اور ثواب بھی خود اسے بھی لذت و ثواب دونوں ملتے ہیں، قرآن شریف بہت ہی لذیذ چیز ہے۔

۳۔ ایسے ہی یہ غافل مسلمان ہے کہ اس کا ظاہر خاص اچھا نہیں مگر باطن نور ایمانی سے منور ہے لوگ اس سے ظاہری فائدہ نہیں اٹھاتے مگر اس کی صحبت سے کچھ نہ کچھ باطنی فیض پالیتے ہیں مؤمن کی صحبت بھی اچھی ہے۔

۴۔ اندرائن ایک مشہور کڑوا پھل ہے جس میں کسی قسم کی بو نہیں اور سخت کڑوا ہوتا ہے، منافق کا نہ ظاہر اچھا نہ باطن۔

۵۔ یعنی بے دین جو ریاء کے لیے یا مسلمانوں کو دھوکا دینے کے لیے قرآن پڑھے، اگرچہ خود تو بد مزہ ہے کہ منافق ہے مگر اس کی تلاوت سے سننے والوں کو کچھ نہ کچھ راحت ضرور مل جاتی ہے، جیسے ریحانہ گھاس (نیاز بو) کہ ہے تو بد مزہ مگر اس کی خوشبو سے دماغ ضرور معطر ہو جاتا ہے۔ اس حدیث سے چند مسئلے معلوم ہوئے ایک یہ کہ تلاوت قرآن کا اثر ظاہر و باطن میں ہوتا ہے کہ اس سے زبان، کان، دل، دماغ ایمان سب ہی تازہ ہوتے ہیں۔ دوسرے یہ کہ قرآن پاک کی تاثیریں مختلف ہیں جیسے پڑھنے والے کی زبان ویسے ہی تاثیر قرآن حضرت بابا فرید الدین گنج شکر رحمۃ اللہ علیہ نے انڈے پر قل ہو اللہ پڑھ کر دم کر دیا تو سوتا ہو گیا، اور فرمایا کہ کلام ربانی کے ساتھ زبان فرید ہونی چاہیے دیکھو یہاں مؤمن و منافق کی تلاوتوں میں فرق فرمایا گیا پھر جیسا مؤمن ویسی ہی تلاوت کی تاثیر۔ تیسرے یہ کہ ہر تلاوت قرآن کرنے والے سے دھوکہ نہ کھاؤ ان میں کبھی منافق بھی ہوتے ہیں، قرآن کریم ریڈیو کی بیٹی ہے، تلاوت والے کے دل کی سوئی اگر شیطان کی طرف لگی ہوئی ہے تو اس کے سامنے تو قرآن ہوگا مگر اس کے منہ سے شیطان بولے گا اور اگر دل کی سوئی مدینہ پاک کی طرف ہے تو ان شاء اللہ زبان سے مدینہ کے فیضان نکلیں گے۔

حدیث ۴: صحیح مسلم میں حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ اس کتاب سے بہت لوگوں کو بلند کرتا ہے اور بہتوں کو پست کرتا ہے۔ (4) یعنی جو اس پر ایمان لاتے اور عمل کرتے ہیں، اُن کے لیے بلندی ہے اور دوسروں کے لیے پستی ہے۔

حدیث ۵: صحیح بخاری و مسلم میں حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو قرآن پڑھنے میں ماہر ہے، وہ کرانا کاتبین کے ساتھ ہے اور جو شخص رک رک کر قرآن پڑھتا ہے اور اُس پر شاق ہے یعنی اُس کی زبان آسانی سے نہیں چلتی، تکلیف کے ساتھ ادا کرتا ہے، اُس کے لیے دوا جریں۔ (5)

۶۔ مرقات نے فرمایا کہ جس گھر میں ترنج ہو وہاں جنات نہیں آتے ایک شاعر کہتا ہے۔

حلا ونورا وطاب العود والورق

کانکم شجر الا ترنج طالب معا

۷۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ قرآن کی تلاوت بھی مستقل عبادت ہے اور اس پر عمل مستقل نیکی محبوب کا پیغام، وطن کا خط پڑھنے، سننے میں بھی مزہ آتا ہے اس سے وہ لوگ عبرت پکڑیں جو کہتے ہیں کہ تلاوت قرآن محض بے کار ہے قرآن عمل کے لیے ہے نہ کہ پڑھنے کے لیے کیونکہ دوا کھانے پینے اور برتنے کے لیے ہوتی ہے محض نسخہ پڑھ لینے سے شفا نہیں ہوتی، ان بے وقوفوں کو خبر نہیں کہ بعض دواؤں کا سونگھنا مفید ہوتا ہے بعض کا محض دیکھنا فائدہ مند، بزدل دیکھنے سے آنکھ کی روشنی بڑھتی ہے اور بعض دواؤں کے سننے سے فائدہ ہوتا ہے، بیمار عشق کے لیے محبوب کا ذکر سننا بہت مفید دوا ہے لیموں یا ترش چیزوں کا ذکر کر دے تو منہ میں پانی بھر جاتا ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۴۰)

(4) صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، ... الخ، باب فضل من یقوم بالقرآن، ... الخ، الحدیث: ۲۶۹۔ (۸۱۶)، ص ۴۰۸۔

(5) المربع السابق، باب فضل الماھر بالقرآن، ... الخ، الحدیث: ۲۴۳۔ (۷۹۸)، ص ۴۰۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ قرآن کریم کا ماہر وہ عالم ہے جو الفاظ قرآن، معانی و رسائل قرآن اسرار و رموز قرآن کا واقف ہو، اس کا بڑا درجہ ہے۔

۲۔ شیخ نے فرمایا کہ یہاں سفر سے فرشتوں کی جماعت مراد ہے اور کرام بررة سے انبیاء کرام مقصود۔ مرقات نے فرمایا کہ یہ تینوں صفیں فرشتوں کی ہیں۔ مَسْفَرًا یا تَوَسْفَرًا سے بنا ہے یعنی سفر کرتے رہنے والے فرشتے جو ہمیشہ حق تعالیٰ اور رسولوں کے درمیان آتے جاتے رہتے ہیں وحی وغیرہ کے لیے یا سَفَرًا سے بنا بمعنی کتاب، جس کی جمع اسفار ہے "يَحْمِلُ اسْفَارًا" یعنی وہ فرشتے جو لوح محفوظ سے مضامین صحیفوں میں نقل کرتے رہتے ہیں یا کاتبین اعمال فرشتے یا سفار بمعنی اصلاح سے بنا یعنی وہ فرشتے جو رب تعالیٰ کی طرف سے بندوں پر مصلحت و رحمت کی خبریں لاتے ہیں چونکہ یہ فرشتے اول درجہ کے مقرب بارگاہ الہی ہیں اور گناہوں سے بہت ہی پاک و صاف اس لیے ان کے یہ تین لقب ہوئے قرآن کریم کا عالم ان فرشتوں اور نبیوں کا سا کام کرتا ہے اس لیے اس کا حشر بھی انہیں جماعتوں کے ساتھ ہوگا۔ معلوم ہوا کہ قیامت میں اچھوں کا ساتھ اللہ تعالیٰ کی بڑی نعمت ہے۔ شعر

حدیث ۶: شرح سنہ میں عبدالرحمن بن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: تین چیزیں قیامت کے دن عرش کے نیچے ہوں گی۔ ایک قرآن کہ یہ بندوں کے لیے جھگڑا کریگا، اس کے لیے ظاہر و باطن ہے اور امانت ۲ اور رشتہ ۳ پکارے گا کہ جس نے مجھے ملایا، اُسے اللہ (عزوجل) ملائے گا اور جس نے مجھے کانا، اللہ (عزوجل) اُسے کائے گا۔ (6)

پھر تو سمجھو نجات ہو جائے

گر محمد کا ساتھ ہو جائے

بعض نے فرمایا کہ یہ تینوں مضمین صحابہ کرام کی ہیں کہ انہوں نے قرآن جمع بھی کیا اور وہ اللہ کے ہاں مقبول اور گناہوں سے محفوظ بھی ہیں، مرقات۔

۳۔ سبحان اللہ! عالم بالقرآن کا تو وہ مرتبہ ہے جو ابھی ذکر ہوا اور جو کند ذہن، موٹی زبان والا قرآن پاک سیکھ تو نہ سکے مگر کوشش میں لگا رہے کہ مرتے دم تک کوشش کئے جائے وہ ذیل ثواب کا مستحق ہے، شوق محنت۔ خیال رہے کہ یہ دو گنا ثواب عالم قرآن کے مقابلہ میں نہیں ہے، عالم قرآن تو فرشتوں نبیوں اور صحابہ کے ساتھ ہے بلکہ اس کے مقابلہ میں جو بے تکلف قرآن پڑھ کر بس کر دے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۳۸)

(6) شرح السنۃ، کتاب البر والصلۃ، باب ثواب صلۃ الرحمہ... إلخ، الحدیث: ۳۳۲، ج ۶، ص ۳۳۸.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی ان تین چیزوں کو بہت ہی عزت و قرب الہی عطا فرمایا جائے گا کہ خاص عرش اعظم کے نیچے انہیں جگہ دی جائے گی جیسے وزیر کی نشست بادشاہ کے بہت قریب ہوتی ہے۔ اور ان کے طفیل ان کے عاملوں کو بھی عزت و قرب نصیب ہوگا، اللہ تعالیٰ ان کا اجر ضائع نہ کرے گا۔

۲۔ بندوں سے مراد قرآن کریم کی تلاوت اور اس پر عمل کرنے والے مسلمان ہیں اور جھگڑنے سے مراد جھگڑ جھگڑ کر ان کی شفاعت کرنا ہے، یعنی قرآن شریف اپنے تلاوت کرنے والوں اور اپنے عاملین کی شفاعت رب تعالیٰ سے جھگڑ جھگڑ کر کرے گا، یہ جھگڑا مقابلہ کا نہیں بلکہ ناز کا ہوگا۔

۳۔ یعنی قرآن پاک کے بعض معنی ظاہر ہیں جو عام مسلمان سمجھ لیتے ہیں۔ بعض مخفی جو واجب التاویل ہیں، جن تک علماء کی رسائی ہے، یا تلاوت قرآن پاک کا ایک ظاہر ہے، یعنی الفاظ کا زبان سے پڑھنا اور ایک باطن یعنی اس میں غور و تدبر کرنا یا شرعی احکام قرآن کا ظاہر ہے اور طریقت کے اسرار اس کا باطن جیسے بدن انسان ہمارا ظاہر ہے اور روح انسان ہمارا باطن۔ مطلب یہ ہے کہ قرآن کی شفاعت بقدر تعلق ہوگی ظاہر قرآن والوں کی شفاعت اور قسم کی کرے گا اور باطن قرآن سے تعلق رکھنے والوں کی شفاعت اور قسم کی کرے گا۔

۴۔ امانت سے مراد خلق و خالق کے حقوق ہیں جو ہمارے ذمہ واجب الادا ہیں، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلَهَا مِنْهُمْ فَاخْتَارَ اللَّهُ رَسُولًا مِنْهُمْ"۔ یہاں امانت کے یہ معنی بھی کئے گئے ہیں یا امانت سے مراد عشق الہی اور عشق رسول ہے کہ قرآن کو۔

حدیث ۷: امام احمد و ترمذی و ابو داؤد و نسائی نے عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: صاحب قرآن سے کہا جائے گا کہ پڑھ اور چڑھ اور ترتیل کے ساتھ پڑھ، جس طرح دنیا میں ترتیل کے ساتھ پڑھتا تھا۔ تیری منزل آخر آیت جو تو پڑھے گا، وہاں ہے۔ (7)

حدیث ۸: ترمذی و دارمی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس کے جوف میں کچھ قرآن نہیں ہے، وہ ویرانہ مکان کی مثل ہے۔ (8)

عشق سے بہت تعلق ہے۔

۵۔ رحم سے مراد انہوں کے آپس کی قربت داریاں ہیں چونکہ ان قربت داریوں کا تعلق عورت کے رحم سے ہے اس لیے ان قرابتوں کو رحم فرما یا جاتا ہے چونکہ اہل قربت کے حقوق ادا کرنا بہت ضروری ہیں، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "وَأَتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ" الخ اس لیے یہ بھی وہاں ہوگا۔ خیال رہے کہ دنیا کے اعراض کل قیامت میں جواہر ہوں گے ان اعمال کی شکل و صورت ہوگی، یہ بات بھی کریں گے جیسے یہاں خواب میں اعراض اجسام نظر آتے ہیں۔

۶۔ یعنی دنیا میں جس نے اپنے اہل قربت کے حقوق ادا کئے تھے آج اسے قرب الہی اور رحمت الہی نصیب ہوں گے اور جس نے دنیا میں اپنے اہل قربت کے حقوق ادا نہ کئے ان سے تعلق نہ رکھا، آج وہ خدا کی رحمت سے محروم رہے گا رحم کا یہ پکارنا رب تعالیٰ کے حکم سے ہوگا جیسے حکام کے چہرہ اسی پکھری کے دروازے پر اعلانات کرتے ہیں۔ خیال رہے کہ بندے پر تین قسم کے حق ہیں: اللہ تعالیٰ کے عام انسانوں کے اور خاص قربت والوں کے قرآن پاک کا تعلق حقوق اللہ سے ہے، امانت کا تعلق عام لوگوں سے اور رحم کا تعلق اپنے عزیزوں و قربت داروں سے اس لیے یہ تین ہی عرش اعظم کے نیچے ہوں گے کامیاب بندہ وہ ہے جو ان سب حقوق کو ادا کر کے جائے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۵۸)

(7) سنن ابی داؤد، کتاب الوتر، باب کیف یستحب الترتیل فی القراءة، الحدیث: ۱۴۶۳، ج ۲، ص ۱۰۴.

(8) سنن ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب: ۱۸، الحدیث: ۲۹۲۲، ج ۳، ص ۴۱۹.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب جوف کے حقیقی معنی ہیں پیٹ، اسی لیے معتل العین کو اب جوف یعنی خالی پیٹ والا کہتے ہیں رب تعالیٰ فرماتا ہے: "مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ اب جوف کے حقیقی معنی ہیں پیٹ، اسی لیے معتل العین کو اب جوف یعنی خالی پیٹ والا کہتے ہیں رب تعالیٰ فرماتا ہے: "مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ

وَمِنْ قُلُوبَيْنِ فِي جَوْفِهِ" مگر یہاں جوف سے مراد دل یا سینہ ہے گھر کی آبادی انسان و سامان سے ہے دل کی آبادی قرآن سے باطن میں روح کی آبادی ایمان سے تو جسے قرآن بالکل یاد نہ ہو یا اگرچہ یاد تو ہو مگر کبھی اس کی تلاوت نہ کرے یا اس کے خلاف عمل کرے اس کا دل ایسا ہی ویران ہے جیسے انسان و سامان سے خالی گھر۔ شعر

آباد وہ ہی دل ہے کہ جس میں تمہاری یاد ہے

جو یاد سے غافل ہو ویران ہے برباد ہے

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۶۰)

حدیث ۹: ترمذی و دارمی نے ابو سعید رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ فرماتا ہے: جس کو قرآن نے میرے ذکر اور مجھ سے سوال کرنے سے مشغول رکھا، اُسے میں اُس سے بہتر دوں گا، جو مانگنے والوں کو دیتا ہوں۔ اور کلام اللہ کی فضیلت دوسرے کلاموں پر ویسی ہی ہے، جیسی اللہ (عزوجل) کی فضیلت اسکی مخلوق پر ہے۔ (9)

حدیث ۱۰: ترمذی و دارمی نے عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص کلام اللہ کا ایک حرف پڑھے گا، اُس کو ایک نیکی ملے گی جو دس کے برابر ہوگی۔ میں یہ نہیں کہتا ایک

(9) المرجع السابق، باب: ۲۵، الحدیث: ۲۹۳۵، ج ۲ ص ۴۲۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ قرآن سے مراد حفظ قرآن یا تلاوت قرآن یا تفکر و تدبر فی القرآن ہے۔ یعنی جو حافظ یا قاری قرآن یا تجوید یاد کرنے میں عالم دین قرآن کریم سے مسائل مستنبط کرنے میں اتنا مشغول رہے کہ اسے دیگر وظیفے دعاؤں کا وقت ہی نہ ملے۔ اسی طرح جو معلم تعلیم علوم قرآن کی مشغولیت کی وجہ سے درود وظیفے دعا میں نہ کر سکے یہاں دعاؤں وظیفوں سے مراد وہ دعائیں وظیفے ہیں جو قرآن مجید کے علاوہ ہیں ورنہ قرآن شریف میں خود بہت دعائیں وظیفے ہیں۔

۲۔ اعلیٰ مشکلم کا صیغہ ہے اسی لیے سائلین منصوب آیا۔ خیال رہے کہ رب تعالیٰ سے دعائیں مانگنا صراحتاً اور صاف صاف بھیک مانگنا ہے مگر تلاوت قرآن یا تعلیم قرآن بالواسطہ بھیک ہے جیسے ہمارے دروازہ پر بھکاری کھڑے ہو کر ہماری تعریفیں کرتے ہیں کہ آپ بڑے سخی و اتا ہیں ہوں ہی درود شریف در پردہ دعا ہے بھکاری غنی کے بال بچوں کو دعائیں دے کر در پردہ بھیک مانگتے ہیں بچے جیتے رہیں جان مال کی خیر ہو، ہم بھی رب تعالیٰ کے محبوب کو دعائیں دے دے کہ اس سے بھیک مانگتے ہیں اسی لیے درود شریف کے متعلق بھی مشکوٰۃ شریف میں گزر چکا کہ جو شخص درود شریف میں مشغولیت کی وجہ سے دعا نہ مانگ سکے اس کے تمام ضروریات خود ہی پوری ہوں گے، دکھ، درد، رنج، غم خود بخود ہی دفع ہوتے رہیں گے۔

۳۔ ظاہر یہ ہے کہ یہ جملہ بھی حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کا ہی فرمان عالی ہے یعنی کلام کی شان مشکلم کی شان کے بقدر ہوتی ہے۔ ایک بات فقیر بے نوا کہے اس پر کوئی دھیان بھی نہیں دیتا وہ ہی بات بادشاہ کہے تو دنیا میں دھوم مچ جاتی ہے چونکہ کلام اللہ رب تعالیٰ کا کلام ہے اس لیے تمام مخلوق کے کلام سے یقیناً افضل ہے، اسی طرح حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم بعد خدا تمام خلق سے افضل ہیں تو حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کی احادیث تمام خلق کے کلاموں سے بعد قرآن افضل ہوں گی۔

۴۔ اس حدیث کے تمام راوی ثقہ ہیں سوائے عطیہ عوفی کے کہ ان میں کچھ ضعف ہے مگر فضائل ائمال میں ضعیف حدیث بھی معتبر ہے۔ خصوصاً جب کہ دوسری روایتوں یا قرآنی آیتوں سے اسے قوت پہنچ جائے اس حدیث کو دوسری اسنادوں سے قوت حاصل ہے اس لیے

اسے ترمذی نے حسن فرمایا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۲ ص ۳۶۱)

حرف ہے، بلکہ الف ایک حرف ہے، لام دوسرا حرف ہے، میم تیسرا حرف۔ (10)

حدیث ۱۱: ابو داود نے معاذ جہنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس نے قرآن پڑھا اور جو کچھ اس میں ہے اس پر عمل کیا، اس کے والدین کو قیامت کے دن تاج پہنایا جائے گا۔ جس کی روشنی سورج سے اچھی ہے، اگر وہ تمہارے گھروں میں ہوتا تو اب خود اس عمل کرنے والے کے متعلق تمہارا کیا گمان ہے۔ (11)

(10) المرجع السابق، باب ماجاء فی من قرأ حرفاً من القرآن... إلخ، الحدیث: ۲۹۱۹، ج ۴ ص ۴۱۷.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ظاہر یہ ہے کہ یہاں حرف سے مراد وہ حرف ہے جو جدا جدا پڑھا جائے لہذا التّمّین حرف ہیں۔ چنانچہ الف ایک حرف لام ایک حرف اور میم ایک حرف مرقات۔ مگر قوی تر یہ ہے کہ حرف سے مراد مطلقاً حرف ہے علیحدگی کے قابل ہوں یا نہ ہوں کیونکہ حدیث پاک میں کوئی قید نہیں، لہذا قرآن کریم میں لفظ اللہ پڑھنے سے چالیس نیکیاں ملیں گی خیال رہے کہ قرآن پاک میں خبیث چیزوں کے نام بھی ہیں جیسے ابلیس، لہب، ابلیس شیطان، خنزیر، وغیرہ مگر ان ناموں کی تلاوت پر بھی ثواب اسی حساب سے ہوگا کہ یہ حروف یا ان کے ترجمے برے نہیں، بلکہ ان کے مصداق خبیث ہیں یہ تحقیق خیال میں رکھی جائے۔

۲۔ اس فرمان میں اس آیت کریمہ کی طرف اشارہ ہے کہ "مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أََمْثَالِهَا" یہ تو ادنیٰ ثواب ہے، آگے رب تعالیٰ کا فضل ہماری شمار سے باہر ہے "وَاللّٰهُ يُضَعِّفُ لِمَنْ يُشَاءُ"۔ مرقات میں فرمایا کہ یہ ثواب تو عام تلاوتوں کا ہے، مگر معظّمہ و مدینہ میں تلاوت کا ثواب اس حدیث سے معلوم کر دو کہ مکہ معظمہ میں ایک نیکی کا ثواب ایک لاکھ ہے اور مدینہ پاک میں پچاس ہزار۔

۳۔ چونکہ عربی میں حرف، حرف معانی، حرف مبانی، یعنی حرف ہجاء اور جملہ مفیدہ مطلقاً کلمہ سب کو ہی کہا جاتا ہے اسی لیے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے خود یہ تفسیر فرمائی۔

۴۔ الف، لام، میم کو حرف فرمانا مجاز ہے ورنہ یہ حروف کے نام یعنی اسمائے حروف ہیں اس میں لطیف اشارہ اس طرف ہے کہ الف میں تین حرف ہیں، ا، ل، ف مگر اس کو ہم ایک حرف ہی مانتے ہیں کہ قرآنی تلاوت میں یہ ایک حرف ہو کر آتا ہے، اگرچہ اس کے اجزائیں ہیں بعض شارحین نے کہا کہ الم ترکیف میں الم کی تین نیکیاں ہیں اور "الْمَ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ" میں اللہ کی نوے نیکیاں ہیں، کیونکہ اس میں حرف نو ہیں اسمائے حروف اگرچہ تین ہیں مگر یہ قول اس حدیث کے خلاف ہے کیونکہ مکتوبی یعنی لکھے ہوئے حرف مراد ہیں نہ کہ مقروئی یعنی پڑھے ہوئے حرف اور مکتوبی حرف سورۃ فیل و بقرہ میں یکساں ہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳ ص ۳۶۲)

(11) سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فی ثواب قراءۃ القرآن، الحدیث: ۱۳۵۳، ج ۲ ص ۱۰۰.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ظاہر یہ ہے کہ یہاں قرآن پڑھنے سے مراد روزانہ اس کی تلاوت کرنا ہے اور ہو سکتا ہے کہ قرآن پڑھنے سے مراد علوم قرآن سیکھنا ہو۔

حدیث ۱۲: امام احمد و ترمذی و ابن ماجہ و دارمی نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس نے قرآن پڑھا اور اس کو یاد کر لیا، اس کے حلال کو حلال سمجھا اور حرام کو حرام جانا۔ اس کے گھر والوں میں سے دس شخصوں کے بارے میں اللہ تعالیٰ اس کی شفاعت قبول فرمائے گا، جن پر جہنم واجب ہو چکا تھا۔ (12)

حدیث ۱۳: ترمذی و نسائی و ابن ماجہ نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو آدمی قرآن پڑھے اور اس کو یاد کر لے، وہ میرے لیے ایک درجہ کا اجر ہے۔

۲۔ یعنی عالم باعمل کے مؤمن ماں باپ کا درجہ یہ ہوگا خواہ انہوں نے اسے اپنی کوشش سے پڑھا ہو یا نہیں کیونکہ حدیث مطلق ہے پڑھانے کی قید نہیں۔

۳۔ یعنی اگر سورج زمین پر ہوتا تو بتاؤ اس کی چمک دمک روشنی تمہارے گھروں میں کتنی ہوتی اس سے زیادہ اس تاج کے موتی چمکتے ہوں گے۔

۴۔ یعنی پھر عالم باعمل کے متعلق سوچو کہ اس کا درجہ قیامت میں کیا ہوگا، وہ تو ہمارے خیال سے وراہ ہے۔

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۶۳)

(12) سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل قاری القرآن، الحدیث: ۲۹۱۳، ج ۳، ص ۴۱۳۔

وسنن ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فضل من تعلم القرآن... الخ، الحدیث: ۲۱۶، ج ۱، ص ۱۳۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ استظہار کے معنی ہیں مدد لینا یعنی قرآن میں اپنے دل سے مدد لے کہ اسے یاد رکھے، ہر وقت اس کا خیال و لحاظ رکھے۔

۲۔ یعنی صرف تلاوت و حفظ پر قناعت نہ کرے بلکہ اس کے عقائد کو ماننے احکام پر عمل کرے لہذا اس میں حافظ و عالم باعمل دونوں داخل ہیں۔

۳۔ ایسے باعمل عامل کو قرآن پاک سے دو عظیم الشان فائدے حاصل ہوں گے: ایک یہ کہ اول ہی سے جنت میں داخل کیا جائے گا۔ دوسرے یہ کہ اس کے اہل قرابت میں سے دس دوزخی مسلمانوں کو اس کی شفاعت سے بخشا جائے گا۔ معلوم ہوا کہ شفاعت بلندی درجات ہی کی نہ ہوگی بلکہ معافی سنیات کی بھی ہوگی اور علماء حافظ، شہداء وغیرہم کی شفاعت برحق ہے۔ خیال رہے کہ شفاعت کبرے کا سہرا صرف حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے سر ہے شفاعت صغریٰ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے غلام بھی کریں گے شفاعت کی تحقیق و تقسیم ہماری "تفسیر نعیمی" جلد سوم میں ملاحظہ فرمائیے۔

۴۔ یہ حدیث غریب بھی ہے اور حفص ابن سلیمان راوی کی وجہ سے اس کی یہ اسناد جس میں یہ راوی ہے ضعیف بھی ہے مگر ہم پہلے عرض

کر چکے ہیں کہ فضائل میں حدیث ضعیف بھی قبول ہے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۶۶)

عسید و سلم نے فرمایا کہ قرآن سکھو اور پڑھو کہ جس نے قرآن سیکھا اور پڑھا اور اس کے ساتھ قیام کیا، اس کی مثال یہ ہے جیسے مشک سے تھیلی بھری ہوئی ہے جس کی خوشبو ہر جگہ پھیلی ہوئی ہے اور جس نے سیکھا اور سو گیا یعنی قیام اللیل نہیں کیا، اس کی مثال وہ تھیلی ہے جس میں مشک بھری ہوئی ہے اور اس کا مونہ باندھ دیا گیا ہے۔ (13)

حدیث ۱۴: بیہقی نے شعب الایمان میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ان دلوں میں بھی زنگ لگ جاتی ہے، جس طرح لوہے میں پانی لگنے سے زنگ لگتی ہے۔ عرض کی،

(13) سنن اترمدی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل سورة البقرة... الخ، الحدیث: ۲۸۸۵، ج ۲ ص ۴۰۱.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ظاہر یہ ہے کہ قرآن سیکھنے سے مراد عام ہے جس میں قرآن کے الفاظ معانی، احکام سیکھنا سب ہی شامل ہے فقہاء فرماتے ہیں حفظ قرآن فرض کفایہ ہے مختلف بستیوں میں اتنے حافظ ضرور رہیں جن سے قرآن کریم کا تواتر قائم رہے اور کوئی بے دین قرآن میں تہدیلی نہ کر سکے، لہذا اگر حفظ قرآن چھوڑ دیں تو سب گنہگار ہیں اور اگر اتنے لوگ حفظ کر لیں سب کا فرض ادا ہو گیا علم قرآن کا بھی یہی حال ہے اور بقدر جواز نماز قرآن حفظ کرنا فرض عین ہے جیسے بقدر ضرورت مسائل یاد کرنا سیکھنا فرض عین ہے اور پورا عالم دین بننا فرض کفایہ۔

۲۔ یعنی قرآن شریف یاد کرنے اور سیکھنے کے بعد اس کا دور نہ چھوڑ دو اور اپنے حافظہ پر اعتماد نہ کر لو یہ بہت جلد ذہن سے اتر جاتا ہے یا مطلب یہ ہے کہ قرأت قرآن یعنی تجوید سیکھو کہ بقدر جواز نماز تجوید سیکھنا بھی فرض عین ہے اور پورا قاری بننا فرض کفایہ اس لیے عرس ختم، میلاد اور گیارھویں شریف وغیرہ میں قرآنی رکوع پنج آیات پڑھتے ہیں تاکہ لوگوں میں قرأت کا چرچا رہے یہ چیزیں خصوصاً تراویح کی نماز بھائے قرآن کا بڑا ذریعہ ہیں

۳۔ ہذا ایسے عالم وقاری کا سینہ گویا تھیلہ ہے اور اس میں قرآن شریف گویا تھیلے میں بھرا ہوا مشک ہے اور اس قاری کا تلاوت کرنا اس مشک کی مہک ہے جس سے سننے والے فائدہ اٹھاتے ہیں ہر جگہ سے مراد قرآن سننے والے ہیں جو قرآنی علم کی اشاعت کر جائے اس کی مہک سے قیامت تک کے مسلمان فائدہ اٹھاتے رہتے ہیں، رب تعالیٰ خدمت قرآن کی توفیق بخشے۔

۴۔ کہ اس کی تلاوت نہ کیا کرے یا اس پر عمل نہ کیا کرے۔

۵۔ اس بند تھیلے میں اگرچہ مشک تو ہے اور اسی مشک کی وجہ سے تھیلہ قیمتی بھی ہے مگر لوگ اس سے فائدہ نہیں اٹھاتے ایسے ہی یہ شخص اللہ کے نزدیک قیمتی ہے ۶۔ فقط قرآن یا عالم قرآن ہونے کی وجہ سے مگر لوگ اس سے فائدہ نہیں اٹھاتے بلکہ خود بھی فائدہ نہیں اٹھاتا کسی پنجابی شاعر نے کیا چھا کہا۔ شعر

آئی گھٹا اتر گئی بوند پتی نہ ایک

علم ددھیرا پڑھ لیا عمل نہ کیے نیک

پڑھے لکھے تے مان نہ کر یو پھٹ جاندا دودھ کڑھ کے

احمد یار حق ہو یوں علم ددھیرا پڑھ کے

یا رسول اللہ (صنی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم) اس کی جلا کس چیز سے ہوگی؟ فرمایا: کثرت سے موت کو یاد کرنے اور تلاوت قرآن سے۔ (14)

حدیث ۱۵: صحیح بخاری و مسلم میں جناب بن عبد اللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: قرآن کو اس وقت تک پڑھو، جب تک تمہارے دل کو الفت اور لگاؤ ہو اور جب دل اُچاٹ ہو جائے، کھڑے ہو جاؤ۔ (15) یعنی تلاوت بند کر دو۔

(14) شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی ارباب تلاوت، الحدیث: ۲۰۱۳، ج ۲، ص ۳۵۲-۳۵۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی گناہوں و دنیاوی الجھنوں میں مشغولیت ذکر محبوب سے غفلت وغیرہ دل کے زنگ کا سبب ہے یہ زنگ بھی معمولی ہوتی ہے جو معمولی کوشش سے جاتی رہتی ہے اور کبھی بہت سخت کہ بہت کوشش کے بعد دور ہوتی ہے اور کبھی ناقابل دفع جیسے رین اور ختم کہا جاتا ہے۔ رب تعالیٰ فرماتا ہے: "كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَى قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ"۔ خیال رہے کہ یہاں "هذه القلوب" سے مراد عام انسانوں کے دل ہیں۔ انبیائے کرام اور خاص اولیاء اللہ کے دل اس سے مستثنیٰ ہیں۔ جو ہمیشہ حفاظت الہی میں رہتے ہیں ان کے لیے ذکر موت اور تلاوت قرآن زیادتی نورانیت کے سبب ہیں۔

۲۔ یعنی ہر چیز کی صفائی کے آلات الگ الگ ہیں اور ہر ایک کی پالش جدا گانہ ہے تو دلوں کی پالش و صفائی کس چیز سے ہوگی۔

۳۔ کیونکہ موت کو یاد کرنے میں دل دنیا سے سرد ہو جاتا ہے آخرت کی طرف راغب ہو کر گناہوں سے متنفر اور نیکیوں کی طرف مائل ہو جاتا ہے جو شخص روزانہ موت کو یاد کر لیا کرے اس کو درجہ شہادت ملے گا اگرچہ طبیعت موت سے مرے۔ (شامی) اسی لیے زیارت قبوت سنت ہے تاکہ اس سے اپنی موت یاد آتی رہے، موت خاموش واعظ ہے۔

۴۔ کیونکہ قرآن گویا اپنے روحانی دیس کا خط ہے جو ہم پر دیسیوں کو وہاں کی یاد دلاتا ہے اس دیس کی یاد اس جسمانی عارضی دیس سے دل سرد کر دیتی ہے یہ بولتا ہوا واعظ ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ یاد موت کی کثرت دل کا زنگ دور کرتی ہے اور تلاوت مطلقاً خواہ زیادہ ہو یا کم یہ اثر کرتی ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۲۹۳)

(15) صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب اقرؤوا القرآن...، الحدیث: ۵۰۶۱، ج ۳، ص ۳۱۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ قاعدہ ان خوش نصیب لوگوں کے لیے ہے جن کو قرآن شریف کی تلاوت میں لذت اور حضور قلب میسر ہوتا ہے اور کبھی زیادہ تلاوت کی وجہ سے دل اکٹا جاتا ہے، وہ دل لگنے تک پڑھتے رہیں مگر وہ شخص جس کا دل تلاوت میں لگتا ہی نہ ہو وہ دل کو مجبور کر کے تلاوت کرے ورنہ لگنے کے غدر سے تلاوت چھوڑ نہ دے پہلے کچھ دن دل پر جبر کرنا پڑے گا پھر ان شاء اللہ دل لگنے لگے گا جیسا کہ تجربہ ہے۔

۲۔ یعنی کچھ دیر کے لیے تلاوت بند کر دو حتیٰ کہ وہ حالت جاتی رہے تمام عبادات کا بھی حال ہے کہ دل لگا کر ادا کر دو۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۲۱۵)

حدیث ۱۶: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ (عزوجل) کو جتنی توجہ اس نبی کی طرف ہے جو خوش آوازی سے قرآن پڑھتا ہے، کسی کی طرف اتنی توجہ نہیں۔ (16)

حدیث ۱۷: صحیح بخاری میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص قرآن کو تغنی یعنی خوش آوازی سے نہ پڑھے، وہ ہم میں سے نہیں۔ (17) اس حدیث کے متعلق یہ بھی کہا جاتا ہے کہ تغنی سے مراد استغنا ہے یعنی قرآن پڑھنے کے عوض میں کسی سے کچھ لینا نہ چاہیے۔

حدیث ۱۸: امام احمد و ابو داؤد و ابن ماجہ و دارمی نے براء بن عازب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: قرآن کو اپنی آوازوں سے مزین کرو۔ (18) اور دارمی کی روایت میں ہے کہ اپنی

(16) صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول اللہ تعالیٰ ولا ترفع الشفاعة... إلخ، الحدیث: ۴۸۲، ج ۴، ص ۵۶۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

ظاہر یہ ہے کہ یہاں نبی کریم سے مراد تمام انبیائے کرام ہیں اور قرآن سے مراد تمام آسمانی کتابیں اور صحیفے ہیں یعنی اللہ تعالیٰ نے اپنے نبیوں کو جس قدر تاکید حکم اس کا دیا کہ اپنی کتب آسمانی خوش الحانی سے پڑھیں اتنا تاکید حکم اور دوسری چیزوں کا نہ دیا اور ممکن ہے کہ نبی سے مراد حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم ہوں اور قرآن سے مراد یہی قرآن شریف ہو یعنی اللہ تعالیٰ نے حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کو جیسا تاکید حکم یہ دیا کہ قرآن کریم خوش الحانی سے تلاوت کریں اتنا تاکید حکم دوسرا نہ دیا کیونکہ خوش الحانی قرآن کریم کی زینت ہے جس سے قرآن کا حسن اور بھی بڑھ جاتا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۴۱۷)

(17) المرجع السابق، باب قول اللہ تعالیٰ واسر دا قو لکم ادا جہر داء... إلخ، الحدیث: ۷۵۲، ج ۴، ص ۵۸۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

استغناء یا تو غناء سے بنا ہے بمعنی خوش الحانی اور اچھے لہجے سے پڑھنا یا غنا سے بنا بمعنی بے پرواہی بے نیازی یعنی جو شخص قرآن شریف خوش الحانی سے نہ پڑھے وہ ہمارے طریقہ سے خارج ہے۔ معلوم ہوا کہ بری آواز والا بھی بقدر طاقت عمدگی سے قرآن شریف پڑھے کہ خوش آواز ہی قرآن کریم کا زیور ہے، جس سے تلاوت میں کشش پیدا ہوتی ہے لوگوں کے دل مائل ہوتے ہیں۔ اس لیے یہ تبلیغ کا ذریعہ ہے یا جسے اللہ قرآن کا علم دے اور وہ لوگوں سے بے نیاز نہ ہو جائے بلکہ اپنے کو ان کا محتاج سمجھے وہ ہمارے طریقہ یا ہماری جماعت سے خارج ہے عالم صرف اللہ رسول کا محتاج ہے اور باقی مخلوق عالم دین کی حاجت مند ہے، اس لیے معلوم ہوا کہ قرآن پڑھ کر بھیک مانگنا یا عما کا مہداروں کے دروازوں پر زلت سے جانا ممنوع ہے، اللہ تعالیٰ علمائے دین کو کفایت بھی دے قناعت بھی۔ (از لعلات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۴۱۹)

(18) سنن اندامی، کتاب فضائل القرآن، باب التغنی بالقرآن، الحدیث: ۳۵۰۰، ج ۲، ص ۵۶۵۔

آوازوں سے قرآن کو خوبصورت کرو، کیونکہ اچھی آواز قرآن کا حسن بڑھادیتی ہے۔ (19)

حدیث ۱۹: بیہقی نے عبیدہ ملکی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اے قرآن والو! قرآن کو تکیہ نہ بناؤ یعنی سستی اور تغافل نہ برتو اور رات اور دن میں اسکی تلاوت کرو جیسا تلاوت کا حق ہے اور اس کو پھیلاؤ اور تغنی کرو یعنی اچھی آواز سے پڑھو یا اس کا محاذضہ نہ لو اور جو کچھ اس میں ہے اسے غور کرو، تاکہ تم کو فلاح ملے، اس کے ثواب میں جلدی نہ کرو کیونکہ اس کا ثواب بہت بڑا ہے۔ (20) (جو آخرت میں ملنے والا ہے)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی خوش الحانی اور بہترین لہجے غلگین آواز سے تلاوت کرو اور ہر حرف کو اس کے مخرج سے صحیح اد. کرو مگر گاتر تلاوت کرنا جس سے مد شد میں فرق آجائے حرام ہے۔

۲۔ اسے نسائی، ابن حبان حاکم نے بھی روایت کیا، ان میں یہ بھی ہے کہ اچھی آواز قرآن کا زیور ہے۔

حکایت: ایک بار حضرت عبداللہ ابن مسعود کسی مجلس پر گزرے جہاں ایک گویا بہت اچھی آواز سے گارہا تھا آپ نے فرمایا کاش یہ آواز قرآن شریف پر استعمال ہوتی یہ خبر گویے کو پہنچی اس نے جی توجہ کی اور حضرت ابن مسعود کے ساتھ رہنے لگا حتیٰ کہ قرآن کریم کا عالم دقاری ہو گیا۔ (مرقات) (براة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۲۲۳)

(19) المرجع السابق، الحدیث: ۳۵۰۱، ج ۲، ص ۵۶۵.

(20) شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی إدامان تلاوتہ، الحدیث: ۲۰۰۷، ۲۰۰۹، ج ۲، ص ۳۵۰، ۳۵۱.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ جملہ معترضہ ہے اور امام بیہقی کا قول ہے، یعنی عبیدہ ملکی صحابی ہیں کہ انہیں نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی صحبت میسر ہے۔ خیال رہے کہ صحابی بننے کے لیے ایک آن کی صحبت یا ایک نظر حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کو دیکھنا کافی ہے مگر تابعیت کے لیے صحابی کے ساتھ رہنا فیضانِ صحبت حاصل کرنا ضروری ہے۔

۲۔ اصطلاح میں اہل قرآن ہر قرآن کے ماننے والے پڑھنے والے اس پر عمل کرنے والے کو کہتے ہیں اور اہل حدیث وہ خاص جماعت ہے جو اپنی زندگی علم حدیث حاصل کرنے اور سکھانے میں گزار دے یعنی محدث، نہ تو اہل قرآن سے چکڑاوی منکر حدیث مرد ہوتے ہیں نہ لفظ اہل حدیث سے موجودہ دہائی منکر فقہ مراد ہوتے ہیں یعنی اے قرآن ماننے والے مسلمانو۔

۳۔ یعنی قرآن شریف پر سر رکھ کر نہ لیٹو کہ یہ بے ادبی ہے قرآن سے بے فکر نہ ہو جاؤ کہ اس کی تلاوت میں سستی کرو، اس پر عمل نہ کرو دوسرے معنی قوی ہیں، جیسا کہ اگلے مضمون سے ظاہر ہے۔

۴۔ اس جملہ میں دو حکم ہیں ہمیشہ قرآن پڑھنا اور درست پڑھنا قرآن کا حق تلاوت یہ ہے کہ اس کی تلاوت صحیح طریقہ سے کرے۔

حدیث ۲۰: ابو داؤد و بیہقی نے جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں کہ ہم قرآن پڑھ رہے تھے اور ہمارے ساتھ اعرابی اور عجمی بھی تھے۔ اتنے میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تشریف لائے اور فرمایا کہ قرآن پڑھو! تم سب اچھے ہو، بعد میں قومیں آئیں گی جو قرآن کو اس طرح سیدھا کریں گی جیسا تیر سیدھا ہوتا ہے، اس کا بدلہ جلدی لینا چاہیں گے، دیر میں لینا نہیں چاہیں گے۔ (21) یعنی دنیا میں بدلہ لینا چاہیں گے۔

اور اس پر عمل کرے رضائے الہی کے لیے پڑھے نہ کہ محض لوگوں کو خوش کرنے کے لیے رب تعالیٰ فرماتا ہے: "إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ" (الایہ۔ یہاں مرقات نے فرمایا کہ قرآن کریم پر تکیہ لگانا اس کی طرف پاؤں پھیلانا اس پر کوئی اور کتاب رکھنا اس کی طرف پیٹھ کرنا اسے پھینکنا وغیرہ سخت منع ہے قرآن کریم کو چومنا، سر پر رکھنا مستحب ہے اس سے قال نکالنا حرام ہے۔

۵۔ تَغْتَوُّوا کے دو معنی پہلے عرض کئے جا چکے ہیں قرآن کریم خوش الحانی سے پڑھو اور قرآن کے ذریعہ لوگوں سے غنی وہ بے نیاز ہو جاؤ۔ گانے کے معنی میں نہیں کہ قرآن شریف گا کر پڑھنا حرام ہے تہہ برقرآن علماء کا اور ہے بے علم لوگوں کا کچھ اور صمد تو اس کے معنی واحکام میں غور کریں عوام یہ سمجھ کر پڑھیں کہ یہ وہ الفاظ ہیں جو نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم اور تمام صحابہ نے پڑھے تھے اللہ اکبر ہمارے کہاں نصیب کہ وہ الفاظ ہماری زبان پر بھی آئیں۔

۶۔ یعنی تلاوت قرآن، تعلیم قرآن، تجوید قرآن کا ثواب آخرت میں ملے گا جو تمہارے علم و فہم سے وراء ہے تم صرف یہاں ہی اس کا ثواب نہ ہو یعنی دنیا کو اسی کا مقصد نہ بنالو۔ (مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۴۳۵)

(21) سنن بیہقی، کتاب الصلاۃ، باب ما یجزی الای والاعجمی من القراءة، الحدیث: ۸۳۰، ج ۱، ص ۳۱۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اس مجلس میں شہری صحابی بھی تھے اور دیہات کے باشندے بھی عربی و اعرابی میں یہ ہی فرق ہے کہ عربی عام ہے، عربی خاص اہل دیہات اور عربی بھی تھے بے دردن عرب کے بھی کہ بلال حبشہ کے تھے، سلمان فارس کے، صہیب روم کے رضی اللہ عنہم غرض کہ شعر نہ تھا جس میں چھوٹا بڑا کوئی پودا لگایا تھا مالی نے اک باغ ایسا

۲۔ یعنی قرآن شریف عجمی، عربی، شہری، بدوی سب کے لیے آیا ہے، سب ہی تلاوت کیا کرو عجمی یہ خیال نہ کریں کہ چونکہ ہمارا لہجہ عرب کا نہیں ہو سکتا لہذا ہم تلاوت ہی چھوڑ دیں، جو لہجہ بن پڑے اس میں پڑھو۔ ہاں صحیح پڑھو لہجے کا، اعتبار نہیں صحت کا اعتبار ہے اور خلاص کا ثواب۔ شعر

مابروں را نگریم و قال را

مادروں را نگریم و حال را

۳۔ یعنی آخری زمانہ میں محض ریاء و نمود کے لیے قرآن کا لہجہ درست کرنے میں بہت تکلفات کریں گے مگر ثواب سے محروم رہیں گے، اس کی وجہ آ رہی ہے۔

۴۔ یعنی ان کی یہ تمام محنتیں صرف لہجہ حسین کرنے کے لیے ہوں گی تاکہ دنیا دار پسند کریں، وادواہ ہو، پیسے خوب ملیں خدا ص نہ ہوگا۔

حدیث ۲۱: بیہقی نے حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: قرآن کو عرب کے لحن اور آواز سے پڑھو، اہل عشق اور یہود و نصاریٰ کے لحن سے بچو یعنی قواعد موسیقی کے مطابق گانے سے بچو اور میرے بعد ایک قوم آئے گی جو قرآن کو ترجیع کے ساتھ پڑھنے لگیں، جیسے گانے اور نوحہ میں ترجیع ہوتی ہے، قرآن ان کے گلوں سے تجاوز نہیں کریگا، ان کے دل فتنہ میں مبتلا ہیں اور ان کے بھی جن کو ان کی یہ بات پسند ہے۔ (22)

حدیث ۲۲: ابوسعید بن معلی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے صحیح بخاری میں روایت ہے، کہتے ہیں: میں نماز پڑھ رہا تھا اور نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے مجھے بلایا، میں نے جواب نہیں دیا۔ (جب نماز سے فارغ ہوا) حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کی خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کی، یا رسول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم)! میں نماز پڑھ رہا تھا۔ ارشاد پھر ثواب کیسے پائیں، جان کی قیمت ہوتی ہے نہ کہ محض قالب کی، ہر عبادت کا یہ ہی حال ہے اللہ تعالیٰ اخلاص نصیب کرے حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کی یہ ناراضی ان کی محنت پر نہیں بلکہ ریاء و نمود پر ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۴۳۱)

(22) شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی ترک التسمیٰ فیہ، الحدیث: ۲۶۳۹، ج ۲، ص ۵۴۰۔

ومرقاۃ المفاتیح، کتاب فضائل القرآن، الحدیث: ۲۲۰۷، ج ۴، ص ۷۰۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اہل عرب کی تلاوت میں صرف آواز کی عمدگی، مخارج کی صحت، اداء الفاظ کی نفاست ہوتی ہے تکلف اور موسیقی کے طریقوں سے خالی، چونکہ قرآن شریف عربی ہے اسے عربی طریقے سے پڑھو لحن کے معنی ہیں خوش و طرب اور آواز کی لچک دلہر۔

۲۔ یعنی نہ تو قرآن گیت کے نغموں سے گاؤں جیسے عشاق کو بے خمیری، دادرے وغیرہ گاتے ہیں اور نہ ایسے تکلفات سے پڑھو جیسے یہود و نصاریٰ توریت و انجیل پڑھتے ہیں جن سے اصل عبارت بگڑ جاتی ہے جہاں مد نہ ہو وہاں پیدا ہو جاتا ہے جہاں شد ہو وہاں نہیں رہتا۔ الف زبر بن جاتا ہے زبر الف وغیرہ فقیر نے بعض قوالوں کو قرآنی آیات طبلے سارنگی پر نغموں کی طرح سے گاتے سنا کہ ان کے گیتوں میں آیتیں ہیں انہیں باجوں پر گاتے ہیں۔

۳۔ یعنی قرآن میں گلے بازیاں، راگ راگنی و آوازیں بھرانے سے کام لیں گے اسے گیت یا قوالی کا شعر بنادیا کریں گے، جیسا کہ آج دیکھا جا رہا ہے اس غیب دان نبی نے پہلے ہی اس کی خبر دے دی تھی۔

۴۔ یعنی صرف زبان پر قرآن کے الفاظ ہوں گے دل پر قرآن کا کوئی اثر نہ ہوگا ایمان میں تازگی نہ پیدا ہوگی نہ ن کے سامعین کے کیونکہ جو منہ سے نکلتا ہے وہ کان پر گرتا ہے جو دماغ سے نکلتا ہے وہ دماغ پر گرتا ہے۔ جو دل سے نکلتا ہے وہ دل پر گرتا ہے۔

۵۔ یعنی خود ان کے اور سامعین کے دل اس تلاوت سے فائدہ نہ اٹھائیں گے بلکہ الٹا نقصان۔

فرمایا: کیا اللہ تعالیٰ نے نہیں فرمایا ہے (اَسْتَجِیْبُوْا لِلّٰہِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَا کُمْ) (23) اللہ ورسول (عزوجل و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کے پاس حاضر ہو جاؤ، جب وہ تمہیں بلائیں۔

پھر فرمایا: مسجد سے باہر جانے سے پہلے قرآن میں جو سب سے بڑی سورت ہے، وہ بتادوں گا اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے میرا ہاتھ پکڑ لیا، جب نکلنے کا ارادہ ہوا۔ میں نے عرض کی، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے یہ فرمایا تھا کہ مسجد سے باہر جانے سے پہلے قرآن کی سب سے بڑی سورت کی تعلیم کروں گا۔ فرمایا کہ وہی سبع مثانی اور قرآن عظیم ہے، جو مجھے ملا ہے۔ (24)

(23) پ ۹، النفال: ۲۴۔

(24) صحیح بخاری، کتاب التفسیر، باب ماجاء فی فاتحہ الکتاب، الحدیث: ۴۷۴۷، ج ۳، ص ۱۶۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ حضرت مسجد نبوی شریف میں حاضر ہوئے جبکہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم برسر منبر خطبہ ارشاد فرما رہے تھے اور آیت "قَدْ لَرٰی تُقَلِّبُ وَجْہَکَ فِی السَّجَّادِ" تلاوت فرما رہے تھے انہوں نے توجہ المسجد نقل کی نیت باندھ لی ایک گوشہ میں نماز پڑھنے لگے۔

۲۔ یعنی میں نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا بلا داسن لیا مگر نماز کی مشغولیت کی وجہ سے حاضر نہ ہوا پھر بعد سلام حاضر ہوا اور معذرت کے لیے یہ عرض کیا۔

۳۔ یہاں اللہ رسول کے بلانے سے مراد حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کا بلانا ہے ورنہ رب تعالیٰ بلا واسطہ کسی کو نہیں بلاتا اس لیے دعاء واحد کا صیغہ ارشاد ہوا۔ (مرقاۃ) اس فرمان سے چند مسئلے معلوم ہوئے: ایک یہ کہ اگر عین نماز میں حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کسی کو بلائیں تو اسی وقت اسی حالت میں حاضر بارگاہ ہو جانا واجب ہے۔ دوسرے یہ کہ اس حاضر ہو جانے سے بلکہ جو خدمت سرکار فرمائیں اس کے بجالانے سے نماز ٹوٹے گی نہیں وہ نماز ہی میں رہے گا، اور خدمت سے فارغ ہو کر بغیر کعتیں پوری کرے گا جیسے حضور سے خطاب اور حضور کو سلام نماز نہیں توڑتا، ایسے ہی حضور کی یہ اطاعت نماز فاسد نہیں کرتی۔ (مرقات) نمازی وضو ٹوٹنے پر پانی کے پاس جائے تو نماز نہیں جاتی حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم تو رحمت الہی کا سمندر ہیں آپ کے پاس آنے سے نماز کیسے جائے گی۔

۴۔ پہلے سے یہ فرما کر منتظر بنادیا، تاکہ خوب یاد رکھیں جو بات انتظار کے بعد ملے، اس کی قدر ہوتی ہے، سورۃ قرآن شریف کا وہ حصہ ہے جس میں مضمون مکمل ہو، اور اس کا نام بھی ہو۔ یہاں مرقات نے فرمایا کہ تمام آسمانی کتابوں کے مضامین قرآن شریف میں ہیں۔ اور سارے قرآن شریف کے مضامین سورۃ فاتحہ میں اور ساری سورۃ فاتحہ کے مضامین بسم اللہ میں اور ساری بسم اللہ کے مضامین اس کے ب کے نقطہ میں۔ دیکھو ریلوے ٹائم ٹیبل یا جغرافیہ میں پورے ملک یا پورے شہر کی طرف ایک نقطہ سے اشارہ کر دیا جاتا ہے اس لیے حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے سورۃ فاتحہ کو بڑی سورہ فرمایا اور ہر رکعت میں یہ دہرائی جاتی ہے۔

۵۔ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کو اپنا وعدہ یاد تھا مگر آپ نے لہذا نہ تعلیم دی تاکہ ان کے اپنے شوق کا پتہ لگے کہ انہوں نے یہ بات —

حدیث ۲۳: ترمذی نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ابی بن کعب سے فرمایا کہ نماز میں تم کس طرح پڑھتے ہو؟ انھوں نے اُمّ القرآن یعنی سورت فاتحہ کو پڑھا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: قسم ہے اس کی جس کے ہاتھ میں میری جان ہے! نہ اس کی مثل تورات میں کوئی سورت اتاری گئی، نہ انجیل میں، نہ زبور میں، نہ قرآن میں۔ وہ سبع مثانی اور قرآن عظیم ہے جو مجھے ملا۔ (25)

حدیث ۲۴: سورہ فاتحہ ہر بیماری سے شفا ہے۔ (26)

حدیث ۲۵: صحیح مسلم میں ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہتے ہیں: جبریل علیہ السلام حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی خدمت میں حاضر تھے۔ اوپر سے ایک آواز آئی۔ انھوں نے سراٹھایا اور یہ کہا کہ آسمان کا یہ دروازہ آج ہی کھولا گیا، آج سے پہلے کبھی نہیں کھلا۔ ایک فرشتہ اتر آیا، جبریل علیہ السلام نے کہا: یہ فرشتہ آج سے پہلے کبھی زمین پر نہیں اتر ا تھا۔ اس نے سلام کیا اور یہ کہا کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو بشارت ہو کہ دو ٹور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو دیے گئے اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) سے پہلے کسی نبی کو نہیں ملے۔ وہ دو ٹور یہ

یاد رکھی یا نہیں اور ان کا شوق پورا ہے یا نہیں۔

۶۔ خلاصہ فرمان یہ ہے کہ سورہ فاتحہ بہت سی خوبیوں کی جامع سورہ ہے اس میں حمد الہی، نعت پاک مصطفوی، وعدے وعیدیں، حشر و نشر کا ذکر، محبوب و مردود بندوں کا تذکرہ، رب تعالیٰ سے سوال کی تعلیم، دین برحق کی پہچان وغیرہ تمام مضامین ہیں دیکھو ہماری تفسیر نعیمی کلاں، اس میں سات آیتیں ہیں جو نماز کی ہر رکعت میں دہرائی جاتی ہیں ان کا نزول دوبار ہوا ہجرت سے پہلے اور ہجرت کے بعد یہ سورہ سات حرفوں سے خالی ہے: ث، ج، ز، ش، ظ، ف لہذا یہ سبع مثانی ہے یعنی سات مقرر آیتیں، نیز یہ سورت اس امت کی خصوصیت سے ہے کسی کو ہم سے پہلے نہ ملی، اس لیے رب تعالیٰ نے اس کی عطاء کا خصوصیت سے ذکر فرمایا کہ ارشاد ہوا: "وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقَلِيمِ" اگرچہ قرآن پاک میں یہ سورہ بھی تھی مگر اس کا ذکر مستقل طور پر فرمایا المعات، مرقات۔ اس سے معلوم ہوا کہ قرآن کی بعض سورتیں بعض سے اعلیٰ و افضل ہیں، اس کی تحقیق پہلے کی جا چکی ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۴، ص ۳۲۳)

(25) سنن ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ما جاء فی فضل فاتحۃ الکتاب، الحدیث: ۲۸۸۴، ج ۴، ص ۴۰۰۔

(26) سنن الدارمی، کتاب فضائل القرآن، باب فضل فاتحۃ الکتاب، الحدیث: ۳۳۷۰، ج ۲، ص ۵۲۸۔

و شعب الامیرین، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی فضائل السور والآیات، الحدیث: ۲۳۶۷، ج ۲، ص ۴۵۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۲۔ جسمانی خیالی اور روحانی تمام بیماریوں کی شفاء مطلق ہے بہت بیماریوں میں مختلف طریقوں سے استعول کی جاتی ہیں۔ و بہت مفید

ہوتی ہے تجربہ ہے ایمان و یقین شرط ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۴، ص ۳۹۵)

ہیں، سورۃ فاتحہ اور سورہ بقرہ کا خاتمہ، جو حرف آپ پڑھیں گے وہ دیا جائے گا۔ (27)
حدیث ۲۶: صحیح مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

(27) صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین... راجع، باب فضل الفاتحہ... الحدیث: ۲۵۳- (۸۰۶)، ص ۴۰۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ مع کا فاعل حضرت جبریل علیہ السلام ہیں یا نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم بعض شارحین نے فرمایا کہ حضرت جبریل علیہ السلام ہیں کیونکہ اگلی ضمیریں بھی انہیں کی طرف راجع ہیں نقیض نقض سے بنا بمعنی ٹوٹنا چونکہ لکڑی وغیرہ کے ٹوٹنے کے وقت سخت آواز پیدا ہوتی ہے، اس لیے اب ہر سخت آواز کو نقیض کہہ دیتے ہیں۔

۲۔ خیال رہے کہ آسمان کے بے شمار دروازے ہیں، جن سے مختلف چیزیں آتی جاتی ہیں، بعض دروازوں سے رزق آتے ہیں، بعض سے عذاب بعض سے دعائیں و توبہ جاتی ہیں، بعض سے خاص فرشتے اترتے ہیں، ایک دروازہ وہ بھی ہے جو صرف معراج کی رات حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے لیے کھولا گیا، آج کا یہ دروازہ اس فرشتے کے لیے کھولا گیا تھا اس سے پہلے نہ یہ فرشتہ کبھی زمین پر آیا تھا اور نہ یہ دروازہ کبھی کھلا تھا۔

۳۔ یعنی نہ کسی کام کے لیے یہ زمین پر آیا نہ کسی پیغمبر کو کوئی پیغام ستانے کے لیے یہ فرشتہ صرف آج ہی آیا اور حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم ہی کی خدمت میں آیا ہے اس فرشتہ کا نزول حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کی کرامت و عزت کے اظہار کے لیے ہے ورنہ یہ پیغام تو حضرت جبریل بھی عرض کر سکتے تھے۔

۴۔ چونکہ یہ دونوں سورتیں دنیا میں سیدھے راستہ کی ہادی ہیں اور ہر صراط پر روشنی جس کے ذریعہ ان کی تلاوت کرنے والا آسانی سے اسے طے کرے گا۔ اس لیے انہیں نور فرمایا۔ خیال رہے کہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم خود نور ہیں پھر آپ پر یہ نور اترے تو بفضلہ تعالیٰ نور علی نور ہوئے۔

۵۔ یعنی آپ سے پہلے نبیوں میں سے کسی کو ایسی شاندار آیات و سورتیں نہ ملیں تو ریت انجیل وغیرہ میں ایسی شان کی آیت نہیں، یوں تو سارا قرآن شریف ہی ان کتب سے افضل ہے مگر یہ آیات بہت ہی افضل۔

۶۔ یعنی سورۃ بقرہ کا آخری رکوع "يَذُوقُوا فِي السَّمُوتِ" سے عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ تک۔

۷۔ یعنی ان آیات کے ہر حرف کی تلاوت پر آپ کو اور آپ کے صدقہ سے آپ کی امت کو خصوصی ثواب ملے گا علاوہ تلاوت کے ثواب کے کہ وہ ثواب تو قرآن شریف کے تمام حروف پر ہے۔ (اشعہ) یا حرف سے مراد آیت ہے یعنی ان میں جو آیات دعا ہیں، ان میں سے ہر آیت قبول کی اور اس آیت کی دعا ان شاء اللہ منظور ہوگی۔ مرقات ان دونوں جگہ میں بہت شاندار دعائیں ہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۵۰)

اپنے گھروں کو مقابلہ نہ بناؤ، شیطان اس گھر سے بھاگتا ہے جس میں سورہ بقرہ پڑھی جاتی ہے۔ (28)

حدیث ۲۷: صحیح مسلم میں ابو امامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو میں نے یہ فرماتے سنا کہ قرآن پڑھو کیونکہ وہ قیامت کے دن اپنے اصحاب کے لیے شفیع ہو کر آئے گا۔ دو چمک دار سورتیں بقرہ و آل عمران کو پڑھو کہ یہ دونوں قیامت کے دن اس طرح آئیں گی گویا دو ابر ہیں یا دو سائبان ہیں یا صف بستہ پرندوں کی دو جماعتیں، وہ دونوں اپنے اصحاب کی طرف سے جھگڑا کریں گی یعنی ان کی شفاعت کریں گی۔ سورہ بقرہ کو پڑھو کہ اس کا لینا برکت ہے اور اس کا چھوڑنا حسرت ہے اور اہل باطل اس کی استطاعت نہیں رکھتے۔ (29)

(28) صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین... راجع، باب استحباب صلاۃ النفلۃ... راجع، الحدیث: ۲۱۲۔ (۷۸۰)، ص ۳۹۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی گھروں میں مردے دفن نہ کرو کہ یہ تو خصوصیت انبیاء ہے یا اپنے گھروں کو ذکر اللہ سے خالی نہ رکھو جیسے قبرستان خالی ہوتا ہے ایسے گھر قبرستان ہیں اور وہاں کے باشندے مردے دوسرے مردے جیسے کہ اگلے مضمون سے ظاہر ہے۔ خیال رہے کہ مؤمن مردے اپنی قبروں میں ذکر اللہ کرتے ہیں، مگر وہ ذکر ہم نہیں سنتے، ہم کو قبرستان سنان معلوم ہوتا ہے اسی لیے یہ ارشاد ہو، لہذا حدیث پر کوئی اعتراض نہیں۔

۲۔ یعنی شیاطین کا سرگروہ ابلیس اس گھر سے دور رہتا ہے یا سورہ بقرہ پڑھتے وقت قرین شیطان دور رہتا ہے اگرچہ بعد میں آجائے یا اس گھر کے باشندوں کو وہ جنت سے بہکا نہیں سکتا، انہیں بے دین بے ایمان نہیں بنا سکتا، ان شاء اللہ لہذا حدیث واضح ہے۔ خیال رہے کہ شیطان کو دفع کر نیکی یہ تمام تدابیر ہیں، نفس امارہ ان سے نہیں مارتا اس کی موت اس کی مخالفت سے ہے اسی لیے، اگرچہ رمضان میں شیطان قید ہوتا ہے مگر لوگ گناہ کرتے ہیں نفس امارہ موجود ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۲۵)

(29) المرجع السابق، باب فضل قراءۃ القرآن و سورۃ البقرۃ، الحدیث: ۲۵۴۔ (۸۰۴)، ص ۴۰۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی ہمیشہ تلاوت کیا کرو اور اس موقع کو غنیمت جانو قرآن کریم کی تلاوت مستقل عبادت ہے معنی سمجھ میں آئیں یا نہ آئیں مرکب دوا میں معجونیں مفید ہیں ان کے اجزاء معلوم ہوں یا نہ ہوں۔

۲۔ گنہگاروں کی مغفرت کی سفارش کرے گانیک کاروں کی بلندی درجات کی صحابہ سے مراد قرآن کی تلاوت کرنے والے، اس کو سیکھنے سکھانے، اس پر عمل کرنے والے سب ہی مراد ہوتے ہیں مگر یہاں تلاوت کرنے والے مراد ہیں جیسا کہ اس مضمون سے ظاہر ہے۔

۳۔ مرقات نے فرمایا کہ یہ دونوں سورتیں باقی سورتوں میں ایسی ہیں، جیسے تاروں میں چاند اس لیے انہیں زہرا دین یعنی چمک دار سورتیں فرمایا گیا ورنہ سارا قرآن نور ہے لہذا حدیث واضح ہے۔

۴۔ یہ تین تشبیہیں تین قسم کے تلاوت کرنے والوں کے لحاظ سے ہیں، جیسا قاری کا اخلاص کل قیمت میں ویسا ہی ن کا سہیہ، ہے۔

حدیث ۲۸: صحیح مسلم میں ابی بن کعب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اے ابوالمنذر (یہ ابی بن کعب کی کنیت ہے) تمہارے پاس قرآن کی سب سے بڑی آیت کون سی ہے؟ میں نے کہا اللہ و رسول (عز وجل صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) اعلم ہیں۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: اے ابوالمنذر تمہیں معلوم ہے کہ قرآن کی کون سی آیت تمہارے پاس سب میں بڑی ہے۔ میں نے عرض کی، اللہ لا الہ الا هو الْحَيُّ الْقَيُّومُ (یعنی آیہ الکرسی)۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے میرے سینے پر ہاتھ مارا اور فرمایا: ابوالمنذر تم کو علم مبارک ہو۔ (30)

بہت غلطی کے لیے یہ سورتیں ابر رحمت بن کر سایہ بھی کریں گی اور روشنی بھی دیں گی درمیانی اخلاص والے کے لیے ساتہاں و شامیانہ کی طرح اور معمولی اخلاص والے کے لیے پرندوں کی جماعت کی طرح یہ شک راوی کو نہیں ہے جیسا کہ بعض شارحین نے سمجھا، نیز یہاں ثواب تلاوت مراد نہیں بلکہ خود یہ سورتیں کل ان شکلوں میں ہوں گی یہاں کے عرض اور اعمال وہاں جسم و جوہر ہوں گے آج ہم خواب میں آئندہ حالت کو جسمانی شکل میں دیکھتے ہیں بادشاہ مصر نے آئندہ قحط کے سات سال گایوں اور بالیوں کی شکل میں دیکھے تھے۔

۵۔ یہ تو اس کے دشمنوں سے جھگڑا کریں گی یا عذاب کے فرشتوں سے جھگڑ کر اسے چھڑائیں گی یا خود رب تعالیٰ سے جھگڑ کر اسے بخشوائیں گی مگر یہ جھگڑانا زکا ہوگا نہ کہ مقابلہ کا آج پیارا بیٹا اپنے باپ سے جھگڑ کر دوسروں کی سفارش کرتا ہے ہذا حدیث واضح ہے کوئی اعتراض نہیں۔

۶۔ یعنی قیامت میں ان سورتوں کے پڑھنے والے کا ثواب دیکھ کر نہ پڑھنے والے کف افسوس ملیں گے، جنتی لوگ تمنا کریں گے کہ کاش ہم نے دنیا میں ایک سانس بھی بغیر ذکر اللہ کے نہ لی ہوتی۔

۷۔ اس جملہ کے کئی معنی ہیں ایک یہ منافقین و یامہ کار یہ سورتیں یاد نہ کر سکیں گے یا ان کی تلاوت نہ کر سکیں گے یا انہیں یہ دونوں سورتیں بہت در زور و گراں معلوم ہوں گی مخلصین پر آسمان ہوں گی۔ دوسرے یہ کہ جادوگر وغیرہ ان سورتوں کا اثر اپنے جادو کے زور سے زائل نہیں کر سکتے اور ان کی تلاوت کرنے والے کو نقصان نہیں پہنچا سکتے۔ تیسرے یہ کہ ان کی صداقت اس قدر ظاہر ہے کہ انہیں جھوٹے لوگ جھٹلا نہیں سکتے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۶۶)

(30) المرجع السابق، باب فضل سورة الکہف... إلخ، الحدیث: ۲۵۸۔ (۸۱۰)، ص ۴۰۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حضرت ابی بن کعب اور آپ کے تین چچا زاد بھائی اس زمانہ میں پورے قرآن کریم کے حافظ تھے سوال یہ ہے کہ اے ابی بن کعب بتاؤ جو قرآن کریم تم نے سارا حفظ کیا ہے اس میں بہت شمار آیت کوئی ہے۔ (مرقات) اس زمانہ میں قرآن کریم کی تلاوت اور اس کا حفظ بقدر نزول ہوتا تھا۔

۲۔ اعظم سے مراد اخروی ثواب اور دنیاوی فوائد میں زیادہ ہے، یہ زیادتی اضافی ہے، لہذا حدیث پر یہ اعتراض نہیں کہ کسی حدیث میں ہے

حدیث ۲۹: صحیح بخاری میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے زکاۃ رمضان یعنی صدقہ فطر کی حفاظت مجھے سپرد فرمائی تھی۔ ایک آنے والا آیا اور غلہ بھرنے لگا، میں نے اسے پکڑ لیا اور یہ کہا کہ تجھے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی خدمت میں پیش کروں گا۔ کہنے لگا، میں محتاج عیال دار ہوں، سخت حاجت مند ہوں، میں نے اسے چھوڑ دیا۔ جب صبح ہوئی حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: ابو ہریرہ! تمہارا راست کا قیدی کیا ہوا؟ میں نے عرض کی، یا رسول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم)! اس نے شدید حاجت اور عیال کی شکایت کی، مجھے رحم آگیا چھوڑ دیا۔ ارشاد فرمایا: وہ تم سے جھوٹ بولا اور وہ پھر آئے گا۔

میں نے سمجھ لیا وہ پھر آئے گا، کیونکہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرما دیا ہے۔ میں اس کے انتظار میں تھا وہ آیا اور غلہ بھرنے لگا، میں نے اسے پکڑ لیا اور یہ کہا تجھے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے پاس پیش کروں گا۔ اس نے کہا مجھے چھوڑ دو، میں محتاج ہوں، عیال دار ہوں، اب نہیں آؤں گا۔ مجھے رحم آگیا، اسے چھوڑ دیا صبح ہوئی تو حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: ابو ہریرہ تمہارا قیدی کیا ہوا؟ میں نے عرض کی، اس نے حاجت شدیدہ اور عیال داری کی شکایت کی، مجھے رحم آیا، اسے چھوڑ دیا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: وہ تم سے جھوٹ بولا اور پھر آئے گا۔

میں اس کے انتظار میں تھا وہ آیا اور غلہ بھرنے لگا، میں نے پکڑا اور کہا: تجھے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کے پاس پیش کروں گا تم مرتبہ ہو چکا تو کہتا ہے نہیں آئے گا پھر آتا ہے۔ اس نے کہا مجھے چھوڑ دو، میں تمہیں ایسے کلمات سکھاتا ہوں جن سے اللہ (عزوجل) تم کو نفع دے گا، جب تم بچھونے پر جاؤ آیت الکرسی آخر آیت تک پڑھ لو، صبح تک اللہ (عزوجل) کی طرف سے تم پر نگہبان ہوگا اور شیطان تمہارے قریب نہیں آئے گا۔ میں نے اسے چھوڑ دیا جب

کسی آیت کو اعظم فرمایا اور دوسری حدیث میں دوسری آیت کو۔

۳۔ پہلی بار نہ بتانے اور پھر بتا دینے کی شامین نے بہت وجہ بیان کی ہیں فقیر کی نظر میں قوی وجہ یہ ہے کہ ان دو سوالوں کے درمیان کے وقفہ میں نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کے دل میں جواب بطور فیضان القاء فرما دیا پھر پوچھ تو آپ نے وہ ہی القاء کیا ہو، جو ب عرض کر دیا حضرات صوفیاء کبھی نظر سے کبھی سینہ پر ہاتھ رکھ کر کبھی مرید کو سامنے بٹھا کر کبھی کوئی بات پوچھ کر فیض دیتے ہیں، ان طریقوں کی اصل یہ حدیث ہے (از لمعات واشعہ) حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے ابی ابن کعب کو نظر بھر کر دیکھا جس سے ان کے سینہ میں غم کے دریا بہ گئے۔

۴۔ یہ فرمان ہمارے عرض کئے ہوئے مطلب کی تائید ہے یعنی اے ابی تمہیں یہ علم لدنی مبارک ہو کہ بغیر کتابیں پڑھے داتا کی دین اور راہبر کامل کی ایک نگاہ کرم سے تمہیں سب کچھ مل گیا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۸۸)

صبح ہوئی، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: تمہارا قیدی کیا ہوا؟ میں نے عرض کی، اس نے کہا چند کلمات نہ کو سکھاتا ہوں، اللہ تعالیٰ تمہیں ان سے نفع دے گا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: یہ بات اس نے سچ کہی اور وہ بڑا جھوٹا ہے اور تمہیں معلوم ہے کہ تین راتوں سے تمہارا مخاطب کون ہے؟ میں نے عرض کی نہیں۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا کہ وہ شیطان ہے۔ (31)

(31) صحیح البخاری، کتاب الوکالت، باب إذا وکل رجلاً... الخ، الحدیث: ۲۳۱۱، ج ۲، ص ۸۲.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی صحابہ کرام جو اپنے فطرے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی بارگاہ میں حاضر کر جاتے تھے تاکہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم خود فقراء میں تقسیم فرمادیں تاکہ آپ کے ہاتھ کی برکت سے رب تعالیٰ قبول فرمائے اس جمع شدہ فطروں کی حفاظت اس دفعہ حضرت ابو ہریرہ کے سپرد ہوئی۔
۲۔ یعنی فطرے کا گندم چرانے اور لے جانے لگا میں نے اسے یہ حرکت کرتے دیکھ لیا۔ خیال رہے کہ ابلیس اور اس کی ذریت دانہ، غذائیں پھل، مٹھائیاں سب کچھ کھاتے ہیں، ساتھ ہی کوئلہ وغیرہ بھی کھاتے ہیں۔ حدیث شریف میں ہے کہ جو شخص بسم اللہ پڑھے کھائے تو شیطان کھانے میں شریک ہو جاتا ہے، لہذا حدیث پر اعتراض نہیں کہ ابلیس کے کھانے کی کیا حاجت اس سے معلوم ہوا کہ شیطان چوری کرتا ہے اس لیے آیہ انکری وغیرہ مال پر دم کردی جائے تاکہ جن دانس کی چوری سے محفوظ رہے۔

۳۔ اس سے چند مسئلے معلوم ہوئے: ایک یہ کہ اولیاء اللہ خصوصاً صحابہ کرام شیطان کو دیکھ سکتے ہیں حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے فیض کی برکت سے ان کی آنکھوں سے غیبی حجاب اٹھ جاتے ہیں، ان حضرات نے تو بارہا فرشتوں کو دیکھا جن کی کیا حقیقت ہے دوسرے یہ کہ شیطان ان کی گرفت سے چھوٹ نہیں سکتا، وہ لوگ نورانی ہیں، نور کی طاقت مار سے زیادہ ہے جن کا ہاتھ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے ہاتھ میں ہو اس کی گرفت سے کون چھوٹے۔ تیسرے یہ کہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کی بارگاہ سے شیطان گھبراتا ہے، وہاں حاضری کی ہمت نہیں کرتا۔ خیال رہے کہ قرآن کریم شیطان کے متعلق فرماتا ہے: "إِنَّ يَاسُجُومَ هُوَ وَقِيلُهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ" کہ وہ اور اس کی ذریت تو تم کو دیکھتے ہیں مگر تم ان کو نہیں دیکھتے، آیت کا منشا یہ ہے کہ تم ان جنات کو ان کی اصل شکل میں نہیں دیکھ سکتے لیکن جب وہ شکل انسانی میں ہوں تو انہیں دیکھا جاسکتا ہے لہذا یہ حدیث قرآن کے خلاف نہیں، مرقاۃ یا آیت میں عام انسانوں کا ذکر ہے اور یہاں اللہ کے خاص بندوں کا تذکرہ۔

۴۔ ادائے قرض وغیرہ معلوم ہوا کہ شیطان جھوٹ بولتا ہے۔ وہ نہ محتاج ہے نہ اس کے بال بچوں کو قاتلہ ہے، دینے کا میں اس کی نگاہ میں ہیں سفلی عمل کرنے والوں کو وہ روزانہ مال پہنچاتا ہے، جسے ناجائز دست غیب کہا جاتا ہے جائز دست غیب رب تعالیٰ کی رحمت ہے، ناجائز دست غیب حرام۔

۵۔ یا اس سے چھوڑ دیا کہ ابھی اس نے چوری نہیں کی تھی ارادہ ہی کیا تھا یا چوری تو کر لی تھی مگر چوری حاکم کے پاس پہنچنے سے پہلے حق العبد رہتی ہے اور وہاں پہنچ کر حق اللہ بن جاتی ہے، پہلی صورت میں بندہ اس سے مال چھین کر اسے چھوڑ سکتا ہے۔ دوسری صورت میں

بندہ معاف نہیں کر سکتا چھ ہی کٹیں گے یا اس لیے کہ اگر زکوٰۃ و خیرات سے فقیر چوری کرے تو ہاتھ نہ کٹیں گے کیونکہ اس مال میں اس کا بھی حق ہے جیسے بیوی بخیل خاوند کے مال سے اپنے حق کے بقدر چوری کرے تو مجرم نہیں کہ اس نے چوری نہیں کی بلکہ اپنا حق لیا بہر حال حدیث پر یہ اعتراض نہیں کہ انہیں چور کو چھوڑ دینے کا کیا حق تھا۔

۶۔ یعنی جب میں نماز فجر کے لیے حاضر بارگاہ ہوا تو بغیر میرے کچھ عرض کئے حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے یہ سوال فرمایا معلوم ہوا کہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کی نگاہ ہر ظاہر و چھپی چیزیں دیکھتی ہیں کوئی چیز ان سے مخفی نہیں وہ تو قبر کے اندر کے عذاب اور دلوں کے حال سے خبردار ہیں۔ مصرع

چشم تو بیندہ مافی الصدور (اقبال)

۷۔ اس جملہ میں فقیر کی عرض کی ہوئی توجیہ کی تائید ہوئی کہ حضرت ابو ہریرہ کو اس پر رحم کرنے کا بھی حق تھا اور چھوڑ دینے کا بھی اسی لیے حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے آپ پر عتاب نہ فرمایا کہ ابو ہریرہ تمہیں چھوڑ دینے کا کیا حق تھا۔

۸۔ اس سے حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کا علم غیب ثابت ہوا۔ معلوم ہوا کہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کو آئندہ ہونے والے واقعات کا رب تعالیٰ نے علم بخشا جو آئندہ ہونے والا ہے وہ بتا رہے ہیں۔ شعر

علی کل شئی خیر آمدی

خدا مطلع ساخت بر جملہ غیب

۹۔ یعنی آج شب کو میں خوب چوکنار ہا سو یا نہیں، غافل نہ رہا، اسے پکڑنا بھی تھا اور اس کا تماشا بھی دیکھنا تھا۔

۱۰۔ حضرت ابو ہریرہ نے اس کا یہ قول کہ اب نہ آؤں گا اس کی توبہ سمجھا اس لیے چھوڑ دیا، اسے سچا نہ سمجھا، کیونکہ اس کا جھوٹا ہونا تو حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے فرمان سے معلوم ہو چکا تھا یہ رحمت اس کی توبہ پر ہے نہ کہ اسے غریب سمجھ کر اس بار بھی حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت ابو ہریرہ پر عتاب نہ فرمایا لہذا حدیث بالکل واضح ہے کوئی اعتراض نہیں یا آپ نے خیال فرمایا کہ یہ جھوٹ سے توبہ کر چکا ہے اور اب سچ بول رہا ہے پہلے جھوٹا تھا حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے گزشتہ جھوٹ کی خبر دی تھی اور اب سچ بول رہا ہے۔

۱۱۔ اس رحم کی وجہ ابھی عرض کر دی گئی اس چھوڑ دینے میں حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے فرمان پاک کی مخالفت نہیں ہے کیونکہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے انہیں آئندہ چھوڑ دینے سے منع نہ کیا تھا۔

۱۲۔ خیال رہے کہ شیطان نے صرف ایک دفعہ یعنی دوسری بار میں ہی کہا تھا کہ میں اب نہ آؤں گا مگر حضرت ابو ہریرہ فرما رہے ہیں کہ تو کہہ جاتا ہے میں نہ آؤں گا اس لیے شارحین نے فرمایا کہ یہاں تزعم مضارع ہے مگر بمعنی ماضی ہے یعنی تو کہہ گیا تھا اب نہ آؤں گا اور پھر آ گیا یا حکمی و حقیقی دونوں طرح کہہ جانا مراد ہے یعنی تو پہلی بار میں حکمنا اور دوسری بار میں حقیقتاً کہہ گیا تھا کہ اب نہ آؤں گا لہذا یہ حدیث واضح ہے۔

۱۳۔ یعنی میں آپ پر ایک عمل مجرب بتا کر احسان کرتا ہوں آپ اس کے عوض مجھ پر یہ احسان کر دیں کہ مجھے چھوڑ دیں کیونکہ احسان کا بدلہ احسان ہوتا ہے ابیسی کی اس خوشامد سے معلوم ہوا کہ وہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کی بارگاہ میں پیش ہوتے ہوئے بہت گھبراتا ہے۔

حدیث ۳۰: من بخاری وسلم میں ابو مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے

ورنہ وہ حاضر ہو جانے پر راضی ہو جاتا ہے اب جس کے دل میں حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کی ہیبت نہ ہو وہ شیطان سے بدتر ہے شیطان یا تو خدا سے ڈرتا ہے کہ کہتا ہے: "إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ" یا جناب مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم سے مسلمان کے دل میں حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کی بہت ہی ہیبت چاہیے ڈاکٹر اقبال یوں دعا کرتے ہیں۔ شعر

حساب من ز چشم ادنہاں گیر

مکن رسوا بروئے خواجہ مارا

۱۴۔ یعنی سونے کے لیے لیٹیں بستر پر یا فرش خاک پر یا تخت پر، بستر کا ذکر عرف کی بنا پر ہے اور سونا خواہ دن میں ہو یا رات میں۔

۱۵۔ یعنی خود رب تعالیٰ یا اس کا مقرر کردہ فرشتہ آپ کے جان و مال کی حفاظت کرے گا کہ گھر تو گر جانے آگ لگ جانے وغیرہ سے محفوظ رہے گا اور مال چوری وغیرہ سے امان میں رہے گا جیسا کہ دوسری احادیث میں وارد ہے، یہ عمل بہت ہی مجرب ہے۔

۱۶۔ یعنی دینی یا دنیاوی نقصان پہنچانے کے لیے شیطان ابلیس آپ کے قریب نہ آ سکے گا، مطلقاً قریب آنے کی نفی نہیں بلکہ احادیث پر یہ اعتراض نہیں رہا کہ بارہا دیکھا گیا ہے کہ ہم آیۃ الکرسی پڑھ کر سوتے ہیں پھر بھی احتکام ہو جاتا ہے اور احتکام شیطان سے ہوتا ہے ہاں آیۃ الکرسی کی برکت سے شیطان نماز قضا نہ کر سکے گا کہ یہ دینی نقصان ہے یوں ہی اس کی برکت سے اولاً تو گھر میں چور سانپ وغیرہ آئیں گے نہیں اگر اتفاقاً آگئے تو شیطان اسے اس موقع پر غافل نہ کر سکے گا کہ اس میں دنیاوی نقصان ہے، ان شاء اللہ آنکھ کھل جائے گی اور یہ شخص ان کے شر سے محفوظ رہے گا۔

۱۷۔ اس بار رحم کھا کر نہ چھوڑا بلکہ اس کے احسان کے عوض اور اس چھوڑ دینے میں بھی حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے حکم کی مخالفت نہ تھی کہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے اس سے منع نہ کیا تھا۔

۱۸۔ اس فرمان عالی سے چند مسئلے معلوم ہوئے: ایک یہ کہ شیطان قرآن شریف سے بھی واقف ہے اور آیات قرآنیہ کے احکام و اسرار و اشارات سے بھی خبردار ہے، امام فخر الدین رازی نے فرمایا کہ شیطان ہر دین کے اچھے برے اعمال سے تفصیل وار واقف ہے اور ہر شخص کی نیت و ارادہ پر مطلع ہے، اس کے بغیر وہ خلق کو بہکا نہیں سکتا، جب اس بہکانے والے کے علم کا یہ حال ہے تو خلق کے ہادی صلی اللہ علیہ وسلم کے علم کا کیا پوچھنا۔ دوا کی طاقت بیماری سے زیادہ چاہیے قرآن کریم فرماتا ہے: "إِنَّهُ يَزِيدُكُمْ هُوَ وَقَبِيلُهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ" شیطان اور اس کی ذریت تم سب کو دیکھتے ہیں مگر تم انہیں نہیں دیکھتے یعنی وہ حاضر ناظر ہے کیوں، لوگوں کو گمراہ کرنے کے لیے تو جس کے ذمہ خلق کی ہدایت ہے وہ بھی حاضر و ناظر ہیں صلی اللہ علیہ وسلم۔ دوسرے یہ کہ شیطان کافر بھی کبھی جج بول دیتا ہے۔ تیسرے یہ کہ مؤمن کو چاہیے جہاں سے اسے علم ملے لے لے، ہاں بے دین کو استاد دین کا نہ بنائے یہاں حضرت ابو ہریرہ نے شیطان کو استاد نہ بنایا جیسے قاتل کو کوئے نے طریقہ دفن سکھایا، مگر کو ان کا استاد نہ تھا۔ خیال رہے کہ کافر و بے دین کی اچھی بات پر جلد اعتماد نہ کرے ممکن ہے وہ شہد میں نہ رہ دے رہا ہوں، یہاں جناب ابو ہریرہ نے شیطان کی جب مانی جب کہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کی تائید و تصدیق فرمادی۔ چوتھے یہ کہ آیۃ الکرسی دفع شیطان کے لیے اکسیر ہے خود شیطان اس کی خبر دے گیا کہ میرے بھاگنے کا ذریعہ آیۃ الکرسی ہے بھاگنے والے سے

فرمایا: سورہ بقرہ کی آخری دو آیتیں جو شخص رات میں پڑھ لے، وہ اس کے لیے کافی ہیں۔ (32)

حدیث ۳۱: اللہ تعالیٰ نے آسمان و زمین کے پیدا کرنے سے دو ہزار برس پہلے ایک کتاب لکھی۔ اس میں سے دو آیتیں جو سورہ بقرہ کے ختم پر ہیں، نازل فرمائیں۔ جس گھر میں تین راتوں تک پڑھی جائیں، شیطان اس کے قریب نہیں جائے گا۔ (33)

محبوب صلی اللہ علیہ وسلم نے بھی اس کی تائید فرمادی، اور بھاگنے والے مردود نے بھی اس کی خبر دے دی۔ پانچویں یہ کہ کافر کی ہجی بات کی مسلمان تصدیق و تائید کر سکتا ہے۔

۱۹۔ یعنی ابیس تھا جو اس مال میں برکت مٹانے آیا تھا ورنہ اسے چوری کرنے کی کیا ضرورت تھی، یہ حدیث تسخیر جنابت کی اصل ہے، بعض عامل حصرات جنات کو اپنے عمل سے قید کر دیتے ہیں۔ بالکل حق ہے دلیل یہ حدیث ہے، فقیر کی اس مذکور شرح سے حسب ذیل اعتراضات اٹھ گئے: اول یہ کہ حضرت ابو ہریرہ کو شیطان نظر کیسے آگیا۔ قہان پاک فرماتا ہے کہ تم اسے نہیں دیکھ سکتے، دوسرے یہ کہ حضرت ابو ہریرہ کی گرفت میں شیطان کیونکر آگیا، وہ ہوا یا آگ کے شعلہ کی طرح ہے جسے پکڑا نہیں جاسکتا۔ تیسرے یہ کہ شیطان کو چوری کی کیا ضرورت ہے، چوتھے یہ کہ حضرت ابو ہریرہ کو اسے پکڑ کر چھوڑ دینے کا کیا حق تھا، پانچویں یہ کہ جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تھا کہ وہ جھوٹا ہے اور پھر آئے گا تو جناب ابو ہریرہ نے اس کی بات کا اعتبار کیوں کیا۔ چھٹے یہ کہ شیطان کو کیا خبر کہ قرآن کریم کی کس آیت میں کیا تاثیر ہے ساتویں یہ کہ اس سے لازم آیا کہ شیطان حضرت ابو ہریرہ کا استاد ہو۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۲۹)

2. صحیح البخاری، کتاب المغازی، الحدیث: ۴۰۰۸، ج ۳، ص ۲۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی دھردل و رنج و غم میں کافی ہیں کہ ان کا تلاوت کرنے والا ان شاء اللہ دکھ درد سے محفوظ رہتا ہے اور اگر اتفاقاً کبھی آ بھی جائیں تو اللہ مشکل حل کر دیتا ہے یا تمام ورد و وظیفوں کی طرف سے کافی ہیں، یا نماز تہجد میں جو ان آیتوں کی تلاوت کیا کرے تو بہت سی تلاوت سے کافی ہیں نماز تہجد میں اس کی تلاوت ضرور کی جائے کہ بہت ہی مفید ہے ایک رکعت میں یہ آیات پڑھے، دوسری میں "إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَكِ وَالْأَرْضِ" سے لے کر "مُخْلِفَ الْبَيْعَةِ" تک ان شاء اللہ ان سے حضور قلبی بھی نصیب ہوگا اور بہت فیضان بھی میسر ہوگا۔ اگر شروع رات میں بھی پڑھ لی جائیں اور تہجد میں بھی بہت مفید ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۵۱)

(33) سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی آخر سورة البقرة، الحدیث: ۲۸۹۱، ج ۴، ص ۴۰۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ دو ہزار برس سے مراد اس قدر مدت کہ اگر سورج ہوتا تو اسی مدت کے دو ہزار برس بن جاتے ورنہ اس وقت سورج نہ تھا نہ دن رات، پھر دن مہینے ہفتے اور سال کیسے بن سکتے ہیں، لکھنے سے مراد فرشتوں کو لکھنے کا حکم دینا ہے خاص خدام کا کام گویا سلطان ہی کا کام ہے۔ خیال رہے کہ مخلوق کی تقدیریں آسمان و زمین کی پیدائش سے پچاس ہزار برس پہلے لکھی گئیں، مگر یہ تحریر دو ہزار برس پہلے ہوئی ہند ←

حدیث ۳۲: سورہ بقرہ کے خاتمہ کی دو آیتیں اللہ تعالیٰ کے اس خزانہ میں سے ہیں، جو عرش کے نیچے ہے اللہ (عزوجل) نے مجھے یہ دونوں آیتیں دیں انھیں سیکھو اور اپنی عورتوں کو سکھاؤ کہ وہ رحمت ہیں اور اللہ (عزوجل) سے نزدیکی اور دعا ہیں۔ (34)

حدیث ۳۳: صحیح مسلم میں ابو درداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: سورہ کہف کی پہلی دس آیتیں جو شخص یاد کرے، وہ دجال سے محفوظ رہے گا۔ (35)

یہ حدیث پچاس ہزار برس کی روایت کے خلاف نہیں کہ وہاں لوح محفوظ میں تقدیروں کی تحریر مراد ہے، اور یہاں قرآن کریم کی تحریر مراد اور ہو سکتا ہے کہ یہاں دو ہزار برس سے تحریر مراد نہ ہو بلکہ مطلقاً زیادتی بیان کرنا مقصود ہو۔ (مرقات)

۲۔ یہ دو آیتیں "أَمِنْ الزُّسُولِ" سے آخر سورہ بقرہ تک ہیں اگرچہ سارا قرآن شریف ہی لوح محفوظ میں تھا اور وہاں سے ہی نازل ہوا مگر ان آیتوں میں وہ خصوصیت ہے جس کا ذکر آگے ہو رہا ہے اس لیے ان کا ذکر خصوصیت سے فرمایا۔

۳۔ جب ان آیتوں کی برکت سے وہ گمراہ عمارت وہ جگہ شیطان سے محفوظ ہو جاتی ہے جہاں تین دن یہ آیات پڑھ لی جائے تو جس زبان میں یہ آیتیں رہیں ان شاء اللہ وہ بھی شیطان سے محفوظ رہیں گے۔ ان جیسی تمام احادیث میں شیطان سے مراد ابلیس ہوتا ہے، درنہ قرین شیطان اور نفس امارہ تو بہر حال انسان کے ساتھ رہتے ہیں ان سوزیوں سے بچنے کی کوئی تدبیر نہیں جسے اللہ بچائے وہ ہی بچے۔

۴۔ اس حدیث کو نسائی، ابن حبان اور حاکم نے اپنی مستدرک میں بھی روایت کیا۔ (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۵۲)

(34) سنن الدارمی، کتاب فضائل القرآن، باب فضل اول سورۃ البقرۃ وآیۃ الکرسی، الحدیث: ۳۳۹۰، ج ۲، ص ۵۳۲۔

(35) صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین... إلخ، باب فضل سورۃ الکہف... إلخ، الحدیث: ۲۵۷- (۸۰۹)، ص ۴۰۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس طرح کہ روزانہ ان کی تلاوت کر لیا کرے یا ہر جمعہ کو بعض لوگ ہر جمعہ کو سورہ کہف کی تلاوت کرتے ہیں ان کا اخذ یہ حدیث بھی ہے۔

۲۔ ظاہر یہ ہے کہ دجال سے مراد وہ ہی بڑا دجال ہے جو قرب قیامت نکلے گا اس کا فتنہ اتنا سخت ہوگا کہ ہر نبی نے اپنی امت کو اس سے ڈرایا یعنی اگر اس کی تلاوت کرنے والے کے زمانے میں دجال ظاہر ہوا تو ان شاء اللہ اس کے فتنے سے یہ محفوظ رہے گا اور ہو سکتا ہے کہ دجال سے مراد تمام فتنہ گر بے دین لوگ مراد ہوں جیسا کہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ میرے بعد تیس دجال پیدا ہوں گے جو نبوت کا دعویٰ کریں گے ان آیات کی برکت سے یہ شخص ہر بے دین فتنہ گر کے شر سے پار ہے گا۔ سورہ کہف میں اصحاب کہف کا ذکر ہے کہ اللہ تعالیٰ نے انہیں کافر بادشاہ کے شر سے محفوظ رکھا ان کی آیات پڑھنے والے پر ان شاء اللہ وہی فیضان ہوتا ہے بعض روایات میں تین آیات ارشاد ہوئیں مگر دس میں تین بھی داخل ہیں لہذا یہ حدیث اس کے خلاف نہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۵۲)

حدیث ۳۴: جو شخص سورہ کہف جمعہ کے دن پڑھے گا، اس کے لیے دو جمعہ کے مابین نور روشن ہوگا۔ (36)

حدیث ۳۵: ہر چیز کے لیے دل ہے اور قرآن کا دل یس ہے، جس نے یس پڑھی دس مرتبہ قرآن پڑھنا اللہ تعالیٰ اس کے لیے لکھے گا۔ (37)

حدیث ۳۶: اللہ تعالیٰ نے زمین و آسمان کے پیدا کرنے سے ہزار برس پہلے طہ و یس پڑھا، جب فرشتوں نے سنا، یہ کہا: مبارک ہو، اس امت کے لیے جس پر یہ اتارا جائے اور مبارک ہو، ان جو ان کے لیے جو اس کے حامل ہوں

(36) السنن الکبریٰ للشیخ، کتاب الجمعة، باب ما یؤمر بہ فی لیلة الجمعة... الخ، الحدیث: ۵۹۹۶، ج ۳، ص ۵۳۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ چمک اس کے چہرے پر ہوگی یا دل میں زندگی میں یا قبر میں یا قیامت کے دن اور دو جمعوں کے درمیان سے مراد اتنی مدت اور اتنا وقت ہے جو شخص ہر جمعہ کو یہ پڑھ لیا کرے تو ان شاء اللہ ہمیشہ ہی منور ہے یہ سورہ فتنہ دجال سے امان بھی ہے جیسا کہ پہلے گزر چکا بلکہ یہ نور ہی دجال کی آفت سے بچنے کا ذریعہ ہوگا ان شاء اللہ۔

۲۔ یہ حدیث مختلف طریقوں اور مختلف عبارتوں سے حاکم، دارمی، نسائی، طبرانی بزاز نے بھی روایت کی۔

(مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۴۰۰)

(37) سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ما جاء فی فضل سورۃ یس، الحدیث: ۲۸۹۶، ج ۴، ص ۴۰۶.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ جیسے دل سے اصل زندگی وابستہ ہے کہ اگر یہ ٹھیک ہے تو جاندار جاندار ہے اس کو شخص نکتے ہی بے جان ہو جاتا ہے ایسے ہی قرآن کریم کا اصل مقصود سورہ یسین سے وابستہ ہے، یہ سورہ پورے قرآن شریف کا گویا خلاصہ ہے کہ اس میں قیامت کے حالات کا مکمل بیان ہے، اس کی تلاوت سے دل زندہ، ایمان تازہ، روح شاداں و فرحاں ہوتے ہیں۔ قریب موت اس کی تلاوت سے جان کنی آسان ہوتی ہے۔ اہم غزالی فرماتے ہیں کہ ایمان کا دل ہے قیامت کے حالات کو ماننا اور حالات قیامت جس تفصیل سے سورہ یسین میں مذکور ہیں دوسری سورت میں مذکور نہیں اس لیے اسے قرآن کا دل فرمایا۔

۲۔ اس سے معلوم ہوا کہ اگرچہ سارا قرآن شریف ہی کلام الہی ہے مگر اس کی سورتوں کی تاثیریں مختلف ہیں ایک مار سورہ یسین کی تلاوت دس ۱۰ قرآن کا ثواب رکھتی ہے یہ اس کی بے مثال خصوصیت ہے۔ خیال رہے کہ دس ۱۰ ختم قرآن کا ثواب مٹا اور ہے اور حقیقتاً دس ۱۰ قرآن کریم ختم کرنا کچھ اور طیب کہتے ہیں کہ ایک متقی گرم کر کے کھانے میں ایک روٹی کی طاقت ہے مگر پیٹ بھرے گا روٹی ہی کھانے سے، ختم قرآن ہوگا تیسوں پارے پڑھنے سے۔

۳۔ اس لیے کہ اس کی استاد میں حارون ابن محمد ہیں جو محدثین کے نزدیک بہت قوی نہیں۔

(مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۴۷۲)

اور مبارک ہو، ان زبانوں کے لیے جو اس کو پڑھیں۔ (38)

حدیث ۳۷: جو شخص اللہ تعالیٰ کی رضا کے لیے یس پڑھے گا، اس کے اگلے گناہوں کی مغفرت ہو جائے گی۔
لہذا اس کو اپنے مردوں کے پاس پڑھو۔ (39)

حدیث ۳۸: جو شخص کو تک اور آیۃ الکرسی صبح کو پڑھ لے گا، شام تک محفوظ رہے گا اور جو شام کو پڑھ لے گا، صبح تک محفوظ رہے گا۔ (40)

(38) سنن الدارمی، کتاب فضائل القرآن، باب فی فضل سورۃ طہ و یس، الحدیث: ۳۴۱۳، ج ۲، ص ۵۳۷-۵۳۸.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حدیث بالکل ظاہر معنی پر ہے واقعی رب تعالیٰ نے یہ سورتیں پڑھیں، فرشتوں نے بلا واسطہ نہیں اب رب تعالیٰ کی مخلوق کی نوعیت ہماری عقل سے وراہ ہے اس طرح قرأت کی جو اس کی شان کے لائق ہے۔ مرقات نے فرمایا کہ یس اور طہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے نام شریف ہیں، چونکہ ان سورتوں کی ابتداء حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے نام سے ہوئی اس لیے یہ سورتیں بہت عظمت والی ہیں اسی وجہ سے رب تعالیٰ نے فرشتوں کو سنائیں۔ معلوم ہوا کہ نعت کی سورتیں، آیتیں رب تعالیٰ کو بڑی پیاری ہیں۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ فرشتوں کی پیدائش زمین و آسمان کی پیدائش سے پہلے ہے۔

۲۔ طوبی جنت کا ایک درخت بھی ہے جس کی شاخیں جنت کے ہر محل میں ہیں اور بمعنی خوشخبری بھی یہاں دونوں معنی ہو سکتے ہیں یعنی ساری امت محمدیہ عموماً اور ان سورتوں کے حافظ و قاری خصوصاً درخت طوبی کے مالک ہیں یا انہیں خصوصی خوشخبری ہے یہ لوگ بڑے خوش نصیب ہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۷۳)

(39) شعب اب یمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی فضائل السورۃ، الحدیث: ۲۴۵۸، ج ۲، ص ۴۷۹.

(40) سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی سورۃ البقرۃ و آیۃ الکرسی، الحدیث: ۲۸۸۸، ج ۴، ص ۴۰۲.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی سورۃ مؤمن کی پہلی آیت "لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ" تک پڑھے۔

۲۔ کہ جو شخص نماز فجر سے پہلے یا اس کے بعد یہ دو آیتیں پڑھ لیا کرے خواہ آیۃ الکرسی سے پہلے پڑھے اور سورۃ مؤمن کی یہ آیت بعد میں یا اس کے برعکس، مرقات وغیرہ تو شام تک وہ اللہ کی امان و حفظ میں رہے گا کہ شیطان، جادو اور دوسری دنیاوی آفتیں اس تک ان شاء اللہ نہ پہنچ سکیں گی۔

۳۔ یعنی بعد نماز مغرب یہ آیتیں پڑھ لیا کرے تو صبح تک اللہ کی حفظ و امن میں رہے گا۔ خیال رہے کہ بغیر نماز کوئی وظیفہ یا عمل مفید نہیں تمام درود وظیفوں کے لیے پابندی نماز ضروری ہے

حدیث ۳۹: جو شخص شب جمعہ میں پڑھے، اس کی مغفرت ہو جائے گی۔ (41)

حدیث ۴۰: نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جب تک اللہ تَنْزِیلُ اور تَبْرُکُ الَّذِی بَیْدَہِ الْمُلْکُ نہ پڑھ

لیتے سوتے نہ تھے۔ (42)

حدیث ۴۱: خالد بن معدان نے کہا، نجات دینے والی سورت کو پڑھو وہ ہے۔ مجھے خبر پہنچی ہے کہ ایک شخص اس کو پڑھتا تھا اس کے سوا کچھ نہیں پڑھتا تھا اور وہ بہت گنہگار تھا، اس سورت نے اپنا بازو اس پر بچھا دیا اور کہا اے رب! اس کی مغفرت فرما دے کہ یہ مجھ کو کثرت سے پڑھتا تھا۔ رب تعالیٰ نے اس کی شفاعت قبول فرمائی اور فرشتوں سے فرمایا کہ اس کی ہر خطا کے بدلے میں ایک نیکی لکھو اور ایک درجہ بلند کرو۔ اور خالد نے یہ بھی کہا کہ یہ اپنے پڑھنے والے کی طرف سے قبر میں جھگڑا کرے گی، کہے گی اٹھی! اگر میں تیری کتاب سے ہوں تو میری شفاعت قبول فرما اور تیری کتاب میں سے نہیں ہوں تو اس میں سے مجھے مٹا دے۔ اور وہ پرند کی طرح اپنے بازو اس پر بچھا دے گی اور شفاعت کرے گی اور عذاب قبر سے بچائے گی۔

اور خالد نے تبارک کے متعلق بھی ایسا ہی کہا اور جب تک ان دونوں کو پڑھ نہ لیتے خالد سوتے نہ تھے اور طاؤس

نے کہا کہ یہ دونوں سورتیں قرآن کی ہر ایک سورۃ پر ساٹھ حسنہ کے ساتھ فضیلت رکھتی ہیں۔ (43)

۴۔ یہ حدیث احمد و ابن حبان نے بھی روایت کی۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۶۹)

(41) المرجع السابق، باب ماجاء فی فضل حم الدخان، الحدیث: ۲۸۹۸، ج ۴، ص ۴۰۷۔

(42) المرجع السابق، باب ماجاء فی فضل سورۃ الملک الحدیث: ۲۹۰۱، ج ۴، ص ۴۰۸۔

(43) سنن الدہلی، کتاب فضائل القرآن، باب فی فضل سورۃ تنزیل السجدة و تبارک، الحدیث: ۳۳۰۸، ۳۳۱۰، ۳۳۱۲، ج ۲، ص ۵۳۶۔

۵۳۷

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ مشہور تابعی ہیں، ستر صحابہ سے آپ کی ملاقات ہے، ثقہ ہیں، عالم ہیں۔ (اشعہ)

۲۔ یہ سورۃ دنیوی آفات عذاب قبر و حشر سے نجات کا ذریعہ ہے اس لیے اسے منجیہ کہتے ہیں جب قرآنی سورۃ کو منجیہ کہنا درست ہے تو حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کو بھی منجی یعنی نجات دہندہ کہا جاسکتا ہے۔

۳۔ یعنی صرف اس سورہ کا وظیفہ کرنا اس کے سوائے اس کا کوئی ورد وظیفہ نہ تھا۔

۴۔ یعنی جب وہ قبر میں گیا تو یہ سورت پرندے کی شکل میں نمودار ہوئی اور اس پر اپنے پروں کا سایہ کر لیا تاکہ اس شخص پر عذاب نہ آ سکے ظاہر یہ ہے کہ یہ خبر حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے صحابہ کو دی ہو بعض صحابہ سے بعض گناہ سرزد ہوئے ہیں مگر ان میں فاسق کوئی نہیں گناہ اور ہے فسق کچھ اور۔

حدیث ۴۲: قرآن میں تیس آیت کی ایک سورت ہے، آدمی کے لیے شفاعت کرے گی یہاں تک کہ اس کی مغفرت ہو جائے گی۔ وہ تَبْرُکَ الَّذِیْ بِیْدِہِ الْمُلْکُ ہے۔ (44)

۵۔ یعنی اس شفاعت کی برکت سے عذاب قبر دفع ہی ہو گیا۔ اولاً تو اس نے عذاب قبر سے بچایا پھر دفع کیا۔

۶۔ یعنی اس کے نامہ اعمال سے سارے گناہ مٹا دو اور ہر گناہ پر نیکی کا ثواب دو یہ مطلب نہیں ہے کہ گناہ ہٹا کر یہ لکھ دو کہ اس نے نیکیاں کیں کہ یہ تو جھوٹ ہے رب تعالیٰ فرماتا ہے: "فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ"۔ بادشاہ خوش ہوتے ہیں تو گالی پر انعام دے دیتے ہیں گا ہے بدشام خلعت دہند، لہذا حدیث واضح ہے۔ خیال رہے کہ خطیئۃ سے مراد حقوق اللہ کے گناہ صغیرہ ہیں نہ کہ حقوق العباد لہذا اس سے یہ لازم نہیں کہ اللہ تنزیل پڑھنے والا لوگوں کے مال مارے چوری ڈکیتی کرتا رہے اور اس کو ان جرموں پر ثواب دے۔

۷۔ اور اس کی قبر میں وسعت، نور کر دے، اور اسے سوالات نکیرین میں کامیاب فرما دے، کیونکہ یہ مجھے بہت تلاوت کرتا تھا آج اس کا پھل اسے دے۔

۸۔ یعنی مجھے لوح محفوظ سے مٹا دے یا قرآنی اوراق سے یا اس کے سینے سے نکال دے۔ یہ تاز کی عرض و معروض ہے جیسے تاز پروردہ غلام اپنے آقا سے کہے کہ اگر میں تیرا غلام ہوں، تو میری بات مان ورنہ مجھے فروخت فرما دے، یا بیٹا باپ سے عرض کرے کہ اگر میں آپ کا فرزند ہوں تو میرے حق کا لحاظ فرمادیں، اگر نمی ہوں تو مجھے اپنے گھر سے باہر نکال دیجئے، لہذا یہ اگر مگر شک و تردد کے لیے نہیں۔

۹۔ یعنی جیسے مرغی یا چڑیا اپنے بچوں کو اپنے پردوں میں لے لیتی ہے جس سے بچوں تک باہر کی تکلیف نہیں پہنچنے پاتی، ایسے ہی یہ سورۃ اپنے عمل کو قبر و قیامت میں اپنے پردوں میں لے لے گی جس سے اس شخص تک مری، وحشت، دہشت وغیرہ نہ پہنچ سکے گی۔

۱۰۔ حضرت خالد ابن معدان نے سورہ ملک کے فضائل بھی تقریباً ایسے ہی بیان کئے۔

۱۱۔ یعنی بعض خصوصی فائدوں میں دوسری تمام سورتوں سے ساٹھ گنا زیادہ ہیں، یا بعض حالات میں ان کی تلاوت دوسری سورتوں کی تلاوت سے ساٹھ گنا زیادہ مفید ہو جیسے نماز وتر میں "سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى" اور "قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ" اور "قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ" پڑھنا بہت بہتر ہے اور جمعہ کی فجر میں سورۃ سجدہ اور سورۃ دھر کی تلاوت افضل ہے لہذا اس حدیث پر یہ اعتراض نہیں کہ سورۃ فاتحہ اور سورۃ اخلاص کے فضائل تو بہت ہیں۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۴۰۱)

(44) سنن استرمدی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل سورۃ الملک، الحدیث: ۲۹۰۰، ج ۲، ص ۴۰۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس سے معلوم ہوا کہ بسم اللہ شریف سورۃ کا جز نہیں ورنہ سورۃ ملک کی آیتیں ۳۱ ہو جاتیں، کیونکہ سورۃ ملک کی بسم اللہ کے علاوہ تیس آیتیں ہیں۔

۲۔ یعنی ایک شخص سورۃ ملک کا ورد رکھتا تھا اس سے بہت محبت کرتا تھا اس کے مرنے کے بعد اس سورہ نے اس کی سفارش کی تو

حدیث ۴۳: بعض صحابہ نے قبر پر خیمہ گاڑ دیا انھیں یہ معلوم نہ تھا کہ یہاں قبر ہے، اس میں کسی شخص نے تَبْلُوكَ الَّذِي بِبَيْتِكَ ختم سورۃ تک پڑھا، جب انھوں نے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہو کر یہ واقعہ سنایا، تو حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: وہ مانع ہے، وہ منجیہ ہے، عذاب الہی سے نجات دیتی ہے۔ (45)

حدیث ۴۴: جو شخص سورہ واقعہ ہر رات میں پڑھ لے گا، اس کو کبھی قاتلہ نہیں پہنچے گا۔ ابن مسعود رضی اللہ تعالیٰ

اس کی شفاعت کی برکت سے وہ شخص عذاب قبر سے محفوظ رہا لہذا یہاں شفعت بمعنی ماضی ہی ہے۔ معلوم ہوا کہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کو اس عالم کی ہر بات ہر واقعہ کی تفصیلی خبر ملتی رہتی ہے یا خود ملاحظہ فرماتے رہتے ہیں۔ لغات نے فرمایا کہ شفعت بمعنی مستقبل بھی ہو سکتا ہے یعنی سورہ ملک اپنے عالموں کی شفاعت کرے گی اور اس کی شفاعت کی برکت سے عالم کی بخشش ہوگی۔ اس صورت میں یہ فرمان ترغیب کے لیے ہے تاکہ لوگ اس کی تلاوت کیا کریں اس کی شفاعت کی امید رکھیں۔

۳۔ اسے ابن حبان اور حاکم نے بھی روایت کیا حاکم کی روایت میں یوں ہے کہ فرمایا نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے کہ بہتر ہوتا کہ یہ سورہ ہر مسلمان کے دل میں ہوتی۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۲۷۸)

(45) المرجع السابق، باب ما جاء فی فضل سورۃ الملک، الحدیث: ۲۸۹۹، ج ۴، ص ۷۰۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اگر قبر کی خبر ہوتی تو وہاں ہر گز خیمہ نہ ڈالتے کیونکہ قبر پر بیٹھنا لینا، اس پر چلنا پھرنا ممنوع ہے۔

۲۔ مرقات نے یہاں فرمایا کہ بعض مردے قبر میں بھی بعض وہ نیکیاں کرتے رہتے ہیں جو زندگی میں کرتے تھے حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے موسیٰ علیہ السلام کو قبر میں نماز پڑھتے دیکھا۔ صوفیاء فرماتے ہیں کہ جس حال میں جو گے اسی میں مردے اور جس حال میں مردے اسی میں اٹھو گے، اس لیے کوشش کرو کہ زندگی اچھے اعمال میں گزارو۔ بعض لوگ کہتے ہیں کہ حضرت بلال اذان دیتے ہوئے قبر سے اٹھیں گے، ان کا ماخذ غالباً ان جیسی روایات ہیں ان شاء اللہ نعت خواں مسلمان قبر میں بھی حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کی نعت ہی پڑھیں گے۔ رب تعالیٰ قبول فرمائے ان صحابی کا یہ تلاوت سن لینا ان کی کرامت ہے ورنہ ہم لوگ نہیں سنا کرتے۔

۳۔ اور تعجب کا اظہار کیا کہ مردہ بھی تلاوت قرآن کر رہا تھا۔

۴۔ یعنی اس سورت کی تلاوت کرنے والے کو زندگی میں گناہوں سے، موت کے وقت خرابی خاتمہ سے، قبر میں عذاب و تنگی گورے، آخرت میں دہشت و سخت عذاب سے بچاتی ہے۔

۵۔ یعنی عذاب قبر وحشر سے بچائے گی۔ خلاصہ جواب یہ ہوا کہ یہ شخص اپنی زندگی میں اس سورۃ کی تلاوت کرتا تھا اب قبر میں بھی تلاوت کر رہا ہے اور اس سے مذکورہ بالا فائدے حاصل کر چکا ہے اب بھی کر رہا ہے آئندہ بھی کرے گا۔

عند اپنی صاحب زادیوں کو حکم فرماتے تھے کہ ہر رات میں اس کو پڑھا کریں۔ (46)

حدیث ۴۵: کیا تم اس کی استطاعت نہیں رکھتے کہ ہر روز ایک ہزار آیتیں پڑھا کرو، لوگوں نے عرض کی اس کی کون استطاعت رکھتا ہے کہ ہر روز ہزار آیتیں پڑھا کرے؟ فرمایا: کیا اس کی استطاعت نہیں کہ اَلْهَيْكُمُ الشَّكَاوُہُ پڑھ لیا کرو۔ (47)

حدیث ۴۶: کیا تم اس سے عاجز ہو کہ رات میں تہائی قرآن پڑھ لیا کرو؟ لوگوں نے عرض کی، تہائی قرآن کیونکر کوئی پڑھ لے گا؟ فرمایا کہ قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ تہائی کی برابر ہے۔ (48)

حدیث ۴۷: اِذَا زُلْزِلَتْ نصف قرآن کی برابر ہے اور قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ تہائی قرآن کی برابر ہے اور قُلْ

(46) شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی فضائل السور والآیات، الحدیث: ۲۴۹۹، ج ۲، ص ۴۹۱-۴۹۲.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ بعض شارحین نے اس حدیث کی تاویلیں کی ہیں کہ اسے فائدہ میں بے صبری نہ ہوگی یا اسے توکل نصیب ہوگا یا اسے دلی فائدہ یعنی عبادت سے غفلت نہ ہوگی، مگر حق یہ ہے کہ حدیث ظاہر پر ہے سورۃ واقعہ ہر رات پڑھنے والا فقر و فاقہ سے محفوظ رہتا ہے۔ یہ عمل بہت مجرب ہے، اللہ تعالیٰ نے بعض سورتوں، آیتوں میں دنیاوی فائدے بھی رکھے ہیں تاکہ لوگوں کو تلاوت قرآن کی رغبت ہو مختلف آیتوں میں مختلف دنیاوی تاثیریں بھی رکھی گئی ہیں، (لمعات)

۲۔ تاکہ تلاوت کا ثواب بھی پائیں اور فقر و فاقہ سے محفوظ بھی رہیں۔ معلوم ہوا کہ دنیاوی نفع و اثر کے لیے بھی قرآن پاک پڑھنا جائز ہے، ہاں ناجائز مقاصد کے لیے قرآن کریم پڑھنا یا کوئی عمل کرنا جرم ہے حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم قرآنی آیات اور دوسری دعائیں بیماروں پر استعمال فرماتے تھے شفا کے لیے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۴۰۶)

(47) المرجع السابق، الحدیث: ۲۵۱۸، ج ۲، ص ۴۹۸.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی ایک دو دن تو آدمی تمام کام بند کر کے ایک ہزار آیتیں پڑھ سکتا ہے، روزانہ نہیں پڑھ سکتا۔ ورنہ دوسرے کاموں کے لئے وقت نہ ملے گا ہم لوگ کاروبار بھی کرتے ہیں۔

۲۔ کہ اس کی تلاوت میں ایک ہزار آیتوں کا تلاوت و عمل کا ثواب ہے، قرآن کریم میں چھ ہزار چھ سو چھیٹھ (۶۶۶۶) آیتیں ہیں، کسر کو نکالو تو چھ ہزار آیات رہتی ہیں، اور مقاصد قرآن چھ ہیں، جن میں سے ایک ہے آخرت کی پہچان یہ سورۃ شکار میں موجود ہے، اس لئے یہ سورۃ گویا قرآن کریم کا تقریباً چھٹا حصہ ہے، اس میں غور کرنے سے دنیا سے بے رغبتی ہوتی ہے آخرت میں رغبت، جس سے نفس گناہوں سے متنفر اور نیکیوں میں راغب ہوتا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۴۰۹)

(48) صحیح مسلم، کتاب صدۃ المسافرین... إلخ، باب فضل قراءة قل هو اللہ احد... إلخ، الحدیث: ۲۵۹۰-۲۵۹۱، (۸۱۱)، ص ۴۰۵.

يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ چوتھائی کی برابر۔ (49)

حدیث ۴۸: جو ایک دن میں دو سو مرتبہ پڑھے گا، اس کے چپاس برس کے گناہ مٹا دیے جائیں گے مگر یہ کہ اس پر ذین ہو۔ (50)

حدیث ۴۹: جو شخص سوتے وقت پچھونے پر داہنی کروٹ لیٹ کر سو مرتبہ قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ پڑھے، قیامت کے دن رب تبارک و تعالیٰ اس سے فرمائے گا کہ اے میرے بندے! اپنی داہنی جانب جنت میں چلا جا۔ (51)

(49) سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی اذا زلزلت، الحدیث: ۲۹۰۲، ج ۲، ص ۴۰۹.

(50) المرجع السابق، باب ماجاء فی سورة الاخلاص... الخ، الحدیث: ۲۹۰۷، ج ۲، ص ۴۱۱.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی دن و رات کے کسی حصہ میں پوری سورۃ اخلاص دو سو ۲۰۰ بار پڑھا کرے۔ بہتر یہ ہے کہ ایک دم ہی پڑھے اور اگر مختلف مجلسوں میں پڑھے تو بھی اجر مذکور کی امید ہے۔

۲۔ یعنی عمر بھر یہ پڑھتا رہے تو ان شاء اللہ چپاس سال کے گناہ صغیرہ معاف ہوں گے اور اگر اتنے گناہ نہ ہوں تو درجے بند ہوں گے کیونکہ جن اعمال سے گنہگاروں کے عفو سیئات ہوتی ہے نیک کاروں کے لیے رفع درجات۔ یہ قانون کرم ہے لہذا حدیث پر یہ اعتراض نہیں کہ پھر تو نیک لوگ یہ عمل نہ کیا کریں۔

۳۔ کہ قرض تو حق العہد ہے بغیر ادا کئے یا قرض خواہ کے بغیر معاف کئے ساقط نہیں ہوتا سارے حقوق العباد کا یہی حال ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۸۳)

(51) المرجع السابق، ۲۹۰۷، ج ۲، ص ۴۱۱.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ بستر کا ذکر اتفاق ہے اگر کوئی زمین پر بھی لیٹے تو یہ پڑھ لے مگر لیٹنا سونے کے لیے ہو ویسے لیٹنے کا حکم نہیں اس لیے اس سید انصاری صلی اللہ علیہ وسلم نے سونے کے ارادے کا ذکر فرمایا۔

۲۔ اس طرح کہ قبلہ کو رخ ہو اور داہنی ہتھیلی داہنے رخسار کے نیچے رکھے کہ سنت اسی طرح لیٹنا ہے پھر بائیں کروٹ لے کر سوجائے، غرض کہ بستر کا رخ قبر کا سا ہو۔

۳۔ فقہ لفظ "قل هو اللہ احد" نہیں بلکہ پوری سورہ مع بسم اللہ کے ہر بار اگرچہ یہ عمل ہے تو مشکل مگر بہت مفید ہے۔

۴۔ یعنی چونکہ تو میرے محبوب کی سنت پر عمل کرتے ہوئے داہنی کروٹ لیٹتا تھا اور میری حمد والی سورۃ پڑھ کر سوتا تھا اس کے انعام میں آج تو جنت کے واسطے باغ میں داخل ہو جاوہ تیرا مقام ہے۔ خیال رہے کہ جنتی لوگ تین قسم کے ہوں گے: مقربین حضرات علیین واسے ہیں، ابرار یہ یحییٰ واسے ہیں، گنہگار جن کی شفاعت کی بنا پر مغفرت ہو چکی یہ یسار واسے ہیں رب تعالیٰ نے فرمایا ہے: "فَرِحْنَا بِكُمَ يَا أَيُّهَا الْعَالَمُونَ"۔

حدیث ۵۰: نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ایک شخص کو قُلْ هُوَ اللہُ اَحَدٌ پڑھتے سنا، فرمایا کہ جنت و جہنم ہوگئی۔ (52)

حدیث ۵۱: کسی نے پوچھا، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) قرآن میں سب سے بڑی سورت کون سی ہے؟ فرمایا: قُلْ هُوَ اللہُ اَحَدٌ۔ اس نے عرض کی، قرآن میں سب سے بڑی آیت کون سی ہے؟ فرمایا: آیۃ الکرسی اِنَّہُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ۔ اس نے کہا، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کون سی آیت آپ کو اور آپ کی امت کو پہنچنا محبوب ہے؟ یعنی اس کا فائدہ و ثواب۔ فرمایا: سورہ بقرہ کے خاتمہ کی آیت کہ وہ رحمت الہی کے خزانہ سے عرش الہی کے نیچے سے ہے، اللہ تعالیٰ نے وہ آیت اس امت کو دنی و آخرت کی کوئی خیر نہیں مگر یہ اس پر مشتمل ہے۔ (53)

حدیث ۵۲: جو شخص اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِیْعِ الْعَلِیْمِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ تین مرتبہ پڑھ کر سورہ حشر کی پچھلی تین آیتیں پڑھے، اللہ تعالیٰ ستر ہزار فرشتے مقرر فرمائے گا جو شام تک اس کے لیے دعا کریں گے۔ اور اگر وہ شخص اس روز مر جائے تو شہید مرے گا اور شام کو پڑھ لے تو اس کے لیے بھی یہی ہے۔ (54)

لِنَفْسِهِ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ"۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ جنت کا داہنا حصہ بائیں سے افضل ہے اور یہ کہ عرش کی داہنی طرف والے بائیں سمت والوں سے بہتر۔

۵۔ علماء فرماتے ہیں کہ یہ حدیث اگرچہ درجہ صحیح کو نہ پہنچی مگر اس پر عمر میں کم از کم ایک بار ضرور عمل کرے کہ اس کے عامل کو بڑی بشارت ہے، فضائل اعمال میں حدیث ضعیف بھی قبول ہے، مرقات۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۸۴)

(52) المرجع السابق، الحدیث: ۲۹۰۶، ج ۴، ص ۴۱۱۔

(53) سنن الدارمی، کتاب فضائل القرآن، باب فضل اول سورة البقرة وآیۃ الکرسی، الحدیث: ۳۳۸۰، ج ۲، ص ۵۴۰۔

(54) سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب فی فضل قراءة آخر سورة الحشر، الحدیث: ۲۹۳۱، ج ۴، ص ۴۲۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی میری بات سننے والے، میرا درد دل جاننے والے رب کی پناہ مانگتا ہوں۔ خیال رہے کہ محو جملہ خبریہ ہے بمعنی ان شاء یعنی اے اللہ مجھے اپنی پناہ میں لے لے۔

۲۔ تاکہ دن بھر وہ مردود مجھے بہکانہ سکے، عبادتوں میں دھیان نہ بٹاسکے، چونکہ سویرا زندگی کی دکان کھلنے کا وقت ہے اس لیے خصوصیت سے اسی وقت یہ دعا پڑھوائی گئی۔

۳۔ "هُوَ اللہُ الَّذِیْ" سے آخر سورہ "وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ" تک یہ آیات خالص حمد کی ہیں۔

۴۔ یہاں فرشتوں کی دعا سے ان کی خصوصی دعائیں مراد ہیں، ورنہ فرشتے عمومی دعائے مغفرت تو ہر مسلمان کے لیے کرتے۔

حدیث ۵۳: جو قرآن پڑھے اس کو اللہ (عزوجل) سے سوال کرنا چاہیے۔ عنقریب ایسے لوگ آئیں گے، جو قرآن پڑھ کر آدمیوں سے سوال کریں گے۔ (55)

حدیث ۵۴: جو قرآن پڑھ کر آدمیوں سے کھانا مانگے گا، قیامت کے دن اس طرح آئے گا کہ اس کے چہرہ پر گوشک نہ ہوگا، نری ہڈیاں ہوں گی۔ (56)

رہے ہیں جیسا کہ پہلے عرض کیا گیا اور شہید سے مراد شہادت حکمی ہے کہ بندہ اگر چہ اپنے بستر پر مرے مگر قیامت میں اس کا شمار ان شہداء میں ہو جو راہ خدا میں مارے گئے۔

۵۔ لغت میں صبح آدمی رات سے زوال تک کو کہتے ہیں اور مساء زوال سے اول نصف رات تک کو مگر اوراد و وظائف میں صبح صادق سے سورج نکلنے سے کچھ بعد تک ہے اور شام اس کے مقابل یعنی سورج چھپنے سے کچھ رات گئے تک یعنی وقت عشاء آنے سے پہلے۔ (ازمرقات) اعلیٰ حضرت قدس سرہ نے صبح و شام کی نہایت نفیس تحقیق اپنی کتاب "الوظیفۃ الکریم" میں فرمائی ہے ناظرین اس کا مطالعہ ضرور فرمائیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۸۲)

(55) سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب من قرأ القرآن فليسأل الله به... إلخ، الحدیث: ۲۹۲۶، ج ۴، ص ۴۲۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ محدثین کی اصطلاح میں قاسم پیشہ ور داعظ کو کہتے ہیں جو اپنی تقریر میں احکام شرعیہ بیان نہ کرے صرف شعرا شعرا قصے کہانیاں سنا کر لوگوں کو خوش کرنے کی کوشش کرے اگرچہ قرآن شریف ہی کے قصے سنائے مگر احکام سے خالی جیسے آج کل کے عام بے علم داعظین یہ سب قاسم ہیں داعظ نہیں کہ داعظ تو نصیحت کرنے والوں کو کہتے ہیں وہ نصیحت نہیں کرتا صرف پیسے مانگتا ہے حاجت مند کسی کو نصیحت نہیں کر سکتا۔

۲۔ اس گناہ و بدعت و علامت قیامت کو دیکھ کر آپ کو سخت صدمہ ہوا اظہار رنج کے لیے آپ نے انا اللہ پڑھی۔

۳۔ یا تو اس طرح کہ دوران تلاوت میں جب آیت رحمت پر گزرے تو اس کے حصول کی دعا مانگ لے اور جب آیت عذاب تلاوت کرے تو اس سے پناہ مانگ لے یا اس طرح کہ تلاوت سے فارغ ہو کر دعا مانگے، معلوم ہوا کہ تلاوت سے فراغت پر خصوصاً ختم قرآن کے موقع پر دعا ضرور مانگی جائے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۴۴۱)

(56) شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی ترک قراءۃ القرآن فی المساجد والاسواق لیعطی ویستاکل بہ، الحدیث: ۲۶۲۵، ج ۲، ص ۵۳۲-۵۳۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ جیسا آج کل دیکھا جا رہا ہے کہ بعض بھکاری مسجدوں میں بلکہ گلی کوچوں میں تلاوت کرتے پھرتے ہیں وہ ہاتھ پھیلا رہے ہیں یہ حرام ہے کہ اس میں قرآن کریم کی توہین ہے۔ خیال رہے کہ طلباء سے ختم قرآن شریف کرا کر ان کی دعوت بھی کی جاتی ہے اور کچھ نقد بھی دی جاتی ہے یا علمائے دین سے جلسوں میں وعظ کرا کر کرایہ و نذرانے دیئے جاتے ہیں یہ تمام صورتیں اس حکم سے خارج ہیں کہ وہاں ختم

حدیث ۵۵: ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مصحف لکھنے کی اجرت سے سوال ہوا۔ انھوں نے فرمایا: اس میں حرج نہیں، وہ لوگ نقش بناتے ہیں اور اپنی دست کاری سے کھاتے ہیں۔ یعنی یہ ایک قسم کی دست کاری ہے، اس کا معاوضہ لینا جائز ہے۔ (57)

قرآن مجید کی تلاوت وغیرہ کے مسائل حصہ سوم میں مذکور ہو چکے ہیں وہاں سے معلوم کیے جائیں۔ مصحف شریف کے متعلق بعض باتیں یہاں ذکر کی جاتی ہیں۔



اور وعظ فی سبیل اللہ ہے اور ان کی خدمت فی سبیل اللہ جیسے مدرسین دینیہ کی تنخواہیں یا خلفائے اسلامیہ کے بھاری بھاری وظیفے نیز دم و تعویذ کی اجرت بھی اس سے خارج ہے کہ وہ تو علاج کی ہے نہ کہ تلاوت قرآن کی خلفائے راشدین نے خلافت پر تنخواہ لی اور صحابہ نے سورت فاتحہ پڑھ کر، رگزیدہ پر دم کیا اجرت میں تیس بکریاں لیں جن کا گوشت حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے بھی ملاحظہ فرمایا جیسا کہ اسی مشکوٰۃ شریف کتاب الاجارہ میں ان شاء اللہ آئے گا۔

۲۔ اس طرح کہ بھکاری چند لقمے حاصل کرنے کے لیے دروازہ پر بجائے صدا دینے کے قرآن کریم پڑھے تاکہ لوگ کچھ دے دیں اسے قرآن پڑھانے والوں کی اجرت مدرسین و علماء کی تنخواہیں سے کوئی تعلق نہیں جیسا کہ روش حدیث سے ظاہر ہے۔

۳۔ یعنی ان کے چہروں پر ذلت و خواری چھائی ہوگی جیسے آج بھی بعض لوگوں کو دیکھتے ہی معلوم ہو جاتا ہے کہ یہ فقیر بھکاری ہے، خیال رہے کہ امت محمدیہ کے چھپے عیب اللہ تعالیٰ بھی چھپائے گا، شان ستاری کی جلوہ گری ہوگی، مگر جو عیب خود ان لوگوں نے ہی علانیہ کئے ہوں وہ وہاں پر بھی علانیہ طور پر ظاہر ہوں گے لہذا اس حدیث پر یہ اعتراض نہیں کہ یہ بھکاری تو امت مصطفوی میں سے تھا پھر اس کا یہ عیب کیوں ظاہر فرمایا گیا کیونکہ یہ اظہار تو خود وہی کر چکا ہے رب تعالیٰ کسی کا پردہ فاش نہیں کرے گا۔

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۴۴۲)

(57) مشکوٰۃ المصابیح، کتاب البیوع، باب الکسب وطلب الحلال، الحدیث: ۲۷۸۲، ج ۲، ص ۱۳۳۔

قرآن مجید اور کتابوں کے آداب

مسئلہ ۱: قرآن مجید پر سونے چاندی کا پانی چڑھانا جائز ہے کہ اس سے نظر عوام میں عظمت پیدا ہوتی ہے، اس میں اعراب و نقطے لگانا بھی مستحسن ہے، کیونکہ اگر ایسا نہ کیا جائے تو اکثر لوگ اسے صحیح نہ پڑھ سکیں گے۔ اسی طرح آیت سجدہ پر سجدہ لکھنا اور وقف کی علامتیں لکھنا اور رکوع کی علامت لکھنا اور تعشیر یعنی دس دس آیتوں پر نشان لگانا جائز ہے۔ اسی طرح سورتوں کے نام لکھنا اور یہ لکھنا کہ اس میں اتنی آیتیں ہیں یہ بھی جائز ہے۔ (1)

اس زمانہ میں قرآن مجید کے تراجم بھی چھاپنے کا رواج ہے اگر ترجمہ صحیح ہو تو قرآن مجید کے ساتھ طبع کرنے میں حرج نہیں، اس لیے کہ اس سے آیت کا ترجمہ جاننے میں سہولت ہوتی ہے مگر تنہا ترجمہ طبع نہ کیا جائے۔

مسئلہ ۲: تاریخ کے اوراق قرآن مجید کی جلد یا تفسیر و فقہ کی کتابوں پر بطور غلاف چڑھانا جائز ہے۔ (2)

مسئلہ ۳: قرآن مجید کی کتابت نہایت خوش خط اور واضح حروف میں کی جائے، کاغذ بھی بہت اچھا، روشنائی بھی خوب اچھی ہو کہ دیکھنے والے کو بھلا معلوم ہو۔ (3) بعض اہل مطابع (یعنی چھاپنے والے) نہایت معمولی کاغذ پر بہت خراب کتابت و روشنائی سے چھپواتے ہیں یہ ہرگز نہ ہونا چاہیے۔

مسئلہ ۴: قرآن مجید کا حجم چھوٹا کرنا مکروہ ہے۔ (4) مثلاً آج کل بعض اہل مطابع نے تعویذی قرآن مجید چھپوائے ہیں جن کا قلم اتنا باریک ہے کہ پڑھنے میں بھی نہیں آتا، بلکہ حائل (یعنی چھوٹے سائز کا قرآن جسے گلے میں لٹکاتے ہیں) بھی نہ چھپوائی جائے کہ اس کا حجم بھی بہت کم ہوتا ہے۔

مسئلہ ۵: قرآن مجید پرانا بوسیدہ ہو گیا اس قابل نہ رہا کہ اس میں تلاوت کی جائے اور یہ اندیشہ ہے کہ اس کے

(1) درمختار میں ہے؛

جاز تحلیۃ المصحف لما فیہ من تعظیہ کما فی نقش المسجد۔

(۱) درمختار کتاب الحظر والاباحہ فصل فی البیع مطبع مجتہد کی دہلی ۲/۲۳۵

قرآن مجید کو مزین کرنا جائز ہے کیونکہ اس میں قرآن مجید کی تعظیم ہے جیسا کہ مسجد کو تعظیماً منقش کرنا جائز ہے۔

(2) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۳۔

(3) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۳۔

(4) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۳۔

اور اق منتشر ہو کر ضائع ہوں گے، تو کسی پاک کپڑے میں لپیٹ کر احتیاط کی جگہ دفن کر دیا جائے اور دفن کرنے میں اس کے لیے لحد بنائی جائے، تاکہ اس پر مٹی نہ پڑے یا اس پر تختہ لگا کر چھت بنا کر مٹی ڈالیں کہ اس پر مٹی نہ پڑے۔ مصحف شریف بوسیدہ ہو جائے تو اس کو جلایا نہ جائے۔ (5)

مسئلہ ۶: لغت و نحو و صرف کا ایک مرتبہ ہے، ان میں ہر ایک کی کتاب کو دوسرے کی کتاب پر رکھ سکتے ہیں اور ان سے اوپر علم کلام کی کتابیں رکھی جائیں ان کے اوپر فقہ اور احادیث و مواعظ و دعوات ماثورہ (6) فقہ سے اوپر اور تفسیر کو ان کے اوپر اور قرآن مجید کو سب کے اوپر رکھیں۔ قرآن مجید جس صندوق میں ہو اس پر کپڑا وغیرہ نہ رکھا جائے۔ (7)

مسئلہ ۷: کسی نے محض خیر و برکت کے لیے اپنے مکان میں قرآن مجید رکھ چھوڑا ہے اور تلاوت نہیں کرتا تو گناہ نہیں بلکہ اس کی یہ نیت باعث ثواب ہے۔ (8)

مسئلہ ۸: قرآن مجید پر اگر بقصد توہین پاؤں رکھا کافر ہو جائے گا۔ (9)

مسئلہ ۹: جس گھر میں قرآن مجید رکھا ہو، اس میں بی بی سے صحبت کرنا جائز ہے جبکہ قرآن مجید پر پردہ پڑا ہو۔ (10)

مسئلہ ۱۰: قرآن مجید کو نہایت اچھی آواز سے پڑھنا چاہیے۔ اسی طرح اذان کہنے میں خوش گلوئی سے کام لے یعنی اگر آواز اچھی نہ ہو تو اچھی آواز بنانے کی کوشش کرے، لحن کے ساتھ پڑھنا کہ حروف میں کمی بیشی ہو جائے جیسے گانے والے کیا کرتے ہیں یہ ناجائز ہے، بلکہ پڑھنے میں قواعد تجوید کی مراعات کرے۔ (11)

(5) الفتاویٰ اھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس فی آداب المسجد...، ج ۵، ص ۳۲۳۔

(6) دعوات، ثورہ: یعنی قرآن و حدیث سے منقول دعائیں ماثورہ کہلاتی ہیں۔

(7) الفتاویٰ اھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس فی آداب المسجد...، ج ۵، ص ۳۲۳۔

(8) الفتاویٰ اھندیہ، کتاب الخطر والاباحۃ، فصل فی آداب المسجد، ج ۲، ص ۳۷۸۔

(9) الفتاویٰ اھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس فی آداب المسجد...، ج ۵، ص ۳۲۲۔

(10) الفتاویٰ اھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس فی آداب المسجد...، ج ۵، ص ۳۲۲۔

(11) الدر المنثور، کتاب الخطر والاباحۃ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۹۴۔

اعلیٰ حضرت، امام ہدایت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

صحیح حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

ما اذن الله لشيع ما اذن لنبی حسن الصوت يتغنى بالقرآن يمجده رواء الائمة احمد والبغاري۔

مسئلہ ۱۱: قرآن مجید کو معروف و شاذ دونوں قراءتوں کے ساتھ ایک ساتھ پڑھنا مکروہ ہے تو فقط قراءت شاذہ کے

ومسلم و ابو داؤد والنسائی وابن ماجہ عن ابی ہریرۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔

اللہ تبارک و تعالیٰ کس چیز کو ایسی توجہ و درنا کے ساتھ نہیں سنا جیسا کسی خوش آواز نبی کے پڑھنے کو جو خوش الحانی سے کلام الہی کی طریت بآواز کرتا ہے۔ (۱) کرام مثلاً امام احمد، بخاری، مسلم، ابو داؤد، نسائی اور ابن ماجہ نے اس کو حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے۔ (۲) صحیح البخاری کتاب فضائل القرآن ۲/ ۷۵۱ و صحیح مسلم کتاب فضائل القرآن ۱/ ۲۶۸

(سنن ابی داؤد باب کیف یستحب الترتیل فی القراءۃ ۱/ ۲۰۷)

دوسری حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لله اشدنا الى الرجل احسن الصوت بالقرآن يجهربه من صاحب القينة الى قينة، رواه ابن ماجه ۲-۱ و ابن حبان والحاكم وصحیح علی شرطہما والبیہقی کلہم عن فضالہ بن عبید رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔

یعنی جس شوق و رغبت سے گانے کا شوقین اپنی گان کیز کا گانا سنتا ہے بیشک اللہ عزوجل اس سے زیادہ پسند و رضا دے گا کہ اس کے ساتھ اپنے بندے کا قرآن سنا ہے جو اسے خوش آوازی سے جبر کے ساتھ پڑھے (ابن ماجہ، ابن حبان اور حاکم نے اس کو روایت کیا ہے اور حاکم نے کہا ہے کہ یہ حدیث بخاری و مسلم دونوں کی شرط پر صحیح ہے اور امام بیہقی نے بھی اس کو روایت کیا ہے تمام نے حضرت فضالہ بن عبید رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالے سے اس کو روایت فرمایا ہے۔

(۲) المستدرک للحاکم کتاب فضائل القرآن دار الفکر بیروت ۱/ ۵۷۱ (سنن ابن ماجہ باب فی حسن الصوت بالقرآن ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۹۶) (السنن الکبریٰ للبیہقی کتاب الشہادۃ تحسین الصوت القرآن دار صادر بیروت ۱۰/ ۲۳۰)

تیسری حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

تعلموا کتاب اللہ و تعاهدوا و تغنوا بہ، رواه الامام ۳-۱ احمد عن عقبہ بن عامر رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔

قرآن مجید سیکھو اور اس کی نگہداشت رکھو اسے اچھے لہجے پسندیدہ الحان سے پڑھو، (امام احمد نے حضرت عقبہ بن عامر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی سند سے اس کو روایت کیا ہے۔ (۳) مسند امام احمد بن حنبل حدیث عقبہ بن عامر رضی اللہ تعالیٰ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۳/ ۱۴۶) چوتھی حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

زینوا القرآن بأصواتکم فان الصوت الحسن یزید القرآن حسنا ۱-۱ واه الدارمی فی سننہ و محمد بن نصر فی کتاب الصلوۃ بلفظ حسنوا ۲-۱ و باللفظین رواه الحاکم فی المستدرک کلہم من البراء بن عازب رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔

قرآن کو اپنی آوازوں سے زینت دو کہ خوش آوازی قرآن کا حسن بڑھادیتی ہے (امام دارمی نے اپنی سنن میں اور محمد بن نصر نے کتاب الصلوۃ میں حسنوا کے الفاظ سے اس کو روایت کیا ہے اور دونوں لفظوں سے امام حاکم نے المستدرک میں روایت کیا ہے اور ۱-۱

ساتھ پڑھنا بدرجہ اولیٰ مکروہ ہے۔ (12) بلکہ عوام کے سامنے وہی قراءت پڑھی جائے جو وہاں رائج ہے کیونکہ کہیں ایسا نہ ہو کہ وہ اپنی نادانگی کی وجہ سے انکار کر بیٹھیں۔

مسئلہ ۱۲: مسلمانوں میں یہ دستور ہے کہ قرآن مجید پڑھتے وقت اگر اٹھ کر کہیں جاتے ہیں تو بند کر دیتے ہیں کھانا

سب نے براہ بن عازب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالہ سے اس کو روایت کیا ہے۔ (ت)

(۱) سنن الداری باب ۳۳ باب التفتی بالقرآن حدیث ۳۵۰۳ نشر النہ ۵۵۰/۲ (۳۴۰/۲) (المسند رک للحاکم کتاب فضائل القرآن در انکیر بیروت ۱/۵۷۵) (۲) کنز العمال بحوالہ الداری ابن نصر حدیث ۲۷۵۷۵ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱/۶۰۵) پانچ حدیثوں صحیح رفیعی جلیل میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لیس منا من لم یتغن بالقرآن رواہ البخاری ۳ عن ابو ہریرۃ وابوداؤد عن ابی لبابۃ عبد المنذر وهو کاحمد وابن حبان عن سعد بن ابی وقاص والحاکم عنہ وعن عائشہ وعن ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہم۔

ہمارے طریقے پر نہیں جو قرآن خوش الحانی سے آواز بنا کر نہ پڑھے (امام بخاری نے اس کو حضرت ابو ہریرہ سے روایت کیا جبکہ امام ابو داؤد نے حضرت ابولبابہ عبد المنذر سے اسے روایت کیا۔ نیز اس نے امام احمد اور ابن حبان کی طرح حضرت سعد بن ابی وقاص سے بھی روایت کی ہے اور حاکم نے ان سے یعنی سعد بن ابی وقاص، سیدہ عائشہ صدیقہ اور حضرت ابن عباس (تینوں) سے روایت کی ہے اللہ تعالیٰ ان سب سے راضی ہو۔ (ت) (۳) صحیح البخاری کتاب التوحید ۲/۱۱۳۳ و سنن ابی داؤد باب استحباب الترتیل فی القرآن ۱/۲۰۷ (مسند احمد بن حنبل ۱/۱۷۲ و کنز العمال حدیث ۱۲۷۶۹/۱۲۷۶۹) (المسند رک للحاکم کتاب فضائل القرآن ۱/۵۶۹)

دسویں حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

ان هذا القرآن نزل بحزن وکابة فاذا قرأتموه فابکوا فان لم تبکوا فتبکوا وتغنوا به فمن لم یتغن به فلیس منا رواہ ابن ماجہ ابو محمد بن نصر فی الصلوۃ والبیہقی فی شعب الایمان عن سعد بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔

بیشک یہ قرآن غم و حزن کے ساتھ اترتا تو جب اسے پڑھو گریہ کرو اگر رونا نہ آئے بتکلیف روؤ اور قرآن کو خوش الحانی سے پڑھو جو اسے غم و خوش سے نہ پڑھے وہ ہمارے طریقے پر نہیں (ابن ماجہ اور محمد بن نصر نے کتاب الصلوۃ میں اور امام بیہقی نے شعب الایمان میں حضرت سعد ابن مالک کے حوالے سے اس کو روایت کیا ہے۔ (ت)

(۱) سنن ابن ماجہ اقلیۃ الصلوۃ باب فی حسن الصوت بالقرآن ایچ ایم سعید کمپنی کرچی ۹۶)

ر کے ساتھ اگر اس کی قراءت بلا قصد اوزان موسیقی سے کسی وزن کے موافق لکھے تو اصلاح حرج و ازہم نہیں حتیٰ کہ نماز میں بھی ایسی

تبدولت حسن و مستحسن ہے۔ (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۳۵۵، ۳۵۷، ۳۵۸، ۳۵۹، ۳۶۰، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۶۳، ۳۶۴، ۳۶۵، ۳۶۶، ۳۶۷، ۳۶۸، ۳۶۹، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵۴۰، ۵۴۱، ۵۴۲، ۵۴۳، ۵۴۴، ۵۴۵، ۵۴۶، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱۳۴۰، ۱۳۴۱، ۱۳۴۲، ۱۳۴۳، ۱۳۴۴، ۱۳۴۵، ۱۳۴۶، ۱۳۴۷، ۱۳۴۸، ۱۳۴۹، ۱۳۵۰، ۱۳۵۱، ۱۳۵۲، ۱۳۵۳، ۱۳۵۴، ۱۳۵۵، ۱۳۵۶، ۱۳۵۷، ۱۳۵۸، ۱۳۵۹، ۱۳۶۰، ۱۳۶۱، ۱۳۶۲، ۱۳۶۳، ۱۳۶۴، ۱۳۶۵، ۱۳۶۶، ۱۳۶۷، ۱۳۶۸، ۱۳۶۹، ۱۳۷۰، ۱۳۷۱، ۱۳۷۲، ۱۳۷۳، ۱۳۷۴، ۱۳۷۵، ۱۳۷۶، ۱۳۷۷، ۱۳۷۸، ۱۳۷۹، ۱۳۸۰، ۱۳۸۱، ۱۳۸۲، ۱۳۸۳، ۱۳۸۴، ۱۳۸۵، ۱۳۸۶، ۱۳۸۷، ۱۳۸۸، ۱۳۸۹، ۱۳۹۰، ۱۳۹۱، ۱۳۹۲، ۱۳۹۳، ۱۳۹۴، ۱۳۹۵، ۱۳۹۶، ۱۳۹۷، ۱۳۹۸، ۱۳۹۹، ۱۴۰۰، ۱۴۰۱، ۱۴۰۲، ۱۴۰۳، ۱۴۰۴، ۱۴۰۵، ۱۴۰۶، ۱۴۰۷، ۱۴۰۸، ۱۴۰۹، ۱۴۱۰، ۱۴۱۱، ۱۴۱۲، ۱۴۱۳، ۱۴۱۴، ۱۴۱۵، ۱۴۱۶، ۱۴۱۷، ۱۴۱۸، ۱۴۱۹، ۱۴۲۰، ۱۴۲۱، ۱۴۲۲، ۱۴۲۳، ۱۴۲۴، ۱۴۲۵، ۱۴۲۶، ۱۴۲۷، ۱۴۲۸، ۱۴۲۹، ۱۴۳۰، ۱۴۳۱، ۱۴۳۲، ۱۴۳۳، ۱۴۳۴، ۱۴۳۵، ۱۴۳۶، ۱۴۳۷، ۱۴۳۸، ۱۴۳۹، ۱۴۴۰، ۱۴۴۱، ۱۴۴۲، ۱۴۴۳، ۱۴۴۴، ۱۴۴۵، ۱۴۴۶، ۱۴۴۷، ۱۴۴۸، ۱۴۴۹، ۱۴۵۰، ۱۴۵۱، ۱۴۵۲، ۱۴۵۳، ۱۴۵۴، ۱۴۵۵، ۱۴۵۶، ۱۴۵۷، ۱۴۵۸، ۱۴۵۹، ۱۴۶۰، ۱۴۶۱، ۱۴۶۲، ۱۴۶۳، ۱۴۶۴، ۱۴۶۵، ۱۴۶۶، ۱۴۶۷، ۱۴۶۸، ۱۴۶۹، ۱۴۷۰، ۱۴۷۱، ۱۴۷۲، ۱۴۷۳، ۱۴۷۴، ۱۴۷۵، ۱۴۷۶، ۱۴۷۷، ۱۴۷۸، ۱۴۷۹، ۱۴۸۰، ۱۴۸۱، ۱۴۸۲، ۱۴۸۳، ۱۴۸۴، ۱۴۸۵، ۱۴۸۶، ۱۴۸۷، ۱۴۸۸، ۱۴۸۹، ۱۴۹۰، ۱۴۹۱، ۱۴۹۲، ۱۴۹۳، ۱۴۹۴، ۱۴۹۵، ۱۴۹۶، ۱۴۹۷، ۱۴۹۸، ۱۴۹۹، ۱۵۰۰، ۱۵۰۱، ۱۵۰۲، ۱۵۰۳، ۱۵۰۴، ۱۵۰۵، ۱۵۰۶، ۱۵۰۷، ۱۵۰۸، ۱۵۰۹، ۱۵۱۰، ۱۵۱۱، ۱۵۱۲، ۱۵۱۳، ۱۵۱۴، ۱۵۱۵، ۱۵۱۶، ۱۵۱۷، ۱۵۱۸، ۱۵۱۹، ۱۵۲۰، ۱۵۲۱، ۱۵۲۲، ۱۵۲۳، ۱۵۲۴، ۱۵۲۵، ۱۵۲۶، ۱۵۲۷، ۱۵۲۸، ۱۵۲۹، ۱۵۳۰، ۱۵۳۱، ۱۵۳۲، ۱۵۳۳، ۱۵۳۴، ۱۵۳۵، ۱۵۳۶، ۱۵۳۷، ۱۵۳۸، ۱۵۳۹، ۱۵۴۰، ۱۵۴۱، ۱۵۴۲، ۱۵۴۳، ۱۵۴۴، ۱۵۴۵، ۱۵۴۶، ۱۵۴۷، ۱۵۴۸، ۱۵۴۹، ۱۵۵۰، ۱۵۵۱، ۱۵۵۲، ۱۵۵۳، ۱۵۵۴، ۱۵۵۵، ۱۵۵۶، ۱۵۵۷، ۱۵۵۸، ۱۵۵۹، ۱۵۶۰، ۱۵۶۱، ۱۵۶۲، ۱۵۶۳، ۱۵۶۴، ۱۵۶۵، ۱۵۶۶، ۱۵۶۷، ۱۵۶۸، ۱۵۶۹، ۱۵۷۰، ۱۵۷۱، ۱۵۷۲، ۱

ہوا چھوڑ کر نہیں جاتے یہ ادب کی بات ہے۔ مگر بعض لوگوں میں یہ مشہور ہے کہ اگر کھلا ہوا چھوڑ دیا جائے گا تو شیطان پڑھے گا، اس کی اصل نہیں ممکن ہے کہ بچوں کو اس ادب کی طرف توجہ دلانے کے لیے ایسا اختراع کیا ہو۔

مسئلہ ۱۳: قرآن مجید کے آداب میں یہ بھی ہے کہ اس کی طرف پیٹھ نہ کی جائے، نہ پاؤں پھیلائے جائیں، نہ پاؤں کو اس سے اونچا کریں، نہ یہ کہ خود اونچی جگہ پر ہو اور قرآن مجید نیچے ہو۔

مسئلہ ۱۴: قرآن مجید کو جزدان و غلاف میں رکھنا ادب ہے۔ صحابہ و تابعین رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین کے زمانہ سے اس پر مسلمانوں کا عمل ہے۔

مسئلہ ۱۵: نئے قلم کا تراشہ ادھر ادھر پھینک سکتے ہیں مگر مستعمل قلم کا تراشہ احتیاط کی جگہ میں رکھا جائے پھینکا نہ جائے۔ اسی طرح مسجد کا گھاس کوڑا موضع احتیاط (یعنی احتیاط کی جگہ) میں ڈالا جائے ایسی جگہ نہ پھینکا جائے کہ احترام کے خلاف ہو۔ (13)

مسئلہ ۱۶: جس کاغذ پر اللہ تعالیٰ کا نام لکھا ہو، اس میں کوئی چیز رکھنا مکروہ ہے اور تھیلی پر اسمائے الہی لکھے ہوں اس میں روپیہ پیسہ رکھنا مکروہ نہیں۔ کھانے کے بعد انگلیوں کو کاغذ سے پونچھنا مکروہ ہے۔ (14)

(13) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس فی آداب السجد...، ج ۵، ص ۳۲۳۔

(14) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس فی آداب السجد...، ج ۵، ص ۳۲۲۔

اصلی حضرت، امام السنن، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:
رد المحتار میں ہے:

کرة تحریر ما بشیعی محترم یدخل فیہ الورق قبل انہ ورق الکتابۃ وقیل ورق الشجر وایہما کان فأنہ مکروہ اذ ورق الکتابۃ لہ احترام لکونہ آلة لکتابۃ العلم ولذا عللہ فی التاترخانیۃ بأن تعظیہ من ادب الدین واذا كانت العلة کونہ آلة للکتابۃ یؤخذ منها عدم الکراہۃ فیما لا یصلح لها اذا کان قالعا للنجاسة غیر متقوم کما قدمنا من جوازہ بالخرق البوالی ا۔ (۱) رد المحتار فصل الاستنجاء مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۷

کسی قابل احترام چیز کے ساتھ استنجاء کرنا مکروہ تحریمی ہے اور اس میں ورق بھی داخل ہے کہا گیا ہے کہ اس سے لکھنے کا کاغذ مراد ہے اور کسی نے کہا اس سے مراد درخت کا پتہ ہے، ان میں سے جو بھی ہو مکروہ ہے اھ۔ کتابت کا کاغذ اس لئے قابل عزت ہے کہ وہ کتابت علم کا آلہ ہے اسی لئے تاترخانیہ میں اس کی علت یہ بیان کی ہے کہ اس کی تعظیم آداب دین سے ہے اور جب اس کی علت یہ ہو کہ وہ آلہ کتابت ہے تو اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ اگر کاغذ تحریر کی صلاحیت نہ رکھتا ہو اور نجاست کو زائل کرنے والا ہو اور قیمتی بھی نہ ہو تو اسکے استعمال میں کوئی کرہت نہیں جیسا کہ اس سے پہلے ہم نے پرانے کپڑے کے ٹکڑوں سے استنجاء کا جواز بیان کیا ہے۔

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۴، ص ۶۰۳ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

آداب مسجد (۱) و قبلہ

مسجد کو چومنے اور گچ سے منقش کرنا جائز ہے، سونے چاندی کے پانی سے نقش و نگار کرنا بھی جائز ہے جبکہ کوئی شخص اپنے مال سے ایسا کرے مال وقف سے ایسا نہیں کر سکتا، بلکہ متولی مسجد نے اگر مال وقف سے سونے چاندی کا نقش کرایا تو اسے تاوان دینا ہوگا، ہاں اگر بانی مسجد نے نقش کرایا تھا جو خراب ہو گیا تو متولی مسجد مال مسجد سے بھی نقش و نگار کر سکتا ہے۔ بعض مشائخ دیوار قبلہ میں نقش و نگار کرنے کو مکروہ بتاتے ہیں، کہ نمازی کا دل ادھر متوجہ ہوگا۔ (2)

مسئلہ ۱: مسجد کی دیواروں میں گچ اور پلاستر کرنا جائز ہے کہ اس کی وجہ سے عمارت محفوظ رہے گی۔ مسجد میں پلاستر کرانے یا قلعی (یعنی سفیدی) یا کھمگل (یعنی مٹی کی لپائی) کرانے میں ناپاک پانی استعمال نہ کیا جائے۔ (3)

مسئلہ ۲: مسجد میں درس دینا جائز ہے اگرچہ بوقت درس مسجد کی جانمازوں اور چٹائیوں کو استعمال کرتا ہو۔ مسجد میں کھانا کھانا اور سونا معتکف کو جائز ہے غیر معتکف کے لیے مکروہ ہے، اگر کوئی شخص مسجد میں کھانا یا سونا چاہتا ہو تو وہ پہ

(1) مسجد کے متعلق مسائل حصہ سوم میں مفصل ذکر کیے گئے ہیں، کچھ باتیں یہاں ذکر کی جاتی ہیں۔ ۱۲ منہ

(2) الدر المختار و رد المحتار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۳۶۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:
خلصہ تنویر البصار میں ہے:

لا بأس بنقشه خلا محرابہ بمحص وماء ذهب بماله لا من مال الوقف وضمن متولیه لو فعل ۳۔
جس اور سونے کے پانی سے مسجد میں نقش و نگار محراب کو چھوڑ کر کرنا جائز ہے بشرطیکہ کوئی ذاتی مال سے کرے، وقف کے مال سے جائز نہیں، اگر متولی نے ایسا کیا تو ضامن ہوگا۔ (۳۔ رد المحتار کتاب الصلوٰۃ باب ما یفسد الصلوٰۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۹۳)
بحر الرائق پھر رد المحتار میں ہے:

اما من مال الوقف فلا شک انه لا یجوز للمتولی فعله مطلقا لعدم الفائدة فیہ ۴۔

(۴۔ رد المحتار کتاب الصلوٰۃ باب ما یفسد الصلوٰۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۴۴۳)

لیکن وقف ۵۔ سے ایسا کرنا بلاشبہ متولی کو مطلقاً جائز نہیں کیونکہ اس میں وقف کا کوئی فائدہ نہیں ہے

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۱۶، ص ۲۳۳ رضانی ڈسٹریکشن، لاہور)

(3) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس فی آداب المسجد... الخ، ج ۵، ص ۳۱۹۔

نیت اعتکاف مسجد میں داخل ہو اور ذکر کرے یا نماز پڑھے اس کے بعد وہ کام کر سکتا ہے۔ (4)

ہندوستان میں تقریباً ہر جگہ یہ رواج ہے کہ ماہ رمضان میں عام طور پر مسجد میں روزہ افطار کرتے ہیں، اگر خارج مسجد کوئی جگہ ایسی ہو کہ وہاں افطار کریں جب تو مسجد میں افطار نہ کریں۔ ورنہ داخل ہوتے وقت اعتکاف کی نیت کر لیا کریں اب افطار کرنے میں حرج نہیں، مگر اس بات کا اب بھی لحاظ کرنا ہوگا کہ مسجد کا فرش یا چٹائیاں آلودہ نہ کریں۔

مسئلہ ۳: مسجد کو راستہ نہ بنایا جائے، مثلاً مسجد کے دو دروازے ہیں اور اس کو کہیں جانا ہے آسانی اس میں ہے کہ ایک دروازہ سے داخل ہو کر دوسرے سے نکل جائے۔ ایسا نہ کرے اگر کوئی شخص اس نیت سے گیا کہ اس دروازے سے داخل ہو کر دوسرے سے نکل جائے گا، اندر جانے کے بعد اپنے اس فعل پر نادم ہو تو جس دروازے سے نکلنے کا ارادہ کیا تھا اس کے سوا دوسرے دروازے سے نکلے اور بعض علماء نے فرمایا ہے کہ یہ شخص پہلے نماز پڑھے پھر نکلے اور بعض نے فرمایا کہ اگر بے وضو ہے تو جس دروازہ سے گیا ہے، اسی سے نکلے مسجد میں جوتے پہن کر جانا مکروہ ہے۔ (5)

مسئلہ ۴: جامع مسجد میں تعویذ بیچنا، ناجائز ہے جیسا کہ تعویذ والے کیا کرتے ہیں کہ اس تعویذ کا یہ ہدیہ ہے اتنا دو اور تعویذ لے جاؤ۔ (6)

(4) المرجع السابق، ص ۳۲۰، ۳۲۱۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

مسجد میں سونا۔ کھانا بحالت اعتکاف جائز ہے، اگر جماعت محکم ہو تو مل کر کھا سکتے ہیں، بہر حال یہ مازم ہے کہ کوئی چیز، شور یا شیر وغیرہ کی چیخٹ مسجد میں نہ گرے، اور سوائے حالت اعتکاف مسجد میں سونا یا کھانا دونوں مکروہ ہیں خاص کر ایک جماعت کے ساتھ کہ مکروہ فعل کا اور لوگوں کو بھی اس میں مرتکب بناتا ہے۔

علگیری میں ہے:

یکرة النوم والاکل فیہ الغیر المعتقد کف۔

(۱) فتاویٰ ہندیہ کتاب الکرہیۃ الباب الخامس فی آداب المسجد مطبوعہ نورانی کتب خانہ پشاور ۵/ ۳۲۱

مسجد میں سونا، در کھانا غیر معتکف کے لئے مکروہ ہے (ت) (فتاویٰ رضویہ، جلد ۸، ص ۹۷ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(5) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکرہیۃ، الباب الخامس فی آداب المسجد... إلخ، ج ۵، ص ۳۲۱۔

(6) اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

عوض مالی پر تعویذ دینا بیع ہے اور مسجد میں بیع و شرا ناجائز ہے، اور حجرہ فائے مسجد ہے اور فائے مسجد کے لئے حکم مسجد،

علگیری میں ہے:

یبیع التعویذ فی المسجد الجامع ویکتب فی التعویذ التوراة والانجیل والفرقان ویأخذ عنہا المال ادفع ←

مسئلہ ۵: مسجد میں عقد نکاح کرنا مستحب ہے۔ (7) مگر یہ ضرور ہے کہ بوقت نکاح شور و غل اور ایسی باتیں جو احترام مسجد کے خلاف ہیں نہ ہونے پائیں، لہذا اگر معلوم ہو کہ مسجد کے آداب کا لحاظ نہ رہے گا تو مسجد میں نکاح نہ پڑھوائیں۔

مسئلہ ۶: جس کے بدن یا کپڑے پر نجاست لگی ہو وہ مسجد میں نہ جائے۔ (8)
مسئلہ ۷: مسجد میں ان آداب کا لحاظ رکھے۔

الی الہدیۃ لا یحل لہ ذلک کذا فی لکبزی ۱۔

(۱۔ فتاویٰ ہندیہ کتاب الکراہیۃ الباب الخامس فی آداب المسجد مطبوعہ نورانی کتب خانہ پشاور ۵/ ۳۲۱)
ایک آدمی مسجد جامع میں تعویذ بیچتا ہے، اس تعویذ میں تورات، انجیل اور قرآن لکھتا ہے اور اس پر رقم لیتا ہے، اور یہ کہتا ہے کہ اس کا ہدیہ مجھے دے تو یہ جائز نہیں۔ الکبزی میں اسی طرح ہے۔ (فتاویٰ رضویہ، جلد ۸، ص ۹۶ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)
(7) اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

اخرج الترمذی عن ام المؤمنین الصدیقة رضی اللہ تعالیٰ عنہا قالت قال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

امام ترمذی نے سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے تخریج فرمائی کہ آپ نے فرمایا کہ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: اعلنوا هذا النکاح واجعلوه فی المساجد واضربوا علیہ بالدخوف ۱۔ وروی احمد بسند صحیح وابن حبان فی صحیحہ والطبرانی فی الکبیر وابو نعیم فی الحلیۃ والحاکم فی المستدرک عن عبد اللہ بن الزبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہما عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم قال اعلنوا النکاح ۲۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۱۔ جامع الترمذی ابواب النکاح باب ما جاء فی اعلان النکاح اثمن کہنی دہلی ۱/ ۱۲۹) (۲۔ المستدرک للحاکم کتاب النکاح الامر باعلان النکاح دار الفکر بیروت ۲/ ۱۸۳) (مسند احمد بن حنبل عن عبد اللہ بن الزبیر المکتب الاسلامی بیروت ۴/ ۵) (حلیۃ الدیاء ترجمہ ۲۲۸ عبد اللہ بن دہب دار الکتاب العربی بیروت ۸/ ۳۲۸) (مجمع الزوائد بحوالہ الطبرانی فی الکبیر کتاب النکاح باب اعلان النکاح دار الکتاب بیروت ۳/ ۲۸۹) (موارد النظمین حدیث ۱۱۲۸۵ / ۳۱۳ وکنز العمال حدیث ۵۳۳ / ۱۶۴۳ / ۲۹۱)

لوگو! نکاح کا اعلان کیا کرو (یعنی اس کی تشہیر کیا کرو) اور مسجدوں میں نکاح کیا کرو اور اس کی تشہیر کے لئے دف بجایا کرو۔ امام احمد نے سند صحیح سے ابن حبان نے اپنی صحیح میں طبرانی نے الکبیر میں اور ابو نعیم نے الحلیۃ میں اور حاکم نے المستدرک میں حضرت عبد اللہ بن زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالہ سے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت فرمائی کہ آپ نے ارشاد فرمایا کہ نکاح کا اعلان کیا کرو، اللہ تعالیٰ تو بخوبی واقف اور آگاہ ہے۔ (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۲۹۰ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

- (1) جب مسجد میں داخل ہو تو سلام کرے بشرطیکہ جو لوگ وہاں موجود ہیں، ذکر و درس میں مشغول نہ ہوں اور اگر وہاں کوئی نہ ہو یا جو لوگ ہیں وہ مشغول ہیں تو یوں کہے۔ اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا مِنْ رَبِّنَا وَ عَلٰی عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِیْنَ۔
- (2) وقت مکروہ نہ ہو تو دو رکعت تحیۃ المسجد ادا کرے۔
- (3) خرید و فروخت نہ کرے۔
- (4) نگلی تلوار مسجد میں نہ لے جائے۔
- (5) گئی ہوئی چیز مسجد میں نہ ڈھونڈے۔
- (6) ذکر کے سوا آواز بلند نہ کرے۔
- (7) دُنیا کی باتیں نہ کرے۔
- (8) لوگوں کی گردنیں نہ پھلانگے۔
- (9) جگہ کے متعلق کسی سے جھگڑا نہ کرے۔
- (10) اس طرح نہ بیٹھے کہ دوسروں کے لیے جگہ میں تنگی ہو۔
- (11) نمازی کے آگے سے نہ گزرے۔
- (12) مسجد میں تھوک کھکانہ ڈالے۔
- (13) انگلیاں نہ چٹکائے۔
- (14) نجاست اور بچوں اور پاگلوں سے مسجد کو بچائے۔
- (15) ذکر الہی کی کثرت کرے۔ (9)

مسئلہ ۸: مسجد میں جگہ تنگ ہوگئی تو جو نماز پڑھنا چاہتا ہے وہ بیٹھے ہوئے کو کہہ سکتا ہے کہ سرک جاؤ نماز پڑھنے کی جگہ دے دو۔ اگرچہ وہ شخص ذکر و درس یا تلاوت قرآن میں مشغول ہو یا محتکف ہو۔ (10)

مسئلہ ۹: مسجد کے سائل کو دینا منع ہے، مسجد میں دنیا کی باتیں کرنی مکروہ ہیں۔ مسجد میں کلام کرنا نیکیوں کو اس طرح کھاتا ہے جس طرح آگ لکڑی کو کھاتی ہے، یہ جائز کلام کے متعلق ہے ناجائز کلام کے گناہ کا کیا پوچھنا۔ (11)

(9) الفتاویٰ المہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس فی آداب المسجد۔۔۔، ج ۵، ص ۳۲۱۔

(10) المرجع السابق، ص ۳۲۲۔

(11) الدر المنثور، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۸۸، ۶۹۰۔

مسئلہ ۱۰: نماز پڑھنے کے بعد مصلے کو لپیٹ کر رکھ دیتے ہیں، یہ اچھی بات ہے کہ اس میں زیادہ احتیاط ہے، مگر

جو مسجد میں غل مچا دیتے ہیں نمازیوں کی نماز میں خلل ڈالتے ہیں لوگوں کی گردنیں پھلانگتے ہوئے منوں میں پھرتے ہیں مطلقاً حرام ہے اپنے لئے خواہ دوسرے کے لئے، حدیث میں ہے:

جنبوا مساجدکم صبیانکم ومجانینکم ورفع اصواتکم رواہ ابن ماجہ ۲ عن واثلہ بن الاسقع وعبدالرزاق عن معاذ بن جبل رضی اللہ تعالیٰ عنہما۔

مسجدوں کو بچوں اور پاگلوں اور بلند آواز سے بچاؤ (محدث ابن ماجہ نے حضرت واثلہ بن اسقع سے اور امام عبدالرزاق نے حضرت معاذ بن جبل سے اس کو روایت کیا، اللہ تعالیٰ ان دونوں سے راضی ہو۔ ت) (۲۔ المصنف لعبدالرزاق باب انشاء ضلالتہ فی المسجد حدیث ۱۷۲۶ المکتب الاسلامی بیروت ۱/ ۴۴۲) (سنن ابن ماجہ کتاب المساجد باب ما یکرہ فی المساجد ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۵۵) حدیث میں ہے:

من تخطی رقاب الناس یوم الجمعة اتخذ جسرا الی جہنم رواہ احمد والترمذی ۳ وابن ماجہ عن معاذ بن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔

جس نے جمعہ کے دن لوگوں کی گردنیں پھلانگیں اس نے جہنم تک پہنچنے کا اپنے لئے پل بنالیا (امام احمد اور جامع ترمذی اور ابن ماجہ نے حضرت معاذ بن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اس کو روایت کیا۔ ت) (۳۔ جامع الترمذی کتاب الجمعة باب کراہیۃ التخطی یوم الجمعة امین کمپنی دہلی ۱/ ۶۸) (سنن ابن ماجہ باب ماجاء فی النبی عن تخطی الناس یوم الجمعة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۷۹) اور اگر یہ باتیں نہ ہوں جب بھی اپنے لئے مسجد میں بھیک مانگنا منع ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

من سمع رجلا ینشد فی المسجد ضالۃ فلیقل لا ردھا اللہ الیک فان المساجد لم تبین لہذا رواہ احمد ومسلم اب وابن ماجہ عن ابی ہریرۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔

جو کسی مسجد میں اپنی گئی چیز دریافت کرنے سے اس سے کہے اللہ تجھے وہ چیز نہ ملائے مسجدیں اس لئے نہیں (امام احمد اور مسلم اور ابن ماجہ نے حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اسے روایت کیا۔ ت)

(۱۔ صحیح مسلم کتاب المساجد باب النبی عن نعد الضلالتہ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۱۰) (سنن ابن ماجہ باب النبی عن انشاء لضوال فی المسجد ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۵۶) (مسند احمد بن حنبل عن ابی ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۲/ ۳۴۹)

جب اتنی بات منع ہے تو بھیک مانگنی خصوصاً اکثر بلا ضرورت بطور پیشہ کے خود ہی حرام ہے یہ کیونکر جائز ہو سکتی ہے ولہذا ائمہ دین نے فرمایا جو مسجد کے سائل کو ایک پیسہ دے وہ ستر ۷۰ پیسے راہ خدا میں اور دے کہ اس پیسہ کے گناہ کا کفارہ ہوں اور دوسرے محتاج کے بے امداد کو کہنا یا کسی دینی کام کے لئے چندہ کرنا جس میں نہ غل شور ہو نہ گردن پھلانگنا نہ کسی کی نماز میں خلل یہ بلا شبہ جائز بلکہ سنت سے ثابت ہے۔

بعض لوگ جائز کا صرف کوٹا لوٹ دیتے ہیں اور یہ کہتے ہیں کہ ایسا نہ کرنے میں اس پر شیطان نماز پڑھے گا یہ ہے اصل ہے۔

مسئلہ ۱۱: مسجد کی چھت پر چڑھنا مکروہ ہے، گرمی کی وجہ سے مسجد کی چھت پر جماعت کرنا مکروہ ہے، ہاں اگر مسجد میں تنگی ہو نمازیوں کی کثرت ہو تو چھت پر نماز پڑھ سکتے ہیں (12)، جیسا کہ بمبئی اور کلکتہ میں مسجد کی تنگی کی وجہ سے چھت پر بھی جماعت ہوتی ہے۔

مسئلہ ۱۲: طالب علم نے مسجد کی چٹائی کا تنکا نشانی کے لیے کتاب میں رکھ لیا یہ معاف ہے۔ (13) اس کا یہ مطلب نہیں کہ اچھی چٹائی سے تنکا توڑ کر نشانی بنائے، کہ اس طرح بار بار کرنے سے چٹائی خراب ہو جائے گی۔

مسئلہ ۱۳: قبلہ کی جانب ہدف یعنی نشانہ بنا کر اس پر تیر مارنا یا اس پر گولی مارنا مکروہ ہے، یعنی قبلہ کی طرف چاند ماری کرنا مکروہ ہے۔ (14)



اور بے سوال کسی محتاج کو دینا بہت خوب اور مولیٰ علیٰ کرم اللہ تعالیٰ وجہہ سے ثابت ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۴۰۰، ۴۰۲ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(12) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب النکاح، الباب الخامس فی آداب المسجد... إلخ، ج ۵، ص ۳۲۲۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

مکروہ ہے کہ مسجد کی بے ادبی ہے، ہاں اگر مسجد جماعت پر تنگی کرے نیچے جگہ نہ رہے تو باقی ماندہ لوگ چھت پر صف بندی کر لیں یہ بلا کر اہت جائز ہے کہ اس میں ضرورت ہے بشرطیکہ حال امام مشتبہ نہ ہو۔

فی العالمگیریۃ الصعود علی کل مسجد مکروہ ولہذا اذا اشتد الحریکہ ان یصلوا بالجماعة فوقہ الا اذا ضاق المسجد فلیکرمہ الصعود علی سطحہ لضرورة کذا فی الغرائب واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۱) فتاویٰ ہندیہ الباب الخامس فی آداب المسجد مطبوعہ نور فی کتب خانہ پشاور ۲/۳۲۲)

ہمگیری میں ہے ہر مسجد کے اوپر چڑھنا مکروہ ہے، یہی وجہ ہے کہ شدید گرمی کے وقت اس کے اوپر جماعت کرنا مکروہ ہے البتہ اس

صورت میں کہ مسجد نمازیوں پر تنگ ہو جائے تو ضرورت کی وجہ سے مسجد کی چھت پر چڑھنا مکروہ نہیں۔ جیسا کہ غرائب میں ہے۔ واللہ تعالیٰ

اعلم (ت) (فتاویٰ رضویہ، جلد ۸، ص ۵۷ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(13) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب النکاح، الباب الخامس فی آداب المسجد... إلخ، ج ۵، ص ۳۲۲۔

(14) رد المحتار، کتاب المحظر والایات، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۶۶۔

عیادت و علاج کا بیان

عیادت کے فضائل کے متعلق چند احادیث حصہ چہارم کتاب الجنائز میں ذکر کی گئی ہیں۔ علاج کے متعلق کچھ حدیثیں یہاں لکھی جاتی ہیں۔

احادیث

حدیث ۱: صحیح بخاری میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اللہ تعالیٰ نے کوئی بیماری نہیں اتاری مگر اس کے لیے شفا بھی اتاری۔ (1)

حدیث ۲: صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ہر بیماری کے لیے دوا ہے جب بیماری کو دوا پہنچ جائے گی، اللہ (عزوجل) کے حکم سے اچھا ہو جائے گا۔ (2)

(1) صحیح بخاری، کتاب الطب، باب ما أنزل اللہ داء الا نزل له شفاء، الحدیث: ۵۶۷۸، ج ۴، ص ۱۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ موت اور بڑھاپا ان کے سواء تمام امراض کی دوائیں ہیں۔ جب اللہ کسی کو شفاء دینا چاہتا ہے تو طبیب کا دماغ اس کی دوا تک پہنچ جاتا ہے ورنہ طبیب کا دماغ الٹا چلتا ہے علاج غلط کرتا ہے۔ مصرع! چوں قضا آید طبیب آبلہ شود۔

(مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۵۵)

(2) صحیح مسلم، کتاب السلام، باب نکل داء دواء... الخ، الحدیث: ۶۹۰- (۲۲۰۴)، ص ۱۲۱۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی دوا بیماری دور کرنے میں مؤثر تو ہے مگر مستقل مؤثر نہیں بلکہ ارادۃ الہی کے تابع ہے وہ چاہے تو دوا کو مؤثر بنا دے۔ یہاں مرقات نے فرمایا کہ جب اللہ تعالیٰ کسی بیمار کی شفا نہیں چاہتا تو دوا اور مرض کے درمیان ایک فرشتے کے ذریعے آڑ کر دیتا ہے جس کی وجہ سے دوا مرض پر واقع نہیں ہوتی، جب شفاء کا ارادہ ہوتا ہے تو وہ پردہ ہٹا دیا جاتا ہے جس سے دوا مرض پر واقع ہوتی ہے اور شفاء ہو جاتی ہے۔ (مرقات) ہم نے بہت بیماروں کو دیکھا کہ دوا ان کے حلق سے نیچے نہیں اترتی بعد موت ان کے منہ سے دوا نکلتی ہے یہ ہے وہ آڑ۔

۲۔ احمد نے بروایت حضرت علی مرفوعاً روایت کیا کہ ہر مرض کی دوا ہے اور گناہ کی دوا توبہ ہے۔ خیال ہے کہ دفع مرض کے لیے دوا کرنا مستحب ہے مگر دفع بھوک کے لیے کھانا اور دفع پیاس کے لیے پانی پینا فرض ہے لہذا اگر کوئی بیمار بغیر دوا کے مر جائے تو گنہگار نہیں لیکن اگر کوئی بھوکا پیاسا بغیر کھائے پئے مر جائے، مرن برت یا بھوک ہڑتال کر کے مرے تو حرام موت مرے گا کیونکہ دوا سے شفا میں ←

حدیث ۳: امام احمد و ترمذی و ابوداؤد نے اسامہ بن شریک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ لوگوں نے عرض کی یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) ہم دوا کریں؟ فرمایا: ہاں اے اللہ (عزوجل) کے بندو! دوا کرو، کیونکہ اللہ (عزوجل) نے بیماری نہیں رکھی مگر اس کے لیے شفا بھی رکھی ہے، سوا ایک بیماری کے وہ بڑھاپا ہے۔ (3)

حدیث ۴: ابوداؤد نے ابوالدرداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: بیماری اور دوا دونوں کو اللہ تعالیٰ نے اتارا، اس نے ہر بیماری کے لیے دوا مقرر کی، پس تم دوا کرو مگر حرام سے دوا مت کرو۔ (4)

یقین نہیں مگر کھانے سے دفع بھوک میں اور پانی سے دفع پیاس میں یقین یا گمان اغلب ہے دوا کرنا توکل کے خلاف نہیں بلکہ توکل کی قسم ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۵۶)

(3) سنن ابی داؤد، کتاب الطب، باب الرجل یسد اوی، الحدیث: ۳۸۵۵، ج ۴، ص ۵۔
 و سنن الترمذی، کتاب الطب، باب ما جاء فی الدوا... الخ، الحدیث: ۲۰۴۵، ج ۴، ص ۴۔
حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی دوا علاج توکل کے خلاف نہیں جیسے بھوک کا علاج غذا ہے، پیاس کا علاج پانی ہے اگر دوا میں بیماریوں کا علاج ہوں تو کیا بعید ہے اسی لیے عباد اللہ فرما کر دوا کرنے کا حکم دیا تاکہ معلوم ہو کہ دوا عبودیت کے خلاف نہیں۔ بڑھاپے کو بیماری اس لیے فرمایا گیا کہ بڑھاپے کے بعد موت ہے جیسے بیماری کے بعد موت ہوتی ہے، نیز بڑھاپے میں بہت بیماریاں دہالیتی ہیں۔

لطیفہ: ایک بوڑھے آدمی نے کسی طبیب سے کہا کہ میری نگاہ موٹی ہو گئی ہے طبیب نے کہا بڑھاپے کی وجہ سے، وہ ہوا ادھی سننے لگا ہوں جواب ملا بڑھاپے کی وجہ سے، بولا کمر فیز می ہو گئی ہے کہا بڑھاپے کی وجہ سے، آخر میں بوڑھا بولا کہ جاہل طبیب تجھے بڑھاپے کے سوا کچھ نہیں آتا جواب ملا یہ سب موقعہ طعمہ بھی بڑھاپے کی وجہ سے ہے۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۷۳)

(4) سنن ابی داؤد، کتاب الطب، باب فی الادویۃ المکرہۃ، الحدیث: ۳۸۷۴، ج ۴، ص ۱۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی ہر بیماری کے لیے حلال و جائز دوا پیدا فرمائی ہے جیسا کہ آئندہ عبارت سے معلوم ہو رہا ہے۔

۲۔ یعنی شراب پیشاب وغیرہ حرام چیزوں سے دوا نہ کرو، طبرانی کی روایت میں ہے کہ اللہ تعالیٰ نے حرام میں شفا نہیں رکھی، مسلم شریف میں ہے کہ حضور نے شراب کے متعلق فرمایا کہ وہ دوا نہیں نری داء ہے (بیماری) امام سبکی فرماتے ہیں کہ آیت کریمہ "فَیْہِہَا رِشْمٌ کَبِیْرٌ" وَمَنْفَعٌ لِلنَّاسِ "منسوخ ہے۔ جب جو شراب حرام کر دیئے گئے تو ان کے نفع سلب ہو گئے۔ (مرقات) فقہاء فرماتے ہیں کہ اگر کسی کے متعلق حاذق طبیبوں کا، اتفاق ہو جاوے کہ اس کی دوا شراب کے سوا اور کوئی نہیں تو وہ اس مریض کے لیے بقدر ضرورت حرام نہیں رہتی حلال ہو جاتی ہے، پھر بھی شفا حرام میں نہ ہوئی۔ (اشعہ) اس کی دلیل حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا عرینہ والوں سے فرمانا ہے کہ تم اونٹوں کا

حدیث ۵: امام احمد و ابو داؤد و ترمذی و ابن ماجہ نے ابو ہزیرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے دواء خبیث سے ممانعت فرمائی۔ (5)

حدیث ۶: ترمذی و ابن ماجہ نے عقبہ بن عامر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: مریضوں کو کھانے پر مجبور نہ کرو، کہ ان کو اللہ تعالیٰ کھلاتا پلاتا ہے۔ (6)

حدیث ۷: ابن ماجہ نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب مریض کھانے کی خواہش کرے تو اسے کھلا دو۔ (7) یہ حکم اس وقت ہے کہ کھانے کا اشتہائے صادق ہو۔

دودھ اور پیشاب بد وہاں وحی سے پیشاب میں شفا معلوم ہوئی، یہاں اجماع اطباء سے شفا معلوم ہوئی مگر اولاً تو حاذق طبیب کا ملنا مشکل ہے پھر حاذقوں کا اجماع بہت ہی مشکل، میں نے بعض حاذق طبیبوں سے سنا کہ شہد بہترین بدل ہے شراب کا اگر کسی مرض کے لیے اطباء شراب بتاویں اس میں شہد استعمال کرو وہ ہی فائدہ ہوگا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۷۹)

(5) المرجع السابق، الحدیث: ۳۸۷۰، ج ۳، ص ۹.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ خبیث سے مراد حرام یا نجس ہے، بعض شارحین نے فرمایا کہ اس سے مراد بد مزہ بد بودار دوائیں ہیں۔ (مرقات) یعنی مریض کو نہایت بد مزہ بد بودار دوائیں نہ کھلاؤ کہ اس سے زیادہ بیمار ہونے کا اندیشہ ہے خصوصاً نازک طبع لوگوں کے لیے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۷۸)

(6) سنن اترمذی، کتاب الطب، باب ماجاء لا تکرھوا مرضاً کم علی الطعام والشراب، الحدیث: ۲۰۴۷، ج ۳، ص ۵.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ بعض بیمار کھانے پینے سے نفرت کرتے ہیں بیمار داروں کو چاہیے کہ انہیں اس پر مجبور نہ کریں اس نہ کھانے میں ان کے لیے بہتری ہوتی ہے۔

۲۔ یعنی رب تعالیٰ انہیں صبر بھی دیتا ہے اور قدرتی قوت و طاقت بھی بخشتا ہے، بدن کی قوت ارادہ الہی سے ہے نہ کہ محض کھانے سے۔ خیال رہے کہ یہ ہی الفاظ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے روزہ وصال کے لیے بھی ارشاد فرمائے ہیں وہاں کچھ مطلب ہی اور ہے۔ (مرقات) وہاں حق تعالیٰ حضور کو غیبی روزی عطا فرماتا ہے، بعض صوفیاء کرام نے خواب میں کوئی چیز کھائی بیدار ہونے پر شکم سیر غصے اور کھانے کی خوشبو منہ سے ہاتھوں سے آتی تھی اسی لیے حضور نے اپنے لیے فرمایا ابیت عند ربی یطعمنی و یسقینی وہاں ابیت عند ربی ہے یہاں یہ عبارت نہیں ہے اس میں یہ ہی فرق ہے لہذا حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو اور آپ کے اس قرب خصوصی کو بیمار پر قیاس کرنا سخت غلطی ہے کہیں

یہ مریض کہیں آقائے دو جہان۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۷۳)

(7) سنن ابن ماجہ، کتاب الطب، باب المریض یشتقی الشئ، الحدیث: ۳۴۳۰، ج ۳، ص ۸۹.

(یعنی کھانے کی سچی خواہش ہو)

حدیث ۸: ابو داؤد نے اُم منذر بنت قیس رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہتی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مع حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے میرے یہاں تشریف لائے۔ حضرت علی (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) کو نقاہت تھی یعنی بیماری سے ابھی اچھے ہوئے تھے، مکان میں کھجور کے خوشے لٹک رہے تھے، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے ان میں سے کھجوریں تناول فرمائیں۔ حضرت علی نے کھانا چاہا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے ان کو منع کیا اور فرمایا کہ تم نقیہ ہو۔ کہتی ہیں کہ جو اور چقدر پکا کر حاضر لائی، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے حضرت علی سے فرمایا: اس میں سے لو کہ یہ تمہارے لیے نافع ہے۔ (8)

(8) سنن ابی داؤد، کتاب الطب، باب فی الحمیۃ، الحدیث: ۳۸۵۶، ج ۳، ص ۵۰.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کا نام بیل بنت قیس ہے، انصار یہ عدویہ ہیں، کنیت ام المندر، صحابیہ ہیں، قدیم الاسلام ہیں، چنانچہ آپ نے دونوں قبلوں کی طرف نماز پڑھی ہے۔

۲۔ دوالی جمع ہے دالیہ کی، دالیہ کچی کھجوروں کے خوشوں کو کہتے ہیں۔ اس زمانہ میں باغ والے لوگ اپنے باغوں اور گھروں میں کھجوروں کے خوشے لٹکا دیتے تھے تاکہ جو بیل ملاقاتی آئے پہلے ان میں سے کھائے گویا یہ بھی خاطر تواضع کا ایک طریقہ تھا۔

۳۔ ظاہر یہ ہے کہ دونوں حضرات نے کھڑے کھڑے کھائے مگر یہ کھڑے کھڑے کھانا فیشن کے طور پر نہ تھا بلکہ اس خوشے سے توڑ توڑ کر کھانا کھڑے ہو کر ہی ممکن تھا اور ہو سکتا ہے کہ بیٹھ کر کھاتے ہوں مگر بعض روایات میں ہے کہ اس کے بعد جناب علی رضی اللہ عنہ بیٹھ گئے۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ کھانا کھڑے ہو کر تھا، مرقاۃ نے اس کو ترجیح دی۔

۴۔ یعنی تم نہ کھاؤ کہ کھانے سے ہاتھ کھینچ لو وجہ آگے آرہی ہے۔

۵۔ ناقہ بنا ہے نقاحت سے۔ نقاحت وہ کمزوری ہے جو بیماری سے اٹھنے کے بعد بیمار میں رہتی ہے، غالباً آپ بیمار رہ چکے ہوں گے۔

۶۔ یعنی میں ان حضرات کے لیے چقدر اور جو کا لپٹا (سیرا) تیار کیا۔ لہم کا مرجع حضور صلی اللہ علیہ وسلم میں ضمیر کا جمع، ناقہ تعظیماً ہے یا، اس کا مرجع حضرت علی رضی اللہ عنہ اور نبی صلی اللہ علیہ وسلم ہیں۔ عرب والے کبھی دو کو جمع بول دیتے ہیں، بعض شارحین نے فرمایا کہ کچھ دور صی بہ بھی حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ تھے۔ واللہ اعلم!

۷۔ یہاں اوفق بمعنی موافق ہے، مقابل ضرر کا، یعنی تمہارے لیے کھجوریں مضر ہیں، یہ لپٹا (سیرا) موافق و مفید ہے کیونکہ جو بہت ہی رود ہضم ہے۔ اطباء بیماروں کو آتش جو بتاتے ہیں، چقدر بھی ہلکی غذا ہے اور معتدل ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم حکیم جسمانی بھی ہیں۔ دوائیں، پرہیز، مضر و مفید غذا کی سب کچھ جانتے ہیں۔ یہ بھی معلوم ہوا کہ بیمار بلکہ بیماری سے اٹھنے والے کمزور کو پرہیز لازم ہے۔ اطباء کہتے ہیں کہ دوا سے زیادہ پرہیز ضروری ہے دوا بغیر پرہیز ایسی ہے جیسے نماز بغیر وضو۔

اس حدیث سے معلوم ہوا کہ مریض کو پرہیز کرنا چاہیے جو چیزیں اس کے لیے مضر (نقصان دہ) ہیں، ان سے بچنا چاہیے۔

حدیث ۹: امام احمد و ترمذی و ابو داؤد نے عمران بن حصین اور ابن ماجہ نے بریدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جھاڑ پھونک نہیں مگر نظر بد اور زہریلے جانور کے کاٹنے سے۔ (9) یعنی ان دونوں میں زیادہ مفید ہے۔

حدیث ۱۰: امام احمد و ترمذی و ابن ماجہ نے اسما بنت عمیس رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، انھوں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) اولادِ جعفر کو جلد نظر لگ جایا کرتی ہے، کیا جھاڑ پھونک کراؤں؟ فرمایا: ہاں کیونکہ اگر کوئی چیز تقدیر سے سبقت لے جانے والی ہوتی تو نظر بد سبقت لے جاتی۔ (10)

(9) سنن الترمذی، کتاب الطب، باب ماجاء فی الرخصة فی ذلک، الحدیث: ۲۰۶۴، ج ۴، ص ۱۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی نظر بد اور زہریلے جانوروں کے کاٹ لینے میں دم جھاڑ پھونک بہت زیادہ مفید ہے اتنی اور بیماریوں میں مفید نہیں، یہ مطلب نہیں کہ دوسری بیماریوں میں جھاڑ پھونک جائز نہیں جیسے کہا جاتا ہے لافنی الاعلیٰ لاسیف الا ذوالفقار یا یہ مطلب ہے کہ نظر بد اور زہریلے جانوروں سے بچنے کے لیے ان میں دوا کا انتظار نہ کرو اس پر جلد جھاڑ پھونک کر دو۔ (مرقات) در نہ خود حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے بہت بیماریوں میں دم کیا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۹۶)

(10) المرجع السابق، باب ماجاء فی الرقیۃ من العین، الحدیث: ۲۰۶۶، ج ۴، ص ۱۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کے حالات ابھی کچھ پہلے بیان کیے گئے۔ جب آپ نے یہ سوال کیا ہے تب آپ حضرت جعفر طیار کی زوجہ تھیں۔ (اشعۃ اللمعات) حضرت جعفر طیار کی کچھ اولاد آپ سے تھی اور کچھ اولاد دوسری زوجہ سے ان سب کے متعلق آپ نے یہ سوال فرمایا۔

۲۔ کیونکہ یہ بچے ظاہری باطنی خوبیوں والے ہیں اس لیے لوگ انہیں تعجب کی نظر سے دیکھتے ہیں اور یہ بچے نظر کی وجہ سے بیمار ہو جاتے ہیں، نظر کا اثر زہر سے زیادہ تیز اور سخت ہوتا ہے اس لیے یسرع فرمانا بالکل درست ہے۔

۳۔ غالباً انہوں نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے ہی نظر کا دم سیکھا ہوگا اس کی اجازت چاہ رہی ہیں جو عطا ہو گئی۔

۴۔ یعنی نظر بد بڑی مؤثر ہوتی ہے اگر کسی چیز سے تقدیر پلٹ جاتی تو نظر سے پلٹ جاتی۔ خیال رہے کہ غصہ کی نظر منظور میں ڈر پیدا کر دیتی ہے، محبت کی نظر خوشی اسی طرح تعجب کی نظر بیماری پیدا کر سکتی ہے رب تعالیٰ جس چیز میں چاہے تاثیر خاص پیدا فرمادے وہ قادر مطلق ہے، اگر کافہ عورت دودھ کے برتن میں ہاتھ ڈال دے تو دودھ خراب ہو جاتا ہے وہ ہی عورت پاک ہو کر ہاتھ ڈالے تو نہیں بگڑتا پھر جیسے بری نظر پر اثر پیدا کرتی ہے یوں ہی صالحین مقبولین کی رحمت کی نظر منظور میں انقلاب پیدا کر دیتی ہے، نظر بد بیماریاں پیدا کرتی ہے۔

حدیث ۱۱: صحیح بخاری و مسلم میں حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے نظر بد سے جھاڑ پھونک کرانے کا حکم فرمایا ہے۔ (11)

حدیث ۱۲: صحیح بخاری و مسلم میں حضرت ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت ہے، کہ ان کے گھر میں ایک لڑکی تھی جس کے چہرہ میں زردی تھی۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اسے جھاڑ پھونک کراؤ، کیونکہ اسے نظر لگ گئی ہے۔ (12)

حدیث ۱۳: صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ جب رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے جھاڑ پھونک سے منع فرمایا۔ عمرو بن حزم کے گھر والوں نے حاضر ہو کر یہ کہا، کہ یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے جھاڑنے کو منع فرمایا اور ہمارے پاس بچھو کا جھاڑ ہے اور اس کو حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کے سامنے پیش کیا۔ ارشاد فرمایا: اس میں کچھ حرج نہیں جو شخص اپنے بھائی کو نفع پہنچا سکے، نفع پہنچائے۔ (13)

حدیث ۱۴: صحیح مسلم میں عوف بن مالک اشجعی سے روایت ہے، کہتے ہیں ہم جاہلیت میں جھاڑا کرتے تھے۔

تو نظر خوب بیماریاں دور کرتی ہے، شیطان نے بارگاہ الہی میں عرض کیا انظرنی مجھے مہلت دے اگر کہتا انظرانی مجھے نظر رحمت سے دیکھ لے تو اس کا بیڑا پار ہو جاتا۔ (مرقات) ایک شخص نے کہا کہ میں نے بڑے بڑوں کو دیکھا کسی میں کچھ نہیں ہے، دوسرے نے کہا کہ مگر کسی نے تجھے نہ دیکھا اگر کوئی نظر والا تجھے دیکھ لیتا تو تیرا یہ حال نہ ہوتا غرض کہ نظر بڑی چیز ہے کوئی نظر خانہ خراب کر دیتی ہے کوئی نظر خراب کو آباد کر دیتی ہے۔ شعر

نظر کی جولانیاں نہ پوچھو نظر حقیقت میں وہ نظر ہے اٹھے تو بنگلی پناہ مانگے گرے تو خانہ خراب کر دے

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۹۸)

(11) صحیح البخاری، کتاب الطب، باب رقیۃ العین، الحدیث: ۵۷۳۸، ج ۴، ص ۳۱

(12) صحیح البخاری، کتاب الطب، باب رقیۃ العین، الحدیث: ۵۷۳۹، ج ۴، ص ۳۱

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ سفہ کے بہت معنی ہیں: نشانی، طمانچہ، نظر بد، جلنا آگ لہو، چہرے کی سیاہی مائل بہ سرخی اس لیے یہاں یہ شرح فرمائی۔

۲۔ جن کی نظر ہے یا انسان کی، علماء فرماتے ہیں کہ جنات کی نظر انسانی نظر سے سخت تر ہوتی ہے۔ (اشعہ) مرقات نے فرمایا کہ جنات کی

نگاہ نیزے سے زیادہ تیز ہوتی ہے۔ جائز دعاؤں سے دم بھی جائز ہے اس دم پر اجرت لینا بھی درست ہے۔ (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۹۹)

(13) صحیح مسلم، کتاب السلام، باب استجاب الرقیۃ من العین... إلخ، الحدیث: ۶۳۔ (۲۱۹۹)، ص ۱۲۰۷۔

حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی خدمت میں عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) حضور کا اس کے متعلق کیا ارشاد ہے؟ فرمایا کہ میرے سامنے پیش کرو، جھاڑ پھونک میں حرج نہیں جب تک اس میں شرک نہ ہو۔ (14)

حدیث ۱۵: صحیح بخاری میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: عدوی نہیں، یعنی مرض لگنا اور متعدی ہونا نہیں ہے اور نہ بدقالی ہے اور نہ ہامہ (15) ہے، نہ صفر (16) اور مجذوم سے بھاگو، جیسے شیر سے بھاگتے ہو۔ (17)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ عمرو ابن حزم کی کنیت ابو الفصاح ہے انصاری ہیں غزوہ خندق اور اس کے بعد کے غزوات میں شریک ہوئے غزوہ خندق میں چند سالہ تھے حضور انور نے انہیں بحران کا حاکم بنایا تھا، ۱۰ دس میں، آپ کی وفات ۵۳ ترپن میں مدینہ منورہ میں ہوئی، ان کے اہل خانہ یعنی بھائی برادر بچے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے۔

۲۔ یعنی ہم سب لوگ بچھو وغیرہ کے کانٹے پر دم کر دیتے ہیں تو اس سے فائدہ ہوتا ہے اگر اسے بند کر دیں تو ایک فیض بند ہو جاوے گا حضور نے دعا سنانے کا حکم دیا۔

۳۔ غالباً وہ عربی زبان کے الفاظ تھے اگرچہ قرآنی آیت یا دعاء ماثورہ نہ تھی مگر اس کے الفاظ شریک بھی نہ تھے۔ ہم نے بعض ورد اور زبان کے دیکھے بہت زود اثر، آدھا سیسی کے لیے یہ دعا بڑی مفید ہے۔ کالی چڑی کلچڑی کالا پھل کھائے اٹھو محمد آکھ دو کہ آدھا سیسی جائے، اس دعا میں کوئی لفظ شرک و کفر یا ناجائز نہیں۔ بچہ پیدا ہونے میں اگر دشواری ہو تو یہ کوری ٹھیکری پر لکھ کر زچہ کے سر پر رکھی جاوے سر پر چینی کر میں گھڑا نکل پڑی یا نکل پڑا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۷۰)

(14) المرجع السابق، باب لا بأس بالرقی ما لم یکن فیہ شرک، الحدیث: ۶۴۔ (۲۲۰۰)، ص ۱۲۰۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ ادنا غزوہ خیبر میں شریک ہوئے قبیلہ النضج کا جھنڈا آپ کے ہاتھ میں تھا فتح مکہ کے دن، آخر میں شام میں رہے، ۳۷ھ تہتر میں وفات پائی۔

۲۔ اس حدیث کی بناء پر حضرات صوفیاء فرماتے ہیں کہ عمل کی تاخیر کے لیے شیخ کو عمل سنالینا اس سے اجازت لے لینا مفید ہے اگرچہ اس کے معنی جانتا ہو۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۷۱)

(15) ہامہ سے مراد اٹلو ہے، زمانہ جاہلیت میں اہل عرب اس کے متعلق مختلف قسم کے خیالات رکھتے تھے اور اب بھی لوگ اس کو منحوس سمجھتے ہیں۔ ۶۔ کچھ بھی ہو حدیث نے اس کے متعلق یہ ہدایت کی ہے کہ اس کا اعتبار نہ کیا جائے۔

(16) ۱۰ صفر کو لوگ منحوس جانتے ہیں، حدیث میں فرمایا: یہ کوئی چیز نہیں۔

(17) صحیح بخاری، کتاب الطب، باب المجذام، الحدیث: ۵۷۰۷، ج ۴، ص ۲۴۔

دوسری روایت میں ہے، کہ ایک اعرابی نے عرض کی، یا رسول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) اس کی کیا وجہ ہے کہ ریگستان میں اونٹ ہرن کی طرح (صاف ستھرا) ہوتا ہے اور خارشتی اونٹ (یعنی وہ اونٹ جسے خارش ہو) جب اس کے ساتھ مل جاتا ہے تو اسے بھی خارشتی کر دیتا ہے؟ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: پہلے کو کس نے مرض لگا دیا۔ (18) یعنی جس طرح پہلا اونٹ خارشتی ہو گیا دوسرا بھی ہو گیا۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اہل عرب کا عقیدہ تھا کہ بیمار یوں میں عقل و ہوش ہے جو بیمار کے پاس بیٹھے اسے بھی اس مریض کی بیماری لگ جاتی ہے وہ پاس بیٹھنے والے کو جانتی پہچانتی ہے یہاں اسی عقیدے کی تردید ہے۔ موجودہ حکیم ڈاکٹرسات بیمار یوں کو تعدی مانتے ہیں: جذام، خارش، چیچک، موتی جھرہ، منہ کی یا بغل کی بو، آشوب چشم، وبائی بیماریاں اس حدیث میں ان سب دھموں کو دفع فرمایا گیا ہے۔ (مرقاۃ و اشعہ) اس معنی سے مرض کا اڑ کر لگنا باطل ہے مگر یہ ہو سکتا ہے کہ کسی بیمار کے پاس کی ہوا متعفن ہو اور جس کے جسم میں اس بیماری کا مادہ ہو وہ اس تعفن سے اثر لے کر بیمار ہو جاوے اس معنی سے تعدی ہو سکتی ہے اس بنا پر فرمایا گیا کہ جذامی سے بھاگو لہذا یہ حدیث ان احادیث کے خلاف نہیں۔ غرض کہ تعدی یا تعدی اور چیز ہے کسی بیمار کے پاس بیٹھنے سے بیمار ہو جانا کچھ اور چیز ہے۔

۲۔ اہل عرب کا خیال تھا کہ میت کی گلی ہڈیاں الو بن کر آ جاتی ہیں اور الو جہاں بول جاوے وہاں ویرانہ ہو جاتا ہے یہ عقیدہ قلط ہے، بعض لوگ کہتے ہیں کہ جس مقتول کا بدلہ نہ لیا جاوے اس کی روح الو کی شکل میں آ کر لوگوں سے کہتی ہے استقوا، استقوا مجھے پانی پلاؤ یہ سب باطل خیالات ہیں۔

۳۔ صفر سے مراد یا تو ماہ صفر ہے جسے اب بھی بعض منوحس جانتے ہیں یا اس سے مراد پیٹ کا درد ہے کہ لوگ سمجھتے ہیں کہ پیٹ کا درد ایک سانپ ہے جو پیٹ میں رہتا ہے اس کا مردہ کھانا پیٹ کا درد ہے اس میں ان دونوں خیالات کی تردید ہے۔ (مرقاۃ) اس کی اور بہت شرحیں ہیں۔ بعض لوگ صفر کے آخری چار شنبہ کو خوشیاں مناتے ہیں کہ منوحس شہر چل دیا یہ بھی باطل ہے۔

۴۔ یہ حکم عوام کے لیے ہے جن کا عقیدہ بگڑ جانے کا خوف ہو کر اگر کوڑھی کے پاس بیٹھنے سے اتفاقاً انہیں بھی کوڑھ ہو جائے تو سمجھیں کہ کوڑھ اڑ کر لگ گئی ان کے لیے کوڑھی سے علیحدگی اچھی ہے، خاص متوکل لوگ جن کے دلوں پر اس سے کوئی اثر نہ پڑے ان کے لیے یہ حکم نہیں لہذا احادیث میں تعارض نہیں۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۴۱۳)

(18) صحیح البخاری، کتاب الطب، باب لا صفر... إلخ، الحدیث: ۵۷۱۷، ج ۴، ص ۲۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جب تک اونٹ ریگستان میں الگ تھلک رہتا ہے ہرن کی طرح صاف ستھرا بے عیب ہوتا ہے۔

۲۔ مقصد یہ ہے کہ حضور مرض کی تعدی کا انکار فرماتے ہیں مگر تجربہ شاید ہے کہ تعدی ہوتی ہے مرض اڑ کر لگتا ہے ہم نے اپنے اونٹوں میں اس کا مشاہدہ کیا ہے۔

مرض کا متعدی ہونا (یعنی ایک کا مرض دوسرے کو لگنا) غلط ہے اور مجذوم سے بھاگنے کا حکم سد ذرائع (یعنی ذرائع روکنے) کے قبیل سے ہے، کہ اگر اس سے میل جول میں دوسرے کو جذام پیدا ہو جائے تو یہ خیال ہوگا کہ میل جول سے پیدا ہوا، اس خیال فاسد (یعنی بُرے خیال) سے بچنے کے لیے یہ حکم ہوا کہ اس سے علیحدہ رہو۔

حدیث ۱۶: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہتے ہیں میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو یہ فرماتے سنا کہ بدقالی کوئی چیز نہیں اور قال اچھی چیز ہے۔ لوگوں نے عرض کی، قال کیا چیز ہے؟ فرمایا: اچھا کلمہ جو کسی سے سنے۔ (19) یعنی کہیں جاتے وقت یا کسی کام کا ارادہ کرتے وقت کسی کی زبان سے اگر اچھا کلمہ نکل گیا، یہ قال حسن ہے۔

حدیث ۱۷: ابو داؤد و ترمذی نے عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: طیرہ (بدقالی) شرک ہے۔ اس کو تین مرتبہ فرمایا (یعنی مشرکین کا طریقہ ہے)۔ جو کوئی ہم میں سے ہو یعنی مسلمان ہو، وہ اللہ (عز و جل) پر توکل کر کے چلا جائے۔ (20)

۳۔ یعنی اگر خارش اڑ کر ہی لگتی ہے تو سب سے پہلا خارش اونٹ جس سے خارش کی ابتدا ہوئی اسے خارش کہاں سے لگی وہاں تو کہنا پڑے گا کہ رب کے حکم سے وہ خارش ہوا تو آئندہ بقیہ اونٹ بھی اس کے حکم سے خارش ہوئے اللہ تعالیٰ پر نظر رکھو۔ یہاں اعدی فرمانا مث کلت کے لیے ہے جیسے کہ تین تدان یا جیسے جزاء سیئۃ سیئۃ ورنہ فرمایا جاتا فمن اعطی الاول۔ (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۴۴)

(19) صحیح بخاری، کتاب الطب، باب الطیرۃ، الحدیث: ۵۷۵۴، ج ۴، ص ۳۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ غالباً یہاں طیرہ سے مراد بدقالی لینا ہے خواہ پرندے سے ہو یا چند جانور سے یا کسی اور چیز سے کیونکہ بدقالی مطلقاً ممنوع ہے، قرآن مجید میں تطیر اور طائر بمعنی بدقالی آیا ہے، رب فرماتا ہے: "قَالُوا اِنَّا نَطْهَرُكَ نَابِکُمْ" اور فرماتا ہے: "قَالُوا اَطْهَرُکُمْ مَّعَکُمْ"۔ مقصد یہ ہے کہ اسلام میں بدقالی کوئی شئی نہیں کسی چیز سے بدقالی نہ لو۔

۲۔ جیسے کوئی شخص کسی کام کو جا رہا ہے کسی سے آواز آئی اسے نہج یا اسے برکت یا اسے رشید یہ جانے والا یہ الفاظ سن کر کامیابی کا امیدوار ہو گیا یہ بالکل جائز ہے۔ بعض دکاندار صبح کو یا رزاق، گمشدہ کے متلاشی یا واجد، مسافر لوگ یا سالم، حاجی و غازی لوگ یا منصور یا مبرور اور زر و لوگ یا مقبول بن کر خوش ہو جاتے ہیں یہ سب اسی حدیث سے ماخوذ ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۴۱۲)

(20) سنن ابی داؤد، کتاب الطب، باب فی الطیرۃ، الحدیث: ۳۹۱۰، ج ۴، ص ۲۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ شرک عملی ہے مشرکوں کا سا کام یا شرک خفی۔

حدیث ۱۸: ترمذی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جب کسی کام کے لیے نکلتے تو یہ بات حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو پسند تھی کہ یا راشد، یا نبیح سنیں۔ (21) یعنی اس وقت اگر کوئی شخص ان ناموں کے ساتھ کسی کو پکارتا یہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو اچھا معلوم ہوتا کہ یہ کامیابی اور فلاح کی قال نیک ہے۔

حدیث ۱۹: ابوداؤد نے بریدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کسی چیز سے بدشگونی (بدفالی) نہیں لیتے، جب کسی عامل کو بھیجتے اس کا نام دریافت کرتے اگر اس کا نام پسند ہوتا تو خوش ہوتے اور خوشی کے آثار چہرہ میں ظاہر ہوتے اور اگر اس کا نام ناپسند ہوتا تو اس کے آثار حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کے چہرہ میں دکھائی دیتے اور جب کسی بستی میں جاتے اس کا نام پوچھتے اگر اس کا نام پسند ہوتا تو خوش ہوتے اور خوشی کے آثار چہرہ میں دکھائی دیتے اور ناپسند ہوتا تو کراہیت کے آثار چہرہ میں دکھائی دیتے۔ (22) اس حدیث کا یہ مطلب نہیں کہ

۲۔ الا کے بعد ایک عبارت پوشیدہ ہے مخبر فی بالہ اور لکن سے نیا کلام ہے یدھبہ میں وہ کی ضمیر اسی خطرہ کی طرف ہے، معنی یہ ہیں کہ ہم مسلمانوں سے جو کوئی بدفالیاں لیتا ہے تو وہ خطرات و شبہات میں پڑ جاتا ہے لیکن اللہ تعالیٰ اس شبہ و خطرہ کو توکل کے ذریعہ ختم فرما دیتا ہے کہ جو کوئی توکل اختیار کرے وہ ان شبہات میں نہیں پڑتا۔ اس مطلب کی تائید اس حدیث سے ہوتی ہے احمد، طبرانی نے حضرت عبداللہ ابن عمرو سے مرفوعاً روایت کیا کہ جسے بدفالی اس کے کام سے روک دے وہ مشرک ہو گیا، اس کا کفارہ یہ ہے کہ یہ کہے لے اللھم لا یغیر الا خیرک ولا طیرک ولا الہ غیرک اس کی کچھ بحث تیسری فصل میں آئے گی۔ ان شاء اللہ! (مرقات)

۳۔ سلیمان ابن حرب اس حدیث کے راویوں میں سے ہیں، قاضی مکہ تھے، بصرہ کے رہنے والے اپنے وقت کے امام فن تھے، آپ کے سبق میں چالیس ہزار طلباء ہوتے تھے، ماہ مغفرہ ۱۴۱ ایک سو چالیس میں پیدا ہوئے اور ۵۸۱ھ ایک سو اٹھادون میں فن حدیث سے فارغ ہوئے، انیس سال تک حماد ابن زید محدث کے ساتھ رہے، امام احمد ابن حنبل کے استادوں میں سے ہیں، ۲۲۲ھ دو سو چوبیس میں وفات پائی۔ (مرقات)

۴۔ یعنی یہ عبارت حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا فرمان عالی نہیں بلکہ حضرت ابن مسعود کا اپنا قول ہے حدیث تو الطیور شرک پر ختم ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۲۰)

(21) سنن الترمذی، کتاب اسیر، باب ما جاء فی الطیرۃ، الحدیث: ۱۶۲۲، ج ۳، ص ۲۸۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ راشد کے معنی ہیں ہدایت یافتہ اور نصح کے معنی ہیں کامیاب، کسی کام کو جاتے وقت یہ الفاظ سننا اس لیے پسند تھا کہ ان سے اللہ کے فضل و

کامیابی کی امید ہو جاتی ہے۔ معلوم ہوا کہ نیک قال لینا بالکل جائز ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۲۳)

(22) سنن ابی داؤد، کتاب الطب، باب فی الطیرۃ، الحدیث: ۳۹۲۰، ج ۴، ص ۲۵۔

ناموں سے آپ بدشگونی لیتے بلکہ یہ کہ اچھے نام حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو پسند تھے اور برے نام ناپسند تھے۔

حدیث ۲۰: ابو داؤد نے عروہ بن عامر سے مرسل روایت کی، کہتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے سامنے بدشگونی کا ذکر ہوا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: قال اچھی چیز ہے اور براشگون کسی مسلم کو واپس نہ کرے یعنی کہیں جا رہا تھا اور براشگون ہوا تو واپس نہ آئے، چلا جائے جب کوئی شخص ایسی چیز دیکھے جو ناپسند ہے یعنی براشگون پائے تو یہ کہے۔ اَللّٰهُمَّ لَا يَأْتِي بِالْحَسَنَاتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا يَذْفَعُ السَّيِّئَاتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا خَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ۔ (23)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس سے علماء فرماتے ہیں کہ اپنی اولاد کے نام اچھے رکھو نام کا اثر نام والے پر پڑتا ہے، برے نام والے کو لوگ اپنے پاس نہیں بیٹھے دیتے، اچھے نام والے کے کام بھی ان شاء اللہ اچھے ہوتے ہیں۔

۲۔ یعنی حضور برے ناموں کو بہت ناپسند فرماتے تھے۔ حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے ایک شخص سے پوچھا تیرا نام کیا ہے وہ بولا جمرہ (انگارہ) کہا کس کا بیٹا ہے کہا شہاب کا (شعلہ) کہا تو کہاں رہتا ہے بولا حراقہ میں (جلن) کہا کس محلہ میں بولا بحرة النار میں (آگ کا دائرہ) فرمایا کس طرف بولا ذات نطی میں، آپ نے فرمایا تو اپنا گھر جا کر دیکھ جل چکا ہے دیکھا تو واقعی گھر اور گھر والے جل چکے تھے۔ عرب کہتے ہیں الاسماء من السماء نام آسمان سے تعلق رکھتے ہیں۔ (مرقات) اہل عرب اپنے بیٹوں کا نام رکھتے تھے اسد (شیر) ذب (بھیریا) کلب (کتا) اور اپنے غلاموں کے نام رکھتے تھے راشد نجج اور کہتے تھے کہ ہمارے غلام ہماری خدمت کے لیے ہیں اور ہمارے بیٹے دشمنوں کے مقابلہ کے لیے۔ (مرقات) اس حدیث سے معلوم ہوا کہ بچوں، غلاموں کے نام اچھے رکھو۔

۳۔ ہمارے ۷ پنجاب میں بعض دیہات کے نام ہیں نور پور، مدینہ، جمالی پور ایسے نام بڑے مبارک ہیں، بعض بستیوں کے نام ہیں شیطانیہ، خونی چک وغیرہ یہ نام اچھے نہیں حضور صلی اللہ علیہ وسلم بستیوں کے برے نام بھی ناپسند فرماتے تھے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۴۲۴)

(23) سنن ابی داؤد، کتاب الطب، باب فی الطیرۃ، الحدیث: ۵۹۱۹، ج ۴، ص ۲۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ کہ لوگ بعض چیزوں سے بدشگونی لیتے ہیں بعض سے اچھا شگون اس کی حقیقت کیا ہے تب حضور نے وہ جواب دیا جو یہاں مذکور ہے۔
۲۔ قال سے مراد نیک قال ہے جو اچھی بات اچھا نام سننے سے لی جائے یعنی یہ جائز ہے لیکن کوئی شخص کسی کام کو جاتے وقت ناپسندیدہ چیز دیکھے یا سنے جس سے بدشگونی لی جائے تو وہ محض اس وجہ سے اپنے کام سے واپس نہ ہو، اللہ پر توکل کرے اور کام کو جائے۔
۳۔ یہ عمل بہت ہی مجرب ہے ان شاء اللہ اس دعا کی برکت سے کوئی بری چیز اثر نہیں کرتی تمام مروجہ بدفالیوں بدشگونیوں کا بہترین ←

حدیث ۲۱: صحیح بخاری و مسلم میں اسامہ بن زید رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب سنو کہ فلاں جگہ طاعون ہے، تو وہاں نہ جاؤ اور جب وہاں ہو جائے جہاں تم ہو، تو وہاں سے نہ نکلو۔ (24)

حدیث ۲۲: صحیح مسلم میں اسامہ بن زید رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: طاعون عذاب کی نشانی ہے، اللہ تعالیٰ نے اپنے بندوں میں سے کچھ لوگوں کو اس میں مبتلا کیا، جب سنو کہ کہیں ہے تو وہاں نہ جاؤ اور جب وہاں ہو جائے جہاں تم ہو تو بھاگو مت۔ (25)

حدیث ۲۳: امام احمد و بخاری نے عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: طاعون عذاب تھا، اللہ تعالیٰ جس پر چاہتا ہے اس کو بھیجتا ہے۔ اس کو اللہ (عز و جل) نے مومنین کے لیے رحمت کر دیا۔ جہاں طاعون واقع ہو اور اس شہر میں جو شخص صبر کر کے اور طلبِ ثواب کے لیے ٹھہرا رہے اور یہ یقین رکھے کہ وہی ہوگا جو اللہ (عز و جل) نے لکھ دیا ہے، اس کے لیے شہید کا ثواب ہے۔ (26)

علاج ہے۔ واللہ اعلم! (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۴۲۷)

(24) صحیح البخاری، کتاب الطب، باب ما یدکر فی الطاعون، الحدیث: ۵۷۲۸، ج ۴، ص ۲۸.

(25) صحیح مسلم، کتاب السلام، باب الطاعون والبطیرۃ... إلخ، الحدیث: ۹۳۔ (۲۲۱۸)، ص ۱۲۱۵.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ وہی بنی اسرائیل تھے جن سے کہا گیا تھا کہ تم توبہ کے لیے بیت المقدس میں سجدہ کرتے ہوئے جاؤ تو وہ محسّسے ہوئے گئے تھے، انہیں پر طاعون بھیجا گیا جس سے ایک ساعت میں چوبیس ہزار ہلاک ہو گئے، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِنْ السَّمَاءِ"۔ اس سے معلوم ہوا کہ محبوبوں کے شہدوں کی بے ادبی کرنے پر عذاب الہی آجاتا ہے۔

۲۔ کیونکہ یہ ایک بلاء ہے اور بلاء میں خود جانا نہیں چاہیے اور جب آجائے تو گھبرانا نہیں چاہیے۔ خیال رہے کہ بلاء سے فرار نہیں بچاتا بلکہ استغفار ہی پاتا ہے۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ اگر کوئی طاعون کی جگہ سے کسی ضرورت کے لیے باہر جائے مضا لفقہ نہیں، بھاگنے کی نیت سے

نکلنا گناہ ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲، ص ۷۷۳)

(26) صحیح البخاری، کتاب القدر، الحدیث: ۶۶۱۹، ج ۴، ص ۷۷۸.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی طاعون کفار پر عذاب ہے جو کافر اس میں مرے گا وہ عذاب کی موت مرے گا۔

۲۔ یعنی یہ صابر خواہ طاعون میں فوت ہو جائے یا نہیں جب بھی مرے گا اسے درجہ شہادت ملے گا، گویا طاعون میں صبر شہادت کے جبر کا باعث ہے جیسے کہ روایات میں ہے کہ جو تاجر باہر سے غلہ لاکر فروخت کیا کرے تاکہ شہر کا قحط دور ہو جب مرے گا جیسے مرے گا شہید ہوگا، یونہی طالب علم اور مؤذن۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲، ص ۷۷۲)

حدیث ۲۴: امام بخاری و مسلم و احمد نے حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: طاعون ہر مسلم کے لیے شہادت ہے۔ (27)



(27) صحیح البخاری، کتاب الطب، باب ما ینذکر فی الطاعون، الحدیث: ۵۷۳۲، ج ۴، ص ۳۰.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے طاعون طعن سے بنا، بمعنی نیزہ مارنا، چونکہ اس بیماری میں مریض کو پھوڑے یا زخم سے ایسا محسوس ہوتا ہے جیسے اسے کوئی نیزہ ۲۰۰۰ ہے، سوئیوں چھو رہا ہے اس لیے اسے طاعون کہا جاتا ہے۔ یہ مشہور وبائی بیماری ہے۔ (لمعات) چونکہ درحقیقت اس مرض میں بیمار کو جنت نیزے مارے جاتے ہیں اس لیے اس میں شہادت کا ثواب ہے۔ احمد نے حضرت ابو موسیٰ سے مرفوعاً روایت کیا کہ میری امت کی فتنہ طعن اور طاعون سے ہوگی۔ (مرقاۃ) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲، ص ۷۷۰)

مسائل فقہیہ

مسئلہ ۱: مریض کی عیادت کرنا (بیمار پرسی کرنا) سنت ہے، اگر معلوم ہے کہ عیادت کو جائے گا تو اس بیمار پر گراں گزرے گا ایسی حالت میں عیادت نہ کرے۔ عیادت کو جائے اور مرض کی سختی دیکھے تو مریض کے سامنے یہ ظاہر نہ کرے کہ تمھاری حالت خراب ہے اور نہ سر ہلائے جس سے حالت کا خراب ہونا سمجھا جاتا ہے، اس کے سامنے ایسی باتیں کرنی چاہیے جو اس کے دل کو بھلی (اچھی) معلوم ہوں، اس کی مزاج پرسی کرے اس کے سر پر ہاتھ نہ رکھے مگر جبکہ وہ خود اس کی خواہش کرے۔ فاسق کی عیادت بھی جائز ہے، کیونکہ عیادت حقوق اسلام سے ہے اور فاسق بھی مسلم ہے۔ یہودی یا نصرانی اگر ذمی (۱) ہو تو اس کی عیادت بھی جائز ہے۔ (۲)

(۱) وہ غیر مسلم جو اسلامی سلطنت میں مطیع الاسلام ہو کر رہے اور جزیہ ادا کرے۔ (اب دنیا میں تمام کافر حربی ہیں)

(۲) الدر المختار و رد المحتار، کتاب المحظر والایاتہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۳۹، ۶۴۰۔

عیادت و تعزیت کی فضیلت:

حضرت سیدنا فضیل بن عیاض رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ ارشاد فرماتے ہیں: مجھے یہ خبر پہنچی ہے کہ حضرت سیدنا موسیٰ علی سینا علیہ الصلوٰۃ والسلام نے بارگاہ رب العزت میں عرض کی: اے میرے رب غرّ و غلّ! وہ کون ہے جو میرے عرش کے سائے میں ہوگا جس دن اس کے علاوہ کوئی سایہ نہ ہوگا؟ اللہ غرّ و غلّ نے ارشاد فرمایا: اے موسیٰ علیہ السلام! وہ لوگ جو مریضوں کی عیادت کرتے ہیں، جنازہ کے ساتھ جاتے ہیں اور کسی کا بچہ فوت ہو جائے اس سے تعزیت کرتے ہیں۔ (علیہ الاولیاء، الحدیث ۷۰۶، ج ۳، ص ۲۸)

(علامہ سیوطی علیہ رحمۃ اللہ القوی فرماتے ہیں) اس سے معلوم ہوا کہ ان تینوں میں سے ہر ایک خصلت مستقل طور پر سایہ عرش کا مستحق بنانے والی ہے۔

حضرت عبد المجید بن عبد العزیز اپنے والد رحمہما اللہ تعالیٰ سے روایت کرتے ہیں، وہ فرماتے ہیں: (ہمارے زمانے میں) کہہ جاتا تھا کہ تین اشخاص قیامت کے دن عرش کے سائے میں ہوں گے (۱) مریض کی عیادت کرنے والا (۲) جنازہ کے ساتھ جانے والا اور (۳) جس کا بچہ فوت ہو جائے اس سے تعزیت کرنے والا۔ (الدر المنثور، تفسیر سورۃ الانعام، ج ۳، ص ۲۲۵)

امام ابن ابی الدنیا رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے اسی سند کے ساتھ کتاب العزاء میں اس حدیث پاک کی تخریج فرمائی ہے۔ اور اس میں اس بات کی صراحت ہے کہ ان خصال میں سے ہر خصلت سایہ عرش کے لئے مستقل استحقاق کی حامل ہے۔ اور مریض کی عیادت کے بارے میں تو ایک مرفوع شاہد موجود ہے، چنانچہ،

امیر المؤمنین حضرت سیدنا عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ تاجدار رسالت، شہنشاہ نبوت، مخزن جود و سخاوت،

مجوسی کی عیادت کو جائے یا نہ جائے اس میں علما کو اختلاف ہے یعنی جبکہ یہ ذمی ہو۔ (3) ہنود مجوس کے حکم میں ہیں، ان کے احکام وہی ہیں جو مجوسیوں کے ہیں، اہل کتاب جیسے ان کے احکام نہیں۔ ہندوستان کے یہودی، نصرانی، مجوسی، بت پرست ان میں کوئی بھی ذمی نہیں۔

مسئلہ ۲: دوا علاج کرنا جائز ہے جبکہ یہ اعتقاد (عقیدہ، یقین) ہو کہ شانی (صحت یا شفا دینے والا) اللہ (عزوجل) ہے، اس نے دوا کو ازالہ مرض (یعنی مرض کو دور کرنے) کے لیے سبب بنادیا ہے اور اگر دوا ہی کو شفا دینے والا سمجھتے ہو تو ناجائز ہے۔ (4)

مسئلہ ۳: انسان کے کسی جز کو دوا کے طور پر استعمال کرنا حرام ہے۔ خنزیر کے بال یا ہڈی یا کسی جز کو دوا استعمال کرنا حرام ہے۔ دوسرے جانوروں کی ہڈیاں دوا میں استعمال کی جاسکتی ہیں بشرطیکہ ذبیحہ کی ہڈیاں ہوں یا خشک ہوں کہ اس میں رطوبت باقی نہ ہو۔ ہڈیاں اگر ایسی دوا میں ڈالی گئی ہوں جو کھائی جائے گی تو یہ ضروری ہے کہ ایسے جانور کی ہڈی ہو جس کا کھانا حلال ہے اور ذبح بھی کر دیا ہو، مردار کی ہڈی کھانے میں استعمال نہیں کی جاسکتی۔ (5)

بیکر عظمت و شرافت، محبوب رب العزت، محسن انسانیت غرّ و جلّ و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمانِ دیشان ہے: قیامت کے دن پکارنے والے پکارے گا، کہاں ہیں وہ لوگ جو دنیا میں مریضوں کی عیادت کرتے تھے۔ پس (جب وہ حاضر ہوں گے تو) انہیں نور کے منبروں پر بٹھایا جائے گا جہاں یہ اللہ غرّ و جلّ سے شرفِ کلام حاصل کریں گے جبکہ لوگ حساب دے رہے ہوں گے۔

(کنز العمال، کتاب الزکاۃ، الحدیث ۶۱۸۸، ج ۶، ص ۱۶۶)

(عدمہ سیوطی علیہ رحمۃ اللہ الفتاویٰ فرماتے ہیں) اس حدیث پاک میں سایہ عرش پانے کی طرف اشارہ ملتا ہے۔

(3) المعنی علی فتح القدیر، کتاب الکراہیۃ، مسائل متفرقہ، ج ۸، ص ۴۹۷۔

(4) الفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثامن عشر فی التداوی، ج ۵، ص ۳۵۴۔

(5) المرجع السابق۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

ہڈیاں ہر جانور یہاں تک کہ غیر ماکول و نامذبوح کی بھی مطلقاً پاک ہیں جب تک ان پر ناپاک دوسمت (چکنائی ۱۲) نہ ہو سو خنزیر کے کہ نجس اعمین ہے اور اس کا ہر جز و بدن ایسا ناپاک کہ اصلاً صلاحیت طہارت نہیں رکھتا، اور دوسمت میں قید ناپاک اس غرض سے ہے کہ شہاب جو چہ نور خون سائل نہیں رکھتے اُن کی ہڈیاں بہر حال پاک ہیں اگرچہ دوسمت آمیز ہوں کہ ان کی دوسمت بوجہ عدم اختلاط دم خود پاک ہے تو اس کی آمیزش سے استخوان کیونکر ناپاک ہو سکتے ہیں۔

فی تنویر الابصار والدر المختار ورد المختار شعر المیتۃ غیر الخنزیر وعظمتها وعصبها وحافرھا وقرنھا الخالیۃ عن الدسومۃ (۱) (قید للجمیع کما فی القہستانی فخرج الشعر المنتوف وما بعدہ اذا کان فیہ دسومۃ ۲) ←

مسئلہ ۴: حرام چیزوں کو دوا کے طور پر بھی استعمال کرنا ناجائز ہے، کہ حدیث میں ارشاد فرمایا: جو چیزیں حرام ہیں ان میں اللہ تعالیٰ نے شفا نہیں رکھی ہے۔ (6) بعض کتب میں یہ مذکور ہے کہ اگر اس چیز کے متعلق یہ علم ہو کہ اسی میں شفا ہے تو اس صورت میں وہ چیز حرام نہیں اس کا حاصل بھی وہی ہے۔ کیونکہ کسی چیز کی نسبت ہرگز یہ یقین نہیں کیا جاسکتا ہے کہ اس سے مرض زائل ہی ہو جائے گا، زیادہ سے زیادہ ظن اور گمان ہو سکتا ہے نہ کہ علم و یقین، خود علم طب کے قواعد و اصول ہی ظنی ہیں لہذا یقین حاصل ہونے کی کوئی صورت نہیں، یہاں دیا یقین بھی نہیں ہو سکتا جیسا بھوکے کو حرام لقمہ کھانے سے یا پیاسے کو شراب پینے سے جان بچ جانے میں ہوتا ہے۔ (7)

انگریزی دوائیں بکثرت ایسی ہیں جن میں اسپرٹ اور شراب کی آمیزش ہوتی ہے ایسی دوائیں ہرگز استعمال نہ کی جائیں۔

مسئلہ ۵: بیماری کے متعلق طبیب نے یہ کہا کہ خون کا غلبہ ہے، فصد وغیرہ کے ذریعہ سے خون نکالا جائے۔ مریض نے ایسا نہ کیا اور مر گیا تو اس علاج کے نہ کرنے سے گنہگار نہیں ہوا۔ کیونکہ یہ یقین نہیں ہے کہ اس علاج سے شفا ہو ہی جائے گی۔ (8)

مسئلہ ۶: دست آتے ہیں یا آنکھیں دکھتی ہیں یا کوئی دوسری بیماری ہے اس میں علاج نہیں کیا اور مر گیا گنہگار نہیں

و دم سمک طاهر ۳ انتہت ملخصه.

تنویر البصار، در مختار اور رد المحتار میں ہے خنزیر کے علاوہ ہر مردار کے بال، ہڈی، منہ، گھر اور سینک جو چربی سے خالی ہوں (یہ قید سب کے ساتھ ہے جیسا کہ قہستانی میں ہے۔ پس اکھاڑے ہوئے بال اور جو کچھ اس کے بعد ہے اگر اس میں چربی ہو تو وہ اس حکم سے خارج ہیں) اور مچھلی کا خون پاک ہے، اجماع تلخیص (ت) (۱) در مختار باب المیاء مطبوعہ مجتہبی دہلی ۱/۳۸ (۲) رد المحتار باب المیاء مطبوعہ مجتہبی دہلی ۱/۱۳۸ (۳) در مختار باب المیاء مطبوعہ مجتہبی دہلی ۱/۳۸

مگر حلال و حرام صرف جانور ماکول اللحم مذکی یعنی مذبوح بذبح شرعی کی ہڈیاں ہیں حرام جانور اور ایسے ہی جو بے ذکاۃ شرعی عدہ مر جائے یا کاٹا جائے بمجموع اجزائے حرام ہے اگرچہ ظاہر ہو کہ طہارت مستلزم وحلت نہیں جیسے سنکھے یا بقدر مضرت اور انسان کا دودھ جد عمر رضاعت اور مچھلی کے سوا جانور ان دریائی کا گوشت وغیر ذلک کہ سب پاک ہیں اور باوجود پاکی حرام۔

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۴، ص ۷۵۷ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(6) انظر: المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث: ۷۴۹، ج ۲۳، ص ۳۲۶.

(7) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۳۱.

(8) الفتاویٰ الخانیہ، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۲، ص ۶۶۵.

ہے۔ (9) یعنی علاج کرانا ضروری نہیں کہ اگر دوانہ کرے اور مرجائے تو گنہگار ہو۔ اور بھوک پیاس میں کھانے پینے کی چیز دستیاب ہو اور نہ کھائے پیے یہاں تک کہ مرجائے تو گنہگار ہے، کہ یہاں یقیناً معلوم ہے کہ کھانے پینے سے وہ بات جاتی رہے گی۔

مسئلہ ۷: عورت کو حمل ہے تو جب تک شکم میں بچہ حرکت نہ کرے نہ فصد کھلوائے، نہ کچھنے لگوائے اور بچہ حرکت کرنے لگے تو فصد وغیرہ کرا سکتی ہے، مگر جب ولادت کا زمانہ قریب آجائے تو نہ کرائے کیونکہ بچہ کو ضرر پہنچ جائے گا اندیشہ ہے، ہاں اگر فصد نہ کرانے میں خود عورت ہی کو سخت نقصان پہنچے گا تو کرا سکتی ہے۔ (10)

مسئلہ ۸: مہینہ کی پہلی سے پندرہ تاریخوں تک کچھنے نہ لگوائے جائیں، پندرہویں کے بعد کچھنے کرائیں خصوصاً ہفتہ کا دن اس کے لیے زیادہ اچھا ہے۔ (11)

مسئلہ ۹: شراب سے خارجی علاج بھی ناجائز ہے مثلاً زخم میں شراب لگائی یا کسی جانور کو زخم ہے اس پر شراب لگائی یا بچہ کے علاج میں شراب کا استعمال، ان سب میں وہ گنہگار ہوگا جس نے اس کو استعمال کرایا۔ (12)

مسئلہ ۱۰: انگلی میں ایک قسم کا پھوڑا نکلتا ہے اور اسکا علاج اس طرح کیا جاتا ہے کہ جانور کا پتہ اس انگلی میں باندھ دیا جاتا ہے، فتویٰ اس پر ہے کہ ایسا کرنا جائز ہے۔ (13)

مسئلہ ۱۱: بعض اورام (ورم کی جمع، سوجن) میں آٹا گوندھ کر باندھا جاتا ہے یا لٹی پکا کر (یعنی گھلا ہوا آٹا جو آگ پر پکا کر گاڑھا کیا گیا ہو) باندھتے ہیں یا کچی پکی روٹی باندھتے ہیں یہ جائز ہے۔ (14)

مسئلہ ۱۲: علاج کے لیے حقنہ کرنے یعنی عمل دینے میں حرج نہیں جبکہ حقنہ ایسی چیز کا نہ ہو جو حرام ہے مثلاً شراب۔ (15)

مسئلہ ۱۳: بعض امراض میں مریض کو بے ہوش کرنا پڑتا ہے، تاکہ گوشت کاٹا جاسکے یا ہڈی وغیرہ کو جوڑا جاسکے یا

(9) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثامن عشر فی التداوی، ج ۵، ص ۳۵۵.

(10) المرجع السابق.

(11) المرجع السابق.

(12) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثامن عشر فی التداوی، ج ۵، ص ۳۵۵.

(13) المرجع السابق.

(14) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثامن عشر فی التداوی، ج ۵، ص ۳۵۶.

(15) الہدایۃ، کتاب الکراہیۃ، مسائل متفرقہ، ج ۲، ص ۳۸۱.

زخم میں ٹانگے لگائے جائیں، اس ضرورت سے دوا سے بے ہوش کرنا جائز ہے۔

مسئلہ ۱۴: حقنہ دینے میں بعض مرتبہ اس جگہ کی طرف نظر کرنے یا چھونے کی نوبت آتی ہے، بوجہ ضرورت ایسا

کرنا جائز ہے۔ (16)

مسئلہ ۱۵: اسقاط حمل کے لیے دوا استعمال کرنا یا دائی سے حمل ساقط کرنا منع ہے۔ بچہ کی صورت بنی ہو یا نہ بنی ہو

دونوں کا ایک حکم ہے، ہاں اگر عذر ہو مثلاً عورت کے شیر خوار بچہ ہے اور باپ کے پاس اتنا نہیں کہ دایہ مقرر کرے یا دایہ

دستیاب نہیں ہوتی اور حمل سے دودھ خشک ہو جائے گا اور بچہ کے ہلاک ہونے کا اندیشہ ہے تو اس مجبوری سے حمل ساقط

کیا جاسکتا ہے، بشرطیکہ اس کے اعضاء نہ بنے ہوں اور اس کی مدت ایک سو بیس دن ہے۔ (17)



(16) تبیین الحقائق، کتاب النکاح، فصل فی النظر واللمس، ج ۹، ص ۴۰۔

(17) رد المحتار، کتاب النکاح، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۷۰۸، ۷۰۹۔

لہو و لعب کا بیان

اللہ عزوجل فرماتا ہے:

(وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَ يَقْتُلْهَا مُزُوءًا
أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١﴾) (1)

اور کچھ لوگ کھیل کی بات خریدتے ہیں کہ اللہ (عزوجل) کی راہ سے بہکا دیں بے سمجھے اور اسے ہنسی بنالیں، ان کے لیے ذلت کا عذاب ہے۔



(1) پ ۲۱، لکھنؤ ۶۰

اس آیت کے تحت مفسر شہیر مولانا سید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ لہو یعنی کھیل ہر اس باطل کو کہتے ہیں جو آدمی کو نیکی سے اور کام کی باتوں سے غفلت میں ڈالے، کہانیاں افسانے اسی میں داخل ہیں۔

شہ بن نزل: یہ آیت نصر بن حارث بن کلدہ کے حق میں نازل ہوئی جو تجارت کے سلسلہ میں دوسرے ملکوں میں سفر کیا کرتا تھا، اس نے عجیبوں کی کہتا ہیں خریدیں جن میں قسے کہانیاں تھیں وہ قریش کو سنانا اور کہتا کہ سید کائنات (محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) تمہیں عداد شہود کے واقعات سناتے ہیں اور میں رسم و اسفند یار اور شاہان فارس کی کہانیاں سنانا ہوں، کچھ لوگ ان کہانیوں میں مشغول ہو گئے اور قرآن پاک سننے سے رہ گئے۔ اس پر یہ آیت نازل ہوئی۔

احادیث

حدیث ۱: ترمذی و ابو داؤد اور ابن ماجہ نے عقبہ بن عامر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جتنی چیزوں سے آدمی لہو کرتا ہے، سب باطل ہیں مگر کمان سے تیر چلانا اور گھوڑے کو ادب دینا اور زوجہ کے ساتھ ملاعبت کہ یہ تینوں حق ہیں۔ (1)

حدیث ۲: امام احمد و مسلم و ابو داؤد و ابن ماجہ نے بریدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس نے زرد شیر کھیلا گو یا سور کے گوشت و خون میں اپنا ہاتھ ڈال دیا۔ (2)

(1) سنن الترمذی، کتاب فضائل الجہاد، باب ما جاء فی فضل الرمی فی سبیل اللہ، الحدیث: ۱۶۴۳، ج ۳، ص ۲۳۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۷۔ پہلے عرض کیا گیا ہے کہ لہو یعنی کھیل میں دو چیزیں ہوتی ہیں: غفلت اور لذت، غافل کرنے والا ہر عمل باطل ہے مگر لذت والا عمل تفصیل طلب ہے یہاں لہو سے مراد لذت والا عمل ہے۔

۸۔ ان تینوں پر ثواب ملتا ہے کیونکہ تیر اندازی اور گھوڑے کی سواری سے دین و ایمان کی حفاظت ہے کہ یہ تیاری جہاد ہے اور اپنی بیوی سے کھیلنے چھیڑ کرنے میں مجاہد غازی پیدا کرتا بھی ہے اور اپنی اور اپنی بیوی کی عصمت و عفت کی حفاظت بھی کہ ایسی خوش طبعی کرنے وال جوڑا ان شاء اللہ غیر عورت یا غیر مرد کی طرف رخ نہیں کرتا، بعض مردوں کی بیویاں خوبصورت ہوتی ہیں مگر وہ بد صورت رنڈیوں کی محبت میں گرفتار ہوتے ہیں، کیوں، اس لیے کہ ان کی بیویوں کو زینت و لہو نہیں آتا ورنہ رنڈی میں کیا چیز ہے جو اپنی حد دل زوجہ کے پاس نہیں۔ دل بھٹانا ایسے موقع پر عبادت ہے، قربان جائے اس تعلیم کے جس نے مسلمانوں کے گھر اور میدان جہاد دونوں بتا دیئے۔ جی جیسے یہ فن آتے ہوں پھر وہ ان کی مشق چھوڑ دے جس کی وجہ سے وہ بھول جائے تو اس نے رب تعالیٰ کی نعمت کی ناقدری کی اور وہ ناشکری کا مرتکب ہوا ہذا گتہ نگار ہوگا جیسے کوئی قرآن مجید حفظ کر کے بھول جائے سستی کی وجہ سے یوں ہی دینی علم حاصل کر کے بھول جانا بھی گناہ ہے جب کہ بنی سستی کی وجہ سے ہونعمت کی قدر چاہیے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۷۶۶)

(2) صحیح مسلم، کتاب الشعر، باب تحریم اللعاب بالنرد شیر، الحدیث: ۱۰۔ (۲۲۶۰)، ص ۱۲۳۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ذراں کے بادشاہوں میں ایک بادشاہ آرد شیر ابن تابک گزرا ہے اس نے یہ جوا ایجاد کیا۔ زرد بھٹی ہار جیت کی باد کی ارد شیر آرد شیر سے لیا گیا، اس لیے اس کھیل کا نام زرد شیر رکھا گیا یعنی ارد شیر کا جو اس کی ایجاد کردہ بازی۔ سرقات نے فرمایا کہ اس کا موجد شہر بن آرد شیر بن تابک ہے۔

دوسری روایت ابو موسیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے، کہ اس نے اللہ رسول (عز وجل) صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی نافرمانی کی۔ (3)

حدیث ۳: امام احمد نے ابو عبد الرحمن عظمیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص نزد کھلتا ہے پھر نماز پڑھنے اٹھتا ہے، اس کی مثال اس شخص کی طرح ہے جو پیپ اور سوڑ کے خون سے وضو کر کے نماز پڑھنے کھڑا ہوتا ہے۔ (4)

حدیث ۴: دیلمی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اصحاب شاہ جہنم میں ہیں، جو یہ کہتے ہیں کہ میں نے تیرے بادشاہ کو مار ڈالا۔ (5) اس سے مراد شطرنج کھیلنے والے ہیں جو بادشاہ پر شہ دیا کرتے ہیں اور مات کرتے ہیں۔

حدیث ۵: بیہقی نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، وہ فرماتے ہیں، شطرنج عجمیوں کا جوا ہے۔ اور ابن شہاب نے ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، وہ کہتے ہیں کہ شطرنج نہیں کھیلے گا مگر خطا کار۔ اور انھیں سے دوسری روایت یہ ہے کہ وہ باطل سے ہے اور اللہ تعالیٰ باطل کو دوست نہیں رکھتا۔ (6)

حدیث ۶: ابو داؤد وابن ماجہ نے ابو ہریرہ سے اور ابن ماجہ نے انس و عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ایک شخص کو کبوتری کے پیچھے بھاگتے دیکھا، فرمایا: شیطانہ کے پیچھے پیچھے شیطان جارہا ہے۔ (7)

۲۔ سور کے گوشت و خون میں ہاتھ سانا اسے نجس بھی کرتا ہے اور گھنوا عمل بھی ہے اس لیے اس سے تشبیہ دی گئی۔ خیال رہے کہ زرد شیر کی حرمت پر امت کا اجتماع ہے، شطرنج احتاف کے ہاں ممنوع ہے، شوافع کے ہاں جائز ہے بشرطیکہ اس میں مالی ہار جیت نہ ہو، نماز یا جمعہ نماز نہ جائے، کھینے والے گالی گلوچ نہ کریں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۲۱)

(3) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی النہی عن الملعب بالنرد، الحدیث: ۴۹۳۸، ج ۴، ص ۷۱۔

(4) المسند امام احمد بن حنبل، احادیث رجال من اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث: ۲۳۱۹۹، ج ۹، ص ۵۰۔

(5) کنز العمال، کتاب اللہو... الخ، رقم: ۴۰۶۳، ج ۱۵، ص ۹۵۔

(6) شعب الایمان، باب فی تحریم الملاعب والملاعی، الحدیث: ۶۵۱۸، ج ۵، ص ۲۴۱۔

(7) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الملعب بالعمام، الحدیث: ۴۹۳۰، ج ۴، ص ۷۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ کبوتر باز کو شیطان فرمایا اور کبوتر بازی کو شیطانہ کیونکہ جو چیز رب تعالیٰ سے غافل کر دے وہ بھی شیطان ہے اور غافل ہوجانے والا بھی شیطان۔ خیال رہے کہ کبوتر پالنا جائز ہے، حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی مسجد بلکہ مسجد حرام میں بہت کبوتر پٹے ہوئے ہیں، پہلے زمانہ میں

حدیث ۷: ترمذی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے چوپایوں کو لڑانے سے منع فرمایا۔ (8)

حدیث ۸: بزار نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: دو آوازیں دنیا و آخرت میں ملعون ہیں، نغمہ کے وقت باجے کی آواز اور مصیبت کے وقت رونے کی آواز۔ (9)

حدیث ۹: بیہقی نے جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ گانے سے دل میں نفاق اوگتا ہے، جس طرح پانی سے کھیتی اُگتی ہے۔ (10)

حدیث ۱۰: طبرانی نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے گانے سے اور گانا سننے سے اور غیبت سے اور غیبت سننے سے اور چغلی کرنے اور چغلی سننے سے منع فرمایا۔ (11)

حدیث ۱۱: بیہقی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا

کہوتروں سے پیغام رسانی کا کام لیا جاتا تھا مگر کبوتر بازی کرنا ممنوع ہے، ہر بازی ممنوع ہے کہ یہ نماز تلاوت بلکہ دنیاوی ضروری کاموں سے فائل کر دیتی ہے جیسے مرغ، بٹیر پالنا جائز مگر مرغ بازی، بٹیر بازی، تیر بازی اور انہیں لڑانا حرام ہے خصوصاً جب کہ اس پر مالی ہرجیت ہو کہ اب یہ جوا بھی ہے۔ ہرقات میں فرمایا کہ صرف اڑانے کے لیے کبوتر پالنا مکروہ ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۴۷)

(8) سنن الترمذی، کتاب الجہاد، باب ما جاء فی کرہیۃ التحریش بین البھائم... إلخ، الحدیث: ۱۷۱۲، ج ۳، ص ۲۷۱.

(9) مجمع الزوائد، کتاب البھائم، باب فی النوح، الحدیث: ۴۰۱۷، ج ۳، ص ۱۰۰.

(10) شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، فصل فی حفظ اللسان عن الفناء، الحدیث: ۵۱۰۰، ج ۴، ص ۲۷۹.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے یعنی مرد کا گانا خود گانے والے اور سننے والے کے دل میں منافقت پیدا کرتا ہے لہذا عورت کا گانا سننا یا عورت و مرد کامل کر گانا یا باجہ پر گانا اس سے بدتر ہے۔ عرب کہتے ہیں الفناء رقیۃ الزنا یعنی گانا زنا کا متر ہے، مراد گانے سے وہ ہی ہے جو اوپر عرض کیا۔ خوش الحانی سے نعت شریف حضرت حسان پڑھتے تھے، حضور کی تشریف آوری کے موقع پر مدینہ منورہ کی بنی نبی کی بیچوں نے گیت گئے ہیں، شادی عید کے موقع پر بیچوں کو حضور نے اچھے گیت گانے کی اجازت دی، اجنبی عورتوں سے مرد نعت بھی نہ سنیں کہ آواز میں دلکشی ہوتی ہے اسی لیے عورتوں کو اذان دینا، تکبیر کہنا، خوش الحانی سے اجنبیوں کے سامنے تلاوت قرآن کرنا سب ممنوع ہے عورت کی آواز بھی ستر ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۳۵)

(11) کنز العمال، کتاب اللغو... إلخ، رقم: ۴۰۶۵۵، ج ۱۵، ص ۹۵.

تاریخ بغداد، الرقم: ۴۳۳۷، الحکم بن مروان، ج ۸، ص ۲۲۱.

کہ اللہ تعالیٰ نے شراب اور جوا اور کوہ (ڈھول) حرام کیا اور فرمایا: ہر نشہ والی چیز حرام ہے۔ (12)

حدیث ۱۲: ابو داؤد نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہتی ہیں: میں گڑیاں کھیل کرتی تھی اور کبھی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ایسے وقت تشریف لاتے کہ لڑکیاں میرے پاس ہوتیں۔ جب حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) تشریف لاتے لڑکیاں چلی جاتیں اور جب حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) چلے جاتے لڑکیاں آ جاتیں۔ (13)

(12) السنن الکبریٰ للبیہقی، کتاب النکاح، باب ما یدل علی ردھادۃ... إلخ، الحدیث: ۲۰۹۳۳، ج ۱۰، ص ۳۶۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ شراب جوئے کی حرمت تو قرآن کریم میں صراحتاً مذکور ہے طبلہ وغیرہ باجوں کی حرمت اشارۃً بیان ہوئی کہ فرمایا "وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ" کھیل کی چیزوں میں طبلہ بھی داخل ہے۔

۲۔ نشہ آور چیز خواہ خشک ہو جیسے بھنگ جس افیون یا پتلی جیسے شراب نازی وغیرہ سب حرام ہیں اس پر تمام امت کا اجماع ہے۔ اختلاف اس میں ہے کہ شراب انگوری کے علاوہ دوسری شراہیں جد نشہ سے کم پینا حرام ہے یا نہیں، اس پر بھی اتفاق ہے کہ افیون، بھنگ، جس وغیرہ خشک نشہ آور چیزیں دواء استعمال کی جاسکتی ہیں جب کہ نشہ نہ دیں، بعض معجونوں میں افیون پڑتی ہے۔

۳۔ قاموس میں ہے کہ کوہ بضم کاف، شطرنج، زرد شیر، چھوٹا طبل، بربط غرضکہ یہ لفظ مشترک ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۴۳)

(13) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب الملعب بالبنات، الحدیث: ۴۹۳۱، ج ۴، ص ۳۶۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ بنات جمع ہے بنت کی بمعنی بچی و لڑکی، یہاں یا تو ساتھ کھیلنے والی لڑکیاں مراد ہیں تو ب بمعنی مع ہے اور یا مراد گڑیاں ہیں کہ وہ بھی بچیوں کی شکل کپڑے سے بنائی جاتی ہیں اس لیے انہیں بنات کہتے ہیں، دوسرے معنی زیادہ قوی ہیں، کیونکہ سہیلیوں کا ذکر تو آگے آ رہا ہے، یہ گڑیاں یا تو آپ اپنے میکے سے لائی تھیں یا حضور کے ہاں آ کر خود بنائی تھیں یا خود سرکار عالی نے بنوائی تھیں۔ بہر حال اس سے معلوم ہوتا ہے کہ بچیوں کے لیے گڑیاں بنانا ان سے کھیلنا جائز ہے کہ یہ دراصل ان کو سینے پر دے اور کھانا تیار کرنے کی تعلیم کا ذریعہ ہے۔

۲۔ اس حدیث کی بنا پر بعض علماء نے بچوں کے کھلونے جائز فرمائے اگرچہ وہ شکل والے ہوں لہذا تصاویر کے حکم سے وہ مجسمہ ہیں۔ متضمن قلع سے بنا بمعنی چھپ جانا، یہاں چلا جانا مراد ہے کہ چلے جانے سے بھی انسان چھپ جاتا ہے۔

۳۔ خلاصہ یہ ہے کہ محلہ کی بچیاں میرے ساتھ گڑیاں کھیتی تھیں جب سرکار عالی صلی اللہ علیہ وسلم تشریف لاتے تو وہ اپنے اپنے گھر چلی جاتیں اور جب حضور باہر تشریف لیجاتے تو ان بچیوں کو ان کے گھروں سے میرے پاس بھیج دیتے تاکہ میرے ساتھ کھیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۱۶۳)

حدیث ۱۳: صحیح بخاری و مسلم میں حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی، کہتی ہیں: میں نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے یہاں گڑیوں سے کھیلا کرتی تھی اور میرے ساتھ چند دوسری لڑکیاں بھی کھیلتیں۔ جب حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) تشریف لاتے وہ چھپ جاتیں۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) ان کو میرے پاس بھیج دیتے، وہ میرے پاس آکر کھیلنے لگتیں۔ (14)

حدیث ۱۴: ابوداؤد نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہتی ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم غزوہ تبوک یا خیبر سے تشریف لائے اور ان کے طاق پر گڑیاں تھیں اور پردہ پڑا ہوا تھا، ہوا چلی اور پردہ کا کنارہ ہٹ گیا، حضرت عائشہ (رضی اللہ تعالیٰ عنہا) کی گڑیاں دکھائی دیں۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: عائشہ یہ کیا ہیں؟ عرض کی، میری گڑیاں ہیں۔ ان گڑیوں کے درمیان میں کپڑے کا ایک گھوڑا تھا جس کے دو بازو تھے۔

حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے اس گھوڑے کی طرف اشارہ کر کے فرمایا کہ گڑیوں کے بیچ میں یہ کیا ہے؟ عرض کی، یہ گھوڑا ہے۔ ارشاد فرمایا: گھوڑے کے یہ کیا ہیں؟ عرض کی، یہ گھوڑے کے بازو ہیں۔ ارشاد فرمایا: گھوڑے کے لیے بازو۔ حضرت عائشہ (رضی اللہ تعالیٰ عنہا) نے عرض کی، کیا آپ نے نہیں سنا ہے کہ حضرت سلیمان علیہ السلام کے گھوڑوں کے بازو تھے، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے سن کر تبسم فرمایا۔ (15)

(14) صحیح بخاری، کتاب الادب، باب الانبساط الى الناس، الحدیث: ۶۱۳۰، ج ۲، ص ۱۳۲۔

صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب فی فضائل عائشہ... الخ، الحدیث: ۸۱۰۔ (۲۳۲۰)، ص ۱۳۲۵۔

(15) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب الملعب بالبنات، الحدیث: ۴۹۳۲، ج ۲، ص ۳۶۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ تبوک مدینہ منورہ، در دمشق (شام) کے درمیان ایک مشہور جگہ ہے یہ غزوہ ۹ھ میں ہوا، آخری غزوہ یہ ہی ہے۔ اسی غزوہ کا نام غزوہ عسرت یعنی سخت جنگی کا غزوہ ہے، بخاری شریف نے اسے بعد حجۃ الوداع لکھا ہے، یہ غلط ہے شاید کاتب کی غلطی ہے (مرقت)

۲۔ حنین مکہ معظمہ و طائف کے درمیان ایک جنگل کا نام ہے ذوالحجاز کے قریب ہے آج کل اسے ہل کہتے ہیں، فقیر نے طائف جاتے ہوئے اس کی زیارت کی یہ غزوہ ۸ھ میں فتح مکہ کے بعد ہوا۔

۳۔ سہوہ کا ترجمہ بعض لوگوں نے الماری کیا ہے مگر طاق نہایت صحیح کیونکہ اکثر بچیاں اپنی گڑیاں کھلونے طاقوں میں ہی رکھتی ہیں ہم پہلے عرض کر چکے ہیں کہ گڑیاں لڑکیوں کے لیے کھیل بھی ہے، تعلیم بھی اس سے وہ کھانا پکانا سینا، پرونا بخوبی سیکھ جاتی ہے۔ ام المؤمنین لڑکیوں میں ہی حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے گھر شادی ہو کر آئی تھیں۔

۴۔ حضرت ام المؤمنین نے ہوا کو حضرت سلیمان علیہ السلام کا گھوڑا قرار دیا۔ اور ظاہر ہے کہ ہوا حضرت سلیمان علیہ السلام کے علم سے ہے۔



چلتی تھی۔ رب تعالیٰ فرماتا ہے: ”ہجری پانچواں“ اسے اڑانا قرار دیا اور اس سے اپنے گھوڑے کی سند بتائی، سبحان اللہ چھوٹی عمر دور اتنا نصیر جواب، خیال رہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت عائشہ صدیقہ سے نکاح دسویں سال نبوت یعنی ہجرت سے تین سال پہلے مکہ معظمہ میں دسویں شوال کو کیا، اس وقت آپ کی عمر چھ سال تھی اور یہ غزوہ ۸ھ اور ۹ھ میں ہوئے، اگرچہ اس وقت آپ بالغہ تھیں مگر عمر یقیناً کچی تھی اسی لیے گڑیاں بناتی اور ان سے کھیلتی تھیں۔

۵۔ یعنی آپ نے میرے اس جواب پر تبسم فرمایا۔ اس سے معلوم ہوا کہ وہ عمل جائز تھا بعض علماء فرماتے ہیں ان گڑیوں اور س گھوڑے کے آنکھ تاک کان نہ تھے صرف چیتھڑوں کے مجسمہ تھے اور ان اعضاء کے بغیر تصویر نہیں کہلاتی۔ لہذا جائز تھی، بعض نے فرمایا کہ یہ واقعہ کھیل کی حرمت آنے سے پہلے کا ہے، مگر ترجیح اس کو ہے کہ بچوں کے کھلونوں کے احکام یکے ہیں۔ (اشعہ)

مسائل فقہیہ

مسئلہ ۱: نوبت بچانا اگر تفاخر کے لیے ہو تو ناجائز ہے اور اگر لوگوں کو اس سے متنبہ کرنا مقصود ہو اور نفحات صور یاد دلانے کے لیے ہو تو تین وقتوں میں نوبت بچانے کی اجازت ہے بعد عصر اور بعد عشا اور بعد نصف شب کہ ان اوقات میں نوبت کو نفع صور سے مشابہت ہے۔ (1)

(1) الدر المختار، کتاب الطہر والاباحہ، ج ۹، ص ۵۷۸۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

حضور صمدوح کے یہ ارشادات عالیہ ہمارے لیے سد کافی، اور ان اہل ہوا و ہوس مدعیان چشتیت پر حجت کافی۔ ہاں جہاد کا طبل، بحری کا نقارہ، حمام کا بوق، اعلان نکاح کا بے جلاجل دف جائز ہیں کہ یہ آلات لہو و لعب نہیں، بویں یہ بھی ممکن کہ بعض بندگان خدا جو ظلمات نفس و کدورات شہوت سے یک لخت بری و منزہ ہو کر فانی فی اللہ و باقی باللہ ہو گئے کہ یتلوا یقولون الا اللہ ولا یسبحون الا اللہ ہل لا یعلمون الا اللہ ہل لیس ہذا اللہ۔ وہ اللہ تعالیٰ کے سوا کچھ نہیں کہتے، اللہ تعالیٰ کے سوا کچھ نہیں سنتے، بلکہ اللہ تعالیٰ کے بغیر کچھ نہیں جانتے بلکہ وہاں صرف اللہ تعالیٰ ہی جلوہ گر ہوتا ہے۔ (ت)

ان میں کسی نے بحالت غلبہ حال خواہ میں الشریعہ الکبریٰ تک پہنچ کر از انجا کہ ان کی حرمت بعینہا نہیں،

وامما الاعمال بالنیات و انما للکل امر ممانوی۔

اعمال کا دار و مدار ارادوں پر ہوتا ہے اور ہر شخص کے لیے وہی کچھ ہے جس کا اس نے ارادہ کیا، (ت)

(۱) صحیح البخاری باب کیف کان بدء الوحی الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۲

بعد وثوق تام و اطمینان کامل کہ حالاً و مالا فتنہ منعدم احیانا اس پر اقدام فرمایا ہو، ولہذا فاضل محقق آفندی شامی قدس اللہ تعالیٰ سرہ السامی رد المحتار میں زیر قول در مختار: ومن ذلك (ای من الملاحی) ضرب النوبۃ للتفاخر فلو للتنبیہ

فلا پاس بہ کما اذا ضرب فی ثلاثۃ اوقات لتذکیر ثلاث نفحات الصور ۲۔ الخ

اسی سے یعنی آلات لہو میں سے فخریہ طور پر نوبت بچانا بھی ہے لیکن اگر ہوشیار کرنے کے لیے بجائی جائے تو کوئی حرج نہیں۔ جیسا کہ تین اوقات میں یا تین دفعہ نوبت بجائی جائے تاکہ صور اسرائیل کے تین دفعہ پھونکنے کی یاد تازہ ہو الخ (ت)

(۲) در مختار کتاب الطہر والاباحہ مطبع مجتبائی دہلی ۲/۲۳۸

فرماتے ہیں:

هذا یفید ان الہو لیست محرمة لعینہا بل لقصد اللہ منها اما من سامعها او من المشتغل بہا وہ ←

یہ نیت بہت اچھی ہے اگر نوبت بجوانے والے کو بھی اس کا دھیان ہو اور کاش سننے والے کو بھی نوبت کی آواز سن کر نفحات صور یاد آئیں، مگر اس زمانہ میں ایسے لوگ کہاں، یہاں تو نوبت سے مقصود دھوم دھام اور شادی بیاہ کی رونق، زینت ہے۔

مسئلہ ۲: عید کے دن اور شادیوں میں دف بجانا جائز ہے جبکہ سادے دف ہوں، اس میں جھانج نہ ہوں اور قواعد موسیقی پر نہ بجائے جائیں یعنی محض ڈھپ ڈھپ کی بے سری آواز سے نکاح کا اعلان مقصود ہو۔ (2)

مسئلہ ۳: لوگوں کو بیدار کرنے اور خبردار کرنے کے ارادہ سے بگل بجانا جائز ہے، جیسے حمام میں بگل اس لیے بجاتے ہیں کہ لوگوں کو اطلاع ہو جائے کہ حمام کھل گیا۔ رمضان شریف میں سحری کھانے کے وقت بعض شہ روں میں نقارے بجتے ہیں، جن سے یہ مقصود ہوتا ہے کہ لوگ سحری کھانے کے لیے بیدار ہو جائیں اور انھیں معلوم ہو جائے کہ ابھی سحری کا وقت باقی ہے یہ جائز ہے، کہ یہ صورت لہو و لعب میں داخل نہیں۔ (3)

اسی طرح کارخانوں میں کام شروع ہونے کے وقت اور ختم کے وقت سیٹی بجا کرتی ہے یہ جائز ہے، کہ لہو مقصود نہیں بلکہ اطلاع دینے کے لیے یہ سیٹی بجائی جاتی ہے۔ اسی طرح ریل گاڑی کی سیٹی سے بھی مقصود یہی ہوتا ہے کہ لوگوں کو

تشعر الاضافة الاتری ان ضرب تلك الالة بعینہا حل تارة وحرمة اخرى باختلاف النية بساعها والامور بمقاصدها وفيه دليل لساداتنا الصوفية الذين يقصدون بساعها امورا هم اعلم بها فلا يبادر المعترض بالانكار كي لا يحرم برکتهم فانهم السادة الاخيار امدان الله تعالى بامدادتهم واعاد علينا من صالح دعواتهم وبركاتهم۔ (۱) رد المحتار کتاب الحظر والاباحۃ فصل البیع دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/ ۲۲۳

یہ بات فائدہ دیتی ہے کہ آلہ لہو بعینہ (بالذات) حرام نہیں بلکہ ارادہ و عمل لہو کی وجہ سے حرام ہے خواہ یہ سامع کی طرف سے ہو یا اس سے مشغول ہونے والے کی طرف سے ہو، "اضافت" سے یہی معلوم ہوتا ہے، کیا تم دیکھتے نہیں کہ کبھی اس آلہ لہو کو بعینہ بجانا اور استعمال کرنا حلال ہوتا ہے اور کبھی حرام، اور اس کی وجہ اختلاف نیت ہے، پس کاموں کے جائز اور ناجائز ہونے کا دار و مدار ان کے مقاصد پر مبنی ہوتا ہے، اس میں ہر سے سادات صوفیہ کی دلیل موجود ہے کہ وہ سماع سے ایسے رموز کا ارادہ رکھتے ہیں کہ جن کو وہ خود بھی اچھی طرح جانتے ہیں لہذا اعتراض کرنے والا انکار کرنے میں جلدی نہ کرے کہیں ایسا نہ ہو کہ ان کی برکت سے محروم ہو جائے، کیونکہ وہ پسندیدہ سادات ہیں پس ان کی امداد سے اللہ تعالیٰ ہماری مدد فرمائے، اور ان کی نیک دعاؤں اور برکات کا ہم پر اعادہ فرمائے یعنی انھیں ہم پر لوٹا دے۔ (ت)

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۷۹، ۸۱، رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(2) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، ج ۹، ص ۵۷۹۔

والفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب السابع عشر فی الغناء، ج ۵، ص ۳۵۲۔

(3) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، ج ۹، ص ۵۷۹۔

معلوم ہو جائے کہ گاڑی چھوٹ رہی ہے یا اسی قسم کے دوسرے صحیح مقصد کے لیے سیٹی دی جاتی ہے یہ بھی جائز ہے۔
مسئلہ ۴: گنجدہ (4)، چوسر (5) کھیلنا ناجائز ہے، شطرنج کا بھی یہی حکم ہے۔ اسی طرح لہو و لعب کی جتنی قسمیں ہیں سب باطل ہیں صرف تین قسم کے لہو کی حدیث میں اجازت ہے، بی بی سے ملاعبت اور گھوڑے کی سواری اور تیر اندازی کرنا۔ (6)

مسئلہ ۵: ناچنا، تالی بجانا، ستار، ایک تارہ، دو تارہ، ہارمونیم، چنگ، طنبورہ بجانا، اسی طرح دوسرے قسم کے باجے سب ناجائز ہیں۔ (7)

مسئلہ ۶: متصوفہ زمانہ کہ مزامیر کے ساتھ قوالی سنتے ہیں اور کبھی اوچھلتے کودتے اور ناچنے لگتے ہیں اس قسم کا گانا بجانا ناجائز ہے، ایسی محفل میں جانا اور وہاں بیٹھنا ناجائز ہے، مشائخ سے اس قسم کے گانے کا کوئی ثبوت نہیں۔ جو چیز مشائخ سے ثابت ہے وہ فقط یہ ہے کہ اگر کبھی کسی نے ان کے سامنے کوئی ایسا شعر پڑھ دیا جو ان کے حال و کیف کے موافق ہے تو ان پر کیفیت و رقت طاری ہوگئی اور بے خود ہو کر کھڑے ہو گئے اور اس حال و رفتگی میں ان سے حرکات غیر اختیار یہ صادر ہوئے، اس میں کوئی حرج نہیں۔

مشائخ و بزرگان دین کے احوال اور ان متصوفہ کے حال و قال میں زمین آسمان کا فرق ہے، یہاں مزامیر کے ساتھ محفلیں منعقد کی جاتی ہیں، جن میں فساق و فجار کا اجتماع ہوتا ہے، نااہلوں کا مجمع ہوتا ہے، گانے والوں میں اکثر بے شرع ہوتے ہیں، تالیاں بجاتے اور مزامیر کے ساتھ گاتے ہیں اور خوب اچھلتے کودتے ناچتے تھرکتے ہیں اور اس کا نام حال رکھتے ہیں ان حرکات کو صوفیہ کرام کے احوال سے کیا نسبت، یہاں سب چیزیں اختیاری ہیں وہاں بے اختیاری تھیں۔ (8)

(4) یعنی ایک کھیل کا نام جو تاش کی طرح کھیلا جاتا ہے، اس میں 96 پے اور آٹھ رنگ ہوتے ہیں اور تین کھلاڑی کھیلتے ہیں۔

(5) یعنی نزد شیر (چوسر) ایک کھیل ہے، ایک بادشاہ اور شیر بن بابک نے یہ جو ایجاد کیا تھا۔

(6) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البيع، ج ۹، ص ۶۵۰، وغیرہ۔

(7) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البيع، ج ۹، ص ۶۵۱۔

(8) الفتاویٰ المصنوعہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السابع عشر فی الخفاء، ج ۵، ص ۳۵۲۔

اصل حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں
مسئلہ نص شارع علیہ الصلوٰۃ والسلام سے لیا جائے گا یا فقہ امام مجتہد رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اگر نص شارع صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ارکار ہے تو مزامیر کی حرمت میں احادیث کثیرہ بالغ بعد تواتر وارد ہیں ازاں جملہ اجل و اعلیٰ حدیث صحیح بخاری شریف ہے کہ حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

مسئلہ ۷: کبوتر پالنا اگر اڑانے کے لیے نہ ہو تو جائز ہے اور اگر کبوتروں کو اڑاتا ہے تو ناجائز کہ یہ بھی ایک قسم کا لہو

لیکونن من امعی اقوام لیستعلون الحرو والحریرو والخمر والمعازف۔ ۱۔

ضرور میری امت میں وہ لوگ ہونے والے ہیں جو حلال ٹھہرائیں گے عورتوں کی شرمگاہ یعنی زنا اور ریشمی کپڑوں اور شراب اور باجوں کو۔

(۱۔ صحیح البخاری کتاب الاثر بہ باب ماجاء فیمن یستحل الخمر قدیمی کتب خانہ کراچی ۳/۸۳۷)

حدیث صحیح جلیل متصل،

وقد اخرجہ ایضاً احمدؒ و ابو داؤد و ابن ماجہ و الاسماعیلی و ابو نعیم ہاسانید صحیحۃ لا مطعن فیہا و صحیحہ جماعۃ اخرون من الائمة کما قال بعض الحفاظ قالہ الامام ابن حجر فی کف الرعاع ۳۔

نیز امام احمد، ابو داؤد، ابن ماجہ، محدث اسماعیل اور ابو نعیم نے اسے صحیح اسناد کے ساتھ کہ جن میں کوئی طعن نہیں اس کی تخریج فرمائی، اور ائمہ کی ایک دوسری جماعت نے اس کو صحیح قرار دیا جیسا کہ بعض حفاظ نے کہا ہے، چنانچہ امام ابن حجر نے کف الرعاع میں فرمایا ہے (ت)

(۲۔ مسند امام احمد بن حنبل عن ابی امامہ الکتب الاسلامی بیروت ۵/۲۵۷ و ۲۶۸) (۳۔ کف الرعاع القسم الثالث عشر تہیہ ثانی دار الکتب العلمیہ بیروت ص ۱۳۲ و ۱۳۳)

احادیث صحاح مرفوعہ کلمہ کے مقابل بعض ضعیف قہے یا محتمل واقعے یا تشابہ پیش نہیں ہو سکتے ہر عاقل جانتا ہے کہ صحیح کے سامنے ضعیف، متعین کے آگے محتمل، محکم کے حضور تشابہ واجب ترک ہے، پھر کہاں قول کہاں حکایت فعل، پھر کجا محرم کجا مباح، ہر طرح یہی واجب العمل، اسی کو ترجیح، اور اگر فقہ مطلوب ہے تو خود امام مذہب امام اعظم امام الائمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ارشاد اور ہدایہ جیسی اعلیٰ درجہ معتد کتاب کا ارشاد کافی دوائی:

دلت النسأۃ علی ان البلاہی کلہا حرام حتی التغنی لضرب القضیب و کذا قول ابی حنیفۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ابتلیت لان الابتلاء بالمحرم یکون۔ ۱۔

مسئلہ اس پیدائش کرتا ہے کہ کھیل کود کے تمام سامان حرام ہیں حتیٰ کہ (کسی چیز پر) کالے کی ضرب کا کرگانا (یہ بھی زمرہ حرمت میں داخل ہے) اور اسی طرح امام اعظم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا یہ ارشاد کہ میں اس میں مبتلا کیا گیا اس لئے کہ ابتلا حرام میں ہوا کرتی ہے۔ (ت)

(۱۔ الہدایۃ کتاب الکربیۃ فصل فی الذکل والشرب مطبع یوسفی لکھنؤ ۴/۲۵۳)

غرض یہ بیٹ و فقہ کا حکم تو یہ ہے ہاں اگر کسی کو قصداً ہوس پرستی منظور ہو تو اس کا علاج کس کے پاس ہے کاش آدمی گناہ کرے اور گناہ جانے قرار لائے اصرار سے باز آئے لیکن یہ تو اور بھی سخت ہے کہ ہوس بھی پالے اور الزام بھی نالے اپنے حرام کو حلال بنالے۔ پھر ہی پرہیز نہیں بلکہ مہذا اللہ اس کی تہمت محبوب الہی سیدی و مولائی نظام الحق ولذین سلطان الاولیاء رضی اللہ تعالیٰ عنہ و عنہم فواہم شریف میں فرماتے ہیں:

مزہیر حرام ست ۲۔ (۲۔ فواہم الفواد)

ہے اور اگر کبوتر اڑانے کے لیے چھت پر چڑھتا ہے جس سے لوگوں کی بے پردگی ہوتی ہے یا اڑانے میں کنکریاں پھینکتا

(گائے بھانے کے آلات کا استعمال کرنا حرام ہے۔ ت)

مولانا فخر الدین زراوی خلیفہ حضور سیدنا محبوب الہی رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے حضور کے زمانہ مبارک میں خود حضور کے حکم اہکم سے مسئلہ سماع میں رسالہ کشف القناع عن اصول السماع تحریر فرمایا اس میں صاف ارشاد ہے کہ:

اما سماع مشائخنا رضی اللہ تعالیٰ عنہم فدرہی عن ہذہ التہمة وهو مجرد صوت القوال مع الاشعار المشعرۃ من کمال صدعۃ اللہ تعالیٰ۔ ۳

ہاں یہ مشائخ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کا سماع اس مزامیر کے بہتان سے بری ہے وہ صرف قوال کی آواز ہے ان اشعار کے ساتھ جو کمال صنعت الہی سے خبر دیتے ہیں۔ (۳ کشف القناع عن اصول السماع)

لہ انصاف اس امام جلیل خاندان عالی چشت کا یہ ارشاد مقبول ہوگا یا آج کل مدعیان خامکار کی تہمت بے بنیاد ظاہرۃ الفساد ولاحول ولا قوۃ الا باللہ العظیم (جس کا نساد واضح ہے۔ گناہوں سے بچنے اور بھلائی کرنے کی طاقت کسی میں نہیں مگر اللہ تعالیٰ بلند مرتبہ بزرگ قدر کی توفیق عطا کرنے سے۔ ت)

سیدی مولانا محمد بن مبارک بن محمد علوی کرمانی مرید حضور پر نور شیخ العالم فرید الحق والدین شیخ شکر و خلیفہ حضور سیدنا محبوب الہی رضی اللہ تعالیٰ عنہم کتاب مستطاب سیر الاولیاء میں فرماتے ہیں: حضرت سلطان المشائخ قدس سرہ العزیز فرمود کہ چند چیزیں باید تا سماع مباح شود مسمع و مستمع و آلہ سماع مسمع یعنی گویندہ مرد تمام باشد کو دک باشد و محورت باشد و مستمع آنکہ می شنود از یا حق خالی نباشد و مسوع آنچہ بگویند نفس و مسفرگی نباشد و آلہ سماع مزامیرست چوں چنگ و رباب و مثل آں سے باید کہ در میان نباشد ایں چنین سماع حلال ست۔ ۱

سلطان المشائخ قدس سرہ العزیز نے ارشاد فرمایا چند اشیاء ہوں تو سماع جائز اور مباح ہوں (۱) مسمع (سنانے والا)، (۲) مستمع (سننے والا)، (۳) مسوع (جو کچھ سنا جائے)، (۴) آلات سماع۔ تفصیل: مسمع یعنی سنانے اور کہنے والا بالغ مرد ہو بچہ اور عورت نہ ہو۔ مستمع یعنی سننے والا جو کچھ سننے یا حق سے خالی نہ ہو، مسوع، جو کچھ نہیں اور کہیں اس میں نفس گوئی اور مسفرہ پن نہ ہو، اور آلات سماع مزامیر ہیں جیسے سارنگی اور رباب وغیرہ۔ چاہئے یہ کہ وہ درمیان میں نہ ہوں۔ پس اس طرح کی قوالی (سماع) جائز اور حلال ہے۔ (ت)

(۱) سیر الاولیاء باب خیم در بیان سماع و وجد مؤسسۃ انتشارات اسلامی لاہور ص ۵۲-۵۱)

مسند نو! یہ فتویٰ ہے سرور و سردار سلسلہ عالیہ چشت حضرت سلطان الاولیاء رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا۔ کیا اس کے بعد بھی مفتریوں کو منہ دکھانے کی گنجائش ہے۔

نیز سیر الاولیاء شریف میں ہے: یکے بعد مت حضرت سلطان المشائخ عرضداشت کہ دریں روز ہا بعضے از درویشاں آستانہ دار در مجمعے کہ چنگ و رباب و مزامیر بود رقص کردند فرمود نیکو نہ کردہ اندانچہ نامشروع است تا پسندیدہ است بعد ازاں یکے گفت چوں یں طائفہ ازاں مقام ہیروں آمدند با ایشان گفتند کہ شما چہ کردید در اں جمع مزامیر بود سماع چگونہ شنید در قص کردید ایشان جواب دادند کہ ما چنان مستغرق سماع بودیم کہ

ہے جن سے لوگوں کے برتن ٹوٹنے کا اندیشہ ہے، تو اس کو سختی سے منع کیا جائے گا اور سزا دی جائے گی اور اس پر بھی نہ

نہایتیم کہ اس جرمز امیرست یا نہ، حضرت سلطان المشائخ فرمود اس جواب ہم چیزے نیست اس سخن در ہر معصیہا بیاید۔

ایک خادم نے سلطان المشائخ کی بارگاہ میں عرض کیا کہ ان دنوں آستانے کے بعض درویشوں نے اس مجلس اور محفل میں ناچ کیا ہے جہاں کہ تسماع چنگ ورباب اور سارنگی و مزامیر وغیرہ تھے تو ارشاد فرمایا انہوں نے اچھا نہیں کیا کیونکہ جو کام ناجائز ہے وہ پسندیدہ نہیں ہو سکتا۔ اس کے بعد ایک کہنے لگا کہ جب یہ لوگ اس حالت سے فارغ ہوئے تو لوگوں نے ان سے پوچھا کہ یہ تم نے کیا کیا ہے، اس محفل میں تو مزامیر بھی تھے پھر تم نے قوالی بھی سنی اور ناچتے بھی رہے۔ انہوں نے جواباً بتایا کہ ہم تسماع میں اس قدر مستغرق (ڈوبے ہوئے) تھے کہ ہمیں پتہ ہی نہیں چلا کہ مزامیر بھی ہیں یا نہیں۔ اس پر سلطان المشائخ نے فرمایا کہ یہ کوئی معقول جواب نہیں اس لئے کہ یہ بہانہ تو تمام گنہوں میں ملوث ہونے والے کر سکتے ہیں۔ (ت)

(۱) میرالاولیاء باب خیم در بیان سماع و وجد موسسۃ انتشارات اسلامی لاہور ص ۳۱-۵۳۰

مسلمانو! کیسا صاف ارشاد ہے کہ مزامیر ناجائز ہے اور اس عذر کا کہ ہمیں استغراق کے باعث مزامیر کی خبر نہ ہوئی کیا مسکت جواب عطا فرمایا کہ ایسا حیلہ ہر گناہ میں چل سکتا ہے۔ شراب پئے اور کہہ دے شدت استغراق کے باعث ہمیں خبر نہ ہوئی کہ شراب ہے یا پانی۔ زنا کرے اور کہہ دے غلبہ حال کے سبب تمیز نہ ہوئی کہ جردا ہے یا بیگانی۔

اسی میں ہے: حضرت سلطان المشائخ فرمود من منع کردہ ام کہ مزامیر و حرمت در میان نباشد و دریں باب بسیار غلو کرتا بحدیکہ گفت اگر امام را سہو افتد مرد ہتسبغ اعلام و ہدوزن سبحان اللہ گوید زیرا کہ نشاید آواز آں شنودن پس چکند پشت دست بر کف دست زند و کف دست بر کف دست زند کہ آں بلہو میماند تا ایں غایت از بلائی و امثال آں پرہیز آمدہ است پس در سماع طریق اولی کہ ازیں ہایت نباشد یعنی در منع دستک چندیں احتیاط آمدہ است پس در سماع مزامیر بطریق اولی منع است ۲۔ اھ باختصار

حضرت سلطان المشائخ نے ارشاد فرمایا کہ میں نے منع کیا ہے کہ مزامیر حرمت در میان میں نہ ہوں اور اس سلسلے میں اس قدر تعدی (شدت) فرمائی کہ ارشاد فرمایا امام اگر نماز میں بھول جائے تو مرد سبحان اللہ کہہ کر آگاہ کر سکتا ہے مگر عورت کو اس طرح کہنا جائز نہیں کیونکہ اس کی آواز نہیں سنی جانی چاہئے اس کے لئے یہ ہدایت اور حکم ہے کہ وہ اپنے ایک ہاتھ کی پشت پر دوسرے ہاتھ کی پھیلی مارے لیکن ہتھیلی کو ہتھیلی پر نہ مارے کیونکہ یہ عمل لہو میں شمار ہوتا ہے یعنی تالی بجانا، پس اندازہ کر لیا جائے کہ کس حد تک کھیل کود اور لغو کلام سے پرہیز کی ہدایت و رد ہوئی ہے پس سماع میں بطریق اولی منع ہے یعنی تالی بجانے سے بھی ممانعت ہے لہذا مزامیر کے ساتھ قوالی کرنا اس سے زیادہ شہ اور ممنوع ہے ۲۔ باختصار (ت) (۲) میرالاولیاء باب خیم در بیان سماع و وجد موسسۃ انتشارات اسلامی لاہور ص ۵۳۲

مسلمانو! جو ائمہ طریقت اس درجہ احتیاط فرمائیں کہ تالی کی صورت کو ممنوع بتائیں وہ اور معاف اللہ مزامیر کی تہمت اللہ انصاف کیسا ضبط ہے ربط ہے۔ اللہ تعالیٰ اتباع شیطان سے بچائے اور ان سچے محبوبان خدا کا سچا اتباع عطا فرمائے آمین الحق آمین بجا محمد عندک آمین والحمد للہ رب العالمین (آمین) اے سچے معبود! تیری بارگاہ میں جو ان کا مقام و مرتبہ ہے اس کے طفیل دعا قبول فرما۔ اور سب تعریف ←

مانے تو حکومت کی جانب سے اس کے کبوتر ذبح کر کے اسی کو دے دیے جائیں، تاکہ اڑانے کا سلسلہ ہی منقطع ہو جائے۔ (9)

اس خدا کے لئے ہے جو تمام جہانوں کا پروردگار ہے۔ (ت) کلام یہاں طویل ہے اور انصاف دوست کو اسی قدر کافی، واللہ العالی، واللہ تعالیٰ اعلم: (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۱۱۷، ۱۱۸ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(9) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۶۱۔

اعلیٰ حضرت، امام المسند، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

پرایا کبوتر پکڑنا حرام ہے اور اس کا فاعل فاسق و غاصب و ظالم ہے بلکہ خالی کبوتر اڑانے والا کہ اوروں کے کبوتر نہیں پکڑتا مگر اپنے کبوتر اڑانے کو ایسی بلند چھتوں پر چڑھتا ہے جس سے مسلمانوں کی بے پردگی ہوتی ہے یا ان کے اڑانے کو کنکریاں پھینکتا ہے جن سے لوگوں کو مالی یا جسمانی ضرر پہنچتا ہے اس کے لئے بھی شرع مطہر میں حکم ہے کہ اسے نہایت سختی سے منع کیا جائے تعزیر دی جائے، اس پر بھی نہ مانے تو احتساب شرعی کا عہدہ دار اس کے کبوتر ذبح کر کے اس کے سامنے پھینک دے۔

در مختار میں ہے:

يَكْرَهُ امْسَاكُ الْحَمَامَاتِ وَلَوْ فِي بُرْجِهَا اِنْ كَانَ يَضُرُّ بِالنَّاسِ بِنَظَرٍ اَوْ جَلْبٍ، فَاِنْ كَانَ يَطِيرُهَا فَوْقَ السُّطْحِ مَطْلَعًا عَلٰى عَوْرَاتِ الْمُسْلِمِينَ وَيَكْسِرُ زُجَاجَاتِ النَّاسِ يَرْمِيهِ تِلْكَ الْحَمَامَاتِ عِزْرٌ وَمَنْعٌ اَشَدُّ الْمَنْعِ، فَاِنْ لَمْ يَمْتَنِعْ ذُبِحَهَا الْمَحْتَسِبُ، وَصَرَحَ فِي الْوَهْبَانِيَةِ بِوُجُوبِ التَّعْزِيرِ وَذَبْحِ الْحَمَامَاتِ وَلَمْ يَقْبِضْ بِمَا مَرُّوْا لَعَلَّهٗ اَعْتَمَدَ عَادَتَهُمَا اَلْـ

کبوتر رکھنا اگرچہ اپنے برجوں میں ہوں مگر وہ ہے جبکہ کبوتر باز کے لوگوں کے گھروں میں نظر کرنے یا دوسروں کے کبوتر اپنے کبوتروں میں ملانے کے سبب ہے لوگوں کو ضرر پہنچے، اور اگر چھت پر چڑھ کر کبوتر اڑاتا ہے جس سے مسلمانوں کی بے پردگی ہوتی ہے یا کنکریاں پھینکتا ہے جس سے لوگوں کے برتن اور شیشے ٹوٹ جاتے ہیں تو اسے تعزیر کی جائے، اگر باز نہ آئے تو حاکم محاسب اس کے کبوتروں کو ذبح کر دے۔

صاحب وہبانیہ نے مطلقاً وجوب تعزیر اور کبوتر کو ذبح کر دینے کی تصریح کی ہے لوگوں کی بے پردگی کی قید کا ذکر نہیں کیا، شاید انہوں نے لوگوں کی عادت پر اعتماد کرتے ہوئے اس قید کو ترک کیا ہے۔ (ت)

(۱) در مختار کتاب الحظر والاباحۃ فصل فی البیع مطبع مجتہبی دہلی ۲/۲۳۹)

اقول: بلکہ ان کا خالی اڑانا کہ نہ کسی کی بے پردگی ہو نہ کنکریوں سے نقصان، خود کب ظلم شدید سے خالی ہے جبکہ رواج زمانہ کے طور پر ہو کہ کبوتروں کو اڑاتے ہیں اور ان کا دم بڑھانے کے لئے (جس میں اصلاً دینی یا دنیوی نفع نہیں فیصدی کا خیال کہ اگلے زمانہ میں تحاب خوب وخیل وافس نہ ہو گیا ہے نہ ہرگز یہ ان جہال کا مقصود، نہ کبھی ان سے یہ کام کوئی لیتا ہے) محض بے فائدہ اپنے بیہودہ بے معنی شوق کے واسطے انہیں اترنے نہیں دیتے وہ تھک تھک کے نیچے گرتے یہ بار بار کر پھر اڑا دیتے ہیں صبح کا دانہ دیر تک کی محنت شاقہ پر دواز سے ہضم ہو گیا بھوک سے بیتاب ہیں اور یہ غل چاکر بانس دکھا کر آنے نہیں دیتے خالی معدے شہر ٹھکے اور کسی طرح نیچے اترنے، دم لینے دانہ سے

مسئلہ ۸: جانوروں کو لڑانا مثلاً مرغ، شیر، تیر، مینڈھے، بھینسے وغیرہ کہ ان جانوروں کو بعض لوگ لڑاتے ہیں۔
حرام ہے (10) اور اس میں شرکت کرنا یا اس کا تماشہ دیکھنا بھی ناجائز ہے۔

مسئلہ ۹: آم کے زمانے میں نوروز (یعنی خوشی کا دن) کرنے نو جوان لڑکے باغوں میں جاتے ہیں اور بعد میں چھلکے گھٹلی سے کھیلتے ہیں، اس میں حرج نہیں۔ (11)

مسئلہ ۱۰: کشتی لڑنا اگر لہو و لعب کے طور پر نہ ہو بلکہ اس لیے ہو کہ جسم میں قوت آئے اور کفار سے لڑنے میں کام دے، یہ جائز و مستحسن و کار ثواب ہے بشرطیکہ ستر پوشی کے ساتھ ہو۔ آج کل برہنہ ہو کر صرف ایک لنگوٹ یا جاگلہ پہن کر لڑتے ہیں کہ ساری رانیں کھلی ہوتی ہیں یہ ناجائز ہے۔ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے رکنا سے کشتی لڑی اور تین مرتبہ پچھاڑا، کیونکہ رکنا نے یہ کہا تھا کہ اگر آپ مجھے پچھاڑ دیں تو ایمان لاؤں گا پھر یہ مسلمان ہو گئے۔ (12)

مسئلہ ۱۱: ہنسی مذاق میں اگر بیہودہ باتیں، گالی گلوچ اور کسی مسلم کی ایذا رسانی (یعنی مسلمان کو تکلیف دینا) نہ ہو محض پر لطف اور دل خوش کن باتیں ہوں جن سے اہل مجلس کو ہنسی آئے اور خوش ہوں، اس میں حرج نہیں۔ (13)

پانی سے اوسان ٹھکانے کرنے کا حکم نہیں۔ یہاں تک کہ گھنٹوں اور گھنٹوں سے پہروں انہیں

اسی عذاب شدید میں رکھتے ہیں، یہ خود کیا کم ظلم ہے اور ظلم بھی بے زبان بے گناہ جانور پر کہ آدمیوں کی ضرر رسانی سے کہیں سخت تر ہے، کی سیأتی و کان هذا ان شاء اللہ تعالیٰ ملحظ اطلاق العلامة ابن وہبان واللہ المستعان۔ جیسا کہ عنقریب آئے گا، اور گویا کہ یہ ان شاء اللہ تعالیٰ علامہ ابن وہبان کے اطلاق میں ملحوظ ہے اور اللہ تعالیٰ سے ہی مدد و طلب کی جاتی ہے (ت) بے درد کو پرانی معیبت نہیں معلوم ہوتی اپنے اوپر قیاس کر کے دیکھیں اگر کسی عالم کے پالے پڑیں کہ وہ میدان میں ایک دائرہ کھینچ کر گھنٹوں ان سے کاوا کاٹنے کو کہے یہ جب ٹھکیں پست ہو کر رکیں، کوڑے سے خبر لے، ان کا دم چڑھ جائے، جان تھک جائے، بھوک پیاس بچد ستائے، مگر وہ کوڑائے تیار ہے کہ رکے نہیں دیتا، اس وقت ان کو خبر ہو کہ ہم بے زبان جانور پر کیسا ظلم کرتے تھے، دنیا گزشتی ہے، یہاں احکام شرع جاری نہ ہونے سے خوش نہ ہوں ایک دن انصاف کا آنے والا ہے جس میں شاہد بکری سے منڈی بکری کا حساب لیا جائے گا حالانکہ روزِ غیر مکلف ہے تو تم مکلفین کہ تمہارے ہی لئے ثواب و عذاب جنت و جہنم تیار ہوئے ہیں کس گھمنڈ میں ہو وہاں اگر نار سقر میں کار کاٹو۔

وہاں جزاء وفاقا۔ (۱) القرآن الکریم ۷۸/۲۶

(پوری پوری جزا۔ ت) ہے تو اس وقت کے لئے حدیث مہیا کر رکھو، (فتاویٰ رضویہ، جلد ۱۶، ص ۳۰۹، ۳۱۱، ۳۱۲، ۳۱۳، ۳۱۴، ۳۱۵، ۳۱۶، ۳۱۷، ۳۱۸، ۳۱۹، ۳۲۰، ۳۲۱، ۳۲۲، ۳۲۳، ۳۲۴، ۳۲۵، ۳۲۶، ۳۲۷، ۳۲۸، ۳۲۹، ۳۳۰، ۳۳۱، ۳۳۲، ۳۳۳، ۳۳۴، ۳۳۵، ۳۳۶، ۳۳۷، ۳۳۸، ۳۳۹، ۳۴۰، ۳۴۱، ۳۴۲، ۳۴۳، ۳۴۴، ۳۴۵، ۳۴۶، ۳۴۷، ۳۴۸، ۳۴۹، ۳۵۰، ۳۵۱، ۳۵۲، ۳۵۳، ۳۵۴، ۳۵۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۵۸، ۳۵۹، ۳۶۰، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۶۳، ۳۶۴، ۳۶۵، ۳۶۶، ۳۶۷، ۳۶۸، ۳۶۹، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵۴۰، ۵۴۱، ۵۴۲، ۵۴۳، ۵۴۴، ۵۴۵، ۵۴۶، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱۳۴۰، ۱۳۴۱، ۱۳۴۲، ۱۳۴۳، ۱۳۴۴، ۱۳۴۵، ۱۳۴۶، ۱۳۴۷، ۱۳۴۸، ۱۳۴۹، ۱۳۵۰، ۱۳۵۱، ۱۳۵۲، ۱۳۵۳، ۱۳۵۴، ۱۳۵۵، ۱۳۵۶، ۱۳۵۷، ۱۳۵۸، ۱۳۵۹، ۱۳۶۰، ۱۳۶۱، ۱۳۶۲، ۱۳۶۳، ۱۳۶۴، ۱۳۶۵، ۱۳۶۶، ۱۳۶۷، ۱۳۶۸، ۱۳۶۹، ۱۳۷۰، ۱۳۷۱، ۱۳۷۲، ۱۳۷۳، ۱۳۷۴، ۱۳۷۵، ۱۳۷۶، ۱۳۷۷، ۱۳۷۸، ۱۳۷۹، ۱۳۸۰، ۱۳۸۱، ۱۳۸۲، ۱۳۸۳، ۱۳۸۴، ۱۳۸۵، ۱۳۸۶، ۱۳۸۷، ۱۳۸۸، ۱۳۸۹، ۱۳۹۰، ۱۳۹۱، ۱۳۹۲، ۱۳۹۳، ۱۳۹۴، ۱۳۹۵، ۱۳۹۶، ۱۳۹۷، ۱۳۹۸، ۱۳۹۹، ۱۴۰۰، ۱۴۰۱، ۱۴۰۲، ۱۴۰۳، ۱۴۰۴، ۱۴۰۵، ۱۴۰۶، ۱۴۰۷، ۱۴۰۸، ۱۴۰۹، ۱۴۱۰، ۱۴۱۱، ۱۴۱۲، ۱۴۱۳، ۱۴۱۴، ۱۴۱۵، ۱۴۱۶، ۱۴۱۷، ۱۴۱۸، ۱۴۱۹، ۱۴۲۰، ۱۴۲۱، ۱۴۲۲، ۱۴۲۳، ۱۴۲۴، ۱۴۲۵، ۱۴۲۶، ۱۴۲۷، ۱۴۲۸، ۱۴۲۹، ۱۴۳۰، ۱۴۳۱، ۱۴۳۲، ۱۴۳۳، ۱۴۳۴، ۱۴۳۵، ۱۴۳۶، ۱۴۳۷، ۱۴۳۸، ۱۴۳۹، ۱۴۴۰، ۱۴۴۱، ۱۴۴۲، ۱۴۴۳، ۱۴۴۴، ۱۴۴۵، ۱۴۴۶، ۱۴۴۷، ۱۴۴۸، ۱۴۴۹، ۱۴۵۰، ۱۴۵۱، ۱۴۵۲، ۱۴۵۳، ۱۴۵۴، ۱۴۵۵، ۱۴۵۶، ۱۴۵۷، ۱۴۵۸، ۱۴۵۹، ۱۴۶۰، ۱۴۶۱، ۱۴۶۲، ۱۴۶۳، ۱۴۶۴، ۱۴۶۵، ۱۴۶۶، ۱۴۶۷، ۱۴۶۸، ۱۴۶۹، ۱۴۷۰، ۱۴۷۱، ۱۴۷۲، ۱۴۷۳، ۱۴۷۴، ۱۴۷۵، ۱۴۷۶، ۱۴۷۷، ۱۴۷۸، ۱۴۷۹، ۱۴۸۰، ۱۴۸۱، ۱۴۸۲، ۱۴۸۳، ۱۴۸۴، ۱۴۸۵، ۱۴۸۶، ۱۴۸۷، ۱۴۸۸، ۱۴۸۹، ۱۴۹۰، ۱۴۹۱، ۱۴۹۲، ۱۴۹۳، ۱۴۹۴، ۱۴۹۵، ۱۴۹۶، ۱۴۹۷، ۱۴۹۸، ۱۴۹۹، ۱۵۰۰، ۱۵۰۱، ۱۵۰۲، ۱۵۰۳، ۱۵۰۴، ۱۵۰۵، ۱۵۰۶، ۱۵۰۷، ۱۵۰۸، ۱۵۰۹، ۱۵۱۰، ۱۵۱۱، ۱۵۱۲، ۱۵۱۳، ۱۵۱۴، ۱۵۱۵، ۱۵۱۶، ۱۵۱۷، ۱۵۱۸، ۱۵۱۹، ۱۵۲۰، ۱۵۲۱، ۱۵۲۲، ۱۵۲۳، ۱۵۲۴، ۱۵۲۵، ۱۵۲۶، ۱۵۲۷، ۱۵۲۸، ۱۵۲۹، ۱۵۳۰، ۱۵۳۱، ۱۵۳۲، ۱۵۳۳، ۱۵۳۴، ۱۵۳۵، ۱۵۳۶، ۱۵۳۷، ۱۵۳۸، ۱۵۳۹، ۱۵۴۰، ۱۵۴۱، ۱۵۴۲، ۱۵۴۳، ۱۵۴۴، ۱۵۴۵، ۱۵۴۶، ۱۵۴۷، ۱۵۴۸، ۱۵۴۹، ۱۵۵۰، ۱۵۵۱، ۱۵۵۲، ۱۵۵۳، ۱۵۵



گالی گلوچ اور فحش کلامی کرنا:

یہ قابل مذمت ہے۔ چنانچہ نبی اکرم، نور مجسم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا:

إِنَّا كُفُّوا الْفُحْشَ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفُحْشَ وَلَا التَّفَحُّشَ.

ترجمہ: فحش کلامی سے بچو، بے شک اللہ عز و جل فحش کلامی اور جھکلف فحش کلام کرنے کو پسند نہیں فرماتا۔

(الاحسان بترغیب صحیح ابن حبان، کتاب الغصب، الحدیث ۵۱۵۴، ج ۷، ص ۳۰۷)

آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے غزوہ بدر میں قتل ہونے والے شریکین کو گالی دینے سے منع فرمایا اور ارشاد فرمایا: أَلَيْدَ أَوْ أَلْبَيِّنَ شُعْبَانَ
مِنَ الْإِفْطَاقِ تَرْجَمَ: فحش گوئی اور کثرت کلام نفاق کے دو شعبے ہیں۔

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلیۃ، باب ما جاء فی النبی، الحدیث ۲۰۲۷، ص ۱۸۵۴)

اشعار کا بیان

اللہ عزوجل فرماتا ہے:

(وَالشُّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٢٣﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ﴿٢٢٤﴾ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٥﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا) (1)

اور شاعروں کی پیروی گمراہ کرتے ہیں، کیا تو نے نہ دیکھا کہ وہ ہر نالے میں بھٹکتے پھرتے ہیں اور وہ کہتے ہیں جو نہیں کرتے مگر وہ جو ایمان لائے اور اچھے کام کیے اور بکثرت اللہ (عزوجل) کی یاد کی اور بدلا لیا اس کے بعد کہ ان پر ظلم ہوا۔ یعنی ان کے لیے وہ حکم نہیں۔

(1) پ ۱۹، اشعرآء: ۲۲۳-۲۲۷۔

اس آیت کے تحت مفسر شبیر مولا ناسید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ یہ آیت شعراء کفار کے حق (ہارے) میں ناز ہونے کی جو سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی ہجو میں شعر کہتے تھے اور کہتے تھے کہ جیسا محمد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کہتے ہیں ایسا ہم بھی کہہ لیتے ہیں اور ان کی قوم کے گمراہ لوگ ان سے ان اشعار کو نقل کرتے تھے۔ ان لوگوں کی آیت میں مذمت فرمائی گئی۔

(اور اگلی آیت) اس میں شعراء اسلام کا استثناء فرمایا گیا وہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی نعت لکھتے ہیں، اللہ تعالیٰ کی حمد لکھتے ہیں، اسد کی مدح لکھتے ہیں، پند و نصائح لکھتے ہیں، اس پر اجر و ثواب پاتے ہیں۔ بخاری شریف میں ہے کہ مسجد نبوی میں حضرت حنان کے بے منبر بچھا یا جاتا تھا وہ اس پر کھڑے ہو کر رسول کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے مفاخر پڑھتے تھے اور کفار کی بدگوئیوں کا جواب دیتے تھے اور سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ان کے حق میں دعا فرماتے جاتے تھے۔ بخاری کی حدیث میں ہے حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا بعض شعر حکمت ہوتے ہیں۔ رسول کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی مجلس مبارک میں اکثر شعر پڑھے جاتے تھے جیسا کہ ترمذی میں جابر بن سمرہ سے مروی ہے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے فرمایا کہ شعر کلام ہے بعض اچھا ہوتا ہے بعض بُرا، اچھے کو لو بُرے کو چھوڑ دو۔ شعبی نے کہا کہ حضرت ابو بکر صدیق شعر کہتے تھے، حضرت علی ان سب سے زیادہ شعر فرمانے والے تھے رضی اللہ تعالیٰ عنہم۔

اور شعر ان کے لئے ذکر الہی سے غفلت کا سبب نہ ہو سکا بلکہ ان لوگوں نے جب شعر کہا بھی تو اللہ تعالیٰ کی حمد و ثناء اور اس کی توحید اور رسول کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی نعت اور اصحاب کرام و صلحاء اُمت کی مدح اور حکمت و موعظت اور زہد و ادب میں۔

کفار نے مسلمانوں کی اور ان کے پیروؤں کی ہجو کی ان حضرات نے اس کو دفع کیا اور اس کے جواب دیئے یہ مذموم نہیں ہیں بلکہ مستحقِ اجر و ثواب ہیں۔ حدیث شریف میں ہے کہ مؤمن اپنی تلوار سے بھی جہاد کرتا ہے اور اپنی زبان سے بھی یہ ان حضرات کا جہاد ہے۔

احادیث

حدیث ۱: صحیح بخاری میں ابی بن کعب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: بعض اشعار حکمت ہیں۔ (1)

حدیث ۲: صحیح بخاری و مسلم میں براء رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے حسان بن ثابت رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے فرمایا کہ مشرکین کی جھوٹ، جبریل تمہارے ساتھ ہیں اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حسان سے فرماتے: تم میری طرف سے جواب دو۔ الہی تو روح القدس سے حسان کی تائید فرما۔ (2)

حدیث ۳: صحیح مسلم میں حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی، کہتی ہیں: میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو حسان سے یہ فرماتے سنا کہ روح القدس ہمیشہ تمہاری تائید میں ہے، جب تک تم اللہ و رسول (عز و جل و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی طرف سے مدافعت کرتے رہو گے۔ (3)

(1) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب ما یجوز من الشعر... إلخ، الحدیث: ۶۱۴۵، ج ۴، ص ۱۳۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یہاں غالباً شعر سے مراد کلام منظوم ہے یعنی ہر شعر برائیں بعض شعر میں علم و حکمت حمد و نعت و منقبت بھی ہوتی ہے اب تو بعض علوم، اشعار میں بھر دیے گئے ہیں، صرف و نحو، فقہ، حدیث کی اصطلاحیں اشعار میں لکھ دی گئی ہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۲۰)

(2) صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب فضائل حسان بن ثابت رضی اللہ عنہ، الحدیث: ۱۵۱- (۲۴۸۵)، و: ۱۵۳- (۲۴۸۶)، ص ۳۵۰، ۳۵۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ حسان ابن ثابت ابن منذر ابن حرام انصاری مدنی ہیں، ان چاروں کی عمر ایک سو بیس سال ہوئی، حضرت حسان نے ساٹھ سال کفر میں گزارے، ساٹھ سال اسلام میں خاص شاعر اسلام ہیں، خلافت حیدری میں وفات پائی۔

۲۔ یعنی غزوہ خندق کے بعد جب حضور انور نے بنی قریظہ یہود و مدینہ کا محاصرہ فرمایا تب تو حضرت حسان سے یہ کہا کہ کفار کی جھوٹ جبریل تمہارے ساتھ معاون ہیں، ویسے عام موقعوں پر یہ فرمایا کرتے تھے کہ الہی میرے حسان کی جبریل سے مدد کر۔ معلوم ہوا کہ مقبوض کی تعریف کرنا نیکی ہے اور مردودوں کی جھوٹ نیکی ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۲۵)

(3) صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب فضائل حسان بن ثابت رضی اللہ عنہ، الحدیث: ۱۵۷- (۲۴۹۰)، ص ۱۳۵۲۔

حدیث ۴: دارقطنی نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے پاس شعر کا ذکر آیا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے ارشاد فرمایا: وہ ایک کلام ہے، اچھا ہے تو اچھا ہے اور برا ہے تو برا۔ (4)

حدیث ۵: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: آدمی کا پیٹ پیپ سے بھر جائے جو اسے فاسد کر دے، یہ بہتر ہے اس سے کہ شعر سے بھرا ہو۔ (5)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس طرح کہ کذا اسلام مسلمانوں بلکہ خود حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی شان اقدس میں بکواس کرتے تھے تو حضرت حسان رضی اللہ عنہ جو کذا رن کے دین ان کے جوں کی جھو اشعار میں کرتے تھے، حضور اس کے متعلق حضرت حسان کو بشارت دے رہے ہیں کہ جب تم جوئے اشعار لکھنے لگتے ہو تو جناب جبریل تمہارے دل میں اچھے مضمون ڈالتے ہیں تمہاری زبان پر اچھے الفاظ جمع فرماتے ہیں اور تم کو دعائیں دیتے تمہارا احترام کرتے ہیں یہ ہے حضرت جبریل کی مدد۔ معلوم ہوا کہ دشمنان دین کی جھو اعلیٰ درجہ کی عبادت ہے، بعض وقت قصیدے جہاد میں بڑی مدد دیتے ہیں۔ ستمبر ۱۹۶۵ء کے جہاد پاکستان میں اسے خوب اچھی طرح آزمایا ہے ریڈیو پاکستان نے اس قسم کے قصیدوں کے ذریعہ غازیوں بلکہ سارے پاکستانیوں کو گرمادیا جس کا نتیجہ بہت ہی اچھا رہا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۷) (4) سنن الدار قطنی، کتاب الوکلاء، خبر الواحد یوجب العمل، الحدیث: ۴۲۶۱، ج ۴، ص ۱۸۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی شعر کی اچھائی برائی اس کے مضمون سے ہے، بعض شعر پڑھنا عبادت ہے، بعض کفر، بعض ثواب جیسا مضمون دیا حکم۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۸۳)

(5) صحیح بخاری، کتاب الادب، باب ما یکرہ أن یكون الغالب علی الانسان... الخ، الحدیث: ۶۱۵۵، ج ۴، ص ۱۳۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ بعض روایات میں بجائے قیحا کے بخشا ہے، بری کی کے فتح دے کے کسرہ دوسری کی کے سکون سے یہ بنا ہے درکی سے، درکی پیٹ کا زخم جو پیٹ کو بگاڑے لا علاج بنادے اس سے مراد ہے بگاڑ دے اسے خراب کر دے۔

۲۔ بعض شاعرین نے فرمایا کہ اس سے مراد برے اشعار ہیں، بعض نے فرمایا کہ اس سے مراد کوئی خاص شخص ہے ورنہ اچھے، شعراء مسلمانوں کے لیے برے نہیں مگر قوی یہ ہے کہ اس سے ہر اچھے برے شعر مراد ہیں۔ مطلب یہ ہے کہ اشعار میں بہت مشغولیت کہ ہر وقت اس میں کرتا رہے نہ نماز کا خیال ہو نہ کسی اور عبادت کا بہر حال برا ہے خواہ اچھے اشعار ہوں ایسی مشغولیت ہو یا برے اشعار ہیں۔ (مرقات) دیکھا گیا ہے کہ بعض لوگ ہر وقت ہی روں روں کرتے رہتے چلتے پھرتے اٹھتے بیٹھتے گاتے رہتے ہیں یہ برا ہے، حدیث اپنے عموم پر ہے کسی قید یا تاویل کی ضرورت نہیں بلاوجہ احادیث و قرآن میں تاویلیں یا قیدیں لگانا سخت جرم ہے جیسے مرزائی کرتے ہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۳۰)

حدیث ۶: صحیح مسلم میں ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہتے ہیں کہ ہم رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ہمراہ عرج میں جا رہے تھے، ایک شاعر شعر پڑھتا ہوا سامنے آیا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا: شیطان کو پکڑو آدمی کا جوف پیپ سے بھرا ہو، یہ اس سے بہتر ہے کہ شعر سے بھرا ہو۔ (6)

حدیث ۷: امام احمد نے سعد بن ابی وقاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: قیامت قائم نہ ہوگی جب تک ایسے لوگ ظاہر نہ ہوں جو اپنی زبانوں کے ذریعہ سے کھائیں گے، جس طرح گائے اپنی زبان سے کھاتی ہے۔ (7)

یعنی ان کا ذریعہ رزق لوگوں کی تعریف و مذمت کرنا ہے اور اس میں حق و ناحق کا بالکل خیال نہ کریں گے، جس طرح گائے اس کا خیال نہیں کرتی ہے کہ یہ چیز مفید ہے یا مضر جو چیز زبان کے سامنے آگئی کھا گئی۔

(6) صحیح مسلم، کتاب الشعر، الحدیث: ۹۔ (۲۲۵۹)، ص ۱۲۳۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ عرج یمن کا ایک شہر بھی ہے، علاقہ ہذیل میں ایک میدان بھی، مکہ معظمہ کے راستہ میں ایک منزل بھی، مدینہ منورہ سے ۷۸ میل پر، یہاں یہ تیسرے معنی مراد ہیں۔

۲۔ یعنی یہ شاعر انسان شیطان ہے اسے شعر پڑھنے سے روک دو۔ شاید اس کی اشعار گندے واہیات تھے جن میں زنا، شراب، عورتوں کی تعریفیں تھیں جیسا کہ جاہلیت کے شعراء کے کلام میں دیکھا جاتا ہے اس لیے روک دیا گیا۔

۳۔ اس کی شرح پہلے عرض کی گئی کہ یا برے اشعار مراد ہیں یا اشعار کا طبیعت پر غلبہ کہ اسے گانے کے سواء کچھ سوچے ہی نہیں اس لیے ارشاد ہوان یحتملی۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۳۳)

(7) المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند ابی إسحاق سعد بن ابی وقاص، الحدیث: ۱۵۹۷، ج ۱، ص ۳۸۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی ان کا ذریعہ معاش یہ ہی ہوگا کہ کسی کی خوشامدائے جھوٹی تعریف میں قصیدہ کہہ دیا اور انعام حاصل کر لیا، کسی کے دشمن کی برائی میں نظم کہہ ڈالی اور کچھ وصول کر لیا، لوگوں کو فصیح و بلیغ جھوٹے کلام سنائے چندہ کر لیا یعنی صرف زبان سے کمائی کریں گے جیسا کہ جاہلیت کے شعراء کا دستور تھا وہ ہی پھر ہو جاوے گا۔ نعت خواں، نعت گو، علماء و اعظمین اس میں داخل نہیں بشرطیکہ باعمل ہوں حلال و حرام آمدنی میں فرق کریں اسی لیے آگے بیان ہو رہا ہے۔

۲۔ گائے میدان میں کھاتے وقت ہری سوکھی گھاس نہیں دیکھتی جو سامنے آجائے اسے کھا لیتی ہے حتیٰ کہ کبھی دودھک بوٹی بھی کھا جاتی ہے جس سے بیمار بلکہ ہدک ہو جاتی ہے یہ ہی اس شخص کا حال ہے جو حلال و حرام نہ دیکھے جو ملے کھائے۔

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۳۵)

ان احادیث سے یہ معلوم ہوا کہ اشعار اچھے بھی ہوتے ہیں اور برے بھی، اگر اللہ و رسول (عزوجل و صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم) کی تعریف کے اشعار ہوں یا ان میں حکمت کی باتیں ہوں اچھے اخلاق کی تعلیم ہو تو اچھے ہیں اور اگر غیور باطل پر مشتمل ہوں تو برے ہیں اور چونکہ اکثر شعرا ایسے ہی بے تکی ہا نکلتے ہیں اس وجہ سے ان کی مذمت کی جاتی ہے۔



مسائل فقہیہ

مسئلہ ۱: جو اشعار مباح ہوں ان کے پڑھنے میں حرج نہیں، اشعار میں اگر کسی مخصوص عورت کے اوصاف کا ذکر ہو اور وہ زندہ ہو تو پڑھنا مکروہ ہے اور مرچکی ہو یا خاص عورت کا ذکر نہ ہو تو پڑھنا جائز ہے۔ شعر میں لڑکے کا ذکر ہو تو وہی حکم ہے جو عورت کے متعلق اشعار کا ہے۔ (1)

مسئلہ ۲: اشعار کے پڑھنے سے اگر یہ مقصود ہو کہ ان کے ذریعہ سے تفسیر و حدیث میں مدد ملے یعنی عرب کے محاورات اور اسلوب کلام پر مطلع ہو، جیسا کہ شعراء جاہلیت کے کلام سے استدلال کیا جاتا ہے، اس میں کوئی حرج نہیں۔ (2)



(1) افتاویٰ الہدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السابع عشر فی الغناء، ج ۵، ص ۲۵۱-۲۵۲.

(2) المرجع السابق، ص ۲۵۲.

جھوٹ کا بیان

جھوٹ ایسی بری چیز ہے کہ ہر مذہب والے اس کی برائی کرتے ہیں تمام ادیان میں یہ حرام ہے اسلام نے اس سے بچنے کی بہت تاکید کی، قرآن مجید میں بہت مواقع پر اس کی مذمت فرمائی اور جھوٹ بولنے والوں پر خدا کی لعنت آئی۔ حدیثوں میں بھی اس کی برائی ذکر کی گئی، اس کے متعلق بعض احادیث ذکر کی جاتی ہیں۔

احادیث

حدیث ۱: صحیح بخاری و مسلم میں عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: صدق کو لازم کرلو، کیونکہ سچائی نیکی کی طرف لے جاتی ہے اور نیکی جنت کا راستہ دکھاتی ہے آدمی برابر سچ بولتا رہتا ہے اور سچ بولنے کی کوشش کرتا رہتا ہے، یہاں تک کہ وہ اللہ (عزوجل) کے نزدیک صدیق لکھ دیا جاتا ہے اور جھوٹ سے بچو، کیونکہ جھوٹ فجور کی طرف لے جاتا ہے اور فجور جہنم کا راستہ دکھاتا ہے اور آدمی برابر جھوٹ بولتا رہتا ہے اور جھوٹ بولنے کی کوشش کرتا ہے، یہاں تک کہ اللہ (عزوجل) کے نزدیک کذاب لکھ دیا جاتا ہے۔ (1)

(1) صحیح مسلم، کتاب البر... الخ، باب فی الکذب... الخ، الحدیث: ۱۰۵۔ (۲۶۰۷)، ص ۱۳۰۵۔

یہ وہ گندی گھناؤنی اور ذلیل عادت ہے کہ دین و دنیا میں جھوٹے کلمے کوئی ٹھکانا نہیں۔ جھوٹا آدمی ہر جگہ ذلیل و خوار ہوتا ہے اور ہر مجلس اور ہر انسان کے سامنے بے وقار اور بے اعتبار ہو جاتا ہے اور یہ بڑا گناہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے قرآن مجید میں اعدان فرما دیا ہے کہ۔

لَعَنَتُ اللّٰهُ عَلَى الْكَاذِبِينَ ﴿۶۱﴾

یعنی کان کھول کر سن لو کہ جھوٹوں پر خدا کی لعنت ہے (پ 3، آل عمران: 61) اور وہ خدا کی رحمتوں سے محروم کر دیے جاتے ہیں۔ قرآن مجید کی بہت سی آیتوں اور بہت سی حدیثوں میں جھوٹ کی برائیوں کا بیان ہے۔ اس لئے یاد رکھو کہ ہر مسلمان مرد و عورت پر فرض ہے کہ اس لعنتی عادت سے زندگی بھر بچتا رہے۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی تو شخص سچ بولنے کا عادی ہو جاوے اللہ تعالیٰ اسے نیک کار بنادے گا اس کی عادت اچھے کام کرنے کی ہو جاوے گی، اس کی برکت سے وہ مرتے وقت تک نیک رہے گا برائیوں سے بچے گا۔

۲۔ اور جو اللہ کے نزدیک صدیق ہو جاوے اس کا خاتمہ اچھا ہوتا ہے اور وہ ہر قسم کے عذاب سے محفوظ رہتا ہے ہر قسم کا ثواب پاتا ہے اور دنیا بھی اسے سچا کہے۔ سبھا سمجھنے لگتی ہے، اس کی عزت لوگوں کے دلوں میں بیٹھ جاتی ہے۔

ابو ذر! کیا میں تم کو ایسی دو باتیں نہ بتا دوں جو پیٹھ پر ہلکی ہیں اور میزان میں بھاری ہیں؟ انھوں نے کہا، ہاں۔ ارشاد فرمایا: زیادہ خاموش رہنا اور خوبی اخلاق، قسم ہے اس کی جس کے ہاتھ میں میری جان ہے! تمام مخلوقات نے ان کی مثل پر عمل نہیں کیا۔ (13) یعنی ان کی مثل کوئی چیز نہیں جس پر عمل کیا جائے۔

حدیث ۱۳: امام مالک نے اسلم سے روایت کی، کہ ایک دن حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس گئے اور حضرت صدیق اکبر (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) اپنی زبان پکڑ کر کھینچ رہے تھے۔ حضرت عمر (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) نے عرض کی، کیا بات ہے اللہ (عزوجل) آپ کی مغفرت کرے، حضرت صدیق (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) نے فرمایا: اس نے مجھے مہالک (یعنی ہلاکتوں) میں ڈالا ہے۔ (14)

حدیث ۱۴: امام احمد و بیہقی نے عبادہ بن صامت رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: میرے لیے چھ چیزوں کے ضامن ہو جاؤ میں تمھارے لیے جنت کا ذمہ دار ہوتا ہوں۔ (۱) جب بات کرو سچ بولو اور (۲) جب وعدہ کرو اسے پورا کرو اور (۳) جب تمھارے پاس امانت رکھی جائے اسے ادا کرو اور (۴) اپنی شرمگاہوں کی حفاظت کرو اور (۵) اپنی نگاہیں نیچی رکھو اور (۶) اپنے ہاتھوں کو روکو۔ (15) یعنی ہاتھ سے کسی

(13) شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، الحدیث: ۸۰۰۶، ج ۶، ص ۲۳۹۔

(14) السوطی، الام مالک، کتاب الکلام، باب ماجاء فیما ینافی عن اللسان، الحدیث: ۱۹۰۶، ج ۲، ص ۴۶۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ تابعی ہیں، آپ کی کنیت ابو خالد ہے، حبشی تھے، حضرت عمر رضی اللہ عنہ کے آزاد کردہ غلام تھے جنہیں حضرت فاروق نے مکہ معظمہ میں اللہ میں خریدا، آپ کی عمر ایک سو چودہ سال ہوئی، مروان کے زمانہ میں وفات پائی، ۸۰ اتنی ہجری میں۔

۲۔ اپنی زبان شریف کو کھینچ کر مروڑ رہے تھے یا اسے باہر نکال ڈالنے کی کوشش فرما رہے تھے گویا اپنی زبان کو سزا دے رہے تھے۔

۳۔ یہ انتہائی خوف خدا کی دلیل ہے حضرت صدیق کی زبان صدق کے سوا کیا بولے گی مگر پھر بھی اپنے کو قصور وار کہتے ہیں جیسے حضرات نبیاء کرام نے اپنے کو ظالم خاسر وغیرہ فرمایا، حضور صلی اللہ علیہ وسلم فرمایا کرتے تھے رب انی ظلمت نفسی ظلماکثیرا۔ شعر

زاهدان از گناہ توبہ کنند عارفان از اطاعت استغفار

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۰۱)

(15) المسند لایمام احمد بن حنبل، حدیث عبادۃ بن الصامت الحدیث ۲۲۸۲۱، ج ۸، ص ۴۱۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی تم چھ عہدیں ڈال لو ان کے خلاف نہ کرو تو میں تمھارے جنتی ہونے کا ضامن ہوتا ہوں تم ضرور جنتی ہو گے بلکہ دہوں کا اعلیٰ درجہ پاؤ گے۔

کو ایذا نہ پہنچاؤ۔

حدیث ۱۵: ترمذی نے عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ مومن نہ طعن کرنے والا ہوتا ہے، نہ لعنت کرنے والا، نہ فحش بکنے والا بے ہودہ ہوتا ہے۔ (16)

حدیث ۱۶: ترمذی نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: مومن کو یہ نہ چاہیے کہ لعنت کرنے والا ہو۔ (17)

حدیث ۱۷: صحیح مسلم میں ابو درداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہتے ہیں میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو فرماتے سنا ہے کہ جو لوگ لعنت کرتے ہیں، وہ قیامت کے دن نہ گواہ ہوں گے، نہ کسی کے سفارشی۔ (18)

حدیث ۱۸: ترمذی و ابو داؤد نے سرہ بن جندب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ

۲۔ وعدہ سے مراد جائز وعدہ ہے وعدہ کا پورا کرنا ضروری ہے مسلمان سے وعدہ کر دیا کافر سے عزیز سے وعدہ کر دیا غیر سے استاذ، شیخ، نبی، اللہ تعالیٰ سے کیے ہوئے تمام وعدے پورے کرو، ہاں اگر کسی حرام کام کا وعدہ کیا ہے اسے ہرگز پورا نہ کرے حتیٰ کہ حرام کام کی نذر پوری کرنا حرام ہے۔

۳۔ امانت مال کی ہو یا بات کی یا کسی اور چیز کی ضرور ادا کرے مسلمان کی امانت ہو یا کافر کی۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ہجرت کی رات حضرت علی سے فرمایا کہ ان خونخوار کفار کی امانتیں میرے پاس ہیں وہ تم ادا کر دینا۔ امانت اور غنیمت میں بڑا فرق ہے۔

۴۔ نہ اس سے حرام کاری کرو نہ خاوند بیوی کے سوا کسی پر ظاہر ہونے دو۔ فروج سے مراد مرد و عورت کی ستر غیظ ہے۔

۵۔ چلو پھرتو نیچی نگاہ سے، بیٹھو تو نیچی نگاہ سے تاکہ غیر محرم کے دیکھنے سے بچو یہ حکم مرد و عورت دونوں کو ہے، جہاں ادھر دیکھنا ضروری ہے یا جائز ہے وہاں ضرور دیکھو، علم، ماں باپ کا چہرہ، چاند وغیرہ ضرور دیکھو یہاں شرم حیا کا ذکر ہے۔

۶۔ کہ اپنے ہاتھ سے کسی پر ظلم نہ کرو اس سے ناجائز چیز نہ چھوؤ۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۷۰۲)

(16) سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی اللعنة، الحدیث: ۱۹۸۴، ج ۳، ص ۳۹۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی یہ عیوب سچے مسلمان میں نہیں ہوتے اپنے عیب نہ دیکھنا دوسرے مسلمانوں کے عیب ڈھونڈنا ہر ایک کو عن طعن کرنا اسلامی شان کے خلاف ہے یہ حدیث بہت جامع ہے۔ بعض لوگ جانوروں کو، ہوا کو، گالیاں دیتے ہیں، بعض کے ہاں حضرات صبیہ کو گالیاں دینا عبادت ہے نعوذ باللہ بعض لوگ گالی پہلے دیتے ہیں بات پیچھے کرتے ہیں سب لوگ اس سے عبرت پکڑیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۶۸۰)

(17) المرجع السابق، باب ما جاء فی اللعن والطعن، الحدیث: ۲۰۲۹، ج ۳، ص ۴۱۰۔

(18) صحیح مسلم، کتاب ابہر... الخ، باب النہی عن لعن الدواب وغیرھا، الحدیث: ۸۶- (۲۵۹۸)، ص ۱۳۰۰۔

علیہ وسلم نے فرمایا: اللہ (عزوجل) کی لعنت و غضب اور جہنم کے ساتھ آپس میں لعنت نہ کرو۔ (19)

حدیث ۱۹: ابوداؤد نے ابودرداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو یہ فرماتے سنا کہ جب بندہ کسی چیز پر لعنت کرتا ہے تو وہ لعنت آسمان کو جاتی ہے، آسمان کے دروازے بند کر دیئے جاتے ہیں پھر زمین پر اتاری جاتی ہے، اس کے دروازے بھی بند کر دیئے جاتے ہیں پھر دہنے بائیں جاتی ہے، جب کہیں راستہ نہیں پاتی تو اس کی طرف آتی ہے جس پر لعنت بھیجی گئی، اگر اسے اس کا اہل پاتی ہے تو اس پر پڑتی ہے، ورنہ بھیجنے والے پر آ جاتی ہے۔ (20)

حدیث ۲۰: ترمذی و ابوداؤد نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ ایک شخص کی چادر کو ہوا کے تیز جھونکے لگے، اس نے ہوا پر لعنت کی۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ہوا پر لعنت نہ کرو کہ وہ خدا کی طرف سے مامور ہے اور جو شخص ایسی چیز پر لعنت کرتا ہے جو لعنت کی اہل نہ ہو تو لعنت اُسی پر لوٹ آتی ہے۔ (21)

(19) سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی اللعنة، الحدیث: ۱۹۸۳، ج ۳، ص ۳۹۳۔

ومشكاة المصابيح، کتاب الاداب، باب حفظ اللسان...، الحدیث: ۲۸۴۹، ج ۳، ص ۴۳۔

(20) سنن ابی داؤد، کتاب الاداب، باب فی اللعن، الحدیث: ۴۹۰۵، ج ۴، ص ۶۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ جیسے غبار دھواں وغیرہ بذات خود اوپر چڑھتے ہیں ایسے ہی لعنت و پھنکار بھی اوپر چڑھتی ہے مگر اسے آسمان میں داخلہ کی اجازت نہیں ہوتی کہ وہاں اس کا مستحق کوئی نہیں۔

۲۔ لہذا وہ لعنت زمین میں نہیں دھنسن سکتی کہ وہاں بھی اس کا مستحق کوئی نہیں۔ خیال رہے کہ اٹلیس اور اس کی ذریت نہ تو آسمان میں رہتے ہیں نہ زمین کے اندر بلکہ اوپر ہی مارے مارے پھرتے ہیں لہذا اس فرمان پر کوئی غبار نہیں۔

۳۔ یعنی لعنت اس حیران پریشان چیز کی طرح دوڑتی گھومتی ہے جسے اپنا ٹھکانہ معلوم نہ ہو اور تماشا ٹھکانہ کے لیے حیران پریشان گھومے یا بطور تمثیل ارشاد ہوا ہے یا واقعہ ایسے ہی ہوتا ہے کیونکہ ہمارے تمام قول و فعل ایک شکل و حال رکھتے ہیں۔

۴۔ بہر حال لعنت یا تو ملعون پر پڑتی ہے اگر وہ اسکا اہل ہو ورنہ خود لاعن پر لہذا لعنت کرنا چاہیے ہی نہیں۔ سوچو کہ ان کا حال کیا ہوگا جو دن رات حضرات صحابہ پر تبرا اور لعن طعن کرتے رہتے ہیں، اسی طرح جو لوگ جانوروں کو، دھوپ کو، ہوا کو لعنت کر دیتے ہیں، بیمار یوں کو کوستے

پنتے ہیں اس سب کا وبال خود ان پر ہی پڑتا ہے۔ (مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۸۳)

(21) المربع السابق، الحدیث: ۴۹۰۸، ج ۳، ص ۶۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ جیسے آج بعض لوگ بیمار یوں وغیرہ پر لعنت کر دیتے ہیں یہ سخت برا ہے۔

حدیث ۲۱: ترمذی نے ابی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ہوا کو گالی نہ دو اور جب دیکھو کہ شہیں بری لگتی ہے تو یہ کہو کہ الہی! میں اس کی خیر کا سوال کرتا ہوں اور جو کچھ اس میں خیر ہے اور جس خیر کا اسے حکم ہوا اور میں اس کے شر سے پناہ مانگتا ہوں اور جو کچھ اس میں شر ہے اور اس کے شر سے جس کا اسے حکم ہوا۔ (22)

حدیث ۲۲: صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ ایک شخص نے اپنی سواری کے جانور پر لعنت کی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اس سے اتر جاؤ ہمارے ساتھ میں ملعون چیز کو لے کر نہ چلو، اپنے اوپر اور اپنی اولاد و اموال پر بددعا نہ کرو، کہیں ایسا نہ ہو کہ یہ بددعا اس ساعت میں ہو جس میں جو دعا خدا سے کی جائے قبول ہوتی ہے۔ (23)

حدیث ۲۳: طبرانی نے ثابت بن ضحاک انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: مومن پر لعنت کرنا اس کے قتل کی مثل ہے اور جو شخص مومن مرد یا عورت پر کفر کی تہمت لگائے تو یہ اس کے قتل کی مثل ہے۔ (24)

حدیث ۲۴: صحیح بخاری و مسلم میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص اپنے بھائی کو کافر کہے تو اس کلمہ کے ساتھ دونوں میں سے ایک لوٹے گا۔ (25) یعنی یہ کلمہ دونوں میں سے ایک پر پڑے گا۔

حدیث ۲۵: صحیح بخاری میں ابو ذر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو

۲۔ ہوا کا نرم و سخت چلنا تیری چادر کا اثر دینا سب کچھ اللہ تعالیٰ کے حکم سے ہے ان میں اس کا کوئی قصور نہیں پھر اس پر لعنت کیسی۔

۳۔ یعنی لعنت کرنے کا گناہ اس پر پڑے گا یا خود لعنت پھنکار رحمت سے دوری خود اس کو ملے گی۔ معلوم ہوا کہ لعنت اور رحمت اپنے مستحق کو جانتی پہچانتی ہیں ان کے ٹھکانوں کو بھی جانتی ہیں حدیث اپنے ظاہر پر ہے کسی تاویل کی ضرورت نہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۸۴)

(22) سنن الترمذی، کتاب الفتن باب ما جاء فی النہی عن سب الریاح، الحدیث: ۲۲۵۹، ج ۴، ص ۱۱۱۔

(23) صحیح مسلم، کتاب الزہد، باب حدیث جابر الطویل۔۔۔ الخ، الحدیث: ۳۔ (۳۰۰۹)، ص ۱۶۰۴۔

(24) المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۳۳۰، ج ۲، ص ۷۳۔

(25) صحیح بخاری، کتاب الادب، باب من اکفر اقاہ بغیر تاویل فہو کما قال، الحدیث: ۶۱۰۴، ج ۴، ص ۱۲۷۔

صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان حال ایمان من قال لا خیر المسلم یا کافر، الحدیث: ۱۱۱۔ (۶۰)، ص ۵۱۔

شخص دوسرے کو فسق اور کفر کی تہمت لگائے اور وہ ایسا نہ ہو تو اس کہنے والے پر لوٹا ہے۔ (26)

حدیث ۲۶: صحیح بخاری و مسلم میں ابوذر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص کسی کو کافر کہہ کر بلائے یا دشمن خدا کہے اور وہ ایسا نہیں ہے تو اسی کہنے والے پر لوٹے گا۔ (27)

حدیث ۲۷: بخاری و مسلم و احمد و ترمذی و نسائی و ابن ماجہ عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: مسلم سے گالی گلوچ کرنا فسق ہے اور اس سے قتال کفر ہے۔ (28)

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے یعنی جو مسلمان دوسرے مسلمان کو کافر کہے اگر وہ مسلمان واقعی کوئی کفریہ کام یا کفریہ کلام کر چکا ہے تب تو یہ کفر اس پر پڑے گا لیکن اگر اس میں کوئی کفر نہ ہو تو یہ کہنے والا کافر ہو جاوے گا جب کہ کسی قطعی ایمان والے کو کافر کہے جیسے صحابہ کرام کو خصوصاً مبشرین الجنۃ کو کافر کہنے والا یطعن کافر ہے کہ قرآن حدیث تو انہیں مؤمن کہہ رہے ہیں اور یہ انہیں کافر کہتا ہے تو قرآن و حدیث کا منکر ہے یا کسی عقیدہ اسلامیہ کی بنا پر کافر کہتا ہے تو بھی یہ کہنے والا کافر ہے، اس سے وہ شخص مراد نہیں جو کسی کو گالی کے طور پر کافر کہے یا کافر کے معنی ناشکر یا اچھپانے والا کرے لہذا حدیث واضح ہے حضرت خسر فرماتے ہیں

کافر مشتم مسلمان مراد کار نیست ہر گ من تار گشت حاجت نار نیست

یہاں کافر عشق سے مراد ہے عشق کا چھپانے والا اسے دل میں رکھنے والا، رب تعالیٰ فرماتا ہے: *بِقُرْبِ الْيَكْفُرِ يَطْلُغُونَ قُلُوبَهُمْ* پالہ جو کوئی بتوں کو انکار کرے اللہ پر ایمان لائے۔ یہاں کفر بمعنی انکار ہے لہذا یہ حدیث اس آیت کے خلاف نہیں۔ امام نووی فرماتے ہیں کہ یہ حدیث بہت مشکل ہے، فقیر نے جو توجیہ کی ہے ان شاء اللہ اس سے اشکال نہ رہا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۵۰)

(26) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب ما تنهى من الاسباب واللعن، الحدیث: ۶۰۳۵، ج ۴، ص ۱۱۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے مقصد یہ ہے کہ کسی مسلمان کو کافر یا فاسق نہ کہو کیونکہ اگر وہ واقعی کافر یا فاسق ہو تب تو یہ لفظ اس پر صادق آوے گا ورنہ کہنے والے پر کہ یہ کہنے والا یا کافر و فاسق ہو جاوے گا یا کافر و فاسق کہنے کا وبال اس پر پڑے گا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۵۱)

(27) صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان حال ایمان من قال لاحیہ المسلم یا کافر، الحدیث: ۱۱۳۔ (۶۱)، ص ۵۱۔

(28) صحیح بخاری، کتاب الادب، باب ما تنهى من الاسباب واللعن، الحدیث: ۶۰۳۴، ج ۴، ص ۱۱۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے کفر یا بمعنی کفران نعمت یعنی ناشکری ہے، ایمان کا مقابل یعنی بلا تصور مسلمان کو برا کہنا اور بلا تصور اس سے لڑنا بھڑانا ناشکری ہے یا کفار کا سا کام ہے یا اسے مسلمان ہونے کی وجہ سے مارنا پیٹنا یا ناجائز جنگ کو حلال سمجھ کر کرنا کفر و بے ایمانی ہے۔ (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۳۹)

حدیث ۲۸: صحیح مسلم میں انس و ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: دو شخص گالی گلوچ کرنے والے انھوں نے جو کچھ کہا سب کا وبال اس کے ذمہ ہے جس نے شروع کیا ہے، جب تک مظلوم تجاوز نہ کرے۔ (29) یعنی جتنا پہلے نے کہا، اس سے زیادہ نہ کہے۔

حدیث ۲۹: طبرانی نے سمرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اگر کوئی کسی کو برا بھلا کہنا ہی چاہتا ہے تو نہ اس پر افترا کرے، نہ اس کے والدین کو گالی دے، نہ اس کی قوم کو گالی دے، ہاں اگر اس میں ایسی بات ہے جو اس کے علم میں ہے تو یوں کہے کہ تو بخیل ہے یا تو بزدل ہے یا تو جھوٹا ہے یا بہت سونے والا ہے۔ (30)

حدیث ۳۰: امام احمد و ترمذی و ابن ماجہ نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: فحش جس چیز میں ہوگا، اسے عیب دار کر دے گا اور حیا جس میں ہوگی، اسے آراستہ کر دے گی۔ (31)

حدیث ۳۱: صحیح بخاری و مسلم میں حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: اللہ تعالیٰ کے نزدیک قیامت کے دن سب لوگوں میں بدتر مرتبہ اس کا ہے کہ اس کے شر سے بچنے کے لیے

(29) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة... إلخ، باب النہی عن السباب، الحدیث: ۶۸۔ (۲۵۸۷)، ص ۱۳۹۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

ا۔ یعنی دونوں کی برائیوں کا وہاں ابتداء کرنے والے پر ہوگا جب کہ دوسرا زیادتی نہ کر جاوے صرف اگلے کو جواب دے۔ خیال رہے کہ گالی کے بدلے میں گالی نہ دینا چاہیے کہ گالی فحش ہے جس سے زبان اپنی ہی خراب ہوتی ہے۔ سب کے معنی ہیں برا کہنا نہ کہ گالی دینا، گالی دینے والے سے بدلہ اور طرح لو اسے گالی نہ دو اگر کتا کاٹ لے تو تم اسے کاٹو مت بلکہ لکڑی سے مار دو لہذا حدیث واضح اس میں گالیاں بکھنے کی اجازت نہ دی گئی۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۵۳)

(30) المعجم الکبیر، الحدیث: ۷۰۳۰، ج ۷، ص ۲۵۳۔

(31) سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی الفحش والتفحش، الحدیث: ۱۹۸۱، ج ۳، ص ۳۹۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

ا۔ یعنی اگر بے حیائی اور حیا و شرم انسان کے علاوہ اور مخلوق میں بھی ہوں تو اسے بھی بے حیائی خراب کر دے اور حیا اچھا کر دے تو انسان کا کیا پوچھنا حیا ایمان کی زینت، انسانیت کا زیور ہے، بے حیائی انسانیت کے دامن پر بدنامی دھبہ ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۸۷)

لوگوں نے اسے چھوڑ دیا ہو۔ (32) اور ایک روایت میں ہے کہ اُس کے نقش سے بچنے کے لیے چھوڑ دیا ہو۔ (33)
حدیث ۳۲: بخاری و مسلم و احمد و ابوداؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: ابن آدم مجھے ایذا دیتا ہے کہ دہر کو برا کہتا ہے، دہر تو میں ہوں میرے ہاتھ میں سب کام ہیں، رات اور دن کو میں بدلتا ہوں۔ (34) یعنی زمانہ کو برا کہنا اللہ (عزوجل) کو برا کہنا ہے کہ زمانہ میں جو کچھ ہوتا ہے، وہ سب اللہ تعالیٰ کی طرف سے ہوتا ہے۔

حدیث ۳۳: صحیح مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کوئی شخص یہ کہے کہ سب لوگ ہلاک ہو گئے تو سب سے زیادہ ہلاک ہونے والا یہ ہے۔ (35) یعنی جو شخص تمام لوگوں کو گنہگار اور مستحق تار بیتائے تو سب سے بڑھ کر گنہگار وہ خود ہے۔

حدیث ۳۴: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

(32) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب لم یکن النبی صلی اللہ علیہ وسلم فاحشاً... الخ، الحدیث: ۶۰۳۲، ج ۴، ص ۱۰۸.

(33) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة... الخ، باب مداراة من یبغی لہ، الحدیث: ۷۳۔ (۲۵۹۱)، ص ۱۳۹۷.

(34) صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول اللہ تعالیٰ (یرید ان ینزلہ لواء کلام اللہ)، الحدیث: ۷۴۹۱، ج ۴، ص ۵۷۲.

(35) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة... الخ، باب انہی عن قول حنک الناس، الحدیث: ۱۳۹۔ (۲۶۲۳)، ص ۱۳۱۲.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے اہل کھمبہ کی دو قراءتیں ہیں کاف کے حمزہ سے یعنی صیغہ اسم تفضیل ہو اور کاف کے فتح سے ماضی۔ یعنی جو مسلمانوں کے متعلق یہ کہتا رہے کہ سارے مسلمان ہلاک ہو گئے رحمت خدا سے دور ہو گئے، بے دینی ہو گئے تو ان سب میں زیادہ ہلاک ہونے والا یہ ہوگا کہ وہ مسلمانوں کو رحمت الہی سے دور سمجھ رہا ہے یا جو لوگوں کو رحمت الہی سے مایوس کرے اور کہے کہ لوگ برباد ہو گئے، کافر ہو گئے، فاسق ہو گئے تو ان لوگوں کو رب تعالیٰ نے ہلاک نہ کیا بلکہ اس نے ہلاک کیا اگر لوگ مایوس ہو کر گنہگار بن جاویں تو مجرم یہ ہوگا۔ مسلمان کہتے ہیں گنہگار ہوں مگر ان شاء اللہ رحمت الہی ان کی دیکھ بھال کرے گی انہیں سے کام لے گی کوئی انہیں ابھارنے والا ہو۔ ڈاکٹر اقبال نے کیا خوب کہا۔ شعر

نہیں ہے نا امید اقبال دینی کشت ویراں سے
ذرا غم ہو تو یہ مٹی بہت زرخیز ہے ساقی

رحمت العالمین کی امت غافل ہو جاتی ہے اسے جگاتے رہو کام لیتے رہو یہ جاگ اٹھے تو بہت کام کرتی ہے کیوں نہ ہو کہ حضور کی ان پر رحمت ہے۔ شعر

عرب کے واسطے رحمت عجم کے واسطے رحمت
وہ آئے لیکن آنے رحمت العالمین ہو کر

نے فرمایا: سب سے زیادہ برا قیامت کے دن اس کو پاء گے، جو ذوالوجہین ہو۔ (36)

یعنی دورِ خا آدمی کہ ان کے پاس ایک مونہ سے آتا ہے اور ان کے پاس دوسرے مونہ سے آتا ہے یعنی منافقوں کی طرح کہیں کچھ کہتا ہے اور کہیں کچھ کہتا ہے، یہ نہیں کہ ایک طرح کی بات سب جگہ کہے۔

حدیث ۳۵: داری نے عمار بن یاسر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص دنیا میں دورِ خا ہوگا، قیامت کے دن آگ کی زبان اس کے لیے ہوگی۔ (37) ابو داؤد کی روایت میں ہے کہ اس کے لیے دورِ بانیں آگ کی ہوں گی۔ (38)

حدیث ۳۶: صحیح بخاری و مسلم میں حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو میں نے یہ فرماتے سنا کہ جنت میں چٹل خور نہیں جائے گا۔ (39)

(36) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب ما قیل فی ذی الوجہین، الحدیث: ۶۰۵۸، ج ۳، ص ۱۱۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی بدترین بندہ منافق یا چٹل خور ہے جو لوگوں میں لڑائی کرنے کے لیے ایک جماعت کے پاس اس کا خیر خواہ بن کر جاوے اور دوسری جماعت سے انہیں بھڑکا دے، دوسری جماعت کے پاس ان کا خیر خواہ بن جاوے انہیں بھڑکا دے لڑائی کرادے۔ خدا کی پناہ! یہ عیب فی زمانہ عورت میں بہت زیادہ ہے اس سے توبہ چاہیے اس کا انجام دو طرفہ شرمندگی ہے۔ شیخ سعدی نے ان کا انجام یوں فرمایا شعر

کنند این دآن خوش ذکر بارہ دل
دے اندر میاں کو رنج و غل

وہ دونوں مل جا دیں گے یہ دو طرفہ رو سیاد ہوگا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۵۷)

(37) سنن الدارمی، کتاب لرقائق، باب ما قیل فی ذی الوجہین، الحدیث: ۶۳۷۳، ج ۲، ص ۴۰۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۰۔ دو منہ وال وہ شخص ہے جو سامنے تعریف کرے پیچھے برائی یا سامنے دوستی ظاہر کرے پیچھے دشمنی یا دو لڑے ہوئے آدمیوں کے پاس جاوے اس سے ملے تو اس کی سی کہے دوسرے سے ملے تو اس کی سی کہے ہر ایک کا ظاہری دوست بنے۔

۲۔ حدیث شریف بالکل ظاہر پر ہے کسی تادیل کی ضرورت نہیں جو رب دنیا میں مٹی کی زبان دے سکتا ہے وہ قیامت کے بعد آگ کی بھی زبان دے سکتا ہے اس کی قدرت سے کچھ بعید نہیں اس زبان میں جو سوزش اور جلن ہوگی وہ ظاہر ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۷۹)

(38) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی ذی الوجہین، الحدیث: ۴۸۷۳، ج ۳، ص ۳۵۲۔

(39) صحیح مسلم، کتاب الیمان، باب بیان غلط تحریم النہیۃ، الحدیث: ۱۶۹۔ (۱۰۵)، ص ۶۷۔

حدیث ۳۷: بیہقی نے شعب الایمان میں عبدالرحمن بن غنم واسماء بنت یزید رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ (عزوجل) کے نیک بندے وہ ہیں کہ ان کے دیکھنے سے خدا یاد آئے اور اللہ (عزوجل) کے برے بندے وہ ہیں، جو چغلی کھاتے ہیں، دوستوں میں جدائی ڈالتے ہیں اور جو شخص جرم سے بری ہے، اس پر تکلیف ڈالنا چاہتے ہیں۔ (40)

حدیث ۳۸: صحیح مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ قات وہ شخص ہے جو دو مخالفوں کی باتیں چھپ کر سنے اور پھر انہیں زیادہ لڑانے کے لیے ایک کی بات دوسرے تک پہنچائے مگر یہ شخص ایمان پر مراء تو جنت میں اولاً نہ جائے گا بعد میں جائے تو جائے، اگر کفر پر مراء تو کبھی وہاں نہ جاوے گا۔ خیال رہے کہ جو دوطرفہ جھوٹی باتیں لگا کر صبح کرادے وہ فہام نہیں مصلح ہے، فہام وہ ہے جو لڑائی و فساد کے لیے یہ حرکات کرے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۵۸)

(40) شعب الایمان، باب فی الاصلاح بین الناس... راجع، الحدیث: ۱۱۰۸، ج ۷، ص ۴۹۳.

ومشکوٰۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب حفظ اللسان... راجع، الحدیث: ۱۸۷۱، ج ۳، ص ۴۶.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ عبدالرحمن غنم اشعری شامی ہیں، جلیل القدر تابعی ہیں، آپ نے حضور انور کا زمانہ پایا مگر زیارت نہ کر سکے، حضرت معاذ ابن جبل کے ساتھ رہے، اسماء بنت یزید ابن سکن صحابیہ ہیں اسی لیے شارحین فرماتے ہیں کہ بہتر یہ تھا کہ حضرت اسماء کا نام شریف پہلے ذکر کیا جاتا۔

۲۔ یعنی ان کے چہروں پر انوار و آثار عبادت ایسے ہوں کہ انہیں دیکھتے ہی رب یاد آ جاوے ان کے چہرے آئینہ خدا، نما ہوں۔ حضور فرماتے ہیں کہ علی کا چہرہ دیکھنا عبادت ہے آپ کو جو دیکھتا تھا کہتا تھا لا الہ الا اللہ کیسا کریم بہادر حلیم جوان ہے۔ (مرقات) بعض لوگوں کے پاس بیٹھنے سے قلب جاری ہو جاتا ہے، حضور داتا صاحب کے مزار مقدس پر پہنچ کر دل کی دنیا بدل جاتی ہے، مصری عورتوں نے جمال یوسفی دیکھتے ہی کہا تھا حاشا للہ، یہ ہے اللہ کی یاد آ جاتا۔ یہاں حضرت شیخ عبدالحق نے فرمایا کہ میں ایک بار مکہ معظمہ کے بازار میں سر نیچا کیے جا رہا تھا کہ اچانک ایک شخص پر نظر پڑی میرے منہ سے نور الا الہ الا اللہ وحدہ لا شریک لہ لہ المحدث ولہ الحمد وهو علی کل شئی قدير۔ (اشعہ)

۳۔ معلوم ہوا کہ فساد و فحاشی کے لیے چغلی کھانا ممنوع ہے، صلح کرانے کے لیے ایک دوسرے کو، چھی باتیں پہنچانا عبادت ہے۔

۴۔ باغون جمع باغی کی جس کا مادہ بھی ہے بمعنی چاہنا ڈھونڈنا۔ براء جمع ہے بری کی بمعنی دور یعنی جو عیب سے دور ہوں ان میں عیب جوئی کرنے والے۔ اپنے عیب ڈھونڈنا عبادت ہے دوسروں کے عیب ڈھونڈنا برا ہے۔ خیال رہے کہ اللہ تعالیٰ کے مقبول بندوں میں عیب جوئی کفر ہے، بعض بد نصیبوں کو عیبوں و لیوں میں عیب جوئی کی عادت ہوتی ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۰۳)

فرمایا: تمہیں معلوم ہے غیبت کیا ہے؟ لوگوں نے عرض کی، اللہ و رسول (عزوجل و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) خوب جانتے ہیں۔ ارشاد فرمایا: غیبت یہ ہے کہ تو اپنے بھائی کا اس چیز کے ساتھ ذکر کرے جو اسے بری لگے۔ کسی نے عرض کی، اگر میرے بھائی میں وہ موجود ہو جو میں کہتا ہوں (جب تو غیبت نہیں ہوگی)۔ فرمایا: جو کچھ تم کہتے ہو، اگر اس میں موجود ہے جب ہی تو غیبت ہے اور جب تم ایسی بات کہو جو اس میں ہو نہیں، یہ بہتان ہے۔ (41)

حدیث ۳۹: امام احمد و ترمذی و ابو داؤد نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہتی ہیں، میں نے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے کہا، صفیہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے لیے یہ کافی ہے کہ وہ ایسی ہیں ایسی ہیں یعنی پستہ قد ہیں، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے ارشاد فرمایا کہ تم نے ایسا کلمہ کہا کہ اگر سمندر میں ملایا جائے تو اس پر غالب آجائے۔ (42) یعنی کسی پستہ قد کو ناٹا، ٹھکنا کہنا بھی غیبت میں داخل ہے، جبکہ بلا ضرورت ہو۔

(41) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة...، باب تحریم الغیبة، الحدیث: ۷۰۔ (۲۵۸۹)، ص ۱۳۹۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی قرآن مجید میں ہے "لَا يَغْتَابُ بَعْضُكُمُ بَعْضًا" یعنی بعض مسلمان بعض کی غیبت نہ کریں، کیا جانتے ہو غیبت کیا ہے اور اس کی تفسیر کیا ہے۔

۲۔ یعنی کسی کے خفیہ عیب اس کے پس پشت بیان کرنا عیب خواہ جسمانی ہوں یا نفسانی دنیاوی یا دینی یا اس کی اولاد کے یا بیوی کے یا گھر کے خواہ زبان سے بیان کرو یا قلم سے یا اشارے سے، غرض کسی طرح سے لوگوں کو سمجھا دو حتیٰ کہ کسی لنگڑے یا ہٹکلے کی پس پشت نقل کرنا، لنگڑا کر چننا یا ہٹکلا کر بولنا سب کچھ غیبت ہے یہ فرمان بہت وسیع ہے۔ (مرقات)

۳۔ سائل غیبت، در بہتان میں فرق نہ کر سکے وہ سمجھے کہ کسی کو جھوٹا بہتان لگانا غیبت ہے اس لیے انہوں نے یہ سوال کیا، وہ مایکرہ کے لفظ سے دھوکہ کھا گئے۔

۴۔ سبحن اللہ! کیا نفیس جواب ہے کہ غیبت سچے عیب بیان کرنے کو کہتے ہیں اور بہتان جھوٹے عیب بیان کرنے کو۔ غیبت ہوتا ہے سچ مگر ہے حرام، اکثر گالیوں سچی ہوتی ہیں مگر ہیں بے حیائی و حرام ہر سچ حلال نہیں ہوتا، خلاصہ یہ ہے کہ غیبت ایک گناہ ہے بہتان دو گناہ۔

۵۔ یہ روایت مسم میں نہیں بلکہ امام بغوی نے شرح سنہ میں نقل فرمائی مگر مؤلف کے فی روایت کہنے سے دھوکا پڑتا ہے کہ یہ بھی مسلم ہی کی روایت ہے۔ (مرقات)

۶۔ غیبت و بہتان کا یہ فرق ضرور خیال رہے بہتان بہر حال برا ہے غیبت کبھی بری کبھی نہیں جیسا کہ ہم شروع باب میں عرض کر چکے کہ غیبت کے حرام ہونے کی چند شرطیں ہیں کسی خاص کی ہوں وہ خاص شخص مسلمان ہو، وہ عیب بھی اس کا خفیہ ہو اور بیان بھی کرے بد

ضرورت۔ رہا بہتان وہ بہر حال حرام ہے خواہ کسی کو لگائے کسی طرح لگائے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۶۳)

(42) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الغیبة، الحدیث: ۴۸۷۵، ج ۴، ص ۵۲۔

حدیث ۴۰: بیہقی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، دو شخصوں نے ظہر یا عصر کی نماز پڑھی اور وہ دونوں روزہ دار تھے، جب نماز پڑھ چکے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: تم دونوں وضو کرو اور نماز کا اعادہ کرو اور روزہ پورا کرو اور دوسرے دن اس روزہ کی قضا کرنا۔ انھوں نے عرض کی، یا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم! یہ حکم کس لیے؟ ارشاد فرمایا: تم نے فلاں شخص کی غیبت کی ہے۔ (43)

حدیث ۴۱: ترمذی نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس طرح کہ جناب عائشہ نے بالشت دکھا کر فرمایا کہ صفیہ اتنی بڑی ہیں یعنی میرے بالشت کی برابر یہ عرض و معروض حضرت صفیہ بنت حنی کے پس پشت ہوئی اس لیے اسے غیبت کہا گیا۔ معلوم ہوا کہ غیبت اشارہ سے بھی ہو جاتی ہے۔

۲۔ یعنی بظاہر یہ بات چھوٹی سی معلوم ہوتی ہے مگر اتنی بڑی ہے کہ اگر اس رنگت کو پوڑیا کی شکل دے دی جاوے اور اسے سمندر میں گھول دیا جاوے تو سارے سمندر کو رنگین کر دے تو یہ تمہارے دل کو یقیناً گدلا کر دے گی تمہارے نیک اعمال کا رنگ بھی بگاڑ دے گی، اس سے توبہ کرو اور آئندہ کبھی کسی کی غیبت نہ کرو۔ اس حدیث سے دو مسئلے معلوم ہوئے ایک یہ کہ حضرات صحابہ کرام گناہوں سے معصوم نہیں، معصوم یا فرشتے ہیں یا حضرات انبیاء کرام، یہ حضرات عادل ہیں کہ گناہ پر جتے نہیں توبہ کر لیتے ہیں۔ دوسرے یہ کہ غیبت حق العبد جب ہے جب کہ اس کی خبر اس کو پہنچ جاوے جس کی غیبت کی گئی ورنہ حق اللہ ہے کہ توبہ سے معاف ہو جاتی ہے، دیکھو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت عائشہ صدیقہ کو جناب صفیہ سے معافی مانگنے کا حکم نہ دیا کیونکہ حضرت صفیہ کو اس کی خبر نہ ہوئی لہذا یہ حق اللہ رہی۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۸۶)

(43) شعب الایمان، باب فی تحریم اعراض الناس، الحدیث: ۶۷۲۹، ج ۵، ص ۳۰۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی یہ دونوں روزہ دار بھی تھے مدینہ منورہ کی سرزمین میں بھی مسجد نبوی شریف میں بھی اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے پیچھے انہوں نے نماز بھی پڑھی اتنی خوبیوں کے ساتھ انہوں نے کسی مسلمان کی غیبت بھی کر لی۔

۲۔ قرآن کریم نے غیبت کو مردہ بھائی کا گوشت کھانا قرار دیا ہے "أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا"۔ اور ظاہر ہے گوشت کھانے خون پینے سے روزہ بھی ٹوٹ جاتا ہے نماز بھی۔ خلاصہ یہ ہے کہ گناہ نیکیوں کا کمال دور کر دیتے ہیں جیسے نیکیاں اصل گناہوں کا زول کر دیتی ہیں، نیز غیبت کی وجہ سے غیبت کرنے والے کی نیکیاں مغتاب کو دے دی جاتی ہیں اس کا روزہ نماز مغتاب کو دے دیا گیا یہ بغیر روزہ نماز رہ گیا لہذا، اسے دوبارہ ادا کرنے کا حکم دیا گیا۔ سیدنا عبد اللہ فرماتے ہیں کہ غیبت سے روزہ ٹوٹ جاتا ہے نماز پڑھی ہوئی ہے کار ہو جاتی ہے ان کی نیکیاں یہ ہی حدیث ہے۔ (مرقات) باقی حضرات فرماتے ہیں کہ اس سے روزہ نماز کا کمال ٹوٹ جاتا ہے بہر حال یہ حکم عالی تنبیہ فرمانے کے لیے ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۰۳)

فرمایا: میں اس کو پسند نہیں کرتا کہ کسی کی نقل کروں، اگرچہ میرے لیے اتنا اتنا ہو۔ (44) یعنی نقل کرنا دنیا کی کسی چیز کے مقابل میں درست نہیں ہو سکتا۔

حدیث ۴۲: بیہقی نے شعب الایمان میں ابوسعید و جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: غیبت زنا سے بھی زیادہ سخت چیز ہے۔ لوگوں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) زنا سے زیادہ سخت غیبت کیونکر ہے۔ فرمایا کہ مرد زنا کرتا ہے پھر توبہ کرتا ہے، اللہ تعالیٰ اس کی توبہ قبول فرماتا ہے اور غیبت کرنے والے کی مغفرت نہ ہوگی، جب تک وہ نہ معاف کر دے جس کی غیبت ہے۔ (45)

اور انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی روایت میں ہے کہ زنا کرنے والا توبہ کرتا ہے اور غیبت کرنے والے کی توبہ نہیں ہے۔ (46)

(44) سنن اترندی، کتاب صفۃ القیامۃ... باب ۱۱۶، الحدیث ۲۵۱۰، ج ۴، ص ۲۲۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے یعنی اگر مجھے کوئی دنیا کی بڑی سے بڑی دولت نعمت دے اس کے عوض میں کہ میں کسی مسلمان کی کوئی حرکت بطور غیبت نقل کروں تو میں وہ دولت قبول نہ کروں گا اور اس کی نقل نہ اتاروں گا۔ یہاں حضور انور نے اپنا عمل شریف بیان فرما کر تیا مت مسلمانوں کو تعلیم دی کہ تم کو کوئی کتنی ہی دولت دے کر کسی مسلمان کی قوی یا عملی غیبت کرائے اس کی نقل اتراوے تو ہرگز قبول نہ کرو، یہاں بھی حکایت سے مراد بطور غیبت ممنوع نقل کرنا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۹۰)

(45) شعب الایمان، باب فی تحریم إعراض الناس، الحدیث: ۶۷۴۱، ج ۵، ص ۳۰۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی غیبت ہے تو گناہ صغیرہ اور زنا ہے گناہ کبیرہ مگر شدت اور نتیجہ میں غیبت زنا سے بدتر ہے، یہ زنی کی وجہ آگے بیان ہو رہی ہے۔

۲۔ خد صہ یہ ہے کہ اگرچہ زنا گناہ ہے اس کی شرعی سزا بھی بہت سخت ہے مگر ہے حق اللہ جو توبہ سے معاف ہو سکتا ہے، غیبت حق عجب ہے کہ توبہ سے معاف نہیں ہو سکتا جب تک کہ صاحب حق معاف نہ کرے، اگر وہ مر گیا تو اس کی معافی کی کوئی صورت ہی نہیں۔ حق اللہ کی پہچان یہ ہے کہ وہ بندے کے معاف کرنے سے معاف نہ ہو، حق العبد کی پہچان یہ ہے کہ بندے کے معاف کرنے سے معاف ہو جاوے۔ زنا حق اللہ، قتل حق العبد، اس لیے قتل کا قصاص ولی مقتول کے معاف کرنے سے معاف ہو جاتا ہے، زنا اگر زانی مرنے کے سارے عزیز معاف کر دیں اس کی سزا معاف نہیں ہوتی۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۰۵)

(46) المرجع السابق، الحدیث: ۶۷۴۲، ج ۵، ص ۳۰۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے اس فرمان عادی کے دو معنی ہو سکتے ہیں ایک یہ کہ غیبت کا گناہ توبہ کر لینے سے معاف نہیں ہوتا اس کی معافی کے لیے مختاب کا

حدیث ۴۳: بیہقی نے دعوات کبیر میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ غیبت کے کفارہ میں یہ ہے کہ جس کی غیبت کی ہے، اس کے لیے استغفار کرے، یہ کہے۔ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلَهٗ (47) الہی! ہمیں اور اسے بخش دے۔

حدیث ۴۴: ابو داؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ ماعز اسلمی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو جب رجم کیا گیا تھا، دو شخص آپس میں باتیں کرنے لگے، ایک نے دوسرے سے کہا، اسے تو دیکھو کہ اللہ (عزوجل) نے اس کی پردہ پوشی کی تھی مگر اس کے نفس نے نہ چھوڑا، کتے کی طرح رجم کیا گیا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے سن کر سکوت فرمایا۔ کچھ دیر تک چلتے رہے، راستہ میں مرا ہوا گدھا ملا جو پاؤں پھیلائے ہوئے تھا۔

حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے ان دونوں شخصوں سے فرمایا: جاؤ اس مردار گدھے کا گوشت کھاؤ۔ انھوں نے عرض کی، یا نبی اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم)! اسے کون کھائے گا؟ ارشاد فرمایا: وہ جو تم نے اپنے بھائی کی آبروریزی کی، وہ اس گدھے کے کھانے سے بھی زیادہ سخت ہے۔ قسم ہے اس کی جس کے ہاتھ میں میری جان ہے اوہ

معافی دینا ضروری ہے۔ دوسرے یہ کہ لوگ زنا کو سخت گناہ سمجھتے ہیں اس لیے توبہ کر لیتے ہیں مگر غیبت کو معمولی چیز سمجھ کر اس سے توبہ نہیں کرتے حالانکہ یہ سخت گناہ ہے اس لیے زنا بھی کوئی کرتا ہے مگر غیبت سب ہمیشہ کر لیتے ہیں الا ماشاء اللہ۔ یہ دو عام ہے اس کو لوگ برا بھی نہیں سمجھتے اس سے بچو۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۰۶)

(47) مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب حفظ اللسان...، الحدیث: ۷۷۷، ج ۲، ص ۷۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اس فرمان عالی کے بہت معنی کیے گئے ہیں ایک یہ کہ اگر غیبت کی خبر غیبت والے کو پہنچ گئی تب تو وہ حق۔ بعد بن گئی اس سے جا کر معافی مانگے اور اگر اس کی خبر غیبت والے کو نہ پہنچی تو حق اللہ سے توبہ کرے مگر اس توبہ میں غیبت والے کو بھی شامل کرے۔ دوسرے یہ کہ اگر غیبت والے زندہ ہے تو اس سے معافی مانگے اور اگر مر چکا ہے تو اس کے لیے دعائے مغفرت کرے۔ تیسرے یہ کہ غیبت والے سے معافی مانگے اگر وہ معاف کر دے تو خیر اگر معاف نہ کرے تو اس کے لیے دعاء مغفرت کرے۔ مولانا علی قاری نے فرمایا کہ اگر غیبت کی خبر غیبت والے کو پہنچ جاوے تو حق العبد ہو جاتی ہے اگر خبر نہ پہنچے تو حق اللہ رہتی ہے مگر میرے مرشد برحق صدر الافاضل مولانا نعیم الدین صاحب مردودی قدس سرہ نے فرمایا کہ غیبت بہر حال حق العبد ہے خواہ اسے خبر پہنچے یا نہ پہنچے جیسے کسی کا مال مار لیا بہر حال حق العبد ہے خواہ مال والے کو خبر پہنچے یا نہ پہنچے کیونکہ غیبت سے غیبت والے کی آبروریزی ہوتی ہے اور آبرو بھی مال کی طرح حق العبد ہے اس لیے علماء فرماتے ہیں کہ مردے کی غیبت زندہ کی غیبت سے سخت تر ہے کہ مردے سے معافی نہیں مانگی جاسکتی۔ اس میں اختلاف ہے کہ غیبت والے سے معافی مانگے تو اجمالاً مانگے یا تفصیلاً یعنی یہ بتا کر معافی مانگے کہ میں نے تجھے یہ کہا تھا یا صرف یہ کہہ دے کہ میں نے تیری غیبت کی تھی مجھے معاف

کر دے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۰۷)

(ما عز) اس وقت جنت کی نہروں میں غوطے لگا رہا ہے۔ (48)

حدیث ۴۵: امام احمد و نسائی و ابن ماجہ و حاکم نے اسامہ بن شریک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اے اللہ کے بندو! اللہ (عزوجل) نے حرج اٹھالیا، مگر جو شخص کسی مرد مسلم کی بطور ظلم آبروریز کرے، وہ حرج میں ہے اور ہلاک ہوا۔ (49)

حدیث ۴۶: امام احمد و ابو داؤد و حاکم نے مسنن بن شداد رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس شخص کو کسی مرد مسلم کی برائی کرنے کی وجہ سے کھانے کو ملا، اللہ تعالیٰ اس کو اتنا ہی جہنم سے کھلائے گا اور جس کو مرد مسلم کی برائی کی وجہ سے کپڑا پہننے کو ملا، اللہ تعالیٰ اس کو جہنم کا اتنا ہی کپڑا پہنائے گا۔ (50)

(48) سنن ابی داؤد، کتاب اعدو، باب رجم ماعز بن مالک، الحدیث: ۴۴۲۸، ج ۳، ص ۱۹۷۔

امیر اہلسنت کے مدنی پھول

معلوم ہوا فوت شدہ لوگوں کی برائی کرنا بھی غیبت ہے۔ بعض اوقات بڑا متبر آزما معاملہ ہوتا ہے۔ مثلاً ڈاکو، دہشت گرد، اپنے عزیز کے قاتل وغیرہ قتل کر دیئے جائیں یا انہیں پھانسی لگا دی جائے تو بعض اوقات لوگ غیبت کے گناہ میں پڑ ہی جاتے ہیں۔ اسی طرح خودکشی کرنے والے مسلمان کے بارے میں بلا اجازت شرعی یہ کہہ دینا کہ فلاں نے خودکشی کی یہ غیبت ہے یوں ہی نام و پہچان کے ساتھ کسی مسلمان کی خودکشی کی اخبار میں خبر بھی نہ لگائی جائے کہ اس سے مرنے والے کی غیبت بھی ہوتی اور اس کے ساتھ ساتھ مرحوم کے اہل و عیال کی عزت پر بھی ہلکا لگتا ہے۔ ہاں اس انداز میں تذکرہ کیا کہ پڑھنے یا سننے والے خودکشی کرنے والے کو پہچان ہی نہ پائے کہ وہ کون تھا تو حرج نہیں مگر یہ ذہن میں رہے کہ نام نہ لیا مگر گاؤں، محلہ، برادری، اوقات، خودکشی کا انداز وغیرہ بیان کرنے سے خودکشی کرنے والے کی شناخت ممکن ہے لہذا پہچان ہو جائے اس انداز میں تذکرہ بھی غیبت میں شمار ہوگا۔ مسئلہ یہ ہے کہ مسلمان خودکشی کرنے سے اسلام سے خارج نہیں ہو جاتا اس کی نماز، جنازہ بھی ادا کی جائے گی، اس کیلئے دعائے مغفرت بھی کریں گے، مرنے والے مسلمان کو برائی سے یاد کرنے کی شریعت میں اجازت نہیں۔ اس ضمن میں دو فرامین مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم غلاحظہ ہوں: (1) اپنے مردوں کو برا نہ کہو کیونکہ وہ اپنے آگے بھیجے ہوئے اعمال کو پہنچ چکے ہیں۔ (بخاری ج ۱ ص ۴۷۰ حدیث ۱۳۹۳) (2) اپنے مردوں کی خوبیاں بیان کرو اور ان کی برائیوں سے باز رہو۔ (سنن ترمذی ج ۲ ص ۳۱۲ حدیث ۱۰۲۱) حضرت علامہ محمد عبدالرؤف مٹاوی علیہ رحمۃ اللہ الہادی لکھتے ہیں: مردے کی غیبت زندے کی غیبت سے بدتر ہے، کیونکہ زندہ شخص سے معاف کروانا ممکن ہے جبکہ مردہ سے معاف کروانا ممکن نہیں۔

(فیض الفقیر للکناوی ج ۱ ص ۵۶۲ تحت الحدیث ۸۵۲) (غیبت کی تباہ کاریاں صفحہ ۱۹۱)

(49) کنز العمال، کتاب الخلق، الحدیث: ۸۰۱۳، ج ۳، ص ۲۳۴۔

(50) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الغیبت، الحدیث: ۴۸۸۱، ج ۳، ص ۳۵۴۔

و مسند امام احمد بن حنبل، حدیث المسنن بن شداد، الحدیث: ۱۸۰۳۳، ج ۶، ص ۲۹۳۔

حدیث کے ۴۷: امام احمد و ابو داؤد نے ابو ہریرہؓ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اے وہ لوگ جو زبان سے ایمان لائے اور ایمان ان کے دلوں میں داخل نہیں ہوا مسلمانوں کی غیبت نہ کرو اور ان کی چھپی ہوئی باتوں کی ٹٹول نہ کرو، اس لیے کہ جو شخص اپنے مسلمان بھائی کی چھپی ہوئی چیز کی ٹٹول کر یگا، اللہ تعالیٰ اس کی پوشیدہ چیز کی ٹٹول کر یگا اور جس کی اللہ (عزوجل) ٹٹول کر یگا اس کو رسوا کر دے گا، اگرچہ وہ اپنے مکان کے اندر ہو۔ (51)

حدیث ۴۸: امام احمد و ابو داؤد نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب مجھے معراج ہوئی، ایک قوم پر گزرا جن کے ناخن تانبے کے تھے، وہ اپنے مونہ اور سینے کو نوچتے تھے۔ میں نے کہا: جبریل یہ کون لوگ ہیں؟ جبریل نے کہا، یہ وہ ہیں جو لوگوں کا گوشت کھاتے تھے اور ان کی آبروریزی

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کا نام مستور دابن شداد ہے، کوئی ہیں، آخر میں مصر میں رہے، حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی وفات کے وقت کسن تھے، صحابی ہیں، آپ سے بہت صحابہ نے احادیث نقل کیں۔

۲۔ اس طرح کہ دوڑے ہوئے مسلمانوں میں سے ایک کے پاس جاوے اور اسے خوش کرنے کے لیے دوسرے کی غیبت کرے، اسے برا کہے، اسے نقصان پہنچانے کی تدبیریں بتائے تاکہ اس ذریعہ سے شخص اسے کچھ دیدے یا کھلاوے ایسے خوشامدی لوگ آج کل بہت ہیں۔

۳۔ یہ دوزخ کی آگ کے انگارے ان لقموں کی عوض میں جس قدر یہاں لقمے کھائے اتنے ہی وہاں انگارے کھائے گا۔

۴۔ اس کا مطلب گزشتہ مضمون سے واضح ہے کہ جو کسی کو خوش کرنے کے لیے مسلمان بھائی کی غیبت کرے یا اسے ستائے اس غیبت وغیرہ کی عوض کپڑوں کا جوڑا پائے تو اسے قیامت میں اس جوڑے کی عوض آگ کا جوڑا پہنایا جائے گا۔

۵۔ اس فرمان عالی کے بہت معنی ہیں ایک یہ کہ جو شخص کسی مشہور شریف آدمی کی پگڑی اچھالے اس کا مقابلہ کرے تاکہ اس مقابلہ سے میری شہرت ہو، دوسرے یہ کہ جو کسی شخص کو دنیا میں جھوٹے طریقہ سے اچھالے تاکہ اس کے ذریعہ مجھے عزت و روزی ملے جیسے آج کل بعض جھوٹے پیروں کے مرید اس کی جھوٹی کراٹھیں بیان کرتے پھرتے ہیں تاکہ ہم کو بھی اس کے ذریعہ عزت ملے کہ ہم اس کے ہاتھ ہیں۔ (اشعہ) تیسرے یہ کہ جو شخص دنیا میں نام و نمود چاہے نیکیاں کرے مگر ناموری کے لیے یا جو شخص کسی کے ذریعہ سے اپنے کو مشہور و نامور کرے قیامت میں ایسے شخصوں کو عام رسوا کیا جاوے گا کہ فرشتہ اسے اونچی جگہ کھڑا کر کے اعلان کرے گا کہ لوگو یہ بڑا جھوٹا مکار فریبی تھا۔ (مرقات و لمعات وغیرہ) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۷۲)

(51) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الغیبة الحدیث ۳۸۸۰، ج ۴، ص ۳۵۴۔

والمسند لدا، م احمد بن حنبل، حدیث ابی ہریرۃ الاسلمی، الحدیث: ۱۹۷۹۷، ج ۷، ص ۱۸۱۔

کرتے تھے۔ (52)

حدیث ۴۹: ابو داؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: مسلمان کی سب چیزیں مسلمان پر حرام ہیں اس کا مال اور اس کی آبرو اور اس کا خون آدمی کو برائی سے اتنا ہی کافی ہے کہ وہ اپنے مسلمان بھائی کو حقیر جانے۔ (53)

حدیث ۵۰: ابو داؤد نے معاذ بن انس جہنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص مسلمان پر کوئی بات کہے اس سے مقصد عیب لگانا ہو، اللہ تعالیٰ اس کو پل صراط پر روکے گا جب تک اس چیز سے نہ نکلے جو اس نے کہی۔ (54)

(52) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الغیۃ، الحدیث: ۴۸۷۸، ج ۴، ص ۳۵۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ظہر یہ ہے کہ یہاں معراج سے مراد جسمانی بیداری کی معراج مراد ہے جو نبوت کے گیارہویں سال ستائیسویں رجب سوموار کی رات ہوئی۔ منامی یعنی خواب کی معراجیں حضور کو قریناتیں ہوئی ہیں، نماز کی فرضیت اس جسمانی معراج میں ہوئی۔

۲۔ اس طرح کہ ان پر خارش کا عذاب مسلط کر دیا گیا تھا اور ناخن تانے کے دھاردار اور نوکیلے تھے ان سے سینہ چہرہ کھجالتے تھے اور زخمی ہوتے تھے۔ خدا کی پناہ! یہ عذاب سخت عذاب ہے یہ واقعہ بعد قیامت ہوگا جو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے آنکھوں سے دیکھا۔

۳۔ یعنی یہ لوگ مسلمانوں کی غیبت کرتے تھے ان کی آبروریزی کرتے تھے، یہ کام عورتیں زیادہ کرتی ہیں انہیں اس سے عبرت لینی چاہیے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۷۳)

(53) مرجع السابق، الحدیث: ۴۸۸۲، ج ۴، ص ۳۵۴.

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی مسلمان کو نہ تو دل میں حقیر جانو نہ اسے حقارت کے الفاظ سے پکارو یا برے لقب سے یاد کرو نہ اس کا مذاق بنو آج ہم میں یہ عیب بہت ہے۔ پیشوں، نسبوں، یا غربت و افلاس کی وجہ سے مسلمان بھائی کو حقیر جانتے ہیں حتیٰ کہ صوبجاتی تعصب ہم میں بہت ہو گیا کہ وہ پنجابی ہے، وہ بنگالی، وہ سندھی، وہ سرحدی، اسلام نے یہ سارے فرق مٹا دیئے۔ شہد کی مکھی مختلف پھولوں کے رس چوس لیتی ہے تو ن کا نام شہد ہو جاتا ہے، مختلف لکڑیوں کو آگ جلادے تو اس کا نام راکھ ہو جاتا ہے، آم، جامن، ببول کا فرق مٹ جاتا ہے یوں ہی جب حضور کا دامن پکڑ لیا تو سب مسلمان ایک ہو گئے جیسی ہو یا رومی۔ مولانا جانی فرماتے ہیں شعر

کہ دریں راہ فلاں ابن فلاں چیزے نیست

بندہ عشق شدی ترک نسب کن جانی

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۸۹)

(54) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب من رد عن مسلم غیۃ، الحدیث: ۴۸۸۳، ج ۴، ص ۳۵۵.

حدیث ۵۱: ابو داؤد نے جابر بن عبد اللہ اور ابو طلحہ بن سہل رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جہاں مرد مسلم کی ہتک حرمت کی جاتی ہو اور اس کی آبروریزی کی جاتی ہو ایسی جگہ جس نے اس کی مدد نہ کی، یعنی یہ خاموش سنا رہا اور ان کو منع نہ کیا تو اللہ تعالیٰ اس کی مدد نہیں کریگا جہاں اسے پسند ہو کہ مدد کی جائے اور جو شخص مرد مسلم کی مدد کریگا ایسے موقع پر جہاں اس کی ہتک حرمت اور آبروریزی کی جا رہی ہو، اللہ تعالیٰ اس کی مدد فرمائے گا ایسے موقع پر جہاں اسے محبوب ہے کہ مدد کی جائے۔ (55)

حدیث ۵۲: شرح سنن ابی داؤد میں اس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جس کے سامنے اس کے مسلمان بھائی کی غیبت کی جائے اور وہ اس کی مدد پر قادر ہو اور مدد کی، اللہ تعالیٰ دنیا اور آخرت میں اس کی مدد کریگا اور اگر باوجود قدرت اس کی مدد نہیں کی تو اللہ تعالیٰ دنیا اور آخرت میں اسے پکڑے گا۔ (56)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۳۔ بے عزتی کے ارادہ کی قید اس لیے لگائی تاکہ معلوم ہو کہ کسی کی اصلاح کے لیے یا اس سے اپنا حق حاصل کرنے کے لیے اس کی غیبت درست ہے کہ وہ غیبت نہیں۔

۴۔ یعنی جتنی دیر تک اس نے غیبت میں اپنا وقت صرف کیا اتنی دیر تک ہل مراط پر روکا جاوے گا۔ حضرت شیخ نے فرمایا کہ جب تک اس سے معافی نہ مانگے تب تک وہ غیبت ہی میں مشغول ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۱۶)

(55) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب من رد عن مسلم غیبہ، الحدیث: ۴۸۸۳، ج ۴، ص ۳۵۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس طرح کہ جب کچھ لوگ کسی مسلمان کی آبروریزی کر رہے ہوں تو یہ بھی انکے ساتھ شریک ہو کر ان کی مدد کرے ان کی ہاں میں ہاں ملائے۔

۲۔ یعنی اللہ تعالیٰ اس جرم کی سزا میں اسے ایسی جگہ ذلیل کرے گا جہاں اسے عزت کی خواہش ہوگی۔ خیال رہے کہ یہ احکام مسلمان کے لیے ہیں۔ کفار، مرتدین، بے دین لوگوں کی اللہ تعالیٰ کے ہاں کوئی عزت نہیں ان کی بے دینی ظاہر کرنا عبادت ہے۔

۳۔ غرض کہ کما تدرین تدران جیسا کرو گے ویسا بھرو گے۔ کرونی خویش آمدنی پیش۔ مسلمان بھائی کی عزت کرو اپنی عزت کراؤ، اسے ذلیل کر دینے کو ذلیل کراؤ۔ جگہ عام ہے دنیا میں ہو یا آخرت جہاں بھی اسے مدد کی ضرورت ہوگی رب تعالیٰ اس کی مدد فرمائے گا صرف ایک بار نہیں بلکہ ہمیشہ۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۱۳)

(56) شرح السنن، کتاب البر والصلة، باب الذب عن المسلمین، الحدیث: ۳۴۲۳، ج ۶، ص ۴۹۵۔

ومشكاة المصابيح، کتاب الادب، باب الشفقة والرحمة علی الخلق، الحدیث: ۴۹۸۰، ج ۳، ص ۶۹۔

حدیث ۵۳: بیہقی نے اسماء بنت یزید رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص اپنے بھائی کے گوشت سے اس کی غیبت میں روکے یعنی مسلمان کی غیبت کی جارہی تھی، اس نے روکا تو اللہ (عزوجل) پر حق ہے کہ اُسے جہنم سے آزاد کر دے۔ (57)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اس کے سامنے کسی مسلمان کی غیبت کی جاوے خواہ وہ اس کا عزیز ہو یا اجنبی۔

۲۔ یا اس طرح کہ غیبت کرنے والوں کو غیبت سے روک دے یا اس طرح کہ ان کی غیبت کا جواب دے دے یا اس طرح کہ اس غائب شخص کے اوصاف بیان کر دے اسے بدنامی سے بچا کر نیک نام کر دے، آج کل لوگ غیبت سنتے رہتے ہیں پھر اس غائب شخص کو آکر بتاتے ہیں کہ تجھے فلاں شخص نے یہ کہا تھا یہ ممنوع ہے کہ اس صورت میں اس کے دل کو تکلیف اس نے پہنچائی غیبت کرنے والوں نے تیر چلایا اس نے وہ تیر اس تک پہنچایا اس کے جسم میں چبھو یا۔

۳۔ کیونکہ اس نے اللہ کے بندے کی پس پشت مدد کی محض اللہ کے لیے اور رب تعالیٰ اپنے بندے کا بدلہ خود دیتا ہے دنیاوی آفات اخروی مصیبتوں سے بچانا اللہ کی بڑی ہی مہربانی ہے۔

۴۔ یعنی جو کوئی مسلمان بھائی کی عزت و آبرو نہ بچائے بلکہ ذلیل کرنے والوں کے ساتھ شریک ہو جاوے تو اللہ تعالیٰ اس بندے کا بدلہ خود لے گا کہ اسے دنیا و آخرت میں ذلیل کرے گا جب اس پر کوئی آفت بنے گی تو اسے دفع نہ کرے گا۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۱۰)

(57) شعب الایمان، باب فی التعاون علی البر والتقوی، الحدیث: ۶۳۳، ج ۶، ص ۱۱۲۔

ومشکوٰۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب الشفقة والرحمة علی الخلق، الحدیث: ۹۸۱، ج ۳، ص ۷۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اسماء بنت یزید ابن مکن مشہور صحابیہ ہیں، انصاریہ ہیں، بڑی عاقلہ بڑی عابدہ تھیں، آپ سے بہت احادیث مروی ہیں۔

۲۔ بھائی کے گوشت سے مراد ہے مسلمان بھائی کی غیبت، دفع کرنے سے مراد ہے غیبت نہ ہونے دینا یا اس کا جواب دے دینا۔

۳۔ جب ایک گنہگار مسلمان کی پس پشت حمایت کرنے کا یہ ثواب ہے تو جو کوئی حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے بدگو یوں دشمنوں کو جوابات دے، ان کی عزت پر حملہ کرنے والوں کے دار اپنے پر لے، ان کے صفات عالیہ کے گیت گائے سوچ لو کہ اس کا درجہ کیا ہوگا۔ اللہ تعالیٰ نصیب کرے حضرت حسان رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں شعر

لعرض محمد منکم وقاء

فان ابی ووالدنی وعرضی

میرے، میں باپ میری عزت و آبرو محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم کی آبرو و عزت کے لیے تمہارے مقابلہ میں ڈھال ہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۱۱)

حدیث ۵۴: شرح سنہ میں ابو درداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو مسلمان اپنے بھائی کی آبرو سے روکے یعنی کسی مسلم کی آبروریزی ہوتی تھی اس نے منع کیا تو اللہ (عزوجل) پر حق ہے کہ قیامت کے دن اس کو جہنم کی آگ سے بچائے۔ اس کے بعد اس آیت کی تلاوت کی۔

(وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ) (۴۷) (58)

مسلمانوں کی مدد کرنا ہم پر حق ہے۔

حدیث ۵۵: ترمذی و ابو داؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ایک مومن دوسرے مومن کا آئینہ ہے اور مومن مومن کا بھائی ہے، اس کی چیزوں کو ہلاک ہونے سے بچائے اور غیبت میں اس کی حفاظت کرے۔ (59)

حدیث ۵۶: امام احمد و ترمذی نے عقبہ بن عامر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص ایسی چیز دیکھے جس کو چھپانا چاہیے اور اس نے پردہ ڈال دیا یعنی چھپادی تو ایسا ہے جیسے موؤدہ (یعنی زندہ درگور) کو زندہ کیا۔ (60)

(58) شرح السنہ، کتاب البر والصلة، باب الذب عن المسلمين، الحدیث: ۳۲۲۲، ج ۶، ص ۴۹۲.

پ ۲۱، الروم ۷۷.

(59) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی النصیحة والخیالۃ، الحدیث: ۴۹۱۸، ج ۴، ص ۳۶۵.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ فرمان عالی بہت ہی عام ہے جو کوئی کسی مسلمان کی آبرو کسی طرح بچائے خواہ اس کے سامنے یا اس کے پس پشت اللہ اسے دوزخ کی آگ سے بچائے گا مسلمان کی عزت اللہ کو بڑی پیاری ہے۔

۲۔ یہ آیت کریمہ یا تو خود حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے تلاوت کی اپنے فرمان مبارک کی تائید میں یا حضرت ابوالدرداء رضی اللہ عنہ نے تلاوت کی اسی حدیث کی تائید میں۔ دوستو! آج حضرات صحابہ پر بہت طعن ہو رہے ہیں اٹھوان کی غنیمتوں کے ڈنگے بجاؤ دیکھو پھر رب تعالیٰ اور اس کے محبوب صلی اللہ علیہ وسلم کے آستانوں سے کیسے انعام ملتے ہیں، ان حضرات کی حمایت میں کتابیں چھاپنا، تقریریں کرنا، ان کے فضائل کی آیت و احادیث شائع کرنا سب ہی قرب الہی کا ذریعہ ہے۔ فقیر نے ایک رسالہ لکھا ہے حضرت امیر معاویہ پر ایک نظر جس میں حضرات صحابہ خصوصاً جناب امیر معاویہ رضی اللہ عنہم اجمعین کے فضائل کی احادیث و آیات جمع کر کے ان کے فضائل بیان کیے اور ان حضرات سے مخالفین کے اعتراضات دفع کیے خدا کرے یہ حقیری خدمت اس فرمان عالی کی برکت سے قبول ہو جاوے اور رب تعالیٰ میری سیارہ کاریاں معاف فرماوے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۸۱۲)

(60) المسند للإمام أحمد بن حنبل حدیث عقبہ بن عامر البخثی، الحدیث: ۱۷۳۳۴، ج ۶، ص ۱۲۶.

حدیث ۵۷: ابو نعیم نے معرفہ میں شہیب بن سعد بلوی سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: بندہ کو قیامت کے دن اس کا دفتر کھلا ہوا ملے گا، وہ اس میں ایسی نیکیاں بھی دیکھے گا جن کو کیا نہیں ہے، عرض کریگا، اے رب! یہ میرے لیے کہاں سے آئیں؟ میں نے تو انھیں کیا نہیں۔ اس سے کہا جائے گا کہ یہ وہ ہیں جو تیری لاعلمی میں لوگوں نے تیری غیبت کی تھی۔ (61)

حدیث ۵۸: ترمذی نے معاذ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جس نے اپنے بھائی کو ایسے گناہ پر عار دلایا جس سے وہ توبہ کر چکا ہے، تو مرنے سے پہلے وہ خود اس گناہ میں مبتلا ہو جائے گا۔ (62)

سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الستر علی المسلم، الحدیث: ۴۸۹۱، ج ۴، ص ۳۵۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ وہ عیب جو کسی مسلمان کے حق سے متعلق نہ ہو اور یہ شخص اسے لوگوں سے چھپانا چاہتا ہو، بعض شارحین نے فرمایا کہ اس سے مراد مسلمان مرد یا عورت کا ستر ہے یعنی کسی کو نیچا دیکھے تو اسے کپڑا پہنا دے ہو سکتا ہے کہ دونوں ہی مراد ہوں۔

۲۔ اس طرح کہ خود اس سے کہہ دے کہ دیکھ آئندہ ایسی حرکت نہ کرنا ورنہ پھر تیری خیر نہ ہوگی اور لوگوں سے چھپالے تاکہ تبلیغ بھی ہو جائے اور مسلمان کی پردہ پوشی بھی لیکن اگر یہ شخص کسی قتل یا نقصان کی خفیہ سازش کر رہا ہے تو ضرور اس کی اطلاع اس کو کر دے تاکہ وہ نقصان سے بچ جاوے یا اگر یہ شخص عادی مجرم بن چکا ہے تو اس کا اعلان کر دے لہذا اس فرمان عالی کا یہ مقصد نہیں کہ خفیہ چور قاتل کے جرم چھپاؤ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا فرمان نہایت ہی جامع ہوتا ہے۔

۳۔ یعنی اس پردہ پوشی کا ثواب ایسا ہے جیسے کسی زندہ دفن شدہ بچی کو قبر سے نکال کر ان کی جان بچالینا کیونکہ مسلمان کی آبرو اس کی جان کی طرح قابل احترام ہے۔ بہر حال مسلمان کی جاتی ہوئی عزت بچانا بڑا ہی ثواب ہے مگر وہ قیود خیال میں رہیں جو ہم نے عرض کیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۱۲)

(61) کنز العمال، کتاب الاخلاق، رقم ۸۰۴۳، ج ۳، ص ۲۳۶۔

(62) سنن الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ... الخ، باب ۱۱۸، الحدیث: ۲۵۱۳، ج ۴، ص ۲۲۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ جلیل القدر عظیم الشان تابعی ہیں، آپ کی کنیت ابو عبد اللہ ہے، ملک شام میں مقام حمص کے رہنے والے ہیں، قبیلہ کلاب سے ہیں، ستر ۷۰ صحابہ سے ملاقات کی، ۱۰۴ھ ایک سو چار ہجری میں مقام طرطوس میں آپ کی وفات ہوئی وہاں ہی قبر شریف ہے۔

۲۔ گناہ سے وہ گناہ مراد ہے جس سے وہ توبہ کر چکا ہے یا وہ پرانا گناہ جسے لوگ بھول چکے یا خفیہ گناہ جس پر لوگ مطلع نہ ہوں اور عار دلانا توبہ کرانے کے لیے نہ ہوں محض غصہ اور جوش غضب سے ہو یہ قیود خیال میں رہیں۔

حدیث ۵۹: ترمذی نے دائلہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اپنے بھائی کی ثنات نہ کر یعنی اس کی معیبت پر اظہار مسرت نہ کر، کہ اللہ تعالیٰ اس پر رحم کریگا اور تجھے اس میں مبتلا کر دے گا۔ (63)

حدیث ۶۰: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: میری ساری امت عافیت میں ہے مگر مجاہدین یعنی جو لوگ کھلم کھلا گناہ کرتے ہیں یہ عافیت میں نہیں ان کی غیبت اور برائی کی جائے گی اور آدمی کی بے باکی سے یہ ہے کہ رات میں اس نے کوئی کام کیا یعنی گناہ کا کام اور خدا نے اس کو چھپایا اور یہ صبح کو خود کہتا ہے، کہ آج رات میں میں نے یہ کیا، خدا نے اس پر پردہ ڈالا تھا اور یہ شخص پردہ الہی کو ہٹا دیتا ہے۔ (64)

۳۔ یعنی اپنی موت سے پہلے یہ گناہ خود کرے گا اور اس میں بدنام ہوگا مظلوم کا بدلہ ظالم سے خود رب تعالیٰ لیتا ہے۔

۴۔ یہ تفسیر حضرت امام احمد ابن حنبل کی ہے کہ یہاں گناہ سے مراد وہ گناہ ہے جس سے گنہگار توبہ کر چکا ہے ایسے گناہ کا ذکر بھی نہیں چاہیے جس گناہ میں بندہ گرفتار ہے، اس سے عار دلانا تاکہ توبہ کرے یہ تو تبلیغ ہے اس پر ثواب ہے۔

۵۔ یعنی خالد ابن معدان نے معاذ ابن جبل کا زمانہ نہ پایا کیونکہ حضرت معاذ کی وفات ۱۸ھ شمارہ میں ہوئی اور خالد کی پیدائش ۱۸ھ کے بعد ہوئی۔ خیال رہے کہ اتصال کے لیے راوی کا اپنے شیخ سے ملاقات کرنا ضروری نہیں صرف ہم زمانہ ہونا کافی ہے، تمام محدثین کا اس پر اتفاق ہے ہاں امام بخاری کے ہاں ملاقات ضروری ہے۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۸۸)

(63) المرجع السابق، باب ۱۱۹، الحدیث: ۲۵۱۴، ج ۴، ص ۲۲۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ دائلہ ابن اسحاق لیثی صحابی ہیں، جب حضور انور غزوہ تبوک کے لیے جا رہے تھے تو آپ ایمان لائے، تین سال حضور کی خدمت میں رہے، اصحاب صفہ سے تھے ایک سو برس عمر پائی بیت المقدس میں وفات ہوئی۔ (مرقات) آپ مشہور صحابی ہیں۔

۲۔ یعنی کسی مسلمان کو دینی یا دنیاوی آفت میں مبتلا دیکھ کر اس پر خوشی میں طعن نہ کر و بعض دفعہ خوشی میں بھی کسی پر احوال پڑھی جاتی ہے۔ شیخ سعدی فرماتے ہیں۔ شعر

مگواندوہ خوش پیش کساں کہ لاحول گویند شادی کناں

اگر ملامت کرنا اس کی فہمائش کے لیے ہو تب جائز ہے جب کہ اس طریقہ سے اس کی اصلاح ہو سکے غرضکہ ملامت کی مختلف صورتیں ہیں۔

۳۔ یہ ہے مسلمان کی آفت پر خوشی منانے کا انجام کہ خوشی منانے والا خود گرفتار ہو جاتا ہے بارہا کا آزمودہ ہے ہمیشہ خدا سے خوف کرنا چاہیے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۸۹)

(64) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب ستر المؤمن علی نفسه، الحدیث: ۶۰۶۹، ج ۴، ص ۱۱۸۔

حدیث ۶۱: طبرانی و بیہقی نے بروایت بہز بن حکیم عن ابیہ عن جدہ روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: کیا فاجر کے ذکر سے بچتے ہو اس کو لوگ کب پہچانیں گے، فاجر کا ذکر اس چیز کے ساتھ کرو جو اس میں ہے، تاکہ لوگ اس سے بچیں۔ (65)

حدیث ۶۲: بیہقی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس نے حیا کی چادر ڈال دی اس کی غیبت نہیں۔ (66) یعنی ایسوں کی برائی بیان کرنا غیبت میں داخل نہیں۔

حدیث ۶۳: طبرانی نے معاویہ بن حیدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: فاسق کی غیبت نہیں ہے۔ (67)

صحیح مسلم، کتاب الزہد، باب النہی عن ہتک الانسان ستر نفسه، الحدیث: ۵۲۔ (۲۹۹۰)، ص ۱۵۹۵۔

ومشکوٰۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب حفظ اللسان... إلخ، الحدیث: ۲۸۳۱، ج ۳، ص ۴۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ معافی کے دو معنی ہو سکتے ہیں ایک یہ کہ عفو سے یعنی رب تعالیٰ کی طرف سے معافی دی جاوے گی۔ دوسرے یہ کہ عافیت سے ہو یعنی اسے عافیت دی ہوئی ہے اس کی غیبت حرام ہے۔

۲۔ یعنی عدائیہ گنہ کرنے والوں کی نہ آخرت میں پردہ پوشی کی جاوے گی نہ دنیا میں، ان کی غیبت حرام ہوگی ان کی غیبت جائز ہے کہ وہ خود ہی اپنے پردہ دار نہیں۔

۳۔ مجاہد کے معنی اعلان بھی ہیں اور بے پردہ بھی یہاں دونوں معنی درست ہیں۔

۴۔ یعنی اپنے چھپے گنہ خود ہی لوگوں پر ظاہر کرے اللہ تعالیٰ کی ستاری سے فائدہ اٹھا کر خفیہ توبہ نہ کرے۔

۵۔ ہر بناء پر فقہاء فرماتے ہیں کہ چھپے گناہ کی چھپ کر توبہ کرے اعلان نہ کرے توبہ کے اعلان میں گنہ کا بھی اعلان ہوگا۔ یہ حکم حقوق عباد اور بعض شرعی سزاؤں کے علاوہ دیگر جرموں کے لیے ہے۔ اگر کسی کا حق ہم نے مار لیا اسے خبر نہ ہوئی تو ضرور اسے خبر دے اور حق ادا کرے، اگر خفیہ زنا کر لیا ہے تو قاضی کے پاس اقرار کر کے سزا لے جیسے حضرت ماعز نے کہا تھا لہذا حدیث واضح ہے۔

۶۔ یعنی وہ حدیث کہ جو اللہ تعالیٰ اور قیامت پر ایمان رکھتا ہو وہ یا اچھی بات کہے ورنہ خاموش رہے مصابیح میں اس جگہ بھی ہم نے مناسبت کا لحاظ رکھتے ہوئے دعوت کے باب میں ذکر فرمادی، صاحب مشکوٰۃ نے رد و بدل بہت جگہ کیا۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۱۵)

(65) اسنن، کبیری للبیہقی، کتاب الشهادات باب الرجل من أجل الفقه... إلخ، الحدیث: ۲۰۹۱۳، ج ۱۰، ص ۳۵۳۔

(66) المرجع السابق، الحدیث: ۲۰۹۱۵، ج ۱۰، ص ۳۵۳۔

(67) المعجم، کبیر، الحدیث: ۱۰۱۱، ج ۱۹، ص ۴۱۸۔

حدیث ۶۴: صحیح مسلم میں مقدار بن اسود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: مہلغہ کے ساتھ مدح کرنے والوں کو جب تم دیکھو، تو ان کے مونہ میں خاک ڈال دو۔ (68)

حدیث ۶۵: صحیح بخاری میں ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ایک شخص کو سنا کہ دوسرے کی تعریف کرتا ہے اور تعریف میں مبالغہ کرتا ہے۔ ارشاد فرمایا: تم نے اسے ہلاک کر دیا یا اس کو پیٹھ توڑ دی۔ (69)

حدیث ۶۶: صحیح بخاری و مسلم میں ابوبکرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہتے ہیں کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے سامنے ایک شخص نے ایک شخص کی تعریف کی، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: تجھے ہلاکت ہو تو نے اپنے بھائی کی گردن کاٹ دی اس کو تین مرتبہ فرمایا، جس شخص کو کسی کی تعریف کرنی ضروری ہی ہو تو یہ کہے کہ میرے گمان میں فلاں ایسا ہے اگر اس کے علم میں یہ ہو کہ وہ ایسا ہے اور اللہ (عزوجل) اس کو خوب جانتا ہے اور اللہ (عزوجل) پر کسی کا تزکیہ نہ کرے۔ (70) یعنی جزم اور یقین کے ساتھ کسی کی تعریف نہ کرے۔

(68) صحیح مسلم، کتاب الزہد... إلخ، باب النہی عن المدح إذا کان فیہ إفراط... إلخ، الحدیث: ۶۹۔ (۳۰۰۲) ص ۱۵۹۹۔
حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہاں مداحین سے مراد وہ جھولی چک ہیں جو خوشامد کے لیے لوگوں کے منہ پر تعریفیں کرتے ہیں بلکہ اس سے اپنے پیٹ پالتے ہیں، جھولی تعریفیں کر کے سامنے والے کو خوش کرتے ہیں جو کسی نیک شخص کی سچی تعریف کرے جس سے اس کو اور زیادہ نیکی کی رغبت ہو وہ اس میں داخل نہیں اس لیے مداحین صیغہ مبالغہ ارشاد ہوا یعنی تعریفیں کرنے کا عادی اس کا پیشہ ور۔

۲۔ بعض شارحین نے حدیث کو بالکل ظاہری معنی پر رکھا کہ واقعی ان پر مٹی ڈال دو تا کہ آئندہ وہ اس کام کی جرأت نہ کریں دو چار جگہ منہ پر خاک پڑ جانے سے اس عمل سے توبہ کر لیں۔ بعض نے فرمایا کہ اس کا معنی یہ ہے کہ اس پر خاک ڈالو اور توبہ نہ کرو یہ نہ سمجھو کہ واقعی تم بڑے اچھے آدمی ہو یا یہ مطلب ہے کہ اسے کچھ دے دو تھوڑا مال بھی گویا خاک ہے تا کہ وہ تمہاری بھونہ کرے کہ ایسے لوگ کچھ نہ ملنے پر گالیاں دیتے ہیں یا یہ مطلب ہے کہ انہیں بہت تھوڑا مال دو جو خاک برابر ہو زیادہ مال نہ دو اور بھی بہت معنی کیے گئے ہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۶۱)

(69) صحیح بخاری، کتاب الادب، باب ما یکرہ من التمداح، الحدیث: ۶۰۶۰، ج ۴، ص ۱۱۵۔

(70) صحیح مسلم، کتاب الزہد... إلخ، باب النہی عن المدح... إلخ، الحدیث: ۶۵۔ (۳۰۰۰) ص ۱۵۹۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی بہت زیادہ تعریف کی بہت مبالغہ سے، غالباً وہ شخص وہاں موجود ہوگا جیسا کہ اگلے مضمون سے ظاہر ہے دیکھو مرقات۔

۲۔ یعنی وہ شخص ایسی طبیعت کا ہے کہ تیری تعریف سن کر مغرور و متکبر ہو جاوے گا ایسے شخص کی منہ پر تعریف اسے نقصان دیتی ہے۔

حدیث ۶۷: بیہقی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب فاسق کی مدح کی جاتی ہے، رب تعالیٰ غضب فرماتا ہے اور عرش الہی جنبش کرنے لگتا ہے۔ (71)



خیال رہے کہ بعض لوگ اپنی تعریف سن کر اور زیادہ نیکیاں کرنے لگتے ہیں اور بعض لوگ غرور میں آ جاتے ہیں پہلے قسم کے لوگوں کے منہ پر تعریف کرنا مفید ہے، دوسرے لوگوں کے لیے نقصان دہ یہاں دوسری صورت کا ذکر ہے۔

۳۔ یعنی کسی کی تعریف کرنے کی دو شرطیں ہیں ایک یہ کہ یقین کے ساتھ تعریف نہ کرے کہ وہ ایسا ہی ہے بلکہ اپنے خیال کا اظہار کرے۔ دوسرے یہ کہ جو سمجھتا ہو وہ ہی کہے اگر واقعی اسے اچھا سمجھتا ہے تو اچھا کہے دل میں برا جاننا منہ سے اچھا کہنا جھوٹ بھی ہے اور خوشامد بھی۔

۴۔ یعنی واقعہ کی گواہی نہ دے کہ واللہ وہ بہت ہی اچھا ہے مگر یہ تمام شرائط اس کے متعلق ہیں جس کی برائی بھلائی نص سے ثابت نہ ہو۔ حضرات انبیاء خصوصاً حضور محمد صلی اللہ علیہ وسلم ان کے آل و اصحاب کی تعریفیں کامل یقین سے کرے اور خوب کرے مثلاً میں کہہ سکتا ہوں کہ قسم رب تعالیٰ کی حضور صلی اللہ علیہ وسلم اور تمام صحابہ اللہ کے پیارے بندے ہیں، یوں ہی وہ حضرات جنہیں مخلوق ولی اللہ کہتی ہے انہیں ہم یقین سے دلی کہہ سکتے ہیں کہ مخلوق کی زبان خالق کا قلم ہے لہذا یہ حدیث نہ تو آیت قرآنیہ کے خلاف ہے نہ دوسری احادیث کے، حضور فرماتے ہیں: التمد شہداء اللہ فی الارض۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۶۲)

(71) شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، الحدیث: ۴۸۸۶، ج ۴، ص ۲۳۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی گنہگار بدکار لوگوں کی تعریف کرنا خوشامد کے لیے یا ان سے کچھ دنیاوی نفع حاصل کرنے کے ممنوع ہے، رب تعالیٰ کی ناراضی کا باعث، ظالم کو عادل کہنا فقہاء کے نزدیک کفر ہے کہ اس میں نص قرآنی کا انکار ہے۔

۲۔ عرش الہی کا ہلنا رب تعالیٰ کے غضب کے اظہار کے لیے ہے کہ یہ اس کی تعریف کر رہا ہے جس سے رب تعالیٰ ناراض ہے اگر اسے حلال جان کر اچھا کہا ہے تو کافر ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۹۲)

مسائل فقہیہ

غیبت کے یہ معنی ہیں کہ کسی شخص کے پوشیدہ عیب کو (جس کو وہ دوسروں کے سامنے ظاہر ہونا پسند نہ کرتا ہو) اس کی برائی کرنے کے طور پر ذکر کرنا اور اگر اس میں وہ بات ہی نہ ہو تو یہ غیبت نہیں بلکہ بہتان ہے قرآن مجید میں فرمایا:

(وَلَا يَغْتَبِ بَعْضُكُم بَعْضًا أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ) (1)

(1) پ ۲۶، الحجرات ۱۲۔

حدیث شریف میں ہے کہ غیبت یہ ہے کہ مسلمان بھائی کے پیٹھ پیچھے ایسی بات کہی جائے جو اسے ناگوار گزرے اگر وہ بات سچ ہے تو غیبت ہے ورنہ بہتان۔

مسلمان بھائی کی غیبت بھی گوارا نہ ہونی چاہئے کیونکہ اس کو پیٹھ پیچھے برا کہنا اس کے مرنے کے بعد اس کا گوشت کھانے کے مثل ہے کیونکہ جس طرح کسی کا گوشت کاٹنے سے اس کو ایذا ہوتی ہے اسی طرح اس کو بدگوئی سے قلبی تکلیف ہوتی ہے اور درحقیقت آبرو گوشت سے زیادہ پیاری ہے۔

شان نزول سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم جب جہاد کے لئے روانہ ہوتے اور سفر فرماتے تو ہر دو مال داروں کے ساتھ ایک غریب مسلمان کو کر دیتے کہ وہ غریب ان کی خدمت کرے وہ اسے کھلائیں پلائیں ہر ایک کا کام چلے اسی طرح حضرت سلمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ دو آدمیوں کے ساتھ گئے تھے، ایک روز وہ سو گئے اور کھانا تیار نہ کر سکے تو ان دونوں نے انہیں کھانا طلب کرنے کے لئے رسول کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں بھیجا، حضور کے خادم مطبخ حضرت اُسامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ، ان کے پاس کچھ رہا نہ تھا، انہوں نے فرمایا کہ میرے پاس کچھ نہیں، حضرت سلمان رضی اللہ عنہ نے یہی آکر کہہ دیا تو ان دونوں رفیقوں نے کہا کہ اُسامہ (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) نے بخش کیا، جب وہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے، فرمایا میں تمہارے منہ میں گوشت کی رنگت دیکھتا ہوں، انہوں نے عرض کیا ہم نے گوشت کھایا ہی نہیں، فرمایا تم نے غیبت کی اور جو مسلمان کی غیبت کرے اس نے مسلمان کا گوشت کھایا۔

مسئلہ غیبت بالاتفاق کہاں سے ہے، غیبت کرنے والے کو توبہ لازم ہے، ایک حدیث میں یہ ہے کہ غیبت کا کفارہ یہ ہے کہ جس کی غیبت کی ہے اس کے لئے دعائے مغفرت کرے۔

مسئلہ فاسق معین کے عیب کا بیان غیبت نہیں، حدیث شریف میں ہے کہ قاجر کے عیب بیان کرو کہ لوگ اس سے بچیں۔

مسئلہ حسن رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ تین شخصوں کی حرمت نہیں ایک صاحب ہوا (بد مذہب)، دوسرا فاسق معین، تیسرا بادشاہ ظالم، یعنی ان کے عیوب بیان کرنا غیبت نہیں۔

تم آپس میں ایک دوسرے کی غیبت نہ کرو، کیا تم میں کوئی اس بات کو پسند کرتا ہے کہ اپنے مردہ بھائی کا گوشت

اکثریت غیبت کی لپیٹ میں ہے

میرے شیخ طریقت امیر السنّت بانی دعوت اسلامی حضرت علامہ مولانا ابوبلال محمد الیاس عطار قادری رضوی دامت برکاتہم العالیہ اپنی کتاب غیبت کی تباہ کاریاں میں تحریر فرماتے ہیں

پیارے بھائیو! ماں باپ، بھائی بہن، میاں بیوی، ساس نہو، سسر داماد، تنہ بھانج بلکہ اہل خانہ و خاندان نیز استاد و شاگرد، سیٹھ و نوکر، تاجر و گاہک، افسر و مزدور، مالدار و نادار، حاکم و محکوم، دنیا دار و دیندار، بوڑھا ہو یا جوان، الغرض تمام دینی، درذنی و دنیوی شعبوں سے تعلق رکھنے والے مسلمانوں کی بھاری اکثریت اس وقت غیبت کی خوفناک آفت کی لپیٹ میں ہے، افسوس! صد کروڑ افسوس! بے جا ہک ہک کی عادت کے سبب آ رہی کل ہماری کوئی مجلس (بینک) غموں و غیبت سے خالی نہیں ہوتی۔

مذنی حکایت

صدر الافاضل حضرت علامہ مولینا سید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ رحمۃ اللہ الہادی خزائن البرقان ص 823 پر لکھتے ہیں بیٹھے بیٹھے آتا دینے والے مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم جب جہاد کیلئے روانہ ہوتے یا سفر فرماتے تو ہر دو مالدار کے ساتھ ایک نادار مسلمان کو کر دیتے کہ یہ غریب اُن کی خدمت کرے اور وہ اس کو کھلائیں پلائیں اس طرح ہر ایک کا کام چلتا رہے۔ اسی طرح ایک موقع پر حضرت سیدنا سلمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ دو آدمیوں کے ساتھ گئے تھے۔ ایک روز آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سو گئے اور کھانا تیار نہ کر سکے تو ان دونوں نے انہیں کھانا طلب کرنے کیلئے بارگاہ رسالت میں بھیجا۔ سرکارِ مدینہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے خادمِ مطہر (یعنی باروچی خانے کے خادم) حضرت سیدنا اُسامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ تھے۔ ان کے پاس کھانا ختم ہو چکا تھا لہذا انہوں نے کہا: میرے پاس کچھ نہیں۔ جب حضرت سیدنا سلمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے دونوں رفقاء کو آکر بتایا تو انہوں نے کہا: اُسامہ (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) نے بخل کیا۔ جب بارگاہ رسالت میں حاضر ہوئے تو سرکارِ نامدار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے (پاؤں پر ورد گارغز و جلّٰء غیب کی خبر دیتے ہوئے) فرمایا: میں تمہارے منہ میں گوشت کی رنگت دیکھتا ہوں انہوں نے عرض کیا: ہم نے گوشت کھایا ہی نہیں۔ فرمایا: تم نے غیبت کی اور جو مسلمان کی غیبت کرے اُس نے مسلمان کا گوشت کھایا۔ (تفسیر بقوی ج ۳ ص ۱۹۴)

غیبت حرام ہونے کی حکمت

حضرت سیدنا امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ نقل کرتے ہیں: کسی کی برائی بیان کرنے میں خواہ کوئی سچا ہی کیوں نہ ہو پھر بھی اس کی غیبت کو حرام قرار دینے میں حکمت مؤمن کی عزت کی حفاظت میں مبالغہ کرنا ہے اور اس میں اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ انسان کی عزت و حرمت اور اس کے حقوق کی نہت زیادہ تاکید ہے، نیز اللہ عزّ و جلّٰء نے اس کی عزت کو گوشت اور خون کے ساتھ تشبیہ دے کر مزید پختہ و مؤکد کر دیا اور اس کے ساتھ ہی مبالغہ کرتے ہوئے اسے مردہ بھائی کا گوشت کھانے کے مترادف قرار دیا چنانچہ پارہ 26 سورۃ الحجرات آیت نمبر 12 میں ارشاد فرمایا: اَمَّا حُبُّكُمْ اَنْ يَّأْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ وَمِثْلًا لِّكَ هُمُوهُ (ترجمہ کنز الایمان: کیا تم میں سے

کھائے اس کو تو تم برا سمجھتے ہو۔

احادیث میں بھی غیبت کی بہت برائی آئی ہے، چند حدیثیں ذکر کر دی گئیں انھیں غور سے پڑھو، اس حرام سے بچنے کی بہت زیادہ ضرورت ہے۔ آج کل مسلمانوں میں یہ بلا بہت پھیلی ہوئی ہے اس سے بچنے کی طرف بالکل توجہ نہیں کرتے، بہت کم مجلسیں ایسی ہوتی ہیں جو چغلی اور غیبت سے محفوظ ہوں۔

مسئلہ ۱: ایک شخص نماز پڑھتا ہے اور روزے رکھتا ہے مگر اپنی زبان اور ہاتھ سے دوسرے مسلمانوں کو ضرر پہنچاتا ہے اس کی اس ایذا رسانی کو لوگوں کے سامنے بیان کرنا غیبت نہیں، کیونکہ اس ذکر کا مقصد یہ ہے کہ لوگ اس کی اس حرکت سے واقف ہو جائیں اور اس سے بچتے رہیں کہیں ایسا نہ ہو کہ اس کی نماز اور روزے سے دھوکا کھا جائیں اور مصیبت میں مبتلا ہو جائیں۔ حدیث میں ارشاد فرمایا کہ کیا تم فاجر کے ذکر سے ڈرتے ہو جو خرابی کی بات میں ہے

کوئی پسند کریگا کہ اپنے مرے بھائی کا گوشت کھائے تو یہ تمہیں گوارا نہ ہوگا) عزت کو گوشت سے تشبیہ دینے کی وجہ یہ ہے کہ انسان کی بے عزتی کرنے سے وہ ایسی ہی تکلیف محسوس کرتا ہے جیسا کہ اس کا گوشت کاٹ کر کھانے سے اس کا بدن درد محسوس کرتا ہے بلکہ اس سے بھی زیادہ۔ کیونکہ عقلمند کے نزدیک مسلمان کی عزت کی قیمت خون اور گوشت سے بڑھ کر ہے۔ سمجھدار آدمی جس طرح لوگوں کا گوشت کھانا اچھا نہیں سمجھتا اسی طرح ان کی عزت پامال کرنا بدرجہ اولیٰ اچھا تصور نہیں کرتا کیونکہ یہ ایک تکلیف دہ امر (یعنی معاملہ) ہے اور پھر اپنے بھائی کا گوشت کھانے کی تاکید لگانے کی وجہ یہ ہے کہ کسی کے لئے اپنے بھائی کا گوشت کھانا تو یسٹ درج کی بات ہے (معمولی سا) چباننا بھی ممکن نہیں ہوتا لیکن دشمن کا معاملہ اس کے برعکس ہے۔ (الذوالجزعین اقرباں الکبار ج ۲ ص ۱۰)

غیبت کے متعلق ایک اعتراض کا جواب

امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ الاکبر نے غیبت کے بارے میں سمجھانے کے لئے خود ہی اعتراض وارد کیا اور خود ہی اس کا جواب ارشاد فرمایا ہے لہذا ملاحظہ ہو:

اعتراض کسی کے منہ پر اس کا عیب بیان کرنا حرام ہے کیونکہ اس سے اُسے ہاتھوں ہاتھ تکلیف پہنچتی ہے جبکہ غیر موجودگی میں غیبت کرنے سے اُسے تکلیف نہیں پہنچتی کیوں کہ اسے اس کی اطلاع ہی نہیں ہوتی۔

جواب اس کا ایک جواب یہ ہے کہ (پارہ 26 سورۃ الحجرات آیت نمبر 12 میں اس لفظ) مَنَیَّا (یعنی مردہ) کی قید سے یہ اعتراض خود بخود ختم ہو جاتا ہے وہ اس طرح کہ اپنے مردہ بھائی کا گوشت کھانے سے خود کھائے جانے والے کو (ظاہراً) کوئی تکلیف نہیں ہوتی، حالانکہ یہ انتہائی گھٹیا اور بڑا فعل ہے۔ تاہم وہ مردہ جان لے کہ میرا گوشت کھایا جا رہا ہے تو اُسے ضرور تکلیف پہنچے۔ اسی طرح کسی کی غیر موجودگی میں اس کے عیب بیان کرنا بھی حرام ہے کیونکہ جس کی غیبت کی گئی اگر اسے اطلاع ہو جائے تو اُسے بھی تکلیف ہوگی۔

بیان کر دو تا کہ لوگ اس سے پرہیز کریں اور بچیں۔ (2)

(2) الدر المختار و رد المحتار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی البیہ، ج ۹، ص ۶۷۳۔

شعب الایمان، باب فی الستر... تاریخ، الحدیث: ۹۶۶۶، ج ۷، ص ۱۰۹۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:
اسی طرح نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے حکم دیا کہ فاجر معلن کے فسق و فجور کا اس کی اندگی میں اعلان کیا جائے تاکہ لوگ اس سے احتراز کریں۔

اخرج ابن ابی الدنیا فی ذم الغیبة والترمذی فی النوادر والحاکم فی الکنی، والشیرازی فی اللقباب وابن عدی فی الکامل والطبرانی فی الکبیر والبیہقی فی السنن والخطیب فی تاریخ، کلہم عن الجار د عن بہز بن حکیم عن ابیہ عن جدہ عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اترعون عن ذکر الفاجر متی یعرفہ الناس اذ کروا الفاجر بما فیہ یحذرہ الناس ا۔

ابن ابی الدنیا نے ذم الغیبة میں اور ترمذی نے نوادر میں اور حاکم نے کنی میں اور شیرازی نے القباب میں اور ابن عدی نے کمال میں اور طبرانی نے کبیر میں اور بیہقی نے سنن میں اور خطیب نے تاریخ میں سب نے جارود سے، جارود نے بہز بن حکیم سے، انھوں نے اپنے باپ سے اور ان کے دادا نے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت کی کہ کیا تم فاجر کا ذکر کرنے سے ڈرتے ہو، لوگ اسے کب پہچانیں گے، فاجر کی برائیاں بیان کر دو تا کہ لوگ اس سے بچیں۔ (۱۔ نوادر الاصول اصل نمبر ۶۶ فی ذکر الفاجر الحداد صادر بیروت ص ۲۱۳)

تاریخ بغداد ترجمہ ۴۵۷ و ۳۷۵ و ۳۷۴ و ۳۷۳ و ۳۷۲ و ۳۷۱ و ۳۷۰ و ۳۶۹ و ۳۶۸ و ۳۶۷ و ۳۶۶ و ۳۶۵ و ۳۶۴ و ۳۶۳ و ۳۶۲ و ۳۶۱ و ۳۶۰ و ۳۵۹ و ۳۵۸ و ۳۵۷ و ۳۵۶ و ۳۵۵ و ۳۵۴ و ۳۵۳ و ۳۵۲ و ۳۵۱ و ۳۵۰ و ۳۴۹ و ۳۴۸ و ۳۴۷ و ۳۴۶ و ۳۴۵ و ۳۴۴ و ۳۴۳ و ۳۴۲ و ۳۴۱ و ۳۴۰ و ۳۳۹ و ۳۳۸ و ۳۳۷ و ۳۳۶ و ۳۳۵ و ۳۳۴ و ۳۳۳ و ۳۳۲ و ۳۳۱ و ۳۳۰ و ۳۲۹ و ۳۲۸ و ۳۲۷ و ۳۲۶ و ۳۲۵ و ۳۲۴ و ۳۲۳ و ۳۲۲ و ۳۲۱ و ۳۲۰ و ۳۱۹ و ۳۱۸ و ۳۱۷ و ۳۱۶ و ۳۱۵ و ۳۱۴ و ۳۱۳ و ۳۱۲ و ۳۱۱ و ۳۱۰ و ۳۰۹ و ۳۰۸ و ۳۰۷ و ۳۰۶ و ۳۰۵ و ۳۰۴ و ۳۰۳ و ۳۰۲ و ۳۰۱ و ۳۰۰ و ۲۹۹ و ۲۹۸ و ۲۹۷ و ۲۹۶ و ۲۹۵ و ۲۹۴ و ۲۹۳ و ۲۹۲ و ۲۹۱ و ۲۹۰ و ۲۸۹ و ۲۸۸ و ۲۸۷ و ۲۸۶ و ۲۸۵ و ۲۸۴ و ۲۸۳ و ۲۸۲ و ۲۸۱ و ۲۸۰ و ۲۷۹ و ۲۷۸ و ۲۷۷ و ۲۷۶ و ۲۷۵ و ۲۷۴ و ۲۷۳ و ۲۷۲ و ۲۷۱ و ۲۷۰ و ۲۶۹ و ۲۶۸ و ۲۶۷ و ۲۶۶ و ۲۶۵ و ۲۶۴ و ۲۶۳ و ۲۶۲ و ۲۶۱ و ۲۶۰ و ۲۵۹ و ۲۵۸ و ۲۵۷ و ۲۵۶ و ۲۵۵ و ۲۵۴ و ۲۵۳ و ۲۵۲ و ۲۵۱ و ۲۵۰ و ۲۴۹ و ۲۴۸ و ۲۴۷ و ۲۴۶ و ۲۴۵ و ۲۴۴ و ۲۴۳ و ۲۴۲ و ۲۴۱ و ۲۴۰ و ۲۳۹ و ۲۳۸ و ۲۳۷ و ۲۳۶ و ۲۳۵ و ۲۳۴ و ۲۳۳ و ۲۳۲ و ۲۳۱ و ۲۳۰ و ۲۲۹ و ۲۲۸ و ۲۲۷ و ۲۲۶ و ۲۲۵ و ۲۲۴ و ۲۲۳ و ۲۲۲ و ۲۲۱ و ۲۲۰ و ۲۱۹ و ۲۱۸ و ۲۱۷ و ۲۱۶ و ۲۱۵ و ۲۱۴ و ۲۱۳ و ۲۱۲ و ۲۱۱ و ۲۱۰ و ۲۰۹ و ۲۰۸ و ۲۰۷ و ۲۰۶ و ۲۰۵ و ۲۰۴ و ۲۰۳ و ۲۰۲ و ۲۰۱ و ۲۰۰ و ۱۹۹ و ۱۹۸ و ۱۹۷ و ۱۹۶ و ۱۹۵ و ۱۹۴ و ۱۹۳ و ۱۹۲ و ۱۹۱ و ۱۹۰ و ۱۸۹ و ۱۸۸ و ۱۸۷ و ۱۸۶ و ۱۸۵ و ۱۸۴ و ۱۸۳ و ۱۸۲ و ۱۸۱ و ۱۸۰ و ۱۷۹ و ۱۷۸ و ۱۷۷ و ۱۷۶ و ۱۷۵ و ۱۷۴ و ۱۷۳ و ۱۷۲ و ۱۷۱ و ۱۷۰ و ۱۶۹ و ۱۶۸ و ۱۶۷ و ۱۶۶ و ۱۶۵ و ۱۶۴ و ۱۶۳ و ۱۶۲ و ۱۶۱ و ۱۶۰ و ۱۵۹ و ۱۵۸ و ۱۵۷ و ۱۵۶ و ۱۵۵ و ۱۵۴ و ۱۵۳ و ۱۵۲ و ۱۵۱ و ۱۵۰ و ۱۴۹ و ۱۴۸ و ۱۴۷ و ۱۴۶ و ۱۴۵ و ۱۴۴ و ۱۴۳ و ۱۴۲ و ۱۴۱ و ۱۴۰ و ۱۳۹ و ۱۳۸ و ۱۳۷ و ۱۳۶ و ۱۳۵ و ۱۳۴ و ۱۳۳ و ۱۳۲ و ۱۳۱ و ۱۳۰ و ۱۲۹ و ۱۲۸ و ۱۲۷ و ۱۲۶ و ۱۲۵ و ۱۲۴ و ۱۲۳ و ۱۲۲ و ۱۲۱ و ۱۲۰ و ۱۱۹ و ۱۱۸ و ۱۱۷ و ۱۱۶ و ۱۱۵ و ۱۱۴ و ۱۱۳ و ۱۱۲ و ۱۱۱ و ۱۱۰ و ۱۰۹ و ۱۰۸ و ۱۰۷ و ۱۰۶ و ۱۰۵ و ۱۰۴ و ۱۰۳ و ۱۰۲ و ۱۰۱ و ۱۰۰ و ۹۹ و ۹۸ و ۹۷ و ۹۶ و ۹۵ و ۹۴ و ۹۳ و ۹۲ و ۹۱ و ۹۰ و ۸۹ و ۸۸ و ۸۷ و ۸۶ و ۸۵ و ۸۴ و ۸۳ و ۸۲ و ۸۱ و ۸۰ و ۷۹ و ۷۸ و ۷۷ و ۷۶ و ۷۵ و ۷۴ و ۷۳ و ۷۲ و ۷۱ و ۷۰ و ۶۹ و ۶۸ و ۶۷ و ۶۶ و ۶۵ و ۶۴ و ۶۳ و ۶۲ و ۶۱ و ۶۰ و ۵۹ و ۵۸ و ۵۷ و ۵۶ و ۵۵ و ۵۴ و ۵۳ و ۵۲ و ۵۱ و ۵۰ و ۴۹ و ۴۸ و ۴۷ و ۴۶ و ۴۵ و ۴۴ و ۴۳ و ۴۲ و ۴۱ و ۴۰ و ۳۹ و ۳۸ و ۳۷ و ۳۶ و ۳۵ و ۳۴ و ۳۳ و ۳۲ و ۳۱ و ۳۰ و ۲۹ و ۲۸ و ۲۷ و ۲۶ و ۲۵ و ۲۴ و ۲۳ و ۲۲ و ۲۱ و ۲۰ و ۱۹ و ۱۸ و ۱۷ و ۱۶ و ۱۵ و ۱۴ و ۱۳ و ۱۲ و ۱۱ و ۱۰ و ۹ و ۸ و ۷ و ۶ و ۵ و ۴ و ۳ و ۲ و ۱۔

اور بعد موت کیسا ہی فاسق فاجر ہو اس کے برا کہنے اور اس کی برائیاں ذکر کرنے سے منع فرمایا کہ وہ اپنے کئے کو پہنچ گیا۔

اخرج الامام احمد والبخاری والنسائی عن ام المومنین الصدیقة رضی اللہ تعالیٰ عنہا عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم قال لا تسبوا الاموات فانہم قدا فضوا الی ما قدموا ا۔ و اخرج ابو داؤد والترمذی والحاکم والبیہقی عن ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اذ کر محاسن موتاکم و کفوا عن مساویہم ۲۔ و اخرج النسائی بسند جید عن عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لا تذکروا ہلکاکم الا بخیر ۳۔

(۱۔ صحیح البخاری کتاب الجنائز باب ما یمنی من سب الاموات قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۸۷) (۲۔ سنن ابی داؤد باب ما فی النبی عن سب المومنین آفتاب عالم پریس لاہور ۲/ ۳۱۵) (۳۔ سنن النسائی النبی عن ذکر الہلک الا بخیر مکتبہ سلفیہ لاہور ۱/ ۲۲۲)

ام احمد، بخاری اور نسائی نے ام المومنین عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی انھوں نے نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے فرمایا: تم مردوں کو برا نہ کہو کیونکہ انھوں نے جو کچھ کیا تھا وہ اس کی جزا کو پہنچے۔ اور ابو داؤد، ترمذی، حاکم، بیہقی نے ابن عمر سے انھوں نے

مسئلہ ۲: ایسے شخص کا حال جس کا ذکر اوپر گزرا اگر بادشاہ یا قاضی سے کہا تاکہ اسے سزا ملے اور اپنی حرکت سے باز آجائے یہ چغلی اور غیبت میں داخل نہیں۔ (3) یہ حکم فاسق و فاجر کا ہے جس کے شر سے بچانے کے لیے لوگوں پر اس کی برائی کھول دینا جائز ہے اور غیبت نہیں۔ اب سمجھنا چاہیے کہ بد عقیدہ لوگوں کا ضرر فاسق کے ضرر سے بہت زائد ہے فاسق سے جو ضرر پہنچے گا وہ اس سے بہت کم ہے، جو بد عقیدہ لوگوں سے پہنچتا ہے فاسق سے اکثر دنیا کا ضرر ہوتا ہے اور بد مذہب سے تو دین و ایمان کی بربادی کا ضرر ہے اور بد مذہب اپنی بد مذہبی پھیلانے کے لیے نماز روزہ کی بظاہر خوب پابندی کرتے ہیں، تاکہ ان کا وقار لوگوں میں قائم ہو پھر جو گمراہی کی بات کریں گے ان کا پورا اثر ہوگا، لہذا ایسوں کی بد مذہبی کا اظہار فاسق کے فسق کے اظہار سے زیادہ اہم ہے اس کے بیان کرنے میں ہرگز دریغ نہ کریں۔

آج کل کے بعض صوفی اپنا تقدس یوں ظاہر کرتے ہیں کہ ہمیں کسی کی برائی نہیں کرنی چاہیے یہ شیطانی دھوکا ہے مخلوق خدا کو گمراہوں سے بچانا یہ کوئی معمولی بات نہیں، بلکہ یہ انبیاء کرام علیہم السلام کی سنت ہے جس کو ناکارہ تاویل سے چھوڑنا چاہتا ہے اور اس کا مقصد یہ ہوتا ہے کہ میں ہر دل عزیز بنوں، کیوں کسی کو اپنا مخالف کروں۔

مسئلہ ۳: یہ معلوم ہے کہ جس میں برائی پائی جاتی ہے اگر اس کے والد کو خبر ہو جائے گی تو وہ اس حرکت سے روک دے گا، تو اسکے باپ کو خبر کر دے زبانی کہہ سکتا ہو تو زبانی کہے یا تحریر کے ذریعہ مطلع کر دے اور اگر معلوم ہے کہ اپنے باپ کا کہا بھی نہیں مانے گا اور باز نہیں آئے گا تو نہ کہے کہ بلا وجہ عداوت پیدا ہوگی۔ اسی طرح بیوی کی شکایت اس کے شوہر سے کی جاسکتی ہے اور رعایا کی بادشاہ سے کی جاسکتی ہے۔ (4) مگر یہ ضرور ہے کہ ظاہر کرنے سے اس کی برائی کرنا مقصود نہ ہو بلکہ اصلی مقصد یہ ہو کہ وہ لوگ اس برائی کا انسداد (یعنی برائی کی روک تھام) کریں اور اس کی یہ عادت چھوٹ جائے۔

مسئلہ ۴: کسی نے اپنے مسلمان بھائی کی برائی افسوس کے طور پر کی کہ مجھے نہایت افسوس ہے کہ وہ ایسے کام کرتا ہے یہ غیبت نہیں، کیونکہ جس کی برائی کی اگر اسے خبر بھی ہوگئی تو اس صورت میں وہ برا نہ مانے گا، برا اس وقت مانے گا جب اسے معلوم ہو کہ اس کہنے والے کا مقصد ہی برائی کرنا ہے، مگر یہ ضرور ہے کہ اس چیز کا اظہار اس نے حسرت و

نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت کی کہ تم اپنے مردوں کی خوبیاں بیان کرو اور ان کی برائیوں سے درگزر کرو۔ اور نسائی نے بسند جید و نشری اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی اور انھوں نے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے کہ تم اپنے مردوں کو بھدائی سے ہی یاد کرو۔

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۹، ص ۴۵۲، ۴۵۳ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(3) الدر المختار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی البیح، ج ۹، ص ۶۷۳۔

(4) الدر المختار و رد المحتار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی البیح، ج ۹، ص ۶۷۳۔

افسوس ہی کی وجہ سے کیا ہو ورنہ یہ غیبت ہے بلکہ ایک قسم کا نفاق اور ریا اور اپنی مدح سرائی ہے، کیونکہ اس نے مسلمان بھائی کی برائی کی اور ظاہر یہ کیا کہ برائی مقصود نہیں یہ نفاق ہوا اور لوگوں پر یہ ظاہر کیا کہ یہ کام میں اپنے لیے اور دوسروں کے لیے برا جانتا ہوں یہ ریا ہے اور چونکہ غیبت کو غیبت کے طور پر نہیں کیا، لہذا اپنے کو صلحا میں سے ہونا بتایا یہ تزکیہ نفس اور خود ستائی ہوئی۔ (5)

مسئلہ ۵: کسی بستی یا شہر والوں کی برائی کی، مثلاً یہ کہا کہ وہاں کے لوگ ایسے ہیں، یہ غیبت نہیں کیونکہ ایسے کلام کا یہ مقصد نہیں ہوتا کہ وہاں کے سب ہی لوگ ایسے ہیں بلکہ بعض لوگ مراد ہوتے ہیں اور جن بعض کو کہا گیا وہ معلوم نہیں، غیبت اس صورت میں ہوتی ہے جب معین و معلوم اشخاص کی برائی ذکر کی جائے اور اگر اس کا مقصود وہاں کے تمام لوگوں کی برائی کرنا ہے تو یہ غیبت ہے۔ (6)

مسئلہ ۶: فقیہ ابواللیث نے فرمایا کہ غیبت چار قسم کی ہے:

ایک کفر اس کی صورت یہ ہے کہ ایک شخص غیبت کر رہا ہے اس سے کہا گیا کہ غیبت نہ کرو۔ کہنے لگا یہ غیبت نہیں میں سچا ہوں، اس شخص نے ایک حرام قطعی کو حلال بتایا۔

دوسری صورت نفاق ہے کہ ایک شخص کی برائی کرتا ہے اور اس کا نام نہیں لیتا مگر جس کے سامنے برائی کرتا ہے، وہ اس کو جانتا پہچانتا ہے، لہذا یہ غیبت کرتا ہے اور اپنے کو پرہیزگار ظاہر کرتا ہے، یہ ایک قسم کا نفاق ہے۔

تیسری صورت معصیت ہے وہ یہ کہ غیبت کرتا ہے اور یہ جانتا ہے کہ یہ حرام کام ہے ایسا شخص توبہ کرے۔

چوتھی صورت مباح ہے وہ یہ کہ فاسق معلن یا بد مذہب کی برائی بیان کرے، بلکہ جبکہ لوگوں کو اس کے شر سے بچانا مقصود ہو تو ثواب ملنے کی امید ہے۔ (7)

مسئلہ ۷: جو شخص علانیہ برا کام کرتا ہے اور اس کو اس کی کوئی پروا نہیں کہ لوگ اسے کیا کہیں گے، اس کی اس بری حرکت کا بیان کرنا غیبت نہیں، مگر اس کی دوسری باتیں جو ظاہر نہیں ہیں ان کو ذکر کرنا غیبت میں داخل ہے۔ حدیث میں ہے کہ جس نے حیا کا حجاب اپنے چہرے سے ہٹا دیا، اس کی غیبت نہیں۔ (8)

(5) رد المحتار و رد المحتار، کتاب الخطر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۳۔

(6) المرجع السابق، ص ۶۷۳۔

(7) رد المحتار، کتاب الخطر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۳۔

(8) رد المحتار، کتاب الخطر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۳۔

غیبت کی جائز صورتیں

غیبت میں چونکہ اصل وہ حرمت ہے جو کبھی واجب ہوتی ہے یا پھر کسی ایسی صحیح شرعی غرض کی وجہ سے کبھی مباح ہوتی ہے کہ جس کا حصول اس کے بغیر نہیں ہو سکتا۔ پس غیبت کے جواز کی چھ صورتیں ہیں:

پہلی: مظلوم یعنی جس پر ظلم کیا گیا ہو وہ ایسے شخص کو شکایت کرے جس سے متعلق اسے یقین ہو کہ وہ ظلم کو ختم یا کم کر سکتا ہے۔

دوسری کسی شخص کو برے کام سے روکنے کے لئے مدد طلب کرتے ہوئے ایسے شخص سے تذکرہ کرنا جس کے متعلق برائی مٹانے کی قدرت کا یقین ہو مثلاً اصلاح کی نیت سے بتانا کہ فلاں اس برائی میں ملوث ہے، آپ اسے سمجھائیے۔ جبکہ وہ اعلائیہ گناہ کرتا ہو مگر نہ ایسا کرنا غیبت ہے جو کہ حرام ہے۔

تیسری مفتی سے یہ کہہ کر فتویٰ طلب کرنا کہ فلاں نے مجھ پر اس طرح ظلم کیا، کیا اس کے لئے ایسا کرنا جائز ہے؟ اور اس سے چھٹکارا پانے یا اپنا حق حاصل کرنے کے لئے میں کون سا طریقہ اختیار کروں؟ ہاں! افضل یہ ہے کہ وہ اس کا نام مبہم رکھے اور اس طرح کہے آپ اس مرد یا عورت کے فلاں معاملے کے بارے میں کیا کہتے ہیں؟ کیونکہ مقصد تو اس سے بھی حاصل ہو جاتا ہے۔ البتہ اصراراً اس کا نام لینا بھی جائز ہے، کیونکہ مفتی کبھی اس کی تعیین سے وہ معنی حاصل کر لیتا ہے جو ابہام سے حاصل نہیں کر سکتا۔ لہذا نام ذکر کرنے میں مصلحت پائی جاتی ہے جیسا کہ حضرت سیدنا سفیان رحمہ اللہ تعالیٰ عنہ کی بیوی ہند کی روایت میں آیا ہے۔

چوتھی مسلمانوں کو شر سے بچانا اور انہیں نصیحت کرنا۔ جیسے راہبوں، گواہوں، مصنفین اور افتاء یا اداروں کے نااہل، فاسق یا بدعتی شخصہ یں (یعنی فتویٰ دینے والوں) کی جرح کرنا جبکہ وہ اپنی بدعت کی طرف بلاتے بھی ہوں اگرچہ خفیہ طور پر ہی ایسا کرتے ہوں تو اس صورت میں بالاتفاق ان کی غیبت نہ صرف جائز بلکہ واجب ہے۔ مثلاً کوئی شخص کسی سے مشورہ کرے اگرچہ شادی کے ارادے سے مشورہ نہ کرے یا دینی یا دنیوی معاملے میں کسی غیر سے مل بیٹھنے کا مشورہ نہ کرے بشرطیکہ اس دوسرے کے قبیح ہونے کا صرف اسے ہی علم ہو جیسے فسق، بدعت، لالچ وغیرہ مثلاً شادی کے معاملے میں تنگ دستی جیسے معاملات (کا صرف اسے ہی علم ہو جس سے مشورہ لیا گیا ہو) جیسا کہ حضرت سیدنا امیر معاویہ رحمہ اللہ تعالیٰ عنہ سے نکاح کرنے سے منع کرنے کے متعلق حدیث شریک پاک آگے آ رہی ہے۔ پھر اگر صلاح عیب ذکر کرنے پر متوقف ہو تو عیب ذکر کرے لیکن اس پر زیادتی کرنا جائز نہیں یا پھر عیب دو ہوں تو انہیں ہی بیان کرے کیونکہ یہ مجبور کے لئے مردار کھانے کی طرح ہے جس کے لئے اس سے بقدر ضرورت ہی کچھ لینا جائز ہوتا ہے۔ ہاں! اس سے اللہ عز و جل کی رضا کے لئے نصیحت کا ردہ ہونہ کہ کسی اور فائدے کا۔ لیکن اکثر اوقات انسان اس سے غافل ہو جاتا ہے اور شیطان اس پر مستط ہو جاتا ہے اور اسے اس وقت اس کام پر بھرتا ہے جبکہ اس کا نصیحت کرنے کا ارادہ نہیں ہوتا اور اسے مطمئن کرتا ہے کہ یہ نصیحت ہی ہے۔ اس سے معصوم ہو کہ کسی عہدہ پر فائز شخص اگر کسی ناشائستہ حرکت کا شکار ہو جائے۔ جیسے فسق یا غفلت وغیرہ تو ایسے شخص سے اس بات کا ذکر کرنا واجب ہے جو اس کو معزول کرنے، کسی دوسرے کو والی بنانے یا اسے نصیحت کرنے اور استقامت پر ابھارنے پر قادر ہو۔

مسئلہ ۸: جس سے کسی بات کا مشورہ لیا گیا وہ اگر اس شخص کا عیب و برائی ظاہر کرے جس کے متعلق مشورہ ہے یہ

پانچویں: جو اعلانیہ فسق یا بدعت کا ارتکاب کرے جیسے بھتہ لینے والے، اعلانیہ شراب کے عادی اور باطل دلائل والے پس ان کے اعلانیہ گنہ کا ذکر کرنا جائز ہے لیکن کسی دوسرے عیب کا ذکر کرنا جائز نہیں مگر یہ کہ اس کا کوئی اور سبب ہو۔

حضرت سیّدنا امام اذری علیہ رحمۃ اللہ القوی (متوفی ۸۳ھ) فرماتے ہیں اذکار اللہوی میں ہے کہ اس کی غیبت کرنا جائز ہے جو اپنے فسق یا بدعت کا اعلانیہ ارتکاب کرتا ہو جیسے اعلانیہ شراب پینے والا، بھتہ اور ظلم مال لینے والا۔ پس جس چیز کا وہ اعلانیہ ارتکاب کرے اس کا ذکر جائز ہے اور اس کے علاوہ عیوب کو بیان کرنا جائز نہیں۔ (الاذکار للہودی، کتاب حفظ اللسان، باب بیان ما یباح من الغیبة، ص ۲۷۲) چھٹی عیب ذکر کرنے سے کسی کی برائی مقصود نہ ہو بلکہ اس کی معرفت و شناخت مقصود ہو تو عیب ذکر کرنا جائز ہے مثلاً کسی کا ایب لقب ذکر کرنا جیسے اندھا، نابینا، بہرہ اور گنجا وغیرہ کہنا اگرچہ اس کی پہچان اس کے بغیر بھی ہو سکتی ہو۔ پس پہچان کرانے کے لئے وہ لقب بیان کر سکتا ہے مگر خفی بیان کرنے کے لئے نہیں اور اگر لقب کے بغیر پہچان ہو سکتی ہو تو بہتر یہ ہے کہ لقب بیان نہ کرے۔

ان ۱۶ اسباب میں سے اکثر پر اتفاق ہے اور ان پر صحیح اور مشہور احادیث مبارکہ دلالت کرتی ہیں۔ چنانچہ، سرکار مکہ مکرمہ، سردار مدینہ منورہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے کسی کے لیے اذن حاضری طلب کیا گیا تو ارشاد فرمایا اُسے اجازت دے دو، وہ قبیلے کا برا شخص ہے۔ (صحیح البخاری، کتاب الادب، باب ما یجوز من اغتیاب اهل الفساد والریب، الحدیث: ۶۰۵۳، ص ۵۱۱) حضرت سیّدنا امام محمد بن اسماعیل بخاری علیہ رحمۃ اللہ الباری (متوفی ۲۵۶ھ) نے مندرجہ بالا حدیث پاک سے فسادی لوگوں کی غیبت کے جواز پر استدلال کیا ہے۔

دو جہاں کے تاجور، سلطان بحر و بر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا میرا خیال ہے کہ فلاں فلاں ہمارے دین میں سے کچھ بھی نہیں جانتے۔ حضرت سیّدنا لیث بن سعد رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ (متوفی ۱۷۵ھ) فرماتے ہیں: وہ دونوں مخرمہ بن نوفل بن عبد مناف قرشی اور عیینہ بن حصن فزاری منافق تھے۔ (صحیح البخاری، کتاب الادب، باب ما یجوز من الظن، الحدیث: ۶۰۶۷، ص ۵۱۲) حضرت سیّدنا فاطمہ بنت قیس رضی اللہ تعالیٰ عنہا ارشاد فرماتی ہیں کہ میں سیّدنا ابوبکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی بارگاہِ ناز میں حاضر ہوئی اور عرض کی یا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم! حضرت ابوجہم رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور حضرت امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مجھے نکاح کا پیغام دیا ہے۔ تو آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا معاویہ غریب آدمی ہے، اس کے پاس کچھ مال نہیں اور ابوجہم اپنی گردن سے عصا (یعنی چھڑی) نہیں اتارتا۔

(صحیح مسلم، کتاب الطلاق، باب المطلقۃ البائن لانفقتھا، الحدیث: ۳۶۹۷، ص ۹۳)

مسلم شریف کی روایت میں ہے کہ حضور نبی پاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا ابوجہم عورتوں کو بہت زیادہ مارنے والا ہے۔

(صحیح مسلم، کتاب الطلاق، باب المطلقۃ البائن لانفقتھا، الحدیث: ۳۷۱۲، ص ۹۳۲)

جب عبد بنہ بن ابی منافق لعین نے اس سفر میں کہا جس میں لوگوں کو تکلیف پہنچی تھی کہ،

غیبت نہیں۔ حدیث میں ہے، جس سے مشورہ لیا جائے وہ امین ہے۔ (9) لہذا اس کی برائی ظاہر نہ کرنا خیانت ہے، مثلاً کسی کے یہاں اپنا یا اپنی اولاد وغیرہ کا نکاح کرنا چاہتا ہے دوسرے سے اس کے متعلق تذکرہ کیا کہ میرا ارادہ ایسا ہے تمہاری کیا رائے ہے اس شخص کو جو کچھ معلومات ہیں بیان کر دینا غیبت نہیں۔

اسی طرح کسی کے ساتھ تجارت وغیرہ میں شرکت کرنا چاہتا ہے یا اس کے پاس کوئی چیز امانت رکھنا چاہتا ہے یا کسی کے پڑوس میں سکونت کرنا چاہتا ہے اور اس کے متعلق دوسرے سے مشورہ لیتا ہے یہ شخص اس کی برائی بیان کرے غیبت نہیں۔ (10)

مسئلہ ۹: جو بد مذہب اپنی بد مذہبی چھپائے ہوئے ہے، جیسا کہ روافض کے یہاں تقیہ ہے یا آج کل کے بہت سے وہابی بھی اپنی وہابیت چھپاتے اور خود کو سنی ظاہر کرتے ہیں اور جب موقع پاتے ہیں تو بد مذہبی کی آہستہ آہستہ تبلیغ کرتے ہیں ان کی بد مذہبی کا اظہار غیبت نہیں کہ لوگوں کو ان کے مکروشر سے بچانا ہے اور اگر اپنی بد مذہبی کو چھپاتا نہیں

لَا تُذِيقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّى يَنْفَضُوا (پ ۲۸، المنافقون: ۷)

ترجمہ کنز الایمان: ان پر خرچ نہ کرو جو رسول اللہ کے پاس ہیں یہاں تک کہ پریشان ہو جائیں۔

اور کہا: لَئِنْ رَجَعْتُمْ إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ (پ ۲۸، المنافقون: ۸)

ترجمہ کنز الایمان: ہم مدینہ پھر کر گئے تو ضرور جو بڑی عزت والا ہے وہ اس میں سے نکال دے گا اسے جو نہایت ذلت والا ہے۔

تو حضرت سیدنا زید بن ارقم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے شیخ الحدیث، انیس الغرینین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت بابرکت میں حاضر ہو کر اس کی خبر دی تو آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ابن ابی کو بلوایا تو وہ قسم کھا کر کہنے لگا کہ اس نے ایسا نہیں کہا۔ تو منافقین نے کہا یا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم! زید نے آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے جھوٹ بولا ہے۔ تو آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو انتہائی جلال آگیا یہاں تک کہ حضرت سیدنا زید رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی تصدیق میں سورہ منافقون کی یہ آیات مبارکہ نازل ہوئیں پھر آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے منافقین کو بلایا تاکہ آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے لئے استغفار کریں تو انہوں نے، پنے منہ پھیر لئے۔ (صحیح البخاری، کتاب التفسیر، سورہ المنافقین، باب وَإِذَا رَأَوْهُ تَسَخَّمُ . الخ، الحدیث: ۴۹۰۳، ص ۴۲۰)

حضرت سیدنا ابوسفیان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی بیوی ہند بنت عتبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے بارگاہ نبوی میں حاضر ہو کر عرض کی: ابوسفیان رضی اللہ تعالیٰ عنہ مال کو روک کر رکھنے والے ہیں، مجھے اتنا مال نہیں دیتے جو مجھے اور میری اولاد کو کافی ہو۔ البتہ! میں ان کے مال سے ان کی رعای میں کچھ لے لیتی ہوں (تو کیا میرے لئے ایسا کرنا جائز ہے؟)۔ ارشاد فرمایا دستور کے مطابق، اتنا مال لے لیا کر جو تجھے اور تیری اولاد

کو کافی ہو۔ (صحیح البخاری، کتاب النفقات، باب إِذَا الْمَوْلَى يَقْبُضُ الرِّجْلَ . الخ، الحدیث: ۵۳۶۳، ص ۴۶۳)

(9) سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی المشورۃ، الحدیث: ۵۱۲۸، ج ۴، ص ۴۲۹-۴۳۰۔

(10) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۷۵۔

بلکہ علانیہ ظاہر کرتا ہے، جب بھی غیبت نہیں کہ وہ علانیہ برائی کرنے والوں میں داخل ہے۔ (11)

مسئلہ ۱۰: کسی کے ظلم کی شکایت حاکم کے پاس کرنا بھی غیبت نہیں، مثلاً یہ کہ فلاں شخص نے مجھ پر یہ ظلم و زیادتی کی ہے، تاکہ حاکم اس کا انصاف و دادری کرے۔ اسی طرح مفتی کے سامنے استفتا پیش کرنے میں کسی کی برائی کی کہ فلاں شخص نے میرے ساتھ یہ کیا ہے اس سے بچنے کی کیا صورت ہے۔ مگر اس صورت میں بہتر یہ ہے کہ نام نہ لے، بلکہ یوں کہے کہ ایک شخص نے ایک شخص کے ساتھ یہ کیا بلکہ زید و عمرو سے تعبیر کرے، جیسا کہ اس زمانہ میں استفتا کی عموماً یہی صورت ہوتی ہے پھر بھی اگر نام لے دیا جب بھی جائز ہے اس میں بھی قباحت نہیں۔

جیسا کہ حدیث صحیح میں آیا، کہ ہند نے ابوسفیان رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے متعلق حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی خدمت میں شکایت کی کہ وہ بخیل ہیں اتنا نفقہ نہیں دیتے جو مجھے اور میرے بچوں کو کافی ہو مگر جبکہ میں ان کی لاعلمی میں کچھ لے لوں، ارشاد فرمایا کہ تم اتنا لے سکتی ہو جو معروف کے ساتھ تمہارے اور بچوں کے لیے کافی ہو۔ (12)

مسئلہ ۱۱: ایک صورت اس کے جواز کی یہ ہے کہ اس سے مقصود بیع کا عیب بیان کرنا ہو مثلاً غلام کو بیچنا چاہتا ہے اور اس غلام میں کوئی عیب ہے چور یا زانی ہے اس کا عیب مشتری کے سامنے بیان کر دینا جائز ہے۔ یوں کسی نے دیکھا کہ مشتری بائع کو خراب روپیہ دیتا ہے اس سے اس کی حرکت کو ظاہر کر سکتا ہے۔ (13)

مسئلہ ۱۲: ایک صورت جواز کی یہ بھی ہے کہ اس عیب کے ذکر سے مقصود اس کی برائی نہیں ہے، بلکہ اس شخص کی معرفت و شناخت مقصود ہے مثلاً جو شخص ان عیوب کے ساتھ ملقب ہے تو مقصود معرفت ہے نہ بیان عیب۔ جیسے اُمی، اعمش، اعرج، احول، صحابہ کرام میں عبد اللہ بن اُم مکتوم نابینا تھے اور روایتوں میں ان کے نام کے ساتھ اُمی آتا ہے۔ محدثین میں بڑے زبردست پایہ کے سلیمان اعمش ہیں اعمش کے معنی چندھے کے ہیں یہ لفظ ان کے نام کے ساتھ ذکر کیا جاتا ہے۔ اسی طرح یہاں بھی بعض مرتبہ محض پہچاننے کے لیے کسی کو اندھایا کانا یا ٹھگنا یا لمبا کہا جاتا ہے، یہ غیبت میں داخل نہیں۔ (14)

مسئلہ ۱۳: حدیث کے راویوں اور مقدمہ کے گواہوں اور مصنفین پر جرح کرنا اور ان کے عیوب بیان کرنا جائز

(11) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۷۵۔

(12) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۷۵۔

صحیح البخاری، کتاب النفقات، باب إذا لم یفتق الرجل للمرأة ان تاخذ بغیر علمہ... إلخ، الحدیث: ۵۳۶۳، ج ۳، ص ۵۱۶۔

(13) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۷۵۔

(14) المرجع السابق۔

ہے ان کی بد مذہبی کا اظہار غیبت نہیں کہ لوگوں کو ان کے مکروشر سے بچانا ہے اور اگر اپنی بد مذہبی کو چھپاتا نہیں بلکہ علانیہ ظاہر کرتا ہے، جب بھی غیبت نہیں کہ وہ علانیہ برائی کرنے والوں میں داخل ہے۔ (15)

مسئلہ ۱۰: کسی کے ظلم کی شکایت حاکم کے پاس کرنا بھی غیبت نہیں، مثلاً یہ کہ فلاں شخص نے مجھ پر یہ ظلم و زیادتی کی ہے، تاکہ حاکم اس کا انصاف و دادرسی کرے۔ اسی طرح مفتی کے سامنے استغاثہ پیش کرنے میں کسی کی برائی کی کہ فلاں شخص نے میرے ساتھ یہ کیا ہے اس سے بچنے کی کیا صورت ہے۔ مگر اس صورت میں بہتر یہ ہے کہ نام نہ لے، بلکہ یوں کہے کہ ایک شخص نے ایک شخص کے ساتھ یہ کیا بلکہ زید و عمرو سے تعبیر کرے، جیسا کہ اس زمانہ میں استغاثہ کی عموماً یہی صورت ہوتی ہے پھر بھی اگر نام لے دیا جب بھی جائز ہے اس میں بھی قباحت نہیں۔

جیسا کہ حدیث صحیح میں آیا، کہ ہند نے ابوسفیان رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے متعلق حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی خدمت میں شکایت کی کہ وہ بخیل ہیں اتنا نفقہ نہیں دیتے جو مجھے اور میرے بچوں کو کافی ہو مگر جبکہ میں ان کی لاعلمی میں کچھ لے لوں، ارشاد فرمایا کہ تم اتنا لے سکتی ہو جو معروف کے ساتھ تمہارے اور بچوں کے لیے کافی ہو۔ (16)

مسئلہ ۱۱: ایک صورت اس کے جواز کی یہ ہے کہ اس سے مقصود بیع کا عیب بیان کرنا ہو مثلاً غلام کو بیچنا چاہتا ہے اور اس غلام میں کوئی عیب ہے چور یا زانی ہے اس کا عیب مشتری کے سامنے بیان کر دینا جائز ہے۔ یوں کسی نے دیکھا کہ مشتری بائع کو خراب روپیہ دیتا ہے اس سے اس کی حرکت کو ظاہر کر سکتا ہے۔ (17)

مسئلہ ۱۲: ایک صورت جواز کی یہ بھی ہے کہ اس عیب کے ذکر سے مقصود اس کی برائی نہیں ہے، بلکہ اس شخص کی معرفت و شناخت مقصود ہے مثلاً جو شخص ان عیوب کے ساتھ ملقب ہے تو مقصود معرفت ہے نہ بیان عیب۔ جیسے اُمی، اعمش، اعرج، احول، صحابہ کرام میں عبد اللہ بن اُم مکتوم نامینا تھے اور روایتوں میں ان کے نام کے ساتھ اُمی آتا ہے۔ محدثین میں بڑے زبردست پایہ کے سلیمان اعمش ہیں اعمش کے معنی چندھے کے ہیں یہ لفظ ان کے نام کے ساتھ ذکر کیا جاتا ہے۔ اسی طرح یہاں بھی بعض مرتبہ محض پہچاننے کے لیے کسی کو اندھا یا کانٹا یا ٹھگنا یا لبا کہا جاتا ہے، یہ غیبت میں داخل نہیں۔ (18)

(15) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۷۵۔

(16) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۷۵۔

صحیح البخاری، کتاب النفقات، باب إذا لم یفق الرجل للکراۃ ان تاخذ بغير علمہ... راجع، الحدیث: ۵۳۶۳، ج ۳، ص ۵۱۶۔

(17) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۷۵۔

(18) المرجع السابق۔

مسئلہ ۱۳: حدیث کے راویوں اور مقدمہ کے گواہوں اور مصنفین پر جرح کرنا اور ان کے عیوب بیان کرنا جائز ہے اگر راویوں کی خرابیاں بیان نہ کی جائیں تو حدیث صحیح اور غیر صحیح میں امتیاز نہ ہو سکے گا۔ اسی طرح مصنفین کے حالات نہ بیان کیے جائیں تو کتب معتمدہ و غیر معتمدہ میں فرق نہ رہے گا۔ گواہوں پر جرح نہ کی جائے تو حقوق مسلمین کی نگہداشت نہ ہو سکے گی، اول سے آخر تک گیارہ صورتیں وہ ہیں، جو بظاہر غیبت ہیں اور حقیقت میں غیبت نہیں اور ان میں عیوب کا بیان کرنا جائز ہے، بلکہ بعض صورتوں میں واجب ہے۔ (19)

مسئلہ ۱۴: غیبت جس طرح زبان سے ہوتی ہے فعل سے بھی ہوتی ہے۔ صراحت کے ساتھ برائی کی جائے یا تعریض و کنایہ کے ساتھ ہو سب صورتیں حرام ہیں، برائی کو جس نوعیت سے سمجھائے گا سب غیبت میں داخل ہے۔ تعریض کی یہ صورت ہے کہ کسی کے ذکر کرتے وقت یہ کہا کہ الحمد للہ میں ایسا نہیں جس کا یہ مطلب ہوا کہ وہ ایسا ہے کسی کی برائی لکھ دی یہ بھی غیبت ہے سر و غیرہ کی حرکت بھی غیبت ہو سکتی ہے، مثلاً کسی کی خوبیوں کا تذکرہ تھا اس نے سر کے اشارہ سے یہ بتانا چاہا کہ اس میں جو کچھ برائیاں ہیں ان سے تم واقف نہیں، ہونٹوں اور آنکھوں اور بھوؤں اور زبان یا ہاتھ کے اشارہ سے بھی غیبت ہو سکتی ہے۔ ایک حدیث میں ہے، حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا فرماتی ہیں، ایک عورت ہمارے پاس آئی، جب وہ چلی گئی تو میں نے ہاتھ کے اشارہ سے بتایا کہ وہ ٹھکنی ہے۔ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے ارشاد فرمایا کہ تم نے اس کی غیبت کی۔ (20)

مسئلہ ۱۵: ایک صورت غیبت کی نقل ہے مثلاً کسی لنگڑے کی نقل کرے اور لنگڑا کر چلے یا جس چال سے کوئی چلتا ہے اس کی نقل اتاری جائے یہ بھی غیبت ہے، بلکہ زبان سے کہہ دینے سے یہ زیادہ برا ہے کیونکہ نقل کرنے میں پوری تصویر کشی اور بات کو سمجھانا پایا جاتا ہے کہ کہنے میں وہ بات نہیں ہوتی۔ (21)

مسئلہ ۱۶: غیبت کی ایک صورت یہ بھی ہے کہ یہ کہا کہ ایک شخص ہمارے پاس اس قسم کا آیا تھا یا میں ایک شخص کے پاس گیا جو ایسا ہے اور مخاطب کو معلوم ہے کہ فلاں شخص کا ذکر کرتا ہے، اگرچہ متکلم نے کسی کا نام نہیں لیا مگر جب مخاطب کو ان لفظوں سے سمجھا دیا تو غیبت ہو گئی کیونکہ جب مخاطب کو یہ معلوم ہے کہ اس کے پاس فلاں آیا تھا یا یہ فلاں

(19) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۵۔

(20) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۶۔

نظر: المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند السيدة عائشہ رضی اللہ عنہا، الحدیث: ۲۵۱۰۳، ج ۹، ص ۳۶۳۔

و شعب الایمان للسیہقی، باب فی تحریم أعراض الناس، الحدیث: ۶۷۶۷، ج ۵، ص ۳۱۳۔

(21) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۶۔

کے پاس گیا تھا تو اب نام لینا نہ لینا دونوں کا ایک حکم ہے، ہاں اگر مخاطب نے شخص معین کو نہیں سمجھا مثلاً اس کے پاس بہت سے لوگ آئے یا یہ بہتوں کے یہاں گیا تھا مخاطب کو یہ پتا نہ چلا کہ یہ کس کے متعلق کہہ رہا ہے تو غیبت نہیں۔ (22)

مسئلہ ۱۷: جس طرح زندہ آدمی کی غیبت ہو سکتی ہے مرے ہوئے مسلمان کو برائی کے ساتھ یاد کرنا بھی غیبت ہے، جبکہ وہ صورتیں نہ ہوں جن میں عیوب کا بیان کرنا غیبت میں داخل نہیں۔ مسلم کی غیبت جس طرح حرام ہے کافر ذمی کی بھی ناجائز ہے کہ ان کے حقوق بھی مسلم کی طرح ہیں کافر حربی کی برائی کرنا غیبت نہیں۔ (23)

مسئلہ ۱۸: کسی کی برائی اس کے سامنے کرنا اگر غیبت میں داخل نہ بھی ہو جبکہ غیبت میں پیٹھ پیچھے برائی کرنا معتبر ہو مگر یہ اس سے بڑھ کر حرام ہے کیونکہ غیبت میں جو وجہ ہے وہ یہ ہے کہ ایذا مسلم ہے وہ یہاں بدرجہ اولیٰ پائی جاتی ہے غیبت میں تو یہ احتمال ہے کہ اسے اطلاع ملے یا نہ ملے اگر اسے اطلاع نہ ہوئی تو ایذا بھی نہ ہوئی، مگر احتمال ایذا کو یہاں ایذا قرار دے کر شرع مطہر نے حرام کیا اور مونہ پر اس کی مذمت کرنا تو حقیقۃً ایذا ہے پھر یہ کیوں حرام نہ ہو۔ (24)

بعض لوگوں سے جب کہا جاتا ہے کہ تم فلاں کی غیبت کیوں کرتے ہو، وہ نہایت دلیری کے ساتھ یہ کہتے ہیں مجھے اس کا ڈر اپڑا ہے چلو میں اس کے مونہ پر یہ باتیں کہہ دوں گا ان کو یہ معلوم ہونا چاہیے کہ پیٹھ پیچھے اس کی برائی کرنا غیبت و حرام ہے اور مونہ پر کہو گے تو یہ دوسرا حرام ہوگا اگر تم اس کے سامنے کہنے کی جرأت رکھتے ہو تو اس کی وجہ سے غیبت حلال نہیں ہوگی۔

مسئلہ ۱۹: غیبت کے طور پر جو عیوب بیان کیے جائیں وہ کئی قسم کے ہیں، اس کے بدن میں عیب ہو مثلاً اندھا، کانا، لنگڑا، لولا، ہونٹ کٹا، ناک چپٹا وغیرہ یا نسب کے اعتبار سے وہ عیب سمجھا جاتا ہو مثلاً اس کے نسب میں یہ خرابی ہے اس کی داری، نانی چھاری تھی، ہندوستان والوں نے پیشہ کو بھی نسب ہی کا حکم دے رکھا ہے، لہذا بطور عیب کسی کو دھنا جولاہا کہنا بھی غیبت و حرام ہے، اخلاق و افعال کی برائی یا اس کی بات چیت میں خرابی مثلاً ہکلا یا تو تلیا دین داری میں وہ ٹھیک نہ ہو یہ سب صورتیں غیبت میں داخل ہیں، یہاں تک کہ اس کے کپڑے اچھے نہ ہوں یا مکان اچھا نہ ہو ان چیزوں کو بھی اس طرح ذکر کرنا جو اسے برا معلوم ہو، ناجائز ہے۔ (25)

(22) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۶۔

(23) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۶۔

(24) المرجع السابق۔

(25) المرجع السابق۔

مسئلہ ۲۰: جس کے سامنے کسی کی غیبت کی جائے اسے لازم ہے کہ زبان سے انکار کر دے مثلاً کہہ دے کہ میرے سامنے اس کی برائی نہ کرو۔ اگر زبان سے انکار کرنے میں اس کو خوف و اندیشہ ہے تو دل سے اسے برا جانے اور اگر ممکن ہو تو یہ شخص جس کے سامنے برائی کی جارہی ہے وہاں سے اٹھ جائے یا اس بات کو کاٹ کر کوئی دوسری بات شروع کر دے ایسا نہ کرنے میں سننے والا بھی گناہ گار ہوگا، غیبت کا سننے والا بھی غیبت کرنے والے کے حکم میں ہے۔ حدیث میں ہے، جس نے اپنے مسلم بھائی کی آبرو و غیبت سے بچائی، اللہ تعالیٰ کے ذمہ کرم پر یہ ہے کہ وہ اسے جہنم سے آزاد کر دے۔ (26)

مسئلہ ۲۱: جس کی غیبت کی اگر اس کو اس کی خبر ہوگئی تو اس سے معافی مانگنی ضروری ہے اور یہ بھی ضروری ہے کہ اس کے سامنے یہ کہے کہ میں نے تمہاری اس طرح غیبت یا برائی کی تم معاف کر دو اس سے معاف کرائے اور توبہ کرے تب اس سے برسی الذمہ ہوگا اور اگر اس کو خبر نہ ہوئی ہو تو توبہ اور ندامت کافی ہے۔ (27)

(26) رد المحتار، کتاب الحظر والاہانت، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۷۔

مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب فیمن ذب... إلخ، الحدیث: ۱۳۱۵۰، ج ۸، ص ۱۷۹۔

(27) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاہانت، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۷۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فادی رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

نیز مخ لروض میں ہے:

هل يكفيه ان يقول اغتبتك فاجعلني في حل أم لا بد ان يبين ما اغتاب؛ ففي مبسك ابن العجني لا يعليه بها ان علم ان اعلامه يثير فتنة، ويدل عليه ان الابرار عن الحقوق المجهولة جائز عندنا لكن سبق انه هل يكفيه حكومة وديانة الامم ما في منح الروض اقول وفي جريان الخلاف المذكور ههنا نظر فان الغيبة لا تصير من حقوق العبد ما لم تبلغه واذا بلغت لم تكن من الحقوق المجهولة وقد قال في المنح نفسه يأنصه قال الفقيه ابو الليث قد تكلم الناس في توبة المغتابين هل يجوز من غير ان يستحل من صاحبه؛ قال بعضهم يجوز وقال بعضهم لا يجوز. وهو عندنا على وجهين احدهما ان كان ذلك القول قد بلغ الى الذي اغتابه فتوبته ان يستحل منه وان لم يبلغ اليه فليستغفر الله سبحانه ويضمر ان لا يعود الى مثله. وفي روضة العلماء سألت ابا محمد رحمه الله تعالى فقلت له اذا تاب صاحب الغيبة قبل وصولها الى المغتاب عنه هل تنفعه توبة قال نعم فانه تاب قبل ان يصير الذنب ذنباً اي ذنباً يتعلق به حق العبد لانها انها تصير ذنباً اذا بلغت اليه. قلت فان بلغت اليه بعد توبته؛ قال لا تبطل توبته بل يغفر الله تعالى لهما جميعاً المغتاب بالتوبة والمغتاب عنه بما يلحقه من المشقة، لانه تعالى كريم ولا يجهل من كرمه رد توبته بعد قبولها بل يعفو عنهما جميعاً انتهى إلخ.

مسئلہ ۲۲: جس کی غیبت کی ہے اسے خبر نہ ہوئی اور اس نے توبہ کر لی اس کے بعد اسے خبر ملی کہ فلاں نے میری

کہا یہ کافی ہے کہ ایک آدمی دوسرے سے کہے کہ میں نے تمہاری غیبت کی ہے مجھے معاف کر دو، یا یہ ضروری ہے کہ یہ بھی بتائے کہ میں نے تمہاری یہ غیبت کی ہے۔ ابن العجی کے ملک میں ہے کہ اگر یہ سمجھتا ہے کہ غیبت کے تفصیلاً بتانے سے فتنہ پیدا ہوگا تو اس کا اظہار نہ کرے، ہمارے نزدیک نامعلوم حقوق کے معاف کرنے کا جواز اس پر دلالت کرتا ہے لیکن یہ بات گزر چکی ہے کہ آیا فیصلے کے اعتبار سے کافی ہے یا دیانت کے طور پر اہ (اعلیٰ حضرت قدس سرہ، فرماتے ہیں) اقول (میں کہتا ہوں کہ) یہاں گزشتہ اختلاف کے جاری ہونے میں کلام ہے کیونکہ غیبت اس وقت تک بندے کا حق نہیں بنتی جب تک اسے نہ پہنچ جائے، جب پہنچ جائے تو نامعلوم حقوق میں سے نہ رہے گی، خود بخود الرض میں ہے کہ لقیہ ابواللیث نے فرمایا کہ غیبت کرنے والا صاحب غیبت (جس کی غیبت کی گئی) سے معافی مانگے بغیر توبہ کرے تو تو اس میں لوگوں نے مختلف باتیں کہی ہیں، بعض نے کہا جائز ہے اور بعض نے کہا ناجائز ہے۔ ہمارے نزدیک اس کی دو صورتیں ہیں:

(۱) وہ بات اس شخص تک پہنچ گئی جس کی غیبت کی گئی تھی تو اس کی توبہ یہ ہے کہ اس شخص سے معافی مانگے۔

(۲) اور اگر غیبت اس شخص تک نہیں پہنچی تو اللہ تعالیٰ سے مغفرت کی دعا مانگے اور اپنے دل میں یہ عہد کرے کہ پھر غیبت نہیں کروں گا۔

روضۃ العماء میں ہے کہ میں نے ابو محمد رحمہ اللہ تعالیٰ سے پوچھا کہ اگر غیبت اس شخص تک نہیں پہنچی جس کی غیبت کی گئی تھی تو غیبت کرنے والے کے لئے توبہ فائدہ مند ہوگی؟ انہوں نے فرمایا ہاں کیونکہ اس نے بندے کے حق کے متعلق ہونے سے پہلے توبہ کر لی ہے، غیبت بندے کا حق اس وقت ہوگی جب اس تک پہنچ جائے گی، میں نے کہا کہ اگر توبہ کے بعد اس شخص تک غیبت پہنچ جائے فرمایا کہ اس کی توبہ باطل نہیں ہوگی بلکہ اللہ تعالیٰ دونوں کو بخش دے گا غیبت کرنے والے کو توبہ کی وجہ سے اور جس کی غیبت کی گئی اسے اس تکلیف کی وجہ سے جو اسے غیبت سن کر ہوئی ہے کیونکہ اللہ تعالیٰ کریم ہے اس کے متعلق یہ نہیں کہا جاسکتا کہ وہ کسی کی توبہ قبول فرما کر رد فرما، بلکہ دونوں کو بخش دے گا انتہی الخ۔ (ت) (۱) مخ الرض الاذہر شرح الفقہ الاکبر بحث التوبۃ وشرائطہا مصطفیٰ البابی مصر ص ۱۶۰

(۱) مخ الرض الاذہر شرح الفقہ الاکبر بحث التوبۃ وشرائطہا مصطفیٰ البابی مصر ص ۱۵۹

فقیر کہتا ہے غفر اللہ تعالیٰ لہ ایسے حقوق عظیمہ شدیدہ جن کی تفصیل بیان ہو تو صاحب حق سے معافی کی امید نہ ہو ظاہراً مجرد اجمالاً الفاظ سے معاف نہ ہو سکیں کہ وہ دلائل مخصوص ہیں مگر اگر ان الفاظ سے معافی چاہی کہ دنیا بھر میں سخت سے سخت جو حق متصور ہو وہ سب میرے لئے فرض کر کے معاف کر دے اور اس نے قبول کیا تو اب ظاہراً تمام حقوق بلا تفصیل بھی معاف ہو جائیں گے،

لنص علی التعمیم مع التنصيص بالتخصيص علی کل حق شدید عظیم والصریح یفوق الدلالة کہا نصوا علیہ الخ غیر ما مسألة واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم۔ (۱) رد المحتار کتاب الدعویہ ارا حیات التراث العربی بیروت ۴/ ۴۳۹

کیونکہ اس نے کہہ دیا ہے کہ مجھے ہر حق معاف کر دے اور ساتھ ہی یہ بھی کہہ دیا ہے کہ ہر بڑے سے بڑا حق میرے بارے میں فرض کر کے معاف کر دے اور تصریح دلالت پر فوقیت رکھتی ہے جیسے کہ علماء نے بہت سے مسائل میں تصریح کی ہے۔ واللہ سبحنہ، وتعالیٰ اعلم۔ (ت)

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴، ص ۳۰۹، ۳۱۱، مضافاً نوڈیشن، لاہور)

غیبت کی ہے آیا اس کی توبہ صحیح ہے یا نہیں؟ اس میں علما کے دو قول ہیں ایک قول یہ ہے کہ وہ توبہ صحیح ہے اللہ تعالیٰ دونوں کی مغفرت فرمادے گا، جس نے غیبت کی اس کی مغفرت توبہ سے ہوئی اور جس کی غیبت کی گئی اس کو جو تکلیف پہنچی اور اس نے درگزر کیا، اس وجہ سے اس کی مغفرت ہو جائے گی۔

اور بعض علما یہ فرماتے ہیں کہ اس کی توبہ معلق رہے گی اگر وہ شخص جس کی غیبت ہوئی خبر پہنچنے سے پہلے ہی مر گیا تو توبہ صحیح ہے اور توبہ کے بعد اسے خبر پہنچ گئی تو صحیح نہیں، جب تک اس سے معاف نہ کرائے۔ بہتان کی صورت میں توبہ کرنا اور معافی مانگنا ضروری ہے بلکہ جن کے سامنے بہتان باندھا ہے ان کے پاس جا کر یہ کہنا ضرور ہے کہ میں نے جھوٹ کہا تھا جو فلاں پر میں نے بہتان باندھا تھا۔ (28)

مسئلہ ۲۳: معافی مانگنے میں یہ ضرور ہے کہ غیبت کے مقابل میں اس کی ثناء حسن کرے اور اس کے ساتھ اظہار محبت کرے کہ اس کے دل سے یہ بات جاتی رہے اور فرض کر دے کہ اس نے زبان سے معاف کر دیا مگر اس کا دل اس سے خوش نہ ہوا تو اس کا معافی مانگنا اور اظہار محبت کرنا غیبت کی برائی کے مقابل ہو جائے گا اور آخرت میں مواخذہ نہ ہوگا۔ (29)

مسئلہ ۲۴: اس نے معافی مانگی اور اس نے معاف کر دیا مگر اس نے سچائی اور خلوص دل سے معافی نہیں مانگی تھی محض ظاہری اور نمائشی یہ معافی تھی تو ہو سکتا ہے کہ آخرت میں مواخذہ ہو، کیونکہ اس نے یہ سمجھ کر معاف کیا تھا کہ یہ خلوص کے ساتھ معافی مانگ رہا ہے۔ (30)

مسئلہ ۲۵: امام غزالی علیہ الرحمۃ یہ فرماتے ہیں، کہ جس کی غیبت کی وہ مر گیا یا کہیں غائب ہو گیا اس سے کیونکر معافی مانگے یہ معاملہ بہت دشوار ہو گیا، اس کو چاہیے کہ نیک کام کی کثرت کرے تاکہ اگر اس کی نیکیاں غیبت کے بدلے میں اسے دے دی جائیں، جب بھی اس کے پاس نیکیاں باقی رہ جائیں۔ (31)

مسئلہ ۲۶: اگر اس کی ایسی برائیاں بیان کی ہیں جن کو وہ چھپاتا تھا یعنی یہ نہیں چاہتا تھا کہ لوگ ان پر مطلع ہوں تو معافی مانگنے میں ان عیوب کی تفصیل نہ کرے، بلکہ مبہم طور پر یہ کہہ دے کہ میں نے تمہارے عیوب و گلوں کے سامنے ذکر کیے ہیں تم معاف کر دو اور اگر ایسے عیوب نہ ہوں تو تفصیل کے ساتھ بیان کرے۔ اسی طرح اگر وہ باتیں ایسی ہوں

(28) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۷۔

(29) المرجع السابق۔

(30) المرجع السابق۔

(31) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۷۔

جن کے ظاہر کرنے میں قفسہ پیدا ہونے کا اندیشہ ہے تو ظاہر نہ کرے بعض علماء کا یہ قول ہے کہ حقوق مجہولہ کو معاف کر دینا بھی صحیح ہے اور اس طرح بھی معافی ہو سکتی ہے، لہذا اس قول پر بنا کی جائے اور ایسی خاص صورتوں میں تفصیل نہ کی جائے۔ (32)

مسئلہ ۲۷: دو شخصوں میں جھگڑا تھا دونوں نے معذرت کے ساتھ مصافحہ کیا یہ بھی معافی کا ایک طریقہ ہے۔ جس کی غیبت کی ہے وہ مرگیا تو ورثہ کو یہ حق نہیں کہ معاف کریں ان کے معاف کرنے کا اعتبار نہیں۔ (33)

مسئلہ ۲۸: کسی کے مونہ پر اس کی تعریف کرنا منع ہے اور پیٹھ پیچھے تعریف کی مگر یہ جانتا ہے کہ میرے اس تعریف کرنے کی خبر اس کو پہنچ جائے گی یہ بھی منع ہے، تیسری صورت یہ ہے کہ پس پشت تعریف کرتا ہے اس کا خیال بھی نہیں کرتا کہ اسے خبر پہنچ جائے گی یا نہ پہنچے گی یہ جائز ہے، مگر یہ ضرور ہے کہ تعریف میں جو خوبیاں بیان کرے وہ اس میں ہوں، شعراء کی طرح اُن ہوئی باتوں کے ساتھ تعریف نہ کرے کہ یہ نہایت درجہ قبیح ہے۔ (34)

(32) المرجع السابق.

(33) المرجع السابق، ص ۶۷۸.

(34) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثالث والعشرون فی الغیبة، ج ۵، ص ۳۶۳.
بے جا تعریف کرنا:

بعض مقامات پر تعریف کرنا منع ہے اور مذمت کرنا تو صریح غیبت اور عزت کے درپے ہوتا ہے اس کا حکم گزر چکا ہے، تعریف کرنے میں چھ آفات ہیں، چار آفات کا تعلق تعریف کرنے والے سے اور دو کا تعلق اس کے ساتھ ہے جس کی تعریف کی جائے۔
تعریف کرنے والے کے لئے آفات:

- (۱) حد سے بڑھ کر تعریف کرنا ہے یہاں تک کہ جھوٹ میں داخل ہو جاتا ہے۔
 - (۲) اظہار محبت کے لئے تعریف کرنا ہے اور اس میں ریاء کاری کو داخل کر دیتا ہے۔
 - (۳) بعض اوقات بغیر تحقیق کے بات کرتا ہے اور اس پر مطلق نہیں ہوتا۔
 - (۴) ممدوح (یعنی جس کی تعریف کی جائے اس) کو خوش کرتا ہے حالانکہ وہ ظالم یا فاسق ہوتا ہے اور یہ جائز نہیں۔ نبی اکرم، رسول محتشم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمان عبرت نشان ہے:
- إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَغْضَبُ إِذَا مُدِّحَ الْقَاسِي.
- ترجمہ: جب قاسق کی تعریف کی جائے تو اللہ عز و جل ناراضگی فرماتا ہے۔

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب القسمة وآداب اللسان، باب الغیبة التي یحل۔۔۔۔۔ الخ، الحدیث ۲۳۰، ج ۷، ص ۱۵۳)

ممدوح کے لئے آفات:

دو اعتبار سے تعریف ممدوح (یعنی جس کی تعریف کی جائے اس) کے لئے نقصان دہ ہے۔



(۱) اس میں تکبر اور خود پسندی آجاتی ہے۔

(۲) جب اس کی اچھی تعریف کی جاتی ہے تو خوش ہوتا ہے اور اپنے نفس پر مطمئن ہوتا ہے اور اس کی کوتاہی کو بھول جاتا ہے۔ ہذا اس کی نیکی کی کوشش میں کمی واقع ہو جاتی ہے۔ اسی لئے نبی اکرم، نور مجسم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا:

قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ، وَيُحَكِّ لَوْ بِمِيعَتِهَا مَا أَفْلَحَ.

ترجمہ: تم نے اپنے دوست کی گردن کاٹ دی، تیری خرابی ہو اگر وہ اسے سنا تو کامیابی نہ پاتا۔

(المسند للإمام احمد بن حنبل، حدیث ابی بکرۃ نفع بن الحارث بن کلدۃ، الحدیث ۵۳۵، ج ۷، ص ۳۳۲ بتقدیم و حاشیہ)

بغض و حسد کا بیان

قرآن مجید میں ارشاد ہوا:

(وَلَا تَتَّبِعُوا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ ۚ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوا وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۚ وَسَأَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿۲۲﴾) (1)

اور اس کی آرزو مت کرو جس سے اللہ (عزوجل) نے تم میں ایک کو دوسرے پر بڑائی دی، مردوں کے لیے ان کی کمائی سے حصہ ہے اور عورتوں کے لیے ان کی کمائی سے حصہ اور اللہ (عزوجل) سے اس کا فضل مانگو، بے شک اللہ (عزوجل) ہر چیز کو جانتا ہے۔ اور فرماتا ہے:

(وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ﴿۲۳﴾) (2)

تم کہو! میں پناہ مانگتا ہوں حاسد کے شر سے، جب وہ حسد کرتا ہے۔

(1) پ ۵، النساء ۳۲۔

اس آیت کے تحت مفسر شہیر مولا ناسید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ خواہ دنیا کی جہت سے یا دین کی کہ آپس میں حسد و بغض نہ پیدا ہو حسد نہایت بری صفت ہے حسد والا دوسرے کو اچھے حال میں دیکھتا ہے تو اپنے لئے اس کی خواہش کرتا ہے اور ساتھ میں یہ بھی چاہتا ہے کہ اس کا بھائی اس نعمت سے محروم ہو جائے۔ یہ ممنوع ہے بندے کو چاہئے کہ اللہ کی تقدیر پر راضی رہے اُس نے جس بندے کو جو فضیلت دی خواہ دولت و غنا کی یا دینی مناصب و مدارج کی یہ اُس کی حکمت ہے شان نزول جب آیت میراث میں لَوْلَا كَرِهَ امِثْلُ حَقِّ الْأُنثَيَيْنِ نازل ہوا اور میت کے ترکہ میں مرد کا حصہ عورت سے دونا مقرر کیا گیا تو مردوں نے کہا کہ ہمیں اُمید ہے کہ آخرت میں نیکیوں کا ثواب بھی ہمیں عورتوں سے دونا ملے گا اور عورتوں نے کہا کہ ہمیں اُمید ہے کہ گناہ کا عذاب ہمیں مردوں سے آدھا ہوگا اس پر یہ آیت نازل ہوئی اور اس میں بتایا گیا کہ اللہ تعالیٰ نے جس کو جو فضل دیا وہ عین حکمت ہے بندے کو چاہئے کہ وہ اُس کی تقاضا پر راضی رہے۔

(2) پ ۳۰، الفرق ۵۔

اس آیت کے تحت مفسر شہیر مولا ناسید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ حسد والا وہ ہے جو دوسرے کے زوال و نفع کی تمنا کرے، یہاں حسد سے یہود مراد ہیں جو نبی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے حسد کرتے تھے یا خاص لبید بن اعصم یہودی۔ حسد بدترین صفت ہے اور یہی سب سے پہلا گناہ ہے جو آسمان میں ابلیس سے سرزد ہوا اور زمین میں قابیل سے۔

احادیث

حدیث ۱: بن ماجہ نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: حسد نیکیوں کو اس طرح کھاتا ہے جس طرح آگ لکڑی کو کھاتی ہے اور صدقہ خطا کو بجھاتا ہے جس طرح پانی آگ کو بجھاتا ہے۔ (1) اسی کی مثل ابو داؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی۔

حدیث ۲: دیلمی نے مسند الفردوس میں معاویہ بن حیدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ حسد ایمان کو ایسا بگاڑتا ہے، جس طرح ایلوا (ایک کڑوے درخت کا جھوٹا رس ہے) شہد کو بگاڑتا ہے۔ (2)

حدیث ۳: امام احمد و ترمذی نے زبیر بن عوام رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اگلی امت کی بیماری تمھاری طرف بھی آئی وہ بیماری حسد و بغض ہے، وہ مونڈنے والا ہے دین کو مونڈتا ہے بالوں کو نہیں مونڈتا، قسم ہے اس کی جس کے ہاتھ میں محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی جان ہے! جنت میں نہیں جاؤ گے جب تک ایمان نہ لؤ اور مومن نہیں ہو گے جب تک آپس میں محبت نہ کرو، میں تمھیں ایسی چیز نہ بتا دوں کہ جب اسے کرو گے آپس میں محبت کرنے لگو گے، آپس میں سلام کو پھیلاؤ۔ (3)

(1) سنن ابن ماجہ، کتاب الزہد، باب الحسد، الحدیث: ۴۱۰، ج ۳، ص ۷۳۔

حکیم امت کے مدنی پھول

یعنی حسد و بغض ذریعہ بن جاتا نیکیوں کی بربادی کا یعنی حاسد ایسے کام کر بیٹھتا ہے جس سے نیکیاں ضبط ہو جاویں، حاسد و بغض والے کی نیکیاں محسود کو دے دی جائیں گی یہ خالی ہاتھ رہ جاوے گا۔ خیال رہے کہ کفر و ارتداد کے سوا کوئی گناہ مومن کی نیکیاں برباد نہیں کرتا، ہاں نیکیوں سے گنہ موقوف ہو جاتے ہیں، رب فرماتا ہے: "إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ الْسَيِّئَاتِ"۔ (اشعہ) اس لفظ کی بظہر معترکہ نے کہا ہے کہ بعض گناہوں سے نیکیاں بھی مٹ جاتی ہیں مگر غلط کہا کیونکہ اس حدیث کا وہ مطلب ہے جو ہم نے عرض کیا اس حدیث کی در بہت توجیہیں کی گئی ہیں۔ (دیکھو مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۶۷)

(2) الج مع الصغیر لسیوطی، حرف الحاء، الحدیث: ۳۸۱۹، ص ۲۳۲۔

(3) مسند امام احمد بن حنبل، مسند الزبیر بن العوام، الحدیث: ۱۳۱۴، ۱۳۳۰، ج ۱، ص ۳۳۸، ۳۵۲۔

وسنن ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ...، باب: ۱۲۱، الحدیث: ۲۵۱۸، ج ۴، ص ۲۲۸۔

حدیث ۴: بھرائی نے عبداللہ بن ہر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ حسد اور بغضی اور کینہت نہ مجھ سے ہیں اور نہ میں ان سے ہوں۔ (4) یعنی مسلمان کو ان تینوں سے بالکل تعلق نہ ہونا چاہیے۔

حدیث ۵: صحیح بخاری میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: آپس میں نہ حسد کرو، نہ بغض کرو، نہ پیٹھ پیچھے برائی کرو اور اللہ (عزوجل) کے بندے بھائی بھائی ہو کر رہو۔ (5)

حدیث ۶: صحیح بخاری میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو یہ فرماتے سنا کہ حسد نہیں ہے مگر دو پر، ایک وہ شخص جسے خدا نے کتاب دی یعنی قرآن کا علم عطا فرمایا وہ اس کے ساتھ رات میں قیام کرتا ہے اور دوسرا وہ کہ خدا نے اسے مال دیا وہ دن اور رات کے اوقات میں صدقہ کرتا ہے۔ (6)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ دب بنا ہے دب سے بمعنی آہستہ آہستہ چلنا اس سے ہے درب اس سے ہے دابہ بمعنی جانور، سرایت کر جانے کو دب اس لیے کہتے ہیں کہ دو محسوس نہیں ہوتی اور دل میں اتر جاتی ہے یہاں بمعنی سرایت ہے۔

۲۔ حسد سے مراد ہے دلی خفیہ دشمنی، بغض سے مراد ہے علانیہ دشمنی یا حسد کسی سے جلنا اس کی نعمت کا زوال چاہنا، بغض دشمنی دل میں رکھنا۔

۳۔ اس طرح کہ دین و ایمان کو جز سے فتن کر دیتی ہے کبھی انسان بغض و حسد میں اسلام ہی چھوڑ دیتا ہے، شیطان بھی انہیں دو بیاریوں کا مارا ہوا ہے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۸۶۶)

(4) مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب ما جاء فی الغیبة والنمیمۃ، الحدیث: ۱۳۱۲۶، ج ۸، ص ۱۷۲-۱۷۳۔

(5) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب (یا ایھا الذین امنوا اجنبوا... الخ)، الحدیث: ۶۰۶۶، ج ۴، ص ۱۱۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۴۔ تاجش بنا ہے نجش سے، نجش کے چند معنی ہیں دوسروں پر اپنی بڑائی چاہنا، دھوکا دینا، غلام میں قیمت بڑھا دینا خریدنے کی نیت نہ ہو یہ سب حرام ہے۔ حسد کے معنی ہیں دوسرے کی نعمت کا زوال اپنے لیے اس کا حصول چاہنا کہ اس کے پاس نہ رہے میرے پاس آجائے یہ حرام ہے، شیطان کو حسد نے ہی مارا بغض دل میں کینہ رکھنا۔

۵۔ یعنی بدگمانی، حسد، بغض وغیرہ وہ چیزیں ہیں جن سے محبت ٹوٹی ہے اور اسلامی بھائی چارہ محبت چاہتا ہے لہذا یہ عیوب چھوڑ دنا کہ بھائی بھائی بن جاؤ۔

۶۔ تنافس کے بہت معنی ہیں رغبت کرنا، لالچ کرنا، نفسانیت سے فساد پھیلانا یہاں بمعنی نفسانیت و فساد ہے۔

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۸۵۶)

(6) صحیح البخاری، کتاب نفاک القرآن، باب اختطاط صاحب القرآن، الحدیث: ۵۰۲۵، ج ۳، ص ۴۱۰۔

حدیث ۷: صحیح بخاری میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: حسد نہیں ہے مگر دو شخصوں پر ایک وہ شخص جسے خدا نے قرآن سکھایا وہ رات اور دن کے اوقات میں اس کی تلاوت کرتا ہے، اس کے پڑوسی نے سنا تو کہنے لگا، کاش! مجھے بھی ویسا ہی دیا جاتا جو فلاں شخص کو دیا گیا تو میں بھی اُس کی طرح عمل کرتا۔ دوسرا وہ شخص کہ خدا نے اسے مال دیا وہ حق میں مال کو خرچ کرتا ہے، کسی نے کہا، کاش! مجھے بھی ویسا ہی دیا جاتا جیسا فلاں شخص کو دیا گیا تو میں بھی اسی کی طرح عمل کرتا۔ (7)

ان دونوں حدیثوں میں حسد سے مراد غبطہ ہے جس کو لوگ رشک کہتے ہیں، جس کے یہ معنی ہیں کہ دوسرے کو جو نعمت ملی ویسی مجھے بھی مل جائے اور یہ آرزو نہ ہو کہ اسے نہ ملتی یا اس سے جاتی رہے اور حسد میں یہ آرزو ہوتی ہے، اسی وجہ سے حسد مذموم ہے اور غبطہ مذموم نہیں۔ امام بخاری کے ترجمۃ الباب سے بھی یہی معلوم ہوتا ہے کہ ان حدیثوں میں غبطہ مراد ہے، لہذا ان حدیثوں کے یہ معنی ہوئے کہ یہی دو چیزیں غبطہ کرنے کی ہیں، کہ یہ دونوں خدا کی بہت بڑی نعمتیں ہیں غبطہ ان پر کرنا چاہیے نہ کہ دوسری نعمتوں پر، واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب۔

حدیث ۸: بیہقی نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہاں حسد بمعنی غبطہ، رشک ہے حسد تو کسی پر جائز نہیں نہ دنیا دار پر نہ دین دار پر شیطان کو حضرت آدم علیہ السلام پر حسد ان کی دینی عظمت پر ہو تھا نہ کہ دنیاوی مال و دولت پر مگر مارا گیا حسد کے معنی ہیں دوسرے کی نعمت پر جلتا اور اس کا زوال چاہنا، رشک کے معنی ہیں دوسرے کی سی نعمت اپنے لیے بھی چاہنا دینی چیزوں میں رشک جائز ہے۔

۲۔ یعنی عالم دین جو دن رات نمازیں پڑھتا ہو قرآن پر عمل کرتا ہو ہر وقت اس کے مسائل سوچتا ہو، اس میں غور و تامل کرتا ہو، یقیناً اس میں یہ سب کچھ داخل ہے۔ مبارک ہے وہ زندگی جو قرآن و حدیث میں تامل و غور کرنے میں گزر جائے اور مبارک ہے وہ موت جو قرآن و حدیث کی خدمت میں آئے اللہ نصیب کرے۔ شعر

نکل جائے دم تیرے قدموں کے نیچے
یہی دل کی حسرت یہی آرزو ہے

انسان جس شغل میں جتے گا اسی میں مرے گا اور ان شاء اللہ اسی میں اٹھے گا بعض صحابہ کرام قبر میں بھی سورۃ ملک پڑھتے سنے گئے جیسا کہ مشکوٰۃ شریف میں آئے گا۔

۳۔ چونکہ خفیہ خیرات علانیہ خیرات سے افضل ہے، اس لیے یہاں رات کا ذکر دن سے پہلے ہوا یعنی وہ مالدار خفیہ بھی خیرات کرے اور مدنیہ بھی، خیال رہے کہ سنت کی نیت سے اپنے اور اپنے بال بچوں پر خرچ کرنا بھی اسی میں داخل ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۳۳۹)

فرمایا: اللہ تعالیٰ شعبان کی پندرہویں شب میں اپنے بندوں پر خاص تجلی فرماتا ہے، جو استغفار کرتے ہیں ان کی مغفرت کرتا ہے اور جو رحم کی درخواست کرتے ہیں ان پر رحم کرتا ہے اور عداوت والوں کو ان کی حالت پر چھوڑ دیتا ہے۔ (8)

حدیث ۹: امام احمد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ہر ہفتہ میں دو بار دوشنبہ اور پنج شنبہ کو لوگوں کے اعمال نامے پیش ہوتے ہیں، ہر بندے کی مغفرت ہوتی ہے مگر وہ شخص کہ اس کے اور اس کے بھائی کے درمیان عداوت ہو ان کے متعلق یہ فرماتا ہے: انھیں چھوڑ دو اس وقت تک کہ باز آجائیں۔ (9)

حدیث ۱۰: طبرانی نے اسامہ بن زید رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ دوشنبہ اور پنج شنبہ کو اللہ تعالیٰ کے حضور لوگوں کے اعمال پیش ہوتے ہیں، سب کی مغفرت فرمادیتا ہے مگر جو دو شخص باہم عداوت رکھتے ہیں اور وہ شخص جو قطع رحم کرتا ہے۔ (10)

حدیث ۱۱: امام احمد و ابو داؤد و ترمذی ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ دوشنبہ اور پنج شنبہ کے دن جنت کے دروازے کھولے جاتے ہیں، جس بندہ نے شرک نہیں کیا ہے اسکی مغفرت کی جاتی ہے، مگر جو شخص ایسا ہے کہ اس کے اور اس کے بھائی کے درمیان عداوت ہے، ان کے متعلق کہا جاتا ہے انھیں مہلت دو یہاں تک کہ یہ دونوں صلح کر لیں۔ (11)

(8) شعب الایمان، باب فی الصیام، ما جاء فی لیلة النصف من شعبان، الحدیث: ۳۸۳۵، ج ۳، ص ۳۸۲-۳۸۳

(9) کنز العمال، کتاب الاخلاق، رقم ۷۴۴۹، ج ۳، ص ۱۸۷

حکیم الامت کے مدنی پھول

اس نام سے مراد مسلمان ہیں اور جمعہ سے مراد ہفتہ ہے۔ مرتب فرمایا تا کہ معلوم ہو کہ ایک دن میں دو بار پیشی نہیں ہوتی بلکہ ہر دن میں ایک بار یہ پیشی بارگاہ الہی میں ہوتی ہے یا اس فرشتے کے سامنے جو لوگوں کے اعمال کا محافظ بنایا گیا ہے، پہلا احتمال زیادہ قوی ہے کیونکہ دوسری روایت میں اس کی تصریح ہے کہ بارگاہ الہی میں پیشی ہوتی ہے۔ (مرقات)

۲۔ یقیناً بنا ہے فیج سے بمعنی لوٹنا رجوع کرنا، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "تَقْبَلُ عَمَلِي أَمْرُ اللَّهِ"۔ یہ ضرب کا مضارع ثنیہ ہے۔ خیال رہے کہ لوگوں کے اعمال جمعہ کے دن حضرات انبیاء کرام بلکہ ماں باپ پر بھی پیش کیے جاتے ہیں، وہ حضرات ہماری نیکیاں دیکھ کر خوش ہوتے ہیں گناہ دیکھ کر رنجیدہ اس لیے علماء فرماتے ہیں کہ گناہ کر کے اپنے مرے ہوئے ماں باپ کو نہ ستاؤ، حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو دکھ نہ دو، اس کا یہ مطلب ہے۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۸۵۸)

(10) المعجم الکبیر، باب الالف، الحدیث: ۴۰۹، ج ۱، ص ۱۶۷

(11) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فیمن یحجز آخاہ المسلم، الحدیث: ۴۹۱۶، ج ۴، ص ۳۶۴

وسنن اترندی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی المتحجرین، الحدیث: ۲۰۳۰، ج ۳، ص ۴۱۲

مسائل فقہیہ

حسد حرام ہے، حدیث میں اس کی بہت مذمت وارد ہوئی۔ حسد کے یہ معنی ہیں کہ کسی شخص میں خوبی دیکھی اس کو اچھی حالت میں پایا اس کے دل میں یہ آرزو ہے کہ یہ نعمت اس سے جاتی رہے اور مجھے مل جائے اور اگر یہ تمنا ہے کہ میں بھی ویسا ہو جاؤں مجھے بھی وہ نعمت مل جائے یہ حسد نہیں اس کو غبطہ کہتے ہیں جس کو لوگ رشک سے تعبیر کرتے ہیں۔ (1)

مسئلہ ۱: یہ آرزو کہ جو نعمت فلاں کے پاس ہے وہ بعینہا (یعنی ویسے ہی) مجھے مل جائے یہ حسد ہے، کیونکہ بعینہ وہی چیز اس کو جب ملے گی کہ اس سے جاتی رہے اور اگر یہ آرزو ہے کہ اس کی مثل مجھے ملے یہ غبطہ ہے کیونکہ اس سے زائل ہونے کی آرزو نہیں پائی گئی۔ (2) حدیث میں فرمایا ہے کہ حسد نہیں ہے مگر دو چیزوں میں، ایک وہ شخص جس کو خدا نے

(1) الفتاویٰ احمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثالث والعشرون فی الغیۃ، ج ۵، ص ۳۶۲-۳۶۳۔

(2) الفتاویٰ احمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثالث والعشرون فی الغیۃ، ج ۵، ص ۳۶۳۔

رشک اور مقابلہ بازی کے احکام

دوسری صورت یعنی رشک اور مقابلہ بازی حرام نہیں بلکہ یہ کبھی واجب ہوتا ہے تو کبھی مستحب اور کبھی مباح۔ چنانچہ،

مذہب و جل کا فرمان عالی شان ہے:

سَابِقُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ

ترجمہ کنز الایمان: بڑھ کر چلو اپنے رب کی بخشش کی طرف۔ (پ 27، الحدید: 21)

مسابقت یعنی مقابلہ بازی کسی چیز سے محروم رہ جانے کے خوف کا تقاضا کرتی ہے جیسے دو غلام اپنے آقا کی خدمت میں ایک دوسرے سے اس لئے سبقت لے جانا چاہیں تاکہ اس کے منظور نظر ہو جائیں، اور یہ دینی امور و واجبات میں واجب ہے جیسے ایمان، فرض نماز اور زکوٰۃ کی نعمت پر رشک کرنا لہذا ان امور کو ادا کرنے والے کی طرح ہونے کو پسند کرنا واجب ہے ورنہ تم گناہ پر راضی ہونے والے بن جاؤ گے جو کہ حرام ہے، جبکہ فضیلت کے کاموں میں رشک کرنا مستحب ہے جیسے علم یا نیک کاموں میں مال خرچ کرنے پر رشک کرنا، جبکہ مباح نعمتوں پر رشک کرنا بھی مباح ہے جیسے نکاح وغیرہ پر رشک کرنا، البتہ مباح امور (یعنی جائز کاموں) میں مقابلہ بازی فضاائل میں کی کر دیتی ہے، نیز یہ رہد، رصا ورتوکل کے بھی منافی ہے اور ایسے کاموں میں مقابلہ کرنا گناہ میں مبتلا ہوئے بغیر بھی مقامات رفیعہ سے روک دیتا ہے۔

لبتہ ایہا ایک باریک و دقیق نکتہ کی بات سے آگاہ ہونا ضروری ہے تاکہ انسان بے خبری میں حسد کے حرام فعل میں مبتلا نہ ہو جائے، ورنہ یہ ہے کہ جو انسان غیر جیسی نعمت کے حصول سے مایوس ہو جاتا ہے تو وہ خود کو اس نعمت کے حامل شخص سے کم تر و ناقص سمجھنے لگتا ہے، نیز اس کا نفس یہ پسند کرنے لگتا ہے کہ اس کا نقص کسی طریقہ سے دور ہو جائے اور یہ اسی وقت ہو سکتا ہے جب وہ اس نعمت کے حصول میں

مال دیا ہے اور وہ راجح میں صرف کرتا ہے، دوسرا وہ شخص جس کو خدا نے علم دیا ہے، وہ لوگوں کو سکھاتا ہے اور علم کے موافق فیصلہ کرتا ہے۔ (3)

اس حدیث سے بظاہر ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ان دو چیزوں میں حسد جائز ہے مگر بغور دیکھنے سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ یہاں بھی حسد حرام ہے، بعض علما نے یہ بتایا کہ اس حدیث میں حسد بمعنی غبطہ ہے۔ امام بخاری علیہ الرحمۃ کے ترجمۃ الباب سے بھی یہی پتا چلتا ہے۔

اور بعض نے کہا کہ حدیث کا یہ مطلب ہے کہ اگر حسد جائز ہوتا تو ان میں جائز ہوتا مگر ان میں بھی ناجائز ہے۔ جیسا کہ حدیث لَا شُوْءَ إِلَّا فِي الدَّارِ (4) (الحدیث) میں اسی قسم کی تاویل کی جاتی ہے۔ اور بعض علما نے فرمایا کہ معنی حدیث یہ ہیں کہ حسد انھیں دونوں میں ہو سکتا ہے اور چیزیں تو اس قابل ہی نہیں کہ ان میں حسد پایا جاسکے کہ حسد کے معنی یہ ہیں کہ دوسرے میں کوئی نعمت دیکھے اور یہ آرزو کرے کہ وہ مجھے مل جائے اور دنیا کی چیزیں نعمت نہیں کہ جن کی تحصیل کی فکر ہو دنیا کی چیزوں کا مال اللہ تعالیٰ کی ناراضی ہے اور یہ چیزیں وہ ہیں کہ ان کا مال اللہ تعالیٰ کی خوشنودی و رضا ہے، لہذا نعمت جس کا نام ہے وہ یہی ہیں ان میں حسد ہو سکتا ہے۔ (5)



کامیاب ہو کر یا پھر اس نعمت کے حامل شخص کی نعمت کے زائل ہو جانے کے سبب اس کے ہم پلہ و برابر ہو جائے۔

فرض کیا کہ وہ اس صاحب نعمت شخص کے مساوی ہونے سے مایوس ہو گیا تو تب بھی اس کے دل میں اس چیز کی محبت باقی رہ جائے گی کہ وہ نعمت اس شخص کے پاس بھی نہ رہے جس کی وجہ سے وہ اس پر ممتاز حیثیت رکھتا ہے کیونکہ اس نعمت کے ختم ہوتے ہی اس کا اس صاحب نعمت شخص سے کمتر ہونا بھی ختم ہو جائے گا اور یہ بھی ہو سکتا ہے کہ اب وہ اس پر فضیلت ملے جائے۔

اس شخص کو قابل مذمت حسد کرنے والا حاسد اسی صورت میں کہا جاسکتا ہے بشرطیکہ وہ اس نعمت کو اس شخص سے زائل کرنے پر قادر ہو کہ اسے زائل کر دے، اور اگر اس نعمت کے زوال پر قدرت کے باوجود اس کا تقویٰ و پرہیزگاری اسے اس کام سے اور اس کی نعمت کے زوال کی تمنّا سے روک دے تو اس پر کوئی گناہ نہیں۔ (الزَّوَالُ عَنْ أَفْئِدَةِ الْكَافِرِ)

(3) صحیح البخاری، کتاب العلم، باب الاعتباط فی العلم والحکمۃ، الحدیث: ۷۳، ج ۱، ص ۴۳۔

(4) صحیح مسلم، کتاب الادب، باب لا یدوی ولا طیرۃ، الحدیث: ۱۱۷۰- (۲۲۲۵)، ص ۱۲۲۳۔

(5) الفتاویٰ الہندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثالث والآخر ون فی الخبیۃ، ج ۵، ص ۳۶۲، وغیرہ۔

ظلم کی مذمت

قرآن مجید میں بہت سے مواقع پر اس کی برائی ذکر کی گئی اور احادیث اس کے متعلق بہت ہیں بعض ذکر کی جاتی ہیں۔

احادیث

حدیث ۱: ظلم قیامت کے دن تاریکیاں ہے۔ (۱) یعنی ظلم کرنے والا قیامت کے دن سخت مصیبتوں اور تاریکیوں میں گھرا ہوا ہوگا۔ (بخاری و مسلم)

(۱) صحیح ابوری، کتاب المعامل، باب الظلم ظلمات یوم القیامت، الحدیث: ۲۴۴۷، ج ۲، ص ۱۲۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ظلم کے لغوی معنی ہیں کسی چیز کو بے موقعہ استعمال کرنا اور کسی کا حق مارنا۔ اس کی بہت قسمیں ہیں: گناہ کرنا اپنی جان پر ظلم ہے، قرابت دروں یا قرض خواہوں کا حق نہ دینا ان پر ظلم، کسی کو ستانا ایذا دینا اس پر ظلم، یہ حدیث سب کو شامل ہے اور حدیث اپنے ظاہری معنی پر ہے یعنی ظالم پلصراط پر اندھیروں میں گھرا ہوگا، یہ ظلم اندھیری بن کر اس کے سامنے ہوگا جیسے کہ مؤمن کا ایمان اور اس کی نیک اعمال روشنی بن کر اس کے آگے چلیں گے، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "يَسْئَلُنِي نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ" چونکہ ظالم دنیا میں حق ناحق میں فرق نہ کر سکا اس لیے اندھیرے میں رہا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۳، ص ۹۱)

اللہ عز و جل قرآن مجید، فرقان حمید میں ارشاد فرماتا ہے:

وَلَا تَحْسَبَنَّ أَنَّهٗ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ﴿۲۲﴾ (پ ۱۳، ابراہیم: ۲۲)

ترجمہ کنز الایمان اور ہرگز اللہ کو بے خبر نہ جانا ظالموں کے کام سے انہیں ڈھیل نہیں دے رہا ہے مگر ایسے دن کے لئے جس میں آنکھیں کھل کی کھلی رہ جائیں گی۔

وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا إِلَىٰ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ﴿۲۲﴾ (پ ۱۹، الشعراء: ۲۲)

ترجمہ کنز الایمان: اور اب جانا چاہتے ہیں ظالم کہ کس کروٹ پر پلٹا کھائیں گے۔

وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنۢ بَلَاءٍ ثُمَّ لَا تَنْصَرُونَ ﴿۱۱۳﴾

(پ ۱۲، ہود: ۱۱۳)

ترجمہ کنز الایمان: اور ظالموں کی طرف نہ جھکو کہ تمہیں آگ چھوئے گی اور اللہ کے سوا تمہارا کوئی حمایتی نہیں پھر مدد نہ پاؤ گے۔

کسی چیز کی طرف جھکاؤ سے مراد سکون حاصل کرنا اور محبت کے ساتھ اس کی طرف مائل ہونا ہے۔ اسی وجہ سے حضرت سیدنا عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما اس آیت مبارکہ کی تفسیر میں فرماتے ہیں محبت و مودت اور نرم گفتگو کے ذریعے ان کی طرف مکمل طور پر مائل نہ ہو جاؤ۔ حضرت سیدنا سعدی علیہ رحمۃ اللہ القوی اور حضرت سیدنا ابن زید رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ فرماتے ہیں ان کو ظاہری طور پر خوش نہ کرو۔ حضرت سیدنا عمرہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ فرماتے ہیں نہ ان کی پیروی کرو اور نہ ہی ان سے محبت کرو۔ حضرت سیدنا ابو عاصیہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ فرماتے ہیں: ان کے اعمال پر رضامند نہ رہو۔

(کتاب الکبائر للذہبی، الکبیرۃ السادسة والحشر دن النظم، فصل فی الخذر من الدخول..... رخ ص ۱۲۵)

ظاہر یہ ہے کہ مذکورہ تمام اقوال گزشتہ آیت مبارکہ سے مراد ہو سکتے ہیں۔

ایک اور مقام پر اللہ عز و جل ارشاد فرماتا ہے:

أَحْشَرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ (پ ۲۳، الصافات: ۲۲)

ترجمہ کنزالایمان: ہانکو ظالموں اور ان کے جوڑوں کو۔

یعنی ان کے ہم مثل اور پیروی کرنے والے۔

بروز قیامت ظلم کی حالت:

پیارے آقا، مکی مدنی مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمانِ عالیشان ہے ظلم سے بچو کیونکہ ظلم قیامت کے دن کئی تاریکیاں ہوں گے اور بخل سے بچو کیونکہ بخل نے تم سے پہلے لوگوں کو ہلاک کر دیا، اس نے انہیں اس بات پر ابھارا کہ وہ لوگوں کا خون بہائیں اور ان کی حرام چیزوں کو حلال جانیں۔ (صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والادب، باب تحریم النظم، الحدیث: ۶۵۷۶، ص ۱۱۲۹)

ظلم حرام ہے:

شہنشاہِ مدینہ قرابہ قلب و سینہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں کہ اللہ عز و جل نے ارشاد فرمایا اے میرے بندو! میں نے خود پر ظلم حرام ٹھہرایا اور تمہارے درمیان بھی اسے حرام قرار دے دیا پس آپس میں ایک دوسرے پر ظلم نہ کرو۔

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والادب، باب تحریم النظم، الحدیث: ۶۵۷۶، ص ۱۱۲۹)

تاجدارِ رسالت، شہنشاہِ نبوت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا ظلم سے بچو کیونکہ ظلم قیامت کے دن تاریکیاں ہوں گے ورنہ کلامی سے بچو کیونکہ اللہ عز و جل بری باتیں اور بے شرمی کے کام کرنے والے کو پسند نہیں فرماتا اور بخل سے بچو کیونکہ بخل نے تم سے پہلے لوگوں کو آمادہ کیا تو انہوں نے ایک دوسرے کے خون بہائے اور حرام چیزوں کو حلال جانا۔

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب التاریخ، باب بدء الخلق، الحدیث: ۶۲۱۵، ج ۸، ص ۴۸)

حضور نبی پاک، صاحبِ نواک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمانِ عالیشان ہے خیانت سے بچو کیونکہ یہ بری خصلت ہے اور ظلم سے بچو۔

حدیث ۲: اللہ تعالیٰ ظالم کو ڈھیل دیتا ہے، مگر جب پکڑتا ہے تو پھر چھوڑتا نہیں، اس کے بعد یہ آیت تلاوت کی:

کیونکہ ظلم قیامت کے دن تاریکیاں ہوں گے اور بخل سے بچو کیونکہ بخل نے تم سے پہلے لوگوں کو ہلاک کر دیا یہاں تک کہ انہوں نے لوگوں کے خون بہائے اور ان کی حرام چیزوں کو حلال جانا۔ (المعجم الاوسط، الحدیث: ۶۲۹، ج ۱، ص ۱۸۹)

ظلم قحط سالی کا سبب ہے:

سرکارِ مدینہ کے تاجدار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمانِ عالیشان ہے آپس میں ایک دوسرے پر ظلم نہ کرو ورنہ تم دعا کرو گے تو قبول نہ ہوگی اور بارش مانگو گے تو بارش نہ دی جائے گی اور مدد طلب کرو گے تو مدد نہ کی جائے گی۔

(مجمع الزوائد، کتاب الخلافۃ، باب الزجر عن الظلم، الحدیث: ۹۱۹۱، ج ۵، ص ۴۲۳)

شفاعت سے محروم لوگ:

اللہ عز و جل کے پیارے حبیب صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمانِ عالیشان ہے میری امت میں دو قسم کے لوگوں کو میری شفاعت نہ پہنچے گی (۱)۔۔۔ بہت زیادہ ظالم اور سخت دل حاکم اور (۲)۔۔۔ دین میں حد سے بڑھنے والا اور اس سے نکل جانے والا ہر شخص۔

(المعجم الکبیر، الحدیث: ۸۰۷۹، ج ۸، ص ۲۸۱) (المعجم الاوسط، الحدیث: ۶۳۰، ج ۱، ص ۱۹۲)

جدائی کا سبب:

لور کے پیکر، تمام نبیوں کے سرور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم ارشاد فرمایا کرتے تھے مسلمان مسلمان کا بھائی ہے، نہ تو اس پر ظلم کرتا ہے اور نہ ہی اس سے خیانت کرتا ہے۔ اور یہ بھی فرماتے اس ذات کی قسم جس کے قبضہ قدرت میں میری جان ہے! وہ شخص آپس میں محبت کرتے رہتے ہیں پھر ان میں سے کسی ایک کے کوئی گناہ کرنے کے سبب ان کے درمیان جدائی ڈال دی جاتی ہے۔ السنن لم امام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن عمر بن الخطاب، الحدیث: ۵۳۵۷، ج ۲، ص ۳۲۸

سرکارِ مکہ مکرمہ، سردارِ مدینہ منورہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا اللہ عز و جل ظالم کو ڈھیل دیتا رہتا ہے جب پکڑتا ہے تو پھر نہیں چھوڑتا پھر آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے یہ آیت مبارکہ تلاوت فرمائی:

وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَىٰ وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذًا أَلِيمًا شَدِيدًا (پ ۱۲، حود: ۱۰۲)

ترجمہ کنز الایمان اور ایسی ہی پکڑ ہے تیرے رب کی جب بستیوں کو پکڑتا ہے ان کے ظلم پر بے شک اس کی پکڑ دردناک کڑی ہے۔

(صحیح البخاری، کتاب التفسیر، سورۃ ہود، باب قولہ: وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ۔ الخ، الحدیث: ۴۶۸۶، ص ۳۸۹)

دو جہاں کے تاجور، سلطانِ بحر و بر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمانِ عالیشان ہے شیطان سرزمینِ عرب میں بتوں کی پوجا کئے جانے سے مایوس ہو چکا ہے مگر اس کے بدلے وہ تم سے ان گناہوں سے راضی ہو جائے گا جن کو تم حقیر سمجھتے ہو حالانکہ یہ قیامت کے دن ہدک کرنے والے ہوں گے، حسب استطاعت ظلم سے بچو اس لئے کہ بندہ قیامت کے دن نیکیاں لے کر آئے گا اور سمجھے گا کہ یہ اسے نجات دے دیں گی۔ ایک اور شخص بارگاہِ ربوبیت میں حاضر ہو کر عرض کرے گا اے میرے رب عز و جل! تیرے بندے نے مجھ پر ظلم کیا۔ تو ←

(وَكُذِّبَكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَىٰ وَهِيَ ظَالِمَةٌ) (2)

اللہ عز و جل (فرشتوں سے) ارشاد فرمائے گا اس (عالم) کی نیکیوں کو کم کر دو۔ پس اس طرح ہوتا رہے گا یہاں تک کہ گناہوں کے سبب اس کے پاس کوئی نیکی نہ رہے گی۔ اس کی مثال ان مسافروں کی سی ہے جنہوں نے ایک بیابان زمین پر پڑاؤ کیا لیکن ان کے پاس لکڑیاں نہ تھیں، پس وہ لکڑیاں اکٹھی کرنے کے لئے بکھر گئے اور لکڑیاں اکٹھی کر کے آگ روشن کی اور پھر جو چاہا پکایا اور گناہوں کا معاملہ بھی سی طرح ہے۔ (لکڑیوں کے گٹھے کی طرح ایک ایک کر کے گناہوں کا بھی اتنا رنگ جاتا ہے)

(مسند ابی یعلیٰ الموصلی، مسند عبد اللہ بن مسعود، الحدیث: ۵۱۰۰، ج ۳، ص ۳۸۱)

سید المرسلین، رحمۃ اللہ علیہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا فرمانِ عالیشان ہے جس نے عزت یا کسی دوسری چیز میں اپنے بھائی پر ظلم کیا ہو وہ اس وقت سے پہلے آج ہی معافی مانگ لے کہ جب دینار ہوں گے نہ درہم۔ اگر اس کے پاس اچھا عمل ہوگا تو اس کے ظلم کے برابر اس سے وہ لے لیا جائے گا اور اگر اس کے پاس نیکیاں نہ ہوں گی تو مظلوم کے گناہ اس کے کھاتے میں ڈال دیئے جائیں گے۔

(صحیح البخاری، کتاب النظام، باب من کانت له مظلمة الخ، الحدیث: ۲۴۴۹، ص ۱۹۲)

مفلس کون ہے؟

فشیخ الرزین، انفس النعمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے صحابہ کرام رضوان اللہ علیہم اجمعین سے دریافت فرمایا کیا تم جانتے ہو کہ مفلس کون ہے؟ انہوں نے عرض کی ہم میں مفلس وہ ہے جس کے پاس نہ درہم ہو اور نہ ہی مال۔ تو آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا میری امت میں مفلس وہ ہے جو قیامت کے دن نماز، روزے اور زکوٰۃ لے کر آئے گا لیکن اُس نے اس کو گالی دی ہوگی، اُس پر تہمت لگائی ہوگی، اس کا مال کھایا ہوگا، اُس کا خون بہایا ہوگا اور اس کو مارا ہوگا، پس اس کو بھی اس کی نیکیاں دی جائیں گی اور اُس کو بھی اس کی نیکیاں دی جائیں گی، پھر اتر حقوق پورے ہونے سے پہلے اس کی نیکیاں ختم ہو گئیں تو اُن کے گناہ اس پر ڈال دیئے جائیں گے، پھر اسے (جہنم کی) آگ میں پھینک دیا جائے گا۔ (صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والادب، باب تحریم الظلم، الحدیث: ۶۵۷۹، ص ۱۱۲۹)

مظلوم کی بددعا:

اللہ عز و جل کے محبوب، دائیٰ علیہ، منقرض عن النعب، صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے جب حضرت سیدنا معاذ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو یمن کی طرف بھیجے تو ارشاد فرمایا مظلوم کی بددعا سے بچو کیونکہ اس کے اور اللہ عز و جل کے درمیان کوئی حجاب نہیں ہوتا۔

(صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ، باب اخذ الصدقۃ من الاغنیاء و تردی، الخ، الحدیث: ۱۴۹۶، ص ۱۱۸)

(2) صحیح ابوری، کتاب التفسیر، باب (وَكُذِّبَكَ أَخْذُ رَبِّكَ) ... الخ، الحدیث: ۴۶۸۶، ج ۳، ص ۲۴۷۔

پ ۱۲، حود ۱۰۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اسے یہاں عالم میں تین احتمال ہیں: یا اس سے مراد لوگوں کے حقوق مارنے والا ہے یا مراد مطلقاً گنہگار یا کافر، پہلے معنی زیادہ قوی ہیں۔

ایسی ہی تیرے رب کی پکڑ ہے، جب وہ ظلم کرنے والی بستیوں کو پکڑتا ہے۔

حدیث ۳: جس کے ذمہ اس کے بھائی کا کوئی حق ہو وہ آج اس سے معاف کرا لے، اس سے پہلے کہ نہ اشرفی ہوگی نہ روپیہ بلکہ اس کے عمل صالح کو بقدر حق لے کر دوسرے کو دیدیے جائیں گے اور اگر اس کے پاس نیکیاں نہیں ہوں گی تو دوسرے کے گناہ اس پر لا دیے جائیں گے۔ (3)

وہ بندہ خوش نصیب ہے جو پہلے گناہ پر ہی پکڑا جائے، وہ بہت ہی بد نصیب ہے جس کو گناہ پر نعتیں ملتی رہیں۔ گناہ پر ملدی پکڑ نہ ہونا رب تعالیٰ کا غضب ہے کہ انسان اس سے دھوکہ کھا جاتا ہے۔

تو مشو مغرور بر علم خدا دیر گیر دخت گیر مر ترا

۲۔ اس آیت کریمہ میں مسیحیوں سے مراد ان کفار کی بستیاں ہیں جن پر عذاب الہی آیا کہ وہاں کے باشندوں کو اولاً بہت ڈھیل دی گئی۔ پھر ہلاک کر دیئے گئے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۴۵)

(3) صحیح البخاری، کتاب المظالم، باب من کانت له مظلمة عند الرجل... إلخ، الحدیث: ۲۴۳۹، ج ۲، ص ۱۲۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جس نے اپنے بھائی مسلمان کی ناحق بے آبروئی کی ہو یا اس کا مال مارا ہو یا ناحق دبا یا ہو یا کسی اور طرح کا اس پر ظلم کیا ہو۔

۲۔ یعنی اپنی اور اس کی موت سے پہلے اس سے معافی لے لے، آج سے مراد دنیا کے دن ہیں۔ معافی مانگنے کی چند صورتیں ہیں: (۱) قرض ہو تو ادا کر دے (۲) اسے مارا پیٹا ہو تو قصاص دیدے یا ان تمام سے معافی مانگ لے اور وہ بخوشی معافی کر دے (۳) اگر قرض خواہ مر گیا ہو تو اس کے وارثوں کو قرض ادا کر دے (۴) اور اگر وارث معلوم نہ ہوں تو اسکے نام پر خیرات کر دے (۵) مرحوم کے لیے ہمیشہ دعائے مغفرت کرتا رہے، اسے ثواب ایصال کرتا رہے مگر اس آخری صورت میں معافی کی امید ہے یقین نہیں۔ بہتر یہی ہے کہ خود اس سے معافی مانگے بلکہ یہ کوشش کرے کہ کسی کا حق نہ مارے۔

۳۔ اس سے مراد قیامت کا دن ہے۔ مطلب یہ ہے کہ دنیا میں تو روپیہ پیسہ خرچ کر کے معافی ہو سکتی ہے مگر قیامت میں یہ صورت ناممکن ہے، وہاں نہ تو کسی کے پاس مال ہوگا اور نہ مال کے ذریعہ معافیاں حاصل ہوں گی۔

۴۔ اور مظلوم کے نامہ اعمال میں لکھ دیئے جائیں گے جیسے ظالم کے صدقات خیرات وغیرہ شامل ہیں کہ تین پیسہ قرض کے عوض مقروض کی سرت سو ۷۰ نمازیں قرض خواہ کو دلوا دی جائیں گی، نمازیں بھی وہ جو باجماعت ادا کی ہوں۔ اگر قرض خواہ کافر ہے تو اس کا عذاب ہلکا کر دیا جائے گا یا اس کے گناہ اس ظالم پر ڈال دیئے جائیں گے۔

۵۔ یا اس طرح کہ ظالم کے پاس نیکیاں ہوں ہی نہیں یا اس طرح کہ نیکیاں تو تھیں مگر حقوق والے نے گئے، اس کے پاس سے ختم ہو گئیں مگر حقوق باقی رہے۔

۶۔ یا تو اس طرح کہ مظلوم کے گناہ جسمانی شکل میں ہوں اور ظالم پر لا دیئے جاویں یا ان گناہوں کے عوض ظالم کو سزا دے دی ←

حدیث ۴: تمہیں معلوم ہے مفلس کون ہے؟ لوگوں نے عرض کی، ہم میں مفلس وہ ہے کہ نہ اس کے پاس روپیہ ہے نہ متاع۔ فرمایا: میری امت میں مفلس وہ ہے کہ قیامت کے دن نماز، روزہ، زکاۃ لے کر آئے گا اور اس طرح آئے گا کہ کسی کو گالی دی ہے، کسی پر تہمت لگائی ہے، کسی کا مال کھالیا ہے، کسی کا خون بہایا ہے، کسی کو مارا ہے۔ لہذا اس کی نیکیاں اس کو دے دی جائیں گی اگر لوگوں کے حقوق پورے ہونے سے پہلے نیکیاں ختم ہو گئیں تو ان کی خطائیں اس پر ڈال دی جائیں گی پھر اسے جہنم میں ڈال دیا جائے گا۔ (4)

چارے اور مظلوم کو نجات۔ خیال رہے کہ کوئی شخص قیامت میں کسی کا گناہ خود خوشی سے نہ اٹھائے گا لیکن اگر رب تعالیٰ کی طرف سے جبراً ڈال دیا جائے تو انکار بھی نہ کر سکے گا۔ اس حدیث کی تائید اس آیت کریمہ سے ہوتی ہے "وَلَيَخْلُقَنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَّعَ أَثْقَالِهِمْ"۔ حدیث بالکل ظاہری معنی پر ہے کسی تاویل و توجیہ کی ضرورت نہیں اور اس آیت کے خلاف نہیں کہ "لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ" اور نہ اس کے خلاف ہے "وَمَا هُمْ بِحَامِلِينَ مِنْ خَطِيئَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ" نہ اس کے خلاف ہے لَيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ نہ اس کے خلاف ہے "لَهُمَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ" کہ ان آیات میں بخوشی دوسرے کے گناہ اٹھانے کی نفی ہے ورنہ اس آیت وحدیث میں جبر الازل دیتے جانے کا ثبوت ہے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح ج ۶، ص ۹۲، ۹۳)

(4) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة...، باب تحريم الظلم، الحدیث: ۵۹۔ (۲۵۸۱)، ص ۹۳، ۹۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہاں مفلس سے مراد کامل پورا پورا غریب ہے یا وہ جو بظاہر غنی معلوم ہوتا ہو مگر حقیقتاً مفلس ہو۔

۲۔ یعنی ہم لوگ اپنے محاورہ و اصطلاح میں مفلس اسے کہتے ہیں جس کے پاس مال نہ ہو۔ بہر حال حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا سواں حقیقت پر مبنی ہے صحابہ کرام کا جواب عرف پر ہے۔

۳۔ یعنی نیک اعمال سے بھرپور آئے مالی مدنی ہر طرح کی نیکیاں اس کے پاس ہوں۔ خیال رہے کہ دنیا کی تو تگری مال سے ہے آخرت کی تو تگری اعمال سے۔ مرقات نے فرمایا کہ یہاں اعمال سے مراد مقبول نیکیاں ہیں جو شرعاً درست ہوں اور عند اللہ قبول ہوں۔

۴۔ خیال رہے کہ تقویٰ کے دو بازو ہیں: ایک بلکہ پہلا بازو ہے بری چیزوں خصوصاً لوگوں کی حق تلفی سے بچنا، دوسرا بازو ہے نیک اعمال کرنا۔ یہ نفی ہے اور اثبات کا مجموعہ تقویٰ ہے۔ اس فرمان عالی سے معلوم ہوا کہ گنہگار بھی حضور کا امتی ہے کہ اسے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے امتی فرمایا۔ دوسرے یہ کہ گنہگاروں کی نیکیاں بھی قبول ہو سکتی ہیں، ہاں نیکیوں کا بقا اس سے ہے کہ اس نے کسی کے حق نہ مارے ہوں۔

۵۔ اس طرح کہ اس خالم کی کچھ نیکیاں قرض خواہ لے لیں کچھ دوسرے مظلوم لوگ، یہ لائے سب کچھ مگر بچے کچھ نہیں۔

۶۔ تفسیر روح البیان نے ایک جگہ فرمایا کہ اللہ تعالیٰ اپنے فضل و کرم سے نیکیوں میں اضافہ فرماتا ہے کہ ایک کا ثواب دس سے لے کر سات سو تک بعض کا اس سے بھی زیادہ۔ یہ چھین لیا جانا اس زیادتی میں ہوگا اصل ایک نیکی بھی نہ چھینے گی، یونہی روزہ قرض دار کو نہ دیا جاوے گا کہ

فرمایا جاوے گا الصوم لی وانا اجزی بہ روزہ میرا ہے اور میں ہی اس کا عوض ہوں۔

حدیث ۵: اِمعدہ نہ ہو کہ یہ کہنے لگو کہ لوگ اگر ہمارے ساتھ احسان کریں گے تو ہم بھی احسان کریں گے اور اگر ہم پر ظلم کریں گے تو ہم بھی ان پر ظلم کریں گے، بلکہ اپنے نفس کو اس پر جماؤ کہ لوگ احسان کریں تو تم بھی احسان کرو اور اگر برائی کریں تو تم ظلم نہ کرو۔ (5)

حدیث ۶: جو شخص اللہ (عزوجل) کی خوشنودی کا طالب ہو لوگوں کی ناراضی کے ساتھ یعنی اللہ (عزوجل) راضی ہو، چاہے لوگ ناراض ہوں ہوا کریں اس کی کوئی پروا نہ کرے، اللہ تعالیٰ لوگوں کے شر سے اس کی کفایت کریگا اور جو شخص لوگوں کو خوش رکھنا چاہے اللہ (عزوجل) کی ناراضی کے ساتھ، اللہ تعالیٰ اس کو آدمیوں کے سپرد کر دے گا۔ (6)

حدیث ۷: سب سے بُرا قیامت کے دن وہ بندہ ہے، جس نے دوسرے کی دنیا کے بدلے میں اپنی آخرت برباد

کر لی۔ اس سے معلوم ہوا کہ حقوق العباد میں شفاعت نہ ہوگی جب تک کہ صاحب حق معاف نہ کر دے۔ (مرقات)

۸۔ بقیہ قرضوں کے عوض۔ اس سے معلوم ہوا کہ قرض بلکہ سارے حقوق العباد کی نہ معافی ہے نہ شفاعت، بغیر صاحب حق کے معاف کئے معاف نہیں ہوتے۔ (مرقات) حدیث کا مقصد یہ ہے کہ روپیہ پیسہ کی مفلسی عارضی ہے جو موت آنے پر بلکہ کبھی زندگی میں ہی دولت مل جانے پر ختم ہو جاتی ہے، یہ مفلسی وہ ہے جو مرے بعد بھی ختم نہیں ہوتی۔ ابھی عرض کیا گیا کہ اصل نیکی اہل حقوق کو نہ دی جائے گی بلکہ وہ زیادتیاں جو رب کے فضل سے ملی ہیں، روزہ کی اصل کسی کو نہ دی جاوے نہ زیادتی، اہل حقوق کے گناہ ظالم پر ڈالنا عین عدل ہے، دنیا میں مقروض کا مکان، سامان اہل حقوق کو دے دیئے جاتے ہیں وہاں اگر ایسا ہو تو مضائقہ نہیں۔ خیال رہے کہ یہاں سیئات سے مراد برے عقائد نہیں بلکہ برے اعمال ہیں وہ بھی صغیرہ لہذا اگر کسی مسلمان پر کافر کا قرض رہ گیا تو اس کا کفر یا زنا، چوری وغیرہ اس پر نہ ڈالی جاوے گی۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۳۸)

(5) سنن اترندی، کتاب ہر والصلۃ، باب ماجاء فی الاحسان والحق، الحدیث: ۲۰۱۳، ج ۳، ص ۴۰۵۔

حکیم امت کے مدنی پھول

۱۔ اِمعدہ الف کے کسرہ میم کے شد سے ہے۔ اِمعدہ وہ شخص ہے جس کی خود اپنی رائے کچھ نہ ہو، جو دوسروں کو کرتے دیکھے خود بھی کرنے لگے یعنی دوسروں کا مقلد۔ (ت) مبالغہ کی ہے تانیث کی نہیں اس لیے اِمعدہ عورت پر نہیں بولا جاتا مرد کو کہا جاتا ہے۔ (اشعۃ المصباح)

۲۔ یہ فرمان عالی لفظ اِمعدہ کی شرح ہے۔ خیال رہے کہ ظلم کی سزا ظالم کو دینا ظلم نہیں یہ تو اچھا ہے، ہاں ظلم کے عوض ظالم پر ظلم کرنا برا ہے مثلاً چور کے گھر سے اس کاں خیر، لینا، جو زید کی بیوی سے زنا کرے تو زید اس زانی کی بیوی سے زنا کرے یہ حرام ہے۔ چور کے ہاتھ کاٹنا، زانی کو سنگسار کرنا یہ ہے ظلم کی سزا یہ تو اچھی چیز ہے لہذا حدیث واضح ہے۔ ظالم کو سزا اور ظالم پر ظلم کرنے کا فرق ابھی عرض کیا گیا۔ یہاں اتنا اور سمجھ لو کہ ظالم کو قانون سے زیادہ سزا دینا بھی ظلم ہے اور یہ بھی حرام ہے، اگر چور کے بجائے ایک ہاتھ کے دونوں ہاتھ کاٹ دیئے جاویں یا سے قتل کر دیا جاوے تو یہ ظلم ہے، ظالم پر بھی ظلم کرنا حرام ہے اس کی بھی پکڑ ہے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۵۰)

(6) سنن اترندی، کتاب الزحد، باب: ۶۵، الحدیث: ۲۳۲۲، ج ۳، ص ۱۸۶۔

کردی۔ (7)

حدیث ۸: مظلوم کی بددعا سے بچ کہ وہ اللہ تعالیٰ سے اپنا حق مانگے گا اور کسی حق والے کے حق سے اللہ (عزوجل) منع نہیں کریگا۔ (8)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ معاویہ سے مراد حضرت امیر معاویہ بن سفیان ہیں رضی اللہ عنہما، آپ خود اور آپ کے والد دونوں مشہور صحابی ہیں، شاید آپ نے یہ خط اپنی حکومت کے زمانہ میں اپنے دار الخلافہ دمشق سے ام المؤمنین کی خدمت میں لکھا۔

۲۔ یعنی جامعہ نصیحت فرمادیں کیونکہ آپ اہل بیت نبوت سے ہیں کلمات جامعہ آپ کے ہاں کی خصوصیت ہے مجھے بھی اس سے حصہ دیں۔

۳۔ یعنی جو مسلمان اللہ کی رضا کے لیے لوگوں کی ناراضگی کی پرواہ نہ کرے تو اگرچہ لوگ اس سے ناراض ہو جاویں مگر ان شاء اللہ اس کا کچھ نہ بگاڑ سکیں گے، اللہ تعالیٰ اسے لوگوں کے شر سے بچائے گا، یہ عمل بہت ہی مجرب ہے جس کا اب بھی تجربہ ہو رہا ہے۔

۴۔ یعنی ایک کام سے لوگ تو خوش ہوتے ہوں مگر وہ شرعاً حرام ہو، یہ شخص لوگوں کی خوشنودی کے لیے وہ کام کرے، اللہ تعالیٰ کی ناراضی کی پرواہ نہ کرے وہ انہیں لوگوں کے ہاتھوں ذلیل و خوار ہوگا جن کی خوشنودی کے لیے اس نے یہ حرکت کی۔

۵۔ پھر وہی لوگ اس خوشامدی آدمی کو ہلاک یا ذلیل و خوار کر دیں گے جنہیں خوش کرنے کو اس نے اپنے رب کو ناراض کر لیا لہذا سب کو راضی کرنے کے لیے رب کو ناراض نہ کرو، کسی کی خوشنودی کے لیے گناہ یا کفر یا شرک نہ کرو۔

۶۔ اس سے معلوم ہوا کہ سنت یہ ہے کہ خط کے اول و آخر میں سلام لکھا جاوے درمیان میں مضمون کو، جناب ام المؤمنین نے یہاں ایسا ہی کیا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۵۱)

(7) سنن ابن ماجہ، کتاب الدعاء، باب إذا رقی المسلمان بسینھما، الحدیث: ۳۹۶۶، ج ۴، ص ۳۳۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ اس طرح کہ دوسرے کو ناجائز طریقہ سے دنیا کما کر دے، دنیا اس کی بڑھائے آخرت اپنی برباد کرے جیسا کہ ظالم حکام رعایا پر ظلم کر کے ناجائز ذریعوں سے بادشاہ کے خزانے بھرتے ہیں یا اس طرح کہ کسی دنیا دار کی ناجائز تعظیم و توقیر کر کے خود گنہگار ہوا کرے جیسا کہ خوشامدی لوگوں کا طریقہ ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۵۳)

(8) شعب الایمان، باب فی طاعت اولی الامر، فصل فی ذکر ما ورد من التمسید فی النظم، الحدیث: ۷۳۶۳، ج ۶، ص ۴۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ مظلوم کافر ہو یا مسلمان فاسق ہو یا پرہیزگار، بددعا خواہ زبان سے ہو یا دل سے خواہ آنکھوں کے آنسوؤں سے ہو صبر کا گھونٹ پی جائے سے ان سب سے ہی بچو۔

۲۔ یعنی مظلوم جو رب سے فریاد کرتا ہے تو اپنا حق مانگتا ہے۔ رب تعالیٰ کے ہاں ظلم نہیں وہ عادل بادشاہ ہے ہر حق والے کو اس کا سہ



حق دلواتا ہے خواہ جلدی یا دیر سے، دوسرے کا حق سخت ہڈی ہے کہ اگر نکل لی جاوے تو پیٹ پھر ڈالتی ہے۔ شیخ سعدی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں شعر

مزد بردن استخوان درشت لے شکم بد روچوں بگیرد اندر ناف
بہت دفعہ ہماری دعائیں یا بزرگوں کی ہمارے لیے دعائیں اس لیے قبول نہیں ہوتی کہ ہم نے لوگوں کے حق، رے یا دبائے ہوئے ہیں۔
کی یہ دعائیں پیچھے پڑی ہوتی ہیں۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۵۵)

غصہ اور تکبر کا بیان

احادیث

حدیث ۱: ایک شخص نے عرض کی، مجھے وصیت کیجیے۔ فرمایا: غصہ نہ کرو۔ اس نے بار بار وہی سوال کیا، جواب یہی ملا کہ غصہ نہ کرو۔ (1)

حدیث ۲: قوی وہ نہیں جو پہلوان ہو دوسرے کو پچھاڑ دے، بلکہ قوی وہ ہے جو غصہ کے وقت اپنے کو قابو میں رکھے۔ (2)

حدیث ۳: اللہ تعالیٰ کی خوشنودی کے لیے بندہ نے غصہ کا گھونٹ پیا، اس سے بڑھ کر اللہ (عزوجل) کے نزدیک کوئی گھونٹ نہیں۔ (3)

حدیث ۴: قرآن مجید کی آیت ہے:

(1) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب الخذر من الغضب، الحدیث: ۶۱۱۶، ج ۴، ص ۱۳۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے شاید یہ سائل غصہ بہت کرتا ہوگا حضور صلی اللہ علیہ وسلم حکیم مطلق ہیں ہر شخص کو وہی دوا بتاتے ہیں جو اس کے مائق ہیں۔ نفسانی غضب و غصہ شیطانی اثر ہے اس میں انسان عقل کھو بیٹھتا ہے، غصہ کی حالت میں اس سے باطل کام و کام سرزد ہونے لگتے ہیں۔ غصہ کا علاج اعوذ باللہ پڑھنا ہے یا وضو کر لینا یا یہ خیال کر لینا کہ اللہ تعالیٰ مجھ پر قادر ہے۔ روحانی غضب عبادت ہے "تَرْجِعْ مُؤْسِیَ اِلٰی قَوْمِهِ غَضَبٌ اَرِشًا" یا جیسے "غَضِبَ اللّٰهُ عَلَیْهِ"۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۲۵)

(2) المرجع السابق، الحدیث: ۶۱۱۴، ج ۴، ص ۱۳۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے کیونکہ یہ جسمانی پہلوانی فانی ہے اس کا اعتبار نہیں دو دن کے بخار میں پہلوانی ختم ہو جاتی ہے۔

۲۔ کیونکہ غصہ نفس کی طرف سے ہوتا ہے اور نفس ہمارا بدترین دشمن ہے، اس کا مقابلہ کرنا، اسے پچھاڑ دینا بڑی بہادری کا کام ہے، نیز نفس قوت روحانی سے مغلوب ہوتا ہے اور آدمی قوت جسمانی سے پچھاڑا جاتا ہے، قوت روحانی قوت جسمانی سے اعلیٰ و افضل ہے ہذا اپنے نفس پر قابو پانے والے بڑا بہادر پہلوان ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۲۶)

(3) مسند امام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن عمر بن الخطاب، الحدیث: ۶۱۲۲، ج ۲، ص ۴۸۲۔

(ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ) (۲۴) (۴)

اس کے ساتھ دفع کر جو احسن ہے پھر وہ شخص کہ تجھ میں اور اس میں عداوت ہے، ایسا ہو جائے گا گویا وہ خالص

دوست ہے۔
اس کی تفسیر میں حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما فرماتے ہیں کہ غصہ کے وقت صبر کرے اور دوسرا اس کے ساتھ برائی کرے تو یہ معاف کر دے، جب ایسا کریں گے اللہ (عزوجل) ان کو محفوظ رکھے گا اور ان کا دشمن جھک جائے گا گویا وہ خالص دوست قریب ہے۔ (۵)
حدیث ۵: غصہ ایمان کو ایسا خراب کرتا ہے، جس طرح ایلو اشہد کو خراب کر دیتا ہے۔ (۶)

حکیم امت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جو شخص مجبوری کی وجہ سے نہیں بلکہ اللہ تعالیٰ کی رضا جوئی کے لیے اپنا غصہ پی لے اور قادر ہونے کے باوجود غصہ جاری نہ کرے وہ اللہ کے نزدیک بڑے درجے والا ہے۔ غصہ پینا ہے تو کڑوا مگر اس کا پھل بہت میٹھا ہے۔ غصہ کو گھونٹ فرمایا کیونکہ جیسے کڑوی چیز بمشکل تمام گھونٹ گھونٹ کر کے پی جاتی ہے ایسے ہی غصہ پینا مشکل ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۳)

(۴) پ ۲۴، حم السجدة ۳۴۔

(۵) لدر المکور فی تفسیر الماثور، ج ۷، ص ۳۲۷۔

حکیم امت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اس آیت کریمہ میں احسن سے مراد صبر کرنا ہے، چونکہ صبر کرنا بدلہ لینے سے اچھا ہے اس لیے اسے احسن فرمایا گیا، نیز لوگوں کی برائی کو معاف کر دینا سزا دینے سے افضل ہے اس لیے اسے بھی احسن کہا گیا مگر یہ اچھائی اپنے ذاتی معاملات کے متعلق ہے۔ دینی قومی کلی جرم کرنے والوں کو ہرگز معافی نہ دی جاوے، انہیں ضرور سزا دی جائے لہذا یہ حدیث اس حدیث کے خلاف نہیں کہ حضورؐ نے چور کو معاف نہ فرمایا۔

۲۔ یعنی ایسی معافی سے اللہ تعالیٰ اسے اس کے احباب کو لوگوں کے شر سے بچائے گا اور اس کی عزت بڑھائے گا۔ دیکھو یوسف علیہ السلام نے اپنے مجرم بھائیوں کو، حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے مجرموں کو معافیاں دیں تو اب تک اس کی دھوم مچی ہوئی ہے اور وہ لوگ ان کے تابعدار بن گئے، اخلاقی معافی اعلیٰ چیز ہے مجبوری کی معافی بری ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۳۸)

(۶) شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی ترک الغضب، الحدیث: ۸۲۹۳، ج ۶، ص ۳۱۱۔

حکیم امت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کا نام بہزاد بن حکیم ابن معاویہ قشیری ہے، آپ تابعی ہیں، ثقہ ہیں۔

۲۔ غصہ اکثر کمال ایمان کو بگاڑ دیتا ہے مگر کبھی اصل ایمان کا ہی خاتمہ کر دیتا ہے لہذا یہ فرمان عالی نہایت درست ہے اس میں

حدیث ۶: حضرت موسیٰ علیہ السلام نے عرض کی، اے رب اکون بندہ تیرے نزدیک عزت والا ہے؟ فرمایا: وہ جو باوجود قدرت معاف کر دے۔ (7)

دلوں احتمال ہیں۔

۳۔ ایلو ایک کڑوے درخت کا جما ہوا رس ہے، سخت کڑوا ہوتا ہے، اگر شہد میں مل جادے تو تیز مٹھاس اور تیز کڑواہٹ مل کر سیاہ ترین مزہ پیدا ہوتا ہے کہ اس کا چکھنا مشکل ہو جاتا ہے، نیز یہ دلوں مل کر سخت نقصان دہ ہو جاتے ہیں، اکیلا شہد بھی مفید ہے اور اکیلا ایلو بھی فائدہ مند مگر مل کر کچھ مفید نہیں بلکہ مضر ہے جیسے شہد و کھی ملا کر کھانے سے برص کا مرض پیدا ہونے کا اندیشہ ہوتا ہے، یوں ہی مچھلی اور دودھ، یعنی مؤمن کو ناجائز غصہ بڑھ جائے تو اس کا ایمان برباد ہو جانے کا اندیشہ ہے یا کمال ایمان جاتا رہتا ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۳۹)

(7) المرجع السابق، الحدیث: ۸۳۲، ج ۶، ص ۳۱۹.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے جو قدرت پا کر بخش دے وہ سنیت الہیہ پر عمل کرتا ہے، اللہ تعالیٰ قادر ہے مگر غفور رحیم ہے، ہمارے گناہ بخشا رہتا ہے اور بخشے گا۔ نہیں رہے کہ گناہ قابل بخشش ہیں نہ کہ غداری کہ غداری قابل بخشش نہیں اس لیے رب تعالیٰ انہیں نہ بخشے گا جو کفر پر مرجائیں، یوں ہی ہم اپنے مجرموں کو ضرور بخشیں مگر دین، قوم، ملک کے دشمن کو ہرگز نہ بخشیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۳۱)

غصہ پینے اور عفو و درگزر کے فضائل

(۱) اللہ عزوجل کا فرمان عالیشان ہے:

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِلِيْنَ عَنِ النَّاسِ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳۴﴾

ترجمہ کنزالایمان: اور غصہ پینے والے اور لوگوں سے درگزر کرنے والے اور نیک لوگ اللہ کے محبوب ہیں۔ (پ 4، آل عمران: 134)

(2) خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِيْنَ ﴿۱۹۹﴾

ترجمہ کنزالایمان: اے محبوب معاف کرنا اختیار کرو اور بھلائی کا حکم دو اور جاہلوں سے منہ پھیر لو۔ (پ 9، آل عراف: 199)

(3) وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ادْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ ﴿۳۴﴾ وَمَا يُلْقِهَا اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَمَا يُلْقِهَا اِلَّا ذُوْ حِظٍّ عَظِيْمٍ ﴿۳۵﴾

ترجمہ کنزالایمان: اور نیکی اور بدی برابر نہ ہو جائیں گی اے سننے والے برائی کو بھلائی سے ٹال جیسی وہ کہ تجھ میں اور اس میں دشمنی تھی یہاں ہو جائے گا جیب کہ گہرا دوست اور یہ دولت نہیں ملتی مگر صابروں کو اور اسے نہیں پاتا مگر بڑے نصیب والا۔ (پ 24، جم اسجدہ: 34-35)

(4) وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ عَلٰٓفَرَانِ ذٰلِكَ لَيَنْعَزِمِ الْاُمُوْر ﴿۴۳﴾

ترجمہ کنزالایمان: اور بے شک جس نے صبر کیا اور بخش دیا تو یہ ضرور ہمت کے کام ہیں۔ (پ 25، الشوری: 43)

حدیث ۷: جو شخص اپنی زبان کو محفوظ رکھے گا، اللہ (عزوجل) اس کی پردہ پوشی فرمائے گا اور جو اپنے غصہ کو روکے گا، قیامت کے دن اللہ تعالیٰ اپنا عذاب اس سے روک دے گا اور جو اللہ (عزوجل) سے عذر کریگا، اللہ (عزوجل) اس کے عذر کو قبول فرمائے گا۔ (8)

حدیث ۸: غصہ شیطان کی طرف سے ہے اور شیطان آگ سے پیدا ہوتا ہے اور آگ پانی ہی سے بجھائی جاتی ہے، لہذا جب کسی کو غصہ آجائے تو وضو کر لے۔ (9)

(5) فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيلَ ﴿85﴾

ترجمہ کنزالایمان: تو تم اچھی طرح درگزر کرو۔ (پ 14، الحجر: 85)

(6) وَلْيَغْفُوا وَلْيَصْفَحُوا أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ

ترجمہ کنزالایمان: اور چاہے کہ معاف کریں اور درگزر کریں کیا تم اسے دوست نہیں رکھتے کہ اللہ تمہاری بخشش کرے۔

(پ 18، النور: 22)

(7) وَاصْفِظْ مَا بَيْنَ يَدَيْكَ لِلْغَنِيِّ مِنَ الْعَمَلِ ﴿88﴾

ترجمہ کنزالایمان: اور مسلمانوں کو اپنے رحمت کے پردوں میں لے لو۔ (پ 14، الحجر: 88)

(8) شعب الایمان، باب فی حسن اقلق، فصل فی ترک الغضب، الحدیث: ۸۳۱۱، ج ۶، ص ۳۱۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس فرمان کے دو مطلب ہو سکتے ہیں: ایک یہ کہ جو اپنی زبان سے لوگوں کے عیوب بیان نہ کرے اور دلوں کے عیوب چھپا دے تو اللہ تعالیٰ اس کے عیوب دنیا و آخرت میں چھپا دے گا۔ دوسرے یہ کہ اکثر خاموش رہے تو اس کے عیوب چھپے رہیں گے، عیب و اہل زبان سے ہی ظاہر ہوتے ہیں۔ شعر

عیب و ہنرش نہفتہ باشد

تا مرد سخن نہ گفتہ باشد

۲۔ یعنی اس پر غضب نہ فرمائے گا جب تا عمل دیا بدلے۔

۳۔ اس فرمان عالی کے دو مطلب ہو سکتے ہیں: ایک یہ کہ جو اللہ کے لیے دوسرے مجرموں کے عذر قبول کر کے انہیں معافی دے دے گا

رب تعالیٰ اس کی توبہ قبول فرمائے گا اس کو معافی دے گا۔ دوسرے یہ کہ بڑے سے بڑا مجرم اگر توبہ کرے تو بخش دیا جائے گا۔

(مرآۃ السانجیح شرح مشکوٰۃ الصانع، ج ۶، ص ۹۳۲)

(9) سنن أبی داود، کتاب الادب، باب ما یقال عند الغضب، الحدیث: ۴۷۸۳، ج ۴، ص ۳۲۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہاں غصہ سے مراد شیطانی نفسانی غصہ ہے، ایمانی رحمانی غصہ مراد نہیں۔ مسلمان غازی کو کافروں پر جو غصہ آوے وہ غصہ ہے۔

حدیث ۹: جب کسی کو غصہ آئے اور وہ کھڑا ہو تو بیٹھ جائے، اگر غصہ چلا جائے تو بہاؤ نہ لیٹ جائے۔ (10)

حدیث ۱۰: بعض لوگوں کو غصہ جلد آ جاتا ہے اور جلد جاتا رہتا ہے، ایک کے بدلے میں دوسرا ہے اور بعض کو دیر میں آتا ہے اور دیر میں جاتا ہے یہاں بھی ایک کے بدلے میں دوسرا ہے یعنی ایک بات اچھی ہے اور ایک بری ادلا بدلا ہو گیا اور تم میں بہتر وہ ہیں کہ دیر میں انھیں غصہ آئے اور جلد چلا جائے اور بدتر وہ ہیں جنہیں جلد آئے اور دیر میں جائے۔ غصہ سے بچو کہ وہ آدمی کے دل پر ایک انگارہ ہے، دیکھتے نہیں ہو کہ گلے کی رگیں پھول جاتی ہیں اور آنکھیں سرخ ہو جاتی ہیں جو شخص غصہ محسوس کرے لیٹ جائے اور زمین سے چپٹ جائے۔ (11)

حدیث ۱۱: میں تم کو جنت والوں کی خبر نہ دوں، وہ ضعیف ہیں جن کو لوگ ضعیف و حقیر جانتے ہیں۔ (مگر ہے یہ

عبارت ہے جس پر ثواب ہے مگر اکثر شیطانی اور روحانی غصہ میں فرق کرنا مشکل ہوتا ہے، ہم غلطی سے شیطانی غصہ کو روحانی سمجھ لیتے ہیں۔

۳۔ شیطان کی پیدائش کے متعلق قرآن کریم میں خود اس مردود کا قول موجود ہے "خَلَقْتَنِي مِنْ نَّارٍ وَخَلَقْتَ مِنْ طِينٍ"۔ اس آیت و حدیث سے معلوم ہوا کہ ابلیس جن ہے فرشتہ نہیں کہ فرشتوں کی پیدائش نور سے ہے ابلیس کی خلقت میں آگ کا غلبہ ہے جیسے انسان کی خلقت میں مٹی خاک کا غلبہ ہے اس لیے اسے ناری نہیں خاکی کہا جاتا ہے۔

۴۔ یعنی جیسے حسی آگ حسی پانی سے بجھائی جاتی ہے ایسے ہی باطنی آگ باطنی پانی سے بجھائی جاوے۔ وضو دونوں سے مرکب ہے کہ اس میں حسی پانی کا استعمال ہے اور یہ جسم و دل اور روح کی پاکی کا ذریعہ ہے اسی لیے غصہ کی آگ وضو سے بجھتی ہے یہ ماہ نبوی طب کا نسخہ مجرب ہے جس سے یونانی طبیب بے خبر ہیں۔ شعر

چند خوانی حکمت یونانیاں حکمت ایمانیاں را ہم بخواں

حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے غصہ کے اور بھی علاج بیان فرمائے ہیں مثلاً لاحول شریف پڑھنا، اعوذ باللہ پڑھنا، مثلاً قرآن کریم فرماتا ہے:

"وَإِذَا يَنْزَعُ عَنكَ الشَّيْطَانُ نَزْعًا فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ" یعنی جب تمہیں شیطان کا اثر پہنچے تو اعوذ باللہ پڑھو یہ غصہ بھی شیطانی اثر ہے۔ یہ بہر حال ماحول اور اعوذ قوی علاج ہے اور وضو عملی علاج ہے، ٹھنڈا پانی پی لینا بھی غصہ کا علاج ہے۔ (مرقات و اشعة المصباح)

(مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۳۴)

(10) المسند للإمام أحمد بن حنبل، حدیث ابی ذر الغفاری، الحدیث: ۶۰۶، ج ۸، ص ۸۰-۸۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ غصہ کا دوسرا عملی علاج ہے یعنی اپنا حال بدل دینا کہ کھڑا ہو تو بیٹھ جاوے، اگر اس سے بھی غصہ نہ جاوے تو لیٹ جائے ان شاء اللہ تعالیٰ غصہ جاتا رہے گا۔ لیٹ جانے میں اپنے کو مٹی میں ملا دینا ہے، مٹی میں تواضع ہے ان شاء اللہ تعالیٰ عجز و انکسار آ جاوے گا، نیز کھڑا آدمی جلد کچھ حرکت کر گزرتا ہے بیٹھا ہوا یا لیٹا ہوا اس قدر جلدی کوئی حرکت غیر نہیں کر سکتا۔ (مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۳۵)

(11) مشکوٰۃ المصابیح کتاب الآداب، باب الامر بالمعروف، الحدیث: ۵۱۳۵، ج ۳، ص ۱۰۰۔

ک) اگر اللہ (عزوجل) پر قسم کھا بیٹھے تو اللہ (عزوجل) اس کو سچا کر دے اور کیا جہنم والوں کی خبر نہ دوں وہ سخت گونجتا ہو
تکبر کرنے والے ہیں۔ (12)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۳۔ سربلغ الی جس کا غصہ جلدی اتر جائے۔

۴۔ بطنی الی جس کا غصہ دیر سے اترے، بطور تاخیر کو کہتے ہیں۔

۵۔ اوداج و دج کی جمع ہے رگیں اشتقاق پھولنا۔

۶۔ حیطان حاطہ کی جمع دیواریں باغ کو بھی حاطہ کہتے ہیں اس طویل حدیث میں کئی مسائل بیان ہوئے ہیں جن کی تفصیل یوں ہے۔ (۱) رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے خطبہ میں قیامت تک پیش آنے والے مسائل سے متعلق مکمل احکام ذکر فرمائے جو آپ کا مغزہ ہے ورنہ اتنے مختصر وقت میں اور پھر مستقبل کے واقعات کا بیان ممکن نہیں۔ (۲) دنیا میٹھی اور سرسبز ہے ہر شخص اسے حاصل کرنا چاہتا ہے لیکن یہ درکھنا چاہیے کہ یہ ایک آزمائش ہوتی ہے کہ آیا دولت و اقتدار حاصل ہونے کے بعد انسان احکام خداوندی سے روگردانی کرتا ہے یا ان کی تعمیل لہذا اس آزمائش میں ناکامی کے خوف سے کوشش کی جائے کہ دنیا اور عورتوں کے فتنوں سے دور رہیں۔ (۳) دنیا میں جو بھی شخص دھوکہ بازی اور خیانت کرے گا قیامت کے دن سب کے سامنے ذلیل و رسوا ہوگا، حکمرانوں اور بڑے بڑے افسروں کو خاص طور پر اس بات کا خیال رکھنا چاہیے۔ (۴) کلمہ حق کہنے میں کسی کا خوف آڑے نہیں آنا چاہیے ورنہ معاشرتی نظام تباہ و برباد ہو جائے گا۔ (۵) خاتمے کے بارے میں فکر مند رہنا چاہیے اور ہر وقت حسن خاتمہ کی دعا مانگتے رہنا چاہیے۔ (۶) دنیا میں وہی انسان سب سے اچھا ہے جس کو غصہ دیر سے آئے اور جلد چلا جائے اور وہ شخص سب سے برا ہے جسے جلدی غصہ آئے اور دیر سے جائے۔ (۷) غصے سے اجتناب کرنا چاہیے کیونکہ یہ ایک ایسی آگ ہے جو سب کچھ جلا کر راکھ کر دے گی۔ (۸) قرض کے سلسلے میں سرکارِ دو عالم صلی اللہ علیہ وسلم نے اس شخص کو سب سے اچھا قرار دیا جو قرض دے تو اچھی طرح واپس مانگے اور قرض لے تو اچھے طریقے سے ادا کرے، جب کہ وہ شخص جو طلب میں بدکلی کا مظاہرہ کرے اور کسی کا قرض دینا ہو تو اچھے طریقے سے ادا نہ کرے وہ سب سے برا آدمی ہے۔

(۹) نبی، رزم صلی اللہ علیہ وسلم نے عمل کی ترغیب دیتے ہوئے فرمایا جس طرح اب سورج کے غروب ہونے میں تھوڑا سا وقت باقی ہے اسی

طرح قیامت بھی بالکل قریب ہے لہذا اس کے لیے تیار رہنا چاہیے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۶۶)

(12) صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب (عُثِّلِيْ بِمَعْنٰی ذٰلِكَ زَنْبِيْجًا)، الحدیث: ۴۹۱۸، ج ۳، ص ۳۶۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اسے یہاں ضعیف کے معنی یہ ہیں کہ اس میں تکبر جبر ظلم نہ ہو، یہ مطلب نہیں کہ اس میں طاقت و قوت نہ ہو، اللہ تعالیٰ کو قوی اور طاقتور مسلمان پسند ہیں یعنی اس میں طاقت تو ہو مگر وہ اپنی طاقت مسلمانوں پر استعمال نہ کرے اور متضعف کے معنی یہ ہیں کہ مسلمانوں کو اس پر امن ہو کہ یہ کسی کو نقصان نہیں پہنچاتا، اس کے شر سے مسلمان اپنے کو محفوظ سمجھیں، یہ مطلب نہیں کہ مسلمان اسے ذلیل و خوار سمجھیں، مسلمان

حدیث ۱۲: جس کسی کے دل میں رائی برابر ایمان ہوگا وہ جہنم میں نہیں جائے گا اور جس کسی کے دل میں رائی برابر تکبر ہوگا وہ جنت میں نہیں جائے گا۔ (13) دونوں جملوں کی وہی تاویل ہے جو اس مقام میں مشہور ہے۔

حدیث ۱۳: تین شخص ہیں جن سے قیامت کے دن نہ تو اللہ تعالیٰ کلام کریگا، نہ ان کو پاک کریگا، نہ ان کی طرف

بڑی عزت والا ہوتا ہے۔ اس کی تائید قرآن کریم کی اس آیت سے ہوتی ہے "أَذِلَّةٌ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ"۔

۲۔ مثلاً اگر وہ کہہ دے کہ قسم خدا کی تیرے بیٹا ہوگا یا قسم خدا کی آج بارش آدے گی یا قسم خدا کی اس اسلامی لشکر کو فتح ہوگی تو اللہ تعالیٰ اس کی قسم ضرور پوری فرما دے، ضرور اس کے بیٹا ہو، ضرور آج بارش آدے، ضرور لشکر اسلام کو فتح ہو۔ خیال رہے کہ پہلے تو بندہ اللہ تعالیٰ کی رضا چاہتا ہے پھر ایک وقت وہ آتا ہے کہ اللہ تعالیٰ بندے کی رضا چاہتا ہے۔ حضرت صدیق اکبر کے متعلق فرمایا: "وَلَسَوْفَ يَرْضَى" اور اپنے محبوب صلی اللہ علیہ وسلم کے لیے فرمایا: "وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَى"۔ معلوم ہوا کہ بزرگوں سے اللہ کی نعمتیں مانگنا جائز ہے کہ ان کے منہ سے اچلی بات اللہ تعالیٰ پوری کرتا ہے۔

۳۔ محل کے بہت معنی ہیں: سخت دل، بد زبان، جھگڑالو، یوں ہی جواظ کے بہت معنی ہیں: موٹا، فربہ، بدکار، فاسق، بخیل جو اپنا مال چھپائے، دوسروں کے مال پر نظر رکھے۔ (مرقات) یہاں سارے معنی درست ہیں۔

۴۔ زہیم بنا ہے زہم سے یعنی کان کٹی ہوئی جس کا کان کٹ کر ٹک رہا ہو۔ اصطلاح میں زہیم حرامی کو کہتے ہیں کہ یہ شخص بھی دوسری قوم سے ملحق ہوتا ہے جیسے ولید بن مغیرہ، یہاں زہیم بمعنی شریر دہیم ہے جس کے شر سے مسلمان پریشان ہوں، اکثر دیکھا گیا ہے کہ حرامی بچے بڑے شریر و خبیث ہوتے ہیں۔ (مرقاۃ) بعض لوگ کہتے ہیں کہ حرامی جنت میں نہیں جاوے گا اس کی کوئی اصل نہیں، ہاں جو حرامیوں کے سے کام کرے وہ جنت میں اذلاً نہ جاوے گا۔ (ازمرقات) علماء فرماتے ہیں کہ حرامیوں کی نسل میں کوئی دلی نہیں ہوتا۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۲)

(13) صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکفر و بیانہ، الحدیث: ۱۳۸۔ (۹۱)، ص ۶۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جس کے دل میں رائی برابر نور ایمانی ہو وہ ہمیشہ رہنے کے لیے دوزخ میں نہیں جاوے گا لہذا حدیث واضح ہے۔ ایمان سے مراد نتیجہ ایمان ہے اور آگ میں جانے سے مراد عینگی کے لیے جانا ہے، ایمان میں زیادتی کی ناممکن ہے نور ایمان میں ممکن ہے۔

۲۔ اس فرمان عالی کے چند معنی ہو سکتے ہیں: ایک یہ کہ دنیا میں جس کے دل میں رائی برابر کفر ہو وہ جنت میں ہرگز نہ جاوے گا۔ کبر سے مراد اللہ و رسول کے سامنے غرور کرنا یہ کفر ہے۔ دوسرے یہ کہ دنیا میں جس کے دل میں رائی کے برابر غرور ہوگا وہ جنت میں اولاً نہ جائے گا۔ تیسرے یہ کہ جس کے دل میں رائی برابر غرور ہوگا وہ غرور لے کر جنت میں نہ جائے گا پہلے رب تعالیٰ اس کے دل سے تکبر دور کر دے گا پھر اسے جنت میں داخل فرمائے گا، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَلٍ إِخْوَانًا عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ"۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۲۸)

نظر فرمائے گا اور ان کے لیے دردناک عذاب ہے، بوڑھا زنا کار، بادشاہ ۲ کذاب اور محتاج ۳ تکبر۔ (14)
حدیث ۱۴: اللہ تعالیٰ فرماتا ہے کہ کبریا اور عظمت میری صفاتیں ہیں، جو شخص ان میں سے کسی ایک میں مجھ سے
منازعت کریگا، اسے جہنم میں ڈال دوں گا۔ (15)

(14) المرجع السابق، باب بیان غلط تحریم اسباب الازار والحق بالعطیۃ... إلخ، الحدیث: ۱۷۲۔ (۱۰۷)، ص ۶۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی ان تین قسم کے لوگوں سے کرم و محبت کا کلام نہ کرے گا غضب و قہر کا کلام کرے گا بلکہ احادیث واضح ہے یا یہ مطلب ہے کہ قیامت کے
اول وقت جب عدل الہی کا ظہور ہوگا تب ان سے کلام نہ کرے گا یا مطلقاً بلا واسطہ کلام نہ کرے گا بواسطہ فرشتوں کے کرے گا۔ (مرقات)
۲۔ یعنی ان کے گناہ معاف نہ کرے گا یا ان کی صفائی لوگوں پر ظاہر نہ کرے گا، تزکیہ کے یہ دونوں معنی ہی آتے ہیں۔
۳۔ یعنی نظر رحمت نہ کرے گا نظر قہر کرے گا۔

۴۔ اس لیے کہ زنا اگرچہ بہر حال برا ہے سخت گناہ ہے مگر بڑھا آدمی کرے تو بدترین گناہ ہے کہ اس کی شہوت قریبا ختم ہو چکی ہے وہ مظلوم
و مجبور نہیں جو ان آدمی کو یا معذور ہے۔ (مرقات)

۵۔ کیونکہ بعض لوگ مجبوراً جھوٹ بولتے ہیں، بعض لوگ حاکم کے ذریعہ بادشاہ کے خوف سے جھوٹ بول دیتے ہیں، بعض لوگ تنگدستی سے
تنگ آکر جھوٹ کے ذریعے روزی کماتے ہیں بادشاہ کو ان میں سے کوئی مجبوری نہیں وہ جھوٹ بولتا ہے تو بلا وجہ ہی بولتا ہے۔

۶۔ حکومت والوں مال والوں کے پاس غرور تکبر کے اسباب موجود ہیں۔ اگر فقیر غرور کرے تو محض دلی خواہش کی وجہ سے ہی کرے گا اس
لیے اسکا تکبر بدترین جرم ہے، بعض لوگ غریب ہوتے ہوئے معمولی نوکری معمولی کام نہیں کرتے زکوٰۃ و خیرات قبول نہیں کرتے، خود بھی
بھوکے رہتے ہیں اور اپنے بال بچوں کو بھی بھوکا مارتے ہیں وہ بھی اس وعید میں داخل ہیں، بعض لوگ بہت غریب ہوتے ہیں مگر ہنی لڑکیوں
لڑکوں کے لیے بڑے مالدار رشتے تلاش کرتے ہیں اس تلاش میں اولاد بوڑھی ہو جاتی ہے مگر شادی نہیں کرتے جس کے نتیجے بہت برے
ظاہر ہوتے ہیں یہ سب اس فرمان عالی میں داخل ہیں۔ درود ہو اس حکیم مطلق محبوب کبریا صلی اللہ علیہ وسلم پر جو ہم پر ہمارے ماں باپ بلکہ
خود ہم سے زیادہ مہربان ہیں۔ اللہ تعالیٰ ان کی تعلیم پر عمل کرنے کی توفیق عنایت فرمائے، اس ایک کلمہ میں کیسی ہدایتیں ہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۳۰)

(15) مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب الغضب والتکبر، الحدیث: ۵۱۱۰، ج ۳، ص ۹۲۔

دسنن ابی داود، کتاب اللباس، باب ما جاء فی الکبر، الحدیث: ۴۰۹۰، ج ۳، ص ۸۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۷۔ کبر سے مراد ذاتی بڑائی ہے اور عظمت سے مراد صفاتی بڑائی۔ چادر اور تہبند فرمانا ہم کو سمجھانے کے لیے ہے کہ جیسے ایک چادر ایک تہبند دو

آدمی نہیں پہن سکتے یوں ہی عظمت و کبریائی سوائے میرے دوسرے کے لیے نہیں ہو سکتی۔

حدیث ۱۵: آدمی اپنے کو (اپنے مرتبہ سے اونچے مرتبہ کی طرف) لے جاتا رہتا ہے یہاں تک کہ جبارین میں لکھ دیا جاتا ہے، پھر جو انھیں پہنچے گا اسے بھی پہنچے گا۔ (16)

حدیث ۱۶: متکبرین کا حشر قیامت کے دن چیونٹیوں کی برابر جسموں میں ہوگا اور ان کی صورتیں آدمیوں کی ہوں گی، ہر طرف سے ان پر ذلت چھائے ہوئے ہوگی اور ان کو کھینچ کر جہنم کے قید خانہ کی طرف لے جائیں گے جس کا نام بوس ہے، ان کے اوپر آگوں کی آگ ہوگی، جہنمیوں کا نچوڑ انھیں پلایا جائے گا جس کو طینۃ الخبال کہتے ہیں۔ (17)

۲۔ اس طرح کہ اپنی ذات یا اپنی صفات کو بڑا سمجھے گا میرا مقابلہ کرے گا گویا میرا شریک بننا چاہے گا۔ خدا کی پندہ

۳۔ دنیا میں فراق و ہجران کی آگ میں، آخرت میں دوزخ کی آگ میں متکبرین کی یہی سزا ہے۔

۴۔ اسے دوزخ میں ایسے پھینک دوں گا جیسے مراکتار وڑی کوڑے پر ذلت و حقارت کے ساتھ پھینکا جاتا ہے۔ خیال رہے کہ کبریائی عظمت سے اعلیٰ و افضل ہے اس لیے کبریائی کی چادر اور عظمت کو تہ بند فرمایا، چادر تہ بند سے افضل ہوتی ہے۔ تکبر یہ ہے کہ آدمی اپنے کو بڑا سمجھے، عظمت یہ ہے کہ لوگ اسے بڑا سمجھیں لہذا عظمت میں غیروں کے خیال کو دخل ہوا لہذا تکبر و کبریائی اعلیٰ ہے عظمت سے کہ کبریائی ذاتی ہے عظمت اضافی۔ (مرقات) خیال رہے کہ اللہ تعالیٰ کے مقبول بندوں کی عزت و عظمت رب تعالیٰ کا عطیہ ہے، یہ رب تعالیٰ کی نعمت عاحدہ ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۳۱)

(16) سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی الکبر، الحدیث: ۲۰۰۷، ج ۳، ص ۴۰۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اس کا نام متکبرین و جبارین کے دفتر میں لکھ دیا جاتا ہے۔ معلوم ہوا کہ رب کے دفتر الگ الگ ہیں۔ نیکوں کے صمد ہا دفتر بدوں کے ہزار ہا دفتر۔

۲۔ یعنی جو دنیاوی اور اخروی عذاب و ذلت و رسوائی، فرعون، ہامان، قارون کو پہنچی ہے یا پہنچے گی وہ اسے بھی ملے گی انہیں قیامت والے اپنے پاؤں تلے روندیں گے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۳۲)

(17) سنن الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب: الخ، الحدیث: ۲۵۰۰، ج ۳، ص ۴۲۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی ان کی شکل و صورت بھی حقیر، ان کی حالت بھی زار و خوار جیسے دنیا میں چیونٹیوں کی کوئی قدر و منزلت نہیں ایسے ہی آخرت میں انکی کوئی

منزلت نہ ہوگی، دنیا کی عزتیں وہاں ذلت بن جاویں گی، دنیاوی محبتیں وہاں عداوتوں میں تبدیل ہو جاویں گی، رب فرماتا ہے: "أَلَا يَخْلَعُ

يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوًّا إِلَّا الْمُتَّقِينَ"۔

۲۔ خیال رہے کہ تمام انسان قبروں سے بشکل انسانی انھیں گے، پھر محشر میں پہنچ کر بعض کی صورتیں مسخ ہو جائیں گی یہاں بھی ان لوگوں کا

چیونٹیوں کی شکل میں ہونا محشر میں پہنچ کر ہی ہوگا۔ (مرقات) دوزخ میں لوگوں کی صورتیں مختلف ہوں گی۔ چنانچہ بعض دوزخی کتوں کی

حدیث ۷۱: جو اللہ (عزوجل) کے لیے تواضع کرتا ہے اللہ (عزوجل) اس کو بلند کرتا ہے، وہ اپنے نفس میں چھوٹا مگر لوگوں کی نظروں میں بڑا ہے اور جو بڑائی کرتا ہے اللہ (عزوجل) اس کو پست کرتا ہے، وہ لوگوں کی نظر میں ذلیل ہے اور اپنے نفس میں بڑا ہے، وہ لوگوں کے نزدیک کتے یا سوزے بھی زیادہ حقیر ہے۔ (18)

شکل میں ہوں گے، بعض سوروں اور گدھوں کی شکل میں، نیز بعض جنتی دنیا میں کانے اور اندھے تھے مگر وہاں سب آنکھوں والے حسین ہوں گے۔ بوس بنا ہے بس سے یعنی یاس و ناامیدی کیونکہ وہاں سے نکلنے کی امید نہ ہوگی اس لیے اس مقام کا نام بوس ہے۔
۳۔ یعنی جیسے پانی میں ڈوبنے والا ہر طرف سے پانی میں گھرا ہوتا ہے ایسے ہی یہ لوگ آگ کے سمندر میں ڈوبے ہوں گے، ہر طرف سے آگ ہوگی اور اس آگ میں تمام مختلف آگوں کی گرمی جمع کر دی گئی ہوگی اسے آگوں کی آگ فرمایا گیا۔

۴۔ اس طرح کہ ان غصہ اور متکبرین کو جہنم کے نچلے طبقہ اسفل السالین میں رکھا جاوے گا جہاں تمام دوزخیوں کا خون پیپ کچ لہو بہ کر آتا رہے گا، انہیں وہ پلایا جائے گا، اس گندگی کا نام طیۃ الخبال ہے۔ خبال بمعنی فساد، طیۃ بمعنی بد بودار، نچڑ، یہ نہایت ہی گرم بہت بد بودار، گاڑھا گاڑھا ہوگا، سخت بد مزہ جسے دیکھ کر قے آوے، دل گھبرائے مگر پیاس و بھوک کے غلبہ سے کھانا پڑے گا۔ خدا کی پناہ!

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۳۳)

(18) شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی التواضع، الحدیث: ۸۱۴۰، ج ۶، ص ۷۷۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی آپ نے کسی خاص شخص سے معمولی طریقہ سے نہ کہا بلکہ بہت اہتمام کے ساتھ برسر منبر اعلان فرمایا۔
۲۔ یعنی ہر مسلمان اپنے بھائی مسلمان کے ساتھ نرم رہے، رب تعالیٰ مومنوں کی صفت یوں فرماتا ہے: "أَذِلَّةٌ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ"۔

۳۔ یہ قاعدہ بہت ہی مجرب ہے۔ جو کوئی اپنے کو رضا الہی کے لیے مسلمانوں کے لیے نرم کر دے، ان کے سامنے انکسار سے پیش آئے تو اللہ تعالیٰ لوگوں کے دلوں میں اس کی عزت پیدا فرمادیتا ہے اور اسے بڑی بلندی بخشتا ہے۔

۴۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک دعا تعلیم فرمائی ہے: اللھم اجعلنی فی نفسی صغیرا و فی اعین الناس کبیرا۔ الہی مجھے میری اپنی نگاہ میں چھوٹا، لوگوں کی نگاہ میں بڑا بنادے۔ حضرات اولیاء اللہ ہمیشہ اپنے کو عاجز و گنہگار سمجھتے اور لوگ ان کے آتوں پر پیشانیاں رگڑتے ہیں۔ شعر

خویشتر را عبدہ فرمودہ است

بہر درش گیتی جہیں فرمودہ است

حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ہمیشہ اپنے کو بندہ فرمایا، دنیا ان کے آستانے پر ماتھا ٹیکتی ہے آج حضور کے آستانہ کا غبار بھی قیمتی ہے۔
۵۔ جیسا کہ آج بھی دیکھا جا رہا ہے کہ بعض لوگ شخی کے مارے اڑے جاتے ہیں، لوگ انہیں گالیاں دیتے ہیں، انہیں برائی سے یاد کرتے ہیں، دیکھ لو! آپ کو بہت ہی اونچا سمجھتا ہے مگر دنیا اس پر لعنت و پھٹکار کر رہی ہے، یہ ہے اس فرمان عاں کا ظہور۔

حدیث ۱۸: تین چیزیں نجات دینے والی ہیں اور تین ہلاک کرنے والی ہیں:
 نجات والی چیزیں یہ ہیں: پوشیدہ ۱ اور ظاہر میں اللہ (عزوجل) سے تقویٰ، خوشی ۲ و ناخوشی میں حق بات بولنا،
 مالداری ۳ اور احتیاج کی حالت میں درمیانی چال چلنا۔
 ہلاک کرنے والی یہ ہیں: ۱ خواہش نفسانی کی پیروی کرنا اور ۲ بخل کی اطاعت اور ۳ اپنے نفس کے ساتھ گھمبند کرنا،
 یہ سب میں سخت ہے۔ (19)



۱۔ لوگوں کی نگاہ میں اس کی یہ ذلت اس کی دلیل ہے کہ وہ اللہ تعالیٰ کے ہاں بھی ذلیل ہے مومنوں کی نگاہ میں ذلت مردوریت کی دلیل ہے۔ خدا کی پناہ! (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۳۰)
 (19) شعب الایمان، باب فی معایجہ کل ذنب بالحبوب، فصل فی الطبع علی القلب، الحدیث: ۲۵۲، ج ۵، ص ۴۵۲۔
حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی نجات چھٹکارا اور سبب تین چیزیں ہیں۔

۲۔ یعنی لوگوں کے سامنے اور غلوں ہر حالت میں نیک کام کرے اور اللہ سے ڈرے، اللہ کا ذکر تمام نیکیوں کی جڑ ہے اللہ نصیب کرے۔

۳۔ یعنی ہر حالت میں سچ بولے، غصہ اور خوشی اسے حق گوئی سے باز نہ رکھے اور اپنا خرچ درمیانہ رکھے نہ بخل کرے نہ فضول خرچی۔ کمال ایک کمال ہے اور صحیح خرچ کرنا پچاس کمال، درمیانی چال ہمیشہ ہی مفید ہے۔

۴۔ کہ جو دل چاہے وہ کرے، جائز اور ناجائز کا خیال نہ کرے، اس کی باگ دوڑ نفس امارہ کے ہاتھ میں ہو، ظاہر ہے کہ ایب شخص ہلاک ہی ہوگا۔

۵۔ برا یا مال ناحق کھانا، اپنے ذمہ جو حقوق ہوں وہ ادا نہ کرنا، گناہ میں مشغول رہنا یہ سب بخل کی اطاعت ہی سے ہوتا ہے، بخل کا نتیجہ حرام ہے۔ (مرقات)

۶۔ یعنی کسی کی بات نہ ماننا خواہ کتنی اچھی ہو، اپنی بات ہی منوانا خواہ کتنی ہی بری ہو، اپنے کو کامل سمجھنا دوسروں کو ناقص جاننا یہ بھی تکبر کی ایک قسم ہے۔

۷۔ کیونکہ ہر عیب سے پاک ہونا ہر خوبی سے موصوف ہونا اللہ تعالیٰ کی صفت ہے، جو اپنے کو ایسا سمجھے وہ اپنے کو خدا کا ہمسر سمجھتا ہے، ہم سب عیب دار ہیں بے عیب ذات اللہ تعالیٰ کی ہے یا اس کی جسے بے عیب بنادے جیسے فرشتے یا حضرت انبیاء علیہم السلام یا بعض اولیائے کرام۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۳۰)

ہجر اور قطع تعلق کی ممانعت

احادیث

حدیث ۱: صحیح مسلم و بخاری میں ابو ایوب انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: آدمی کے لیے یہ حلال نہیں کہ اپنے بھائی کو تین دن سے زیادہ چھوڑ رکھے، کہ دونوں ملتے ہیں ایک ادھر مونہ پھیر لیتا ہے اور دوسرا ادھر مونہ پھیر لیتا ہے اور ان دونوں میں بہتر وہ ہے جو ابتداء سلام کرے۔ (1)

حدیث ۲: ابو داؤد نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ مسلم کے لیے یہ نہیں ہے کہ دوسرے مسلم کو تین دن سے زیادہ چھوڑ رکھے، جب اس سے ملاقات ہو تو تین مرتبہ سلام کر لے، اگر اس نے جواب نہیں دیا تو اس کا گناہ بھی اسی کے ذمہ ہے۔ (2)

(1) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب الهجرة، الحدیث: ۶۰۷۷، ج ۴، ص ۱۲۰.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہاں چھوڑنے سے مراد دنیاوی رنجشوں کی وجہ سے ترک تعلق کرنا ہے، چونکہ تین دن کے عرصہ میں نفس کا جوش ٹھنڈا پڑ جاتا ہے اس لیے تین دن کی قید لگائی گئی۔ بد مذہب بے دین سے دائمی بائیکاٹ کرنا یا تعلیم و تربیت کے لیے ترک تعلق کرنا زیادہ کا بھی جائز ہے۔ حضور نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت کعب ابن مالک، بلال ابن امیہ، مراد ابن لوی رضی اللہ عنہم اجمعین کا پچاس دن رکھا، یہ بائیکاٹ ہجرن نہ تھا بلکہ تعلیم تھی لہذا یہ حدیث حضرت کعب کی حدیث کے خلاف نہیں۔

۲۔ یعنی اگر دنیاوی معاملات میں دو مسلمان لڑ پڑیں پھر ملیں تو بہتر وہ ہوگا جو اس کی ابتداء کرے۔ یہاں کشیدگی دور کر دینے کی ہدایت ہے کسی خطرناک آدمی سے محتاط رہنا اس کے خلاف نہیں۔ تہا جر اور چیز ہے احتیاط دوسری چیز۔ ابتداء بالسلام کرنے وے کو اس لیے خیر فرمایا کہ وہ تواضع کرتا ہے اللہ کے لیے وہ ہی ہجران دور کرتا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۵۵)

(2) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فیمن ہجر اخاہ المسلم، الحدیث: ۴۹۱۳، ج ۴، ص ۳۶۴.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی بہتر تو یہ ہے کہ تین دن کے لیے بھی نہ چھوڑے لیکن تین دن کے بعد چھوڑے رکھنا تو گناہ ہے اس کی وہ تمام قیدی خیل میں رہیں جو پہلے بیان ہوئیں۔

۲۔ اگر پہلی بار میں جواب نہ دے تو دوبارہ کرے، اگر دوبارہ میں بھی جواب نہ دے تو تیسری بار کرے، اگر تیسری بار میں بھی ←

حدیث ۳: ابو داؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: مومن کے لیے یہ حلال نہیں کہ مومن کو تین دن سے زیادہ چھوڑ دے، اگر تین دن گزر گئے ملاقات کر لے اور سلام کرے اگر دوسرے نے سلام کا جواب دے دیا تو اجر میں دونوں شریک ہو گئے اور اگر جواب نہیں دیا تو گناہ اس کے ذمہ ہے اور یہ شخص چھوڑنے کے گناہ سے نکل گیا۔ (3)

حدیث ۴: ابو داؤد نے ابو خراش سلمی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ انھوں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو یہ فرماتے سنا کہ جو شخص اپنے بھائی کو سال بھر چھوڑ دے، تو یہ اس کے قتل کی مثل ہے۔ (4)

جواب نہ دے تو چوتھی بار نہ کرے کہ تین بار اس سلام کی حد ہے۔ یہ سلام مصالحت ہے نہ کہ سلام ملاقات کیونکہ ملاقات کا سلام ایک بار ہوتا ہے، سلام بہت قسم کا ہے اور اس کے الگ الگ احکام۔

۳۔ بائیمہ کی ضمیر میں دو احتمال ہیں یا تو یہ سلام کرنے والے کی طرف لوٹ رہی ہے یا اسے رد نہ کرنے والے کی طرف یعنی اگر تین سلاموں کا جواب نہ دیا تو تین دن تک غصہ رہنے کا گناہ جو دونوں کو ہوتا تھا اب دوسرے کا گناہ بھی اس پر پڑے گا یا اس چھوڑے رہنے کا گناہ اب صرف اس پر ہو گا وہ سلام کرنے والا گناہ سے بری ہو گیا یا جواب نہ دینے کا گناہ اس پر ہو گا کیونکہ سلام کرنا سنت ہے اور سلام کا جواب دینا فرض ہے۔ خیال رہے کہ ہر سلام کا جواب دینا فرض نہیں بلکہ مسلمان کے سلام تحیت کا جواب دینا فرض ہے، تحیت کے عدادہ دوسرے سلاموں کا جواب دینا فرض نہیں، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "وَإِذَا حُيِّنْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا"۔ اس آیت میں سلام علیکم نہ فرمایا بلکہ خیرتم ارشاد ہوا اسی حکمت کی بنا پر۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۶۱)

(3) المرجع السابق، الحدیث: ۴۹۱۴، ج ۴، ص ۳۶۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ زیادہ سے مراد یا تو ایک ساعت کی زیادتی ہے یا چوتھے دن کی زیادتی یعنی اگر چار دن چھوڑے رہا یا تین سے ایک ساعت زیادہ چھوڑا۔ (مرقات)

۲۔ یعنی ہجران کی سزا کا مستحق ہو گا، مسلمان بھائی سے عداوت دنیاوی آگ، حسد، بغض کینہ یہ سب مختلف قسم کی آگ ہیں، در آخرت میں اس کی سزا وہ بھی آگ ہی ہے رب چاہے تو بخش دے چاہے تو سزا دے دے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۶۲)

(4) المرجع السابق، الحدیث: ۴۹۱۵، ج ۴، ص ۳۶۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ان کا نام حدرد ابن حدرد سلمی ہے، قبیلہ بنی سلیم سے ہیں، آپ صحابی ہیں، آپ سے صرف یہ ہی ایک حدیث مروی ہے، کنیت ابو خراش ہے، آپ کے حالات معلوم نہ ہو سکے، صحابیت میں بڑی فضیلت ہے حالات معلوم ہوں یا نہ ہوں۔

۲۔ یعنی جیسے مسلمان کا ناحق قتل بڑا گناہ ہے ایسے ہی اسے ناحق سال بھر تک چھوڑے رہنا بڑا گناہ۔ خون بہانے میں جسم کو تکلیف ہے۔

تسویح سپہاں بمو بیعت (تشریح و ترجمہ)

حدیث ۵: امام ہمدانی نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: مسلمان کے لیے حلال نہیں کہ اپنے بھائی کو تین دن سے زیادہ چھوڑ دے، پھر جس نے ایسا کیا وہ مر گیا تو جہنم میں گیا۔ (5)



پہنچتی ہے اتنی دراز مدت تک چھوڑے رہنے سے اس کے دل کو ایذا پہنچتی ہے۔ سال کا ذکر اس لیے فرمایا کہ سال دراز مدت ہے جس میں اکثر مسافر اپنے گھر لوٹ آتے ہیں، اس میں ہر موسم ہوتا ہے، سردی گرمی بہار خزاں جن میں مختلف لوگوں کے مزاج پر اثر ہوتا ہے ایسا سخت دل ہے کہ کسی موسم میں اس کا دل نرم اور غصہ ٹھنڈا نہ ہوا، جو دل سال بھر تک صاف نہ ہوا آئندہ اس کے صاف ہونے کی امید نہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۶۳)

سلوک کرنے کا بیان

اللہ تعالیٰ فرماتا ہے:

(وَإِذَا أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ) (1)

(۱) پ، ا، البقرة ۸۳.

اس آیت کے تحت مفسر شکر مولا ناسید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ نے اپنی عبادت کا حکم فرمانے کے بعد والدین کے ساتھ بھلائی کرنے کا حکم دیا اس سے معلوم ہوتا ہے کہ والدین کی خدمت بہت ضروری ہے والدین کے ساتھ بھلائی کے یہ معنی ہے کہ ایسی کوئی بات نہ کہے اور ایسا کوئی کام نہ کرے جس سے انہیں ایذا ہو اور اپنے بدن و مال سے ان کی خدمت میں دریغ نہ کرے جب انہیں ضرورت ہو ان کے پاس حاضر رہے مسئلہ: اگر والدین اپنی خدمت کے لئے نوافل چھوڑنے کا حکم دیں تو چھوڑ دے ان کی خدمت لقل سے مقدم ہے۔ مسئلہ: واجبات والدین کے حکم سے ترک نہیں کیے جاسکتے والدین کے ساتھ احسان کے طریقے جو احادیث سے ثابت ہیں یہ ہیں کہ دل سے ان کے ساتھ محبت رکھے رفتار و گفتار میں نشست و برخاست میں ادب لازم جانے ان کی شان میں تعظیم کے لفظ کہے ان کو راضی کرنے کی سعی کرتا رہے اپنے نفس مال کو ان سے نہ بچائے ان کے مرنے کے بعد ان کی وصیتیں جاری کرے ان کے لئے فاتحہ صدقات تلاوت قرآن سے ایصال ثواب کرے اللہ تعالیٰ سے ان کی مغفرت کی دعا کرے، ہفتہ وار ان کی قبر کی زیارت کرے۔ (فتح العزیز) والدین کے ساتھ بھلائی کرنے میں یہ بھی داخل ہے کہ اگر وہ گناہوں کے عادی ہوں یا کسی بد مذہبی میں گرفتار ہوں تو ان کو بہ نری اصلاح و تقویٰ اور عقیدہ حقہ کی طرف لانے کی کوشش کرتا رہا۔ (خازن)

رشتہ داروں پر صدقہ کرنے کا ثواب

اللہ تعالیٰ ارشاد فرماتا ہے،

فَإِذَا الْقُرْآنُ عُقِيَ وَالْمُسْكِينُ وَابْنُ السَّبِيلِ ذَلِكَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾

ترجمہ کنز الایمان: تو رشتہ دار کو اس کا حق دے اور مسکین اور مسافر کو یہ بہتر ہے ان کے لئے جو اللہ کی رضا چاہتے ہیں اور انہی کا کام بنا۔

(پ 21، ا روم: 38)

اور فرماتا ہے:

وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَآلَيْكَ الْكُتُبِ وَالتَّيْمَنَ وَآتَى الْمَالَ عَلَى حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا

اور جب ہم نے بنی اسرائیل سے عہد لیا کہ اللہ (عزوجل) کے سوا کسی کو نہ پوجنا اور ماں باپ اور رشتہ والوں اور

غھنہوا وَالضَّيِّقِينَ فِي النَّاسِ وَالطَّكَّاءِ وَجِلَّتِ النَّاسِ أُولَئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَئِكَ لَهُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿177﴾

ترجمہ کنزالایمان: یہ اصل نیکی یہ کہ ایمان لائے اللہ اور قیامت اور فرشتوں اور کتاب اور پیغمبروں پر اور اللہ کی محبت میں اپنا عزیز مال دے رشتہ داروں اور یتیموں اور مسکینوں اور راہ گیر اور سانکوں کو اور گردنیں چھوڑانے میں اور نماز قائم رکھے اور زکوٰۃ دے اور اپنا قول پورا کرنے واسے جب عہد کریں اور صبر والے معصیت اور حلتی میں اور جہاد کے وقت، یہی ہیں جنہوں نے اپنی بات سچی کی اور یہی پرہیزگار ہیں۔ (پ 2، البقرة: 177)

سورہ بقرہ میں ہے:

قُلْ مَا أَنفَقْتُ مِنْ خَيْرٍ قَلِيلًا لِلَّذِينَ وَالْأَقْرَبِينَ وَالْيَتَامَى وَالْمَسْكِينِ وَالْإِنْسَانِ السَّيِّئِ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿215﴾

ترجمہ کنزالایمان: تم فرماؤ جو کچھ مال نیکی میں خرچ کرو تو وہ ماں باپ اور قریب کے رشتہ داروں اور یتیموں اور محتاجوں اور راہ گیر کے لئے ہے اور جو بھلائی کر دے شک اللہ اسے جانتا ہے۔ (پ 2، البقرة: 215)

اس بارے میں احادیث مقدسہ:

حضرت سیدنا عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ کی زوجہ حضرت سیدتنا زینب ثقیفہ رضی اللہ عنہا فرماتی ہیں کہ سرکار والا پھر، ہم بے کسوں کے مددگار، شفیع روز شمار، ود عالم کے مالک و مختار، حبیب پروردگار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، اے عورتو! صدقہ کیا کرو اگرچہ اپنے زیورات ہی سے کرو۔ تو میں عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ کے پاس گئی اور ان سے کہا، آپ ایک جگہ مست مخلص ہیں اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ہمیں صدقہ کرنے کا حکم دیا ہے، جائے اور آقا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے پوچھئے کہ اگر میں آپ پر صدقہ کروں تو کیا میری طرف سے صدقہ ادا ہو جائے گا ورنہ میں اسے آپ کے علاوہ کسی اور پر صدقہ کر دوں۔ تو سیدنا عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مجھ سے فرمایا تم خود ہی چلی جاؤ۔ لہذا میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی بارگاہ میں حاضری کے لئے روانہ ہوئی تو میں نے دیکھ کہ انصار کی ایک عورت بھی یہی سوال کرنے کے لئے در دولت پر حاضر ہے۔

ہم رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے مرعوب رہیں تھیں چنانچہ جب حضرت سیدنا بلال رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہماری طرف آئے تو ہم نے ان سے کہا، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں جا کر عرض کرو کہ دو عورتیں دروازے پر یہ سوال کرنے کے لئے کھڑی ہیں کہ اگر وہ اپنے شوہر اور اپنے زیر کفالت یتیموں پر صدقہ کریں تو کیا انکی طرف سے صدقہ ادا ہو جائے گا؟ اور اے بلال! حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو یہ نہ بتانا کہ ہم کون ہیں۔

تو حضرت سیدنا بلال رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہو کر یہ سوال کیا تو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے دریافت فرمایا، وہ عورتیں کون ہیں؟ حضرت بلال رضی اللہ عنہ نے عرض کیا، انصار کی ایک عورت اور

تیسوں اور مسکینوں کے ساتھ بھلائی کرنا اور نماز قائم کرنا اور زکاۃ دینا۔

رسید ہے۔ آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: کوئی مذہب؟ عرض کیا: عیسا بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی زوجہ۔ تو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: مان و افون کے لئے ڈگتا ہے، ایک رشتہ داری کا پورا پورا صدقہ کا۔

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فضل الصدقۃ، ج ۱، ص ۱۰۰۰، رقم ۵۰۱)

حضرت سیدنا ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ شہناوہ دیت قرقر قب وین، صاحب مصر پینہ، و عث لہ و سکت فیض مجتہد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: رشتہ دار پر کر کے جانے والے صدقہ کا ثواب دوگنا کر دیا جاتا ہے۔ (المجموع، رقم ۱۳۲، ج ۸، ص ۲۰۶)

حضرت سیدنا عثمان بن عفان رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ نور کے چکر، قنہ نبیوں کے نزدیک، دو جہاں کے پتھر، سلطان مکرور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، مسکین پر صدقہ کرنا ایک صدقہ ہے اور رشتہ دار پر صدقہ کرنے میں دو صدقے ہیں، صدقہ اور صدقہ رحمی۔

(لن خزیر، کتاب الزکاۃ، باب استجابات لہاء الم، ج ۱، رقم ۲۳۸۵، ج ۴، ص ۷۷)

حضرت سیدنا ام کلثوم بنت عقبہ رضی اللہ عنہا سے روایت ہے کہ حضور پاک، صاحب نولاک، سیاح افلاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: سب سے افضل صدقہ کینہ پرور رشتہ دار پر کیا جانے والا صدقہ ہے۔

(صحیح ابن خزیر، کتاب الزکاۃ، باب فضل الصدقۃ علی ذوالرحمہا، ج ۱، رقم ۲۳۸۶، ج ۴، ص ۷۸)

حضرت سیدنا حکیم بن حزام رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ایک شخص نے سیدنا ابراہیم، رستمہ لعلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے سوال کیا کہ سب سے افضل صدقہ کون سا ہے؟ فرمایا، جو کینہ پرور رشتہ دار پر کیا جائے۔

(المسند لابی احمد بن حنبل، مسند حکیم بن حزام، رقم ۱۵۳۲۰، ج ۵، ص ۲۲۸)

اہل خانہ پر خرچ کرنے کا ثواب

اللہ تعالیٰ ارشاد فرماتا ہے:

وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿۳۹﴾

ترجمہ کنزالایمان: اور جو چیز تم اللہ کی راہ میں خرچ کرو وہ اس کے بدلے اور دوسب سے بہتر رزق دینے والا۔

(پ ۲۲، سہا: ۳۹)

اور فرماتا ہے:

لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِنْ سَعَتِهِ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُتَّقِ اللَّهَ لَعَلَّهُ يُكَفِّ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا أَنْفَقَ سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ﴿۷﴾

ترجمہ کنزالایمان: مقدر والا اپنے مقدر کے قابل غصہ دے اور جس پر اس کا رزق تنگ کیا گیا وہ اس میں سے غصہ دے جو اسے اللہ نے دیا اللہ کسی جان پر بوجھ نہیں رکھتا مگر وہی قابل جتنا اسے دیا ہے قریب ہے اللہ دشواری کے بعد آسانی فرمادے گا۔ (پ ۲۸، المطابق: ۷)۔

اور فرماتا ہے:

اس بارے میں احادیث مبارکہ:

حضرت سیدنا عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ اللہ عزوجل کے محبوب، دانائے محبوب، منزہ عن النعوب صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم نے فرمایا، جب کوئی شخص ثواب کی نیت سے اپنے اہل خانہ پر خرچ کرتا ہے تو وہ اسکے لئے صدقہ ہوتا ہے۔

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، رقم ۱۰۰۲، ص ۵۰۲)

حضرت سیدنا بو ائمہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ نور کے پیکر، تمام نبیوں کے سرور، دو جہاں کے تاجور، سلطانِ نحر و بر صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم نے فرمایا، جو پاکدامنی چاہتے ہوئے اپنے آپ پر کچھ خرچ کرے تو یہ اس کے لئے صدقہ ہے اور جو اپنی بیوی، بچوں اور گھردالوں پر خرچ کرے تو یہ بھی صدقہ ہے۔ (مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب فی الرجل، رقم ۳۶۶۶، ج ۳، ص ۳۰۲)

حضرت سیدنا مغلہ ام بن مغلہ کی گریب رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ شہنشاہ خوش بخت، پیکرِ حسن و جمال، دافعِ رنج و غم، صاحبِ بخود و نوال، رسولِ بے مثال، بی بی آمنہ کے لال صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم نے فرمایا، جو کچھ تو خود کو کھلائے وہ تیرے لئے صدقہ ہے اور جو کچھ تو اپنی بیوی کو کھلائے وہ تیرے لئے صدقہ ہے اور جو کچھ تو اپنے خادم کو کھلائے وہ بھی تیرے لئے صدقہ ہے۔

(مسند امام احمد بن حنبل، رقم ۱۷۹۱، ج ۶، ص ۹۳)

حضرت سیدنا جابر رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ خاتمِ انبیاء، رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَیْہِ، شفیع المذنبین، امین الغریبین، سرانجِ اسالکین، محبوبِ ربِّ العالمین، جنابِ صادق و امین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم نے فرمایا، ہر نیکی صدقہ ہے اور بندہ جو کچھ اپنے گھردالوں پر خرچ کرتا ہے وہ صدقہ شمار ہوتا ہے اور جو کچھ بندہ اپنی عزت بچانے کے لئے خرچ کرتا ہے وہ اس کے لئے صدقہ شمار ہوتا ہے اور جو کچھ بندہ خرچ کرتا ہے اس کا بدلہ اللہ عزوجل کے ذمہ کرم پر ہے اور اللہ تعالیٰ ضامن ہے مگر جو وہ عمارت بنانے یا معصیت میں خرچ کرے۔

(المسند رک، کتاب البیوع، باب کل معروف صدقہ، رقم ۲۳۵۸، ج ۲، ص ۲۵۸)

ایک روایت میں ہے کہ بندہ جو کچھ اپنے آپ پر اور اپنے بچوں، اپنے گھردالوں اور رشتہ داروں پر خرچ کرتا ہے وہ اسکے لئے صدقہ شمار ہوتا ہے۔ (مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب فی نفقة الرجل، رقم ۳۶۶۲، ج ۳، ص ۳۰۱)

حضرت سیدنا عبد الحمید یعنی ابن الحسن حلالی علیہ الرحمۃ کہتے ہیں کہ میں نے ابنِ منکدر علیہ الرحمۃ سے پوچھا کہ اس بات کا کہ جو کچھ بندہ اپنی عزت بچانے کے لئے خرچ کرتا ہے کیا مطلب ہے؟ فرمایا اس سے مراد وہ مال ہے جو ایک متقی شخص اپنی عزت بچانے کے لئے کسی شاعر یا چرب زبان شخص کو دیتا ہے۔

حضرت سیدنا کعب بن عجرہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ ایک شخص تاجدارِ رسالت، شہنشاہِ نبوت، نجرانِ جود و سخاوت، پیکرِ عظمت و شرافت، محبوبِ ربِّ العزت، محسنِ انسانیت صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم کے قریب سے گزرا تو صحابہ کرام علیہم الرضوان نے اس کے پھر تیلے بدن کی مضبوطی اور چستی کو دیکھا تو عرض کیا، یا رسول اللہ! کاش! اس کا یہ حال اللہ عزوجل کی راہ میں ہوتا۔ تو آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم نے فرمایا، اگر یہ شخص اپنے چھوٹے بچوں کے لئے رزق کی تلاش میں نکلا ہے تو یہ اللہ عزوجل کی راہ میں ہے اور اگر یہ شخص اپنے بوزھے

(قُلْ مَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ خَيْرٍ فَلِلَّهِ الدِّينُ وَالْآقَرِبِينَ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا

والدین کے لئے رزق کی تلاش میں نکلا ہے تو بھی یہ اللہ عزوجل کی راہ میں ہے اور اگر یہ اپنی پاکدامنی کے لئے رزق کی تلاش میں نکلا ہے تو بھی یہ اللہ عزوجل کی راہ میں ہے اور اگر یہ دکھاوے اور تفاخر کے لئے نکلا ہے تو یہ شیطان کی راہ میں ہے۔

(الترغیب والترہیب، کتاب النکاح، باب الترغیب فی النفقة علی الزوجة، رقم ۱۰، ج ۳، ص ۳۲)

حضرت سیدنا سعد بن ابی وقاص رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ نور کے پیکر، تمام نبیوں کے نزدیک، دو جہاں کے تاجور، سلطانِ محمد بر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ان سے فرمایا، تو جو کچھ بھی اللہ عزوجل کی رضا چاہتے ہوئے خرچ کریگا تجھے اس کا ثواب دیا جائے گا یہاں تک کہ جو کچھ اپنی بیوی کے منہ میں ڈالے گا اس کا بھی ثواب دیا جائے گا۔

(صحیح البخاری، کتاب الرضی، باب قول المریض، الخ، رقم ۵۶۶۸، ج ۳، ص ۱۲)

حضرت سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ سرکارِ والاخبار، ہم بے کسوں کے مددگار، شفیعِ روزِ ثمار، دو عالم کے مالک و مختار، حبیبِ پروردگار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، وہ دینار جو تو اللہ عزوجل کی راہ میں خرچ کرے اور وہ دینار جو تو کسی غلام کو آزاد کرنے میں خرچ کرے اور وہ دینار جو تو کسی مسکین پر صدقہ کرنے میں خرچ کرے اور وہ دینار جو تو اپنے گھروالوں پر خرچ کرے ان میں سب سے زیادہ اجر والا دینار وہ ہے جو تو اپنے گھروالوں پر خرچ کرتا ہے۔

(صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب فضل النفقة علی العیال، رقم ۹۹۵، ص ۴۹۹)

حضرت سیدنا ثوبان رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ آقائے مظلوم، سرورِ معصوم، حسنِ اخلاق کے پیکر، نبیوں کے تاجور، محبوبِ رب اکبر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، سب سے افضل دینار جسے بندہ خرچ کرتا ہے وہ دینار ہے جسے وہ اپنے گھروالوں پر خرچ کرتا ہے اور وہ دینار ہے جسے وہ اللہ کی راہ میں اپنے جانور پر خرچ کرتا ہے اور وہ دینار ہے جسے اللہ کی راہ میں اپنے ساتھیوں پر خرچ کرتا ہے۔

(صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب فضل النفقة علی العیال، رقم ۹۹۴، ص ۴۹۹)

حضرت سیدنا جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ نبی مکرم، نورِ مجسم، رسولِ اکرم، شہنشاہِ بنی آدم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ بندے کے میزان میں سب سے پہلے اس کے اپنے گھروالوں پر خرچ کئے گئے مال کو رکھا جائے گا۔

(المعجم الاوسط، رقم ۶۱۳۵، ج ۴، ص ۳۲۹)

حضرت سیدنا عمرو بن اُمیہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں کہ حضرت سیدنا عثمان بن عفان یا عبدالرحمن بن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہما ایک ادنیٰ چادر کو خریدنے کے لئے بھاؤ طے کر رہے تھے کہ میرا وہاں سے گزر ہوا اور میں نے وہ چادر خرید کر اپنی بیوی خلیلہ بنت عبیدہ رضی اللہ عنہا کو اوڑھادی۔ جب حضرت سیدنا عثمان یا عبدالرحمن رضی اللہ عنہما کا وہاں سے گزر ہوا تو انہوں نے پوچھا کہ تم نے جو چادر خریدی تھی اس کا کیا ہو؟ میں نے کہا، اسے میں نے خلیلہ بنت عبیدہ رضی اللہ عنہا پر صدقہ کر دیا ہے۔ تو انہوں نے پوچھا، جو کچھ تم اپنے گھروالوں پر خرچ کرتے ہو کیا وہ صدقہ ہے؟ میں نے جواب دیا کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو اسی طرح فرماتے ہوئے سنا ہے۔ جب میری یہ بات —

تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿٢١٥﴾ (2)

تم فرماؤ! جو کچھ نیکی میں خرچ کرو تو وہ ماں باپ اور قریب کے رشتہ والوں اور یتیموں اور مسکینوں اور راہ گیر کے لیے ہو اور جو کچھ بھلائی کرو گے، بے شک اللہ (عزوجل) اس کو جانتا ہے۔

اور فرماتا ہے:

(وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا إِمَّا يَبُلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ﴿٢٢﴾) وَ اخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا ﴿٢٣﴾) (3)

اور تمہارے رب نے حکم فرمایا کہ اس کے سوا کسی کو نہ پوجو اور ماں باپ کے ساتھ اچھا سلوک کرو، اگر تیرے سامنے ان میں ایک یا دونوں بڑھاپے کو پہنچ جائیں تو ان سے اُف نہ کہنا اور انہیں نہ جھڑکنا اور ان سے عزت کی بات کہنا اور ان کے لیے عاجزی کا بازو بچھا دے نرم دلی سے اور یہ کہہ کہ اے میرے پروردگار! ان دونوں پر رحم کر جیسا کہ

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے سامنے ذکر کی گئی تو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، عمرو نے سچ کہا ہے تم جو کچھ اپنے گھر والوں پر خرچ کرتے ہو وہ ان پر صدقہ ہی ہے۔ (الترغیب والترہیب، کتاب النکاح، الترغیب فی النفقة... الخ، رقم ۱۵، ج ۳، ص ۴۳)

حضرت سیدنا عمر باض بن ساریہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ میں نے شہنشاہ مدینہ، قرار قلب وسینہ، صاحب معطر پسینہ، باعث ثواب سکینہ، فیض مخمیینہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو فرماتے ہوئے سنا، جب کوئی شخص اپنی بیوی کو پانی پلاتا ہے تو اسے اس کا اجر دیا جاتا ہے۔ راوی کہتے ہیں کہ پھر میں اپنی بیوی کے پاس آیا اور میں نے اسے پانی پلایا اور جو کچھ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے سنا تھا اسے سنا یا۔ (مجمع الزوائد، کتاب الزکاة، باب فی نفقة الرجل... الخ رقم ۴۶۵۹، ج ۳، ص ۳۰۰)

(2) پ ۲، البقرة ۲۱۵.

اس آیت کے تحت مفسر شہیر مولا سید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ یہ آیت عمرو بن جوع کے جواب میں نازل ہوئی جو بوڑھے شخص تھے اور بڑے مالدار تھے انہوں نے حضور سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے سوال کیا تھا کہ کیا خرچ کریں۔ اور کس پر خرچ کریں اس آیت میں انہیں بتادیا گیا کہ جس قسم کا اور جس قدر مال قلیل یا کثیر خرچ کرو اس میں ثواب ہے اور مصارف اس کے یہ ہیں۔

(3) پ ۱۵، بنی اسرائیل ۲۳-۲۴.

اس آیت کے تحت مفسر شہیر مولا سید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ حسن ادب کے ساتھ ان سے خطاب کرنا۔ مسئلہ: ماں باپ کو ان کا نام لے کر نہ پکارے یہ خلاف ادب ہے اور اس میں ان کی دل آزاری ہے لیکن وہ سامنے نہ ہوں تو ان کا ذکر نام لے کر کرنا جائز ہے۔

مسئلہ: ماں باپ سے اس طرح کلام کرے جیسے غلام و خادم آقا سے کرتا ہے۔

انھوں نے بچپن میں مجھے پالا۔

اور فرماتا ہے:

(وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا وَإِنْ جَاهَدَكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا) (4)

اور ہم نے انسان کو ماں باپ کے ساتھ بھلائی کرنے کی وصیت کی اور اگر وہ تجھ سے کوشش کریں کہ میرا شریک ٹھہرا ایسے کو جس کا تجھے علم نہیں تو ان کا کہنا نہ مان۔
اور فرماتا ہے:

(وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ وَهْنًا عَلَى وَهْنٍ وَفِضْلُهُ فِي عَاصِمٍ إِنِ اشْكُرْ لِي وَ لِيَوَالِدِكَ إِلَى النَّصِيبِ ﴿١٣﴾ وَإِنْ جَاهَدَكَ عَلَى أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبُهَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا) (5)

اور ہم نے انسان کو اس کے ماں باپ کے بارے میں تاکید فرمائی، اس کی ماں نے اسے پیٹ میں رکھا کمزوری پر کمزوری جھیلی ہوئی اور اس کا دودھ چھوٹا دوبرس میں ہے یہ کہ شکر کر میرا اور اپنے ماں باپ کا، میری ہی طرف تجھے آنا ہے اور اگر وہ دونوں تجھ سے کوشش کریں کہ میرا شریک ٹھہرا ایسے کو جس کا تجھے علم نہیں تو ان کا کہنا نہ مان اور دنیا میں بھلائی کے ساتھ ان کا ساتھ دے۔

(4) پ ۲۰، التعلیقات ۸۔

اس آیت کے تحت مفسر شہیر مولا ناسید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ یہ آیت اور سورۃ لقمان اور سورۃ احقاف کی آیتیں سعد بن ابی وقاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حق میں وجہول ابن الحق سعد بن مالک زہری کے حق میں نازل ہوئیں ان کی ماں حنہ بنت ابی سفیان بن امیہ بن عبد شمس تھی حضرت سعد سابقین اولین میں سے تھے اور اپنے والدین کے ساتھ اچھا سلوک کرتے تھے جب آپ اسلام لائے تو آپ کی والدہ نے کہا کہ تو نے یہ کیا نیا کام کیا خدا کی قسم اگر تو اس سے باز نہ آیا تو نہ میں کھاؤں نہ بیوی یہاں تک کہ مر جاؤں اور تیری ہمیشہ کے لئے بدنامی ہو اور تجھے ماں کا قاتل کہا جائے پھر اس بڑھیا نے فاقہ کیا اور ایک شبانہ روز نہ کھایا، نہ پیا، نہ سایہ میں بیٹھی اس سے ضعیف ہو گئی پھر ایک رات دن اور اسی طرح رہی تب حضرت سعد اس کے پاس آئے اور آپ نے اس سے فرمایا کہ اے ماں اگر تیری سو ۱۰۰ جائیں ہوں اور ایک ایک کر کے سب ہی نکل جائیں تو بھی میں اپنا دین چھوڑنے والا نہیں تو چاہے کھا چاہے ست کھا، جب وہ حضرت سعد کی طرف سے مایوس ہو گئی کہ یہ اپنا دین چھوڑنے والے نہیں تو کھانے پینے لگی اس پر اللہ تعالیٰ نے یہ آیت نازل فرمائی اور حکم دیا کہ ان کے ساتھ نیک سلوک کیا جائے اور اگر وہ کفر و شرک کا حکم دیں تو نہ مانا جائے۔

(5) پ ۲۱، ضمن ۱۴-۱۵۔

اور فرماتا ہے:

(وَوَضَعْنَا الْإِنْسَانَ يَوْئِلَدِهِ أَحْسَنًا تَمَلُّهُ أُمُّهُ كَرْهًا وَوَضَعْتُهُ كَرْهًا) (6)

اور ہم نے آدمی کو ماں باپ کے ساتھ بھلائی کرنے کا حکم دیا، اس کی ماں نے تکلیف کے ساتھ اسے پیٹ میں رکھا اور تکلیف کے ساتھ اس کو جنا۔

اور فرماتا ہے:

(إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿١٩﴾ الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ﴿٢١﴾) (7)

نصیحت وہی مانتے ہیں جنہیں عقل ہے، وہ جو اللہ (عزوجل) کا عہد پورا کرتے ہیں اور بات پختہ کر کے نہیں توڑتے اور جس کے جوڑنے کا خدا نے حکم دیا ہے اسے جوڑتے ہیں اور خدا سے ڈرتے ہیں اور حساب کی برائی سے ڈرتے رہتے ہیں۔

اور فرماتا ہے:

(وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾) (8)

اور جو لوگ اللہ (عزوجل) کے عہد کو مضبوطی کے بعد توڑتے ہیں اور اللہ (عزوجل) نے جس کے جوڑنے کا حکم دیا ہے، اسے کاٹتے ہیں اور زمین میں فساد کرتے ہیں، ان کے لیے لعنت ہے اور ان کے لیے برا گھر ہے۔

اور فرماتا ہے:

(وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ) (9)

اور اللہ (عزوجل) سے ڈرو، جس سے تم سوال کرتے ہو اور رشتہ سے۔



(6) پ ۲۶، الاحقاف ۱۵۔

(7) پ ۱۳، الرعد ۱۹، ۲۱۔

(8) پ ۱۳، الرعد ۲۵۔

(9) پ ۴، النساء ۱۰۔

احادیث

حدیث ۱: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ ایک شخص نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) سب سے زیادہ حسن صحبت یعنی احسان کا مستحق کون ہے؟ ارشاد فرمایا: تمہاری ماں یعنی ماں کا حق سب سے زیادہ ہے۔ انھوں نے پوچھا، پھر کون؟ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے پھر ماں کو بتایا۔ انھوں نے پھر پوچھا کہ پھر کون؟ ارشاد فرمایا: تمہارا والد۔ (۱) اور ایک روایت میں ہے کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: سب سے زیادہ ماں ہے، پھر ماں، پھر باپ، پھر وہ جو زیادہ قریب، پھر وہ ہے جو زیادہ قریب ہے۔ (۲) یعنی احسان کرنے میں ماں کا مرتبہ باپ سے بھی تین درجہ بلند ہے۔

حدیث ۲: ابو داؤد و ترمذی بروایت بہز بن حکیم عن ابیہ عن جدہ راوی، کہتے ہیں میں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کس کے ساتھ احسان کروں؟ فرمایا: اپنی ماں کے ساتھ۔ میں نے کہا، پھر کس کے

(۱) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب من احق الناس بحسن الصحبة، الحدیث: ۵۹۷۱، ج ۴، ص ۹۳۔

(۲) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة...، باب بر الوالدین...، الحدیث: ۲۰۱۸، (۲۵۴۸)، ص ۱۳۷۸، ۱۳۷۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ صحابہ صاد کے کسرہ سے بمعنی مدد یا برتاؤ، خدمت اسی سے ہے محبت و ہمراہی جو الفت خدمت و مدد کے ساتھ ہو اس لیے جن کفار نے حضور انور کے ساتھ مجلس کی انہیں صحابی نہیں کہا جاتا کہ وہ ہمراہی الفت و خدمت کے ساتھ نہ تھے یعنی میرے رشتہ دار قریبی دور کے بہت ہی ہیں اچھا برتاؤ کس سے کروں اس کا کون مستحق ہے۔

۲۔ اس فرمان عالی سے معلوم ہوا کہ ماں کا حق باپ سے تین گنا زیادہ ہے کیونکہ ماں بچہ پر تین احسان کرتی ہے باپ ایک احسان۔ پیٹ میں رکھنا، جننا، پرورش کرنا باپ صرف پرورش ہی کرتا ہے۔ بیٹا ماں باپ دونوں کی خدمت کرے مگر مقابله کی صورت میں ادب و احترام باپ کا زیادہ کرے خدمت و انعام ماں کی زیادہ۔ (اشعہ) ماں باپ کے ساتھ سلوک یہ ہے کہ ان سے نرم اور نیچی آواز سے کلام کرے، دہلی و بدنی خدمت کرے یعنی اپنے نوکروں سے ہی ان کا کام نہ کرائے بلکہ خود کرے، ان کا ہر جائز حکم مانے، انہیں نام لے کر نہ پکارے، اگر وہ غلطی پر ہوں تو نرمی سے ان کی اصلاح کرے، اگر قبول نہ کریں تو ان پر ڈانٹ ڈپٹ نہ کرے، ان کی سختی پر تحمل کرے، یہ آداب قرآن مجید میں اور حضرت خلیل اللہ علیہ السلام کے عمل شریف میں مذکور ہیں اس کے متعلق ہماری تفسیر نعیمی کا مطالعہ فرماد۔

۳۔ یعنی ماں باپ کے ساتھ ان کے عزیزوں کے حق بھی ادا کرے کہ چچا ماموں، دادا نانا، بہن بھائی وغیرہم کے حقوق ادا کرے۔

ساتھ؟ فرمایا: اپنی ماں کے ساتھ۔ میں نے کہا، پھر کس کے ساتھ؟ فرمایا: اپنی ماں کے ساتھ۔ میں نے کہا، پھر کس کے ساتھ؟ فرمایا: اپنے باپ کے ساتھ، پھر اس کے ساتھ جو زیادہ قریب ہو، پھر اس کے بعد جو زیادہ قریب ہو۔ (3)

حدیث ۳: صحیح مسلم میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ زیادہ احسان کرنے والا وہ ہے جو اپنے باپ کے دوستوں کے ساتھ باپ کے نہ ہونے کی صورت میں احسان کرے۔ (4) یعنی جب باپ مر گیا یا کہیں چلا گیا ہو۔

حدیث ۴: صحیح مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اس کی ناک خاک میں ملے۔ (اس کو تین مرتبہ فرمایا) یعنی ذلیل ہو۔ کسی نے پوچھا، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کون؟ یعنی یہ کس کے متعلق ارشاد ہے۔ فرمایا: جس نے ماں باپ دونوں یا ایک کو بڑھا پے کے وقت پایا اور جنت میں داخل نہ ہوا۔ (5) یعنی ان کی خدمت نہ کی کہ جنت میں جاتا۔

(3) سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی بر الوالدین، الحدیث: ۱۹۰۲، ج ۳، ص ۳۵۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کے حالات پہلے بیان ہو چکے کہ آپ بہر ابن حکیم ابن معاویہ ابن حیدہ قشیری ہیں، بھری ہیں، یہاں جدہ میں ضمیر بہر کی طرف لوثی ہے لہذا معاویہ ابن حیدہ سے یہ روایت ہے۔

۲۔ اس کی شرح پہلے ہو چکی کہ حق الخدمت ماں کا تین گنا ہے باپ کا ایک گنا کہ ماں نے بچہ کو اولاد پیٹ میں رکھا، پھر جٹا، پھر دودھ پلایا، اس کے بعد کی پرورش میں ماں باپ دونوں شریک رہے۔ خیال رہے کہ حق خدمت ماں کا زیادہ ہے۔

۳۔ ظاہر یہ ہے کہ قرابت داروں سے مراد نسبی قرابت دار ہیں ان میں جتنا قرب زیادہ اتنا حق زیادہ۔ چنانچہ پہلے بھائی بہن پھر ماموں چچا وغیرہ اور ہو سکتا ہے کہ قرابت دار عام مراد ہوں جن میں ساس، سالار رضائی ماں وغیرہ سب شامل ہوں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۵۹)

(4) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة... إلخ، باب فضل صلة أصدقاء... إلخ، الحدیث: ۱۲۸۱۔ (۲۵۵۲)، ص ۱۳۸۲۔

(5) صحیح مسلم، کتاب البر... إلخ، باب غم من أدرك أبویہ... إلخ، الحدیث: ۱۰۰۹۔ (۲۵۵۱)، ص ۱۳۸۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی وہ ذلیل ہو جاوے وہ ذلیل ہو جاوے۔ ناک رگڑنے سے مراد ذلت و خواری ہے ناک رگڑنے سے مراد ذلت و

خواری ہوتی ہے۔

۲۔ احدهما اور کلاهما یہ دونوں عند اکبر کا قائل ہیں لہذا مرفوع ہیں یعنی انہیں اس حال میں پائے کہ وہ دونوں یا ایک۔ بڑھا پے کی قید

۳۔ لہذا گائی کہ اس وقت ہی خدمت کی زیادہ ضرورت ہوتی ہے اور بارگاہ الہی میں بوڑھے کی دعا زیادہ قبول ہوتی ہے، وہ کریم

حدیث ۵: صحیح بخاری و مسلم میں اسامہ بن ابی بکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہتی ہیں: جس زمانہ میں قریش نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) سے معاہدہ کیا تھا میری ماں جو مشرک تھی میرے پاس آئی، میں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) میری ماں آئی ہے اور وہ اسلام کی طرف راغب ہے یا وہ اسلام سے اعراض کیے ہوئے ہے، کیا میں اس کے ساتھ سلوک کروں؟ ارشاد فرمایا: اس کے ساتھ سلوک کرو۔ (6) یعنی کافرہ ماں کے ساتھ بھی سلوک کیا جائے گا۔

حدیث ۶: صحیح بخاری و مسلم میں مغیرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے

سفید داڑھی والوں کے پھلے ہوئے ہاتھ خالی نہیں پھیرتا، اولاد کو چاہیے کہ ایسے وقت اور ایسے وقت کی خدمت کو نفیست جانیں۔

۳۔ یا اس طرح کہ ان کی نافرمانی کرے یا اس طرح کہ انکی خدمت میں کمی کرے یا اس طرح کہ انہیں سخت جواب دے۔ خیال رہے کہ بڑھاپے میں طبیعت چڑچڑی ہو جاتی ہے، غصہ بڑھ جاتا ہے اس وقت ان کی سخت بات برداشت کرے ان کی سختی کی پرداہ نہ کرے، سمجھے انکی مت کٹ گئی ہے ان شاء اللہ دونوں جہان میں آرام پائے گا، قرآن کریم فرماتا ہے: "إِنَّمَا يَبْتَلِيَنَّ عَنْكَ الْكِبَرُ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَكُلْ لَهُمَا أَيْ وَلَا تَنْتَهَزْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا" بڑھاپے کا ذکر اس لیے بارہا ہوتا ہے کہ وہ وقت تو سنبھالنے کا ہے جس نے وہ وقت سنبھال لیا اس نے کمائی کر لی، ایسے آڑے وقت میں ان پر دل کھول کر خرچ بھی کرے، ان کی خدمت بھی کرے، انکے لیے دعا بھی کرے۔ بچپن میں یہ مجبور تھا تو ماں باپ نے اسے سنبھالا اور وہ مجبور ہیں تو یہ انہیں سنبھالے اللہ کی رحمت اسے سنبھالے گی۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۲۲)

(6) صحیح البخاری، کتاب الجزیۃ والموادع، الحدیث: ۳۱۸۳، ج ۲، ص ۷۱، ۳۔

صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب فضل النفقة والصدقة... الخ، الحدیث: ۵۰، ۴۹، (۱۰۰۳)، ص ۵۰۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۲۔ مشکوٰۃ شریف کے بعض نسخوں میں راعیہ ہے میم سے مگر اکثر نسخوں میں راعیہ ب سے ہے، راعیہ میم سے بمعنی عجز، ذلیل، خوار، مسکین و غریب یعنی وہ میرے پاس عاجز و محتاج ہو کر آئی ہے میرے مال کی حاجت مند ہے۔ راعیہ ب سے ہو تو اس میں دو احتمال ہیں: ایک یہ کہ بمعنی رغبت خواہش ہو یعنی وہ میرے مال میری خدمت کی خواہش مند ہے دوسرے یہ کہ بمعنی بے رغبتی و رد گردانی ہو یعنی وہ اسلام سے بے رغبت ہے اسے اسلام کی طرف رغبت و میلان نہیں، اگر رغبت کے بعد مدنی ہو تو بمعنی میلان ہوتی ہے اگر عن ہو تو بمعنی بے رغبتی۔

۳۔ معلوم ہوا کہ کافر و مشرک ماں باپ کی بھی خدمت اولاد پر لازم ہے۔ فقہاء فرماتے ہیں کہ مشرک باپ کو بت خانہ لے نہ جائے مگر جب وہاں پہنچ چکا ہو تو وہاں سے گھر لے آئے کہ لے جانے میں بت پرستی پر مدد ہے اور لے آنے میں خدمت ہے، دوسرے عزیز و قرابت در بھی اگر مشرک و کافر ہو مگر محتاج ہوں تو ان کی مالی خدمت کرے۔ (از اشعہ) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۲۳)

فرمایا کہ اللہ تعالیٰ نے یہ چیزیں تم پر حرام کر دی ہیں:

(۱) ماؤں کی نافرمانی کرنا اور (۲) لڑکیوں کو زندہ درگور کرنا اور (۳) دوسروں کا جو اپنے اوپر آتا ہو اسے نہ دینا اور اپنا مانگنا کہ لاؤ۔ اور یہ باتیں تمہارے لیے مکروہ کیں (۴) قیل و قال یعنی فضول باتیں اور (۵) کثرت سوال اور (۶) إضاعت مال۔ (۷)

حدیث ۷: صحیح مسلم و بخاری میں عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: یہ بات کبیرہ گناہوں میں ہے کہ آدمی اپنے والدین کو گالی دے۔ لوگوں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کیا کوئی اپنے والدین کو بھی گالی دیتا ہے؟ فرمایا: ہاں، اس کی صورت یہ ہے کہ یہ دوسرے کے باپ کو گالی دیتا ہے، وہ اس کے باپ کو گالی دیتا ہے، اور یہ دوسرے کی ماں کو گالی دیتا ہے، وہ اس کی ماں کو گالی دیتا ہے۔ (۸)

(۷) صحیح البخاری، کتاب الاستقراض والدیون، باب ما نهي عن إضاعة المال، الحدیث: ۲۳۰۸، ج ۲، ص ۱۱۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ چونکہ بمقابلہ باپ کا حق زیادہ ہے، نیز ماں کمزور دل ہے بہت جلد رنجیدہ ہو جاتی ہے یا اکثر اولاد وہاں سے ہی ضد کرتی ہے اس کا حکم نہیں مانتی اس لیے صرف ماں کا ذکر فرمایا ورنہ باپ کی نافرمانی بھی ممنوع ہے، اہل عرب زندہ بچیوں کو دفن کر دیتے تھے۔ دھات کے معنی یہ ہیں کہ ہمیشہ لپٹے رہنا کبھی کسی کو دینا نہیں۔ چاہیے یہ کہ لینا سیکھے تو دینا بھی سیکھے، بعض نے فرمایا کہ اس کے معنی ہیں واجب حقوق ادا نہ کرنا حرام کسی سے پرہیز نہ کرنا۔

۲۔ یعنی ہر حکم کی وجہ پوچھنا عمل نہ کرنا یا زیادہ بولنا لوگوں سے مانگتے رہنا۔

۳۔ حرام رسموں میں مال خرچ کرنا فضول خرچی ہے، مال اڑانا مال کی بربادی ہے، اچھا کھانا پینا جب کہ اس میں اسراف اور تکبر نہ ہو بالکل جائز ہے یہ فرمان عالی جامع کلمات میں سے ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ بلا تکلف ہم وزن الفاظ بولنا ممنوع نہیں۔ (مرقات)

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۵)

(۸) صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الکبائر و اکبرھا، الحدیث: ۱۳۶۰۔ (۹۰)، ص ۶۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ بمعنی اپنے ماں باپ کو یا ان میں سے ایک کو گالی دینا ہے۔

۲۔ فرمایا ہاں یہ بات عقل کے خلاف ہے کہ کوئی بیٹا اپنے ماں باپ کو گالی دے سبحان اللہ! وہ زمانہ قدوسیوں کا تھا کہ یہ جرم ان کی عقل میں نہ آتا تھا اب تو کھلم کھلا ناپاکی لوگ اپنے ماں باپ کو گالیاں دیتے ہیں ذرا شرم نہیں کرتے۔

۳۔ خیب رہے کہ سب ہر قسم کے برا کہنے کو کہتے ہیں گالی ہو یا اور کچھ مگر شتم گالی کو کہا جاتا ہے، کبھی سب بمعنی شتم آتا ہے اور ←

صحابہ کرام جنہوں نے عرب کا زمانہ جاہلیت دیکھا تھا، ان کی سمجھ میں یہ نہیں آیا کہ اپنے ماں باپ کو کوئی کیوں کر گالی دے گا یعنی یہ بات ان کی سمجھ سے باہر تھی۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے بتایا کہ مراد دوسرے سے گالی دلوانا ہے اور اب وہ زمانہ آیا کہ بعض لوگ خود اپنے ماں باپ کو گالیاں دیتے ہیں اور کچھ لحاظ نہیں کرتے۔

حدیث ۸: شرح سنہ میں اور بیہقی نے شعب الایمان میں عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: میں جنت میں گیا، اس میں قرآن پڑھنے کی آواز سنی، میں نے پوچھا یہ کون پڑھتا ہے؟ فرشتوں نے کہا، حارثہ بن نعمان ہیں۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: یہی حال ہے احسان کا، یہی حال ہے احسان کا، حارثہ اپنی ماں کے ساتھ بہت بھلائی کرتے تھے۔ (9)

شتم بمعنی سب، کسی سے کہا تیرا باپ احمق ہے یہ ہے سب، کسی سے کہا تیرا باپ زانی ہے حرامی ہے یہ ہے شتم۔ مطلب یہ ہے کہ کسی کے بزرگوں کو تم برا نہ کہو تا کہ وہ تمہارے بزرگوں کو برا نہ کہے، یہ ہی حکم اولاد و عزیزوں کے متعلق ہے تم کسی کی بیٹی بہن بھانجی کو گالی نہ دو تا کہ وہ تمہاری بیٹی بہن بھانجی کو گالی نہ دے جیسے کہو گے ویسی سنو گے بہت اعلیٰ اخلاق کی تعلیم ہے کسی نے کیا خوب کہا۔ شعر

گر مادر خوش دوست داری
دشنام کن بہ مادر من

ابن ابی الدنیا میں بروایت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ مرفوعاً ہے کہ کسی مسلمان کی آبروریزی کرنا اسے بہتان لگانا گناہ کبیرہ میں سے ہے۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۶۶)۔

(9) شرح السنۃ، کتاب البر والصلۃ، باب بر الوالدین، الحدیث: ۵۳۱۲، ۵۳۱۳، ج ۶، ص ۲۲۶-۲۲۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی ایک بار خواب میں ہم نے جنت دیکھی تو کسی کو خوش الحانی سے قرآن مجید تلاوت کرتے پایا قراءۃ کی تنوین مضاف الیہ کے عوض ہے یعنی قراءۃ القرآن۔

۲۔ آپ بڑے جلیل القدر صحابی ہیں، غزوہ بدر و احد میں شریک ہوئے، ایک بار حضور اقدس کی خدمت میں حاضر ہوئے حضور کے پاس کوئی شخص بیٹھا تھا آپ نے سلام کیا اس شخص نے بھی جواب دیا، جب دوبارہ خدمت اقدس میں حاضر ہوئے تو حضور نے فرمایا وہ صاحب جنہوں نے تم کو سلام کا جواب دیا حضرت جبریل تھے۔ غالباً حارثہ اس وقت وفات پا چکے تھے ہو سکتا ہے کہ اس وقت زندہ ہوں، پہلا احتمال قوی ہے۔

۳۔ یہ جملہ یا تو حضور انور کا فرمان ہے جو صحابہ سے فرمایا یا فرشتوں کی عرض و معروض ہے جو انہوں نے حضور سے کی تو ذلکم کی جمع تعظیم کے لیے ہے۔

۴۔ یہ قول راوی ہے کہ وہ اپنی زندگی میں اپنی والدہ کی بہت ہی خدمت کرتے تھے اس کی وجہ سے انہیں یہ عظمت ملی۔

۵۔ اس عبارت سے صاف معلوم ہوا کہ یہ واقعہ خواب کی معراج کا ہے نہ کہ بیداری کی معراج کا جیسا کہ ابھی عرض کیا گیا۔

حدیث ۹: ترمذی نے عبد اللہ بن عمرو رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: پروردگار کی خوشنودی باپ کی خوشنودی میں ہے اور پروردگار کی ناخوشی باپ کی ناراضی میں ہے۔ (10)

حدیث ۱۰: ترمذی وابن ماجہ نے روایت کی، کہ ایک شخص ابوالدرداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس آیا اور یہ کہا کہ میری ماں مجھے یہ حکم دیتی ہے کہ میں اپنی عورت کو طلاق دے دوں۔ ابوالدرداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو فرماتے سنا کہ والد جنت کے دروازوں میں بیچ کا دروازہ ہے، اب تیری خوشی ہے کہ اس دروازہ کی حفاظت کرے یا ضائع کر دے۔ (11)

حدیث ۱۱: ترمذی و ابو داؤد نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہتے ہیں میں اپنی بی بی سے محبت رکھتا تھا اور حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ اس عورت سے کراہت کرتے تھے۔ انھوں نے مجھ سے فرمایا کہ اسے طلاق دے دو، میں نے نہیں دی پھر حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے اور یہ واقعہ بیان کیا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے مجھ سے فرمایا کہ اسے طلاق دے دو۔ (12)

علماء فرماتے ہیں کہ اگر والدین حق پر ہوں جب تو طلاق دینا واجب ہی ہے اور اگر بی بی حق پر ہو جب بھی والدین

(10) سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء من الفضل بنی رضا الوالدین، الحدیث: ۱۹۰۷، ج ۳، ص ۳۶۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے غالب! اس وقت باپ کی خدمت ہی کا ذکر ہوگا اس لیے صرف باپ کا ذکر فرمایا ورنہ ماں کا بھی یہی حکم ہے بلکہ بطریق اولیٰ اس کی مستحق ہے، ممکن ہے کہ والد سے مراد جنس ہو یعنی ولادت والا خواہ مرد ہو یا عورت یعنی ماں ہو یا باپ۔ طبرانی نے حضرت ابن عمر سے مرفوعاً روایت کیا فی رضا الوالدین اور فی مغلطہا۔ وہ حدیث اس کی شرح ہے کہ والد سے مراد والدین ہیں۔ اللغات نے فرمایا کہ حضور کا یہ فرمان خود عبد اللہ ابن عمرو سے تھا کہ وہ خود عابد زاہد تہجد گزار شب بیدار تھے مگر ان کے والد عمرو ابن عامر نے حضور سے شکایت کی کہ میں اپنے بیٹے سے ناراض ہوں تب آپ نے یہ ان سے فرمایا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۵۷)

(11) المرجع السابق، الحدیث: ۱۹۰۶، ج ۳، ص ۳۵۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی فرمائیے میں کیا کروں اسے طلاق دوں یا نہ دوں کہ طلاق تمام مباح چیزوں میں بہت ہی ناپسندیدہ چیز ہے۔

۲۔ مقصد یہ ہے کہ یا تو اپنی بیوی سے اپنی ماں کو راضی کر دو یا اس کی صلح کر دو یا طلاق دے دو مراحتہ طلاق کا حکم نہ دیا کہ ایسی صورت میں طلاق دینا واجب نہیں بہتر ہے اور اگر ماں باپ بیوی پر ظلم کرنے کا حکم دیں کہ اسے خرچہ نہ دے اسے میکے میں چھوڑ دے تو ہرگز نہ کرے کہ ظلم حرام ہے ماں باپ کی اطاعت حکم شرع کے خلاف میں نہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۵۸)

(12) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی بر الوالدین، الحدیث: ۵۳۸، ج ۳، ص ۴۳۲۔

کی رضا مندی کے لیے طلاق دینا جائز ہے۔

حدیث ۱۲: ابن ماجہ نے ابو امامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ ایک شخص نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) والدین کا اولاد پر کیا حق ہے؟ فرمایا کہ وہ دونوں تیری جنت و دوزخ ہیں۔ (13) یعنی ان کو راضی رکھنے سے جنت ملے گی اور ناراض رکھنے سے دوزخ کے مستحق ہو گے۔

حدیث ۱۳: بیہقی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس نے اس حال میں صبح کی کہ اپنے والدین کا فرمانبردار ہے، اس کے لیے صبح ہی کو جنت کے دروازے کھل جاتے ہیں اور اگر والدین میں سے ایک ہی ہو تو ایک دروازہ کھلتا ہے اور جس نے اس حال میں صبح کی کہ والدین کے متعلق خدا کی نافرمانی کرتا ہے، اس کے لیے صبح ہی کو جہنم کے دو دروازے کھل جاتے ہیں اور ایک ہو تو ایک دروازہ کھلتا ہے۔ ایک شخص نے کہا، اگرچہ ماں باپ اس پر ظلم کریں؟ فرمایا: اگرچہ ظلم کریں، اگرچہ ظلم کریں۔ (14)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ شاید اس بی بی میں کوئی دینی خرابی ہوگی محض دنیاوی وجہ پر طلاق کا حکم نہ دیا ہوگا۔

۲۔ ظاہر یہ ہے کہ یہ امر وجوب کا ہے اور حضرت عبداللہ ابن عمر پر اس حکم کی بنا پر طلاق دینا واجب ہو گیا۔ مرقات نے فرمایا کہ امر استحب کے لیے ہے یعنی بہتر یہ ہے کہ طلاق دے دو تا کہ تمہارے والد تم پر ناراض نہ ہوں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۰) (13) سنن ابن ماجہ، کتاب الودع، باب بر الوالدین، الحدیث: ۳۶۶۲، ج ۲، ص ۱۸۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی تیرے ماں باپ تیرے لیے جنت دوزخ میں داخلہ کا سبب ہیں کہ انہیں خوش رکھ کر تو جنتی بنے گا انہیں ناراض کر کے دوزخی، یہ فرمان عالی وعدہ وعید دونوں کا مجموعہ ہے اگرچہ یہاں خطاب بظاہر خاص ہے مگر حکم تا قیامت عام ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۱)

(14) شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، فصل فی حفظ حق الوالدین بعد موتہما، فصل، الحدیث: ۷۹۱۶، ج ۲، ص ۲۰۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہاں اللہ فرما کر دو مسئلے بتائے: ایک یہ کہ ماں باپ کی اطاعت اپنی ناموری یا رزق میں برکت کے لیے نہ کرے بلکہ محض اس لیے کرے کہ اللہ تعالیٰ کا حکم ہے رب تعالیٰ اس سے راضی رہے۔ دوسرے یہ کہ ان کی فرمانبرداری ناجائز باتوں میں نہ کرے اگر وہ نماز روزے سے روکیں تو نہ مانتے۔

۲۔ کہ اگر اس حال میں مرجا دے تو مرتے ہی ان میں داخل ہو جاوے۔ دو دروازے کھولنا اس کی عزت افزائی کے لیے ہے ورنہ

حدیث ۱۴: بیہقی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب اولاد اپنے والدین کی طرف نظر رحمت کرے تو اللہ تعالیٰ اس کے لیے ہر نظر کے بدلے حج مبرور کا ثواب لکھتا ہے۔ لوگوں نے کہا، اگرچہ دن میں سو ۱۰۰ مرتبہ نظر کرے؟ فرمایا: ہاں اللہ (عزوجل) بڑا ہے اور اطمینان ہے۔ (15) یعنی اُسے سب کچھ قدرت ہے، اس سے پاک ہے کہ اس کو اس کے دینے سے عاجز کہا جائے۔

جنت میں داخلہ کے لیے ایک دروازہ کھلتا ہی کافی ہے۔ حضرت ابو بکر صدیق کے لیے جنت کے ہر دروازہ پر پکار پڑے گی کہ ابو بکر ادھر سے آئیے۔ خلاصہ یہ ہے کہ ماں کی خدمت کا دروازہ علیحدہ ہے باپ کی خدمت کا دروازہ علیحدہ ممکن ہے کہ ان دونوں دروازوں میں فرق ہو ماں کی خدمت کا دروازہ عظیم الشان ہو کہ ماں کی خدمت اعلیٰ ہے۔ واللہ اعلم!

۳۔ اس کا مطلب ابھی عرض کیا گیا کہ ماں باپ کی نافرمانی دوزخ کے دروازہ کھلنے کا ذریعہ ہے کہ نافرمان مرا اور دوزخ میں گیا اگرچہ بعد قیامت اس کی دوسری نیکیاں دوزخ سے اسے نکال دیں مگر فی الحال تو دوزخ میں جائے گا، ماں باپ کی بددعا بڑے سے بڑے متقی کو آفت میں ڈال دیتی ہے۔ تم کو معلوم ہے کہ جرج اسرائیلی نے نماز کی وجہ سے ماں کی پکار کا جواب نہ دیا تو مصیبت میں پھنس گیا کہ اسے زنا کی تہمت لگی لوگوں نے مارا اگرچہ پھر اپنی نیکیوں کی وجہ سے نجات پا گیا کہ شیر خوار بچے نے اس کی پاکدامنی کی گواہی دی جس سے اس کی گئی ہوئی عزت واپس آئی مگر ماں کی ناخوشی نے اپنا رنگ دکھا دیا ماں باپ کی نافرمانی ان کی بددعا سے رب کی پناہ۔

۴۔ ظلم سے مراد دنیاوی نا انصافی ہے دینی گناہ مراد نہیں مثلاً ایک باپ اپنے بیٹوں میں سے ایک سے محبت کم کرتا ہے دوسری اولاد کو اس پر ترجیح دیتا ہے یا اسے کسی حق سے محروم کر دیتا ہے مگر یہ مظلوم لڑکا ان کی خدمت ضرور کرے اس کی عوض اللہ تعالیٰ اسے مالا مال کر دے گا آزما کر دیکھ لو ماں باپ کی خدمت کبھی رایگان نہیں جاتی۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۷۳)

(15) شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، الحدیث ۷۸۵۶، ج ۶، ص ۱۸۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ خلاصہ یہ ہے کہ اطاعت شعار لڑکے کو ان کی فرمانبرداری کا ثواب تو ملے گا ہی پیار و محبت سے انہیں دیکھنے کا ثواب بھی ملے گا۔ غور کرو کہ جب ماں باپ کے دیکھنے کا اتنا ثواب ہے تو جو مؤمن ان آنکھوں سے حضور کا چہرہ انور محبت سے دیکھے اس کو ثواب کتنا ملے گا، فقیر تو کہتا ہے کہ ان کے نام کو محبت سے دیکھنا چومنا بھی ثواب ہے۔ شعر

خوشا وہ وقت کہ طیبہ مقام تھا ان کا
خوشا وہ وقت کہ دیدار عام تھا ان کا

۲۔ سائل نے سمجھ ہو گا کہ دن بھر کی نگاہیں ایک بار میں شمار ہوں گی اس لیے یہ سوال کر کے مسئلہ حل کر لیا۔

۳۔ یعنی سے پوچھنے والے اللہ کریم کی دین پر تعجب نہ کر اگر تو دن بھر میں ہزار بار ماں باپ کو پیار سے دیکھ لے تو تجھے ہزار حج مقبول کا ثواب ملے گا۔ خیال رہے کہ یہ تو اپنے ماں باپ کی محبت کا ثواب ہے جنہوں نے ہم کو جناب جس ماں نے حضور محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم دنیا کو بخشا اس ماں یعنی آمنہ خاتون حضرت عبداللہ رضی اللہ عنہما سے محبت کا ثواب کتنا ہو گا یہ وہ ماں ہے جس کے قدم پاک پر سرے

حدیث ۱۵: امام احمد و نسائی و بیہقی نے معاویہ بن جاحمہ سے روایت کی، کہ ان کے والد جاحمہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے اور عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) میرا ارادہ جہاد میں جانے کا ہے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) سے مشورہ لینے کو حاضر ہوا ہوں۔ ارشاد فرمایا: تیری ماں ہے؟ عرض کی، ہاں۔ فرمایا: اس کی خدمت لازم کر لے کہ جنت اس کے قدم کے پاس ہے۔ (16)

حدیث ۱۶: بیہقی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ کسی کے ماں باپ دونوں یا ایک کا انتقال ہو گیا اور یہ ان کی نافرمانی کرتا تھا، اب ان کے لیے ہمیشہ استغفار کرتا رہتا ہے، یہاں تک کہ اللہ تعالیٰ اس کو نیکو کار لکھ دیتا ہے۔ (17)

جہان کی مائیں قربان و فثار ہوں ہماری جیسی سینکڑوں جانیں ان کے نام پر نچھاور ہوں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۷۴)

(16) المسند للإمام أحمد بن حنبل، حدیث معاویہ بن جاحمہ، الحدیث: ۱۵۵۳۸، ج ۵، ص ۲۹۰۔

وسنن النسائی، کتاب الجہاد، باب الرخصة فی التخلّف لمن له والدۃ، الحدیث: ۳۱۰۱، ص ۵۰۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ معاویہ بھی صحابی ہیں، ان کے والد جاحمہ ابن عباس ابن مرداس سلمی بھی صحابی یہ اہل حجاز سے ہیں۔

۲۔ غالباً اس وقت کفار کا دباؤ زیادہ نہ تھا بعض تھوڑے مسلمان بھی ان کے مقابلہ کے لیے کافی تھے۔ غرض کہ اس وقت غزوہ فرض عین نہ تھا فرض کفایہ تھا۔

۳۔ یعنی اپنی ماں کے پاس رہو اس کی خدمت کرو تمہارے لیے اس وقت جہاد سے بہتر ماں کی خدمت ہے کہ ماں کو تمہاری خدمت کی ضرورت ہے۔

۴۔ پاؤں کا ذکر فرما کر اشارہ بتایا کہ ماں کی خدمت اور اس کے سامنے عاجزی دونوں ہی ضروری ہیں۔ خدمت کے ساتھ اکڑ نہ کرے اس کے پاؤں سے لگا رہے تب جنت پائے گا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۶۹)

(17) شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، فصل فی حفظ حق الوالدین بعد موتہما، الحدیث: ۷۹۰۲، ج ۶، ص ۲۰۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ماں باپ کی نافرمانی میں حق اللہ کی تلفی بھی ہے اور حق العباد کی بربادی بھی لہذا یہ اسلامی گناہ بھی ہے اور ماں باپ کا حق، رہتا بھی اور گنہ بھی ہے کبیرہ۔

۲۔ یعنی یہ نافرمان والدین کی وفات کے بعد اولاً نافرمانی سے توبہ کرے پھر مرتے دم تک ان کے لیے گنہ ہوں کی بخشش کی دعا اور ایصال، ثواب کرتا رہے تو رب تعالیٰ بزرخ میں اس کے ماں باپ کو اس سے راضی کر دے گا اور اس کا گناہ کبیرہ تھا بغیر توبہ سے۔

حدیث ۱۷: نسائی و دارمی نے عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ منان یعنی احسان جتانے والا اور والدین کی نافرمانی کرنے والا اور شراب خواری کی مداومت کرنے والا جنت میں نہیں جائے گا۔ (18)

حدیث ۱۸: ترمذی نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ ایک شخص نے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہو کر عرض کی، کہ یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) میں نے ایک بڑا گناہ کیا ہے، آیا میری توبہ قبول ہوگی؟ فرمایا: کیا تیری ماں زندہ ہے۔ عرض کی نہیں، فرمایا: تیری کوئی خالہ ہے۔ عرض کی ہاں، فرمایا: اس کے ساتھ احسان کر۔ (19)

حدیث ۱۹: ابو داؤد و ابن ماجہ نے ابی اسید ساعدی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں: ہم لوگ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر تھے کہ بنی سلمہ میں کا ایک شخص حاضر ہوا اور عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) میرے والدین مر چکے ہیں اب بھی ان کے ساتھ احسان کا کوئی طریقہ باقی ہے؟ فرمایا: ہاں ان کے لیے دعا و استغفار کرنا اور جو انھوں نے عہد کیا ہے اس کو پورا کرنا اور جس رشتہ والے کے ساتھ انھیں

معاف نہیں ہوتا۔ (مرقات) آپ ماں باپ کے بعد ان کا حج، چالیسواں، بری وغیرہ اور وقتاً فوقتاً ان کے نام پر خیرات جو کیا کرتے ہیں

ان سب کی اصل یہ حدیث ہے بلکہ ہر نمازی نماز ختم ہوتے وقت ماں باپ کو دعا میں دے کر سلام پھیرتا ہے رب اغفر لی ولوالدی۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۷۲)

(18) سنن انسائی، کتاب الشریعہ، باب الروایۃ فی المدینین فی الخمر، الحدیث: ۵۶۸۲، ص ۸۹۵۔

(19) سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب فی بر الخلة، الحدیث: ۱۹۱۱، ج ۳، ص ۳۶۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی میں نے توبی یا عملی بدترین گناہ کر لیا ہے ایسے بدترین گناہ کی بھی توبہ ہو سکتی ہے یا نہیں۔ خیال رہے کہ یہاں سواں گناہ کے متعلق ہے کسی بندے کے حق کے متعلق نہیں کہ حق العبد بغیر ادا کیے یا بغیر اس صاحب حق کے معاف کیے معاف نہیں ہوتا۔

۲۔ یہ ہے حضور کی شان پر وہ پوشی کہ اس سے پوچھا نہیں کہ تو نے گناہ کیا کیا ہے تاکہ وہ لوگوں کے سامنے بیان کر کے رسوا نہ ہو۔ حضور کو معصوم تھا کہ اس نے گناہ کیا ہے جو صلہ رحمی کی وجہ سے معاف ہو سکتا ہے کسی کا حق نہیں مارا ہے جس کی معافی صدہ رحمی وغیرہ نیک عمل سے نہ ہو سکے۔ اس فرمان عالی سے دو مسئلے معلوم ہوئے: ایک یہ کہ صلہ رحمی سے گناہ معاف ہوتے ہیں کہ صلہ رحمی بھی نیکی ہے اور نیکیوں سے

گناہوں کی معافی ہوتی ہے، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ الشَّرَّاتِ"۔ دوسرے یہ کہ چھپے گناہ کی توبہ بھی چھپ کر ہی

کرے، یہاں عذابیہ گناہ کی توبہ علانیہ کرے التوبۃ علی قدر الحوبۃ توبہ گناہ کے حد کی ہو اس سے نبی کریم کے علم غیب کا بھی ثبوت ہوا۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۶۵)

کی وجہ سے سلوک کیا جاسکتا ہو اس کے ساتھ سلوک کرنا اور ان کے دوستوں کی عزت کرنا۔ (20)

حدیث ۲۰: حاکم نے مستدرک میں کعب بن عجرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ تم لوگ منبر کے پائے حاضر ہو جاؤ۔ ہم سب حاضر ہوئے، جب حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) منبر کے پہلے درجہ پر چڑھے فرمایا: آمین، جب دوسرے پر چڑھے کہا: آمین، جب تیسرے درجہ پر چڑھے کہا: آمین۔ جب حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) منبر سے اترے ہم نے عرض کی، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) حاضر ہو جائے۔

(20) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی بر الوالدین، الحدیث: ۵۱۳۲، ج ۴، ص ۴۳۴.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ صحابی ہیں، انصاری ہیں، تمام غزوات میں حضور کے ساتھ رہے، آپ سے بہت محدثین نے روایات کیں آخر میں نابینا ہو گئے تھے، ۷۸ ہجرت سال مر پائی، ۶۰ سالہ عمر میں وفات ہوئی، آپ سارے بدری صحابہ میں آخری صحابی تھے کہ آپ کی وفات سے بدری صحابہ کا سلسلہ ختم ہوا، بڑی عظمتوں برکتوں والے تھے رضی اللہ عنہ۔ یعنی میرے ماں باپ کا انتقال ہو چکا ہے اب میں ان سے کوئی سلوک کیسے کروں دل چاہتا ہے کہ سلوک کا سلسلہ قائم رہے۔

۲۔ یعنی اب تم ان کے ساتھ چہرہ قسم کے سلوک کر سکتے ہو، ایک تو ان کے لیے دعا، خیر اور ان کے گناہوں کی معافی کی رپ سے درخواست، دعا میں نماز جتنا زیادہ بھی داخل ہے۔ (مرقات) ہر نماز کے آخر میں رب اغفر لی ولوالدی پڑھنا بھی، ان کے نام پر صدقات و خیرات کرنا بھی، ان کی طرف سے حج بدل کرنا یا کراہ بھی، ان کا حجہ دسواں، چالیسواں، بری وغیرہ کرنا بھی غرض کہ یہ ایک لفظ بہت جامع ہے یعنی ان کی وصیت چوری کرنا اس سے مذہب انہوں نے اپنی زندگی میں کسی سے جو وعدہ کیا ہو اور بغیر پورا کیے مر گئے ہوں وہ پورا کرنا اس میں ادائے قرض بھی داخل ہے۔ بعض لوگ اپنے والدین کی امی دیکھ باقی رکھتے ہیں یہ بھی اسی میں داخل ہے، اگر ماں باپ کسی طرح میں خیرات کرتے تھے یا مسیاد شریف بنیاد عموں کرتے تھے تو وہ ہمیشہ نبھاتے ہیں، جس مسجد میں نماز پڑھتے تھے اس مسجد کی آبادی کی کوشش کرتے ہیں، جس خانقاہ سے انہیں عقیدت تھی اس خانقاہ سے وابستہ رہتے ہیں یہ صورتیں اسی حدیث میں داخل ہیں۔

۳۔ اس فرمان خالی کے دو مطلب ہو سکتے ہیں: ایک یہ کہ جن عزیزوں سے رشتہ صرف ماں یا باپ کی وجہ سے ہو دوسری وجہ سے نہ ہو ان سے سلوک کرنا کہ یہ میرے والدین کی خوشنودی کا ذریعہ ہے اس میں بھائی بھین، چچا ماموں، پھوپھی خالہ سب ہی داخل ہیں۔ دوسرے یہ کہ خالص رضاء والدین کے لیے ان سے سلوک کرنا اپنی ماموری یا شہرت وغیرہ کو دخل نہ دے۔ اس سے معصوم ہوا کہ بندوں کی رضا کے لیے کام کرنا بھی بعض صورتوں میں ثواب کا باعث ہے لہذا حضور کی رضا کے لیے نیک اعمال کرنا بالکل جائز ہے شک یا گمان نہیں کہ یہ کمال کا حق ماں باپ سے زیادہ ہے، مرقات و اشعہ نے اس دوسرے احتمال کو اختیار کیا۔ غرض کہ ان عزیزوں کی والدین کی رضا کے لیے خدمت کرنا اور والدین کی رضا اللہ رسول کی رضا کے لیے چاہیے۔ احترام میں تعظیم و اکرام بھی داخل ہے اور ان کی خدمت ان پر مال خرچ کرنا بھی شامل ہے، بیٹا باپ کے دوستوں ماں کی سہیلیوں سے سلوک کرے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۲، ص ۶۶)

سے آج ایسی بات سنی کہ کبھی ایسی نہیں سنا کرتے تھے۔

فرمایا کہ جبریل میرے پاس آئے اور یہ کہا کہ اسے رحمت الہی سے دوری ہو، جس نے رمضان کا مہینہ پایا اور اس کی مغفرت نہ ہوئی، اس پر میں نے آمین کہی۔ جب میں دوسرے درجہ پر چڑھا تو انھوں نے کہا، اس شخص کے لیے رحمت الہی سے دوری ہو، جس کے سامنے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کا ذکر ہوا اور وہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) پر درود نہ پڑھے، اس پر میں نے کہا آمین۔ جب میں تیسرے زینہ پر چڑھا تو انھوں نے کہا، اس کے لیے دوری ہو، جس کے ماں باپ دونوں یا ایک کو بڑھاپا آیا اور انھوں نے اسے جنت میں داخل نہ کیا، میں نے کہا آمین۔ (21)

حدیث ۲۱: بیہقی نے سعید بن العاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: بڑے بھائی کا چھوٹے بھائی پر ویسا ہی حق ہے، جیسا کہ باپ کا حق اولاد پر ہے۔ (22)

حدیث ۲۲: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جب اللہ تعالیٰ مخلوق کو پیدا فرما چکا، رشتہ (کہ یہ بھی ایک مخلوق ہے) کھڑا ہوا اور دربار الوہیت میں استغاثہ کیا، ارشاد الہی ہوا: کیا ہے۔ رشتہ نے کہا، میں تیری پناہ مانگتا ہوں کاٹنے والوں سے۔ ارشاد ہوا: کیا تو اس پر راضی نہیں کہ جو تجھے ملائے میں اسے ملاؤں گا اور جو تجھے کاٹے میں اسے کاٹ دوں گا؟ اس نے کہا، ہاں میں راضی ہوں، فرمایا: تو بس

(21) اسعد رک لعماکم، کتاب البر والصلة، باب لعن اللہ العاق لوالدہ... الخ، الحدیث: ۷۳۳۸، ج ۵، ص ۲۱۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی ایسا مسلمان خوار و ذلیل ہو جائے جو میرا نام من کر درود نہ پڑھے۔ عربی میں اس بددعا سے مراد اظہار ناراضی ہوتا ہے حقیقتاً بددعا مراد نہیں ہوتی، اس حدیث کی بناء پر بعض علماء نے فرمایا کہ ایک ہی مجلس میں اگر چند بار حضور کا نام شریف آوے تو ہر بار درود شریف پڑھنا واجب ہے، مگر یہ استدلال کچھ کمزور سا ہے کیونکہ رَضِیَہُ أَنْفُہَا کُلُّہَا ہے جس سے درود کا استحباب ثابت ہو سکتا ہے نہ کہ وجوب۔ مطلب یہ ہے کہ جو بلعنت دس رحمتیں، دس درجے، دس معافیاں حاصل نہ کرے بڑا بیوقوف ہے۔

۲۔ یعنی وہ مسدس بھی ذلیل و خوار ہو جائے جو رمضان کا مہینہ پائے اور اسکا احترام اور اس میں عبادت کر کے گناہ نہ بخشوائے، یونہی وہ بھی خوار ہو جس نے جوانی میں ماں باپ کا بڑھاپا پایا پھر ان کی خدمت کر کے جتنی نہ ہوا۔ بڑھاپے کا ذکر اس لیے فرمایا کہ بڑھاپے میں اولاد کی خدمت کی زیادہ ضرورت ہوتی ہے اور اس وقت کی دعا اولاد کا بیڑا پار کر دیتی ہے۔ خیال رہے کہ یہ تینوں چیزیں مسلمانوں کے لیے مفید ہیں، کافر کسی نیکی سے جنتی نہیں ہو سکتا، ہاں بعض نیکیوں کی وجہ سے اسے ایمان لانے کی توفیق مل جاتی ہے اور بعض کی برکت سے اس کا

عذاب ہلکا ہو جاتا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲، ص ۱۵۳)

(22) شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، فصل فی صلۃ الرحم، الحدیث: ۹۲۹۷، ج ۶، ص ۲۱۰۔

یہی ہے۔ (23)

حدیث ۲۳: صحیح بخاری میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: رحم (رشتہ) رحم سے مشتق ہے، اللہ تعالیٰ نے فرمایا: جو تجھے ملائے گا، میں اسے ملاؤں گا اور جو تجھے کاٹے گا، میں اسے کاٹوں گا۔ (24)

حدیث ۲۴: صحیح بخاری و مسلم میں ام المومنین عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ رشتہ عرش الہی سے لپٹ کر یہ کہتا ہے: جو مجھے ملائے گا، اللہ (عزوجل) اس کو ملائے گا اور جو مجھے کاٹے گا، اللہ (عزوجل) اسے کاٹے گا۔ (25)

(23) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب من وصل وصلہ اللہ، الحدیث: ۵۹۸۷، ج ۴، ص ۹۷۔

(24) المرجع السابق، الحدیث: ۵۹۸۸، ج ۴، ص ۹۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی معبود حقیقی ہوں، سب سے غنی ہوں، سب کا دانا ہوں۔

۲۔ رحم سے مراد یا تو رجمی رشتے اور قرابت داریاں ہیں یا خاص رحم ہے یعنی بچہ دانی جو عورت کے پیٹ میں ہے کہ یہ تمام نسبی رشتوں کا ذریعہ ہے۔

۳۔ یعنی اپنے نام سے اس کا نام بنایا یہاں اشتقاق صرنی مراد نہیں کہ اس قاعدہ سے تو لفظ رحم بننا ہے رحم سے۔

۴۔ یعنی جو رشتہ داروں کے حقوق ادا کرے گا میں اسے اپنے سے ملاؤں گا اور اپنی رحمت تک پہنچا دوں گا اور جو ان کے حقوق ادا نہ کرے گا یا ان پر ظلم کرے گا میں اسے اپنی رحمت سے دور کروں گا جو مجھ سے ملنا چاہے وہ اپنے عزیزوں کے حق ادا کرے گا یا ان پر ظلم کرے گا میں اسے اپنی رحمت سے دور کروں گا جو مجھ سے ملنا چاہے وہ اپنے عزیزوں کے حق ادا کرے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۰)

(25) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة... إلخ، باب صلة الرحم... إلخ، الحدیث: ۱۷۰۱، (۲۵۵۵)، ص ۸۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس عبارت کے معنی پہلے بیان ہو چکے کہ جو رشتہ داروں کا حق ادا کرے گا اللہ سے قرب پائے گا اور جو ادا نہ کرے گا یا ان پر ظلم کرے گا وہ اللہ کی رحمت سے دور ہو جاوے گا۔ اس میں گفتگو ہے کہ رشتہ داروں کی حد کہاں تک ہے جس کے حقوق ادا کرنا ضروری ہیں۔ بعض علماء نے فرمایا کہ جن سے نکاح حرام ہے وہ ذی رحم ہیں لہذا ایچھا زاد خالہ زاد ذی رحم نہیں، بعض نے فرمایا کہ جن دو کو نکاح میں جمع کرنا حرام ہے وہ ذی رحم ہے، بعض کے نزدیک جن کو میراث پہنچ سکے وہ ذی رحم ہے لہذا والدین، اولاد، بھائی، بہن چچا ماموں ان کی اولاد سب ذی رحم ہیں یہی قول قوی ہے۔ (مرقات) رب تعالیٰ فرماتا ہے: "وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ"۔ یہ گفتگو ذی رحم کے

فرمایا کہ تقدیر کو کوئی چیز رد نہیں کرتی مگر دعا اور بر۔ (28) یعنی احسان کرنے سے عمر میں زیادتی ہوتی ہے اور آدمی گناہ کرنے کی وجہ سے رزق سے محروم ہو جاتا ہے۔

اس حدیث کا مطلب یہ ہے کہ دعا سے بلائیں دفع ہوتی ہیں۔ یہاں تقدیر سے مراد تقدیر معلق ہے اور زیادتی عمر کا بھی یہی مطلب ہے کہ احسان کرنا درازی عمر کا سبب ہے اور رزق سے ثواب اخروی مراد ہے کہ گناہ اس کی محرومی کا سبب ہے اور ہو سکتا ہے کہ بعض صورتوں میں دنیوی رزق سے بھی محروم ہو جائے۔

حدیث ۲۸: حاکم نے مستدرک میں ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اپنے نسب پہچاننا کہ صلہ رحم کرو، کیونکہ اگر رشتہ کو کاٹا جائے تو اگرچہ قریب ہو وہ قریب نہیں اور اگر جوڑا جائے تو دور نہیں اگرچہ دور ہو۔ (29)

(28) سنن ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب العقوبات، الحدیث: ۴۰۲۲، ج ۴، ص ۳۶۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کے حالات پہلے بیان ہو چکے کہ آپ ثوبان ابن بجد ہیں، کنیت ابو عبد اللہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے آزاد کردہ غلام ہیں، سفر و حضر میں حضور کے ساتھ رہے، حضور کی وفات کے بعد شام چلے گئے، پہلے رملہ میں پھر حمص میں قیام رہا وہاں ہی ۵۴ھ میں وفات پائی۔

۲۔ تقدیر محقق ہے اور دعا سے مراد دعائے مقبول ہے خواہ اپنی دعا ہو یا کسی بزرگ کی، تقدیر مبرم کسی طرح بھی نہیں بدل سکتی۔ (مرقات و اشعہ) تقدیر معلق کہتے ہیں اسے ہی جو شرائط قیود پر موقوف رکھی گئی کہ فرشتوں سے فرمایا گیا ہو کہ فلاں شخص اگر یہ کرے گا تو اس کا یہ یہ ہو گا علم الہی میں تبدیلی نہیں ہو سکتی۔

۳۔ یعنی اپنے ماں باپ اور قرابت دار عزیزوں سے اچھا سلوک کرنا عمر بڑھا دیتا ہے اس کا مطلب بھی وہ ہی ہے جو ابھی تقدیر بدلنے کے متعلق عرض کیا گیا کہ انسان کی عمر دو قسم کی ہے: عمر مبرم یعنی علم الہی اور اس کا قطعی فیصلہ اس میں زیادتی کی ناممکن ہے، دوسری عمر معلق جہاں فرشتوں اولیاء اللہ کو اطلاع یوں دی گئی ہو کہ اگر یہ فلاں نیکی کرے تو اس کی عمر اتنی ہوگی اگر گناہ کرے تو اس سے کم جب یہ بندہ نیکی کر لیتا ہے تو اسے وہ ہی زیادہ عمر مل جاتی ہے جو نیکی پر معلق تھی۔

۴۔ اس فرمان کے چند معنی ہیں: ایک یہ کہ گناہوں سے رزق آخرت یعنی ثواب اعمال گھٹ جاتا ہے۔ دوسرے یہ کہ مؤمن کا گناہوں کی وجہ سے رزق روحانی یعنی اخلاص، اطمینان قلب، دل کا چین و سکون، رغبت الی اللہ گھٹ جاتی ہے۔ تیسرے یہ کہ مؤمن اپنے گناہوں کی وجہ سے تنگی رزق، یا بلاؤں میں گرفتار ہو جاتا ہے تاکہ ان کی وجہ سے گناہوں سے توبہ کر کے پاک و صاف ہو کر دنیا سے جائے لہذا اس فرمان پر یہ اعتراض نہیں کہ اکثر متقی پر ہیزگار لوگ مفلوک الحال ہوتے ہیں اور فاسق و بدکار بڑے مالدار۔ (مرقات، اشعہ)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۷۵۵)

(29) المستدرک، کتاب البر والصلة، باب ان اللہ لیمر بالقوم الزمان بصلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث: ۷۳۶۵، ج ۵، ص ۲۲۳۔

حدیث ۲۹: ترمذی نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اپنے نسب کو اتنا سیکھو جس سے صلہ رحم کر سکو، کیونکہ صلہ رحم اپنے لوگوں میں محبت کا سبب ہے اس سے مال میں زیادتی اور اثر (یعنی عمر) میں تاخیر ہوگی۔ (30)

حدیث ۳۰: حاکم نے مستدرک میں عاصم رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس کو یہ پسند ہو کہ عمر میں درازی ہو اور رزق میں وسعت ہو اور بری موت دفع ہو وہ اللہ تعالیٰ سے ڈرتا رہے اور رشتہ والوں سے سلوک کرے۔ (31)

حدیث ۳۱: صحیح بخاری و مسلم میں جبیر بن مطعم رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ رشتہ کاٹنے والا جنت میں نہیں جائے گا۔ (32)

حدیث ۳۲: بیہقی نے شعب الایمان میں عبد اللہ بن ابی اوفیاء رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو میں نے یہ فرماتے سنا کہ جس قوم میں قاطع رحم ہوتا ہے، اس پر رحمت الہی نہیں اُترتی۔ (33)

حدیث ۳۳: ترمذی و ابوداؤد نے ابوبکرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس گناہ کی سزا دنیا میں بھی جلد ہی دے دی جائے اور اس کے لیے آخرت میں بھی عذاب کا ذخیرہ رہے، وہ بغاوت اور قطع رحم سے بڑھ کر نہیں۔ (34) اور بیہقی کی روایت شعب الایمان میں انھیں سے یوں ہے کہ جتنے گناہ ہیں

(30) سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی تعلیم النسب، الحدیث: ۱۹۸۶، ج ۳، ص ۳۹۳.

(31) المستدرک، کتاب البر والصلة، باب من سرہ أن یدفع عنہ حیتہ السود... إلخ، الحدیث: ۴۳۶۲، ج ۵، ص ۲۲۲.

(32) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة... إلخ، باب صلتہ الرحم... إلخ، الحدیث: ۱۸، (۲۵۵۶)، ص ۱۲۸۳.

(33) شعب الایمان، باب فی صلتہ الارحام، الحدیث: ۷۹۶۲، ج ۶، ص ۲۲۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے یعنی جس قوم میں ایک شخص اپنے عزیزوں کی حق تلفی کرتا ہو اور دوسرے لوگ اس کے اسی گناہ پر مدد کرتے ہوں یا باوجود قدرت کے اسے اس ظلم سے نہ روکتے ہوں تو وہ سب لوگ رحمت سے محروم ہیں گناہ کرتا بھی گناہ ہے باوجود قدرت کے گناہ سے نہ روکتا بھی گناہ ہے یا یہ مطلب ہے کہ اس ایک کی شامت سے یہ سب لوگ رب کی رحمت سے محروم ہو جاتے ہیں لہذا مطلب واضح ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۶۱)

(34) سنن الترمذی، کتاب صفة القيامة، باب: ۱۲۲، الحدیث: ۲۵۱۹، ج ۴، ص ۲۲۹.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے جنی تو تم گناہوں کی سزا آخرت میں ملے گی کیونکہ دنیا دار العمل ہے آخرت دار الجزاء مگر دو گناہ ایسے ہیں جن کی سزا دنیا میں بھی ہے

ان میں سے جس کو اللہ تعالیٰ چاہتا ہے معاف کر دیتا ہے سوا والدین کی نافرمانی کے، کہ اس کی سزا زندگی میں موت سے پہلے دی جاتی ہے۔ (35)

حدیث ۳۴: صحیح بخاری میں ابن عمرو رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: صلہ رحمی اس کا نام نہیں کہ بدلہ دیا جائے یعنی اس نے اس کے ساتھ احسان کیا اس نے اس کے ساتھ کر دیا، بلکہ صلہ رحمی کرنے والے وہ ہے کہ ادھر سے کاٹا جاتا ہے اور یہ جوڑتا ہے۔ (36)

حدیث ۳۵: صحیح مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ ایک شخص نے عرض کی، کہ یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) میری قرابت والے ایسے ہیں کہ میں انہیں ملاتا ہوں اور وہ کانٹے ہیں، میں ان کے ساتھ احسان کراتا ہوں وہ میرے ساتھ برائی کرتے ہیں اور میں ان کے ساتھ حلم سے پیش آتا ہوں اور وہ مجھ پر جہالت کرتے ہیں۔ ارشاد فرمایا: اگر ایسا ہی ہے جیسا تم نے بیان کیا تو تم ان کو گرم راکھ پھنکاتے ہو اور ہمیشہ اللہ (عزوجل) کی طرف سے تمہارے ساتھ ایک مددگار رہے گا، جب تک تمہاری یہی حالت رہے۔ (37)

مل جاتی ہے اور آخرت میں بھی ملے گی: ایک نفی، دوسرا رشتہ داروں کا حق ادا نہ کرنا ان کی حق تلفی۔ نفی کے معنی ظلم بھی ہیں، بادشاہ اسلام پر بغاوت کرنا بھی، تکبر و غرور کرنا بھی یہاں تینوں معنی کا احتمال ہے۔ (مرقات) دیکھا گیا ہے کہ ماں باپ کو ستانے وال دنیا میں بھی چین سے نہیں رہتا در بدر پھنکارا پھرتا ہے، ماں باپ کا خدمتکار دنیا میں عیش، چین، عزت پاتا ہے یہ میرا خود اپنا تجربہ ہے۔ طبرانی کی روایت میں ہے کہ عزیزوں کی حق تلفی خیانت اور جھوٹ اس لائق ہیں کہ ان کی سزا دونوں جہان میں ملے، رشتے داروں کی خدمت میں وہ نیکی ہے جس کی جزا دونوں جہان میں ملتی ہے حتیٰ کہ بعض لوگ فاسق فاجر ہوتے ہیں مگر رشتہ داروں سے سلوک کی وجہ سے ان کی مال و اولاد میں برکت ہوتی ہے۔ (مرقات) یہ بھی تجربہ ہے بعض فاسق ماں باپ کی خدمت کی برکت سے بہت پھلتے پھولتے ہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۲)

(35) شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، فصل فی حقوق الوالدین وما جاء فیہ، الحدیث: ۵۸۸۹، ج ۶، ص ۱۹۷۔

(36) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب لیس الواصل بالکافی، الحدیث: ۵۹۹۱، ج ۴، ص ۹۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

ا۔ یعنی جو شخص، اپنے عزیزوں سے سلوک کرے مگر بدلہ میں کہ وہ کچھ کریں تو اس کی عوض یہ بھی کرے وہ ناقص ہے، کامل رشتے جوڑنے والا وہ ہے جو اپنے عزیزوں کی برائی کا بدلہ بھلائی سے کرے کہ وہ اس پر زیادتی کریں تو یہ سلوک کرے، اس کی تفسیر حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا عمل شریف ہے۔ یوسف علیہ السلام نے بھائیوں کے ظلم سہہ کر ان کی پرورش فرمائی، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "ادفع یا یحییٰ بنی الخسر"۔ غرضیکہ یہ حدیث کمال اخلاق کی تعلیم دے رہی ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۳)

(37) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة... إلخ، باب صلة الرحم... إلخ، الحدیث: ۲۲۔ (۲۵۵۸)، ج ۱، ص ۱۳۸۳۔

حدیث ۳۶: حاکم نے مستدرک میں عقبہ بن عامر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں کہ میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی ملاقات کو گیا۔ میں نے جلدی سے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کا دست مبارک پکڑ لیا اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے میرے ہاتھ کو جلدی سے پکڑ لیا۔ پھر فرمایا: اے عقبہ! دنیا و آخرت کے افضل اخلاق یہ ہیں کہ تم اس کو ملاؤ، جو تمہیں جدا کرے اور جو تم پر ظلم کرے، اسے معاف کر دو اور جو یہ چاہے کہ عمر میں درازی ہو اور رزق میں وسعت ہو، وہ اپنے رشتہ والوں کے ساتھ صلہ کرے۔ (38)



مسائل فقہیہ

صلہ رحم کے معنی رشتہ کو جوڑنا ہے یعنی رشتہ والوں کے ساتھ نیکی اور سلوک کرنا۔ ساری اُمت کا اس پر اتفاق ہے کہ صلہ رحم واجب ہے اور قطع رحم حرام ہے، جن رشتہ والوں کے ساتھ صلہ واجب ہے وہ کون ہیں۔ بعض علما نے فرمایا: وہ ذو رحم محرم ہیں اور بعض نے فرمایا: اس سے مراد ذورحم ہیں، محرم ہوں یا نہ ہوں۔

اور ظاہر یہی قول دوم ہے احادیث میں مطلقاً رشتہ والوں کے ساتھ صلہ کرنے کا حکم آتا ہے قرآن مجید میں مطلقاً ذوی القربیٰ فرمایا گیا مگر یہ بات ضرور ہے کہ رشتہ میں چونکہ مختلف درجات ہیں صلہ رحم کے درجات میں بھی تفاوت ہوتا ہے۔ والدین کا مرتبہ سب سے بڑھ کر ہے، ان کے بعد ذورحم محرم کا، ان کے بعد بقیہ رشتہ والوں کا علی قدر مراتب۔ (1)

مسئلہ ۱: صلہ رحم کی مختلف صورتیں ہیں ان کو ہدیہ و تحفہ دینا اور اگر ان کو کسی بات میں تمھاری اعانت درکار ہو تو اس کام میں ان کی مدد کرنا، انھیں سلام کرنا، ان کی ملاقات کو جانا، ان کے پاس اٹھنا بیٹھنا ان سے بات چیت کرنا ان کے ساتھ لطف و مہربانی سے پیش آنا۔ (2)

مسئلہ ۲: اگر یہ شخص پردیس میں ہے تو رشتہ والوں کے پاس خط بھیجا کرے، ان سے خط و کتابت جاری رکھے تاکہ بے تعلقی پیدا نہ ہونے پائے اور ہو سکے تو وطن آئے اور رشتہ داروں سے تعلقات تازہ کر لے اس طرح کرنے سے محبت میں اضافہ ہوگا۔ (3)

مسئلہ ۳: یہ پردیس میں ہے والدین اسے بلاتے ہیں تو آنا ہی ہوگا، خط لکھنا کافی نہیں ہے۔ یوہیں والدین کو اس کی خدمت کی حاجت ہو تو آئے اور ان کی خدمت کرے، باپ کے بعد دادا اور بڑے بھائی کا مرتبہ ہے کہ بڑا بھائی بمنزلہ باپ کے ہوتا ہے بڑی بہن اور خالہ ماں کی جگہ پر ہیں، بعض علما نے چچا کو باپ کی مثل بتایا اور حدیث عَحَدُ الرَّجُلِ صِنُّوْا بِنِّیْہِ۔ (یعنی آدمی کا چچا باپ کی مثل ہوتا ہے) سے بھی یہی استفادہ ہوتا ہے ان کے علاوہ اوروں کے پاس

(1) رد المحتار، کتاب العظمر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۸۔

(2) در النکاح، کتاب النکاح، الجزء الاول، ص ۳۲۳۔

(3) رد المحتار، کتاب العظمر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۸۔

خط بھیجنا یا ہدیہ بھیجنا کفایت کرتا ہے۔ (4)

مسئلہ ۴: رشتہ داروں سے ناغہ دے کر ملتا رہے یعنی ایک دن ملنے کو جائے دوسرے دن نہ جائے علیٰ ہذا القیاس کہ اس سے محبت و الفت زیادہ ہوتی ہے، بلکہ اقربا سے جمعہ جمعہ ملتا رہے یا مہینہ میں ایک بار اور تمام قبیلہ اور خاندان کو ایک ہونا چاہیے۔ جب حق ان کے ساتھ ہو تو دوسروں سے مقابلہ اور اظہار حق میں سب متحد ہو کر کام کریں، جب اپنا کوئی رشتہ دار کوئی حاجت پیش کرے تو اس کی حاجت روائی کرے، اس کو رد کر دینا قطع رحم ہے۔ (5)

مسئلہ ۵: صلہ رحمی اسی کا نام نہیں کہ وہ سلوک کرے تو تم بھی کرو، یہ چیز تو حقیقت میں مکافاة یعنی ادلا بدلا کرنا ہے کہ اس نے تمہارے پاس چیز بھیج دی تم نے اس کے پاس بھیج دی، وہ تمہارے یہاں آیا تم اس کے پاس چلے گئے۔ حقیقتاً صلہ رحمی یہ ہے کہ وہ کانٹے اور تم جوڑو، وہ تم سے جدا ہونا چاہتا ہے، بے اعتنائی کرتا ہے اور تم اس کے ساتھ رشتہ کے حقوق کی مراعات کرو۔ (6)

مسئلہ ۶: حدیث میں آیا ہے کہ صلہ رحمی سے عمر زیادہ ہوتی ہے اور رزق میں وسعت ہوتی ہے۔ بعض علما نے اس حدیث کو ظاہر پر حمل کیا ہے یعنی یہاں قضا معلق مراد ہے کیونکہ قضا مبرم مل نہیں سکتی۔

(إِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿۲۰۹﴾) (7)

اور بعض نے فرمایا کہ زیادتی عمر کا یہ مطلب ہے کہ مرنے کے بعد بھی اس کا ثواب لکھا جاتا ہے گویا وہ اب بھی زندہ ہے یا یہ مراد ہے کہ مرنے کے بعد بھی اس کا ذکر خیر لوگوں میں باقی رہتا ہے۔ (8)



(4) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، ج ۹، ص ۶۷۸۔

(5) درر الحکام، کتاب الکرامیہ، الجزء الاول، ص ۳۲۳۔

(6) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۸۔

(7) پ ۱۱، یونس: ۴۹۔

ترجمہ کنزالایمان جب ان کا وعدہ آئے گا تو ایک گھڑی نہ پیچھے نہیں نہ آگے بڑھیں۔

(8) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۸۔

اولاد پر شفقت اور یتیمی پر رحمت

احادیث

حدیث ۱: صحیح بخاری و مسلم میں اُم المؤمنین عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی، کہ ایک اعرابی نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں عرض کی، کہ آپ لوگ بچوں کو بوسہ دیتے ہیں ہم انہیں بوسہ نہیں دیتے۔ حضور (ص) اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ اللہ تعالیٰ نے تیرے دل سے رحمت نکال لی ہے تو میں کیا کروں۔ (1)

(1) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب رحمۃ الولد و تکبیلہ... الخ، الحدیث: ۵۹۹۸، ج ۴، ص ۱۰۰۔

یتیم کی کفالت اور اس پر خرچ کرنے کا ثواب

اللہ تعالیٰ ارشاد فرماتا ہے:

وَلَكِنَّ الْإِبْرَءَ مَنْ آمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَ الْمَلَائِكَةِ وَ الْكِتَابِ وَ النَّبِيِّنَ وَ آتَى الْمَالَ عَلَى حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَ الْيَتٰمٰی وَ الْمَسْكِيْنِ

ترجمہ کنز الایمان: ہاں اصل نیکی یہ کہ ایمان لائے اللہ اور قیامت اور فرشتوں اور کتاب اور پیغمبروں پر اور اللہ کی محبت میں اپنا عزیز مال دے رشتہ داروں اور یتیموں اور مسکینوں (کو)۔ (پ 2، البقرہ: 177)

سورہ بقرہ میں ہے:

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلْ مَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ خَيْرٍ فَلِلّٰهِ الدِّينُ وَ الْآخِرَةُ وَ الْيَتٰمٰی وَ الْمَسْكِيْنِ وَ ابْنِ السَّبِيلِ وَ مَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللّٰهَ بِهِ عَلِيْمٌ ﴿215﴾

ترجمہ کنز الایمان: تم سے پوچھتے ہیں کیا خرچ کریں تم فرماؤ جو کچھ مال نیکی میں خرچ کرو تو وہ مال باپ اور قریب کے رشتہ داروں اور یتیموں اور محتاجوں اور راہ گیر کے لیے ہے اور جو بھلائی کر دے شک اللہ اسے جانتا ہے۔ (پ 2، البقرہ: 215)

اور فرماتا ہے:

وَ يُطْعَمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِيْنًا وَ يُتِيْمًا وَ أَسِيْرًا ﴿8﴾ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَ لَا شُكْرًا ﴿9﴾

ترجمہ کنز الایمان: اور کھانا کھلاتے ہیں اس کی محبت پر مسکین اور یتیم اور اسیر کو ان سے کہتے ہیں ہم تمہیں خاص اللہ کے لئے کھانا دیتے ہیں تم سے کوئی بدلہ یا شکر گزاری نہیں مانگتے۔ (پ 29، المدثر: 8-9)

حدیث ۲: صحیح بخاری و مسلم میں عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت ہے، کہتی ہیں: ایک عورت اپنی دو لڑکیاں لے کر میرے پاس آئی اور اس نے مجھ سے کچھ مانگا، میرے پاس ایک کھجور کے سوا کچھ نہ تھا، میں نے وہی دے دی۔ عورت نے کھجور تقسیم کر کے دونوں لڑکیوں کو دے دی اور خود نہیں کھائی جب وہ چلی گئی، حضور نبی کریم علیہ الصلوٰۃ والسلام تشریف لائے، میں نے یہ واقعہ بیان کیا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے ارشاد فرمایا: جس کو خدا نے لڑکیاں دی ہوں، اگر وہ ان کے ساتھ احسان کرے تو وہ جہنم کی آگ سے اس کے لیے روک ہو جائیں گی۔ (2)

یتیم کا مال کھانا

یتیم کا مال کھانا بہت سخت حرام اور گناہ کبیرہ اور جہنم میں لے جانے والا کام ہے۔ قرآن مجید میں اللہ تعالیٰ نے اس کی قہاحت کا بیان کرتے ہوئے ارشاد فرمایا کہ

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتِيمِ ظُلْمًا إِنَّهُمْ يَكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ﴿۱۰﴾

ترجمہ کنزالایمان: وہ جو یتیموں کا مال ناحق کھاتے ہیں وہ تو اپنے پیٹ میں نری آگ بھرتے ہیں اور کوئی دم جاتا ہے کہ بھڑکتے دھڑے (بھڑکتی آگ) میں جائیں گے (پ 4، النساء: 10)

اور دوسری آیت میں ارشاد فرمایا کہ

وَابْتَئُوا الْيَتِيمَ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا الْهَيْبَةَ بِالْقَضِيَّةِ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَى أَمْوَالِكُمْ إِنَّهُ كَانَ خُتُوبًا كَثِيرًا ﴿۲۰﴾

ترجمہ کنزالایمان: اور یتیموں کو ان کے مال دد اور سحرے کے بدلے گندہ لو اور ان کے مال اپنے مالوں میں ملا کر نہ کھا جاؤ بیشک یہ بڑا گناہ ہے۔ (پ 4، النساء: 2)

(2) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة... إلخ، باب فضل الاحسان إلى اليتامى، الحدیث: ۱۳۷۰۔ (۲۶۲۹)، ج ۱۳، ص ۱۳۱۲۔

دو بیٹیاں یا دو بہنیں ہونے کی صورت میں صبر کرتے ہوئے ان کی پرورش کرنے کا ثواب

حضرت سیدنا ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے کہ حضور پاک، صاحب نواک، سبحانہ، قدک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ جس مسلمان کی دو بیٹیاں ہوں اور وہ جب تک اس کے پاس رہیں ان کے ساتھ اچھا سلوک کرتا رہے تو یہ بیٹیاں اسے جنت میں داخل کروادیں گی۔ (سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب بر الوالد... إلخ، رقم: ۳۶۷۰، ج ۴، ص ۱۸۹)

حضرت سیدنا انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ سیدہ المہغنین، رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِنَّ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، جس نے دو بچیوں کے باغ ہونے تک ان کی پرورش کی تو میں اور وہ شخص قیامت کے دن اس طرح آئیں گے۔ پھر آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے اپنی دونوں انگلیاں ملا کر دکھائیں۔ (صحیح مسلم، کتاب البر والصلة... إلخ، باب فضل الاحسان... إلخ، رقم: ۲۶۳۱، ج ۱۵، ص ۱۳۱۵)

ایک روایت میں ہے کہ جس نے دو بچیوں کی پرورش کی میں اور وہ جنت میں اس طرح داخل ہوں گے۔ پھر آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے اپنی دو انگلیوں کی طرف اشارہ کیا۔ (جامع الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی المغنیه، رقم: ۱۹۲۱، ج ۳، ص ۳۶۷) ←

حدیث ۳: امام احمد و مسلم نے عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہتی ہیں: ایک مسکین عورت دو لڑکیوں کو

اور ایک روایت میں ہے کہ جس نے دو یا تین بچیوں کی شادی ہو جانے یا مرجانے تک ان کی پرورش کی تو میں اور وہ شخص جنت میں اس طرح داخل ہوں گے۔ پھر آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے شہادت اور بیچ والی انگلی ملا کر اشارہ کیا۔

(الترغیب والترہیب، کتاب النکاح، باب الترغیب فی النفقة، رقم ۲۴، ج ۳، ص ۴۵)

حضرت سیدنا عوف بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ اللہ عزوجل کے محبوب، دانائے غیب، منزہ عن الغیب صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، جس مسلمان کی تین بیٹیاں ہوں پھر وہ ان کی شادی ہو جانے یا مرجانے تک ان پر خرچ کرتا رہے تو وہ اس کے لئے جہنم سے پردہ ہو جائیں گی۔ ایک عورت نے عرض کیا، اور جس کی دو بیٹیاں ہوں؟ فرمایا اور جس کی دو بیٹیاں ہوں (اسکے لئے بھی یہی فضیلت ہے)۔ (المعجم الکبیر، رقم ۱۰۲، ج ۱۸، ص ۵۶)

حضرت سیدنا ابو سعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ نور کے پیکر، تمام نبیوں کے سرور، دو جہاں کے تافور، سلطانِ بحر و بر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ جس کی تین بیٹیاں یا تین بہنیں ہوں یا دو بیٹیاں یا دو بہنیں ہوں پھر وہ انکی اچھی طرح پرورش کرے اور ان کے معاملے میں اللہ عزوجل سے ڈرتا رہے تو اس کیلئے جنت ہے۔

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی النفقة علی البنات، رقم ۱۹۲۳، ج ۳، ص ۳۶۷)

ایک روایت میں ہے کہ جس کی تین بیٹیاں یا تین بہنیں ہوں اور وہ ان کے ساتھ اچھا سلوک کرے تو وہ جنت میں داخل ہوگا۔

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی النفقة، رقم ۱۹۲۳، ج ۳، ص ۳۶۷)

ایک روایت میں ہے کہ پھر وہ ان کی اچھی تربیت کرے اور ان کے ساتھ اچھا برتاؤ کرے تو اس کے لئے جنت ہے۔

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی النفقة... الخ، رقم ۱۹۱۹، ج ۳، ص ۳۶۶)

حضرت سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ شہنشاہِ خوش خصال، منکرِ حسن و جمال، دافعِ رنج و نذل، صاحبِ بخور و نوال، رسولِ بے مثال، بی بی آمنہ کے لال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، جس نے کسی یتیم کی پرورش کی خواہ وہ یتیم اس کا رشتہ دار ہو یا نہ ہو تو میں اور وہ شخص جنت میں اس طرح بھوں گے۔ پھر آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے اپنی دو انگلیوں کو دکھا کر دکھایا۔

ایک روایت میں ہے کہ جس نے اپنی تین بیٹیوں کی پرورش میں کوشش کی وہ جنت میں ہوگا اور اس کے لئے اللہ عزوجل کی رہ میں دن میں روزہ رکھنے اور رات میں قیام کرنے والے مجاہد کا سا اجر ہے۔

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلة، باب منہ فی الاولاد... الخ، رقم ۱۳۴۹۳، ج ۸، ص ۲۸۸)

ام المؤمنین حضرت سیدتنا عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا فرماتی ہیں کہ میں نے خاتم المرسلین، رحمۃ اللعالمین، شفیع المذنبین، انیس الغریبین، سراب السالکین، محبوب رب العالمین، جناب صادق و امین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو فرماتے ہوئے سنا کہ جس نے اپنی دو بیٹیوں یا دو بہنوں یا دو رشتہ دار بچیوں پر ان دونوں کے اللہ کے فضل سے غنی ہونے تک صبر کرتے ہوئے خرچ کیا تو وہ اس کیلئے

لے کر میرے پاس آئی، میں نے اسے تین کھجوریں دیں، ایک ایک لڑکیوں کو دے دی اور ایک کو مونہہ تک کھانے کے لیے لے گئی کہ لڑکیوں نے اس سے مانگی، اس نے دو ٹکڑے کر کے دونوں کو دے دی۔ جب یہ واقعہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو سنایا ارشاد فرمایا: اللہ تعالیٰ نے اس کے لیے جنت واجب کر دی اور جہنم سے آزاد کر دیا۔ (3)

حدیث ۴: صحیح مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس کی عیال (پرورش) میں دو لڑکیاں بلوغ تک رہیں، وہ قیامت کے دن اس طرح آئے گا کہ میں اور وہ پاس پاس ہوں گے اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے اپنی انگلیاں ملا کر فرمایا کہ اس طرح۔ (4)

حدیث ۵: شرح سنہ میں ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص یتیم کو اپنے کھانے پینے میں شریک کرے، اللہ تعالیٰ اس کے لیے ضرور جنت واجب کر دے گا مگر جبکہ ایسا

آگ سے پردہ ہو جائیں گی۔ (مسند امام احمد بن حنبل، حدیث ام سلمہ، رقم ۲۶۵۷۸، ج ۱۰، ص ۱۷۹)

حضرت سیدنا جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ تاجدار رسالت، شہنشاہ نبوت، خزانہ جود و سخاوت، ہیکل عظمت و شرافت، محبوب رب العزت، محسن انسانیت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، جس کی تین بیٹیاں ہوں اور وہ ان پر رحم کرے اور ان کی کفالت کرے تو اس پر جنت واجب ہو جاتی ہے۔ عرض کیا گیا یا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم! اور اگر دو بیٹیاں ہوں؟ فرمایا، اور اگر دو بیٹیاں ہوں تب بھی۔ راوی کہتے ہیں کہ بعض صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کا خیال ہے کہ اگر ایک بچی کے بارے میں پوچھا جاتا تو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم ضرور انکی تائید فرماتے۔ ایک روایت میں یہ اضافہ ہے، اور انکی شادی کرائے۔

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلة، باب منہ فی الاولاد، ... الخ، ۱۳۳۹، ج ۸، ص ۲۸۷)

حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے کہ نور کے پیکر، تمام نبیوں کے سرور، دو جہاں کے تاجدار، سلطانِ بحر و بر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، جس کی ایک بچی ہو اور وہ اسے زندہ دفن نہ کرے اور نہ ہی اسے حقیر جانے، اور نہ اپنے بیٹے کو اس پر ترجیح دے تو اللہ عز و جل اسے جنت میں داخل فرمائے گا۔ (سنن ابوداؤد، کتاب الادب، باب فی فضل من عال یتیم، رقم ۵۱۳۶، ج ۴، ص ۴۳۵)

حضرت سیدنا ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ سرکار والاخبار، ہم بے کسوٹی کے مددگار، شفیع روز شمار، دو عالم کے مالک و مختار، حبیب پروردگار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، جس کی تین بیٹیاں ہوں اور انکی پرورش کی وجہ سے پہنچنے والی سختی، تنگ دستی اور خوشحالی پر صبر کرے اللہ عز و جل اسے ان بچیوں پر شفقت کی وجہ سے جنت میں داخل فرمائے گا۔ ایک شخص نے عرض کیا، یا رسول اللہ اور جس کی دو بیٹیاں ہوں؟ فرمایا، اور جس کی دو بیٹیاں ہوں اسے بھی۔ ایک شخص نے عرض کیا، یا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم اور جس کی ایک بیٹی

ہو؟ فرمایا، اور جس کی ایک بیٹی ہو اسے بھی۔ (مسند امام احمد بن حنبل، مسند ابی حریرة، رقم ۸۴۴۳، ج ۲، ص ۲۴۴)

(3) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة، ... الخ، باب فضل الاحسان الی البنات، الحدیث: ۱۳۸۔ (۲۶۳۰)، ص ۱۳۱۵۔

(4) ارجع السابق، الحدیث: ۱۳۹۔ (۲۶۳۱)، ص ۱۳۱۵۔

گناہ کیا ہو جس کی مغفرت نہ ہو اور جو شخص تین لڑکیوں یا اتنی ہی بہنوں کی پرورش کرے، ان کو ادب سکھائے، ان پر مہربانی کرے یہاں تک کہ اللہ تعالیٰ انہیں بے نیاز کر دے (یعنی اب ان کو ضرورت باقی نہ رہے)، اللہ تعالیٰ اس کے لیے جنت واجب کر دے گا۔ کسی نے کہا، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) یا دو (یعنی دو کی پرورش میں یہی ثواب ہو جائے)، فرمایا: دو (یعنی ان میں بھی وہی ثواب ہے) اور اگر لوگوں نے ایک کے متعلق کہا ہوتا تو حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) ایک کو بھی فرما دیتے۔ اور جس کی گریختین کو اللہ (عزوجل) نے دور کر دیا، اس کے لیے جنت واجب ہے۔ دریافت کیا گیا گریختین کیا ہیں؟ فرمایا: آنکھیں۔ (5)

حدیث ۶: ابو داؤد نے عوف بن مالک اشجعی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ میں اور وہ عورت جس کے رخسارے میلے ہیں، دونوں جنت میں اس طرح ہوں گے۔ (6) یعنی جس طرح کلمہ اور بیچ کی انگلیاں پاس پاس ہیں۔ اس سے مراد وہ عورت ہے جو منصب و جمال والی تھی اور بیوہ ہو گئی اور اس نے یتیموں کی خدمت کی، یہاں تک کہ وہ جدا ہو جائیں۔ (یعنی بڑے ہو جائیں یا مرجائیں۔)

حدیث ۷: امام احمد و حاکم و ابن ماجہ نے سراقہ بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: کیا میں تم کو یہ نہ بتا دوں کہ افضل صدقہ کیا ہے، وہ اپنی اس لڑکی پر صدقہ کرنا ہے، جو تمھاری طرف واپس ہوئی (یعنی اس کا شوہر مر گیا یا اس کو طلاق دے دی اور باپ کے یہاں چلی آئی) تمھارے سوا اس کا کمانے والا کوئی نہیں ہے۔ (7)

حدیث ۸: ابو داؤد نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس کی لڑکی ہو اور وہ اسے زندہ درگور نہ کرے اور اس کی توہین نہ کرے اور اولاد ذکر کو اس پر ترجیح نہ دے، اللہ تعالیٰ اس کو جنت میں داخل فرمائے گا۔ (8)

حدیث ۹: ترمذی نے جابر بن سمرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ کوئی شخص اپنی اولاد کو ادب دے، وہ اس کے لیے ایک صاع صدقہ کرنے سے بہتر ہے۔ (9)

(5) شرح السنہ، کتاب البر والصلة، باب ثواب کافل یتیم، الحدیث: ۳۳۵۱، ج ۶، ص ۴۵۲۔

ومشكاة المصابيح، کتاب الآداب، باب الشفقة والرحمة علی الخلق، الحدیث: ۴۹۷۵، ج ۳، ص ۶۹۔

(6) سنن أبی داؤد، کتاب الادب، باب فی فضل من عال یتامی، الحدیث: ۵۱۴۹، ج ۴، ص ۴۳۵۔

(7) سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب بر الوالد... إلخ، الحدیث: ۳۶۶۷، ج ۴، ص ۱۸۸۔

(8) سنن أبی داؤد، کتاب الادب، باب فی فضل من عال یتامی، الحدیث: ۵۱۴۶، ج ۴، ص ۴۳۵۔

(9) سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی أدب الولد، الحدیث: ۱۹۵۸، ج ۳، ص ۳۸۲۔

حدیث ۱۰: ترمذی و بیہقی نے بروایت ایوب بن موسیٰ عن ابیہ عن جدہ روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ باپ کا اولاد کو کوئی عطیہ ادب حسن سے بہتر نہیں۔ (10)

حدیث ۱۱: ترمذی و حاکم نے عمرو بن سعید بن العاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: والد کا اپنی اولاد کو اس سے بڑھ کر کوئی عطیہ نہیں، کہ اسے اچھے آداب سکھائے۔ (11)

حدیث ۱۲: ابن ماجہ نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اپنی اولاد کا اکرام کرو اور انھیں اچھے آداب سکھاؤ۔ (12)

حدیث ۱۳: ابن النجار نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: باپ کے ذمہ بھی اولاد کے حقوق ہیں، جس طرح اولاد کے ذمہ باپ کے حقوق ہیں۔ (13)

حدیث ۱۴: طبرانی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اپنی اولاد کو برابر دو، اگر میں کسی کو فضیلت دیتا تو لڑکیوں کو فضیلت دیتا۔ (14)

حدیث ۱۵: طبرانی نے نعمان بن بشیر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ عطیہ میں اپنی اولاد کے درمیان عدل کرو، جس طرح تم خود یہ چاہتے ہو کہ وہ سب تمھارے ساتھ احسان و مہربانی میں عدل کریں۔ (15)

حدیث ۱۶: ابن النجار نے نعمان بن بشیر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ اس کو پسند کرتا ہے کہ تم اپنی اولاد کے درمیان عدل کرو، یہاں تک کہ بوسہ لینے میں۔ (16)

حدیث ۱۷: صحیح بخاری میں سہل بن سعد رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو شخص یتیم کی کفالت کرے وہ یتیم اسی گھر کا ہو یا غیر کا، میں اور وہ دونوں جنت میں اس طرح ہوں گے۔ حضور

(10) المرجع السابق، الحدیث: ۱۹۵۹، ج ۳، ص ۳۸۳۔

(11) المستدرک للحاکم، کتاب الادب، باب فضل تادیب الاولاد، الحدیث: ۷۷۵۳، ج ۵، ص ۷۷۳۔

(12) سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب بر الوالد... الخ، الحدیث: ۳۶۷۱، ج ۴، ص ۱۸۹۔

(13) کنز العمال، کتاب النکاح، رقم: ۴۵۳۳۶، ج ۱۶، ص ۱۸۴۔

(14) المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۱۹۹۷، ج ۱۱، ص ۲۸۰۔

(15) کنز العمال، کتاب النکاح، رقم: ۴۵۳۳۹، ج ۱۶، ص ۱۸۴۔

(16) کنز العمال، کتاب النکاح، رقم: ۴۵۳۴۲، ج ۱۶، ص ۱۸۵۔

(صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے کلمہ کی انگلی اور بیچ کی انگلی سے اشارہ کیا اور دونوں انگلیوں کے درمیان تھوڑا سا فاصلہ کیا۔ (17)

حدیث ۱۸: ابن ماجہ نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: مسلمانوں میں سب سے بہتر گھروہ ہے جس میں کوئی یتیم ہو اور اس کے ساتھ احسان کیا جاتا ہو اور مسلمانوں میں سب سے برا وہ گھر ہے، جس میں یتیم ہو اور اس کے ساتھ برائی کی جاتی ہو۔ (18)

حدیث ۱۹: امام احمد و ترمذی نے ابو امامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص یتیم کے سر پر محض اللہ (عز و جل) کے لیے ہاتھ پھیرے تو جتنے بالوں پر اس کا ہاتھ گزرے گا، ہر بال کے مقابل میں اس کے لیے نیکیاں ہیں اور جو شخص یتیم لڑکی یا یتیم لڑکے پر احسان کرے یں اور وہ جنت میں (دو انگلیوں کو ملا کر فرمایا) اس طرح ہوں گے۔ (19)

حدیث ۲۰: امام احمد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ ایک شخص نے اپنی دس کی سختی کی

(17) صحیح ابودری، کتاب الطلاق، باب اللعان... راجع، الحدیث: ۵۳۰۴، ج ۳، ص ۴۹۷۔

صحیح مسلم، کتاب الزحد... راجع، باب فضل الاحسان إلی الارملة... راجع، الحدیث: ۴۲۔ (۲۹۸۳)، ص ۱۵۹۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یتیم وہ نابالغ انسان ہے جس کا والد فوت ہو چکا ہو خواہ لڑکا ہو یا لڑکی لفظ یتیم ان دونوں کو شامل ہے۔ (مرقات) جانوروں میں یتیم وہ چھوٹا بچہ جس کی ماں مر گئی ہو اور موتی وہ یتیم کہلاتا ہے جو اپنی سیپ میں اکیلا ہو یہاں انسان یتیم مراد ہے لڑکا یا لڑکی۔

۲۔ یعنی وہ یتیم خواہ اپنا پوتا تو اس کا بھتیجا بھانجا ہو یا کوئی غیر کا بچہ جس سے یہ رشتہ داریاں نہ ہوں۔

۳۔ یعنی جیسے ان دونوں انگلیوں میں کوئی فاصلہ نہیں ایسے ہی قیامت میں مجھ میں اور اس میں کوئی فاصلہ اور دوری نہ ہوگی اس کو مجھ سے بہت ہی قرب نصیب ہوگا۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۸۲)

(18) سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب حق الیتیم، الحدیث: ۳۶۷۹، ج ۴، ص ۱۹۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یتیم سے سلوک کی بہت صورتیں ہیں: اس کی پرورش، اس کے کھانے پینے کا انتظام، اس کی تعلیم و تربیت، اسے دین دار نمازی بنانا سب ہی اس میں داخل ہے۔ غرض کہ جو سلوک اپنے بچے سے کیا جاتا ہے وہ یتیم سے کیا جاوے یہ کلمہ بہت ہی جامع ہے۔

۲۔ برے سلوک میں مذکورہ چیزوں کی مقابل تمام چیزیں داخل ہیں، یتیم بچہ کو تعلیم تربیت کے لیے طمانچہ وغیرہ مارنا ظلم نہیں بلکہ اس کی اصلاح ہے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۰۳)

(19) المسند امام احمد بن حنبل، حدیث ابی امامۃ الباہلی، الحدیث: ۲۲۲۱۵، ۲۲۲۳۷، ج ۸، ص ۲۷۲، ۳۰۰۔

شکایت کی۔ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: یتیم کے سر پر ہاتھ پھیرو اور مسکین کو کھانا کھلاؤ۔ (20)
حدیث ۲۱: طبرانی نے اوسط میں عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ
والہ وسلم) نے فرمایا کہ لڑکا یتیم ہو تو اس کے سر پر ہاتھ پھیرنے میں آگے کو لائے اور بچہ کا باپ ہو تو ہاتھ پھیرنے میں
گردن کی طرف لے جائے۔ (21)



حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ہاتھ پھیرنا محبت کے ساتھ ہو یا اس سے مراد ہے مطلقاً معمولی سی مہربانی حقیر سی محبت مگر پہلے معنی زیادہ موزوں ہیں، یتیم کے سر پر محبت
سے ہاتھ پھیرنا بھی عبادت ہے۔

۲۔ حدیث بالکل ظاہر معنی پر ہے کسی تادیل کی ضرورت نہیں واقعی جو شخص اپنے عزیز یا اجنبی یتیم کے سر پر ہاتھ پھیرے محبت و شفقت کا یہ
محبت صرف اللہ رسول کی رضا کے لیے ہو تو ہر بال کے عوض اسے نیکی ملے گی۔ یہ ثواب تو خالی ہاتھ پھیرنے کا ہے جو اس پر مال خرچ
کرے، اس کی خدمت کرے، اسے تعلیم و تربیت دے سوچ لو کہ اس کا ثواب کتنا ہوگا۔

۳۔ یعنی وہ جنت میں میرا ساتھی یا پڑوسی ہوگا جیسے بادشاہ کے خدام بادشاہ کی کوٹھی میں ہی رہتے ہیں مگر خدام ہو کر ایسے ہی وہ بھی میرے
ساتھ رہے گا مگر میرا امتی غلام ہو کر۔ یہاں بھی احسن مطلق ہے یتیم بچے سے کسی قسم کا سلوک ہو ثواب کا باعث ہے۔ سب سے بڑی بات یہ
ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم خود یتیم تھے اس لیے یتیم کی خدمت بڑی ہی اعلیٰ ہے۔ مصرع: یتیم ہو کے یتیموں کو پالنے والے۔ دو انگلیوں
سے مراد کلمہ کی اور بیچ کی انگلی مراد ہے جن میں فاصلہ بالکل نہیں۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲، ص ۸۰۳)

(20) المسند، م احمد بن حنبل، مسند ابی ہریرۃ الحدیث: ۹۰۲۸، ج ۳، ص ۳۳۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ سبحان اللہ! عجیب علاج ہے یتیموں مسکینوں پر مہربانی اللہ تعالیٰ کی رحمت کا ذریعہ ہے اور اللہ کی رحمت سے دل نرم ہوتا ہے، رب
فرماتا ہے: "أَوْ اِصْغُرْ فِیْ یَوْمِ ذِی الْقَعْبَةِ یَیُّمًا اِذَا مَفْقَرَتُهُ اَوْ مَسْکِیْنًا اِذَا مَلُوْرَتُهُ"۔ نرمی قلب اللہ کی بڑی رحمت ہے علاج باضد
ہوتا ہے تکبر کا علاج تواضع سے، بغل کا علاج سخاوت سے ہوتا ہے ایسے ہی سختی دل کا علاج غریبوں یتیموں پر رحم سے ہے۔
(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲، ص ۷۱۸)

(21) المعجم الاوسط، باب الالف، الحدیث: ۱۲۷۹، ج ۱، ص ۳۵۱۔

پڑوسیوں کے حقوق

اللہ عزوجل فرماتا ہے:

(وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَ بِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ
وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا
يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا ﴿٢٠١﴾) (1)

اور اللہ (عزوجل) کی عبادت کرو اور اس کے ساتھ کسی کو شریک نہ کرو، ماں باپ سے بھلائی کرو اور رشتہ داروں اور یتیموں اور محتاجوں اور پاس کے ہمسایہ اور دور کے ہمسایہ اور کروٹ کے ساتھی اور راہ گیر اور اپنے باندی غلام سے، بے شک اللہ (عزوجل) کو خوش نہیں آتا کوئی اترانے والا، بڑائی مارنے والا۔



احادیث

حدیث ۱: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: خدا کی قسم! وہ مومن نہیں، خدا کی قسم وہ مومن نہیں، خدا کی قسم وہ مومن نہیں۔ عرض کی گئی، کون یا رسول اللہ! (صی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم) فرمایا: وہ شخص کہ اس کے پروسی اس کی آفتوں سے محفوظ نہ ہوں۔ (۱) یعنی جو اپنے پروسیوں کو تکلیفیں دیتا ہے۔

حدیث ۲: صحیح مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: وہ جنت میں نہیں جائے گا، جس کا پروسی اس کی آفتوں سے امن میں نہیں ہے۔ (۲)

حدیث ۳: صحیح بخاری و مسلم میں حضرت ام المومنین عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم نے فرمایا کہ جبریل علیہ السلام مجھے پروسی کے متعلق برابر وصیت کرتے رہے، یہاں تک کہ مجھے گمان

(۱) صحیح بخاری، کتاب الادب، باب اثم من لا آمن جاره بوائقه، الحدیث: ۶۰۱۶، ج ۴، ص ۱۰۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ تین بار فرمانا تاکید کے لیے ہے، لایؤمن میں کمال ایمان کی نفی ہے یعنی مومن کامل نہیں ہو سکتا نہیں ہو سکتا نہیں ہو سکتا۔
۲۔ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کی وضاحت پہلے ہی نہ فرمادی بلکہ سائل کے پوچھنے پر بتایا تا کہ سننے والوں کے دل میں یہ بات بیٹھ جاوے جو بات انتظار اور پوچھ گچھ کے بعد معلوم ہو وہ بہت دلنشین ہوتی ہے اگرچہ ہر مسلمان کو اپنی شر سے بچنا ضروری ہے مگر پڑوسی کو بچنا نہایت ہی ضروری کہ اس سے ہر وقت کام رہتا ہے وہ ہمارے اچھے اخلاق کا زیادہ مستحق ہے، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ" وَالْجَارِ الْجُنُبِ"۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۹۲)

(۲) صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان تحریم ایذاء الجار، الحدیث: ۷۳۔ (۴۶)، ص ۴۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی صالحین و رنجات پانے والوں کے ساتھ وہ جنت میں نہ جاوے گا اگرچہ سزا پا کر بہت عرصہ کے بعد وہاں پہنچ جاوے لہذا یہ حدیث اس حدیث کے خلاف نہیں کہ "من قال لا اله الا الله دخل الجنة"۔

۲۔ افسوس کہ یہ سبق آج بہت سے مسلمان بھول گئے اب تو ان کے تیر کا پہلا شکار ان کا پڑوسی ہی ہوتا ہے۔

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۹۳)

ہوا کہ پروسی کو وارث بنا دیں گے۔ (3)

حدیث ۴: ترمذی و دارمی و حاکم نے عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اللہ تعالیٰ کے نزدیک ساتھیوں میں وہ بہتر ہے، جو اپنے ساتھی کا خیر خواہ ہو اور پروسیوں میں اللہ (عزوجل) کے نزدیک وہ بہتر ہے، جو اپنے پروسی کا خیر خواہ ہو۔ (4)

حدیث ۵: حاکم نے مستدرک میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص اللہ (عزوجل) اور پچھلے دن (قیامت) پر ایمان رکھتا ہے، وہ اپنے پروسی کا اکرام کرے۔ (5)

(3) صحیح البخاری، کتاب الادب، باب الوصایا بالجار، الحدیث: ۶۰۱۳، ج ۴، ص ۱۰۴.

حکیم الامت کے مدنی پھول

یہاں وصیت سے مراد اصطلاحی وصیت نہیں بلکہ تاکید فی حکم مراد ہے اور حکم کس کا حکم الحاکمین کا نہ کہ حضرت جبریل کا، کہ حضرت جبریل حضور کے حاکم نہیں حضور کے خادم ہیں رب کی طرف سے فرمان رساں فیضان رساں ہیں۔ یوصینی سے مراد ہیں حضور کی امت کے لیے حضور کو حکم پہنچاتے رہے کہ آپ اپنی امت کو یہ حکم پہنچادو۔

۲۔ یعنی مجھے یہ خیال ہوا کہ اللہ تعالیٰ مسلمانوں کو پڑوسی کی مالی میراث میں شریک کر دیں گے کہ قرابت کی طرح یہ وصیت بھی میراث پانے کا ذریعہ ہو جائے گی حضور کی میراث مراد نہیں کہ حضرات انبیاء کرام کی مالی میراث کسی کو نہیں ملتی۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۹۳)

(4) سنن اترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی حق الجوار، الحدیث: ۱۹۵۱، ج ۳، ص ۷۹.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب یہاں ساتھی سے مراد عام ساتھی ہیں مدرسہ کے ساتھی، سفر کے ساتھی، گھر کے ساتھی۔ غرض کہ مسلمان کو چاہیے کہ ہر ساتھی کے ساتھ اچھا سلوک کرے، ان کی خیر خواہی کرے، ان سے اچھا برتاؤ کرنا، انہیں بری باتوں سے روکنا، اچھی راہ دکھانا سب ہی اس میں داخل ہے۔

۳۔ عبادات کی درستی سے بھی زیادہ اہم ہے معاملات کی درستی، پڑوسی سے ہر وقت معاملہ رہتا ہے اس لیے اس سے اچھا برتاؤ کرنا بہت ضروری ہے، اس کے بچوں کو اپنی اولاد سمجھے، اس کی عزت و ذلت کو اپنی عزت و ذلت سمجھے، پڑوسی اگر کافر بھی ہو تب بھی پڑوسی کے حقوق دانا کرے۔ حضرت بایزید بسطامی رحمۃ اللہ علیہ کا یہودی پڑوسی سفر میں گیا اس کے بال بچے گھر رہ گئے رات کو یہودی کا بچہ روتا تھا آپ نے پوچھا کہ بچہ کیوں روتا ہے یہودن بولی گھر میں چراغ نہیں ہے بچہ اندھیرے میں گھبراتا ہے اس دن سے آپ روزانہ چراغ میں خوب تیل بھر کر روشن کر کے یہودی کے گھر بھیج دیا کرتے تھے، جب یہودی لوٹا اس کی بیوی نے یہ واقعہ سنایا یہودی بولا کہ جس گھر میں بایزید کا چراغ

آگیا وہاں اندھیرا کیوں رہے وہ سب مسلمان ہو گئے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۱۷)

(۵) مستدرک للحیثم، کتاب البر والصلة، باب خیر الاصحاب عند اللہ... إلخ، الحدیث: ۷۳۷۸، ج ۵، ص ۲۲۸.

حدیث ۶: ابن ماجہ نے عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں: ایک شخص نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی خدمت میں عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) مجھے یہ کیونکر معلوم ہو کہ میں نے اچھا کیا یا برا کیا؟ فرمایا: جب تم اپنے پروسیوں کو یہ کہتے سنو کہ تم نے اچھا کیا ہے تو بے شک تم نے اچھا کیا اور جب یہ کہتے سنو کہ تم نے برا کیا تو بے شک تم نے برا کیا ہے۔ (6)

حدیث ۷: بیہقی نے شعب الایمان میں عبدالرحمن بن ابی قراد رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ ایک روز نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے وضو کیا۔ صحابہ کرام (رضوان اللہ تعالیٰ علیہم) نے وضو کا پانی لے کر مونہ وغیرہ پر مسح کرنا

حکیم الامت کے مدنی پھول

۲۔ یعنی اس کو تکلیف دینے کے لیے کوئی کام نہ کرے۔ فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے پڑوسی کے گیارہ حق ہیں: (۱) جب اسے تمہاری مدد کی ضرورت ہو اس کی مدد کرو (۲) اگر معمولی قرض مانگے دے دو (۳) اگر وہ غریب ہو تو اس کا خیال رکھو (۴) وہ بیمار ہو تو مزاج پر سی بلکہ ضرورت ہو تو رواری کرو (۵) مرجائے تو جنازہ کے ساتھ جاؤ (۶) اس کی خوشی میں خوشی کے ساتھ شرکت کرو (۷) اس کے غم و مصیبت میں ہمدردی کے ساتھ شریک رہو (۸) اپنا مکان اتنا اونچا نہ بناؤ کہ اس کی ہوا روک دو مگر اس کی اجازت سے (۹) گھر میں پھل فروٹ آئے تو اسے ہریشہ بھیجتے رہو نہ بھیج سکو تو خفیہ رکھو اس پر ظاہر نہ ہونے دو، تمہارے بچے اس کے بچوں کے سامنے نہ کھائیں (۱۰) اپنے گھر کے دھوئیں سے اسے تکلیف نہ دو (۱۱) اپنے گھر کی چھت پر ایسے نہ چڑھو کہ اس کی بے پردگی ہو۔ قسم اس کی جس کے قبضہ میں میری جان ہے پڑوسی کے حقوق وہ ہی ادا کر سکتا ہے جس پر اللہ رحم فرمائے۔ (مرقات) کہا جاتا ہے ہمسایا اور ماں جایا برابر ہونے چاہئیں۔ افسوس! مسلمان یہ باتیں بھول گئے۔ قرآن کریم میں پڑوسی کے حقوق کا ذکر فرمایا بہر حال پڑوسی کے حقوق بہت ہیں ان کے ادا کی توفیق رب تعالیٰ سے مانگئے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۱)

(6) سنن ابن ماجہ، کتاب الزہد، باب اللئاء الحسن، الحدیث: ۴۲۲۳، ج ۴، ص ۷۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی مجھے تو اپنے سارے کام ہی اچھے معلوم ہوتے ہیں مگر واقعہ میں اچھے کام اور برے کام کی علامت کیا ہے، یہاں کام سے مراد معاملات ہیں۔ عقائد، عبادات میں کسی سے اچھا برا کہنے کا اعتبار نہیں۔

۲۔ یعنی معاملات میں اچھائی برائی کی علامت یہ ہے کہ تمہارے سارے پڑوسی قدرتی طور پر تم کو اچھا کہیں یا برا کہیں قدرتی بات ہے کہ بعض بندوں کے لیے خود بخود منہ سے اچھائی نکلتی ہے حضور فرماتے ہیں اتم مہداء اللہ فی الارض۔ مسلمانوں کی زبان رب کا قلم ہے پڑوسی چونکہ ڈھکے حالات سے خبردار ہوتے ہیں اس لیے یہاں پڑوسیوں کی قید لگائی گئی ورنہ اپنے متعلق خود فیصلہ نہ کرو کہ ہم اچھے ہیں یا برے، مخلوق کی زبان سے وہی نکلتا ہے جو رب نکلواتا ہے۔ آج بعض قبر والوں کو لوگ ولی اللہ کہہ رہے ہیں ان کے مزارات پر میلے لگے ہوتے ہیں حالانکہ کسی نے ان کو دیکھا بھی نہیں یہ ہے خلق کی زبان۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۱۸)

شروع کر دیا۔

حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: کیا چیز تمہیں اس کام پر آمادہ کرتی ہے؟ عرض کی، اللہ و رسول (عزوجل و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی محبت، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: جس کی خوشی یہ ہو کہ اللہ و رسول (عزوجل و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) سے محبت کرے یا اللہ و رسول (عزوجل و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) اس سے محبت کریں، وہ جب بات بولے سچ بولے اور جب اس کے پاس امانت رکھی جائے تو امانت ادا کر دے اور جو اس کے جوار میں ہو، اس کے ساتھ احسان کرے۔ (7)

حدیث ۸: بیہقی نے شعب الایمان میں ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہتے ہیں: میں نے رسول

(7) شعب الایمان، باب فی تعظیم النبی صلی اللہ علیہ وسلم و اجلالہ و توقیرہ، الحدیث: ۱۵۳۳، ج ۲، ص ۲۰۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ تبرک کے لیے کیونکہ حضرات صحابہ کرام ہمیشہ حضور کے وضو کا پانی برکت کے لیے اپنے ہاتھوں اور منہ پر ملتے تھے کہ یہ غسلہ جسم اطہر سے مس ہوا ہے۔ حضرت جبریل علیہ السلام کی گھوڑی کی ٹاپ کی خاک نے سونے کے بھڑے میں زندگی پھونک دی تو جو پانی حضور کے عضو شریف سے مس ہو جائے اس کی تاثیر کا کیا پوچھنا۔ ظاہر یہ ہے کہ اس پانی سے وہ پانی مراد ہے جو اعضاء شریف سے گرتا تھا غسلہ شریف اور ہو سکتا ہے کہ اس سے وضو کا بقیہ پانی مراد ہو پہلا احتمال قوی ہے دیکھو اشعہ۔ ہمارے وضو و غسل کا غسلہ استنہ کے ماقبل نہیں، حضور کا غسلہ طیب ظاہر بلکہ پاک کرنے والا ہے کہ ہمارا غسلہ ہمارے گناہ دھو کر نکالتا ہے حضور کا غسلہ نور لے کر گرتا ہے۔

۲۔ حضور انور کا یہ سوال اگلے مضمون کی تمہید ہے ورنہ حضور انور کو تو ہر ایک دل کا ہر حال معلوم ہے۔ شعر

اے فردغت صبح آثار و دھور
چشم تو بیندہ مافی الصدور

۳۔ یعنی حضور ہمارے محبوب ہمارے دلوں کے چین ہیں جو پانی حضور کے عضو سے مس ہو وہ ہی ہم کو پیارا ہے اس لیے اسے چومتے ہیں۔
۴۔ یعنی ہمارے غسلہ کو تبرک استعمال کرنا ممنوع یا بے کار نہیں بلکہ اس سے برکت حاصل ہوتی ہے مگر اللہ رسول کی محبت کے لیے صرف یہ عمل کافی نہیں کہ یہ کام نفس پر مگر اس و بھاری نہیں یہ کام تو منافقین بھی کر لیتے ہیں اللہ رسول کی محبت کے لیے ان کی اطاعت و فرمانبرداری بھی ضروری ہے کہ وہ ہی نفس پر گراں ہے۔

۵۔ چونکہ یہ تین کام درستی معاملات کی جز ہیں اس لیے ان کا ذکر فرمایا۔ جو مسلمان معاملات درست کر لے گا اسے عبادات درست کرنا آسان ہوگا اور معاملات میں زبان سچی ہر قسم کی امانت کی ادائیگی اپنے پڑوسیوں سے اچھا سلوک بڑی ہی اہم چیزیں ہیں۔ کسی کو صرف اس کی عبادات اور کثرت نوافل سے نہ آزماؤ بلکہ معاملات سے آزماؤ، معاملات درست ہیں تو واقعی کامل ہے آج بہت سے مسلمان ان ہی تین باتوں میں فیل ہو جاتے ہیں، نمازی حاجی بہت ہیں مگر سچے امتی تھوڑے، حضور صلی اللہ علیہ وسلم اعلان نبوت سے پہلے ہی صادق و عدا مین کے قنب سے پکارے جاتے تھے کفار عرب ان القاب سے حضور کو یاد کرتے تھے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ، لمصباح، ج ۲، ص ۸۸)

اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو یہ فرماتے سنا: مومن وہ نہیں جو خود پیٹ بھر کھائے اور اس کا پردی اس کے پہلو میں بھوکا رہے۔ (8) یعنی مومن کامل نہیں۔

حدیث ۹: طبرانی نے جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: جب کوئی شخص ہانڈی پکائے تو شور باز یادہ کرے اور پردی کو بھی اس میں سے کچھ دے۔ (9)

حدیث ۱۰: دیلمی نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: اسے عائشہ! پردی کا بچہ آجائے تو اس کے ہاتھ میں کچھ رکھ دو کہ اس سے محبت بڑھے گی۔ (10)

حدیث ۱۱: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ پردی تمھاری دیوار پر کڑیاں رکھنا چاہے تو اسے منع نہ کرو۔ (11) یہ حکم دیانت کا ہے، قضاء اس کو منع کر سکتا ہے۔

حدیث ۱۲: امام احمد و بیہقی نے شعب الایمان میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ ایک شخص نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) فلانی عورت کے متعلق ذکر کیا جاتا ہے کہ نماز و روزہ و صدقہ کثرت سے کرتی ہے مگر یہ بات بھی ہے کہ وہ اپنے پردیوں کو زبان سے تکلیف پہنچاتی ہے، فرمایا: وہ جہنم میں ہے۔ انھوں نے کہا، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) فلانی عورت کی نسبت زیادہ ذکر کیا جاتا ہے کہ اس کے روزہ و صدقہ و نماز میں کمی ہے (یعنی نوافل)، وہ پنیر کے ٹکڑے صدقہ کرتی ہے اور اپنی زبان سے پردیوں کو ایذا نہیں دیتی، فرمایا: وہ جنت میں ہے۔ (12)

(8) شعب الایمان، باب فی الزکاۃ، فصل فی کرہیۃ اساک الفضل... إلخ، الحدیث: ۸۹، ج ۳، ص ۲۲۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب اگر اسے اپنے پردی کی بھوک و محتاجی کی خبر ہو تب تو یہ بہت بے مروت ہے اور اگر خبر نہیں تو بہت لاپرواہ ہے۔ مومن کو چاہیے کہ اپنے عزیزوں قرابت داروں، پردیوں محلہ والوں کے حالات کی خبر رکھے، اگر کسی کی حاجت مندی کا پتہ چلے تو ان کی حاجت روائی کو غنیمت جان کر کرے۔ (مرآۃ المتاجع شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۲۱)

(9) المعجم الامامی، باب الرءاء، الحدیث: ۳۵۹۱، ج ۲، ص ۳۷۹۔

(10) الفردوس بماثور الخطاب، الحدیث: ۸۶۳۰، ج ۵، ص ۴۲۷۔

(11) صحیح البخاری، کتاب المنظام، باب لا یمنع جار جارہ أن یغزو شہد فی جدارہ، الحدیث: ۲۳۶۳، ج ۲، ص ۳۲۲۔

(12) المسند لامام احمد بن حنبل، مسند ابی ہریرۃ، الحدیث: ۹۶۸۱، ج ۳، ص ۴۳۱۔

و شعب الایمان، باب فی ذکرام الجار، الحدیث: ۹۵۳۵، ۹۵۳۶، ج ۷، ص ۷۸-۷۹۔

حدیث ۱۳: امام احمد و بیہقی نے عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ نے تمہارے مابین اخلاق کی اسی طرح تقسیم فرمائی جس طرح رزق کی تقسیم فرمائی، اللہ تعالیٰ دنیا اسے بھی دیتا ہے جو اسے محبوب ہو اور اسے بھی جو محبوب نہیں اور دین صرف اسی کو دیتا ہے جو اس کے نزدیک پیارا ہے، لہذا جس کو خدا نے دین دیا اسے محبوب بنالیا، قسم ہے اس کی جس کے دست قدرت میں میری جان ہے! بندہ مسلمان نہیں ہو سکتا جب تک اس کا دل اور زبان مسلمان نہ ہو۔ (13) یعنی جب تک دل میں تصدیق اور زبان سے اقرار نہ ہو اور مومن نہیں ہوتا جب تک اس کا پرہیز اس کی آفتوں سے امن میں نہ ہو، اسی کی مثل حاکم نے مستدرک میں روایت کی۔

حدیث ۱۴: حاکم نے مستدرک میں نافع بن عبد الحارث رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ شاید کہنے والے نے اس بی بی کا نام لیا ہوگا مگر راوی کو یاد نہ رہا یا عمدہ نام نہ لیا تاکہ اس مؤمنہ کی رسوائی ہو۔ زبان کا ذکر اس سے کیا اکثر لوگ دوسروں کو زبانی تکلیف دیتے ہیں لڑنا بھڑنا غیبت چغلی کرنا وغیرہ زبان کا زخم سان یعنی بھالے کے زخم سے زیادہ تکلیف دہ ہوتا ہے کہ یہ مرام سے بھر جاتا ہے مگر وہ نہیں بھرتا۔ حضرت علی فرماتے ہیں:

جراحات السنان لها التیام ولا یلتام ما جرح اللسان

کسی اردو شاعر نے اس کا ترجمہ یوں کیا ہے:

چھری کا تیر کا تیر کا تیر کا تو گھاؤ بھرا لگا جو زخم زبان کا رہا ہمیشہ ہرا

۲۔ یعنی یہ کام دوزخیوں کے ہیں اگر یہ عبادت گزار بی بی اپنی حیز زبان سے توبہ نہ کرے گی تو اول دوزخ میں جاوے گی، نوافل سے لوگوں کے حق معاف نہیں ہوتے، پھر سزا بھگت کر جنت میں جاوے گی لہذا یہ حدیث اس قانون کے خلاف نہیں کہ صحابہ تمام ہی عادل ہیں کوئی فاسق نہیں، بعض حضرات صحابہ سے گناہ ہوئے مگر وہ قائم نہ رہے توبہ کر کے دنیا سے گئے۔

۳۔ یعنی وہ نفل نماز نفل صدقے کم کرتی ہے فرضی نماز میں کمی مراد نہیں کہ یہ توفیق ہے صحابہ کرام فسق سے محفوظ ہیں۔

۴۔ مطلب یہ ہے کہ وہ بی بی صاحبہ مسکین غریب ہیں معمولی چیز یعنی کچھ پنیر ہی خیرات کر سکتی ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ نفل عبادت کی کمی مراد ہے کہ پنیر کے ٹکڑے قطرے زکوٰۃ وغیرہ میں خیرات نہیں کیے جاتے صرف نفل صدقات میں دیئے جاتے ہیں۔

۵۔ اس فرمان عالی سے ہم لوگوں کے کان کھل جانے چاہئیں ہم میں سے بہت لوگ اصول چھوڑ کر فضول میں کوشش کرتے ہیں فرائض کی پرواہ نہیں نوافل پر زور، معاملات خراب وظیفوں چلوں کا اہتمام، دوا کے ساتھ پرہیز ضروری ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۲۲)

تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: مرد مسلم کے لیے دنیا میں یہ بات سعادت میں سے ہے، کہ اس کا پروسی صالح ہو اور وہ کان کشتہ ہو اور سواری اچھی ہو۔ (14)

حدیث ۱۵: حاکم نے مستدرک میں عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی کہتی ہیں میں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) میرے دو پروسی ہیں، ان میں سے کس کے پاس ہدیہ بھیجوں؟ فرمایا: جس کا دروازہ زیادہ نزدیک ہو۔ (15)

حدیث ۱۶: امام احمد نے عقبہ بن عامر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ قیامت کے دن سب سے پہلے جو دو شخص اپنا جھگڑا پیش کریں گے، وہ دونوں پروسی ہوں گے۔ (16)

حدیث ۱۷: بیہقی نے عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے بسند ضعیف روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: تمہیں معلوم ہے کہ پروسی کا کیا حق ہے؟ یہ کہ جب وہ تم سے مدد مانگے مدد کرو اور جب قرض مانگے

(14) المستدرک، کتاب البر والصلة، باب ان اللہ لا یعطی الا یان الا سن یحب، الحدیث: ۷۳۸۶، ج ۵، ص ۲۳۲.

(15) المستدرک للحاکم، کتاب البر والصلة، باب لا یشیع الرجل دون جاره، الحدیث: ۷۳۸۹، ج ۵، ص ۲۳۲.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اس حدیث سے چند مسئلے معلوم ہوئے: ایک یہ کہ پڑوسیوں کو ہدیہ دینا سنت ہے کہ اس سے محبت بڑھتی ہے۔ دوسرے یہ کہ اس کی علت پڑوسیت ہے جس قدر پڑوسیت قوی ہوگی اسی قدر ہدیہ کا استحقاق زیادہ ہوگا۔ تیسرے یہ کہ پڑوس کا قرب دروازہ سے ہوتا ہے نہ چھت سے نہ دیوار سے۔ اگر ایک شخص کے مکان کی دیوار اور چھت تو ہمارے مکان سے ملی ہو مگر دروازہ دور ہو اور دوسرے کی نہ چھت ملی ہو نہ دیوار مگر دروازہ قریب ہو تو زیادہ قریب یہ دوسرا ہی مانا جائے گا اور اس کی وجہ بھی ظاہر ہے کیونکہ دروازہ کی وجہ سے ملاقات ہوتی ہے اور اسی کے ذریعہ زیادہ خط ملے رہتا ہے اور ایک کو دوسرے کے درد و غم میں شرکت کا زیادہ موقع ملتا ہے۔ یہ حدیث اس آیت کریمہ کی تفسیر ہے "وَالْحَارِ ذِی الْقُرْبٰی وَالْحَارِ الْجُنُبِ"۔ حدیث کا مطلب یہ نہیں کہ دور واسے پڑوسی کو بالکل نہ دو مطلب یہ ہے کہ سب کو دور مگر قریب کو ترجیح دو۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۶۲)

(16) المسند للامام احمد بن حنبل حدیث عقبہ بن عامر البغنی، الحدیث: ۷۳۷۷، ج ۶، ص ۱۳۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اس یعنی قیامت کے دن سب سے پہلے پڑوسیوں کے جھگڑے چکائے جائیں گے پہلے ان کے فیصلے ہوں گے پھر دوسروں کے یہ اولیت خانی ہے حقیقی نہیں، یعنی دوسرے جھگڑوں کے مقابلہ میں پڑوسیوں کے جھگڑے پہلے بارگاہ الہی میں پیش ہوں گے۔ خیال رہے کہ عبادت میں پہلے حساب نماز کا ہوگا، معاملات میں پہلے حساب خون ناحق کا ہوگا، اداء حقوق میں پہلے حساب پڑوسیوں کا ہوگا۔

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۱۶۲)

قرض دو اور جب محتاج ہو تو اسے دو اور جب بیمار ہو عیادت کرو اور جب اسے خیر پہنچے تو مبارک باد دو اور جب مصیبت پہنچے تو تعزیت کرو اور مر جائے تو جنازہ کے ساتھ جاؤ اور بغیر اجازت اپنی عمارت بلند نہ کرو، کہ اس کی ہوا روک دو اور اپنی ہانڈی سے اس کو ایذا نہ دو، مگر اس میں سے کچھ اسے بھی دو اور میوے خریدو تو اس کے پاس بھی ہدیہ کرو اور اگر ہدیہ نہ کرنا ہو تو چھپا کر مکان میں لاؤ اور تمھارے بچے اسے لے کر باہر نہ نکلیں کہ پردی کے بچوں کو رنج ہوگا۔

تمہیں معلوم ہے کہ پردی کا کیا حق ہے؟ قسم ہے اس کی جس کے ہاتھ میں میری جان ہے! پوری طور پر پردی کا حق ادا کرنے والے تھوڑے ہیں، وہی ہیں جن پر اللہ (عزوجل) کی مہربانی ہے۔ برابر پردی کے متعلق حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) وصیت فرماتے رہے یہاں تک کہ لوگوں نے گمان کیا کہ پردی کو وارث کر دیں گے۔

پھر حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا کہ پردی تین قسم کے ہیں، بعض کے تین حق ہیں، بعض کے دو اور بعض کا ایک حق ہے۔ جو پردی مسلم ہو اور رشتہ والا ہو، اس کے تین حق ہیں۔ حق جوار اور حق اسلام اور حق قرابت۔ پردی مسلم کے دو حق ہیں، حق جوار اور حق اسلام اور پردی کافر کا صرف ایک حق جوار ہے۔ ہم نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) ان کو اپنی قربانیوں میں سے دیں؟ فرمایا کہ مشرکین کو قربانیوں میں سے کچھ نہ دو۔ (17)



مسائل فقہیہ

مسئلہ ۱: چھت پر چڑھنے میں دوسروں کے گھروں میں نگاہ پہنچتی ہے تو وہ لوگ چھت پر چڑھنے سے منع کر سکتے ہیں، جب تک پردہ کی دیوار نہ بنوالے یا کوئی ایسی چیز نہ لگالے جس سے بے پردگی نہ ہو اور اگر دوسرے لوگوں کے گھروں میں نظر نہیں پڑتی مگر وہ لوگ جب چھت پر چڑھتے ہیں تو سامنا ہوتا ہے تو اس کو چڑھنے سے منع نہیں کر سکتے، بلکہ ان کی مستورات کو یہ چاہیے کہ وہ خود چھتوں پر نہ چڑھیں تاکہ بے پردگی نہ ہو۔ (1)

مسئلہ ۲: اس کے مکان کی بچھیت (یعنی مکان کے پیچھے کی دیوار) دوسرے کے مکان میں ہے یہ اپنی دیوار میں مٹی لگانا چاہتا ہے، مالک مکان اپنے گھر میں جانے سے اسے روکتا ہے۔ اب مٹی کیوں کر لگائی جائے مالک مکان سے کہا جائے گا کہ اسے مکان میں جانے کی اجازت دے، ورنہ وہ خود مٹی لگوادے، اس کے پیسے اس سے دلوادے جائیں گے۔ اسی طرح اگر اس کی دیوار دوسرے کے مکان میں گر گئی ہے، وہاں سے مٹی اٹھانے کی ضرورت ہے، مالک مکان اس کو اجازت دیدے کہ یہ وہاں سے مٹی اٹھائے اور اجازت نہیں دیتا تو خود اٹھائے۔ (2)



(1) الدر المختار، کتاب القضاء، مسائل فسی، ج ۸، ص ۱۷۲۔

(2) الفتاویٰ احمدیہ، کتاب النکاح، الباب الثالثون فی التفرقات، ج ۵، ص ۷۷۳۔

مخلوق خدا پر مہربانی کرنا

اللہ عزوجل فرماتا ہے:

(وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ) (1)
 نیکی اور پرہیزگاری پر آپس میں ایک دوسرے کی مدد کرو اور گناہ و ظلم پر مدد نہ کرو۔



احادیث

- حدیث ۱: صحیح بخاری و مسلم میں جریر بن عبد اللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اللہ تعالیٰ اس پر رحم نہیں کرتا جو لوگوں پر رحم نہیں کرتا۔ (1)
- حدیث ۲: امام احمد و ترمذی نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں کہ میں نے ابوالقاسم صادق مصدوق صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو یہ فرماتے سنا کہ رحمت نہیں نکالی جاتی مگر بد بخت سے۔ (2)
- حدیث ۳: ابوداؤد و ترمذی نے عبد اللہ بن عمرو رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: رحم کرنے والوں پر رحم کرتا ہے، زمین والوں پر رحم کر دو، تم پر وہ رحم فرمائے گا جس کی حکومت آسمان میں ہے۔ (3)

(1) صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول اللہ (قل ادعوا اللہ... إلخ)، الحدیث: ۷۶۰، ج ۲، ص ۵۳۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب یہ فرمان عالی یا بطور بد دعا ہے یا بطور خبر یعنی خدا اس پر رحم نہ کرے یا رحم نہ کرے گا، لوگوں پر رحمت اللہ تعالیٰ کا خاص کرم ہے۔
(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۷۷)

(2) المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي هريرة، الحدیث: ۸۰۰، ج ۳، ص ۱۶۴۔

وسنن اترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء في رحمة الناس، الحدیث: ۱۹۲۳، ج ۳، ص ۷۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب یہاں بھی رحمت میں بڑی منجائش ہے اپنے پر رحم کرنا کہ گناہوں سے بچنا مسلمانوں پر رحم کرنا بلکہ کفار پر رحم کرنا کہ انہیں دعوت اسلام دینا بلکہ جانوروں پر رحم کرنا کہ ان کے دانہ پانی کا خیال رکھنا۔ مقصد یہ ہے کہ بد بخت کی علامت یہ ہے کہ اس کا دل سخت ہوتا ہے اسے کسی پر رحم نہیں آتا ہنڈ، نیک بخت کی علامت یہ ہے کہ وہ نرم دل ہوتا ہے سب پر رحم کرتا ہے۔
(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۹۸)

(3) سنن اترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء في رحمة المسلمين، الحدیث: ۱۹۳۱، ج ۳، ص ۷۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب کیونکہ رحم و کرم والے بندے اللہ تعالیٰ کی صفت و رحمت کے مظہر ہیں اللہ کے اخلاق سے موصوف ہیں، رحمت سے مراد ہے

حدیث ۴: ترمذی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: وہ ہم میں سے نہیں جو ہمارے چھوٹے پر رحم نہ کرے اور ہمارے بڑے کی توقیر نہ کرے اور اچھی بات کا حکم نہ کرے اور بری بات سے منع نہ کرے۔ (4)

حدیث ۵: ترمذی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی: جو ان اگر بوڑھے کا اکرام اس کی عمر کی وجہ سے کرے گا تو اس کی عمر کے وقت اللہ تعالیٰ ایسے کو مقرر کر دے گا، جو اس کا اکرام کرے۔ (5)

عام رحمت ہے۔

۲۔ یعنی تم اللہ کی زمینی مخلوق پر رحم کرو انسانوں پر جانوروں پر تم پر وہ رحم کرے گا جس کی رحمت خاصہ جس کی سلطنت آسمانوں میں بھی ہے یعنی رب تعالیٰ یا اس سے مراد فرشتے ہیں یعنی فرشتے تمہاری حفاظت کریں گے تمہارے لیے دعاء مغفرت کریں گے۔ (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۹۹)

(4) المرجع السابق، باب ماجاء فی رحمۃ النصبیان، الحدیث: ۱۹۲۶، ۱۹۲۸، ج ۳، ص ۳۶۹.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی ہماری جماعت سے یا ہمارے طریقہ والوں سے یا ہمارے پیاروں سے نہیں یا ہم اس سے بیزار ہیں وہ ہمارے مقبول لوگوں میں سے نہیں، یہ مطلب نہیں کہ وہ ہماری امت یا ہماری ملت سے نہیں کیونکہ گناہ سے انسان کافر نہیں ہوتا ہاں جو حضرات انبیاء کرام کی توہین کرے وہ اسلام سے خارج ہے۔

۲۔ یعنی اپنے سے چھوٹوں پر رحم نہ کرے، اپنے سے بڑوں کا ادب نہ کرے، چھوٹائی بڑائی خواہ عمر کی ہو خواہ علم کی خواہ درجہ کی یہ فرمان بہت عام ہے۔ خیال رہے کہ صغیرنا اور کبیرنا فرما کر یہ بتایا کہ چھوٹے بڑے مسلمانوں کا ادب ان پر رحم چاہیے یہ قید بھی زیادتی اہتمام کے لیے ہے ورنہ کافروں کا بھی مادری ادب کافر چھوٹے بھائی پر بھی قرابت داری کا رحم چاہیے جیسا کہ فقہاء کے فرائین اور دوسری روایات سے معلوم ہوتا ہے یوں ہی ان کے حقوق قرابت ادا کرے۔ (اشعہ)

۳۔ ہر شخص اپنی حالت اور اپنے علم کے مطابق دینی احکام لوگوں میں جاری کرے یہ صرف علماء کا ہی فرض نہیں سب پر لازم ہے۔ حاتم ہاتھ سے برائیاں روکے، عالم عام زبانی تبلیغ سے یہ فرض انجام دے فی زمانہ اس سے بہت غفلت ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۰۰)

(5) سنن الترمذی، کتاب ابرو الصلۃ، باب ماجاء فی إجلال الکبیر، الحدیث: ۲۰۲۹، ج ۳، ص ۳۱۱.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جو شخص بوڑھے مسلمان کا صرف اس لیے احترام کرے کہ اس کی عمر زیادہ ہے، اس کی عبادات مجھ سے زیادہ ہیں، یہ مجھ سے پرانے اسلام والا ہے تو ان شاء اللہ دنیا میں وہ دیکھ لے گا کہ اس کے بڑھاپے کے وقت لوگ اس کا احترام کریں گے۔ اس وعدے میں ہے

حدیث ۶: ابو داؤد نے ابو موسیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: یہ بات اللہ تعالیٰ کی تعظیم میں سے ہے کہ بوڑھے مسلمان کا اکرام کیا جائے اور اس حامل قرآن کا اکرام کیا جائے جو نہ غالی ہو، نہ جانی (یعنی جو غلو کرتے ہیں کہ حد سے تجاوز کر جاتے ہیں کہ پڑھنے میں الفاظ کی صحت کا لحاظ نہیں رکھتے یا معنی غلط بیان کرتے ہیں یا ریا کے طور پر تلاوت کرتے ہیں اور جہاں یہ ہے کہ اُس سے اعراض کرے، نہ قرآن کی تلاوت کرے، نہ اس کے احکام پر عمل کرے) اور بادشاہ عادل کا اکرام کرنا۔ (6)

حدیث ۷: امام احمد و بیہقی نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ مومن اُلفت کی جگہ ہے اور اس شخص میں کوئی بھلائی نہیں جو نہ اُلفت کرے، نہ اس سے اُلفت کی

فرمایا گیا کہ ایسا آدمی دراز عمر بھی پائے گا دنیا میں مال، عیش، عزت بھی اسے ملے گی آخرت کا اجر اس کے علاوہ ہے۔ خود اس حدیث کے راوی حضرت انس نے حضور کی دس سال خدمت کی دیکھ لو کہ ان کی عمر ایک سو تین سال ہوئی ان کی زندگی میں ان کی اولاد کی تعداد ایک سو ہوئی یعنی اولاد اور اولاد کی اولاد ایک مخلوق نے ان سے احادیث روایت کیں، جہاں پہنچ جاتے تھے لوگ ان کی زیارت کے لیے جمع ہو جاتے تھے۔ (مرقات) یہ ہے اس حدیث کا ظہور اور اس وعدہ نبوی کی جیتی جاگتی تصویر و تفسیر۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۰۱)

(6) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی تنزیل الناس منازلہم، الحدیث: ۴۸۲۳، ج ۲، ص ۳۲۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ سفید ڈاڑھی والے مسلمان کا احترام، خود رب تعالیٰ فرماتا ہے کہ جب وہ دعا کے لیے ہاتھ پھیلاتا ہے تو وہ کریم اس سے شرم فرماتا ہے کہ ان ہاتھوں کو خالی پھیرے تو بندہ اس کا احترام کیوں نہ کرے۔ حامل قرآن میں حافظ، عالم دین، قاری، مفسر، ہمیشہ تلاوت کرنے والا سب ہی داخل ہیں سب کا احترام چاہیے۔ (مرقات)

۲۔ یعنی وہ حامل قرآن وہ عالم و حافظ قابل تعظیم ہیں جو بد مذہب بیدین نہ ہو جو قرآن کو لوگوں کے گمراہ کرنے کا ذریعہ بنائیں اس کی غلط تاویل کریں، اس میں خیانتیں کریں، اس کے ذریعہ مسلمانوں میں فتنہ فساد پھیلائیں ان پر تو خدا تعالیٰ کی بھی پھٹکار ہے بندوں کی بھی۔ (مرقات) شعر

دام تزدیر مکن چوں دگر ان قرآن را

حافظا میخور و رندی کن و خوش باش وے

تاویل سے کر سکتے ہیں قرآن پاژند

احکام ترے حق ہیں مگر اپنے مفسر

۳۔ منصف حاکم عدل والا بادشاہ اللہ کی رحمت ہے جس کے سایہ میں اللہ کی مخلوق آرام پاتی ہے وہ رعایا کے لیے مثل مہربان والد کے ہے

اس لیے اس کا احترام ضروری ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۰۲)

جائے۔ (7)

حدیث ۸: بیہقی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو میری امت میں کسی کی حاجت پوری کر دے جس سے مقصود اس کو خوش کرنا ہے، اس نے مجھے خوش کیا اور جس نے مجھے خوش کیا، اس نے اللہ (عزوجل) کو خوش کیا اور جس نے اللہ (عزوجل) کو خوش کیا، اللہ (عزوجل) اسے جنت میں داخل فرمائے گا۔ (8)

(7) المسند للاحمد بن حنبل، مسند ابی حریرة، الحدیث: ۹۲۰۹، ج ۳، ص ۳۶۲-۳۶۳.

و شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی لین الجانب... إلخ، الحدیث: ۸۱۱۹، ج ۶، ص ۲۷۰-۲۷۱.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ مآلف مصدریسی ہے بمعنی اسم فاعل یعنی الفت والا کہ اسے اللہ تعالیٰ اس کے محبوب صلی اللہ علیہ وسلم اور حضور کی امت سے الفت ہوتی ہے اور امت کو اسی سے الفت ہوتی ہے اس کی طرف دل خود بخود کھینچتے ہیں۔ ہو سکتا ہے کہ مآلف اسم ظرف ہو یعنی مؤمن الفت کی جگہ ہوتا ہے اس میں لوگوں کی الفتیں جمع ہوتی ہیں۔

۲۔ یعنی مسلمانوں سے وہ متنفر ہو اور مسلمان اس سے متنفر ہوں ایسا شخص نور ایمانی سے محروم ہے۔ خیال رہے کہ مسلمانوں سے الفت رکھنا کچھ اور ہے لوگوں کی شر سے بچنے کے لیے علیحدہ رہنا کچھ اور ہے لہذا یہ حدیث اس حدیث کے خلاف نہیں جس میں فرمایا گیا کہ اپنا گھر واپس پکڑو۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۲۵)

(8) شعب الایمان، باب فی التعاون علی البر والتقوی، الحدیث: ۷۶۵۳، ج ۶، ص ۱۱۵.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اس حاجت روائی سے اس بندہ مؤمن کو خوش کرنا چاہتا ہو محض ایمانی رشتہ کی بنا پر کسی اور وجہ سے نہیں۔

۲۔ یعنی اس امتی بندے کی خوشی سے مجھے خوشی ہوگی۔ اس سے معلوم ہوا کہ تاقیامت حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو ہر شخص کے ہر ظاہر باطن جسمانی دلی حالات کی خبر ہے اگر حضور بے خبر ہوں اور مؤمن کی خوشی کا حضور کو علم نہ ہو تو آپ کو خوشی کیسے ہو۔

۳۔ اس فرمان عالی سے دو مسئلہ معلوم ہوئے: ایک یہ کہ نیک عمل سے مؤمن کو راضی کرنے اور مؤمن کی رضا کے ذریعہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو راضی کرنے کی نیت کرنا شرک نہیں یا نہیں بالکل جائز ہے۔ جب کہ اپنی نامود اور ناموری مقصود نہ ہو۔ دوسرے یہ کہ خدا تعالیٰ کی رضا صرف حضور کی رضا میں ہے بڑی سے بڑی نیکی جس سے حضور راضی نہ ہوں اس سے خدا تعالیٰ ہرگز راضی نہ ہوگا لہذا ہر عبادت میں حضور کو راضی کرنے کی نیت کرنی چاہیے کہ یہ ذریعہ ہے رب کی رضا کا۔

۴۔ اس سے معلوم ہوا کہ جنت خدا تعالیٰ کی خوش نودی سے ملے گی محض اپنے عمل سے نہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۲۶)

حدیث ۹: بیہقی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو کسی مظلوم کی فریاد رسی کرے، اللہ تعالیٰ اس کے لیے تہتر ۷۳ مغفرتیں لکھے گا، ان میں سے ایک سے اس کے تمام کاموں کی درستی ہو جائے گی اور بہتر ۷۲ سے قیامت کے دن اس کے درجے بلند ہوں گے۔ (9)

حدیث ۱۰: صحیح مسلم میں نعمان بن بشیر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ تمام مومنین شخص واحد کی مثل ہیں، اگر اس کی آنکھ بیمار ہوئی تو وہ کل بیمار ہے اور سر میں بیماری ہوئی تو کل بیمار ہے۔ (10)

حدیث ۱۱: صحیح بخاری و مسلم میں ابو موسیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ مومن مومن کے لیے عمارت کی مثل ہے کہ اس کا بعض بعض کو قوت پہنچاتا ہے۔ پھر حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے ایک ہاتھ کی انگلیاں دوسرے ہاتھ کی انگلیوں میں داخل فرمائیں۔ (11) یعنی جس طرح یہ ملی ہوئی ہیں

(9) شعب الایمان، باب فی التعاون علی البر والتقویٰ، الحدیث: ۷۶۷۰، ج ۶، ص ۱۲۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ مہلوف کے معنی ہیں غمگین، حیران پریشان، اس میں پانچ حروف ہیں پہلے دو حرف میم اور لام ہیں جن کے عدد ہیں ستر ۷۰ اس کے بعد تین حرف ہیں و و ف، پہلے دو حروف کے عدد اور آخری تین حروف کی شمار کل ۷۳ ہوئی اس حساب سے اسے تہتر رحمتیں عطا ہوتی ہیں۔
۲۔ سبحان اللہ! جب ایک مغفرت سے سارے گناہ معاف ہو گئے تو باقی بہتر مغفرتوں سے کیسی بنے گی رب تعالیٰ نصیب فرمادے۔
(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۲۷)

(10) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة... إلخ، باب تراحم المؤمنین... إلخ، الحدیث: ۶۶، ۶۷۔ (۲۵۸۶)، ص ۱۳۹۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی قوم مسم گویا ایک جسم ہے، افراد مسلم گویا اس جسم کے اعضاء، ایمان مسلم گویا اس جسم کی جان ہے۔ حرارت وغیرت ایمانی کو گویا ایمان سے تعلق ہے اس تعلق کا نتیجہ ہوتا ہے کہ ایک مسلمان کی تکلیف سارے افراد کی تکلیف ہے۔ خیال رہے کہ غدار مسلمانوں کو قوم سے نکالنا ایسا ہے جیسے گلے سزے عضو کو جسم سے کاٹ دینا تاکہ اس کا فساد دوسرے اعضاء میں نہ پہنچے۔
(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۸۳)

(11) صحیح بخاری، کتاب الادب، باب تعاون المؤمنین... إلخ، الحدیث: ۶۰۲۶، ج ۳، ص ۱۰۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی مومنوں کے دنیاوی اور دینی کام ایک دوسرے سے مل جل کر مکمل ہوتے جیسے مکان کی دیوار میں ایک دوسرے سے مل کر مکان مکمل

مسلمانوں کو بھی اسی طرح ہونا چاہیے۔

حدیث ۱۲: صحیح بخاری و مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اپنے بھائی کی مدد کر ظالم ہو یا مظلوم ہو۔ کسی نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) مظلوم ہو تو مدد کروں گا ظالم ہو تو کیونکر مدد کروں۔ فرمایا کہ اس کو ظلم کرنے سے روک دے یہی مدد کرنا ہے۔ (12)

حدیث ۱۳: صحیح بخاری و مسلم میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: مسلم مسلم کا بھائی ہے، نہ اس پر ظلم کرے، نہ اس کی مدد چھوڑے اور جو شخص اپنے بھائی کی حاجت میں ہو، اللہ (عزوجل) اس کی حاجت میں ہے اور جو شخص مسلم سے کسی ایک تکلیف کو دور کرے، اللہ تعالیٰ قیامت کی تکالیف میں سے ایک تکلیف اس کی دور کر دے گا اور جو شخص مسلم کی پردہ پوشی کریگا، اللہ تعالیٰ قیامت کے دن اس کی پردہ پوشی کریگا۔ (13)

۲۔ اس طرح کہ ایک ہاتھ شریف کی انگلیاں دوسرے ہاتھ میں داخل کر دیں یعنی گتھا دیں یہ سمجھانے کے لیے کہ جیسے یہ انگلیاں ایک دوسرے میں داخل ہو گئیں ایسے ہی مسلمان ایک دوسرے میں گتھے ہوئے ہیں کہ یہ کبھی بے تعلق نہیں ہو سکتے گتھانے والے یا حضرت ابو موسیٰ اشعری ہیں یا حضور صلی اللہ علیہ وسلم یہ مثال یہ بتانے کے لیے ہے کہ مسلمانوں کے بعض کے بعض پر حقوق ہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۸۵)

(12) صحیح البخاری، کتاب الاکراہ، باب یمین الرجل... إلخ، الحدیث: ۶۹۵۲، ج ۴، ص ۸۹۔

ومشکوٰۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب الشفقة والرحمة علی الخلق، الحدیث: ۴۹۵۷، ج ۳، ص ۶۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اپنے بھائی مسلمان کی بہر حال مدد کرو خواہ تمہاری مدد اس کو خوش کرے یا مغموم کرے۔

۲۔ یعنی ظالم کو ظلم سے روک دینا ہی اس کی بڑی مدد ہے کہ اسے مظلوم کی بددعاؤں سے اللہ کے عذاب سے بچا لیتا ہے۔ ایک شرع کہتا ہے یعنی قدرت پا کر کسی پر ظلم نہ کرو کہ ظلم کا انجام ندامت ہے تم تو رات کو سو جاؤ گے مگر مظلوم نہ سوئے گا، تم پر رات میں بددعا کرے گا۔ اللہ کی آنکھ سوتی نہیں وہ اس وقت اس کو دیکھتی ہے۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۸۷)

(13) صحیح بخاری، کتاب النظام، باب لا یظلم المسلم المسلم... إلخ، الحدیث: ۲۴۴۲، ج ۲، ص ۱۲۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی مسلمان مسلمان کا دینی و اسلامی بھائی ہے یا مسلمان مسلمان کے لیے سگے بھائی کی طرح ہے بلکہ اس سے بھی ہم کہ نسبی بھائی کو ماں باپ نے بھائی بنایا ہے اور مسلمان کو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے بھائی بنایا، حضور سے رشتہ غلامی قوی ہے ماں باپ سے رشتہ نسبی ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ حضور مسلمانوں کے بھائی نہیں حضور تو مثل والد کے ہیں اس لیے حضور کی بیویاں مسلمانوں کی، عیسٰی ہیں بھوج نہیں، ۔۔۔

حدیث ۱۴: صحیح بخاری و مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: قسم ہے اس کی جس کے ہاتھ میں میری جان ہے! بندہ مومن نہیں ہوتا جب تک اپنے بھائی کے لیے وہ پسند نہ کرے، جو اپنے لیے پسند کرتا ہے۔ (14)

یہ بھی معلوم ہوا کہ مومن و مسلم ہم معنی ہیں کہ قرآن کریم نے مومنوں کو بھائی قرار دیا "إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ" اور حضور نے یہاں مسمون کو۔ (ازمرقات) خیال رہے کہ یہاں بھائی ہونا رحمت و شفقت کے لحاظ سے ہے نہ کہ احکام کے اعتبار سے۔

۲۔ مسلح بنا ہے اسلام سے جس کا مادہ سلم بمعنی سلامتی ہے ہمزہ سلب کا تو معنی ہوئے سلامت نہ رکھنا یعنی اسے ہلاک کر دینا یا مدد کی ضرورت پر اسے بے یار و مددگار چھوڑ دینا۔

۳۔ سبحان اللہ! کیسا پیارا وعدہ ہے مسلمان بھائی کی تم مدد کرو اللہ تمہاری مدد کرے گا، مسلمان کی حاجت روائی تم کرو اللہ تمہاری حاجت روائی کرے گا۔ معلوم ہوا کہ بندہ بندہ کی حاجت روائی کر سکتا ہے یہ شرک نہیں بندہ بندہ کا حاجت روا مشکل کشا ہے۔

۴۔ یعنی اگر کوئی حیا دار آدمی ناشائستہ حرکت خفیہ کر بیٹھے پھر بچھٹائے تو تم اسے خفیہ سمجھا دو کہ اس کی اصلاح ہو جائے اسے بدنام نہ کرو اگر تم نے ایسا کیا تو اللہ تعالیٰ قیامت میں تمہارے گناہوں کا حساب خفیہ ہی لے لے گا تمہیں رسوا نہ کرے گا، ہاں جو کسی کی ایذا کی خفیہ تدبیریں کر رہا ہو یا خفیہ حرکتوں کا عادی ہو چکا ہو اس کا اظہار ضرور کر دو تا کہ وہ شخص ایذا سے بچ جاوے یا یہ توبہ کرے یہ قیدی ضرور خیال میں رہیں۔ غرض کہ صرف بدنامی سے کسی کو بچانا اچھا ہے مگر اس کے خفیہ ظلم سے دوسرے کو بچانا یا اس کی اصلاح کرنا بھی اچھا ہے یہ فرق خیال میں رہے۔ یہاں مرقات نے فرمایا کہ جو مسلمان کی ایک عیب پوشی کرے رب تعالیٰ اس کی سات سو عیب پوشیاں کرے گا لہذا کربہ کی تنوین تفسیری ہے اور سترہ اللہ میں ستر مطلق بمعنی کامل ہے رب تعالیٰ کی عطائیں ہمارے خیالات سے دراز ہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۸۸)

(14) صحیح مسلم، کتاب الیمان، باب الدلیل علی ان من خصال الایمان... إلخ، الحدیث: ۷۱، ۷۲۔ (۴۵)، ص ۴۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ فرمان عالی حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے جامع کلمات سے ہے ان چند لفظوں میں دونوں جہان کی خوبیاں جمع ہیں یعنی کوئی شخص مومن کامل اس وقت تک نہیں ہوتا جب تک کہ اپنے بھائی مسلمان کے لیے دینی و دنیاوی وہ چیز نہ چاہے جو اپنے لیے چاہتا ہے اسی کا ترجمہ ہے کہ آنچہ بر خود نہ پسندی بہ دیگران پسند۔ خیال رہے کہ یہاں خیر مراد ہے ہر مسلمان کے لیے دنیا و آخرت کی خیر چاہو جو اپنے لیے چاہتے ہو۔ اس خیر کا ظہور مختلف طریقوں سے ہوتا ہے کسی کے لیے دولت مندی خیر ہے، کسی کے لیے فقیری خیر، کسی کے لیے خلوت خیر ہے، کسی کے لیے جلوت خیر ہذا اگر خلوت نشین مسلمان دوسرے مسلمان کے لیے جلوت چاہے جسے جلوت بہتر ہو تو اس فرمان کے خلاف نہیں۔ تمام مسلمانوں میں پاور ایک ہی ہے مگر پاور کے اثرات مختلف ہیں جیسے پاور ہیٹر میں پہنچے تو گرمی دیتا ہے فرق میں پہنچے تو ٹھنڈک۔ (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۹۱)

حدیث ۱۵: صحیح مسلم میں تمیم داری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: دین خیر خواہی کا نام ہے، اس کو تین مرتبہ فرمایا۔ ہم نے عرض کی کس کی خیر خواہی؟ فرمایا: اللہ و رسول اور اس کی کتاب کی اور ائمہ مسلمین اور عام مسلمانوں کی۔ (15)

(15) صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان ان الدین الصیحة، الحدیث: ۹۵۔ (۵۵) ص ۷۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کا نام تمیم ابن اوس ابن وار ہے، آپ عیسائی تھے و ہجری میں ایمان لائے، آپ سے کل اٹھارہ احادیث مروی ہیں جن میں سے صرف یہ ایک حدیث صحیحین میں ہے، آپ شب کو نوافل میں ایک رکعت میں قرآن مجید ختم کرتے تھے اور کبھی ایک آیت صبح تک بار بار پڑھتے اور روتے رہتے تھے، اولاً مدینہ منورہ میں رہے، حضرت عثمان کی شہادت کے بعد شام چلے گئے وہاں ہی وفات پائی، مسجد نبوی میں سب سے پہلے چراغ آپ نے ہی روشن کیے۔ (مرقات) چراغ کیا۔

۲۔ نصیحة بنا ہے نصیح سے بمعنی خالص ہونا عرب کہتے ہیں نصحت العسل عن الشمع میں نے شہد کو موم سے خالص کر لیا۔ اصطلاح میں کسی کی خالص خیر خواہی کرنا جس میں بدخواہی کا شائبہ نہ ہو یا خلوص دل سے کسی کا بھلا چاہنا نصیحت ہے، یہ بھی جامع کلمات میں سے ہے کہ اس ایک لفظ میں لاکھوں چیزیں شامل ہیں حتیٰ کہ اعتقاد کو کفر سے خالص کرنا، عبادت کو ریا سے پاک و صاف کرنا، معاملات کو خرابیوں سے بچانا سب ہی نصیحت میں داخل ہیں۔

۳۔ اللہ کے لیے نصیحت یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کی ذات و صفات کے متعلق خالص اسلامی عقیدہ رکھنا، خلوص دل سے اس کی عبادت کرنا، اس کے محبوبوں سے محبت دشمنوں سے عداوت رکھنا، اس کے متعلق اپنے عقیدے خالص رکھنا اس کی شرح بہت وسیع ہے۔ (مرقات)

۴۔ کتاب اللہ یعنی قرآن مجید کی نصیحت یہ ہے کہ اس کے کتاب اللہ ہونے پر ایمان رکھنا اس کی عداوت کرنا، اس میں بقدر طاقت غور کرنا، اس پر صحیح عمل کرنا، اس پر سے مخالفین کے اعتراضات دفع کرنا غلط تاویلوں تحریفوں کی تردید کرنا۔

۵۔ اللہ کے رسول یعنی حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی نصیحت یہ ہے کہ انہیں تمام نبیوں کا سردار ماننا ان کے تمام صفات کا اعتراف کرنا جان و مال و اولاد سے زیادہ انہیں پیارا رکھنا انکی اطاعت و فرمانبرداری کرنا ان کا ذکر بلند کرنا۔

۶۔ اہل مومن سے مراد یا تو اسلامی بادشاہ اسلامی حکام ہیں یا علماء دین مجتہدین کا ملین اولیاء و اصلیین ہیں۔ ان کی نصیحت یہ ہے کہ انکے ہر جائز حکم کی بقدر طاقت تعمیل کرنا، لوگوں کو ان کی اطاعت جائزہ کی طرف رغبت دینا، آئمہ مجتہدین کی تقلید کرنا، ان کے ساتھ اچھا گمان رکھنا۔ (مرقات) علماء کا ادب کرنا۔

۷۔ عام مسلمانوں کی نصیحت یہ ہے کہ بقدر طاقت ان کی خدمت کرنا، ان سے دینی و دنیا مصیبتیں دور کرنا، ان سے محبت کرنا، ان میں علم دین پھیلانا، اہمال نیک کی رغبت دینا، جو چیز اپنے لیے پسند نہ کرے ان کے لیے پسند نہ کرنا یہ حدیث بہت ہی جامع ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۹۶)

حدیث ۱۶: صحیح بخاری و مسلم میں جریر بن عبد اللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، لہٰذا میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے نماز قائم کرنے اور زکوٰۃ دینے اور ہر مسلمان کی خیر خواہی کرنے پر بیعت لی تھی۔ (16)

حدیث ۱۷: ابو داؤد نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ لوگوں کو ان کے مرتبہ میں اتار دو۔ (17) یعنی ہر شخص کے ساتھ اس طرح پیش آؤ جو اس کے مرتبہ کے مناسب ہو سب کے ساتھ ایک سا برتاؤ نہ ہو مگر اس میں یہ لحاظ ضرور کرنا ہوگا کہ دوسرے کی تحقیر و تذلیل نہ ہو۔

حدیث ۱۸: ترمذی و بیہقی نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: تم میں اچھا وہ شخص ہے جس سے بھلائی کی امید ہو اور جس کی شرارت سے امن ہو اور تم میں برا وہ شخص ہے جس سے بھلائی کی امید نہ ہو اور جس کی شرارت سے امن نہ ہو۔ (18)

حدیث ۱۹: بیہقی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: تمام

(16) صحیح بخاری، کتاب الایمان، باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم الدین النصیحة... إلخ، الحدیث: ۵۷، ج ۱، ص ۳۵.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے حضور صلی اللہ علیہ وسلم اپنے صحابہ سے ایمان تقویٰ پر بھی بیعت لیتے تھے اور نیک اعمال پر بھی یعنی میری معرفت رب تعالیٰ سے یہ وعدہ کرو کہ ہم نیک اعمال کریں گے گناہوں سے بچیں گے۔ بیعت کی بہت قسمیں ہیں یہاں بیعت اعمال مراد ہے۔ بیعت کی اقسام ہماری کتاب شان حبیب الرحمن کے ضمیمہ میں ملاحظہ کرو۔ ایک بار حضرت جریر نے ایک شخص سے گھوڑا تین سو درہم میں خریدا سود طے ہو جانے پر فرمایا کہ تیرا گھوڑا زیادہ قیمت کا ہے اچھا چار سو دوں گا پھر کہا نہیں پانچ سو دوں گا حتیٰ کہ آٹھ سو درہم تک بڑھا کر خرید لیا بالغ حیران ہو کر بول حضرت یہ کیا فرمایا میں نے حضور سے بیعت کی ہے ہر مسلمان کی خیر خواہی پر۔ یہ اس پر عمل ہے۔ (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۷۹۷)

(17) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی تنزیل الناس منازلهم، الحدیث: ۴۸۴۲، ج ۴، ص ۳۴۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے یعنی تمہارے پاس جس حیثیت کا آدمی آدے اس کی تواضع خاطر، اعزاز و اکرام اس کی حیثیت کے لائق کرو، حضرت عائشہ صدیقہ کھانا کھا رہی تھیں ایک اجنبی سائل دروازے سے گزرا آپ نے اسے روٹی کا ٹکڑا بھیج دیا، ایک اجنبی گھوڑا سوار گزرا تو آپ نے اس سے کہہ کر بھیج کر آپ کو کھانے کی خواہش ہو تو کھانا حاضر ہے، کسی نے ام المؤمنین سے اسی فرق کی وجہ سے پوچھی تو آپ نے یہی حدیث پڑھی

معدات عقد بلکہ عبادات میں فرق مراتب کرنا ضروری ہے۔ مصرع

معدات عقد بلکہ عبادات میں فرق مراتب کرنا ضروری ہے۔ مصرع

یہ واقعہ اشعة المصنوعات نے بحوالہ احیاء العلوم نقل فرمایا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۱۹)

(18) سنن ترمذی، کتاب البر والصلة، باب: ۷۶، الحدیث: ۲۲۷۰، ج ۴، ص ۱۱۶.

مخلوق اللہ تعالیٰ کی عیال ہے اور اللہ تعالیٰ کے نزدیک سب میں پیارا وہ ہے جو اس کی عیال کے ساتھ احسان کرے۔ (19)

حدیث ۲۰: ترمذی نے ابوذر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جہاں کہیں رہو خدا سے ڈرتے رہو اور برائی ہو جائے تو اس کے بعد نیکی کرو یہ نیکی اسے مٹا دے گی اور لوگوں سے اچھے اخلاق کے ساتھ پیش آؤ۔ (20)

(19) شعب، لایمان، باب فی طاعت اولی الامر، فصل فی نصیحة الولاة، الحدیث: ۷۴۴، ج ۶، ص ۴۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ عیال کے معنی پروردہ بہت مناسب ہیں۔ بال بچوں کو عیال اسی لیے کہتے ہیں کہ وہ صاحب خانہ کے پروردہ ہوتے ہیں، قرآن کریم فرماتا ہے: "وَوَجَدَكَ عَائِلًا لِّأَخِي" رب تعالیٰ نے تم کو بڑا ہی عیال والا پایا تو تم کو اتنا غنی کر دیا کہ تم سارے جہان کو پار لو۔ عاکل کے یہی معنی حضرت ابن عباس نے کیے، دیکھو بخاری شریف کتاب التفسیر یہی آیت۔ اللہ تعالیٰ سب کا رازق ہے مخلوق اس کی مرزوق ہے لہذا اس کی عیال ہے یعنی پروردہ۔

۲۔ یعنی جیسے تم اس شخص سے بہت خوش ہوتے ہو وہ تمہارے غلاموں لونڈیوں بال بچوں سے اچھا سلوک کرے کیونکہ وہ تمہارے پروردہ ہیں ایسے ہی جو کوئی اللہ کی مخلوق سے بھلائی کرے اللہ اس سے خوش ہوتا ہے، دیکھو جو کوئی تمہارے بچوں کو کروں غلاموں کو کچھ دے تو تم پر قرض ہو جاتا ہے تم انتظار کرتے ہو کہ مجھے موقع ملے تو اس کے نوکروں کو خوش کروں، کسی بچے کی شادی میں تم نیوتا دو تو وہ تمہارا قرض ہوتا ہے رب کے بندوں کو دو تو وہ رب تعالیٰ پر قرض ہوتا ہے، فرماتا ہے: "مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا"۔

(مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۲۸)

(20) سنن الترمذی، ابواب البر والصلة، باب ما جاء فی معاشرۃ الناس، الحدیث: ۱۹۹۳، ج ۳، ص ۳۹۷

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ نووی نے اپنی کتاب اربعین میں فرمایا کہ حضرت ابوذر غفاری اور معاذ ابن جبل رضی اللہ عنہما چار مسمین ہیں۔ (مرقات) حضرت ابوذر غفاری سے خصوصیت سے یہ ارشاد فرمایا گیا اگرچہ اور لوگ بھی سنتے تھے۔

۲۔ اس طرح کہ سارے واجبات ادا کرو اور سارے حراموں سے بچو۔ تقویٰ دین کی جڑ اور یقین کی بنیاد ہے۔ تقویٰ کے بہت درجے ہیں جو ہم نے اپنی تفسیر نعیمی میں حدی للمصلحین کی تفسیر میں عرض کیے۔ پہلا درجہ بد عقیدگی سے بچنا ہے، دوسرا درجہ بد عملی سے بچنا ہے، تیسرا درجہ مکروہ بلکہ مشتبہ چیزوں سے بچنا، چوتھا درجہ پیکار چیزوں سے بچنا، پانچواں درجہ جو بارے حجاب ہو اس سے بچنا۔ غرض کہ ہر طرح کی آڑ پھڑ کر یا رتک پہنچنا ہے اللہ اس قاتل کو حال بنا دے۔ جہاں کہیں ہونے سے مراد ہے علانیہ خفیہ ہر طرح ہر جگہ خدا سے ڈرنا۔

۳۔ یعنی گنہ گروں کے بعد توبہ کر لو اور بد اعمالی کے بعد نیک اعمال کر لو جن سے یہ برائیاں مٹ جاویں۔ گناہ گن یا ہے تو قرآن مجید سن



لو، بری جگہ بیٹھے ہو تو وعظ و نصیحت کی مجلس میں بیٹھو، اگر حرام جگہ خرچ کر دیا ہے تو صدقہ و خیرات کرو غرض کہ ہر مرض کا علاج اس کی ضد سے کرو، حب دنیا کو حسب آخرت سے دھولو، سیاہی دل کو آنکھوں کے آنسو سے دور کرو غرض کہ سیاہی کو سفیدی سے دور کرو، دنیاوی خوشی کے بعد آخرت کا غم کر لو، اللہ تعالیٰ ان نیکیوں کے ذریعہ ان برائیوں کو مٹا دے گا، رب فرماتا ہے: "إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ الشَّرَّاتِ" آخرت کا غم کر لو، اللہ تعالیٰ ان نیکیوں کے ذریعہ ان برائیوں کو مٹا دے گا، رب فرماتا ہے: "إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ الشَّرَّاتِ" اس طرح کہ لوگوں کی تکالیف برداشت کرو، ان پر اپنا مال خرچ کرو، ان سے خندہ پیشانی سے ملو، ان کی مصیبتوں میں کام آؤ۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲، ص ۹۰۹)

نرمی و حیا و خوبی اخلاق کا بیان

احادیث

- حدیث ۱: اللہ تعالیٰ مہربان ہے، مہربانی کو دوست رکھتا ہے اور مہربانی کرنے پر وہ دیتا ہے کہ سختی پر نہیں دیتا۔ (1)
- حدیث ۲: حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے فرمایا: نرمی کو لازم کر لو اور سختی و نخش سے بچو، جس چیز میں نرمی ہوتی ہے، اس کو زینت دیتی ہے اور جس چیز سے جدا کر لی جاتی ہے، اُسے عیب دار کر دیتی ہے۔ (2)
- حدیث ۳: جو نرمی سے محروم ہو او وہ خیر سے محروم ہوا۔ (3)
- حدیث ۴: جس کو نرمی سے حصہ ملا اسے دنیا و آخرت کی خیر کا حصہ ملا اور جو شخص نرمی کے حصہ سے محروم ہو او وہ دنیا و آخرت کے خیر سے محروم ہوا۔ (4)

حدیث ۵: کیا میں تم کو خبر نہ دوں کہ کون شخص جہنم پر حرام ہے اور جہنم اس پر حرام وہ شخص کہ آسانی کرنے والی نرم

(1) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة... إلخ، باب فضل الرفق، الحدیث: ۷۷۔ (۲۵۹۳)، ص ۱۳۹۸.

(2) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة... إلخ، باب فضل الرفق، الحدیث: ۷۸، ۷۹۔ (۲۵۹۴)، ص ۱۳۹۸، ۱۳۹۹.

و صحیح البخاری، کتاب الادب، باب لم یکن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قاحشا... إلخ، الحدیث: ۶۰۳۰، ج ۴، ص ۱۰۸.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۳۔ بدگوئی نتیجہ ہے سختی کا اور دل میں سختی آتی ہے، پھر بدگوئی، زبان درازی، پھر ہاتھ پائی یعنی مار پیٹ، پھر قتل و خون خدا محفوظ رکھے، شیطان پر سخت رہو بھائی مسلمان پر نرم۔

۴۔ یعنی اگر حقیر آدمی کے دل میں نرمی ہو تو وہ عزیز بن جاوے گا، عظیم الشان آدمی کے دل میں سختی ہو تو وہ حقیر ہو جاوے گا۔ مولانا فرماتے ہیں شعر

در بہاراں کے شود سرسبز سنگ خاک شوتا گل برود رنگ رنگ

لوہا نرم ہو کر ادا رہتا ہے، سونا نرم ہو کر زیور، زمین نرم ہو کر قابل کاشت ہوتی ہے، انسان نرم ہو کر ولی بن جاتا ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۹۵۵)

(3) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة... إلخ، باب فضل الرفق، الحدیث: ۷۵۔ (۲۵۹۲)، ص ۱۳۹۸.

(4) شرح السنۃ، کتاب البر والصلة، باب الرفق، الحدیث: ۳۳۸۵، ج ۶، ص ۷۷۲.

قریب بہل ہے۔ (5)

حدیث ۶: مومن آسانی کرنے والے نرم ہوتے ہیں، جیسے نکیل والا اونٹ کہ کھینچا جائے تو کھینچ جاتا ہے اور چٹان پر بٹھایا جائے تو بیٹھ جائے۔ (6)

حدیث ۷: ایک شخص اپنے بھائی کو حیا کے متعلق نصیحت کر رہا تھا کہ اتنی حیا کیوں کرتے ہو، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اسے چھوڑو۔ یعنی نصیحت نہ کرو کیونکہ حیا ایمان سے ہے۔ (7)

(5) السنن لمحمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن مسعود، الحدیث: ۸۳۹۳ ج ۲، ص ۹۰۔

وسنن الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ... إلخ، باب: ۱۱۰، الحدیث: ۲۲۹۶ ج ۴، ص ۲۲۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ دونوں لازم و مزدوم ہیں کہ دوزخ کی آگ پر وہ حرام ہو جاوے اور دوزخ کی آگ اس پر حرام ہو جاوے کہ نہ آگ اس تک پہنچے نہ آگ تک وہ پہنچے اور اگر وہ کسی وقت دوزخیوں کو نکالنے کے لیے دوزخ میں جاوے تو اس کو آگ کی گرمی نہ پہنچے۔

۲۔ صین اور لین کی شد سے بھی آتا ہے اور ی کے سکون سے بھی دونوں کے معنی ہیں نرم مگر جب یہ دونوں جمع ہو جائیں تو ایک سے مراد نرم طبیعت ہوتا ہے دوسرے سے مراد نرم زبان۔ بہل کے معنی ہیں سمجھ یعنی لوگوں کی زیادتیوں سے درگزر کر جانے والا، قریب کے معنی ہیں لوگوں سے نزدیک رہنے والا کہ جب اس کی ضرورت پڑے تو حاضر ہو جاوے اگر لوگ اس سے مستغنی ہوں تو یہ بھی بے نیاز رہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۱۰)

(6) مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب الرفق والخیاء... إلخ، الحدیث: ۵۰۸۶ ج ۳، ص ۸۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ حدیث مرسل ہے کیونکہ کھول تابعی ہیں صحابی نہیں لہذا صحابی کا ذکر نہیں ہوا مگر چونکہ کھول بڑے عالم ثقہ ہیں اس لیے ان کا ارسال قبول ہے، جب امام بخاری کی تعلیق معتبر ہے تو حضرت کھول کا ارسال کیوں نہ معتبر ہو۔

۲۔ یعنی مومن زبان کا بھی نرم ہوتا ہے دل کا بھی نرم اور وہ اللہ رسول کے ہاتھ میں ایسا ہوتا ہے جیسے نکیل والا اونٹ اپنے مالک کے قبضہ میں۔ انف انف کے فتح نون کے کسرہ سے یہ بنا ہے انف بمعنی ناک سے، انف وہ اونٹ جس کی ناک میں نکیل اور نکیل مالک کے ہاتھ میں ہو۔

۳۔ یعنی مومن اللہ رسول کے احکام پر بلا جرح قدح سر جھکا دیتا ہے خواہ احکام نرم ہوں یا سخت وجہ نہیں پوچھتا کہ یہ حکم کیوں ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۱۲)

(7) صحیح ابی حری، کتاب الایمان، باب الحیاء من الایمان، الحدیث: ۲۳ ج ۱، ص ۱۹۔

حدیث ۸: حیا نہیں لاتی ہے مگر خیر کو حیا کل ہی خیر ہے۔ (8)

حدیث ۹: یہ اگلے انبیاء کا کلام ہے جو لوگوں میں مشہور ہے، جب تجھے حیا نہیں تو جو چاہے کر۔ (9)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس سے کہہ رہا تھا کہ تو بہت شرمیلا ہے اتنی شرم نہ کیا کر کیونکہ بہت شرمیلا آدمی دنیا کا نہیں سکتا، یہاں وعظ سے مراد ڈرا کر نصیحت کرنا ہے۔ (مرقات)

۲۔ یعنی اسے حیا و غیرت سے نہ روکنا اسے شرمیلا رہنے دو۔

۳۔ خیال رہے کہ جو حیا گناہوں سے روک دے وہ تقویٰ کی اصل ہے اور جو غیرت و حیا اللہ کے مقبول بندوں کی ہیبت دل میں پیدا کر دے وہ ایمان کا رکن اعلیٰ ہے اور جو حیا نیک اعمال سے روک دے وہ بری ہے، بعض لوگ کہتے ہیں کہ ہم کو نماز پڑھنے سے شرم لگتی ہے یہ حیا نہیں ہے توئی ہے، یہاں پہلے یا دوسرے درجہ کی حیا مراد ہے۔ اللہ تعالیٰ ہمارے دلوں میں اپنا خوف اپنے حبیب کی غیرت نصیب کرے۔ اعلیٰ حضرت اقدس سرہ فرماتے ہیں

شرم نبی خوف خدا یہ بھی نہیں وہ بھی نہیں

دن لہو میں کھوتا تجھے شب نیند بھر سوتا تجھے

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۹۷)

(8) صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان عدد شعب الایمان... إلخ، الحدیث ۶۰، ۶۱۔ (۳۷) ص ۴۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حضرت جنید بغدادی فرماتے ہیں کہ شرعی حیا کی حقیقت یہ ہے کہ بندہ اللہ کی نعمتوں اور اپنی کوتاہیوں میں غور کر کے شرمندہ و نادام ہو، اس شرمندگی کی بنا پر آنکھ نہ گناہوں سے بچنے، نیکیاں کرنے کی کوشش کرے، جو غیرت نیکیوں سے روک دے وہ عجز ہے حیا نہیں۔ اس معنی سے یہ حدیث پاک بالکل واضح ہو گئی واقعی یہ حیا تو گویا ایمان ہی ہے خیر ہی ہے۔ (مرقات و اشعہ)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۹۸)

(9) صحیح البخاری، کتاب أحادیث الانبیاء، باب ۵۶، الحدیث: ۳۴۸۳، ج ۲، ص ۴۷۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ کلام بمعنی چیز ہے یعنی گزشتہ انبیاء کرام نے اپنی امتوں سے جو حکیمانہ کلام فرمائے ان میں سے ایک یہ کلام شریف بھی ہے کہ جب تیرے دل میں اللہ رسول کی اپنے بزرگوں کی شرم و حیا نہ ہوگی تو برے سے برے کام کر گزرے گا کیونکہ برائیوں سے روکنے والی چیز تو غیرت ہے جب وہ نہ رہی تو برائی سے کون روکے، بہت لوگ اپنی بدنامی کے خوف سے برائیاں نہیں کرتے مگر جنہیں نیک نامی بدنامی کی پرداہ نہ ہو وہ ہر گناہ کر گزرتے ہیں۔ ایک شاعر کہتا ہے

اذا لم تخش عاقبة الليالي

ولم تستحي فاصنع ما تشاء

حدیث ۱۰: حیا ایمان سے ہے اور ایمان جنت میں ہے اور بے ہودہ گوئی جفا سے ہے اور جفا جہنم میں ہے۔ (10)

حدیث ۱۱: ہر دین کے لیے ایک خلق ہوتا ہے یعنی عادت و خصلت اور اسلام کا خلق حیا ہے۔ (11)
 حدیث ۱۲: ایمان و حیا دونوں ساتھی ہیں ایک کو اٹھالیا جاتا ہے تو دوسرا بھی اٹھالیا جاتا ہے۔ (12)
 حدیث ۱۳: نیکی اچھے اخلاق کا نام ہے اور گناہ وہ ہے جو تیرے دل میں کھٹکے اور تجھے یہ ناپسند ہو کہ لوگوں کو اس

فلا والله ما فی العیش خیر فی الدنیا اذا ذهب اللیالی

(مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۹۹)

(10) سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الحیاء، الحدیث: ۲۰۱۶، ج ۳، ص ۳۰۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی شرم و حیا ایمان کا رکن اعلیٰ ہے۔ دنیا والوں سے حیا دنیاوی برائیوں سے روک دیتی ہے، دین والوں سے حیا دینی برائیوں سے روک دیتی ہے، اللہ رسول سے شرم و حیا تمام بد عقیدگیوں بد عملیوں سے بچالیتی ہے، ایمان کی عمارت اسی شرم و حیا پر قائم ہے، درخت ایمان کی جڑ مؤمن کے دل میں رہتی ہے اس کی شاخیں جنت میں ہیں۔

۲۔ یعنی جو شخص زبان کا بے باک ہو کہ ہر بری بھلی بات بے دھڑک منہ سے نکال دے تو سمجھ لو کہ اس کا دل سخت ہے اور اس میں حیا نہیں۔ سختی وہ درخت ہے جس کی جڑ انسان کے دل میں ہے اور اس کی شاخ دوزخ میں، ایسے بے دھڑک انسان کا انجام یہ ہوتا ہے کہ وہ اللہ رسول کی بارگاہ میں بھی بے ادب ہو کر کافر ہو جاتا ہے لہذا یہ فرمان عالی بالکل ہی صحیح ہے۔ حضور حکیم مطلق ہیں ہماری بیماریوں ازار یوں پر ہم سے زیادہ خبردار ہیں۔ (مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۰۳)

(11) الموطا، کتاب حسن الخلق، باب ماجاء فی الحیاء، الحدیث: ۱۷۲۳، ج ۲، ص ۴۰۵۔

وسنن ابن ماجہ، کتاب الزہد، باب الحیاء، الحدیث: ۴۱۸۱، ج ۴، ص ۴۶۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اگرچہ اسلام کی بہت سی عبادات ہیں مگر حیا داری سب سے بڑی عبادت ہے۔ کل دین سے مراد باطل ادیان ہیں اور دین اسلام سے مراد رب تعالیٰ کا دین کیونکہ سب انبیاء کرام نے حیا داری کا سبق دیا ہے غیرتی بے حیائی سے سب نے منع فرمایا، بے غیرت کا کوئی نیک عمل قبول نہیں اگرچہ ساجد و عابد ہو، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی گستاخی سب سے بڑی بے غیرتی ہے۔ ۲۔ لہذا یہ حدیث مرسل نہیں بلکہ مسند ہے کیونکہ اس میں حضرت انس اور ابن عباس رضی اللہ عنہم کا نام آگیا، یہ حضرات صحابی ہیں، چونکہ ابن طلحہ تابعی ہیں اور، مک نے انہی سے یہ روایت کی صحابی کا ذکر نہیں کیا لہذا ان کی روایت میں حدیث مرسل ہے۔ (مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۱۶)

(12) شعب ایمان، باب الحیاء، الحدیث: ۷۷۲۷، ج ۶، ص ۱۴۰۔

پر اطلاع ہو جائے۔ (13)

یہ حکم اس کا ہے جس کے سینے کو خدا نے منور فرمایا ہے اور قلب بیدار و روشن ہے پھر بھی یہ وہاں ہے کہ دلائل شرعیہ سے اس کی حرمت ثابت نہ ہو اور اگر دلائل حرمت پر ہوں تو نہ کھٹکنے کا لحاظ نہ ہوگا۔

حدیث ۱۴: تم میں سب سے زیادہ میرا محبوب وہ ہے جس کے اخلاق سب سے اچھے ہوں۔ (14)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہاں قرآن جمع دو کے لیے ارشاد ہوا، قرآن جمع ہے قرین کی بمعنی ساتھی، مشکوٰۃ شریف کے بعض نسخوں میں قرآن تثنیہ مذکر ماضی مطلق سے ہے یعنی حیاء اور ایمان رہنے اور جانے میں ساتھ ہیں، جس دل میں ہوں گے دونوں ہوں گے نہ ہوں گے دونوں نہ ہوں گے، مؤمن ہے حیاء نہیں ہو سکتا کافر حیاء نہیں ہو سکتا۔ ۲۔ خیال رہے کہ یہاں ایمان سے مراد کامل ایمان ہے اور حیاء سے مراد ایمانی شرم و غیرت ہے یعنی اللہ اور رسول صلی اللہ علیہ وسلم سے غیرت جو گناہوں سے روک دے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۱۷)

(13) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة... الخ، باب تفسیر البر والاثم، الحدیث: ۱۴۔ (۲۵۵۳)، ص ۱۳۸۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ (حضرت نواس بن سمان) صحابی ہیں، قبیلہ بنی کلب سے ہیں، بعض نے فرمایا کہ آپ انصاری ہیں، آخر میں شام میں قیام فرمایا۔ مرقات نے فرمایا کہ آپ اصحاب صفہ سے ہیں، اشعہ نے فرمایا کہ آپ کی والدہ کلابیہ سے حضور نے نکاح کیا اور طلاق دے دی اور کلابیہ عورت آپ کی والدہ ہی تھیں۔ (اشعہ)

۲۔ یعنی نیکی اور گناہ کی پہچان کیا ہے مجھے کیسے پتہ لگے کہ یہ کام نیکی ہے اور یہ کام گناہ ہے مجھے ارشاد فرمائیں۔

۳۔ اچھی عادت عام ہے مخلوق کے ساتھ برتاؤ اور خالق سے معاملات سب ہی کو شامل ہے نماز روزہ کی پابندی اچھی عادت ہے گناہوں سے بچنا اچھی عادت ہے وغیرہ۔

۴۔ یہ فرمان کامل مسلمانوں کے لیے ہے جیسے ہم کو کبھی ہضم نہیں ہوتی فوراً اسے ہو جاتی ہے یوں ہی صالحین کو گناہ ہضم نہیں ہوتا فوراً انہیں دل قبض روحانی تکلیف محسوس ہوتی ہے عام لوگوں کا یہ حال نہیں۔ بعض تو گناہ پر خوش ہو کر اعلان کرتے ہیں حضور صلی اللہ علیہ وسلم صمیم مطلق ہیں ہر شخص کو اس کے مطابق دواء عطا فرماتے ہیں، یوں ہی الناس سے مراد مقبول بندے ہیں۔ امام نووی نے حضرت وبعہ ابن معید اسدی سے روایت کی کہ میں نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے دریافت کیا کہ نیکی اور گناہ کیا ہوتے ہیں فرمایا اپنے دس سے فتویٰ بیا کرو جسے تمہارا دل نیکی کہے وہ نیکی ہے جسے تمہارا دل گناہ کہے وہ گناہ ہے۔ (الربیعین للنووی و مرقات) یعنی تمہارا دل جس پر وہاں ہاتھ ہے ہر دل کا یہ حال نہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۰۰)

(14) صحیح بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم، باب مناقب عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ، الحدیث: ۵۹۷۳، ج ۳، ص ۵۳۹۔

حدیث ۱۵: تم میں اتھے وہ ہیں جن کے اخلاق اچھے ہوں۔ (15)

حدیث ۱۶: ایمان میں زیادہ کامل وہ ہیں جن کے اخلاق اچھے ہوں۔ (16)

حدیث ۱۷: خلق حسن سے بہتر انسان کو کوئی چیز نہیں دی گئی۔ (17)

حدیث ۱۸: قیامت کے دن مومن کی میزان میں سب میں بھاری جو چیز رکھی جائے گی وہ خلق حسن ہے اور اللہ تعالیٰ اس کو دوست نہیں رکھتا جو خوش گو بد زبان ہو۔ (18)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی سارے مسلمانوں میں مجھے بڑا پیارا مسلمان وہ معلوم ہوتا ہے مجھے اس سے بڑی محبت ہے جس کے اخلاق پاکیزہ خصلت اچھی ہے۔ اگر حضور کا پیارا بننا ہے تو خوش خلقی اختیار کرو۔

۲۔ اچھی عادت والا بندہ اللہ تعالیٰ کو پیارا ہے، اس کے حبیب کو پیارا، مخلوق کو پیارا، دنیاوی معاملات میں نہایت نرمی دین میں نہایت پختگی و سختی، یہ ہے خلق محمدی اسی کی یہاں تعلیم ہے۔ افسوس! کہ آج ہم رفع یدین، آمین بالجہر، قرأت خلف الامام کے مسائل پر سر پھوڑے جاتے ہیں اگر یہ اعمال سنت ہیں تو کیا اخلاق محمدی سنت نہیں ان پر بھی ہم کو توجہ دینا چاہیے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۰۱)

(15) صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب صفۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث: ۳۵۵۹، ج ۲، ص ۴۸۹۔

(16) سنن ابی داود، کتاب السنۃ، باب الدلیل علی زیادۃ الایمان ونقصانہ، الحدیث: ۴۶۸۲، ج ۴، ص ۲۹۰۔

(17) شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، الحدیث: ۷۹۹۲، ج ۶، ص ۲۳۵۔

ومشکوٰۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب الرفق والحياء... إلخ، الفصل الثانی، الحدیث: ۵۰۷۸، ج ۳، ص ۸۷۔

(18) سنن الترمذی، کتاب بہرہ الصلۃ، باب ماجاء فی حسن الخلق، الحدیث: ۴۰۰۹، ج ۳، ص ۳۰۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کا نام جرہم ابن ناشب ہے، قبیلہ خثن سے ہیں، اس قبیلہ کے مورث کا نام خثن ابن نمر تھا، جرہم اپنی کنیت میں زیادہ مشہور ہے۔ یعنی ابو ثعبہ، آپ بیعت الرضوان میں شریک تھے، حضور انور نے آپ کو خیر کی قیمت سے خرید لیا، آپ کی تبلیغ پر آپ کی قوم ایمان لائی، ۷ھ میں وفات پائی، بعض نے فرمایا کہ امیر معاویہ کے زمانہ میں فوت ہوئے۔ (اشعہ)

۲۔ کیونکہ خوش خلق آدمی، کثرت نیک اعمال زیادہ کرتا ہے گناہ اس سے کم سرزد ہوتے ہیں۔ اخلاق سے مراد اخلاق محمدی ہیں کفار پر سخت، مومنوں پر بہت ہی نرم، دیانتداری، وعدہ پورا کرنا، معاملات کا درست ہونا سب ہی خوش خلقی میں داخل ہیں۔ خیال رہے کہ خوش خلقی، خوشامد میں فرق ہے، یوں بد خلقی اور استغناء میں فرق ہے۔

۳۔ کیونکہ بد خلق اکثر بد عمل ہوتے ہیں بد خلق خود بھی بد عمل ہے اور بہت سے بد عملیوں کا ذریعہ۔ جھوٹ، خیانت، وعدہ خدائی، بد معاملگی سب ہی بد خلقی کی شاخیں ہیں۔

حدیث ۱۹: مومن اپنے اچھے اخلاق کی وجہ سے قائم اللیل اور صائم النہار کا درجہ پا جاتا ہے۔ (19)
 حدیث ۲۰: مومن دھوکا کھا جانے والا ہوتا ہے (یعنی اپنے کرم کی وجہ سے دھوکا کھا جاتا ہے نہ کہ سبب عقاب سے) اور فاجر دھوکا دینے والا لئیم یعنی بدخلق ہوتا ہے۔ (20)

۱۔ ثرثارون بنا ہے ثرثرة سے بمعنی کثرت کلام یا ایک بات کو بار بار کہنا۔ متشدقون بنا ہے شوق سے بمعنی منہ کا جڑا۔ متشدق وہ ہے جو منہ بھر کر باتیں کرے یا جس کے جڑے باتوں کے لیے کھلے رہیں اور متفہقون بنا ہے فہق سے بمعنی دسعت و فراخی یعنی بہت ہی کلام کرنے والا جسے اردو میں کہتے ہیں بلی، فارسی میں کہتے ہیں بسیارگو۔ ایک شاعر کہتا ہے

گفتہ گفتہ من شدم بسیارگو . از شایک مونہ شد اسرار جو

(مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۳۲)

(19) سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی حسن الخلق، الحدیث: ۴۹۸۷، ج ۴، ص ۳۳۲.
 والسند للامام أحمد بن حنبل، مسند السیدۃ عائشہ رضی اللہ عنہا، الحدیث: ۲۴۳۰۹، ج ۹، ص ۳۳۲.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ مؤمن سے مراد مؤمن کامل عالم و عامل ہے۔ (مرقات)

۲۔ یعنی خوش خلق مسلمان کو خوش خلقی کی وجہ سے نقلی روزوں اور نقلی تہجد کا ثواب مل جاتا ہے کہ وہ علانیہ اور خفیہ اللہ کی مخلوق کو خوش کرتا ہے، نقلی روزہ نماز کا فائدہ صرف اپنے کو ہوتا ہے مگر خوش خلقی کا فائدہ مخلوق انسانی ہے لازم سے متعدی اچھی ہے

(مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۰۸)

(20) سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی النخل، الحدیث: ۱۹۷۱، ج ۳، ص ۳۸۸.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ غر بنا ہے غرور سے بمعنی دھوکا یہاں مراد ہے دیدہ دانستہ مسلمانوں سے دھوکا کھالینے والا لہذا یہ اس کی مہربانی ہے نہ کہ بے وقوفی۔ ہمارے ایسے نیک لوگ دیکھے ہیں جو دیدہ دانستہ طور پر لوگوں سے دھوکا کھا کر ان کا بھلا کر دیتے ہیں۔ مشہور ہے کہ مولانا حمید جیون سے لوگوں نے دہلی پہنچ کر کہا کہ حضور آپ کے شہر جو پور کا دریا وہاں کے لوگوں کو ڈبو دے رہا ہے حضور پانچ سو روپیہ دیں تو دریا کودے رہے اس حرکت سے باز رکھیں آپ نے دے دیئے کچھ عرصہ بعد وہ لوگ آکر بولے کہ حضور بڑی مشکل سے دریا کو پانچ سو روپیہ مل رانی کر کے شہر سے دفع کیا تو انہیں دعائیں اور انعام دیئے، عالمگیر بادشاہ نے کہا حضور یہ کیا فرمایا مسلمان جھوٹ نہیں بولتے یہ لوگ مسلمان ہیں جی کہتے ہوں گے حضرت آدم علیہ السلام نے شیطان سے دھوکا کھایا شیطان چالاک نے دھوکہ دیا یہ ہے کریم اور لئیم میں فرق۔

۲۔ خب بمعنی چالاک دھوکا باز اس کا نتیجہ ہے لئیم ہونا جس مسلمان میں یہ عیوب ہوں وہ ان سے توبہ کرے کہ یہ کفار کے عیب ہیں، کسی کو چال کی سے پھنس لینا کمال نہیں پھنسنے کو نکال لینا کمال ہے۔ (مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۱۱)

- حدیث ۲۱: اللہ (عزوجل) سے ڈر جہاں بھی تو ہو اور برائی ہو جائے تو اس کے بعد نیکی کر کہ یہ اس کو مٹا دے گی اور لوگوں کے ساتھ اچھے اخلاق سے پیش آیا کر۔ (21)
- حدیث ۲۲: جو شخص غصہ کو پی جاتا ہے حالانکہ کر ڈالنے پر اسے قدرت ہے قیامت کے دن اللہ تعالیٰ اسے سب کے سامنے بلائے گا اور اختیار دے دے گا کہ جن حوروں میں تو چاہے چلا جائے۔ (22)
- حدیث ۲۳: میں اس لیے بھیجا گیا کہ اچھے اخلاق کی تکمیل کر دوں۔ (23)



- (21) المرجع السابق، باب، جاء فی معاشرۃ الناس، الحدیث: ۱۹۹۳، ج ۳، ص ۳۹۷.
- (22) سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب فی کظم الغیظ، الحدیث: ۲۰۲۸، ج ۳، ص ۴۱۱.
- وسنن ابی دود، کتاب الادب، باب من کظم غیظا، الحدیث: ۴۷۷۷، ج ۴، ص ۳۲۵.
- (23)، موطا امامک، کتاب حسن الخلق، باب ما جاء فی الحیاء، الحدیث: ۱۷۲۳، ج ۲، ص ۴۰۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

س فرماں عالی کے دو مطلب ہو سکتے ہیں: ایک یہ کہ حضرات انبیاء کرام علیہم السلام اپنی اپنی امتوں کو اخلاق کی تعلیم دینے کے لیے تشریف لائے اور ہم آخری نبی ہیں جیسے ہماری ذات سے دین مکمل ہوا، اللہ تعالیٰ کی نعمت تمام ہوئی، نبوت ختم ہوئی ایسے ہی ہم نے تعلیم خلاق کو مکمل فرمادیا، اب تا قیامت علماء و اولیاء ہمارے نقش قدم پر چل کر ہمارے اخلاق لوگوں کو سکھائیں گے۔ اس صورت میں اتمام کا مقصد ناقص کو کامل کرنا نہیں بلکہ اخلاق کے اعلیٰ درجہ کی تعلیم ہے۔ دوسرے یہ کہ اہل عرب نے عقائد ابراہیمی اعمال ابراہیمی بدل دیئے تھے مگر خلاق ابراہیمی کے یہ لوگ حامل تھے، درازی زمانہ کی وجہ سے اہل عرب کے اخلاق ناقص ہو گئے تھے میں انہیں اخلاق ابراہیمی کی تکمیل کے لیے آیا ہوں کہ لوگوں کو جناب خلیل اللہ صلوات اللہ علیہ کے اخلاق کی تعلیم پورے طور پر دوں اور پیدا شدہ نقصان اور کمی کو دور کروں، پہلے معنی شیخ فرمائے، دوسرے معنی مولانا بلال علی قاری نے۔ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نبوت کے مکمل کی آخری اینٹ ہیں حضور سے نبوت، اخلاق، ہدایت کی تکمیل ہوئی، حضور جمع الجمع ہیں، آپ سے مسیر (چلنا) آپ کی طرف مصیر ہے (لوٹنا)، تمام انبیاء کرام کی صفات کے جامع ہیں۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۹۱۱)

اچھوں کے پاس بیٹھنا بُروں سے بچنا

احادیث

حدیث ۱: اچھے اور بُرے ہم نشین کی مثال جیسے مشک کا اٹھانے والا اور بھٹی پھونکنے والا، جو مشک لیے ہوئے ہے یا وہ تجھے اس میں سے دے گا یا تو اس سے خرید لے گا یا تجھے خوشبو پہنچے گی اور بھٹی پھونکنے والا تیرے کپڑے جلادے گا یا تجھے بری بو پہنچے گی۔ (1)

(1) صحیح البخاری، کتاب الذبائح والصيد، باب المسک، الحدیث: ۵۵۳۳، ج ۳، ص ۵۶۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ سبحان اللہ! کیسی پاکیزہ مثال ہے جس کے ذریعہ سمجھایا گیا ہے کہ بردوں کی صحبت فائدہ اور اچھوں کی صحبت نقصان بھی نہیں دے سکتی، بھٹی والے سے مشک نہیں ملے گا گرمی اور دھواں ہی ملے گا، مشک والے سے نہ گرمی ملے نہ دھواں مشک یا خوشبو ہی ملے گی۔

۲۔ یہ دنی نفع کا ذکر ہے مشک خرید لینا یا اس کا مفت ہی دے دینا اعلیٰ نفع ہے جس سے ہمیشہ فائدہ پہنچتا رہے گا اور صرف خوشبو پائینا ادنیٰ نفع ہے۔ خیال رہے کہ ابو جہل وغیرہ دشمنان رسول حضور کے پاس حاضر ہوئے ہی نہیں وہاں حاضری محبت سے حاصل ہوتی ہے۔

۳۔ اس فرمان عالی کا مقصد یہ ہے کہ حتی الامکان بری صحبت سے بچو کہ یہ دین و دنیا برباد کر دیتی ہے اور اچھی صحبت اختیار کرو کہ اس سے دین و دنیا سنبھل جاتے ہیں۔ سانپ کی صحبت جان لیتی ہے، برے یار کی صحبت ایمان برباد کر دیتی ہے۔

یار بد تنها ہمیں بر جاں زند
یار بد بردین و برا ایمان زند

صوفیاء کرام کے نزدیک ساری عبادات سے افضل صحبت نیک ہے آج مسلمان نمازی، غازی، حاجی، قاضی بنتے رہتے ہیں مگر صحابی نہیں بنتے کہ صحابی محبت نبی سے بنتے تھے وہ صحبت اب کہاں نصیب۔ حضور سب کچھ دے گئے مگر صحبت ساتھ ہی لے گئے صلی اللہ علیہ وسلم۔

(مرآۃ البانی جمع شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۳۸)

صحبت و مجلس کے بارے میں چالیس اصول ننگینے

پیارے بھائیو!

صحبت کے متعلق مختصر مضمون تحریر ہوا اب آخر میں صحبت کے ساتھ ساتھ مجلس و اجتماع کے بارے میں بھی کچھ ذکر کیا جاتا ہے کیونکہ صحبت و مجلس دونوں ایک دوسرے کے لئے لازم و ملزوم ہیں کہ جب کسی کی صحبت اپنائے گا تو اس کے ساتھ مجلس ضرور ہوگی، لہذا اس سلسلے میں یعنی صحبت و مجلس دونوں کے متعلق یہاں کچھ روایات جمع کی گئی ہیں، اللہ تعالیٰ قبول فرمائے۔

(۱) بے شک اللہ تعالیٰ صالح مسلمان کی وجہ سے اس کے پڑوسیوں سے سوگھر والوں کی بلا و مصیبت سے حفاظت فرماتا ہے۔

(المعجم الاوسط، الحدیث: ۴۰۸۰، ج ۳، ص ۱۲۹)

(۲) رضائے الہی کے لئے ملاقات کر کیونکہ جس نے اللہ تعالیٰ کے لئے ملاقات کی تو ستر ہزار فرشتے اسے منزل تک پہنچانے ساتھ جاتے

ہیں۔ (کشف الخفاء، حرف الزام، الحدیث: ۱۳۱۱، ج ۱، ص ۳۸۷)

(۳) جب تو اپنے بھائی میں تین خصلتیں دیکھے تو اس سے امید رکھ (وہ تین چیزیں یہ ہیں) حیا، امانت، سچائی اور جب تو (ان تین چیزوں)

کو نہ دیکھے تو اس سے امید نہ رکھ۔ (اکمال فی ضعفاء الرجال، رشدین بن کریب، ج ۴، ص ۶۵۔ کنز العمال، کتاب الصوۃ، قسم الرجال،

الطب الثاني فی آداب الصوۃ، الخ، الحدیث: ۲۳۷۵۰، ج ۹، ص ۱۳)

(۴) تیرا مصاحب و ساتھی نہ ہو مگر مومن اور تیرا کھانا نہ کھائے مگر متقی پرہیزگار۔

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب من لا یران یحلس، الحدیث: ۳۸۳۲، ج ۳، ص ۳۲۱)

(۵) تنہائی بہتر ہے برے ساتھی سے اور اچھا ساتھی بہتر ہے تنہائی سے اور اچھی بات بولنا بہتر ہے خاموشی سے اور خاموشی بہتر ہے بری بات

بولنے سے۔ (شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، فصل فی السکوت عما لا یرعی، الحدیث: ۳۹۹۳، ج ۴، ص ۲۵۶ تا ۲۵۷)

(۶) بہت سے جاں عابد ہیں اور بہت سے فاجر عالم ہیں پس تم جاہل عابدوں اور فاجر عالموں سے بچو۔

(اکمال فی ضعفاء الرجال، محفوظ بن بحر الانطاکی، ۲۹۶/ ۱۹۱، ج ۸، ص ۱۹۵)

(۷) تو بُرے ساتھی سے بچ کیونکہ تو اس کے ساتھ پھپھانا جائے گا۔

(کنز العمال، کتاب الصوۃ، قسم الاقوال، الباب الثالث فی التریب عن صحبۃ السوء، الحدیث: ۲۳۸۳۹، ج ۹، ص ۱۹)

(۸) تو بُرے ساتھی سے بچ کیونکہ وہ جہنم کا ایک کڑا ہے اس کی محبت تجھے فائدہ نہیں پہنچائے گی اور وہ اپنا عہد تجھ سے وفا نہیں کریگا۔

(فردوس الاخبار، الحدیث: ۱۵۷۳، ج ۱، ص ۲۲۳)

(۹) حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ انہوں نے فرمایا میرے نزدیک لوگوں میں زیادہ محبوب وہ ہے جو میرے غیوب مجھ پر

پیش کرے۔ (اسطیقات الکبریٰ، ذکر اختلاف عمر رحمہ اللہ، ج ۳، ص ۲۲۲)

(۱۰) تم ہر عالم کے پاس مت بیٹھو مگر وہ عالم جو تمہیں پانچ (چیزوں) سے پانچ (چیزوں) کی طرف بلائے یعنی (۱) شک سے یقین کی طرف

(۲) غرور سے تواضع و انکساری کی طرف (۳) دشمنی سے فیض و خیر خواہی کی طرف (۴) ریاء نمود و نمائش سے اخلاص کی طرف

(۵) خواہش و طلب سے زہد کی طرف یعنی ایسے باعمل عالم دین کے پاس بیٹھو۔

(کنز العمال، کتاب الصوۃ، قسم الاقوال، حق المجالس والجلوس، الحدیث: ۲۵۳۴۵، ج ۹، ص ۶۲)

(۱) آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: تم علماء کے پاس بیٹھنا اور دانا لوگوں کے کلام کو دھیان سے سننا لازم پکڑو کیونکہ

اللہ تعالیٰ دائمی حکمت کے نور سے مردہ دل کو زندہ کرتا ہے، جیسا کہ مردہ و بنجر زمین کو بارش کے پانی سے زندہ کرتا ہے۔

(منہیات ابن حجر عسقلانی، باب النشائی، ص ۳۰)

(۱۲) کسی دانا شخص سے مردی ہے کہ تین چیزیں غم و آلام کو دور کر دیتی ہیں۔

(۱) اللہ تعالیٰ کا ذکر (۲) اللہ تعالیٰ کے دوستوں کی ملاقات (۳) دانا حضرات کی گفتگو۔

(۱۳) حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا: چار چیزیں دل کی تاریکی سے ہیں۔ (۱) خوب پیٹ بھرا ہونا لا پرواہی کی وجہ سے۔ (۲) ظلم کرنے والوں کی صحبت اختیار کرنا۔ (۳) پچھلے گناہوں کو بھول جانا (۴) لمبی لمبی امیدیں۔ اور چار چیزیں دل کی روشنی سے ہیں۔ (۱) بھوکے پیٹ ہونا پرہیز و ڈر کی وجہ سے (۲) نیکو کاروں کی صحبت اختیار کرنا۔ (۳) پچھلے گناہوں کو یاد رکھنا۔ (۴) چھوٹی امیدیں۔ (منہیات ابن حجر عسقلانی، باب الربا، ص ۳۹ تا ۴۰)

(۱۴) ابو نعیم نے حضرت عطاء خراسانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ سے روایت کیا فرمایا کہ جو بندہ زمین کے ٹکڑوں میں سے کسی ٹکڑے پر سجدہ کرتا ہے تو وہ ٹکڑا (حصہ) اس کے لئے قیامت کے دن گواہی دے گا اور وہ اس پر روتا ہے جس دن وہ (بندہ مومن) مرتا ہے۔

(۱۵) ابو نعیم اور ابن مندہ نے حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: تم اپنے مردوں کو نیک لوگوں کے درمیان دفن کرو کیونکہ مردہ برے پڑوسی کی وجہ سے تکلیف اٹھاتا ہے جس طرح زندہ برے پڑوسی کی وجہ سے تکلیف اٹھاتا ہے۔ (حلیۃ الاولیاء، مالک بن انس، الحدیث: ۹۰۳۲، ج ۶، ص ۳۹۰)

(۱۶) حکیم ترمذی، ابن عدی، ابن عساکر اور ابن مندہ نے حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ مومن جب مرتا ہے تو اس کی موت پر قبرستان مزین ہو جاتے ہیں پس نہیں ہے ان قبرستانوں میں سے کوئی جگہ مگر وہ تمن کرتی ہے کہ وہ مومن اس میں دفن کیا جائے اور جب کافر مرتا ہے تو اس کی موت پر قبرستان تاریک ہو جاتے ہیں پس نہیں ہے ان قبرستانوں میں سے کوئی جگہ مگر وہ اللہ تعالیٰ کی پناہ مانگتی ہے اس بات سے کہ وہ کافر اس میں دفن کیا جائے۔

(۱۷) ابن عساکر نے حضرت عبدالرحمن بخاری سے روایت کیا فرمایا کہ ایک شخص کی وفات کا وقت قریب آ گیا تو اس سے کہا گیا کہ تو لا الہ الا اللہ (یعنی پورا کلمہ طیبہ) پڑھ تو اس نے کہا کہ میں طاقت نہیں رکھتا (کیونکہ) میں ان لوگوں کا مصاحب ہوتا تھا جو مجھے ابو بکر و عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہم کو تہز او کالی دینے کا حکم دیتے تھے۔ (شرح الصدور، باب من دنا اجلہ و کیفیۃ الموت و شدتہ، ص ۳۸)

(۱۸) حضرت ابن عبید رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ سے روایت ہے انہوں نے کہا کہ عیش پرست اور نفسانی خواہشات کی پیروی کرنے والوں میں سے دو شخص حضرت ابن سیرین رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے پاس آئے تو ان دونوں نے کہا، ہم آپ کو ایک حدیث بتائیں؟

آپ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے فرمایا: نہیں (پھر) دونوں نے کہا: ہم آپ کو کتاب اللہ کی ایک آیت سنائیں؟ آپ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے فرمایا: نہیں پھر آپ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے فرمایا: تم دونوں مجھ سے دور ہوتے ہو یا میں (خود) اٹھ جاؤں حضرت ابن عبید رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے کہا: (یہ سن کر) وہ دونوں چلے گئے تو کسی شخص نے کہا: اے ابوبکر! (یہ ابن سیرین رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کی کنیت تھی) آپ پر یہاں حرج تھا۔ وہ آپ کو اللہ تعالیٰ کی کتاب سے ایک آیت سنا دیتے، آپ نے فرمایا: (میں اس بات سے ڈرا کہ) وہ مجھے ایک آیت سناتے پھر اسے بدل ڈالتے (یعنی معنوی تحریف کر دیتے اور وہ میرے دل میں ٹھہر جاتی)۔

(سنن الدارمی، المقدمة، باب اجتناب اہل الاہواء... الخ، الحدیث ۳۹۷، ج ۱، ص ۱۲۰)

(۱۹) حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے کہ ایک شخص ان کے پاس آیا اور کہا کہ فلاں آپ کو سلام بھیجا ہے (یہ سن کر) آپ نے فرمایا: مجھے خبر پہنچی ہے کہ اس نے دین میں نئی بات پیدا کی ہے یعنی بدعت سینہ کا مرتکب ہوا ہے پس اگر اس نے (دین میں نئی بات) پیدا کی تو اسے سلام نہ پہنچانا۔ (سنن الدارمی، المقدمة، باب اجتناب اہل الاہواء... الخ، الحدیث ۳۹۳، ج ۱، ص ۱۲۰)

(۲۰) اچھے مصاحب (پاس بیٹھنے والے) کی مثال مشک والے جیسی ہے اگر تجھے اس سے کچھ نہ ملے تب بھی خوشبو پہنچے گی اور بُرے مصاحب کی مثال بھٹی والے کی طرح ہے اگر تجھے (اس کی بھٹی کی) سیاہی نہ بھی پہنچے پھر بھی اس کا دھواں تو پہنچے گا۔

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب من یرى امران یحالیس، الحدیث ۴۸۲۹، ج ۴، ص ۳۲۰)

(۲۱) تین چیزیں تیرے لئے تیرے بھائی کی خالص محبت کرنے کا ذریعہ ہیں، (۱) جب تو اس سے ملے تو اسے سلام کرے (۲) اور تو اس کے لئے مجلس میں (جگہ) کشادہ کرے۔ (۳) اور تو اسے اس نام سے بلائے جو اسے پیارا ہو۔

(المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، باب ثلاث... الخ، الحدیث ۵۸۷۰، ج ۴، ص ۵۳۳)

(۲۲) حضرت نافع رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کا بیان ہے کہ حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کا اہل شام میں سے ایک دوست تھا جو آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے خد و کتابت رکھتا تھا چنانچہ حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے اس کے لئے خط لکھا کہ مجھ تک یہ بات پہنچی ہے کہ مسئلہ تقدیر میں تمہیں کچھ کلام (انکار) ہے لہذا میرے لئے آئندہ خط نہ لکھنا کیونکہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کو فرماتے ہوئے سنا ہے کہ عنقریب میری امت میں ایسے لوگ ہوں گے جو تقدیر کا انکار کریں گے۔

(سنن ابی داؤد، کتاب السنۃ، باب لزوم السنۃ، الحدیث ۴۶۱۳، ج ۴، ص ۲۷)

(۲۳) حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے روایت کی کہ فرمایا: قدر یہ اس امت کے مجوس ہیں، اگر یہ پڑیں تو ان کی عیادت نہ کرنا اور اگر مرجائیں تو ان کے جنازے میں شامل نہ ہونا۔

(سنن ابی داؤد، کتاب السنۃ، باب الدلیل علی زیادة الایمان ونقصانہ، الحدیث ۴۶۹۱، ج ۴، ص ۲۹۴)

(۲۴) کچھ کلمات ہیں جنہیں کوئی اپنی مجلس میں کھڑے ہوتے وقت پڑھتا ہے تو اس کی طرف سے کفارہ ہو جاتے ہیں اور جو ان سے

کلمات کو بھلائی و ذکر کی مجلس میں پڑھتا ہے تو ان کی اس پر مہر لگادی جاتی ہے جیسے کاغذ پر مہر لگائی جاتی ہے۔ (وہ کلمات یہ ہیں)

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی کفارة المجلس، الحدیث ۴۸۵۷، ج ۴، ص ۳۷۷)

(۲۵) جو وہ مجلس سے اٹھ جائیں اور اس میں اللہ تعالیٰ کا ذکر نہ کریں، تو وہ ایسے اٹھے جیسے گدھے کی لاش اور وہ (مجلس) ان پر (قیامت کے دن) حسرت (کا باعث) ہوگی۔

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب کرہیۃ ان یقوم الرجل من مجلسه ولا یذکر اللہ، الحدیث ۴۸۵۵، ج ۴، ص ۳۷۷)

(۲۶) کوئی شخص کسی قوم کے پاس آئے اور اس کی خوشنودی کے لئے وہ لوگ جگہ میں وسعت کر دیں تو اللہ تعالیٰ پر حق ہے (اس معنی میں کہ وہ اپنے فضل و کرم سے ایسا کرے یوں نہیں کہ اللہ تعالیٰ پر واجب و ضروری ہو، کیونکہ اللہ تعالیٰ بے نیاز ہے، اور ہر طرح کی محتاجی سے منزہ و مبرا ہے) کہ ان کو راضی کرے۔ (کنز العمال، کتاب الصحیۃ، قسم الاقوال، حق المجالس و الجلس، الحدیث ۲۵۳۷۰، ج ۹، ص ۵۸)

(۲۷) کوئی شخص دو آدمیوں کے درمیان نہ بیٹھے مگر ان کی اجازت سے۔ اور دوسری روایت میں ہے کہ کسی شخص کے لئے حلال نہیں کہ وہ دو آدمیوں کے درمیان بغیر ان کی اجازت کے جدائی کرے یعنی ان کے درمیان بیٹھ جائے۔

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی الرجل یجلس بین الرجلین بغیر اذنہما، الحدیث ۴۸۴۴-۴۸۴۵، ج ۴، ص ۳۴۳)

(۲۸) جب تم بیٹھو تو اپنے جوتے اتار لو تمہارے قدم آرام پائیں گے۔

(کنز العمال، کتاب الصحیۃ، قسم الاقوال، حق المجالس و الجلس، الحدیث ۲۵۳۹۰، ج ۹، ص ۵۹)

(۲۹) جب کوئی شخص اپنی جگہ سے اٹھ جائے پھر وہ واپس لوٹ کر آئے (یعنی جب کہ جلد ہی لوٹ آئے) تو اپنی جگہ کا وہی زیادہ مستحق و

ہقدار ہے۔ (سنن ابی داود، کتاب الادب، باب اذا قام الرجل من مجلس ثم رجع، الحدیث ۴۸۵۳، ج ۴، ص ۳۴۶)

(۳۰) زیادہ شرف والی بیٹھک وہ ہے جو قبلہ رخ ہے۔

(المسند رک علی الصیحین، کتاب الادب، باب اشرف المجالس... الخ، الحدیث ۷۷۷۸، ج ۵، ص ۳۸۳)

(۳۱) بہترین نیکی ہمنشیوں کی تعظیم کرنا ہے۔ (فردوس الاخبار، ذکر فصول اخر فی عبارات شتی، الحدیث ۱۴۳۸، ج ۱، ص ۲۰۷)

(۳۲) تم اپنی مجلس کو مجھ پر درود پڑھ کر عزین کرو کیونکہ تمہارا مجھ پر درود پڑھنا تمہارے لئے قیامت کے دن نور ہوگا۔

(فردوس الاخبار، الحدیث ۳۱۳۹، ج ۱، ص ۴۲۲)

(۳۳) بدترین مجلس راستے کے بازار ہیں اور بہترین مجلس مساجد ہیں پس اگر تو مسجد میں نہ بیٹھے تو اپنے گھر کو لازم کر۔

(کنز العمال، کتاب الصحیۃ، قسم الاقوال، حق المجالس و الجلس، الحدیث ۲۵۴۱۱، ج ۹، ص ۶۰)

(۳۴) لوگ کسی مجلس میں بیٹھتے ہیں جس میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم پر درود نہیں پڑھتے تو وہ ان پر حسرت کا باعث ہوگی۔

حدیث ۲: مصاحبت نہ کرو مگر مومن کی۔ (۲) یعنی صرف مومن کامل کے پاس بیٹھا کرو۔

حدیث ۳: بڑوں کے پاس بیٹھا کرو اور علماء سے باتیں پوچھا کرو اور حکماء سے میل جول رکھو۔ (۳)

اگرچہ جنت میں داخل ہو جائیں (درو نہ پڑھنے پر حسرت ہوگی) جس وقت وہ (درو پڑھنے کی) جزا دیکھیں گے۔

(شعب الایمان، باب فی تعظیم النبی و اجلالہ و توقیرہ، الحدیث ۱۵۷۱، ج ۲، ص ۲۱۵)

(۳۵) مجلسیں تین ہیں۔ (۱) غنم (۲) سالم (۳) شاجب

غنم وہ مجلس ہے جس میں اللہ تعالیٰ کا ذکر ہو اور سالم وہ مجلس ہے جس میں خاموشی ہو۔ (یعنی بے ہودہ اور خلاف شرع بات نہ ہو) اور شاجب

وہ مجلس ہے جس میں باطل بحثیں ہوں۔ (کنز العمال، کتاب الصوۃ، قسم الاقوال، حق المجالس والجلوس، الحدیث ۲۵۴۶، ج ۹، ص ۶۳)

(۳۶) اپنے تیسرے ساتھی کو چھوڑ کر دو شخص آپس میں سرگوشی نہ کریں کیونکہ یہ بات اس کو رنج پہنچائے گی۔

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی التناجی، الحدیث ۴۸۵۱، ج ۴، ص ۳۴۶)

(۳۷) حضرت جابر بن سرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا کہ جب ہم نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی ہرگاہ میں حاضر ہوتے تو ہم میں

سے جو آتا وہ آخر میں بیٹھ جاتا۔ (سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی التلقین، الحدیث ۴۸۲۵، ج ۴، ص ۳۳۹)

(۳۸) مسلمان کا مسلمان پر (یہ) حق ہے کہ جب اسے دیکھے تو اس کے لئے سرک جائے۔ (یعنی مجلس میں آنے والے اسلامی بھائی کے

لئے ادھر ادھر کچھ سرک کر جگہ بناوے کہ وہ اس میں بیٹھ جائے۔)

(شعب الایمان، باب فی مقاربتہ... الخ، فصل فی قیام المرء لصاحبہ، الحدیث ۸۹۳۳، ج ۶، ص ۴۶۸)

(۳۹) حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے (اس بات سے) منع فرمایا

کہ کسی شخص کو اس کی جگہ سے اٹھا دیا جائے اور اس جگہ میں دوسرا بیٹھ جائے البتہ تم سرک جایا کرو اور جگہ کشادہ کر دیا کرو (یعنی بیٹھنے والوں کو

چاہیے کہ آنے والے، سلامی بھائی کے لئے سرک جائیں اور اسے بھی جگہ دے دیں تاکہ وہ بھی بیٹھ جائے) اور حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ

عنہما (اس بات کو) مکروہ جانتے تھے کہ کوئی شخص اپنی جگہ سے اٹھ جائے اور یہ اس کی جگہ پر بیٹھیں۔ (حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کا

یہ فعل کماں درجہ کی پرہیزگاری سے تھا کہ کہیں ایسا نہ ہو کہ اس کا دل تواضع کو نہیں چاہتا تھا مگر محض ان کی خاطر جگہ چھوڑ دی ہو)۔

(صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب اذا قیل لکم... الخ، الحدیث ۶۲۷۰، ج ۴، ص ۱۷۹)

(۴۰) حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا: میں نے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی مدینہ منورہ میں دس سال خدمت کی جب کہ

میں بڑکا تھا مگر میرا ہر کام آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی مرضی کے مطابق نہیں ہوتا تھا، لیکن جو میں نے کیا اس پر قطعاً آپ صلی اللہ تعالیٰ

علیہ وآلہ وسلم نے اُف تک نہ کیا اور نہ یہ فرمایا کہ یہ تم نے کیا یا ایسے کیوں نہ کیا۔

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الحکم و اخلاق النبی، الحدیث ۴۷۷۳، ج ۴، ص ۳۲۲)

(۲) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب من یؤمن بامر ان یجلس، الحدیث ۴۸۳۲، ج ۴، ص ۳۴۱

(۳) الجامع الصغیر، الحدیث ۳۵۷۷، ص ۲۱۸

حدیث ۴: جو مسلمان لوگوں سے ملتا جلتا ہے اور ان کی ایذاؤں پر صبر کرتا ہے، وہ اس مسلمان سے بہتر ہے جو نہیں ملتا جلتا اور ان کی تکلیف دہی پر صبر نہیں کرتا۔ (4)

حدیث ۵: اچھا ساتھی وہ ہے کہ جب تو خدا کو یاد کرے تو وہ تیری مدد کرے اور جب تو بھولے تو وہ یاد دلائے۔ (5)

حدیث ۶: اچھا ہم نشین وہ ہے کہ اس کے دیکھنے سے تمہیں خدا یاد آئے اور اس کی گفتگو سے تمہارے عمل میں زیادتی ہو اور اس کا عمل تمہیں آخرت کی یاد دلائے۔ (6)

حدیث ۷: ایسے کے ساتھ نہ رہو جو تمہاری فضیلت کا قائل نہ ہو، جیسے تم اس کی فضیلت کے قائل ہو۔ (7) یعنی جو تمہیں نظر حقارت سے دیکھتا ہو اس کے ساتھ نہ رہو یا یہ کہ وہ اپنا حق تمہارے ذمہ جانتا ہو اور تمہارے حق کا قائل نہ ہو۔

حدیث ۸: حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا: ایسی چیز میں نہ پڑو جو تمہارے لیے مفید نہ ہو اور دشمن سے الگ رہو اور دوست سے بچتے رہو مگر جبکہ وہ امین ہو کہ امین کے برابر کوئی نہیں اور امین وہی ہے جو اللہ (عزوجل) سے ڈرے اور فاجر کے ساتھ نہ رہو کہ وہ تمہیں فحور سکھائے گا اور اس کے سامنے بھید کی بات نہ کہو اور اپنے کام میں ان سے مشورہ لو جو اللہ (عزوجل) سے ڈرتے ہیں۔ (8)

حدیث ۹: حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا: فاجر سے بھائی بندی نہ کر کہ وہ اپنے فعل کو تیرے لیے مزین کرے اور یہ چاہے گا کہ تو بھی اس جیسا ہو جائے اور اپنی بدترین خصلت کو اچھا کر کے دکھائے گا، تیرے پاس اس کا آنا جانا عیب اور ننگ ہے اور احمق سے بھی بھائی چارہ نہ کر کہ وہ اپنے کو مشقت میں ڈال دے گا اور تجھے کچھ نفع نہیں پہنچائے گا اور کبھی یہ ہوگا کہ تجھے نفع پہنچانا چاہے گا مگر ہوگا یہ کہ نقصان پہنچا دے گا اس کی خاموشی بولنے سے بہتر ہے اس کی دوری نزدیکی سے بہتر ہے اور موت زندگی سے بہتر اور کذاب سے بھی بھائی چارہ نہ کر کہ اس کے ساتھ معاشرت

(4) سنن الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب: ۱۲۰، الحدیث: ۲۵۱۵، ج ۴، ص ۲۲۷۔

وسنن ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب البصر علی البلاء، الحدیث: ۳۲۰۳، ج ۴، ص ۳۷۵۔

(5) الاخوان لابن ابی الدنیا، باب من أمر بحسبہ...، ج ۱، ص ۴۶۔

(6) الجامع الصغیر، الحدیث: ۴۰۶۳، ص ۲۳۷۔

(7) حلیۃ الاولیاء، رقم: ۱۳۳۷۵، ج ۱۰، ص ۲۳۔

(8) النصیحت لابن ابی الدنیا، باب النصیحت عن الکلام فیہا لا یعنیک، ص ۱۲۳۔

وشعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، فصل فی فضل السکوت عما لا یعنیک، الحدیث: ۴۹۹۵، ج ۴، ص ۲۵۷۔

تجھے نفع نہ دے گی تیری بات دوسروں تک پہنچائے گا اور دوسروں کی تیرے پاس لائے گا اور اگر تو سچ بولے گا جب بھی وہ سچ نہیں بولے گا۔ (9)



اللہ (عزوجل) کے لیے دوستی و دشمنی کا بیان

احادیث

حدیث ۱: روحوں کا لشکر مجتمع تھا جن میں وہاں تعارف تھا دنیا میں اُلفت ہوئی اور وہاں نا آشنائی رہی تو یہاں اختلاف ہوا۔ (1)

حدیث ۲: اللہ تعالیٰ قیامت کے دن فرمائے گا: کہاں ہیں جو میرے جلال کی وجہ سے آپس میں محبت رکھتے تھے آج میں ان کو اپنے سایہ میں رکھوں گا، آج میرے سایہ کے سوا کوئی سایہ نہیں۔ (2)

حدیث ۳: ایک شخص اپنے بھائی سے ملنے دوسرے قریہ میں گیا، اللہ تعالیٰ نے اس کے راستہ پر ایک فرشتہ بٹھا دیا۔ جب وہ فرشتہ کے پاس آیا، اس نے دریافت کیا کہاں کا ارادہ ہے؟ کہا اس قریہ میں میرا بھائی ہے اس سے ملنے جاتا ہوں۔ فرشتہ نے کہا، کیا اس پر تیرا کوئی احسان ہے، جسے لینے کو جاتا ہے؟ اس نے کہا نہیں، صرف یہ بات ہے کہ میں اسے اللہ (عزوجل) کے لیے دوست رکھتا ہوں۔ فرشتہ نے کہا، مجھے اللہ (عزوجل) نے تیرے پاس بھیجا ہے کہ تجھے

(1) صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب الارواح جنود مجنونة، الحدیث: ۳۳۲۶، ج ۲، ص ۱۳۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی انسانی روحیں بدنوں میں آنے سے پہلے آپس میں مخلوط تھیں اس طرح کہ سعید روحیں ایک گروہ تھیں اور شقی روحیں دوسرا گروہ مگر سعید

آپس میں مخلوط مخلوط تھیں اور شقی آپس میں مخلوط۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۸۳۲)

(2) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة...، باب فضل الحب لی اللہ تعالیٰ، الحدیث: ۳۷۰۰، (۲۵۶۶)، ص ۱۳۸۸.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی وہ مسلمان ہماری بارگاہ میں حاضر ہوں جو کسی دنیاوی وجہ سے نہیں بلکہ صرف میری رضا میری خوشنودی کی وجہ سے آپس میں محبت کرتے تھے کہ میری عظمت ان کے دلوں میں تھی اس لیے مجھے راضی کرنا چاہتے تھے میرے بندوں کو راضی کر کے۔

۲۔ ظل کے معنی ہیں سایہ مگر کبھی اس سے مراد ہوتی ہے پناہ، امان جیسے کہا جاتا ہے کہ عادل بادشاہ ظل اللہ ہے یا بزرگوں کو نکھتے ہیں دام ظلہم، گر یہاں سایہ کے معنی میں ہیں تو مراد ہے عرش اعظم کا سایہ کہ سایہ جسم کا ہوتا ہے رب تعالیٰ جسم سے پاک ہے اور اگر مراد ہے پناہ تو ظاہر ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۸۳۲)

یہ خبر دوں کہ اللہ (عزوجل) نے تجھے دوست رکھا کہ تو نے اللہ (عزوجل) کے لیے اس سے محبت کی۔ (3)
 حدیث ۴: ایک شخص نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) اس کے متعلق کیا ارشاد ہے جو کسی قوم سے محبت رکھتا ہے اور ان کے ساتھ ملا نہیں یعنی ان کی محبت حاصل نہ ہوئی یا اس نے ان جیسے اعمال نہیں کیے۔
 ارشاد فرمایا: آدمی اس کے ساتھ ہے جس سے اسے محبت ہے۔ (4)
 اس حدیث سے معلوم ہوتا ہے کہ اچھوں سے محبت اچھا بنادیتی ہے اور اس کا حشر اچھوں کے ساتھ ہوگا اور بدوں کی محبت برا بنادیتی ہے اور اس کا حشر ان کے ساتھ ہوگا۔

(3) المرجع السابق، الحدیث: ۳۸۔ (۲۵۶۷)، ص ۱۳۸۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہاں ملاقات کرنے سے مراد ہے ملاقات کے لیے جانا ملاقات کا ارادہ کرنا، بھائی سے مراد ایمانی اسلامی بھائی ہے جس کو اللہ کے لیے بھائی بنایا ہو خواہ کسی بھائی بھی ہو یا نہیں۔
 ۲۔ عربی میں مدرج راستہ کو بھی کہتے ہیں سیر می کو بھی یعنی چلنے کی جگہ یا چڑھنے کی، یہاں بمعنی راستہ ہے۔ ممکن ہے کہ اس کی بستی یہاں سے کچھ بندی میں ہو فرشتہ یا حضرت جبریل علیہ السلام تھے یا کوئی اور دوسرا فرشتہ جو پہلے سے وہاں مقرر کر دیا گیا۔ (ازمرقات)
 ۳۔ یہ سوال بے علمی کی بناء پر نہیں بلکہ اس سے دو جواب حاصل کرنے کے لیے ہے جو یہاں مذکور ہے اور اسے بشارت دینے کے لیے ہے تاکہ لوگ یہ دونوں باتیں سنیں، حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا اسے بیان فرمانا اسی مقصد کے لیے ہے۔
 ۴۔ یعنی تو کبھی اس پر احسان کر چکا ہے جس کا عوض حاصل کرنے کے لیے جاتا ہے یا اس کا تجھ پر کچھ احسان ہے جس کا عوض دینے تو جا رہا ہے۔ تر ب بنا ہے رب سے بمعنی پرورش کرنا، حاصل کرنا، اصلاح کرنا۔ (اشعۃ اللمعات)
 ۵۔ یعنی اس سے میری محبت اس لیے ہے کہ وہ اللہ کا نیک بندہ ہے اور نیک بندوں کی محبت سے اللہ تعالیٰ راضی ہو جاتا ہے بخشنے ہوؤں کی ملاقات کرو کہ تم بھی بخشنے جاؤ۔

مت کوئی بھائی مل پوے توں بھی بھکیا جا

اٹھ جاگ فرید استیا توں خلقت دیکھن جا

۶۔ یعنی تیرا یہ عمل بارگاہ الہی میں قبول ہو گیا اور تیرا مقصد حاصل ہو گیا۔ اس حدیث سے چند مسئلے معلوم ہوئے: ایک یہ کہ اللہ کے واسطے کسی سے محبت کرنا بہترین نیکی ہے۔ دوسرے یہ کہ ایسی محبت اللہ تعالیٰ کی محبت کا ذریعہ ہے۔ تیسرے یہ کہ صالحین کی ملاقات ان کی زیارت کے لیے جانا بہت افضل ہے۔ چوتھے یہ کہ عام انسان فرشتہ کو شکل انسانی میں دیکھ سکتے ہیں۔ پانچویں یہ کہ اللہ تعالیٰ کبھی حضرات اولیاء اللہ کے پاس فرشتہ کے ذریعہ پیغام بھیجتا ہے یہ درجہ الہام سے اوپر ہے۔ (مرقات) مگر یہ پیغام وحی نہیں کہ وحی حضرات انبیاء کے سواء کسی کو نہیں ہوتی۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۸۳۵)

(4) صحیح بخاری، کتاب الادب، باب علامۃ حب اللہ... الخ، الحدیث: ۶۱۶۹، ج ۴، ص ۱۳۷۔

حدیث ۵: ایک شخص نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) قیامت کب ہوگی؟ فرمایا: تُو نے اس کے لیے کیا طیاری کی ہے؟ اس نے عرض کی، اس کے لیے میں نے کوئی طیاری نہیں کی، صرف اتنی بات ہے کہ میں اللہ و رسول (عزوجل و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) سے محبت رکھتا ہوں۔ ارشاد فرمایا: تُو ان کے ساتھ ہے جن سے تجھے محبت ہے۔ حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں کہ اسلام کے بعد مسلمانوں کو جتنی اس کلمہ سے خوشی ہوئی، ایسی خوشی میں نے کبھی نہیں دیکھی۔ (5)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ نہ تو کبھی ان سے ملاقات کی ہو نہ ان کے لیے نیک اعمال کیے ہوں مگر ان سے دلی محبت رکھتا ہو جیسے آج ہم گندے کینے بدکار سیاہ کار حضور سید ال برار صلی اللہ علیہ وسلم اور ان کے اصحاب اختیار سے محبت کریں۔

۲۔ یعنی یہ شخص قیامت میں ان محبوب نیکوں کے ساتھ ہوگا، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ"۔ یہاں مرقات نے فرمایا کہ بڑوں سے محبت کرنے کا انجام بھی یہ ہی ہے۔ خیال رہے کہ ہر نسبت جنسیت چاہتی ہے، عشق و محبت نہ جنسیت دیکھے نہ برابری، بندہ کو اللہ سے، امتی کو رسول اللہ سے عشق ہو سکتا ہے اللہ تعالیٰ نصیب کرے، خوف خدا، عشق جناب مصطفیٰ اللہ کی بڑی نعمت ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۳۶)

(5) صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم، باب مناقب عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ... إلخ، الحدیث: ۳۶۸۸، ج ۲،

ص ۵۲۷، کتاب الادب، باب ما جاء فی قول الرجل یدیک، الحدیث: ۶۱۶۷، ج ۴، ص ۱۳۶۔

ومشکوٰۃ المصابیح، کتاب الادب، باب المحب فی اللہ... إلخ، الحدیث: ۵۰۰۹، ج ۳، ص ۷۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ افسوس غضب کے لیے نہیں کرم کے لیے ہے جیسے حضرت ابوذر غفاری سے فرمایا علی رغم انف ابی ذر اس کلمہ کا مزہ وہ جانے جسے دل سے لگی ہو یا مقصد یہ ہے کہ تو اعمال تو کرتا نہیں صرف قیامت کے متعلق پوچھتا ہے۔

۲۔ یہ صاحب بڑے متقی پرہیزگار عبادت گزار تھے مگر انہوں نے اپنے اعمال کو قیامت کی تیاری قرار نہ دیا کہ یہ سب نیکیاں تو اللہ کی نعمتوں کا شکر یہ ہے جو مجھے دنیا میں مل چکیں اور مل رہی ہیں آخرت کی تیاری صرف یہ ہے کہ مجھے اس برأت کے دولہا سے محبت ہے، دولہا سے تعلق اس سے محبت برأت کے کھانے والے جوڑے انعام کا مستحق بنادیتے ہیں۔ مرقات نے فرمایا کہ اللہ رسول سے محبت سائرین اور طائرین کے مقام میں سے اعلیٰ مقام ہے، ساری عبادات محبت کی فروغ ہیں مگر محبت کے ساتھ اطاعت بلکہ متابعت ضروری ہے۔ برات کا کھانا صرف عمدہ لباس سے نہیں ملتا بلکہ دولہا کے تعلق سے ملتا ہے اگر رب تعالیٰ سے کچھ لینا ہے تو حضور سے تعلق پیدا کرو۔

۳۔ یعنی حضرات صحابہ کرام کو سب سے بڑی خوشی تو اپنے اسلام لانے پر ہوئی تھی کہ اللہ تعالیٰ نے انہیں مؤمن صحابی بننے کی توفیق بخشی اس کے بعد آج یہ فرمان عالی سن کر بڑی خوشی ہوئی۔ اس خوشی کی وجہ یہ ہے کہ حضرات صحابہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم پر دل و جان سے

حدیث ۶: اللہ تعالیٰ ارشاد فرماتا ہے: جو لوگ میری وجہ سے آپس میں محبت رکھتے ہیں اور میری وجہ سے ایک دوسرے کے پاس بیٹھتے ہیں اور آپس میں ملتے چلتے ہیں اور مال خرچ کرتے ہیں، ان سے میری محبت واجب ہوگئی۔ (6)

حدیث ۷: اللہ تعالیٰ نے فرمایا: جو لوگ میرے جلال کی وجہ سے آپس میں محبت رکھتے ہیں ان کے لیے نور کے منبر ہوں گے، انبیاء و شہدا ان پر غبطہ کریں گے۔ (7)

حدیث ۸: اللہ تعالیٰ کے کچھ ایسے بندے ہیں کہ وہ نہ انبیاء ہیں نہ شہدا اور خدا کے نزدیک ان کا ایسا مرتبہ ہوگا کہ قیامت کے دن انبیاء اور شہدا ان پر غبطہ کریں گے۔ لوگوں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) ارشاد فرمائیے یہ کون لوگ ہیں؟ فرمایا یہ وہ لوگ ہیں جو محض رحمت الہی کی وجہ سے آپس میں محبت رکھتے ہیں، نہ ان کے آپس میں رشتہ ہے، نہ مال کا لینا دینا ہے۔ خدا کی قسم! ان کے چہرے نور ہیں اور وہ خود نور پر ہیں ان کو خوف نہیں، جبکہ لوگ خوف میں ہوں گے اور نہ وہ غمگین ہوں گے، جب دوسرے غم میں ہوں گے۔ اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے یہ آیت پڑھی:

(إِنَّا أَوْلِيَاءُ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ) (8)

فدا تھے، ان میں سے بعض تو حضور کے بغیر چین نہ پاتے تھے، انہیں کھانا تھا کہ مدینہ منورہ میں تو ہم کو حضور کی ہمراہی نصیب ہے کہ یار نے مدینہ میں پہنا کاشا نہ بنایا ہے مگر جنت میں کیا بنے گا کہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کا مقام اعلیٰ علیین سے بھی اعلیٰ ہوگا ہم کسی اور درجہ میں ہوں گے، آج حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے پردہ اٹھا دیا تمام کوتلی دے دی فرمادیا کہ جس کو مجھ سے صحیح محبت ہوگی اسے مجھ سے فراق نہ ہوگا میرے ساتھ ہی رہے گا۔ خیال رہے کہ یہاں درجہ کی ہمراہی یا برابری مراد نہیں بلکہ ایسی ہمراہی مراد ہے جیسے سلطان کے خاص خدام سلطان کے ساتھ اس کے جنگل میں رہتے ہیں۔ سب سے بڑا خوش نصیب وہ ہے جسے کل حضور کا قرب نصیب ہو جاوے۔ اس قرب کا ذریعہ حضور سے محبت ہے اور حضور کی محبت کا ذریعہ اتباع سنت، کثرت سے درود شریف کی تلاوت، حضور کے حالات طیبہ کا مطالعہ اور محبت والوں کی محبت ہے یہ محبت اکسیر اعظم ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۸۳۷)

(6) لموطا لہام، مک، کتاب الشعر، باب ما جاء فی النخائین فی اللہ، الحدیث: ۱۸۲۸، ج ۲، ص ۴۳۹۔

(7) سنن الترمذی، کتاب الزہد، باب ما جاء فی الحب فی اللہ، الحدیث: ۲۳۹۷، ج ۴، ص ۱۷۴۔

(8) سنن ابی داود، کتاب البیوع، باب فی الرحمن، الحدیث: ۳۵۲۷، ج ۳، ص ۴۰۲، پ ۱۱، یونس: ۶۲۔

حکیم ارامت کے مدنی پھول

اب اناس جمع فرما کر یہ بتایا کہ یہ حضرات انسان ہیں اور وہ ایک دو نہیں بلکہ پوری جماعت ہے یہ اولیاء اللہ ہیں اور ایسے لوگ ہمیشہ رہیں

من لو سب شک اللہ (عزوجل) کے اولیا پر نہ خوف ہے، نہ وہ غم کریں گے۔

حدیث ۹: ایمان کی چیزوں میں سب میں مضبوط اللہ (عزوجل) کے بارے میں موالاة ہے اور اللہ (عزوجل) کے لیے محبت کرنا اور بغض رکھنا۔ (9)

۲۔ اس فرمان عالی کا مطلب ابھی عرض کر دیا گیا کہ ان حضرات کے قرب الہی کی انبیاء کرام شہداء عظام تعریف کریں گے یا ان کی بے تکی ہے فکری پر رشک کریں گے۔ قیامت میں گنہگاروں کو اپنی حضرات انبیاء کرام کو اپنی امت کی فکر بھی ہوگی غم بھی مگر یہ حضرات اپنے اور دوسروں کے غم و فکر سے آزاد ہوں گے اس آزادی پر حضرات انبیاء رشک کریں گے لہذا اس سے یہ لازم نہیں کہ یہ لوگ انبیاء کرام سے افضل ہوں، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ" یہاں اولیاء اللہ فرمایا گیا انبیاء نہ ارشاد ہوا۔

۳۔ قوی یہ ہے کہ روح اللہ کے ضمہ سے ہے بمعنی زندگی بخش چیز اور اس سے مراد قرآن کریم ہے کہ یہ بھی مسلمانوں کو جادوئی زندگی بخشتا ہے، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا" اس کی اور بھی شرحیں کی گئی ہیں یعنی قرآن مجید کی اتباع اس کے احکام کی پابندی کی وجہ سے محبت کرتے ہیں کہ یہ لوگ بکے مسلمان ہیں۔

۴۔ یعنی ان کی اس محبت کی وجہ آپس کی قربتداری اور مالی لین دین نہیں ہوتی، صرف اس لیے محبت کرتے ہیں کہ وہ اللہ کا مقبول بندہ ہے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا مطیع فرمان ہے خواہ اپنا عزیز ہو یا اجنبی لہذا حدیث واضح ہے، اس کا یہ مطلب نہیں کہ اللہ فی اللہ محبت صرف اجنبی سے ہی چاہیے اپنے عزیز و قرابت داروں سے نہ چاہیے اگرچہ وہ کیسا ہی نیک و صالح ہو، چونکہ دنیاوی محبتیں اکثر نسب اور مالی تعلق کی بنا پر ہوتی ہیں اس لیے ان ہی دو چیزوں کا ذکر فرمایا گیا مطیع لالچ مال کی زیادتی ہوتی ہے۔

۵۔ یعنی ان کے چہرے نورانی ہوں گے اور وہ نور کے مبروں پر ہوں گے جیسے دنیا کی مجلسوں میں معزز آدمی کو عزت کی جگہ بٹھایا جاتا ہے ایسے انہیں رب تعالیٰ قیامت میں عزت کی جگہ عطا فرمائے گا تاکہ اہل محشر پر ان کی عظمت ظاہر ہو۔

۶۔ اس ارشاد عالی نے حضرات انبیاء کے رشک کی وجہ بیان فرمادی کہ یہ لوگ اس دن اپنی اور دوسروں کی فکروں سے آزاد ہوں گے اس بے فکری اور آزادی پر رشک کیا جاوے گا انہیں نہ اپنے بخشے جانے کی فکر کہ وہ بخش دیئے گئے نہ دوسروں کو بخشوانے کی فکر کہ وہ کسی کے ذمہ دار نہیں لہذا حدیث بالکل واضح ہوگئی۔

۷۔ یا تو حضور سید عالم صلی اللہ علیہ وسلم نے یہ آیت کریمہ تلاوت فرمائی اپنے فرمان عالی کی تاکید کے لیے یا حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے تلاوت کی حدیث کی تقویت کے لیے۔ خیال رہے کہ ضعیف سے ضعیف حدیث بھی اگر قرآنی آیت سے قوت پائے تو صحیح ہو جاتی ہے یعنی ان لوگوں کو نہ عذاب کا خوف ہوگا نہ ثواب جاتے رہنے کا غم۔ ۸۔ آپ کا نام کعب ابن عامر ہے، کنیت ابو مالک ہے، اشعری ہیں، صحابی ہیں، آپ سے بہت حضرات نے روایات نقل کیں، عہد فاروقی میں وصال ہوا۔ (مرقات)

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۲۰)

(9) کنز العمال، کتاب الصوبۃ، رقم: ۲۳۶۵۲، ج ۹، ص ۴.

حدیث ۱۰: رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: تمہیں معلوم ہے اللہ (عزوجل) کے نزدیک سب سے زیادہ پسند کون سا عمل ہے؟ کسی نے کہا، نماز و زکاۃ اور کسی نے کہا جہاد۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: سب سے زیادہ اللہ (عزوجل) کو پیارا، اللہ (عزوجل) کے لیے دوستی اور بغض رکھنا ہے۔ (10)

حدیث ۱۱: جب کسی نے کسی سے اللہ (عزوجل) کے لیے محبت کی تو اس نے رب عزوجل کا اکرام کیا۔ (11)

حدیث ۱۲: دو شخصوں نے اللہ (عزوجل) کے لیے باہم محبت کی اور ایک مشرق میں ہے، دوسرا مغرب میں، قیامت کے دن اللہ تعالیٰ دونوں کو جمع کر دے گا اور فرمائے گا: یہی وہ ہے جس سے تو نے میرے لیے محبت کی تھی۔ (12)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ عری جمع ہے عروۃ کی، عروہ سی کا وہ کنارہ جو ذول سے بندھا ہوتا ہے اور ذول اس سے وابستہ ہوتا ہے پھر ہر اس چیز کو مردہ کہا جانے لگا جس سے کوئی چیز پکڑی جاوے جیسے کوزہ کا دستہ وغیرہ لہذا عروہ کے معنی گرہ بہت مناسب ہے یہاں اس سے مراد ایمان کے ارکان اور مؤمنوں کے اعمال ہیں یعنی ایمان کا کون سا رکن اور مؤمن کا کون سا عمل زیادہ لائق بھروسہ ہے۔

۲۔ دو طرفہ دوستی موالات ہے اور یک طرفہ دوستی حب، یوں ہی دو طرفہ عداوت محادات ہے یک طرفہ دشمنی بغض۔ (مرقات) یعنی ثرائی اللہ کے لیے ہے ماپ اللہ کے لیے یعنی جو اللہ کا مقبول ہو وہ ہمارا پیارا ہو جائے اگرچہ اجنبی ہو اور جو اللہ کا مردود ہو وہ ہمارا دشمن ہو اگرچہ قرابت دار ہو۔ حضرت سعدی رحمۃ اللہ علیہ نے کیا خوب فرمایا

ہزار خویش کہ بیگانہ از خدا باشد
فدا یک تن بیگانہ کا شتابا شد
رام نام کسے بھلے کہ ٹپ ٹپ ٹپے چام
واردی کنج دیہہ کو کہ جیل کا ناہی رام

(مرآۃ السانح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۸۳۱)

(10) المسند للامام أحمد بن حنبل، مسند الانصار، حدیث ابی ذر الغفاری، الحدیث: ۲۱۳۶۱، ج ۸، ص ۶۸۔

(11) المسند للامام أحمد بن حنبل، مسند الانصار، حدیث ابی امامۃ الباہلی، الحدیث: ۲۲۲۹۲، ج ۸، ص ۲۸۹۔

(12) شعب الایمان، باب فی مقاربتہ وموادۃ اهل الدین، فصل فی المصالحتہ... الخ، الحدیث: ۹۰۲۲، ج ۶، ص ۴۹۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ہم مجبورین مشرق میں ہیں حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم مغرب میں اللہ تعالیٰ حضور کا عشق دے تو ان شاء اللہ جنت بلکہ قیامت میں بھی حضور کا قرب نصیب ہوگا، آخرت کا قرب و بعد دنیا کے قلبی قرب و بعد کا نتیجہ ہوگا دعا ہے کہ مولیٰ۔ شعر

زمانہ کی خوبی زمانہ کو دے
مجھے تیرے پیارے کا در چاہیے

بعض بد نصیب مدینہ میں رہ کر حضور سے دور ہیں بعض خوش نصیب مدینہ سے دور رہ کر بھی در حضور میں ہیں۔

حدیث ۱۳: جنت میں یا قوت کے ستون ہیں ان پر زبرد کے بالا خانے ہیں، وہ ایسے روشن ہیں جیسے چمکدار ستارے۔ لوگوں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) ان میں کون رہے گا؟ فرمایا: وہ لوگ جو اللہ (عزوجل) کے لیے آپس میں محبت رکھتے ہیں، ایک جگہ بیٹھتے ہیں، آپس میں ملتے ہیں۔ (13)

حدیث ۱۴: اللہ (عزوجل) کے لیے محبت رکھنے والے عرش کے گرد یا قوت کی کرسی پر ہوں گے۔ (14)

حدیث ۱۵: جو کسی سے اللہ (عزوجل) کے لیے محبت رکھے، اللہ (عزوجل) کے لیے دشمنی رکھے اور اللہ (عزوجل) کے لیے دے اور اللہ (عزوجل) کے لیے منع کرے، اس نے اپنا ایمان کامل کر لیا۔ (15)

حدیث ۱۶: دو شخص جب اللہ (عزوجل) کے لیے باہم محبت رکھتے ہیں، ان کے درمیان میں جدائی اس وقت ہوتی ہے کہ ان میں سے ایک نے کوئی گناہ کیا۔ (16) یعنی اللہ (عزوجل) کے لیے جو محبت ہو اس کی پہچان یہ ہے کہ اگر ایک نے گناہ کیا تو دوسرا اس سے جدا ہو جائے۔

حدیث ۱۷: اللہ تعالیٰ نے ایک نبی کے پاس وحی بھیجی، کہ فلاں زاہد سے کہہ دو کہ تمہارا زہد اور دنیا میں بے رغبتی اپنے نفس کی راحت ہے اور سب سے جدا ہو کر مجھ سے تعلق رکھنا یہ تمہاری عزت ہے، جو کچھ تم پر میرا حق ہے اُس کے مقابل کیا عمل کیا۔ عرض کریگا، اے رب! وہ کون سا عمل ہے؟ ارشاد ہوگا: کیا تم نے میری وجہ سے کسی سے دشمنی کی اور

۲۔ یہ ان محب و محبوبین کو قیامت اور جنت میں جمع فرمادینا اتفاقاً نہ ہوگا بلکہ یہ بتا کر جتا کر ہوگا کہ یہ قرب تیری اس محبت کا نتیجہ ہے۔ معلوم ہوا کہ سارے اعمال سے زیادہ پیارا عمل محبوبوں سے محبت ہے کہ یہ ان کے قرب کا ذریعہ ہے۔ خیال رہے کہ حضور سے محبت کی علامت یہ ہے کہ ان کے احکام، ان کے اعمال، ان کی سنتوں سے، ان کے قرآن، ان کے فرمان، ان کے مدینہ کی خاک سے محبت ہو، بے نماز بے روزہ بھنگی چرسی دعویٰ عشق رسول کریں جھوٹے ہیں محبت کی علامت اطاعت ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۵۲)

(13) شعب الایمان، باب فی مقاربتہ وموادۃ اہل الدین، فصل فی المصافحۃ... إلخ، الحدیث: ۹۰۰۲، ج ۶، ص ۳۸۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ سبحان اللہ! ستون یا قوت کے اور بالا خانے زبرد کے بہت ہی شاندار ہوئے۔ غرف جمع ہے غرفہ کی بمعنی بالا خانہ کھڑکی کو غرفہ کہنا مجاز ہے کہ اکثر وہ بھی بالا خانہ میں ہوتی ہے۔

۲۔ یہ جگہ تو صرف محبت فی سبیل اللہ کی جزا ہے اس محبت فی سبیل اللہ سے جو اچھے نتیجے نکلتے ہیں ان کے ثواب عظیمہ ہیں۔

۳۔ یعنی ان تینوں کاموں میں سے ایک کام کرنے والے یا تینوں کام کرنے والے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۵۳)

(14) المعجم الکبیر، الحدیث: ۳۹۷۳، ج ۴، ص ۱۵۰۔

(15) سنن ابی داود، کتاب السنۃ، باب الدلیل علی زیادۃ الایمان وتقصانہ، الحدیث: ۴۶۸۱، ج ۴، ص ۲۹۰۔

(16) الادب المفرد للبخاری، باب ہجرۃ المسلم، الحدیث: ۴۰۶، ج ۱، ص ۱۲۱۔

میرے بارے میں کسی ولی سے دوستی کی۔ (17)

حدیث ۱۸: آدمی اپنے دوست کے دین پر ہوتا ہے، اسے یہ دیکھنا چاہیے کہ کس سے دوستی کرتا ہے۔ (18)

حدیث ۱۹: جب ایک شخص دوسرے سے بھائی چارہ کرے تو اس کا نام اور اس کے باپ کا نام پوچھ لے اور یہ

کہ وہ کس قبیلہ سے ہے کہ اس سے محبت زیادہ پائیدار ہوگی۔ (19)

(17) کنز العمال، کتاب الصحبة، رقم ۲۴۶۵۳، ج ۹، ص ۴.

وعلیہ الامالیہ، رقم ۱۵۳۸۴، ج ۱۰، ص ۳۳.

(18) المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی حریرة، الحدیث: ۸۰۳۴، ج ۳، ص ۱۶۸-۱۶۹.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ دین سے مراد یا تو ملت و مذہب ہے یا سیرت و اخلاق، دوسرے معنی زیادہ ظاہر ہیں یعنی عموماً انسان اپنے دوست کی سیرت و اخلاق

اختیار کر لیتا ہے کبھی اس کا مذہب بھی اختیار کر لیتا ہے لہذا اچھوں سے دوستی رکھنا کہ تم بھی اچھے بن جاؤ۔ صوفیاء فرماتے ہیں لا تصاحب الا

مطیع و لا تحال ال تقیہ نہ ساتھ رہو مگر اللہ رسول کی فرمانبرداری کرنے والے کے نہ دوستی کرو مگر متقی سے۔

۲۔ یعنی کسی سے دوستانہ کرنے سے پہلے اسے جانچ لو کہ اللہ رسول کا مطیع ہے یا نہیں، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "وَلَوْلَا اَمْرُ الصّٰدِقِیْنِ"۔ صوفیاء

فرماتے ہیں کہ انسانی طبیعت میں اخذ یعنی لے لینے کی خاصیت ہے، حریص کی محبت سے حرص، زہاد کی محبت سے زہد و تقویٰ ملے گا۔ خیال

رہے کہ صحت دلی دوستی کو کہتے ہیں جس سے محبت دل میں داخل ہو جاوے۔ یہ ذکر دوستی و محبت کا ہے کسی فاسق و قاجر کو اپنے پاس بٹھا کر متقی

بنادینا تبلیغ ہے، حضور انور نے گنہگاروں کو اپنے پاس بلا کر متقیوں کا سردار بنادیا۔

۳۔ اس میں ان لوگوں کا رد ہے جو اس حدیث کو موضوع کہتے ہیں جیسے حافظ سراج الدین قزوینی، حافظ ابن حجر نے قزوینی کا بہت رد کیا اور

حدیث کا صحیح ہونا ثابت کیا۔ (مرقات و اشعہ) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۲)

(19) سنن الترمذی، کتاب الزہد، باب ما جاء فی إعلام الحب، الحدیث: ۲۴۰۰، ج ۴، ص ۱۷۶.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ جنگ حنین میں مشرکوں کے ساتھ تھے بعد میں اسلام لائے ان کی صحابیت میں اختلاف ہے۔ جامع اصول میں انہیں صحابی کہا، ابو حاتم

نے کہا کہ بھری ہیں اور تابعی ہیں۔ (اشعہ) ممکن ہے انہوں نے یہ حدیث حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے بحالت کفر سنی ہو اور مسلمان ہو جانے

کے بعد روایت کی ہو کہ ایک روایت معتبر ہے۔ (مرقات) اور اگر تابعی ہو تو تابعی کی مرسل حدیث صحیح ہے جب کہ وہ ثقہ ہوں۔

۲۔ یعنی اسے دینی بھائی بنائے اس سے میل جول پیدا کرنا چاہیے۔

۳۔ بارہا ایب ہوتا ہے کہ کسی کو عالی خاندان سمجھ کر اس سے محبت کی بعد میں اس کے خلاف ظاہر ہوا تو نفرت ہوگئی اس لیے پہلے سے ہی

سارے انتظامات کرے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۸۲۸)

- حدیث ۲۰: باب ایک شخص دوسرے سے محبت رکھے تو اسے خبر کر دے کہ میں تجھ سے محبت رکھتا ہوں۔ (20)
- حدیث ۲۱: ایک شخص نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کی خدمت میں عرض کی، کہ میں اس شخص سے اللہ (عزوجل) کے واسطے محبت رکھتا ہوں ارشاد فرمایا: تم نے اس کو اطلاع دیدی ہے۔ عرض کی نہیں، ارشاد فرمایا: اٹھو! اس کو اطلاع دے دو۔ اس نے جا کر خبردار کیا، اس نے کہا جس کے لیے تو مجھ سے محبت رکھتا ہے، وہ تجھے محبوب بنالے۔ واپس آ کر حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) سے کہہ سنایا، ارشاد فرمایا: اس نے کیا کہا؟ جو اس نے کہا تھا کہہ سنایا۔ فرمایا: تو اس کے ساتھ ہوگا جس سے تو نے محبت کی اور تیرے لیے وہ ہے جو تو نے قصد کیا ہے۔ (21)
- حدیث ۲۲: دوست سے تھوڑی دوستی کر عجب نہیں کہ کسی دن وہ تیرا دشمن ہو جائے اور دشمن سے دشمنی تھوڑی کر دور نہیں کہ وہ کسی روز تیرا دوست ہو جائے۔ (22)



(20) سنن ابی داود، کتاب الادب، باب اخبار الرجل الرجل بحسبہ، راوی: الحدیث: ۵۱۲۳، ج ۳، ص ۴۲۸۔
 (21) شعب الایمان، باب فی مقاربتہ ومواریة...، فصل فی المصافحة...، الحدیث: ۹۰۱۱، ج ۶، ص ۳۸۹۔
 (22) سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی الاقتصاد فی الحب والبغض، الحدیث: ۲۰۰۴، ج ۳، ص ۴۰۱۔

حجامت بنوانا اور ناخن ترشوانا

احادیث

حدیث ۱: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: پانچ چیزیں فطرت سے ہیں، یعنی انبیاء سابقین علیہم السلام کی سنت سے ہیں۔ (۱) ختنہ کرنا اور (۲) مونڈے زیر ناف مونڈنا اور (۳) مونچھیں کم کرنا اور (۴) ناخن ترشوانا اور (۵) بغل کے بال اکھیڑنا۔ (۱)

(۱) صحیح مسلم، کتاب الطہارۃ، باب خصال الفطرۃ، الحدیث: ۵۰۔ (۲۵۷)، ص ۱۵۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ سنت قدیمہ جو گزشتہ انبیاء کرام کا بھی طریقہ رہا ہوا ہے فطرت کہتے ہیں گویا وہ انسان کی پیدائشی عادت ہے۔ یہاں پانچ کا ذکر حد کے لیے نہیں ہے اس کے علاوہ اور بھی سنتیں انبیاء ہیں جو دوسری احادیث میں مذکور ہیں۔

۲۔ ختنہ امام اعظم کے ہاں سنت ہے، امام شافعی کے ہاں فرض۔ (مرقات) سات سال کی عمر تک ختنہ کر دینا چاہیے، نو مسلم جوان آدمی کا نکاح ایسی عورت سے کر دیا جاوے جو ختنہ کرنا جانتی ہو پھر ختنہ کے بعد چاہے تو طلاق دیدے، جو بچہ ختنہ شدہ پیدا ہو اس کے ختنہ کی ضرورت نہیں۔ خیال رہے کہ چودہ انبیاء کرام ختنہ شدہ پیدا ہوئے: حضرت آدم، شیث، نوح، صالح، شعیب، یوسف، موسیٰ، زکریا، سلیمان، عیسیٰ، حنظلہ بن صفوان جو اصحابِ رسل کے نبی ہیں اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم یہ حضرات ختنہ شدہ ناف بریدہ پیدا ہوئے، عورتوں کا ختنہ ہمارے ہاں مکروہ ہے۔

۳۔ یعنی ناف کے نیچے اور پاخانہ کے مقام کے بال استرہ سے صاف کرنا سنت ہے مرد کے لیے اور کسی دواء سے صاف کر دینا مرد کے لیے خذف سنت ہے قینچی سے یہ بال کاٹ دینا مرد و عورت دونوں کے لیے خلاف سنت ہے، بحالت جنابت کوئی بال کاٹنا مونڈنا بہتر نہیں۔ (مرقات)

۴۔ اوپری ہونٹ کے بالوں کو مونچھ کہا جاتا ہے۔ یہ اتنے کالے جاویں کہ اوپر سے ہونٹ کا کنارہ خوب کھل جاوے، پانی پیتے وقت یہ بال پانی میں نہ ڈوب سکیں، مونچھیں مونڈنا یا بہت زیادہ پست کر دینا خلاف سنت ہے۔ محیط میں ہے کہ مردوں کو سر منڈانا عام حالات میں اچھا نہیں احرام کھوتے وقت سنت ہے۔ حلق کے بال نہ منڈائے، بھوئیں اور چہرے کے کچھ کچھ بال الگ کر دینا جائز ہے جب کہ بھجروں سے تشبہ نہ ہو، سینہ اور پیٹھ کے بال مونڈنا یا کترنا مستحب نہیں۔ (مرقات)

۵۔ اس طرح ناخن تراشنے کہ ہاتھوں کے پہلے پاؤں کے بعد میں، داہنے ہاتھ کی انگلی شروع کرے چنگلی تک کاٹ دے۔

حدیث ۲: صحیح مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: موچیں کٹاؤ اور داڑھیاں لٹکاؤ، مجوسیوں کی مخالفت کرو۔ (2)

حدیث ۳: صحیح بخاری و مسلم میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: مشرکین کی مخالفت کرو، داڑھیوں کو زیادہ کرو اور موچھوں کو خوب کم کرو۔ (3)

پھر بائیں ہاتھ کی چنگلی سے شروع کرے انگوٹھے تک کاٹ دے پھر داہنے ہاتھ کے انگوٹھے کے ناخن کاٹ دے۔ جو کوئی جمعرات کے دن ناخن تراشا کرے ان شاء اللہ فقیر نہ ہوگا۔ جماعت جمعرات کو چاہیے اور غسل تبدیلی لباس خوشبو جود کو افضل ہے۔ حضرت آدم علیہ السلام کے جسم پر ناخن کا لباس تھا جنت سے باہر آ کر یہ کپڑوں کا لباس عطا ہوا، آپ کا جسم ساٹھ ہاتھ تھا۔ (مرقات)

۶۔ بغل کے بال اوکھڑا سنت ہے منڈانا جائز، امام شافعی منڈایا کرتے تھے۔ ناک کے بال اکھڑنا ممنوع ہے اس سے بیماری پیدا ہوتی ہے۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۶۳)

(2) المرجع السابق، الحدیث: ۵۵۔ (۲۶۰)، ص ۱۵۴.

(3) صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب تقليم الاظفار، الحدیث: ۵۸۹۲، ج ۳، ص ۷۵.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ مشرکین سے مراد کفار ہیں خواہ بت پرست ہوں یا اہل کتاب۔ مخالفت سے مراد شکل، لباس، وضع قطع سب میں مخالفت ہو سکتی ہے مگر یہاں شکل میں مخالفت مراد ہے جیسا کہ اگلی تفسیر سے ظاہر ہے۔ یہ امر وجوب کے لیے ہے کہ مسلمان کو کفار کی سی شکل بنانا حرام ہے۔

۲۔ افر و ابنا ہے دفر سے بمعنی بڑھانا زیادہ کرنا، لمبی جمع ہے لمبے کی بمعنی ڈاڑھی، رخسار اور ٹھوڑی پر جو بال ہیں انہیں لمبے یعنی ڈاڑھی کہا جاتا ہے اس کے معنی یہ ہیں کہ ڈاڑھی کو ہاتھ نہ لگاؤ اسے بڑھنے دو اس کے بڑھنے کی حد دوسری حدیث شریف میں ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم ڈاڑھی کی لمبائی چوڑائی سے کچھ کترتے تھے، اسے حضرت عبداللہ ابن عمر کے فعل شریف نے واضح کیا آپ چار انگلی یعنی مٹھی بھر سے زیادہ کو کٹوا دیتے تھے، دیکھو بخاری کتاب الحج اور شامی وغیرہ۔ اگر عورت کے ڈاڑھی نکل آوے تو اس کا اکھڑ دینا ضروری ہے کہ وہ ڈاڑھی نہیں ہے بلکہ بیماری ہے۔ ڈاڑھی مشیت سے کم کرنا بھی منع ہے اور اس سے زیادہ کرنا بھی منع ہے اور ہر دو کے پیچھے نہ زکروہ۔ (مرقات و شامی)

۳۔ اعفاء اور اعفاء دونوں کے معنی ہیں بڑھانا۔ کفار کی مخالفت کو حضور انور نے مقرر فرمادیا کہ ڈاڑھی بڑھا کر ان کی مخالفت کرو اگر کسی جگہ کے کفار ڈاڑھی رکھتے ہوں جیسے ہمارے ہاں کے سکھ تو انکی مخالفت میں ڈاڑھی مونڈنا حرام ہے کہ مخالفت کو حضور نے مقرر فرمادیا، یہ بھی خیال رہے کہ ایک مشیت ڈاڑھی قرآن مجید سے بھی ثابت ہے، حضرت ہارون نے موئی علیہ السلام سے کہا "لَا تَحْدُثْ بِخَشْنَتِي" میری ڈاڑھی نہ پکڑو۔ معلوم ہوا کہ آپ کی ڈاڑھی اتنی تھی کہ پکڑنے میں آجائے وہ مٹھی بھر ہی ہے۔ انبیاء کرام کے متعلق احادیث میں ہے کہ وہ خشش یعنی بھری ڈاڑھی والے تھے بھری ڈاڑھی مشیت سے کم نہیں ہو سکتی لہذا فرنج یا خشش یا مشیت سے کم ڈاڑھی رکھنا حرام ہے کہ یہ منڈانے کے حکم میں ہے۔ اس کی بحث شامی کتاب الصوم میں دیکھو۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۶۳)

حدیث ۴: ترمذی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہتے ہیں کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مونچھ کو کم کرتے تھے اور حضرت ابراہیم خلیل الرحمن علیہ الصلوٰۃ والسلام بھی یہی کرتے تھے۔ (4)

حدیث ۵: امام احمد و ترمذی و نسائی نے زید بن ارقم رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو مونچھ سے نہیں لے گا، وہ ہم میں سے نہیں۔ (5) یعنی ہمارے طریقہ کے خلاف ہے۔

حدیث ۶: صحیح مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو مونچھ زیر ناف کو نہ مونڈے اور ناخن نہ تراشے اور مونچھ نہ کاٹے، وہ ہم میں سے نہیں۔ (6)

حدیث ۷: ترمذی نے بروایت عمرو بن شعیب عن ابیہ عن جدہ روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم داڑھی کی چوڑائی اور لمبائی سے کچھ لیا کرتے تھے۔ (7)

(4) سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی قص الشارب، الحدیث: ۲۷۹۰، ج ۳، ص ۳۳۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ راوی کو شک ہے کہ حضرت ابن عباس نے یاغذ کہا یا یقص معنی دونوں کے ایک ہی ہیں۔

۲۔ غالباً حضرت ابراہیم پہلے وہ نبی ہیں جنہوں نے مونچھیں تراشیں آپ کے بعد تمام نبیوں نے یہ عمل کیا اور ہمارے حضور نے یہ سنت فہیل جاری فرمائی لہذا یہ عمل نظرت ہے اس پر بڑا ثواب ہے۔ مونچھیں ہر ہفتہ یا پندرہ دن میں ضرور تراشنا چاہئیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۸۰)

(5) مرجع السابق، الحدیث: ۲۷۷۰، ج ۳، ص ۳۳۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی ہمارے طریقہ سے دو خارج ہے یا بڑی مونچھیں رکھنے والے کے لیے خطرہ ہے کہ اس کا خاتمہ اسلام پر نہ ہو۔ معاذ اللہ! (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۸۱)

(6) المسند لمام احمد بن حنبل، حدیث رجل من بنی غفار رضی اللہ عنہ، الحدیث: ۲۳۵۳۹، ج ۹، ص ۱۲۵۔

(7) سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی الاخذ من اللحية، الحدیث: ۲۷۷۱، ج ۳، ص ۳۳۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس طرح کہ لمبائی میں مٹھی بھر یعنی چار انگل سے زیادہ بالوں کو کاٹ دیتے تھے اور چوڑائی میں اس دائرے کے حد میں جو بال آتے باقی رکھے جاتے اس سے بڑھتے ہوئے کاٹ دیے جاتے۔ چار انگل تک داڑھی رکھنا واجب ہے داڑھی منڈانا یا کتر وانا فسق ہے۔

حضرت عبداللہ ابن عمر رضی اللہ عنہما اپنے داڑھی مٹھی میں پکڑتے تو جو مٹھی سے باہر بال ہوتے انہیں کاٹ دیتے تھے وہ عمل اس حدیث کی شرح ہے۔ یہاں حضرت شیخ نے فرمایا کہ اگر کسی شخص نے بہت عرصہ تک داڑھی نہ کٹوائی حتیٰ کہ داڑھی بہت بڑی ہوگئی تو اب

حدیث ۸: صحیح مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہتے ہیں کہ مونچھیں اور ناخن ترشوانے اور بغل کے بال اکھاڑنے اور موئے زیر ناف مونڈنے میں ہمارے لیے یہ وقت مقرر کیا گیا ہے کہ چالیس دن سے زیادہ نہ چھوڑیں۔ (8) یعنی چالیس دن کے اندر ان کاموں کو ضرور کر لیں۔

حدیث ۹: ابو داؤد نے بروایت عمرو بن شعیب عن ابیہ عن جدہ روایت کی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: سفید بال نہ اکھاڑو کیونکہ وہ مسلم کا نور ہے، جو شخص اسلام میں بوڑھا ہوا، اللہ تعالیٰ اس کی وجہ سے اس کے لیے نیکی لکھے گا اور خطا مٹا دے گا اور درجہ بلند کریگا۔ (9)

اسے نہ کٹوائے بلکہ ویسی ہی رہنے دے۔ (اشعہ) جن بزرگوں کی ڈاڑھیاں بہت لمبی دیکھی گئیں ہیں وہاں یہ ہی وجہ ہوئی ہوگی۔ غرضکہ چار انگل سے ہرگز کم نہ کرے مگر اس سے زیادتی اس کی دو صورتیں ہیں: کوشش کرتا رہے کہ زیادہ نہ ہونے پائے، اگر بہت زیادہ کر لی تو پھر ویسے ہی رہنے دے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۸۲)

(8) صحیح مسلم، کتاب الطہارۃ، باب خصال القطرة، الحدیث: ۵۱۰۔ (۲۵۸) ص ۱۵۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب یعنی چالیس سے زیادہ دیر لگانا ممنوع ہے۔ سنت یہ ہے کہ مونچھیں و ناخن ہر جمعہ کو کاٹے، زیر ناف کے بال بیس دن میں لے لہذا ہفتہ افضل ہے، پندرہ دن درمیانے، چالیس دن انتہائی مدت۔ دراز ناخن سے روزی ٹھنٹی ہے۔ حدیث شریف میں ہے جمعہ کے دن ناخن تراشے تو ان شاء اللہ دس دن تک بلاؤں سے محفوظ رہے گا۔ (مرقات) (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۶۵)

(9) سنن ابی داؤد، کتاب الترجل، باب فی تعف الشیب، الحدیث: ۴۲۰۲، ج ۴، ص ۱۱۵۔

وشرح السنۃ للہیو، کتاب اللباس، باب للنہی عن تعف الشیب، الحدیث: ۴۰۷۳، ج ۶، ص ۲۱۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب یعنی جب سر یا ڈاڑھی میں چٹے بال شروع ہو جاویں تو انہیں مت اکھیڑوان چٹے بالوں سے نفس کمزور ہوتا ہے وہ سمجھتا ہے کہ اب میں بوڑھا ہو چلا ہوں آخرت کی تیاری کروں یہ بال اکھیڑ دینے سے وہ اپنے کو جوان ہی سمجھے گا، یہ فرق ہے خضاب اور سفید بال اکھیڑنے میں اس لیے خضاب کا حکم دیا اکھیڑنے سے منع فرمایا، سفید بال خواہ سفید ہی رہیں یا سرخ کر دیے جاویں قبر یاد دلاتے ہیں کہ تیاری کرو چلنے کا وقت قریب آگیا سویرا ہو گیا اب جاگ جاؤ۔ شعر

اٹھ جاگ مس فر بھور ہوئی اب رات کہاں جو سوت ہے جو جاگت ہے سو پاوت ہے جو سوت ہے وہ کھوت ہے

اٹھ نیند سے اکھیں کھول ذرا اور رب سے اپنے دھیان لگا یہ پریت کرن کی ریت نہیں رب جاگت ہے تو سوت ہے

۲۔ امام مالک نے بروایت سعید ابن مسیب نقل فرمایا کہ سب سے پہلے حضرت ابراہیم علیہ السلام کے بال سفید ہوئے آپ نے پوچھا یا رب یہ کیا فرمایا یہ دقار اور نور ہے فرمایا الہی میرا دقار اور نور اور زیادہ کر۔ وہ جو حاکم و ابن سعد نے حضرت عائشہ صدیقہ سے روایت کی ہے

حدیث ۱۰: ترمذی و نسائی نے کعب بن مزہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

نے فرمایا: جو اسلام میں بوڑھا ہوا، یہ بڑھا پا اس کے لیے قیامت کے دن نور ہوگا۔ (10)

حدیث ۱۱: امام مالک نے روایت کی، سعید بن المسیب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے تھے کہ حضرت ابراہیم خلیل الرحمن علیہ الصلوٰۃ والسلام نے سب سے پہلے مہمانوں کی ضیافت کی اور سب سے پہلے ختنہ کیا اور سب سے پہلے مونچھ کے بال تراشے اور سب سے پہلے سفید بال دیکھا۔ عرض کی، اے رب! یہ کیا ہے؟ پروردگار تبارک و تعالیٰ نے فرمایا: اے ابراہیم! یہ وقار ہے۔ عرض کی، اے میرے رب! میرا وقار زیادہ کر۔ (11)

کہ رب تعالیٰ نے حضور کو چنے بال سے بگاڑا نہیں (حاشیہ بینادی) وہاں معنی یہ ہیں کہ حضور کے کچھ بال سفید ہوئے تو اس سے حضور کا حسن اور بھی زیادہ ہو گیا کچھ کی نہ آئی۔ علماء فرماتے ہیں کہ سفید بال اکھیر تازینت کے لیے ہو تو منع ہے۔ (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۹۹)

(10) سنن الترمذی، کتاب فضائل البہاد، باب ماجاء فی فضل من شاب ہیئۃ فی سبیل اللہ، الحدیث: ۱۶۳۰، ج ۳، ص ۲۳۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی سفید ریش والے مؤمن کے لیے قیامت میں نور ہوگا کہ اس کی سفید ڈاڑھی نورانی ہوگی یا نور کا باعث ہوگی اس دن سواہ ابراہیم علیہ اسلام کے ڈاڑھی کسی کے نہ ہوگی مگر یہ سفید ڈاڑھی چہرہ کے نور کا باعث ہوگی۔ ان دونوں حدیثوں کی بناء پر حضرت علی، سلمہ ابن اکوع، ابی ابن کعب اور بہت صحابہ کرام نے کبھی خطاب نہ لگایا اپنی ڈاڑھی اور سر سفید رکھے، وہ فرماتے تھے کہ چٹی ڈاڑھی نور اور درجات کا باعث ہو گی۔ بعض صحابہ کرام اور حضرت حسن و حسین نے خطاب لگایا گزشتہ احادیث کی بنا پر لہذا دونوں عمل جائز ہیں۔ علماء فرماتے ہیں کہ اگر اپنے شہر میں خطاب کا رواج عام ہو تو خطاب کرنا بہتر ہے، اگر سفید ڈاڑھی کا رواج عام ہو تو سفید رکھنا بہتر اور جہاد کے موقع پر خطاب افضل۔ (مرقات) یوں ہی اگر ہمارے شہر یا ملک میں یہودی سکھ عام ہوں جو خطاب نہیں کرتے تو خطاب کرنا افضل ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۰۰)

(11) الموطا، کتاب صفۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم، باب ماجاء فی السنۃ فی الفطرۃ، الحدیث: ۱۷۵۶، ج ۲، ص ۴۱۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۲۔ اس طرح کہ آپ سے پہلے کسی نے مہمان نوازی کا اتنا اہتمام نہ کیا جتنا آپ نے کیا آپ تو بغیر مہمان کھانا ہی نہ کھاتے تھے۔

۳۔ آپ سے پہلے انبیاء کرام ختنہ شدہ پیدا ہوئے اور انکی امتوں نے ختنہ کیا نہیں کیونکہ اس زمانہ میں ختنہ کا شرعی حکم نہ تھا۔ سب سے پہلے آپ کے دین میں ختنہ حکم شرعی بنا اور آپ کی وجہ سے ختنہ سنت ابراہیمی ہوا۔

۴۔ آپ سے پہلے کسی نبی کی یا مونچھیں بڑھی نہیں یا بڑھیں اور انہوں نے تراشیں مگر ان کے دینوں میں مونچھ کا ثنا حکم شرعی نہ تھا اب آپ کی وجہ سے یہ عمل سنت ابراہیمی ہوا۔

حدیث ۱۲: دیلمی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص قصد سفید بال اکھاڑے گا، قیامت کے دن وہ نیزہ ہو جائے گا، جس سے اس کو بھونکا جائے گا۔ (12)

حدیث ۱۳: طبرانی نے حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے حجامت کے سوا گردن کے بال مونڈانے سے منع فرمایا۔ (13)

حدیث ۱۴: صحیح بخاری و مسلم میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے قزع سے منع فرمایا۔ نافع سے پوچھا گیا، قزع کیا چیز ہے؟ نافع نے کہا، بچہ کا سر کچھ مونڈ دیا جائے، کچھ متعدد جگہ چھوڑ دیا جائے۔ (14)

حدیث ۱۵: صحیح مسلم میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ایک بچہ کو دیکھا،

۴۔ آپ سے پہلے کسی کے بال سفید نہ ہوتے تھے اگرچہ ان کی عمریں صد ہا سال ہوتی سب سے پہلے آپ کے بال سفید ہوئے۔ آدم علیہ السلام کی عمر ایک ہزار سال ہوئی، نوح علیہ السلام کی عمر ڈیڑھ ہزار سال مگر بال کسی کے سفید نہ ہوئے۔

۵۔ یعنی بال کی سفیدی وقار کا سبب ہے، اس سے حلم، مہربانی اور بڑی اعلیٰ صفات انسان میں پیدا ہو جاتی ہیں۔

۶۔ یعنی مجھے حلم و وقار عطا فرما خواہ اس طرح کہ بالوں کی سفیدی بڑھ جاوے جس سے وقار بڑھے یا اس طرح کہ بال ایسے ہی رہیں صرف وقار بڑھے، یہ تو رب تعالیٰ کی دین ہے ہمارے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے بال شریف سیاہ رہے وقار سب سے زیادہ عطا ہوا۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۲۹)

(12) کنز العمال، کتاب الزینۃ والتجمل، رقم ۱۷۲۷۶، ج ۶، ص ۲۸۱۔

(13) الجامع الصغیر لسیوطی، حرف النون، الحدیث: ۹۳۶۴، ص ۵۶۳۔

(14) صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب کرۃ القزع، الحدیث: ۱۱۳۔ (۲۱۲۰)، ص ۱۷۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ قزع قاف کے فتح سے بمعنی بادل کے ٹکڑے، اب اصطلاح میں سر کا بعض حصہ منڈوانے یا کترانے اور بعض رکھانے کو قزع کہتے ہیں اسے بادل کے ٹکڑوں سے تشبیہ دیتے ہوئے، یہ ممانعت بچوں بڑوں سب کے لیے ہے۔ مجبوری کے حالات اس سے عیندہ ہیں جیسے کبھی سر سرم میں بیمار کا تاو کھول دیا جاتا ہے یعنی صرف بچ کھوپڑی کے بال مونڈ دیئے جاتے ہیں ویسے بل ضرورت ممنوع ہے کہ کراہت تنزیہی ہے، انگریزی حجامت بھی قزع ہے۔

۲۔ بچوں کا ذکر اتفاقاً ہے کہ عرب میں بچوں ہی کی حجامت اس طرح کی جاتی ہے ورنہ یہ ممانعت چھوٹے بڑوں سب کے لیے ہے۔

۳۔ جنی س روایت میں اس طرح مروی ہے کہ خود حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ہی یہ تفسیر ارشاد فرمائی۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۶۹)

کہ اس کا سر کچھ مونڈا ہوا ہے اور کچھ چھوڑ دیا گیا ہے۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم) نے لوگوں کو اس سے منع کیا اور یہ فرمایا کہ کل مونڈ دو یا کل چھوڑ دو۔ (15)

حدیث ۱۶: ابو داؤد و نسائی نے عبد اللہ بن جعفر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ جب حضرت جعفر شہید ہوئے تین دن تک حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم) نے ان کی آل سے کچھ نہیں فرمایا، پھر تشریف لائے اور یہ فرمایا کہ آج کے بعد سے میرے بھائی (جعفر) پر نہ رونا، پھر فرمایا کہ میرے بھائی کے بچوں کو بلاؤ۔ کہتے ہیں کہ ہم حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم) کی خدمت میں پیش کیے گئے، فرمایا: حجام کو بلاؤ، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم) نے ہمارے سر مونڈا دیے۔ (16)

(15) سنن ابی داؤد، کتاب الترجل، باب الذواہب، الحدیث: ۴۱۹۵، ج ۴، ص ۱۱۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اں خیال رہے کہ کل سر منڈانا جائز ہے مگر بہتر نہیں سواء احرام سے کھلنے کے وقت کہ وہاں سر منڈانا بہتر ہے باقی حالات میں منڈانا بہتر نہیں کہ سواء حضرت علی رضی اللہ عنہ کے کسی صحابی نے سر نہ منڈایا نہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے۔ (مرقات) حضرت علی کے سر منڈانے کی حکمت شروع کتاب میں عرض کی گئی۔ اس زمانہ میں تو سر منڈانا بہت ہی برا ہے کہ وہابیوں کی علامت ہے، حضور نے وہابیوں کے متعلق ارشاد فرمایا سیماہم التخیق ان کی علامت سر منڈانا ہوگی۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ انگریزی بال رکھنا یا قلمیں بنونا سب ممنوع ہے کہ اس میں قزع ہے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۷۰)

(16) سنن ابی داؤد، کتاب الترجل، باب فی حلق الرأس، الحدیث: ۴۱۹۲، ج ۴، ص ۱۱۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اں حضرت جعفر بھی صلی ہیں اور ان کے بیٹے عبد اللہ ابن جعفر بھی حضرت جعفر جناب علی مرتضیٰ کے بھائی ہیں اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے چچا زاد کیونکہ جعفر ابن ابی طالب ہیں، حضرت جعفر غزوہ موتہ میں شہید ہوئے یہاں اسی کا ذکر ہے۔

۲۔ تعزیت کے لیے بیٹھنے اور عزیز و اقرباء کے قلی دینے کے لیے آنے کی مہلت تین دن تک دی جیسے آج کل میت والے تین دن تک چٹائی ڈالتے ہیں یہ سنت سے ثابت ہے اس کا یہاں ذکر ہے، بعض لوگ ان دنوں میں میت کے لیے فاتحہ پڑھتے رہتے ہیں یہ بھی بہت اچھا ہے۔

۳۔ یہاں رونے سے مراد آنکھ کے آنسو نہیں بلکہ تعزیت کے لیے بیٹھنا اور چہرے سے غم کے آثار کا ظاہر ہونا ہے۔ کسی میت پر تین دن سے زیادہ سوگ کرنا حرام ہے سواء خاوند کے کہ اس کی بیوہ بیوی چار ماہ دس دن سوگ کرے۔

۴۔ یعنی حضرت جعفر کے بچوں کو جواب یتیم ہو چکے تھے۔ یہ واقعہ غزوہ موتہ کے بعد کا ہے جس میں حضرت جعفر شہید ہوئے تھے، ان کے بچوں کے بال بڑھے ہوئے تھے اس لیے چڑیا کے بچوں سے تشبیہ دی گئی۔

حدیث ۱۷: ابو داؤد نے ابن المنظلیہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: خرم اسدی بہت اچھا شخص ہے اگر اس کے سر کے بال بڑے نہ ہوتے اور تہبند نیچا نہ ہوتا۔ جب یہ خبر خرم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو پہنچی تو چھری لے کر بال کاٹ ڈالے اور کانوں تک کر لیے اور تہبند کو آدھی پنڈلی تک اونچا کر لیا۔ (17)

حدیث ۱۸: ابو داؤد نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں میرے گیسوتھے۔ میری ماں نے کہا، کہ ان کو نہیں کٹواؤں گی کیونکہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم انہیں پکڑتے اور کھینچتے تھے۔ (18) یعنی حضور (صلی اللہ

۵۔ اس سے معلوم ہوا کہ یتیم عزیزوں کی خبر گیری کرنا ان کی ضروریات پوری کرنا سنت ہے اور یہاں بال منڈوا دینا علامت تھی مدت تعزیت ختم ہو جانے کی۔ خیال رہے کہ احرام سے کھلتے وقت کے سواء اور موقعوں پر بال منڈوانا اچھا نہیں مگر حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے خیال فرمایا کہ اب ان کی والدہ حضرت اسماء بنت عمیس ان کی بالوں کی نگرانی و خدمت نہ کر سکیں گی اپنی عدت و غم میں گرفتار رہیں گی اس لیے حضور نے ان کے سر منڈوا دیئے۔ اس سے یہ بھی معلوم ہوا کہ یتیموں کا والی تصرف کر سکتا ہے جیسے حجامت اور ختنہ وغیرہ۔ (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۰۳)

(17) المرجع السابق، باب ماجاء فی إسبال الأزار، الحدیث: ۳۰۸۹، ج ۴، ص ۸۰.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کا نام سہیل ابن ربیع ابن عمرو ہے، حنظلیہ آپ کی ماں کا نام ہے، سہیل صحابی ہیں بیحدہ الرضوان میں شریک ہوئے، بڑے گوشہ نشین تاریک اندنیا عالم و عامل بزرگ تھے، لادلد تھے، شام میں قیام رہا، دمشق میں وفات ہوئی، امارت امیر معادیہ کے شروع میں وفات پائی۔

۲۔ آپ کا نام خرم ابن اخرم ابن شداد ابن عمرو ابن فاتک ہے، شام میں قیام رہا، صحابی ہیں، قبیلہ بن اسد سے ہیں جو یمن کا مشہور قبیلہ ہے۔

۳۔ یہ فرمان عالی حضرت خرم کی غیر موجودگی میں ہوا۔ معلوم ہوا کہ کسی کی پس پشت اس کی برائی بیان کرنا درست ہے جب کہ اس کی اصلاح مقصود ہو، اگرچہ سر کے بالوں کا کچھ دراز ہونا ممنوع نہیں مگر چونکہ ان کی نیت اظہار فخر کی تھی اس لیے اس سے منع فرما دیا گیا اس لیے بالوں کے ساتھ درازی تہبند کا ذکر فرمایا اور نہ خود حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے بال شریف کبھی دراز ہوتے تھے۔

۴۔ خیر رہے کہ مردوں کے لیے دونوں حکم ہیں یعنی سر کے بال کٹوانا تہبند اونچا پہننا، عورتوں کو یہ دونوں کام حرام ہیں عورتیں اپنے سر کے بال خود دراز رکھیں ہرگز نہ کٹوائیں تہبند نیچا باندھیں، ہاں احرام سے فارغ ہونے پر عورتیں بالوں کی نوکیلیاں ایک پورا کٹو دیں۔ (مرقات) یہ بھی خیال رہے کہ مرد کو لمبے بال رکھنا ان میں عورتوں کی سی مانگ چوٹی کرنا حرام ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۰۲)

(18) المرجع السابق، باب ماجاء فی الرخصة، الحدیث: ۳۱۹۶، ج ۴، ص ۱۱۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ چنانچہ حضرت انس نے اپنے اگلے سر کے بال کبھی نہ کٹوائے انہیں قبر میں ساتھ لے گئے کیونکہ ان بالوں کو حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے

تعالیٰ علیہ والہ وسلم) کا دست اقدس ان بالوں کو لگا ہے اس وجہ سے بقصد تبرک چھوڑ رکھے تھے، کٹواتی نہ تھیں۔
حدیث ۱۹: نسائی نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے عورت کو سر مونڈانے سے منع فرمایا ہے۔ (19)

حدیث ۲۰: صحیح بخاری و مسلم میں ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو جس چیز کے متعلق کوئی حکم نہ ہوتا اس میں اہل کتاب کی موافقت پسند تھی (کیونکہ ہو سکتا ہے کہ وہ جو کچھ کرتے ہوں وہ انبیاء علیہم السلام کا طریقہ ہو) اور اہل کتاب بال سیدھے رکھتے تھے اور مشرکین مانگ نکالا کرتے تھے، لہذا نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے بال سیدھے رکھے یعنی مانگ نہیں نکالی پھر بعد میں حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم) نے مانگ نکالی۔ (20) (اس سے معلوم ہوا کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم) کو اس معاملے میں اہل کتاب کی

ہاتھ مبارک لگا کرتے تھے حالانکہ سر کے بعض بال رکھنا بعض کٹوانا ممنوع ہے مگر اس خصوصیت نے یہ ممانعت دور کر دی۔ اس سے معلوم ہوا کہ بزرگوں کی مس کی ہوئی چیزوں سے تبرک حاصل کرنا سنت صحابہ ہے، مدینہ منورہ کی زمین پاک کی خاک بھی تبرک ہے کہ اسے کبھی وہ تلوے لگے ہیں جو عرش اعظم پر گئے تھے۔ شعر

یہاں کے پتھروں نے پاؤں چومے ہیں محمد کے

کہاں یہ مرتبے اللہ اکبر سنگ اسود کے

اس حدیث سے تصوف کے بہت مسائل حاصل ہو سکتے ہیں۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو حضرت انس سے ان کے بچپن سے ہی بڑی محبت تھی، حضور پیار میں ان کے سر کے اگلے حصہ پر ہاتھ شریف رکھتے بالوں کو بٹختے تھے، آپ اس واقعہ کی طرف اشارہ فرمادی ہیں۔
(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۰۲)

(19) سنن النسائی، کتاب الزینۃ من السنن، باب النہی عن حلق المرأة رأساً، الحدیث: ۵۰۵۹، ص ۸۰۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب چنانچہ حضرت انس نے اپنے اگلے سر کے بال کبھی نہ کٹوائے انہیں قبر میں ساتھ لے گئے کیونکہ ان بالوں کو حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے ہاتھ مبارک لگا کرتے تھے حالانکہ سر کے بعض بال رکھنا بعض کٹوانا ممنوع ہے مگر اس خصوصیت نے یہ ممانعت دور کر دی۔ اس سے معلوم ہوا کہ بزرگوں کی مس کی ہوئی چیزوں سے تبرک حاصل کرنا سنت صحابہ ہے، مدینہ منورہ کی زمین پاک کی خاک بھی تبرک ہے کہ اسے کبھی وہ تلوے لگے ہیں جو عرش اعظم پر گئے تھے۔ شعر

یہاں کے پتھروں نے پاؤں چومے ہیں محمد کے

کہاں یہ مرتبے اللہ اکبر سنگ اسود کے

اس حدیث سے تصوف کے بہت مسائل حاصل ہو سکتے ہیں۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو حضرت انس سے ان کے بچپن سے ہی بڑی محبت تھی، حضور پیار میں ان کے سر کے اگلے حصہ پر ہاتھ شریف رکھتے بالوں کو بٹختے تھے، آپ اس واقعہ کی طرف اشارہ فرمادی ہیں۔
(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۰۳)

(20) صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب الفرق، الحدیث: ۵۹۱۷، ج ۴، ص ۷۹۔

مخالفت کا حکم ہوا۔



حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ موافقت اور مشابہت میں بڑا فرق ہے کفار سے مشابہت بہر حال حرام ہے موافقت جائز ہے مگر جائز چیزوں میں۔ مطلب یہ ہے کہ جن چیزوں سے حضور انور کو منع نہیں فرمایا گیا ان میں ایسے کام اختیار فرماتے تھے جو شرکین کے مخالف ہوں اہل کتب کے موافق۔

۲۔ یعنی سر کے بالوں میں مانگ نہ نکالتے تھے یوں ہی کھلے ہوئے چھوڑ دیتے تھے۔

۳۔ پیشانی سے مراد سر ہے، بعض روایات میں راس ہے یعنی حضور انور نے مانگ نہ نکالی بلکہ بال شریف کھلے رکھے۔

۴۔ کیونکہ جبریل امین نے حضور انور سے یہ ہی عرض کیا کہ مانگ نکالا کریں، چنانچہ اب مسلمانوں کو یہ ہی سنت ہے۔

مسائل فقہیہ

جمعہ کے دن ناخن ترشوانا مستحب ہے، ہاں اگر زیادہ بڑھ گئے ہوں تو جمعہ کا انتظار نہ کرے کہ ناخن بڑا ہونا اچھا نہیں کیونکہ ناخنوں کا بڑا ہونا تنگی رزق کا سبب ہے۔ ایک حدیث ضعیف میں ہے، کہ حضور اقدس (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) جمعہ کے دن نماز کے لیے جانے سے پہلے مونچھیں کتر داتے اور ناخن ترشواتے۔

ایک دوسری حدیث میں ہے، کہ جو جمعہ کے دن ناخن ترشوائے، اللہ تعالیٰ اس کو دوسرے جمعہ تک بلاؤں سے محفوظ رکھے گا اور تین دن زائد (1) یعنی دس دن تک۔

ایک حدیث میں ہے، جو ہفتہ کے دن ناخن ترشوائے، اُس سے بیماری نکل جائے گی اور شفا داخل ہوگی اور جو اتوار کے دن ترشوائے فاقہ نکلے گا اور تو نگری آئے گی اور جو پیر کے دن ترشوائے جنون جائے گا اور صحت آئے گی اور جو منگل کے دن ترشوائے مرض جائے گا اور شفا آئے گی اور جو بدھ کے دن ترشوائے دسواس و خوف نکلے گا اور امن و شفا آئے گی (2) اور جو جمعرات کے دن ترشوائے جذام جائے اور عافیت آئے اور جو جمعہ کے دن ترشوائے رحمت آئے گی اور گناہ جائیں گے۔ یہ حدیثیں اگرچہ ضعیف ہیں، مگر فضائل میں قابل اعتبار ہیں۔ (3)

مسئلہ ۱: حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے یہ منقول ہے کہ پہلے داہنے ہاتھ کے ناخنوں کو اس طرح ترشوائے، سب سے پہلے چھنگلیا پھر بیچ والی پھر انگوٹھا پھر منجھلی پھر کلہ کی انگلی اور بائیں ہاتھ میں پہلے انگوٹھا پھر بیچ والی پھر چھنگلیا پھر

(1) مرقاة المفاتیح، کتاب اللباس، باب الترجل، تحت الحدیث: ۴۴۲۲، ج ۸، ص ۲۱۲۔

(2) اہل حضرت سے اس طرح کا سوال کیا گیا کہ ایک حدیث میں بدھ کے دن ناخن کاٹنے کی ممانعت آئی اور دوسری حدیث میں بدھ کے دن ناخن کاٹنے کی فضیلت آئی، ان دونوں روایتوں میں طہیق یا ترجیح کی کیا صورت ہے اور بدھ کے دن ناخن تراشنا کیسا ہوگا؟ اس کے جواب میں اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فرماتے ہیں: ناخن کاٹنے سے متعلق کسی دن کوئی ممانعت نہیں، اس لیے کہ دن کی تعیین میں کوئی حدیث صحیح ثابت نہیں، البتہ بعض ضعیف حدیثوں میں بدھ کے دن ناخن کاٹنے کی ممانعت ہے، لہذا اگر بدھ کا دن وجوب کا دن آجائے، مثلاً، نائیس دن سے نہیں تراشے تھے، آج بدھ کو چالیسواں دن ہے، اگر آج نہیں تراشا تو چالیس دن سے زائد ہو جائیں گے، تو اس پر واجب ہوگا کہ بدھ کے دن تراشے اس لیے کہ چالیس دن سے زائد ناخن رکھنا ناجائز و مکروہ تحریمی ہے۔ اور اگر مذکورہ صورت نہ ہو تو بدھ کے علاوہ کسی اور دن تراشنا مناسب کہ جانب منع کو ترجیح رہتی ہے۔ (فتاویٰ رضویہ، ج ۲۲، ص ۶۸۵، ملخصاً)

(3) اندر المختار و رد المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۶۸۔

کلمہ کی انگلی پھر منجھلی یعنی دہنے ہاتھ میں چھنگلیا سے شروع کرے اور بائیں ہاتھ میں انگوٹھے سے اور ایک انگلی چھوڑ کر اور بعض میں دو چھوڑ کر کٹوائے۔ ایک روایت میں آیا ہے، کہ اس طرح کرنے سے کبھی آشوب چشم نہیں ہوگا۔ (4)

مسئلہ ۲: ناخن تراشنے کی یہ ترتیب جو مذکور ہوئی اس میں کچھ پیچیدگی ہے، خصوصاً عوام کو اس کی نگہداشت دشوار ہے لہذا ایک دوسرا طریقہ ہے جو آسان ہے اور وہ بھی حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے مروی ہے، وہ یہ ہے کہ دہنے ہاتھ کی انگلی سے شروع کرے اور چھنگلیا پر ختم کرے پھر بائیں کی چھنگلیا سے شروع کر کے انگوٹھے پر ختم کرے۔ اس کے بعد دہنے ہاتھ کے انگوٹھے کا ناخن ترشوائے، اس صورت میں دہنے ہی ہاتھ سے شروع ہوا اور دہنے پر ختم بھی ہوا۔ (5) اعلیٰ حضرت قبلہ قدس سرہ، کا بھی یہی معمول تھا اور یہ فقیر بھی اسی پر عمل کرتا ہے۔

مسئلہ ۳: پاؤں کے ناخن ترشوانے میں کوئی ترتیب منقول نہیں، بہتر یہ ہے کہ پاؤں کی انگلیوں میں خلال کرنے کی جو ترتیب ہے اسی ترتیب سے ناخن ترشوائے یعنی دہنے پاؤں کی چھنگلیا سے شروع کر کے انگوٹھے پر ختم کرے پھر بائیں پاؤں کے انگوٹھے سے شروع کر کے چھنگلیا پر ختم کرے۔ (6)

مسئلہ ۴: دانت سے ناخن نہ کھٹکنا چاہیے کہ مکروہ ہے اور اس میں مرض برص معاذ اللہ پیدا ہونے کا اندیشہ ہے۔ (7)

مسئلہ ۵: مجاہد جب دار الحرب میں ہوں تو ان کے لیے مستحب یہ ہے کہ ناخن اور مونچھیں بڑی رکھیں کہ ان کی یہ شکل مہیب دیکھ کر کفار پر رعب طاری ہو۔ (8)

مسئلہ ۶: ہر جمعہ کو اگر ناخن نہ ترشوائے تو پندرہویں دن ترشوائے اور اس کی انتہائی مدت چالیس ۴۰ دن ہے اس کے بعد نہ ترشوانا ممنوع ہے۔ یہی حکم مونچھیں ترشوانے اور موئے زیر ناف دور کرنے اور بغل کے بال صاف کرنے کا ہے کہ چالیس دن سے زیادہ ہونا منع ہے۔ صحیح مسلم کی حدیث انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے، کہتے ہیں کہ ناخن ترشوانے اور مونچھ کاٹنے اور بغل کے بال لینے میں ہمارے لیے یہ میعاد مقرر کی گئی تھی کہ چالیس دن سے زیادہ نہ چھوڑ رکھیں۔ (9)

(4) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیج، ج ۹، ص ۶۶۹۔

(5) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیج، ج ۹، ص ۶۷۰۔

(6) المرجع السابق، ص ۶۷۰۔

(7) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیہ، الباب التاسع عشر فی الختان، ج ۵، ص ۵۸۔

(8) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیج، ج ۹، ص ۶۶۸۔

(9) انظر: صحیح مسلم، کتاب الطہارۃ، باب خصال القطرۃ، الحدیث: ۵۱۔ (۲۵۸) ص ۱۵۳۔

مسئلہ ۷: موئے زیر ناف دور کرنا سنت ہے۔ ہر ہفتہ میں نہانا، بدن کو صاف ستھرا رکھنا اور موئے زیر ناف دور کرنا مستحب ہے اور بہتر جمعہ کا دن ہے اور پندرہویں روز کرنا بھی جائز ہے اور چالیس روز سے زائد گزار دینا مکروہ و ممنوع۔ موئے زیر ناف استرے سے مونڈنا چاہیے اور اس کو ناف کے نیچے سے شروع کرنا چاہیے اور اگر مونڈنے کی جگہ ہر تاں چوٹا یا اس زمانہ میں بال اڑانے کا صابون چلا ہے، اس سے دور کرے یہ بھی جائز ہے، عورت کو یہ بال اکھیڑ ڈالنا سنت ہے۔ (10)

مسئلہ ۸: بغل کے بالوں کا اکھاڑنا سنت ہے اور مونڈنا بھی جائز ہے۔ (11)

مسئلہ ۹: بہتر یہ ہے کہ گلے کے بال نہ مونڈائے انھیں چھوڑ رکھے۔ (12)

مسئلہ ۱۰: ناک کے بال نہ اکھاڑے کہ اس سے مرض آکلہ پیدا ہونے کا ڈر ہے۔ (13)

مسئلہ ۱۱: جنابت کی حالت میں نہ بال مونڈائے اور نہ ناخن ترشوائے کہ یہ مکروہ ہے۔ (14)

مسئلہ ۱۲: بھوں کے بال اگر بڑے ہو گئے تو ان کو ترشوا سکتے ہیں، چہرہ کے بال لینا بھی جائز ہے جس کو خط بنوانا کہتے ہیں، سینہ اور پیٹھ کے بال مونڈنا یا کتر وانا اچھا نہیں، ہاتھ، پاؤں، پیٹ پر سے بال دور کر سکتے ہیں۔ (15)

مسئلہ ۱۳: بچی (یعنی وہ چند بال جو نیچے کے ہونٹ اور ٹھوڑی کے بیچ میں ہوتے ہیں) کے اگل بغل (آس پاس) کے بال مونڈنا یا اکھیڑنا بدعت ہے۔ (16)

مسئلہ ۱۴: مونچھوں کو کم کرنا سنت ہے اتنی کم کرے کہ ابرو کی مثل ہو جائیں یعنی اتنی کم ہوں کہ اوپر والے ہونٹ کے بالائی حصہ سے نہ لٹکیں اور ایک روایت میں مونڈنا آیا ہے۔ (17)

(10) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۱۔

والفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان، ج ۵، ص ۳۵۷-۳۵۸۔

(11) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۰۔

(12) المرجع السابق۔

(13) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان، ج ۵، ص ۳۵۸۔

(14) المرجع السابق، ص ۳۵۸۔

(15) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۰، وغیرہ۔

(16) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان، ج ۵، ص ۳۵۸۔

(17) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۷۱۔

مسئلہ ۱۵: موچھوں کے دونوں کناروں کے بال بڑے بڑے ہوں تو حرج نہیں بعض سلف کی موچھیں اس قسم کی تھیں۔ (18)

مسئلہ ۱۶: داڑھی بڑھانا سنن انبیاء سابقین سے ہے۔ مونڈانا یا ایک مہشت سے کم کرنا حرام ہے، ہاں ایک مہشت سے زائد ہو جائے تو جتنی زیادہ ہے اس کو کٹوا سکتے ہیں۔ (19)

(18) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان، ج ۵، ص ۳۵۸۔

(19) الدر المختار، کتاب المحظر والایات، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۷۱، وغیرہ۔

اعلیٰ حضرت، امام السنن، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

ریش ایک مہشت یعنی چار انگلی تک رکھنا واجب ہے اس سے کمی ناجائز۔ شرح مشکوٰۃ شریف میں ہے:

گذاشتن آل بقدر قہض واجب است و آنکہ آنرا سنت گویند بمعنی طریقہ مسلوک دین ست یا بجہت آنکہ ثبوت آن سنت ست چنانچہ نماز عید راست گفتہ اند۔

داڑھی بمقدار ایک مہشت رکھنا واجب ہے اور جو اسے سنت قرار دیتے ہیں وہ اس معنی میں ہے کہ یہ دین میں آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا جاری کردہ طریقہ ہے یا اس وجہ سے کہ اس کا ثبوت سنت نبوی سے ہے جیسا کہ نماز عید کو سنت کہنا جاتا ہے حالانکہ وہ واجب ہے۔ (ت)

(۱) اشعۃ اللمعات شرح مشکوٰۃ کتاب الطہارۃ باب السواک مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۲۱۲ فتح القدیر میں ہے:

اللاخذ منها وہی دون ذلك کہا یفعله بعض البغاریۃ ومحدثۃ الرجال ۲۔

داڑھی تراشنا یا کترنا کہ وہ مہشت کی مقدار سے کم ہو جائے ناجائز ہے جیسا کہ بعض مغربیت زدہ لوگ اور مجرے کرتے ہیں۔ (ت)

(۲) فتح القدیر باب الصیام باب ما یوجب القنۃ والکفارة مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۲/ ۲۷۰ غرض لمحیہ سے کچھ لینا بھی اسی حالت سے مشروط ہے جبکہ طول میں حد شرع تک پہنچ جائے۔

فی الہندیہ من الملتقط لا بأس اذا طالت لحیتہ طولا وعرضا لکنہ مقید بما اذا زاد علی القبضۃ ۳۔

فتاویٰ ہندیہ میں بحوالہ المسقط منقول ہے کہ جب داڑھی طول اور عرض میں بڑھ جائے تو ایک مہشت مقدار سے زائد کٹ دینے میں کوئی حرج نہیں ہے۔ (ت) (۳) فتاویٰ ہندیہ کتاب الکراہیۃ الباب التاسع عشر فی الختان کتب خانہ پشاور ۵/ ۳۵۸

اور پر ظاہر کہ مقدار ٹھوڑی کے نیچے سے لی جائے گی یعنی چھوٹے ہوئے بال اس قدر ہوں وہ جو بعض بیباک جہل ب زیریں کے نیچے سے ہاتھ رکھ کر چار انگلی مانتے ہیں کہ ٹھوڑی سے نیچے ایک انچل رہے یہ محض جہالت اور شرع مطہر میں بیباکی ہے غرض اس قدر میں تو عدائے سنت کا اتفاق ہے۔ اس سے زائد اگر طول قاشح حد اعتدال سے خارج بے موقع بدنما ہو تو بلاشبہ خلاف سنت مکروہ کہ صورت بدنما بنانا اپنے منہ پر دروازہ طعن مسخر یہ کھولنا مسلمانوں کو استہزاء و غیبت کی آفت میں ڈالنا ہرگز مرضی شرع مطہر نہیں، نہ معاذ اللہ زہار کہ

مسئلہ ۷: داڑھی چڑھانا یا اس میں گرہ لگانا جس طرح سکھ وغیرہ کرتے ہیں ناجائز ہے، اس زمانہ میں داڑھی

ریش قدس حضور پر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم عیاذ باللہ کبھی حد بدنامی تک پہنچی سنت ہونا اس کا معقول نہیں۔

وان ذهب بعض العلماء من غير اصحابنا الى اعفاء اللحي جملة واحدة و كراهة اخذ شيع منها مطلقا وهو الذي اختاره الامام الاجل النووي والعجب من ابن ملك حيث تابعه على ذلك مستدركا به على قول نفسه ان الاخذ من اطراف اللحية طولها وعرضها للتناسب حسن كما نقل عنه المولى على القارى في كتاب الطهارة من المرقاة والعجب انه ايضا سكت عليه ههنا مع انه خلاف ما عليه ائمتنا الكرام كما ترى.

گرچہ ہمارے اصحاب علم کے سوا کچھ دوسرے علماء کا خیال ہے کہ داڑھی کو یک لخت مجموعی طور پر بڑھنے دیا جائے اور محدود نہ کیا جائے وہ داڑھی کو تراشنے کے حق میں مطلقاً نہیں اور وہ تراشنے کو مکروہ خیال کرتے ہیں جلیل القدر امام نووی نے اسی چیز کو پسند کیا ہے لیکن ابن ملک پر تعجب ہے کہ اس نے اس مسئلہ میں امام نووی کی متابعت کرتے ہوئے اپنے قول پر استدراک کیا کہ داڑھی کی اطراف طول و عرض سے تناسب قائم رکھنے کے لئے کچھ تراش خراش کرنا مستحسن یعنی اچھا ہے جیسا کہ اس سے محدث ملا علی قاری نے مرقاة شرح مشکوٰۃ کی بحث صہارت میں نقل کیا ہے اور ان پر بھی تعجب ہے کہ وہ یہاں خاموش رہے حالانکہ یہ اس کے خلاف ہے جس پر ہمارے ائمہ کرام قائم ہیں جیسا کہ تم دیکھتے ہو۔ (ت) (۱) مرقاة المفاتیح کتاب الطہارۃ باب السواک الفصل الاول المکتبۃ المحمدیہ کوئٹہ ۲/ ۹۱

ولہذا حدیث میں آیا حضور والا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

من سعادة المرء خفة لحيته ۲۔ اخرجه الطبرانی في الكبير وابن عدي في الكامل عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما.

آدمی کی سعادت سے ہے داڑھی کا ہلکا ہونا یعنی یہ کہ بچہ دراز نہ ہو۔ (امام طبرانی نے المعجم الکبیر میں اور ابن عدی نے الکامل میں حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے حوالے سے تخریج فرمائی۔ ت) (۲) المعجم الکبیر حدیث ۱۲۸۴۰ المکتبۃ الفیضیہ بیروت ۱۲/ ۲۱۱۔ (الکامل لابن عدی ترجمہ یوسف بن فرق بن لہازۃ قاضی الاحواز دار الفکر بیروت ۷/ ۲۶۲۳، ۲۶۲۵)

علامہ خفاجی نسیم الریاض میں فرماتے ہیں:

المراد من ذلك عدم طولها جدا لما ورد في ذمه ۱۔

یقیناً اس سے مراد غیر طویل ہے کیونکہ اس کی مذمت میں حدیث وارد ہوئی ہے۔ (ت)

(۱) نسیم الریاض الباب الثانی فصل الثالث اذارة تالیف، شرفیہ ملتان ۱/ ۳۳۱

امام حجۃ الاسلام غزالی احیاء العلوم پھر مولانا علی قاری مرقاة میں فرماتے ہیں:

قد اختلفوا فيما طال من اللحية فقیل ان قبض الرجل على لحيته واخذ ما تحت القبضة فلا بأس به وقد فعله ابن عمر و جماعة من التابعين واستحسنه الشعبي و ابن سيرين و كرهه الحسن وقتادة ومن

مونچھ میں طرح طرح کی تراش خراش کی جاتی ہے، بعض داڑھی مونچھ کا بالکل صفایا کر دیتے ہیں، بعض لوگ مونچھوں کی دونوں جانب مونڈ کر بیچ میں ذرا سی باقی رکھتے ہیں جیسے معلوم ہوتا ہے کہ ناک کے نیچے دو کھیاں بیٹھی ہیں، کسی کی

تبعہما وقالوا ترکھا عافیة احب لقوله عليه الصلوة والسلام اعفوا اللحی لکن الظاهر هو القول الاول فان الطول المفرط يشوه الخلقة ویطلق السنة البغتابین بالنسبة الیه فلا بأس للاحتراز عنه علی هذه النية قال النخعي عجبتم لرجل عاقل طویل اللحية کیف لا یأخذ من لحيته فیجعلها بین لحیتین ای طویں وقصیر فان التوسط من کل شیء احسن ومنه قیل خیر الامور اوسطها ومن ثم قیل کلما طالت اللحية نقص العقل ۱۔ بے شک داڑھی کے دراز حصہ میں (یعنی اس کی درازی کے بارے میں) اہل علم نے اختلاف کیا ہے پس یہ کہا گیا ہے کہ اگر کوئی مرد اپنی مشت بھر داڑھی کو پکڑ کر مشت سے زائد بالوں کو کاٹ ڈالے تو اس میں کوئی حرج نہیں کیونکہ حضرت عبداللہ ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما اور حضرات تابعین کے ایک گروہ نے اس طرح کیا تھا اور امام شعبی اور محمد بن سیرین نے اس کو اچھا سمجھا البتہ حضرت حسن بصری اور امام قتادہ اور ان کے ہمنوا لوگوں نے اس کو مکروہ کہا اور انھوں نے فرمایا کہ اسے بڑھتے ہوئے چھوڑ دینا زیادہ مناسب اور پسندیدہ بات ہے، حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے اس ارشاد کی وجہ سے کہ داڑھیاں بڑھاؤ، لیکن ظاہر وہی پہلی بات ہے کیونکہ فحش درازی صورت کو بد نما بنا دے گی اور اس کی نسبت (لوگوں کی) زبانیں دراز ہو جائیں گی پھر اس نیت سے اس سے بچنے میں کوئی حرج نہیں پھر یہ بات پوشیدہ نہیں کہ اگر کوئی عقلمند آدمی بھی داڑھی والا ہو یعنی اس کی داڑھی زیادہ لمبی ہونے لگے تو وہ کیونکر داڑھی نہ تراشے گا، پھر وہ لمبی اور چھوٹی دو قسم کی داڑھیوں کے درمیان کر دے گا اس لئے کہ ہر چیز میں میانہ روی اچھی ہوتی ہے اسی لئے فرمایا گیا کہ بہترین کام درمیانہ ہوتا ہے اور اسی وجہ سے یہ بھی کہا گیا کہ جب بھی داڑھی لمبی ہو تو عقل کم ہوگی۔ (ت)

(۲۔ مرقاة المفاتیح کتاب اللباس باب الترجل الفصل الثانی، المکتبۃ المحمدیہ کوئٹہ ۸ / ۲۲۳)

رد المحتار میں ہے:

اشتهر ان طولاً أنه ضعیف دلیل علی خفة العقل ۱۔

مشہور ہے کہ لمبی داڑھی بے وقوف ہونے کی علامت ہے۔ (ت)

(۱۔ رد المحتار کتاب الحظر والایاتہ فصل فی البیوع دار احیاء التراث العربی بیروت ۵ / ۲۶۱)

اور اگر حد سے زائد نہ ہو تو بعض ائمہ سلف رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے منقول امیر المؤمنین عثمان غنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی ریش مبارک کہا نص علیہ الامام ابن حجر فی الاصابہ و كذلك نقل الفاضل ابن عبد اللہ الشافعی نزیل المدینة الطیبة فی کتابہ الاکتفاء فی فضل الاربعة الخلفاء عن الامام البغوی

(جیسے کہ امام ابن حجر نے اصحاب میں تصریح فرمائی ہے اور اسی طرح امام بغوی کے حوالے سے فاضل بن عبد اللہ شافعی جو مدینہ طیبہ کے باسی ہیں، نے اپنی کتاب الاکتفاء فی فضل الاربعة الخلفاء میں نقل کیا ہے۔ (ت) (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۲، ص ۵۸۱، ۵۸۲، ضافہ فی وینڈیشن، لاہور)

داڑھی فرنیچ کٹ اور کسی کی کرزن فیشن ہوتی ہے، یہ جو کچھ ہو رہا ہے سب نصاریٰ کے اتباع و تقلید میں ہو رہا ہے۔ مسلمانوں کے جذبات ایمانی اتنے زیادہ کمزور ہو گئے کہ وہ اپنے وقار و شعار کو کھوتے ہوئے چلے جاتے ہیں ان کو اس بات کا احساس نہیں ہوتا کہ ہم کیا تھے اور کیا ہو گئے جب ان کی بے حسی اس درجہ بڑھ گئی اور حمیت و غیرت ایمانی یہاں تک کم ہو گئی کہ دوسری قوموں میں جذب ہوتے جاتے ہیں، پامردی اور استقلال کے ساتھ اسلامی روایات و احکام کی پابندی نہیں کرتے تو ان سے کیا امید ہو سکتی ہے کہ اسلامی احکام کا احترام کرائیں گے اور حقوق مسلمین کی حفاظت کریں گے۔ مسلم کے ہر فرد کو تعلیمات اسلام کا مجسمہ ہونا چاہیے اخلاقِ سیلف صیالحین کا نمونہ ہونا چاہیے اسلامی شعار کی حفاظت کرنی چاہیے تاکہ دوسری قوموں پر اس کا اثر پڑے۔

مسئلہ ۱۸: بعض داڑھی منڈے یہاں تک بے باک ہوتے ہیں کہ وہ داڑھی کا مذاق اڑاتے ہیں، شریعت کے مطابق داڑھی رکھنے پر پھبتیاں کہتے ہیں۔ داڑھی مونڈانا حرام تھا، گناہ تھا مگر یہ تو سوچو یہ تم نے کس چیز کا مذاق اڑایا کس کی توہین و تذلیل کی۔ اسلام کی ہر بات اٹل ہے اور اس کے تمام اصول و فروع مضبوط ہیں ان میں کسی بات کو برا بتانا اسلام کو عیب لگانا ہے تم خود سوچو تو جو کچھ اس کا نتیجہ ہے، وہ تم پر واضح ہو جائے گا کسی سے پوچھنے کی ضرورت نہ پڑے گی۔

مسئلہ ۱۹: مرد کو اختیار ہے کہ سر کے بال منڈائے یا بڑھائے اور مانگ نکالے۔ (20)
حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے دونوں چیزیں ثابت ہیں۔ اگرچہ منڈانا صرف احرام سے باہر ہونے کے وقت ثابت ہے۔ دیگر اوقات میں مونڈانا ثابت نہیں۔ (21) ہاں بعض صحابہ سے مونڈانا ثابت ہے مثلاً حضرت مولیٰ علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ بطور عادت مونڈایا کرتے تھے۔ (22) حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے موئے مبارک کبھی نصف کان تک (23)، کبھی کان کی لوت تک ہوتے (24) اور جب بڑھ جاتے تو شانہ مبارک سے چھو جاتے۔ (25) اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) بیچ سر میں مانگ نکالتے۔ (26)

(20) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیض، ج ۹، ص ۶۷۲۔

(21) جمع الوسائل فی شرح اشمال لقاری، باب ماجاء فی شعر رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم، ص ۹۹۔

(22) سنن ابی داود، کتاب الطہارۃ، باب فی الغسل من الجنابة، الحدیث: ۲۴۹، ج ۱، ص ۱۱۷۔

(23) سنن ابی داود، کتاب الترجل، باب ماجاء فی الشعر، الحدیث: ۴۱۸۶، ج ۳، ص ۱۱۱۔

(24) انظر: صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب صفۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث: ۳۵۵۱، ج ۲، ص ۴۸۷۔

(25) انظر: صحیح البخاری، کتاب السبائس، باب الجعد، الحدیث: ۵۹۰۳، ج ۴، ص ۷۷۔

(26) انظر: صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب صفۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث: ۳۵۵۸، ج ۲، ص ۴۸۹۔

مسئلہ ۲۰: مرد کو یہ جائز نہیں کہ عورتوں کی طرح بال بڑھائے، بعض صوفی بننے والے لمبی لمبی لٹیں (بالوں کی لڑیاں) بڑھا لیتے ہیں جو ان کے سینہ پر سانپ کی طرح لہراتی ہیں اور بعض چوٹیاں گوندتے ہیں یا جوڑے بنا لیتے ہیں یہ سب ناجائز کام اور خلاف شرع ہیں۔ تصوف بالوں کے بڑھانے اور رنگے ہوئے کپڑے پہننے کا نام نہیں بلکہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی پوری پیروی کرنے اور خواہشات نفس کو مٹانے (ختم کرنے) کا نام ہے۔

مسئلہ ۲۱: سپید بالوں کو ا دکھاڑنا یا قینچی سے چن کر نکلوانا مکروہ ہے، ہاں مجاہد اگر اس نیت سے ایسا کرے کہ کفار پر اس کا رعب طاری ہو تو جائز ہے۔ (27)

مسئلہ ۲۲: بیچ سر کو مونڈا دینا اور باقی جگہ کو چھوڑ دینا جیسا کہ ایک زمانہ میں پان بنوانے کا رواج تھا یہ جائز ہے اور حدیث میں جو قزع کی ممانعت آئی ہے اس کے یہ معنی ہیں کہ متعدد جگہ سر کے بال مونڈنا اور جگہ جگہ باقی چھوڑنا، جس کو گل بنانا کہتے ہیں۔ (28)

بخاری شریف سے بھی یہی ظاہر ہے۔ (29) پان بنوانے کو قزع سمجھنا غلطی ہے، ہاں بہتر یہی ہے کہ سر کے بال مونڈائے تو گل مونڈا ڈالے یہ نہیں کہ کچھ مونڈنے جائیں اور کچھ چھوڑ دیے جائیں۔

مسئلہ ۲۳: بعض دیہاتیوں کو دیکھا جاتا ہے کہ وہ پیشانی کو خط کی طرح بنواتے ہیں اور دونوں جانب نوکیں نکلاتے ہیں یا اور طرح سے بنواتے ہیں یہ سنت اور سلف کے طریقہ کے خلاف ہے، ایسا نہ کریں۔

مسئلہ ۲۴: گردن کے بال مونڈنا مکروہ ہے۔ (30) یعنی جب سر کے بال نہ مونڈائیں صرف گردن ہی کے بال مونڈائیں، جیسا کہ بہت سے لوگ خط بنوانے میں گردن کے بال بھی مونڈاتے ہیں اور اگر پورے سر کے بال مونڈا دیے تو اس کے ساتھ گردن کے بال بھی مونڈا دیے جائیں۔

مسئلہ ۲۵: آج کل سر پر گھمار کھنے کا رواج بہت زیادہ ہو گیا ہے کہ سب طرف سے بال نہایت چھوٹے چھوٹے اور بیچ میں بڑے بال ہوتے ہیں، یہ بھی نصاریٰ کی تقلید میں ہے اور ناجائز ہے پھر ان بالوں میں بعض داہنے یا بائیں جانب مانگ نکالتے ہیں یہ بھی سنت کے خلاف ہے، سنت یہ ہے کہ بال ہوں تو بیچ میں مانگ نکالی جائے اور بعض مانگ

(27) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب العشر ون فی الزینۃ، ج ۵، ص ۳۵۹۔

(28) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان، ج ۵، ص ۳۵۷۔

در المحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیج، ج ۹، ص ۶۷۲۔

(29) انظر: صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب القزع، الھدیث: ۵۹۲۰، ج ۴، ص ۸۰۔

(30) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان، ج ۵، ص ۳۵۷۔

نہیں نکالتے سیدھے رکھتے ہیں یہ بھی سنت منسوخہ اور یہود و نصاریٰ کا طریقہ ہے جیسا کہ احادیث میں مذکور ہے۔
مسئلہ ۲۶: ایک طریقہ یہ بھی ہے کہ نہ پورے بال رکھتے ہیں نہ مونڈاتے ہیں بلکہ قینچی یا مشین سے بال کترواتے ہیں یہ ناجائز نہیں مگر افضل و بہتر وہی ہے کہ مونڈائے یا بال رکھے۔

مسئلہ ۲۷: عورت کو سر کے بال کٹوانے جیسا کہ اس زمانہ میں نصرانی عورتوں نے کٹوانے شروع کر دیے ناجائز و گناہ ہے اور اس پر لعنت کی شوہر نے ایسا کرنے کو کہا جب بھی یہی حکم ہے کہ عورت ایسا کرنے میں گنہگار ہوگی کیونکہ شریعت کی نافرمانی کرنے میں کسی کا کہنا نہیں مانا جائے گا۔ (31) سنا ہے کہ بعض مسلمان گھروں میں بھی عورتوں کے بال کٹوانے کی بلا آگئی ہے، ایسی پر قینچ عورتیں دیکھنے میں لونڈا معلوم ہوتی ہیں۔

اور حدیث میں فرمایا کہ جو عورت مردانہ مسامت میں ہو، اس پر اللہ (عزوجل) کی لعنت ہے۔ (32) جب بال کٹوانا عورت کے لیے ناجائز ہے تو مونڈانا بدرجہ اولیٰ ناجائز کہ یہ بھی ہندوستان کے مشرکین کا طریقہ ہے کہ جب ان کے یہاں کوئی مرجاتا ہے یا تیرتھ (33) کو جاتی ہیں تو بال مونڈا دیتی ہیں۔

مسئلہ ۲۸: ترشوانے یا مونڈانے میں جو بال نکلے انھیں دفن کر دے، اسی طرح ناخن کا تراشہ پاخانہ یا غسل خانہ میں انھیں ڈال دینا مکروہ ہے کہ اس سے بیماری پیدا ہوتی ہے۔ (34) موئے زیر ناف کا ایسی جگہ ڈال دینا کہ دوسروں کی نظر پڑے ناجائز ہے۔

مسئلہ ۲۹: چار چیزوں کے متعلق حکم یہ ہے کہ دفن کر دی جائیں، بال، ناخن، حیض کا لٹا (یعنی وہ کپڑا جو عورت کے حیض کا خون صاف کرنے کے لئے استعمال ہوا ہو)، خون۔ (35)

مسئلہ ۳۰: سر میں جو کیں بھری ہیں اور بال مونڈا دیے، انھیں دفن کر دے۔ (36)

مسئلہ ۳۱: مجنونہ کے سر میں بیماری ہوگئی مثلاً کثرت سے جو کیں پڑ گئیں اور اس کا کوئی ولی نہیں تو اگر کسی نے اس

(31) امداد المختار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی البیج، ج ۹، ص ۶۷۱۔

(32) صحیح ابی یزید، کتاب اللباس، باب المتشھون بالنساء... إلخ، الحدیث: ۵۸۸۵، ج ۴، ص ۷۳۔

(33) ہندوؤں وغیرہ کا مقدس مقام، متبرک دریا (گنگا، جمنا) پر نہانے کا گھاٹ۔

(34) افتاویٰ الہندیہ، کتاب لکراہیہ، الباب التاسع عشر فی الختان، ج ۵، ص ۳۵۸۔

(35) افتاویٰ الہندیہ، کتاب لکراہیہ، الباب التاسع عشر فی الختان، ج ۵، ص ۳۵۸۔

(36) ارجع السابق۔

کا سر مونڈا دیا اس نے انسان کیا، مگر اس سے سر میں پٹھ بال پھوڑ دے تاکہ معلوم ہوئے کہ عورت ہے۔ (37)
 مسئلہ ۳۲: پید بال اکھیڑنے میں حرج نہیں جبکہ بقصد زینت ایسا نہ کرے۔ (38) ورنہ ہم یہی کہہ رہے ہیں کہ وہ زینت ہی کے ارادہ سے کرتے ہیں تاکہ یہ پیدی دوسروں پر ظاہر نہ ہو اور جو ان معلوم ہوں، کسی وجہ سے حدیث میں اس سے ممانعت آئی اور یہ بھی ظاہر ہے کہ دائرہ میں اس قسم کا تصرف زیادہ ممنوع ہوگا۔



(37) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان، ج ۵، ص ۳۵۸.

(38) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۷۱.

ختہ کا بیان

ختہ سنت ہے اور یہ شعار اسلام میں ہے کہ مسلم و غیر مسلم میں اس سے امتیاز ہوتا ہے اسی لیے عرف عام میں اس کو مسلمانی بھی کہتے ہیں۔

صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ حضرت ابراہیم خلیل اللہ علیہ الصلوٰۃ والسلام نے اپنا ختنہ کیا، اس وقت ان کی عمر شریف اسی ۸۰ برس کی تھی۔ (۱)

(۱) اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

امام بدر محمود عینی عمدۃ القاری شرح بخاری میں ختنہ کی نسبت نقل فرماتے ہیں:

انه شعائر الدین کالکلمۃ وبہ یتبذ المسلم من الکافر۔

ختہ کرنا کلمہ شریف کی طرح شعائر اسلام میں سے ہے اس سے مسلمان اور کافر میں باہم امتیاز ہوتا ہے۔ (ت)

(۲) عمدۃ القاری شرح البخاری کتاب اللباس باب قص الثارب اداره الطباعة المیریہ بیروت ۳۵/۲۲

جب ختنہ حادانکہ امر خفی کلمہ طیبہ کے شعائر دین اور وجہ امتیاز مومنین و کافرین قرار پایا یہاں تک کہ مسلمانان ہند نے اس کا نام بھی مسلمانی رکھ لیا۔ تو داڑھی کہ امر ظاہر ہے اور پہلی نظر اسی پر پڑتی ہے بدرجہ اولیٰ شعائر الاسلام و ما بہ الامتیاز کرام و لیام ہے اور بعض کفار کا اس میں شریک ہونا منافی شعائر اسلام نہیں جس طرح ختنہ کرنے میں یہود شریک مسلمین ہیں خود قرآن آیات کریمہ میں دیکھئے مورد نزول جانوران ہدی میں کہ حرم محترم کو قربانی کے لئے بھیجے جاتے ہیں انھیں شعائر دین الہی فرمایا حالانکہ تمام شرکین عرب اس فعل میں شریک تھے اور جب داڑھی شعائر دین ہے اور بے شک یونہی ہے تو بحکم قرآن اس کے ازالہ کو حلال ٹھہرا لیا حرام اور اس کی تعظیم تقویٰ قلوب کا کام۔

وجہ خاص۔۔۔ آیت ۸:

قال عز مجدة: و اوحینا الیک ان اتبع ملة ابراهيم حنیفا۔

میں نے تمھاری طرف وحی بھیجی کہ جناب ابراہیم علیہ السلام کے دین کو اپناؤ (یعنی دین ابراہیمی کی پیروی کرو) جو ہر قسم کے باطل سے الگ تھلگ رہنے والے تھے (ت) (۱) القرآن الکریم ۱۲/۱۲۳

آیت ۹:

قال سبحانه و تعالیٰ: قل بل ملة ابراهيم حنیفا۔

تم فرماؤ بلکہ ہم ابراہیم کا دین لیتے ہیں۔ (ت) (۲) القرآن الکریم ۲/۳۵

آیت ۱۰:

مسئلہ ۱: ختنہ کی مدت سات سال سے بارہ سال کی عمر تک ہے اور بعض علما نے یہ فرمایا کہ ولادت سے ساتویں دن کے بعد ختنہ کرنا جائز ہے۔ (2)

مسئلہ ۲: لڑکے کی ختنہ کرائی گئی مگر پوری کھال نہیں کٹی، اگر نصف سے زائد کٹ گئی ہے تو ختنہ ہو گئی باقی کو کاٹنا ضروری نہیں اور اگر نصف یا نصف سے زائد باقی رہ گئی تو نہیں ہوئی یعنی پھر سے ہونی چاہیے۔ (3)

مسئلہ ۳: بچہ پیدا ہی ایسا ہوا کہ ختنہ میں جو کھال کاٹی جاتی ہے وہ اس میں نہیں ہے تو ختنہ کی حاجت نہیں اور اگر کچھ کھال ہے جس کو کھینچا جاسکتا ہے مگر اسے سخت تکلیف ہوگی اور خشفہ (سپاری) ظاہر ہے تو حجاموں کو دکھایا جائے، اگر وہ کہہ دیں کہ نہیں ہو سکتی تو چھوڑ دیا جائے، بچہ کو خواہ مخواہ تکلیف نہ دی جائے۔ (4)

مسئلہ ۴: سنا جاتا ہے کہ جس بچہ میں پیدائشی ختنہ کی کھال نہیں ہوتی، اس کے باپ وغیرہ اولیا اس رسم کی ادا کے لیے اعزہ اقربا کو بلاتے ہیں اور ختنہ کے قائم مقام پان کی گلوری کاٹی جاتی ہے گویا اس سے ختنہ کی رسم ادا کی گئی۔

قال جلع الاؤك (اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا کہ جس کی بڑی بڑی نعمتیں ہیں۔ ت):

ومن يرغب عن ملة ابراهيم الا من سلفه نفسه ۲۔ (۳ القرآن الکریم ۲/۱۳۰)

اور ملت ابراہیمی سے کوئی بے رغبتی کر سکتا ہے سوا اس کے جس کو اس کے نفس نے بہت قوف بنا ڈالا ہو۔ (ت)

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۶، ص ۳۳۹ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(2) صحیح البخاری، کتاب أحادیث الانبیاء، باب (واخذ الله ابراهيم خلیلاً...) الخ، الحدیث: ۳۳۵۶، ج ۲، ص ۴۲۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ جب حضرت ابراہیم اسی ۸۰ سال کے ہوئے تب حکم الہی پہنچا کہ اے ابراہیم ختنہ کر دو، آپ نے اپنا ختنہ خود کر لیا اور ہوا غلط طریقہ سے تو آپ سخت زخمی ہو گئے، اس کے متعلق رب تعالیٰ فرماتا ہے: "وَإِذْ يُثْقَلُ بِهِ زَبْرُهُ وَنُنَبِّئُكَ أَنَّكَ مُبْرَكٌ"۔ خیال رہے کہ چند ہی ختنہ شدہ پیدا ہوئے جن میں ہمارے حضور صلی اللہ علیہ وسلم بھی ہیں، آج جو جوان یا یوز حاسلمان ہو وہ یا تو اپنا ختنہ خود کرے یا کسی ختنہ جاننے والی عورت سے نکاح کرے جو اس کی بیوی بننے کے بعد اس کا ختنہ کرے، نائی سے ختنہ نہیں کر سکتا کیونکہ بالغ مرد کا ستر کوئی نہیں دیکھ سکتا۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ ختنہ کرنا سنت ابراہیمی ہے آپ صی سے یہ رسم جاری ہوئی۔

۲۔ قدم ق کے فتح دال کے پیش سے ہشام میں ایک بستی ہے اور قدم دال کے شد سے تیشہ (بسولہ) بڑھیوں کا مشہور ہتھیار ہے۔ آپ نے مقام قدم میں اسی اوزار سے اپنا ختنہ خود کر لیا رب تعالیٰ کے حکم پر فورا عمل کیا یہ ہے اطاعت حکم۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۷، ص ۵۳۵)

(3) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکرامیہ، الباب التاسع عشر فی الختان، ج ۵، ص ۳۵۷۔

(4) المرجع السابق

یہ ایک لغو حرکت ہے جس کا کچھ محصل و فائدہ نہیں۔

مسئلہ ۵: بوڑھا آدمی مشرف باسلام ہوا جس میں ختنہ کرانے کی طاقت نہیں تو ختنہ کرانے کی حاجت نہیں۔ بالغ شخص مشرف باسلام ہوا، اگر وہ خود ہی اپنی مسلمانی کر سکتا ہے تو اپنے ہاتھ سے کر لے ورنہ نہیں، ہاں اگر ممکن ہو کہ کوئی عورت جو ختنہ کرنا جانتی ہو، اس سے نکاح کرے، تو نکاح کر کے اس سے ختنہ کرا لے۔ (5)

مسئلہ ۶: ختنہ ہو چکی ہے مگر وہ کھال پھر بڑھ گئی اور حشفہ کو چھپا لیا تو دوبارہ ختنہ کی جائے اور اتنی زیادہ نہ بڑھی ہو تو نہیں۔ (6)

(5) المرجع السابق

(6) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیہ، الباب التاسع عشر فی الختان، ج ۵، ص ۳۵۷:

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں: اگر ختنہ کی طاقت رکھتا ہو تو ضرور کیا جائے۔ حدیث میں ہے کہ ایک صاحب خدمت اقدس حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میں حاضر ہو کر مشرف باسلام ہوئے حضور پر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

القی عنک شعر الکفر ثم اختتن. رواہ الامام احمد و ابو داؤد عن عثیم بن کلیب الحضرمی الجہنی عن ابیہ عن جدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ.

زہ نہ کفر کے بال اتار پھر اپنا ختنہ کر (اس کو امام احمد اور امام ابو داؤد نے عثیم بن کلیب حضری جہنی سے اس نے اپنے باپ سے اور اس نے اپنے دادا سے روایت کی ہے۔ ت) (۱) سنن ابی داؤد کتاب الطہارۃ باب الرجل یسلم فیہ الغسل آفتاب عالم پریس لاہور ۱/ ۵۲)

(مسند احمد بن حنبل حدیث ابی کلیب رضی اللہ تعالیٰ عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۳/ ۴۱۵)

ہاں اگر خود کر سکتا ہو تو آپ اپنے ہاتھ سے کر لے یا کوئی عورت جو اس کام کو کر سکتی ہو تو اس سے نکاح کر لیا جائے وہ ختنہ کر دے، اس کے بعد چاہے تو اسے چھوڑ دے یا کوئی کنیز شرعی واقف ہو تو وہ خریدی جائے۔ اور اگر یہ تینوں صورتیں نہ ہو سکیں تو حجام ختنہ کر دے (ع) کہ ایسی ضرورت کے لئے ستر دیکھنا مکنا منع نہیں۔

ع: فتاویٰ افریقہ بھی یہ مسئلہ دیکھیں۔

در مختار میں ہے:

ینظر الطیب الی موضع مرضہا بقدر الضرورة فاذا ضرورات تتقدر بقدرها وکلما نظر قابلة وختان الـ

بوقت ضرورت بقدر ضرورت طیب جائے مرض (خواہ وہ جائے پردہ ہو) کو دیکھ سکتا ہے۔ اور قدر ضرورت محض اندازے سے ہوگی۔ اسی

طرح دایہ در ختنہ کرنے والے کا معاملہ ہے۔ (ت) (۱) در مختار کتاب الحظر والاباحہ باب النظر والمس مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۴۲)

رد مختار میں ہے:

مسئلہ ۷: ختنہ کرانا باپ کا کام ہے وہ نہ ہو تو اس کا وصی، اس کے بعد دادا پھر اس کے وصی کا مرتبہ ہے۔ ماموں

أولوه و تختان كذا هزم به في الهداية والخانية وغيرهما لان الختان سنة للرجال من جملة الفطرة لا يمكن تركها ٢٢٤ ملغصا.

مصنف کا ارشاد ہے دشمن اسی طرح ہدایہ اور خانیہ اور دیگر کتب میں اس پر یقین ظاہر کیا گیا ہے کیونکہ مردوں کے لئے ختمہ سنت ہے اور ان فطری کاموں میں سے ہے کہ جس کا چھوڑنا مناسب نہیں (ملخصاً) (ت)

(۲) ردالمحتار کتاب المحظر والایات باب المحظر والس دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/ ۲۳۷)

در مختار میں ہے:

وقيل في عتات الكبير اذا امكنه ان يختن نفسه فعل والا لم يفعل الا ان يمكنه النكاح او شراء الجارية و
الظاهر في الكبير انه يختن ٣

بڑی عمر کے آدمی کے غتے کے بارے میں کہا گیا ہے کہ اگر وہ خود اپنا غتہ کر سکے تو خود کمرے ورنہ کیا ہی نہ جائے، ہاں اگر اس کے لئے نکاح کرنا یا لونڈی خریدنا ممکن ہو تو ان سے غتہ کرائے اور ظاہر یہ ہے کہ بالغ آدمی کا بھی غتہ کیا جائے۔ (ت)

(۳) در مختار کتاب الخطر والا با حقه باب الاستبراء مطبع محبتی (دہلی ۲ / ۲۴۴)

رد المحتار میں ہے:

الختان مطلق يشمل ختان الكبير و الصغير هكذا اطلقه في النهاية كما قدمناه واقرة الشراح والظاهر ترجيعه ولذا عبر هنا عن التفصيل بـ ^{٢٤} قيل

ختمہ کرنا مطلق بلا قید ذکر کیا ہے لہذا یہ بڑے اور چھوٹے دونوں کو شامل جیسا کہ ہم نے پہلے بیان کیا ہے اور شارحین نے اس کو برقرار رکھا ہے لہذا بظاہر یہی رائج ہے اس لئے یہاں لفظ قیل سے تفصیل کی تعبیر فرمائی گئی۔ (ت)

(۳) رد المحتار کتاب الحظر والاباحه باب الاستبراء دار حیات اثر ایش العربی بیروت ۵/ ۲۳۵)

ہندو یہ نہیں ہے:

ذكر الكرخي في الجامع الصغير ويختنه الحمامي كذا في الفتاوى العتابية

۱۱۔ مکرخی نے جامع صغیر میں فرمایا کہ بالغ آدمی کا حق نہ حمام والا کرے۔ یونہی فتاویٰ عتابیہ میں مذکور ہے۔ (ت)

(۱) فتاویٰ ہندو کتاب النکاحیۃ الباب التاسع نورانی کتب خانہ پشاور ۵/ ۳۵۷

خدا مرے میں ہے:

الشيخ الضعيف اذا اسلم ولا يطيق الختن ان قال اهل البصر لا يطيق يترك الخ. والله تعالى اعلم.

(۲) خلاصۃ الفتاویٰ الفصل الثانی مکتبہ حبیبہ کوئٹہ ۴/ ۳۴۰) ←

اور چچا یا ان کے وحی کا یہ کام نہیں، ہاں اگر بچہ ان کی تربیت و عیال میں ہو تو کر سکتے ہیں۔ (7)

مسئلہ ۸: عورتوں کے کان چھدوانے میں حرج نہیں اور لڑکیوں کے کان چھدوانے میں بھی حرج نہیں، اس لیے کہ زمانہ رسالت میں کان چھداتے تھے اور اس پر انکار نہیں ہوا۔ (8) بلکہ کان چھدوانے کا سلسلہ اب تک برابر جاری ہے، صرف بعض لوگوں نے نصرانی عورتوں کی تقلید (یعنی پیروی) میں موقوف کر دیا (چھوڑ دیا) جن کا اعتبار نہیں۔

مسئلہ ۹: انسان کو خفی کرنا حرام ہے، اسی طرح بیچوا کرنا بھی۔ گھوڑے کو خفی کرنے میں اختلاف ہے صحیح یہ ہے کہ جائز ہے۔ دوسرے جانوروں کے خفی کرنے میں اگر فائدہ ہو مثلاً اس کا گوشت اچھا ہوگا یا خفی نہ کرنے میں شرارت کریگا، لوگوں کو ایذا پہنچائے گا، انھیں مصالح کی بنا پر بکرے اور بیل وغیرہ کو خفی کیا جاتا ہے یہ جائز ہے اور اگر منفعت یا دفع ضرر دونوں باتیں نہ ہوں تو خفی کرنا حرام ہے۔ (9)

بہت بوڑھا شخص اگر اسلام قبول کرے اور بوجہ ضعف و کمزوری ختنہ نہ کر سکے یا نہ کر سکے تو چند اہل بصیرت حضرات سے رائے لی جائے اگر وہ کہیں کہ واقعی یہ شخص ختنہ کی طاقت نہیں رکھتا تو اسے بلا ختنہ ہی رہنے دیا جائے اور اس کا ختنہ نہ کیا جائے الخ۔ اور اللہ تعالیٰ سب کچھ جانتا ہے۔ (ت) (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۲، ص ۵۹۳، ۵۹۵، رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(7) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان، ج ۵، ص ۳۵۷۔

(8) المرجع السابق۔

(9) المرجع السابق۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

عورتوں کو ختنہ یا بلاق کے لئے ناک چھیدنا جائز ہے جس طرح بالوں، بالیوں، کان کے گہنوں کے لئے کان چھیدنا،

فی الدر المنختار لا بأس بثقب اذن البنت استحساناً ملتقطاً وهل يجوز في الانف لحدارة ملخصاً قال العلامة الطحطاوی قلت وان كان مما يتزين النساء به كما هو في بعض البلاد فهو فيها كثقب القرط وقال العلامة السندی المحدث قد نص الشافعية على جواز ازالة نقلهما العلامة الشامي ۲۔ واقرأ قول: ولا شك ان ثقب الاذن كان شائعاً في زمن النبي صلى الله تعالى عليه وسلم وقد اطلع صلى الله تعالى عليه وسلم ولم ينكره ثم لم يكن الا ايلاماً للزينة فكذا هذا بحكم المساواة فثبت جواز ازالة النص المشترك في العلم بها المجتهدون وغيرهم كما تقرر في مقررہ۔

در مختار میں ہے کہ لڑکی کے کان چھیدنے میں بطور استحسان کوئی مضائقہ نہیں کیا ناک چھیدنا بھی جائز ہے۔ میں نے اس کو نہیں دیکھا، لیکن علامہ طحطاوی نے فرمایا کہ میں کہتا ہوں کہ اگر یہ کام عورتوں کی زیبائش میں شامل ہے جیسا کہ بعض شہروں میں رواج ہے تو پھر یہ بالیوں کے لئے کان چھیدنے کی طرح کا عمل ہے۔ اور علامہ سندھی مدنی نے فرمایا شوافع نے اس کے جائز ہونے کی تصریح کی ہے۔ ان دونوں سے

مسئلہ ۱۰: جس غلام کو خصی کیا گیا ہو اس سے خدمت لینا ممنوع ہے، جیسا کہ امرا و سلاطین کے یہاں اس قسم کے لوگوں سے خدمت لی جاتی ہے جن کو خواجہ سرا کہتے ہیں، ان سے خدمت لینے میں یہ خرابی ہوتی ہے کہ دوسرے لوگ اس کی وجہ سے خصی کرنے کی جرأت کرتے اور اس حرام فعل کا ارتکاب کرتے ہیں اور اگر ایسے غلام سے کام ہی نہ لیا جائے تو خصی کرنے کا سلسلہ ہی منقطع ہو جائے گا۔ (10)

مسئلہ ۱۱: گھوڑی کو گدھے سے گابھن کرنا جس سے خچر پیدا ہوتا ہے اس میں حرج نہیں۔ حدیث صحیح میں ہے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی سواری کا جانور بغلہ بیضا تھا اور اگر یہ فعل ناجائز ہوتا تو حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) ایسے جانور کو اپنی سواری میں نہ رکھتے۔ (11)



باتوں کو علامہ شامی نے نقل کرنے کے بعد برقرار رکھا ہے۔ میں کہتا ہوں اس میں کچھ شک نہیں کہ کان چھیدنا حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے عہد مبارک میں متعارف اور مشہور تھا اور حضور پاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اس پر اطلاع پائی مگر منعت نہیں فرمائی، یہ دیکھ پہنچانا صرف زیب و زینت کے لئے ہوگا، اور اس طرح یہ بھی ہے کیونکہ دونوں کا حکم مساوی ہے۔ پس اس کا جائز ہونا دلالت نص کی بنیاد پر ثابت ہو گیا اس علم سے جس میں مجتہد وغیرہ مجتہد مشترک ہیں جیسا کہ یہ بات اپنے محل میں ثابت ہو چکی ہے۔ (ت)

(۱) درمختار کتاب الحظر والاباحہ فصل فی البیع مطبع مجبائی دہلی ۲/۲۵۲ (۲) حاشیہ الطحاوی علی الدر المختار کتاب الحظر والاباحہ فصل فی البیع دار المعرفۃ بیروت ۳/۲۰۹ (رد المختار کتاب الحظر والاباحہ فصل فی البیع دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/۲۷۰)

اور وہ صرف ایک امر مباح ہے فرض واجب سنت اصلاً نہیں ہاں جو مباح بہ نیت محمودہ کیا جائے شرعاً محمود ہو جاتا ہے جیسے مسی لگانی کہ عورت کو مباح ہے اور اگر شوہر کے لئے سنگار کی نیت سے لگائے تو مستحب کہ یہ نیت شرعاً محمود ہے۔ اور جب کہ یہ امر زیور ہائے گوشت کے لئے کان چھیدنے سے کہ خاص زمانہ اقدس حضور پر نور سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میں رائج تھا اور حضور پر نور صلوات اللہ وسلامہ علیہ نے جائز مقرر رکھا بحکم دلالت ثابت تو اس کے لئے اثر مانا، المسلمون (جس کو مسلمان اچھا کہیں تو وہ اللہ تعالیٰ کے نزدیک اچھا ہوتا ہے۔ ت) کی طرف رجوع کی حاجت نہیں فان الثابت بدلالة النص کالثابت بالنص (کیونکہ جو دلالت نص سے ثابت ہو وہ اسی طرح ہے جیسے نص سے ثابت ہے۔ ت) (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۳۸۲، ۳۸۳ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(10) الھدیۃ، کتاب النکاحیۃ، مسائل متفرقہ، ج ۲، ص ۳۸۰۔

والفتاویٰ الھدیۃ، کتاب النکاحیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان، ج ۵، ص ۳۵۷۔

(11) الھدیۃ، کتاب النکاحیۃ، مسائل متفرقہ، ج ۲، ص ۳۸۰۔

زینت کا بیان

احادیث

حدیث ۱: صحیح بخاری و مسلم میں حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی، کہتی ہیں: حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو میں نہایت عمدہ خوشبو لگاتی تھی، یہاں تک کہ اس کی چمک حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کے سرمہ مبارک اور داڑھی میں پاتی تھی۔ (1)

حدیث ۲: صحیح مسلم میں نافع سے مروی، کہتے ہیں کہ ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کبھی خالص عود (اگر) کی دھونی لیتے یعنی اس کے ساتھ کسی دوسری چیز کی آمیزش نہیں کرتے اور کبھی عود کے ساتھ کافور ملا کر دھونی لیتے اور یہ کہتے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بھی اسی طرح دھونی لیا کرتے تھے۔ (2)

(1) صحیح بخاری، کتاب اللباس، باب الطیب فی الرأس واللیحۃ، الحدیث: ۵۹۲۳، ج ۴، ص ۸۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اطیب کے دو معنی ہو سکتے ہیں: خوشبو تیار کرتی تھی یا خوشبو لگاتی تھی۔ حضور سرکار صلی اللہ علیہ وسلم کو خوشبو بہت ہی پسند تھی اس لیے ازواج مطہرات خصوصاً ام المؤمنین عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا حضور انور کے لیے خوشبو تیار کیا کرتی تھیں حتیٰ کہ احرام کھولتے وقت بھی خوشبو تیار کی گئی تھی۔

۲۔ یعنی حضور صلی اللہ علیہ وسلم سرمہ مبارک اور داڑھی شریف میں خوشبو لگاتے تھے اور وہ خوشبو اس قدر زیادہ ہوتی تھی کہ بالوں میں اس کی چمک دیکھی جاتی تھی، یہ چمک خوشبو کا رنگ نہ تھا چمک تھی، چمک تو پانی کی بھی محسوس ہو جاتی ہے لہذا یہ حدیث اس کے خلاف نہیں کہ مردوں کی خوشبو بغیر رنگ والی چاہیے کہ وہاں رنگ سے مراد زینت والا رنگ ہے اس کی ممانعت ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۷۸)

(صحیح مسلم، کتاب الاغظاء من الادب وغیرہ، باب کراۃ قول الانسان... إلخ، الحدیث: ۲۱۰۰-۲۲۵۴)، ص ۱۲۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ استعمار وہ خوشبو لینا جو جمرہ یعنی آگ کے انگاروں پر رکھ کر حاصل کی جاوے یعنی بخور یا دھونی اسی لیے انگریزی کو جمرہ کہتے ہیں یہ جمرہ سے ہے نہ جمار سے، جمار سے جو استعمار آتا ہے اس کے معنی ہوتے ہیں ڈھیلے سے استعمار کرنا، اسی سے ہے جمار جن کی رمی حج میں کی جاتی ہے۔ لوبان مشہور خوشبو ہے جو پہلے بہت مروج تھی اب اگر بیوں کی وجہ سے اس کا رواج کم ہو گیا۔

حدیث ۳: ابو داؤد نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے پانی سے
قشر کی خوشبو تھی، جس کو استعمال فرمایا کرتے تھے۔ (3)

حدیث ۴: شرح سنہ میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نہایت سے
میں تیل ڈالتے اور داڑھی میں کٹکھا کرتے۔ (4)

حدیث ۵: ابو داؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے
فرمایا: جس کے بال ہوں ان کا اکرام کرے۔ (5) یعنی ان کو دھوئے، تیل لگائے، گھسیا کرے۔

حدیث ۶: امام مالک نے ابو قتادہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں میرے سر پر پودے ہوتے تھے۔

۲۔ یعنی کبھی تو خالص لوہان سے دھوئی لیتے کبھی لوہان کے ساتھ کافور بھی شامل فرما لیتے تھے دونوں کی مائے دھوئی ہوتے تھے۔

۳۔ یعنی حضور صلی اللہ علیہ وسلم کبھی صرف لوہان سے اور کبھی لوہان و کافور کے مجموعہ سے دھوئی لیا کرتے تھے میں بھی اس سنت پر عمل کرتا
ہوں۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے بطور عادت کریمہ جو کام کیے وہ سنت زائدہ کہلاتے ہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۲، ص ۲۷۹)

(3) سنن ابی داؤد، کتاب الترجل، باب فی استحباب الطیب، الحدیث: ۴۱۶۲، ج ۳، ص ۱۰۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

سکہ سین کے پیش کاف کے شد سے عرب کی ایک مشہور خوشبو ہے جس میں بہت خوشبوئیں شامل کی جاتی ہیں عربیہاں مراد وہ ذاتی یہ ہے
جس میں یہ خوشبو رکھی جاوے اس لیے منہا ارشاد ہوا جس میں من ابتدا یہ ہے۔ (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۲، ص ۲۷۹)

(4) شرح السنہ، کتاب اللباس، باب ترجیل الشعر... إلخ، الحدیث: ۴۰۵۷، ج ۶، ص ۲۰۱، ۲۰۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

حضرت انس سے روایت ہے کہ رات کو حضور کے سر ہانے سواک اور کنگھی رکھی جاتی تھی جب شب اٹھتے تو یہ دونوں چیزیں استعمال
فرماتے، حضرت عائشہ صدیقہ فرماتی ہیں کہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم رات میں سواک و کنگھی نہ چھوڑتے تھے: پیشاب کا برتن، آئینہ، سر
دانی، سواک، قینچی، ہرہ کی سلائی۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۲۸۸)

(5) سنن ابی داؤد، کتاب الترجل، باب فی اصلاح الشعر، الحدیث: ۴۱۶۳، ج ۳، ص ۱۰۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جس نے سر کے بال رکھے ہوں وہ انہیں ہمیشہ پراگندہ نہ رکھے بلکہ کبھی کبھی ان میں تیل لگائے کنگھی کرے مگر وہ کبھی نہیں لہتا یہ
حدیث گزشتہ احادیث کے خلاف نہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۲۹۳)

میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے عرض کی، ان کو کنگھا کیا کروں؟ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا: ہاں اور ان کا اکرام کرو، لہذا ابوقتادہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کے فرمانے کی وجہ سے کبھی دن میں دو مرتبہ تیل لگایا کرتے۔ (6)

حدیث ۷: ترمذی و ابو داؤد و نسائی نے عبد اللہ بن مغفل رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے روز روز سنگھا کرنے سے منع فرمایا۔ (7) (یہ بھی تنزیہی ہے اور مقصد یہ ہے کہ مرد کو بناؤ سنگھار میں مشغول نہ رہنا چاہیے)

حدیث ۸: امام مالک نے عطاء بن یسار سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مسجد میں تشریف فرما

(6) الموطأ، كتاب الشعر، باب إصلاح الشعر، الحديث: ١٨١٨، ج ٢، ص ٣٣٥.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ جسمہ وہ بال ہیں جو کندھے تک ہوں اور کان کے درمیان ہوں۔ سر کے بالوں کی تین حدیں ہیں: دفرہ، جسمہ، لہ۔ کندھوں سے نیچے مرد کے بال نہ چاہئیں۔

۲۔ یعنی جو شخص اپنے سر پر بال رکھے تو انہیں پریشان نہ رکھے، بال بکیرے نہ رہے، بھوت بنا ہوا نہ رہے، سردھونا، قیل ڈانٹ، سنگٹھی کرنا یہ کام کرتا رہے، پھر اس مانگ پٹی میں اتنا بھی مشغول نہ ہو کہ روزہ نماز ہی بھول جاوے۔

۳۔ اگرچہ اتنا زیادہ مانگ پٹی کرنا بہتر نہیں مگر انہوں نے سمجھا کہ میرے لیے بہتر ہے کہ حضور اقدس نے فرمایا یا بالوں کی خدمت کرولہذا میرا اور حکم ہے دوسروں کا اور حکم جیسے حضرت انس کی والدہ نے جناب انس کے سر کے اگلے بال نہ ترشوائے خصوصیت کی بناء پر۔ (اشعۃ الملمعات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۲۳)

(٦) مسنن الترمذی، کتاب اللباس، باب ما جاء فی النهی عن الترجل الا لعنبا، الحدیث: ١٤٦٢، ج ٣، ص ٢٩٣.

حکیم الامت کے مدنی پھول

لاست کے مدی چوں

اب یہ حکم مرد کے لیے سر کے بالوں میں کنگھی کرنے کے متعلق ہے یعنی جس مرد کے سر پر بال ہوں وہ روزانہ ان میں تیل و کنگھی نہ کرے کہ اسی میں لگا رہے بلکہ کبھی کرے کبھی نہ کرے، ایک دن کرے ایک دن نہ کرے۔ خواجہ حسن بھری فرماتے ہیں کہ ہفتہ میں ایک دن کرے۔ غبغبین کے کسرہ سے ب کے شد سے، اس کے معنی ہیں اونٹ کو ایک دن پانی پلانا ایک دن نانہ کرنا تجارت کو بھی غب کہا جاتا ہے۔ اس مہابعت کا مقصد یہ ہے کہ انسان ظاہری آرائش میں مشغول ہو کر رب کو نہ بھول جائے اس حکم سے عورتیں مستثنیٰ ہیں وہ چاہیں تو روزانہ ہانگ چوٹی کریں، یوں ہی اگر مرد ڈاڑھی میں روزانہ کنگھی کرے تو مضائقہ نہیں دیکھو مرقات۔ اشعۃ اللمعات نے فرمایا کہ وضو کے بعد ڈاڑھی میں کنگھی کرنا فقیری کو دور کرتا ہے، امام غزالی نے احیاء العلوم میں فرمایا کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم روز ڈاڑھی میں دو بار کنگھی کرتے تھے۔ (شعبہ) (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲، ص ۲۹۱)

تھے۔ ایک شخص آیا جس کے سر اور ڈاڑھی کے بال بکھرے ہوئے تھے، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے اس کی طرف اشارہ کیا، گویا بالوں کے درست کرنے کا حکم دیتے ہیں۔ وہ شخص درست کر کے واپس آیا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا: کیا یہ اس سے بہتر نہیں ہے کہ کوئی شخص بالوں کو اس طرح بکھیر کر آتا ہے گویا وہ شیطان ہے۔ (8)

حدیث ۹: ترمذی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اشد پتھر کا سرمہ لگاؤ کہ وہ نگاہ کو جلا دیتا ہے اور پلک کے بال اگاتا ہے۔ اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کے یہاں سرمہ دانی تھی، جس سے ہر شب میں سرمہ لگاتے تھے تین سلاخیاں اس آنکھ میں اور تین اس میں۔ (9)

(8) الموطا، کتاب الشعر، باب اصلاح الشعر، الحدیث: ۱۸۱۹، ج ۲، ص ۳۳۵-۳۳۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کی کنیت ابو محمد ہے، ام المؤمنین میمونہ رضی اللہ عنہا کے آزاد کردہ غلام ہیں، مشہور تابعی ہیں، مدینہ منورہ میں قیام رہا، چوراسی سال عمر پائی، ۹۷ھ ستانویں ہجری میں اوقات، پائی مدینہ منورہ کے قبرستان جنت البقیع میں دفن ہوئے، اکثر روایات حضرت ابن عباس سے لیتے ہیں، یہ حدیث مرسل ہے۔

۲۔ اس طرح کہ نہ سر میں تل کنگھی نہ ڈاڑھی میں، دونوں کے بال بکھرے ہوئے تھے جس سے شکل بگڑ گئی تھی بری معلوم ہوتی تھی۔

۳۔ یعنی آپ نے زبان سے کچھ نہ فرمایا بلکہ ہاتھ سے اشارہ کیا کہ ان دونوں کو ٹھیک کرے حضور کا ہر عضو مبلغ ہے۔

۴۔ یعنی مجلس شریف سے باہر گیا وہاں درست کر کے پھر حاضر ہوا۔

۵۔ شیطان سے مراد مردود جن ہیں یعنی بھوت یہ اپنی بد شکل میں مشہور ہیں ان کی شکل ڈراؤنی ہوتی ہے جیسے فرشتے اچھی صورت سیرت میں

مشہور ہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۲۶)

(9) سنن الترمذی، کتاب اللباس، باب ما جاء فی الاکتال، الحدیث: ۱۷۶۳، ج ۳، ص ۲۹۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی ہمیشہ اشد سرمہ لگایا کرو۔ اشد الف اور میم کے کسر و ث کے سکون سے ایک خاص سرمہ کا نام ہے جسے اصغہانی سرمہ کہا جاتا ہے یہ ہلکے

سرخ رنگ کا سرمہ ہوتا ہے اس بارج کے موقع پر یہ سرمہ مجھے مدینہ منورہ اور مکہ معظمہ سے ملا۔ بعض شارحین کا قول ہے کہ عام سیاہ سرمہ کو ہی

اشد کہتے ہیں۔ بعض نے کہا کہ تہ کا نام اشد ہے، بعض نے کہا کہ جس سرمہ میں تھوڑا مشک حل کر لیا جاوے وہ اشد ہے مگر پہلا قول زیادہ قوی

ہے، عرب میں اب بھی اسی خاص لال سرمہ کو اشد کہا جاتا ہے۔

۲۔ یعنی اشد سرمہ آنکھوں کی روشنی زیادہ کرتا ہے، پلک کے بال دراز کرتا ہے اگر نہ ہوں تو اگاتا ہے۔ مرقاۃ میں ہے کہ یہ آنکھ کا پانی خشک

کرتا ہے، آنکھ کے زخم، جھے کرتا ہے، نگاہ قائم رکھتا ہے غرض کہ اس میں بہت فائدے ہیں مگر اس کے لیے جسے موافق آجادی بعض

حدیث ۱۰: ابو داؤد و نسائی نے کریمہ بنت ہمام سے روایت کی، کہتی ہیں: میں نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے منہدی لگانے کے متعلق پوچھا؟ انھوں نے فرمایا کہ اس میں کچھ حرج نہیں، لیکن میں خود منہدی لگانے کو ناپسند کرتی ہوں کیونکہ میرے حبیب صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو اس کی بو ناپسند تھی۔ (10)

لوگوں کو موافق نہیں آتا۔ غرضکہ طیب کی رائے سے اسے استعمال کرنا چاہیے۔

۳۔ اس طرح کہ پہلے داہنی آنکھ میں دو سلاخیاں پھر بائیں آنکھ میں تین پھر داہنی میں ایک اس طرح کہ ابتداء بھی داہنی سے ہوا انتہاء بھی داہنی پر، ہمیشہ رات کو سوتے وقت اس طرح سرمہ لگانا فقیری اور ضعف بھر کو دور کرتا ہے۔ بعض روایات میں ہے حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم رات کو سوتے وقت داہنی آنکھ میں تین سلاخیاں اور بائیں میں دو لگایا کرتے تھے ہو سکتا ہے کہ کبھی یہ عمل ہو کبھی وہ لہذا احادیث میں تعارض نہیں۔ یہاں زعم کا فاعل حضرت ابن عباس ہیں اور زعم بمعنی قول ہے نہ کہ بمعنی دہم، عربی میں بہت دفعہ زعم بمعنی قول استعمال ہوتا ہے۔ بعض شارحین نے کہا کہ زعم کا فاعل محمد ابن حمید ہیں جو امام ترمذی کے شیخ ہیں مگر پہلا احتمال قوی ہے۔

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۱۳)

(10) سنن ابی داؤد، کتاب الترجل، باب فی الخضاب للنساء، الحدیث: ۴۱۶۴، ج ۲، ص ۱۰۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ تابعیہ ہیں، آپ کے والد کا نام ابراہیم ابن محمد ابن ابراہیم ابن ہمام ہے۔ (مرقات)

۲۔ کہ عورتوں کو اس کا خضاب ہاتھ پاؤں اور سر میں لگانا کیسا ہے مگر غالب یہ ہے کہ یہاں سر میں منہدی لگانا مراد ہے تاکہ یہ حدیث اس حدیث کے مخلف نہ ہو جس میں عورتوں کو ہاتھ پاؤں میں منہدی لگانے کا حکم دیا گیا ہے لہذا حدیث واضح ہے (مرقات)

۳۔ شاید سائل نے حضرت ام المؤمنین سے پوچھا ہوگا کہ آپ منہدی کیوں نہیں لگاتیں تب آپ نے یہ جواب دیا کہ اس میرے فعل کی وجہ یہ ہے۔

۴۔ اس حدیث کی بنا پر شوافع کہتے ہیں کہ منہدی میں خوشبو نہیں لہذا بحالت احرام اس کا خضاب درست ہے کیونکہ حضور انور کو خوشبو پسند تھی اور منہدی کی بو پسند نہ تھی اگر منہدی میں بھی خوشبو ہوتی تو آپ کو پسند ہوتی، امام اعظم فرماتے ہیں کہ منہدی ہے تو خوشبو اس کا خضاب احرام میں جائز نہیں مگر حضور انور کو جنس خوشبو پسند تھی نہ کہ ہر فرد خوشبو یا بعض خوشبو عین زیادہ پسند تھیں بعض کم جیسے حضور انور کو گوشت پسند تھا مگر بعض جانوروں کے گوشت ناپسند تھے تو اس سے لازم یہ نہیں کہ وہ گوشت گوشت ہی نہیں۔ فقیر کہتا ہے کہ اس حدیث سے معلوم ہوتا ہے کہ حضور کی ازواج پاک کے ہاتھ پاؤں کی منہدی بھی بہتر نہ تھی کیونکہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی ازواج پاک سر میں تو منہدی لگاتی ہی نہ تھیں ان کے باں سہید تھے ہی نہیں ہاتھ پاؤں میں لگاتی تھیں اسے ناپسند فرمایا۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ حضور انور کے پردہ فرمانے کے بعد بھی ازواج پاک حضور کی ناپسند چیزیں استعمال نہ فرماتی تھیں، حضور حیات ہیں اپنے ازواج پاک کو بعد وفات ملاحظہ فرما رہے ہیں، ان کے حالات سے خوش ہوتے ہیں یہ ناپسندیدگی صرف ازواج پاک کے لیے ہے دوسری عورتوں کے لیے حرج نہیں۔

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۰۶)

حدیث ۱۱: ابو داؤد نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ ہند بنت عتبہ نے عرض کی، یا نبی اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) مجھے بیعت کر لیجیے۔ فرمایا: میں تجھے بیعت نہ کروں گا، جب تک تو اپنی ہتھیلیوں کو نہ بدل دے۔ (یعنی منہدی لگا کر ان کا رنگ نہ بدل لے) تیرے ہاتھ گویا درندہ کے ہاتھ معلوم ہو رہے ہیں۔ (۱۱) (یعنی عورتوں کو چاہیے کہ ہاتھوں کو رنگین کر لیا کریں)۔

حدیث ۱۲: ابو داؤد و نسائی نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہتی ہیں کہ ایک عورت کے ہاتھ میں کتاب تھی، اس نے پردہ کے پیچھے سے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی طرف اشارہ کیا یعنی حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو دینا چاہا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے اپنا ہاتھ کھینچ لیا اور یہ فرمایا کہ معلوم نہیں مرد کا ہاتھ ہے یا عورت کا ہاتھ ہے۔ اس نے کہا، عورت کا ہاتھ ہے۔ فرمایا کہ اگر عورت ہوتی تو ناخنوں کو منہدی سے رنگے ہوتی۔ (۱۲)

(۱۱) المرجع السابق، الحدیث: ۴۱۶۵، ج ۴، ص ۱۰۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ ہند بنت عتبہ ابن ربیعہ ہیں، ابوسفیان کی بیوی جناب امیر معاویہ کی والدہ، فتح مکہ کے دن ابوسفیان کے اسلام کے بعد آپ اسلام لائیں، حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے آپ کا نکاح قائم رکھا، بڑی عاقلہ فہیمہ تھیں، کبھی زنا کے قریب نہ گئیں، جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے بیعت کے وقت فرمایا کہ زنا نہ کرنا تو آپ بولیں کیا کوئی شریف عورت بھی زنا کر سکتی ہے۔ حضرت عمر کی خلافت میں عین ابوقحافہ کے وفات کے دن فوت ہوئیں حضرت عائشہ نے آپ سے روایات لیں رضی اللہ عنہا۔ (مرقات) عہد فاروقی میں غزوہ قادسیہ و یرموک میں بڑی مجاہدانہ شان سے شریک رہیں بڑی خدمت اسلام کی۔

۲۔ یہ بیعت علاوہ بیعت اسلام کے کوئی اور تھی کسی خاص معاہدہ پر بیعت اسلام فتح مکہ کے دن کی گئی تھی۔

۳۔ یعنی تمہارے ہاتھ مردوں کی طرح سفید ہیں ان میں منہدی سے رنگ کرو پھر بیعت کرو۔ اس سے معلوم ہوا کہ عورتوں کو مردوں کی طرح چٹے ہاتھ رکھنا مکروہ ہیں اور مردوں کو عورتوں کی طرح ہاتھ پاؤں میں منہدی لگانا مکروہ ہے حتیٰ کہ عورت کو چاندی کی انگوٹھی بہتر نہیں، اگر پہنے تو سے رنگ کر لے تاکہ مردوں کی مشابہت نہ رہے۔ (اشعۃ اللمعات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالحین، ج ۶، ص ۳۰۷)

(۱) المرجع السابق، الحدیث: ۴۱۶۶، ج ۴، ص ۱۰۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی ہنا ہاتھ شریف روک لیا اس کے ہاتھ سے خطبہ لیا اظہار ناراضی کے لیے حضور انور نے کسی اجنبی عورت کو ہاتھ نہ لگایا حتیٰ کہ ان کو زبان سے بیعت فرمایا۔

۲۔ یہ سوال و جواب بھی اظہار ناراضی کے لیے ہیں ورنہ حضور کو خبر تھی کہ یہ عورت کا ہاتھ ہے عورت کا ہاتھ چھپا نہیں رہتا پھر اس کی

حدیث ۱۳: ابو داؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے پاس ایک منخٹ حاضر لایا گیا، جس نے اپنے ہاتھ اور پاؤں منہدی سے رنگے تھے۔ ارشاد فرمایا: اس کا کیا حال ہے؟ (یعنی اس نے کیوں منہدی لگائی ہے) لوگوں نے عرض کی، یہ عورتوں سے تھپہ کرتا ہے۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے حکم فرمایا، اس کو شہر بدر کر دیا گیا، مدینہ سے نکال کر نقیع کو بھیج دیا گیا۔ (13)

آواز پھپھانی جاتی ہے۔

۳۔ معصوم ہوا کہ عورت منہدی وغیرہ سے اپنے ناخن رنگین کرے یہ بھی کافی ہے یا منہدی سے ہتھیلیاں رنگے یا صرف ناخن، آج کل ناخن پر پالش لگانے کا رواج ہے مگر پالش میں جسامت ہوتی ہے اس لیے اگر ناخنوں پر لگی ہو تو عورت کا وضو یا غسل نہ ہوگا کہ پالش کے نیچی پانی نہ پہنچے گا۔ غرضیکہ ایسی چیز لگائی جاوے جو صرف رنگ دے اس میں جسامت نہ ہو، ابھی جو حضرت عائشہ صدیقہ کی روایت میں گزرا کہ حضور انور کو منہدی پسند نہ تھی یہ اپنی ازواج پاک کے متعلق تھا کہ حضور انور کی ازواج مطہرات کے لیے منہدی بہتر نہ تھی عام عورتوں کے لیے منہدی بہتر ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۰۸)

(13) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب اھکم فی الخنکین، الحدیث: ۴۹۲۸، ج ۴، ص ۳۶۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول۔

۱۔ منخٹ کا بیان کتاب النکاح میں گزر چکا ہے کہ پیدائشی منخٹ ہونا فسق نہیں وہ تو قدرتی چیز ہے، ہاں یہ تکلف منخٹ بننا، اپنی آواز، لباس، وضع قطع عورتوں کی رکھنا فسق ہے۔

۲۔ عورتوں کی سی شکل بنانے کے لیے یہ حرکات کرتا تھا جیسا آج کل مجذوں میں دیکھا جاتا ہے۔ معلوم ہوتا ہے کہ یہ بیماری بڑی پرانی ہے۔

۳۔ نقیع مدینہ منورہ کے باہر ایک جنگل ہے جہاں اہل مدینہ کے جانور چرا کرتے تھے۔ اس منخٹ کو اس لیے نکال دیا تا کہ اہل مدینہ اس کی صحبت سے بچیں اور اسے عبرت ہو اور توبہ کرے اور پھر واپس آجائے، یہ مطلب نہیں کہ اسے اس حرکت سے منع نہیں فرمایا گیا یہ نکالنا عملی ممانعت ہے۔

۴۔ یعنی اس منخٹ کا ندریں پڑھنا اس کے مؤمن ہونے کی علامت ہے اور اس نے کوئی ایسا جرم کیا نہیں جس کی سزا قتل ہو جیسے زنا یا ظلمنا قتل لہذا اسے قتل نہیں کیا جاسکتا۔ اس فرمان عالی کا یہ مطلب نہیں کہ نمازی آدمی خواہ کیسا ہی جرم کرے اسے قتل نہیں کیا جاسکتا۔ خیال رہے کہ یہ منخٹ اگر منافق تھا تب تو کوئی اعتراض نہیں اور اگر مخلص مؤمن تھا تو اس نے یقیناً توبہ کر لی ہوگی توبہ کر کے مرا ہوگا کیونکہ اس صورت میں وہ صحابی ہے اور صحابہ تمام عادل ہیں کوئی فاسق نہیں یعنی کوئی صحابی گناہ پر قائم نہیں رہے ان کی عدالت کی گواہی قرآن کریم دے رہا ہے، دیکھو ہماری کتاب امیر معاویہ۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۲۲)

حدیث ۱۴: ترمذی نے سعید بن المسیب سے روایت کی، کہتے ہیں کہ اللہ (عزوجل) طیب ہے۔ طیب یعنی خوشبو کو دوست رکھتا ہے، ستھرا ہے ستھرائی کو دوست رکھتا ہے، کریم ہے کرم کو دوست رکھتا ہے، جواد ہے جود کو دوست رکھتا ہے۔ لہذا اپنے محن کو ستھرا رکھو، یہودیوں کے ساتھ مشابہت نہ کرو۔ (14)

حدیث ۱۵: صحیح مسلم میں عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس کے دل میں ذرہ برابر تکبر ہوگا، جنت میں نہیں جائے گا۔ ایک شخص نے عرض کی، کہ کسی کو یہ پسند ہوتا ہے کہ کپڑے اچھے ہوں، جوتے اچھے ہوں (یعنی یہ بات بھی تکبر ہے یا نہیں)؟ فرمایا: اللہ (عزوجل) جمیل ہے جمال کو دوست رکھتا ہے۔ تکبر نام ہے حق سے سرکشی کرنے اور لوگوں کو حقیر جاننے کا۔ (15)

(14) سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ما جاء فی النظافة، الحدیث: ۲۸۰۸، ج ۲، ص ۳۶۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کا نام سعید بن مسیب ہے، مشہور تابعی ہیں، خلافت فاروقی کے دوسرے سال میں پیدا ہوئے، آپ کی کنیت ابو محمد ہے، قرشی مخزومی مدنی ہیں، بڑے محدث، فقیہ، متقی، پرہیزگار تھے۔ حضرت کچول کہتے ہیں کہ میں طلب علم میں دنیا میں گھوما میں نے چالیس حج کے مگر سعید ابن مسیب سے بڑا عالم نہ پایا۔ ۹۳ تراویح بھری میں وفات پائی۔ (مرقات)

۲۔ ظاہری پاکی کو طہارت کہتے ہیں اور باطنی پاکی کو طیب اور ظاہری باطنی دونوں پاکوں کو نفاۃ کہا جاتا ہے یعنی اللہ تعالیٰ بندے کی ظاہری باطنی پاکی پسند فرماتا ہے بندے کو چاہیے کہ ہر طرح پاک رہے جسم، نفس، روح، لباس، بدن، اخلاق غرضکہ ہر چیز کو پاک رکھے صاف رکھے، اقوال، افعال، احوال عقائد سب درست رکھے اللہ تعالیٰ ایسی نظافت نصیب کرے۔

۳۔ کرم و سخاوت میں فرق ہے۔ کریم وہ جو غذا میں ہی سخاوت کرے، سخی وہ جو چیز میں سخاوت کرے جس انسان کے اچھے اخلاق ظاہر ہوں وہ کریم ہے۔ (مرقات)

۴۔ یعنی اپنے گھر تک صاف رکھو لباس، بدن وغیرہ کی صفائی تو بہت ہی ضروری ہے مگر بھی صاف رکھو ہاں کوڑا جالا وغیرہ جمع نہ ہونے دو۔

۵۔ کیونکہ یہود اپنے گھر کے محن صاف نہیں رکھتے، نیز یہود بہت گندے بہت بخیل بڑے خسیس بڑے ذلیل ہیں، عیسائی اگرچہ کافر ہیں مگر وہ یہود کی طرح گندے نہیں ان میں کچھ صفائی ہے اگرچہ ان کے بھی دانت میلے منہ بدبودار اور ناخن لمبے ہوتے ہیں ہر طرح کی صفائی تو اسلام نے ہی سکھائی ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۳۲۸)

(15) صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر و بیانہ، الحدیث: ۱۳۷۰۔ (۹۱)، ص ۶۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس کا مطلب ابھی عرض کیا گیا۔ خیال رہے کہ آگ میں کبر و غرور ہے خاک میں عجز و انکساری، دیکھ لو باغ کھیت خاک میں لگتے ہیں آگ میں نہیں لگتے، یہی ایمان و عرفان کا باغ خاک جیسے عاجز و منکسر دل میں لگتے ہیں آگ جیسے متکبر دل میں نہیں لگتے ہیں۔

حدیث ۱۶: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ یہود و نصاریٰ خضاب نہیں کرتے، تم ان کی مخالفت کرو۔ (16) یعنی خضاب کرو۔
 حدیث ۱۷: صحیح مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ فتح مکہ کے دن ابو قحافہ (حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے والد) لائے گئے اور ان کا سر اور داڑھی ٹھامہ (یہ ایک گھاس ہے) کی طرح سفید تھی۔ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اس کو کسی چیز سے بدن نہ دو (یعنی خضاب لگاؤ) اور سیاہی سے بچو۔ (17) یعنی سیاہ خضاب نہ لگانا۔

۲۔ سائل سمجھا کہ شاید اچھا لباس پہننا بھی ضرور میں داخل ہے کہ اس میں اپنی مالدار یا بڑائی کا اظہار ہے اس لیے اس نے یہ سوال کیا، نیز اکثر تکبرین اعلیٰ درجہ کا لباس پہنتے ہیں تو یہ مدگی لباس تکبرین کی علامت ہے بہر حال سوال بالکل درست ہے۔
 ۳۔ یعنی رب تعالیٰ ذات و صفات میں اچھا ہے، جمیل ہے مخلوق اس کی صفات کی مظہر ہے تو مسلمان کو چاہیے کہ اپنی عادات، صورت، لباس، اعمال اچھے رکھے تاکہ رب تعالیٰ کی صفت جمیل کا مظہر بنے، نیز اس لباس میں رب تعالیٰ کی نعمت کا اظہار ہے جو محبوب ہے، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "وَأَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا" اسے تکبر سے کوئی تعلق نہیں۔
 ۴۔ یعنی تکبر وہ ہے جو کسی معمولی انسان کی حق بات کو اس لیے جھٹلائے کہ یہ اس آدمی کے منہ سے نکلی ہے اور مساکین کو ذلیل سمجھے۔
 (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۲۹)

(16) صحیح البخاری، کتاب أحادیث الانبیاء، باب ما ذکر عن جبرائیل، الحدیث: ۳۴۶۲، ج ۲، ص ۴۶۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ حکم مجاہدین کے لیے ہے کہ وہ سفید بال لے کر جہاد میں نہ جائیں یا ان کے لیے جو سفید بالوں کی مخالفت میں مسلمان ہوں، دوسرے مسلمانوں کے لیے اختیار ہے کہ بال سفید رکھیں یا سیاہ کے علاوہ کوئی اور خضاب لگائیں اس کی اور توجہیں بھی ہیں۔ (مرقات وغیرہ)
 ۲۔ یعنی یہودی اپنے سر و داڑھی کے بال چٹے جیسے سفید رکھتے ہیں تم سرخ یا پیلے کر لیا کرو تاکہ ان کی مشابہت سے بچو۔ اس میں اشارۃً فرمایا گیا کہ مسلمان یہود کی مخالفت کے لیے داڑھیاں منڈوانے دیں بلکہ انہیں سرخ کر کے ان کی مخالفت کریں۔ یہاں مرقات نے فرمایا کہ جو سفید داڑھی والا کافر مسلمان ہو وہ ضرور خضاب کرے تاکہ کفر و اسلام کے رنگوں میں فرق ہو جائے مگر جو پرانا مسلمان ہو اس کے لیے سفید داڑھی رکھنا بھی درست ہے۔

۳۔ یہ حدیث احمد نے حضرت زبیر سے روایت کی، احمد نے حضرت انس سے یوں روایت کی بالوں کا سفید رنگ بدلو اور سیاہ خضاب سے بچو کیونکہ سیاہ خضاب کفار کا ہے۔ مشہور یہ ہے کہ سب سے پہلے سیاہ خضاب لگانے والا فرعون تھا۔ (مرقات)
 (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۹۸)

(17) صحیح مسلم، کتاب اللباس... الخ، باب استحباب خضاب الشیب بصفرة... الخ، الحدیث: ۸۰۔ (۲۱۰۲)، ص ۱۱۶۳۔

حدیث ۱۸: ابو داؤد و نسائی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ آخر زمانہ میں کچھ لوگ ہوں گے جو سیاہ خضاب کریں گے جیسے کبوتر کے پوٹے، وہ لوگ جنت کی خوشبو نہیں پائیں گے۔ (18)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ابوقحافہ کا نام عثمان ابن عامر ہے، قرشی ہیں، فتح مکہ کے دن اسلام لائے اور خلافت فاروقی تک زندہ رہے، ننانوے سال عمر پائی، ۳۷ھ چودہ میں وفات ہوئی، حضرت ابوبکر صدیق کے والد ہیں، آپ سے کچھ احادیث حضرت ابوبکر صدیق اور اسماء بنت ابوبکر نے روایت کیں۔ (مرقات) جب آپ کو حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت اقدس میں لایا گیا تاکہ ایمان قبول کر لیں تو حضور انور نے فرمایا کہ تم لوگوں نے ابوقحافہ کو یہاں آنے کی تکلیف کیوں دی ہم خود ان کے پاس جا کر انہیں مسلمان کرتے۔ (اشعہ)

۲۔ ثغامہ ایک گھاس کا نام ہے جو بہت سفید ہوتی ہے برف کی طرح، فارسی میں اسے درمنہ سفید کہتے ہیں یعنی حضرت ابوقحافہ کے سر و ڈاڑھی کے بال ایسے سفید تھے جیسے ثغامہ گھاس، حضرت ابوبکر صدیق انہیں اٹھا کر حضور کی خدمت میں لائے تھے۔ (مرقات)

۳۔ یعنی ان سر اور ڈاڑھی میں سیاہی کے سوا کسی رنگ کا خضاب کردہ چنانچہ مہندی سے سرخ خضاب کر دیا گیا۔ حق یہ ہے کہ سیاہ خضاب مرد و عورت دونوں کے لیے ممنوع ہے۔ حضرت عثمان غنی و امام حسن و حسین نے سیاہ خضاب لگایا ہے مگر زینت کے لیے نہیں بلکہ غزوات میں کفار پر رعب طاری کرنے کے لیے کہ وہ لوگ آپ کو بوڑھا نہ سمجھ سکیں اور آپ پر دلیر نہ ہو جائیں، اب بھی بحالت جہاد غازی کو سیاہ خضاب درست ہے۔ (مرقات) حضور انور نے داڑھی شریف میں کبھی خضاب نہ کیا، حضور کے بال خضاب کی حد تک سفید نہ ہوئے صرف چند بال شریف سفید تھے، چند بار سر شریف میں مہندی لگائی تھی در دوسری وجہ سے۔ (مرقات) حضرت ابوبکر صدیق نے مہندی اور دوسرے کا خضاب کیا ہے مگر دوسرے اتنا ہوتا تھا جس سے سیاہ رنگت نہ ہوتی تھی بلکہ پختہ سرخ رنگ ہوتا تھا، اسی طرح اور صحابہ سے بھی خضاب منقول ہے۔ (اشعہ) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۶۷)

(18) سنن ابی داؤد، کتاب الترجیل، باب ما جاء فی خضاب السواد، الحدیث: ۴۲۱۴، ج ۴، ص ۱۱۸۔

وسنن النسائی، کتاب الایۃ من السنن، باب النہی عن الخضاب بالسواد، الحدیث: ۵۰۸۵، ص ۸۱۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اپنے سر اور ڈاڑھی کے بال خالص سیاہ کیا کریں گے جیسے کبوتروں کے پوٹے خالص سیاہ ہوتے ہیں۔ حواصل جمع ہے حوصلہ کی بمعنی معدہ یہاں سینہ مراد ہے بعض کبوتروں کے سینے سیاہ ہوتے ہیں۔

۲۔ حالانکہ جنت کی مہک پانچ سو سال کی راہ سے محسوس ہوتی ہے یعنی سیاہ خضاب کرنے والے جنت میں جانا تو کیا اس کے قریب بھی نہ پہنچیں گے یعنی اولاً بعد میں معافی ہو کر پہنچ جاویں گے تو دوسری بات ہے (مرقات) یا یہ مطلب ہے کہ میدان محشر میں جنت کی خوشبو آتی ہوگی جو مسلمانوں کو محسوس ہوگی اس مہک سے مست ہو کر محشر کی شدت بھول جائیں گے مگر یہ سیاہ خضاب کرنے والے محشر میں یہ —

حدیث ۱۹: ترمذی و ابو داؤد و نسائی نے ابو ذر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: سب سے اچھی چیز جس سے سفید بالوں کا رنگ بدلا جائے، منہدی یا کتم ہے۔ (19) یعنی منہدی لگانی جائے یا کتم۔

حدیث ۲۰: ابو داؤد نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے سامنے ایک شخص گزرا جس نے منہدی کا خضاب کیا تھا، ارشاد فرمایا: یہ خوب اچھا ہے۔ پھر ایک دوسرا شخص گزرا جس نے منہدی اور کتم کا خضاب کیا تھا، فرمایا: یہ اس سے بھی اچھا ہے۔ پھر ایک تیسرا شخص گزرا جس نے زرد خضاب کیا تھا، فرمایا: یہ ان سب سے اچھا ہے۔ (20)

خوشبو محسوس نہ کر سکیں گے اور وہاں کی تکلیف محسوس کریں گے جیسے حوض کوثر کی ایک نہر محشر میں ہوگی جس سے مؤمن پانی پیتے رہیں گے منافق روک دیئے جائیں گے۔ (اشعۃ المصابیح) اس حدیث سے صراحۃً معلوم ہوا کہ سیاہ خضاب حرام ہے خواہ سر میں لگائے یا ڈاڑھی میں مرد لگائے یا عورت اس سے معذوری کی حالت مستثنیٰ ہے، علاج کے لیے یا غزوہ کے لیے سیاہ خضاب جائز ہے۔ (مرقات) بعض لوگ مطلقاً سیاہ خضاب جائز کہتے ہیں، بعض لوگ عورتوں کے لیے جائز کہتے ہیں، بعض مردوں کے سر کے لیے جائز کہتے ہیں، ڈاڑھی کے لیے ممنوع مانتے ہیں، بعض لوگ اسے مکروہ تنزیہی کہتے ہیں یہ کل ضعیف ہیں۔ صحیح وہی ہے کہ سیاہ خضاب مطلقاً مکروہ تحریمی ہے۔ مرد و عورت، سر ڈاڑھی سب اسی ممانعت میں داخل ہیں۔ (مرقات) ہاتھ پاؤں میں منہدی وغیرہ سے خضاب عورتوں کو جائز مردوں کے لیے ممنوع الا بالعدر۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۹۵)

(19) سنن اترمذی، کتاب السہاس، باب ماجاء فی الخضاب، الحدیث: ۱۷۵۹، ج ۳، ص ۲۹۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس حدیث کی بنا پر بعض حضرات نے سیاہ خضاب جائز کہا، وہ کہتے ہیں کہ منہدی اور دوسرے سیاہ رنگ دیتے ہیں اور ان کے ملا کر لگانے کی اجازت دی گئی ہے مگر یہ دلیل بہت ہی ضعیف ہے کیونکہ سیاہ خضاب کی صراحۃً ممانعت کی گئی جیسے کہ اتقوا السواد وغیرہ مگر سیاہ خضاب کی صراحۃً اجازت کہیں نہیں دی گئی ان جیسی احادیث سے سیاہ خضاب کی اجازت نہیں نکلتی اور تو یہاں منہدی و دوسرے ملاسنے کی اجازت ہے ہی نہیں، حدیث کے معنی یہ ہیں کہ بہترین رنگ سفیدی بدلنے کے لیے منہدی اور دوسرے ہے کہ کبھی منہدی سے رنگ کرے کبھی دوسرے سے، منہدی کا رنگ سرخ ہوتا ہے دوسرے کا رنگ بزمجیہ کہا جاتا ہے لہذا اسم ہے اور فعل ہے اور حرف ہے ایسے ہی یہ ہے اور اگر ملانا ہی مراد ہو تب بھی خیال رہے کہ اگر دوسرے منہدی کے ساتھ آدھوں آدھوں یا زیادہ ملایا جاوے تب سیاہ رنگ دیتا ہے اور اگر کم ملایا جاوے تو پختہ سرخ کرتا ہے سیاہ نہیں کرتا سرخ مائل بہ بزمی رنگ ہو جاتا ہے وہی یہاں مراد ہے، سیاہ خضاب کی سخت ممانعت احادیث میں وارد ہے، یہ حدیث ان احادیث سے متعارض نہیں اگر یہاں سیاہ رنگ مراد ہو تو احادیث میں تعارض ہوگا۔ (مرقات و اشعۃ المصابیح)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۹۲)

(20) سنن ابی داؤد، کتاب الترجیل، باب فی خضاب الصفرۃ، الحدیث: ۴۲۱۱، ج ۳، ص ۱۱۷۔

حدیث ۲۱: ابن النجار نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ سب سے پہلے منہدی اور کتم کا خضاب ابراہیم علیہ السلام نے کیا اور سب سے پہلے سیاہ خضاب فرعون نے کیا۔ (21)

حدیث ۲۲: طبرانی نے کبیر میں اور حاکم نے مستدرک میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ مومن کا خضاب زردی ہے اور مسلم کا خضاب سرخی ہے اور کافر کا خضاب سیاہی ہے۔ (22)

حدیث ۲۳: صحیح بخاری و مسلم میں عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اللہ (عزوجل) کی لعنت اس عورت پر جو بال ملائے یا دوسری سے بال ملوائے اور گودنے والی (23) اور گودوانے والی پر۔ (24)

حدیث ۲۴: صحیح بخاری و مسلم میں عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، انھوں نے فرمایا کہ اللہ (عزوجل) کی لعنت گودنے والیوں پر اور گودوانے والیوں پر اور بال نوچنے والیوں پر یعنی جو عورت نبھوں کے بال نوچ حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اسی طرح کہ مہندی میں تھوڑا سا دھواں تھا جس سے خضاب کا رنگ پختہ سرخ ہو گیا تھا۔ سیاہ کی حد کو نہ پہنچی تھا۔ (مرقات) لہذا اس سے سیاہ

خضاب کی حلت ثابت نہیں ہوئی، سیاہ خضاب کی حلت کی ایک حدیث بھی نہیں حرمت کی بہت احادیث ہیں۔

۲۔ معلوم ہوا کہ زرد خضاب حضور نے بہت پسند فرمایا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۹۷)

(21) الفردوس بما ثور الخطاب، الحدیث: ۷۴، ج ۱، ص ۵۳

(22) المستدرک، کتاب معرفة النجاسة، باب الصفرة خضاب المؤمن... الخ، الحدیث: ۶۲۹۶، ج ۴، ص ۶۷۵

(23) یعنی جسم میں سوئی وغیرہ چھید لگا کر اس میں سرمہ یا سبزہ یا نیل بھرنے والی۔

(24) صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب الوصل فی الشعر، الحدیث: ۵۹۳۷، ج ۴، ص ۸۳

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ان دونوں چیزوں کی شرح پہلے گزر گئی۔ واصلہ وہ عورت جو اپنے سر کے بالوں میں دوسری عورت کے بال ملا کر دراز کرے۔ مستوصلہ وہ

عورت جو دوسری کے سر میں یہ بال جوڑے یا جو اپنے سر کے بال کاٹ کر اسے دے ملانے کے لیے یہ دونوں کام حرام ہیں جن پر لعنت

فرمائی گئی۔ داشرہ وہ عورت جو سوئی وغیرہ کے ذریعہ اپنے اعضاء میں سرمہ یا نیل گودوائے جیسا کہ ہندو عورتیں بعض ہندو مرد کرتے

ہیں۔ مستوشمہ وہ جو دوسری عورت کے گودے دونوں پر لعنت فرمائی۔ حرام کام قائل و مفعول دونوں کی لعنت کا باعث ہوتا ہے۔ خیال رہے

کہ اگر بالوں میں دھاگہ لگا کر انہیں دراز کر لیا جاوے تو جائز ہے جسے موافق کہتے ہیں۔ (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۷۳)

کر ابرو کو خوبصورت بناتی ہے اس پر لعنت اور خوبصورتی کے لیے دانت ریتنے والیوں پر یعنی جو عورتیں دانتوں کو ریت کر خوبصورت بناتی ہیں اور اللہ (عزوجل) کی پیدا کی ہوئی چیز کو بدل ڈالتی ہیں۔ ایک عورت نے عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس حاضر ہو کر یہ کہا کہ مجھے خبر ملی ہے کہ آپ نے فلاں فلاں قسم کی عورتوں پر لعنت کی ہے، انھوں نے فرمایا: میں کیوں نہ لعنت کروں ان پر جن پر رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے لعنت کی اور اس پر جو کتاب اللہ میں (ملعون) ہے اس نے کہا میں نے کتاب اللہ پڑھی ہے مجھے تو اس میں یہ چیز نہیں ملی۔ فرمایا: تو نے (غور سے پڑھا ہوتا تو ضرور اس کو پایا ہوتا کیا تو نے یہ نہیں پڑھا:

(وَمَا اتَّكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا) (25)

یعنی رسول جو کچھ تمہیں دیں اسے لو اور جس چیز سے منع کر دیں اس سے باز آ جاؤ۔

اس عورت نے کہا، ہاں یہ پڑھا ہے۔ عبد اللہ بن مسعود نے فرمایا کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے اس سے منع فرمایا ہے۔ ایک روایت میں ہے کہ اس کے بعد اس عورت نے یہ کہا کہ ان میں کی بعض باتیں تو آپ کی بی بی میں بھی ہیں۔ عبد اللہ بن مسعود نے فرمایا اندر جا کر دیکھو وہ مکان میں گئی پھر آئی، تو آپ نے فرمایا کیا دیکھا؟ اس نے کہا کچھ نہیں دیکھا۔ عبد اللہ نے فرمایا اگر اس میں یہ بات ہوتی تو میرے ساتھ نہیں رہتی۔ یعنی ایسی عورت میرے گھر میں نہیں رہ سکتی ہے۔ (26)

(25) پ ۲۸، الحشر: ۷۔

(26) صحیح مسلم، کتاب اللباس، باب تحریم، فصل الوصلۃ والمستوصلۃ... إلخ، الحدیث: ۱۲۰۔ (۲۱۲۵)، ص ۱۷۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ لفظ بنا ہے نماص سے، نماص بال اکھڑنے کہ آکھ کو کہتے ہیں جسے پنجاب میں موچنا کہا جاتا ہے یہاں چہرے کا روگنا اکھڑنا مراد ہے یہ حرام ہے ورنہ اگر عورت کے ڈاڑھی یا مونچھیں نکل آ دیں تو انہیں ضرور اکھڑ دے۔ (مرقات)

۲۔ متفلیجات بنا ہے فلج سے، فلج اس کھڑکی یا کشادگی کو کہتے ہیں جو دو دانتوں کے درمیان ہوتی ہے، بعض عورتیں مشین کے ذریعہ اپنے دانت پتے کروا کر درمیان میں جھریاں کراتی ہیں اسے اپنے لیے حسن و خوبصورت تصور کرتی ہیں یہ حرام ہے، اس سے دانت بھی خراب ہو جاتے ہیں پھر ٹھنڈا پانی گرم چائے یا دودھ نہیں پی سکتیں دانتوں میں لگتا ہے۔ للحسن کا تعلق یا تو صرف متفلیجات سے ہے یا والشہات اور متفلیجات تینوں سے ہے یعنی جو عورتیں یہ تینوں کام خوبصورتی کے لیے کریں وہ لعنتی ہیں جو مجبور کسی

مرض کی وجہ سے کریں انہیں معافی ہے۔

۳۔ خیال رہے کہ تبدیلی خلق اللہ دو طرح کی ہے: ایک شرعاً جائز دوسری حرام۔ چنانچہ ختنہ کرنا، ناخن کٹوانا، مونچھیں ترشوانا، حجامت کرانا ان میں بھی تبدیلی خلق اللہ تو ہے مگر اس کا حکم ہے اور یہ مذکورہ چیزیں دانت پتلے کرنا وغیرہ تبدیلی خلق اللہ ہے مگر حرام، یہاں حرام تبدیلی سے

حدیث ۲۵: صحیح بخاری میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ نظر بد حق ہے یعنی نظر لگنا صحیح ہے ایسا ہوتا ہے اور گود نے سے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے منع فرمایا۔ (27)

مراد ہے یعنی چونکہ اس حرکت میں حرام تبدیلی ہے لہذا یہ ممنوع ہے۔ (اشعۃ اللمعات)

۴۔ یعنی کسی مسلمان پر لعنت جائز نہیں تو تم نے ان مسلمان عورتوں پر لعنت کیوں کی تم نے صحابی رسول ہو کر ایسی جرات کس بنا پر کی۔
۵۔ یعنی میں نے خود اپنی طرف سے ان پر لعنت نہیں کی بلکہ اللہ رسول نے لعنت کی ہے میں تو ان لعنتوں کا ناقل ہوں لعنت رسول تو میں نے خود سنی ہے لعنت اللہ قرآن مجید سے معلوم کی ہے لہذا میری یہ لعنت برحق ہے لہذا یہ حدیث مرفوع ہو گئی۔
۶۔ یعنی اس کے متعلق حدیث حدیث تو ہو گئی جو میں نے نہ سنی ہو آپ نے سنی ہو کہ آپ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس بہت زیادہ حاضر رہتے تھے مگر قرآن کریم تو مقرر و معین ہے میں اسے دن رات پڑھتی ہوں میں نے کسی آیت میں ان عورتوں اور ان پر لعنت کا ذکر نہ دیکھا میں اس میں آپ کو سچا کیسے مان لوں۔ لوہین سے مراد قرآن مجید کی جلد کے دو گتے ہیں جن کے چھ میں قرآن مجید ہوتا ہے مراد ہے سارا قرآن مجید۔

۷۔ مطلب یہ ہے کہ اگر تم قرآن مجید غور سے پڑھتیں سمجھ بوجھ کر تو تم کو اس میں یہ لعنت مل جاتی اور تم میری تصدیق کر دیتیں۔
۸۔ سبحان اللہ! کیسا ایمان افروز شاندار استنباط ہے اس آیت سے یہ ثابت فرمایا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی تمام منع فرمائی ہوئی چیزیں قرآن مجید کی ممانعت میں داخل ہیں اور حضور نے تو ان سے منع فرمایا ہے لہذا قرآن نے بھی نہیں منع فرمایا حضور کی لعنت خدا تعالیٰ کی لعنت ہے۔ (مرقات) لہذا حضور کی رحمت و کرم رب تعالیٰ کی رحمت ہے۔

۹۔ اس حدیث کو احمد، ترمذی، ابن ماجہ، ابوداؤد، نسائی نے بھی روایت کیا۔ (مرقات) اس فرمان عالی سے معلوم ہوا کہ حدیث کے احکام کو قرآن کی طرف نسبت کر سکتے ہیں کہ کتاب قرآن خاموش قرآن ہے حضور صلی اللہ علیہ وسلم بولتے ہوئے قرآن ہیں، لہذا کہہ سکتے ہیں کہ نماز کی تعداد و مقدار زکوٰۃ کی مقداریں وغیرہ سب کچھ قرآن میں ہے کیونکہ یہ حضور نے بتا دیے۔

(مرآۃ السانج شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۷۳)

(27) صحیح البخاری، کتاب الطب، باب العین حق، الحدیث: ۵۷۴۰، ج ۴، ص ۳۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی نظر بد کا اثر حق ہے اس سے مال بدن پر اثر پڑتا ہے باذن اللہ۔ جیسے اللہ تعالیٰ نے سانپ کے منہ میں، بچھو کے ڈنگ میں زہر رکھا ہے یوں ہی اس نے انسان کی نظر میں بھی اثر رکھا ہے جس سے انسان بیمار یا چیز ضائع ہو جاتی ہے، ان شاء اللہ اس کی تحقیق کتاب الطب و الرقی میں آوے گی۔ جادو، نظر وغیرہ سب برحق ہے۔ جب گالی کے لفظوں میں اثر ہے کہ اس سے دل مغموم ہو جاتا ہے تو جادو کے الفاظ میں بھی اثر ہو سکتا ہے یوں ہی دعاؤں و طیفیوں دم و رو میں شفاء کا اثر برحق ہے۔

حدیث ۲۶: سنن ابوداؤد میں ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے، انہوں نے کہا، بال ملانے والی اور ملوانے والی اور ابرو کے بال نوچنے والی اور نوچوانے والی اور گودنے والی اور گودوانے والی پر لعنت ہے، جبکہ بیماری سے یہ نہ کیا ہو۔ (28)

حدیث ۲۷: ابوداؤد نے روایت کی، کہ جس سال معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنے زمانہ خلافت میں حج کیا (مدینہ میں آئے) اور منبر پر چڑھ کر بالوں کا گچھا جو سپاہی کے ہاتھ میں تھا لے کر کہا اے اہل مدینہ تمہارے علماء کہاں ہیں؟ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے سنا ہے کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) اس سے منع فرماتے تھے یعنی چوٹی میں بال جوڑنے سے اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) یہ فرماتے تھے کہ بنی اسرائیل اسی وقت ہلاک ہوئے جب ان کی عورتوں نے یہ کرنا شروع کر دیا۔ (29)



۲۔ اہل عرب کا عقیدہ تھا کہ گودنے سے نظر نہیں لگتی اور لگی ہوئی نظر دفع ہو جاتی ہے اس لیے حضور انور نے اس سے منع فرمایا کہ یہ خلاف عقل اور عقیدہ باطل ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۲۷۵)

(28) سنن ابی داؤد، کتاب الترجیل، باب فی صلوۃ الشعر، الحدیث: ۴۱۷۰، ج ۴، ص ۱۰۶۔

(29) المربع السابق، الحدیث: ۴۱۶۷، ج ۴، ص ۱۰۵۔

مسائل فقہیہ

مسئلہ ۱: انسان کے بالوں کی چوٹی بنا کر عورت اپنے بالوں میں گوندھے یہ حرام ہے۔ حدیث میں اس پر لعنت آئی بلکہ اس پر بھی لعنت جس نے کسی دوسری عورت کے سر میں ایسی چوٹی گوندھی اور اگر وہ بال جس کی چوٹی بتائی گئی خود اسی عورت کے ہیں جس کے سر میں جوڑی گئی جب بھی ناجائز اور اگر ادن یا سیاہ تاگے کی چوٹی بنا کر لگائے تو اس کی ممانعت نہیں۔ سیاہ کپڑے کا موباف (1) بنانا جائز ہے اور کلاوہ میں تو اصلاً حرج نہیں کہ یہ بالکل ممتاز ہوتا ہے۔ اسی طرح گود نے والی اور گودوانے والی یا ریتی سے دانت ریت کر خوبصورت کرنے والی یا دوسری عورت کے دانت ریتنے والی یا موچنے (یعنی بال اکھاڑنے کا آلہ) سے ابرو کے بالوں کو نوچ کر خوبصورت بنانے والی اور جس نے دوسری کے بال نوچے ان سب پر حدیث میں لعنت آئی ہے۔ (2)

مسئلہ ۲: لڑکیوں کے کان ناک چھیدنا جائز ہے اور بعض لوگ لڑکوں کے بھی کان چھدواتے ہیں اور دُریا (3)

(1) بالوں میں دھاگہ لگا کر انہیں دراز کرنا موباف کہلاتا ہے۔

(2) الدر المختار، کتاب الخطر والاباحۃ، فصل فی الخطر والس، ج ۹، ص ۶۱۳۔

(3) یعنی کانوں کی نو میں پہننے کا چھوٹا ساز پور جس میں عام طور پر صرف ایک موتی ہوتا ہے۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

عورتوں کو نتھ یا بلاق کے لئے ناک چھیدنا جائز ہے جس طرح بالوں، بالیوں، کان کے گہنوں کے لئے کان چھیدنا،

فی الدر المختار لا بأس بثقب اذن البنت استحساناً ملتقطاً وهل يجوز في الانف لماراة المخلصا قال العلامة

الطحطاوى قلت وان كان مما يتزين النساء به كما هو في بعض البلاد فهو فيها كثقب القرط وقال العلامة

السندی المذنب قد نص الشافعيه على جوازها ونقلها العلامة الشامي ۲ واقرا قول: ولا شك ان ثقب الاذن

كان شائعاً في زمن النبي صلى الله تعالى عليه وسلم وقد اطلع صلى الله تعالى عليه وسلم ولم ينكره ثم لم يكن الا

ايلا ما للزينة فكذا هذا بحكم المساواة فثبت جوازها بدلالة النص المشترك في العلم بها المجتهدون

وغيرهم كما تقرر في مقررہ۔

در مختار میں ہے کہ لڑکی کے کان چھیدنے میں بطور استحسان کوئی مضائقہ نہیں کیا ناک چھیدنا بھی جائز ہے۔ میں نے اس کو نہیں دیکھا، لیکن

علامہ طحاوی نے فرمایا کہ میں کہتا ہوں کہ اگر یہ کام عورتوں کی زیبائش میں شامل ہے جیسا کہ بعض شہروں میں رواج ہے تو پھر یہ —

پہناتے ہیں یہ ناجائز ہے یعنی کان چھدوانا بھی ناجائز اور اسے زیور پہنانا بھی ناجائز۔ (4)

مسئلہ ۳: عورتوں کو ہاتھ پاؤں میں منہدی لگانا جائز ہے کہ یہ زینت کی چیز ہے، بلا ضرورت چھوٹے بچوں کے ہاتھ پاؤں میں منہدی لگانا نہ چاہیے۔ (5) لڑکیوں کے ہاتھ پاؤں میں لگا سکتے ہیں جس طرح ان کو زیور پہنا سکتے ہیں۔

ہالیوں کے لئے کان چھیدنے کی طرح کامل ہے۔ اور علامہ سندھی مدنی نے فرمایا شوافع نے اس کے جائز ہونے کی تصریح کی ہے۔ ان دونوں باتوں کو علامہ شامی نے نقل کرنے کے بعد برقرار رکھا ہے۔ میں کہتا ہوں اس میں کچھ شک نہیں کہ کان چھیدنا حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے عہد مبارک میں متعارف اور مشہور تھا اور حضور پاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اس پر اطلاع پائی مگر ممانعت نہیں فرمائی، یہ دیکھ کر پہچانا صرف زیب و زینت کے لئے ہوگا، اور اس طرح یہ بھی ہے کیونکہ دونوں کا حکم مساوی ہے۔ پس اس کا جائز ہونا دلالت نص کی بنیاد پر ثابت ہو گیا اس علم سے جس میں مجتہد وغیر مجتہد مشترک ہیں جیسا کہ یہ بات اپنے محل میں ثابت ہو چکی ہے۔ (ت)

(۱) رد المحتار کتاب الحظر والاباحہ فصل فی البیع مطبع مجتہبی دہلی ۲/ ۲۵۲ (۲) حاشیہ الطحاوی علی الدر المختار کتاب الحظر والاباحہ فصل فی البیع دار المعرفۃ بیروت ۳/ ۲۰۹ (رد المحتار کتاب الحظر والاباحہ فصل فی البیع دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/ ۲۷۰)

اور وہ صرف ایک امر مباح ہے فرض واجب سنت اصلاً نہیں ہاں جو مباح بہ نیت محمودہ کیا جائے شرعاً محمود ہو جاتا ہے جیسے کسی لگانی کہ عورت کو مباح ہے اور اگر شوہر کے لئے سنگار کی نیت سے لگائے تو مستحب کہ یہ نیت شرعاً محمود ہے۔ اور جب کہ یہ امر زیور ہائے گوش کے لئے کان چھیدنے سے کہ خاص زمانہ اقدس حضور پر نور سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میں رائج تھا اور حضور پر نور صلوات اللہ وسلامہ علیہ نے جائز مقرر رکھا بحکم دلالت ثابت تو اس کے لئے اثر امام المسلمون (جس کو مسلمان اچھا کہیں تو وہ اللہ تعالیٰ کے نزدیک اچھا ہوتا ہے۔ ت) کی طرف رجوع کی حاجت نہیں فان الثابت بدلالة النص کالاثبات بالنص۔ (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۸۳۳ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(4) رد المحتار کتاب الحظر والاباحہ فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۹۳۔

(5) الفتاویٰ الھندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الحشرون فی الزینۃ، ج ۵، ص ۵۹۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

مرد کو پتیلی یا ٹکڑے بلکہ صرف ناخنوں ہی میں منہدی لگانی حرام ہے کہ عورتوں سے تختہ ہے۔ شرع الاسلام و مرقاۃ شرح مشکوٰۃ میں ہے:

الحناء سنۃ للنساء ویکرہ لغيرهن من الرجال الا ان یکون لعذر لانه تشبه بهن ۲۔ اقول: والکراہۃ

تحریمیۃ للحديث المار لعن الله المتشبهین من الرجال بالنساء فصح التحريم ثم الاطلاق شمل

الاظفار اقول: وفيه نص الحديث المار لو كنت امرأة لغيرت اظفاري بالحناء ۱۔ ما ثنی العذر فاقول هذا اذا

لم یقم شیء مقامه ولا صلح ترکیبه مع شیء ینغی لونه واستعمل لا علی وجه تقع به الزینۃ (۲)۔ مرقاۃ الفاتح

شرح مشکوٰۃ کتاب اللباس حدیث ۳۳۲۸ المکتبۃ الحسینیۃ کوئٹہ ۸/ ۲۱۷ (شرع الاسلام فصل فی اللباس مکتبہ اسلامیہ کوئٹہ ص ۲۰۲-۳۰۱)

(۱) سنن ابی داؤد کتاب الترجل باب فی الخضاب للنساء ۲/ ۲۱۸ و مسند امام احمد بن حنبل عن عائشہ رضی اللہ عنہا ۶، ۲۶۲۔

مسئلہ ۴: عورتیں اپنی چوٹیوں میں ہمت (یعنی ٹیٹے یا کانچ کے دانے) اور چاندی سونے کے دانے لگا سکتی ہیں۔ (6)

مسئلہ ۵: پتھر کا سرمہ استعمال کرنے میں حرج نہیں اور سیاہ سرمہ یا کاجل بقصد زینت مرد کو لگانا مکروہ ہے اور زینت مقصود نہ ہو تو کراہت نہیں۔ (7)

مسئلہ ۶: مکان میں ذی روح کی تصویر لگانا جائز نہیں اور غیر ذی روح کی تصویر سے مکان آراستہ کرنا جائز ہے جیسا کہ طفرے اور کتبوں سے مکان سجانے کا رواج ہے۔ (8)

مسئلہ ۷: گرمی سے بچنے کے لیے خس یا جواسے کی ٹٹیاں (9) لگانا جائز ہے اور اگر تکبر کے طور پر ہو تو ناجائز ہے۔ (10)

مسئلہ ۸: یہ شخص سواری پر ہے اور اس کے ساتھ اور لوگ پیدل چل رہے ہیں اگر محض اپنی شان دکھانے اور تکبر کے لیے ایسا کرتا ہے تو منع ہے۔ (11) اور ضرورت سے ہو تو حرج نہیں مثلاً یہ بوڑھا یا کمزور ہے کہ چل نہ سکے گا یا ساتھ والے کسی طرح اسکے پیدل چلنے کو گوارا ہی نہیں کرتے، جیسا کہ بعض مرتبہ علما و مشائخ کے ساتھ دوسرے لوگ خود پیدل

مہندی لگانی عورتوں کے لئے سنت ہے لیکن مردوں کے لئے مکروہ ہے مگر جبکہ کوئی عذر ہو (تو پھر اس کے استعمال کرنے کی گنجائش ہے) اس کی وجہ یہ ہے کہ مردوں کے مہندی استعمال کرنے میں عورتوں سے مشابہت ہوگی اہ اقول: (میں کہتا ہوں) کہ یہ کراہت تحریمی ہے گزشتہ حدیث پاک کی وجہ سے کہ جس میں یہ آیا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے ان مردوں پر لعنت فرمائی جو عورتوں سے مشابہت اختیار کریں، لہذا تحریم یعنی کراہت تحریمی صحیح ہوئی۔ اور اطلاق (الفاظ حدیث) ناخنوں کو بھی شامل ہے۔ اقول: (میں کہتا ہوں) اس میں بھی گزشتہ حدیث کی صراحت موجود ہے (حدیث: اگر کوئی عورت ہوتی تو ضرور اپنے سفید ناخنوں کو مہندی لگا کر تبدیل کر دیتی) رہا عذر کا استثناء کرنا، تو اس کے متعلق میری صوابدید یہ ہے کہ (عذر اس وقت تسلیم کیا جائے گا کہ) جب مہندی کے قائم مقام کوئی دوسری چیز نہ ہو، نیز مہندی کسی ایسی دوسری چیز کے ساتھ مخلوط نہ ہو سکے جو اس کے رنگ کو زائل کر دے۔ اور مہندی استعمال میں بھی محض ضرورت کی بنا پر بطور دوا اور علاج ہو، زیب و زینت اور آرائش مقصود نہ ہو۔ (ت) (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴، ص ۵۴۳ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(6) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الحشر ون فی الزینۃ، ج ۵، ص ۵۹۔

(7) المرجع السابق.

(8) المرجع السابق.

(9) یعنی مخصوص گھاس کا پردہ یا قات دروازوں وغیرہ پر لگا کر اس پر پانی چھڑکتے ہیں، تاکہ ٹھنڈک حاصل ہو۔

(10) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الحشر ون فی الزینۃ، ج ۵، ص ۵۹۔

(11) المرجع السابق، ص ۶۰۔

چلتے ہیں اور ان کو پیدل چلنے نہیں دیتے، اس میں کراہت نہیں جبکہ اپنے دل کو قابو میں رکھیں اور تکبر نہ آنے دیں اور محض ان لوگوں کی دلجوئی منظور ہو۔

مسئلہ ۹: مرد کو داڑھی اور سر وغیرہ کے بالوں میں خضاب لگانا جائز بلکہ مستحب ہے مگر سیاہ خضاب لگانا منع ہے ہاں مجاہد کو سیاہ خضاب بھی جائز ہے کہ دشمن کی نظر میں اس کی وجہ سے ہیبت بیٹھے گی۔ (12)



نام رکھنے کا بیان

اللہ عزوجل فرماتا ہے:

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسَىٰ أَن يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِّنْ نِّسَاءٍ عَسَىٰ أَن يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ وَلَا تَلْبِزُوا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ بِئْسَ الْأَسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ وَمَن لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿١١٠﴾ (1)

اے ایمان والو! ایک گروہ دوسرے گروہ سے مسخرا پن نہ کرے، ہو سکتا ہے کہ یہ اون سے بہتر ہوں اور نہ عورتیں عورتوں سے مسخرا پن کریں، ہو سکتا ہے کہ یہ ان سے بہتر ہوں اور اپنے کو عیب نہ لگاؤ اور برے لقبوں سے نہ پکارو، ایمان کے بعد فسوق برا نام ہے اور جو توبہ نہ کریں وہ ظالم ہیں۔



(1) پ ۱۲۶، الحجرت ۱۱۰

اس آیت کے تحت مفسر شہیر مولا سید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ اس آیت کا نزول کئی واقعوں میں ہوا پہلا واقعہ یہ ہے کہ ثابت ابن قیس بن عتاس کو ثقلی شامت تھا جب وہ سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی مجلس شریف میں حاضر ہوتے تو صحابہ انہیں آگے بٹھاتے اور ان کے لئے جگہ خالی کر دیتے تاکہ وہ حضور کے قریب حاضر رہ کر کلام مبارک سن سکیں، ایک روز انہیں حاضری میں دیر ہو گئی اور مجلس شریف خوب بھر گئی، اس وقت ثابت آئے اور قاعدہ یہ تھا کہ جو شخص ایسے وقت آتا اور مجلس میں جگہ نہ پاتا تو جہاں ہوتا کھڑا رہتا، ثابت آئے تو وہ رسول کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے قریب بیٹھنے کے لئے لوگوں کو ہٹاتے ہوئے یہ کہتے چلے کہ جگہ دو جگہ یہاں تک کہ حضور کے قریب پہنچ گئے اور انکے اور حضور کے درمیان میں صرف ایک شخص رہ گیا، انہوں نے اس سے بھی کہا کہ جگہ دو، اس نے کہا تمہیں جگہ مل گئی، بیٹھ جاؤ، ثابت غصہ میں آکر اس کے پیچھے بیٹھ گئے اور جب دن خوب روشن ہوا تو ثابت نے اس کا جسم دبا کر کہا کہ کون؟ اس نے کہا میں فلاں شخص ہوں، ثابت نے اس کی ماں کا نام لے کر کہا فلاں کا لڑکا اس پر اس شخص نے شرم سے سر جھٹکایا اور اس زمانہ میں ایسا کلمہ عار دلانے کے لئے کہا جاتا تھا، اس پر یہ آیت نازل ہوئی۔ دوسرا واقعہ ضحاک نے بیان کیا کہ یہ آیت بنی تمیم کے حق میں نازل ہوئی جو حضرت عمار و حنابل و صہیب و سلمان و سالم وغیرہ غریب صحابہ کی غربت دیکھ کر ان کے ساتھ تمسخر کرتے تھے، ان کے حق میں یہ آیت نازل ہوئی اور فرمایا گیا کہ مرد مردوں سے نہ نہیں یعنی مال دار غریبوں کی فہمی نہ بنائیں، نہ عالی نسب غیر ذی نسب کی، اور نہ تندرست اپاہج کی، نہ بیٹا اس کی جس کی آنکھ میں عیب ہو۔

احادیث

- حدیث ۱: بیہقی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اولاد کا والد پر یہ حق ہے کہ اس کا اچھا نام رکھے اور اچھا ادب سکھائے۔ (1)
- حدیث ۲: اصحاب سنن اربعہ نے عبد اللہ بن جرادر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اپنے بھائیوں کو ان کے اچھے ناموں سے پکارو برے القاب سے نہ پکارو۔ (2)
- حدیث ۳: صحیح مسلم میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: تمہارے ناموں میں اللہ تعالیٰ کے نزدیک زیادہ پیارے نام عبد اللہ و عبد الرحمن ہیں۔ (3)
- حدیث ۴: امام احمد و ابوداؤد نے ابوالدرداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ قیامت کے دن تم کو تمہارے نام اور تمہارے باپوں کے نام سے بلایا جائے گا، لہذا اچھے نام رکھو۔ (4)
- حدیث ۵: ابوداؤد نے ابی وہب جشمی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے

(1) شعب الایمان، باب فی حقوق الاولاد و الاولاد علیہم، الحدیث: ۸۶، ۵۸، ج ۶، ص ۴۰۰.

و کنز العمال، کتاب النکاح، رقم: ۴۵۱۸۴، ج ۱۶، ص ۱۷۳.

(2) کنز العمال، کتاب النکاح، رقم: ۴۵۲۱۱، ج ۱۶، ص ۱۷۵.

(3) صحیح مسلم، کتاب الادب، باب لنهی عن التکسب بآبی القاسم... الخ، الحدیث: ۴، (۲۱۳۲)، ص ۱۱۷۸.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اس یہ نام اس لیے پیارے ہیں کہ ان میں اپنی عبدیت کو رب کی طرف نسبت کیا گیا ہے تو اس میں دونوں چیزوں کا اظہار ہے اپنی عبدیت، اللہ کی ربوبیت یعنی انبیاء کرام کے ناموں کے بعد یہ نام رب کو بہت پسند ہیں۔ سب سے بہتر یہ ہے کہ کسی نبی کے نام پر نام رکھے، اس کے بعد یہ بہتر ہے کہ یہ نام رکھے۔ یہاں عبد اللہ اور عبد الرحمن بطور تمثیل فرمائے گئے اسماء امیہ میں سے کسی کی طرف عبدیت کی طرف نسبت کرے بہتر ہے۔ خیال رہے کہ ملائکہ کے نام پر نام رکھنا ممنوع ہے لہذا کسی چیز کا جبریل یا میکائیل نام نہ رکھو جیسا کہ حدیث میں ہے۔ (مرقات) چنانچہ بخاری نے اپنی تاریخ میں ایک حدیث نقل کی کہ نبیوں کے نام پر نام رکھو فرشتوں کے نام پر نام نہ رکھو۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۸۹)

(4) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی تغیر الاسماء، الحدیث: ۴۹۳۸، ج ۴، ص ۷۷.

فرمایا: انبیاء علیہم السلام کے نام پر نام رکھو اور اللہ (عزوجل) کے نزدیک ناموں میں زیادہ پیارے نام عبد اللہ و عبد الرحمن ہیں اور سچے نام حارث و ہام ہیں اور حرب و مزہ برے نام ہیں۔ (5)

حدیث ۶: دیلمی نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اچھوں کے نام پر نام رکھو اور اپنی حاجتیں اچھے چہرہ والوں سے طلب کرو۔ (6)

حدیث ۷: صحیح بخاری و مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: میرے نام پر نام رکھو اور میری کنیت کے ساتھ کنیت نہ کرو، کیونکہ (میری کنیت ابوالقاسم محض اس وجہ نہیں کہ میرے صاحب زادہ کا نام قاسم تھا بلکہ) میں قاسم بنایا گیا ہوں کہ تمہارے مابین تقسیم کرتا ہوں۔ (7)

(5) المرجع السابق، الحدیث: ۴۹۵۰، ج ۴، ص ۷۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حضرات انبیاء کرام کے نام پر نام رکھو فرشتوں کے نام پر نام نہ رکھو کسی کا نام جبریل یا عزرائیل نہ رکھو یوں ہی جاہلیت کے نام ممنوع ہیں جیسے کلب، حمار، عبد الشمس وغیرہ کہ یہ نام ممنوع ہیں ان کا اثر بھی برا ہوتا ہے۔ (مرقات)

۲۔ یوں ہی عبد الکریم عبد الرحیم وغیرہ۔ خیال رہے کہ ان ناموں کی محبوبیت انبیاء کرام کے ناموں کے مقابلہ میں نہیں بلکہ بے معنی ناموں کے مقابل ہے۔

۳۔ کیونکہ حارث کے معنی ہیں کماؤ، حرث کہتے ہیں کمائی کو۔ حمام کے معنی ہیں قصد و ارادہ کرنے والا، ہم کہتے ہیں ارادہ کو۔ کوئی شخص کمائی یا ارادہ سے خالی نہیں ہوتا لہذا یہ نام بہت سچے ہیں نام مطابق کام کے ہیں۔

۴۔ کیونکہ حرب کے معنی ہیں جنگ و خونریزی، مرہ کے معنی ہیں جھگڑا لویا کڑی طبیعت کا آدمی، مرہ شیطان کا نام بھی ہے۔

(مرآۃ السانج شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۱۸)

(6) المسند الفردوس، الحدیث: ۲۳۲۹، ج ۲، ص ۵۸۔

(7) صحیح البخاری، فرض الخمس، باب قوله تعالیٰ (فان الله يمشي ولرسول) یعنی للرسول قسم ذلک، الحدیث: ۳۱۱۴، ج ۲، ص ۳۳۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اللہ کی ہر نعمت تقسیم میرے ہاتھ سے ہوتی ہے دنیاوی نعمت ہو یا اخروی اس لیے حضرات صحابہ نے بارش، جنت، آنکھیں، دولت، اولاد حضور سے مانگی ہیں جب جنت ہی حضور سے مانگ لی تو دیگر چیزیں بدرجہ اولیٰ حضور سے مانگی جاسکتی ہیں اس کے لیے کہ ہماری کتاب سلطنت مصطفیٰ اور جاء الحق کا مطالعہ کرو۔ دوسری روایت میں ہے اللہ المعطی وانا القاسم نہ اللہ کی عطا مقید ہے نہ حضور کی تقسیم رب فرماتا ہے: "أَغْنَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِنْ قُضُلِهِ"۔ بعض علماء فرماتے ہیں کہ یہ ممانعت حضور کی حیات شریف میں تھی بعد وفات ہر طرح اجازت ہے خواہ حضور انور کا نام رکھے یا آپ کی کنیت یا دونوں جمع کر دے کہ نام رکھے محمد کنیت رکھے ابوالقاسم، اس کے

حدیث ۸: صحیح بخاری و مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بازار میں تھے، ایک شخص نے ابوالقاسم کہہ کر پکارا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) اس کی طرف متوجہ ہوئے۔ اس نے کہا، میں نے اس شخص کو پکارا، ارشاد فرمایا: میرے نام کے ساتھ نام رکھو اور میری کنیت کے ساتھ کنیت نہ کرو۔ (8)

حدیث ۹: ابوداؤد نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں: میں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) اگر حضور کے بعد میرے لڑا پیدا ہو تو آپ کے نام پر اس کا نام رکھوں اور آپ کی کنیت پر اس کی کنیت کروں؟ فرمایا: ہاں۔ (9)

متعلق اور بہت سے قول ہیں یہ ہی قول قوی ہے جو ہم نے عرض کیا کہ یہ حکم حیات شریف میں تھا۔ (مرقات و اشعہ) حضرت علیؑ کے بعد اپنے بیٹے کا نام محمد کنیت ابوالقاسم رکھی جنہیں محمد ابن حنفیہ کہا جاتا ہے اور انہوں نے حضور سے پہلے پوچھا تھا کہ کیا میں آپ کے بعد اپنے کسی بیٹے کا نام محمد کنیت ابوالقاسم رکھ سکتا ہوں فرمایا تھا ہاں۔ خیال رہے کہ اگر قاسم قوی ہو تقسیم بھی قوی ہوتی ہے، ڈول، چرسہ، رہٹ، ٹیوب ویل، دریا بادل سب ہی پانی تقسیم کرتے ہیں مگر ان کی تقسیموں میں جو فرق ہے وہ معلوم ہے۔ سارے نبی اللہ کی نعمتیں تقسیم کرتے تھے حضور بھی تقسیم کرتے ہیں حضور کی تقسیم بہت قوی ہے، تمام امتوں میں وضو تھا مگر اعضاء کا چکنا حضور کی امت کے وضو سے ہے، پانچ نمازوں کا ثواب پچاس ہے، کیوں، اس لیے کہ یہ حضور کی تقسیم سے ملی ہیں اب پڑھو اللہ المعطی وانا القاسم۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۸۸)

(8) صحیح البخاری، کتاب الصیوع، باب ما ذکر فی الاسواق، الحدیث: ۲۱۲۰، ج ۲، ص ۲۴.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ کسی شخص کا نام ابوالقاسم تھا اس نے اسے پکارا۔

۲۔ مقصد یہ ہے کہ اگر ہزاروں کے نام محمد ہوں تو دھوکہ نہ ہوگا کیونکہ حضور کو صرف نام سے پکارنا حرام ہے، اب جو حضور کو پکارے گا وہ یا رسول اللہ کہے گا یا محمد کہے گا، اگر یا محمد کہہ کر پکارے گا تو کسی اور محمد کو پکارے گا نہ کہ حضور کو، اللہ تعالیٰ نے ہمارے حضور کو نام لے کر نہ پکارا یا ایہا النبی یا ایہا الرسول سے پکارا لہذا نام کے اشتراک میں شبہ و دھوکہ نہ ہوگا کنیت کے اشتراک میں ضرور دھوکا ہوگا۔ (مرقات) لہذا حدیث واضح ہے۔ پس حضور انور کو یا ابوالقاسم کہہ کر پکار سکتے ہیں کہ یہ حضور کا لقب ہے جیسے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نبی اللہ مگر یا محمد کہہ کر نہیں پکار سکتے کہ محمد حضور کا نام شریف ہے، دیکھو مرقات حضور انور کے بڑے صاحبزادے کا نام قاسم تھا اس نام سے آپ کی کنیت ابوالقاسم ہوئی۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۸۷)

(9) سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الرخصۃ فی الجمع، الحدیث: ۴۹۶۷، ج ۴، ص ۳۸۰.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ محمد بن علی بن ابی طالب ہیں، کنیت ابوالقاسم ہے، آپ کی نوالدہ خولہ بنت جعفر حنفیہ ہیں یعنی بنی حنفیہ قبیلہ کی ہیں،

حدیث ۱۰: ابن عساکر ابو امامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: جس بچے کو لڑکا پیدا ہوا اور وہ میری محبت اور میرے نام سے برکت حاصل کرنے کے لیے اس کا نام محمد رکھے (10)،

خلافت صدیقی میں گرفتار ہو کر جنگ یمامہ سے آئیں ۸۱ھ اکیاسی ہجری میں آپ کی وفات ہوئی چھپن سال عمر پائی، مدینہ منورہ میں دفن ہوئے، خود تابی ہیں اور آپ کے بیٹے ابراہیم تبع تابعی انہی نے آپ سے کچھ احادیث روایت کیں۔

۲۔ یعنی حضرت علی مرتضیٰ نے حضور انور سے پوچھا کہ اگر آپ کی وفات کے بعد فاطمہ زہرا یا کسی اور بیوی سے میرا لڑکا پیدا ہو تو کیا اس کا نام محمد، کنیت ابو القاسم رکھ دوں فرمایا رکھ دو۔ اس حدیث سے بھی معلوم ہوا کہ حضور کی وفات کے بعد دونوں کا اجتماع جائز ہے۔ بعض لوگوں نے کہا کہ یہ حضرت علی کی خصوصیت ہے مگر یہ درست نہیں اگر خصوصیت ہوتی تو حضور کی حیات شریف میں بھی آپ ابہ پر عمل فرما لیتے حضرت حسن و حسین میں دونوں کا اجتماع فرمادیے امام حسن کی کنیت ابو محمد ہے اور حضرت حسین کی کنیت ابو عبد اللہ ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۰۹)

(10) اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن قادری رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

اور محمد واحد ناموں کے فضائل میں تو احادیث کثیرہ عظیمہ جلیلہ وارد ہیں: حدیث (۱) صحیحین و مسند احمد و جامع ترمذی و سنن ابن ماجہ میں حضرت انس (۲) صحیحین و ابن ماجہ میں حضرت جابر (۳) معجم کبیر طبرانی میں حضرت عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: سمواہا سمی ولا تکنواہا کنیتی ۲۔ میرے نام پر نام رکھو اور میری کنیت نہ رکھو۔

(۲) صحیح ابوی کتاب الادب باب من سٹی باسماء الانبیاء قدسی کتب خانہ کراچی ۲/ ۹۱۵) (صحیح مسلم کتاب الادب باب الہی عن انھن بابی القاسم قدسی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۰۶) (جامع الترمذی ابواب الادب باب ماجاء فی کرہیۃ الجمع الخ امین کمپنی دہلی ۲/ ۱۰۷) (سنن ابن ماجہ ابواب الادب باب الجمع بین اسم النبی و کنیہ الخ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۷۳) (مسند احمد بن حنبل من انس الکتب الاسلامی بیروت ۳/ ۱۷۰) (المعجم الکبیر حدیث ۱۲۵۱۳ المکتبۃ الفیصلیہ بیروت ۲/ ۷۳) (کنز العمال بحوالہ طب من ابن عباس حدیث ۳۵۲۱۶ موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۶/ ۴۲۱)

حدیث (۴) ابن عساکر و حافظ حسین بن احمد عبد اللہ بن کبیر حضرت ابو امامہ رضی اللہ عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں:

من ولد له مولود فسماه محمد احب الی وتبرکأ باسمی کان ہو و مولودہ فی الجنۃ ۳۔

جس کے لڑکا پیدا ہوا اور وہ میری محبت اور میرے نام پاک سے تبرک کے لئے اس کا نام محمد رکھے وہ اور اس کا لڑکا دونوں بہشت میں جائیں۔ (کنز العمال بحوالہ الرافعی عن ابی امامہ حدیث ۳۵۲۲۳ موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۶/ ۴۲۲)

امام خاتم لحفاظہ جلال الملہ والدین سیوطی فرماتے ہیں: هذا مثل حدیث ورد فی هذا الباب و اسنادہ حسن ۱۔ جس قدر حدیثیں اس باب میں آئیں یہ سب میں بہتر ہے اور اس کی سند حسن ہے۔

۱۔ رد المحتار بحوالہ السیوطی کتاب الخطر والاباحۃ فصل فی البیع و اراحۃ التراث العربی بیروت ۵/ ۲۶۸) ←

وَمَازَعَهُ تَلْمِيزُهُ الشَّامِي بِمَارِدَةِ الْعَلَامَةِ الزُّرْقَانِي فَرَا جَعَهُ. ان کے شامی شاگرد نے اس میں نزاع کیا کہ جس کو علامہ زرقانی نے
تو کیا تھا لہذا اس کی طرف رجوع کریں۔ (ت)

حدیث (۵) حافظ ابو طاہر سلفی و حافظ ابن بکیر حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں:
روز قیامت دو شخص حضرت عزت کے حضور کھڑے کئے جائیں گے حکم ہوگا انہیں جنت میں لے جاؤ، عرض کریں گے: الہی! ہم کس عمل
پر جنت کے قابل ہوئے ہم نے تو کوئی کام جنت کا نہ کیا۔

رب عز وجل فرمائے گا: ادخلا الجنة فاني اليت على نفسي ان لا يدخل النار من اسمہ احمد و محمد ۲۔ جنت میں جاؤ میں
نے حلف فرمایا ہے کہ جس کا نام احمد یا محمد ہو دوزخ میں نہ جائے گا۔

(۲) الفردوس بماثورا لفظاً بحديث ۸۸۳ دارالکتب العلمیۃ بیروت ۵/ ۲۸۵
یعنی جبکہ مومن ہو اور مومن عرف قرآن و حدیث و صحابہ میں اسی کو کہتے ہیں جو سنی صحیح العقیدہ ہو، کما نص علیہ الائمۃ فی التوضیح وغیرہ (جیسا کہ توضیح
وغیرہ میں ائمہ کرام نے اس کی تصریح فرمائی ہے۔ ت) ورنہ بد مذہبوں کے لئے تو حدیثیں یہ ارشاد فرماتی ہیں کہ وہ جہنم کے کتے ہیں ان
کا کوئی عمل قبول نہیں، بد مذہب اگرچہ حجر اسود و مقام ابراہیم کے درمیان مظلوم قتل کیا جائے اور اپنے اس مارے جانے پر صابر و طالب ثواب
رہے جب بھی اللہ عز وجل اس کی کسی بات پر نظر نہ فرمائے اور اسے جہنم میں ڈالے۔ یہ حدیثیں دارقطنی و ابن ماجہ و بیہقی ۳ و ابن الجوزی
وغیرہم نے حضرت ابوامامہ و حذیفہ و انس رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے روایت کیں، (۳) کنز العمال بحوالہ قط فی الافراد حدیث ۱۱۲۵ مؤسبۃ
الرسالہ بیروت ۱/ ۲۲۳) (العلل المتناہیۃ باب ذم الخوارج حدیث ۲۶۱ و ۲۶۲ دار نشر الکتب الاسلامیہ لاہور ۱/ ۱۶۳)

اور فقیر نے اپنے فتاویٰ میں متعدد جگہ لکھیں تو محمد عبدالوہاب نجدی وغیرہ گمراہوں کے لئے ان حدیثوں میں اصلاً بشارت نہیں، نہ کہ
سید احمد خان کی طرح کفار جن کا مسلک کفر قطعی کہ کافر پر تو جنت کی ہوا تک یقیناً حرام ہے۔

حدیث (۶) ابو نعیم حلیۃ الاولیاء میں حضرت حبیب بن شریط رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں:

قال الله تعالى عز وجل وعزتي وجلالي لا اعذب احدا تسمى باسمك بالنار يا محمد ۱۔

رب عز وجل نے مجھ سے فرمایا اپنی عزت و جلال کی قسم جس کا نام تمہارے نام پر ہوگا اسے دوزخ کا عذاب نہ دوں گا۔

(۱) تذکرۃ الموضوعات لمحمد طاہر الفقیہ باب فضل اسمہ واسم الانبیاء کتب خانہ مجیدیہ ملتان ص ۸۹

حدیث (۷) حافظ ابن بکیر امیر المؤمنین مولیٰ علی کرم اللہ وجہہ سے راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں، حدیث (۸) دیلمی
مسند الفردوس میں موقوفاً راوی کہ مولیٰ علی کرم اللہ وجہہ فرماتے ہیں، حدیث (۹) ابن عدی کامل اور ابوسعید نقاش بسند صحیح اپنے معجم شیوخ میں
راوی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں:

ما اضعم طعام علی مائدة ولا جلس علیها و فیہا اسمی الا قلیسوا کل یوم مرتین ۲۔

جس دسترخوان پر لوگ بیٹھ کر کھانا کھائیں اور ان میں کوئی محمد یا احمد نام کا ہو وہ لوگ ہر روز دوبار مقدس کئے جائیں۔

(۲) اکاٹل لابن عدی ترجمہ احمد بن کنانہ شامی دار الفکر بیروت ۱/ ۱۷۲)

حاصل یہ جس گھر میں ان پاک ناموں کا کوئی شخص ہو دن میں دوبارہ اسکان میں رحمت الہی کا نزول ہو۔ لہذا حدیث امیر المؤمنین کے لفظ یہ ہیں:
ما من مائدة وضعت فحضر علیہا من اسمہ احمد و محمد الا قدس اللہ ذلک المنزل کل یوم مرتین ۳۔
کوئی دسترخوان بچھایا نہیں گیا کہ اس پر ایسا شخص تشریف لائے جس کا نام احمد اور محمد ہو (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) تو اللہ تعالیٰ ہر روز دوبارہ اس گھر کو مقدس بخشتا ہے یعنی مقدس کرتا ہے (اور ہر روز دوبارہاں اس کی رحمتوں کا نزول ہوتا ہے۔ مترجم)۔ (ت)

(۳) الفردوس بما ثور الخطاب عن علی ابن ابی طالب حدیث ۷۱۳۷ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲/ ۴۳، ۴۴)

حدیث (۱۰) ابن سعد طبقات میں عثمان غنی مرسل راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

ما ضر احدکم لو کان فی بیته محمد و محمدان و ثلثۃ ۱۔

تم میں کسی کا کیا نقصان ہے اگر اس کے گھر میں ایک محمد یا دو محمد یا تین محمد ہوں۔

(۱) کنز العمال بحوالہ ابن سعد عن عثمان غنی مرسل حدیث ۴۵۲۰۵ موسسة الرسالہ بیروت ۱۶/ ۳۱۹)

ولہذا فقیر غفر اللہ تعالیٰ نے اپنے سب بیٹوں بھتیجوں کا حقیقی میں صرف محمد نام رکھا پھر نام اقدس کے حفظ آداب اور باہم تمیز کے لئے عرف جدا مقرر کئے محمد اللہ تعالیٰ فقیر کے پانچ محمد اب موجود ہیں سلمہم اللہ تعالیٰ وعافاہم والی مدارج الکمال رقاہم (اللہ تعالیٰ ان سب کو سلامت رکھے اور عافیت بخشے اور انہیں مدارج کمال تک پہنچائے۔ ت) اور پانچ سے زائد اپنی رہ گئے جعلہم اللہ لعاجر او ذخرا وفرطاً برحمۃ وبعزۃ اسم محمد عدۃ امین (اللہ تعالیٰ اپنی رحمت کے صدقے اور اسم محمد کی اس عزت و توقیر کے صدقے جو اس کی ہر گاہ میں ہے ہمارے لئے اپنی رحمت اور ان کی ذات کو ذریعہ اجر، ذخیرہ اور حشر و بناوے، آمین۔ ت)

حدیث (۱۱) غزالی و ابن الجوزی امیر المؤمنین مرتضیٰ کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الاسبی سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

ما اجتمع قوم قط فی مشورۃ و فہم رجل اسمہ محمد لم یدخلوا فی مشورۃ ہم الا لم یبارک لہم فیہ ۲۔

جب کوئی قوم کسی مشورے کے لئے جمع ہو اور ان میں کوئی شخص محمد نام کا ہو اور اسے اپنے مشورے میں شریک نہ کریں ان کے لئے مشورے

میں برکت نہ رکھی جائے۔ (۲) اعلل المتناہیۃ باب فضل اسمہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حدیث ۳۶۷۷ دار نشر الکتب الاسلامیہ لاہور ۱/ ۱۶۸)

حدیث (۱۲) طبرانی کبیر میں حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں:

من ولد لہ ثلثۃ فلم یسم احدہم محمد فقد جہل ۳۔

جس کے تین بیٹے پیدا ہوں اور وہ ان میں کسی کا نام محمد نہ رکھے ضرور جاہل ہے۔

(۳) المعجم الکبیر حدیث ۱۱۰۷۷۷ الکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۱۱/ ۷۱) ←

وہ اور اس کا لڑکا دونوں بہشت میں جائیں۔ (11)

حدیث (۱۳) حاکم و خلیفہ تاریخ اور دیلمی مسند میں امیر المومنین مولیٰ علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اذا سمیتہم الولد محمدًا فأکر موآءا ووسعوالہ فی المجلس والالتقبحوالہ وجہا۔

جب لڑکے کا نام محمد رکھو تو اس کی عزت کرو اور مجلس میں اس کے لئے جگہ کشادہ، اور اسے برائی کی طرف نسبت نہ کرو اس پر برائی کی دعا نہ کرو۔ (۱) تاریخ بغداد ترجمہ محمد بن اسماعیل العلوی ۱۰۸۲ دار الکتاب العربی بیروت ۳/۹۱

حدیث (۱۳) بزار مسند میں حضرت ابو رافع رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

اذا سمیتہم محمدًا فلا تضرہو ولا تحرموہ۔ جب لڑکے کا نام محمد رکھو تو اسے نہ مارو نہ محروم رکھو۔

(۲) کشف الاستار عن زوائد البزار باب کرامۃ اسم النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حدیث ۱۹۸۸ بیروت ۲/۳۱۳

حدیث (۱۵) فتاویٰ امام شمس الدین سخاوی میں ہے ابو شعیبہ حرافی نے امام عطاء (تابعی جلیل الشان استاذ امام الائمہ سیدنا امام اعظم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما) سے روایت کی:

من اراد ان یکون حمل زوجته ذکرا فلیضع یدہ علی بطنہا ولیقل ان کان ذکرا فقد سمیتہ محمدًا فانہ یکون ذکرا۔

جو چاہے کہ اس کی عورت کے حمل میں لڑکا ہو اسے چاہئے اپنا ہاتھ عورت کے پیٹ پر رکھ کر کہے: اگر لڑکا ہے تو میں نے اس کا نام محمد رکھا۔ ان شاء اللہ العزیز لڑکا ہی ہوگا۔ (۳) فتاویٰ امام شمس الدین سخاوی

سیدنا امام مالک رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

ماکان فی اہل بیت اسم محمدًا لا کثرت برکتہ۔ ذکرۃ المناوی فی شرح التیسیر تحت الحدیث العاشر والزرقاتانی فی شرح المواہب۔

جس گھروالوں میں کوئی محمد نام کا ہوتا ہے اس گھر کی برکت زیادہ ہوتی ہے (دسویں حدیث کے ذیل میں علامہ مناوی نے اس کو شرح تیسیر میں ذکر فرمایا اور اسی طرح علامہ زرقانی نے شرح مواہب للذنیہ میں ذکر کیا ہے۔ ت)

(۴) التیسیر شرح الجامع الصغیر تحت حدیث ما ضراحدکم المکتبۃ الامام الشافعی ریاض ۲/۳۵۲

بہتر یہ ہے کہ صرف محمد یا احمد نام رکھے اس کے ساتھ جان وغیرہ اور کوئی لفظ نہ ملائے کہ فضائل تنہا انہیں اسمائے مبارکہ کے وارد ہوئے ہیں۔

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۶۸۳، ۶۹۰، رخصا فاؤنڈیشن، لاہور)

(11) کنز اعمال، کتاب النکاح، الباب السابع فی برالاولاد وحقوبہم، الحدیث: ۴۵۲۱۵، ج ۸، الجزء السادس عشر، ص ۷۵، ۱۔ وفتاویٰ رضویہ،

حدیث ۱۱: حافظ ابو طاہر سلفی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: روز قیامت دو شخص رب العزت کے حضور کھڑے کیے جائیں گے، حکم ہوگا انھیں جنت میں لے جاؤ۔ عرض کریں گے، الہی! ہم کس عمل پر جنت کے قابل ہوئے، ہم نے تو جنت کا کوئی کام کیا نہیں؟ فرمائے گا: جنت میں جاؤ! میں نے حلف کیا ہے کہ جس کا نام احمد یا محمد ہو، دوزخ میں نہ جائے گا۔ (12)

حدیث ۱۲: ابو نعیم نے حلیہ میں عبید بن شریط رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: مجھے اپنی عزت و جلال کی قسم! جس کا نام تمھارے نام پر ہوگا، اسے عذاب نہ دوں گا۔ (13)

حدیث ۱۳: ابن سعد طبقات میں عثمان عمری سے مرسل راوی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: تم میں کسی کا کیا نقصان ہے، اگر اس کے گھر میں ایک محمد یا دو محمد یا تین محمد ہوں۔ (14)

حدیث ۱۴: طبرانی کبیر میں عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس کے تین بیٹے ہوں اور وہ ان میں سے کسی کا نام محمد نہ رکھے، وہ ضرور جاہل ہے۔ (15)

حدیث ۱۵: حاکم نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب لڑکے کا نام محمد رکھو تو اس کی عزت کرو اور مجلس میں اس کے لیے جگہ کشادہ کرو اور اسے برائی کی طرف نسبت نہ کرو۔ (16)

حدیث ۱۶: بزار نے ابو رافع رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب لڑکے کا نام محمد رکھو تو اسے نہ مارو اور نہ محروم کرو۔ (17)

حدیث ۱۷: صحیح مسلم میں زینب بنت ابی سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ ان کا نام برہ تھا۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اپنا ترکہ نہ کرو (یعنی اپنی بڑائی اور تعریف نہ کرو) اللہ (عزوجل) کو معلوم ہے کہ تم میں برا

(12) فردوس الاخبار، الحدیث: ۸۵۱۵، ج ۲، ص ۵۰۳۔ وقادی رضویہ، ج ۲۳، ص ۶۸۷۔

(13) کشف الخفاء، حرف الخاء، الحدیث: ۱۲۳۳، ج ۱، ص ۳۳۵۔

(14) الطبقات الکبریٰ لـ ابن سعد، الطبقة الادلی من اصل المدینة من الابیین، محمد بن طلحة، رقم ۶۲۲، ج ۵، ص ۴۰۔

(15) المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۱۰۷، ج ۱۱، ص ۵۹۔

(16) الاصحاح الصغیر، الحدیث: ۷۰۶، ص ۲۹۔

(17) البحر الزخار المعروف بمسند البزار، الحدیث: ۳۸۸۳، ج ۹، ص ۳۲۷۔

اور نیکی والا کون ہے، اس کا نام زینب رکھ دو۔ (18)

حدیث ۱۸: صحیح مسلم میں ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہتے ہیں: جویریہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا نام برہ تھا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے یہ نام بدل کر جویریہ رکھا اور یہ بات حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو ناپسند تھی کہ یوں کہا جائے کہ برہ کے پاس سے چلے گئے۔ (19)

حدیث ۱۹: صحیح مسلم میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہتے ہیں کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی ایک لڑکی کا نام عاصیہ تھا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے اس کا نام جمیلہ رکھا۔ (20)

حدیث ۲۰: ترمذی نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

(18) صحیح مسلم، کتاب الآداب، باب استحباب تغیر الاسم للصحیح الی حسن... إلخ، الحدیث: ۱۹۔ (۲۱۳۲)، ص ۱۱۸۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ زینب حضور انور کی سوتیلی بیٹی ہیں جو اپنی والدہ جناب ام سلمہ رضی اللہ عنہا کے ساتھ حضور اقدس کے گھر میں آئیں اور حضور انور کی پرورش میں رہیں اور زینب بنت خدیجہ الکبریٰ حضور کی سگی بیٹی ہیں جو ابوالعاص کے نکاح میں رہیں۔

۲۔ یعنی میری والدہ ام سلمہ نے یا میرے والد ابوسلمہ نے میرا نام برہ رکھا، برہ کے معنی ہیں نہایت نیک صالح بچی۔

۳۔ اس فرمان عالی میں اشارہ اس آیات کریمہ کی طرف ہے "فَلَا تَزْكَوْا اَنْفُسَكُمْ" "ہَلِ اِنَّهٗ يُزْكَیْ مَنْ يَّشَاءُ"۔

۴۔ زینب کے بہت معنی ہیں زنب بمعنی موٹا پاتندوستی زینب موٹی و تندرست عورت یا زنب وہ درخت جو خوبصورت خوشبودار ہو یا یہ لفظ بنا

ہے زین اور اب سے یعنی اچھے باپ کی بیٹی، یہ تیسرے معنی نہایت موزوں ہیں۔ (مرقات) واقعی ان سے بڑھ کر اچھے باپ والی بیٹی کون

ہوگی رضی اللہ عنہا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۹۳)

(19) المرجع السابق، الحدیث: ۱۶۔ (۲۱۳۰)، ص ۱۱۸۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ جویریہ تغیر ہے جاریہ کی جاریہ کے معنی ہیں لڑکی، جویریہ چھوٹی لڑکی، آپ جویریہ بنت الحارث ہیں، غزوہ مریض جیسے غزوہ نبی مصطفیٰ

بھی کہتے ہیں جو ۵ھ میں ہوا اس میں قید ہو کر آئیں، ثابت ابن قیس کے حصہ میں آئیں انہیں نے آپ کو مکاتبہ کر دیا حضور انور نے آپ کا

مال کتابت ادا کر دیا اور آپ سے نکاح کر لیا، آپ کی وفات ربیع الاول ۵۶ھ چچن میں ہوئی، ۶۵ سال عمر پائی رضی اللہ عنہا۔ (اکمال)

۲۔ یعنی حضور انور نے برہ نام اس لیے بدل دیا کہ اگر آپ اپنی ان بیوی صاحبہ کے پاس سے تشریف لائیں تو نہ کہہ جاوے کہ آپ برہ یعنی

نیک کے یا نیکی کے پاس سے آئے کہ اس کا مطلب یہ بن جاتا ہے کہ نیکی سے نکل کر آئے تو نعوذ باللہ برائی میں آئے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۹۳)

(20) صحیح مسلم، کتاب الآداب، باب استحباب تغیر الاسم للصحیح الی حسن... إلخ، الحدیث: ۱۵۔ (۲۱۳۹)، ص ۱۱۸۱۔

برے نام بدل دیتے تھے۔ (۲۱)

حدیث ۲۱: صحیح بخاری میں سعید بن المسیب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے پوچھا: کیا ایسا نام ہے جس نے کنہ: حزن۔ فرمایا: تم بہل ہو۔ یعنی اپنا نام بہل رکھو کہ اس کے معنی ہیں نرم اور حزن سمیت کہہ جاتے ہیں۔ انہوں نے کہا: ہاں۔ میرے باپ نے رکھا ہے، اسے نہیں بدلوں گا۔ (۲۲) سعید ابن المسیب کہتے ہیں: اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ میں اب

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ عاصیہ عاصی بمعنی گنہگار کا مؤنث نہیں دو تو عصیان سے جتا ہے بلکہ عاص یا عیص کا مؤنث عرب میں عیص کنہ: حزن و رنج سے ہے۔ چنانچہ حضرت یعقوب علیہ السلام کے بھائی کا نام عیص ابن اسحاق تھا ایک صحابی کا نام ابو العاص ہے ان ناموں کا ماخذ یہ ہی نہیں ہے۔ (مرقات)

۲۔ چونکہ عاصیہ کے ایک معنی گنہگار عورت بھی ہے اس لیے حضور انور نے یہ نام بدل دیا، اہل جاہلیت اس نام کے معنی کرتے تھے برائیوں سے انکار کرنے والی بی بی۔ خیال رہے کہ برہ اور جیلہ میں فرق یہ ہے کہ برہ بذات خود نیک اور جیلہ اللہ تعالیٰ کے فضل سے نیک بی بی جس سے نیک اعمال ہی سرزد ہوں۔ جیلہ بنا ہے جمال بمعنی حسن سے، عاصیہ کا مقابلہ مطیعہ ہے مگر جو جیلہ ہو وہ مطیع بھی ہے۔ (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۵۹۵)

(۲۱) سنن اترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی تغییر الاسماء، الحدیث: ۲۸۴۸، ج ۴، ص ۳۸۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی حضور، نور صلی اللہ علیہ وسلم انسانوں کے جانوروں کے بلکہ شہروں، بستیوں کے برے نام بدل کر اچھے نام رکھ دیتے تھے۔ چنانچہ ایک شخص کا نام تھا اسود حضور انور نے اس کا نام ایض رکھا، مدینہ منورہ کا نام یثرب تھا حضور انور نے اس کا نام مدینہ طیبہ، ایضاً، بھی وغیرہ رکھے، کفار کے لیے برعکس عمل تھا چنانچہ ابوالحکم کا نام حضور نے ابو جہل رکھا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۱۱)

(۲۲) صحیح ابودری، کتاب الادب، باب تحویل الاسم الی اسم احسن منه، الحدیث: ۶۱۹۳، ج ۴، ص ۱۵۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ عبدالحمید بھی تابعی ہیں اور سعید ابن مسیب بھی، ابن مسیب بڑے مشہور عالم فقیہ تابعی ہیں، حضرت عمر کی خلافت میں آپ پیدا ہوئے، بہت صحابہ سے ملاقات کی مکحول کہتے ہیں کہ میں نے روئے زمین میں سعید ابن مسیب سے بڑا عالم نہ دیکھا، چالیس حج کیے ۹۳ھ میں وفات پائی۔

۲۔ حزن ح کے فتح سے سخت زمین اور سخت دل انسان، حزن ح کے پیش سے رنج و غم، بہل سین کے فتح کے سکون سے نرم زمین اور نرم دل انسان، آسانی و نرمی کو بھی بہل کہتے ہیں، چونکہ حزن کے معنی اچھے نہیں اس لیے آپ نے تبدیلی نام کا مشورہ دیا۔

تک سختی پائی جاتی ہے۔

تنبیہ: نام رکھنے کے متعلق بعض مسائل عقیدہ کے بیان میں ذکر کیے گئے ہیں وہاں سے معلوم کریں (23)، بعض باتیں یہاں ذکر کی جاتی ہیں۔



۳۔ ان کا مقصد یہ تھا کہ سہل یعنی نرم زمین ہمیشہ پاؤں کے نیچے روندی جاتی ہے اس پر غلاطت ڈالی جاتی ہے اس لیے ایسا نام رکھنا میری ذلت ہے، نیز اپنے باپ کی یادگار کا مٹانا ہے اس لیے میں وہ نام رکھوں گا اسے بدلوں گا نہیں۔ خیال رہے کہ یہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا مشورہ تھا امر نہ تھا اس لیے حضور نے کچھ ارشاد نہ فرمایا حضور کا مشورہ قبول مستحب ہے واجب نہیں لہذا اس مرض پر اعتراض نہیں۔ خیال رہے کہ حزن ابن وہب ابن عمرو ابن عایذ مخزومی قرشی ہیں، اشراف قریش سے ہیں، بعد اسلام مہاجر ہوئے، بیعت الرضوان میں شریک ہوئے، شاید یہ واقعہ ان کی ہجرت کی ابتداء میں تھا جب کہ یہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے آداب سے واقف نہ تھے نہ آپ کے مشوروں کی قدر و منزلت جانتے تھے۔ (اشعہ)

۴۔ یعنی حضرت حزن نے جو حضور انور کا مشورہ قبول نہ کیا اس کا اثر یہ ہوا کہ ہمارے خاندان بلکہ ہماری پشتوں میں رنج و غم رہا۔ حزن کے بیٹے مسیب ہیں اور مسیب کے بیٹے سعید ابن مسیب ہیں، سعید کہتے ہیں کہ دادا کا اثر ہم پوتوں تک باقی رہا۔ اس سے معلوم ہوا کہ برے ناموں کا برا اثر ہوتا ہے اور کبھی ایک شخص کی غلطی سے پورے خاندان پر برا اثر ہوتا ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۱۷)

(23) میرے شیخ طریقت، امیر اہلسنت حضرت علامہ مولانا ابوبلال محمد الیاس عطار قادری رضوی خیائی دامت برکاتہم العالیہ کے ملفوظات پر مبنی نام کیسے رکھے جائیں؟ مطالعہ فرمائیں

مسائل فقہیہ

مسئلہ ۱: اللہ تعالیٰ کے نزدیک بہت پیارے نام عبد اللہ و عبد الرحمن ہیں جیسا کہ حدیث میں وارد ہے، ان دونوں میں زیادہ افضل عبد اللہ ہے کہ عبودیت کی اضافت (یعنی عبد کی نسبت) علم ذات کی طرف ہے۔ انھیں کے حکم میں وہ اسماء ہیں جن میں عبودیت کی اضافت دیگر اسماء صفاتیہ کی طرف ہو، مثلاً عبد الرحیم، عبد الملک، عبد الخالق وغیرہا۔

حدیث میں جو ان دونوں ناموں کو تمام ناموں میں خدا تعالیٰ کے نزدیک پیارا فرمایا گیا۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ جو شخص اپنا نام عبد کے ساتھ رکھنا چاہتا ہو تو سب سے بہتر عبد اللہ و عبد الرحمن ہیں، وہ نام نہ رکھے جائیں جو جاہلیت میں رکھے جاتے تھے کہ کسی کا نام عبد شمس اور کسی کا عبد الدار ہوتا۔

لہذا یہ نہ سمجھنا چاہیے کہ یہ دونوں نام محمد و احمد سے بھی افضل ہیں، کیونکہ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے اسم پاک محمد و احمد ہیں اور ظاہر یہی ہے کہ یہ دونوں نام خود اللہ تعالیٰ نے اپنے محبوب صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے لیے منتخب فرمائے، اگر یہ دونوں نام خدا کے نزدیک بہت پیارے نہ ہوتے تو اپنے محبوب کے لیے پسند نہ فرمایا ہوتا۔ احادیث میں محمد نام رکھنے کے بہت فضائل مذکور ہیں، ان میں سے بعض ذکر کی گئیں۔

مسئلہ ۲: جس کا نام محمد ہو وہ اپنی کنیت ابو القاسم رکھ سکتا ہے اور حدیث میں جو ممانعت آئی ہے، وہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی حیات ظاہری کے ساتھ مخصوص تھی، کیونکہ اگر کسی کی یہ کنیت ہوتی اور اس کے ساتھ پکارا جاتا تو دھوکا لگتا کہ شاید حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو پکارا، چنانچہ ایک دفعہ ایسا ہی ہوا کہ کسی نے دوسرے کو ابو القاسم کہہ کر آواز دی، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے اس کی طرف توجہ فرمائی تو اس نے کہا، میں نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو نہیں ارادہ کیا یعنی نہیں پکارا اس موقع پر ارشاد فرمایا کہ میرے نام کے ساتھ نام رکھو اور میری کنیت کے ساتھ اپنی کنیت نہ کرو۔ (1)

اگر یہ شبہ کیا جائے کہ نام رکھنے میں بھی اس قسم کا دھوکا ہو سکتا تھا تو اس کا جواب یہ ہے کہ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو نام پاک کے ساتھ پکارنا قرآن پاک نے منع فرما دیا تھا:

(لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا) (2)

(1) انظر صحيح البخاري، كتاب التسميع، باب ما ذكر في الاسواق، الحديث: ۲۱۲۰، ج ۲، ص ۲۴.

(2) پ ۱۸، النور ۶۳.

لہذا صحابہ کرام (رضی اللہ تعالیٰ عنہم) جو حاضر خدمت اقدس ہوا کرتے تھے، وہ کبھی نام کے ساتھ پکارتے نہ تھے، بلکہ یا رسول اللہ، یا نبی اللہ وغیرہ القاب سے ندا کرتے۔

وہ احتمال ہی یہاں پیدا نہ ہوتا کہ محمد کہہ کر کوئی پکارے اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) مراد ہوں۔ اعراب وغیرہ ناواقف لوگوں نے اس طرح پکارا تو یہ دوسری بات ہے کیونکہ وہ ناواقفی میں ہوا اور حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنے صاحبزادہ محمد بن الحنفیہ کا نام محمد اور کنیت ابوالقاسم رکھی اور یہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی اجازت سے ہوا، لہذا اس سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ حدیث منسوخ ہے۔

مسئلہ ۳: بعض اسماء الہیہ جن کا اطلاق غیر اللہ پر جائز ہے ان کے ساتھ نام رکھنا جائز ہے، جیسے علی، رشید، کبیر، بدیع، کیونکہ بندوں کے ناموں میں وہ معنی مراد نہیں ہیں جن کا ارادہ اللہ تعالیٰ پر اطلاق کرنے میں ہوتا ہے اور ان ناموں میں الف و لام مداخل کر بھی نام رکھنا جائز ہے، مثلاً العلی، الرشید۔

ہاں اس زمانہ میں چونکہ عوام میں ناموں کی تصغیر کرنے کا بکثرت رواج ہو گیا ہے، لہذا جہاں ایسا گمان ہو ایسے نام سے بچنا ہی مناسب ہے۔ خصوصاً جب کہ اسماء الہیہ کے ساتھ عبد کا لفظ ملا کر نام رکھا گیا، مثلاً عبدالرحیم، عبدالکریم، عبدالعزیز کہ یہاں مضاف الیہ سے مراد اللہ تعالیٰ ہے اور ایسی صورت میں تصغیر اگر قصداً ہوتی تو معاذ اللہ کفر ہوتی، کیونکہ یہ اس شخص کی تصغیر نہیں بلکہ معبود برحق کی تصغیر ہے مگر عوام اور ناواقفوں کا یہ مقصد یقیناً نہیں ہے، اسی لیے وہ حکم نہیں دیا جائے گا بلکہ اون کو سمجھایا جائے اور ایسے موقع پر ایسے نام ہی نہ رکھے جائیں جہاں یہ احتمال ہو۔ (3)

مسئلہ ۴: ایسا نام رکھنا جس کا ذکر نہ قرآن مجید میں آیا ہو نہ حدیثوں میں ہو نہ مسلمانوں میں ایسا نام مستعمل ہو، اس میں علما کو اختلاف ہے بہتر یہ ہے کہ نہ رکھے۔ (4)

مسئلہ ۵: مراہوا بچہ پیدا ہوا تو اس کا نام رکھنے کی حاجت نہیں بغیر نام رکھے دفن کر دیں۔ (5)

ترجمہ کنز الایمان: رسول کے پکارنے کو آپس میں ایسا نہ ٹھہرا لوجیسا کہ تم میں ایک دوسرے کو پکارتا ہے۔

(3) الدر المختار و رد المحتار، کتاب النکاح، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۸۸۔

(4) اعتادی المحدث، کتاب النکاح، الباب الثانی والآخر دن فی تسمیۃ الاولاد، ج ۵، ص ۶۲۔

(5) الفتاویٰ المحدث، کتاب النکاح، الباب الثانی والآخر دن فی تسمیۃ الاولاد، ج ۵، ص ۶۲۔

یہ ظاہر الروایۃ ہے مگر امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالیٰ کا مذہب یہ ہے کہ بچہ زندہ پیدا ہو یا مردہ بہر حال اس کی تکریم کے لیے اس کا نام رکھا جائے۔ ملتعلی البحر میں ہے کہ اس پر فتویٰ ہے اور نہر سے مستفاد ہے کہ یہی مختار ہے ایسا ہی در مختار باب صلاۃ الجنائزہ جلد ۳، صفحہ ۱۵۳ میں ہے۔ بہار شریعت جلد اول حصہ ۴، صفحہ ۸۳۱، نماز جنازہ کا بیان میں بھی اسی کو اختیار کیا اور اس حصے پر اعلیٰ حضرت کی یہ تصدیق بھی ہے۔

مسئلہ ۶: بچہ پیدا ہو کر مر گیا تو دفن سے پہلے اس کا نام رکھا جائے لڑکا ہو تو لڑکوں کا سا اور لڑکی ہو تو لڑکیوں کا سا نام رکھا جائے اور معلوم نہ ہو سکا کہ لڑکی ہے یا لڑکا تو ایسا نام رکھا جائے جو مرد و عورت دونوں کے لیے ہو سکتا ہو۔ (6)

مسئلہ ۷: بچہ کی کنیت ہو سکتی ہے یا نہیں صحیح یہ ہے کہ ہو سکتی ہے، حدیث ابی عمیر اس کی دلیل ہے۔ (7)

مسئلہ ۸: بچہ کی کنیت ابوبکر، ابوتراب، ابوالحسن، وغیرہ رکھنا جائز ہے ان کنیتوں سے تبرک مقصود ہوتا ہے کہ ان حضرات کی برکت بچہ کے شامل حال ہو۔ (8)

مسئلہ ۹: جو نام برے ہوں ان کو بدل کر اچھا نام رکھنا چاہیے۔ حدیث میں ہے، کہ قیمت کے دن تم اپنے اور اپنے باپوں کے نام سے پکارے جاؤ گے، لہذا اپنے نام اچھے رکھو۔ (9) حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے برے ناموں کو بدل دیا۔ ایک شخص کا نام اصرم تھا اس کو بدل کر زرعہ رکھا۔ (10) اور عاصیہ نام کو بدل کر جمیلہ رکھا۔ (11) یسار، رباح، ارج، برکت نام رکھنے سے بھی منع فرمایا۔ (12)

مسئلہ ۱۰: عبدالمصطفیٰ، عبدالنبی، عبدالرسول نام رکھنا جائز ہے کہ اس نسبت کی شرافت مقصود ہے اور عبودیت کے حقیقی معنی یہاں مقصود نہیں ہیں۔ رہی عبد کی اضافت غیر اللہ کی طرف یہ قرآن و حدیث سے ثابت ہے۔

مسئلہ ۱۱: ایسے نام جن میں تزکیہ نفس اور خود ستائی (یعنی ابنی بڑائی اور تعریف) نکلتی ہے، ان کو بھی حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے بدل ڈالا برہ کا نام زینب رکھا اور فرمایا کہ اپنے نفس کا تزکیہ نہ کرو۔ (13) شمس الدین، زین الدین، محی الدین، فخر الدین، نصیر الدین، سراج الدین، نظام الدین، قطب الدین وغیرہ اسما جن کے اندر خود ستائی اور بڑی زبردست تعریف پائی جاتی ہے نہیں رکھنے چاہیے۔

رہا یہ کہ بزرگان دین و ائمہ سابقین کو ان ناموں سے یاد کیا جاتا ہے تو یہ جاننا چاہیے کہ ان حضرات کے نام یہ نہ

ہے کہ اسے مسائل صحیحہ، رجیمہ، محققہ، منقہ مشتمل پایا، ہذا مسلمانوں کو اسی پر عمل کرنا چاہیے۔

(6) رد المحتار، کتاب المحظر والایاتہ، فصل فی المبع، ج ۹، ص ۶۸۹۔

(7) انظر: صحیح مسلم کتاب الآداب، باب استحباب تحنیک المولود... إلخ، الحدیث ۳۰۔ (۲۱۵۰)، ص ۱۱۸۵۔

(8) رد المحتار، کتاب المحظر والایاتہ، فصل فی المبع، ج ۹، ص ۶۸۹۔

(9) سنن ابی داود، کتاب الآداب، باب فی تغیر الاسماء، الحدیث: ۴۹۳۸، ج ۴، ص ۳۷۴۔

(10) المرجع السابق، باب فی تغیر الاسماء، الحدیث: ۴۹۵۴، ج ۴، ص ۳۷۵۔

(11) انظر: صحیح مسلم، کتاب الآداب، باب استحباب تغیر الاسماء... إلخ، الحدیث: ۱۳۔ (۲۱۳۹)، ص ۱۱۸۱۔

(12) رد المحتار، کتاب المحظر والایاتہ، فصل فی المبع، ج ۹، ص ۶۸۹۔

(13) صحیح مسلم، کتاب الآداب، باب استحباب تغیر الاسماء... إلخ، الحدیث: ۱۹۔ (۲۱۳۲)، ص ۱۱۸۲۔

تھے بلکہ یہ ان کے القاب ہیں کہ جب وہ حضرات مراتب علیہ اور مناصب جلیلہ (یعنی بڑے بڑے رتبوں اور عہدوں) پر فائز ہوئے تو مسلمانوں نے ان کو اس طرح کہا اور یہاں ایک جاہل اور ان پڑھ جو ابھی پیدا ہوا اور اس نے دین کی ابھی کوئی خدمت نہیں کی اتنے بڑے بڑے الفاظ فحیمہ (یعنی بزرگی والے الفاظ) سے یاد کیا جانے لگا۔ امام محی الدین نووی رحمہ اللہ تعالیٰ باوجود اس جلالت شان کے ان کو اگر محی الدین کہا جاتا تو انکار فرماتے اور کہتے کہ جو مجھے محی الدین نام سے بدائے اس کو میری طرف سے اجازت نہیں۔ (14)

(14) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی المبیح، ج ۹، ص ۶۸۹-۶۹۰۔

ابھی حضرت،، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن قادی رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

نظام الدین، محی الدین، تاج الدین اور اسی طرح وہ تمام نام جن میں مستحی کا معظم فی الدین بلکہ معظم علی الدین ہونا لکھے جیسے شمس الدین، بدر الدین، نور الدین، فخر الدین، شمس الاسلام، بدر الاسلام وغیر ذلک، سب کو علماء اسلام نے سخت ناپسند رکھا اور مکروہ و ممنوع رکھا، اکابر دین قدست اسرار ہم کہ امثال اسلامی سے مشہور ہیں، یہ ان کے نام نہیں القاب ہیں کہ ان مقامات رفیعہ تک وصول کے بعد مسبین نے توصیحا ان لقبوں سے یاد کیا، جیسے شمس الائمہ حلوانی، فخر الاسلام بزدی، تاج الشریعہ، صدر الشریعہ، یونہی محی الحق وادین حضور پر نور سیدنا غوث اعظم، معین الحق والدین حضرت خواجہ غریب نواز، وارث النبی سلطان الہند حسن منجری، شہاب الحق والدین عمر سہروردی، بہاؤ الحق والدین نقشبند، قطب الحق والدین بختیار کاکی، شیخ الاسلام فرید الحق والدین مسعود، نظام الحق وادین سلطان الاولیاء محبوب الہی، محمد نصیر الحق والدین چراغ دہلوی محمود وغیر ہم رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین ولفظ ہر کا ہم فی الدنیا وادین۔

حضور نور النور سیدنا غوث اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا لقب پاک خود روحانیت اسلام نے رکھا جس کی روایت معروف و مشہور اور ہیجۃ الاسرار شریف وغیرہ کتب ائمہ و علماء میں مذکور، حق سبحانہ، وتعالیٰ فرماتا ہے: فلا تزکوا انفسکم۔ (پس آپ اپنی جانوں کو ستھرا نہ بناؤ۔ ت)۔ (۱) القرآن الکریم ۵۳/۳۲

فصول عمادی میں ہے:

لا یسمیہ بما فیہ تزکیۃ ۲۔

کوئی اس نام کے ساتھ نام نہ رکھے جس میں تزکیہ کا اظہار ہو۔ (ت)

(۲) رد المحتار بحوالہ فصول العمادی کتاب المحظر والاباحہ فصل فی المبیح دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/۲۶۸

رد المحتار میں ہے:

یؤخذ من قوله ولا بما فیہ تزکیۃ المنع عن نحو محی الدین وشمس الدین مع ما فیہ من الکذب والاف بعض المالکیۃ فی المنع منه مؤلفا وصرح بہ القرطبی فی شرح الاسماء الحسنی وانشد بعضهم فقال۔

مسئلہ ۱۲: غلام محمد، غلام صدیق، غلام فاروق، غلام علی، غلام حسن، غلام حسین وغیرہ اسماء جن میں انبیاء و صحابہ و اولیا کے ناموں کی طرف غلام کو اضافت کر کے نام رکھا جائے یہ جائز ہے اس کے عدم جواز کی کوئی وجہ نہیں۔ بعض وہابیہ کا ان ناموں کو ناجائز بلکہ شرک بتانا ان کی بدباطنی کی دلیل ہے۔ ایسا بھی سنا گیا ہے کہ بعض وہابیوں نے غلام علی نام کو بدل کر

اری الدین لیستحبی من اللہ ان یری
فقد کثرت فی الدین القاب عصبة
وانی اجل الدین عن عزة بهم
وهذا له فخر وذاك نصیر
هم مافی مراعی المنکرات حمیر
واعلم ان الذنب فیہ کبیر

ونقل عن الامام النووی انه کان یکره من یلقبه بمحی الدین ویقول لا اجعل من دعائی به فی حل و مال ائی ذلك العارف بالله تعالیٰ الشیخ سنان فی کتابہ تبیین المحارم و اقام الطامة الکبریٰ علی المتسین بمثل ذلك و انه من التزکیة المنهی عنها فی القرآن و من الکذب قال و نظیرہ ما یقال للمدرسین بالترکی افندی و سلطانم و نحوه ثم قال فان قیل هذه مجازات صارت کالاعلام فخرجت عن التزکیة فالجواب ان هذا یرده ما یشاهد من انه اذا نودی باسمه العلم وجد علی من ناداه به فعلم ان التزکیة باقیة ال الخ.

(۱۔ رد المحتار کتاب المحظر و الاباحہ فصل فی البیع دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/ ۶۹-۲۶۸)

مصنف کے قول "الایما فیہ تزکیة" سے معلوم ہوتا ہے ممانعت مثل محی الدین و محی الدین نام رکھنے میں ہے، علاوہ اس کے اس میں جھوٹ بھی ہے، اور بعض ماکنی علماء نے ایسے ناموں کے ممنوع ہونے میں ایک کتاب لکھی ہے، اور قرطبی نے اس کی تصریح شرح اسماء حسنیٰ میں کی ہے، اور بعض نے اس بارہ میں کچھ اشعار لکھے ہیں، پس کہا ہے:

میں دیکھتا ہوں دین کو حیا کرتا ہے اللہ تعالیٰ سے جو دکھایا جائے حالانکہ یہ اس کے لئے فخر ہے اور یہ اس کے لئے نصیر یعنی مددگار ہے، تحقیق بہت ہوئے دین میں القاب اس کے مددگاروں کے۔ یہ وہ لوگ ہیں جو برائیوں کی رعایت میں گدھے ہیں اور تحقیق دین کی موت ان جیسے لوگوں نے ساتھ اس کی عزت میں کی ہے اور جان لے کہ اس میں ان کا بڑا گناہ ہے۔

اور امام نووی سے نقل کیا ہے کہ وہ محی الدین کے ساتھ اپنے لقب ہونے کو ناپسند فرماتے تھے اور فرماتے تھے جو شخص مجھے اس لقب سے پکارے گا میں اسے معاف نہیں کروں گا، اور اس کی طرف مائل ہوئے شیخ سنان عارف باللہ اپنی کتاب تمہین المحارم میں، اور اس طرح کے نام رکھنے والوں کے خلاف حجت قاہرہ قائم کی اور فرمایا کہ تحقیق یہ وہ تزکیہ ہے جس سے قرآن مجید میں منع کیا گیا ہے، اور جھوٹ سے ہے، اور کہ مثل اس کے وہ جو کہا جاتا ہے واسطے مدرسین کے ترکی میں آفندی و سلطانم، اور اس کی مثل پھر کہا ہے پس اگر کہا جائے یہ مجازات ہیں جو ناموں کی طرح ہو گئے ہیں پس تزکیہ سے نکل گئے تو جواب یہ ہے کہ ہمارا مشاہدہ اس بات کو رد کرتا ہے کیونکہ اگر ان اشخاص کو ان کے اسماء اعلام سے پکارا جائے تو پکارنے والے پر لوگ غصہ کریں گے، پس معلوم ہوا کہ تزکیہ کے لئے باقی ہے الخ (ت)

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۶۸۳، ۶۸۵ رضاق وائٹیشن، لہور)

ندام اللہ نام رکھا، یہ ان کی جہالت ہے کہ جائز نام کو بدل کر ناجائز نام رکھا، غلام کی اضافت اللہ تعالیٰ کی طرف کرنا اور کسی کو غلام اللہ کہنا ناجائز ہے کیونکہ غلام کے حقیقی معنی پسر اور لڑکا ہیں، اللہ (عزوجل) اس سے پاک ہے کہ اس کے لیے کوئی لڑکا ہو۔ علامہ عبد الغنی نابلسی قدس سرہ نے حدیقہ ندیہ میں فرمایا: یقال عبد اللہ وأمة اللہ ولا یقال غلام اللہ وجاریۃ اللہ۔ (15)

مسئلہ ۱۳: محمد بخش، احمد بخش، نبی بخش، پیر بخش، علی بخش، حسین بخش اور اسی قسم کے دوسرے نام جن میں کسی نبی یا ولی کے نام کے ساتھ بخش کا لفظ ملا کر نام رکھا گیا ہو جائز ہے۔

مسئلہ ۱۴: غفور الدین، غفور اللہ نام رکھنا ناجائز ہے۔ کیونکہ غفور کے معنی ہیں مٹانے والا، اللہ تعالیٰ غفور ہے کہ وہ بندوں کے گناہ مٹا دیتا ہے، لہذا غفور الدین کے معنی ہوئے دین کا مٹانے والا۔

مسئلہ ۱۵: طہ، یس نام بھی نہ رکھے جائیں کہ یہ مقطعات قرآنیہ سے ہیں جن کے معنی معلوم نہیں ظاہر یہ ہے کہ یہ اسمائے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے ہیں اور بعض علما نے اسمائے الہیہ سے کہا۔ بہر حال جب معنی معلوم نہیں تو ہو سکتا ہے کہ اس کے ایسے معنی ہوں جو حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم یا اللہ تعالیٰ کے ساتھ خاص ہوں اور ان ناموں کے ساتھ محمد یا محمد طہ، محمد یس کہنا بھی ممانعت کو دفع نہ کریگا۔

مسئلہ ۱۶: محمد نبی، احمد نبی، محمد رسول، احمد رسول، نبی الزمان نام رکھنا بھی ناجائز ہے، بلکہ بعض کا نام نبی اللہ بھی سن گیا ہے، غیر نبی کو نبی کہنا ہرگز ہرگز جائز نہیں ہو سکتا۔

تنبیہ: اگر کوئی یہ کہے کہ ناموں میں اصلی معنی کا لحاظ نہیں ہوتا، بلکہ یہاں تو یہ شخص مراد ہے اس کا جواب یہ ہے کہ اگر ایسا ہوتا تو شیطان ابلیس وغیرہ اس قسم کے ناموں سے لوگ گریز نہ کرتے اور ناموں میں اچھے اور برے ناموں کی دو قسمیں نہ ہوتیں اور حدیث میں نہ فرمایا جاتا کہ اچھے نام رکھو، نیز حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے برے ناموں کو بدل نہ ہوتا کہ جب اس اصلی معنی کا بالکل لحاظ نہیں تو بدلنے کی کیا وجہ۔



(15) الحدیقۃ ندیۃ شرح طریقۃ الحمدیہ، النوع الثالث والعشرون... الخ، ج ۲، ص ۲۷۹۔

ترجمہ معنی یوں کہتا ہے، اللہ عزوجل کا بندہ، اللہ عزوجل کی بندی اور یہ نہیں کہا جاتا کہ اللہ عزوجل کا غلام یا اللہ عزوجل کی سونڈی۔

مسابقت کا بیان

حدیث ۱: صحیح بخاری میں سلمہ بن اکوع رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہتے ہیں کچھ لوگ پیدل تیر اندازی کر رہے تھے یعنی مسابقت کے طور پر، ان کے پاس رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تشریف لائے اور فرمایا: اے بنی اسماعیل (یعنی اہل عرب کیونکہ عرب والے حضرت اسماعیل علیہ الصلوٰۃ والسلام کی اولاد ہیں) تیر اندازی کرو کیونکہ تمہارے باپ یعنی اسماعیل علیہ السلام تیر انداز تھے اور دونوں فریقوں میں سے ایک کے متعلق فرمایا کہ میں بنی فلاں کے ساتھ ہوں۔ دوسرے فریق نے ہاتھ روک لیا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا: کیوں تم لوگوں نے ہاتھ روکا۔ انہوں نے کہا، جب حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) بنی فلاں یعنی ہمارے فریق مقابل کے ساتھ ہو گئے تو اب ہم کیوں کر تیر چلائیں یعنی اب ہمارے جیتنے کی صورت باقی نہیں رہی۔ ارشاد فرمایا: تم تیر چلاؤ، میں تم سب کے ساتھ ہوں۔ (1)

حدیث ۲: صحیح بخاری و مسلم میں عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

(1) صحیح بخاری، کتاب المناقب، باب نسبہ الیمن، ۱/۱۸۱، الحدیث: ۳۵۰۷، ج ۲، ص ۷۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ سلمیٰ ہیں، بیحد الرضوان میں شریک ہوئے، بہت ہی بڑے بہادر اور پیادہ لڑنے والوں کے امام تھے، تیر اندازی میں کمال رکھتے تھے، آپ ہی سے بھیڑیے نے کلام کیا تھا، اسی برس عمر پائی ۳۷ھ میں وفات ہوئی، جنت البقیع میں مدفون ہوئے۔

۲۔ بعض شارحین نے فرمایا کہ یہاں سوت سے مراد ایک خاص جگہ ہے جو مدینہ منورہ میں تھی، بعض نے فرمایا کہ سوت ساق کی جمع ہے بمعنی پیادہ یعنی وہ لوگ پیدل تیر اندازی کرتے تھے ظاہر بھی یہی ہے کیونکہ بازار میں تیر اندازی مشکل ہے وہاں لوگوں کا جمع ہوتا ہے۔

۳۔ یعنی اسماعیل علیہ السلام تیر اندازی میں کمال رکھتے تھے تم ان کی اولاد ہو تم بھی اس میں کمال پیدا کرو تمہارے باپ کی میراث ہے۔

۴۔ یعنی یہ فرمان عالی سن کر دوسرے فریق نے تیر اندازی بند کر دی۔

۵۔ یعنی حضور آپ تو ان دوسروں کے ساتھ ہو گئے ہم بے سہارا رہ گئے پھر ہم کس کے بل بوتے پر تیر اندازی کریں یہ عرض معروض اس دوسرے فریق نے کی۔

۵۔ یعنی ہم تمہارے دونوں فریقوں کے معاون اور مددگار ہیں یہ معیت سے مراد لی ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۷۵۸)

نے مضر (2) گھوڑوں میں حفیاء (3) سے دوڑ کرائی اور اس کی انتہائی مسافت شعیۃ الوداع تھی اور دونوں کے مابین چھ

(2) صحیح بخاری، کتاب بھودا السیر، باب غایۃ السبق للخیل المفسرة... إلخ، الحدیث: ۲۸۷۰، ج ۲، ص ۲۷۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ضار کی صورت یہ ہوتی ہے کہ گھوڑے کو مصالحے دے کر فرہ کیا جائے پھر اس کی خوراک کم کر کے کسی بند جگہ میں بندھ دیا جائے تو جھول وغیرہ اس پر کس دی جائے حتیٰ کہ پسینہ اسے خوب چلے اور گھوڑا قدرے دبلے ہو کہ اپنی اصلی حالت پر آ جائے ایسا گھوڑا بہت قوی ہوتا ہے اس عمل کو ضار کہتے ہیں اور ایسے گھوڑے کو مضر کہا جاتا ہے، اس کا مادہ مضر ہے یعنی بمعنی دہلا پن اور پیٹ کا پیٹھ سے لگ جانا۔

(مرقات وغیرہ)

۲۔ حفیاء حیفاح کے فتح سے مدینہ منورہ سے چند میل کے فاصلہ پر ایک جگہ کا نام ہے شعیۃ بمعنی پہاڑ کی گھاٹی اسے شعیۃ وداغ اس لیے کہتے ہیں کہ اہل مدینہ اپنے مہمان کو یہاں تک پہنچانے جاتے تھے، یہاں سے اسے وداغ یعنی رخصت کرتے تھے۔ فقیر نے اس جگہ کی زیارت کی ہے اب وہاں ایک مسجد بنی ہوئی ہے جسے مسجد وداغ کہتے ہیں، اس کے متصل موقف سیارات یعنی لاریوں کا اڈا ہے اور لکڑی و کوئلہ کی ٹال ہے مشہور جگہ ہے۔

۳۔ عربی میل کہ تین میل کا ایک کوس ہوتا ہے تو چھ میل کے دو کوس بنتے ہوئے اب عرب شریف میں بجائے میل کے کیو ہوتے ہیں ہمارے پاکستانی پونا میل کا ایک کیلو ہے۔

۴۔ ذریق ایک قبیلہ کا نام ہے جس کے مورث اعلیٰ کا نام ذریق تھا اس قبیلہ کے محلہ میں یہ مسجد تھی اس لیے اسے مسجد بنی ذریق کہتے تھے۔
۵۔ چونکہ ضار کیا ہوا گھوڑا بہت قوی ہوتا ہے اس لیے اس کی ڈور کا فاصلہ زیادہ رکھا گیا اور بغیر ضار والا گھوڑا اس سے ہلکا اس لیے اس کا فاصلہ تھوڑا سمجھو یز ہوا۔ اس سے معلوم ہوا کہ گھوڑا دوڑ کرانا جائز بلکہ سنت ہے۔ بشرطیکہ اس پر مالی ہار جیت نہ ہو ورنہ پھر حرام ہے۔
(مرآۃ المتابعین شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۷۶۳)

(3) سنن ترمذی، کتاب الجہاد، باب ما جاء فی الرہان والسبق، الحدیث: ۱۷۰۶، ج ۳، ص ۲۶۷.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ سبق اور ق کے فتح سے وہ مال جو آگے نکل جانے والے کو دیا جائے یعنی مالی شرط لگانا کہ جیتنے والا ہارنے والے سے اتنا ملے یہ تمام مقامات میں تو حرام ہے کہ جو ہے مگر ان تین چیزوں میں جائز ہے کہ یہ تیاری جہاد کا ذریعہ ہے اس سے مجاہد کو تیاری جہاد کا شوق پیدا ہوتا ہے۔ (مرقات)

۲۔ یعنی تیاری جہاد کے لیے مسلمان آپس میں مقابلۃ تیر اندازی کریں اور شرط یہ ہو کہ اگر میرا تیر پیچھے رہ جائے وہ اتنی رقم آگے تیر والے کو دے، یوں ہی اونٹ یا گھوڑوں کی دوڑ کرنا مالی شرط پر کہ پیچھے رہ جانے والا اتنی رقم آگے والے کو دے یہ جائز ہے۔ علماء فرماتے ہیں کہ تیر اندازی میں پتھر پھینکنے اور گھوڑا دوڑ میں خجروں گدھوں کی دوڑ اور خود اپنی دوڑ بھی داخل ہے کہ جہاد کی تیاری کے موقع پر ان سے

میل مسافت تھی اور جو گھوڑے مضمر نہ تھے ان کی دوڑ شیعہ سے مسکھ بنی زریق تک، دہلی ان دونوں میں ایک میل کا فاصلہ تھا۔ (4)

حدیث ۳: ترمذی و ابو داؤد و نسائی نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: مسابقت نہیں مگر تیر اور اونٹ اور گھوڑے میں۔ (5)

چیزوں میں مقابلہ کرنا جائز ہے۔ (مرقات) خیال رہے کہ ان چیزوں میں دوطرف مالی شرط حرام ہے کہ جو ہے لہذا اس کے جواز کی صورت یہ ہے کہ تیسرا شخص مال رکھے اور کہے کہ جو آگے بڑھ جائے اسے یہ مال ملے گا یہ جائز ہے کہ یہ جو نہیں انعام ہے، یا فریقین میں سے ایک شخص کہے کہ اگر تو مجھ سے آگے بڑھ گیا تو تجھے اتنا مال میں دوں گا لیکن اگر میں تجھ سے آگے نکل گیا تو تجھ سے کچھ نہ دوں گا یہ بھی جائز ہے کہ یہ بھی انعام ہے جو انہیں، باقی کبوتروں کتوں وغیرہ کے مقابلہ میں یہ بھی حرام ہے کہ بدعت ہے۔ (اشعۃ اللمعات) لہذا اس حدیث کی بنا پر آج کل کی مردوجہ رئیس وغیرہ کو جائز نہیں کہا جاسکتا کہ یہ خالص جوا ہے اور حرام ہے۔ دوطرفہ مالی شرط کے جواز کی ایک صورت یہ ہے کہ تیسرا گھوڑا بیچ میں داخل کر دیا جائے جسے محلل کہتے ہیں اس کا ذکر اگلی حدیث میں آ رہا ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۶۸)

(4) شرح السنۃ، کتاب اسیر و الجہاد، باب أخذ المال علی المسابقة...، الخ، الحدیث: ۲۶۳۸، ج ۵، ص ۷۵۳.

(5) سنن ابی داؤد، کتاب الجہاد، باب فی المحلل، الحدیث: ۲۵۷۹، ج ۳، ص ۲۲.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ حدیث گزشتہ حدیث کی ایک صورت کی شرح ہے۔ اس کا طریقہ یہ ہے کہ معاً زید اور عمر اپنے گھوڑے مقابلہ میں دوڑا رہے ہیں تو بکر نے بھی ان کے درمیان اپنا گھوڑا کھڑا کر دیا اور شرط یہ ٹھہری کہ اگر بکر کا گھوڑا نصب العین حد پر پہلے پہنچ گیا پھر زید و عمر کے گھوڑے ایک ساتھ یا آگے پیچھے وہاں پہنچے تو بکر ان دونوں سے سو سو روپیہ لے گا اور اگر زید و عمر کے گھوڑے ایک ساتھ وہاں پہلے پہنچ گئے پھر تیسرا گھوڑا بکر کا پہنچا تو کسی کو کچھ نہ ملے گا اور اگر زید و عمر کے گھوڑوں میں سے کسی کا گھوڑا پہلے پہنچ گیا پھر دوسرا گھوڑا بکر کے گھوڑے کے ساتھ یا آگے پیچھے پہنچے تو یہ اگلے گھوڑے والا یہ پوری رقم دو سو روپیہ پر قبضہ کرے گا اور اگر بکر کا گھوڑا اور اس کے ساتھ پہلے گھوڑوں میں سے ایک گھوڑا، ایک ساتھ پہلے پہنچے پھر ایک گھوڑا بعد میں پہنچا تو وہ دونوں اگلے گھوڑے والے اس رقم پر قبضہ کر لیں یہ جائز ہے کہ ب جو نہ ہو۔ (مرقات)

۲۔ یعنی اگر اس تیسرے شخص بکر کو یقین ہے کہ میرا گھوڑا ان دونوں سے آگے نکلے گا کہ یہ تیز ہے وہ دونوں ست تو اس مال کا لینا بکر کو بہتر نہیں اور اگر مشکوک معاملہ ہو تو مال اسے حلال ہے۔ خلاصہ کلام یہ ہے کہ گھوڑے دوڑ میں دونوں فریقوں کا مالی شرط لگانا ہر جیت مقرر کرنا جوا اور حرام ہے لیکن جب تیسرا آدمی ان میں اپنا گھوڑا شامل کر دے جو مال نہ دے اور اسے اپنے اس گھوڑے کے جیتنے کا یقین بھی نہ ہو شک میں ہو کہ نہ معصوم جیتے یا ہارے تو وہ دونوں فریق مالی ہار جیت ملے کر سکتے ہیں اور وہ عمل جوا نہ رہے گا۔ اس تیسرے گھوڑے کو شریعت میں سے

حدیث ۴: شرح سنہ میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: دو گھوڑوں میں ایک اور گھوڑا شامل کر لیا اور معلوم ہے کہ یہ پیچھے رہ جائے گا تو اس میں خیر نہیں اور اگر اندیشہ ہے کہ یہ آگے جاسکتا ہے تو مضائقہ نہیں۔ (6) یعنی پہلی صورت میں ناجائز ہے اور دوسری صورت میں جائز۔

حدیث ۵: ابو داؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: دو گھوڑوں میں ایک اور گھوڑا شامل کیا اور اس کے پیچھے ہو جانے کا علم نہیں ہے تو قمار (جوا) نہیں اور معلوم ہے کہ پیچھے رہ جائے گا تو جوا ہے۔ (7)

محلل کہتے ہیں یعنی اس عمل یا اس مال کو حلال کرنے والا اب جیت و ہار کی چار پانچ صورتیں ہو گئیں جو ابھی عرض کی گئیں۔

۳۔ یہاں ان یسبق معروف بھی ہو سکتا ہے اور مجہول بھی یعنی اس کے آگے رہنے کا امن و اطمینان ہو یا پیچھے رہ جانے سے امن ہو۔

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۷۶۹)

(6) المرجع السابق، باب فی الجلب علی الخیل فی المساق، الحدیث: ۲۵۸۱، ج ۳، ص ۴۳۔

حکیم ارامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کے حالات بار بار بیان ہو چکے، آپ وہ ہی صحابی ہیں جو تیس سال بیمار رہے اور اس بیماری پر صابر و شاکر رہے، آپ کو فرشتے سلام کرتے تھے۔

۲۔ یعنی گھوڑ دوڑ میں دونوں فریق یا ایک فریق نہ جلب کرے نہ جب یہ دونوں لفظ کتاب الزکوٰۃ میں گزر چکے ہیں مگر وہاں ان کے اور معنی تھے یہاں جلب کے معنی ہیں اپنے گھوڑے کے ساتھ دوسرے گھوڑے پر سوار ہو کر دوڑنا اور شور مچا کر ڈانٹ کر اس دوڑ والے گھوڑے کو تیز کرنا۔ اور جب کے معنی ہیں اس دوڑنے والے گھوڑے کے ساتھ اور گھوڑا رکھنا اگر راہ میں وہ گھوڑا تھک جائے تو اس دوسرے کو بازی میں لگا دیا جائے۔ چاہے یہ کہ دوڑ کی حالت میں گھوڑوں کو اپنے حال پر چھوڑ دیا جائے وہ خود اپنی مرضی و طاقت سے دوڑیں جو آگے نکل جائے وہ جیتے۔ لفظ فی الرحان یا تو حضور انور کا ہی فرمان عالی ہے یا کسی راوی کا ہے جو حدیث کی تفسیر کے لیے بولا گیا یعنی جب اور جب گھوڑ دوڑ میں ممنوع ہے اور جگہ نہیں۔

۳۔ ترمذی نے وہاں زیادتی یہ فرمائی ہے ولا شغار فی الاسلام ومن اتعجب نعبۃ للیس مناعنی اسلام میں شغار (مقابلہ کا نواح بغیر مہر) نہیں درجولوت مچائے وہ ہم میں سے نہیں، یہ حدیث نسائی نے بھی بروایت حضرت انس نقل فرمائی۔

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۷۷۰)

(7) سنن ابی داؤد، کتاب الجھاد، باب فی السبق علی الرجل، الحدیث: ۲۵۷۸، ج ۳، ص ۴۲۔

حکیم امت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی بحالت سفر کسی منزل پر ہم نے قیام کیا میدان تھامرات کے اندھیرے یا دن میں اکیلے میں میں نے اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے۔

حدیث ۶: ابو داؤد و نسائی نے عمران بن حصین رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جلب و جنب نہیں ہیں یعنی گھوڑ دوڑ میں یہ جائز نہیں کہ کوئی دوسرا شخص اس کے گھوڑے کو ڈانٹے اور مارے کہ یہ تیز دوڑنے لگے اور نہ یہ کہ سوار اپنے ساتھ کوئل گھوڑا (یعنی خالی گھوڑا) رکھے کہ جب پہلا گھوڑا تھک جائے تو دوسرے پر سوار ہو جائے۔

حدیث ۷: ابو داؤد نے عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ہمراہ یہ سفر میں تھیں۔ کہتی ہیں: میں نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) سے پیدل مسابقت کی اور میں آگے ہو گئی پھر جب میرے جسم میں گوشت زیادہ ہو گیا یعنی پہلے سے کچھ موٹی ہو گئی، میں نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کے ساتھ دوڑ کی۔ اس مرتبہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) آگے ہو گئے اور یہ فرمایا کہ یہ اس کا بدلہ ہو گیا۔



دوڑ لگائی کہ یہ دیکھیں کون آگے نکل جائے، یہ دوڑ سواری پر نہ تھی پاؤں پر تھی میں آگے نکل گئی حضور نے خود ہی آپ کو آگے نکل جانے دیا ہوگا انہیں خوش کرنے کے لیے۔

۲۔ یہ پتہ نہ لگا کہ یہ دوڑ کس جگہ ہوئی بہر حال کچھ عرصہ کے بعد ہوئی ہوگی اور اس دوڑ میں آپ پیچھے رہ گئیں، یہ ہے اپنی ازدواج پاک سے اخلاق کا برتاؤ۔ ایسے اخلاق سے گھر جنت بن جاتا ہے، مسلمان یہ اخلاق بھول گئے، خیال رہے کہ ام المؤمنین عائشہ صدیقہ زکین میں حضور کے نکاح میں آئیں جب کہ حضور کی عمر شریف پچاس سال کے قریب تھی، اس قدر تفاوت عمر کے باوجود آپ کبھی نہ گھبرائیں کیوں ان اخلاق کریمانہ کی وجہ سے، باقی بیویاں بیوگان اور عمر رسیدہ تھیں لہذا حدیث پر اعتراض نہیں کہ گڑیاں کھلانا دوڑ لگانا، کھیل دکھانا صرف عائشہ صدیقہ ہی سے کیوں ہے دوسری بیویوں سے کیوں نہیں۔

۳۔ یعنی اب کیسے، ہم جیت گئے بدلہ ہو گیا۔ فتاویٰ قاضی خان میں ہے کہ چار چیزوں میں دوڑ جائز ہے اونٹ، گھوڑا، تیر اندازی، پیدل، ان میں دو طرفہ ہاں کی شرط حرام ہے کہ یہ جوا ہے، یک طرفہ جائز ہے کہ انعام ہوں اگر تیسرا کہہ دے کہ تم میں سے جو جیتے گا اسے یہ انعام ملے گا جائز ہے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۱۷۲)

مسائل فقہیہ

مسابقت کا مطلب یہ ہے کہ چند شخص آپس میں یہ طے کریں کہ کون آگے بڑھ جاتا ہے جو سبقت لے جائے اس کو یہ دیا جائے گا یہ مسابقت صرف تیر اندازی میں ہو سکتی ہے یا گھوڑے، گدھے، خچر میں، جس طرح گھوڑ دوڑ میں ہوا کرتا ہے کہ چند گھوڑے ایک ساتھ بھگائے جاتے ہیں جو آگے نکل جاتا ہے، اس کو ایک رقم یا کوئی چیز دی جاتی ہے۔ اونٹ اور آدمیوں کی دوڑ بھی جائز ہے کیونکہ اونٹ بھی اسباب جہاد میں ہے یعنی یہ جہاد کے لیے کارآمد چیز ہے۔ مطلب یہ ہے کہ ان دوڑوں سے مقصود جہاد کی تیاری ہے لہو و لعب مقصود نہیں اگر محض کھیل کے لیے ایسا کرتا ہے تو مکروہ ہے اسی طرح اگر فخر اور اپنی بڑائی مقصود ہو یا اپنی شجاعت و بہادری کا اظہار مقصود ہو تو یہ بھی مکروہ ہے۔ (1)

مسئلہ ۱: سبقت لے جانے والے کے لیے کوئی چیز مشروط نہ ہو تو ان مذکور اشیا کے ساتھ اس کا جواز خاص نہیں، بلکہ ہر چیز میں مسابقت ہو سکتی ہے۔ (2)

مسئلہ ۲: سابق کے لیے جو کچھ ملنا طے پایا ہے وہ اس کے لیے حلال و طیب ہے مگر وہ اس کا مستحق نہیں یعنی اگر دوسرا اس کو نہ دے تو قاضی کے یہاں دعوے کر کے جبراً وصول نہیں کر سکتا۔ (3)

مسئلہ ۳: مسابقت جائز ہونے کے لیے شرط یہ ہے کہ صرف ایک جانب سے مال شرط ہو، یعنی دونوں میں سے ایک نے یہ کہا کہ اگر تم آگے نکل گئے تو تم کو مثلاً سو روپے دوں گا اور میں آگے نکل گیا تو تم سے کچھ نہیں لوں گا۔ دوسری صورت جواز کی یہ ہے کہ شخص ثالث نے ان دونوں سے یہ کہا کہ تم میں جو آگے نکل جائے گا اس کو اتنا دوں گا جیسا کہ اکثر حکومت کی جانب سے دوڑ ہوتی ہے اور اس میں آگے نکل جانے والے کے لیے انعام مقرر ہوتا ہے ان لوگوں میں باہم کچھ لینا دینا طے نہیں ہوتا ہے۔ (4)

مسئلہ ۴: اگر دونوں جانب سے مال کی شرط ہو مثلاً تم آگے ہو گئے تو میں اتنا دوں گا اور میں آگے ہو گیا تو میں اتنا لوں گا یہ صورت جواز اور حرام ہے، ہاں اگر دونوں نے اپنے ساتھ ایک تیسرے شخص کو شامل کر لیا جس کو محلل کہتے ہیں اور

(1) الدر المختار رد المحتار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۶۳۔

(2) الدر المختار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۶۶۔

(3) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السادس فی المسابقہ، ج ۵، ص ۲۲۲۔

(4) الدر المختار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۶۵، وغیرہ۔

ٹھہرایہ کہ اگر یہ آگے نکل گیا تو رقم مذکور یہ لے گا اور پیچھے رہ گیا تو یہ دے گا کچھ نہیں، اس صورت میں دونوں جانب سے مال کی شرط جائز ہے۔ (5)

مسئلہ ۵: محلل کے لیے یہ ضرور ہے کہ اس کا گھوڑا بھی انھیں دونوں جیسا ہو یعنی ہو سکتا ہے کہ اس کا گھوڑا آگے نکل جائے یا پیچھے رہ جائے دونوں باتوں میں سے ایک کا یقین نہ ہو اور اگر اس کا گھوڑا ان جیسا نہ ہو معلوم ہو کہ وہ پیچھے ہی رہ جائے گا یا معلوم ہو کہ یقیناً آگے نکل جائے گا تو اس کے شامل کرنے سے شرط جائز نہ ہوگی۔ (6)

مسئلہ ۶: محلل یعنی شخص ثالث کا گھوڑا اگر دونوں سے آگے نکل گیا تو دونوں نے جو کچھ دینے کو کہا تھا، یہ محلل دونوں سے لے لے گا اور اگر دونوں سے پیچھے رہ گیا تو یہ ان دونوں کو کچھ نہیں دے گا، بلکہ ان دونوں میں جو آگے ہو گیا وہ دوسرے سے وہ لے گا جس کا دینا شرط ٹھہرا ہے۔ اس کی صورت یہ ہے کہ دو شخصوں نے پان پانسو کی بازی لگائی اور محلل کو شامل کر لیا کہ اگر محلل آگے ہو گیا تو دونوں سے پان پانسو یعنی ایک ہزار لے لے گا اور اگر محلل آگے نہ ہوا تو ان دونوں کو وہ کچھ نہ دے گا بلکہ ان دونوں میں جو آگے ہو گا وہ دوسرے سے پان سو لے گا اور اگر دونوں کے گھوڑے ایک ساتھ پہنچے تو ان دونوں میں کوئی بھی دوسرے کو کچھ نہ دے گا، نہ محلل سے کچھ لے گا اور اگر ان دونوں میں ایک کا گھوڑا اور محلل کا گھوڑا دونوں ایک ساتھ پہنچے تو محلل اس سے کچھ نہیں لے سکتا بلکہ اس سے لے گا جس کا گھوڑا پیچھے رہ گیا اور دوسرا بھی اسی پیچھے رہ جانے والے سے لے گا۔ (7)

مسئلہ ۷: مسابقت میں شرط یہ ہے کہ مسافت اتنی ہو جس کو گھوڑے طے کر سکتے ہوں اور جتنے گھوڑے لیے جائیں، وہ سب ایسے ہوں جن میں یہ احتمال ہو کہ آگے نکل جائیں گے۔ اسی طرح تیر اندازی اور آدمیوں کی دوڑ میں بھی یہی شرطیں ہیں۔ (8)

مسئلہ ۸: اونٹوں کی دوڑ میں آگے ہونے کا مطلب یہ ہے کہ شانہ آگے ہو جائے گردن کا اعتبار نہیں اور گھوڑوں کی دوڑ میں جس کی گردن آگے ہو جائے وہ آگے ہونے والا مانا جائے گا۔ (9) مگر اس زمانہ کا رواج یہ ہے کہ گھوڑوں میں

(5) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السادس فی المسابقت، ج ۵، ص ۳۲۳۔

والدر المختار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی المبیع، ج ۹، ص ۶۶۵۔

(6) الدر المختار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی المبیع، ج ۹، ص ۶۶۵۔

(7) الدر المختار و رد المحتار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی المبیع، ج ۹، ص ۶۶۵۔

(8) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحۃ، فصل فی المبیع، ج ۹، ص ۶۶۵۔

(9) المرجع السابق۔

کنوتی (یعنی گھوڑے کے کان) کا اعتبار کیا جاتا ہے اور کنوتی بھی جب ہی آگے ہوگی کہ گردن آگے ہو جائے۔

مسئلہ ۹: طلبہ نے کسی مسئلہ کے متعلق شرط لگائی کہ جس کی بات صحیح ہوگی اس کو یہ دیا جائے گا، اس میں بھی وہ ساری تفصیل ہے جو مسابقت میں مذکور ہوئی یعنی اگر ایک طرف سے شرط ہو تو جائز ہے دونوں طرف سے ہو تو ناجائز، مثلاً ایک طالب علم نے دوسرے سے کہا چلو استاذ سے چل کر پوچھیں اگر تمہاری بات صحیح ہو تو میں تم کو یہ دوں گا اور میری صحیح ہوئی تو تم سے کچھ نہیں لوں گا کہ یہ ایک جانب سے شرط ہوئی یا ایک نے دوسرے سے کہا آؤ میں اور تم مسائل میں گفتگو کریں اگر تمہاری بات صحیح ہوئی تو یہ دوں گا اور میری صحیح ہوئی تو کچھ نہ لوں گا، یہ جائز ہے۔ (10)

مسئلہ ۱۰: طلبہ میں یہ ٹھہرا کہ جو پہلے آئے گا اس کا سبق پہلے ہوگا اس صورت میں جو درس گاہ میں پہلے آیا اس کا حق مقدم ہے اور اگر ہر ایک پہلے آنے کا مدعی (یعنی دعویٰ کرنے والا) ہے تو جو گواہوں سے پہلے آنا ثابت کر دے وہ مقدم ہے اور اگر گواہ نہ ہوں تو قرعہ ڈالا جائے جس کا نام پہلے نکلے وہ مقدم ہے۔ (11)



(10) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السادس فی المسابقت، ج ۵، ص ۳۲۳.

(11) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب المحظور والاباحۃ، فصل فی التبیح....، ج ۲، ص ۳۸۰.

کسب کا بیان

اتنا کمانا فرض ہے جو اپنے لیے اور اہل و عیال کے لیے اور جن کا نفقہ اس کے ذمہ واجب ہے ان کے نفقہ کے لیے اور اسے دین کے لیے کفایت کر سکے اس کے بعد اسے اختیار ہے کہ اتنے ہی پر بس کرے یا اپنے اور اہل و عیال کے لیے کچھ پس ماندہ رکھنے (یعنی بچا کر رکھنے) کی بھی سعی و کوشش کرے۔ ماں باپ محتاج و تنگدست ہوں تو فرض ہے کہ کما کر انھیں بقدر کفایت دے۔ (1)

(1) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس عشر فی الکسب، ج ۵، ص ۳۳۸، ۳۳۹۔

حدیث میں ہے: کفی بالمرء اثماً ان یضیع من یقوت۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۱) سنن ابوداؤد کتاب الزکوٰۃ آفتاب عالم پریس لاہور ۱/۲۳۸ (مسند احمد بن حنبل دار الفکر بیروت ۲/۱۶۰، ۱۹۳، ۱۹۵) (المعجم الکبیر

حدیث ۱۳۴۱۵ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۲/۳۸۲)

کسی آدمی کے گنہگار ہونے کے لئے اتنا کافی ہے کہ وہ اسے ضائع کر دے جس کی روزی اس کے ذمہ تھی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

کسب حلال کا ثواب

اللہ عزوجل فرماتا ہے،

لَیْسَ عَلَیْکُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّکُمْ

ترجمہ کنزالایمان: تم پر کچھ گناہ نہیں کہ اپنے رب کا فضل تلاش کرو۔ (پ ۲، البقرہ: ۱۹۸)

اور فرماتا ہے،

فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوا مِن فَضْلِ اللّٰهِ اذْکُرُوا اللّٰهَ کَیۡدَۃً لَّعَلَّکُمْ تُفۡحِیۡحُوۡنَ ﴿۱۰﴾

ترجمہ کنزالایمان: پھر جب نماز ہو چکے تو زمین میں پھیل جاؤ اور اللہ کا فضل تلاش کرو اور اللہ کو بہت یاد کرو اس امید پر کہ فلاح پاؤ۔

(پ ۲۸، الجمعہ: ۱۰)

حضرت سیدنا مقدم بن معدیکرب رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ نور کے پیکر، تمام نبیوں کے سرور و دو جہاں کے تاجور، سبط بن خرد و بر صنی

اللہ تعالیٰ علیہ السلام نے فرمایا، کسی نے اپنے ہاتھ کی کمائی سے بہتر کبھی کوئی کھانا نہیں کھایا اور بے شک، اللہ عزوجل کے نبی حضرت سیدنا

داؤد علیہ السلام اپنے ہاتھ کی کمائی سے کھایا کرتے تھے۔

(صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب کسب الرجل وعلیہ بیہ، رقم ۲۰۷۲، ج ۲، ص ۱۱)

ایک روایت میں ہے کہ بندے نے اپنے ہاتھ کی کمائی سے پاکیزہ کبھی کوئی کمائی نہیں کھائی اور آدمی اپنی جان، گھر والوں، بچوں

مسئلہ ۱: قدر کفایت سے زائد اس لیے کماتا ہے کہ فقراء و مساکین کی خبر گیری کر سکے گا یا اپنے قریبی رشتہ داروں

اور اپنے خادم پر جو کچھ خرچ کرتا ہے وہ صدقہ ہے۔ (سنن ابن ماجہ، کتاب التجارات، باب الصدق علی، رقم ۲۱۳۸، ج ۳، ص ۶)
حضرت سیدنا براہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ حضور پاک، صاحب لولاک، سیاح الاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی بارگاہ میں سوال کیا گیا، کون سی کمائی پاکیزہ ہے؟ فرمایا کہ بندے کے اپنے ہاتھ کی کمائی اور ہر حلال کمائی۔

(مستدرک، کتاب البیوع، باب لیس مناسن عشنا، رقم ۲۲۰۳، ج ۲، ص ۳۰۱)
حضرت سیدنا ابن عمر رضی اللہ عنہما سے روایت ہے کہ سید المہلخین، رزخۃ للعالمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی بارگاہ میں سوال کیا گیا کہ کون سی کمائی افضل ہے؟ فرمایا کہ بندے کے اپنے ہاتھ کی کمائی اور ہر حلال کمائی۔

(مجمع الزوائد، کتاب البیوع، باب ای کسب الطیب، رقم ۶۲۱۲، ج ۳، ص ۱۰۲)
حضرت سیدنا ابن عمر رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ بے شک اللہ عزوجل پیشہ ور مومن کو پسند فرماتا ہے۔

(المعجم الاوسط، باب میم، رقم ۸۹۳۳، ج ۶، ص ۳۲۷)
حضرت سیدنا عائشہ رضی اللہ عنہا سے روایت ہے کہ جو اپنے ہاتھ کے کام سے تھک کر شام کرتا ہے وہ مغفرت یافتہ ہو کر شام کرتا ہے۔

(مجمع الزوائد، کتاب البیوع، باب نوم الصباح، رقم ۶۲۳۸، ج ۳، ص ۱۰۸)
حضرت سیدنا کعب بن عجرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ ایک شخص اللہ عزوجل کے محبوب، دانائے غیب، مقررہ غیب صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے قریب سے گزرا تو صحابہ کرام علیہم الرضوان نے اس کو دیکھ کر عرض کیا، یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اکاش اس کا یہ حال اللہ عزوجل کی راہ میں ہوتا۔ تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اگر یہ شخص اپنے بچوں کے لئے رزق کی تلاش میں نکلا ہے تو یہ اللہ عزوجل کی راہ میں ہے اور اگر یہ شخص اپنے بوڑھے والدین کے لئے رزق کی تلاش میں نکلا ہے تو یہ اللہ عزوجل کی راہ میں ہے اور اگر یہ دکھاوے اور بڑائی کے اظہار کے لئے نکلا ہے تو یہ شیطان کی راہ میں ہے۔ (المعجم الکبیر، رقم ۲۸۲، ج ۱۹، ص ۱۲۹)

حضرت سیدنا ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ جس نے حلال مال کمایا پھر اسے خود کھایا یا اس کمائی سے لباس پہنا اور اللہ عزوجل کی دیگر مخلوق کو کھلایا اور پہنایا تو اس کا یہ عمل اس کی زکوٰۃ ہے۔

(الاحسان جرتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرضا، باب النفقة، رقم ۴۲۲۲، ج ۶، ص ۲۱۸)
حضرت سیدنا ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ نور کے پیکر، تمام غیبوں کے سرور، دو جہاں کے تاجور، سلطان بحر و بر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ جس نے حلال مال کمایا اور سنت کے مطابق عمل کیا اور لوگ اس کے شر سے محفوظ رہے تو وہ جنت میں داخل ہوگا۔ صحابہ کرام علیہم الرضوان نے عرض کیا، یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم! آپ کی امت میں آج کل ایسے لوگ تو بہت زیادہ ہیں۔ فرمایا کہ

میرے بعد کے زمانوں میں بھی ہوں گے۔ (ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب (۱۲۵) رقم ۲۵۲۸، ج ۴، ص ۲۳۳)

حضرت سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ سرور کونین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے سامنے یہ آیت کریمہ پڑھی گئی،

کی مدد کریگا یہ مستحب ہے اور یہ نفل عبادت سے افضل ہے اور اگر اس لیے کماتا ہے کہ مال و دولت زیادہ ہونے سے میری عزت و وقار میں اضافہ ہوگا، فخر و تکبر مقصود نہ ہو تو یہ مباح ہے اور اگر محض مال کی کثرت یا تفاخر مقصود ہے تو منع ہے۔ (2)

مسئلہ ۲: جو لوگ مساجد اور خانقاہوں میں بیٹھ جاتے ہیں اور بسر اوقات کے لیے کچھ کام نہیں کرتے اور اپنے کو متوکل بتاتے ہیں حالانکہ ان کی نگاہیں اس کی منتظر رہتی ہیں کہ کوئی ہمیں کچھ دے جائے وہ متوکل نہیں، اس سے اچھا یہ تھا کہ کچھ کام کرتے اس سے بسر اوقات کرتے۔ (3)

اسی طرح آج کل بہت سے لوگوں نے پیری مریدی کو پیشہ بنا لیا ہے، سالانہ مریدوں میں دورہ کرتے ہیں اور مریدوں سے طرح طرح سے رقبیں کھسوتے ہیں جس کو نذرانہ وغیرہ ناموں سے موسوم کرتے ہیں اور ان میں بہت سے ایسے بھی ہیں جو جھوٹ اور فریب سے بھی کام لیتے ہیں یہ ناجائز ہے۔

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا

ترجمہ کنز الایمان: اے لوگو! کھاؤ جو کچھ زمین میں حلال پاکیزہ ہے۔ (پ 2، البقرہ: 168)

تو حضرت سیدنا سعد بن ابودقاس رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کھڑے ہو کر عرض کیا، یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم! میرے لئے اللہ عزوجل سے دعا کیجئے کہ وہ مجھے مستجاب الدعوات بنادے۔ تو نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ اے سعد! اپنی غذا کو پاکیزہ کرلو مستحب الدعوات ہو جاؤ گے، اس ذات پاک کی قسم! جس کے دست قدرت میں محمد صلی اللہ علیہ وسلم کی جان ہے بیشک بندہ جب حرام کا ایک لقمہ اپنے پیٹ میں ڈالتا ہے تو چالیس دن تک اس کا کوئی عمل قبول نہیں کیا جاتا اور جس کا گوشت حرام سے پلا بڑھا ہو جہنم کی آگ اس کی زیادہ حقدار ہے۔ (المعجم الاوسط، باب میم، رقم ۶۴۹۵، ج ۵، ص ۳۴)

امیر المؤمنین حضرت سیدنا عمر بن خطاب رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ دنیا میٹھی اور سرسبز ہے، جس نے اس میں سے حلال طریقہ سے کمایا اور اسے کارِ ثواب میں خرچ کرے اللہ عزوجل اسے ثواب عطا فرمائے گا اور اپنی جنت میں داخل فرمائے گا اور جس نے اس میں حرام طریقہ سے کمایا اور اسے ناحق خرچ کیا اللہ عزوجل اس کے لئے ذلت و حقارت کے گھر کو حلال کر دے گا اور اللہ عزوجل، اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کے مال میں خیانت کرنے والے بہت سے لوگوں کے لئے قیامت کے دن جہنم ہوگی۔ اللہ عزوجل فرماتا ہے

كُلَّمَا خَبَتْ رِذْلُهُمْ سَجَدُوا

ترجمہ کنز الایمان: جب کبھی بچنے پر آئے گی ہم اسے اور بھڑکادیں گے۔ (پ 15، بنی اسرائیل: 97)

(شعب الایمان، باب فی قبض الید عن الاسوال المحرمہ رقم ۵۵۲، ج ۴، ص ۳۹۶)

(2) المربع السابق، ص ۳۹

(3) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس عشر فی الکسب، ج ۵، ص ۳۹

مسئلہ ۳: سب سے افضل کسب جہاد ہے یعنی جہاد میں جو مال غنیمت حاصل ہوا مگر یہ ضرور ہے کہ اس نے مال کے لیے جہاد نہ کیا ہو بلکہ اعلائے کلمۃ اللہ (۴) مقصود اصلی ہو جہاد کے بعد تجارت پھر زراعت پھر صنعت و حرفت کا مرتبہ ہے۔ (۵)

مسئلہ ۴: چرخہ کاتہ (یعنی چرخہ چلانے کا کام کرنا) عورتوں کا کام ہے، مرد کو چرخہ کاتنا مکروہ ہے۔ (۶)
مسئلہ ۵: جس کے پاس اس دن کے کھانے کے لیے موجود ہوا سے سوال کرنا حرام ہے۔ سائلوں اور مگد اگروں نے اس طرح پر جو مال حاصل کیا اور جمع کیا وہ خبیث مال ہے۔ (۷)

(۴) یعنی اللہ عزوجل کا نام اور دین اسلام کا سر بلند ہونا۔

(۵) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس عشر فی الکسب، ج ۵، ص ۳۴۹۔

(۶) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۷۱۔

(۷) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس عشر فی الکسب، ج ۵، ص ۳۴۹۔

اعلیٰ حضرت، امام ہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:
گدائی تین قسم ہے:

ایک غنی مالدار جیسے اکثر جوگی اور سادھو بچے، انھیں سوال کرنا حرام اور انھیں دینا حرام، اور ان کے دئے سے زکوٰۃ ادا نہیں ہو سکتی، فرض سر پر باقی رہے گا۔

دوسرے وہ کہ واقع میں قدر نصاب کے مالک نہیں مگر قوی و تندرست کسب پر قادر ہیں اور سوال کسی ایسی ضروریات کے لیے نہیں جو ان کے کسب سے باہر ہو کوئی حرفت یا مزدوری نہیں کی جاتی مفت کا کھانا کھانے کے عادی ہیں اور اس کے لیے بھیک مانگتے پھرتے ہیں انھیں سوال کرنا حرام، اور جو کچھ انھیں اس سے ملے وہ ان کے حق میں خبیث کہ حدیث شریف میں: لا تحمل الصدقة لثقی ولا لذی مرة سوی۔ اے صدقہ حلال نہیں کسی غنی کے لیے اور نہ کسی توانا و تندرست کے لیے (ت)

(۱) جامع الترمذی، ابواب الزکوٰۃ باب ما جاء من لا تحمل له الصدقة، ابن کثیر کتب خانہ رشیدیہ دہلی، ۱/ ۸۳

انھیں بھیک دینا منع ہے کہ معصیت پر اعانت ہے، لوگ اگر نہ دیں تو مجبور ہوں کچھ محنت مزدوری کریں۔ قال اللہ تعالیٰ ولا

تعاونوا علی الائمہ والعدوان۔ ۲۔ اللہ تعالیٰ کا مبارک فرمان ہے: گناہ اور زیادتی پر تعاون نہ کرو (ت) (۲۔ القرآن ۵/ ۲)
مگر ان کے دئے سے زکوٰۃ ادا ہو جائیگی جبکہ اور کوئی مانع شرعی نہ ہو کہ فقیر ہیں، قال اللہ تعالیٰ انما الصدقات للفقراء۔ ۳۔ اللہ تعالیٰ کا فرمان مبارک ہے صدقات فقرہ کے لیے ہیں (ت) (۳۔ القرآن ۹/ ۶۰)

تیسرے وہ عاجز ناتواں کہ نہ مال رکھتے ہیں نہ کسب پر قدرت، یا جتنے کی حاجت ہے اتنا کمانے پر قادر نہیں، انھیں بقدر حاجت سوال حلال، وراس سے جو کچھ ملے ان کے لیے طیب، اور یہ عمدہ مصارف زکوٰۃ سے ہیں اور انھیں دینا باعث اجر عظیم، یہی ہیں وہ جنھیں جھڑکن

حرام ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم (فتاویٰ رضویہ، جلد ۱۰، ص ۲۵۳، ۲۵۴ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

مسئلہ ۶: جو شخص علم دین و قرآن پڑھ کر کسب چھوڑ دیتا ہے وہ اپنے دین کو کھاتا ہے۔ (8) یعنی عالم یا قاری ہو کر بیٹھ گیا اور کمانا چھوڑ دیا یہ خیال کیے ہوئے ہے کہ لوگ مجھے عالم یا قاری سمجھ کر خود ہی کھانے کو دیں گے کمانے کی کیا ضرورت ہے، یہ ناجائز ہے۔ رہا یہ امر کہ قرآن مجید و علم دین کی تعلیم پر اجرت لینا اور اس کے پڑھانے کی نوکری کرنا، اس کو فقہائے متاخرین نے جائز بتایا ہے جس کو ہم اجارہ کے بیان میں ذکر کر چکے ہیں (9) یہ دین فروشی میں داخل نہیں۔

مسئلہ ۷: جس شخص نے حرام طریقہ سے مال جمع کیا اور مرگیا ورثہ کو اگر معلوم ہو کہ فلاں فلاں کے یہ اموال ہیں تو ان کو واپس کر دیں اور معلوم نہ ہو تو صدقہ کر دیں۔ (10)

مسئلہ ۸: اگر مال میں شبہ ہو تو ایسے مال کو اپنے قریبی رشتہ دار پر صدقہ کر سکتا ہے یہاں تک کہ اپنے باپ یا بیٹے کو دے سکتا ہے، اس صورت میں یہی ضرور نہیں کہ اجنبی ہی کو دے۔ (11)



(8) المرجع السابق.

(9) دیکھئے حصہ ۱۲، اجارہ کا بیان.

(10) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الخامس عشر فی الکسب، ج ۵، ص ۳۲۹.

(11) المرجع السابق.

امر بالمعروف ونہی عن المنکر کا بیان

اللہ تعالیٰ فرماتا ہے:

(وَلْتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿۱۰۴﴾) (1)

اور تم میں ایک ایسا گروہ ہونا چاہیے کہ بھلائی کی طرف بلائے اور اچھی بات کا حکم دے اور بری بات سے منع

(1) پ ۳، آل عمران ۱۰۴۔

نیکی کی دعوت دینا فرض کفایہ ہے:

نیکی کا حکم دینا اور برائی سے منع کرنا ہر مکلف، آزاد، غلام اور مرد و عورت پر واجب ہے لیکن واجب علی الکفایہ ہے۔ اس کی دلیل اللہ عز و جل کا یہ فرمان عالیشان ہے: "وَلْتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ" (پ ۳، آل عمران ۱۰۴) ترجمہ کنز الایمان: اور تم میں ایک گروہ ایسا ہونا چاہئے۔ "کیونکہ اگر یہ فرض عین ہوتا تو اللہ عز و جل ارشاد فرماتا: "وَلْتَكُونُوا"۔ ہاں! کبھی یہ فرض عین بھی ہو جاتا ہے جیسے اگر وہ ایسے مقام پر ہو جہاں کوئی دوسرا اس کا علم نہیں رکھتا یا دوسرا اس پر قدرت نہیں رکھتا۔

فرض کفایہ وہ ہوتا ہے کہ جسے اگر ایک شخص سرانجام دے دے تو اسے ثواب مل جائے گا اور باقیوں سے ذمہ داری ساقط ہو جائے گی۔ اسی وجہ سے علمائے کرام رحمہم اللہ السلام کے ایک طبقہ کے نزدیک اس کا نفع زیادہ ہونے کی وجہ سے یہ فرض عین سے افضل ہے۔

ایک شخص کے فرض کفایہ فعل ادا کرنے سے دوسرے سے اس کے ساقط ہونے میں شرط ہے کہ اسے دوسرے کے ادا کرنے کا یقین علم ہو ورنہ اس سے ساقط نہ ہوگا جیسے اپنے گمان سے (کہ دوسرے ادا کرتے ہوں گے) جان بوجھ کر کسی واجب کو ترک کر دینا۔ کیونکہ گناہ میں وار و مدار فاعل کی ذات پر ہوتا ہے نہ کہ نفس فعل پر۔ کیا آپ جانتے نہیں کہ جس نے کسی عورت کو اجنبی گمان کرتے ہوئے اس سے دلی کی حرمانت کہ وہ اس کی بیوی تھی تو اسے زنا کا گناہ ملے گا اور اس کے برعکس ہو (یعنی اجنبی عورت کو اپنی بیوی سمجھ کر اس سے دلی کی) تو اس پر کوئی گناہ نہیں۔

ہاتھ اور زبان سے برائی کو روکنے کے احکام:

اگر سب لوگ برابر طور پر ہاتھ اور زبان سے روک سکتے ہوں تو اس کی ذمہ داری سب پر عائد ہوگی اور اگر ایک شخص ہاتھ سے اور دوسرے زبان سے روکنے پر قادر ہوں تو پہلے کی ذمہ داری ہوگی، البتہ اگر زبان سے روکنے والے کے ذریعے برائی سے رکنا زیادہ آسان ہو یا زبان سے روکنے سے وہ ظاہری دباظنی طور پر رک جائے جبکہ ہاتھ سے روکنے سے صرف ظاہر اڑے تو اس صورت میں زبان سے روکنے والے کی ذمہ داری ہوگی۔

کرے اور یہی لوگ فلاح پانے والے ہیں۔

اور فرماتا ہے:

دل میں بُرا جانے کا حکم:

دل میں برا جاننا مکلف سے بالکل ساقط نہ ہوگا کیونکہ یہ نافرمانی کو ناپسند کرنا ہے جو ہر مکلف پر واجب ہے بلکہ علما کے ایک طبقہ کے نزدیک برائی کو دل میں برائہ جاننا کفر ہے۔ حضرت سیدنا امام احمد بن حنبل علیہ رحمۃ اللہ لاڈل بھی انہی میں شامل ہیں۔ کیونکہ حدیث پاک میں ہے کہ ”یہ ایمان کا کمزور ترین درجہ ہے۔“

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون النہی عن المنکر... الخ، الحدیث: ۱۷۷۱، ص ۶۸۸)

جو شخص ناواقفیت و جہالت کی بنا پر کسی برائی میں مبتلا ہو کہ اگر آگاہ ہو جائے تو اس سے رُک جائے تو اسے نرمی سے سمجھانا واجب ہے، یہاں تک کہ اگر اسے معلوم ہو کہ کسی دوسرے کو مخاطب کر کے سمجھانا اسے فائدہ دے گا تو دوسرے کو مخاطب کرے۔ یہ جو شخص برائی کو جاننے کے باوجود اس میں مبتلا ہو مثلاً بھتہ لینے اور نصیحت پر ڈنکار بنے والا، تو اسے نصیحت کرے اور اس گناہ کی وعید یاد دلا کر خوف دلائے۔ پھر درجہ بدرجہ انتہائی نرمی و خندہ پیشانی سے سمجھائے کیونکہ ہر چیز اپنی قضا و قدر کے ساتھ ہوتی ہے اور اللہ عز و جل کے لطف و کرم پر اپنی نظر رکھے کہ اس نے اس برائی سے بچایا، اگر وہ چاہتا تو اس کے برعکس کر دیتا بلکہ اب بھی وہ اس برائی میں مبتلا ہونے سے محفوظ نہیں۔

اگر زبان سے روکنے سے عاجز آجائے یا اس پر قادر نہ ہو اور شرش رُوئی، جھڑکنے، سختی کرنے اور غضب ناک ہونے کی قدرت رکھتا ہو تو یہ کرنا ضروری ہے اور صرف دل میں برا جاننا کافی نہیں۔ اگر اس نے وعظ و نصیحت نہ کی اور برائی میں مبتلا شخص کا اس پر ڈنکار ہنا معلوم ہوا تو اس سے سخت کلامی سے پیش آئے اور اُسے ڈانٹ ڈپٹ کرے مگر گالیاں نہ کہے جیسے یوں کہے: ”اے فاسق! اے جاہل! اے احمق! اے

اللہ عز و جل سے نہ ڈرنے والے!“

برائی سے منع کرنے والے کو چاہئے کہ غضب ناک ہونے سے بچے ورنہ اپنی نصرت کے لئے برائی سے منع کرے گا یا کسی اور فعلِ حرام میں مبتلا ہو جائے گا تو اس کا ثواب عذاب میں بدل جائے گا۔ یہ تمام احکام اس برائی کے لئے ہیں جو ہاتھ سے نہ روکی جاسکے اور جو ہاتھ سے دُور کی جاسکے اسے ہاتھ سے ختم کرنا ضروری ہے مثلاً غیر محترم شراب بہانا (یعنی ایسی شراب جو شراب ہی کے لئے رکھی گئی ہو نہ کہ سرکہ وغیرہ کے لئے)، آلاتِ لہو توڑنا، مرد سونا یا ریشم پہنے ہو تو اترا دینا، بکری وغیرہ کو توڑ پھوڑ کرنے سے روکنا اور جنسی، گندگی کھانے والے اور نجاست والے شخص سے نجاست ٹپک رہی ہو تو اسے مسجد سے باہر نکالنا۔ بلکہ اگر ہاتھ سے نہ روک سکے تو اسے اپنے پاؤں سے دھکیں دے یا کسی مددگار کے ذریعے اُسے دُور کرے اور شراب بہانے اور آلاتِ لہو کو بری طرح توڑنے سے بچے، البتہ اگر وہ توڑے بغیر نہ بھتی ہو یا خوف ہو کہ فاسق لوگ اسے لے لیں گے اور اسے روک لیں گے تو ہر وہ کام کرے جس کا کرنا ضروری ہو خواہ اسے جلدانا یا بہانا پڑے۔

(الرواجع عن الثیر، ف الکبائر)

(کُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ) (2)
تم بہتر ہو ان سب اُمتوں میں جو لوگوں میں ظاہر ہوئیں، بھلائی کا حکم دیتے ہو اور برائی سے منع کرتے ہو اور اللہ
(عزوجل) پر ایمان رکھتے ہو۔

(2) پ ۳۰، ل ۱۱۰۔

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّ وَجَلَّ ہِم خُوش نصیب ہیں

میرے شیخ طریقت، امیر اہلسنت، بانی دعوت اسلامی حضرت علامہ مولانا ابوبلال محمد الیاس عطار قادری رضوی دامت برکاتہم العالیہ اپنی
کتاب نیکی کی دعوت میں تحریر فرماتے ہیں:

الحمد للہ عزوجل ہم خوش نصیب ہیں کہ اللہ عزوجل کے حبیب مکرّم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا دامن کرم ہمارے گنہگار ہاتھوں میں آیا سہل
ہمارے پیارے اور میٹھے میٹھے آقا، مکی مدنی مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم تمام انبیاء کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام میں سب سے
افضل و اعلیٰ ہیں اور آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے صدقے میں آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی اُمت بھی تمام اہم سابقہ (یعنی پچھلی
اُمتوں) سے افضل ہے۔ افضلیت کا سبب ہرگز ہرگز یہ نہیں کہ اس اُمت میں عریایہ داروں کی کثرت ہوگی یا یہ لوگ دنیوی طور پر بہت
زیادہ تعلیم یافتہ ہوں گے، ان میں انجینئرز اور ڈاکٹر بکثرت ہوں گے، نہ ہی فضیلت کی یہ وجہ ہے کہ یہ جنگجو، بہادر اور طاقتور ہوں گے یا یہ
اس لیے افضل ہیں کہ نہایت ہی چالاک و زیرک (یعنی ہوشیار) ہوں گے بلکہ ان کی افضلیت کی وجہ تو یہ ہے کہ یہ اُمْرُ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهْیِ
عَنِ الْمُنْكَرِ (یعنی بھلائی کا حکم دینے اور برائی سے منع کرنے) کے اہم منصب پر فائز ہیں۔ اللہ عزوجل کرے کہ ہم اپنے اس منصبِ عالی
کی اہمیت سمجھنے میں کامیاب ہو جائیں۔

اُمْرُ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهْیِ عَنِ الْمُنْكَرِ کی تعریف

مفسر شہیر حکیم الامت حضرت مفتی احمد یار خان علیہ رحمۃ الجنان "تفسیر نعیمی" میں ان آیات کریمہ کے تحت فرماتے ہیں: اَلْمَعْرُوفُ "اور
اَلْمُنْكَرِ میں ساری بھلائیاں از مستحبات تا ایمانیات (یعنی مستحبات سے لے کر اسلامی عقائد تک) داخل ہیں، اور ساری بُرائیاں از
مکروہات تا کفریات (یعنی ناپسندیدہ باتوں سے لے کر ہر قسم کے کفر تک) شامل ہیں۔ اور "اُمْرُ" (کے معنی ہیں حکم) یعنی (یہاں) حکم
سے مراد ہر قسم کا حکم ہے، ذبانی ہو یا قلمی یا طاقت والا، خواہ بڑوں سے عرض کر کے ہو یا ساتھیوں کو مشورہ دے کر، یا چھوٹوں کو دباؤ سے حکم
دے کر، یعنی تمہاری شان یہ ہے کہ ہر بھلائی کا ہر طرح حکم دو اور ہر خُوبی ہر طرح پھیلاؤ اور ہر بُرائی کو ہر طرح مٹاؤ اور لوگوں کو اس (یعنی
برائی) سے باز رکھو۔ مزید فرماتے ہیں: اس آیت مقدسہ میں گویا فرمایا گیا کہ اے محبوب صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی اُمت! تم میری
صفتِ ہدایت کے منظر (یعنی ظاہر کرنے والے) ہو، لہذا تم بہترین اُمت ہو تمہارے دم سے تمام لوگ فائدہ اٹھاتے رہیں گے، میں
تمہارے ذریعے لوگوں کو ایمان، قرآن اور عرفان (یعنی اپنے رب کی پہچان) بخشوں گا اور تمہاری ہی روشنی سے انہیں راہِ چمن (یعنی
جنت کا راستہ) دکھلاؤں گا، جو مجھ تک پہنچنا چاہے تمہارے دُمرے (یعنی گروہ) میں آجائے۔ (تفسیر نعیمی ج ۴ ص ۸۹، ۹۵)

اور قرآن میں ہے:

(يُنَتَىٰ لَكُمْ الصَّلَاةُ وَأُمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَصْبِرْ عَلَىٰ مَا أَصَابَكَ إِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٤٠﴾) (3)

(لقمان نے اپنے بیٹے سے کہا) اے میرے بیٹے! نماز قائم رکھ اور اچھی بات کا حکم دے اور بری بات سے منع کر اور جو اُمور تجھ پر پڑے اس پر صبر کر، بے شک یہ ہمت کے کام ہیں۔



احادیث

حدیث ۱: تم میں جو شخص بری بات دیکھے اسے اپنے ہاتھ سے بدل دے اور اگر اس کی استطاعت نہ ہو تو زبان سے بدلے اور اس کی بھی استطاعت نہ ہو تو دل سے یعنی اسے دل سے برا جانے اور یہ کمزور ایمان والا ہے۔ (۱)

حدیث ۲: حدود اللہ میں مداخلت کرنے والا (یعنی خلاف شرع چیز دیکھے اور باوجود قدرت منع نہ کرے اس کی)

(۱) صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون الیمنی من النکر من الایمان... إلخ، الحدیث: ۷۸۔ (۳۹)، ص ۴۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حضرت ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ کا اسم گرامی سعد بن مالک انصاری خدری ہے اور آپ اپنی کنیت ابوسعید خدری کے ساتھ زیادہ مشہور ہیں، آپ ان حفاظ حدیث میں سے ہیں جن کو بہت زیادہ احادیث یاد ہیں، نیز آپ کا شمار بڑے بڑے فضلاء اور عقلاء میں ہوتا ہے، آپ سے صحابہ کرام اور تابعین کی ایک جماعت نے احادیث روایت کی ہیں، چوراسی سال کی عمر میں ۲۷ھ میں آپ نے وصال فرمایا اور آپ کو جنت البقیع (مدینہ طیبہ) میں سپرد خاک کیا گیا، لفظ خدری میں خاء پر ضمہ ہے اور دال ساکن ہے۔

۲۔ رای یری مہوز العین باب فتح یفتح دیکھنا، مکر باب افعال سے اسم مفعول ہے وہ کام جو از روئے شریعت ناجائز ہو اسے ختم کرنا مراد ہے، استطاعت کسی کام کا آدمی کے بس میں ہونا طاقت مراد ہے۔

۳۔ برائی کو بدلنے کے لیے ہر طبقے کو اس کی طاقت کے مطابق ذمہ داری سونپی گئی کیونکہ اسلام میں کسی بھی انسان کو اس کی طاقت سے زیادہ تکلیف نہیں دی جاتی۔ اگر باب اقتدار، اساتذہ، والدین وغیرہ جو اپنے ماتحتوں کو کنٹرول کر سکتے ہیں وہ قانون پر سختی سے عمل کرا کے اور مخالفت کی صورت میں سزا دے کر برائی کا خاتمہ کر سکتے ہیں۔

مبلغین اسلام، علماء و مشائخ، ادیب و صحافی اور دیگر ذرائع ابلاغ مثلاً ریڈیو اور ٹی وی وغیرہ سے بھی لوگ اپنی تقریروں و تحریروں بکے شعراء اپنی نظموں کے ذریعے برائی کا قلع قمع کریں اور نیکی کو فروغ دیں، ہلسانہ کے تحت یہ تمام صورتیں آتی ہیں۔

۴۔ اور عام مسلمان جسے اقتدار کی کوئی صورت بھی حاصل نہیں اور نہ ہی وہ تحریر و تقریر کے ذریعے برائی کا خاتمہ کر سکتا ہے وہ دل سے اس برائی کو برا سمجھے اگرچہ یہ ایمان کا کمزور ترین مرتبہ ہے کیونکہ کوشش کر کے زبان سے روکتا چاہیے لیکن دل سے جب برا سمجھے گا تو یقیناً خود برائی کے قریب نہیں جائے گا اور اس طرح معاشرے کے بے شمار افراد خود بخود راہ راست پر آجائیں گے۔

۵۔ حدیث شریف سے یہ بات بھی واضح ہو جاتی ہے کہ جو آدمی برائی کو دل سے بھی برا نہ جانے اسے اپنے آپ کو مؤمنین میں شمار کرنے کا کوئی حق نہیں کیونکہ دل سے برا سمجھنے میں تو کسی کا ذہن نہیں پھر بھی برا نہیں سمجھتا تو معلوم ہوا کہ اس پر راضی ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۵۸) ←

۱۱۔ حدود اللہ میں واقع ہونے والے کی مثال یہ ہے کہ ایک قوم نے جہاز کے بارے میں قرعہ ڈالا، بعض اوپر کے حصہ میں رہے بعض نیچے کے حصہ میں، نیچے والے پانی لینے اوپر جاتے اور پانی لے کر ان کے پاس سے گزرتے ان کو تکلیف ہوتی (انہوں نے اس کی شکایت کی) نیچے والے نے کلباڑی لے کر نیچے کا تختہ کاٹنا شروع کیا۔

اوپر والوں نے دیکھا تو پوچھا کیا بات ہے کہ تختہ توڑ رہے ہو؟ اس نے کہا میں پانی لینے جاتا ہوں تو تم کو تکلیف ہوتی ہے اور پانی لینا مجھے ضروری ہے۔ (لہذا میں تختہ توڑ کر یہیں سے پانی لے لوں گا اور تم لوگوں کو تکلیف نہ دوں گا) پس اس صورت میں اگر اوپر والوں نے اس کا ہاتھ پکڑ لیا اور کھودنے سے روک دیا تو اسے بھی نجات دیں گے اور اپنے کو بھی اور اگر چھوڑ دیا تو اسے بھی ہلاک کیا اور اپنے کو بھی۔ (2)

حدیث ۳: قسم ہے اس کی جس کے ہاتھ میری جان ہے! یا تو اچھی بات کا حکم کرو گے اور بری بات سے منع کرو

(2) صحیح البخاری، کتاب الشہادات، باب القرعۃ فی الشکات... الخ، الحدیث: ۲۶۸۶، ج ۲، ص ۲۰۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ابو عبد اللہ حضرت نعمان ابن بشیر رضی اللہ عنہ انصاری ہیں، آپ ہجرت کے بعد انصار میں سب سے پہلے پیدا ہونے والے ہیں، رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے وصال کے وقت آپ کی عمر آٹھ سال نو مہینے تھی، آپ کے والدین بھی صحابی تھے، حضرت معاویہ رضی اللہ عنہ کے زمانہ میں آپ کوفہ کے والی تھے، ۳۷ھ میں آپ کو اہل حمص نے شہید کیا، آپ سے ایک جماعت نے احادیث روایت کیں جن میں آپ کے صاحبزادے محمد اور حضرت امام شعبی (رضی اللہ عنہم) بھی شامل ہیں۔

۲۔ المدھن اسم فاعل مدح سے بنا ہے جس کا معنی فریب کرنا دھوکہ دینا ہے یہاں سستی کرنا مراد ہے۔ حدود حد کی جمع وہ شرعی سزائیں جو مقرر ہیں۔ استہمو جمع مذکر فعل ماضی باب استفعال قرعہ اندازی کی۔ صار مصر ہو جانا، باب ضرب مضرب، اجوف یائی۔ تاؤا انہوں نے، ذیت یائی، باب تفعیل سے فعل ماضی جمع مذکر کا صیغہ ہے اور مہوز الفا باقص یائی ہے۔ مخر باب نصر مخر سے مضارع واحد مذکر کا صیغہ ہے سوراخ کرنا توڑنا۔ اخذ و اعلیٰ ید یہ کسی کا ہاتھ روکنا۔ انجوا باب افعال سے انہوں نے بچایا اور نجوا ثلاثی مزید باب تفعیل ہے جو کہ متعدی اھلک باب افعال کسی کو ہلاک کرنا یا اس کو ہلاکت کا سبب بنانا اور هلك نصر فتح مع تینوں طرح آتا ہے اور اس کا معنی ہلاک ہوا دونوں ماضی کے صیغے ہیں۔

۳۔ اس حدیث شریف میں ایک مثال کے ذریعہ برائی سے روکنے اور نیکی کا حکم دینے کی اہمیت کو واضح کیا گیا اور بتایا گیا کہ اگر یہ سمجھ کر، مر بالمعرف اور غی عن، لسنکر کا فریضہ ترک کر دیا جائے کہ برائی کرنے والا خود نقصان اٹھائے گا ہمارا کیا نقصان ہے تو یہ سوچ غلط ہے اس لیے کہ اس کے گناہ کے اثرات تمام معاشرے کو اپنی لپیٹ میں لے لیتے ہیں اور جس طرح کشتی توڑنے والا اکیلا ہی نہیں ڈوبتا بلکہ وہ سب لوگ ڈوبتے ہیں جو کشتی میں سوار ہیں اسی طرح برائی کرنے والے چند افراد کا یہ جرم تمام معاشرے میں ناسور بن کر پھیلتا ہے۔

گے یا اللہ تعالیٰ تم پر جلد اپنا عذاب بھیجے گا، پھر دعا کرو گے اور تمہاری دعا قبول نہ ہوگی۔ (3)

حدیث ۴: جب زمین میں گناہ کیا جائے تو جو وہاں موجود ہے مگر اسے برا جانتا ہے، وہ اس کی مثل ہے جو وہاں نہیں ہے اور جو وہاں نہیں ہے مگر اس پر راضی ہے، وہ اس کی مثل ہے جو وہاں حاضر ہے۔ (4)

حدیث ۵: حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا: اے لوگو! تم اس آیت کو پڑھتے ہو:
(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ) (5)

(3) سنن الترمذی، کتاب الفتن، باب ما جاء في الامر بالمعروف... إلخ، الحدیث: ۲۱۷۶، ج ۴، ص ۶۹.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حضرت حذیفہ بن یمان رضی اللہ عنہ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے رازدوں کے امین تھے، آپ سے حضرت عمر بن خطاب، حضرت علی المرتضیٰ، حضرت ابوالدرداء اور دیگر صحابہ کرام اور تابعین (رضی اللہ عنہم) نے احادیث روایت کی ہیں، آپ نے ۳۶ھ میں مدائن میں انتقال فرمایا اور آپ کا مزار پر انوار بھی وہیں ہے۔

۲۔ لیوشکن او شکت سے واحد مذکر غائب لام تاکید بانون تاکید ثقیلہ کا صیغہ ہے اور یہ افعال مقاربہ میں سے ہے۔

۳۔ امر بالمعروف اور نہی عن المنکر کی ذمہ داری سے پہلو تہی کتنا بڑا جرم ہے۔ اس حدیث میں نہایت وضاحت کے ساتھ اس کا بیان کیا گیا رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا یا تو تمہیں یہ فریضہ انجام دینا ہوگا یا اللہ تعالیٰ کے عذاب کا سامنا کرنا پڑے گا اور اس کے بعد اگر دعا بھی کرو گے تو قبول نہ ہوگی۔ یہ نہایت سخت قسم کی وعید ہے یعنی جب تک تم اپنی کوتاہی کا ازالہ نہیں کرو گے اور اللہ تعالیٰ سے معافی نہیں مانگو گے تمہاری کوئی دعا قبول نہ ہوگی۔ اس حدیث میں امر بالمعروف کا ذکر بھی قسم اور تاکید صیغوں کے ساتھ ہوا اور عذاب کے ذکر کے لیے بھی تاکید صیغہ استعمال کیا گیا جو اس کی اہمیت اور عدم بجا آوری کی صورت میں عذاب کے یقینی ہونے کی طرف اشارہ ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۶۱)

(4) سنن ابی داؤد، کتاب الملاحم، باب الامر بالنہی، الحدیث: ۴۳۴۵، ۴۳۴۶، ج ۴، ص ۱۶۶.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ عرس بن عمیرہ، عرس کی عین پر ضمیمہ اور راء ساکن ہے جب کہ عمیرہ کی عین مفتوح اور میم مکسور ہے۔ یہ حضرت عدی بن عمیرہ کے بھائی ہیں، صحابی ہیں، ان سے ان کے بھتیجے عدی بن عمیرہ اور زید بن حارث رضی اللہ تعالیٰ عنہم نے احادیث روایت کی ہیں۔

۲۔ اس حدیث شریف میں برائی کو دل سے برا جاننے کی اہمیت کا ذکر ہوا کہ اگرچہ ایک شخص برائی کے ارتکاب کے وقت وہاں موجود نہ بھی ہو لیکن اس پر راضی ہو تو گویا وہ موجود تھا اور جو وہاں موجود ہو لیکن اس حرکت کو ناپسند کرے گویا وہ وہاں موجود ہی نہیں۔ حضرت شیخ عبدالحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں گویا حقیقی موجودگی اور عدم موجودگی دل کی ہوتی ہے جسم کی نہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۶۲)

(5) پ ۷، المائدۃ ۱۰۵.

سے ایمان والو! اپنے نفس کو لازم پکڑ لو، گمراہ تم کو ضرور نہ پہنچائے گا، جب کہ تم خود ہدایت پر ہو۔
 (یعنی قرآن آیت سے یہ سمجھتے ہو گئے کہ جب ہم خود ہدایت پر ہیں تو گمراہ کی گمراہی ہم سے ہے، حضرت میں ہم مانع
 کرے کی ضرورت نہیں) میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو یہ فرماتے سنا ہے کہ لوگ اگر بری بات سنا لیں اور
 اس کو نہ بدلیں تو قریب ہے کہ اللہ تعالیٰ ان پر ایسا عذاب بھیجے گا جو سب کو گھیر لے گا۔ (6)
 حدیث ۶: جس قوم میں گناہ ہوتے ہوں اور وہ لوگ بدلنے پر قادر ہوں پھر نہ بدلیں تو قریب ہے کہ اللہ تعالیٰ
 سب پر عذاب بھیجے۔ (7)

(6) سنن ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب الامر بالمعروف والنہی عن المنکر، الحدیث: ۳۰۰۵، ج ۲، ص ۳۵۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ کی شخصیت غیر معروف نہیں، آپ سب سے پہلے ایمان لائے، سفرو حضر میں رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم
 کے ساتھ رہے، آپ کے فضائل و مناقب پر آیات و احادیث کثیرہ دلالت کرتی ہیں اور آپ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے پیسے خلیفہ اور
 مسلمانوں کے پہلے امیر تھے۔

۲۔ قرآن کریم کی آیت "اے ایمان والو! اپنی فکر کرد اگر تم ہدایت پر رہو گے تو گمراہ ہونے والے تمہارا کچھ بگاڑ نہ سکیں گے" کے حوالے
 سے بعض لوگ سمجھتے تھے کہ امر بالمعروف اور نہی عن المنکر کی ضرورت نہیں بلکہ آدمی کو اپنی اصلاح کرنا چاہیے دوسروں کے گناہ یا کوتاہیاں
 اس کا کچھ بگاڑ نہیں سکتیں۔

۳۔ حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اس مخالف طے کو دور کرتے ہوئے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے اس ارشاد گرامی کے حوالے
 سے بتایا کہ جب لوگ برائی کو دیکھ کر اسے بدلنے کی کوشش نہ کریں تو وہ سب عذاب میں مبتلا ہوتے ہیں۔

۴۔ دوسری روایات سے یہ بات واضح ہوتی ہے کہ اس تبدیلی کا تعلق طاقت سے ہے یعنی برائی کو بدلنے والے لوگ اس بات کی طاقت
 رکھنے کے باوجود نہ بدلیں تو وہ بھی عذاب کے مستحق ہوں گے۔ حضرت شیخ عبدالحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں یہ آیت عام اور
 مطلق نہیں بلکہ متقیہ اور خاص ہے یعنی جب لوگ تمہاری بات نہ سنیں تو آپ اپنی اصلاح میں معروف ہو جاؤ اس صورت میں ان کے گناہ کا تم
 پر کوئی اثر نہ ہوگا۔ حضرت عبداللہ ابن مسعود رضی اللہ عنہ نے فرمایا یہ بات ہمارے دور سے متعلق نہیں اس وقت لوگ نیکی کی بات سنتے اور
 قبول کرتے ہیں یہ زمانہ بعد میں آئے گا، بعض مفسرین نے یہ بھی لکھا ہے کہ جب تم ہدایت پر ہو گا مطلب یہ ہے کہ تم برائی سے روکو اور وہ نہ
 مانیں تو اب عذاب عام نہیں ہوگا بلکہ صرف برائی کے مرتکب لوگوں کو ہوگا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۶۳)

(7) سنن ابی داؤد، کتاب الامام، باب الامر والنہی، الحدیث: ۴۳۳۸، ج ۲، ص ۱۶۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حضرت جریر بن عبداللہ رضی اللہ عنہ کی کنیت ابو عمرو ہے اور آپ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے وصال سے چالیس دن سے

حدیث ۷: اچھی بات کا حکم کرو اور بری بات سے منع کرو یہاں تک کہ جب تم یہ دیکھو کہ بخل کی اطاعت کی جاتی ہے اور خواہش نفسانی کی پیروی کی جاتی ہے اور دنیا کو دین پر ترجیح دی جاتی ہے اور ہر شخص اپنی رائے پر گھمنڈ کرتا ہے اور ایسا امر دیکھو کہ تمہیں اس سے چارہ نہ ہو تو اپنے نفس کو لازم کر لو یعنی خود کو بری چیزوں سے بچاؤ اور عوام کے معاملہ کو چھوڑو (یعنی ایسے وقت میں امر بالمعروف ونہی عن المنکر ضروری نہیں)۔ تمہارے آگے صبر کے دن آئیں گے جن میں صبر کرنا ایسا ہے جیسے مٹھی میں انکار الینا، عمل کرنے والے کے لیے اس زمانہ میں پچاس شخص عمل کرنے والوں کا اجر ہے۔ لوگوں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) ان میں سے پچاس کا اجر اس ایک کو ملے گا۔ فرمایا کہ تم میں سے پچاس کی برابر اجر ملے گا۔ (8) پانچویں حدیث میں جو آیت ذکر کی گئی وہ اسی موقع اور وقت کے لیے ہے۔

پہلے اسلام لائے، اس کے بعد کوفہ تشریف لے گئے اور ایک عرصہ دراز کے بعد قریسما مقام پر منتقل ہوئے اور ۵۵ھ میں انتقال فرمایا آپ سے بے شمار لوگوں نے احادیث روایت کی ہیں۔

۲۔ اس حدیث کا مضمون گزشتہ حدیث کے مطابق ہے اور اس میں اس بات کا اضافہ ہے کہ جس قوم یا جماعت میں کچھ لوگ برائی کے مرتکب ہوں اور وہ قوم ان کو روکنے کی طاقت رکھنے کے باوجود نہ روکے تو وہ بھی عذاب خداوندی کے مستحق ہوں گے اور یہ عذاب وہ لوگ مرنے سے پہلے دنیا میں ہی دیکھ لیں گے۔ حضرت شیخ فرماتے ہیں کہ برائی کو بدلنے میں کوتاہی کرنا دوسرے جرائم کے مقابلے میں اس لحاظ سے منفرد ہے کہ دوسرے گناہوں کی سزا آخرت میں ملے گی جب کہ اس کوتاہی کی سزا دنیا میں بھی ملے گی اور آخرت کا عذاب اس کے علاوہ ہوگا۔ (اشعۃ اللمعات) اس حدیث کی روشنی میں حکمرانوں کو اپنی ذمہ داری کا احساس کرنا چاہیے کہ وہ اقتدار اور طاقت کے باوجود معاشرے سے برائیوں کا قلع قمع نہیں کرتے حالانکہ یہ ان کا فرض ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۶۳)

(8) المرجع السابق، الحدیث: ۴۳۴۱، ج ۴، ص ۱۶۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حضرت ابو ثعلبہ جرحم بن ناشب نخشی رضی اللہ عنہ اپنی کنیت ابو ثعلبہ کے ساتھ زیادہ مشہور ہیں، بیعت رضوان کے موقع پر آپ نے رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے دست اقدس پر بیعت کی تو نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے آپ کو آپ کی قوم کی طرف بھیجا تو وہ لوگ بھی اسلام لے آئے، حضرت ابو ثعلبہ رضی اللہ عنہ شام تشریف لے گئے اور ۷۵ھ میں مدینہ میں آپ کا انتقال ہوا۔

۲۔ ائتمروا باب انفعال سے جمع ذکر حاضر امر کا صیغہ ہے، مطاعاً باب انفعال سے اسم مفعول کا صیغہ، متبعاً باب انفعال سے اسم مفعول کا صیغہ ہے، مؤثراً باب تفعیل سے اسم مفعول کا صیغہ، محاب کا مطلب اپنی رائے پر اترانا اور تکبر کرنا ہے۔

۳۔ اس حدیث شریف میں ان مشکل حالات کا ذکر ہے جن میں آدمی کسی سے نیکی کی بات سننا پسند نہیں کرے گا اور نہ ہی کسی کے

حدیث ۸: لوگوں کی ہیبت حق بولنے سے نہ روکے جب معلوم ہو تو کہہ دے۔ (9)

حدیث ۹: چند مخصوص لوگوں کے عمل کی وجہ سے اللہ تعالیٰ سب لوگوں کو عذاب نہیں کریگا مگر جبکہ وہاں بری بات کی جائے اور وہ لوگ منع کرنے پر قادر ہوں اور منع نہ کریں تو اب عام و خاص سب کو عذاب ہوگا۔ (10)

روکنے سے برائی سے روکے گا کیونکہ لالچ، خواہشات نفسانیہ اور خود پسندی جیسی صفات ذمیرہ نے اسے اندھا اور بہرہ کر دیا ہوگا، ان حالات میں اگر کوئی شخص سمجھتا ہے کہ میں ایسے لوگوں کی مجلس میں جانے کے بعد نہ چاہتے ہوئے بھی ان کے رنگ میں رنگا جاؤں گا تو اس وقت اپنے ایمان کو بچانے کی کوشش کرنی چاہیے، چونکہ وہ لوگ کوئی بات سننے کو ہی تیار نہیں لہذا اب امر بالمعروف سے پہلو تھپی قابل مؤاخذہ نہیں ہوگی، یہ وہ حالات ہوں گے کہ اس ماحول میں عمل کرنے والے کو پچاس عاقلین کے برابر ثواب ملے گا اور وہ بھی عام لوگ نہیں بلکہ صحابہ کرام میں سے پچاس مراد ہیں۔

۳۔ اس حدیث سے بعض لوگوں نے استدلال کیا کہ امت کے آخری دور کے لوگوں کو صحابہ کرام پر جزوی فضیلت حاصل ہے لیکن جمہور علماء نے اس کا سخت رد کیا اور فرمایا کہ صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کو جو شرف صحابیت حاصل ہے اس کا مقابلہ کوئی فضیلت نہیں کر سکتی اور دوسرے لوگ اس اعزاز سے محروم ہیں۔ قوت القلوب میں لکھا ہے کہ سرکارِ دو عالم صلی اللہ علیہ وسلم کے جمال پر انوار پر ایک نظر پڑنے سے جو پردے کھلتے ہیں اور ان کا کام جتا ہے وہ دوسروں کی سالہا سال کی محنت سے بھی حاصل نہیں ہوتا۔ (اشعۃ اللمعات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۶۵)

(9) سنن الترمذی، کتاب اللعن، باب ما أخبر النبی صلی اللہ علیہ وسلم صحابہ بما ہو کان الی یوم القیامۃ، الحدیث: ۲۱۹۸، ج ۳، ص ۸۱۔

(10) شرح السنۃ، کتاب الرقاق، باب الامر بالمعروف والنہی عن المنکر، الحدیث: ۴۰۵۰، ج ۷، ص ۳۵۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ عدی ابن عدی الکندی (الکندی کاف کے کسرہ سے ہے) ایک یمنی قبیلہ کندہ کی طرف منسوب ہیں، آپ تابعی فقیہ ہیں، آپ کے والد عدی بن عمیرہ اور چچا عرس بن عمیرہ رضی اللہ عنہما دونوں صحابی ہیں، آپ نے ان دونوں سے احادیث روایت کی ہیں اور آپ سے حضرت ایوب اور عطاء خراسانی وغیرہ نے احادیث روایت کی ہیں۔

۲۔ العامۃ عام لوگ، الخاصۃ قوم کے بعض افراد ہیں ظہر ینہم ان کے سامنے۔ اس حدیث میں اس بات کی وضاحت ہے کہ جب کسی قوم میں سے کچھ افراد برائی کا ارتکاب کریں تو اس کا عذاب صرف انہی کو ہوگا قوم کے دوسرے افراد کو نہیں کیونکہ ارشادِ خداوندی ہے "وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرٰی" کوئی بوجھ اٹھانے والا دوسرے کے گناہوں کا بوجھ نہیں اٹھائے گا۔

۳۔ البتہ جب ان کے سامنے برائی ہو رہی ہو اور وہ روکنے پر قادر ہونے کے باوجود ان کو نہ روکیں تو اب سب کو عذاب ہوگا اور یہ ارشادِ خداوندی کے خلاف نہیں ہے کیونکہ گناہ کرنے والوں کو ان کے عمل کی سزا ملے گی اور دوسرے اس لیے سزا کے مستحق ہوئے کہ انہوں نے برائی کو روکنے سے متعلق اپنی ذمہ داری کو پورا نہ کر کے جرم کا ارتکاب کیا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۶۶۸)

حدیث ۱۰: بنی اسرائیل نے جب گناہ کیے ان کے علما نے منع کیا مگر وہ باز نہ آئے پھر علما ان کی مجلسوں میں بیٹھنے لگے اور انکے ساتھ کھانے پینے لگے، خدا نے علما کے دل بھی انھیں جیسے کر دیے اور داود و عیسیٰ بن مریم علیہما السلام کی زبان سے ان سب پر لعنت کی۔ یہ اس وجہ سے کہ انھوں نے نافرمانی کی اور حد سے تجاوز کرتے تھے۔ اس کے بعد حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے فرمایا: خدا کی قسم! تم یا تو اچھی بات کا حکم کرو گے اور بری بات سے روکو گے اور ظالم کے ہاتھ پکڑ لو گے اور ان کو حق پر روکو گے اور حق پر ٹھہراؤ گے یا اللہ تعالیٰ تم سب کے دل ایک طرح کے کر دے گا پھر تم سب پر لعنت کر دے گا، جس طرح ان سب پر لعنت کی۔ (11)

حدیث ۱۱: میں نے شب معراج میں دیکھا کہ کچھ لوگوں کے ہونٹ آگ کی قینچیوں سے کاٹے جاتے ہیں۔ میں

(11) سنن الترمذی، کتاب تفسیر القرآن، [باب] [دس سورۃ المائدۃ، الحدیث: ۵۹۰، ج ۲، ص ۶۳]

وسنن ابی داؤد، کتاب الملاحم، باب الاسرو النھی، الحدیث: ۴۳۳۶، ۴۳۳۷، ج ۲، ص ۱۶۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ معروف صحابی ہیں، آپ کی کنیت ابو عبد الرحمن ہے، کہا جاتا ہے کہ آپ اسلام لانے والوں میں چھٹے نمبر پر ہیں، رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے خواص میں سے تھے، آپ کے ظہین مبارک اور مسواک مبارک کے امین اور آپ کے راز دار تھے، آپ نے حبشہ کی طرف ہجرت فرمائی، غزوہ بدر میں بھی شریک ہوئے، بے شمار احادیث کی روایت سے شرف ہوئے، ۳۲ھ میں آپ کا وصال ہوا اور جنت البقیع میں مدفون ہوئے، آپ سے حضرت ابوبکر صدیق حضرت عمر فاروق حضرت علی المرتضیٰ اور دیگر صحابہ کرام اور تابعین (رضی اللہ عنہم) نے احادیث روایت کی ہیں۔

۲۔ فجھال سوہم ان کے ہم پیالہ وہم نوالہ ہو گئے اکل سوہم جال سوہم شار بوہم تمام صیغے باب مناعلہ سے جمع مذکر غائب ماضی کے صیغے ہیں اور ہم ضمیر مفعول متصل مفعول بہ ہے۔ باب مناعلہ فعل میں شراکت کا تقاضا کرتا ہے گویا ان کا کھانے پینے اور مجلس میں اشتراک تھا، اطریا طریا ب ضرب اور نفر دونوں سے آتا ہے۔ کسی چیز کو توڑ دینا ہے اور دوہرا کرنا۔ اس حدیث شریف میں بنی اسرائیل کے علماء کا کردار ذکر کرنے کے بعد اس راستے پر چلنے سے روکا گیا بتایا گیا کہ بنی اسرائیل کے علماء نے اپنی قوم کو برائی سے منع کیا جب وہ باز نہ آئے تو بجائے اس کے کہ وہ ان کا بایکٹ کر کے ان کو برائی چھوڑنے پر مجبور کرتے خود ان کے ہم مجلس اور ہم پیالہ وہم نوالہ ہو گئے اور ان کے دل ایک جیسے ہو گئے جس کی بنیاد پر دو لعنت کے مستحق ہوئے۔

۳۔ سرکار دو عالم صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنی امت کے ارباب اختیار اور علماء کو متنبہ کیا کہ تمہیں اس طریقہ کار سے بچنا ہوگا اور برائی کا ارتکاب کرنے والوں کا ہاتھ روکنا ہوگا، منافقت و مدھمت سے کام لینے کے بجائے غیرت ایمانی کا مظاہرہ کرنا اور امر بالمعروف و نہی عن المنکر سے متعلق اپنی ذمہ داری کو پورا کرنا ہوگا ظالم کا ہاتھ روک کر اسے راجع پر لانا ہوگا ورنہ تم بھی بنی اسرائیل کی طرح لعنت کے مستحق ہو جاؤ گے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۶، ص ۹۶۹)

نے پوچھا، جبریل ایہ کون لوگ ہیں؟ کہا، یہ آپ کی امت کے داعی ہیں، جو لوگوں کو اچھی بات کا حکم کرتے تھے اور اپنے کو بھولے ہوئے تھے۔ (12)

حدیث ۱۲: بادشاہ ظالم کے پاس حق بات بولنا، افضل جہاد ہے۔ (13)

حدیث ۱۳: میرے بعد میں امرا ہوں گے جن کی بعض باتیں اچھی ہوں گی اور بعض بری، جس نے بری بات سے کراہت کی وہ بری ہے اور جس نے انکار کیا وہ سلامت رہا، لیکن جو راضی ہوا اور پیروی کی وہ ہلاک ہوا۔ (14)

حدیث ۱۴: مجھ سے پہلے جس نبی کو خدا نے کسی امت میں مبعوث کیا، اس کے لیے امت سے حواریں اور اصحاب ہوئے جو نبی کی سنت لیتے اور اس کے حکم کی پیروی کرتے پھر ان کے بعد ناخلف لوگ پیدا ہوئے کہ کہتے وہ جو کرتے نہیں اور کرتے وہ جس کا دوسروں کو حکم نہ دیتے، جس نے ہاتھ کے ساتھ ان سے جہاد کیا وہ مومن ہے اور جس نے زبان سے جہاد کیا وہ مومن ہے اور جس نے دل سے جہاد کیا وہ مومن ہے اور اس کے بعد رائی کے دانہ کے برابر ایمان نہیں۔ (15)



(12) شرح السنہ، کتاب الرقاق، باب وعید من یامر بالمعروف ولا ینہی عن المنکر، الحدیث: ۴۰۵۲، ج ۷، ص ۳۶۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کے خادم خاص تھے آپ کی کنیت ابو حزرہ خزرجی تھی، آپ کی والدہ کا نام سلیم بنت ملحان تھا، رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم مدینہ طیبہ تشریف لائے تو حضرت انس رضی اللہ عنہ کی عمر دس سال تھی، خلافت فاروقی میں آپ بصرہ منتقل ہو گئے وہاں آپ لوگوں کو فقہ کی تعلیم دیتے رہے، آپ نے ۹۱ھ میں ایک سو تین سال یا تین سو سال کی عمر میں وفات پائی۔ اور آپ بصرہ میں انتقال کرنے والے آخری صحابی تھے، مقاریض مقرض کی جمع (اسم آلہ) قنیچیاں۔

۲۔ شب معراج رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کو مختلف لوگ مختلف سزاؤں میں مبتلا دکھائے گئے تاکہ آپ اپنی امت کو آگاہ فرمائیں کہ فلاں فلاں جرم کی فلاں فلاں سزا میں نے خود اپنی آنکھوں سے دیکھی اور یوں لوگ اجتناب کی راہ اختیار کریں گے، چونکہ داعی عظیم اور خطباء، اپنی زبانوں سے لوگوں کو وعظ و نصیحت کرتے ہیں اس لیے خطباء کی زبانیں آگ کی قینچیوں سے کٹتی ہوئی دکھائی گئیں اور واضح کیا گیا کہ دوسرے کو تبلیغ کر کے خود عمل نہ کرنے والے سزا کے مستحق ہیں اور یہ زبانیں اس قابل ہیں کہ ان کو یہ سزا دی جائے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۶، ص ۹۷۰)

(13) سنن بن ماجہ، کتاب الفتن، باب الامر بالمعروف والنہی عن المنکر، الحدیث: ۴۰۱۱، ج ۴، ص ۳۶۳۔

(14) صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب وجوب الانکار علی الامراء... إلخ، الحدیث: ۶۳، ۶۴۔ (۱۸۵۴)، ص ۱۰۳۱۔

(15) صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون النہی عن المنکر من الایمان... إلخ، الحدیث: ۸۰۔ (۵۰)، ص ۴۳۔

مسائل فقہیہ

امر بالمعروف یہ ہے کہ کسی کو اچھی بات کا حکم دینا مثلاً کسی سے نماز پڑھنے کو کہنا۔ اور نہی عن المنکر کا مطلب یہ ہے کہ بری باتوں سے منع کرنا۔ یہ دونوں چیزیں فرض ہیں، قرآن مجید میں ارشاد فرمایا:

(كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ) (1)

احادیث میں ان کی بہت تاکید آئی اور اس کے خلاف کرنے کی مذمت فرمائی۔

مسئلہ ۱: معصیت کا ارادہ کیا مگر اس کو کیا نہیں تو گناہ نہیں بلکہ اس میں بھی ایک قسم کا ثواب ہے، جبکہ یہ سمجھ کر باز رہا کہ یہ گناہ کا کام ہے، نہیں کرنا چاہیے۔ احادیث سے ایسا ہی ثابت ہے اور اگر گناہ کے کام کا بالکل پکا ارادہ کر لیا جس کو عزم کہتے ہیں تو یہ بھی ایک گناہ ہے اگرچہ جس گناہ کا عزم کیا تھا اسے نہ کیا ہو۔ (2)

مسئلہ ۲: کسی کو گناہ کرتے دیکھے تو نہایت متانت اور نرمی کے ساتھ اسے منع کرے اور اسے اچھی طرح سمجھائے پھر اگر اس طریقہ سے کام نہ چلا وہ شخص باز نہ آیا تو اب سختی سے پیش آئے، اس کو سخت الفاظ کہے، مگر گالی نہ دے، نہ فحش لفظ زبان سے نکالے اور اس سے بھی کام نہ چلے تو جو شخص ہاتھ سے کچھ کر سکتا ہے کرے، مثلاً وہ شراب پیتا ہے تو شراب بہا دے، برتن توڑ پھوڑ ڈالے، گاتا بجاتا ہے تو باجے توڑ ڈالے۔ (3)

مسئلہ ۳: امر بالمعروف کی کئی صورتیں ہیں:

- (۱) اگر غالب گمان یہ ہے کہ یہ ان سے کہے گا تو وہ اس کی بات مان لیں گے اور بری بات سے باز آجائیں گے، تو امر بالمعروف واجب ہے اس کو باز رہنا جائز نہیں اور
- (۲) اگر گمان غالب یہ ہے کہ وہ طرح طرح کی تہمت باندھیں گے اور گالیاں دیں گے تو ترک کرنا افضل ہے اور
- (۳) اگر یہ معلوم ہے کہ وہ اسے ماریں گے اور یہ صبر نہ کر سکے گا یا اس کی وجہ سے فتنہ و فساد پیدا ہوگا آپس میں لڑائی ٹھن جائے گی جب بھی چھوڑنا افضل ہے اور

(1) پ ۱۳، ل ۱۰، ع ۱۰۔

ترجمہ کنز الایمان: تم بہتر ہو ان سب امتوں میں جو لوگوں میں ظاہر ہوئیں، بھلائی کا حکم دیتے ہو اور بُرائی سے منع کرتے ہو۔

(2) افتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السابع عشر فی القناء... إلخ، ج ۵، ص ۳۵۲، وغیرہ۔

(3) افتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السابع عشر فی القناء... إلخ، ج ۵، ص ۳۵۲۔

(۴) اگر معلوم ہو کہ وہ اگر اسے ماریں گے تو صبر کر لے گا تو ان لوگوں کو برے کام سے منع کرے اور یہ شخص مجاہد

ہے اور

(۵) اگر معلوم ہے کہ وہ مانیں گے نہیں مگر نہ ماریں گے اور نہ گالیاں دیں گے تو اسے اختیار ہے اور افضل یہ ہے کہ

امر کرے۔ (4)

مسئلہ ۴: اگر اندیشہ ہے کہ ان لوگوں کو امر بالمعروف کریگا تو قتل کر ڈالیں گے اور یہ جانتے ہوئے اس نے کیا اور

ان لوگوں نے مار ہی ڈالا تو یہ شہید ہوا۔ (5)

مسئلہ ۵: امر کے ذمہ امر بالمعروف ہاتھ سے ہے کہ اپنی قوت و سطوت (یعنی طاقت و دبدبہ) سے اس کام کو

روک دیں اور علما کے ذمہ زبان سے ہے کہ اچھی بات کرنے کو اور بری بات سے باز رہنے کو زبان سے کہہ دیں اور عوام

الناس کے ذمہ دل سے برا جانا ہے۔ (6) اس کا مقصد وہی ہے جو حدیث میں فرمایا کہ جو بری بات دیکھے، اسے چاہیے

کہ اپنے ہاتھ سے بدل دے اور اگر ہاتھ سے بدلنے پر قادر نہ ہو تو زبان سے بدل دے یعنی زبان سے اس کا برا ہونا

ظاہر کر دے اور منع کر دے اور اس کی بھی استطاعت نہ ہو تو دل سے برا جانے اور یہ ایمان کا سب سے کمزور مرتبہ

ہے۔ (7) یہاں عوام سے مراد وہ لوگ ہیں کہ ان میں نہ ہاتھ سے روکنے کی ہمت ہے اور نہ زبان سے منع کرنے کی

جرات۔ قوم کے چودھری اور زمیندار وغیرہ بہت سے عوام ایسی حیثیت رکھتے ہیں کہ ہاتھ سے روک سکتے ہیں، ان پر

لزم ہے کہ روکیں ایسوں کے لیے فقط ذل سے برا جانا کافی نہیں۔

مسئلہ ۶: امر بالمعروف کے لیے پانچ چیزوں کی ضرورت ہے:

اول: علم (8) کہ جسے علم نہ ہو اس کام کو اچھی طرح انجام نہیں دے سکتا۔

دوم: اس سے مقصود رضائے الہی اور اعلاء کلمۃ اللہ ہو۔

سوم: جس کو حکم دیتا ہے اس کے ساتھ شفقت و مہربانی کرے نرمی کے ساتھ کہے۔

(4) المرجع السابق، ص ۳۵۲-۳۵۳۔

(5) المرجع السابق، ص ۳۵۳۔

(6) الفتاویٰ الہندیۃ، کتاب الکرمیۃ، الباب السابع عشر فی القیام...، ج ۵، ص ۳۵۳۔

(7) انظر: المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، المحدث: ۱۱۳۶۰، ج ۴، ص ۹۸۔

(8) علم سے یہ مراد نہیں کہ وہ پورا عالم ہو، بلکہ مراد یہ ہے کہ اتنا جانتا ہو کہ یہ چیز گناہ ہے اور دوسرے کو بری بات سمجھنے کا طریقہ معلوم

ہو، کہ موثر پیرایہ سے اس کو کہہ سکے۔

چہارم: امر کرنے والا صابر اور بردبار ہو۔

پنجم: یہ شخص (9) خود اس بات پر عامل ہو ورنہ قرآن کے اس حکم کا مصداق بن جائے گا، کیوں کہتے ہو وہ جس کو تم خود نہیں کرتے۔ اللہ (عزوجل) کے نزدیک ناخوشی کی بات ہے یہ کہ ایسی بات کہو، جس کو خود نہ کرو۔ اور یہ بھی قرآن مجید میں فرمایا کہ کیا لوگوں کو تم اچھی بات کا حکم کرتے ہو اور خود اپنے کو بھولے ہوئے ہو۔ (10)

مسئلہ ۷: عامی شخص کو یہ نہ چاہیے کہ قاضی یا مفتی یا مشہور و معروف عالم کو امر بالمعروف کرے کہ یہ بے ادبی ہے۔ مثل مشہور ہے، خطائے بزرگان گرفتار خطاست۔ (یعنی بزرگوں پر اعتراض کرنا بڑی نادانی و خطا ہے) اور کبھی ایسا بھی ہوتا ہے کہ یہ لوگ کسی مصلحت خاص سے ایک فعل کرتے ہیں، جس تک عوام کی نظر نہیں پہنچتی اور یہ شخص سمجھتا ہے، کہ جیسے ہم نے کیا انھوں نے بھی کیا، حالانکہ دونوں میں بہت فرق ہوتا ہے۔ (11) یہ حکم ان علما کے متعلق ہے، جو احکام شرع کے پابند ہیں اور اتفاقاً کبھی ایسی چیز ظاہر ہوئی جو نظر عوام میں بری معلوم ہوتی ہے وہ لوگ مراد نہیں جو حلال و حرام کی پروا نہیں کرتے اور نام علم کو بدنام کرتے ہیں۔

مسئلہ ۸: جس نے کسی کو برا کام کرتے دیکھا اور خود یہ بھی اس برے کام کو کرتا ہے تو اس برے کام سے منع کر دے کیونکہ اس کے ذمہ دو چیزیں واجب ہیں برے کام کو چھوڑنا اور دوسرے کو برے کام سے منع کرنا اگر ایک واجب کا تارک ہے تو دوسرے کا کیوں تارک بنے۔ (12)

مسئلہ ۹: ایک شخص برا کام کرتا ہے اس کے باپ کے پاس شکایت لکھ کر بھیجی جائے یا نہیں اگر معلوم ہے کہ اس کا باپ منع کرنے پر قادر ہے اور وہ منع بھی کر دے گا تو لکھ کر بھیج دے ورنہ کیا فائدہ۔ اسی طرح زوجین اور بادشاہ و رعیت یا آقا و ملازمین کے بارے میں اگر لکھنا مفید ہو تو لکھے۔ (13)

مسئلہ ۱۰: باپ کو اندیشہ ہے کہ اگر لڑکے سے کہے گا تو اس کا حکم نہ مانے گا اور اس کا جی بھی کہنے کو چاہتا ہے تو یوں کہے اگر یہ کرتے تو خوب ہوتا اسے حکم نہ دے کہ اس صورت میں اگر اس نے نہ کیا تو عاق ہوگا جو ایک سخت کبیرہ گناہ

(9) اس کا یہ مطلب نہیں کہ جو شخص خود عامل نہ ہو، وہ دوسروں کو اچھی بات کا حکم ہی نہ دے بلکہ مقصد یہ ہے کہ وہ خود بھی کرے اور دوسروں کو بھی کرنے کو کہے۔

(10) افتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السابع عشر فی الغناہ...، ج ۵، ص ۵۳۔

(11) افتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السابع عشر فی الغناہ...، ج ۵، ص ۵۳۔

(12) المربع السابق.

(13) افتاویٰ الخانیۃ، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی التبیح...، ج ۲، ص ۸۲۔

(14)۔ ہے۔

مسئلہ ۱۱: کسی نے گناہ کیا پھر سچے دل سے تائب ہو گیا، تو اسے یہ نہ چاہیے کہ قاضی یا حاکم کے پاس اپنے جرم کو اس لیے پیش کرے کہ حد شرع قائم کی جائے کیونکہ پردہ پوشی بہتر ہے۔ (15)

مسئلہ ۱۲: ایک شخص کو دوسرے کا مال چراتے دیکھا ہے مگر مالک کو خبر دیتا ہے تو چور اس پر ظلم کریگا تو خاموش ہو جائے اور یہ اندیشہ نہ ہو تو خبر کر دے۔ (16)

مسئلہ ۱۳: مشرکین پر تنہا حملہ کرنے میں غالب گمان یہ ہے کہ قتل ہو جائے گا، مگر یہ بھی غالب گمان ہے کہ یہ بھی ان کے آدمی کو قتل کریگا یا زخمی کر دے گا یا شکست دے دے گا تو تنہا حملہ کرنے میں حرج نہیں اور غالب گمان یہ ہو کہ ان کا کچھ نہیں بگڑے گا اور یہ مارا جائے گا تو حملہ نہ کرے اور اگر فساد مسلمین کو گناہ سے روکے گا تو یہ خود قتل ہو جائے گا اور ان کا کچھ نہیں بگڑے گا، جب بھی ان کو منع کرے عزیمت یہی ہے اگرچہ منع نہ کرنے کی بھی رخصت ہے۔ (17) کیونکہ اس صورت میں قتل ہو جانا فائدہ سے خالی نہیں اس وقت اگرچہ بظاہر فائدہ نہیں معلوم ہوتا مگر آئندہ اس کے نتائج بہتر نکلیں گے۔



(14) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب النکاحیہ، الباب السابع عشر فی الغنا...، ج ۵، ص ۵۳۔

(15) المرجع السابق.

(16) المرجع السابق.

(17) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب النکاحیہ، الباب السابع عشر فی الغنا...، ج ۵، ص ۵۳۔

علم و تعلیم کا بیان

علم ایسی چیز نہیں جس کی فضیلت اور خوبیوں کے بیان کرنے کی حاجت ہو ساری دنیا جانتی ہے کہ علم بہت بہتر چیز ہے اس کا حاصل کرنا طفرائے امتیاز (یعنی بڑائی کی علامت) ہے۔ یہی وہ چیز ہے کہ اس سے انسانی زندگی کامیاب اور خوشگوار ہوتی ہے اور اسی سے دنیا و آخرت سدھرتی ہے مگر ہماری مراد اس علم سے وہ علم نہیں جو فلاسفہ سے حاصل ہوا ہو اور جس کو انسانی دماغ نے اختراع (ایجاد) کیا ہو یا جس علم سے دنیا کی تحصیل مقصود ہو ایسے علم کی قرآن مجید نے مذمت کی بلکہ وہ علم مراد ہے جو قرآن و حدیث سے حاصل ہو کہ یہی علم وہ ہے جس سے دنیا و آخرت دونوں سنورتی ہیں اور یہی علم ذریعہ نجات ہے اور اسی کی قرآن و حدیث میں تعریفیں آئی ہیں اور اسی کی تعلیم کی طرف توجہ دلائی گئی ہے قرآن مجید میں بہت سے مواقع پر اس کی خوبیاں صراحتاً یا اشارۃً بیان فرمائی گئیں۔

اللہ عز و جل فرماتا ہے:

(اَلَّذِي يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ) (1)

اللہ (عز و جل) سے اس کے بندوں میں وہی ڈرتے ہیں، جو علم والے ہیں۔

اور فرماتا ہے:

(يَرْفَعُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ كَرَجٍ) (2)

اللہ (عز و جل) تمہارے ایمان والوں کے اور ان کے جن کو علم دیا گیا ہے، درجے بلند فرمائے گا۔

اور فرماتا ہے:

(فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِنْهُمْ طَائِفَةٌ لِيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا

(1) پ ۲۲، قاطر ۲۸۔

اس آیت کے تحت مفسر شبیر مولا سید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ اور اس کے صفات جانتے اور اس کی عظمت کو پہچانتے ہیں، جتنے علم زیادہ اتنا خوف زیادہ۔ حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے فرمایا کہ مراد یہ ہے کہ مخلوق میں اللہ تعالیٰ کا خوف اس کو ہے جو اللہ تعالیٰ کے جبروت اور اس کی عزت و شان سے باخبر ہے۔ بخاری و مسلم کی حدیث میں ہے سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا قسم اللہ عز و جل دہن کی کہ میں اللہ تعالیٰ کو سب سے زیادہ جاننے والا ہوں اور سب سے زیادہ اس کا خوف رکھنے والا ہوں۔

(2) پ ۲۸، لہجہ دلتہ ۱۱۔

إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَخَذُّونَ ﴿١٢٢﴾ (3)

کیوں نہ ہوا کہ ان کے ہر گروہ میں سے ایک جماعت نکلے کہ دین کی سمجھ حاصل کرے اور واپس آ کر اپنی قوم کو ڈر سائے، اس امید پر کہ وہ بچیں۔

اور فرماتا ہے:

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿١٢٣﴾ (4)

تم فرماؤ! کیا جاننے والے اور انجان برابر ہیں، نصیحت تو وہی مانتے ہیں جو عقل والے ہیں۔

احادیث علم کے فضائل میں بہت آئیں چند احادیث ذکر کی جاتی ہیں۔



(3) پ ۱۱، التوبہ ۱۲۲۔

اس آیت کے تحت مفسر شہیر مولانا سید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما سے مروی ہے کہ قبائل عرب میں سے ہر قبیلہ سے جماعتیں سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہوتیں اور وہ حضور سے دین کے مسائل سیکھتے اور تفقہ حاصل کرتے اور اپنے لئے احکام دریافت کرتے اور اپنی قوم کے لئے، حضور انہیں اللہ اور رسول کی فرماں برداری کا حکم دیتے اور نماز، زکوٰۃ وغیرہ کی تعلیم کے لئے انہیں ان کی قوم پر مامور فرماتے، جب وہ لوگ اپنی قوم میں پہنچتے تو اعلان کر دیتے کہ جو اسلام لائے وہ ہم میں سے ہے اور لوگوں کو خدا کا خوف دلاتے اور دین کی مخالفت سے ڈراتے یہاں تک کہ لوگ اپنے والدین کو چھوڑ دیتے اور رسول کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم انہیں دین کے تمام ضروری علوم تعلیم فرما دیتے۔ (خازن) یہ رسول کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا معجزہ عظیمہ ہے کہ بالکل بے پڑھے لوگوں کو بہت تھوڑی دیر میں دین کے احکام کا عالم اور قوم کا ہادی بنا دیتے تھے۔ اس آیت سے چند مسائل معلوم ہوئے۔ مسئلہ: علم دین حاصل کرنا فرض ہے جو چیزیں بندے پر فرض و واجب ہیں اور جو اس کے لئے ممنوع و حرام ہیں اس کا سیکھنا فرض عین ہے اور اس سے زائد علم حاصل کرنا فرض کفایہ۔ حدیث شریف میں ہے علم سیکھنا ہر مسلمان پر فرض ہے۔ امام شافعی رضی اللہ عنہ نے فرمایا کہ علم سیکھنا نفل نماز سے افضل ہے۔

مسئلہ: طلب علم کے لئے سفر کا حکم حدیث شریف میں ہے جو شخص طلب علم کے لئے راہ چلے اللہ اس کے لئے جنت کی راہ آسان کرتا ہے۔

(ترمذی)

مسئلہ: فضل ترین علوم ہے۔ حدیث شریف میں ہے سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اللہ تعالیٰ جس کے لئے بہتری چاہتا ہے اس کو دین میں فقیہ بناتا ہے، میں تقسیم کرنے والا ہوں اور اللہ تعالیٰ دینے والا۔ (بخاری و مسلم) حدیث میں ہے ایک فقیہ شیعہ ن پر ہزار عابدوں سے زیادہ سخت ہے۔ (ترمذی) فقہ احکام دین کے علم کو کہتے ہیں، فقہ مصطلح اس کا صحیح مصداق ہے۔

(4) پ ۲۳، الزمر ۹۔

احادیث

حدیث ۱: جس شخص کے ساتھ اللہ تعالیٰ بھلائی کا ارادہ کرتا ہے، اس کو دین کا نقیہ بناتا ہے اور میں تقسیم کرتا ہوں اور اللہ (عزوجل) دیتا ہے۔ (1)

حدیث ۲: سونے چاندی کی طرح آدمیوں کی کانیں ہیں، جو لوگ جاہلیت میں اچھے تھے، اسلام میں بھی اچھے ہیں جبکہ علم حاصل کریں۔ (2)

حدیث ۳: انسان جب مرجاتا ہے اس کا عمل منقطع ہو جاتا ہے مگر تین چیزیں (کہ مرنے کے بعد بھی یہ عمل ختم

(1) صحیح البخاری، کتاب العلم، باب من یرد اللہ بہ خیرا ینفعہ فی الدین، الحدیث: ج ۱، ص ۴۲۔

نقہ کے شرعی معنی یہ ہیں کہ احکام شرعیہ کو اپنے ذہن کے تفصیلی دلائل سے جانتا۔ (اس حدیث کے) معنی یہ ہوئے کہ اللہ جسے تمام دنیا کی بھلائی عطا فرمانا چاہتا ہے اسے نقیہ بناتا ہے۔ (ماخوذ از نزہۃ القاری شرح صحیح البخاری، ج ۱، ص ۴۲۲)

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی اسے علم، دینی سمجھ اور دانائی بخشتا ہے۔ خیال رہے کہ فقہ ظاہری، شریعت ہے اور فقہ باطنی، طریقت اور حقیقت، یہ حدیث دونوں کو شامل ہے۔ اس (حدیث) سے دو مسئلے ثابت ہوئے ایک یہ کہ قرآن و حدیث کے ترجمے اور الفاظ و لفظ لیتا علم دین نہیں بلکہ انکا سمجھنا علم دین ہے۔ یہی مشکل ہے۔ اسی کے لئے فقہاء کی تقلید کی جاتی ہے۔ اسی وجہ سے تمام مفسرین و محدثین آئمہ مجتہدین کے معتقد ہوئے اپنی حدیث دانی پر نازاں نہ ہوئے۔ دوسرے یہ کہ حدیث و قرآن کا علم کمال نہیں، بلکہ انکا سمجھنا کمال ہے۔ عالم دین وہ ہے جسکی زبان پر اللہ عزوجل اور رسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا فرمان ہو اور دل میں انکا فیضان۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۱۸۷)

(2) صحیح مسلم کتاب البر والصلۃ... إلخ، باب الارواح جنود مجندۃ، الحدیث: ۱۶۰۔ (۲۶۳۸)، ص ۱۳۱۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی صورت میں تمام انسان یکساں مگر سیرت، اخلاق اور صفات میں مختلف جیسے ظاہری زمین یکساں اس میں کانیں مختلف، نیک سے نیک ظاہر ہوگی اور بد سے بدی۔

۲۔ یعنی جو زمانہ کفر میں عمدہ اخلاق، بہترین صفات کی وجہ سے اپنے قبیلوں کے سردار تھے جب وہ مسلمان ہو کر علم سیکھ لیں تو مسلمانوں میں سردار ہی رہیں گے، اسلام سے عزت بڑھتی ہے کھٹی نہیں۔ وہ لوگ اسلام سے پہلے کچھ میں لتھڑے ہوئے لعل تھے۔ مسلمان ہو کر عالم بنے، دھل کر صاف ہو گئے۔ اس سے معلوم ہوا کہ نو مسلموں کو حقیر جانتا بہت برا ہے۔ اور کفار کا سردار مسلمان ہو کر مسلمانوں کا سردار ہی رہے گا۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۱۹۹)

نہیں ہوتے اس کے نامہ اعمال میں لکھے جاتے ہیں) (۱) صدقہ جاریہ اور (۲) علم جس سے نفع حاصل کیا جاتا ہو اور (۳) اولاد صالح جو اس کے لیے دعا کرتی رہتی ہے۔ (۳)

حدیث ۴: جو شخص کسی راستہ پر علم کی طلب میں چلے، اللہ تعالیٰ اس کے لیے جنت کا راستہ آسان کر دے گا اور جب کوئی قوم خانہ خدا میں مجتمع ہو کر کتاب اللہ کی تلاوت کرے اور اس کو پڑھے پڑھائے تو اس پر سکینہ اترتا ہے اور رحمت ڈھانک دیتی ہے اور ملائکہ گھیر لیتے ہیں اور اللہ تعالیٰ ان کا ذکر ان لوگوں میں کرتا ہے جو اس کے مقرب ہیں اور جس کے عمل نے سستی کی تو اس کا نسب اسے تیز رفتار نہیں کریگا۔ (۴)

(۳) صحیح مسلم، کتاب الوصیۃ، باب ما یلحق الانسان من الثواب بعد وفاته، الحدیث: ۱۳۔ (۱۶۳۱)، ص ۸۸۶۔

وسنن ابی داود، کتاب الوصایا، باب ما جاء فی الصدقة عن الہیت، الحدیث: ۲۸۸۰، ج ۳، ص ۱۶۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ انسان سے مراد مسلمان ہے عمل سے مراد نیکیوں کا ثواب، جیسا کہ اگلے مضمون سے ظاہر ہے لہذا اس حدیث پر یہ اعتراض نہیں کہ بعض مقبول قبر میں نماز و قرآن پڑھتے ہیں جیسا کہ احادیث میں ہے کیونکہ ان اعمال پر ثواب نہیں اسی لئے ہی مردے زندوں سے ثواب بخشنے کی تمنا کرتے ہیں جیسا کہ روایات میں ہے کیونکہ ثواب زندگی کے اعمال پر ہے۔

۲۔ یہ تین چیزیں جن کا ثواب مرنے کے بعد خواہ مخواہ پہنچتا رہتا ہے کوئی ایصال ثواب کرے یا نہ کرے۔ صدقہ جاریہ سے مراد اوقاف ہیں جیسے مسجدیں، مدرسے، وقف کیے ہوئے باغ جن سے لوگ نفع اٹھاتے رہتے ہیں، ایسے ہی علم سے مراد دینی تصنیف، نیک شاگرد جن سے دینی لیٹان پہنچتے رہیں۔ نیک اولاد سے مراد عالم عامل بیٹا۔ مراقا نے فرمایا کہ یزید غوا کی قید ترغیبی ہے یعنی بیٹے کو چاہیے کہ باپ کو دعائے خیر میں یاد رکھے حتیٰ کہ نماز میں ماں باپ کو دعائیں پہلے دے بعد میں سلام پھیرے ورنہ اگر نیک بیٹا دعا بھی نہ کرے ماں باپ کو ثواب ملتا رہے گا۔ خیال رہے کہ یہ حدیث اس کے خلاف نہیں جس میں ارشاد ہوا کہ جو اسلام میں اچھا طریقہ ایجاد کرے، اسے قیامت تک ثواب ملتا ہے یا فرمایا گیا کہ نمازی کو ہمیشہ ثواب ملتا رہتا ہے کیونکہ وہ سب چیزیں صدقہ جاریہ ہیں یا نفع علم میں داخل ہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۰۱)

(۴) صحیح مسلم، کتاب الذکر... الخ، باب فضل الاجتماع علی تلاوة القرآن... الخ، الحدیث: ۳۸۔ (۲۶۹۹)، ص ۱۳۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۵۔ یعنی جو علم دین سیکھنے یا دینی فتویٰ حاصل کرنے کے لیے عالم کے گھر جائے۔ سفر کر کے یا چند قدم تو اس کی برکت سے اللہ دین میں اس پر جنت کے کام آسان کرے گا، مرتے وقت ایمان نصیب کرے گا، قبر و حشر کے حساب میں کامیابی اور پل صراط پر آسانی عطا فرمائے گا۔ جنت کے راستے میں سب چیزیں داخل ہیں۔ اس سے معلوم ہوا کہ علم کے لئے سفر کرنا بہت ثواب ہے۔ مولیٰ علیہ السلام طلب علم کے لئے خضر علیہ السلام کے پاس سفر کر کے گئے، حضرت جابر ایک حدیث کے لئے ایک ماہ کا سفر طے کر کے عبداللہ ابن قیس کے پاس

حدیث ۵: مسجد دمشق میں ایک شخص ابو درداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس آیا اور کہنے لگا میں مدینہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے آپ کے پاس ایک حدیث سننے کو آیا ہوں، مجھے خبر ملی ہے کہ آپ اسے بیان کرتے ہیں کسی اور کام کے لیے نہیں آیا ہوں۔ حضرت ابو درداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو یہ فرماتے سنا ہے کہ جو شخص علم کی طلب میں کسی راستہ کو چلے اللہ تعالیٰ اس کو جنت کے راستہ پر لے جاتا ہے اور طالب علم کی خوشنودی کے لیے فرشتے اپنے بازو بچھا دیتے ہیں اور عالم کے لیے آسمان والے اور زمین کے بسنے والے اور پانی

پاس پہنچے۔ (مرقاۃ)

۶۔ یہاں اللہ کے گھر سے مراد مسجدیں، دینی مدرسے اور صوفیاء کی خانقاہیں ہیں، جو اللہ کے ذکر کے لئے وقف ہیں۔ یہود و نصاریٰ کے عبادت خانے اس سے خارج ہیں کہ وہاں تو مسلمان کو بلا ضرورت جانا ہی منع ہے۔ درس قرآن سے مراد قرآن شریف کی تلاوت۔ تجوید احکام سیکھنا ہیں لہذا اس میں صرف، نحو، فقہ حدیث، تفسیر وغیرہ کے درس شامل ہیں۔ جیسا کہ مرقاۃ وغیرہ میں ہے، اسی لیے تلاوت کے بعد درس کا علیحدہ ذکر فرمایا۔

۷۔ سکینہ اللہ کی ایک مخلوق ہے جس کے اترنے سے دلوں کو چین نصیب ہوتا ہے، کبھی ابر کی شکل میں نمودار ہوتی ہے اور دیکھی بھی جاتی ہے، اس کی برکت سے دل سے غیر خدا کا خوف جاتا رہتا ہے۔ رحمت سے خالص رحمت مراد ہے جو بوقت ذکر ذکر کو ہر طرف سے گھیرتی ہے۔ فرشتوں سے سیاحین فرشتے مراد ہیں جو ذکر کی مجلسیں ڈھونڈتے پھرتے ہیں ورنہ اعمال لکھنے والے اور حفاظت کرنے والے فرشتے ہر وقت انسان کے ساتھ رہتے ہیں۔ مقصد یہ ہے کہ جہاں مجمع کے ساتھ ذکر اللہ ہو رہا ہو وہاں یہ تین رحمتیں اترتی ہیں۔ اس سے معلوم ہوا کہ تنہا ذکر سے جماعت کامل کر ذکر کرنا افضل ہے، جماعت کی نماز کا درجہ زیادہ کہ اگر ایک کی قبول سب کی قبول۔

۸۔ یعنی فرشتوں کی جماعت۔ اس کی شرح وہ حدیث ہے کہ فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے جو رب کو اکیلے یاد کرے رب بھی اسے ایسے ہی یاد کرتا ہے، جو جماعت میں یاد کرے رب اسے فرشتوں میں یاد کرتا ہے۔ قرآن کریم فرماتا ہے: "فَإِذَا كُذِّبُوا أَذْكُرْ كُفْرَهُ" اس رب کی یاد کا اثر یہ پڑتا ہے کہ مخلوق اس بندے کو یاد کرنے لگتی ہے، بزرگوں کے مزارات پر زائرین کا ہجوم وہاں ذکر اللہ کی دھوم اسی یاد کا نتیجہ ہے۔

۹۔ یعنی نسب کی شرافت عمل کی کمی کو پورا نہ کرے گی۔ شعر

بندۂ عشق شدی ترک نسب کن جانی کہ دریں راہ فلاں ابن فلاں چیز سے نیست

کیا تمہیں خبر نہیں کہ نوح علیہ السلام کی کشتی میں کتے بچوں کو جگہ تھی مگر ان کے کافر بیٹے کنعان کے لئے جگہ نہ تھی۔ مقصد یہ کہ شریف النسب اعمال سے نا پرانا نہ ہو جائیں، یہ منشاء نہیں کہ شرافت نسب کوئی چیز نہیں اس کی تحقیق ہمارے رسالہ "الکلام القبول فی طہارت نسب الرسول" میں دیکھو مؤمن کو نسب الرسول ضرور فائدہ دے گا۔ تمام دنیا کی عورتیں حضرت فاطمہ زہرا کے قدم پاک کو نہیں پہنچ سکتیں، رب نے بنی اسرائیل سے فرمایا: "إِنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ" بنی اسرائیل کے تمام عالم پر افضل ہونے کی یہی وجہ تھی کہ وہ اول و نبیاء ہیں لہذا یہ حدیث کسی آیت کے خلاف نہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۱، ص ۲۰۲)

کے اندر مچھیاں یہ سب استغفار کرتے ہیں اور عالم کی فضیلت عابد پر ایسی ہے جیسے چودھویں رات کے چاند کو تمام ستاروں پر اور سبے شک علماء و ارث انبیاء ہیں، انبیاء نے اشرافی اور روپیہ کا وارث نہیں کیا، انھوں نے علم کا وارث کیا، پس جس نے علم کو لیا اس نے پورا حصہ لیا۔ (5)

(5) سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه علی العبادۃ، الحدیث: ۲۶۹۱، ج ۴، ص ۳۱۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ دمشق شام کا دار الخلافہ ہے۔ کثیر ابن قیس تابعی ہیں، حضرت ابوالدرداء کے محبت یافتہ ہیں۔

۲۔ ظاہر یہ ہے کہ اس طالب علم نے متن حدیث سن لیا تھا اس شوق میں یہاں آئے کہ صحابی کے منہ سے سنوں تاکہ برکت اور زیادتی یقین حاصل ہو۔ یہ مطلب بھی ہو سکتا ہے کہ انہوں نے متن حدیث نہیں سنا تھا اجمالاً پتہ لگا تھا کہ حضرت ابوالدرداء فلاں ہارے میں حدیث بیان فرماتے ہیں۔ چونکہ مدینہ کے معنی مطلقاً شہر کے ہیں اس لیے مدینہ الرسول فرمایا، یعنی میں مدینہ منورہ سے آیا ہوں۔ اس سے دو مسئلے معلوم ہوئے: ایک یہ کہ طلب علم کے لیے سفر بزرگوں کی بلکہ نبیوں کی سنت ہے۔ موسیٰ علیہ السلام طلب علم کے لئے بہت دراز سفر کر کے خضر علیہ السلام کے پاس تشریف لے گئے۔ دوسرے یہ کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم کو فقط الرسول کہہ سکتے ہیں، جب کہ علامت سے معلوم ہوا کہ یہاں حضور مراد ہیں رب تعالیٰ فرماتا ہے: "يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ" اور فرماتا ہے: "مَنْ يُطِيعِ الرَّسُولَ" اسے ناجائز کہنا بے دلیل ہے۔

۳۔ یعنی سوا حدیث سننے کے اور کسی دینی دنیوی غرض کے لئے سفر نہیں کیا۔ اس سے وہ لوگ عبرت پکڑیں جو کہتے ہیں کہ سوائے تین مسجدوں کے اور کسی طرف سفر جائز نہیں، حالانکہ خود نوکری تجارت وغیرہ کے لئے سفر کرتے رہتے ہیں۔ اس سے معلوم ہوا کہ بزرگوں کی ملاقات، زیارت قبور وغیرہ کے لئے سفر جائز ہے۔ جیسا کہ شامی وغیرہ میں ہے اور ان شاء اللہ باب المساجد میں ممانعت سفر کی حدیث کے ماتحت بھی پوری تحقیقات کر دی جائے گی، نیز اس کے لئے ہماری کتاب جاء الحق کا مطالعہ کرو۔

۴۔ ظاہر یہ ہے کہ یہ وہ حدیث نہیں ہے جس کے سننے کے لئے وہ صاحب حاضر ہوئے تھے بلکہ ان کی ہمت افزائی اور ان کے سطر کی قبولیت کی بشارت کے لئے یہ حدیث سنائی۔ مطلب یہ ہے کہ جو مسئلہ پوچھنے، علم پڑھنے، حدیث سننے وغیرہ کے لئے سفر کر کے یا بغیر سفر تھوڑا راستہ طے کر کے جائے تو اسے دنیا میں نیک اعمال کی توفیق ملے گی جو جنت ملنے کا سبب ہیں یا آخرت میں بل صراط پر گزر آسان ہوگی اور جنت میں سہولت سے پہنچے گا۔ امام شافعی فرماتے ہیں: کہ علم دین کی طلب نقلی نماز سے افضل ہے کہ یہ فرض ہے وہ نقل۔ (مرقاۃ)

۵۔ ظاہر یہ ہے کہ یہاں حقیقی معنی ہی مراد ہیں کہ جب طالب علم میں مشغول ہوتا ہے تو اس کا کلام سننے کے لئے ملائکہ نیچے اتر آتے ہیں اور گفتگو سنتے ہیں جیسا تلاوت قرآن کے موقع پر یا قیامت میں طالب علم کے قدموں کے نیچے فرشتے اپنے پر بچھائیں گے یا مطلب یہ ہے کہ طالب علم کے لئے ملائکہ یا زمندی کا اظہار کرتے ہیں اور اس کی مشقتوں کو آسان کرتے ہیں۔ رب تعالیٰ فرماتا ہے: "وَ اخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذَّلٰی" اسی جگہ مرقاۃ نے اس کے متعلق عجیب واقعات بیان فرمائے ہیں۔

۶۔ یعنی علمائے دین کے لئے چاند، سورج، تارے اور آسمانی فرشتے ایسے ہی زمین کے ذرے، ہیزیوں کے پتے در بعض جن و انس سے

حدیث ۶: عالم کی فضیلت عابد پر ویسی ہے جیسی میری فضیلت تمہارے ادنیٰ پر اس کے بعد پھر فرمایا کہ اللہ تعالیٰ اور اس کے فرشتے اور تمام آسمان و زمین والے یہاں تک کہ چیونٹی اپنے سوراخ میں اور یہاں تک کہ مچھلی اس کی بھلائی کے خواہاں ہیں، جو لوگوں کو اچھی چیز کی تعلیم دیتا ہے۔ (6)

اور تمام دریائی جانور مچھلیوں وغیرہ دعائے مغفرت کرتے ہیں، کیونکہ علمائے دین کی وجہ سے دین باقی ہے اور دین کے بقا سے عالم قائم ہے، علماء کی ہی برکتوں سے بارشیں ہوتی ہیں اور مخلوق کو رزق ملتا ہے، حدیث شریف میں ہے: "يَهْدِي مُمْتَرُونَ وَيُزِيلُونَ قُتُونَ"۔ علماء کے اٹھنے سے اسلام اٹھ جائے گا اور قیامت برپا ہو جائے گی، علماء دنیا کا تعویذ ہیں۔ (مرقاۃ واضحہ) خیال رہے کہ علماء میں علمائے شریعت بھی داخل ہیں اور علمائے طریقت بھی بلکہ کوئی شخص علم کے بغیر ولی اللہ نہیں بنا، اللہ جالوں کو ولی نہیں بناتا فرماتا ہے: "إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ"۔ (ازمرقاۃ)

۷۔ عالم سے مراد وہ عالم ہے جو صرف ضروری اعمال پر قناعت کرے اور بجائے نوافل کے علمی خدمات انجام دے۔ عابد سے وہ شخص مراد ہے جو صرف اپنے ضروری مسائل سے واقف ہو اور اپنے اوقات نوافل میں گزارے۔ بے دین اور فاسق عالم اور نرا جاہل عابد اس گفتگو سے خارج ہے۔ خیال یہ چاند آفتاب سے نور لے کر رات میں سارے عالم کو جگمگا دیتا ہے، ایسے ہی عالم نبی صلی اللہ علیہ وسلم سے فیض لے کر دینی روشنی پھیلا دیتے ہیں۔ تارے خود نور ہیں مگر چاند نور بجھنے والا۔ عابد اپنے لیے اور عالم عالم کے لیے کوشش کرتے ہیں، عابد اپنی کمبلی بچاتا ہے، عالم طوفان سے لوگوں کا جہاز نکال لے جاتا ہے۔ لازم سے متعدی افضل۔

۸۔ سبحان اللہ! جب مورث اتنے اعلیٰ تو وارث کیسے شان دار ہوں گے۔ مرقاۃ نے فرمایا کہ علمائے مجتہدین رسولوں کے وارث ہیں اور علمائے غیر مجتہدین نبیوں کے، لفظ علماء و انبیاء ان دونوں کو شامل ہے۔ خیال رہے کہ علمائے اسلام حضور کے وارث اور چونکہ حضور تمام نبیوں کی صفات کے جامع ہیں لہذا علماء سارے انبیاء کے وارث ہوئے۔

۹۔ خیال رہے کہ بعض انبیاء تبارک الدنیا تھے جنہوں نے کچھ جمع نہ کیا جیسے حضرت یحییٰ و عیسیٰ علیہما السلام اور بعض نے بہت مال رکھا۔ جیسے حضرت سلیمان و داؤد علیہما السلام لیکن کسی نبی کی مالی میراث نہ تھی، ان کا چھوڑا ہوا مال دین کے لیے وقف ہوتا ہے اور تاقیامت علماء ان کے وارث، اسی لیے علماء کو دارثین انبیاء کہا جاتا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۱۰)

(6) المرجع السابق، الحدیث: ۶۹۴، ج ۴، ص ۳۱۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۔ ظاہر یہ ہے کہ ان سے خاص مرد مراد نہیں بلکہ عمومی سوال ہے، یعنی اگر دو آدمیوں میں سے ایک عالم اور ایک عابد ہو تو درجہ کس کا زیادہ

ہوگا، عالم و عابد کے معنی ہم پہلے بیان کر چکے۔

۲۔ یہ تشبیہ بیان نوعیت کے لئے نہ کہ بیان مقدار کے لئے، یعنی جس قسم کی بزرگی مجھ کو تمام مسلمانوں پر حاصل ہے اس قسم کی بزرگی عالم کو عابد پر یعنی دینی بزرگی نہ کہ محض دنیاوی، اگرچہ ان دونوں بزرگیوں میں کر دہا فرق ہیں۔ بادشاہ کو رعایا پر سلطنت کی، مالدار کو فقیر پر۔

حدیث ۷: ایک فقیہ ہزار عابد سے زیادہ شیطان پر سخت ہے۔ (7)

حدیث ۸: علم کی طلب ہر مسلم پر فرض ہے اور علم کو نا اہل کے پاس رکھنے والا ایسا ہے، جیسے سور کے گلے میں جواہر اور موتی اور سونے کا ہار ڈالنے والا۔ (8)

مال کی، جتنے والے کو بے کس پر قوت کی، حسین کو بد شکل پر جمال کی بزرگی حاصل ہے۔ مگر یہ بزرگیاں دنیوی اور فانی ہیں، نبی کو مخلوق پر دینی بزرگی حاصل ہے، جو ابد الابد تک قائم ہے، ایسے ہی عالم کو جاہل پر، آج سکندر کو کسی فقیر پر ملکی بزرگی نہیں، مگر امام ابو حنیفہ کو تمام مقلدین پر سبے پناہ عظمت اب بھی حاصل ہے۔ خیال رہے حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو نبیوں پر اور درجہ کی بزرگی ہے، صحابہ پر اور درجہ کی، اولیاء و علماء پر اور درجہ کی، عوام پر اور درجہ کی، آخری کلمہ میں اس آخری درجہ کی طرف اشارہ ہے۔ فرماتے ہیں: "وَاحْشُرْنِي فِي زُمْرَةِ النَّسَاكِينَ" رب تعالیٰ فرماتا ہے: "مَثَلُ نُورٍ كَمِثْلِكَ فِيهَا مِصْبَاحٌ" اس آیت میں نور الہی کی مثال نور چراغ سے دی گئی حالانکہ چراغ کے نور کو اس نور سے کیا نسبت؟ ایسے ہی یہ بھی تمثیل ہے۔

۳۔ ملائکہ سے حاملین عرش فرشتے اور اہل سموات سے باقی فرشتے مراد ہیں۔ اللہ کی صلوة سے اس کی خاص رحمت اور مخلوق کی صلوة سے خصوصی دعائے رحمت مراد ہے، ورنہ عام رحمتیں اور عام دعائیں سارے مسلمانوں کے لیے ہیں۔ رب تعالیٰ فرماتا ہے: "هُوَ الَّذِي يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ" اور فرماتا ہے: "وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا" الخ۔ لہذا یہ حدیث نہ تو قرآن کے خلاف ہے اور نہ اس سے یہ لازم آیا کہ علماء حضور کے برابر ہو جائیں کیونکہ حضور پر بھی رب تعالیٰ صلوة بھیجتا ہے اور علماء پر بھی۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۱۱)

(7) سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه علی العبادۃ، الحدیث: ۲۶۹۰، ج ۴، ص ۳۱۱۔

وسنن ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فضل العلماء والحث علی طلب العلم، الحدیث: ۲۲۲، ج ۱، ص ۱۳۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب حدیث شیطان سے بچنے کا بڑا ذریعہ ہے۔ خیال رہے کہ یہاں عالم سے وہ عالم مراد ہے جس پر اللہ کا فضل ہو اسی لیے فقیہ فرمایا گیا عالم نہ فرما یا گیا، یعنی دین کی صحیح سمجھ رکھنے والا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۱۳)

(8) سنن ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فضل العلماء والحث علی طلب العلم، الحدیث: ۲۲۳، ج ۱، ص ۱۳۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب مسند امام ابو حنیفہ میں "وَمُسْلِمٌ" ہے یعنی ہر مسلمان مرد عورت پر علم سیکھنا فرض ہے، علم سے بعد ضرورت شرعی مسائل مراد ہیں۔ لہذا روزے نماز کے مسائل ضروریہ سیکھنا ہر مسلمان پر فرض، حیض و نفاس کے ضروری مسائل سیکھنا ہر عورت پر، تجارت کے مسائل سیکھنا ہر تاجر پر، حج کے مسائل سیکھنا حج کو جانے والے پر عین فرض ہیں۔ لیکن دین کا پورا عالم بننا فرض کفایہ کہ اگر شہر میں ایک نے داکر دیا تو سب بری ہو گئے۔ صوفیہ فرماتے ہیں کہ اپنے نفس کے آفات شیطانی اثرات وغیرہ کا جاننا بھی ہر مسلمان کو ضروری ہے تاکہ ان سے بچ سکے۔

- حدیث ۹: جو شخص طلب علم کے لیے گھر سے نکلا تو جب تک واپس نہ ہو، اللہ (عزوجل) کی راہ میں ہے۔ (9)
- حدیث ۱۰: مومن کبھی خیر (یعنی علم) سے آسودہ نہیں ہوتا، یہاں تک کہ اس کا منتہی جنت ہوتا ہے۔ (10)
- حدیث ۱۱: اللہ تعالیٰ اس بندہ کو خوش رکھے جس نے میری بات سنی اور یاد کر لی اور محفوظ رکھی اور دوسرے کو پہنچا دی، کیونکہ بہت سے علم کے حامل فقیہ نہیں اور بہت سے علم کے حامل اس تک پہنچاتے ہیں، جو ان سے زیادہ فقیہ ہے۔ (11)

۲۔ یہاں علم سے مراد وقتی و باریک مسائل اور گہرے علمی نکات ہیں جنہیں عوام نہ سمجھ سکیں، یعنی وہ عالم جو عوام کے سامنے غیر ضروری اور باریک و پیچیدہ مسائل یا قابل شرح آیات و احادیث پیش کرے وہ ایسا ہی بے وقوف ہے جیسے موتیوں کا ہار سوروں کو پہنانے والا کہ جہلاء ایسی چیزیں سن کر انکار کر بیٹھتے ہیں۔ اسی لیے سیدنا علی مرتضیٰ فرماتے ہیں کہ لوگوں سے ان کی عقل کے لائق کلام کرو ورنہ وہ اللہ اور رسول کو جھٹلا دیں گے اور اس کا وبال تم پر ہوگا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۱۵)

(9) سنن الترمذی، کتاب العلم، باب فضل طلب العلم، الحدیث: ۲۶۵۶، ج ۴، ص ۲۹۴۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جو کوئی مسئلے پوچھنے کے لیے اپنے گھر سے، یا علم کی جستجو میں اپنے وطن سے علماء کے پاس گیا وہ بھی مجاہد فی سبیل اللہ ہے، غازی کی طرح گھر لوٹنے تک اس کا سارا وقت اور ہر وقت اور ہر حرکت عبادت ہوگی، گھر آ جانے کے بعد یہ ثواب ختم ہو جائے گا، پھر عمل اور تبلیغ کرنے کا ثواب شروع ہوگا۔ لہذا یہ حدیث اس حدیث کے خلاف نہیں کہ علم صدقہ جاریہ ہے جس کا ثواب بعد موت بھی ملتا رہتا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۱۷)

(10) المرجع السابق، باب ما جاء فی فضل الفقه علی العبادۃ، الحدیث: ۲۶۹۵، ج ۴، ص ۳۱۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی علم دین کی حرص ایمان کی علامت ہے، جتنا ایمان قوی اتنی ہی یہ حرص زیادہ، بڑے بڑے علماء علم پر قناعت نہیں کرتے۔ صوفیہ فرماتے ہیں: "أُظْلِمُوا الْعِلْمَ مِنَ الْمَهْدِ إِلَى اللَّعْدِ" یعنی گہوارہ سے قبر تک علم یکسو۔ اس حدیث میں علم کے حرص کو جنت کی بشارت ہے۔ ان شاء اللہ علم دین کا متلاشی مرتے ہی جنتی ہے۔ علماء فرماتے ہیں کہ کسی کو اپنے خاتمہ کی خبر نہیں سوا عالم دین کے کہ ان کے لیے حضور نے وعدہ فرمایا کہ اللہ جس کی بھلائی چاہتا ہے اسے علم دین دیتا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۱۹)

(11) سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ما جاء فی الحق... الخ، الحدیث: ۲۶۶۵، ج ۴، ص ۲۹۸۔

ومشکاۃ المصابیح، کتاب العلم، باب ما جاء فی الحق علی تبلیغ السماع، الحدیث: ۲۲۸، ج ۱، ص ۱۱۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی مجھ سے یا میرے صحابہ سے میرا یا ان کا کوئی قول یا عمل سنے۔ لہذا حدیث چار قسم کی ہوئی حضور کا قول اور فعل، صحابہ کا قول۔

حدیث ۱۲: مومن کو اس کے عمل اور نیکیوں سے مرنے کے بعد بھی یہ چیزیں پہنچتی رہتی ہیں۔ علم جس کی اس نے تعلیم دی اور اشاعت کی اور اولاد صالح جسے چھوڑا ہے یا مصحف جسے میراث میں چھوڑا یا مسجد بنائی یا مسافر کے لیے مکان بنا دیا نہر جاری کر دی یا اپنی صحت اور زندگی میں اپنے مال میں سے صدقہ نکال دیا جو اس کے مرنے کے بعد اس کو ملے گا۔ (12)

حدیث ۱۳: حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے فرمایا کہ ایک گھڑی رات میں پڑھنا پڑھانا، ساری رات عبادت سے افضل ہے۔ (13)

اور فعل۔ اسی لیے مبتدا جمع اور شبیہ انگریز ارشاد ہوا۔

۲۔ اس طرح کہ مضمون نہ بدلے یا حدیث کے الفاظ میں فرق نہ پیدا ہو۔ خیال رہے کہ ابن عمر، مالک ابن انس، ابن سیرین وغیرہم کے نزدیک حدیث کی روایت بالمعنی حرام ہے، کیونکہ بسا اوقات لفظ کے بدلنے سے معنی بدل جاتے ہیں اور راوی کو خبر نہیں ہوتی اور امام حسن، شعبی، نخعی و مجاہد وغیرہم کے نزدیک روایت بالمعنی جائز کہ راوی حدیث کے الفاظ اس طرح بدل دے کہ معنی نہ بدلیں۔ پہلے قول میں احتیاط ہے دوسرے میں گنجائش، بہتر یہی ہے کہ الفاظ بھی نہ بدلیں۔ دیکھئے حضرت داکل ابن حجر نے نماز کی آئین کے بارے میں فرمایا "مَدَّيْهَا صَوْتُهُ" بعض راویوں نے اسے "رَفَعَ يَهَا صَوْتُهُ" سے روایت کیا۔ وہ سمجھے کہ دونوں کے معنی ایک ہی ہیں مگر بعد والوں کو دھوکہ لگا کہ شاید اس کے معنی ہیں بلند آواز سے آئین کہی، حالانکہ اس کا ترجمہ تھا کہ آئین کھینچ کر الف کے مد کے ساتھ کہی، روایت بالمعنی میں یہ خطر ہے ہیں اس لیے فرمایا کہ جیسی سننے دہی پہنچائے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۲۴)

(12) سنن ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب ثواب معلم الناس الخیر، الحدیث: ۴۴۲، ج ۱، ص ۱۵۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ زبان سے یا قلم سے کہ اپنے کامل شاگرد اور بہترین تصنیفات چھوڑیں، جب تک مسلمان ان سے فائدہ اٹھاتے رہیں گے، اسے ثواب پہنچتا رہے گا۔

۲۔ خواہ اولاد کو نیک بنا کر گیا یا اس کے مرنے کے بعد اولاد نیک ہو گئی دونوں صورتوں میں اسے ثواب ملتا رہے گا۔

۳۔ اس طرح کہ اپنے ہاتھ سے قرآن لکھ کر یا خرید کر چھوڑ گیا اسی حکم میں تمام دینی کتب ہیں۔

۴۔ کوشش سے یا اپنے پیسہ یا اپنے ہاتھ سے، اسی حکم میں مدرسے اور خانقاہیں بھی ہیں۔

۵۔ تندرستی کی اس لیے قید لگائی کہ مرض الموت میں خیرات کرنے کا آدھا ثواب ہے کیونکہ اس وقت خود اپنے کو ماں کی حاجت نہیں رہتی

اس میں تمام صدقہ جاریہ آگئے جیسے کنویں کھدوانا، نکلے لگوانا، ہسپتال بنانا وغیرہ۔

۶۔ بعض تا قیامت بعض اس سے کم، جس قدر صدقہ کا بقا اسی قدر اس کا اجر۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۳۵)

(13) سنن الدارمی، باب مذاکرۃ العلم، الحدیث: ۶۱۳، ج ۱، ص ۱۵۷۔

حدیث ۱۴: رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مسجد میں تشریف لائے، وہاں دو مجلسیں تھیں۔ فرمایا کہ دونوں مجلسیں اچھی ہیں اور ایک دوسری سے افضل ہے، یہ لوگ اللہ (عزوجل) سے دعا کرتے ہیں اور اس کی طرف رغبت کرتے ہیں، وہ چاہے تو ان کو دے اور چاہے تو منع کر دے اور یہ دوسری مجلس والے علم سیکھتے ہیں اور جاہل کو سکھاتے ہیں یہ افضل ہیں، میں معلم بنا کر بھیجا گیا۔ اور اسی مجلس میں حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) بیٹھ گئے۔ (14)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ایسے ہی دن میں کچھ دیر علم کا مشغلہ تمام دن کی عبادت سے افضل ہے۔ عبادت سے نقلی عبادات مراد ہیں یہ مطلب نہیں کہ فرائض چھوڑ کر علم سیکھے۔ صوفیاء فرماتے ہیں کہ عالم دین کی نیند بھی عبادت ہے۔ علماء فرماتے ہیں کہ تلاوت قرآن سے فقہ سیکھنا افضل۔ ان دونوں کا، خدا یہ حدیث ہے اس کی وجہ ہم بارہا بیان کر چکے عالم تھوڑی عبادت پر جاہل کی بڑی عبادت سے زیادہ ثواب حاصل کر لیتا ہے۔

لطیفہ: ایک بزرگ پنہ سے حج بیت اللہ کے لیے پا پیادہ ہر پانچ قدم پر دو نفل پڑھتے چلے، دس سال میں گجرات پہنچے ان کی خدمت میں عرض کیا گیا کہ اگر آپ ہوائی جہاز سے ایک رات میں مکہ معظمہ پہنچ جاتے اور اتنے نوافل وہاں پڑھتے تو ہر رکعت پر ایک لاکھ کا ثواب پاتے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۳۷)

(14) سنن الدارمی، باب فی فضل العلم والعالم، الحدیث: ۳۳۹، ج ۱، ص ۱۱۱-۱۱۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی مسجد نبوی شریف میں صحابہ کی دو جماعتیں دو گوشوں میں تھیں، ایک گوشہ میں ایک جماعت نوافل و تلاوت وغیرہ عبادت کر رہی تھی، دوسرے گوشہ میں دوسری جماعت علمی گفتگو اور سیکھے سبق کی تکرار کر رہی تھی، حضور نے ان دونوں کو ملاحظہ فرمایا۔

۲۔ یعنی مجلس علم مجلس عبادت سے افضل ہے اسکی وجہ آگے آ رہی ہے۔

۳۔ عابدوں کی محنت اپنی ذات کے لیے ہے جس کی قبولیت اور ثواب یقینی نہیں کیونکہ یہ اللہ کے کرم پر موقوف ہے، س نے، ن چیزوں کا وعدہ نہیں فرمایا۔ اس حدیث میں معتزلہ کا کھلا ہوا رد ہے کہ وہ عبادت کا ثواب واجب اور ضروری جانتے ہیں۔ خیال رہے کہ آیت کریمہ "ادْعُونِيْ اَسْتَجِبْ" کے معنی یہ ہیں کہ تم مجھے پکارو میں جواب دوں گا یا تم مجھ سے دعا کرو ثواب دوں گا قبولیت دعا کا وعدہ نہیں، لہذا یہ حدیث اس آیت کے خلاف نہیں۔

۴۔ یعنی اپنے لیے کچھ نہیں مانگتے دین پھیلا رہے ہیں انکی خدمت یقینی قابل قدر ہے۔ خیال رہے کہ بے عمل عالم اس اندھے چراغ والے کی طرح ہے جو اپنے چراغ سے خود فائدہ نہ اٹھائے مگر لوگ فائدہ اٹھالیں لیکن غیر مقبول عبادت بالکل ہی بیکار جس سے کسی کو فائدہ نہیں، لہذا حدیث پر کوئی اعتراض نہیں بے عمل عالم ایسا ہی ہے جیسے بیمار طبیب اوروں کا علاج کر دے۔

۵۔ سبحان اللہ! جس علم کیسی بابرکت ہے اب بھی سرکار علماء ہی میں تشریف فرما رہتے ہیں انہیں مجلس علم میں ڈھونڈھو۔ خیال رہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم اگرچہ اول درجہ کے عابد بھی ہیں لیکن حضور کی عبادت عملی تعلیم ہے۔ لہذا آپ نماز پڑھتے ہوئے بھی معلم ہیں اور

حدیث ۱۵: جس نے میری امت کے دین کے متعلق چالیس حدیثیں حفظ کیں، اس کو اللہ تعالیٰ فقیہ اٹھائے گا اور میں اس کا شافع و شہید ہوں گا۔ (15)

حدیث ۱۶: دو حریص آسودہ نہیں ہوتے ایک علم کا حریص کہ علم سے کبھی اس کا پیٹ نہیں بھرے گا اور ایک دنیا کا لالچی کہ یہ کبھی آسودہ نہیں ہوگا۔ (16)

حدیث ۱۷: عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا دو حریص آسودہ نہیں ہوتے، ایک صاحب علم، دوسرا صاحب دنیا، مگر یہ دونوں برابر نہیں۔ صاحب علم اللہ (عزوجل) کی خوشنودی زیادہ حاصل کرتا رہتا ہے اور صاحب دنیا

حضور کی تشریف آوری کا اصل مقصد تعلیم ہے رب فرماتا ہے: "وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ"۔

(مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۳۸)

(15) شعب الایمان، باب فی طلب العلم، فصل فی فضل العلم و شرفہ، الحدیث: ۱۷۲۶، ج ۲، ص ۲۷۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس حدیث کے بہت پہلو ہیں: چالیس حدیثیں یاد کر کے مسلمان کو سنانا، چھاپ کر ان میں تقسیم کرنا، ترجمہ یا شرح کر کے لوگوں کو سمجھانا، راویوں سے سن کر کتابی شکل میں جمع کرنا، سب ہی اس میں داخل ہیں۔ یعنی جو کسی طرح دینی مسائل کی چالیس حدیثیں میری امت تک پہنچادے تو قیامت میں اس کا حشر علمائے دین کے زمرے میں ہوگا اور میں اس کی خصوصی شفاعت اور اس کے ایمان اور تقویٰ کی خصوصی گواہی دوں گا ورنہ عمومی شفاعت اور گواہی تو ہر مسلمان کو نصیب ہوگی۔ اسی حدیث کی بنا پر قرینہ تمام محدثین نے جہاں حدیثوں کے دفتر لکھے وہاں علیحدہ چھل حدیث جسے "اربعینہ" کہتے ہیں جمع کیں۔ امام نووی اور شیخ عبدالحق دہلوی کی اربعینہ مشہور ہیں۔ فقیر نے بھی اپنی کتاب "سلطنت مصطفیٰ" میں چالیس حدیثیں جمع کی ہیں۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۳۸)

(16) شعب الایمان، باب فی الزهد و قصر الامل، الحدیث: ۱۰۲۷۹، ج ۷، ص ۲۷۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حرص کے معنے ہیں ہمیشہ زیادتی کی خواہش، دنیاوی حرص بری ہے دینی حرص اچھی، عالم کو علم سے کبھی سیری نہیں ہوتی یہ اللہ کی نعمت ہے، رب فرماتا ہے: "قُلْ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا" دنیا دار دنیا سے سیر نہیں ہوتا، جیسے جلندھر کا بیمار پانی سے۔ خیال رہے کہ یہ سب اپنے لیے ہیں، حضور امت کے لیے یہ ان سے لے کر سیر نہیں ہوتے حضور دے کر سیر نہیں ہوتے، رب فرماتا ہے: "كَوَيْضٌ عَلَيْكُمْ" لفظ ایک ہے معنی علیحدہ۔

۲۔ امام نووی نے اپنی چھل حدیث میں فرمایا کہ ابوالدرداء کی حدیث بہت اسنادوں سے مروی ہے جو ساری ضعیف ہیں مگر سناووں کی کثرت اور علماء کے قبول کر لینے کی وجہ سے حدیث قوی ہوگی، کیونکہ تعدد اسناد سے ضعیف حسن بن جاتی ہے۔ نیز فضائل اعمال میں حدیث ضعیف مقبول ہے۔ (ازمرقاۃ و ائحة العلماء) (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۳۸)

سرکشی میں بڑھتا جاتا ہے۔ اس کے بعد حضرت عبداللہ نے یہ آیت پڑھی:

(كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنَّا) (۱۷)

اور دوسرے کے لیے فرمایا:

(إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ) (۱۸)

حدیث ۱۸: جس علم سے نفع حاصل نہ کیا جائے وہ اس خزانہ کی مثل ہے جس میں سے راہِ خدا میں خرچ نہیں کیا

جاتا۔ (۱۹)

حدیث ۱۹: سب سے زیادہ حسرت قیامت کے دن اس کو ہوگی جسے دنیا میں طلبِ علم کا موقع ملا، مگر اس نے طلب نہیں کیا اور اس شخص کو ہوگی جس نے علم حاصل کیا اور اس سے سن کر دوسروں نے نفع اٹھایا خود اس نے نفع نہیں

(۱۷) پ ۳۰، العلق ۶-۷۔

ترجمہ کنز الایمان: ہاں ہاں، بے شک آدمی سرکشی کرتا ہے اس پر کہ اپنے آپ کو غنی سمجھ لیا۔

(۱۸) سنن الدارمی، باب فی فضل العلم والعلماء، الحدیث: ۳۳۲، ج ۱، ص ۱۰۸۔

پ ۲۲، فاطر ۲۸۔

ترجمہ کنز الایمان: اللہ (عزوجل) سے اس کے بندوں میں وہی ڈرتے ہیں جو علم والے ہیں۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ تابعی ہیں آپ نے حضرت ابن عباس، ابن مسعود، ابو ہریرہ سے روایتیں لیں اور آپ سے امام زہری اور امام ابو حنیفہ نے روایتیں

۲۔ مَعْنُومٌ نَهْمٌ سے ہے بمعنی کھانے کی زیادہ رغبت، یعنی طالبِ علم اور طالبِ دنیا حریص دونوں ہیں مگر انجام میں فرق ہے۔

۳۔ صوفیاء کی اصطلاح میں دنیا وہ ہے جو رب سے غافل کرے۔ منافقوں کی نماز دنیا قبیح اور عثمان غنی کا مال عین دین، وہی یہاں مراد

ہے۔ لہذا حضرت سلیمان، عثمان غنی اور امام ابو حنیفہ جیسے مالداروں کو دنیا دار نہیں کہا جاسکتا، ان کا مال رضائے رحمان کا ذریعہ ہے۔

۴۔ یعنی یہ میں محض اپنے رائے سے نہیں کہتا بلکہ رب تعالیٰ نے دنیا دار کے مال کو زیادتی طغیان اور عالم کے علم کو زیادتی رحمت کا سبب

بتایا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۵۲)

(۱۹) المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند ابی حریرة، الحدیث ۱۰۴۸۱، ج ۳، ص ۵۶۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ سبحان اللہ! کیا پاکیزہ مثال ہے، یعنی جس علم سے نہ عالم نفع اٹھائے نہ دوسرے وہ اسی مال کی طرح ہے جس سے نہ مالک فائدہ اٹھائے نہ

دور لوگ، جیسے وہ مال بیکار بلکہ مضرا ہے یہی علم و مال۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۶۹)

اٹھایا۔ (20)

حدیث ۲۰: علما کی سیاہی شہید کے خون سے تولی جائے گی اور اس پر غالب ہو جائے گی۔ (21)

حدیث ۲۱: علما کی مثال یہ ہے جیسے آسمان میں ستارے جن سے خشکی اور سمندر کی تاریکیوں میں راستہ کا پتا چلتا

ہے اور اگر ستارے مٹ جائیں تو راستہ چلنے والے بھٹک جائیں گے۔ (22)

حدیث ۲۲: علم تین ہیں، آیت محکمہ یا سنت قائمہ یا فریضہ عادلہ اور ان کے سوا جو کچھ ہے، وہ زائد ہے۔ (23)

حدیث ۲۳: حضرت حسن بصری (رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ) نے فرمایا علم دو ہیں ایک وہ کہ قلب میں ہو یہ علم نافع ہے

دوسرا وہ کہ زبان پر ہو یہ ابن آدم پر اللہ (عزوجل) کی حجت ہے۔ (24)

حدیث ۲۴: جس نے علم طلب کیا اور حاصل کر لیا اس کے لیے دو چند اجر ہے اور حاصل نہ ہوا تو ایک

اجر۔ (25)

حدیث ۲۵: جس کو موت آگئی اور وہ علم کو اس لیے طلب کر رہا تھا کہ اسلام کا احیا کرے، اس کے اور انبیا

(20) تاریخ دمشق لابن عساکر، الرقم: ۵۹۷۸، محمد بن احمد بن محمد، ج ۵۱، ص ۱۳۷، ۱۳۸۔

(21) تاریخ بغداد، الرقم: ۶۱۸، محمد بن الحسن بن اذھر، ج ۲، ص ۱۹۰۔

(22) المسند للإمام احمد بن حنبل، مستداف بن مالک، الحدیث: ۱۲۶۰۰، ج ۳، ص ۳۱۳۔

(23) سنن ابی داود، کتاب الفرائض، باب ما جاء فی تعلیم الفرائض، الحدیث: ۲۸۸۵، ج ۳، ص ۱۶۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

یعنی علم دین ان چیزوں کا جاننا ہے احکام کی غیر منسوخ آیتیں مع تفصیل اور صحیح غیر منسوخ حدیثیں اجماع امت اور قیاس جو کتاب و سنت

کی طرح واجب العمل ہیں۔ خیال رہے کہ یہاں فریضہ سے مراد علم فرائض (میراث) نہیں کہ وہ کتاب و سنت میں آگیا بلکہ فقہ ہی مراد

ہے۔ عادلہ بمعنی عدل و مثل۔ (مرقاۃ و اشعہ)

۲۔ یعنی ان تین کے علاوہ باقی علوم علم دین نہیں بلکہ زائد یا فضول ہیں۔ خیال رہے کہ صرف دعو و غیرہ قرآن و حدیث سمجھنے کے لئے ہیں اور

اصول فقہ و اصول حدیث وغیرہ ان علوم کے خدام جو ان کو اپنا مقصود بنالے بڑا بے وقوف ہے۔ شعر۔

ہر کہ جوید غیر ازیں باشد غبیث

علم دین فقہ است تفسیر و حدیث

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۳۱)

(24) سنن الدارمی، المقدمة باب التوبخ لمن يطلب العلم غیر اللہ، الحدیث: ۳۶۴، ج ۱، ص ۱۱۳۔

(25) سنن الدارمی، المقدمة باب فی فضل العلم و العالم، الحدیث: ۳۳۵، ج ۱، ص ۱۰۸۔

کے درمیان جنت میں ایک درجہ کا فرق ہوگا۔ (26)
 حدیث ۲۶: اچھا شخص وہ عالم دین ہے کہ اگر اس کی طرف احتیاج لائی جائے تو نفع پہنچاتا ہے اور اس سے بے پروائی کی جائے تو وہ اپنے کو بے پروا رکھتا ہے۔ (27)

(26) سنن لدیری، باب فی فضل العلم والعلماء، الحدیث: ۳۵۴، ج ۱، ص ۱۱۲۔

حکیم ارامت کے مدنی پھول

۱۔ فن حدیث میں جب حسن مطلق بولا جائے تو اس سے خواجہ حسن بھری مراد ہوتے ہیں۔ آپ کے والد کا نام ابوسعید ہے، وہ زید ابن ثابت رضی اللہ عنہ کے غلام تھے، ان کے والد بیمار کو زبیح بنت نظیر نے آزاد کیا تھا، خواجہ حسن بھری مدینہ منورہ میں عہد فاروقی میں فاروق اعظم کی شہادت سے دو سال پہلے پیدا ہوئے، حضرت عمر فاروق نے اپنے دست مبارک سے ان کی تحنیک (یعنی پہلا پیہ) کی۔ آپ کی والدہ ام المؤمنین حضرت ام سلمہ کی لونڈی تھیں، بارہا حضرت ام سلمہ نے ان کی والدہ کی غیر موجودگی میں ان کو اپنا شیر مبارک پلایا ہے، اسی کی برکت سے آپ اتنے بڑے عالم اور امام وقت ہوئے، شہادت عثمان کے بعد بصرے آگئے تھے، آپ نے بہت صحابہ سے ملاقات کی ہے، اپنے وقت کے امام بڑے متقی پرہیزگار تھے۔ رجب ۱۱ھ میں مقام بصرہ میں آپ کا وصال ہوا وہیں مدفون ہیں، آپ کی قبر شریف زیارت گاہ عوام و خواص ہے۔ (اکمل) نقیر نے قبر انور کی زیارت کی ہے۔

۲۔ ظاہر یہ ہے کہ اس سے مراد وہ طالب علم ہے جو عالم دین نہ بن سکا پہلے ہی موت آگئی جب اس کی یہ فضیلت ہے تو علمائے دین کا کیا پوچھنا یا اس سے وہ لوگ مراد ہیں جو عالم دین ہیں مگر علم سے سیر نہیں ہوتے ہمیشہ مطالعہ کتب صحبت علماء سے اپنا علم بڑھاتے رہتے ہیں اور ہمیشہ اپنے کو طالب علم سمجھتے رہتے ہیں اور یہ سب کچھ خدمت دین کی نیت سے کرتے ہیں۔

۳۔ یعنی انہیں انبیاء سے بہت قرب نصیب ہوگا کہ اعلیٰ علیین میں وہ حضرات ان کے نیچے یہ علماء کیونکہ یہ دنیا میں دارین انبیاء تھے۔ خیال رہے کہ بعض مؤمن جنت میں انبیاء کے ساتھ رہیں گے۔ رب فرماتا ہے: "فَادْخُلْكَ مَعَ الْبَرِّ" الا یہ مگر یہ ہر ایسی ہوگی جیسے بادشاہ کے خدام خاص اس کے ساتھ کوفی میں رہتے ہیں کہ یہ بادشاہ نہیں بن جاتے ایسے ہی یہ حضرات نبی کے درجہ پر نہ ہوں گے بلکہ خدام خاص ہند حدیث اور آیات قرآنی بالکل واضح ہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۴۰)

(27) مشکوٰۃ المصابیح، کتاب العلم، الحدیث: ۲۵۱، ج ۱، ص ۱۱۵۔

حکیم ارامت کے مدنی پھول

۔ یعنی نہ متکبر بنے نہ محتاج لوگوں کی ضرورت پر دل و جان سے حاضر ہو جائے اور جب لوگ اسے نہ چاہیں ان پر نہ گریے، امیر غریب کے دروازے پر بہتر، مگر غریب امیر کے دروازے پر برا۔ مراقبہ میں ہے کہ عابد باطل کا چچہ ملکوت میں ہوتا ہے، فرشتے اسے عظیم کہتے ہیں جی بڑا آدمی۔ خیال رہے کہ جس عالم میں تین باتیں جمع ہوں وہ زمانہ کا سردار ہوگا علم دین کامل، قناعت اور استغناء اعمال صالحہ۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۴۲)

حدیث ۲۷: حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا: جس کو کوئی بات معلوم ہے وہ کہے اور نہ معلوم ہو تو یہ کہہ دے کہ اللہ اعلم، کیونکہ علم کی شان یہ ہے کہ جس چیز کو نہ جانتا ہو اس کے متعلق یہ کہہ دے اللہ اعلم۔ اللہ تعالیٰ نے اپنے نبی (علیہ السلام) سے فرمایا:

(قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ) (۸۶) (28)

میں تم سے اس پر اجرت نہیں مانگتا اور نہ میں تکلف کرنے والوں سے ہوں۔

یعنی جو بات معلوم نہ ہو اس کے متعلق بولنا تکلف ہے۔ (29)

حدیث ۲۸: قیامت کے دن اللہ (عزوجل) کے نزدیک سب سے بڑا مرتبہ اس عالم کا ہے، جو علم سے مستغنی ہو۔ (30)

حدیث ۲۹: زیاد بن لبید رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ایک چیز ذکر کر کے فرمایا کہ یہ اس وقت ہوگی جب علم جاتا رہے گا۔ میں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) علم کیونکر جائے گا؟ ہم قرآن پڑھتے ہیں اور اپنے بیٹوں کو پڑھاتے ہیں وہ اپنی اولاد کو پڑھائیں گے، اسی طرح قیامت تک سلسلہ

(28) پ ۲۳، ص ۸۶۔

(29) صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب قولہ (وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ)، الحدیث ۴۸۰۹، ج ۳، ص ۳۱۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ حدیث موقوف ہے یعنی حضرت عبداللہ ابن مسعود کا اپنا فرمان۔ مقصد یہ ہے کہ کوئی عالم اپنی بے علمی ظاہر کرنے میں شرم نہ کرے، اگر کوئی مسئلہ معلوم نہ ہو تو گھڑ کر نہ بتائے ہماری بے علمی علم سے زیادہ ہے رب فرماتا ہے: "وَمَا أَوْتِيْتُمْهُ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا" فرشتوں نے عرض کیا تھا: "إِلَّا عِلْمَهُ لَنَا" حضرت علی سے سرمنبر کوئی مسئلہ پوچھا گیا آپ نے فرمایا مجھے معلوم نہیں، وہ گستاخ بولا کہ آپ بے علمی کے باوجود منبر پر کیوں کھڑے ہو گئے؟ آپ نے فرمایا کہ میں بقدر علم منبر پر چڑھا ہوں اگر بقدر جہالت چڑھتا تو آسمان پر پہنچ جاتا۔ (مرقاۃ) ۲۔ یعنی اپنی بے علمی جانتا بھی علم ہے، اپنی جہالت سے واقف ہونا جہل مرکب، مفتیان کرام فتوے کے آخر میں لکھتے ہیں: "اللہ و رَسُوْلُهُ أَعْلَمُ" وہ یہاں سے اخذ ہے۔

۳۔ حاکم کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم اولین و آخرین سب سے بڑے عالم، تمام جہان کے معلم ہیں مگر انہیں حکم دیا گیا جس چیز کا علم آپ کو اب تک نہ دیا گیا ہو تکلف نہ بتائیں۔ چنانچہ حضور سے اصحاب کہف کی تعداد پوچھی گئی نہ بتائی کیونکہ اس کا علم بعد میں عطاء ہوا، حضرت عمر سے سواں ہوا کہ فاکہہ اور اب (میوہ اور چارہ) میں کیا فرق ہے؟ فرمایا مجھے خبر نہیں، حضرت امام مالک نے چھتیس مسئل میں فرمایا کہ میں نہیں جانتا، حضرت امام ابوحنیفہ سے پوچھا گیا کہ دھڑ کیا چیز ہے فرمایا مجھے خبر نہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۶۲)

(30) سنن الدارمی، باب العمل بالعلم وحسن النیۃ فیہ، الحدیث ۲۶۲، ج ۱، ص ۹۳۔

جاری رہے گا۔ غصہ (جسکی انتہا تو ایسی حد تک پہنچ جائے کہ وہ بے پرواہی میں رہ جائے) میں خیال رہتا تھا کہ میرے
میں خیر نہیں ہے کیونکہ یہ میرا غصہ ہی تھا کہ وہ مجھ سے نہیں پڑھتا، مگر ہے یہ کہ جو کچھ ان میں ہے اس پر میں نہیں
کرتے۔ (31)

حدیث ۳۰: حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے حب احبار (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) سے پوچھا، ارباب علم کون ہیں؟
کہا، وہ جو جانتے ہیں اس پر عمل کرتے ہیں۔ فرمایا: کس چیز نے ان کے قلوب سے علم کو نکال دیا؟ کہا، طمع نے۔ (32)

(31) سنن ابن ماجہ، کتاب النکاح، باب ذواتہ: ۴۸۷، ج ۲، ص ۴۸۳.

حکیم الامت کے مافی الجہول

اب آپ کی کسیت ابو عبد اللہ ہے، انھارنی ہیں، مژنگی ہیں۔ حضور کے ساتھ تمام غزوات میں شریک رہے، ہجرت سے پہلے حضور کے پاس مکہ معظمہ پہنچی گئے تھے۔ پھر مدینہ منورہ ہجرت کر کے آئے اس لیے آپ کو تمام صحابہ مہاجر انصار کہا کرتے تھے، حضور نے آپ کو حضور موت کا حاتم مقرر فرمایا، امیر معاویہ کے شروع زمانہ امارت میں وقت پائی۔

۲۔ یعنی یہ نہایت ہوشیارک واقعات جب ہوں گے جب دنیا سے علم دین اٹھ گیا ہوگا۔

۳۔ یہاں قرآن پڑھنے پڑھانے سے مراد پورا غم کی گھٹنا سکھانا ہے یعنی جب تعلیم و تعلم کا مشغلہ قائم رہے گا تو غم کیونکر اٹھ جائے گا۔ مصدر کے ہوتے حاصل مصدر کہاں جاسکتا ہے۔

۴۔ اس سے معلوم ہوا کہ استاد اپنے شاگرد کو غیر مناسب سوال کرنے پر عتاب کر سکتا ہے یہ الفاظ کہ ہم تمہیں ایسا جانتے تھے اظہار عتاب کے لیے ہوتے ہیں نہ کہ اپنی بے عقلی کے اظہار کے لیے جیسا کہ بعض اہل سمجھ لوگوں نے اس حدیث سے حضور کے علم کا انکار کیا۔

۱۔ یعنی علم سے ہماری مراد نتیجہ علم ہے۔ یعنی علم ہوگا عمل نہ ہوگا۔ خیال رہے کہ عیسائیوں کے پادری اور جوگی رشتہیں لیکر عوام و اعلیٰ سے معافی دے دیتے ہیں اور ان کے گناہ بخشے رہتے ہیں تو خود کیا نیکی کرتے ہوں گے، ہفتہ میں ایک دن گرجے میں جا بجا بیٹان کے عمل ہیں۔

(مرآة المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۱، ص ۲۶۲)

(32) سنن الدارمی، باب صیانة العلم، الحدیث: ۵۸۳، ج ۱، ص ۱۵۲.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کا نام سفین ابن سعید ہے، قبیلہ ثور کے ہیں، کوفی ہیں، جلیل القدر تابعی ہیں، آخر مجتہدین اور قطب مالکین میں سے ہیں، ۹۹ھ میں پیدا ہوئے، ۱۶۱ھ میں بصرے میں وفات پائی۔

۲۔ آپ کا لقب کعب احبار ہے، توریت کے بڑے عالم تھے، بنی اسرائیل کے سردار تھے، حضور کا زمانہ پایا مگر دیدار نہ ہوا، عہد فاروقی میں اسلام لائے، حضرت عمر، صہیب و عائشہ صدیقہ سے روایتیں لیں خلافت عثمانیہ میں ۳۲ھ میں مقام تمیم میں وقت پائی وہیں دفن ہوئے

شانداز تابعی ہیں۔

حدیث ۳۱: میری اُمت میں کچھ لوگ قرآن پڑھیں گے اور یہ کہیں گے کہ ہم امرا کے پاس جا کر وہاں سے دنیا حاصل کر لیں اور اپنے دین کو ان سے بچائے رکھیں گے مگر ایسا نہیں ہوگا، جس طرح قتاد (ایک کانٹے والا درخت ہے) سے نہیں لیا جاتا مگر کانٹا، اسی طرح امرا کے قرب سے سوا خطا کے کچھ حاصل نہیں۔ (33)

حدیث ۳۲: خدا کے نزدیک بہت مبغوض قراء (علماء) وہ ہیں جو امراء کی ملاقات کو جاتے ہیں۔ (34)

حدیث ۳۳: عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا کہ اگر اہل علم، علم کی حفاظت کریں اور اس کو اہل کے پاس رکھیں تو اس کی وجہ سے اہل زمانہ کے سردار ہو جائیں، مگر انھوں نے علم کو دنیا والوں کے لیے خرچ کیا تا کہ ان سے دنیا حاصل کریں، لہذا ان کے سامنے ذلیل ہو گئے۔ میں نے تمھارے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو یہ فرماتے سنا ہے: جس نے تمام فکروں کو ایک فکر آخرت کی فکر کر دیا، اللہ تعالیٰ فکر دنیا سے اس کی کفایت فرمائے گا اور جس کے لیے احوال دنیا کی فکریں متفرق رہیں، اللہ (عز وجل) کو اس کی کچھ پروا نہیں کہ وہ کس دادی میں ہلاک ہوا۔ (35)

۳۔ حضرت کعب احبار نے یہ دونوں باتیں غالباً توریت شریف سے دیکھ کر بیان فرمائیں۔ حضرت فاروق اعظم نے ہی پوچھا تھا کہ توریت میں کسے عالم کہا گیا ہے۔ علم نکل جانے سے مراد ہے علم کے انوار کا نکل جانا طنائی عالم حق بیان نہیں کر سکتا جیسا آج دیکھا جا رہا ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۵۶)

(33) سنن ابن ماجہ، باب الانتفاع بالعلم والعمل بہ، الحدیث: ۲۵۵، ج ۱، ص ۱۶۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھولی

۱۔ یعنی بعض عماء وقاری صاحبان بلا ضرورت طمع نفسانی کی خاطر اور مال و عزت حاصل کرنے کے لیے فاسق مالداروں اور حکام کے پاس جانا آنا دلشست و برخاست رکھیں گے محض دنیا کی غرض سے۔

۲۔ ہماری شرح سے معلوم ہو گیا کہ امیروں سے فاسق اور بے دینی امیر مراد ہیں ان کے پاس علماء کا آنا جانا دین کے لیے خطرناک ہے کہ وہ ان سے اپنی مرضی کے مطابق غلط فتوے حاصل کرتے ہیں جیسے کہ آج دیکھا جا رہا ہے کہ فاسق مالدار انتخاب کے موقعوں پر دونوں کے لیے عالموں اور پیروں کو ناجائز استعمال کر لیتے ہیں۔ دین دار امیروں کے پاس دینی قائدے کے لیے عماء کا جانا جائز بلکہ بڑا فائدہ مند ہے۔ یوسف علیہ السلام عزیز مصر کے افسر مال رہے، آپ کی برکت سے عزیز کو ایمان اور دنیا کو قحط سے امان مل گئی۔ قاضی ۷۰، یوسف ہارون رشید بادشاہ کے قاضی القضاۃ رہے، آپ کی برکت سے بادشاہ کو تقویٰ نصیب ہوا اور دنیا علم سے مال مال ہو گئی۔ یہ واقعات اس حدیث کے خلاف نہیں، محمد ابن مسلمہ فرماتے ہیں کہ پاخانہ پر بیٹھنے والی کبھی امیروں اور حاکموں کے دروازہ پر جانے والے عالم وقاری سے اچھی ہے کہ وہ نجس ست لے کر آتی ہے اور یہ دین دیکر اور ظلم لیکر آتے ہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۵۳)

(34) المرجع السابق، الحدیث: ۲۵۶، ج ۱، ص ۱۶۷۔

(35) المرجع السابق، الحدیث: ۲۵۷، ج ۱، ص ۱۶۷۔

حدیث ۳۴: جس سے علم کی کوئی بات پوچھی گئی اور اس نے نہیں بتائی، اس کے مونہ میں قیامت کے دن آگ کی لگام لگا دی جائے گی۔ (36)

حدیث ۳۵: جس نے علم کو اس لیے طلب کیا کہ علماء سے مقابلہ کریگا یا جاہلوں سے جھگڑا کریگا یا اس لیے کہ لوگوں کو اپنی طرف متوجہ کریگا، اللہ تعالیٰ اسے جہنم میں داخل کر دے گا۔ (37)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی علم کو ذلت اور اہانت سے بچاتے اس طرح کہ خود طمع اور لالچ میں دنیا داروں کے دروازے پر دھکے نہ کھاتے کہ عالم کی ذلت سے علم کی ذلت ہے اور علم کے بے حرمتی دین کی ذلت ہے۔

۲۔ یعنی قدر دانوں اور شریف الطبع لوگوں کو علم سکھاتے۔

۳۔ اس طرح کہ بادشاہ ان کے قدموں کے نیچے اور ان کے احکام ان کے قلموں کے نیچے ہوتے ہیں رب کا وعدہ ہے: "وَالَّذِينَ أُؤْتُوا الْعِلْمَ كَذَّابٌ"۔

۴۔ معلوم ہوتا ہے کہ تابعین میں لالچی اور حریص عالم پیدا ہو چکے تھے، جنہیں دیکھ کر صحابہ یہ فرما رہے ہیں۔

۵۔ سبحان اللہ! تجربہ بھی اس حدیث کی تائید کرتا ہے اللہ تعالیٰ کسی مسلمان کو دو غم اور دو فکریں نہیں دیتا، جس دل میں آخرت کا غم و فکر ہے ان شاء اللہ اس میں دنیا کا غم و فکر نہیں آتا دنیاوی تکلیفیں اگر آ بھی جائیں تو دل ان کا اثر نہیں لیتا۔ کلور فارم سکھا دینے سے آپریشن کی تکلیف محسوس نہیں ہوتی۔ اللہ تعالیٰ غم آخرت نصیب کرے حضرت حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ بھی کلور فارم سونگھے ہوئے تھے جس کی وجہ سے کربلا کی مصیبتیں خندہ پیشانی سے جھیل گئے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۵۲)

(36) سنن اترمذی، کتاب العلم، باب ما جاء فی ستمان العلم، الحدیث: ۲۶۵۸، ج ۴، ص ۲۹۵۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اگر کسی عالم سے دینی ضروری مسئلہ پوچھا جائے اور وہ بلا وجہ نہ بتائے تو قیامت میں وہ جانوروں سے بدتر ہوگا کہ جانور کے منہ میں چمڑے کی لگام ہوتی ہے اور اس کے منہ میں آگ کی لگام ہوگی۔ خیال رہے کہ یہاں علم سے مراد حرام، حلال، فرائض و اجابات وغیرہ تبلیغی مسئلہ ہیں جن کا چھپانا جرم ہے۔ عالم پر شرعی مسئلہ بتانا ضروری ہے نہ کہ لکھنا لہذا مفتی فتوے لکھنے کی اجرت لے سکتا ہے۔ خصوصاً وہ فتویٰ جن پر مقدمے چلتے ہیں اور مفتی کو پکھریوں میں حاضری دینی پڑتی ہے۔ رب فرماتا ہے: "وَلَا يُضَارَّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ"۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۲۰)

(37) المرجع السابق، باب فمن يطلب علمہ الدنیا، الحدیث: ۲۶۶۳، ج ۴، ص ۲۹۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ انصاری ہیں، خزر جی ہیں، عقبہ ثانیہ کی بیعت میں شریک تھے، اسلام کے نامور شعراء میں سے ہیں، آپ غزوہ تبوک میں

حدیث ۳۶: جو علم اللہ تعالیٰ کی رضا حاصل کرنے کے لیے ہے (یعنی علم دین) اس کو جو شخص اس لیے حاصل کرے کہ متاع دنیا مل جائے، اس کو قیامت کے دن جنت کی خوشبو نہیں ملے گی۔ (38)

حدیث ۳۷: وعظ نہیں کہتا، مگر امیر یا مامور یا متکبر۔ یعنی وعظ کہنا امیر کا کام ہے یا وہ کسی کو حکم کر دے کہ وہ کہے اور ان کے سوا جو کوئی کہتا ہے، وہ طلب جاہ و طلب دنیا کے لیے ہے۔ (39)

حدیث ۳۸: جس کو بغیر علم فتویٰ دیا گیا تو اس کا گناہ اس فتویٰ دینے والے پر ہے اور جس نے اپنے بھائی کو

پچھے رہ گئے تھے اس پر آپ کا بایکاٹ کیا گیا، پھر کچھ عرصہ بعد آپ کی اور آپ کے دو ساتھیوں ہلال ابن امیہ اور مرارہ ابن ربیعہ کی توبہ قبول ہوئی۔ رب فرماتا ہے: "وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خُلِقُوا" آپ آخر میں تاپنا ہو گئے تھے، ۷۷ سال عمر ہوئی، ۵۰ھ میں وفات پائی۔

۲۔ یعنی جو دینی علم دین کے لئے نہ سیکھے بلکہ عزت یا مال حاصل کرنے یا دین میں فساد پھیلانے کے لئے سیکھے تو اول درجہ کا جہنمی ہے۔ اس سے وہ لوگ عبرت پکڑیں جو قرآن کا ترجمہ دیکھ کر اور چار حدیثیں پڑھ کر آئمہ مجتہدین اور علماء دین کے منہ آنے کی کوشش کرتے ہیں، اللہ تعالیٰ نیت خیر عطا فرمائے۔ خیال رہے کہ علماء کا مناظرہ اور ہے مقابلہ کچھ اور، مناظرہ میں تحقیق حق مقصود ہوتی ہے، مقابلہ میں اپنی بڑائی کا اظہار، بوقت ضرورت مناظرہ اچھا ہے مقابلہ برا، یہاں مقابلہ کی برائی مذکور ہے۔ مناظرے آئمہ مجتہدین بلکہ صحابہ کرام میں بھی ہوئے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۲۱)

(38) سنن ابی داؤد، کتاب العلم، باب فی طلب العلم بغیر اللہ، الحدیث: ۳۶۶۳، ج ۳، ص ۵۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب یہ حدیث گزشتہ احادیث کی شرح ہے جس میں فرمایا گیا کہ علم دین رضائے الہی کے لیے حاصل کرو اسے صرف دنیا حاصل کرنے کا ذریعہ نہ بناؤ۔ دنیا کے سامان سے روپیہ پیسہ بھی مراد ہے اور دنیوی عزت و جاہ بھی۔ مراقا نے فرمایا کہ علم دین کے ذریعے دنیا حاصل کرنے کی دو صورتیں ہیں: ایک یہ کہ دنیا اصل مقصود ہو اور علم دین محض اس کا وسیلہ یہ سخت برا ہے وہی یہاں مراد ہے۔ دوسرے یہ کہ علم دین سے دین ہی مقصود ہو مگر جہاد دنیا بھی حاصل کی جائے تاکہ فراغت سے خدمت دین ہو سکے یہ ممنوع نہیں، کیونکہ اب دین مقصود ہے اور دنیا اس کا وسیلہ۔ فقیر عالم کا وعظ دلوں میں موثر نہیں ہوتا۔ حضرات خلفائے راشدین نے خلافت پر تنخواہیں لیں۔ جہاد کا بھی یہی حکم ہے کہ اگر فقط غنیمت کے لئے کرتا ہے تو برا اور اگر تبلیغ دین کے لئے ہے اور غنیمت و ملک اس کا وسیلہ ہے تو اچھا ہے۔

۲۔ یعنی اولاً اگر چہ ریاضی کی سزا بھگت کر یا حضور کی شفاعت کے ذریعہ معافی ہو جائے گی۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۲۲)

(39) سنن ابی داؤد، کتاب العلم، باب فی القصص، الحدیث: ۳۶۶۵، ج ۳، ص ۵۱۔

مشورہ دیا اور یہ جانتا ہے کہ بھلائی اس کے غیر میں ہے اس نے خیانت کی۔ (40)

حدیث ۳۹: رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے آسمان کی طرف نظر اٹھائی پھر یہ فرمایا کہ یہ وہ وقت ہے کہ

لوگوں سے علم جدا کر دیا جائے گا، یہاں تک کہ علم کی کسی بات پر قادر نہیں ہوں گے۔ (41)

حدیث ۴۰: اللہ تعالیٰ علم کو اس طرح نہیں قبض کریگا کہ لوگوں کے سینوں سے جدا کر لے، بلکہ علم کا قبض کرنا علما

کے قبض کرنے سے ہوگا، جب عالم باقی نہ رہیں گے جاہلوں کو لوگ سردار بنالیں گے، وہ بغیر علم فتویٰ دیں گے، خود بھی

گمراہ ہوں گے اور دوسروں کو بھی گمراہ کریں گے۔ (42)

(40) المرجع السابق، باب التوقي في الفتيا، الحدیث: ۳۶۵، ج ۳، ص ۴۴۹.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس کے دو مطلب ہو سکتے ہیں: ایک یہ کہ جو شخص علماء کو چھوڑ کر جاہلوں سے مسئلہ پوچھے اور وہ غلط مسئلہ بتائیں تو پوچھنے والا بھی گنہگار ہوگا

کہ یہ عالم کو چھوڑ کر اس کے پاس کیوں گیا نہ یہ پوچھتا نہ وہ غلط بتاتا اس صورت میں آفتی بمعنی استغفلی ہے۔ دوسرے یہ کہ جس شخص کو

غلط فتویٰ دیا گیا تو اس کا گناہ فتوے دینے والے پر ہے اس صورت میں پہلا آفتی مجہول ہے۔ خلاصہ یہ ہے کہ بے علم کو مسئلہ شرعی بیان کرنا

سخت جرم ہے۔

۲۔ یعنی اگر کوئی مسلمان کسی سے مشورہ حاصل کرے اور وہ دانستہ غلط مشورہ دے تاکہ وہ مصیبت میں گرفتار ہو جائے تو وہ مشیر کا خائن ہے

خیانت صرف مال ہی میں نہیں ہوتی، راز، عزت، مشورے تمام میں ہوتی ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۳۳)

(41) سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ما جاء في ذهاب العلم، الحدیث: ۲۶۶۲، ج ۴، ص ۲۹۷.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ علم سے علم دین مراد ہے اور یہ واقعہ قیامت کے قریب ہوگا جب مال بڑھ جائے گا، علم دین گھٹ جائے گا بلکہ فنا ہو جائے گا کہ علماء وفات

پا جائیں گے اور پیدا نہ ہوں گے۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ حضور کی نگاہ صد ہا سال بعد آنے والے واقعہ کو بھی ملاحظہ فرمالتی ہے، ان

کے لئے معذوم موجود کھلی چھپی سب چیزیں یکساں ہیں۔ کہ فرما رہے ہیں خذا اذون جیسے ہم خیال اور خواب میں اگلے پچھلی چیزیں شکلوں

میں دیکھ لیتے ہیں۔ بادشاہ مصر نے آنے والے قحط کے سال گائے اور بالیوں کی شکل میں خواب دیکھے، انبیاء ان کے طفیل سے بعض اولیاء کی

نگاہیں ہمارے خواب و خیال سے زیادہ تیز ہوتی ہیں۔ مولانا فرماتے ہیں شعر

مراتر ابیند بچندیں حالہا

اب بلکہ قبل از زادن تو سالہا

حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے معراج میں دوزخیوں کے وہ عذاب ملاحظہ فرمالیے جو بعد قیامت ہوں گے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۳۶)

(42) صحیح البخاری، کتاب العلم، باب کیف یقبض العلم، الحدیث: ۱۰۰، ج ۱، ص ۵۴.

حدیث ۴۱: بدتر سے بدتر برے ملا ہیں اور بہتر سے بہتر اچھے ملا ہیں۔ (43)

حدیث ۴۲: علم کی آفت نسیان ہے اور نا اہل سے علم کی بات کہنا علم کو ضائع کرتا ہے۔ (44)

حدیث ۴۳: ابن سیرین نے فرمایا: یہ علم دین ہے، تمہیں دیکھنا چاہیے کہ کس سے اپنا دین لیتے ہو۔ (45)

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ حدیث کا سکہ ہے جس میں فرمایا گیا کہ قریب قیامت علم اٹھ جائیگا، جہالت پھیل جائے گی، یعنی اس نے اٹھنے کا اریونہ ہو گا۔ وہ کس پر اٹھ سوا بھول جائیگا، بلکہ علماء وفات پاتے رہیں گے اور بعد میں دوسرے علماء پیدا نہ ہوں گے جیسا کہ اب ہو رہا ہے کہ ایک مملکت امریکی کے پیچھے پھر رہی ہے، دین رسول اللہ ختم ہو کر رہ گیا۔ علم سے علم دین مراد ہے۔

۲۔ پیشوا سے مراد قاضی، مفتی، امام اور شیخ ہیں جن کے ذمے دینی کام ہوتے ہیں۔ مقصد یہ ہے کہ دینی عہدے جاہل سنبھال لیں گے اور اپنی جہالت کا اظہار ناپسند کریں گے۔ مسئلہ پوچھنے پر یہ نہ کہیں گے کہ ہمیں خبر نہیں بلکہ بغیر علم گھڑ کر غلط مسئلے بتائیں گے اس کا انجام ظاہر ہے۔ بے علم حبیب مریش کی جان لیتا ہے اور جاہل مفتی اور خطیب ایمان برباد کرتے ہیں۔ (مرآۃ السانج شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۰۴)

(43) سنن الدارمی، باب التوفی لمن یطلب العلم لغير الله، الحدیث: ۷۰، ج ۳، ص ۱۱۶۔

(44) سنن الدارمی، باب مذاکرۃ العلم، الحدیث: ۶۴۳، ج ۱، ص ۱۵۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کا نام سلیمان، کنیت ابو محمد اسدی ہیں، کوئی ہیں، عظیم الشان تابعی ہیں، حضرت انس بن مالک سے ملاقات کی ہے، تیرہ سو ۱۳۰۰ھ میں آپ سے منقول ہیں، ۷۰ سال جماعت کی بحیرہ اولیٰ سے نماز پڑھی، امام حسین کی شہادت کے دن پیدائش ہے، ۱۳۸ھ میں وفات ہوئی۔ آپ کو سید المحدثین کہا جاتا ہے لیکن مالک برفض تھے۔ (اشعۃ اللمعات)

۲۔ یعنی جیسے مال وصحت بعض آفتوں سے برباد ہو جاتے ہیں ایسے ہی علم بھولنے سے برباد ہو جاتا ہے لہذا عالم کو چاہیے کہ علم کا مشغلہ رکھے، کتب بنی چھوڑ نہ دے، حافظہ کمزور کرنے والی عادتوں اور چیزوں سے بچے۔ علامہ شامی نے فرمایا کہ چھ چیزیں حافظہ کمزور کرتی ہیں۔ چوسہ کا جوٹھا کھانا، جوں پکڑ کر زندہ چھوڑ دینا، ٹھہرے پانی میں پیشاب کرنا، عکک گوند چبانا، کھانا سیب کے چٹکے چبانا۔ (لوٹ) جو کوئی بعد نماز داہنا ہاتھ سر پر رکھ کر اکیس بار یا قویٰ پڑھ کر دم کر لیا کرے ان شاء اللہ اس کا حافظہ قوی ہوگا۔ خیال رہے کہ یہاں نا اہل سے وہ لوگ مراد ہیں جو علم کی باریکیاں سمجھ نہ سکیں یہ لوگ علم پڑھ کر دنیا میں فساد ہی پھیلائیں گے جیسا کہ آج مشاہدہ ہو رہا ہے۔ (مرآۃ السانج شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۵۵)

(45) مقدمۃ کتب علماء مسلم، باب بیان أن الاسناد من الدین...، ج ۱، ص ۱۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کا نام محمد ابن سیرین، کنیت ابو بکر ہے، شاندار تابعین میں سے ہیں، آپ کے والد سیرین حضرت انس کے آزاد کردہ غلام تھے، ←



آپ بڑے عالم، فقیہ، علم تعبیر کے امام تھے، آپ کی عمر ۷۷ سال ہوئی وصال ہوا، بصرہ سے قریب اسی میل دور عشرہ میں خواجہ حسن بصری کے قبہ میں آپ کا مزار ہے، فقیر نے زیارت کی ہے۔

۲۔ یعنی علم شریعت علم دین جب بنے گا جب سکھانے والا استاد عالم دین ہوگا، بے دین عالم سے حاصل کیا ہوا علم بے دینی ہی دے گا، آج لوگ تہہ دینوں سے تفسیر و حدیث پڑھ کر بے دین ہو رہے ہیں، فرمان کے ساتھ فیضان ضروری ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱، ص ۲۶۳)

مسائل فقہیہ

مسئلہ ۱: اپنے بچہ کو قرآن و علم پڑھنے پر مجبور کر سکتا ہے، یتیم بچہ کو اس چیز پر مار سکتا ہے جس پر اپنے بچہ کو مارتا ہے۔ (۱) کیونکہ اگر یتیم بچہ کو مطلق العنان (یعنی بالکل آزاد) چھوڑ دیا جائے تو علم و ادب سے بالکل کورارہ جائے گا اور عموماً بچے بغیر تنبیہ قابو میں نہیں آتے اور جب تک انہیں خوف نہ ہو کہنا نہیں مانتے، مگر مارنے کا مقصد صحیح ہونا ضرور ہے ایسے ہی موقع پر فرمایا گیا:

(وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُنْفِيسَ مِنَ الْمُضْلِحِ) (۲)

اللہ (عز و جل) کو معلوم ہے کہ کون مفسد ہے اور کون مصلح۔

اسی طرح اساتذہ بھی بچوں کو نہ پڑھنے یا شرارت کرنے پر سزائیں دے سکتے ہیں، مگر وہ کلیہ ان کے پیش نظر بھی ہونا چاہیے کہ اپنا بچہ ہوتا تو اسے بھی اتنی ہی سزا دیتے، بلکہ ظاہر تو یہ ہے کہ ہر شخص کو اپنے بچہ کی تربیت و تعلیم کا جتنا خیال ہوتا ہے دوسرے کا اتنا خیال نہیں ہوتا تو اگر اس کام پر اپنے بچہ کو نہ مارا یا کم مارا اور دوسرے بچہ کو زیادہ مارا تو معلوم ہوا کہ یہ مارنا محض غصہ اتارنے کے لیے ہے سدھارنا مقصود نہیں، ورنہ اپنے بچہ کے سدھارنے کا زیادہ خیال ہوتا۔

مسئلہ ۲: عالم اگر چہ جوان ہو بوڑھے جاہل پر فضیلت رکھتا ہے، لہذا چلنے اور بیٹھنے میں گفتگو کرنے میں بوڑھے جاہل کو عالم پر تقدم کرنا نہ چاہیے یعنی بات کرنے کا موقع ہو تو اس سے پہلے کلام یہ نہ شروع کرے، نہ عالم سے آگے آگے چلے، نہ ممتاز جگہ پر بیٹھے، عالم غیر قرشی قرشی غیر عالم پر فضیلت رکھتا ہے۔ عالم کا حق غیر عالم پر ویسا ہی ہے جیسا استاذ کا حق شاگرد پر ہے، عالم اگر کہیں چلا بھی جائے تو اس کی جگہ پر غیر عالم کو بیٹھنا نہ چاہیے۔ شوہر کا حق عورت پر اس سے بھی زیادہ ہے کہ عورت کو شوہر کی ہر ایسی چیز میں جو مباح ہو اطاعت کرنی پڑے گی۔ (۳)

مسئلہ ۳: دین حق کی حمایت کے لیے مناظرہ کرنا جائز ہے بلکہ عبادت ہے اور اگر اس سے مناظرہ کرتا ہے کہ کسی مسلم کو مغلوب کر دے یا اس لیے کہ اس کا عالم ہونا لوگوں پر ظاہر ہو جائے یا دنیا حاصل کرنا مقصود ہے، مال ملے گا یا

(۱) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحدود، مطلب: فی تعزیر المقتحم، ج ۶، ص ۱۲۵۔

(۲) پ ۲، بقرة: ۲۲۰۔

(۳) افتا دی الھندیۃ، کتاب لکرامیۃ، الباب الثانیون فی التفرقات، ج ۵، ص ۳۷۳۔

لوگوں میں مقبولیت حاصل ہوگی، یہ ناجائز ہے۔ (4)

مسئلہ ۴: مناظرہ میں اگر مناظر طلب حق کے لیے مناظرہ کرتا ہے یا اس کا یہ مقصود نہیں مگر بے جا ضد اور ہٹ نہیں کرتا انصاف پسندی سے کام لیتا ہے جب تو اس کے ساتھ حیلہ کرنا جائز نہیں اور اگر محض اس کا مقصود ہی یہ ہے کہ اپنے مقابل کو مغلوب کر دے اور ہر ادے جیسا کہ اس زمانہ میں اکثر بد مذہب اسی قسم کا مناظرہ کرتے ہیں تو اس کے ٹکر اور واؤں سے اپنے کو بچانا ہی چاہیے ایسے موقع پر اس کے کید سے بچنے کی ترکیبیں کر سکتے ہیں۔ (5)

مسئلہ ۵: منبر پر چڑھ کر وعظ و نصیحت کرنا انبیاء علیہم السلام کی سنت ہے اور اگر تذکیر و وعظ سے مال و جاہ مقصود ہو تو یہ یہود و نصاریٰ کا طریقہ ہے۔ (6)

مسئلہ ۶: وعظ کہنے میں بے اصل باتیں بیان کر دینا، مثلاً احادیث میں اپنی طرف سے کچھ جملے ملا دینا یا ان میں کچھ ایسی کمی کر دینا جس سے حدیث کے معنی بگڑ جائیں، جیسا کہ اس زمانہ کے اکثر مقبررین کی تقریروں میں ایسی باتیں بکثرت پائی جاتی ہیں کہ مجمع پر اثر ڈالنے کے لیے ایسی حرکتیں کر ڈالتے ہیں ایسی وعظ گوئی ممنوع ہے۔

اسی طرح یہ بھی ممنوع ہے کہ دوسروں کو نصیحت کرتا ہے اور خود انھیں باتوں میں آلودہ ہے، اس کو سب سے پہلے اپنی ذات کو نصیحت کرنی چاہیے اور اگر واعظ غلط باتیں بیان نہیں کرتا اور نہ اس قسم کی کمی پیش کرتا ہے بلکہ الفاظ و تقریر میں لطافت اور شگلی کا خیال رکھتا ہے تاکہ اثر اچھا پڑے لوگوں پر رقت طاری ہو اور قرآن و حدیث کے فوائد اور نکات کو شرح و بسط کے ساتھ بیان کرتا ہے تو یہ اچھی چیز ہے۔ (7)

مسئلہ ۷: معلم نے بچوں سے کہا کہ تم لوگ اپنے اپنے گھروں سے چٹائی کے لیے پیسے لاؤ۔ پیسے اکٹھے ہوئے، کچھ پیسوں کی چٹائیاں لایا اور کچھ خود رکھ لیے، جو اپنے کام میں صرف کر لیا ایسا کر سکتا ہے کیونکہ بچوں کے باپ وغیرہ اس قسم کے پیسے اس غرض سے دیتے ہیں کہ بچے رہے گا تو وہ میاں جی کا ہوگا، وہ ہرگز اس کے امیدوار نہیں رہتے کہ جو کچھ بچے گا واپس ملے گا اور جان بوجھ کر اس سے زیادہ دیا کرتے ہیں جتنے کی ضرورت ہے، اس سے معلوم ہوتا ہے کہ ان کا مقصود اس رقم زائد کی تملیک ہے۔ (8)

(4) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۹۵۔

(5) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثلاثون فی التفرقات، ج ۵، ص ۳۷۸۔

(6) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۹۵۔

(7) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۹۷۔

(8) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۹۷۔

مسئلہ ۸: عالم اگر اپنا عالم ہونا لوگوں پر ظاہر کرے تو اس میں حرج نہیں مگر یہ ضرور ہے کہ تفاخر کے طور پر یہ اظہار نہ ہو کہ تفاخر حرام ہے، بلکہ محض تحدیثِ نعمتِ الہی کے لیے یہ اظہار ہو اور یہ مقصد ہو کہ جب لوگوں کو ایسا معلوم ہوگا تو استفادہ کریں گے کوئی دین کی بات پوچھے گا اور کوئی پڑھے گا۔ (9)

مسئلہ ۹: طلب علم اگر اچھی نیت سے ہو تو ہر عمل خیر سے یہ بہتر ہے، کیونکہ اس کا نفع سب سے زیادہ ہے مگر یہ ضرور ہے کہ فرائض کی انجام دہی میں خلل و نقصان نہ ہو۔ اچھی نیت کا یہ مطلب ہے کہ رضائے الہی اور آخرت کے لیے علم سیکھے۔ طلب دنیا و طلب جاہ نہ ہو اور طالب کا اگر مقصد یہ ہو کہ میں اپنے سے جہالت کو دور کروں اور مخلوق کو نفع پہنچاؤں یا پڑھنے سے مقصود علم کا احیا ہے، مثلاً لوگوں نے پڑھنا چھوڑ دیا ہے میں بھی نہ پڑھوں تو علم مٹ جائے گا، یہ نیتیں بھی اچھی ہیں اور اگر تصحیح نیت پر قادر نہ ہو جب بھی نہ پڑھنے سے پڑھنا اچھا ہے۔ (10)

مسئلہ ۱۰: عالم و متعلم (عالم و طالب علم) کو علم میں بخل نہ کرنا چاہیے، مثلاً اس سے عاریت کے طور پر کوئی کتاب مانگے یا اس سے کوئی مسئلہ سمجھنا چاہے، تو انکار نہ کرے کتاب دے دے مسئلہ سمجھا دے۔ حضرت عبداللہ بن مبارک رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں: جو شخص علم میں بخل کریگا، تین باتوں میں سے کسی میں مبتلا ہوگا یا وہ مرجائے گا اور اس کا علم جاتا رہے گا یا بادشاہ کی طرف سے کسی بلا میں مبتلا ہوگا یا علم بھول جائے گا۔ (11)

مسئلہ ۱۱: عالم و متعلم کو علم کی توقیر کرنی چاہیے، یہ نہ ہو کہ زمین پر کتابیں رکھے، پاخانہ پیشاب کے بعد کتابیں چھونا چاہے تو وضو کر لینا مستحب ہے، وضو نہ کرے تو ہاتھ ہی دھو لے اب کتابیں چھوئے اور یہ بھی چاہیے کہ عیش پسندی میں نہ پڑے، کھانے پینے، رہنے سہنے میں معمولی حالت اختیار کرے، عورتوں کی طرف زیادہ توجہ نہ رکھے، مگر یہ بھی نہ ہو کہ اتنی کمی کر دے کہ تغلیل غذا اور کم خوابی میں اپنی جسمانی حالت خراب کر دے اور اپنے کو کمزور کر دے کہ خود اپنے نفس کا بھی حق ہے اور بی بی بچوں کا بھی حق ہے، سب کا حق پورا کرنا چاہیے۔

عالم و متعلم کو یہ بھی چاہیے کہ لوگوں سے میل جول کم رکھیں اور فضول باتوں میں نہ پڑیں اور پڑھنے پڑھانے کا سلسلہ برابر جاری رکھیں، دینی مسائل میں مذاکرہ کرتے رہیں، کتب بینی کرتے رہیں، کسی سے جھگڑا ہو جائے تو نرمی اور انصاف سے کام لیں جاہل اور اس میں اس وقت بھی فرق ہونا چاہیے۔ (12)

(9) الفتاویٰ الہندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثلاثون فی المتفرقات، ج ۵، ص ۷۷۔

(10) المرجع السابق، ص ۷۸۔

(11) الفتاویٰ الہندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثلاثون فی المتفرقات، ج ۵، ص ۷۸۔

(12) المرجع السابق۔

مسئلہ ۱۲: استاذ کا ادب کرے اس کے حقوق کی محافظت کرے اور مال سے اس کی خدمت کرے اور استاد سے کوئی غلطی ہو جائے تو اس میں پیروی نہ کرے۔ استاذ کا حق ماں باپ اور دوسرے لوگوں سے زیادہ جانے اس کے ساتھ تواضع سے پیش آئے، جب استاذ کے مکان پر جائے تو دروازہ پر دستک نہ دے بلکہ اس کے برآمد ہونے کا انتظار کرے۔ (13)

مسئلہ ۱۳: نااہلوں کو علم نہ پڑھائے اور جو اس کے اہل ہوں ان کی تعلیم سے انکار نہ کرے کہ نااہلوں کو پڑھانا علم کو ضائع کرنا ہے اور اہل کو نہ پڑھانا ظلم و جور ہے۔ (14) نااہل سے مراد وہ لوگ ہیں جن کی نسبت معلوم ہے کہ علم کے حقوق کو محفوظ نہ رکھ سکیں گے، پڑھ کر چھوڑ دیں گے، جاہلوں کے سے افعال کریں گے یا لوگوں کو گمراہ کریں گے یا علما کو بدنام کریں گے۔

مسئلہ ۱۴: معلم اگر ثواب حاصل کرنا چاہتا ہے تو پانچ باتیں اس پر لازم ہیں۔

- (1) تعلیم پر اجرت لینا شرط نہ کرے، اگر کوئی خود کچھ دیدے تو لے لے، ورنہ کچھ نہ کہے۔
- (2) با وضو رہے۔

(3) خیر خواہانہ تعلیم دے، توجہ کے ساتھ پڑھائے۔

(4) لڑکوں میں جھگڑا ہو تو عدل و انصاف سے کام لے، یہ نہ ہو کہ مال داروں کے بچوں کی طرف زیادہ توجہ کرے اور غریبوں کے بچوں کی طرف کم۔

(5) بچوں کو زیادہ نہ مارے، مارنے میں حد سے تجاوز کریگا تو قیامت کے روز محاسبہ (یعنی حساب) دینا پڑے گا۔ (15)

مسئلہ ۱۵: ایک شخص نے نماز وغیرہ کے مسائل اس لیے سیکھے کہ دوسرے لوگوں کو سکھائے بتائے گا اور دوسرے نے اس لیے سیکھے کہ ان پر خود عمل کریگا، پہلا شخص اس دوسرے سے افضل ہے۔ (16) یعنی جبکہ پہلے کا یہ مقصد ہو کہ عمل بھی کریگا اور تعلیم بھی دے گا یا یہ کہ محض تحصیل علم میں اول کو دوسرے پر فضیلت ہے، کیونکہ پہلے کا مقصد دوسروں کو فائدہ پہنچانا اور دوسرے کا مقصد صرف اپنے کو فائدہ پہنچانا ہے۔

(13) المرجع السابق، ص ۳۷۸-۳۷۹.

(14) المرجع السابق، ص ۳۷۹.

(15) افتاویٰ مہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثلاثون فی التفرقات، ج ۵، ص ۳۷۹.

(16) الدر المختار، کتاب الحظر والایات، فصل فی المبیع، ج ۹، ص ۶۷۲.

مسئلہ ۱۶: گھڑی بھر علم دین کے مسائل میں مذاکرہ اور گفتگو کرنا ساری رات عبادت کرنے سے افضل ہے۔ (17)

مسئلہ ۱۷: کچھ قرآن مجید یاد کر چکا ہے اور اسے فرصت ہے تو افضل یہ ہے کہ علم فقہ سیکھے، کہ قرآن مجید حفظ کرے، فرض کفایہ ہے اور فقہ کی ضروری باتوں کا جانتا فرض عین ہے۔ (18)



(17) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البيع، ج ۹، ص ۶۷۲۔

(18) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البيع، ج ۹، ص ۶۷۲۔

ریا و سمعہ کا بیان

ریا یعنی دکھاوے کے لیے کام کرنا اور سمعہ یعنی اٹن لیے کام کرنا کہ لوگ سنیں گے اور اچھا جانیں گے یہ دونوں چیزیں بہت بری ہیں ان کی وجہ سے عبادت کا ثواب نہیں ملتا بلکہ گناہ ہوتا ہے اور یہ شخص مستحق عذاب ہوتا ہے قرآن مجید میں ارشاد ہوا:

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا صَدَقَاتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَى كَالَّذِي يُنْفِقُ مَالَهُ رِثَاءَ النَّاسِ) (1)
اے ایمان والو! اپنے صدقات کو احسان جتا کر اور اذیت دے کر باطل نہ کرو، اس شخص کی طرح جو دکھاوے کے لیے مال خرچ کرتا ہے۔

اور ارشاد ہوا:

(مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا) (۱۱۰) (2)
جسے اپنے رب سے ملنے کی امید ہو، اسے چاہیے کہ نیک کام کرے اور اپنے رب کی عبادت میں کسی کو شریک نہ کرے۔

اس کی تفسیر میں مفسرین نے یہ لکھا ہے کہ ریا نہ کرے کہ وہ ایک قسم کا شرک ہے۔

اور فرماتا ہے:

(قَوْلٌ لِلْمُصَلِّينَ ﴿۲﴾ الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ﴿۳﴾ الَّذِينَ هُمْ يُرَآءُونَ ﴿۴﴾)

(1) پ ۳، البقرہ ۲۶۴۔

اس آیت کے تحت مفسر شبیر مولا ناسید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ یہ منافق ریا کار کے عمل کی مثال ہے کہ جس طرح پتھر پر مٹی نظر آتی ہے لیکن بارش سے وہ سب دور ہو جاتی ہے خالی پتھر رہ جاتا ہے یہی حال منافق کے عمل کا ہے کہ دیکھنے والوں کو معلوم ہوتا ہے کہ عمل ہے اور روز قیامت وہ تمام عمل باطل ہوں گے کیونکہ رضائے الہی کے لئے نہ تھے۔

(2) پ ۱۶، الکہف ۱۱۰۔

اس آیت کے تحت مفسر شبیر مولا ناسید محمد نعیم الدین مراد آبادی علیہ الرحمۃ ارشاد فرماتے ہیں کہ شرک اکبر سے بھی بچے اور ریا سے بھی جس کو شرک اصغر کہتے ہیں۔ مسلم شریف میں ہے کہ جو شخص سورۃ کہف کی پہلی دس آیتیں حفظ کرے اللہ تعالیٰ اس کو قندہ و جال سے محفوظ رکھے گا۔ یہ بھی حدیث شریف میں ہے کہ جو شخص سورۃ کہف کو پڑھے وہ آٹھ روز تک ہر قندہ سے محفوظ رہے گا۔

وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ﴿٣﴾ (3)

ویل ہے ان نمازیوں کے لیے جو نماز سے غفلت کرتے ہیں، جو ریا کرتے ہیں اور برتنے کی چیز مانگے نہیں دیتے۔

اور فرماتا ہے:

فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ﴿٤﴾ (4) لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْحَالِصُ

اللہ (عزوجل) کی عبادت اس طرح کر کہ دین کو اس کے لیے خالص کر، آگاہ ہو جاؤ کہ دین خالص اللہ ہے (عزوجل) کے لیے ہے۔

اور فرماتا ہے:

وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَكُنِ

الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا ﴿٥﴾ (5)

اور جو لوگ اپنے مال لوگوں کو دکھانے کے لیے خرچ کرتے ہیں اور نہ اللہ (عزوجل) پر ایمان لاتے ہیں اور نہ

پچھلے دن پر اور جس کا ساتھی شیطان ہوا تو برا ساتھی ہوا۔

احادیث اس کی مذمت میں بہت ہیں، بعض ذکر کی جاتی ہیں:



(3) پ ۳۰، الماعون ۲-۷۔

(4) پ ۲۳، الامر ۲-۳۔

(5) پ ۵، النساء ۳۸۔

احادیث

حدیث ۱: ابن ماجہ نے ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں: ہم لوگ مسیح دجال کا ذکر کر رہے تھے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تشریف لائے اور یہ فرمایا کہ میں تمہیں ایسی چیز کی خبر نہ دوں جس کا مسیح دجال سے بھی زیادہ میرے نزدیک تم پر خوف ہے؟ ہم نے کہا، ہاں یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم)، ارشاد فرمایا: وہ شرک خفی ہے، آدمی نماز پڑھنے کھڑا ہوتا ہے اور اس وجہ سے زیادہ کرتا ہے کہ یہ دیکھتا ہے کہ دوسرا شخص اسے نماز پڑھتے دیکھ رہا ہے۔ (1)

حدیث ۲: امام احمد نے محمود بن لبید رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس چیز کا تم پر زیادہ خوف ہے، وہ شرک اصغر ہے۔ لوگوں نے عرض کی، شرک اصغر کیا چیز ہے؟ ارشاد فرمایا کہ ریا ہے۔ (2)

(1) سنن ابن ماجہ، کتاب الزہد، باب الریاء والسمعة، الحدیث: ۳۲۰۴، ج ۴، ص ۷۰۔

ومشکوٰۃ المصابیح، کتاب الرقاق، باب الریاء والسمعة، الحدیث: ۵۳۳۳، ج ۳، ص ۱۲۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ دولت خانہ سے یا باہر سے مسجد نبوی شریف میں تشریف لائے نماز کا وقت تھا یا دیسے ہی حضرات صحابہ کا مجمع تھا اور اتفاقاً دجال کے خطرناک کا ہم لوگ تذکرہ کر رہے تھے۔

۲۔ کیونکہ دجال کو تو کوئی شخص ہی پائے گا وہ بھی قیامت کے قریب پھر انسان اس سے بچ بھی سکے گا کہ نہ اس کے پاس جائے نہ اس کے پھندے میں پھنسے مگر یہ کاری کی مصیبت ہر شخص کو ہر وقت درپیش ہے اس لیے یہ آفت دجال سے زیادہ خطرناک ہے۔

۳۔ یعنی اگر اکیسے میں نماز پڑھے تو تھوڑی اور ہلکی پڑھے مگر جب اسے کوئی دیکھ رہا ہو تو نوافل بہت تعداد میں پڑھے اور خوب لمبے دراز پڑھے، یہ ہے وصف میں ریا جب یہ بھی شرک خفی ہو تو اصل نماز میں ریا بہت ہی خطرناک ہے۔ ہم ریا کی یہ دو قسمیں پہلے بیان کر چکے ہیں اور یہ بھی بتا چکے ہیں کہ اصل عبادت میں ریا زیادہ خطرناک ہے نماز کا ذکر مثلاً فرمایا ہر نیکی کا یہی حال ہے۔ اس بیماری میں واعظین زیادہ جتلا ہیں، اکثر ہر داعظ کا خیال یہ ہوتا ہے کہ میرا داعظ سب سے اچھا ہے لوگ خوب واہ واہ کہیں، بعض واعظین بغیر داد سے داعظ نہیں کہہ سکتے، اللہ تعالیٰ خلاص عطا فرمائے۔ ریا دالی عبادت گتے ہوئے ختم کی طرح ہے جس سے پیداوار نہیں ہوتی۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۷، ص ۱۷۲)

(2) المسند امام محمد بن حنبل، حدیث محمود بن لبید، الحدیث: ۲۳۶۹۲، ج ۹، ص ۱۶۰۔

بیہقی نے اس حدیث میں اتنا زیادہ کیا کہ جس دن بندوں کے اعمال کا بدلہ دیا جائے گا، ریا کرنے والوں سے اللہ تعالیٰ فرمائے گا: ان کے پاس جاؤ جن کے دکھاوے کے لیے کام کرتے تھے، جا کر دیکھو کہ وہاں تمہیں کوئی بدلا اور خیر ملتا ہے۔ (3)

حدیث ۳: امام احمد و ترمذی و ابن ماجہ نے ابوسعید ابن ابی فضالہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب اللہ تعالیٰ تمام اولین و آخرین کو اس دن میں جمع فرمائے گا جس میں شک نہیں، تو ایک منادی ندا کریگا، جس نے کوئی کام اللہ (عزوجل) کے لیے کیا اور اس میں کسی کو شریک کر لیا وہ اپنے عمل کا ثواب اسی شریک سے طلب کرے کیونکہ اللہ تعالیٰ شرک سے بالکل بے نیاز ہے۔ (4)

(3) شعب الایمان، باب فی اخلاص العمل... الخ، الحدیث: ۶۸۳۱، ج ۵، ص ۴۴۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ انصاری ہیں، اہلبی ہیں، آپ کی صحابیت میں اختلاف ہے، امام مسلم نے آپ کو تابعی مانا ہے، امام بخاری آپ کو صحابی کہتے ہیں، امام بخاری کا قول قوی ہے، حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی وفات کے وقت آپ کی عمر صرف پانچ سال تھی۔ (مرقات، اشعہ امیر غلی)

۲۔ علیکم میں خطاب یا تو حضرات صحابہ کرام سے ہے یا سارے مسلمانوں سے۔ مطلب یہ ہے کہ ہر مؤمن کے لیے خطرات بہت ہیں مگر ریا کا خطرہ سب سے زیادہ خطرناک ہے کہ اس سے بچنا بہت مشکل، بڑے بڑے اس میں گرفتار ہو جاتے ہیں۔

۳۔ یہ پہلی وہ حدیث ہے جس میں ریا کو شرک اصغر فرمایا گیا ہے۔ شرک اپنی عبادات سے اپنے چھوٹے معبودوں کو راضی کرنے کی نیت کرتا ہے، ریا کار اپنی عبادات سے اپنے چھوٹے مقصودوں یعنی لوگوں کو راضی کرنے کی نیت کرتا ہے اس لیے ریا کار چھوٹے درجہ کا شرک ہے اور اس کا یہ عمل چھوٹے درجہ کا شرک ہے، چونکہ ریا کار کا عقیدہ خراب نہیں ہوتا عمل و ارادہ خراب ہوتا ہے اور کھلے شرک کا عقیدہ بھی خراب ہوتا ہے اس لیے ریا کو چھوٹا شرک فرمایا۔

۴۔ یعنی قیامت کے دن جب اعمال کے بدلے دیئے جانے کا وقت آوے گا تو ریا کار بھی مخلصین کے ساتھ جزا اعمال کا انتظار کریں گے تب ان سے کہا جاوے گا۔

۵۔ یعنی ان مخلصین کے ٹولہ سے الگ ہو جاؤ جنہیں خوش کرنے کے لیے تم اعمال کرتے تھے، ان سے اپنے اعمال کا بدلہ لو وہ ہی تم کو بدلہ دیں، یہ فرمان عالی انتہائی غضب کے اظہار کے لیے ہوگا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۷، ص ۱۷۳)

(4) المسند للإمام أحمد بن حنبل، حدیث ابی سعید بن ابی فضالہ، الحدیث: ۱۵۸۳۸، ج ۵، ص ۳۶۹.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کی کنیت ہی آپ کا نام ہے، آپ انصاری حارثی ہیں، اہل مدینہ سے ہیں، مشکوٰۃ شریف کے بعض نسخوں میں صرف ابوسعید ہے لوگ ابوسعید خدری سمجھے یہ غلط ہے۔

حدیث ۴: صحیح مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا اللہ تعالیٰ نے فرمایا: میں تمام شرکا میں شرکت سے بے نیاز ہوں، جس نے کوئی عمل کیا اور اس میں میرے ساتھ دوسرے کو شریک کیا، میں اس کو شرک کے ساتھ چھوڑ دوں گا۔ (5) یعنی اس کا کچھ ثواب نہ دوں گا اور ایک روایت میں ہے کہ فرماتا ہے: میں اس سے بری ہوں، وہ اسی کے لیے ہے جس کے لیے عمل کیا۔ (6)

۲۔ یعنی قیامت کے دن ایک فرشتہ اللہ تعالیٰ کی طرف سے اعلان فرمائے گا یہ اعلان تمام لوگوں کو سنانے کے لیے ہوگا۔

۳۔ یعنی جو کام رضائے الہی کے لیے کیے جاتے ہیں ان میں کسی بندے کے رضا کی نیت کرے۔ بندے سے مراد دنیا دار بندہ ہے اور ظاہر کرنا بھی اپنی ناموری کے لیے ہونا مراد ہے لہذا جو شخص اپنی عبادت میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی رضا کی بھی نیت کرے یا جو کوئی مسلمانوں کو سکھانے کی نیت سے لوگوں کو اپنے اعمال دکھائے وہ اس وعید میں داخل نہیں۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ یہ صرف عبادات میں ہوتی ہے معاملات اور دوسرے دنیاوی کام تو دکھانے کے لیے ہی کیے جاتے ہیں ان میں ریا کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا اسی لیے عمل کے ساتھ عملہ لکھ فرمایا گیا۔

۴۔ یعنی آج اعمال کے بدلہ کا دن ہے دنیا میں جس کی رضا کے لیے عبادت کی تھی آج اسی سے جنت بھی مانگو یہ انتہائی سخت و ناراضی کا اظہار ہے، اس کا مطلب یہ نہیں کہ ریا کار بھی بخشا ہی نہ جائے گا ہر مؤمن آخر کار بخشا جائے گا۔

۵۔ اس فرمان عالی کی دو شرحیں ابھی گزشتہ حدیث میں عرض کی جا چکی ہیں۔ شرکاء سے مراد دنیا کے شریک و حصہ دار ہیں یا مشرکین کے بت وغیرہ جنہیں وہ اللہ کے شریک جانتے تھے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۷، ص ۱۵۸)

(5) صحیح مسلم، کتاب الزہد، باب من أشرك في عمل، الحدیث: ۴۶۔ (۲۹۸۵)، ص ۱۵۹۳۔

(6) شعب الایمان، باب فی إخراج العمل لله... إلخ، الحدیث: ۶۸۱۵، ج ۵، ص ۳۲۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب جتنی دنیا والے اپنے حصہ داروں شریکوں سے راضی و خوش ہوتے ہیں کیونکہ وہ اکیلے اپنا کام نہیں کر سکتے مگر میں شریکوں سے پاک ہے نیاز ہوں مجھے کسی شریک کی ضرورت نہیں۔ شرکاء سے مراد دنیا کے شریک ہیں جو آپس میں ایک دوسرے کے حصہ دار ہوتے ہیں لہذا حدیث بالکل واضح ہے۔ بعض شراحین نے فرمایا کہ یہاں روئے سخن مشرکین سے ہے اور معنی یہ ہیں کہ تم لوگوں نے جن چیزوں کو میرا شریک ٹھہرایا ہے میں ان سے بے نیاز بھی ہوں بے زار بھی، بے نیاز کو شریک کی کیا ضرورت ہے۔

۲۔ یعنی جو شخص میری عبادات میں میرے ساتھ میرے بندوں کو بھی راضی کرنا چاہے خالص میرے لیے عبادت نہ کرے تو میں اس پر نظر کرم نہ کروں گا، اس سے فرماؤں گا کہ جاؤ انہیں سے ثواب لو جنہیں راضی کرنے کی تم نے نیت کی تھی۔ حضرات صوفیاء فرماتے ہیں کہ عبادت میں جنت حاصل کرنے، دوزخ سے بچنے کی نیت کرنا بھی ایک قسم کا شرک ہے، اللہ کے بندے جو جنت یا دوزخ کے بندے نہ بنو، اگر اللہ تعالیٰ جنت دوزخ پیدا نہ کرتا تو کیا وہ عبادت کا مستحق نہ ہوتا۔

حدیث ۵: صحیح مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ تمہاری صورتوں اور تمہارے اموال کی طرف نظر نہیں فرماتا، وہ تمہارے دل اور تمہارے اعمال کی طرف نظر کرتا ہے۔ (7)

حدیث ۶: صحیح بخاری و مسلم میں جندب یعنی ابو ذر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو سنانے کے لیے کام کرے گا، اللہ (عزوجل) اس کو سنائے گا یعنی اس کی سزا دے گا اور جو ریا کرے گا اللہ تعالیٰ اسے ریا کی سزا دے گا۔ (8)

۳۔ یعنی جو شخص دوسروں کی رضا کے لیے ہی عبادت یا میری رضا کے لیے بھی کرے دوسروں کی رضا کے لیے بھی وہ عس میرے لیے نہیں، انہیں دوسروں کے لیے ہے ان سے ہی ثواب ملے۔ خیال رہے کہ عبادات میں اللہ تعالیٰ کے ساتھ اس کے رسول کی رضا کی نیت ریا نہیں بلکہ عبادت کا کمال ہے کہ حضور کی رضا اللہ کی رضا ہے، رب تعالیٰ فرماتا ہے: ﴿وَاللّٰهُ وَرَسُولُهُ يُخْلِصُكَ مِنَ الدُّنْيَا﴾ یہاں اہل دنیا مراد ہیں جو دھری امیریہ عوام۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۷، ص ۱۵۶)

(7) صحیح مسلم، کتاب البر... راجع، باب تحریم ظلم المسلم... راجع، الحدیث: ۳۴۔ (۲۵۴۶) ص ۱۳۸۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی تمہاری اچھی صورتیں جب سیرت سے خالی ہوں ظاہر باطن سے خالی ہوں، مال خیرات و صدقات سے خالی ہوں تو رب تعالیٰ اسے نظر رحمت سے نہیں دیکھتا۔ اے مسلمانوں صورت بھی اچھی بناؤ سیرت بھی اچھی لہذا حدیث کا مطلب یہ نہیں اعمال اچھے کرو اور صورت بھگوان داس کی سی بناؤ، یا مطلب یہ ہے کہ رب تعالیٰ فقط صورت نہیں دیکھتا سیرت بھی دیکھتا ہے۔

۲۔ اس حدیث میں دیکھنے سے مراد کرم و محبت سے دیکھنا ہے، مطلب وہ ہی ہے کہ تمہارے دلوں عملوں کو بھی دیکھتا ہے۔ خیال رہے کہ کوئی شریف آدمی گندے برتن میں اچھا کھانا نہیں کھاتا، رب تعالیٰ صورت بگاڑنے والوں کے اچھے اعمال سے بھی خوش نہیں ہوتا من تشبہ بقوم فهو منهم۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۷، ص ۱۵۵)

(8) صحیح بخاری، کتاب الرقاق، باب الریاء والسمعة، الحدیث: ۶۴۹۹، ج ۴، ص ۲۴۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جو کوئی عبادات لوگوں کے دکھاوے سنانے کے لیے کرے گا تو اللہ تعالیٰ دنیا میں یا آخرت میں اس کے عمل لوگوں میں مشہور کر دے گا مگر عزت کے ساتھ نہیں بلکہ ذلت کے ساتھ کہ لوگ اس کی عمل بن کر اس پر پھٹکاری کریں گے اس کی شرح، بھی کچھ آگے آ رہی ہے۔ ہم نے دیکھا کہ بعض لوگ اپنے صدقات خیرات شہرت کے لیے اخباروں میں دیواروں پر لکھواتے ہیں، لوگ پڑھ پڑھ کر ان پر عن طعن کی بوچھاڑ کرتے ہیں کہ اس شہرت کی کیا ضرورت تھی، بعض لوگ شہرت کے لیے اولاد کی شادیوں میں بہت خرچ کرتے ہیں مگر جو طرفہ سے ان پر وہ پھٹکار پڑتی ہے کہ خدا کی پناہ۔ اس حدیث کا ظہور آج بھی ہو رہا ہے (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۷، ص ۱۵۷)

حدیث ۷: طبرانی و حاکم نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ریا کا ادنیٰ مرتبہ بھی شرک ہے اور تمام بندوں میں خدا کے نزدیک وہ زیادہ محبوب ہیں، جو پرہیزگار ہیں جو چھپے ہوئے ہیں اگر وہ غائب ہوں تو انھیں کوئی تلاش نہ کرے اور گواہی دیں تو پہچانے نہ جائیں، وہ لوگ ہدایت کے امام اور علم کے چراغ ہیں۔ (9)

حدیث ۸: ابن ماجہ نے روایت کی، کہ ایک روز حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ مسجد نبوی میں تشریف لے گئے، معاذ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو قبر نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے پاس روتا ہوا پایا۔ حضرت عمر (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) نے فرمایا: کیوں روتے ہو؟ حضرت معاذ (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) نے کہا، ایک بات میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے سنی تھی، وہ مجھے رلاتی ہے۔ میں نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو یہ فرماتے سنا کہ تھوڑا سا ریا بھی شرک ہے اور جو شخص اللہ (عزوجل) کے ولی سے دشمنی کرے، وہ اللہ (عزوجل) سے لڑائی کرتا ہے۔ اللہ تعالیٰ نیکوں، پرہیزگاروں، چھپے ہوؤں کو دوست رکھتا ہے وہ کہ غائب ہوں تو ڈھونڈیں نہ جائیں، حاضر ہوں تو بلائے نہ جائیں اور ان کو نزدیک نہ کیا جائے، ان کے دل ہدایت کے چراغ ہیں، ہر غبار آلود تاریک سے نکل جاتے ہیں۔ (10) یعنی

(9) لمصدرک، کتاب معرفۃ الصحابہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم، الحدیث: ۵۲۳۱، ج ۴، ص ۳۰۶۔

(10) سنن ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب من ترجی لہ... الخ، الحدیث: ۳۹۸۹، ج ۴، ص ۳۵۱۔

ومشکاۃ المصابیح، کتاب الرقاق، باب الریاء والسماۃ، الحدیث: ۵۳۲۸، ج ۳، ص ۱۳۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس زمانہ میں حجرہ شریف میں دروازہ تھا جس سے لوگ قبر انور تک پہنچ جاتے بہت عرصہ کے بعد دروازہ بند کر دیا گیا اب قبر انور تک کوئی نہیں پہنچ سکتا آپ خاص قبر انور سے متصل بیٹھے ہوئے دور ہے تھے۔

۲۔ حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے پوچھا کہ اے معاذ کیوں دور ہے ہو فراق رسول صلی اللہ علیہ وسلم رلا رہا ہے یا کوئی اور تکلیف۔ معلوم ہوا کہ مسلمان بھائی کو تکلیف میں دیکھے تو ضرور وجہ پوچھے اگر ہو سکے تو اس کی تکلیف دور کرنے کی کوشش کرے۔

۳۔ یعنی میں نے ایک نصیحت حضور سے سنی مگر اس پر عمل نہ کر سکا اپنی اس محرومی یا معذوری پر روبرو ہوں۔

۴۔ علماء فرماتے ہیں کہ ریا کے بہت درجے ہیں کچھ درجے چھوٹی چیونٹی سے زیادہ باریک ہیں۔ انسان ان کو ریا نہیں سمجھتا مگر وہ ہے ریا، ان سے بچنا بہت مشکل ہے اس سے تو خاص لوگوں کا بچنا مشکل ہے عوام کا تو ذکر ہی کیا ہے مجھے خطرہ ہے کہ میں بھی ریا کے کسی درجہ میں مبتلا

ہوں۔

۵۔ یعنی میرے رونے کی دوسری وجہ یہ ہے کہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ کے دوستوں کی ایذا رب سے جنگ ہے اور اللہ کے اولیاء ایسے چھپے ہوئے ہیں کہ ان کی پہچان بہت مشکل ہے، بہت دفعہ پڑوسیوں دوستوں سے شکر رنجی ہو جاتی ہے، ممکن ہے کہ

مشکلات اور بلاؤں سے الگ ہوتے ہیں۔

حدیث ۹: امام بخاری نے ابو تمیمہ سے روایت کی، کہتے ہیں کہ صفوان اور ان کے ساتھیوں کے پاس میں حاضر تھا، جناب (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) ان کو نصیحت کر رہے تھے۔ انھوں نے کہا، تم نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے کچھ سنا ہو تو بیان کرو۔ جناب رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کہا، میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو یہ فرماتے سنا: جو

ان میں سے کوئی ولی اللہ ہو ان کی تکلیف میرے لیے مصیبت بن جاوے۔ حدیث قدسی میں ہے اولیائی تحت قبائی لا یرحم غیر میرے ولی میری قبائ میں رہتے ہیں انہیں میرے سوا کوئی نہیں پہچانتا۔ (مرقات) خیال رہے کہ اولیاء اللہ دو قسم کے ہیں: نکوینی دلی اور شرعی دلی۔ نکوینی دلی جو دنیا کے سیاہ سفید کے مالک و مختار بنا دیئے جاتے ہیں، ان کی تعداد مقرر ہے مگر شرعی اولیاء اللہ تعداد میں جہاں چاہیں متقی مسلمان جمع ہوں وہاں ان شاء اللہ ایک ولی ضرور ہوتا ہے، اس ولی کو خود بھی خبر نہیں ہوتی کی میں دلی ہوں مگر ہوتا ہے ولی۔ اس کی بحث ان شاء اللہ مشکوٰۃ شریف آخری باب میں ہوگی۔

۶۔ غالباً اس سے وہ ہی اولیاء شرعی مراد ہیں اور ہو سکتا ہے کہ اولیاء نکوینی بھی اسی میں داخل ہوں کہ اکثر ان میں سے چھپے ہوئے رہتے ہیں کم وہ حضرات ہیں جنہیں مخلوق پہچانتی ہے جیسے حضور غوث پاک یا خواجہ اجیری یا داتا گنج بخش جویری وغیرہم۔ خیال رہے کہ نبوت کا اعلان ضروری ہے مگر ولایت کا اعلان ضروری نہیں، اکثر اعلان ولایت کرنے والے خالی ہوتے ہیں۔ شیخ سعدی نے فرمایا شعر

ایں مدعیان در طلبش بے خبر اند
آزما کہ خبر شد خبرش باز نہ آمد

علماء کے لیے اعلان ضروری ہے کہ یہ نابین رسول ہیں، نبوت کا اعلان ضروری، اولیاء اللہ اکثر چھپے رہتے ہیں، علماء دین اسلام کی ظاہری پولیس ہیں، اکثر اولیاء اللہ خفیہ پولیس یہ حضرات بھی اپنے کو دلی نہیں کہتے۔ بعض اولیاء کے متعلق لوگوں کی زبان سے خواہ مخواہ ولی لکھا ہے۔ جیسے چراغ سے ہدایت و نور ملتا ہے ایسے ہی ان کے دلوں ان کی نگاہوں سے لوگوں کو نور ملتا ہے یہ حضرات حقانیت اسلام کی دلیس ہیں۔ حق دین وہ ہے جس میں اولیاء اللہ ہوں انہیں کا راستہ صراط مستقیم ہے، رب فرماتا ہے: "صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ" اور فرماتا ہے: "وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ"۔ اسی شاخ کا تعلق جڑ سے قائم ہے جس میں سبزہ پھول ہیں، سوکھی شاخ کا تعلق جڑ سے ٹوٹ چکا وہ آگ کے لائق ہے، اسد م کی اسی شاخ کا تعلق حضور سے قائم ہے جس میں ولایت کے پھول ہوں۔

۸۔ یعنی یہ اولیاء اللہ تاریک گھروں غیر مشہور مخلوق نامعلوم بستیوں سے پیدا ہوتے رہیں گے۔ شعر

خاک ساران جہاں را حقارت مگر
تو چہ دانی کہ دریں گرد سوارے باشند

یہ مطلب ہے کہ وہ حضرات تاریک گرد و غبار والے عقائد و اعمال و شبہات سے نکل جائیں گے کبھی اس میں پھنسیں گے نہیں۔ (مرقات) امام غزالی فرماتے ہیں کہ ہر عالم دین متقی ولی اللہ ہے اگر متقی عالم ولی نہ ہو تو کوئی دلی ہی نہیں۔ (مرقات) مشہور یہ ہے کہ جس سے روحانی فیوض جاری ہوں انہیں صوفیاء اولیاء کہا جاتا ہے، جن سے شرعی فیوض جاری ہوں انہیں علماء کہتے ہیں۔

سنانے کے لیے عمل کرے گا، اللہ تعالیٰ قیامت کے دن اسے سنائے گا یعنی سزا دے گا اور جو مشقت ڈالے گا، اللہ تعالیٰ قیامت کے دن اس پر مشقت ڈالے گا۔ انھوں نے کہا، ہمیں وصیت کیجیے۔ فرمایا: سب سے پہلے انسان کا پیٹ سڑے گا، ہنذا جس سے ہو سکے کہ پاکیزہ مال کے سوا کچھ نہ کھائے، وہ یہی کرے اور جس سے ہو سکے کہ اس کے اور جنت کے درمیان چلو بھر خون حائل نہ ہو وہ یہ کرے یعنی کسی کو ناحق قتل نہ کرے۔ (11)

حدیث ۱۰: امام احمد نے شداد بن اوس (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) سے روایت کی، کہتے ہیں میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو یہ فرماتے سنا کہ جس نے ریا کے ساتھ نماز پڑھی، اس نے شرک کیا اور جس نے ریا کے ساتھ روزہ

(11) صحیح البخاری، کتاب الاحکام، باب من شاق شق اللہ علیہ، الحدیث: ۷۱۵۲، ج ۳، ص ۴۵۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ ابو حمزہ کا نام طریف ابن محالد جمہی ہے، آپ تابعی ہیں، بصری ہیں، ۹۵ پچانوے میں آپ کی وفات ہے، صفوان ابن سلیم زہری بھی تابعی ہیں، حمید ابن عبدالرحمن، ابن عوف کے آزاد کردہ غلام ہیں، آپ نے چالیس سال کروٹ زمین پر نہ لگائی۔ اصحاب سے مراد ان کے شاگرد ہیں۔ (مرقات)

۲۔ جناب حضرت ابو ذر غفاری رضی اللہ عنہ کا نام شریف ہے، آپ مشہور صحابی ہیں، آپ ان حضرات کو ریا، شہرت سے بچنے کی نصیحت فرما رہے تھے جیسا کہ اگلے مضمون سے ظاہر ہے۔

۳۔ یعنی اے صحابی رسول اگر آپ نے ریا کاری شہرت کے متعلق رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے کچھ سنا ہو تو ہم کو سنائیے۔
۴۔ اس فرمان عالی کی شرح ابھی کچھ پہلے گزر چکی کہ جو دنیا میں ریا کار شہرت پسند ہوگا رب تعالیٰ اسے قیامت میں رسوا عام فرما دے گا یعنی اسے شہرت تو دے گا مگر بدنامی کی۔

۵۔ یعنی جو اپنے نفس پر غیر ضروری مشقت ڈال لے گا جیسے رات کو نہ سونا، نکاح نہ کرنا، اچھا نہ کھانا، تارک الدنیا ہو کر رہنا وغیرہ یا جو دوسروں پر مشقت ڈالے گا کہ اپنے نوکروں ماتحتوں سے سخت بھاری کام لے گا تو قیامت میں اس پر عتاب الہی کا بوجھ و مشقت ڈال جا دے گا۔

۶۔ یہ فرمان رسول ہے صلی اللہ علیہ وسلم سبحان اللہ! کیسا پیارا فرمان ہے۔ طب یونانی کہتی ہے کہ نوے فیصدی بیماریاں پیٹ سے پیدا ہوتی ہیں، طب ایمانی بھی کہتی ہے کہ نوے فیصدی گناہ پیٹ سے پیدا ہوتے ہیں، حرام غذا صد ہا بیماریوں کی جڑ ہے۔ گنداپیٹروں موٹر کی مشین کو خراب کرتا ہے، گندی خرام غذا انسان کی مشینری بگاڑ دیتی ہے لہذا کوشش کرنی چاہیے کہ اکل حلال صدق مقال ہو۔

۷۔ یعنی اگر کوئی شخص اپنے مسلمان بھائی کا لپ بھر خون بھی ظلماً بہائے گا کہ اسے ظلماً قتل کرے یا ظلماً زخمی کرے تو یہ ظلم خون اس کے اور جنت کے درمیان حائل ہو جائے گا کہ اسے جنت میں داخل نہ ہونے دے گا لہذا اس سے بچے رہو ایسا نہ ہو کہ حقیر سا گنہ تم کو ایسی عظیم نعمت سے محروم کر دے۔ خیال رکھو کہ بھی چھوٹی چنگاری گھر جلا ڈالتی ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۷، ص ۱۶۶)

رکھا، اس نے شرک کیا اور جس نے ریا کے ساتھ صدقہ دیا، اس نے شرک کیا۔ (12)

حدیث ۱۱: امام احمد نے شداد بن اوس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ یہ روئے، کسی نے پوچھا کیوں روتے ہیں؟ کہا کہ ایک بات میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے سنی تھی وہ یاد آگئی اس نے مجھے راہ دیا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کو میں نے یہ فرماتے سنا کہ میں اپنی امت پر شرک اور شہوت خفیہ کا اندیشہ کرتا ہوں۔ میں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کیا آپ کی امت آپ کے بعد شرک کرے گی؟ فرمایا: ہاں مگر وہ لوگ آفتاب و ماہتاب اور پتھر اور بت کو نہیں پوجیں گے، بلکہ اپنے اعمال میں ریا کریں گے اور شہوت خفیہ یہ کہ صبح کو روزہ رکھے گا پھر کسی خواہش سے روزہ توڑ دے گا۔ (13)

(12) المسند للإمام أحمد بن حنبل، حدیث شداد بن اوس، الحدیث: ۱۷۱۳۰، ج ۶، ص ۸۱-۸۲.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اس شرک درہم کا ہے: شرک جلی، شرک خفی۔ شرک جلی تو کھلم کھلا شرک و بت پرستی کرنا ہے۔ شرک خفی ریا کاری ہے، یوں کہو کہ شرک اعتقادی تو کھلا ہوا شرک ہے اور شرک عملی ریا کاری ہے۔ صوفیاء فرماتے ہیں کل ماسد من اللہ فموسم من اللہ جو ہمیں اللہ سے روکے وہ ہی تمہارا بت ہے، نفس امارہ بھی بت ہے۔ اسی حدیث سے معلوم ہوا کہ روزے میں بھی ریا کاری ہو سکتی ہے، ہاں روزے میں ریا خالص نہیں ہو سکتی اسی لیے ارشاد ہے الصوم لی دانا اجزی بہ۔ بعض لوگ روزہ رکھ کر لوگوں کے سامنے بہت کلیاں کرتے، سر پر پانی ڈالتے رہتے ہیں، کہتے پھرتے ہیں ہائے روزہ بہت لگا ہے بڑی پیاس لگی ہے وغیرہ وغیرہ یہ بھی روزے کی ریا ہے اور اس حدیث میں داخل ہے۔ خیال رہے کہ ریاہ کی دو قسمیں ہیں: ایک ریا اصل عمل میں، دوسری ریا دھف عمل میں۔ اصل عمل میں ریا یہ ہے کہ کوئی دیکھے تو یہ نماز پڑھ لے نہ دیکھے تو نماز پڑھے ہی نہیں۔ دھف عمل میں ریا یہ ہے کہ لوگوں کے سامنے نماز خوب اچھی طرح پڑھے تنہائی میں معمولی طرح پڑھے، پہلی ریا بہت بری ہے دوسری ریا پہلی سے کم۔ شیخ سعدی فرماتے ہیں۔

کلید در روزخ است آن نماز

کہ در روئے مردم گزاری دراز

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۷، ص ۱۷۰)

(13) المرجع السابق، الحدیث: ۱۷۱۳۰، ج ۶، ص ۷۷.

حکیم الامت کے مدنی پھول

اسا تخوف بنا ہے تخوف سے بمعنی بہت ہی ڈرنا۔ خوف عام ہے معمولی ڈر ہو یا سخت ڈر، خوف خاص ہے بہت ڈر، یا تخوف وہ خوف ہے جس کی علامات ظاہر ہو چکی ہوں، خوف میں یہ قید نہیں یعنی میں اپنی امت پر بہت ہی ڈرتا ہوں۔ یا علامات ریا دیکھ کر ڈرتا ہوں۔ اس فرمان عالی میں الخفیہ شرک اور شہوت دونوں کی صفت۔ معنی یہ ہے کہ میں اپنی امت پر خفیہ شرک اور خفیہ شہوت سے ڈرتا ہوں۔ خفیہ وہ شرک و شہوت ہے جو مجاہدہ و ریاضت کرنے والوں پر بھی ظاہر نہ ہو، وہ حضرات بھی اس سے دھوکا کھا جاویں صرف قوت قدسیہ والے ہی سے

حدیث ۱۲: امام احمد و مسلم و نسائی نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: سب سے پہلے قیامت کے دن ایک شخص کا فیصلہ ہوگا جو شہید ہوا ہے وہ حاضر کیا جائے گا، اللہ تعالیٰ اپنی نعمتیں دریافت کریگا وہ نعمتوں کو پہچانے گا یعنی اقرار کریگا، ارشاد فرمائے گا کہ ان نعمتوں کے مقابل میں تو نے کیا عمل کیا ہے؟ وہ کہے گا، میں نے تیری راہ میں جہاد کیا یہاں تک کہ شہید ہوا، اللہ تعالیٰ فرمائے گا: تو جھوٹا ہے، تو نے اس لیے قتل کیا تھا کہ لوگ تجھے بہادر کہیں سو کہہ لیا گیا، حکم ہوگا اس کو مونہ کے بل گھیٹ کر جہنم میں ڈال دیا جائے گا۔

اور ایک وہ شخص جس نے علم پڑھا اور پڑھایا اور قرآن پڑھا، وہ حاضر کیا جائے گا اس سے نعمتوں کو دریافت کریگا، وہ نعمتوں کو پہچانے گا، فرمائے گا: ان نعمتوں کے مقابل میں تو نے کیا عمل کیا ہے؟ کہے گا، میں نے تیرے لیے علم سیکھا اور سکھایا اور قرآن پڑھا، فرمائے گا: تو جھوٹا ہے، تو نے علم اس لیے پڑھا کہ تجھے عالم کہا جائے اور قرآن اس لیے پڑھا کہ تجھے قاری کہا جائے سو تجھے کہہ لیا گیا، حکم ہوگا مونہ کے بل گھیٹ کر جہنم میں ڈال دیا جائے گا۔

پھر ایک تیسرا شخص لایا جائے گا، جس کو خدا نے وسعت دی ہے اور ہر قسم کا مال دیا ہے، اس سے اپنی نعمتیں

اس کی خبر رکھ سکتے ہیں۔ (مرقات)

۲۔ سائل کو شبہ یہ ہوا کہ امت محمدیہ تو امت مرحومہ ہے یہ بھی نہ بگڑے گی اس لیے یہ سوال کیا سہ عدلک سے مراد حضرات صحابہ کرام نہیں بلکہ بعد کی نسلیں ہیں، حضرات صحابہ کے ایمان و اخلاص کی گواہی قرآن مجید و احادیث نبویہ میں دی ہے، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهَتِهِمْ التَّفَاقُيْ وَكَانُوا آخِثِينَ بِهَا وَأَهْلَهَا"۔

۳۔ دشمن ہر بت کو کہتے ہیں جس کی پوجا کی جادے خواہ چاند سورج ہو، یا پتھر درخت وغیرہ یہاں خاص کے بعد عام کا ذکر ہے۔

۴۔ اس کی تائید اس آیت کریمہ سے ہے "فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا"۔ اس آیت میں شرک سے مراد یہ ہی ریا کاری ہے اسی کو حضور انور نے شرک فرمایا بالکل حق ہے۔

۵۔ یا تو روزہ رکھ لے گا یا رکھنے کی نیت کرے گا پہلے معنی زیادہ ظاہر ہیں جیسا کہ اگلے مضمون سے ظاہر ہے۔

۶۔ اس طرح کہ اس نے روزہ رکھ لیا ہوگا کوئی اچھے کھانے کی دعوت آگئی یا کسی نے شربت سوڈا پیش کیا تو اس کھانے شربت کی وجہ سے

روزہ توڑ دیا یا روزہ کی نیت تھی کہ آج روزہ رکھوں گا مگر یہ چیزیں دیکھیں ارادہ بدل دیا محض نفسانی لذت و خواہش کے لیے کہ ایسا مزہ دار

کھانا کون چھوڑے لہذا یہ حدیث اس حدیث کے خلاف نہیں کہ حضور انور نے ازواج مطہرات سے پوچھا کہ کھانا ہے عرض کیا گیا

ہاں، فرمایا لاؤ ہم نے تو آج روزہ رکھ لیا تھا پھر کھانا ملاحظہ فرمایا کہ افطار فرمالینا خواہش نفس کے لیے نہ تھا بلکہ حکم شرعی بیان کرنے کے لیے

تھا کہ غسل روزہ رکھ کر توڑ دینا جائز ہے اگرچہ قضاء واجب ہوگی۔ حضرت ام ہانی کو حضور انور نے اپنا پس خواہ پانی دیا آپ نے پی کر پوچھا کہ

حضور میرے روزہ تھا فرمایا کوئی حرج نہیں، وہ روزہ توڑنا حضور کے تبرک سے برکت حاصل کرنے کے لیے تھا نہ کہ نفسانی خواہش سے لہذا

احادیث سمجھ کر پڑھنا ضروری ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۷، ص ۱۷۱)

دریافت فرمائے گا، وہ نعمتوں کو پہچانے گا، فرمائے گا: تو نے ان کے مقابل کیا کیا؟ عرض کریگا میں نے کوئی راستہ ایسا نہیں چھوڑا جس میں خرچ کرنا تجھے محبوب ہے، مگر میں نے اس میں تیرے لیے خرچ کیا۔ فرمائے گا: تو جھوٹا ہے، تو نے اس لیے خرچ کیا کہ سخی کہا جائے سو کہہ لیا گیا، اس کے متعلق بھی حکم ہوگا مونہ کے بل تھسیٹ کر جہنم میں ڈال دیا جائے گا۔ (14)

حدیث ۱۳: بخاری نے تاریخ میں اور ترمذی نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اللہ (عزوجل) کی پناہ مانگو جب الحزن سے یہ جہنم میں ایک وادی ہے کہ جہنم بھی ہر روز چار سو مرتبہ اس سے پناہ مانگتا ہے، اس میں قاری داخل ہوں گے جو اپنے اعمال میں ریا کرتے ہیں اور خدا کے بہت زیادہ مبغوض وہ قاری ہیں، جو امرا کی ملاقات کو جاتے ہیں۔ (15)

حدیث ۱۴: طبرانی اوسط میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو شخص آخرت کے عمل سے آراستہ ہو اور وہ نہ آخرت کا ارادہ کرتا ہے، نہ آخرت کا طالب ہے، اس پر آسمان و زمین میں لعنت ہے۔ (16)

حدیث ۱۵: حکیم نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: میری امت میں شرک چیونٹی کی چال سے بھی زیادہ مخفی ہے، جو چکنے پتھر پر چلتی ہے۔ (17)

حدیث ۱۶: امام احمد و طبرانی نے ابو موسیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اے لوگو! شرک سے بچو کیونکہ وہ چیونٹی کی چال سے بھی زیادہ پوشیدہ ہے۔ لوگوں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کس طرح شرک سے بچیں؟ ارشاد فرمایا کہ یہ دعا پڑھو۔

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ اَنْ نُّشْرِكَ بِكَ شَيْئًا نَعْلَمُہٗ وَنَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا نَعْلَمُہٗ۔ (18)

(14) صحیح مسلم، کتاب الادارۃ، باب من قاتل لیر یاہ والسمۃ استحق النار، الحدیث: ۱۵۲۔ (۱۹۰۵)، ص ۱۰۵۵۔

(15) کنز العمال، کتاب الاخلاق، رقم: ۷۷۷۷، ج ۳، ص ۱۹۰۔

وسنن الترمذی، کتاب الزہد، باب ما جاء فی الریاء والسمۃ، الحدیث: ۲۳۹۰، ج ۳، ص ۱۷۰۔

(16) المعجم الاوسط، باب العین، الحدیث: ۷۷۷۷، ج ۳، ص ۳۳۸۔

والترغیب والترہیب للمذہبی، الترہیب من الریاء... إلخ، الحدیث: ۱۲، ج ۱، ص ۳۲۔

(17) نو درالصول فی معرفۃ احادیث الرسول، الاصل الرابع والسبعون والمکبان... إلخ، الحدیث: ۱۹۰۴، ص ۶۷۲۔

(18) المسند لامام أحمد بن حنبل، حدیث ابی موسیٰ الاشعری، الحدیث: ۱۹۶۲۵، ج ۷، ص ۱۳۶۔

الہی! ہم تیری پناہ مانگتے ہیں اس سے کہ جان کر ہم تیرے ساتھ کسی چیز کو شریک کریں اور ہم اس سے استغناء کرتے ہیں جس کو نہیں جانتے۔

حدیث ۱۷: طبرانی نے عدی بن حاتم رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: کچھ لوگوں کو جنت کا حکم ہوگا، جب جنت کے قریب پہنچ جائیں گے اور اس کی خوشبو سونگھیں گے اور محل اور جو کچھ جنت میں اللہ تعالیٰ نے جنتیوں کے لیے سامان طیار کر رکھا ہے، دیکھیں گے۔ پکارا جائے گا کہ انھیں واپس کرو جنت میں ان کے لیے کوئی حصہ نہیں۔ یہ لوگ حسرت کے ساتھ واپس ہوں گے کہ ایسی حسرت کسی کو نہیں ہوئی اور یہ لوگ کہیں گے کہ اے رب! اگر تو نے ہمیں پہلے ہی جہنم میں داخل کر دیا ہوتا، ہمیں تو نے ثواب اور جو کچھ اپنے اولیاء کے لیے جنت میں مہیا کیا ہے نہ دکھایا ہوتا تو یہ ہم پر آسان ہوتا۔

ارشاد فرمائے گا: ہمارا مقصد ہی یہ تھا اے بدبختو! جب تم تنہا ہوتے تھے تو بڑے بڑے گناہوں سے میرا مقابلہ کرتے تھے اور جب لوگوں سے ملتے تھے تو خشوع کے ساتھ ملتے جو کچھ دل میں میری تعظیم کرتے اس کے خلاف لوگوں پر ظاہر کرتے لوگوں سے تم ڈرے اور مجھ سے نہ ڈرے، لوگوں کی تعظیم کی اور میری تعظیم نہیں کی، لوگوں کے لیے گناہ چھوڑے میرے لیے نہیں چھوڑے، لہذا تم کو آج عذاب چکھاؤں گا اور ثواب سے محروم کروں گا۔ (19)

حدیث ۱۸: ترمذی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جس کی نیت طلبِ آخرت ہے اللہ تعالیٰ اس کے دل میں غنا پیدا کر دے گا اور اس کی حاجتیں جمع کر دے گا اور دنیا ذلیل ہو کر اس کے پاس آئے گی اور طلبِ دنیا جس کی نیت ہو اللہ تعالیٰ فقر و محتاجی اس کی آنکھوں کے سامنے کر دے گا اور اس کے کاموں کو متفرق کر دے گا اور ملے گا وہی جو اس کے لیے لکھا جا چکا ہے۔ (20)

(19) معجم الکبیر سبطرانی، الحدیث: ۱۹۹، ج ۱۵، ص ۸۵۔

و مجمع الزوائد، کتاب الزہد، باب ما جاء فی الریاء، الحدیث: ۱۷۳۹، ج ۱۰، ص ۷۷۔

(20) سنن اترمدی، کتاب صفۃ اقیامۃ، باب: ۹۵، الحدیث: ۲۳۷۳، ج ۲، ص ۲۱۱۔

و مشکاۃ المصابیح، کتاب الرقاق، باب الریاء والسعۃ، الحدیث: ۵۳۲۰، ج ۳، ص ۱۳۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اے شمل جمع ہے شملہ کی بمعنی حاجت یا عادت یعنی اخلاص والے کو رب تعالیٰ دلی استغناء بھی بخشتا ہے اور اس کی متفرق حاجتیں یکجا جمع بھی فرمادیتا ہے کہ گھر بیٹھے اس کی ساری ضرورتیں پوری ہوتی رہتی ہیں، ضرورتوں کے پاس وہ نہیں جاتا ضروریات اس کے پاس آتی ہیں۔ جو اللہ کا ہو جاتا ہے اللہ اس کا ہو جاتا ہے۔ جس جانور کو کیلے سے باندھ دیتے ہیں اس کی ہر ضرورت وہاں ہی پہنچ جاتی ہے۔

حدیث ۱۹: صحیح مسلم میں ابو ذر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے پوچھا گیا کہ یہ فرمائیے کہ آدمی اچھا کام کرتا ہے اور لوگ اس کی تعریف کرتے ہیں (یہ ریا ہے یا نہیں)؟ فرمایا: یہ مومن کے لیے جہد یعنی دنیا میں بشارت ہے۔ (21)

حدیث ۲۰: ترمذی نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں: میں نے عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) میں اپنے مکان کے اندر نماز کی جگہ میں تھا، ایک شخص آگیا اور یہ بات مجھے پسند آئی کہ اس نے مجھے اس حال میں دیکھا (یہ ریا تو نہ ہوا)۔ ارشاد فرمایا: ابو ہریرہ! تمہارے لیے دو ۲ ثواب ہیں، پوشیدہ عبادت کرنے کا اور علانیہ کا بھی۔ (22)

یہ اس صورت میں ہے کہ عبادت اس لیے نہیں کی کہ لوگوں پر ظاہر ہو اور لوگ عابد سمجھیں، عبادت خالصاً اللہ (عزوجل) کے لیے ہے، عبادت کے بعد اگر لوگوں پر ظاہر ہو گئی اور طبعاً یہ بات اچھی معلوم ہوتی ہے کہ دوسرے نے اچھی حالت پر پایا، اس طبعی مسرت سے ریا نہیں۔

حدیث ۲۱: بیہقی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: آدمی کی برائی کے لیے یہ کافی ہے کہ دین و دنیا میں اس کی طرف انگلیوں سے اشارہ کیا جائے، مگر جس کو اللہ تعالیٰ

وہ ایک سجدہ جسے تو گراں سمجھتا ہے ہزار سجدوں سے دیتا ہے آدمی کو نجات

۲۔ دنیا سے مراد دنیاوی نعمتیں بھی ہیں اور دنیا کے لوگ بھی یعنی دنیا اور دنیا دار اس کے پاس خادم بن کر حاضری دیتے ہیں جیسا کہ اولیاء اللہ کے آستانوں پر دیکھا جا رہا ہے۔ شعر

ان کے در کا جو ہوا خلق خدا اس کی ہوئی
ان کے در سے جو پھرا اللہ اس سے پھر گیا

۳۔ فقری سے مراد ہے لوگوں کی محتاجی، ان کا حاجت مند رہنا ہے، ان کے دروازوں پر دھکے کھانا، انکی خوشامدی کرنا۔

۴۔ یعنی اس کا دل پریشان رہے کبھی روٹی کے پیچھے دوڑے گا، کبھی کپڑے کی فکر میں مارا مارا پھرے گا، کبھی دیگر ضروریات کے لیے پریشان پھرے گا، اللہ اللہ کرنے کا دقت ہی نہ پائے گا یہ بھی تجربہ سے ثابت ہے۔

۵۔ یعنی اس کی ایسی دوڑ دھوپ سے اس کی دنیا میں اضافہ نہ ہوگا بلکہ اس کی پریشانیوں میں ہی اضافہ ہوگا، دنیا اتنی ہی بے گنتی مقدر میں ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۷، ص ۱۶۰)

(21) صحیح مسلم، کتاب البر والصلة... باب إذا أثنی علی الصالح... الخ، الحدیث: ۱۶۶۔ (۲۶۴۲)، ص ۴۲۰۔

(22) سنن الترمذی، کتاب الزہد، باب عمل السر، الحدیث: ۲۳۹۱، ج ۴، ص ۱۷۱۔

وشرح السنہ، کتاب الرقاق، باب من عمل لہ الحمد علیہ، الحدیث: ۴۰۳۶، ج ۷، ص ۳۴۶۔

بچائے۔ (23) یعنی جسے لوگ اچھا سمجھتے ہوں، اس کو ریا و عجب سے بچتا بہت مشکل ہوتا ہے، مگر خدا کی خاص مہربانی جس پر ہو وہی بچتا ہے۔



(23) شعب الایمان، باب فی اخلاص العمل، راجع، الحدیث: ۶۹۷۸، ج ۵، ص ۶۷۷۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی دنیاوی کمالات، دولت، صحت، طاقت میں یوں ہی دینی کمالات، علم، عبادت، ریاضت میں مشہور ہونا عوام کے لیے خطرناک ہی ہے کہ اس سے عموماً دل میں غرور تکبر پیدا ہو جاتے ہیں اس سے گناہی اچھی چیز ہے۔

۲۔ یعنی ہاں بعض بندے ایسے بھی ہیں کہ وہ شہرت سے متکبر نہیں ہوتے وہ سمجھتے ہیں کہ نیک نامی و بدنامی اللہ کے قبضہ میں ہے اور لوگوں کا کوئی اعتبار نہیں، انہیں زندہ باد اور مردہ باد کے نعرے لگاتے دیر نہیں لگتی۔ حضور کے تحمل کا یہ حال ہے کہ

خوشتر را عبیدہ فرمودہ است

پیش او میقتی جبیں فرمودہ است

(مرآۃ السناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۷، ص ۱۶۵)

مسائل فقہیہ

مسئلہ ۱: روزہ دار سے پوچھا، کیا تمہارا روزہ ہے؟ اسے کہہ دینا چاہیے کہ ہاں ہے، کہ روزہ میں ریا کو دخل نہیں، یہ نہ کہے کہ دیکھتا ہوں کیا ہوتا ہے، یعنی ایسے الفاظ نہ کہے جن سے معلوم ہوتا ہو کہ یہ اپنے روزہ کو چھپاتا ہے کہ یہ بے وقوفی کی بات ہے کہ چھپاتا ہے مگر اس طرح جس سے اظہار ہو جاتا ہے یہ منافقین کا طریقہ ہے کہ لوگوں کے سامنے وہ بتانا چاہتا ہے کہ اپنے عمل کو چھپاتا ہے۔ (1)

مسئلہ ۲: عبادت کوئی بھی ہو اس میں اخلاص نہایت ضروری چیز ہے یعنی محض رضائے الہی کے لیے عمل کرنا ضرور ہے۔ دکھاوے کے طور پر عمل کرنا بالاجماع حرام ہے، بلکہ حدیث میں ریا کو شرک اصغر فرمایا اخلاص ہی وہ چیز ہے کہ اس پر ثواب مرتب ہوتا ہے، ہو سکتا ہے کہ عمل صحیح نہ ہو مگر جب اخلاص کے ساتھ کیا گیا ہو تو اس پر ثواب مرتب ہو مثلاً ما علمی میں کسی نے نجس پانی سے وضو کیا اور نماز پڑھ لی اگرچہ یہ نماز صحیح نہ ہوئی کہ صحت کی شرط طہارت تھی وہ نہیں پائی گی مگر اس نے صدق نیت اور اخلاص کے ساتھ پڑھی ہے تو ثواب کا ترتب ہے یعنی اس نماز پر ثواب پائے گا مگر جبکہ بعد میں معلوم ہو گیا کہ ناپاک پانی سے وضو کیا تھا تو وہ مطالبہ جو اس کے ذمہ ہے ساقط نہ ہوگا، وہ بدستور قائم رہے گا اس کو ادا کرنا ہوگا۔ اور کبھی شرائط صحت پائے جائیں گے مگر ثواب نہ ملے گا مثلاً نماز پڑھی تمام ارکان ادا کیے اور شرائط بھی پائے گئے، مگر ریا کے ساتھ پڑھی تو اگرچہ اس نماز کی صحت کا حکم دیا جائے مگر چونکہ اخلاص نہیں ہے ثواب نہیں۔

ریا کی دو صورتیں ہیں، کبھی تو اصل عبادت ہی ریا کے ساتھ کرتا ہے کہ مثلاً لوگوں کے سامنے نماز پڑھتا ہے اور کوئی دیکھنے والا نہ ہوتا تو پڑھتا ہی نہیں یہ ریا سے کمال ہے کہ ایسی عبادت کا بالکل ثواب نہیں۔ دوسری صورت یہ ہے کہ اصل عبادت میں ریا نہیں، کوئی ہوتا یا نہ ہوتا بہر حال نماز پڑھتا مگر وصف میں ریا ہے کہ کوئی دیکھنے والا نہ ہوتا جب بھی پڑھتا مگر اس خوبی کے ساتھ نہ پڑھتا۔ یہ دوسری قسم پہلی سے کم درجہ کی ہے اس میں اصل نماز کا ثواب ہے اور خوبی کے ساتھ ادا کرنے کا جو ثواب ہے وہ یہاں نہیں کہ یہ ریا سے ہے اخلاص سے نہیں۔ (2)

مسئلہ ۳: کسی عبادت کو اخلاص کے ساتھ شروع کیا مگر اثناء عمل میں ریا کی مداخلت ہو گئی تو یہ نہیں کہا جائے گا کہ ریا سے عبادت کی بلکہ یہ عبادت اخلاص سے ہوئی، ہاں اس کے بعد جو کچھ عبادت میں حسن و خوبی پیدا ہو گئی وہ ریا سے

(1) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی المیع، ج ۹، ص ۷۰۰۔

(2) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی المیع، ج ۹، ص ۷۰۱۔

ہوگی اور یہ ریا کی قسم دوم میں شمار ہوگی۔ (3)

مسئلہ ۴: روزہ کے متعلق بعض علما کا یہ قول ہے کہ اس میں ریا نہیں ہوتا اس کا غالباً یہ مطلب ہوگا کہ روزہ چند چیزوں سے باز رہنے کا نام ہے اس میں کوئی کام نہیں کرنا ہوتا جس کی نسبت کہا جائے کہ ریا سے کیا، ورنہ یہ ہو سکتا ہے کہ لوگوں کو جتانے کے لیے یہ کہتا پھرتا ہے کہ میں روزہ سے ہوں یا لوگوں کے سامنے مونہہ بنائے رہتا ہے تاکہ لوگ سمجھیں کہ اس کا بھی روزہ ہے اس طور پر روزہ میں بھی ریا کی مداخلت ہو سکتی ہے۔ (4)

مسئلہ ۵: ریا کی طرح اجرت لے کر قرآن مجید کی تلاوت بھی ہے کہ کسی میت کے لیے بغرض ایصالِ ثواب کچھ لے کر تلاوت کرتا ہے کہ یہاں اخلاص کہاں بلکہ تلاوت سے مقصود وہ پیسے ہیں کہ وہ نہیں ملتے تو پڑھتا بھی نہیں، اس پڑھنے میں کوئی ثواب نہیں پھر میت کے لیے ایصالِ ثواب کا نام لینا غلط ہے کہ جب ثواب ہی نہ ملے تو پہنچائے گا کیا۔ اس صورت میں نہ پڑھنے والے کو ثواب، نہ میت کو بلکہ اجرت دینے والا اور لینے والا دونوں گنہگار۔ (5) ہاں اگر اخلاص کے ساتھ کسی نے تلاوت کی تو اس پر ثواب بھی ہے اور اس کا ایصال بھی ہو سکتا ہے اور میت کو اس سے نفع بھی پہنچے گا۔

بعض مرتبہ پڑھنے والوں کو پیسے نہیں دیے جاتے مگر ختم کے بعد مٹھائی تقسیم ہوتی ہے۔ اگر اس مٹھائی کی خاطر تلاوت کی ہے تو یہ بھی ایک قسم کی اجرت ہی ہے کہ جب ایک چیز مشہور ہو جاتی ہے تو اسے بھی مشروط ہی کا حکم دیا جاتا ہے، اس کا بھی وہی حکم ہے جو مذکور ہو چکا، ہاں جو شخص یہ سمجھتا ہے کہ مٹھائی نہیں ملتی جب بھی میں پڑھتا وہ اس حکم سے مستثنیٰ ہے اور اس بات کا خود وہ اپنے ہی دل سے فیصلہ کر سکتا ہے کہ میرا پڑھنا مٹھائی کے لیے ہے یا اللہ عزوجل کے لیے۔

پنج آیت (6) پڑھنے والا اپنا دوا حصہ لیتا ہے یعنی ایک حصہ خاص پنج آیت پڑھنے کا ہوتا ہے اور نہ ملے تو جھگڑتا ہے گویا یہ زائد حصہ پنج آیت کا معاوضہ ہے اس سے بھی یہی نکلتا ہے کہ جس طرح اجیر کو اجرت نہ ملے تو جھگڑے (یعنی جھگڑا) کر لیتا ہے، اسی طرح یہ بھی لیتا ہے، لہذا بظاہر اخلاص نظر نہیں آتا، وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ۔

میلادِ خوان اور واعظ بھی دو حصے لیتے ہیں جب کہ وعظ میں مٹھائی تقسیم ہوتی ہے جس سے ظاہر یہی ہوتا ہے کہ ایک

(3) المرجع السابق

(4) المرجع السابق، ص ۷۰۲۔

(5) المرجع السابق۔

(6) یعنی سورہ فاتحہ اور چاروں قل، جو فاتحہ میں پڑھتے ہیں۔

حصہ اپنے پڑھنے اور تقریر کرنے کا لیتے ہیں، اگر وہی حصہ یہ بھی لیتے جو عام طور پر تقسیم ہوتا ہے تو بہت خوب ہوتا کہ ذرا سی مٹھائی کے بدلے اجر عظیم کے ضائع ہونے کا شبہ نہ ہوتا۔

بعض جگہ خصوصیت کے ساتھ ان کی دعوتیں بھی ہوتی ہیں کہ ان کو اسی حیثیت سے کھانا کھلایا جاتا ہے کہ یہ پڑھیں گے بیان کریں گے یہ مخصوص دعوت بھی اسی اجرت ہی کی حد میں آتی ہے، ہاں اگر اور لوگوں کی دعوت بھی ہو تو یہ نہیں کہا جائے گا کہ وعظ و تقریر کا معاوضہ ہے۔

اسی قسم کی بہت سی صورتیں ہیں جن کی تفصیل کی چنداں ضرورت نہیں، یہ مختصر بیان دین دار تبع شریعت کے لیے کافی و وافی ہے وہ خود اپنے دل میں انصاف کر سکتا ہے کہ کہاں عمل خیر کی اجرت ہے اور کہاں نہیں۔

مسئلہ ۶: جو شخص حج کو گیا اور ساتھ میں اموال تجارت بھی لے گیا، اگر تجارت کا خیال غالب ہے یعنی تجارت کرنا مقصود ہے اور وہاں پہنچ جاؤں گا حج بھی کر لوں گا یا دونوں پہلو برابر ہیں یعنی سفر ہی دونوں مقصد سے کیا تو ان دونوں صورتوں میں ثواب نہیں یعنی جانے کا ثواب نہیں اور اگر مقصود حج کرنا ہے اور یہ کہ موقع مل جائے گا تو مال بھی بیچ لوں گا تو حج کا ثواب ہے۔ اسی طرح اگر جمعہ پڑھنے گیا اور بازار میں دوسرے کام کرنے کا بھی خیال ہے، اگر اصلی مقصود جمعہ ہی کو جانا ہے تو اس جانے کا ثواب ہے اور اگر کام کا خیال غالب ہے یا دونوں برابر تو جانے کا ثواب نہیں۔ (7)

(7) رد المحتار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی المبیع، ج ۹، ص ۷۰۲۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

دوسرے یہ کہ وعظ حمد و نعت سے ان کا مقصود کھس اللہ ہے اور مسلمان بطور خود ان کی خدمت کریں تو یہ جائز ہے اور وہ مال حلال، تیسرے یہ کہ وعظ سے مقصود تو اللہ ہی ہو مگر ہے حاجت مند اور عادیہ معلوم ہے کہ لوگ خدمت کریں گے اس خدمت کی طمع بھی ساتھ لگی ہوئی ہے تو اگرچہ یہ صورت دوم کے مثل محمود نہیں مگر صورت اولیٰ کی طرح مذموم بھی نہیں جسے رد مختار میں فرمایا: الوعظ لم یجمع المال من ضلالتہ الیہود والنصارى ۲۔ مال جمع کرنے کے لئے وعظ کہنا یہود و نصاریٰ کی گمراہیوں سے ہے۔

(۲) رد مختار کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی المبیع مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۵۳)

یہ تیسری صورت بین بین ہے اور دوم سے بہ نسبت اولیٰ کے قریب تر ہے جس طرح حج کو جائے اور تجارت کا کچھ مال بھی ساتھ لے جائے جسے لیس علیک جناح ان تبتغوا فضلا من ربکم ۳۔ (تم پر کچھ گناہ نہیں کہ تم اپنے پروردگار کا فضل (یعنی رزق حلال) تلاش کرو۔ ت) فرمایا۔ (۳) القرآن الکریم ۲/ ۱۹۸)

لہذا فتاویٰ اس کے جواز پر ہے۔ افقی بہ الفقیہ ابو اللیث رحمہ اللہ تعالیٰ کما فی الخانیۃ والہندیۃ وغیرہما والذی ذکرہ توفیق بین القولین وبآلہ التوفیق واللہ تعالیٰ اعلم۔

حضرت فقیہ ابو اللیث سمرقندی رحمہ اللہ تعالیٰ نے اس پر فتویٰ دیا ہے جیسا کہ فتاویٰ قاضی خاں اور فتاویٰ عسکری وغیرہ میں مذکور ہے۔

مسئلہ ۷: فرائض میں ریا کو دخل نہیں۔ (8) اس کا یہ مطلب نہیں کہ فرائض میں ریا پایا ہی نہیں جاتا اس لیے کہ جس طرح نوافل کو ریا کے ساتھ ادا کر سکتا ہے، ہو سکتا ہے کہ فرائض کو بھی ریا کے طور پر ادا کرے، بلکہ مطلب یہ ہے کہ فرض اگر ریا کے طور پر ادا کیا جب بھی اس کے ذمہ سے ساقط ہو جائے گا، اگرچہ اخلاص نہ ہونے کی وجہ سے ثواب نہ ملے۔

اور یہ مطلب بھی ہو سکتا ہے کہ اگر کسی کو فرض ادا کرنے میں ریا کی مداخلت کا اندیشہ ہو تو اس مداخلت کو اعتبار کر کے فرض کو ترک نہ کرے (یعنی فرائض کو نہ چھوڑے) بلکہ فرض ادا کرے اور ریا کو دور کرنے کی اور اخلاص حاصل ہونے کی کوشش کرے۔



در جو کچھ میں نے بیان کیا ہے یہ دونوں کے درمیان موافقت پیدا کرتا ہے اور اللہ تعالیٰ ہی سے توفیق ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)
(فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۳۸۱، ۳۸۲ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

زیارت (۱) قبور کا بیان

حدیث: صحیح مسلم میں بریدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ

(۱) زیارت کے متعلق مسائل حصہ چہارم میں ذکر کیے گئے ہیں۔ وہاں سے معلوم کریں۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب اس جگہ چند مسائل یاد رکھو: (۱) تمام امت کا اس پر اتفاق ہے کہ زیارت قبور سنت ہے کیونکہ اس سے زائر کو اپنی موت یاد آتی ہے جس سے دل میں نرمی پیدا ہو کر آخرت کی طرف توجہ اور دنیا سے بے توجہی حاصل ہوتی ہے۔ (۲) زیارت قبور میں زائر کو بھی فائدے ہیں اور میت کو بھی۔ زائر کو ثواب آخرت کی یاد، دنیا سے بے رغبتی حاصل ہوتی ہے اور میت کو زائر سے افس اور اس کے ایصالِ ثواب سے نفع میسر ہوتا ہے۔ (۳) یہ کہ زائر قبر پر پہنچ کر پہلے صاحب قبر کو سلام کرے، پھر قبر کی طرف منہ اور کعبہ کو پشت کر کے کھڑا ہو اور کچھ سورتیں پڑھ کر اس کا ثواب صاحب قبر کو پہنچائے۔ (۴) یہ کہ ساری امت اس پر متفق ہے کہ انبیاء کرام خصوصاً حضرت سیدالانبیاء صلی اللہ علیہ وسلم کی قبر سے مدد لینا جائز ہے، غیر انبیاء کی قبروں کے متعلق بعض ظاہرین علماء نے اختلاف کیا، مگر محققین فقہاء اور تمام صوفیاء فرماتے ہیں کہ ادیباء و عہماء کی قبروں سے مدد لینا جائز ہے، قبور اولیاء سے تاقیامت دینی و دنیاوی فیوض جاری رہیں گے۔ امام شافعی فرماتے ہیں کہ حضرت موسیٰ کاظم کی قبر قبولیت دعا کے لیے مجرب تریاق ہے، امام غزالی فرماتے ہیں کہ جن بزرگوں سے زندگی میں مدد مانگی جاسکتی ہے ان سے بعد وفات بھی مدد مانگی جائے۔ ایک بزرگ فرماتے ہیں کہ میں نے چار شخصوں کو دیکھا جو زندگی سے زیادہ اپنی قبروں سے دنیا میں تصرف کر رہے ہیں، ان میں سے معروف کرخی اور حضرت مکی الدین عبدالقادر جیلانی بغدادی ہیں۔ سید احمد مرزوق فرماتے ہیں کہ زندے کی مدد سے مردے بزرگ کی مدد زیادہ قوی ہے، یہ تو قرآن و حدیث سے ثابت ہے کہ میت اپنے زائرین کو دیکھتی ہے اور ان کا کلام سنتی ہے، ابن قیم نے کتاب ارواح میں لکھا ہے کہ بعد وفات روح کی طاقت بڑھ جاتی ہے۔ چنانچہ اکیلی روح ایسے ایسے کام کر دیتی ہے جو لاکھوں آدمی نہ کر سکیں۔ چنانچہ ایک بار حضرت ابو بکر صدیق کی روح نے صد ہا کافروں کو ایک آن میں تہ تیغ کر دیا اور روح جنت میں رہتے ہوئے مشرق و مغرب کو دیکھ لیتی ہے۔ (۵) قبر کے سامنے بلا آڑ نماز پڑھنا حرام، ہاں بزرگوں کی قبروں کے پاس مسجد بنانا یا وہاں نمازیں پڑھنا برکت کے لیے دعائیں مانگنا جائز ہے۔ (۶) حق یہ ہے کہ قبر یعنی تعویذ قبر کو بوسہ نہ دے، نہ وہاں ناک یا پیشانی خاک پر رگڑے کہ یہ عیسائیوں کا طریقہ ہے۔ ہاں آستانہ ہونسی اور چیز ہے۔ (۷) جمعہ کے اول دن میں زیارت قبور بہت بہتر ہے۔ روایت میں ہے کہ اس دن میت کا علم و ادراک اور توجہ لی اللہ نیا زیادہ ہوتی ہے۔ (۸) وفات کے بعد سات روز تک برابر صدقہ و خیرات کیا جائے، اس پر تمام علماء متفق ہیں اور اس بارے میں صحیح احادیث بھی وارد ہیں۔ (۹) بعض روایتوں میں ہے کہ ہر جمعہ کی شب میت کی روح اپنے گھروں میں آتی ہے ورنہ دیکھتی ہے کہ میرے زندے میرے واسطے کچھ خیرات کرتے ہیں یا نہیں۔ (از لمعات و احسنہ اللمعات)

میں نے تم کو زیارت قبور سے منع کیا تھا اب تم قبروں کی زیارت کرو اور میں نے تم کو قربانی کا گوشت تین دن سے زیادہ کھانے کی ممانعت کی تھی اب جب تک تمہاری سمجھ میں آئے رکھ سکتے ہو۔ (2)

(2) صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب استئذان النبی صلی اللہ علیہ وسلم ربہ عزوجل... الخ، الحدیث: ۱۰۶۰۔ (۹۷۷) ج ۴۸۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کا نام بریدہ ابن حصیب اسلمی ہے، مشہور صحابی ہیں، بدر سے پہلے ایمان لائے مگر بدر میں شریک نہ ہو سکے، بیعت الرضوان میں شریک ہوئے، مدنی ہیں مگر بعد میں بصرہ قیام کیا، آخر میں خراسان چلے گئے تھے، پھر یزید ابن معاویہ کی طرف سے مرو میں غازی ہو کر گئے، وہاں ۶۲ھ میں وفات پائی۔ (اکمال و مرقاۃ)

۲۔ شروع اسلام میں زیارت قبور مسلمان مردوں عورتوں کو منع تھی کیونکہ لوگ نئے نئے اسلام لائے تھے، اندیشہ تھا کہ بت پرستی کے عادی ہونے کی وجہ سے اب قبر پرستی شروع کر دیں، جب ان میں اسلام راسخ ہو گیا تو یہ ممانعت منسوخ ہو گئی، جیسے جب شراب حرام ہوئی تو شراب کے برتن استعمال کرنا بھی ممنوع ہو گیا تاکہ لوگ برتن دیکھ کر پھر شراب یاد نہ کر لیں، جب لوگ ترک شراب کے عادی ہو گئے تو برتنوں کے استعمال کی ممانعت منسوخ ہو گئی۔

۳۔ یہ امر استحبالی ہے۔ حق یہ ہے کہ اس حکم میں عورتوں بھی شامل ہیں کہ انہیں بھی زیارت قبر کی اجازت دی گئی۔ (لغات، اشعہ و مرقات) لیکن اب عورتوں کو زیارت قبور سے روکا جائے یعنی گھر سے زیارت قبور کے لیے نہ نکلیں سوائے روضہ اطہر حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کی قبر انور کی زیارت کو نہ جائیں، ہاں اگر کہیں جاری ہوں اور راستہ میں قبر واقع ہو تو زیارت کر لیں جیسا کہ حضرت عائشہ صدیقہ نے حضرت عبدالرحمان کی قبر کی زیارت کی اور اگر کسی گھر میں ہی اتفاقاً قبر واقع ہو تو زیارت کر سکتی ہیں۔ حضرت عائشہ صدیقہ کے گھر میں حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کی قبر شریف تھی جہاں آپ مجاورہ منتظر تھیں۔ خیال رہے کہ زوروا مطلق امر ہے لہذا مسلمانوں کو زیارت قبر کے لیے سفر بھی جائز ہے۔ جب ہسپتالوں اور عیسویوں کے پاس سفر کر کے جاسکتے ہیں تو مزارات اولیاء پر بھی سفر کر کے جاسکتے ہیں کہ ان کی قبور روحانی ہسپتال ہیں، نیز اگر کہیں قبر پر لوگ ناجائز حرکتیں کرتے ہوں تو اس سے زیارت قبور نہ چھوڑے، ہو سکے تو ان حرکتوں کو بند کرے کیونکہ زوروا مطلق ہے، دیکھو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ہجرت سے پہلے بتوں کی وجہ سے کعبہ نہ چھوڑا بلکہ جب موقع ملا تو بت نکال دیئے۔ آج بھی نکاح میں لوگ ناجائز حرکتیں کرتے ہیں مگر اس کی وجہ سے نہ نکاح بند کیئے جاتے ہیں نہ وہاں کی شرکت۔ نکاح بھی سنت مطلقہ ہے اور زیارت قبور بھی سنت مطلقہ۔ نکاح و زیارت قبور دونوں کے لیے سفر بھی درست ہے اور ناجائز امور کی وجہ سے ان میں شرکت ممنوع نہیں۔ یہ دونوں مسائل شامی نے جلد اول باب زیارت قبور میں بہت تفصیل سے بیان فرمائے۔

۴۔ یعنی شروع اسلام میں مسلمانوں پر غربت اور افلاس کا غلبہ تھا اس لیے قربانی کرنے والوں کو حکم تھا کہ جس قدر گوشت تم تین دن کے اندر کھا سکو وہ کھا دو باقی غرباء میں خیرات کرو، پھر جب مسلمانوں کو رب نے مال عام دیا اور عام مسلمان قربانی کرنے لگے تو یہ حکم منسوخ ہو گیا

اب چاہے سال بھر تک قربانی کا گوشت کھاؤ۔

حدیث ۲: ابن ماجہ نے عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ میں نے تم کو زیارت قبور سے منع کیا تھا اب تم قبروں کی زیارت کرو، کہ وہ دنیا میں بے رغبتی کا سبب ہے اور آخرت یاد دلاتی ہے۔ (3)

حدیث ۳: صحیح مسلم میں بریدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لوگوں کو تعظیم دیتے تھے کہ جب قبروں کے پاس جائیں یہ کہیں۔

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُسْلِمِينَ وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ بِكُمْ لَا حِقُونَن نَسْأَلُ اللَّهَ لَنَا وَلَكُمْ الْعَافِيَةَ. (4)

۵۔ یعنی جب شراب حرام ہوئی تو اندیشہ تھا کہ مسلمان شراب کے برتن دیکھ کر پھر شراب نوشی شروع کر دیں گے اس لیے اس کے برتنوں میں پانی، دودھ یا شراب زلال جنے نبیذ کہتے ہیں پنا حرام کر دیا گیا، پھر جب مسلمان شراب بھول گئے تب اس کے برتنوں کی اجازت دے دی گئی جیسا کہ ابھی عرض کیا گیا۔ اس حدیث میں تین چیزوں کی حرمت منسوخ کی گئی۔ فتویٰ اس پر ہے کہ پتلی نشہ دالی چیز مطلقاً حرام ہے نشہ دے یا نہ دے ہذا جو، جوار اور کھجور وغیرہ کی شرابیں ایک قطرہ پنا بھی حرام ہے، امام اعظم کا یہ ہی آخری قول ہے۔ جی ہوئی نشہ آور چیزیں اگر نشہ دیں حرام یا انہیں طرب کے لیے کھانا حرام ہے ورنہ حلال۔ چنانچہ افیون، بھنگ اور چرس وغیرہ دوا استعمال کر سکتے ہیں بشرطیکہ نشہ نہ دیں۔ اس کی مکمل بحث ان شاء اللہ کتاب الاثرہ میں ہوگی۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲، ص ۹۸۴)

(3) سنن ابن ماجہ، کتاب ماجاء فی الجنائز، باب ماجاء فی زیارة القبور، الحدیث: ۱۵۷۱، ج ۲، ص ۲۵۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب یعنی ممانعت زیارت قبور منسوخ ہے اب اس کی اجازت ہے۔ حق یہ ہے کہ اس اجازت میں مرد و عورت سب ہی داخل ہیں جیسا کہ اوپر عرض کیا گیا۔ اب عورتوں کو اس سے روکنا دوسری وجہ سے ہے۔ زیارت قبور سے دل بیدار ہوتا ہے، نفس مرتا ہے اور امراء و سلاطین کی ملقاتوں سے دل غافل ہوتا ہے، نفس موٹا پڑتا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲، ص ۹۹۱)

(4) صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب ما یقال عند دخول القبور... إلخ، الحدیث: ۱۰۳۔ (۹۷۵)، ص ۴۸۵۔

وسنن ابن ماجہ، کتاب ماجاء فی الجنائز، باب ماجاء فیما یقال إذا دخل القابر، الحدیث: ۱۵۴۷، ج ۲، ص ۲۴۰۔

ترجمہ: اے قبرستان والے مومنو اور مسلمانو! تم پر سلامتی ہو اور انشاء اللہ عزوجل ہم تم سے آلیں گے، ہم اللہ عزوجل سے اپنے لئے اور تمہارے لیے عافیت کا سوال کرتے ہیں۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

اس حدیث سے معلوم ہوا کہ قبرستان میں جا کر پہلے سلام کرنا پھر یہ عرض کرنا سنت ہے، اس کے بعد اہل قبور کو ایصال ثواب کیا جائے۔ اس سے معلوم ہوا کہ مردے باہر والوں کو دیکھتے پہچانتے ہیں اور ان کا کلام سنتے ہیں ورنہ انہیں سلام جائز نہ ہوتا کیونکہ جو سننا نہ ہو

حدیث ۴: ترمذی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مدینہ میں قبور کے پاس گزرے تو او دھڑ کو مونہ کر لیا اور یہ فرمایا:

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْقُبُورِ يَغْفِرُ اللَّهُ لَنَا وَلَكُمْ أَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْآخِرِ. (5)

حدیث ۵: صحیح مسلم میں حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی، کہتی ہیں کہ جب میری باری کی رات ہوتی حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) آخر شب میں بقیع کو جاتے اور یہ فرماتے:

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ وَأَتَاكُمْ مَا تَوْعَدُونَ غَدًا مُؤَجَّلُونَ وَإِنَّا إِنْشَاءَ اللَّهُ بِكُمْ لَا حِقُّونَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَأَهْلِ بَقِيعِ الْغَرْقَدِ. (6)

یا سلام کا جواب نہ دے سکتا ہوا سے سلام کرنا جائز نہیں، دیکھو سونے والے اور نماز پڑھنے والے کو سلام نہیں کر سکتے۔

۲۔ یہ ان شاء اللہ یا تو برکت کے لیے یا ایمان پر موت کے لیے یعنی اگر رب نے چاہا تو ہمارا خاتمہ بھی ایمان پر ہوگا اور ہم تم سے ہیں گے، کفار کے پاس نہ جائیں گے ورنہ موت تو یقیناً آتی ہے وہاں ان شاء اللہ کہنے کی ضرورت نہیں۔

۳۔ عوام مسلمین کی قبروں پر بعد سلام یہ الفاظ کہے جائیں، اولیاء اللہ کے مزارات پر یوں عرض کرے "سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا كَسَبْتُمْ فَبِغَمِّ عُقْبَى الدَّارِ" اور شہداء کے مزارات پر یوں عرض کرے "سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَبِغَمِّ عُقْبَى الدَّارِ"۔ (عالمگیری) یہاں دیار سے مراد قبور ہیں کیونکہ قبریں میٹوں کے گھر ہیں اور قبرستان ان کا شہر۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲، ص ۹۸۶)

(5) سنن اترمدی، کتاب الجنائز، باب ما یقول الرجل إذا دخل القبر، الحدیث: ۱۰۵۵، ج ۲، ص ۳۲۹۔

ترجمہ: اے قبرستان! دو! اتم پر سلامتی ہو، اللہ عزوجل ہماری اور تمہاری مغفرت فرمائے، تم ہم سے پہلے چلے گئے اور ہم تمہارے پیچھے آنے والے ہیں۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی قبور کی طرف منہ کر کے اور قبلہ کو پشت کر کے کھڑے ہوئے، زیارت قبر کے وقت اسی طرح کھڑا ہونا چاہیے۔ (مرقاۃ) قبر کو چومنا ممنوع ہے، ابنتہ عالمگیری و مرقات میں اس جگہ ہے کہ والدین کی قبریں چومنا جائز ہے۔

۲۔ یعنی ہم سے آگے تم چلے گئے تمہارے پیچھے ہم بھی آ رہے ہیں۔ حقد میں کو سلف کہتے ہیں متاخرین کو خلف۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲، ص ۹۸۷)

(6) صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب ما یتقال عند دخول القبر... الخ، الحدیث: ۱۰۲۔ (۹۷۳)، ص ۴۸۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم روزانہ آخری شب میں بقیع یعنی قبرستان مدینہ کی زیارت فرماتے تھے، اپنی باری کا ذکر اس لیے فرماتی ہیں کہ آپ کے علم میں یہ ہی آیا۔ عربی میں بقیع درخت والے میدان کو کہتے ہیں۔ غرقہ ایک خاص درخت کا نام ہے۔

حدیث ۶: بیہقی نے شعب الایمان میں محمد بن نعمان سے مرسل روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جو اپنے والدین کی دونوں یا ایک کی ہر جمعہ میں زیارت کریگا، اس کی مغفرت ہو جائے گی اور نیکو کار لکھا جائے گا۔ (7)

حدیث ۷: خطیب نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کوئی شخص ایسے کی قبر پر گزرے جسے دنیا میں پہچانتا تھا اور اس پر سلام کرے تو وہ مردہ اسے پہچانتا ہے اور

نام ہے چونکہ اس میدان میں پہلے غرقہ کے درخت تھے اسی لئے اس جگہ کا نام بقیع الغرقہ ہو گیا۔

۲۔ یعنی تمہارا وعدہ موت پورا ہو چکا اور تم کو موت آچکی، اعمال کا ثواب کل قیامت میں ملے گا، ہماری ابھی موت بھی باقی ہے اور اجر و ثواب بھی۔ اس صورت میں یہ دو جملے ہیں یا معنی یہ ہیں کہ جس اجر و ثواب کا تم سے وعدہ تھا وہ عنقریب یعنی کل قیامت میں تمہیں ملنے والا ہے، اس صورت میں یہ ایک جملہ ہے انا کلم ماضی بمعنی مستقبل ہے، پہلے معنی زیادہ موزوں ہیں۔

۳۔ یعنی وفات پا کر تم تک پہنچنے والے ہیں۔ یہ مطلب نہیں کہ ہم بقیع میں دفن ہونے والے ہیں کیونکہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی قبر انور بقیع میں نہیں اپنے گھر شریف میں واقع ہوئی۔

۴۔ اس دعا کی وجہ سے بعض مؤمن بقیع میں دفن ہونے کی تمنا کرتے ہیں تاکہ اس خصوصی دعا میں وہ بھی شامل ہو جائیں۔ دعا یہ ہے کہ ابھی تمام بقیع والے مدونوں کی مغفرت فرما۔ رب تعالیٰ اس پاک سرزمین میں دفن ہونا نصیب کرے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲، ص ۹۸۸)

(7) شعب الایمان اباب فی بر الوالدین، فصل فی حفظ حق الوالدین بعد موتہما، الحدیث: ۹۰۱، ج ۶، ص ۲۰۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی محمد بن نعمان اگر چہ تابعی ہیں جنہوں نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی زیارت نہ کی مگر انہوں نے صحابی کے ذریعہ یہ حدیث حضور صلی اللہ علیہ وسلم تک مرفوع کی لہذا حدیث مرسل ہے۔

۲۔ یہاں جمعہ سے مراد یا تو جمعہ کا دن ہے یا پورا ہفتہ۔ بہتر ہے کہ ہر جمعہ کے دن والدین کی قبور کی زیارت کیا کرے، اگر وہ حاضری میسر نہ ہو جیسے کہ یہ فقیر اب پاکستان میں ہے اور میرے والدین کی قبریں ہندوستان میں تو ہر جمعہ کو ان کے لیے ایصال ثواب کیا کرے۔

۳۔ جتنی ماں باپ کی قبروں کی زیارت کرنے والا گویا اب بھی انکی خدمت کر رہا ہے۔ جو ثواب ان کی زندگی میں ان کی خدمت کرنے کا ہے وہ ہی ثواب ان کی وفات کے بعد ان کی قبر کی زیارت کا ہے۔ علماء فرماتے ہیں کہ والدین کی وفات کے بعد تین کام کرو: ایک یہ کہ ہر جمعہ کو ان کی قبروں کی زیارت کرو، ان کے لیے دعاء ختم وغیرہ پڑھو۔ دوسرے یہ کہ ان کے قرض ادا کرو، ان کے وعدے پورے کرو۔ تیسرے یہ کہ والد کے دوستوں اور والدہ کی سہیلیوں کو اپنا باپ و ماں سمجھو اور ان کی خدمت کرو، ان کا ماخذ یہ حدیث بھی ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲، ص ۹۹۰)

اس کے سلام کا جواب دیتا ہے۔ (8)

حدیث ۸: امام احمد نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی، کہتی ہیں میں اپنے گھر میں جس میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تشریف فرما ہیں (یعنی روضہ اطہر میں) داخل ہوتی تو اپنے کپڑے اتار دیتی (یعنی زائد کپڑے جو غیروں کے سامنے ہونے میں ستر پوشی کے لیے ضروری ہیں) اور اپنے دل میں یہ کہتی کہ یہاں تو صرف میرے شوہر اور میرے والد ہیں پھر جب حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ وہاں مدفون ہوئے تو حضرت عمر (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) کی حیا کی وجہ سے خدا کی قسم! میں وہاں نہیں گئی مگر اچھی طرح اپنے اوپر کپڑوں کو لپیٹ کر۔ (9)



(8) تاریخ بغداد، رقم ۳۱۷۵، ج ۶، ص ۱۳۵۔

(9) المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة رضي الله عنها، الحديث: ۱۸۷۵، ج ۱۰، ص ۱۲۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جب تک میرے حجرے میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اور حضرت ابو بکر صدیق مدفون رہے تب تک تو میں سرکھوے پاؤں کے ہر طرح حجرے شریف میں چلی جاتی تھی کیونکہ نہ خاوند سے حجاب ہوتا ہے نہ والد سے۔

۲۔ جب سے حضرت عمر میرے حجرے میں دفن ہو گئے تب سے میں بغیر چادر اوڑھے اور پردہ کا پورا اہتمام کیے بغیر حجرے شریف میں نہ گئی، حضرت عمر سے شرم و حیا کرتی ہوں۔ اس حدیث سے بہت مسائل معلوم ہو سکتے ہیں: ایک یہ کہ میت کا بعد وفات بھی احترام چاہیے۔ فقہاء فرماتے ہیں کہ میت کا ایسا ہی احترام کرے جیسا کہ اس کی زندگی میں کرتا تھا۔ دوسرے یہ کہ بزرگوں کی قبور کا بھی احترام اور ان سے بھی شرم و حیا چاہیے۔ تیسرے یہ کہ میت قبر کے اندر سے باہر والوں کو دیکھتا اور انہیں جانتا پہچانتا ہے، دیکھو حضرت عمر سے عائشہ صدیقہ ان کی وفات کے بعد شرم و حیا فرما رہی ہیں، اگر آپ باہر کی کوئی چیز نہ دیکھتے تو اس حیا فرمانے کے کیا معنی۔ چوتھے یہ کہ قبر کی مٹی تختے وغیرہ تو میت کی آنکھوں کے لیے حجاب نہیں بن سکتے مگر زائر کے جسم کا لباس ان کے لیے آڑ ہے، لہذا میت کو زائر نہ نگاہیں دکھائی دیتا ورنہ حضرت عائشہ صدیقہ کا چادر اوڑھ کر وہاں جانے کے کیا معنی تھے، یہ قانون قدرت ہے۔ لہذا حدیث پر یہ اعتراض نہیں کہ جب حضرت عمر قبر کے اندر سے زائر کو دیکھ رہے ہیں تو زائر کے کپڑوں کے اندر کا جسم بھی انہیں نظر آ رہا ہے۔ پانچویں یہ کہ بزرگوں کی قبروں پر مجاوروں کا عمر قبر کے اندر سے زائر کو دیکھ رہے ہیں تو زائر کے کپڑوں کے اندر کا جسم بھی انہیں نظر آ رہا ہے۔ پانچویں یہ کہ بزرگوں کی قبروں پر مجاوروں کا رہنا درست ہے، حضرت عائشہ صدیقہ روضہ اطہر کی مجاورہ تھیں۔ چھٹے یہ کہ عورت بھی مجاورہ ہو سکتی ہے مگر باپردہ اور حیا کے ساتھ۔ ساتویں یہ کہ مجاورہ عورت کو قبر کی زیارت کی اجازت ہے کیونکہ وہ وہاں ہی رہتی ہے۔ (مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۲، ص ۹۹۳)

مسائل فقہیہ

مسئلہ ۱: زیارت قبور جائز و مننون ہے۔ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم شہدائے احد کی زیارت کو تشریف لے جاتے اور ان کے لیے دعا کرتے۔ (۱) اور یہ فرمایا بھی ہے کہ تم لوگ قبروں کی زیارت کرو۔ (۲)

مسئلہ ۲: جس کی قبر کی زیارت کو گیا ہے اس کی زندگی میں اگر اس کے پاس ملاقات کو آتا تو جتنا نزدیک یا دور ہوتا اب بھی قبر کی زیارت میں اسی کا لحاظ رکھے۔ (۳)

مسئلہ ۳: قبر کی زیارت کو جانا چاہے تو مستحب یہ ہے کہ پہلے اپنے مکان میں دو رکعت نماز نفل پڑھے، ہر رکعت میں بعد فاتحہ آیۃ الکرسی ایک بار اور قل ہو اللہ تین بار پڑھے اور اس نماز کا ثواب میت کو پہنچائے، اللہ تعالیٰ میت کی قبر میں نور پیدا کریگا اور اس شخص کو بہت بڑا ثواب عطا فرمائے گا، اب قبرستان کو جائے راستہ میں لایعنی باتوں میں مشغول نہ ہو جب قبرستان پہنچے جوتیاں اوتار دے اور قبر کے سامنے اس طرح کھڑا ہو کہ قبلہ کو پیٹھ ہو اور میت کے چہرہ کی طرف منہ اور اس کے بعد یہ کہے۔

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْقُبُورِ يَغْفِرُ اللَّهُ لَنَا وَلَكُمْ أَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَنَحْنُ بِأَلَاكُمُ
وآیۃ الکرسی و سورہ اِذَا زُلْزِلَتْ وَالْهَکْمُ التَّکَاثُرُ پڑھے، سورہ ملک اور دوسری سورتیں بھی پڑھ سکتا ہے۔ (۴)

مسئلہ ۴: چار دن زیارت کے لیے بہتر ہیں، دو شنبہ (پیر)، پنج شنبہ (جمعرات)، جمعہ، ہفتہ، جمعہ کے دن بعد نماز جمعہ افضل ہے اور ہفتہ کے دن طلوع آفتاب تک اور پنج شنبہ، کو دن کے اول وقت میں اور بعض علما نے فرمایا کہ پچھلے وقت میں افضل ہے، متبرک راتوں میں زیارت قبور افضل ہے، مثلاً شب براءت، شب قدر، اسی طرح عیدین کے دن اور عشرہ ذی الحجہ میں بھی بہتر ہے۔ (۵)

مسئلہ ۵: قبرستان کے درخت کا حکم یہ ہے کہ اگر وہ درخت قبرستان سے پہلے کا ہے یعنی زمین کو جب قبرستان بنایا

(۱) انظر: اندر المنور کسبوطی، سورۃ الرعد، تحت الآیۃ: ۲۴، ج ۴، ص ۶۳۰-۶۳۱.

(۲) صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب استئذان النبی صلی اللہ علیہ وسلم ربہ عزوجل... الخ، الحدیث: ۱۰۶- (۹۷۷)، ص ۸۶.

(۳) فتاویٰ احمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السادس عشر فی زیارۃ القبور، ج ۵، ص ۳۵۰.

(۴) الرجوع السابق.

(۵) فتاویٰ احمدیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السادس عشر فی زیارۃ القبور، ج ۵، ص ۳۵۰.

گیا اس وقت وہ درخت وہاں موجود تھا، تو جس کی زمین ہے اسی کا درخت ہے وہ جو چاہے کرے اور اگر وہ زمین بخر تھی کسی کی بلکہ نہ تھی تو درخت اور زمین کا وہ حصہ جس میں درخت ہے اسی پہلی حالت پر ہے کہ کسی کی بلکہ نہیں اور اگر قبرستان ہونے کے بعد کا درخت ہے اور معلوم ہے کہ فلاں شخص نے لگایا ہے تو جس نے لگایا ہے اس کا ہے مگر اسے یہ چاہیے کہ صدقہ کر دے اور معلوم نہ ہو کہ کس نے لگایا ہے بلکہ وہ خود ہی وہاں جم گیا ہے تو قاضی کو اس کے متعلق اختیار ہے اگر قاضی کی یہ رائے ہو کہ درخت کٹوا کر قبرستان پر خرچ کر دے تو کر سکتا ہے۔ (6)

مسئلہ ۶: بزرگان دین اولیاء صالحین کے مزارات طیبہ پر غلاف ڈالنا جائز ہے، جبکہ یہ مقصود ہو کہ صاحب مزار کی وقعت نظر عوام میں پیدا ہو، ان کا ادب کریں ان کے برکات حاصل کریں۔ (7)



(6) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الوقف، الباب الثانی عشر فی الرباطات والقابر، ج ۲، ص ۷۳-۷۴۔

(7) رد المحتار، کتاب العطر والاباحہ، فصل فی اللبس، ج ۹، ص ۵۹۹۔

مزار پر چادر چڑھانا

بزرگان دین اور اولیاء صالحین رحمہم اللہ المسکین کے مزارات طیبات پر غلاف (یعنی چادر) ڈالنا جائز ہے، جبکہ یہ مقصود ہو کہ صاحب مزار کی وقعت (یعنی عزت و عظمت) عوام کی نظر میں پیدا ہو، ان کا ادب کریں، ان کے برکات حاصل کریں۔ (رد المحتار ج ۹ ص ۵۹۹)

توجہ رہے رد المحتار کے مصنف کا پورا نام محمد امین بن عمر بن عبد العزیز عابد بن الدمشقی الحنفی متوفی 1252ھ ہے اور آپ اعلیٰ حضرت سے پہلے کے بزرگ ہیں۔

ایصالِ ثواب

مسئلہ ۱: ایصالِ ثواب یعنی قرآن مجید یا درود شریف یا کلمہ طیبہ یا کسی نیک عمل کا ثواب دوسرے کو پہنچانا جائز ہے۔ عبادتِ مالیہ یا بدنہیہ فرض و نقل سب کا ثواب دوسروں کو پہنچایا جاسکتا ہے، زندوں کے ایصالِ ثواب سے مردوں کو فائدہ پہنچتا ہے۔ کتب فقہ و عقائد میں اس کی تصریح مذکور ہے، ہدایہ (۱) اور شرح عقائد نسفی (۲) میں اس کا بیان موجود

(۱) انظر: الہدایہ، کتاب الحج، باب الحج عن الغير، ج ۱، ص ۱۷۸۔

(۲) انظر: شرح العقائد النسفیة، بحث دعاء الاحیاء للاموات...، ج ۱، ص ۱۷۲۔

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

اس باب میں قول فیصل اور اجماع کلام یہ ہے کہ مسلمان مردوں کو ثواب پہنچانا اور اجر ہدیہ کرنا ایک پسندیدہ اور شریعت میں مندوب امر ہے جس پر تمام اہل سنت و جماعت کا اجماع ہے۔ اس عمل کو درست قرار دینے اور اس کی رغبت دلانے سے متعلق حضور سید الابرار علیہ الصلوٰۃ والسلام سے بہت سی حدیثیں وارد ہیں۔ جن میں سے کچھ احادیث امام علامہ محقق علی الاطلاق نے فتح بقدر میں امام عدہ فخر الدین زلیحی نے نصب الرایہ میں امام علامہ جلال الدین سیوطی نے شرح الصدور میں فاضل علامہ علی قاری نے مسلک معقسط میں اور دوسرے حضرات نے دوسری کتابوں میں بیان فرمائی ہیں۔ اس عمل کا انکار وہی کرے گا جو بے وقوف جاہل یا گمراہ صاحب باطل ہو۔ اس زمانہ کے بد مذہبوں میں مغزلیت کا چھپا ہوا خون جوش میں آگیا ہے مغزلیہ کی نیابت اور خصوصی وکالت کے پردے میں ایصالِ ثواب کے منکر ہیں اور خود اہلسنت کے اجماع قطعی کے مخالف ہیں۔ پھر احادیث کثیرہ کی شہادت اور جمہور ائمہ کے جزم اور تصحیح سے ثابت ہے کہ ثواب پہنچانا قربتِ مالی سے خاص نہیں بلکہ مالی و بدنی دونوں کو عام ہے۔ یہی ائمہ حنفیہ کا مذہب ہے اور اسی پر بہت سے محققین شافعیہ بھی ہیں اور اسی پر جمہور ہیں۔

اور یہی صحیح، رائج اور نصرت یافتہ مسلک ہے۔ پھر بدنی و مالی دونوں کو جمع کرنا اس طرح کہ قرآن بھی پڑھیں، صدقہ بھی کریں، اور دونوں کا ثواب مسلمانوں کو پہنچائیں، یہ حسن کو حسن اور مندوب کو مندوب کے ساتھ یکجا کرنا ہی تو ہے، ہرگز ان دونوں میں کوئی منافات نہیں، جیسے نماز کے اندر مصحف دیکھ کر تلاوت کرنے میں ہے، نہ ہی شریعت میں اس جمع سے منع وارد ہے جیسے رکوع و سجود میں قراءت قرآن سے متعلق ہے، پھر اس کو ممنوع ٹھہرانا عقل کے دائرے سے قدم باہر لانا ہے۔

امام حجت الاسلام محمد غزالی قدس سرہ العالی وراحۃ الطوم فرماید اذا لم یحرم الاحاد فمن ابن یحرم المجموع ۱۔؟ وحمد انست ان افراد المباحات اذا اجتمعت کان ذلك المجموع مباحا ۲۔ (۱) احیاء العلوم کتاب آداب السماع والوجد مکتبہ و مطبعہ الشہد الحسنی قاہرہ ۲ / ۲۷۳ (۲) احیاء العلوم کتاب آداب السماع والوجد مکتبہ و مطبعہ الشہد الحسنی قاہرہ ۲ / ۲۷۳

ہے اس کو بدعت کہنا ہٹ دھرمی ہے۔ حدیث سے بھی اس کا جائز ہونا ثابت ہے۔

حضرت سعد رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی والدہ کا جب انتقال ہوا، انھوں نے حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) سعد کی ماں کا انتقال ہو گیا، کون سا صدقہ افضل ہے؟ ارشاد فرمایا: پانی۔ انھوں نے کو آں کھودا اور یہ کہا کہ یہ سعد کی ماں کے لیے ہے۔ (3) معلوم ہوا کہ زندوں کے اعمال سے مردوں کو ثواب ملتا اور فائدہ پہنچتا ہے۔

اب رہیں تخصیصات مثلاً تیسرے دن یا چالیسویں دن یہ تخصیصات نہ شرعی تخصیصات ہیں نہ ان کو شرعی سمجھا جاتا ہے، یہ کوئی بھی نہیں جانتا کہ اسی دن میں ثواب پہنچے گا اگر کسی دوسرے دن کیا جائے گا تو نہیں پہنچے گا۔ یہ محض رواجی اور عرفی بات ہے جو اپنی سہولت کے لیے لوگوں نے کر رکھی ہے بلکہ انتقال کے بعد ہی سے قرآن مجید کی تلاوت اور خیر خیرات کا سلسلہ جاری ہوتا ہے اکثر لوگوں کے یہاں اسی دن سے بہت دنوں تک یہ سلسلہ جاری رہتا ہے اس کے ہوتے ہوئے کیونکر کہا جاسکتا ہے کہ مخصوص دن کے سوا دوسرے دنوں میں لوگ ناجائز جانتے ہیں، یہ محض افتراء ہے جو مسلمانوں کے سر باندھا جاتا ہے اور زندوں مردوں کو ثواب سے محروم کرنے کی بیکار کوشش ہے، پس جبکہ ہم اصل کلی بیان کر چکے تو جزئیات کے احکام خود اسی کلیہ سے معلوم ہو گئے۔

امام حجتہ الاسلام محمد غزالی قدس سرہ احواء العلوم میں فرماتے ہیں: جب الگ الگ افراد حرام نہیں تو مجموعہ کہاں سے حرام ہو جائے گا! — اور اسی میں ہے: جب مباحات کے افراد مجتمع ہوں تو مجموعہ بھی مباح ہی ہوگا (فتاویٰ رضویہ، جلد ۹، ص ۵۶۹ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(3) سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب فی فضل سقی الماء، الحدیث: ۱۶۸۱، ج ۲، ص ۱۸۰۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ عبدالرحمن تابعی ہیں، ثقہ ہیں، قاضی مدینہ منورہ ہیں، ان کی احادیث مضطرب ہوتی ہیں، ان کے والد کا نام عمرو ابن حصین ہے یا ثعلبہ ابن عمرو ابن حصین وہ صحابی ہیں۔ (اشعہ و مرقات) ان کی والدہ کا نام معلوم نہ ہو سکا مگر وہ صحابیہ نہیں تابعیہ ہیں۔

۲۔ یعنی شرم کے وقت لونڈی یا غلام آزاد کرنا چاہا مگر کہا کہ صبح آزاد کروں گی رات میں اچانک فوت ہو گئیں، اسی لیے عہاء فرماتے ہیں کہ نیکی میں جلدی کرے دیر نہ لگائے، رب تعالیٰ فرماتا ہے: "وَسَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ"۔

۳۔ یعنی میں نے حضرت قاسم ابن محمد ابن ابوبکر صدیق سے مسئلہ پوچھا کہ اگر اب ان کی طرف سے میں غلام آزاد کروں تو کیا انہیں ثواب ملے گا۔

۴۔ حضرت قاسم نے مسئلہ نہ بتایا بلکہ مسئلہ کی دلیل بتادی۔ اس حدیث سے معلوم ہوا کہ جیسے صدقہ و خیرات و نفل نماز کا ثواب کسی کو بخشا جائے یوں ہی غلام و لونڈی آزاد کر کے اس کا ثواب بخش دینا بھی جائز ہے اور یہ ثواب میت کو ضرور پہنچتا ہے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۳۱۸)

سوم یعنی تیجہ جو مرنے سے تیسرے دن کیا جاتا ہے کہ قرآن مجید پڑھوا کر یا کلمہ طیبہ پڑھوا کر ایصالِ ثواب کرتے ہیں اور بچوں اور اہل حاجت کو چنے، بتائے یا مٹھائیاں تقسیم کرتے ہیں اور کھانا پکوا کر فقرا و مساکین کو کھلاتے ہیں یا ان کے گھروں پر بھیجتے ہیں جائز و بہتر ہے، پھر ہر پنج شنبہ کو حسبِ حیثیت کھانا پکا کر غربا کو دیتے یا کھلاتے ہیں، پھر چالیسویں دن کھانا کھلاتے ہیں، پھر چھ مہینے پر ایصال کرتے ہیں، اس کے بعد برسی ہوتی ہے۔ یہ سب اسی ایصالِ ثواب کی فروع ہیں اسی میں داخل ہیں مگر یہ ضرور ہے کہ یہ سب کام اچھی نیت سے کیے جائیں نمازی نہ ہوں، نمود مقصود نہ ہو، ورنہ نہ ثواب ہے نہ ایصالِ ثواب۔

بعض لوگ اس موقع پر عزیز و قریب اور رشتہ داروں کی دعوت کرتے ہیں، یہ موقع دعوت کا نہیں بلکہ محتاجوں فقیروں کو کھلانے کا ہے جس سے میت کو ثواب پہنچے۔ اسی طرح شبِ براءت میں حلوا پکاتا ہے اور اس پر فاتحہ دلائی جاتی ہے، حلوا پکانا بھی جائز ہے اور اس پر فاتحہ بھی اسی ایصالِ ثواب میں داخل۔

ماہِ رجب میں بعض جگہ سورہ ملک چالیس مرتبہ پڑھ کر روٹیوں یا چھوہاروں پر دم کرتے ہیں اور ان کو تقسیم کرتے ہیں اور ثواب مردوں کو پہنچاتے ہیں یہ بھی جائز ہے۔ اسی ماہِ رجب میں حضرت جلال بخاری علیہ الرحمہ کے کونڈے ہوتے ہیں کہ چاول یا کھیر پکوا کر کونڈوں میں بھرتے ہیں اور فاتحہ دلا کر لوگوں کو کھلاتے ہیں یہ بھی جائز ہے، ہاں ایک بات مذموم ہے وہ یہ کہ جہاں کونڈے بھرے جاتے ہیں وہیں کھلاتے ہیں وہاں سے ہٹے نہیں دیتے، یہ ایک لغو حرکت ہے مگر یہ جاہلوں کا طریقِ عمل ہے، پڑھے لکھے لوگوں میں یہ پابندی نہیں۔

اسی طرح ماہِ رجب میں بعض جگہ حضرت سیدنا امام جعفر صادق رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو ایصالِ ثواب کے لیے پوریوں کے کونڈے بھرے جاتے ہیں یہ بھی جائز مگر اس میں بھی اسی جگہ کھانے کی بعضوں نے پابندی کر رکھی ہے یہ بے جا پابندی ہے۔ اس کونڈے کے متعلق ایک کتاب بھی ہے جس کا نام داستانِ عجیب ہے، اس موقع پر بعض لوگ اس کو پڑھواتے ہیں اس میں جو کچھ لکھا ہے اس کا کوئی ثبوت نہیں وہ نہ پڑھی جائے فاتحہ دلا کر ایصالِ ثواب کریں۔

ماہِ محرم میں دس ۱۰ دنوں تک خصوصاً دسویں کو حضرت سیدنا امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ و دیگر شہدائے کربلا کو ایصالِ ثواب کرتے ہیں کوئی شربت پر فاتحہ دلاتا ہے، کوئی شیر برنج (چاولوں کی کھیر) پر، کوئی مٹھائی پر، کوئی روٹی گوشت پر، جس پر چاہو فاتحہ دلاؤ جائز ہے، ان کو جس طرح ایصالِ ثواب کرو مندوب ہے۔ بہت سے پانی اور شربت کی سبیل لگا دیتے ہیں، جاڑوں (یعنی سردیوں) میں چائے پلاتے ہیں، کوئی کھجڑا پکواتا ہے جو کار خیر کرو اور ثواب پہنچاؤ ہو سکتا ہے، ان سب کو ناجائز نہیں کہا جاسکتا۔ بعض جاہلوں میں مشہور ہے کہ محرم میں سوائے شہدائے کربلا کے دوسروں کی فاتحہ نہ دلائی جائے ان کا یہ خیال غلط ہے، جس طرح دوسرے دنوں میں سب کی فاتحہ ہو سکتی ہے، ان دنوں میں بھی ہو سکتی

ہے۔

ماہ ربیع الآخر کی گیارہویں تاریخ بلکہ ہر مہینہ کی گیارہویں کو حضور سیدنا غوث اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی فاتحہ دلائی جاتی ہے، یہ بھی ایصالِ ثواب کی ایک صورت ہے بلکہ غوث پاک رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی جب کبھی فاتحہ ہوتی ہے کسی تاریخ میں ہو، عوام اسے گیارہویں کی فاتحہ بولتے ہیں۔

ماہ رجب کی چھٹی تاریخ بلکہ ہر مہینہ کی چھٹی تاریخ کو حضور خواجہ غریب نواز معین الدین چشتی اجمیری رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی فاتحہ بھی ایصالِ ثواب میں داخل ہے۔ اصحابِ کہف کا توشہ یا حضور غوث اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا توشہ یا حضرت شیخ احمد عبدالحق رُددلوی قدس سرہ العزیز کا توشہ (4) بھی جائز ہے اور ایصالِ ثواب میں داخل ہے۔

مسئلہ ۲: عرس بزرگانِ دین رضی اللہ تعالیٰ عنہما جمعین جو ہر سال ان کے وصال کے دن ہوتا ہے یہ بھی جائز ہے، کہ اس تاریخ میں قرآن مجید ختم کیا جاتا ہے اور ثواب اون بزرگ کو پہنچایا جاتا ہے یا میلاد شریف پڑھا جاتا ہے یا وعظ کہا جاتا ہے، بالجملہ ایسے امور جو باعثِ ثواب و خیر و برکت ہیں جیسے دوسرے دنوں میں جائز ہیں ان دنوں میں بھی جائز ہیں۔

حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہر سال کے اول یا آخر میں شہدائے اہل رضی اللہ تعالیٰ عنہم کی زیارت کو تشریف لے جاتے۔ (5) ہاں یہ ضرور ہے کہ عرس کو لغو و خرافات چیزوں سے پاک رکھا جائے، جاہلوں کو نامشروع حرکات سے روکا جائے، اگر منع کرنے سے باز نہ آئیں تو ان افعال کا گناہ ان کے ذمہ۔



(4) یعنی کسی ولی یا بزرگ کی فاتحہ کا کھانا، جو عرس کے دن تقسیم کیا جاتا ہے۔

(5) انظر: الدر المنثور للسيوطي، سورة الرعد، تحت الآية ۲۳، ج ۳ ص ۶۳۰-۶۳۱۔

مجلس خیر

مسئلہ ۱: میلاد شریف یعنی حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی ولادت اقدس کا بیان جائز ہے۔ اسی کے ضمن میں اس مجلس پاک میں حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) کے فضائل و معجزات و سیر و حالات حیات و رضاعت و بعثت کے واقعات بھی بیان ہوتے ہیں، ان چیزوں کا ذکر احادیث میں بھی ہے اور قرآن مجید میں بھی۔ اگر مسلمان اپنی محفل میں بیان کریں بلکہ خاص ان باتوں کے بیان کرنے کے لیے محفل منعقد کریں تو اس کے ناجائز ہونے کی کوئی وجہ نہیں۔ اس مجلس کے لیے لوگوں کو بلانا اور شریک کرنا خیر کی طرف بلانا ہے، جس طرح وعظ اور جلسوں کے اعلان کیے جاتے ہیں، اشتہارات چھپوا کر تقسیم کیے جاتے ہیں، اخبارات میں اس کے متعلق مضامین شائع کیے جاتے ہیں اور ان کی وجہ سے وہ وعظ اور جلسے ناجائز نہیں ہو جاتے، اسی طرح ذکر پاک کے لیے بلا دادینے سے اس مجلس کو ناجائز و بدعت نہیں کہا جاسکتا۔ اسی طرح میلاد شریف میں شیرینی بانٹنا بھی جائز ہے، مٹھائی بانٹنا بروصلہ ہے، جب یہ محفل جائز ہے تو شیرینی تقسیم کرنا جو ایک جائز فعل تھا اس مجلس کو ناجائز نہیں کر دے گا، یہ کہنا کہ لوگ اسے ضروری سمجھتے ہیں اس وجہ سے ناجائز ہے یہ بھی غلط ہے کوئی بھی واجب یا فرض نہیں جانتا، بہت مرتبہ میں نے خود دیکھا ہے کہ میلاد شریف ہوا اور مٹھائی نہیں تقسیم ہوئی۔ اور بالفرض اسے کوئی ضروری سمجھتا بھی ہو، تو عرفی ضروری کہتا ہو گا نہ کہ شرعی اس کو ضروری جانتا ہو گا۔

اس مجلس میں بوقت ذکر ولادت قیام کیا جاتا ہے یعنی کھڑے ہو کر درود و سلام پڑھتے ہیں علمائے کرام نے اس قیام کو مستحسن فرمایا ہے۔ کھڑے ہو کر صلاۃ و سلام پڑھنا بھی جائز ہے۔

بعض اکابر کو اس مجلس پاک میں حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی زیارت کا شرف بھی حاصل ہوا ہے اگرچہ یہ نہیں کہا جاسکتا کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) اس موقع پر ضرور تشریف لاتے ہی ہیں، مگر کسی غلام پر اپنا کرم خاص فرمائیں اور تشریف لائیں تو مستبعد بھی نہیں۔

مسئلہ ۲: مجلس میلاد شریف میں یا دیگر مجالس میں وہی روایات بیان کی جائیں جو ثابت ہوں، موضوعات اور گڑھے ہوئے قصے ہرگز ہرگز بیان نہ کیے جائیں، کہ بجائے خیر و برکت ایسی باتوں کے بیان کرنے میں گناہ ہوتا ہے۔

مسئلہ ۳: معراج شریف کے بیان کے لیے مجلس منعقد کرنا، اس میں واقعہ معراج بیان کرنا جس کو رجبی شریف کہا جاتا ہے جائز ہے۔

مسئلہ ۴: یہ مشہور ہے کہ شب معراج میں حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نعلین مبارک پہنے ہوئے عرش پر گئے

اور واعظین اس کے متعلق ایک روایت بھی بیان کرتے ہیں اس کا ثبوت نہیں اور یہ بھی ثابت نہیں کہ برہنہ پاتھے، لہذا اس کے متعلق سکوت کرنا مناسب ہے۔

مسئلہ ۵: خلفائے راشدین رضی اللہ تعالیٰ عنہم کی وفات کی تاریخوں میں مجلس منعقد کرنا اور ان کے حالات و فضائل و کمالات سے مسلمانوں کو آگاہ کرنا بھی جائز ہے، کہ وہ حضرات مقتدایان اہل اسلام ہیں، ان کی زندگی کے کارنامے مسلمانوں کے لیے مشعل ہدایت ہیں اور ان کا ذکر باعث خیر و برکت اور سبب نزول رحمت ہے۔

مسئلہ ۶: رجب کی ۲۶ و ۲۷ کو روزے رکھتے ہیں، پہلے کو ہزاری اور دوسرے کو لکھی کہتے ہیں یعنی پہلے میں ہزار روزے کا ثواب اور دوسرے میں ایک لاکھ کا ثواب بتاتے ہیں۔ ان روزوں کے رکھنے میں مضائقہ نہیں، مگر یہ جو ثواب کے متعلق مشہور ہے اس کا ثبوت نہیں۔

مسئلہ ۷: عشرہ محرم میں مجلس منعقد کرنا اور واقعات کر بلا بیان کرنا جائز ہے جبکہ روایات صحیحہ بیان کی جائیں، ان واقعات میں صبر و تحمل رضا و تسلیم کا بہت مکمل درس ہے اور پابندی احکام شریعت و اتباع سنت کا زبردست عملی ثبوت ہے کہ دین حق کی حفاظت میں تمام اعزہ و اقربا و رفقا اور خود اپنے کو راہ خدا میں قربان کیا اور جزع و فزع کا نام بھی نہ آنے دیا، مگر اس مجلس میں صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کا بھی ذکر خیر ہو جانا چاہیے تاکہ اہل سنت اور شیعوں کی مجالس میں فرق و امتیاز رہے۔

مسئلہ ۸: تعزیہ داری کہ واقعات کر بلا کے سلسلہ میں طرح طرح کے ڈھانچے بناتے اور ان کو حضرت سیدنا امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے روضہ پاک کی شبیہ کہتے ہیں، کہیں تخت بنائے جاتے ہیں، کہیں ضریح بنتی ہے (یعنی ایک قسم کا تعزیہ جو گنبد نما ہوتا ہے) اور علم اور شدے (یعنی جھنڈے یا اور جھنڈے نما نشان) نکالے جاتے ہیں، ڈھول تاشے اور قسم قسم کے باجے بجائے جاتے ہیں، تعزیوں کا بہت دھوم دھام سے گشت ہوتا ہے، آگے پیچھے ہونے میں جاہلیت کے سے جھگڑے ہوتے ہیں، کبھی درخت کی شاخیں کاٹی جاتیں ہیں، کہیں چبوترے کھودوائے جاتے ہیں، تعزیوں سے منٹیں مانی جاتی ہیں، سونے چاندی کے علم چڑھائے جاتے ہیں، ہار پھول ناریل چڑھاتے ہیں، وہاں جوتے پہن کر جانے کو گناہ جانتے ہیں بلکہ اس شدت سے منع کرتے ہیں کہ گناہ پر بھی ایسی ممانعت نہیں کرتے چھتری لگانے کو بہت برا جانتے ہیں۔

تعزیوں کے اندر دو مصنوعی قبریں بناتے ہیں، ایک پر سبز غلاف اور دوسری پر سرخ غلاف ڈالتے ہیں، سبز غلاف والی کو حضرت سیدنا امام حسن رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی قبر اور سرخ غلاف والی کو حضرت سیدنا امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی قبر یا شبیہ قبر بتاتے ہیں اور وہاں شربت مالیدہ وغیرہ پر فاتحہ دلاتے ہیں۔ یہ تصور کر کے کہ حضرت امام علی مقام کے روضہ

اور مواجہہ اقدس میں فاتحہ دلار ہے ہیں پھر یہ تعزیہ دسویں تاریخ کو مصنوعی کر بلا میں لے جا کر دفن کرتے ہیں گویا یہ جنازہ تھا جسے دفن کر آئے پھر تیجہ دسواں چالیسواں سب کچھ کیا جاتا ہے اور ہر ایک خرافات پر مشتمل ہوتا ہے۔

حضرت قاسم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی منہدی نکالتے ہیں گویا ان کی شادی ہو رہی ہے اور منہدی رچائی جائے گی اور اسی تعزیہ داری کے سلسلہ میں کوئی پیک (یعنی قاصد، پیغام رساں) بنتا ہے جس کے کمر سے گھنگر و بندھے ہوتے ہیں گویا یہ حضرت امام عالی مقام کا قاصد اور ہر کارہ ہے جو یہاں سے خط لے کر ابن زیاد یا یزید کے پاس جائے گا اور وہ ہر کاروں کی طرح بھاگا پھرتا ہے۔

کسی بچہ کو فقیر بنایا جاتا ہے اس کے گلے میں جھولی ڈالتے اور گھر گھر اس سے بھیک منگواتے ہیں، کوئی سقہ (یعنی پانی بھر کر لانے والا) بنایا جاتا ہے، چھوٹی سی مشک اس کے کندھے سے لٹکتی ہے گویا یہ دریائے فرات سے پانی بھر کر لائے گا، کسی علم پر مشک لٹکتی ہے اور اس میں تیر لگا ہوتا ہے، گویا یہ حضرت عباس علم دار ہیں کہ فرات سے پانی لارہے ہیں اور یزیدیوں نے مشک کو تیر سے چھید دیا ہے، اسی قسم کی بہت سی باتیں کی جاتی ہیں یہ سب لغو خرافات ہیں ان سے ہرگز سیدنا حضرت امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ خوش نہیں یہ تم خود غور کرو کہ انھوں نے احیائے دین و سنت کے لیے یہ زبردست قربانیاں کیں اور تم نے معاذ اللہ اس کو بدعات کا ذریعہ بنالیا۔

بعض جگہ اسی تعزیہ داری کے سلسلہ میں براق بنایا جاتا ہے جو عجب قسم کا مجسمہ ہوتا ہے کہ کچھ حصہ انسانی شکل کا ہوتا ہے اور کچھ حصہ جانور کا سا۔ شاید یہ حضرت امام عالی مقام کی سواری کے لیے ایک جانور ہوگا۔ کہیں دلدل بنتا ہے، کہیں بڑی بڑی قبریں بنتی ہیں، بعض جگہ آدمی ریچھ، بندر، لنگور (1) بنتے ہیں اور کودتے پھرتے ہیں جن کو اسلام تو اسلام انسانی تہذیب بھی جائز نہیں رکھتی ایسی بری حرکت، اسلام ہرگز جائز نہیں رکھتا۔ افسوس کہ محبت اہل بیت کرام کا دعویٰ اور ایسی بے جا حرکتیں یہ واقعہ تمھارے لیے نصیحت تھا اور تم نے اس کو کھیل تماشہ بنالیا۔

اسی سلسلے میں نوحہ و ماتم بھی ہوتا ہے اور سینہ کو بی ہوتی ہے، اتنے زور زور سے سینہ کوٹتے ہیں کہ ورم ہو جاتا ہے، سینہ سرخ ہو جاتا ہے بلکہ بعض جگہ زنجیروں اور چھریوں سے ماتم کرتے ہیں کہ سینے سے خون بہنے لگتا ہے۔ تعزیوں کے پاس مرثیہ (2) پڑھا جاتا ہے اور تعزیہ جب گشت کو نکلتا ہے اس وقت بھی اس کے آگے مرثیہ پڑھا جاتا ہے، مرثیہ میں

(1) ایک قسم کا بندر جس کا منہ کالا اور دم لمبی ہوتی ہے، یہ عام بندر سے زیادہ طاقتور ہوتا ہے۔

(2) اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

میت پر چل کر روٹا جزیع فزع کرنا حرام سخت حرام ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: الثنتان فی الناس هما بہم

کفر فی النسب والذیاحۃ۔ رواہ مسلم ۲۔ عن ابی ہریرۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ورواہ ابن حبان والحاکم

فلط واقعات نظم کیے جاتے ہیں، اہل بیت کرام کی بے حرمتی اور بے صبری اور جزع فزع کا ذکر کیا جاتا ہے اور چونکہ اکثر

وزاد اشق الحبيب لوگوں میں دو یا تین کفر ہیں کسی کے نسب پر طعنہ اور میت پر لوجہ۔ (امام مسلم نے اس کو حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالے سے روایت کیا، ابن حبان اور حاکم نے بھی اس کو روایت کیا ہے مگر حاکم نے یہ اضافہ اور گریبان پھاڑا۔) (ت)
(۲) صحیح مسلم کتاب الایمان باب اطلاق اسم الکفر علی الطعن فی النسب قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۵۸ اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم:

صوتان ملعونان فی الدنیا والاخرۃ مزمار عند نعۃ ورتۃ عند المصیبة. رواۃ البزار ۳ عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ بسند صحیح.

دو آوازوں پر دنیا و آخرت میں لعنت ہے، لعنت کے وقت باجا اور مصیبت کے وقت چلانا (محدث بزار نے اس کو صحیح سند کے ساتھ حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالے سے روایت کیا ہے۔) (ت)

(۳) کشف الاستار عن زوائد البزار کتاب الجنائز باب ما جاء فی النوح مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱/ ۳۷۷ اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم:

الناتحة اذا لم تتب قبل موتها تقام یوم القیمة وعلیها سربال من قطران ودرع من حرب رواۃ مسلم ۱ عن ابی مالک الاشعری.

چلا کر رونے والی جب اپنی موت سے قبل توبہ نہ کرے تو قیامت کے دن کھڑی کی جائے گی یوں کہ اس کے بدن پر گندھک کا گرتا ہوگا اور کھجلی کا دوپٹہ۔ (امام مسلم نے اسے ابومالک اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالے سے روایت کیا ہے۔) (ت)

(۱) صحیح مسلم کتاب الجنائز فصل فی الوعیۃ للناتحة الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۳۰۳ اور ایک روایت میں ہے: قطع اللہ ثیابا من قطران ودرعا من لہب النار. رواۃ ابن ماجہ عنہ ۲۔ اللہ تعالیٰ اسے گندھک کے کپڑے پہنائے گا اور اوپر سے دوزخ کی لپٹ کا دوپٹہ اڑھائے گا۔ (ابن ماجہ نے اس کو ابومالک اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے۔) (ت) (۲) سنن ابن ماجہ ابواب ما جاء فی الجنائز، باب فی النبی عن النبیۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۱۴

ایک حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

ان هؤلاء الدوائج یجعلن یوم القیمة صفین فی جہنم صف عن یمینہم وصف عن یشارہم فینبحن علی اہل النار کما تنبح الکلاب. رواۃ الطبرانی ۳ فی الاوسط عن ابی ہریرۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ

یہ نوحہ کرنے والیاں قیامت کے دن جہنم میں دو صفوں کی جائیں گی دوزخیوں کے دائیں بائیں وہاں ایسے بھونکیں گی جیسے کتیاں بھونکتی ہیں۔ (امام طبرانی نے اس کو الاوسط میں حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالے سے روایت کیا ہے۔) (ت)

(۳) المعجم الاوسط للطبرانی حدیث ۵۲۲۵ مکتبۃ المعارف ریاض ۶/ ۱۱۰

مرثیہ (3) رافضیوں کی ہے، بعض میں نیز ابھی ہوتا ہے مگر اس رو میں سنی بھی اسے بے تکلف پڑھ جاتے ہیں اور انھیں اس کا خیال بھی نہیں ہوتا کہ کیا پڑھ رہے ہیں، یہ سب ناجائز اور گناہ کے کام ہیں۔

مسئلہ ۹: اظہارِ غم کے لیے سر کے بال بکھیرتے ہیں، کپڑے پھاڑتے اور سر پر خاک ڈالتے اور بھوسا اڑاتے ہیں، یہ بھی ناجائز اور جاہلیت کے کام ہیں، ان سے بچنا نہایت ضروری ہے، احادیث میں ان کی سخت ممانعت آئی ہے۔ مسلمانوں پر لازم ہے کہ ایسے امور سے پرہیز کریں اور ایسے کام کریں جن سے اللہ (عزوجل) اور رسول صلی اللہ تعالیٰ

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

انہو من خلق وخلق وخلق۔ رواہ الشیخان عن ابی موسیٰ الاشعری رحمہ اللہ تعالیٰ۔

میں بیزار ہوں اس سے جو بھدرا کرے اور چلا کر روئے اور گریبان چاک کرے (بخاری و مسلم نے حضرت ابو موسیٰ اشعری رحمہ اللہ تعالیٰ کے حوالہ سے اسے روایت کیا۔ ت) (۱) صحیح مسلم کتاب الایمان باب تحریم ضرب الخدود قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۷۰ اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم:

الاتسعون ان للہ لا یعذب بدمع العین ولا یحزن القلب ولكن یعذب بہذا و اشار الی لسانہ او یرحمہ وان المیت یعذب ببکاء اہلہ علیہ۔ روایۃ عن ابن عمر ۲۔ رضی اللہ تعالیٰ عنہما۔

ارے سنتے نہیں ہو چنگ اللہ نہ آنسوؤں سے رونے پر عذاب کرے نہ دل کے غم پر (اور زبان کی طرف اشارہ کر کے فرمایا) ہاں اس پر عذاب ہے۔ یا رحم فرمائے اور چنگ مردے پر عذاب ہوتا ہے اس کے گھر والوں کے اس پر فوج کرنے سے۔ (اس کو بخاری و مسلم نے حضرت عبداللہ ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا ہے۔ ت)

(۲) صحیح بخاری کتاب الجنائز باب البکاء عند المریض قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۷۴

عائگیری میں جامع المسرات سے ہے:

النوح العالی لا یجوز والمکاء مع رقة القلب لا بأس بہ ۳۔

بلند آواز سے رونا اور جین کرنا (اسلام میں) جائز نہیں لیکن بغیر آواز کے رونا اور آنسو بہانا منوع نہیں۔ (ت)

(۳) فتاویٰ ہندیہ کتاب الصلوٰۃ الفصل السادس نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۱۶۷

در مختار میں ہے:

لا تصح الاجارۃ لاجل المعاصی مثل الغناء والنوح والملاہی ۴۔

گناہوں پر اجارہ (مزدوری کرنا) درست نہیں، گانا بجانا رونا بیٹنا یہ افعال گناہ ہیں، واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

(۴) در مختار کتاب الاجارہ قاسدہ مطبع مجتہائی دہلی ۲/ ۱۷۹ (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴، ص ۳۸۲، ۳۸۳ رضافاؤنڈیشن، لاہور)

(3) یعنی وہ نظم جس میں شہدائے کربلا کے مصائب اور شہادت کا ذکر ہو۔

علیہ وسلم راضی ہوں کہ یہی نجات کا راستہ ہے۔

مسئلہ ۱۰: تعزیوں اور علم کے ساتھ بعض لوگ لنگر لٹاتے ہیں یعنی روٹیاں یا بسکٹ یا اور کوئی چیز اونچی جگہ سے پھینکتے ہیں یہ ناجائز ہے، کہ رزق کی سخت بے حرمتی ہوتی ہے، یہ چیزیں کبھی نالیوں میں بھی گرتی ہیں اور اکثر لوٹنے والوں کے پاؤں کے نیچے بھی آتی ہیں اور بہت کچھ کچل کر ضائع ہوتی ہیں۔ اگر یہ چیزیں انسانیت کے طریق پر فقرا کو تقسیم کی جائیں تو بے حرمتی بھی نہ ہو اور جن کو دیا جائے انھیں فائدہ بھی پہنچے، مگر وہ لوگ اس طرح لٹانے ہی کو اپنی نیک نامی تصور کرتے ہیں۔



آداب سفر (۱) کا بیان

حدیث ۱: صحیح بخاری میں کعب بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم غزوہ تبوک کو پنجشنبہ کے روز (یعنی جمعرات کے دن) روانہ ہوئے اور پنجشنبہ کے دن روانہ ہونا حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کو پسند تھا۔ (2)

(1) سفر کے متعلق بہت سی باتیں حصہ ششم میں بیان کی گئی ہیں۔ وہاں سے معلوم کریں۔

(2) صحیح البخاری، کتاب الجہاد، باب من اراد غزوة... إلخ، الحدیث: ۲۹۵۰، ج ۲، ص ۲۹۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ وہ ہی کعب ابن مالک ہیں جو غزوہ تبوک میں شریک نہ ہو سکے تھے جس پر آپ کا بایکاٹ کیا گیا تھا، پھر سورہ توبہ میں آپ کی توبہ قبول ہونے کا بایکاٹ کھلوانے کا ذکر ہے، بڑی ہی شان کے مالک ہیں اللہ تعالیٰ نے آپ کو صادقین میں سے فرمایا ہے کہ ہم مسلمانوں کو حکم دیا "كُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ"۔

۲۔ تبوک غیر منصرف ہے علمیہ اور وزن فعل کی وجہ سے۔ بولک سے بنا ہے بمعنی پانی کا جوش مارنا لکڑی وغیرہ رہنے کی وجہ سے، شام کے ایک شہر کا نام تبوک ہے۔ یہ فقیر تبوک کے اوپر سے ہوئی جہاز سے گزر رہا مدینہ منورہ سے خیبر ایک سو ساٹھ میل ہے اور خیبر سے پانچ سو میل تبوک ہے، اس زمانہ میں مدینہ منورہ سے تبوک ایک ماہ کے فاصلہ پر تھا، غزوہ تبوک ۹ھ میں ہوا اور یہ حضور انور کا آخری غزوہ ہے۔ (ازمرقات) فقیر نے خیبر کی زیارات کی ہیں اب حجاز کی سرحد مقام مان تک ہے، مان تبوک سے تقریباً دو سو میل ہے اور مان سے مقام عمان تین سو میل ہے، عمان اردن کا دار الخلافہ ہے، عمان سے ۹۸ میل بیت المقدس ہے جسے اب قدس کہتے ہیں بیت المقدس فلسطین میں ہے۔

۳۔ یا تو سفر جہاد کے لیے جمعرات پسند فرماتے تھے یا ہر سفر کے لیے۔ خیال رہے کہ چند وجوہ سے جمعرات کو سفر کے لیے پسند فرمایا گیا: ایک یہ کہ جمعرات مبارک دن ہے کہ اس میں بندوں کے اعمال بارگاہ الہی میں پیش ہوتے ہیں، بہتر یہ ہے کہ عمل حج کی ابتداء اس دن سے ہو۔ دوسرے یہ کہ جمعرات ہفتہ کا آخری دن ہے۔ تیسرے یہ کہ جمعرات جمعہ کا پڑوسی ہے کہ اس کی آمد کی خبر دیتا ہے۔ چوتھے یہ کہ جمعرات کو عربی میں خمیس کہتے ہیں تو اس دن رواجی میں نیک فال ہے۔ پانچویں یہ کہ جمعرات کو خمیس کہتے ہیں جو خمیس بمعنی پانچ سے بنا ہے اور غنیمت سے اللہ رسول کے لیے خسر ہی نکالا جاتا ہے اللہ تعالیٰ خمیس کی برکت سے خسر والی غنیمت عطا فرمائے۔ خیال رہے کہ سفر کے لیے ہفتہ، سوموار اور جمعرات نہایت ہی مبارک ہیں جو کوئی ہفتہ کے دن سورج نکلنے سے پہلے سفر کو نکل جائے ان شاء اللہ کامیاب اور ہمارا دواپس ہوگا۔ (ازمرقات و اشعاع مع زیادة) مگر خیال رہے کہ اسلام میں کوئی دن یا کوئی ساعت نحوں نہیں ہاں بعض دن بابرکت ہیں۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۷۸۶)

حدیث ۲: ترمذی و ابو داود نے صخر بن واذعہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: الہی! تو میری امت کے لیے صبح میں برکت دے اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) جب سر پہ یا لشکر بھیجتے تو صبح کے وقت میں بھیجتے اور صخر رضی اللہ تعالیٰ عنہ تاجر تھے، یہ اپنی تجارت کا مال صبح کو بھیجتے، یہ صاحب ثروت ہو گئے اور ان کا مال زیادہ ہو گیا۔ (3)

حدیث ۳: صحیح بخاری میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: تنہائی کی ٹرائیوں کو جو کچھ میں جانتا ہوں، اگر دوسرے لوگ جانتے تو کوئی سوار رات میں تنہا نہ جاتا۔ (4)

(3) سنن ابی داود، کتاب الجہاد، باب فی الایکار فی السفر، الحدیث: ۲۶۰۶، ج ۳، ص ۵۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کا نام صخر ابن عمرو ابن عبد اللہ ابن کعب ازدی ہے، آپ صحابی ہیں، طائف میں قیام رہا، شمار اہل حجاز سے ہے۔ (مرقات اشعہ)
 ۲۔ یعنی میری امت کے تمام ان دینی و دنیاوی کاموں میں برکت دے جو وہ صبح سویرے کیا کرے جیسے سفر طلب علم تجارت وغیرہ۔
 ۳۔ یعنی حضور کی دعا وہ تھی جو ابھی بیان ہوئی اور عمل یہ تھا لہذا حضور کے دعا عمل سے یہ وقت برکت والا ہے۔
 ۴۔ یعنی صحابہ کا تجربہ بھی اس کے متعلق ہو چکا ہے کہ وہ حضرات اس سنت پر عمل کی برکت سے بہت فائدے اٹھا چکے ہیں۔ فقیر نے بھی تجربہ کیا کہ صبح سویرے کاموں میں بہت برکت ہے۔ بعض علماء فرماتے ہیں کہ جو طالب علم مغرب و عشاء کے دوران اور فجر کے وقت محنت کرے پھر عالم نہ بنے تو تعجب ہے اور جو طالب علم ان دو وقتوں میں محنت نہ کرے اور عالم بن جاوے تو بھی حیرت ہے۔
 ۵۔ ابن ماجہ نے بروایت حضرت ابو ہریرہ روایت کی الہی میری امت کے جمعرات کے دن صبح کے وقت کے کاموں میں برکت دے۔ (مرقات) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۸۰۲)

(4) صحیح البخاری، کتاب الجہاد، باب السیر و جدہ، الحدیث: ۲۹۹۸، ج ۲، ص ۳۰۹۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ دینی و دنیاوی دونوں نقصان۔ دینی نقصان تو یہ کہ اکیلا آدمی سفر میں جماعت نہیں کر سکتا۔ دنیاوی نقصان یہ کہ اکیلے میں وحشت بھی ہوتی ہے، سفر کے ضروریات بھی پورے نہیں ہوتے، بیماری میں تو بہت ہی تکلیف ہوتی ہے، اگر موت واقع ہو جائے تو کوئی وطن میں خبر پہنچانے والا بھی نہیں ہوتا۔

۲۔ یعنی اگر اکیلے سفر کرنے کے نقصانات کا حقد معلوم ہوں تو پیدل تو کیا سوار بھی اکیلے سفر کرنے کی جرات نہ کرے لہذا اس میں پیدل کو اکیلے سفر کرنے کی اجازت نہیں ہے۔ خیال رہے کہ اس زمانہ میں راستے پر امن نہ تھے اکیلے سفر نہایت خطرناک تھا اب ریل ہوئی جہاز موٹروں کی وجہ سے وہ خطرے نہیں ہیں لہذا اب احکام نرم ہوں گے، نیز رات کا اکیلے سفر اس زمانہ میں زیادہ خطرناک تھا وہاں یہ مثل مشہور تھی اسیل اخیل باویل اس لیے خصوصیت سے رات ہی میں سفر کا ذکر ہوا (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۷۸۷)

حدیث ۴: امام مالک و ترمذی و ابو داؤد بروایت عمرو بن شعیب عن ابیہ عن جدہ روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ایک سوار شیطان ہے اور دوسرا دوشیطان ہیں اور تین جماعت ہے۔ (5)

حدیث ۵: ابو داؤد نے ابو سعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب سفر میں تین شخص ہوں تو ایک کو امیر یعنی اپنا سردار بنالیں۔ (6)

حدیث ۶: بیہقی نے سہل بن سعد رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ سفر میں قوم کا سردار وہ ہے جو ان کی خدمت کرے، جو شخص خدمت میں سبقت لے جائے گا تو شہادت کے سوا کسی عمل سے دوسرے لوگ اس پر سبقت نہیں لے جاسکتے۔ (7)

(5) سنن الترمذی، کتاب الجہاد، باب ما جاء فی کرہیۃ أن یسافر الرجل وحده، الحدیث: ۱۶۸۰، ج ۳، ص ۲۵۶۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی جنگل میں اکیلا مسافر آفات کے زغہ میں ہوتا ہے، نماز باجماعت سے محروم ہے، ضرورت کے وقت اسے مددگار کوئی نہ ملے گا، بلاؤں آفتوں کے خطرے میں ہے خصوصاً اس زمانہ پاک میں جب کہ راستے پر خطر تھے اب اس امن کے زمانہ میں بھی ریل کے ڈبہ میں اکیلے سفر کرنے والے چلتی ٹرین میں لٹ جگے حتیٰ کہ حکومت نے انٹر کلاس کی زمانہ سوار یوں کو اجازت دی کہ وہ رات میں اپنی تھرو کلاس کی سیٹلی کو اپنے ساتھ انٹر میں بٹھا سکتی ہیں سرکار کے فرمان ہمیشہ ہی مفید ہیں۔

۲۔ یعنی دو مسافر بھی آفات کے خطرے میں ہیں کہ اگر ایک بیمار ہو جائے تو دوسرا بے یار و مددگار رہ جائے۔

۳۔ یعنی تین مسافر ہیں جنہیں صحیح معنی میں قافلہ کہا جاوے۔ ركب اسم جمع ہے جیسے نفر اور رھط اور صحب اس لیے ارشاد ہوا کہ جماعت پر اللہ کا ہاتھ (رحمت) ہے۔ اس فرمان عالی میں بھی بڑی حکمتیں ہیں سفر میں کسی کی رضا تضاد واقع ہو جائے تو باقی اور دو آسانی سے اسے سنبھال سکتے ہیں۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۸۰۴)

(6) سنن ابی داؤد، کتاب الجہاد، باب فی القوم یسافرون لا یسرون أحدہم، الحدیث: ۲۶۰۸، ج ۳، ص ۵۱۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی اگر مسافر تین یا زیادہ ہوں تو انتظام قائم رکھنے کے لیے اپنے میں سے ایک افضل اور تجربہ کار کو اپنا سردار بنائیں جو ہر چیز کا انتظام رکھے اور باقی ساتھی اس کے مشورہ پر عمل کریں اس میں برکت بھی ہوگی اور سفر میں آسانی بھی اس سردار کو چاہیے کہ اپنے کو ان ساتھیوں کا حاکم نہ سمجھے بلکہ خادم تصور کرے، نماز بھی وہ ہی پڑھائے جیسا کہ بزاز نے بروایت حضرت ابو ہریرہ مرفوعاً روایت کی کہ جب تم چند آدمی سفر کرو تم میں سے بڑا قاری (عالم) تمہاری امامت کرے اور جب وہ تمہاری امامت کرے تو وہ ہی تمہارا امیر و سردار ہے۔ (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۸۰۵)

(7) شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی ترک الغضب، الحدیث: ۸۲۰۷، ج ۶، ص ۳۳۴۔

حدیث ۷: صحیح بخاری و مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: سفر عذاب کا ٹکڑا ہے، سونا اور کھانا پینا سب کو روک دیتا ہے، لہذا جب کام پورا کر لے جلدی گھر کو واپس ہو۔ (8)

حکیم الامت کے مدنی پھول

اب آپ کے حالات بارہا بیان ہو چکے ہیں کہ آپ کا نام پہلے حزن تھا حضور انور صلی اللہ علیہ وسلم نے آپ کا نام سہل رکھا، آپ ساعدی ہیں، انصاری مدنی ہیں، خود بھی صحابی ہیں خود آپ کے والد سعد بھی صحابی ہیں، حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی وفات کے وقت آپ سولہ سالہ تھے پھر کافی عمر پائی، اویسیا نوے ہجری میں مدینہ منورہ میں وفات پائی، آپ مدینہ پاک کے آخری صحابی ہیں، آپ کی وفات پر مدینہ پاک صحابہ سے خالی ہو گیا۔ (اشعہ)

۲۔ اس فرمان عالی کی دو شرطیں ہو سکتی ہیں: ایک یہ کہ سفر میں جو اپنے ساتھی مسافروں کا امیر بنے وہ ان کا حاکم نہ بنے بلکہ خادم بنے کہ اپنے آرام پر اپنے ساتھیوں کے آرام کو مقدم رکھے اور ان کی ظاہری و اندرونی ضروریات پوری کرنے کی کوشش کرے اس صورت میں یہ خبر بمعنی امر ہے۔ دوسرے یہ کہ سفر میں جو اپنے ساتھیوں کی خدمت کرے وہ اگرچہ بظاہر معمولی ہے مگر درحقیقت ان سب کا سردار ہے شرف خدمت سے ہے نہ کہ فقط نام سے۔ یہاں مرقات نے فرمایا کہ ایک سفر میں حضرت عبداللہ مروزی کے ساتھ ابوعلی نے سفر کیا حضرت عبداللہ امیر سفر بنے تو آپ اکثر ابوعلی کا سامان بھی اپنی پشت پر اٹھاتے بارش ہوئی تو ابوعلی پر کھل تان کر کھڑے ہو گئے پوچھا گیا کہ یہ کیا فرمایا کہ امیر سفر کے یہی فرائض منصبی ہیں یہ ہے اس حدیث پاک پر عمل۔

۳۔ یعنی سفر جہاد وغیرہ میں جو شخص اپنے ساتھیوں کی خدمت کرتا رہے گا وہ ان سب نمازیوں وغیرہم سے بڑھ جادے گا ان لوگوں کا کوئی عمل اس خدمت سے نہیں بڑھ سکتا ہاں جو ان میں سے راہ خدا میں شہید ہو جائے گا وہ شہادت اس خدمت سے بڑھ جائے گی۔ یہ فرمان عالی عقل کے بھی بالکل مطابق ہے کیونکہ اس سفر میں یہ خدمت کرنے والا نماز وغیرہ سارے کام دوسروں کی طرح کرے گا مگر خدمت یہ کرے گا دوسرے نہ کریں گے تو اس کا عمل زیادہ ہو لہذا اس کا درجہ و ثواب بھی زیادہ ہونا چاہیے۔

۴۔ اس حدیث کو حاکم نے اپنی تاریخ میں ابن ماجہ نے حضرت ابوقادہ سے خطیب نے حضرت ابن عباس سے بھی روایت کیا۔ (مرقات)

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۸۱۹)

(8) صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب السفر قطع من العذاب... إلخ، الحدیث: ۱۷۹۰۔ (۱۹۲۷)، ص ۱۰۶۳۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہاں عذاب سے مراد تکلیف وہ ہے نہ کہ سزا کیونکہ بعض سفر تو ثواب ہیں جیسے سفر جہاد، سفر حج، سفر طلب علم وغیرہ مگر یہ سارے سفر تکلیف وہ ضرور ہیں جن میں وہ تکلیف ہوتی ہیں جو آگے مذکور ہیں۔

۲۔ یعنی عموماً سفر میں انسان وقت پر کھانے، وقت پر سونے، وقت پر باجماعت نماز گھر کی طرح نہیں کر سکتا۔ چنانچہ اب بھی یہ دیکھا جاتا ہے اگرچہ اب ریل، بس، ہوائی جہازوں کے سفر میں بڑی آسانیاں ہو چکی ہیں۔

حدیث ۸: صحیح مسلم میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب رات میں منزل پر اترتو راستہ سے بچ کر ٹھہرو، کہ وہ جانوروں کا راستہ ہے اور نہ ہر لیے جانوروں کے ٹھہرنے کی جگہ ہے۔ (۹)

حدیث ۹: ابو داؤد نے ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جانوروں کی میٹھوں کو منبر نہ بناؤ یعنی جب سواری رکی ہوئی ہو تو اس کی پیٹھ پر بیٹھ کر باتیں نہ کرو، کیونکہ اللہ (عزوجل) نے سوار یوں کو تمھارے لیے اس لیے مسخر کیا ہے کہ تم ان کے ذریعہ سے ایسے شہروں کو پہنچو، جہاں بغیر مشقت نفس نہیں پہنچ سکتے تھے اور تمھارے لیے زمین کو اللہ تعالیٰ نے بنایا ہے، اس پر اپنی حاجتیں پوری کرو یعنی باتیں

۳۔ ہمہ کے معنی ہیں بلوغ الہمد اور ہمہ سے مراد اپنی سفر کی جہت ہے یعنی جس طرف سفر کر کے گیا تھا تو جس مقصد کے لیے گیا تھا سفر میں وہ مقصد پورا ہو جائے۔ (مرقات)

۴۔ تاکہ نماز کی جماعتیں حقوق کی ادائیگی اچھی طرح سے ہو سکیں، بعض علماء نے فرمایا کہ دنیاوی سفروں کے لیے یہ فرمان ہے۔ سفر حج و سفر جہاد وغیرہ کا یہ حکم نہیں مدینہ منورہ یا مکہ معظمہ میں جتنی حاضری نصیب ہو جائے بہتر ہے اسی لیے یہاں نعمت فرمایا۔ ہمہ کہتے ہیں دنیاوی ضرورت و حاجت کو، فقیر اس کو ترجیح دیتا ہے، حاکم و بیہقی نے بردایت حضرت عائشہ بجائے نعمت کے حجہ روایت کی یعنی حج سے فارغ ہو کر جلد لوٹو جیسا کہ مرقات میں ہے مگر مدینہ آخر مدینہ ہی ہے وہ تو ہر مؤمن کا دیس ہے پر دیس ہے ہی نہیں جیسا سکون قلب اداء عبادات میں وہاں میسر ہوتا ہے گھر میں میسر نہیں ہوتا۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۷۳)

(۹) المرجع السابق، باب مراعاة مصلحة الدواب... إلخ، الحدیث: ۱۷۸- (۱۹۲۶)، ص ۱۰۶۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۵۔ عرستہ بنا ہے تعویس سے، عربی میں تعویس کے معنی ہیں مسافر کا آخری رات میں آرام کرنا، یہاں بطریق تجربہ مطلقاً رات میں آرام کرنا مراد ہے اول رات میں ہو یا آخر رات میں جیسا کہ آئندہ وجہ بیان فرمانے سے معلوم ہو رہا ہے۔ یہ احکام استقبالی ہیں بطور مشورہ۔

۵۔ دواب سے مراد مسافروں کے جانور ہیں، محوام سے مراد ہر لیے جانور سانپ بچھو وغیرہ بہر حال راستے اور گزرگاہ میں اترنا ٹھہرنا تکلیف دہ بھی ہے خطرناک بھی۔ مرقات نے یہاں فرمایا کہ تعویس سے مراد مطلقاً اترنا ہے رات میں ہو یا دوپہری میں۔

۶۔ نقی لون، قاف، ہی بمعنی ہڈی کی ہنگ یعنی اس سے پہلے سفر ختم کر کے گھر پہنچ جاؤ کہ جانوروں کی ہڈی کی ہنگ ختم ہو جائے اور وہ بے ہو کر تھک رہیں۔ بعض شارحین نے نقب ب سے روایت کی ہے بمعنی اونٹ کے پاؤں کا ہلکا ہو جانا یعنی ان کا پاؤں ہلکا پڑ جانے سے پہلے گھر پہنچ جاؤ جب بھی مطلب وہ ہی ہے، بعض لوگوں نے نقب بمعنی راستہ کہا مگر یہ غلط ہے کہ مگر مطلب ہی کچھ نہیں بنا۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۷۱)

کرنی ہوں تو زمین پر اتر کر کرو۔ (10)

حدیث ۱۰: ابو داؤد نے ابو ثعلبہ خضنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ لوگ جب منزل میں اترتے تو متفرق ٹھہرتے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: تمہارا متفرق ہو کر ٹھہرنا شیطان کی جانب سے ہے۔ اس کے بعد صحابہ (رضی اللہ تعالیٰ عنہم) جب کسی منزل میں اترتے تو مل کر ٹھہرتے۔ (11)

(10) سنن ابی داؤد، کتاب الجہاد، باب فی الوقوف علی الدابة، الحدیث: ۲۵۶۷، ج ۳، ص ۳۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی بلا ضرورت انہیں کھڑا کر کے ان پر سوار ہو اور لوگوں سے بات چیت تجارت وغیرہ کرتے رہو اس میں جانور کو بلا وجہ تکلیف دینا ہے یہ کام نیچے اتر کر کرو ان پر صرف سفر کرو۔ خیال رہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا اونٹ پر قیام فرما کر عرفات شریف میں خطبہ دینا یا حجاج کا عرفات میں اونٹ پر قیام کرنا ضرور تھا ہے۔

۲۔ یہاں بلا ضرورت سوار رہنے سے ممانعت ہے لہذا یہ حدیث ان احادیث کے خلاف نہیں اور ممکن ہے کہ یہ ممانعت اس صورت میں ہو جب جانور بہت دراز سفر کر کے آیا ہو تھکا ہوا ہو یا جب بوجہ قحط سالی کے جانور دبلے اور کمزور ہوں اور اجازت اس صورت میں ہو کہ جانور قوی اور تازہ دم ہوں۔ واللہ اعلم!

۳۔ یہ حکم ہمیشہ کے لیے ہے اور سب کے لیے بعض حالات میں حکم وجوبی ہے اور بعض حالات میں استنباطی ہے جیسا کہ ابھی عرض کیا گیا۔
(امراء المناجیح شرح مشکوٰۃ الصالح، ج ۵، ص ۸۱۰)

(11) المرجع السابق، باب ما لا یمن انضمام العسکر وسعد، الحدیث: ۲۶۲۸، ج ۳، ص ۵۸۔

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ آپ کا نام جبرہم ہے، کنیت ابو ثعلبہ مگر آپ کنیت میں مشہور ہیں، آپ بیعت الرضوان میں شریک ہوئے، حضور انور نے آپ کو اپنی قوم خنسن کی طرف بھیج دیا، آپ کی تبلیغ سے وہ سب لوگ مسلمان ہو گئے پھر آپ نے شام میں قیام اختیار کیا، ۵۷ھ میں انتقال کیا۔ (اشعہ) مگر زیادہ صحیح یہ ہے کہ ۵۵ھ میں حضرت امیر معاویہ کے زمانہ میں آپ کی وفات ہوئی رضی اللہ عنہما۔ (مرقات واشعہ)

۲۔ شعب جمع ہے شعب کی بمعنی گھاٹی یا پہاڑی راستہ یعنی حضرات صحابہ کرام دوران سفر میں جب کبھی عارضی قیام فرماتے تھے تو متفرق ہو کر کچھ حضرات کہیں کچھ کہیں۔

۳۔ جیسا کہ تمہارے اس طرح بکھرنے سے شیطان کو موقع ملتا ہے کہ کفار سے تم پر چڑھائی کر دے کیونکہ وہ سمجھیں گے کہ یہ لوگ متفرق ہیں ان پر چانک ٹوٹ پڑو یہ ایک دوسرے کی مدد نہ کر سکیں گے اس طرح الگ الگ اترنا خطرناک ہے۔ اننا ذلکم تاکید کے لیے ہے جیسے ہماری دوری خطرناک ہے ایسے ہی دلی دوری بھی شیطانی اثر سے ہوتی ہے اور سخت خطرناک رب تعالیٰ مسلمانوں میں تنظیم اور یکجہتی نصیب

حدیث ۱۱: ابو داؤد نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: رات میں چلنے کو لازم کرلو (یعنی فقط دن ہی میں نہیں بلکہ رات کے کچھ حصہ میں بھی چلا کرو) کیونکہ رات میں زمین لپیٹ دی جاتی ہے۔ (12) یعنی رات میں چلنے سے راستہ جلد طے ہوتا ہے۔

حدیث ۱۲: ابو داؤد نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہتے ہیں کہ جب ہم منزل میں اترتے تو جب تک کجاوے کھول نہ لیتے نماز نہیں پڑھتے۔ (13)

حدیث ۱۳: ترمذی و ابو داؤد نے بریدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پہل تشریف لے جا رہے تھے۔ ایک شخص گدھے پر سوار آیا اور عرض کی، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) سوار ہو جائیے اور خود پیچھے سرکا۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: یوں نہیں، جانور کی صدر جگہ بیٹھنے میں تمہارا حق ہے مگر جبکہ یہ حق تم مجھے دیدو۔ انھوں نے کہا میں نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کو دیا۔ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا: بلکہ ان کے دلوں کو بھی یکجا کر دیا مسلمان ایک دل اور ایک جان ہیں۔ اس سے معلوم ہوا کہ ہمیشہ مسافر منزل پر اکٹھے رہیں اس میں بہت فائدے ہیں۔ ہر ایک ایک دوسرے سے خبردار رہتا ہے تعاون کر سکتا ہے۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۸۰۸)

(12) المرجع السابق، باب فی الدلیج، الحدیث: ۲۵۷۱، ج ۳، ص ۴۰.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ اب بھی اہل عرب رات میں سفر زیادہ کرتے ہیں، سمندری جہاز رات میں تیز چلائے جاتے ہیں، تمام حجاج سے بعد نماز عشاء کہہ دیا جاتا ہے کہ اب آرام کر دجیسا کہ ہم نے تجربہ کیا۔ دلہ رات کی اندھیری کو کہتے ہیں اسی سے ہے ادلاج۔

۲۔ اس طرح کہ رات کا مسافر یہ ہی سمجھتا ہے کہ ابھی میں نے سفر کم کیا ہے مگر ہو جاتا ہے زیادہ۔ اس فرمان عالی کا مطلب یہ بھی بیان کیا گیا ہے کہ رات میں بھی سفر کیا کرو صرف دن کے سفر پر قناعت نہ کیا کرو، بعض احادیث میں ہے کہ اول دن اور اول لائت میں سفر کرو۔ (اشعہ) (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۸۰۳)

(13) المرجع السابق، باب فی نزول المنازل، الحدیث: ۲۵۵۱، ج ۳، ص ۳۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یعنی ہم نقلی عبادت پر اس کام کو مقدم رکھتے تھے کہ پہلے اونٹوں پر سے کجاوے وغیرہ اتارتے تھے تاکہ وہ ہلکے ہو جاویں پھر منزل پر نوافل وغیرہ ادا کرتے تھے اس میں اونٹوں کو راحت ہوتی تھی اور ان حضرات کو بے فکری ہو جاتی تھی جس سے نماز اطمینان سے ہوتی تھی اس ایک عمل میں بہت سی حکمتیں۔ سفر میں یہ ہی چاہیے خواہ سفر جہاد ہو یا سفر حج یا اور کوئی سفر۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۸۱۱)

اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم) سوار ہو گئے۔ (14)

حدیث ۱۴: ابن عساکر نے ابو درداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب سفر سے کوئی واپس آئے تو گھر والوں کے لیے کچھ ہدیہ لائے، اگرچہ اپنی جھولی میں پتھر ہی ڈال لائے۔ (15)

حدیث ۱۵: صحیح بخاری و مسلم میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اپنے اہل کے پاس سفر سے رات میں نہیں تشریف لاتے، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم) صبح کو آتے یا شام کو۔ (16)

(14) سنن ابی داؤد، کتاب الجہاد، باب رب الدابة الحق بصدرا، الحدیث ۲۵۷۲، ج ۳، ص ۲۰.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ یہ پتہ نہ چلا کہ یہ کون سا سفر تھا بہر حال کوئی سفر ہو حضور انور اس میں پیدل تھے اس اعرابی نے چاہا کہ حضور کو آگے سوار کریں خود پیچھے بیٹھیں ادب کے لیے۔

۲۔ گردن سے قریب کا حصہ سینہ کہلاتا ہے اس فرمان عالی میں یہ تعلیم دی گئی کہ اگر ایک جانور پر دو شخص سوار ہوں تو آگے جانور کا مالک بیٹھے پیچھے دوسرا آدمی۔

۳۔ چونکہ جانور کا سینہ مالک کا اپنا حق ہے وہ چاہے جسے دے اس لیے حضور انور اس کی اجازت کے بعد آگے سوار ہوئے۔

(مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۸۱۲)

(15) کنز العمال، کتاب السفر، رقم ۱۷۵۰۲، ج ۶، ص ۳۰۱.

(16) صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب کرۃ الطروق وهو الدخول لیلًا... إلخ، الحدیث: ۱۸۰۰۔ (۱۹۲۸)، ص ۱۰۶۳.

صحیح البخاری، کتاب العمرة، باب الدخول بالعتی، الحدیث ۱۸۰۰، ج ۱، ص ۵۹۳.

حکیم الامت کے مدنی پھول

۱۔ کیونکہ بغیر اطلاع اچانک رات میں مسافر کا گھر پہنچنا گھر والوں کی تکلیف کا باعث ہوتا ہے اور اس زمانہ میں خبر رسانی کے ذرائع بہت محدود تھے اب تو خط، تاریلی فون وغیرہ سے خبر دی جاسکتی ہے۔ بطریق بنا ہے طرُق سے بمعنی دروازہ، یہاں کوڑ کھڑکانا، چونکہ رات میں آنے پر اس کھڑکانے کی ضرورت پڑتی ہے اس لیے رات میں آنے والے مسافر کو طارِق کہتے ہیں ستارہ کو بھی طارِق کہا جاتا ہے کہ وہ رات میں ہی چمکتا ہے۔ (مرقات)

۲۔ صبح صادق سے زوال تک کا وقت غدوہ ہے اور زوال سے سورج ڈوبنے تک کا وقت عشیہ یعنی حضور کی مدینہ منورہ میں آمد یا صبح کے وقت ہوتی تھی یا بند ظہر۔ (مرآۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، ج ۵، ص ۷۹۶)

حدیث ۱۶: صحیح بخاری و مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: جب کسی کے غائب ہونے کا زمانہ طویل ہو یعنی بہت دنوں کے بعد مکان پر آئے تو زوجہ کے پاس رات میں نہ آئے۔ (17)

دوسری روایت میں ہے کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے ان سے فرمایا: اگر رات میں مدینہ میں داخل ہوئے تو بلی کے پاس نہ جانا، جب تک وہ بناؤ سنگار کرو کے آراستہ نہ ہو جائے۔ (18)

حدیث ۱۷: صحیح بخاری و مسلم میں کعب بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سفر سے دن میں چاشت کے وقت تشریف لاتے۔ تشریف لانے کے بعد سب سے پہلے مسجد میں جاتے اور دو رکعت نماز پڑھتے پھر لوگوں کے لیے مسجد ہی میں بیٹھ جاتے۔ (19)

حدیث ۱۸: صحیح بخاری میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، کہتے ہیں میں نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ساتھ سفر میں تھا، جب ہم مدینہ میں آگئے تو حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم) نے مجھ سے فرمایا: مسجد میں جاؤ اور دو رکعت نماز پڑھو۔ (20)



(17) صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب لا یطرق أحدہما... إلخ، الحدیث: ۵۲۴۳، ج ۳، ص ۷۵.

(18) المربع السابق، باب طلب الولد، الحدیث: ۵۲۴۶، ج ۳، ص ۷۶.

(19) صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب استحباب رکعتین فی المسجد... إلخ، الحدیث: ۷۴۰-۷۴۱، ج ۱، ص ۶۱.

وسنن الداری، کتاب الصلاۃ، باب فی صلاۃ الرجل إذا قدم من سفر، الحدیث: ۱۵۲۰، ج ۱، ص ۲۸.

(20) صحیح البخاری، کتاب الجہاد، باب الصلاۃ إذا قدم من سفر، الحدیث: ۳۰۸، ج ۲، ص ۳۶.

مسائل فقہیہ

عورت کو بغیر شوہر یا محرم کے تین دن یا زیادہ کا سفر کرنا ناجائز ہے اور تین دن سے کم کا سفر اگر کسی مرد صالح یا بچہ کے ساتھ کرے تو جائز ہے۔ (1)

(۹) یہ ظاہر الروایۃ ہے۔ مگر علامہ علی قاری علیہ رحمۃ اللہ الباری مناسک صفحہ 57 پر لکھتے ہیں: امام ابو حنیفہ اور امام ابو یوسف رحمہما اللہ تعالیٰ سے عورت کو بغیر شوہر یا محرم کے ایک دن کا سفر کرنے کی کراہیت بھی مروی ہے۔ فتنہ و فساد کے زمانے کی وجہ سے اسی قول (ایک دن) پر فتویٰ دینا چاہیے۔

(انظر: رد المحتار، کتاب الحج، ج ۳، ص ۵۳۳) بہار شریعت جلد اول، حصہ 4، نماز مسافر کا بیان، صفحہ 752 پر ہے کہ عورت کو بغیر محرم کے تین دن یا زیادہ کی راہ جانا، ناجائز ہے بلکہ ایک دن کی راہ جانا بھی۔ اور اسی حصہ 4 پر اعلیٰ حضرت علیہ رحمۃ الرحمن کی یہ تصدیق بھی ہے کہ اسے مسائل صحیحہ، رجیحہ، محققہ، مشککہ پر مشتمل پایا۔ لہذا مسلمانوں کو اسی پر عمل کرنا چاہیے۔ مزید ارشاد فرماتے ہیں:

عورت اگر چہ عقیفہ یا ضعیفہ ہو اسے بے شوہر یا محرم سفر کو جانا حرام ہے، یہ عقیفہ ہے تو جن سے اس پر اندیشہ ہے وہ تو عقیفہ نہیں، اور یہ ضعیفہ ہے تو سفر خصوصاً حج میں اور زیادہ محتاج محرم ہے کہ جہاز یا اونٹ پر چڑھانے اتارنے کے لیے ضعیفہ کو دوسرے شخص کی زیادہ حاجت ہے۔ ہاں اگر چلی جائے گی گنہ گار ہوگی، ہر قدم پر گنہ گار لکھا جائے گا، مگر حج ہو جائے گا کہ معیت محرم شرط صحت حج نہیں، رہی واپسی اگر اس کا شوہر یا محرم اس کے ساتھ حج کو جاسکتا ہے تو یہی مناسب ہے۔ اس صورت میں واپسی کرنا مناسب نہیں، اگر زوج یا محرم کوئی نہیں یا ہے مگر حج کو نہیں جاسکتا تو اگر ابھی مدت سفر تک نہیں گئی ہے واپسی لازم ہے، اور اگر مدت سفر تک قطع کر چکی تو شوہر یا محرم ہو تو واپس لائیں کہ اس میں ازالہ گناہ ہے اور ازالہ گناہ فرض ہے۔ قال اللہ تعالیٰ یا ایہا الذین امنوا اقموا انفسکم و اہلیکم ناراً۔ اللہ تعالیٰ کا ارشاد گرامی ہے: اے ایمان والو! اپنے آپ کو اور اپنے اہل کو آگ سے بچالو۔ (ت)

وقال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم من رای منکم منکراً فلیغیرہ بیئہ ۲۔ اور سرکارِ دو عالم صلی اللہ تعالیٰ کا فرمان مبارک ہے: تم میں سے جو برائی دیکھے اسے طاقت سے روکے۔ (ت) (۱۔ القرآن ۶۶/۶)

(۲۔ صحیح مسلم باب بیان کون النہی عن المنکر من الانبیاء قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۵۱)

اور اگر شوہر یا محرم نہیں رکھتی تو اگر اتنی دور پہنچ گئی کہ مکہ معظمہ تک مدت سفر نہیں مثلاً جدہ پہنچ گئی تو اب چلی جائے اور واپس نہ ہو کہ واپسی میں سفر بلا محرم ہے اور وہ حرام ہے۔ وکانت کمین ابانہا زوجہا او مات عنها ولو فی مصر ولیس بینہا و بین مصر ہا مدۃ سفر رجعت ولو بین مصر ہا مدۃ و بین مقصدہا اقل مضت۔ مثلاً اس عورت کو خاندان نے طلاق بائن دے دی یا وہ ←

باندی کے لیے بھی یہی حکم ہے۔ (2)

مسئلہ ۱: جہاد کے سوا کسی کام کے لیے سفر کرنا چاہتا ہے مثلاً تجارت یا حج یا عمرہ کے لیے سفر کرنا چاہتا ہے اس کے لیے والدین سے اجازت حاصل کرے، اگر والدین اس سفر کو منع کریں اور اس کو اندیشہ ہو کہ میرے جانے کے بعد ان کی کوئی خبر گیری نہ کریگا اور اس کے پاس اتنا مال بھی نہیں ہے کہ والدین کو بھی دے اور سفر کے مصارف (یعنی سفر کے اخراجات) بھی پورے کرے، ایسی صورت میں بغیر اجازت والدین سفر کو نہ جائے اور اگر والدین محتاج نہ ہوں، ان کا نفقہ (یعنی کھانا، کپڑے وغیرہ کا خرچ) اولاد کے ذمہ نہ ہو مگر وہ سفر خطرناک ہے ہلاکت کا اندیشہ ہے، جب بھی بغیر اجازت سفر نہ کرے اور ہلاکت کا اندیشہ نہ ہو تو بغیر اجازت سفر کر سکتا ہے۔ (3)

مسئلہ ۲: بغیر اجازت والدین علم دین پڑھنے کے لیے سفر کیا اس میں حرج نہیں اور اس کو والدین کی نافرمانی نہیں

فوت ہو گیا اگر وہ شہر تھا اور اس عورت اور اس کے وطن کے درمیان مدت سفر نہیں تو وہ عورت لوٹ آئے اور اگر اس کے وطن کے لیے مدت سفر ہو اور مقصد کے لیے مدت سفر کم ہو تو سفر جاری رکھے۔ (ت)

پھر بعد حج مکہ معظمہ میں اقامت کرے بلا محرم گھر کو واپس آنا بلکہ مدینہ طیبہ کی حاضری ناممکن ہے، یہ وہ عورت ہے جس نے خود اپنے آپ کو بد میں ڈال، اس کے لیے چارہ کار نہیں مگر یہ کہ اس کا کوئی محرم جا کر اسے لائے، یوں کہ اس سال وہ جانا چاہتا تھا اس سال گیا یا یوں کہ اس سال تک اس کا کوئی محرم نابالغ تھا اب بالغ ہوا اور لا سکتا ہے، اور یہ بھی نہ ہو تو چارہ کار نکاح ہے نکاح کرے پھر شوہر کے ساتھ چاہے واپس آئے یا وہیں مقیم رہے، اور اگر دونوں طرف مدت سفر ہے تو بلا سخت تر ہے اور جانا یا آنا کوئی بھی بے گناہ نہیں ہو سکتا، مگر بہ حصول محرم یا تحصیل شوہر، شوہر کے قبضے میں اگر ہمیشہ رہنا نہ چاہے تو اس کا یہ علاج ہے کہ اس شرط پر نکاح کرے کہ میرا کام میرے ہاتھ میں رہے گا جب چاہوں اپنے آپ کو طلاق بائن دے لوں، اور اگر یہ بھی ناممکن ہو تو سب طرف سے دروازے بند ہیں پوری مضطرہ ہے، اگر ثقہ معتمدہ عورتیں واپسی کے لیے ملیں تو مذہب امام شافعی رضی اللہ تعالیٰ عنہ پر عمل کر کے ساتھ واپس آئے، اور جانے کے لیے ملیں تو ان کے ساتھ جائے انھیں کے ساتھ واپس آئے کہ تقلید غیر عند الضرورة بلاشبہ جائز ہے کما فی الدر المختار وغیرہ (جیسا کہ در مختار وغیرہ میں ہے۔ ت) اس لیے، رشاد ہوا کہ اختلاف اچھا بی لکم رحمة الہ (میرے صحابہ کا اختلاف تمہارے لیے رحمت ہے۔ ت) (اب تہذیب تاریخ دمشق ج ۱۰ سلیمان بن کثیر، راجع، التراث العربی بیروت ۶/ ۲۸۵) (کنز العمال حدیث ۱۰۰۲ موسسة الرسالہ بیروت ۱/ ۱۹۹)

هذا ما ظهر لي والعلم بالحق عند ربّي فليحروا وليراجع

(یہ مجھ پر واضح ہوا اور حق کا علم میرے رب کے پاس ہے۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۱۰، ص ۷۰۷، ۷۰۸، رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(2) الدر المختار و رد المحتار، کتاب النکاح، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۴۲۔

(3) الفتاویٰ احمدیہ، کتاب النکاح، الباب السادس والخمسون، ج ۵، ص ۳۶۵۔

کہا جائے گا۔ (4)



متفرقات

- مسئلہ ۱: یادداشت کے لیے یعنی اس غرض سے کہ بات یاد رہے بعض لوگ رد مال یا کمر بند میں گرہ لگا لیتے ہیں یا کسی جگہ اونگلی وغیرہ پر ڈورا باندھ لیتے ہیں یہ جائز ہے اور بلا وجہ ڈورا باندھ لینا مکروہ ہے۔ (1)
- مسئلہ ۲: گلے میں تعویذ لٹکانا جائز ہے، جبکہ وہ تعویذ جائز ہو یعنی آیات قرآنیہ یا اسمائے الہیہ اور ادعیہ سے تعویذ کیا گیا ہو اور بعض حدیثوں میں جو ممانعت آئی ہے، اس سے مراد وہ تعویذات ہیں جو ناجائز الفاظ پر مشتمل ہوں، جو زمانہ جاہلیت میں کیے جاتے تھے۔ اسی طرح تعویذات اور آیات واحادیث و ادعیہ (یعنی دعائیں) رکابی میں لکھ کر مریض کو بہ نیت شفا پلانا بھی جائز ہے۔ جب (2) وحائف (یعنی حیض والی) ونفسا (یعنی نفاس والی) بھی تعویذات کو گلے میں پہن سکتے ہیں، بازو پر باندھ سکتے ہیں جبکہ تعویذات غلاف میں ہوں۔ (3)
- مسئلہ ۳: پچھونے یا مصیے پر کچھ لکھا ہوا ہو تو اس کو استعمال کرنا ناجائز ہے، یہ عبارت اس کی بناوٹ میں ہو یا کاڑھی گئی ہو یا روشنائی سے لکھی ہو اگرچہ حروف مفردہ لکھے ہوں کیونکہ حروف مفردہ (یعنی جدا جدا لکھے ہوئے

(1) الدر المختار رد المحتار، کتاب الخطر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۵۹۹۔

(2) یعنی جس پر جماع یا احتکام یا لمبوت کے ساتھ منی خارج ہونے کی وجہ سے غسل فرض ہو گیا ہو۔

(3) رد المحتار، کتاب الخطر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۰۰۔

اعلیٰ حضرت، امام السنن، مجددین دلت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

عملیات و تعویذ اسمائے الہی و کلام الہی سے ضرور جائز ہیں جبکہ ان میں کوئی طریقہ خلاف شرع نہ ہو مثلاً کوئی لفظ غیر معلوم المعنی جیسے حنفیلی، رمضان، کتسلہون اور اور دعائے طاعون میں طاسوسا، عاسوسا، ماسوسا، ایسے الفاظ کی اجازت نہیں جب تک حدیث یا آثار یا اقوال مشائخ محدثین سے ثابت نہ ہو، یونہی دفع صرع وغیرہ کے تعویذ کہ مرغ کے خون سے لگتے ہیں یہ بھی ناجائز ہے اس کے عوض مشک سے لکھیں کہ وہ بھی اصل میں خون ہے، یونہی حب و تنخیر کے لئے بعض تعویذات دروازہ کی چوکت میں دفن کرتے ہیں کہ آتے جاتے اس پر پاؤں پڑیں یہ بھی ممنوع و خلاف ادب ہے، اسی طرح وہ مقصود جس کے لئے وہ تعویذ یا عمل کیا جائے اگر خلاف شرع ہو ناجائز ہو جائے گا جیسے عورتیں تنخیر شوہر کے لئے تعویذ کراتی ہیں، یہ حکم شرع کا عکس ہے۔ اللہ عزوجل نے شوہر کو حاکم بنایا ہے اسے محکوم بنانا عورت پر حرام ہے۔ یونہی تفریق و عداوت کے عمل و تعویذ کہ محارم میں کئے جائیں مثلاً بھائی کو بھائی سے جدا کرنا یہ قطع رحم ہے اور قطع رحم حرام، یونہی زن و شو میں نفق ڈلوانا۔

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۳، ص ۱۹۶، رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

حروف) کا بھی احترام ہے۔ (4)

اکثر دسترخوان پر عبارت لکھی ہوتی ہے ایسے دسترخوانوں کو استعمال میں لانا ان پر کھانا کھانا نہ چاہیے۔ بعض لوگوں کے تکیوں پر اشعار لکھے ہوتے ہیں ان کا بھی استعمال نہ کیا جائے۔

مسئلہ ۴: وعدہ کیا مگر اس کو پورا کرنے میں کوئی شرعی قباحت تھی اس وجہ سے پورا نہیں کیا تو اس کو وعدہ خلافی نہیں کہا جائے گا اور وعدہ خلاف کرنے کا جو گناہ ہے اس صورت میں نہیں ہوگا، اگرچہ وعدہ کرنے کے وقت اس نے استثناء نہ کیا ہو کہ یہاں شریعت کی جانب سے استثناء موجود ہے، اس کو زبان سے کہنے کی ضرورت نہیں مثلاً وعدہ کیا تھا کہ میں فلاں جگہ آؤں گا اور وہاں بیٹھ کر تمہارا انتظار کروں گا مگر جب وہاں گیا تو دیکھتا ہے کہ ناچ رنگ اور شراب خواری وغیرہ میں لوگ مشغول ہیں وہاں سے یہ چلا آیا، یہ وعدہ خلافی نہیں ہے یا اس کے انتظار کرنے کا وعدہ کیا تھا اور انتظار کر رہا تھا کہ نماز کا وقت آگیا یہ چلا آیا، وعدہ کے خلاف نہیں ہوا۔ (5)

مسئلہ ۵: بعض کاشت کار اپنے کھیتوں میں کپڑا لپیٹ کر کسی لکڑی پر لگا دیتے ہیں اس سے مقصود نظر بد سے کھیتوں کو بچانا ہوتا ہے، کیونکہ دیکھنے والے کی نظر پہلے اس پر پڑے گی اس کے بعد زراعت پر پڑے گی اور اس صورت میں زراعت کو نظر نہیں لگے گی ایسا کرنا ناجائز نہیں کیونکہ نظر کا لگنا صحیح ہے، احادیث سے ثابت ہے اس کا انکار نہیں کیا جاسکتا۔ حدیث میں ہے کہ جب اپنی یا کسی مسلمان بھائی کی چیز دیکھے اور پسند آئے تو برکت کی دعا کرے یہ کہے:

تَبَارَكَ اللهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ اللَّهُمَّ بَارِكْ فِيهِ. (6)

یا اردو میں یہ کہہ دے کہ اللہ (عزوجل) برکت کرے اس طرح کہنے سے نظر نہیں لگے گی۔

مسئلہ ۶: مشرکین کے برتنوں میں بغیر دھوئے کھانا پینا مکروہ ہے، یہ اس وقت ہے کہ برتن کا نجس ہونا معلوم نہ ہو

اور معلوم ہو تو اس میں کھانا پینا حرام ہے۔ (7)

مسئلہ ۷: عجیب و غریب قہے کہانی تفریح کے طور پر سننا جائز ہے، جبکہ ان کا جھوٹا ہونا یقینی نہ ہو بلکہ جو یقیناً جھوٹ ہوں ان کو بھی سنا جاسکتا ہے، جبکہ بطور ضرب مثل ہوں یا ان سے فصاحت مقصود ہو جیسا کہ مثنوی شریف وغیرہ میں بہت سے فرضی قہے وعظ وپند کے لیے درج کیے گئے ہیں۔ اسی طرح جانوروں اور کنکر پتھر وغیرہ کی باتیں فرضی طور پر

(4) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللیس، ج ۹، ص ۶۰۰.

(5) مشکل، ج ۲، ص ۶.

(6) رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی اللیس، ج ۹، ص ۶۰۱.

(7) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب انکرامیہ، الباب الرابع عشر فی أصل الذمۃ والاحکام، ج ۵، ص ۳۴۷.

بیان کرنا یا سننا بھی جائز ہے مثلاً گلستان میں حضرت شیخ سعدی علیہ الرحمہ نے لکھا۔

گلے خوشبوئے در حمام روزے اٹخ۔ (8)

مسئلہ ۸: تمام زبانوں میں عربی زبان افضل ہے ہمارے آقا و مولے سرکارِ دو عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی یہی زبان ہے قرآن مجید عربی زبان میں نازل ہوا، اہل جنت کی جنت میں عربی ہی زبان ہوگی، جو اس زبان کو خود سیکھے یا دوسروں کو سکھائے اسے ثواب ملے گا۔ (9) یہ جو کہا گیا صرف زبان کے لحاظ سے کہا گیا ورنہ ایک مسلم کو خود سوچنے کی ضرورت ہے کہ عربی زبان کا جاننا مسلمانوں کے لیے کتنا ضروری ہے، قرآن و حدیث اور دین کے تمام اصول و فروع اسی زبان میں ہیں اس زبان سے ناواقفی کتنی کمی اور نقصان کی چیز ہے۔

مسئلہ ۹: عورت رخصت ہو کر آئی اور عورتوں نے کہہ دیا، کہ یہ تمھاری عورت ہے اُس سے وطی جائز ہے، اگرچہ یہ خود اُسے پہچانتا نہ ہو۔ (10) اسی طرح عورتوں نے شب زفاف میں اُس کے کمرہ میں جس عورت کو دو لہن بنا کر بھیج دیا اگرچہ یہ نہیں کہا کہ یہ تمھاری عورت ہے اس سے وطی جائز ہے، کہ اس کو مسألت مخصوصہ کے ساتھ یہاں پہنچانا ہی اس کی دلیل ہے، کیونکہ دوسری عورت کو اس طرح ہرگز نہیں بھیجا جاتا۔

مسئلہ ۱۰: جس کے ذمہ اپنا حق ہو اور وہ نہ دیتا ہو تو اگر اس کی ایسی چیز مل جائے جو اسی جنس کی ہے جس جنس کا حق ہے تو لے سکتا ہے۔ (11) اس معاملہ میں روپیہ اور اشرفی ایک جنس کی چیزیں ہیں، یعنی اس کے ذمہ روپیہ تھا اور اشرفی مل گئی تو بقدر اپنے حق کے لے سکتا ہے۔ (12)

مسئلہ ۱۱: لوگوں کے ساتھ مدارات سے پیش آنا، نرم باتیں کرنا، کشادہ روئی سے کلام کرنا مستحب ہے، مگر یہ ضرور ہے کہ مدامت نہ پیدا ہو۔ بد مذہب سے گفتگو کرے تو اس طرح نہ کرے کہ وہ سمجھے میرے مذہب کو اچھا سمجھنے لگا برا

(8) الدر المختار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۶۷، وغیرہ۔

(9) الدر المختار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۹۱۔

(10) المرجع السابق، ص ۶۹۳۔

(11) اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خاں علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ میں علامہ شامی اور طحاوی رحمۃ اللہ علیہما کے حوالے سے امام اخصب رحمۃ اللہ علیہ سے نقل کرتے ہوئے ذکر کرتے ہیں کہ: خلاف جنس سے وصول کرنے کا عدم جواز مشارح کے زمانے میں تھا کیوں کہ وہ لوگ باہم متفق تھے آج کل فتویٰ اس پر ہے کہ جب اپنے حق کی وصولی پر قادر ہو چاہے کسی بھی مال سے ہو تو وصول کرنا جائز ہے۔

(فتاویٰ رضویہ، ج ۱، ص ۵۶۲)

(12) الدر المختار، کتاب المحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۹۷۔

نہیں جانتا ہے۔ (13)

مسئلہ ۱۲: مکان کرایہ پر دیا اور کرایہ دار اس میں رہنے لگا اگر مکان دیکھنے کو جانا چاہتا ہے، کہ دیکھیں کس حالت میں ہے اور مرمت کی ضرورت ہو تو مرمت کرا دی جائے تو کرایہ دار سے اجازت لے کر اندر جائے، یہ خیال نہ کرے کہ مکان میرا ہے مجھے اجازت کی کیا ضرورت، کہ مکان اگر چہ اس کا ہے مگر سکونت (یعنی رہائش) دوسرے کی ہے اور اجازت لینے کا حکم اسی سکونت کی وجہ سے ہے۔ (14)

مسئلہ ۱۳: حمام میں جائے تو تہبند باندھ کر نہائے لوگوں کے سامنے برہنہ ہونا جائز ہے۔ تنہائی میں جہاں کسی کی نظر پڑنے کا احتمال نہ ہو برہنہ ہو کر بھی غسل کر سکتا ہے۔ اسی طرح تالاب یا دریا میں جبکہ ناف سے اونچا پانی ہو برہنہ نہا سکتا ہے۔ (15)

مگر جبکہ پانی صاف ہو اور دوسرا کوئی شخص نزدیک ہو کہ اس کی نظر مواضع ستر پر پڑے گی، تو ایسے موقع پر پانی میں بھی برہنہ ہونا جائز نہیں۔

مسئلہ ۱۴: اہل محلہ نے امام مسجد کے لیے کچھ چندہ جمع کر کے دے دیا یا اسے کھانے پینے کے لیے سامان کر دیا، یہ ان لوگوں کے نزدیک بھی جائز ہے جو اجرت پر امامت کو ناجائز فرماتے ہیں، کہ یہ اجرت نہیں بلکہ احسان ہے کہ ایسے لوگوں کے ساتھ کرنا ہی چاہیے۔ (16)

مسئلہ ۱۵: جو شخص مقتدی (یعنی جس کی پیروی کی جائے) اور مذہبی پیشوا ہو اوس کے لیے اہل باطل اور برے لوگوں سے میل جول رکھنا منع ہے اور اگر اس وجہ سے مدارات کرتا ہے کہ ایسا نہ کرنے میں وہ قلم کریگا، تو مضایقہ نہیں جبکہ یہ غیر معروف شخص ہو۔ (17)

مسئلہ ۱۶: کسی نے نکٹھنا کتا (یعنی کاٹ کھانے والا کتا) پال رکھا ہے جو راہ گیروں کو کاٹ کھاتا ہے، تو بستی والے ایسے کتے کو قتل کر ڈالیں۔ بلی اگر ایذا (یعنی تکلیف) پہنچاتی ہے تو اسے تیز چھری سے ذبح کر ڈالیں، اسے ایذا دے کر نہ ماریں۔ (18)

(13) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکرہیۃ، الباب الثانیون فی المستفرقات، ج ۵، ص ۳۷۹۔

(14) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکرہیۃ، الباب الثانیون فی المستفرقات، ج ۵، ص ۳۷۹۔

(15) المرجع السابق، الباب الرابع والعشرون فی دخول الحمام، ج ۵، ص ۳۶۳۔

(16) الدر المختار رد المحتار، کتاب المحظر والاباح، فصل فی البیج، ج ۹، ص ۶۹۹۔

(17) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکرہیۃ، الباب الرابع عشر فی أصل الذمۃ، ج ۵، ص ۳۴۶۔

(18) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکرہیۃ، الباب الحادی والعشرون فیما یسبغ من جراحات بنی آدم، ج ۵، ص ۳۶۰-۳۶۱۔

مسئلہ ۱۷: بڑی حلال جانور ہے اسے کھانے کے لیے مار سکتے ہیں اور ضرر سے بچنے کے لیے بھی اسے مار سکتے ہیں۔ چیونٹی نے ایذا پہنچائی اور مار ڈالی تو حرج نہیں ورنہ مکروہ ہے، جوں کو مار سکتے ہیں اگرچہ اس نے کاٹا نہ ہو اور آگ میں ڈالنا مکروہ ہے، جوں کو بدن یا کپڑوں سے نکال کر زندہ پھینک دینا طریق ادب کے خلاف ہے۔ (19) کھٹل کو مارنا جائز ہے کہ یہ تکلیف دہ جانور ہے۔

مسئلہ ۱۸: جس کے پاس مال کی قلت ہے اور اولاد کی کثرت اسے وصیت نہ کرنا ہی افضل ہے اور اگر درشہ اغنیا (یعنی مالدار) ہوں یا مال کی دو تہائیاں بھی ان کے لیے بہت ہوں گی، تو تہائی کی وصیت کر جانا بہتر ہے۔ (20)

مسئلہ ۱۹: مرد کو اجنبیہ عورت کا جھوٹا اور عورت کو اجنبی مرد کا جھوٹا مکروہ ہے، زوجہ و محرم کے جھوٹے میں حرج نہیں۔ (21) کراہت اس صورت میں ہے جب کہ تلذذ (یعنی لذت) کے طور پر ہو اور اگر تلذذ مقصود نہ ہو بلکہ تبرک کے طور پر ہو جیسا کہ عالم باعمل اور باشرع پیر کا جھوٹا کہ اسے تبرک سمجھ کر لوگ کھاتے پیتے ہیں اس میں حرج نہیں۔

مسئلہ ۲۰: بی بی نماز نہ پڑھے تو شوہر اس کو مار سکتا ہے، اسی طرح ترک زینت پر بھی مار سکتا ہے اور گھر سے باہر نکل جانے پر بھی مار سکتا ہے۔ (22)

مسئلہ ۲۱: بی بی بے ہودہ بلکہ فاجرہ ہو تو شوہر پر یہ واجب نہیں کہ اسے طلاق ہی دے ڈالے۔ یوہیں اگر مرد فاجر ہو تو عورت پر یہ واجب نہیں کہ اس سے پیچھا چھڑائے، ہاں اگر یہ اندیشہ ہو کہ وہ دونوں حدود اہلہ کو قائم نہ رکھ سکیں گے، حکم شرع کی پابندی نہ کریں گے تو جدائی میں حرج نہیں۔ (23)

مسئلہ ۲۲: حاجت کے موقع پر قرض لینے میں حرج نہیں، جبکہ ادا کرنے کا ارادہ ہو اور اگر یہ ارادہ ہو کہ ادا نہ کریگا تو حرام کھاتا ہے اور اگر بغیر ادا کیے مر گیا مگر نیت یہ تھی کہ ادا کر دے گا، تو امید ہے کہ آخرت میں اس سے مواخذہ نہ ہو۔ (24)

مسئلہ ۲۳: جس کا حق اس کے ذمہ تھا وہ غائب ہو گیا پتا نہیں کہ وہ کہاں ہے نہ یہ معلوم کہ زندہ ہے یا مر گیا تو اس

(19) المرجع السابق، ص ۳۶۱۔

(20) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۷۰۱۔

(21) المرجع السابق، ص ۷۰۳۔

(22) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۷۰۳۔

(23) الدر المختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۷۰۳۔

(24) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب السابع والآخر دن فی القرض ولذین، ج ۵، ص ۳۶۶۔

پر یہ واجب نہیں کہ شہروں شہروں اُسے تلاش کرتا پھرے۔ (25)

مسئلہ ۲۴: جس کا دین تھا وہ مر گیا اور مدیون (قرض دار) دین سے انکار کرتا ہے ورثہ اس سے وصول نہ کر سکے، تو اس کا ثواب دائن (قرض دینے والے) کو ملے گا اس کے ورثہ کو نہیں اور اگر مدیون نے اس کے ورثہ کو دین ادا کر دیا تو بری ہو گیا۔ (26)

مسئلہ ۲۵: جس کے ذمہ دین تھا وہ مر گیا اور وارث کو معلوم نہ تھا کہ اس کے ذمہ دین ہے تاکہ ترکہ سے ادا کرے، اس نے ترکہ کو خرچ کر ڈالا تو وارث سے دین کا مواخذہ نہیں ہوگا اور اگر وارث کو معلوم ہے کہ میت کے ذمہ دین ہے تو اس پر ادا کرنا واجب ہے اور اگر وارث کو معلوم تھا مگر بھول گیا، اس وجہ سے ادا نہ کیا، جب بھی آخرت میں مواخذہ نہیں۔ ودیعت کا بھی یہی حکم ہے کہ بھول گیا اور جس کی چیز تھی اسے نہیں دی تو مواخذہ نہیں۔ (27)

مسئلہ ۲۶: مدیون اور دائن جارہے تھے راستہ میں ڈاکوؤں نے گھیرا، مدیون یہ چاہتا ہے کہ اسی وقت میں دین ادا کر دوں تاکہ ڈاکو اس کا مال چھینیں اور میں بچ جاؤں، آیا اس حالت میں دائن لینے سے انکار کر سکتا ہے یا اس کو لینا ہی ہوگا؟ فقیہ ابواللیث رحمہ اللہ تعالیٰ یہ فرماتے ہیں کہ دائن لینے سے انکار کر سکتا ہے۔ (28)

مسئلہ ۲۷: کسی نے کہا فلاں شخص کی کچھ چیزیں میں نے کھالی ہیں، اسے پانچ روپے دے دینا وہ نہ ہو تو اس کے وارثوں کو دینا وارث نہ ہو تو خیرات کر دینا، اس شخص کی صرف بی بی ہے کوئی دوسرا وارث نہیں ہے اگر عورت یہ کہتی ہے کہ میرا دین میرا اس کے ذمہ ہے جب تو روپے اسی کو دیے جائیں، ورنہ صرف اسے چھارم دیا جائے یعنی سواروپیہ جبکہ عورت یہ کہے کہ اس کی کوئی اول نہ تھی۔ (29)

مسئلہ ۲۸: اگر جان مال آبرو (عزت) کا اندیشہ (خوف، ڈر) ہے ان کے بچانے کے لیے رشوت دیتا ہے یا کسی کے ذمہ اپنا حق ہے جو بغیر رشوت دیے وصول نہیں ہوگا اور یہ اس لیے رشوت دیتا ہے کہ میرا حق وصول ہو جائے یہ دینا جائز ہے یعنی دینے والا گنہگار نہیں مگر لینے والا ضرور گنہگار ہے اس کو لینا جائز نہیں۔

اسی طرح جن لوگوں سے زبان درازی کا اندیشہ ہو جیسے بعض لچے شہدے (یعنی شریر، بد معاش) ایسے ہوتے ہیں

(25) المرجع السابق۔

(26) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکرامیۃ، الباب السابع والعشرون فی القرض والدین، ج ۵، ص ۳۶۶-۳۶۷۔

(27) المرجع السابق، ص ۳۶۷۔

(28) المرجع السابق، ص ۳۶۷۔

(29) الفتاویٰ الھندیہ، کتاب الکرامیۃ، الباب السابع والعشرون فی القرض والدین، ج ۵، ص ۳۶۸۔

کہ سرباز کسی کو گالی دے دینا یا بے آبرو کر دینا (بے عزت کر دینا) ان کے نزدیک معمولی بات ہے، ایسوں کو اس لیے کچھ دے دینا تاکہ ایسی حرکتیں نہ کریں یا بعض شعرا ایسے ہوتے ہیں کہ انہیں اگر نہ دیا جائے، تو مذمت میں قصیدے کہہ ڈالتے ہیں ان کو اپنی آبرو بچانے اور زبان بندی کے لیے کچھ دے دینا جائز ہے۔ (30)

مسئلہ ۲۹: بھیڑ بکریوں کے چرواہے کو اس لیے کچھ دے دینا کہ وہ جانوروں کو رات میں اس کے کھیت میں رکھے گا کیونکہ اس سے کھیت درست ہو جاتا ہے، یہ ناجائز ورشوت ہے اگرچہ یہ جانور خود چرواہے کے ہوں اور اگر کچھ دینا نہیں ٹھہرا ہے جب بھی ناجائز ہے کیونکہ اس موقع پر عرفا دیا ہی کرتے ہیں، تو اگرچہ دینا شرط نہیں مگر مشروط ہی کے حکم میں ہے۔

اس کے جواز کی یہ صورت ہو سکتی ہے کہ مالک سے ان جانوروں کو عاریت لے لے اور مالک چرواہے سے یہ کہہ دے کہ تو اس کے کھیت میں جانوروں کو رات میں ٹھہراتا۔ اب اگر چرواہے کو احسان کے طور پر دینا چاہے تو دے سکتا ہے ناجائز نہیں اور اگر مالک کے کہنے کے بعد بھی چرواہا مانگتا ہے اور جب تک اسے کچھ نہ دیا جائے ٹھہرانے پر راضی نہ ہو، تو یہ پھر ناجائز ورشوت ہے۔ (31)

مسئلہ ۳۰: باپ کو اس کا نام لے کر پکارنا مکروہ ہے، کہ یہ ادب کے خلاف ہے۔ اسی طرح عورت کو یہ مکروہ ہے، کہ شوہر کو نام لے کر پکارے۔ (32) بعض جاہلوں میں یہ مشہور ہے کہ عورت اگر شوہر کا نام لے لے تو نکاح ٹوٹ جاتا ہے۔ یہ غلط ہے شاید اسے اس لیے گڑھا ہو کہ اس ڈر سے کہ طلاق ہو جائے گی شوہر کا نام نہ لے گی۔

مسئلہ ۳۱: مرنے کی آرزو کرنا اور اس کی دعا مانگنا مکروہ ہے، جبکہ کسی دنیوی تکلیف کی وجہ سے ہو، مثلاً تنگی سے سراوقات ہوتی ہے یا دشمن کا اندیشہ ہے مالی جانے کا خوف ہے اور اگر یہ باتیں نہ ہوں بلکہ لوگوں کی حائثیں خراب ہو گئیں معصیت میں مبتلا ہیں اسے بھی اندیشہ ہے کہ گناہ میں پڑ جائے گا تو آرزوئے موت مکروہ نہیں۔ (33)

مسئلہ ۳۲: زلزلہ کے وقت مکان سے نکل کر باہر آ جانا جائز ہے۔ اسی طرح اگر دیوار جھکی ہوئی ہے گرنا چاہتی ہے، اس کے پاس سے بھاگنا جائز ہے۔ (34)

(30) الدر المختار رد المحتار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۹۹۔

(31) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثلاثون فی التفرقات، ج ۵، ص ۷۶۔

(32) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البیوع، ج ۹، ص ۶۹۰۔

(33) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثلاثون فی التفرقات، ج ۵، ص ۷۹۔

(34) المرجع السابق۔

مسئلہ ۳۳: طاعون جہاں ہو وہاں سے بھاگنا جائز نہیں اور دوسری جگہ سے وہاں جانا بھی نہ چاہیے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ جو لوگ کمزور اعتقاد کے ہوں اور ایسی جگہ گئے اور مبتلا ہو گئے، ان کے دل میں بات آئی کہ یہاں آنے سے ایسا ہوانہ آتے تو کاہے کو اس بلا میں پڑتے اور بھاگنے میں بچ گیا، تو یہ خیال کیا کہ وہاں ہوتا تو نہ بچتا بھاگنے کی وجہ سے بچا ایسی صورت میں بھاگنا اور جانا دونوں ممنوع۔

طاعون کے زمانہ میں عوام سے اکثر اسی قسم کی باتیں سننے میں آتی ہیں اور اگر اس کا عقیدہ پکا ہے جانتا ہے کہ جو کچھ مقدر میں ہوتا ہے وہی ہوتا ہے، نہ وہاں جانے سے کچھ ہوتا ہے نہ بھاگنے میں فائدہ پہنچتا ہے تو ایسے کو وہاں جانا بھی جائز ہے، نکلنے میں بھی حرج نہیں کہ اس کو بھاگنا نہیں کہا جائے گا اور حدیث میں مطلقاً نکلنے کی ممانعت نہیں بلکہ بھاگنے کی ممانعت ہے۔

مسئلہ ۳۴: کافر کے لیے مغفرت کی دعا ہرگز ہرگز نہ کرے، ہدایت کی دعا کر سکتا ہے۔ (35)

(35) اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

طاعون کے خوف سے شہر یا محلہ یا گھر چھوڑ کر بھاگنا حرام و گناہ کبیرہ ہے، اس کا کافی بیان ہمارے رسالہ تیسیر الماعون للسکن فی الطاعون میں ہے۔

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

الفار من الطاعون كالفار من الزحف۔

طاعون سے بھاگنے والا ایسا ہے جیسا کفار کو پیٹھ دے کر بھاگنے والا۔ (۱) مسند امام احمد بن حنبل عن عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا المکتب

الاسلامی بیروت ۶/ ۸۲، ۱۳۵، ۲۵۵) (الرواجز الکبیرۃ السجدۃ والتسعون بعد الثلثین دار الفکر بیروت ۲/ ۸۸-۲۸۷)

جس کے لئے قرآن عظیم میں فرمایا کہ اس کا ٹھکانا جہنم ہے، ایسا نفر من قدر اللہ الی قدر اللہ جہاد سے بھاگنے والا بھی کہہ سکتا ہے وہ بھی بھاگ کر تقدیر ہی میں جائے گا مگر اس بھاگنے کا ختمی جہنم ہے، طاعون عموماً شام میں تھا امیر المومنین رضی اللہ تعالیٰ عنہ وہاں کے عزم سے روانہ ہو چکے تھے جب سرحد شام و حجاز موضع سرخ پر پہنچے ہیں خبر پائی کہ شام میں بھڑت طاعون ہے امیر المومنین نے مہاجرین کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے مشورہ کیا بعض نے کہا حضرت کام کے لئے چلے ہیں رجوع نہ چاہئے بعض نے کہا حضرت کے ساتھ بقیہ اصحاب رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میں ہماری رائے نہیں کہ انہیں وبا پر پیش کریں، پھر انصار کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کو بلایا وہ بھی یو ہیں مختلف ہوئے پھر اکابر مومنین فتح کو بلایا انہوں نے بالاتفاق نہ جانے کی رائے دی امیر المومنین نے واپسی کی ندا کر دی، اس پر حضرت ابو عبیدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کہا: أفرار من قدر الله کیا تقدیر الہی سے بھاگنا، امیر المومنین نے فرمایا: کاش کوئی اور ایسا کہتا نعم نفر من قدر الله الی قدر الله ہاں ہم تقدیر الہی سے تقدیر الہی کی طرف بھاگتے ہیں۔ حضرت عبدالرحمن بن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہ کسی کام کو گئے ہوئے تھے جب واپس آئے انہوں نے کہا مجھے اس مسئلہ کے حکم کا علم ہے میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو فرماتے سنا:

مسئلہ ۳۵: ایک شخص مراجس کا کافر ہونا معلوم تھا، مگر اب ایک مسلمان اس کے مسلمان ہونے کی شہادت دیتا ہے اس کے جنازہ کی نماز پڑھی جائے گی اور مسلمان مرا اور ایک شخص اس کے مرتد ہونے کی شہادت دیتا ہے، تو شخص اس کے کہنے سے اسے مرتد نہیں قرار دیا جائے گا اور جنازہ کی نماز ترک نہیں کی جائے گی۔ (36)

اذا سمعتم به بارض فلا تقدموا عليه واذا وقع بارضه والتتم بها فلا تخرجوا افرا دامنه.

جب تم کسی زمین میں طامون ہونا سنو تو وہاں طامون کے سامنے نہ جاؤ اور جب تمہاری جگہ واقع ہو تو اس سے بھاگنے کو نہ لکھو۔

اس پر امیر المؤمنین محمد الہی، بھالائے کہ ان کا اجتہاد موافق ارشاد واقع ہوا اور واپس ہو گئے۔

(۱) صحیح البخاری کتاب الطب باب ما یذکر فی الطامون قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۸۵۳)

ایسی جگہ نذر من قدر اللہ الی قدر اللہ کہنا ٹھیک ہے کہ موافق حکم ہے، طامون سے بھاگنا فسق ہے بھاگنے والوں سے فاسقوں کا سا برتاؤ چاہئے، بدعت بمعنی بد مذہبی نہیں، ہاں اگر احادیث صحیحہ مشہورہ میں ارشاد اقدس حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم معلوم ہے اور انہیں رد کرتا اور اپنی تا مرادی و بزدلی کے حکم کو ان پر ترجیح دیتا ہے تو ضرور بد مذہب ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم

(فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۴، ص ۲۰۴، ۲۰۵، ۲۰۶ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(36) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الرابع عشر فی أصل الذمۃ، ج ۵، ص ۳۴۸.

اعلیٰ حضرت، امام اہلسنت، مجدد دین و ملت الشاہ امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن فتاویٰ رضویہ شریف میں تحریر فرماتے ہیں:

علماء نے کافر کے لیے دعائے مغفرت پر سخت اشد حکم صادر فرمایا اور اس کے حرام ہونے پر تو اجماع ہے، پھر دعائے رضوان تو اس سے بھی ارفع و اعلیٰ۔ فان السید قد یعفو عن عبدة وهو عدد غیر راض کما ان العبد بما یحب سیدۃ وهو علی امرۃ غیر ماض وحسبنا اللہ ونعم الوکیل اس لیے کہ مالک بعض دفعہ اپنے غلام کو معاف کر دیتا ہے حالانکہ وہ اس پر راضی نہیں ہوتا، جیسا کہ غلام بسا اوقات اپنے مالک کو پسند کرتا ہے مگر اس کے حکم پر عمل پیرا نہیں ہوتا۔ اللہ ہمیں کافی ہے اور کیا ہی اچھا کارساز ہے۔ (ت)

امام محمد محمد علی علیہ من فرماتے ہیں:

"صرح الشیخ شہاب الدین القرانی المالکی بان الدعاء بالمغفرة للكافر كفر لطلبه تكذب الله تعالى فيما اخبر به ولهذا قال المصنف وغيره ان كان مؤمناً"۔ اے

یعنی امام شہاب قرآنی مالکی نے تصریح فرمائی کہ کفار کے لیے دعائے مغفرت کرنا کفر ہے، کہ اللہ عزوجل نے جو خبر دی اس کا جھوٹا کرنا چاہتا ہے اس لیے مزید وغیرہ کتب فقہ میں قید لگادی کہ ماں باپ کے لیے دعائے مغفرت کرے بشرطیکہ وہ مسلمان ہوں۔ (۱- حلیۃ الجلی)

پھر ایک ورق کے بعد فرمایا کہ "تقدم ان کفر" ۲۔ اوپر بیان ہو چکا ہے کہ یہ کفر ہے۔ (۲- حلیۃ الجلی)

رد المحتار میں ہے:

الدعاء به كفر لعدم جوارۃ عقلاً ولا شرعاً ولتکذیب النصوص القطعیۃ بخلاف الدعاء للمؤمنین کما

مسئلہ ۳۶: مکان میں پرند نے گھونسلا لگایا اور بچے بھی کیے، بچھونے اور کپڑوں پر بیٹ گرتی ہے، ایسی حالت میں گھونسلا بگاڑنا اور پرند کو بھگا دینا نہیں چاہیے، بلکہ اس وقت تک انتظار کرے کہ بچے بڑے ہو کر اڑ جائیں۔ (37)

مسئلہ ۳۷: جماع کرتے وقت کلام کرنا مکروہ ہے اور طلوع فجر سے نماز فجر تک بلکہ طلوع آفتاب تک خیر کے سوا دوسری بات نہ کرے۔ (38)

مسئلہ ۳۸: ماہ صفر کو لوگ منحوس جانتے ہیں اس میں شادی بیاہ نہیں کرتے لڑکیوں کو رخصت نہیں کرتے اور بھی اس قسم کے کام کرنے سے پرہیز کرتے ہیں اور سفر کرنے سے گریز کرتے ہیں، خصوصاً ماہ صفر کی ابتدائی تیرہ تاریخیں بہت زیادہ نحس مانی جاتی ہیں اور ان کو تیرہ تیزی کہتے ہیں یہ سب جہالت کی باتیں ہیں۔

حدیث میں فرمایا کہ صفر کوئی چیز نہیں۔ (39) یعنی لوگوں کا اسے منحوس سمجھنا غلط ہے۔ اسی طرح ذیقعدہ کے مہینہ کو بھی بہت لوگ برا جانتے ہیں اور اس کو خالی کا مہینہ کہتے ہیں یہ بھی غلط ہے اور ہر ماہ میں ۳، ۱۳، ۲۳، ۸، ۱۸، ۲۸ کو منحوس جانتے ہیں یہ بھی لغوبات ہے۔

مسئلہ ۳۹: قمر در عقرب یعنی چاند جب برج عقرب میں ہوتا ہے تو سفر کرنے کو برا جانتے ہیں اور نجومی اسے منحوس بتاتے ہیں اور جب برج اسد میں ہوتا ہے تو کپڑے قطع کرانے اور سلوانے کو برا جانتے ہیں۔ ایسی باتوں کو ہرگز نہ مانا جائے، یہ باتیں خلاف شرع اور نجومیوں کے ڈھکوسلے ہیں۔

مسئلہ ۴۰: نجوم کی اس قسم کی باتیں جن میں ستاروں کی تاثیرات بتائی جاتی ہیں، کہ فلان ستارہ طلوع کریگا تو

علمت فالحق ما فی الحلیۃ ۳۔

اس کی دُعا کفر ہے کیونکہ یہ عقلاً و شرعاً ناجائز ہے اور اس میں نصوص قطعیہ کی تکذیب ہے بخلاف مومنوں کے یہ دعا کے۔ جیسا کہ ٹو جان چکا ہے، اور حق وہ ہے جو حلیہ میں ہے۔ (ت)۔

(۳۔ رد المحتار کتاب الصلوٰۃ فصل واذا اراد الشروع فی الصلوٰۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۳۵۱)

رد مختار میں ہے:

الحق حرمة الدعاء بالمغفرة للكافر ۴۔

(۴۔ رد المحتار کتاب الصلوٰۃ فصل واذا اراد الشروع فی الصلوٰۃ دار احیاء مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۷۸)

حق یہ ہے کہ کافر کے لیے دعائے مغفرت حرام ہے۔ (فتاویٰ رضویہ، جلد ۲۹، ص ۷۳۸، ۷۳۹ رضا فاؤنڈیشن، لاہور)

(37) المرجع السابق

(38) الفتاویٰ الصندیۃ، کتاب الکفریۃ، الباب الثانیون فی التفرقات، ج ۵، ص ۳۸۰۔

(39) المرجع السابق۔

للاں بات ہوگی، یہ بھی خلاف شرع ہے۔ اس طرح پھتروں کا حساب کہ للاں پھتر سے بارش ہوگی یہ بھی غلط ہے، حدیث میں اس پر سختی سے الکار فرمایا۔ (40)

مسئلہ ۴۱: ماہ صفر کا آخر چہار شنبہ ہندوستان میں بہت منایا جاتا ہے، لوگ اپنے کاروبار بند کر دیتے ہیں، سیر و تفریح و شکار کو جاتے ہیں، پوریاں پکتی ہیں اور نہاتے دھوتے خوشیاں مناتے ہیں اور کہتے یہ ہیں کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے اس روز غسل صحت فرمایا تھا اور بیرون مدینہ طیبہ سیر کے لیے تشریف لے گئے تھے۔ یہ سب باتیں بے اصل ہیں، بلکہ ان دنوں میں حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا مرض شدت کے ساتھ تھا، وہ باتیں خلاف واقع ہیں۔

اور بعض لوگ یہ کہتے ہیں کہ اس روز بلائیں آتی ہیں اور طرح طرح کی باتیں بیان کی جاتی ہیں سب بے ثبوت ہیں، بلکہ حدیث کا یہ ارشاد لا صفر، (41) یعنی صفر کوئی چیز نہیں۔ ایسی تمام خرافات کو رد کرتا ہے۔

مسئلہ ۴۲: ایک شخص نے کسی کو اذیت پہنچائی اس سے معافی مانگنا چاہتا ہے مگر جانتا ہے کہ ابھی اسے غصہ ہے معاف نہیں کریگا، لہذا معافی مانگنے میں تاخیر کی اس تاخیر میں یہ معذور نہیں۔ ظالم نے مظلوم کو بار بار سلام کیا اور وہ جواب بھی دیتا رہا اور اس کے ساتھ اچھی طرح پیش آیا یہاں تک کہ ظالم نے سمجھ لیا کہ اب وہ مجھ سے راضی ہو گیا، یہ کافی نہیں ہے بلکہ معافی مانگنی چاہیے۔ (42)

مسئلہ ۴۳: عمامہ کھڑے ہو کر باندھے اور پاجامہ بیٹھ کر پہنے۔ جس نے اس کا الٹا کیا وہ ایسے مرض میں مبتلا ہوگا جس کی دوا نہیں۔ (43)

مسئلہ ۴۴: کپڑا پہنے تو داہنے سے شروع کرے یعنی پہلے داہنی آستین یا داہنے پانچہ میں ڈالے پھر بائیں میں۔ (44)

مسئلہ ۴۵: پاجامہ کا تکیہ نہ بنائے کہ یہ ادب کے خلاف ہے اور عمامہ کا بھی تکیہ نہ بنائے۔

مسئلہ ۴۶: بیل پر سوار ہونا اور اس پر بوجھ لادنا اور گدھے سے ابل جوتا جائز ہے یعنی یہ ضرور نہیں کہ بیل سے

(40) صحیح البخاری، کتاب الطب، باب للاحامۃ، الحدیث: ۵۷۵۷، ج ۴، ص ۳۶۔

(41) المعجم الاوسط، الحدیث: ۸۱۸۲، ج ۶، ص ۱۱۱۔

(42) صحیح البخاری، کتاب الطب، باب للاحامۃ، الحدیث: ۵۷۵۷، ج ۴، ص ۳۶۔

(43) الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، الباب الثلاثون فی التفرقات، ج ۵، ص ۳۷۵-۳۷۶۔

(44) انظر: کشف الالتباس فی استجاب اللباس للشیخ المحقق عبدالحق، ذکر مسئلہ، ص ۳۹۔

صرف ہل جوتے کا کام لیا جائے اس پر بوجھ نہ لادا جائے اور گدھے پر صرف بوجھ ہی لادا جائے ہل نہ جوتا جائے۔ (45)

مسئلہ ۴۷: جانور سے کام لینے میں یہ لحاظ ضروری ہے کہ اس کی طاقت سے زیادہ کام نہ لیا جائے۔ اتنا نہ لیا جائے کہ وہ مصیبت میں پڑ جائے جتنا بوجھ اٹھا سکتا ہے اتنا ہی اس پر لادا جائے یا جتنی دور جاسکے وہیں تک لے جایا جائے یا جتنی دیر تک کام کرنے کا متحمل ہو سکے اتنا ہی لیا جائے۔ بعض یکہ تا نگہ والے اتنی زیادہ سواریاں بٹھا لیتے ہیں کہ گھوڑا مصیبت میں پڑ جاتا ہے یہ ناجائز ہے اور یہ بھی ضرور ہے کہ بلا وجہ جانور کو نہ مارے اور سر یا چہرہ پر کسی حالت میں ہرگز نہ مارے کہ یہ بالاجماع ناجائز ہے۔ جانور پر ظلم کرنا ذمی کافر پر ظلم کرنے سے زیادہ برا ہے اور ذمی پر ظلم کرنا مسلم پر ظلم کرنے سے بھی برا کیونکہ جانور کا کوئی معین و مددگار اللہ (عزوجل) کے سوا نہیں اس غریب کو اس ظلم سے کون بچائے۔ (46)

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى خَيْرِ خَلْقِهِ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ.

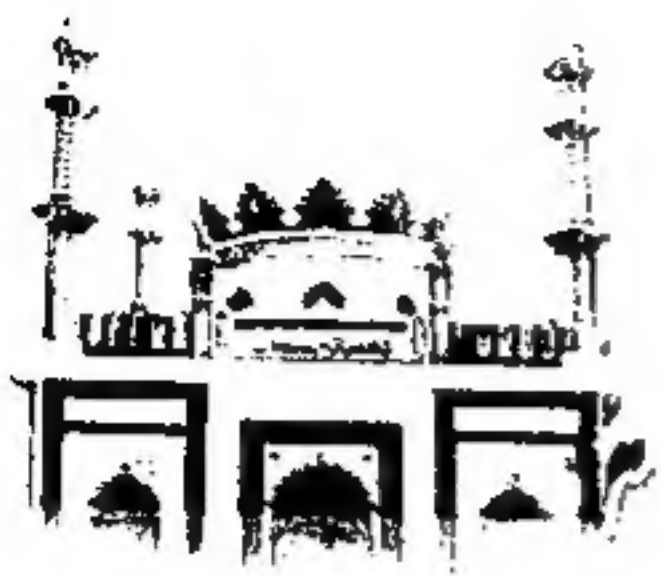


(45) انظر المرجع السابق، ذکر جیب، ص ۲۳.

(46) الدر المختار، کتاب الحظر والاباحہ، فصل فی البيع، ج ۹، ص ۶۶۲.

فنون و عالم بنان و اکتساب

ماہنامہ شریعت



بہار شریعت

16



مصنف: حضرت مولانا محمد رفیع
محقق: مولانا محمد رفیع
مطبع: مولانا محمد رفیع

پروگریسو بکس

علماء اہلسنت کی کتب Pdf فائل میں حاصل
کرنے کے لئے

”فقہ حنفی PDF BOOK“

چینل کو جوائن کریں

<http://T.me/FiqahHanfiBooks>

عقائد پر مشتمل پوسٹ حاصل کرنے کے لئے

تحقیقات چینل ٹیلیگرام جوائن کریں

<https://t.me/tehqiqat>

علماء اہلسنت کی نایاب کتب گوگل سے اس لنک

سے فری ڈاؤن لوڈ کریں

[https://archive.org/details/](https://archive.org/details/@zohaibhasanattari)

[@zohaibhasanattari](https://archive.org/details/@zohaibhasanattari)

طالب دعا۔ محمد عرفان عطاری

زوہیب حسن عطاری